हिन्दी

विश्वकोष

बंगला विश्वकोषके सम्पादक

श्रीनगेन्द्रनाथ वसु प्राच्यविद्यामहार्णव,

सिद्धान्त-वारिधि, शब्दरत्नाकर, एम्, आर, ए, एस्,

तथा हिन्दीके विद्वानों द्वारा सङ्कलित

द्वितीय भाग

[अभिमन्त्रण—आर्द्र सि]

THE

ENCYCLOPÆDIA INDICA

VOL. II.

COMPILED WITH THE HELP OF HINDI EXPERTS

BY

NAGENDRANATH VASU Prâchyavidyâmahârnava,

Siddhânta-vâridhi, Sabda-ratnâkara, M. R. A. S.,

Compiler of the Bengali Encyclopædia; the late Editor of Bangiya Sâhitya Parishad and Kâyastha Patrikâ; author of Castes & Sects of Bengal, Mayurabhanja Archæological Survey Reports and Modern Buddhism; Hony Archæological Secretary Indian Research Society; Member of the Philological Committee, Asiatic Society of Bengal; &c. &c. &c.

Printed by R. C. Mitra, at the Visvakosha Press

Published by

Nagendranath Vasu and Visvanath Vasu

9 Visvakosha Lane, Baghbazar Calcutta

1917

To

His Excellency

THE RIGHT HON'BLE FREDERIC JOHN NAPIER,

BARON CHELMSFORD

P. C., G. M. S. I., G. C. M. G., G. M. I. E.,

VICEROY

AND

GOVERNOR-GENERAL OF INDIA

THIS VOLUME OF THE

HINDI VISVAKOSHA

OR

THE ENCYCLOPÆDIA INDICA

BY KIND PERMISSION OF HIS EXCELLENCY

IS

most respectfully dedicated
by his humble servant
the Editor

as a token of his loyal devotion and admiration

for His Excellency's great interest in the

cause of the

Education of India.

हिन्दी

विश्वकोष

(द्वितीय भाग)

अभिप्रहत (सं॰ त्रि॰) अभि-प्र-हन्-क्त। आहत हुए हो, घायल मार खाये हुआ, मारा गया।

अभिप्राणन (सं॰ क्ली॰) अभि-प्र-अन ल्युट्। निश्वास उच्छ्वास निर्गम उद्गमन तकलीफ, साँस।

अभिप्रातर् (सं॰ अव्य॰) अतिशय प्रातः। अतिशय प्रत्यूष, अतिप्रभात बहुत सबेरे, ज्यादा तड़के।

अभिप्राप्त (सं॰ त्रि॰) आगत, समागत, उपस्थित, आया हुआ, दस्तयाब, जो आ पहुँचा हो।

अभिप्राप्ति (सं॰ स्त्री॰) आभिमुख्येन प्राप्तिः, प्रादि समास। अभिमुख-प्राप्ति सम्मुख प्राप्ति, पहुँच आमद।

अभिप्राय (सं॰ पु॰) अभिप्रैति अभिगच्छति कार्यं निश्चिमनेन, अभि-प्र-इण करणे अच्। १ आशय, भाव मतलब, गरज। २ छन्द। ३ आशय, मक़सद इरादा। ४ विष्णु। (त्रि॰) ५ अभिगामी पास पहुँचनेवाला।

अभिप्री (सं॰ त्रि॰) अभिप्रीणाति अभि प्री क्विप्। सकल प्रकार तर्पण करनेवाला जो हर सूरतमें खुश रखता हो।

अभिप्रीति (सं॰ स्त्री॰) १ उत्साह, आनन्द, प्रसन्नता, खीसना, खुशी, रज़ामन्दी। २ अभिलाष, इच्छा ख़्वाहिश मर्ज़ी।

अभिप्रेक्ष्य (सं॰ अव्य॰) दृष्टि डालकर निगाह उठाकर।

अभिप्रेत (सं॰ त्रि॰) अभिप्रेयते स्म, अभि-प्र इण क्त। १ अभीष्ट इरादा किया हुआ। २ अभिलषित चाहा गया। ३ स्वीकृत, सम्मानित मञ्जूरशुदा, पसन्द किया हुआ। ४ इच्छुक, ख़्वाहिशमन्द, चाहने वाला।

अभिप्रेत्य (सं॰ त्रि॰) अभिप्रेयते, अभि प्र इण ल्यप् तुगागम। १ अभिप्रेतव्य अभिप्रायणीय, अभिलषणीय ख़्वाहिश रखने क़ाबिल, जो चाहने लायक़ हो।

अभिप्रेप्सु (सं॰ त्रि॰) अभिप्राप्तिमिच्छुः, अभि प्र आप् सन् उ। पानेके निमित्त इच्छुक, जो मिलनेका ख़्वाहिशमन्द हो।

अभिप्रेर्यमाण (सं॰ त्रि॰) प्रेरा जाते हुआ, जो हटाया जा रहा हो।

अभिप्रोक्षण (सं॰ क्ली॰) अभि सर्वतः प्रोक्षणं संस्कार विशेष। सकल दिक् जलादि द्वारा सेचनरूप वैध संस्कार छिड़काव।

अभिप्लव (सं॰ पु॰) अभिप्लवन्ते स्वर्गलोकमभिगच्छन्ति अभि प्लु गतौ अच्। १ आज्ञापक नामक आदित्य सत्र। २ वर्षसाध्य गवामयन यज्ञगामी प्रतिमासीय चौबीस दिनके सम्पादित चार संस्थक छः दिन; अर्थात् चौबीसको चारसे भाग देनेपर प्रत्येक भागमें जो छः दिन आते उनके एक-एक अंशका छः दिन

वाला समय। ३ छः दिन साध्य स्तोमादि पाठसाधक गवामयनाङ्ग याग विशेष। भावे अप्। ४ उपप्लव, उपद्रव, सकल दिक् लम्फन, सकल दिक् गमन, झगड़ा, बखेडा, चारो ओरकी दौड़-धूप।

अभिप्लुत (सं० त्रि०) सम्यक् प्लुतम्, अभि-प्लु-क्त। १ सकल दिक् व्याप्त, चारो ओर भरा हुआ। २ सकल प्रकार सिक्त, सब तरह लबरेज्। ३ अभिभूत, अधीन, मातहतीमें पडा हुआ।

अभिबल (सं० क्ली०) गुप्तवेशमें स्थानविशेष पर मिलनेकी स्वीकृति, छिप कर किसी अखाड़ेमें आनेका इकरार।

अभिबुद्धि (सं० स्त्री०) बुद्धीन्द्रिय, सुत्र, अक्ल, समझका औज़ार।

अभिभग्न (सं० त्रि०) अभितो भग्नो यस्मात्, ५-बहुव्री०। १ भङ्ग करनेवाला, जो तोड़ डालता हो। २ भङ्गशील, टूटा हुआ। (पु०) ३ भङ्गकरनेवाला व्यक्ति, जो गखूस ताड़नेवाला हो।

अभिभञ्जत् (सं० त्रि०) तोड डालनेवाला, जो तोड रहा हो।

अभिभर्त्‌ (सं० अव्य०) प्रेमीके प्रति, स्वामीके सम्मुख, आशककी तर्फ़, खाविन्दके सामने।

अभिभव (सं० पु०) अभि-भू-अप्। १ पराजय, हार। २ तिरस्कार, अनादर, बेइज्ज़ती। ३ रोगादि द्वारा जडीभाव, बीमारी वगैरहसे सख़्त पड जाना। ४ योग, जोड। (त्रि०) ५ शक्तिसम्पन्न, ग़ालिब, हावी।

अभिभवन (सं० क्ली०) अभि-भू-ल्युट्। अभिभव, पराजय, रोगादि द्वारा ज्ञानरोध, शिकस्त, हार, बीमारी वगैरहसे होशका न रहना।

अभिभवनीय (सं० त्रि०) अभिभूत होनेवाला, जिसे शिकस्त दें।

अभिभा (सं० स्त्री०) अभि-भा-अङ्। १ प्रेत, साया। २ पराजय, अभिभव, शिकस्त, हार। ३ सकल दिक् दीप्ति, चारो ओर रोशनी, उत्कर्ष, सबकत, बडाई।

अभिभायतन (सं० क्ली०) १ उत्कर्षका स्थान, सबकतकी जगह। २ बौद्ध उत्कर्षके आठ स्रोतका नाम।

अभिभार (सं० पु०) अभि-भृ-घञ्, अभि अति-शयितो भारो यस्य, प्रादि-बहुव्री०। अतिभारयुक्त, निहायत वज़नी।

अभिभावक (सं० त्रि०) अभिभवति, अभि-भू-णवुल्। अभिभवकारी, पराजयकारी, तिरस्कारकारी, जडी-भावकारी, सबक़त ले जानेवाला, जो हरा देता हो, बेइज्ज़त करनेवाला। २ आत्मीय स्वजन, तत्त्वा-वधायक, मुरब्बी।

अभिभावन (सं० क्ली०) विजय, जीत।

अभिभाविन् (सं० त्रि०) अभिभवति, अभि भू-णिनि। तिरस्कारकारी, पराजयकारी, बेइज्ज़त करनेवाला, जो हरा देता हो। 'सर्वतेजोऽभिभाविना।' (रघु १।१४)

अभिभावी (सं० पु०) अभिभाविन् देखो।

अभिभावुक (सं० त्रि०) अभि-भू-उकञ्। तिरस्कार कारी, पराजयकारी, जडभावकारी, बेइज्ज़त करने-वाला, जो हरा देता हो, होश उडानेवाला।

अभिभाषण (सं० क्ली०) अभितो भाषणम्, प्रादि स०। आभिमुख्य कथन, सम्मुखका बोलना, सामनेकी गुफ़तगू, जो बात रूबरू हो।

अभिभाषमाण (सं० त्रि०) बोल देनेवाला, जो बात कह उठता हो।

अभिभाषित (सं० त्रि०) कथित, निवेदित, कहा गया, जिससे कह चुकें।

अभिभाषिन् (सं० त्रि०) आभिमुख्येन भाषते, अभि-भाष-णिनि। आभिमुख्य कथक, जो सम्मुख बोलता हो, सामने कहनेवाला, जो बात कर रहा हो।

अभिभाष्य (सं० त्रि०) कथनीय, कहा जानेवाला, जिससे बात की जाये।

अभिभाष्यमाण (सं० त्रि०) कहा जाते हुआ, जिससे बात करते हों।

अभिभू (सं० त्रि०) अभिभवति, अभि-भू-क्विप्। अभिभावक, पराजयकारी, तिरस्कारक, सबक़त ले जानेवाला, जो हरा देता हो, इज्ज़त विगाड़नेवाला।

अभिभूत (सं० त्रि०) अभि-भू-क्त। १ किंकर्तव्य-

विभूत, जो घबरा गया हो। २ पराभूत मग्न, हारा हुआ। ३ व्याकुल तकलीफ़ज़दह।

अभिभूति (सं॰ स्त्री॰) अभि भू क्तिन्। १ पराभव, पराजय, शिकस्त, हार। २ अवज्ञा, बेइज़्ज़ती। (त्रि॰) ३ अभिभावक पराजयकारी गालिब आने वाला या जीत लेता हो।

अभिभूत्योजस् (ब॰ स्त्री॰) १ उत्कृष्ट शक्ति, ऊंची ताकत। (त्रि॰) २ उत्कृष्ट शक्तिसम्पन्न ऊंची ताकत रखनेवाला।

अभिभूय (सं॰ स्त्री॰) अभि-भू भावे ल्यप्। सकल दिक् प्रसार, सकल प्रकार स्थिति, उत्कर्ष, चारो ओर फैलाव सब तरह गुज़ारा, बढ़त।

अभिभूवन् (सं॰ त्रि॰) अभि भवति, अभि-भू-कर्तरि बाहुलकात् क्वनिप्। अभिभावक तिरस्कारक पराजयकारी हरानेवाला जो गालिब आता हो, झिड़की देनेवाला। (स्त्री॰) ङीप्। अभिभूवरी।

अभिमण्डन (सं॰ क्ली॰) १ शृङ्गार सजावट, बनाव चुनाव। २ प्रतिपादन समर्थन, अपनी बातका रखना।

अभिमण्डित (सं॰ त्रि॰) विभूषित अलङ्कृत सजा हुआ, जो संवारा गया हो।

अभिमत (सं॰ त्रि॰) अभिमन्यते स्म, अभि मन क्त। १ अभिमानका विषयीभूत जिसके लिये घमण्ड करें। २ सम्मत, मञ्जूर माना हुआ। ३ आदृत पसन्द किया गया। ४ अभीष्ट ख्वाहिश किया हुआ। (क्ली॰) भावे क्त। ५ अभिमान घमण्ड। ६ मिथ्या ज्ञान झूठी समझ। ७ अभिलाष इच्छा ख्वाहिश, मर्ज़ी।

अभिमतता (सं॰ स्त्री॰) १ अनुरूपता काम्यता सजावट ख्वाहिशमन्दी। २ प्रेम उत्कण्ठा, इश्क चाह।

अभिमति (सं॰ स्त्री॰) अभि मन् क्तिन्। १ अभिमान गरूर। २ मिथ्याज्ञान, झूठी समझ। ३ आदर ध्यान नज़रका इज़्ज़त। ४ अभिलाष ख्वाहिश।

अभिमनस (सं॰ त्रि॰) अभिमुखं मन्यादनोऽपूर्व मनो यस्य बहुव्री॰। १ काम करनेमें उत्सुक या उद्यत, कामकी मन लगानेवाला। २ वश तुष्ट, आसूदा, सेर, छका हुआ। ३ उत्कण्ठित ख्वाहिशमन्द।

अभिमन्तव्य (सं॰ त्रि॰) अभिमन्यते, अभि-मन् कर्मणि तव्य। ध्यातव्य, ध्यान करने काबिल। २ स्पृहणीय, चाहने लायक। ३ अधिक मान किया जानेवाला, जिसकी ज्यादा इज़्ज़त की जाये।

अभिमन्तु (सं॰ स्त्री॰) चोटका लगाना, नाराज़ करना।

अभिमन्तृ (सं॰ त्रि॰) इच्छुक उत्कण्ठित, स्पृहायुक्त चाहनेवाला, ख्वाहिशमन्द।

अभिमन्तोस् (वै॰ अव्य॰) हानि पहुंचानेको, नुकसान करनेके लिये।

अभिमन्त्र (सं॰ क्ली॰) अभि मन्त्र चुरा॰ अच्। मीमांसकोक्त मन्त्रपाठपूर्वक दर्शनादि संस्कारविशेष।

अभिमन्त्रण (सं॰ क्ली॰) अभि मन्त्र चुरा॰ ल्युट्। १ मीमांसकोक्त मन्त्रपाठपूर्वक दर्शनादि संस्कारविशेष। २ सम्बोधन आमन्त्रण, बुलाहट, पुकार। ३ अभि मन्त्रण, सलाहका लेना। ४ जादू टोना।

अभिमन्त्रित (सं॰ त्रि॰) जादू किया हुआ, जिसपर टोना पड़ चुके।

अभिमन्त्र्य (सं॰ त्रि॰) अभि मन्त्र चुरा॰ यत्। १ अभिमन्त्रणीय सोपनमें पराभवनीय सम्भाषि-क्षालिन जो पुरजेमें लिखाने लायक हो। (अव्य॰) २ अभिमन्त्र ल्यप्। ३ मन्त्रणा करके मन्त्र पढ़के।

अभिमन्थ अभिमन्य (सं॰ पु॰) अभि अपि वा मथ्नाति शेषम्। १ अक्षिरोगविशेष आंखकी कोई बीमारी। भावे घञ्। २ अतिशय मन्थन, हदसे ज्यादा मथाई। (अव्य॰) मन्थस्याभिमुख्यम् अव्ययी॰। ३ मन्थनदण्डके सम्मुख मन्थनदण्डके समीप, मथानीके सामने या पास।

अभिमन्यु (सं॰ पु॰) अभिगत प्राप्त युद्धमें मन्यु क्रोधो यस्य प्रादि २ बहुव्री॰ अथवा अभिमतो मन्य अभिमानार्थमिति शेष मन्युः क्रोधो यस्य ६ बहुव्री॰ अथवा अभि अभितो मन्यु शौर्य यस्मात् ३ बहुव्री॰। १ अर्जुनके पुत्र। कृष्णकी भगिनी सुभद्राके गर्भमें इनका जन्म हुआ था। विराटकन्या उत्तराके

इन्होंने विवाह किया। इनके पुत्रका नाम परीक्षित् रहा। कुरुक्षेत्रयुद्धमें अभिमन्युने असाधारण वीरत्व देखाया था। अर्जुन नारायणी सेनाके साथ दूर लड़ते रहे, इधर अभिमन्यु व्यूहमें घुस पड़े। महाभारतमें लिखा है, कि इसी दिनके युद्धमें इनके हाथ दुर्योधनके भ्राता वृचारक, मगधराजपुत्र श्वेतकेतु, अश्वकेतु एवं कुञ्जरकेतु, कोशलके राजा वृहद्वल, दुःशासनके पुत्र उलूक प्रभृति अनेक वीर मारे गये थे। शेषमें कर्ण प्रभृति छः रथियोंने मिल अभिमन्युको वध किया। शापमुक्त हो अभिमन्यु चन्द्रलोक पहुंचे थे।

२ विष्णुपुराणमें लिखा है, कि चाक्षुष मनुके पुत्रका नाम अभिमन्यु रहा। इन्होंने नवलाके गर्भसे जन्म लिया था। ३ राधिकाके स्वामी आयानको भी पहले लोग अभिमन्यु कहते रहे।

४ काश्मीरमें दो अभिमन्यु नृपति थे। प्रथम अभिमन्यु नृपतिके समय वहां बौद्धधर्म अतिशय प्रबल रहा। किन्तु महाराज अभिमन्यु शिवलिङ्गकी प्रतिष्ठित कर पूजते थे। प्रसिद्ध वैयाकरण चन्द्राचार्य इन्हींकी सभामें विद्यमान रहे। चन्द्रव्याकरण उन्होंने ही उद्धार किया था। नागार्जुन प्रभृति बौद्ध राजसभामें पहुंच सर्वदा ही पण्डितोंके साथ तर्क-वितर्क और नीलपुराणको कुत्सा करते रहे। उससे नागजातिने क्रुद्ध हो अनेक बौद्धोंको मार डाला। कहते हैं, कि अन्तमें कश्यपवंशके चन्द्रदेव नामक किसी ब्राह्मणने महादेवकी आराधना लगा यह सकल उपद्रव मिटाया था। इन्होंने काश्मीरमें अभिमन्युपुर नामक नगरको स्थापन किया।

५ द्वितीय अभिमन्यु ८८० शकाब्दमें प्रादुर्भूत हुए थे। यह क्षेमगुप्तके पुत्र रहे। इन्होंने बाल्यकालमें ही राज्यका भार उठा लिया था। ४८ लौकिकाब्दमें यक्ष्मारोगसे इन्होंने प्राणत्याग किया। काश्मीर देखो।

अभिमर (सं॰ पु॰) आभिमुख्येन म्रियन्ते सैन्या यत्र, अभि मृ अधिकरणे अप्। १ युद्ध, जङ्ग, लड़ाई। २ युद्धस्थान, रणक्षेत्र, मैदान-जङ्ग, खेत, जिस जगह लड़ाई रहे। करणे अप्। ३ भय, खौफ, डर। ४ अपने सैन्यपक्षसे विश्वासघातकी आशङ्का, अपने सिपाहीसे धोका खानेको शक। अभिम्रियते यस्मात्, अपादाने अप्। ५ मरणव्यापार, वध, कत्ल, जानका लेना। अभिमुखीभूय म्रियते, कर्तरि अच्। ६ स्वसैन्य, सिपाही, धनलोभसे प्राणको आशा छोड़ व्याघ्र वा हस्तीके सम्मुख युद्ध करनेको उद्यत व्यक्ति, जो शख्स दौलतके लालच जानकी उम्मेद न रख शेर या हाथीसे लड़नेको तैयार हो। ७ बन्धन, कैद।

अभिमर्द (सं॰ पु॰) अभि-मृद भावे घञ्। १ अवमर्द, रगड़। २ निष्पीड़न, जुल्म, दुश्मनके जरिया मुल्कको बरबादी। अधिकरणे घञ्। ३ युद्ध, जङ्ग, लड़ाई। ४ मद्य. शराब। (त्रि॰) ५ मर्दनकर्ता, मलने या रगड़नेवाला।

अभिमर्दन (सं॰ क्ली॰) अभि-मृद भावे ल्युट्। पीड़न, चूर्णन, जुल्म, किसीको सताना।

अभिमर्दिन् (सं॰ त्रि॰) पीड़ा पहुंचानेवाला, जो तकलीफ देता हो।

अभिमर्श, अभिमर्ष (सं॰ पु॰) अभि-मृश वा मृष भावे घञ्। स्पर्श, घर्षण, छूत, मिलाव।

अभिमर्शक, अभिमर्षक (सं॰ त्रि॰) अभि-मृश वा मृष णवुल्। १ स्पर्श करनेवाला, जो छू लेता हो। २ पराभवकारी, नीचा देखानेवाला।

अभिमर्शन, अभिमर्षण (सं॰ क्ली॰) अभि-मृश वा मृष-ल्युट्। १ स्पर्श, छूत। २ घर्षण, पराभव। ३ यक्ष-पिशाचादि भूतकृत पीड़ा, जो बीमारी साये वगैरहसे पैदा हो।

अभिमाति (सं॰ त्रि॰) अभिमयते, अभि-मेङ कर्तरि क्तिन् न इत्वम्। १ घातक, मारनेकी कोशिश करते हुआ, चोट देनेवाला, जो दुश्मनी रखता हो। (पु॰) २ शत्रु, दुश्मन। ३ पाप, इलाज।

अभिमातिजित् (सं॰ त्रि॰) शत्रुको जीतनेवाला, जो दुश्मनको हरा देता हो।

अभिमातिन् (सं॰ पु॰) अभि-मेङ भावे क्त। १ शत्रु, दुश्मन। २ आघात, चोट।

अभिमातिषाह् (सं॰ त्रि॰) अभिमातिं शत्रुं सहते, अभिमाति सह-ण्वि षत्वम्। शत्रुजित, दुश्मनको जीतनेवाला।

अभिमातिषाह, अभिमातिषाह् देखो।

अभिमातिहन् (सं॰ पु॰) शत्रुसंहारकर्ता, जो शख़्स दुश्मनको क़त्ल करता हो।

अभिमाद (सं॰ पु॰) मद, मोहता, नशा, ख़ुमार।

अभिमाद्यत् (सं॰ त्रि॰) उन्मत्त होनेवाला जो नशा पी रहा हो।

अभिमाद्यत्क (सं॰ त्रि॰) कुछ-कुछ उन्मत्त, जो बहुत नशेमें न हो।

अभिमान (सं॰ पु॰) अभि-मन् घञ्। १ ऐश्वर्य प्रभृतिके निमित्त गर्व, दर्प, अहङ्कार, ग़ुरूर, घमण्ड। २ प्रणय स्नेह प्रभृति कारणसे मनका दुःख हेतुक आदर सहित क्रोध, मुहब्बत, प्यार वग़ैरहको जगह दिलको दुखानेवाली रञ्ज़िश मिठी-गुस्सा। ३ प्रणय, प्रेमप्रार्थना, मादो, मुहब्बतका इज़हार। ४ अवलेप, दावेदारी। ५ मिथ्याज्ञान, झूठी समझ। ६ शृङ्गार रसको अवस्थाविशेष मान, नख़रा। ७ हिंसा, हनन, क़त्ल, मारकाट।

अभिमानता (सं॰ स्त्री॰) दर्प, धृष्टता, ग़ुरूर, गुस्ताख़ी।

अभिमानवत् (सं॰ त्रि॰) १ मानी, नख़रेबाज़। २ दर्पित, मग़रूर, गुस्ताख़।

अभिमानशून्य (सं॰ त्रि॰) दर्परहित, गर्वविहीन, बेग़ुरूर, ग़ुरूरसे ख़ाली जिसे घमण्ड न रहे।

अभिमानित (सं॰ त्रि॰) अभिमानो मम सञ्जातो-ऽस्य, अभि मान इतच्। १ जातगर्व, जाताभिमान, जिसे घमण्ड आ जाये। (क्ली॰) अभि-मान णिच् भावे क्त। २ मैथुन, हमबिस्तरी। ३ मद, ग़ुरूर।

अभिमानिता (सं॰ त्रि॰) हठ रखनेकी दशा, जिस हालतमें घमण्ड घेरे रहे।

अभिमानित्व (सं॰ क्ली॰) अभिमानिता देखो।

अभिमानिन् (सं॰ त्रि॰) अभि-मन् णिनि। १ गर्व युक्त दृप्त, अभिमानविशिष्ट, मग़रूर, गुस्ताख़, घमण्डी। २ प्रणयकोपयुक्त, नख़रेबाज़। ३ मिथ्या ज्ञानयुक्त झूठी समझवाला। (पु॰) ४ भौत्य मनुके दश पुत्रोंमें पञ्चम पुत्र।

अभिमानी, अभिमानिन् देखो।

अभिमानुक (सं॰ त्रि॰) अभि-मन् बाहुलकात् उकञ्। १ अभिमानविशिष्ट, मग़रूर। २ वध करनेमें मार जो चोट पहुंचा सकता हो।

अभिमाय (सं॰ त्रि॰) मायां अविद्यां अभिगतम् अतिक्रा तत् गोपि ड्यस। इतिकर्तव्यताशून्य अभि भूत घबराया हुआ, जो भौचक रह गया हो, अच-म्भा, भादाम।

अभिमिह्य (सं॰ त्रि॰) अभिमिह्यते सिञ्चते। जिसके सम्मुख मलमूत्रादि त्याग किया जाये, पेशाब किया जानेवाला, जिसपर पेशाब करें।

अभिमीलित (सं॰ त्रि॰) अवरुद्ध, बन्द, जो आंखकी तरह झपका हो।

अभिमुख (सं॰ त्रि॰) अभिमतं मुखम्, अतिक्रा-न्तम्। १ अभिमुखमात, सामने चेहरा किये हुआ। २ अभ्यस्त समक्ष, घूमा हुआ, जो सामने आ गया हो। ३ कर्म करनेमें उद्यत, काममें लगा हुआ। ४ उपस्थित होनेवाला, जो नज़दीक आ या पहुंच रहा हो। ५ इच्छा रखनेवाला, जो इरादा बांधे हो। (अव्य॰) मुखमभिलक्षीकृत्य, अव्ययी॰। ६ अभिमुख, सम्मुख, सामने, रूबरू। ७ सम्मुख जाकर, सामने पहुंचके।

अभिमुखता (सं॰ स्त्री॰) उपस्थिति, सामीप्य, हाज़िरी, नज़दीक रहनेकी हालत।

अभिमुखी (सं॰ स्त्री॰) बौद्धमतसे—दश पृथिवीमें एक पृथिवी।

अभिमुखीकरण (सं॰ क्ली॰) अभिमुख क्रियते अनेन, अभिमुख च्वि कृ करणे ल्युट्। सम्बोधन, बुलाहट, पुकार। सम्बोधन उच्चारण करनेसे श्रोता सुनकर अभिमुख होता, इसीसे अभिमुखीकरण शब्द सम्बोधन बताता है।

अभिमुखीभाव (सं॰ पु॰) अनभिमुखस्य अभिमुख-स्यो भाव भवनम् अभिमुख च्वि भू भावे घञ्। १ आभिमुख्य, सामना। २ कार्यकी अनुकूलता, कामको सुभाविकत। ३ अभिमुखका होना सामनेका पड़ना।

अभिमुखीभूत (सं॰ त्रि॰) सम्मुखागत, उपस्थित, सामने पड़ा हुआ, जिसका मुंह सामने रहे।

अभिमूर्च्छित (सं० वि०) विचित्त, मोहित, व्यग्र, विधुर, आकुल, मूढ़, विह्वल, संक्षुब्ध, क्लान्त, उन्मत्त, बेहोश, फरेफ़्ता, थकामांदा, मतवाला।

अभिमृष्ट (सं० वि०) अभि-मृश्-क्त। १ स्पृष्ट, जो स्पर्श किया गया हो, छूया हुआ। २ पराभूत, पराजित, धर्षित, शिकस्त खाये हुआ, जो हार चुका हो। ३ मिलित, संसृष्ट, मिला हुआ, जो निकाला गया हो। (वि०) ४ मार्जनायुक्त, शुद्ध, दला-मला, पाकीज़ा।

अभिमेयक (सं० पु०) अभि-मिथ्-ण्वुल्। सर्वप्राप्तिसाधन वाक्यविशेष, जिस वाक्यके कहनेसे सकल ही मिल जाये, सारा मतलब पूरा करनेवाली बात।

अभिमेथिका (सं० स्त्री०) १ वाण-सदृश वाक्य, तीर जैसी बात। २ अश्लील वचन, फोहश गुफ़्तगू। ३ शाप, बद्दुवा।

अभिमेध्य, अभिमिध्य देखो।

अभिम्लात, अभिम्लान देखो।

अभिम्लान (सं० त्रि०) अभितो म्लानम्, अभि-म्लै-क्त। १ अतिमलिन, अप्रसन्न, निहायत अफ़सुर्दा, नाख़ुश, कुम्हिलाया हुआ। २ विशीर्ण, सड़ा-गला।

अभियज्ञगाथा (सं० स्त्री०) यज्ञ-सम्बन्धीय भजन।

अभिया (सं० पु०-स्त्री०) आक्रमण, हमला, धावा, चढ़ाई।

अभियाचन (सं० क्ली०) अभि-याच-ल्युट्। अभिमुख प्रार्थना, जो प्रार्थना सम्मुख होकर की जाती हो, आर्ज़ू-मिन्नत, सामनेकी मांग यांच।

अभियाचित (सं० वि०) सम्मुख प्रार्थना किया गया, सामने मांगा हुआ।

अभियात् (सं० वि०) अग्रगामी, आक्रमणकारी, हमलावर, जो धावा मार रहा हो।

अभियात (सं० वि०) आक्रमण किया गया, जिसपर हमला पड़ चुके।

अभियाति (सं० पु०) आभिमुख्येन याति: युद्धार्थ गतिः, अभि या बाहुलकात् क्तिन्। रिपु, शत्रु, दुश्मन। (स्त्री०) भावे क्तिन्। २ युद्धार्थ गमन, लड़ाईकी चढ़ाई।

अभियातिन् (सं० पु०) अभियातमनेन; अभि-या भावे क्त, तत इष्टादि० इन्। शत्रु, दुश्मन।

अभियातृ (सं० पु०) अभिमुखं युद्धार्थं याति, अभि-या-तृच्। १ शत्रु, दुश्मन। (वि०) २ अभिमुखगमनकारी, सामने धावा लगानेवाला।

अभियान (सं० क्ली०) अभि या-ल्युट्। युद्धयात्रा, अभिगमन, मुहीम, हमला, चढ़ाई।

अभियायिन् (सं० वि०) आभिमुख्येन याति, अभि-या-णिनि। अभिमुख-गमनकारी, सामने जानेवाला, जो हमला मारता हो, पास पहुंचते हुआ।

अभियुक्त (सं० वि०) अभि-युज्यते स्म, अभि युज्-क्त। १ अन्य कार्य्यक रहित, तत्पर, आसक्त, लगाया हुआ, मुस्तैद, ख्यालमें डूबा हुआ। २ प्रतिष्ठित, मुकरर किया हुआ। ३ कथित, उक्त, कहा हुआ, जिसके बारेमें बात हो चुके। ४ आक्रमण किया हुआ, जिसपर दुश्मनका हमला पड़ चुके। ५ निन्दित, बदनाम। ६ कानूनमें—प्रतिवादी, मुद्दालह, जिसपर नालिश हो चुके।

अभियुग्वन्, अभियुज्वन् (वै० वि०) अभि-युज्-ड्वनिप्, वैदे पृ० कुत्वम्। १ अभियोक्ता, अभियोगकारी, अभियोग लगानेवाला, हमलावर, मुद्दई। (पु०) २ आघात, आक्रमण, चोट, हमला। ३ शत्रु, दुश्मन। (स्त्री०) ङीप्। अभियुज्वरी।

अभियुज् (सं० वि०) अभिमुखं युनक्ति, अभि-युज्-क्विप्। अभियोक्ता, अभियोगकारी, मुद्दई, नालिश करनेवाला। (स्त्री०) २ आक्रमण, हमला। ३ शत्रु, दुश्मन।

अभियुज्यमान (सं० वि०) अभियोग लगाया जाते हुआ, जिसपर नालिश की जा रही हो।

अभियोक्तव्य (सं० वि०) अभियोक्तुं शक्यम्, अभि-युज्-तव्य। १ अभियोग लगाने योग्य, जिसपर इलज़ाम लगाया जा सके। २ अभिमुख योजनीय, सामने धावा मारने क़ाबिल। ३ निषेध्य, रोकने क़ाबिल।

अभियोक्ता, अभियोक्तृ देखो।

अभियोक्तृ (सं० पु०) अभिमुखं युनक्ति, अभि-युज्-तृच्। १ अभियोगकर्ता, वादी, नालिश करनेवाला,

मुद्दई। २ सुलाय आक्रमणकर्ता, लड़ाईकी चढ़ाई करनेवाला।

अभियोग (सं॰ पु॰) अभितो राजसमीपे योग योजनम्, अभि युज्-घञ्। १ अन्य कर्तृक अपकार निवारण वा क्षतिपूरण करनेको राजाके निकट प्रार्थना, दूसरेका किया हुआ नुकसान मिटानेको हाकिमसे अर्ज। २ युद्धार्थ आक्रमण लड़ाईकी चढ़ाई। ३ उद्यम, यत्न। ४ उद्योग,तदबीर। ५ आग्रह, जिद। ६ अभिनिवेश, लटका। ७ दोषारोप इलजामी। ८ नियुक्ति, लगाव।

अभियोगपत्र (सं॰ क्लो॰) अर्जीदावा, जिस कागज पर लिखकर नालिश की जाये।

अभियोगिन् (सं॰ त्रि॰) अभितो राजादि समीपे युनक्ति स्वदुःखमावेदयति अभि युज् बाहुलकात् घिनुण्। १ अभियोगकर्ता, वादी, नालिश करनेवाला, मुद्दयी। २ आक्रमणकर्ता, हमलावर। ३ आग्रहयुक्त, जिद्दी। ४ अभिनिविष्ट, मनोयोगी दिल लगानेवाला। ५ योजनकर्ता, जो मिला देता हो।

अभियोगी, अभियोगिन् देखो।

अभियोज्य (सं॰ त्रि॰) आक्रमण किये जाने योग्य जो धावा लगाये जाने काबिल हो।

अभियोजन (सं॰ क्लो॰) अभि युज्-पुनर्योजनम्। योजित पदार्थकी दृढ़ताके लिये पुनर्वार योजन, जुड़ी हुई चीज़की मज़बूतीके लिये दोबारा जोड़ाई।

अभियोक्ता, अभियोक्तृ देखो।

अभिरक्षण (सं॰ क्लो॰) अभितो रक्षणम्। सकल दिक् रक्षा, मन्त्रादि द्वारा सकल दिक् भरमें आदि देव राक्षसादिसे वेद धर्मकी रक्षा दुनियाकी हिफाजत। पूर्वकाल यज्ञादि कार्य उपस्थित होनेपर राक्षस आदि आकर उस समय यज्ञीय द्रव्य खा जाते और यज्ञ बिगाड़ देते थे। इसके लिये ऋषि मन्त्रपाठपूर्वक सफेद सरसों आदि फेंक उन्हें निवारण करते रहे। आजकल भी पुरोहित और भूत झाड़ते समय लोग सफेद सरसों फेंकते हैं।

अभिरक्षा (सं॰ स्त्री॰) अभि-रक्ष्-अ टाप्। मन्त्रादि द्वारा सब प्रकारकी रक्षा।

अभिरक्षित (सं॰ त्रि॰) अभितो रक्षितम् प्रादि स॰। सकल दिक् रक्षित, चारो ओर महफूज़।

अभिरक्षितृ (सं॰ त्रि॰) अभितो रक्षितम् अभि रक्ष्-तृच्। सकल दिक् रक्षाकर्ता, सर्वप्रकार रक्षाकर्ता, चारो ओर हिफाजत रखनेवाला जो सब तरह हिफाजत रखता हो।

अभिरक्ष्य (सं॰ त्रि॰) रक्षा या शासन किया जाने वाला, जो हिफाजत रखे या हुकूमत किये जाने काबिल हो।

अभिरञ्जित (सं॰ त्रि॰) रागरञ्जयुक्त अरञ्जित रक्त, लोहित अनुरञ्जित, रंगा हुआ सुर्ख जिसपर सुर्खताका जोश चढ़ चुके।

अभिरत (सं॰ त्रि॰) आभिमुख्येन अतिशयं रतम् अभि रम्-क्त। १ आरत, फरेफ्ता। २ प्रीतियुक्त, आसूदा, खुश। ३ नियुक्त, मसरूफ, लगा हुआ। ४ ध्यान देनेवाला, जो ख़याल लड़ाता हो।

अभिरति (सं॰ स्त्री॰) अभितो रतिः, प्रादि-स॰ अभि रम् क्तिन्। १ अतिशय आसक्ति, हदसे ज्यादा लगाव। २ प्रसन्नता, खुशी।

अभिरम (सं॰ अव्य॰) अभिरम्य देखो।

अभिरमना (हिं॰ क्रि॰) १ सामना करना, गुत्थमें लपटना, लड़ना भिड़ना।

अभिरमण (सं॰ क्लो॰) अनुराग, रस, खुशी।

अभिरमणीय (सं॰ त्रि॰) अभिराम देखो।

अभिरम्य (सं॰ त्रि॰) अभिरम्यते, अभि-रम् कर्मणि यत्। १ रमणीय, मनोरम, मजेदार, दिलको खुश करनेवाला। (अव्य॰) २ रमण या क्रीड़ा करके, मजा उड़ा या खेलकर।

अभिराज् (सं॰ त्रि॰) सकल राज्य करते हुआ, जो सब जगह हुकूमत चला रहा हो।

अभिराद्ध (सं॰ त्रि॰) अभितो राद्धम् अभि राध् क्त। १ सर्वथा सिद्ध सकल प्रकार निष्पन्न, हर सूरतसे हासिल, सबतरह तैयार। २ सेवित, ताबेदारी किया गया।

अभिराम (सं॰ त्रि॰) अभिरम्यते अनेन अस्मिन् वा, अभि रम् कर्मणि अधिकरणे वा घञ्। सुन्दर, प्रिय,

मनोज्ञ, खुश करनेवाला, गवारा, खूबसूरत। (अव्य०) २ रामके प्रति, रामको।

अभिरामता (सं० स्त्री०) अभिरामत्व, सौन्दर्य, प्रियता, मनोज्ञता, सुघरापन, खूबसूरती, चमक-दमक।

अभिरामी (सं० त्रि०) अभिरमणकर्ता, मजा उड़ानेवाला।

अभिराष्ट्र (सं० त्रि०) राज्य पानेवाला, जिसे बादशाही मिल जाये।

अभिरुचि, अभिरुची (सं० स्त्री०) अभि-रुच्-इन्। १ अतिशय रुचि, अतिशय दीप्ति, हदसे ज्यादा रौनक, इदसे ज्यादा झौमिला। २ इच्छा, हर्ष, स्वाद, ख्वाहिश, खुशी, मज़ा।

अभिरुचित (सं० त्रि०) हर्षित, प्रसन्न, खुश, बश्शाश।

अभिरुचिर (सं० त्रि०) अतिशय मनोरम, सुन्दर, निहायत खूशगवार, खूबसूरत।

अभिरुत (सं० त्रि०) १ मुखरित, जिसमें आवाज़ निकल चुके। २ कूजित, सुस्वर, मधुर, कूका हुआ, सुरीला, मीठा।

अभिरुता (सं० स्त्री०) १ सङ्गीतकी कोई मूर्छना। २ कूक, सुरीलापन।

अभिरूप (सं० त्रि०) अभिरूपयति सर्वं रूपविशिष्टं करोति, अभि चुरा० रूप-णिच्-अच्। १ मनोहर, प्रिय, दिलकश, प्यारा। २ पण्डित, दाना। "अभिरूपभूयिष्ठा परिषत्।" (शकु०) ३ सदृश, मिलते हुआ। ४ उचित, वाजिब। ५ यथेष्ट, काफ़ी। (पु०) ६ कन्दर्प, कामदेव। ७ चन्द्र, चांद। ८ विष्णु। ९ शिव।

प्राज्ञरूपमदपाभिरूपा बुधमर्मीस्त्रयी'। (अमर)

अभिरूपक (सं० त्रि०) अभिरूप देखो।

अभिरूपपति (सं० पु०) सुन्दर स्वामी, अच्छासा खाविन्द।

अभिरोग (सं० पु०) जिह्वामें कृमि पड़नेकी पीड़ा, जिस बीमारीसे जीभमें कीड़ा पड़ जावे। यह रोग पशुको अधिक लगता है।

अभिरोध (सं० पु०) अभि-रुध-घञ्। पीड़न, बीमारी, तकलीफ़।

अभिरोरुद (वै० त्रि०) रुलानेवाला, जिसे देख कर आंसू टपकते रहें।

अभिलकपित्थ (सं० पु०) आम्रातक वृक्ष, अमड़ेका पेड़।

अभिलाञ्छित (सं० त्रि०) चिह्नित, निशानदार।

अभिलक्ष्य (सं० त्रि०) अभिलक्ष्यते शरादि वेधार्थं अतिशयेन दृश्यते; अभि चुरा० लक्ष्-णिच्-यत्, णिच् लोपः। १ शरव्य, तीरसे मारा जानेवाला। २ चिह्नयोग्य, निशाना जमाने काबिल। (अव्य०) लक्ष्यस्य शरव्यस्य आभिमुख्यम् अव्ययी०। ३ शरव्यके समीप, लक्ष्यके सम्मुख, निशानेके पास, शिकारके सामने। ४ लक्ष्य लगाकर, शिश्त जमाके।

अभिलङ्घन (सं० क्ली०) अभि लघि भावे ल्युट्। उल्लङ्घन, कूद फांद।

अभिलषण (सं० क्ली०) उत्कण्ठा, स्पृहा, लालच, ख्वाहिश।

अभिलषणीय (सं० त्रि०) अभि-लष् कर्मणि अनीयर्। वाञ्छनीय, चाहने काबिल।

अभिलपिकरोग (सं० पु०) वातव्याधिविशेष, वातकी कोई बीमारी।

अभिलषित (सं० त्रि०) अभिलष्यते स्म, अभि-लष् कर्मणि क्त। १ इष्ट, वाञ्छित, मकबूल, चाहा हुआ। (क्ली०) भावे क्त। २ अभिलाष, इच्छा, ख्वाहिश, मर्जी।

अभिलषितव्य (सं० त्रि०) अभि-लष-तव्य। अभिलषणीय, काम्य, चाहने काबिल।

अभिलाख (हिं०) अभिलाष देखो।

अभिलाखना (हिं० क्रि०) उत्कण्ठित होना, ख्वाहिश करना।

अभिलाखा (हिं० स्त्री०) अभिलाष देखो।

अभिलाखी (हिं०) अभिलाषिन् देखो।

अभिलाप (सं० पु०) अभिलप्यते मानसं कर्म अनेन। अभि-लप् करणे घञ्। १ सङ्कल्पवाक्य। भावे घञ्। २ कथन, बातचीत।

अभिलाव (सं० पु०) अभिलूयते, अभि-लू भावे घञ्। छेदन, चीरफाड़।

अभिलाष (सं० पु०) अभि-लष-घञ्। १ इच्छा, ख्वाहिश। २ लोभ, लालच। ३ अनुराग, मुहब्बत।

अभिलाषक (सं० त्रि०) अभि-लष-ण्वुल्। अभिलाषकारी, ख्वाहिशमन्द। (स्त्री०) अभिलाषिका।

अभिलाषा (सं॰ स्त्री॰) अभिलाष देखो।

अभिलाषिन् (सं॰ त्रि॰) अभिलषति, अभि-लष णिनि। अभिलाषशील, अभिलाषकारी, ख्वाहिशमन्द, लालची। (स्त्री॰) ङीप्। अभिलाषिणी।

अभिलाषुक (सं॰ त्रि॰) अभिलषितु शीलमस्य अभिलषति वा, अभि-लष वाहुलकात् उकञ्। अभिलाषुक, ख्वाहिशमन्द।

अभिलास, अभिलाष देखो।

अभिलासा, अभिलाषा देखो।

अभिलिखित (सं॰ त्रि॰) पत्रारूढ़, अक्षराकृत, लेख्यारोपित, पत्थर में खोदा हुआ, जो तसवीरमें रखा हो।

अभिलीन (सं॰ त्रि॰) १ संलग्न लिपट जानेवाला। २ हृदयसे लगाया हुआ, किसी छातीसे लिपटा हुआ। ३ हृदयसे लगाये हुआ, जो छातीसे लिपटा रहा हो।

अभिलुप्त (सं॰ त्रि॰ छिन्न, ताड़ित घबराया हुआ जिसको चोट लग गयी।

अभिलुलित (सं॰ त्रि॰) १ क्रीड़ाशील, चञ्चल, खेलाड़ी, चुलबुला। २ उत्तेजित, उद्विग्न, आहत, चोट खाये हुआ, जो घबरा गया हो।

अभिलूता (सं॰ स्त्री॰) कीटविशेष, किसी किस्मकी मकड़ी।

अभिलेखन (सं॰ क्ली॰) अक्षराकरता, पाषाण वा शिलालेख अर्थको खोदाई, जो तसवीर पत्थर वग़ैरह पर खा जाती हो।

अभिवचन (सं॰ क्ली॰) सत्यवचन, प्रतिज्ञा, क़ौल, इक़रार।

अभिवञ्चित (सं॰ त्रि॰) प्रतारित, अभिसन्धानित धोखा खाये हुआ, जो ठगा गया हो।

अभिवत् (सं॰ त्रि॰) अभि शब्दसंयुक्त जिसमें अभि लफ़्ज़ शामिल रहे।

अभिवदन (सं॰ क्ली॰) अभि अनुकूलं वदनं कथनम्, प्रादि तत्। १ अनुकूल वाक्य, मुवाफ़िक़ बातचीत। (त्रि॰) अभि अनुकूलं वदनं वाक्यं मुखं वा यस्य प्रादि-बहुव्री॰। २ अनुकूलवादी, प्रसन्नमुख, मुवाफ़िक़ बात करनेवाला, खुशदिल। (अव्य॰) वदनस्य मुख आभिमुख्यम्, अव्ययी॰। ३ मुखके सामने, चेहरेके पास।

अभिवन्दन (सं॰ क्ली॰) अभितः सर्वत आभिमुख्येन वा वन्दनम् प्रादितत्। सकल दिक्प्रणति, सब ओर प्रणाम, आदाब-सलामत।

अभिवयस (सं॰ त्रि॰) अभिमत वयः, प्रादि तत्। १ अभिमत वयस ठीक उमरवाला। विवाहादिके समय वयस अधिक वा न्यून न होनेसे वर अभिमतवयस कहा जा सकता है। अभिमतं सम्मतं वयो यस्य, प्रादि-बहुव्री। २ प्रकट वयस्क, नौ जवान्।

अभिवर्तिन् (सं॰ त्रि॰) अभितः अभिमुखेन वा वर्तते, अभि-वृत णिनि। सम्मुखवर्ती, सम्मुखस्थायी, सामने आनेवाला, जो पास पहुंच रहा हो, हमलावर।

अभिवर्षण (सं॰ क्ली॰) अभितो वर्षणम्, प्रादि-तत्। १ सकल दिक् वर्षण, भीषण वृष्टि, गहरी बारिश। २ सिंचाई पानीका दिया जाना।

अभिवर्षिन् (सं॰ त्रि॰) अभितो वर्षति, अभि-वृष णिनि। सकल दिक् वर्षणकारी, सब तरफ़ बरसनेवाला। (स्त्री॰) ङीप्। अभिवर्षिणी।

अभिवह (सं॰ त्रि॰) निकट या सम्मुख ले जानेवाला, जो हांकते जा रहा हो।

अभिवहन (सं॰ क्ली॰) निकट या सम्मुखका पहुंचाना, नज़दीक या सामनेका ले जाना।

अभिवाञ्छित (सं॰ त्रि॰) इच्छा किया हुआ, जो चाहा गया हो।

अभिवात् (सं॰ त्रि॰) आभिमुख्येन याति गच्छति, अभि या डत्। अधम दास, नौकर, ग़ुलाम।

अभिवात (सं॰ अव्य॰) वायुकी ओर, हवाकी तर्फ़, जिस तरफ़को हवा चले।

अभिवाद (सं॰ पु॰) अभितो वादः आशीर्वादरूप वाक्यम् येन प्रादि-बहुव्री॰। अभि वद करणे घञ्। १ सम्मुख प्रणाम, आदाब सलामत। अभिवर्धको वादः वाक्यम् प्रादि तत्। २ परुष वाक्य, कठिन वचन, कड़ी बात, गालीगलौज। '[illegible]'। (अमर)

अभिवादक (सं॰ त्रि॰) अभितो वदति, अभि-वद-णिच् ण्वुल्। १ सम्मुख प्रणतिकारक, वन्दारु, वन्दना करनेवाला। 'वन्दारुरभिवादके'। (अमर)

अभिवादन (सं॰ क्ली॰) अभि पूजार्थं वादनं स्वनाम-

अभिवादये इत्यादिरूपं कथनम्, प्रादि-तत्; अभि-चुरा० वद-णिच्-लुग्रट्। १ पूजार्थं वाक्य, गौरवार्थ वाक्य, जो बात किसीको इज्जत बढ़ानेके लिये कही गयी हो। यद्वा अभि: सौम्ये सौम्यं आशीर्वादरूपं वाच्यते प्रत्यभिवादयिता कथ्यते येन। २ नामग्रहणपूर्वक प्रणाम, नाम लेकर वन्दगीका बजाना। जिसके हाथमें समिध्, जल, जलका कलस, फूल, अन्न, कुश, अग्नि, दतून और भक्ष्यवस्तु रहे, उसे अभिवादन न देना चाहिये। किंवा जो जप वा यज्ञ करता या जलमें खड़ा हो, उसे भी अभिवादन करनेका निषेध है। वय:कनिष्ठ श्वशुर, पितृव्य, मातुल एवं पुरोहित को खड़े ही खड़े अभिवादन दिया जाता अर्थात् पैर न छूना चाहिये।

अभिवादयिता (सं० पु०) अभिवादयितृ देखो।

अभिवादयितृ (सं० त्रि०) सगौरव प्रणतिकारी, अदवके साथ सलाम करनेवाला।

अभिवादयित्री (सं० स्त्री०) अभिवादयितृ देखो।

अभिवादित (सं० त्रि०) सगौरव प्रणाम किया हुआ, जिसको अदवके साथ वन्दगी हो चुके।

अभिवाद्य (सं० त्रि०) अभिवादयितुमर्हम्, अभि-चुरा० वद-णिच्-यत्। १ अभिवादनके योग्य, जिसे प्रणाम करना कर्तव्य ठहरे, अदवसे वन्दगी बजाने काबिल। पिता, गुरु, सवर्ण वयोज्येष्ठ, राजा, पुरोहित, श्रोत्रिय, अधर्मनिवारक, अध्यापक, पितृव्य, मातामह, मातुल, श्वसुर, ज्येष्ठभ्राता, सम्बन्धिव्यक्ति, इनकी स्त्री सकल वयोज्येष्ठा, मौसी, पितृष्वसा, ज्येष्ठा भगिनी आदि अभिवाद्य हैं। युवती गुरुपत्नीके पैर न छुना चाहिये। किसी-किसीके मतमें गुरुके पैर छूकर प्रणाम करना निषिद्ध है। (अव्य०) ल्यप्। प्रणाम करके, आदाव बजाकर।

अभिवान्य (सं० त्रि०) अभि-वन सम्भक्तौ कर्मणि ण्यत्। संभजनीय, सम्यक् भजनाके योग्य।

अभिवान्यवत्सा, अभिवान्या देखो।

अभिवान्या (सं० त्रि०) दूसरेके बच्चेको दूध पिलानेवाली गाय, जो गाय दूसरी गायके बच्चेको अपना समझकर दूध पिलाती हो।

अभिवास (सं० पु०) आच्छादन, आवरण, पोशिश, ओढ़ना, चादर, गिलाफ़।

अभिवासन (सं० क्ली०) अभिवास देखो।

अभिवासस् (सं० अव्य०) वासस् उपरि, अव्ययी०। परिहित वस्त्रके उपरिभाग, कपड़े पर।

अभिवाह्य (सं० त्रि०) अभ्युह्यते, अभि-वह कर्मणि ण्यत्। १ सकल दिक् वा सकल प्रकार वहनीय, नजदीक पहुंचाया जानेवाला। (क्ली०) भावे ण्यत्। २ नयन, प्रापण, इन्तिकाल, तकवील, ले जाना। ३ समर्पण, नज़र।

अभिविख्यात (सं० त्रि०) लोकप्रसिद्ध, खूब मशहूर, जिसे सब लोग जानें।

अभिविज्ञप्त (सं० त्रि०) विघोषित, सूचित, मुश्तहर, जो लोगोंको बता दिया गया हो।

अभिविधि (सं० पु०) अभि समन्तात् विधि व्यापनम्, अभि वि धा-कि। व्याप्ति, इन्दिराज, समायी।

अभिविनीत (सं० त्रि०) १ भली भांति बरताव करनेवाला, जो अच्छीतरह पेश आता हो। २ सुशील, सुअद्दब। ३ साधु, पाकीजा।

अभिविमान (सं० पु०) अभित: विशेषेण मानं द्वादशाङ्गुलरूपपरिमाणं यस्य, प्रादि बहुव्री०। १ परमात्मा, परमेश्वर। (त्रि०) २ अपरिमित परिमाणवाला, जिसकी जसामत बेहद रहे।

अभिविशङ्कित् (सं० त्रि०) भयभीत, डरनेवाला।

अभिविश्रुत (सं० त्रि०) सुप्रसिद्ध, खूब मशहूर।

अभिवीक्षित (सं० त्रि०) संदृष्ट, देखा हुआ, जो मालूम पड़ गया हो।

अभिवीक्ष्य (सं० अव्य०) देख या समझकर।

अभिवीर (सं० पु०) पुरुषों वा वीरोंसे आवेष्टित व्यक्ति, जिस शख्सको आदमी या बहादुर घेरे रहें।

अभिवृत (सं० त्रि०) व्यावृत, उद्धृत, चुना हुआ, जो छांट कर निकाला गया हो।

अभिवृत्त (सं० त्रि०) १ गया हुआ, जो रवाना हो चुका हो। २ घूम जानेवाला, जो रुख बदल रहा हो।

अभिवृत्ति (सं० स्त्री०) अभि-वृत्-क्तिन्। सर्वथा गमन, दौड़ धूप।

अभिवृद्ध (सं॰ त्रि॰) विस्तारित, प्रसृत बढ़ा हुआ जो फैल गया हो।

अभिवृद्धि (सं॰ स्त्री॰) समृद्धि संयोग, सफलता, बढ़ती, मेल, कामयाबी।

अभिवृष्ट (सं॰ त्रि॰) १ सिंचित सींचा हुआ जिसमें पानी दे चुके। २ बरसा हुआ, जो बरस चुका हो।

अभिवेग (सं॰ पु॰) विचार, अभीष्ट, ख़याल, इरादा।

अभिव्यक्त (सं॰ त्रि॰) अभि वि-अन्ज कर्मणि क्त। १ प्रत्यक्षीभूत, ज़ाहिर, साफ़। "[illegible]" (शतपथ) २ अभिव्यक्तियुक्त, प्रकाशित ज़ाहिर किया हुआ, जो बताया गया हो। ३ सांख्यादि मतसिद्ध आविर्भावयुक्त। (अव्य॰) ४ प्रकाश्यभावसे साफ़ साफ़।

अभिव्यक्ति (सं॰ स्त्री॰) अभि वि-अन्ज-क्तिन्। १ प्रकाश, ज़हूर। २ बोधका ठिकाना। ३ सांख्यादि मतसिद्ध सूक्ष्मरूपस्थित कारणका कार्यरूप आविर्भाव। ४ एकरूप भिन्न पदार्थका भावरूप प्रकाश।

अभिव्यङ्ग्य (सं॰ त्रि॰) प्रकाशित किया जानेवाला, जो साफ़-साफ़ बताने क़ाबिल हो।

अभिव्यज्यमान (सं॰ त्रि॰) प्रकाशित किया जाते हुआ, जो साफ़-साफ़ बताया जा रहा हो।

अभिव्यञ्जक (सं॰ त्रि॰) अभिव्यनक्ति प्रकाशयति, अभि-वि अन्ज णिच्-ण्वुल्। १ प्रकाशक, ज़ाहिर करनेवाला। २ निर्दर्शक, जो बताता हो। ३ अलङ्कारमतसे व्यञ्जनावृत्ति द्वारा प्रकाशक।

अभिव्यञ्जन (सं॰ क्ली॰) प्रकाशन, ज़ाहिर करनेकी हालत।

अभिव्यादान (सं॰ क्ली॰) १ नियमित शब्द, दबी हुयी आवाज़। २ अभिन्न शब्दकी पुनरावृत्ति, उसी आवाज़का दोहराव।

अभिव्याधिन् (सं॰ त्रि॰) आघातकारी, प्रतिबन्धदायक, मार डालनेवाला, जो गहरी चोट लगाता हो।

अभिव्यापक (सं॰ त्रि॰) अभितो व्याप्नोति, अभि-वि-आप-ण्वुल्। सकल दिक् व्यापक, जो सकल अवयवमें व्याप्त हो, सब ओर भरा हुआ, जो सब अङ्गोंमें समा रहा हो। २ व्याकरणमतसे—सकल अवयव व्याप्त आधार अभिव्यापक होता है।
"[illegible]" (सिद्धान्तकौमुदी)

अभिव्याप्त (सं॰ त्रि॰) सम्मिलित शामिल, मिला हुआ।

अभिव्याप्ति (सं॰ स्त्री॰) अभि-वि आप् भावे क्तिन्। सकल दिक् व्यापन, सर्वत्र अवस्थान, सकल अवयव व्याप्ति, सब तर्फ़ समायी, सब जगह रहाइश, सब अङ्गोंकी पैठ।

अभिव्याप्य (सं॰ त्रि॰) अभिव्याप्यते, अभि-वि-आप् कर्मणि ण्यत्। १ सकल अवयव व्यापनीय, सब अङ्गोंमें समा जानेवाला। (अव्य॰) ल्यप्। २ सकल अवयवमें व्याप्त होकर, सब अङ्गोंमें समाके।

अभिव्याहरण (सं॰ क्ली॰) अभिव्याहार देखो।

अभिव्याहार (सं॰ पु॰) अभि सीमया व्याहार उक्तिः, अभि-वि-आ-हृ-घञ्। १ मर्यादा उक्ति, भली बात। २ उच्चारण, तलफ़्फ़ुज़।

अभिव्याहारिन् (सं॰ त्रि॰) उच्चारण करनेवाला, जो कह रहा हो।

अभिव्याहृत (सं॰ त्रि॰) उच्चारित, कहा हुआ, जो मुंहसे निकल गया हो।

अभिशुक (वै॰ पु॰) आक्रमण करता चढ़ाई।

अभिशंसक (सं॰ त्रि॰) १ अभियोग लगानेवाला, जो इलज़ाम लगाता हो। २ अपमान करनेवाला, जो इज़्ज़त उतारता हो। ३ अपशब्द कहनेवाला, जो गाली देता हो।

अभिशंसन (सं॰ क्ली॰) अभितः शंसनं दोषकथनं आरोप्यापवादो वा, अभि-शन्स-ल्युट्। १ अपवाद, इलज़ाम। २ परुष वाक्यप्रयोग, कड़ी बातका कहना। ३ आक्रोश, बददुआ।

अभिशंसिन्, अभिशंसक देखो।

अभिशङ्क (सं॰ त्रि॰) अभित शङ्का यस्य,प्रादि-बहुव्री॰। सर्वथा शङ्कायुक्त, जिसे सब तरह शक बना रहे।

अभिशङ्का (सं॰ स्त्री॰) अभितः शङ्का, प्रादि तत्, अभि-शङ्क-भावे अ टाप्। १ सर्वथा शङ्का, सकल प्रकार आशङ्का, संशय, भ्रम, शक।

अभिशङ्कित (सं॰ त्रि॰) शङ्कायुक्त, भयभीत, शक करनेवाला, खौफज़दह, जिसे डर लग चुके।

अभिशपन (सं॰ क्ली॰) अभिशाप देखो।

अभिशप्त (सं॰ त्रि॰) अभिशप्यते स्म, अभि-शप कर्मणि क्त। १ अभिशापग्रस्त, शापित, जिसे बद्दुवा दी जा चुके। २ अभियोग लगाया हुआ, जिसपर इलज़ाम लग चुके। ३ निन्दित, बदनाम।

अभिशब्दित (सं॰ त्रि॰) आभिमुख्येन शब्दितम्। सम्मुख आहूत, सम्मुख कथित, सामने सुनाया हुआ, जो मुंहपर कहा गया हो।

अभिशस् (सं॰ त्रि॰) अभि-शन्स-क्विप्। १ सर्वथा आक्रोशकारी, सबतरह बद्दुवा देनेवाला। २ सर्वथा अपवादकारी, सब तरह इलज़ाम लगानेवाला। (वै॰ स्त्री॰) ३ अभियोग, इलज़ाम।

अभिशस्त (सं॰ त्रि॰) अभिशस्यते स्म, अभि-शन्स-क्त। १ मिथ्यापवादित, झूठ मूठ बदनाम। अभि-वधे क्त। २ हिंसित, आक्रान्त, मारा हुआ, जो चोट खा चुका हो। (क्ली॰) शन्स शस् वा भावे क्त। ३ आक्रोश, अभिशाप, अपवाद, हिंसन, बद्दुवा, बद-नामी, मारपीट।

अभिशस्तक (सं॰ त्रि॰) १ मिथ्यापवादित, झूठ-मूठ बदनाम। २ शापित, जिसको बद्दुवा दी गयी हो। ३ अभिशापसे उत्पन्न, जो बद्दुवासे पैदा हुआ हो। (स्त्री॰) अभिशस्तिका।

अभिशस्ता, अभिशस् देखो।

अभिशस्ति (सं॰ स्त्री॰) अभि-शन्स-क्तिन्। १ अभि-शाप, बद्दुवा। २ अपवाद, बदनामी। ३ हिंसा, क़त्ल। आभिमुख्येन शस्तिर्याचनम्। ४ प्रार्थना, अर्ज़।
'अभिशस्ति पुमर्थोकापवादे प्रार्थनेऽपि च।' (हेम)

अभिशस्तिचातन (वै॰ पु॰) अभिशाप निवारण, बद-दुवाका दूर रखना।

अभिशस्तिपा (वै॰ पु॰) अपवाद वा अभिशापसे बचानेवाला व्यक्ति, जो शख्स बदनामी या बद्दुवासे बचाता हो।

अभिशस्तृ (सं॰ पु॰) शत्रु, हानिकर्ता, दुश्मन, नुक़सान् पहुंचनेवाला।

अभिशस्त्य (सं॰ त्रि॰) अभिशस्तिं अभिशापं अर्हति यत्। अभिशापार्ह, हिंसाके योग्य, बद्दुवा देने क़ाबिल, जो मारा जाने लायक़ हो।

अभिशान्त्व (सं॰ क्ली॰) अनुग्रह, कृपा, मेहरबानी, नेवाज़िश।

अभिशाप (सं॰ पु॰) अभि-शप-घञ् वा दीर्घः। १ अभिसम्पात, आक्रोशवाक्य, बद्दुवा, कोसनेकी बात। २ मिथ्यापवाद, झूठी बदनामी।

अभिशापज्वर (सं॰ पु॰) अभिशापके कारण आया हुआ ज्वर, जो बुखार बद्दुवाके सबब चढ़ आता हो।

अभिशापित (सं॰ त्रि॰) अभिशाप दिया हुआ, जिसको बद्दुवा दी गयी हो।

अभिशिरोग्र (सं॰ त्रि॰) शिरसोऽभिमुखं अग्रमस्य, बहुव्री॰। ऊर्ध्वदिक् मूल एवं निम्नदिक् शाखावाला, जिसकी जड़ ऊपर और डाल नीचे जाये।

अभि-शीत (सं॰ त्रि॰) बहुत ठण्डा, निहायत सर्द।

अभिशीन (सं॰ त्रि॰) घनीभूत, जो गाढा हो गया हो।

अभिशोक (सं॰ पु॰) अभिलक्षीकृत्य कमपि शोकः, प्रादि-तत्। १ किसीको लक्ष्यकर शोक करनेवाला व्यक्ति, जो शख्स किसीको देख अफ़सोस करता हो। (क्ली॰) शुच-ल्युट्। २ अभिशोचन, पछतावा।

अभिशोच (सं॰ त्रि॰) चमत्कृत, प्रदीप्त, चमकीला, जो गर्मीसे चमक रहा हो।

अभिशोचयिष्णु, अभिशोच देखो।

अभिशौरि (सं॰ अव्य॰) शौरिकी ओर, कृष्णकी तर्फ़।

अभिश्यान, अभिशीन देखो।

अभिश्रव (वै॰ पु॰) अभि-श्रु-अप् वेदे घञ्। सर्वथा श्रवण, सकल दिक् श्रवण, सबतरह सुनायी, चारो ओरका सुनना।

अभिश्रवण (वै॰ क्ली॰) वेदके मन्त्रविशेषका पुनः पुनः उच्चारण, श्राद्ध करनेकी बैठना।

अभिश्राव, अभिश्रव देखो।

अभिश्री (वै॰ पु॰-स्त्री॰) १ संयोजक, जोड़नेवाला, जो मिला रहा हो। २ नियमसे रखनेवाला, जो

तरताव बनाता हो। ३ अरक्षापन्न, पनाह पा जाने क़ाबिल। ४ सम्मानित, इज्जतदार। ५ प्रदीप्त, चमकती हुआ। ६ शक्तिमानकी ताक़तवर।

अभिश्रेषण (सं० स्त्री०) बन्धन, मैथुन रज्जु, पट्टे बांधनेकी चिट।

अभिश्वस् (सं० त्रि०) ऊपर सांस लेनेवाला, जो किसीकी तर्फ़ सांस चलाता हो।

अभिश्वास (वै० पु०) उच्छ्वास, उद्गमन, उद्गमन, सांसका छोड़ देना।

अभिश्रीत (सं० त्रि०) अभि अपगतं श्रीर्यं समासान्त प्रत्यय प्रादि बहुव्री०। गुरुवर्जित, जिसका समाज पवित्र रहे मैकाचरण, पाकीज़ा मिज़ाजवाला।

अभिषक्त (सं० त्रि०) दबित, पराजित, अभिभूत, निन्दित, पायमाल, शिकस्त, जिसको बददुआ हो गयी हो, बदनाम।

अभिषङ्ग (सं० पु०) अभित सङ्गो मिलनम् आसक्तिर्वा शेन; प्रादि बहुव्री०, अभि सञ्ज-घञ्। १ शपथ, क़सम। २ आक्रोश, बददुआ। ३ पराभव, हार। 'अभिषङ्ग स्पृशे ममभोरि ...।' (शिव) ४ आसक्ति, लगाव। ५ व्यसन, दुःख आहत, तकलीफ़। "...अभिषङ्गम्।" (माघ ८६) 'अभिषङ्ग... ...।' (...) ६ पूर्व संयोग पूरा मेल। ७ सङ्गति, सोहबत। ८ आलिङ्गन, छातीसे छातीका प्रेमसे मिलाना। ९ प्रेतबाधा, प्रेतात्माका साया।

अभिषङ्गज्वर (सं० पु०) भूतादिके आवेशसे आया हुआ ज्वर, जो बुखार प्रेतात्मके साथे सबब चढ़ता हो। यह ८ प्रकारका होगा। वैद्यकमें लिखा है,—

"अभिषङ्गाभिचाराभ्यामभिशापाभिषङ्गतः।
आगन्तुर्जायते दोषैर्यथास्वं तं विभावयेत्॥" (माधवनिदान)

पुनश्च,—

"कामशोकभयक्रोधैरभिषङ्गो ज्वरो भवेत्।
... ...॥" (चरक नि)

अभिषवा (वै० स्त्री०) मैदका बाक्य विशेष।

अभिषव (सं० पु०) अभि-सु-अप्। १ यज्ञीय स्नान मज्जनका मुसल। २ निष्पीड़न, सोमलताका निचोड़। ३ मद्यसन्धान, आबकारी। ४ सुरामण्ड, क़ायोत्तर, क़मीर। ५ सोमलताका रसपान। वैदिक समयमें ऋषि प्रस्तरपर सोमको लाद लाते थे। उसके बाद बड़ो लता प्रस्तरपर रख अन्य प्रस्तर द्वारा दबा देते रहे। अच्छीतरह दब जानेसे मेढ़के चमड़ेकी मसकमें उसे भरते और कूट-कूट कर रस निकालते थे। मसकका रोयेंदार चमड़ा भीतरकी ओर रहता था। पीछे बड़ो रस पुनर्बार ऊनके आधारसे छान लेनेपर परिष्कार होते रहा। ऋषि कुम्भके भीतर रख सोमरसमें यव, चीनी प्रभृति नानाप्रकार द्रव्य मिला देते थे। उसीमें अन्तरसुरसिद्ध होकर मद्य प्रस्तुत होते रहा।

सूयते क्षायते अस्मिन् अधिकरणे अप्। ६ यज्ञ। ७ वेदमाध्यके मतसे सीवीरादि द्रव वा तप्त द्रव्य।

"हनी हर्व वा ...।"
'...सौवीरादिक ...र्व वा ...।
(...)

अभिषवण (सं० स्त्री०) अभि सु-ल्युट्। अभिषव देखो।

अभिषवणी (सं० स्त्री०) सोम निष्पीडनका यन्त्र, जिस चौकठे सोम दबाया जाये।

अभिषवणीय (सं० त्रि०) सोमरसकी भांति निचोड़ जाने योग्य, जो कूट दबाने क़ाबिल हो।

अभिषह्य (सं० त्रि०) अभित सोढु शक्यम् अभि-सह् यत्। १ सहन करने योग्य, जो बरदाश्त करने क़ाबिल हो। (अव्य०) २ बलपूर्वक, ज़ोरसे।

अभिषाह् (सं त्रि०) अभि-सह् कर्तरि क्विप्। सम्मुख बन्धन करनेमें समर्थ, अभिभावक, सामने बांध सकनेवाला, जो जकड़न् कर सकता हो।

अभिषावक (सं० पु०) सोमरस निचोड़नेवाला व्यक्ति।

अभिषावकीय (सं० त्रि०) अभिषावक-सम्बन्धीय, जो सोम निचोड़नेवालेसे अपना लगाव रखता हो।

अभिषाह, अभीषाह् (सं० त्रि०) अभि सह-क्विप् कर्तरि क्विप् क्विप् वा। १ पराजयकारी, दुश्मनको जीतने वाला। २ सहनकारी, जो बरदाश्त कर लेता हो।

अभिषिक्त (सं० त्रि०) अभिषिच्यते स्म, अभि सिच् क्त। १ विधिपूर्वक स्नापित, जो मन्त्रकी तौरपर नहलाया गया हो। प्रतिमाकी प्रतिष्ठा और राजाके

राज्यभार पाने इत्यादि शुभकार्यमें तीर्थजलादि द्वारा विधिपूर्वक लोग नहाते हैं।

अभिषिषिचत् (सं॰ वि॰) अभिषेक करनेका इच्छुक, जिसे तेल चढ़ानेकी ख्वाहिश लगी रहे।

अभिषुक (सं॰ पु॰) काबुल वगैरहका मशहूर मेवा, पिस्ता।

अभिषुत (सं॰ त्रि॰) अभिषूयते स्म, अभि-सु-क्त। १ निष्पीड़ित,सोमरसको भांति निचोड़ा हुआ। (क्लो॰) २ कांजी।

अभिषुविक्रान्त (सं॰ पु॰) माधवीसुरा, महुवेकी शराब।

अभिषेक (सं॰ पु॰) अभिषेचनं अभि-सिच-भावे घञ्। विधान अनुसार शान्तिके लिये सेचन, अधिकार पानेके लिये स्नान, मन्त्रसे शिरपर जल छिड़ककर मार्जन, कर्तव्य कर्मके अन्तमें शान्तिस्नान, पुरश्चरणके अन्तर्गत मन्त्रद्वारा शिरपर जल छिड़कनेका तीसरा काम। इष्टमन्त्रग्रहण करते समय दश प्रकारके संस्कारमें पांचवां संस्कार विशेष। यथा गौतमीये

"जननं जीवनं पश्चात्ताड़नं बोधनं तथा।
अथाभिषेको विमलीकरणाप्यायने पुनः।
तर्पणं दीपनं गुप्तिर्दशैता मन्त्रसंस्क्रिया॥"

जनन, जीवन, ताड़न, बोधन, अभिषेक, विमलीकरण, आप्यायन, तर्पण, दीपन, गोपन, मन्त्रका यही दश प्रकार संस्कार है।

मन्त्राभिषेककी प्रणाली इस तरह लिखी हुई है,—स्वर्ण अथवा ताम्रादिके पात्रपर पहले स्वरव्यञ्जन-भेदसे कुङ्कुमद्वारा मन्त्रको लिखना चाहिये। फिर उसके ऊपर तालपत्रादि रखकर पंक्ति पंक्ति मन्त्र लिखे। अन्तमें,—'अमुकवर्णमभिषिञ्चामि नमः'—यह मन्त्र सौ,बीस या आठ बार उच्चारण कर कुङ्कुमसे लिखे हुए मन्त्र द्वारा प्रत्येक वर्णको पोपलके पल्लवसे अभिषेक करना पड़ेगा।

शक्तिमन्त्र द्वारा दीक्षा देते समय मधुसे अभिषेक करना होता है। विष्णुमन्त्रमें कर्पूरयुक्त जल प्रशस्त है। शिवमन्त्रमें घी अथवा दूध देना चाहिये।

शिवलिङ्गादि प्रतिष्ठा एवं दोलयात्रादि उत्सवमें भी अभिषेकको पद्धति है। किन्तु सब क्रियाका अभिषेक द्रव्य समान नहीं होता।

दोलयात्रा अभिषेकके द्रव्य यह हैं,—शीतल जल, गायका गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी, कुशका जल, गन्धका जल, चन्दनका जल, कुङ्कुमका जल, फूलका जल, फलका जल, चन्दन और अंवरा—इन सबको एक साथ पीस कर उसका प्रलेपन और सुगन्धि जल। इन सब वस्तुओंसे आठ बार स्नान कराना चाहिये। दूसरी बार स्नानके समय अभिषेक-द्रव्योंके साथ दूध मिलाते हैं। पांचवों बारके समय घी और आठवीं बारके समय उसमें मधु मिला देना आवश्यक है। अन्तमें अन्यान्य द्रव्योंके साथ गन्धोदक, तीर्थ-जल, गङ्गाजल, वल्मीक जल, सर्वौषधि-जल, सहस्र-धारा-जल, घड़ेका जल—इन सब द्रव्योंसे अभिषेक करते हैं।

दुर्गापूजाके अभिषेकमें यह सब द्रव्य व्यवहृत होते हैं,—पिसे हुए अंवरेमें हलदी मिलाकर उसका प्रलेपन, शुद्धजल, गन्धका जल, गङ्गाजल, गन्धोदक, पञ्चगव्य, कुशका जल, पञ्चामृत, शिशिरका जल, मधु, फूलका जल, इक्षुरस, सागरका जल, सर्वौषधि-महौषधि-जल, पञ्चकषायका जल, अष्ट मृत्तिका, फलका जल, उष्ण जल, सहस्रधारा-जल, वृष्टि-मन्दाकिनी-सरस्वती-सागर पद्मरेणुमिश्रित-निर्झर-सर्वतीर्थ-शुद्धजल, इन आठ प्रकारके जलोंसे पूर्ण आठ घड़े रखे। फिर इन आठ प्रकार घड़ेके जलोंसे स्नान कराते समय आठ प्रकारके बाजे बजाने और राग आलापनेका विधि है। वृहन्नन्दिकेश्वर, देवीपुराण और कालिकापुराणमें भिन्न भिन्न बाजों और रागरागिणियोंके नाम पाये जाते हैं।

वृहन्नन्दिकेश्वरके मतसे इन सब राग रागिणियोंमें यह गीत होना चाहिये,—१ मालश्री, २ देवकीरी, ३ वराड़ी, ४ देशाख्य, ५ धनाश्री, ६ भैरवी, ७ गुर्जरी, ८ वसन्त। देवीपुराणके मतसे,—१ वराड़ी, २ मालवगौड़, ३ मालव, ४ देशाख्य, ५ मालश्री, ६ भैरवी, ७ वसन्त, ८ कोडा। कालिकापुराणके मतसे,—

१ मालव २ ललिता, ३ विभाषा, ४ भैरवी, ५ कोड़ा, ६ बराड़ी, ७ बसन्त, ८ धनाश्री ।

बाजेके विषयमें यह लिखा है। ब्रह्मनन्दिकेश्वरके मतसे,—१ शङ्खोद्भव, २ भुवनविजय, ३ विजय, ४ राजाभिषेक ५ मधुरो, ६ करताल, ७ बंशी, ८ पञ्चशब्द। देवीपुराणके मतसे—१ इन्द्रविजय, २ मालवविजय, ३ देवोत्सव, ४ करताल, ५ मधुकर, ६ ढक्का, ७ शंख ८ मृदङ्ग। कालिकापुराणके मतसे,—१ विजय, २ विजयदुन्दुभि, ३ दुन्दुभि, ४ बंशी, ५ इन्द्राभिषेक, ६ शङ्ख, ७ पञ्चशब्द।

राज्याभिषेकके लिये यह सब द्रव्य कहे गये हैं—मृगचर्मास्तीर्ण अलङ्कृत कक्ष, महासन गङ्गा और यमुनाके सङ्गमस्थलका जल, सब पुनीत नदियोंका जल, पूर्वमुखको नदीका जल, पश्चिममुखको नदीका जल, तिर्यङ्मुख नदीका जल, सब समुद्रोंका जल, गोरोचन प्रशस्त पद्म नीलपद्म प्रभृति मिश्रित काञ्चन कुम्भपूर्ण जल, रजत रोचना, घृत, मधु दुग्ध दधि पुष्पतोयमिश्रित पुष्पतोयजल, माङ्गल्यद्रव्य, मणि रत्नयुक्त श्वेतचामर व्यजन माल्यभूषित श्वेतच्छत्र श्वेतध्वज, श्वेतपद्म, हरित् रङ्गको उत्तम अलङ्कारभूषित अष्ट कन्या, सब तरहके बाजे, [illegible] बन्दी।

अभिषेकके एक दिन पहले गणेश और मातृकादिको पूजा करके नान्दीश्राद्ध सम्पन्न करना होता है। राजा और रानी उपवास करेंगी। दूसरे दिन पुरोहित, अमात्य और सामन्तोंको लेकर स्नानादिके बाद जब राजा और रानी मणि, काञ्चन, हाथियों, पुष्प प्रभृति स्पर्श कर लें, तब उन्हें व्याघ्रचर्म आच्छादित आसनपर बैठाना चाहिये। उसके बाद अग्नि स्थापनकर ब्रह्मादि अग्निद्वारा घृतकी आहुति देना होगा। अन्तमें ऋत्विगण अमात्य प्रभृति सबको लेकर अष्टकन्या-परिवृत रानीसहित राजाको अभिषेक करेंगे। अभिषेक हो जानेपर सब कोई राजा और रानीके कपालमें कुङ्कुम, अगुरु, कस्तूरी प्रभृतिका तिलक देंगे।

राज्याभिषेक देखो।

अभिषेकशाला (सं॰ स्त्री॰) राज्यतिलकका भवन, जिस भवनमें बादशाहको ताजपोशी की जाय।

अभिषेकार्द्रशिरस् (सं॰ त्रि॰) अभिषेकसे सिर भिगोये हुआ, अभिषिक्त, जिसका सर मन्त्रके जलसे तर रहे।

अभिषेकाह (सं॰ पु॰) अभिषेकका दिन, जिस रोज मन्त्रको गुरुसे ले।

अभिषेक्तृ (सं॰ त्रि॰) अभिषिञ्चति अभि-सिच्-तृच्। अभिषेककर्ता, मन्त्रको [illegible] करनेवाला। (स्त्री॰) ङीप्। अभिषेक्त्री।

अभिषेक्य (सं॰ त्रि॰) अभिषेकमर्हम्, अभि-सिच्-ण्यत् कुत्वम्। अभिषेकके योग्य।

अभिषेचन (सं॰ क्ली॰) अभि-सिच् भावे ल्युट्। १ अभिषेक, धार्मिक स्नान, मन्त्रको [illegible]। अभिषेक देखो। कारणे ल्युट्। २ अभिषेक द्रव्य जल घृतादि।

अभिषेचनीय (सं॰ त्रि॰) अभि-सिच् कर्मणि अनीयर्। अभिषेकके योग्य जिसको अभिषेक देना उचित हो।

अभिषेचनीयस् (सं॰ पु॰) यज्ञविशेष यह राजाका अभिषेक होते समय किया जाता है।

अभिषेचित (सं॰ त्रि॰) अभिषिक्त अभिषेक कराया हुआ, जिसका अभिषेक हो चुके।

अभिषेच्य, अभिषेक्य देखो।

अभिषेच (सं॰ पु॰) अभिषेचन देखो।

अभिषेणन (सं॰ क्ली॰) स्वः राजा प्रतियो सेन सह वर्तते सेना तया अभिमुखं याति शत्रोः, अभि सेना-णिच् ल्युट् अत्र णत्व। १ युद्धनिमित्त जयेच्छु व्यक्तिका सेनाको साथ लेकर शत्रुके सम्मुख गमन, लड़ाईको फौज लेकर दुश्मनके सामनेको पहुंच। २ अभिमुख बाणसन्धान, सामनेकी तीरन्दाजी।

अभिषेणयिषु (सं॰ त्रि॰) सेना लेकर पहुंचनेका इच्छुक, जो फौज लेकर दुश्मनके सामने पहुंचनेका ख़्वाहिशमन्द हो।

अभिष्टन (सं॰ पु॰) अभितः स्तनः, अभि स्तन अप्। सिंहनाद, उद्घोषण, गरज दहाड़, शोर गुल।

अभिष्टव (सं॰ पु॰) प्रशंसा, तारीफ।

अभिष्टि, अभीष्टि (वै॰ त्रि॰) इच्छन्ति इच्छते वा अनया अभि यज् वा इष् क्तिन् वेदे पृषो॰ साधु॰। १ अभियष्टव्य, जिसका याग कर्तव्य ठहरे। (पु॰) २ रक्षा-

यन्, रक्षक, मददगार, मुहाफ़िज़। ३ रक्षा रखने कारण पूज्य व्यक्ति, जिस शख्सकी तारीफ़ हिफ़ाज़त करनेसे रहे। ४ आक्रमणकारी, हमला करनेवाला। ५ शत्रु-पराजयकारी, दुश्मनको शिकस्त देनेवाला। ६ अभिलाष, ख़्वाहिश। (स्त्री०) ७ साहाय्य, रक्षा, मदद, हिफ़ाज़त। ८ यज्ञ। ९ यज्ञीय गीत। १० साहाय्यार्थ उपस्थिति, मददके लिये पहुंचना।

अभिष्टिकृत् (सं० त्रि०) सहायक, मददगार।

अभिष्टिद्युम्न (सं० त्रि०) आनन्ददायक, आराम देनेवाला।

अभिष्टिपा (वै० पु०) शत्रुसे रक्षा करनेवाला, निवारणकारी, जो दुश्मनसे हिफ़ाज़त करता हो, दुश्मनको दूर रखनेवाला।

अभिष्टिमत् (सं० त्रि०) अभिलषणीय, उत्कण्ठा योग्य, मरगूब, काबिल-तमन्ना, पसन्दीदा, अच्छा।

अभिष्टिशवस् (सं० त्रि०) सहायक व्यक्ति, मददगार शख्स, जो आदमी दुश्मनको जीतने काबिल हो।

अभिष्टुत (सं० त्रि०) अभितः स्तुतम्, अभि-स्तु-क्त। प्रशस्त, प्रशंसित, वर्णित, स्तुत, तारीफ़ किया हुआ।

अभिष्टुवत् (सं० त्रि०) प्रशंसापरायण, जो तारीफ़ कर रहा हो।

अभिष्यत् (सं० त्रि०) विनाशक, हिंसक, बरबाद करनेवाला, जो क़त्ल कर रहा हो।

अभिष्यन्द, अभिस्यन्द (सं० पु०) अभि-स्यन्द भावे घञ्, अप्राणि-कर्तरि वा पचम्। १ अतिवृद्धि, अधिक वृद्धि वा फूलना, बढ़ाव, जल आदिका निकास, जलका गिरना। भावार्थे घञ्। २ नेत्ररोगविशेष। 'अभिष्यन्द [illegible]' (हेम) नेत्रके भीतर धूल, कीड़ा, पसीना. आदि बाहरकी कोई वस्तु उड़कर पड़ने, उग्र वाष्पादिका तेज, प्रखर रौद्र. धूम, पूर्व वा उत्तर दिशाका वायु अथवा अति शीतल वायु प्रभृति लगने, सर्वदा सूक्ष्म वस्तुकी ओर देखते रहने, वर्षा और शीतकालकी रात्रिका वायु छूने; अतिशय मद्यपान, अतिमैथुन, अत्यन्त मानसिक उद्वेग, अधिक वमन, कोष्ठबद्धता, शिरोरोग, अतिशय क्रोध प्रभृति कारण विद्यमान रहनेसे अभिष्यन्द रोग हो सकता है। Opthalmia, Supurative inflamation of the eye प्रभृति रोग यहां एक ही साथ गृहीत हुए हैं।

वैद्यक पुस्तकोंमें अभिष्यन्दरोग चार श्रेणियोंमें विभक्त किया गया है,—वातजनित, पित्तजनित, कफ-जनित और रक्तजनित। फलतः यह रोग कहीं सहज और कहीं अतिशय कठिन हो जाता है। नेत्र थोड़े या बहुत लाल हो जाते और जैसे उनमें धूल पड़ गई हो, वैसे करकराया करते हैं। इसे 'आंख उठना' (Conjunctivitis, simple opthalmia) कहते हैं। वैद्यशास्त्रका यह वातजनित अभिष्यन्द है।

कफजनित अभिष्यन्द (Opthalmiacum catarrho, catarrhal opthalmia) पहलेसे कुछ विभिन्न है। इस रोगमें आंखके भीतर मानो तेज़ सूईकी तरह सदैव कुछ चुभा करता है। पलकके भीतर बालू प्रभृति पड़ जानेसे जिस तरह आंख करकराती, उसी तरहकी पीड़ा उठती है। सदैव अत्यन्त जल और कीचड़ बहा करता है; रातको नेत्रके मलसे दोनों पलकें सटतीं, कोवे अत्यन्त लाल हो उठते और आंखें फूल जाती हैं। इस ललाईमें पतली-पतली रेखायें दिखाई देती हैं। इस श्रेणीका रोग कुछ संक्रामक होता है।

पित्त और रक्तजनित अभिष्यन्द—पूयजनक शटाह है (Opthalmia purulenta, purulent opthalmia)। यह रोग अतिशय कठिन और कष्टकर होता है। पहले आंख कुछ कुछ खुजलाती, उसके बाद बहुत करकराती और भीतर पीड़ा मालूम पड़ती है। ऐसा जाननेमें आता, मानो हठात् आंखके भीतर कहीं कीड़ा पड़ गया और दुःसह यन्त्रणा होती है। दोनों पलक अत्यन्त फूल जाते हैं। पहले केवल जल, फिर मलमिश्रित जल गिरने लगता है। कोवे लाल हो जाते हैं। शिरमें पीड़ा होती, शरीर गर्म पड़ता और नाड़ी तेज़ हो जाती है। बीच बीचमें वमन और वमनोद्वेग हुआ करता है।

नेत्ररोगमें मादक द्रव्य-सेवन, अधिक मानसिक चिन्ता, रात्रिजागरण, धूप, धूम, शीतल वायु, पूर्व और उत्तर दिशाके वायुका लगना, अधिक मैथुन, मत्स्य,

-गच्छति, अभि-सम् सृ-घञ्। १ जगत्, जहान्। २ दलरूप आगमन, झुण्ड बांधकर पहुंचना। (अव्य०) संसारस्याभिमुख्यम्, अव्ययी०। ३ संसारके अभिमुख, दुनियाके सामने। ४ अभिगमन करके, रवाना होकर।

अभिसंस्कार (सं० त्रि०) भावना, भावन, कल्पना, कल्पन, सङ्कल्प, वासना, मनःकल्पना, कुव्वत मुतखैयल, वन्दिश-ख्याल, सोच-विचार।

अभिसंस्तव (सं० पु०) उत्कृष्ट प्रशंसा, गहरी तारीफ।

अभिसंस्तुत (सं० त्रि०) अतिशय प्रशंसित, निहायत तारीफ किया हुआ।

अभिसंहत (सं० त्रि०) नियोजित, संगठित, जोड़ा हुआ, जो मिल गया हो।

अभिसंहित (सं० त्रि०) अभि-सम् धा कर्मणि कर्तरि वा क्त। १ किसी फलके उद्देश्यसे कृत, जो किसी नतीजेके लिये किया गया हो। २ अभिसन्धिका विषयीभूत, लगा हुआ। ३ अभिसन्धिकर्ता, राज़ी, जो मञ्जूर कर चुका हो।

अभिसंक्रुद्ध (सं० त्रि०) जातामर्ष, रुष्ट, सामर्ष, सरोष, कुपित, समन्यु, नाराज़ गुस्सावर, जिसको गुस्सा आ गया हो।

अभिसंक्रुध्यत् (सं० त्रि०) कुपित होनेवाला, जो नाराज़ हो रहा हो।

अभिसङ्क्षिप्त (सं० त्रि०) १ फेंका हुआ, जो डाल दिया गया हो। २ फेंकने, गोली मारने या निशाना लगानेवाला। ३ जिसपर निशाना लग चुके।

अभिसङ्क्षेप (सं० पु०) ग्रहण, बोध, धी, मति, बुद्धि, अवधारण, मेधा, समझ, अक्ल, हाफ़िज़ा।

अभिसङ्ख्य (सं० त्रि०) अनुमेय, आनुमानिक, निरूपणीय, निर्णययोग्य, अन्दाज़ी, बताने क़ाबिल।

अभिसङ्गुप्त (सं० त्रि०) रक्षित, त्रात, हिफ़ाज़त किया हुआ।

अभिसञ्चारिन् (सं० त्रि०) अस्थिर, अदृढ़, चल, तरल, लोलमति, चलचित्त, मुतलव्विन, वेवफ़ा, मुतग़ैयर, मुतबद्दिल, जो ठहरता न हो।

अभिसञ्जात (सं० त्रि०) उत्पन्न, उत्पादित, निर्मित, घटित, सृष्ट, जनित, जात, उद्भूत, पैदा होनेवाला, जो पैदा हुआ हो।

अभिसन्तत (सं० त्रि०) विस्तृत, दीर्घीकृत, प्रसारित, फैल जानेवाला, जो खूब बढ़ गया हो।

अभिसत्वन् (वै० त्रि०) वीर पुरुषोंसे आवेष्टित, जो बहादुर लोगोंसे घिरा हो।

अभिसन्तप्त (सं० त्रि०) अतिशय आतङ्कित, व्यथित, पीडित, दुःखित, प्रमथित, अज़ाब या अज़ीयत दिया हुआ, जिसको तकलीफ़ पहुंची हो।

अभिसन्ताप (सं० पु०) अभि-सम्-तप् भावे घञ् अभिसन्तप्यतेऽस्मिन् अधिकरणे वा घञ्। १ युद्ध, जङ्ग, लड़ाई। अभिसन्ताप्यतेऽनेन, अभि सम्-तप्-णिच् करणे अच्। २ अभिशाप, बद्दुवा।

अभिसन्त्रस्त (सं० त्रि०) अतिशय भयभीत, जो बहुत डर गया हो।

अभिसन्दष्ट (सं० त्रि०) सङ्कोचित, सम्पीड़ित, दबाया हुआ, जो बांधा गया हो।

अभिसन्देह (सं० पु०) १ विनिमय, परीवर्त, परिवृत्ति, परिदान, व्यतिहार, मुबादला, अलटा-पलटा, अदला-बदला। २ जननेन्द्रिय, पैदा करनेका आला। इस अर्थमें अभिसन्दोह भी लिखते हैं।

अभिसन्ध, अभिसन्धक देखो।

अभिसन्धक (सं० त्रि०) अभिधर्षणं सन्धत्ते, अभि-सम् धा-क स्वार्थे कन्। दूसरेका गुण न सह सकनेपर आक्षेपकारी, परगुणासहिष्णु, दूसरेका वस्फ़ न देख सकनेपर ताना मारनेवाला, जो इलज़ाम लगाता हो।

अभिसन्धा (सं० स्त्री०) अभि-सम् धा भावे अङ्। १ वञ्चना, फ़रेब, धोका। २ फलोद्देश, खास राज़ीनामा। ३ अभिसन्धि, लगाव, फ़ायदा। ४ वचन, कथन, बातचीत, इज़हार।

अभिसन्धान (सं० क्ली०) अभि-सम्-धा-ल्युट्। १ परवञ्चन, धोकेबाज़ी, झोलासाज़ी। २ फलोद्देश, आखिरी मतलब। ३ अभिसन्धि, लगाव, मुहब्बत।

"सा हि सत्याभिसन्धाना।" (रामायण ३।११।२१)

अभिसन्धाय (सं० पु०) अभि-सम्-धा बाहुलकात् य घञ् वा। १ अभिसन्धि, लगाव। २ फलोद्देश,

अभिसर्ट (सं० वि०) आक्रमणकारी, हमलावर, जो धावा मार रहा हो।

अभिसार (सं० पु०) अभिसरन्ति गच्छन्ति अस्मिन्, अभि-सृ-घञ्। १ युद्ध, लड़ाई। २ सम्मिलन, जमघट। ३ आक्रमण, हमला। ४ संस्कार विशेष। ५ बल, जोर। ६ सहाय, सहारा। ७ नायकका अनुरागसे नायिकाके लिये सङ्केतस्थानको गमन, आशक़का मुहब्बतमें माशूक़के लिये मिलनेकी जगहको जाना। कर्तरि घञ्। ८ अनुचर, साथी। ९ शकुली मत्स्य।

अभिसार—पौराणिक जनपद और उसमें रहनेवाली क्षत्रिय-जातिविशेष। (महाभारत,भीष्म० ९।५३,मार्कण्डेयपु०५७।४५, बृहत्संहिता १४।२९) भारतीय उत्तरपश्चिमप्रान्तमें मरी और मर्गला गिरिसङ्कटके मध्य अवस्थित यह एक पार्वत्य राज्य है। यूनानी ऐतिहासिकोंने इस जगहके नृपतिको भी Abisares नामसे ही परिचित किया है। महावीर सिकन्दरने अपने विजित सिन्धुनदके पूर्वांशमें अवस्थित भारतखण्डका शासनकर्तृत्व जिन कई नृपतियोंपर छोड़ा था, उनमें अभिसार भी एक राजा रहे।

अभिसारना (हिं० क्रि०) चल देना, राह पकड़ना, प्रियसे किसी सङ्केतस्थानमें मिलनेको रवाना होना।

अभिसारिका (सं० स्त्री०) अभिसरति अभिसारयति वा सङ्केतस्थानम्, अभि-सृ-ण्वुल्, णिच्-ण्वुल् वा। स्वीयादि सोलह प्रकार नायिकामें अष्टावस्था विशिष्ट घटनाविकान्तर्गत नायिका विशेष, नायकके साथ परामर्श करके जो नायिका सङ्केतस्थलमें गमन करे, या नायिका नायकको सङ्केतस्थानमें भेज दे।

"अभिसारयते कान्तं या मन्मथवशंवदा।
स्वयं वाभिसरत्येषा धीरैरुक्ताभिसारिका॥" (साहित्यदर्पण)

जो स्त्री कामपीड़ित होकर कान्तको सङ्केतस्थलमें भेज दे अथवा स्वयं वहां गमन करे, पण्डितलोग उसे अभिसारिका नायिका कहते हैं।

अभिसारिका नायिकाकी चेष्टा चार प्रकार होती है। यथा—समयानुरूप वस्त्राभरण, गन्ध, बुद्धिकी निपुणता और कपट साहसादि। रसमञ्जरीमें तीन प्रकारकी अभिसारिकाका उल्लेख है। यथा—दिवाभिसारिका, ज्योत्स्नाभिसारिका एवं अन्धकाराभिसारिका।

हिन्दीके कवियोंने भी तीन प्रकारकी अभिसारिका कही है। यथा—दिवाभिसारिका, शुक्लाभिसारिका और कृष्णाभिसारिका। इनके उदाहरण नीचे दिये जाते हैं,—

दिवाभिसारिका—

पगनिमें ओस करि हौस यौस ही कों चली
पिय महबूब मिलबेको बनी घाति है।
घेरदार जामा पायजामापै प्रवीन बेनी
चलि ही सकामा वामा सुख सरसाति है॥
बधि दखनरी परी कांधि समसे रफरी
लखी ना परी है काहु सखि न सकाति है।
केस कस पगरीमें बवरी बनाय बाल
मुगलबचा लौं एकपचा सजी जाति है॥

शुक्लाभिसारिका—

सजि ब्रजचन्दपै चली यों मुखचन्द जाको
चन्द चाँदनीको दुति मन्द सो करत जात।
कहै पदमाकर त्यों सहज सुगन्धहीके
पुञ्ज बन कुञ्जनमें कंजसे भरत जात॥
घरत जहांई जहां पग है सुप्यारी तहां
मंजुल मजीठहीके माठसे ढुरत जात।
हारनतें हीरे सेत सारीके किनारनतें
बारन ते मुकता हजारन झरत जात॥

कृष्णाभिसारिका—

उमड़ि घुमड़ि दिगमण्डलनि मण्डि रहे
झूमि झूमि बादर कुहूकी निसि कारी में।
अंगन में कीन्हों मृगमद अङ्गराग तैसे
आनन उढ़ाय लीन्हो स्यामरंग सारी में।
मतिराम सुकवि सिषक कचि राजि रही
आभरन साजि मरकत मनिवारी में।
मोहन छबीलेको मिलन चली ऐसी छवि
छाँह लौं छबीली छवि छाजत अँध्यारी में॥

अभिसारिन् (सं० वि०) अभि साम्मुख्येन सरति गच्छति, अभि सृ-णिनि। १ सम्मुख-गमन करनेवाला, आक्रमणकारी, जो मिलने जा रहा हो, सामने जानेवाला, हमलावर, जो मुलाकात करता हो। २ अनुचर, नौकर।

अभिसारिणी (सं० स्त्री०) १ अनुसारिणी, अनुचरी, नौकरनी, जो मुवाफ़िक़ काम करती हो। २ अपने

प्रियमे मिलने जानेवाली स्त्री। ३ वैदिक छन्दोविशेष। इस छन्दके दो पाद वैराज और दो पाद जगती रहते हैं।

अभिसारी अभिसारिन् देखो।

अभिसार्यमाण (स० त्रि०) जिसके पास पहुंचें, जिससे मुलाकात हो जाये।

अभिसृत्य (स० अव्य०) निकट उपस्थित होके, पास पहुंचकर।

अभिसृष्ट (स० त्रि०) अभिसृज्यते स्म, अभि-सृज-क्त। दत्त, उत्सृष्ट, दिया हुआ, जो छोड़ा जा चुका हो।

अभिसेक (हिं० पु०) अभिषेक, धार्मिक स्नान।

अभिसेवन (स० क्ली०) सम्यक् अभ्यास उत्कृष्ट सेवा, खासी मशारत, बड़ी खिदमत।

अभिस्कन्द (वै० पु०) १ आक्रमण, धावा। २ आक्रमण करनेवाला व्यक्ति जो मनुष्य हमला करता हो। (अव्य०) ३ आक्रमण द्वारा, धावेसे।

अभिस्त्रिर (वै० अव्य०) अतिशय इच्छापूर्वक, निहायत मज्बूतीसे।

अभिस्नेह (स० पु०) अनुराग, प्रेम, उत्कण्ठा, मुहब्बत, प्यार, ख्वाहिश।

अभिस्फरित (स० त्रि०) पूर्णरूप प्रसारित, अच्छी तरह खिली हुयी।

अभिस्यन्द, अभिष्यन्द देखो।

अभिस्वयमातृणम् (वै० अव्य०) मसीप ईटपर।

अभिस्वर (वै० स्त्री०) अभित: स्वः स्वरनं शब्दो वा यस्य, अभि-स्वृ भावे विच्। १ अतिशय स्वरयुक्त स्तोत्र विशेष, अधिक शब्दयुक्त स्तव। २ आह्वान, नामग्रहण, प्रार्थना, बुलावा, पुकार, अर्ज़। ३ सम्मुख आह्वान सामनेका बुलाना।

अभिस्वर (स० पु०) अभि-स्वृ-अप्। सम्मुख भेजना सामने पहुंचाना।

अभिस्वर्तृ (स० पु०) आमन्त्रणकारी, प्रशंसापरायण, आह्वान करनेवाला, जो पुकारता हो, तारीफ़ करनेवाला।

अभिहत (स० त्रि०) अभि-हन्-क्त। १ अभिघात संयोगयुक्त, जिसमें मारका झटका लग चुके। २ ताड़ित, मारा या पीटा हुआ। ३ सन्तप्त, जला हुआ। ४ अभिभूत तोड़ा हुआ। ५ अवरुद्ध, रुका हुआ। ६ गुणित, जो जर्ब किया गया हो।

अभिहति (स० स्त्री०) १ ताड़न, मारपीट। २ गुणन, जर्ब।

अभिहन्यमान (स० त्रि०) वध्यमान, निहत, मारा जानेवाला, जो मार डाला गया हो।

अभिहर (स० त्रि०) उठा ले जानेवाला, जो गुम कर देता हो।

अभिहरण (स० क्ली०) अभि-हृ-ल्युट्। १ सम्मुख आहरण, सामनेसे उठा ले जाना। २ विवाहादिका यौतुक दान, जो दहेज शादीमें लड़कीको दिया जाता हो।

अभिहरणीय (स० त्रि०) निकट लाने योग्य, जो नज़्दीक लाने क़ाबिल हो।

अभिहर्तव्य, अभिहरणीय देखो।

अभिहर्तृ (स० पु०) अभिहरणकर्ता, उठा ले जानेवाला आक्रमणकारी। २ वर्षक।

अभिहव (स० पु०) अभिह्वयते, अभि-ह्वे-अप्। १ सम्मुख आह्वान, सामने बुलाना। २ यज्ञ।

अभिहस्य (स० त्रि०) अभिहस्यते, अभि-हस्-यत्। उपहसनीय, उपहासके योग्य, क़ाबिल तज़्हीक, हंसने लायक़।

अभिहार (स० पु०) अभि-हृ-घञ्। १ अपहार करनेवाला दूसरेके सम्मुख आक्रमण, युद्ध प्रारम्भ करनेके पहलेकी इच्छासे सम्मुख आक्रमण, युद्ध साज करनेसे इरादेसे सामने जा हमला मारना। २ सम्मुख हरणा, सामनेसे उठा ले जाना। ३ आलिङ्गन, हमागोशी। ४ मिलन, मुलाक़ात। ५ चौर्य, चोरी। ६ अभियोग, इल्जाम। ७ बन्धन, कैद। ८ कवच-धारण, बख़्तरकी पोशिश।

अभिहारोऽभिहारेच। चौर्य बन्धनेऽपि च। (मेदिनी)

अभिहाय अभिहारेण देखो।

अभिहास (स० पु०) हास्य, विनोदोक्ति, प्रहसन, विनोदमायन परिहासोक्ति, नर्मालाप, हंसी, दिल्लगी, मज़ाक़, बोली-ठोली, ठिठ्ठाई।

अभिहित (सं० त्रि०) अभि-धा-क्त। १ भाषित, उदित, जल्पित, आख्यात, लपित, कहा हुआ।

'उक्तं भाषितमुदितं जल्पितमाख्यातमभिहितं लपितम्।' (अमर)

२ इच्छा किये हुआ, जो इरादा बांध चुका हो। (क्ली०) ३ नाम, वर्णन, शब्द, इस्म, बयान्, लफ्ज्।

अभिहितत्व (सं० क्ली०) कथित होनेकी स्थिति, कहे जानेकी हालत। २ घोषणा, पुकार। ३ प्रमाण, आप्तवचन, निदर्शन, हवाला, सुबूत, पक्की बात।

अभिहिता (सं० स्त्री०) जलपिप्पली, पानीपिपरी।

अभिहितान्वय (सं० पु०) अभिहितानां अभिधया लक्षणया वा पदोपस्थापितानां अर्थानां अन्वयः सम्बन्धः, मध्यपदलोपी ६-तत्। सकल पदार्थ बोध होने पर वाक्यार्थका अन्वय। प्राचीन नैयायिकोंकि मतसे किसी वाक्यके प्रथम प्रत्येक पदका अर्थ समझ सकनेपर वाक्यार्थका अन्वय लगता. किन्तु यह भी तात्पर्याख्य वृत्तिसापेक्ष है। आजकलके नैयायिक इसे संसर्गमर्यादा कहेंगे। मीमांसकोंके मतसे प्रथम क्रिया और कारकका अन्वय लगता, पीछे अर्थ समझ पडता है।

अभिहितान्वयवादिन् (सं० पु०) अभिहितानां अभिधया लक्षणया वा पदोपस्थापितानां अर्थानां अन्वयं परस्परसम्बन्धं वदति; अभिहितान्वय-वद्-णिनि, उप०स०। प्राचीन नैयायिक, प्रथम प्रत्येक पदका अर्थबोध मान पीछे वाक्यार्थका अन्वयबोध स्वीकार करनेवाला।

अभिहिति (सं० स्त्री०) कथन, वर्णन, उपाधि, बात, बयान्, खिताब।

अभिहूति (सं० स्त्री०) अभि-ह्वे-क्तिन्, सम्प्रसारणं दीर्घश्च। १ सम्मुख आह्वान, पुकार। अभि-ह्व-क्तिन् पृषो० साधुः। २ कुटिल स्वभाव, टेढा मिज़ाज।

अभिह्रुत् (वै० त्रि०) अभि-ह्रु कर्मणि क्विप्, वेदे पृषो० न गुणः। १ सम्मुख हरण किया जानेवाला, जिसे समानेसे उठा ले जायें। २ वक्र, टेढ़ा, वेइन्साफ़ीसे काम करनेवाला। (स्त्री०) ३ पतन, पराजय, हानि, जवाल, शिकिश्त, नुकसान्।

अभिह्रुति (वै० स्त्री०) १ निपात, गिराव। २ पराजय, हानि, अपराध, शिकिस्त, नुक्सान्, जुर्म।

अभिह्वर् (सं० त्रि०) अभि-ह्वृ-विच्। कुटिल गमनकारी, टेढा चलनेवाला।

अभिह्वर (सं० क्ली०) १ निपतन, जवाल। २ वक्रता, पाप, टेढ़ाई, गुनाह।

अभिह्वार, अभिह्वर देखो।

अभिह्वृत् (सं० त्रि०) ह्वृ कौटिल्ये कर्तरि क्विप्। सम्मुख कुटिल कर्मकारी, सामने बुरा काम करनेवाला।

अभी (सं० त्रि०) नास्ति भीर्भयं यस्य, बहुव्री०। १ निर्भय, भयशून्य, वेखौफ़, निडर। (हिं० क्रि०-वि०) २ इसी समय, इसी वक़्त। ३ शीघ्र, फ़ौरन्।

अभीक (सं० त्रि०) अभि-कन् दीर्घश्च। १ कामयमान, कामुक, ख़ाहिशमन्द, चाहनेवाला। २ उत्सुक, नफ़सपरस्त। ३ चिन्तायुक्त, फ़िक्रमन्द। ४ क्रूर, बदमिज़ाज। नास्ति भी र्यस्य, अभी-कप्। ५ निर्भीक, भयशून्य, भयहीन, वेखौफ़, जिसे डर न लगे। (पु०) अभि-इण्-कक्। ६ कवि, शायर। ७ स्वामी, ख़ाविन्द। (क्ली०) ८ सम्मेलन, सामीप्य, मेलजोल, कुर्ब, नजदीकी। ९ संघट्ट, समाघात, प्रतिघात, संमर्द, संघर्षण, ठोकर, लड़ाई, दुश्मनी। (अव्य०) १० सन्निधिमें, उसी स्थान वा समयपर, उपयुक्त समय, कुर्बमें, उसी जगह या वक़्तपर, ठीक मौक़े से। ११ एक ही क्षणमें, शीघ्र, एक लमहेमें, फ़ौरन्।

अभीक्ष्ण (सं० त्रि०) अभि क्ष्णु तेजने बाहुलकात् उ दीर्घश्च, अभिगतं क्षणं वा पृषो० साधुः। १ सन्तत, निरन्तर, मुदामी, लगातार। २ भृश, अकसर-औक़ात, जो बार-बार आता हो। (अव्य०) ३ पुनःपुनः, बारबार। ४ सदा, हमेशा। ५ अतिशय, बहुत, निहायत। ६ शीघ्र, फ़ौरन्।

अभीक्ष्णम् (सं० अव्य०) अभि-क्ष्णु बाहुलकात् डमु पृषो० दीर्घः। १ पुनःपुनः, मुहुः, बारबार, लगातार। २ शश्वत्, असकृत्, फ़ौरन्, उसी वक़्त। ३ नित्य, रोज,।

अभीक्ष्णशस्, अभीक्ष्णम् देखो।

अभीघात, अभिघात देखो।

अभीच्छत् (सं० त्रि०) उत्कण्ठित, ख्वाहिशमन्द। (स्त्री०) अभीच्छती।

अभीज्य (सं० त्रि०) १ बलि दिया जानेवाला, जिसे बलि चढ़ायें। (पु०) २ देवता।

अभीत (सं० त्रि०) अभि-इण्-क्त। १ अभिगत, प्राप्त आया हुआ, जो पास चल गया हो। न भीतम्, नञ्-तत्। २ निर्भय, उत्साहान्वित, बेखौफ, हौसलेमन्द।

अभीतवत् (सं० अव्य०) निर्भय व्यक्तिकी भांति, भयको छोड़कर, बेखौफ शख्सकी तरह, निडर बनके।

अभीति (सं० त्रि०) नास्ति भीतिर्यस्य, नञ्-बहुव्री०। १ निर्भय, भयशून्य, बेखौफ। (स्त्री०) अभावे नञ्-तत्। २ भयका अभाव, खौफकी अदममौजूदगी। ३ अभयदायक मुद्राविशेष। अभि-इण्-क्तिन्। ४ अभिगमन चढ़ाचढ़ी। अभि-इण् कर्मणि क्तिन्। ५ समीप, कुर्ब पास।

अभीत्वन् (सं० पु०-क्ली०) १ अपगमन, आक्रमण, धावा, हमला।

अभीत्वर, अभीत्वन् देखो।

अभीद्ध (सं० त्रि०) प्रज्वलित, द्युतिमान् चमकता हुआ, चमकीला।

अभीपत् (सं० त्रि०) अभि-पत् क्विप् पृषो० दीर्घ। अभिगमनकर्ता धावा मारनेवाला। (वै० पु०) २ जिस तड़ाग या स्थानमें जल एकत्र हो जाये। ३ कृपा, मेहरबानी।

अभीप्सित (सं० त्रि०) अभि-आप सन् क्त। अभीष्ट, अभिलषित, वाञ्छित, ख्वाहिश किया हुआ, जो चाहा गया हो।

अभीप्सिन् (सं० त्रि०) उत्कण्ठित, अभिलाषयुक्त चाहनेवाला, ख्वाहिशमन्द।

अभीप्सु (सं० त्रि०) अभि-आप्-सन् उ। अभिलाषयुक्त ख्वाहिशमन्द, जिसको चाह लगी हो।

अभीम (सं० त्रि०) बिभेत्यस्मात्, भी-मक् ततो नञ् तत्। १ भयका आश्रय न होनेवाला, जो अङ्गमें पहले पैदा न हुआ हो। २ जो भयानक या भयङ्कर न हो, जिससे डर न लगे।

अभीमान (सं० पु०) अभि-मन-घञ् वा दीर्घ। अभिमान देखो।

अभीमोद (सं० पु०) आनन्द, प्रसन्नता, खुशी।

अभीर (सं० पु०) आभिमुख्येन ईरयति प्रेरयति गाः, अभि ईर्-अच्। १ गोप ग्वाला, अहीर। पहले कृष्णा और गोदावरीके तीर विस्तर अभीर रहते थे। सिन्धु नदके कूलमें भी इनका वास था। पौराणिक मतमें इन्हें अलग अन्य जाति समझते हैं। सिन्धु नदके तटवर्ती अभीर कृष्णकी सोलह सौ रमणी चुरा ले गये थे। आजकल इस जातिको हम अहीर कहते हैं। कृष्णानदीके निकट गोवर्धन नामक पर्वत विद्यमान है। देवराज इन्द्रने यह पर्वत बनाया था। वनवासके समय रामचन्द्रने निकट पहुंच गोवर्धन पर्वतको पवित्र किया, उसी वह स्वर्गतुल्य स्थान हो गया। भरद्वाजने वहां एक नगर बसाया था। यह नगर उद्यान और सरोवरसे सुशोभित रहा। ब्रह्माण्ड पुराणके मतसे उस देशको अभीर देश भी कहते हैं। सुननेमें आता, कि अत्रि और भरद्वाजवंशको कोई कोई जाति आज भी उस स्थानमें बसती है। मालूम होता, कि इस जातिके लोगोंने अनार्य स्त्रीके गर्भसे जन्म लिया था। अभीरको आदिमें वल्लिक, और वल्ल, नामसे भी पुकारते हैं। वाटधान, आपतोयक अपरीत, शूद्र, पल्लव चर्मखण्ड, काम्बोज दरद, बर्बर प्रभृति दूसरे नाम पुराणमें मिलेंगे। अहीर देखो। २ चार पादयुक्त छन्दोविशेष। इसके प्रतिपादमें ग्यारह मात्रा लगती है।

अभीरवी (सं० स्त्री०) दुन्दुभ सर्प अमिका भेद। यह ज़हरीली नहीं होती।

अभीराजी (सं० स्त्री०) विषाक्त कीटविशेष, कोई ज़हरीला कीड़ा।

अभीराम—भोगभिका विवरण-व्याख्याकार।

अभिराम देखो।

अभीराम (अभिराम), एक गोस्वामी। यह अभिराम गोपाल नामसे भी परिचित रहे। श्रीचैतन्यावतारमें श्रीदामके अवतार और द्वादशगोपालके अन्यतम होनेसे गौड़ीय वैष्णवसमाज इन्हें पूजता है। बङ्गाल आदि इनको शिष्यके खानाकुल-कृष्णनगरमें इन

अभिराम गोस्वामीको गद्दी मौजूद है। अभिराम-लीलामृतमें इनकी चरिताख्यायिका विवृत हुई है।

अभीरामभट्ट—अभिज्ञानशकुन्तलके टीकाकार।

अभीरामविद्यालङ्कार—गयोचन्द्ररचित संक्षिप्तसारनामक व्याकरणको कौमुदी नाम्नी टीकाके रचयिता।

अभीरी (सं० स्त्री०) अभीर भाषा, अहीरोंकी बोली, जिस ज़बानको अहीर बोलें।

अभीरु (सं० त्रि०) बिभेति, भी-क्रु। १ अभय-शील, जो डरावना न हो। २ निर्भय, बेखौफ़। (पु०) ३ भैरव। ४ शिव। (स्त्री०) ५ शतमूली, सतावर। 'शतमूली बहुसुता भीरुरिन्दीवरीवरी।' (अमर)

अभीरुक, अभीरु देखो।

अभीरुण (सं० त्रि०) अभि-रु-उनन् दीर्घः। १ निर्भय, जो डरावना न हो, बेखौफ, बेगुनाह। २ सम्मुख।

अभीरुपत्रिका, अभीरुपत्री देखो।

अभीरुपत्री (सं० त्रि०) न भीरुणि भीरुवत् न सङ्कुचितानि पत्राण्यस्याः, नञ्-बहुव्री०, जातित्वात् ङीप्। शतमूली, सतावर।

अभील (सं० क्ली०) अभितः ईरयति प्रेरयति, अभि-ईर्-अच् रस्य लत्वम्; यद्वा अभि इतस्ततः एलयति गमयति, अभि-चुरा० इल-क। १ कष्ट, तकलीफ़। २ भय, खौफ़। (त्रि०) अभि इतस्ततः ईलं कष्टं गमनं वा यस्य। ३ क्लेशयुक्त, तकलीफ़में पडा हुआ। ४ भययुक्त, खौफ़जदह।

अभीलाप (सं० पु०) अभि-लप् भावे घञ् वा दीर्घः। अभिमुख कथन-रूप शब्द, सामन कहने जैसी लफ़्ज़।

अभीलापलप् (वै० पु० बहु०) अतिशय कथन, हदसे ज्यादा गुफ्तगू।

अभीलु, अभीरु देखो।

अभीलुक, अभीरु देखो।

अभीवर्ग (सं० पु०) अभि-वृज अधिकरणे घञ्। अभिमुखसमूह, अभिमुख बहुव्यक्ति, चक्कर, दौर।

अभीवर्त (सं० पु०) अभि-वर्तन्ते तिष्ठन्ति ब्रह्म साम्यतया अनेन, अभि-वृत करणे घञ् उपसर्ग दीर्घः। २ ब्रह्मसाम, ब्रह्मस्तोत्रविशेष। इसे शत्रु पर आक्रमण करते समय पढते हैं। अभिवर्तयति सर्वाणि भूतानि द्वादश मासान् षड्ऋतून् वा परिवर्तयति, अभि-वृत-कर्तरि घञ् उपसर्ग दीर्घः। २ संवत्सर। ३ सूक्त-विशेष। ४ अभिवृत्तिसाधन घृतादि। ५ सर्वव्यापकत्व, हर जगहकी मौजूदगी। ६ यात्रा, रवानगी। ७ आक्रमण, हमला। ८ विजय, फ़तेहमन्दी।

अभीवृत् (वै० त्रि०) सर्वव्यापी, सब जगह रहनेवाला।

अभीवृत (सं० त्रि०) आच्छादित, आवेष्टित, ढंका हुआ, जो घिरा हो।

अभीशाप, अभिशाप देखो।

अभीशु (सं० पु०) अभि-अशू व्याप्तौ बाहुलकात् उ, धात्ववयवस्य आकारस्येकारश्च; अथवा अभि-ईश ऐश्वर्ये उ, यद्वा अभि-अश-उ। १ रश्मि, शुवा। २ बाहु, बाज़ू। ३ अङ्गुलि, उंगली। ४ प्रग्रह, लगाम।

अभीशुमत् (सं० पु०) अभी-शवः किरणाः सन्त्यस्य, बाहुलकार्थे मतुप्। १ सूर्य, आफताब। (त्रि०) २ द्युतिमान्, प्रदीप्त, चमकीला, रौशन।

अभीषङ्ग (सं० पु०) अभि-सञ्ज-घञ् उपसर्ग दीर्घः। १ पराभव, शिकस्त। २ शपथ, कसम। ३ व्यसन, आदत। ४ आसक्ति, फंसाव। ५ भूतादिका आवेश, शैतान्का साया। ६ आक्रोश, बददुवा।
'आक्रोशनमभीषङ्गः।' (अमर)

अभीषया (सं० अव्य०) निर्भय हो कर, बेखौफ़ोसे।

अभीषाह् (सं० त्रि०) १ पराभवकारी, जो दवा देता हो। (स्त्री०) २ प्रभूत शक्ति, बड़ी ताक़त।

अभीषु (सं० पु०) अभि इष्यते व्यञ्जते, अभि-इष कर्मणि कु। १ किरण, शुवा। २ अश्वरज्जु, बागडोर। ३ प्रग्रह, लगाम। ४ काम, ख़ाहिश। ५ अनुराग, मुहब्बत।

अभीषुमत्, (सं० त्रि०) अनुरक्त, आसक्त, फ़रेफ़्ता।

अभीष्ट (सं० त्रि०) अभि इष्यते स्म, अभि-इष-क्त। १ वाञ्छित, दयित, वल्लभ, हृद्य, प्रिय, अभीप्सित, ख़ाहिश किया हुआ, प्यारा, दिलदार। 'अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम्।' (अमर) अभि-यज-क्त। २ पूजित, परस्तिश किया हुआ। (पु०) ३ तिलकक्षुप, तिलका पेड़।

अभीष्टगन्धक (सं॰ पु॰) माधवीलता, मधुरीका पेड़।

अभीष्टता (सं॰ स्त्री॰) इष्टता, प्रियता, ख़ाहिशमन्दी, दिलदारी।

अभीष्टदेवता (सं॰ स्त्री॰) ईप्सित देवी।

अभीष्टलाभ (सं॰ पु॰) प्रिय पदार्थकी प्राप्ति, प्यारी चीज़का मिलना।

अभीष्टसिद्धि (सं॰ स्त्री॰) अभीष्टलाभ देखो।

अभीष्टा (सं॰ स्त्री॰) १ रेणुक गन्धद्रव्य, कुमकुमार खाक। २ ताम्बूल, पान। ३ प्रियस्वामिनी, बीबी।

अभुआना (हिं॰ क्रि॰) १ अतिशय चेष्टा करना, बहुत कोशिश लगाना। २ बेचैन होना, बेसब्र पड़ना।

अभुक्त (सं॰ त्रि॰) भुज क्त नञ्-तत्। १ अभक्षित, भोजन न किया हुआ, जो खाया न गया हो। २ भक्ष्यभोगविहीन, मज़ा न लिया हुआ, जो काममें न आया हो। ३ न खाये हुआ, जिसको मज़ा न मिला हो।

"[illegible]" ([illegible])

अभुक्तमूल (सं॰ क्ली॰) अभुक्त मूल पितृधन यस्मिन् दिन वा। ज्येष्ठाके शेष एवं मूलाके आदि दो दण्ड। इस कालमें जन्म लेनेसे सन्तान पितृधन भोग नहीं कर सकता।

"[illegible]
[illegible]" ([illegible])

अभुक्तवत् (सं॰ त्रि॰) भोजन न करनेवाला, जो खा न चुका हो।

अभुग्न (सं॰ त्रि॰) १ अवक्र, सीधा, जो टेढ़ा न हो। २ स्वस्थ, नीरोग, तन्दुरुस्त, जो बीमारीसे अलग हो।

अभुज् (सं॰ त्रि॰) न भुङ्क्ते, भुज क्विप्, नञ्-तत्। अभक्षक, न खानेवाला, जो खाता न हो।

अभुज (सं॰ त्रि॰) बाहुविहीन, बेबाज़ू, लूला, जिसका हाथ टूट जाये।

अभुजिष्य (सं॰ पु॰-स्त्री॰) जो व्यक्ति दास वा दासी न हो, नौकर या गुलाम न होनेवाला शख़्स।

अभू (सं॰ पु॰) १ विष्णु, नारायण। अजन्मा होनेसे विष्णुको अभू कहते हैं। (हिं॰ क्रि॰ वि॰) अभी देखो।

अभूखन (हिं॰ पु॰) आभूषण देखो।

अभूत (सं॰ त्रि॰) न भूतम्, नञ्-तत्। १ अनतीत, जो बीता न हो। २ विश्वपादि पञ्चभूत भिन्न, जो दुनियाकी चीज़से अलग हो। ३ पिशाचादि न होनेवाला, जो शैतान न हो। ४ वस्तु भिन्न, जो जानदार न हो। ५ मिथ्याभूत, झूठा साबित होनेवाला। ६ अविद्यमान, गैरहाज़िर।

अभूततद्भाव (सं॰ पु॰) अभूतस्य यथा भावाप्राप्तस्य च्वि प्रत्यय भाव उत्पत्ति, ६ तत्। पूर्व न रहनेवाले भावकी प्राप्ति, जो हालत पहले न रहनेवाली प्राप्त हो। जैसे दूध पहले पतला रहता, गर्म करनेसे गाढ़ा पड़ जाता है। ऐसी जगह दूधका गाढ़ा पड़ना अभूततद्भाव होगा।

अभूतपूर्व (सं॰ त्रि॰) न पूर्वं भूतम् नञ् तत्। पूर्व न होनेवाला जो पहले न हुआ हो।

अभूतप्रादुर्भाव (सं॰ पु॰) पूर्व न होनेवाले विषयका विकाश, जो बाहर पहले न रहनेवाली बातका हो।

अभूतरजस् (सं॰ पु॰) पञ्चम मन्वन्तरके देवताविशेष।

अभूतशत्रु (सं॰ त्रि॰) रिपुरहित जिसके दुश्मन न रहे।

अभूताभिनिवेश (सं॰ पु॰) अभूते असत्ये वस्तुनि अभिनिवेशः सत्यताज्ञानम्, ७-तत्। मिथ्या वस्तुकी सत्यकल्पना, मिथ्या वस्तुमें सत्य वस्तुका आरोप, झूठ चीज़को सच मान लेना, झूठेको सच्चा समझना।

अभूति (सं॰ स्त्री॰) भू-क्तिन्, अभावे नञ्-तत्। १ उत्पत्तिका अभाव, पैदायशकी अदमभौजूदगी। २ सम्पत्तिका अभाव, गरीबी, मुफ़लिसी। ३ शक्तिका अभाव, नाताक़ती, कमज़ोरी। (त्रि॰) नास्ति भूतिर्यस्य, नञ्-बहुव्री॰। ४ अप्रसूत, नापैद, जो पैदा न हो। ५ सम्पत्तिविहीन, निर्धन, गरीब, मुफ़लिस।

अभूतोपमा (सं० स्त्री०) दश उपमाका कोई भेद। इसमें उपमानका गुण नहीं बताते हैं।

अभूमन् (सं० पु०) बहु-इमनिच्; इकारलोपः भूरादेशश्च, नञ्-तत्। अनधिक, अल्प, थोड़ा, कम।

अभूमि (सं० पु०) भू-मि; ततो नञ्-तत्। १ अनाश्रय, अपात्र, अविषय, ग़ैरवाजिब बात, नाक़ाबिल जगह। २ भूमिसे अतिरिक्त द्रव्य, जो चीज़ ज़मीन् न हो। (वि०) नास्ति भूमिर्यस्य, नञ्-बहुव्री०। ३ भूमिशून्य, स्थानशून्य, बेजगह, बेज़मीन्।

अभूमिज (सं० वि०) भूमौ भूम्या वा जायते; भूमि-जन-ड, नञ्-तत्। १ अभूमिजात, जो ज़मीन्से पैदा न हुआ हो। २ आकाशादि जात, आसमान्से निकला हुआ। ३ अप्रशस्त भूमिसे उत्पन्न, नाक़ाबिल ज़मीन्से पैदा हुआ।

अभूयिष्ट (सं० वि०) बहु-इष्टन्, नञ्-तत्। अनधिक, न्यून, कम, जो ज़्यादा न हो।

अभूरि (सं० वि०) कतिपय, कुछ, थोड़ा।

अभूष (सं० वि०) वेशभूषारहित, सजा न हुआ।

अभृत (सं० वि०) भाटक न पानेवाला, जिसको किराया दिया न गया हो।

अभृश (सं० वि०) अनधिक, न्यून, किञ्चित्, थोड़ा, कम, जो ज़्यादा न हो।

अभेड़ा, अभेरा देखो।

अभेद (सं० पु०) अभावे नञ्-तत्। १ भेदका अभाव, फ़र्क़का न पड़ना। २ ऐक्य, बराबरी। ३ सङ्गठन, मिलावट। (वि०) बहुव्री०। ४ अभिन्न, निर्विशेष, बांटा न हुआ, मिलता-जुलता, बराबर।

अभेदक (सं० वि०) अभिन्न, निर्विशेष, न बांटनेवाला, जो फ़र्क़ न डालता हो।

अभेदनीय, अभेद्य देखो।

अभेदवादी (सं० पु०) भेद न माननेवाला व्यक्ति, जो शख़्स जीवात्मा और परमात्मामें कोई फ़र्क़ न देखता हो।

अभेद्य (सं० वि०) न भेत्तुं शक्यम्; भेद-शक्यार्थ यत्, नञ्-तत्। १ भेद किये जानेको अशक्य, जो छेदा न जाता हो। २ विभक्त न होनेवाला, जिसे तक़सीम न कर सकें। (क्लो०) ३ हीरक, हीरा। किसी धातुसे न छिदने कारण हीरेको अभेद्य कहते हैं।

अभेद्यता (सं० स्त्री०) अविभाज्यता, अविच्छेद्यता, अविभेद्यता, अदमइनक़िसाम, ग़ैर क़ाबिलियत-इनक़िसाम, टुकड़े न उड़ सकनेकी हालत।

अभेय (हिं०) अभेद देखो।

अभेरा (हिं० पु०) युद्ध, विग्रह, लड़ाई, झगड़ा, सामना, मुक़ाबिला।

अभेव (हिं०), अभेद देखो।

अभेषज (सं० क्लो०) विपरीत औषध, उलटी दवा।

"अभेषजमिति ज्ञेयं विपरीतं यदौषधम्।" (चरक चिकित्सास्थान)

अभै (हिं०) अभय और अभी देखो।

अभैर (हिं० पु०) कलवांसा, ढढेरो, जिस लकड़ीमें रस्सी कस करघेकी कङ्घी लटकायी जावे।

अभोक्तव्य (सं० वि०) आनन्द लेने वा काममें लानेके अयोग्य, जो मज़ा उड़ाने या इस्तेमाल करने लायक़ न हो।

अभोक्ता (सं० पु०) अभोक्तृ देखो।

अभोक्तृ (सं० वि०) आनन्द न लेनेवाला, जो काममें न आता हो, पृथक् रहनेवाला, मज़ा न लूटनेवाला, जो इस्तेमाल न करता हो, परहेज़गार।

अभोग (सं० पु०) आनन्दका अभाव, काममें न लानेकी स्थिति, बेलुत्फ़ी, इस्तेमालमें न आनेकी हालत।

अभोगिन्, अभोक्तृ देखो।

अभोगी, अभोक्तृ देखो।

अभोग्य, अभोक्तव्य देखो।

अभोज (सं० पु०) आनन्दनिग्रह, खुशीका न बख़्शना। देवताको बलि न देना अभोज कहाता है। (हिं०) अभोज्य देखो।

अभोजन (सं० क्लो०) भोजनका अभाव, उपवास, निवृत्ति, न खानेकी बात, फ़ाक़ा, परहेज़।

"अजीर्णे भोजनं येषां नीच येषामभोजनम्।
राजावभोजनं येषां तेषां नश्यन्ति मातरः।" (संग्रह)

अभोजित (सं० वि०) खिलाया न हुआ, जो

२ उभयका मध्य, दोनोंका बीच। ३ अन्तःकरण, कलेजा। (वि०) ४ अन्तस्थ, भीतरी, हार्दिक, दिली। (अव्य०) ५ अन्तर्भागमें, भीतर-भीतर।

अभ्यन्तरक (सं० पु०) हार्दिक मित्र, दिली दोस्त।

अभ्यन्तरकरण, अन्तःकरण देखो।

अभ्यन्तरकला (सं० स्त्री०) गुप्त वा विलास-सम्बन्धीय विद्या, जो हुनर पोशीदा या ऐश-इशरतसे तअल्लुक रखनेवाला हो।

अभ्यन्तरायाम (सं० पु०) धनुस्तम्भ रोगविशेष, पृष्ठास्थिका सङ्कोच द्वारा वक्रीभाव, रीढ़का सिकुड़कर टेढ़ा पड़ना। इस रोगमें कुपित बलवान् वायु अङ्गुलि, वक्ष, हृदय, और गलदेशादिक पर दौड़ स्नायु समूहको खैंचता और मनुष्यको झुका देता है। यह अक्षिस्तब्धता और हनुस्तम्भादिको उत्पन्न करेगा इसका लक्षण इसतरह लिखा है,—

> "अङ्गुलीगुल्फजठरहृद्वक्षोगलसंश्रितः।
> स्नायुप्रतानमनिलो यदा क्षिपति वेगवान्।
> विष्टब्धाक्षस्तब्धहनुर्भग्नपार्श्वः कफं वमन्।
> अभ्यन्तरं धनुरिव यदा नमति मानवः।
> तदाभ्यन्तरायामं कुरुते मारुतो बली।" (माधव निदान)

अभ्यन्तराराम (सं० वि०) अभ्यन्तरे परमात्मनि आरमति, रम कर्तरि घञ्। आत्माराम, आत्मज्ञ, योगी, जो भगवान्का भजन करता हो।

अभ्यन्तरीकरण (सं० क्ली०) १ अभिषेक, प्रतिष्ठा, अच्छे कामका अदाय-रसूम। २ हार्दिक मित्र बनाना, दिली दोस्त पैदा करना।

अभ्यन्तरीकृत (सं० त्रि०) मध्यस्थापित, अन्तस्थ, बनाया हुआ। २ अभिषिक्त, जिसकी रस्म अदा हो जावे। ३ हार्दिक रूपमें किया हुआ, जो दिलसे किया गया हो।

अभ्यमन (सं० क्ली०) अभितः अमनम्, अम गत्यादौ भावे ल्युट्। १ अभिगमन, हमला, धावा। २ रोग, बीमारी।

अभ्यमनवत् (सं० अव्य०) १ आक्रमणसे, धावेमें, हमला करके। २ रोगसे, बीमारीमें।

अभ्यमित (सं० त्रि०) अभ्यम्यते, अभि-अम कर्मणि क्त। रुग्न, पीड़ित, आतुर, बीमार।

अभ्यमित्र (सं० अव्य०) अम इव अमित्रः शत्रुः तस्याभिमुख्यम्, आभिमुख्ये अव्ययी०। अभ्यमित्राच्छ च। पा ५।२।१७। शत्रुके आभिमुख्य, रिपुके सम्मुख, दुश्मनके सामने।

अभ्यमित्रीण (सं० पु०) वीरतापूर्वक शत्रुसे सम्मुखीन होनेवाला योद्धा, जो सिपाही दिलेरीसे दुश्मनका सामना पकड़ता हो।

अभ्यमित्रीय, अभ्यमित्रीण देखो।

अभ्यमित्र्य, अभ्यमित्रीण देखो।

अभ्यमिन् (सं० वि०) अभि-अम कर्तरि णिनि। १ रोगयुक्त, बीमार। २ सम्मुखवर्ती हो पीड़नकर्ता, जो सामने तकलीफ़ पहुंचाता हो।

अभ्यय (सं० पु०) अभितः सर्वथा अयः गमनम्, प्रादि-स०। १ निकट गमन, समीपकी उपस्थिति, पासका पहुंचना। २ प्रवेश, दाखिला। ३ अस्तमय, गुरूब, सूर्यका बैठना।

अभ्यरि (सं० अव्य०) शत्रुके प्रति, अरिके विरुद्ध, दुश्मनके खिलाफ़।

अभ्यर्कबिम्ब (सं० अव्य०) सूर्यके मण्डलकी ओर, आफ़तावके घेरेकी तर्फ़।

अभ्यर्चत् (सं० वि०) पूजा करते हुआ, जो परस्तिश कर रहा हो।

अभ्यर्चन (सं० क्ली०) अभि-अर्च-ल्युट्। सकल प्रकार पूजा, जो पूजा अनुकूल बनानेको की जाती हो, हरतरहकी परस्तिश, जो परस्तिश मुवाफ़िक़ करनेको हो।

अभ्यर्चनीय, अभ्यर्च्य देखो।

अभ्यर्चा (सं० स्त्री०) अभ्यर्चन देखो।

अभ्यर्चित (सं० त्रि०) सुप्रशंसित, सकल प्रकार पूजित, खूब तारीफ़ किया हुआ, जिसकी परस्तिश सब तरह हो जावे।

अभ्यर्च्य (सं० त्रि०) अभ्यर्च्यते, अभि-अर्च कर्मणि ण्यत्। १ सर्वथा पूजनीय, सब तरह परस्तिश करने क़ाबिल। (अव्य०) ल्यप्। पूजा करके, परस्तिश पहुंचाके।

अभ्यर्ण (सं० वि०) अभि-अर्दि कर्मणि क्त, अदूरार्थे

सद्भाव। १ समीप, अन्तिक, निकट, नज़दीक, क़रीब, पास।

'अभ्यर्णे [illegible]' (किरातार्जुनीये)

(क्लो॰) २ सामीप्य, अन्तिकता नैकट्य, क़ुर्ब, नज़दीकी।

अभ्यर्थन (सं॰ क्लो॰) अभ्यर्थना देखो।

अभ्यर्थना (सं॰ स्त्री॰) अभि-अदन्त चुरा॰-अर्थ भावे युच्। सम्यक् प्रार्थना, खुशी अर्ज़ी, दरख्वास्त। हिन्दी भाषामें समादर देनेको अभ्यर्थना कहते हैं। जैसे—उन्होंने समागत व्यक्तिको यथेष्ट अभ्यर्थना की थी।

अभ्यर्थनीय (सं॰ त्रि॰) अभि-अदन्त-चुरा॰ अर्थ णीचि कर्मणि अनीयर्। १ सर्वथा प्रार्थनीय सब तरह अर्ज़ करने क़ाबिल। २ अगवानी करने योग्य जिसकी ताज़ीम बजायी जाये।

अभ्यर्थित (सं॰ त्रि॰) अभि-अदन्त-चुरा॰-अर्थ णीचे कर्मणि क्त। १ प्रार्थित, याचित, अर्ज़ किया हुआ, जिससे मांग हुई। २ अगवानी किया हुआ। (क्लो॰) भावे क्त। ३ सर्वथा प्रार्थना, दरख्वास्त।

अभ्यर्थिन् (सं॰ त्रि॰) सर्वथा प्रार्थना करनेवाला, जो हरतरह अर्ज़ कर रहा हो। २ अगवानी या ताज़ीम देनेवाला।

अभ्यर्थ्य (सं॰ त्रि॰) अभि-अदन्त-चुरा॰-अर्थ कर्मणि ण्यत्। १ प्रार्थनीय, अर्ज़ करने लायक़। २ अगवानी करने योग्य, जो ताज़ीम पाने क़ाबिल हो। (अव्य॰) ल्यप्। ३ अगवानी करके, ताज़ीम बजा कर। ४ सर्वथा प्रार्थना करके, सबतरह अर्ज़ सुनाकर।

अभ्यर्दित (सं॰ त्रि॰) अभि अर्द क्त। अतिशय पीड़ित, निहायत तकलीफ़ उठाये हुआ।

अभ्यर्ध (सं॰ त्रि॰) अभि-ऋधु वृद्धौ क्विप्-अच। इस पार्श्वपर रहनेवाला, जो इस तर्फ़ रहता हो। १ समीप, निकट, पास, क़रीब। ३ उन्नतिशील, बढ़नेवाला। (क्लो॰) ३ सामीप्य, नैकट्य, क़ुर्ब, नज़दीकी। ५ इस पार्श्वकी स्थिति, इस तर्फ़की रहायश।

अभ्यर्धयज्वन् (वै॰ त्रि॰) अभ्यर्ध-यज् ङ्वनिप्। १ दान करनेवाला, जो बख्श रहा हो। २ पुजारीको सम्पत्ति बढ़ानेवाला, जो परस्तिश करनेवालेकी आय दाद बढ़ा रहा हो। ३ रसको आकर्षण कर बरसनेवाला, जो अर्क़ खींच कर बरसाता हो।

अभ्यर्य (सं॰ पु॰) अभि-अय गतौ अ। अभ्योपय, परदाफ़, मांग।

अभ्यर्चन (सं॰ क्लो॰) अभि-अर्च भावे ल्युट्। १ सर्वथा पूजा, हरतरहकी परस्तिश।

अभ्यर्चना (सं॰ स्त्री॰ अभ्यर्चन देखो।

अभ्यर्चनीय (सं॰ त्रि॰) अभि अर्च पूजायां अनीयर्। पूजनीय, परस्तिशके क़ाबिल।

अभ्यर्चनीयता (सं॰ स्त्री॰) सुप्रसिद्धि, पाज्यता, इज़्ज़तदारी, रास्तो, माक़ूलियत।

अभ्यर्चित (सं॰ त्रि॰) अभि-अर्च पूजायां क्त। १ पूजित, इज़्ज़त पाये हुआ। २ उचित वाजिब।

अभ्यलङ्कृत (सं॰ त्रि॰) सर्वप्रकार मण्डित, सम्यक् रूप भूषित, सजा हुआ, जो संवारा गया हो।

अभ्यवकर्षण (सं॰ क्लो॰) अभि अव-कृष भावे ल्युट्। १ निकास, निकाल, निचोड़, खींच। २ शल्याद्युत् पाटन, काटि क़मेरका निकालना।

'निर्घातोऽभ्यवकर्षणम्।' (अमर)

अभ्यवकाश (सं॰ पु॰) अनावृत स्थान, खुली जगह।

अभ्यवदान्य (वै॰ त्रि॰) १ अनुदार, कृपण, कञ्जूस, बख़ील, जो दान न करता हो।

अभ्यवस्कन्द (सं॰ पु॰) अभि-अव-स्कन्द घञ्। १ शत्रुका आक्रमण, दुश्मनका हमला। २ दुर्बल बनानेको शत्रु-पर प्रहारका करना, कमज़ोर करनेके लिये दुश्मनपर मारना। ३ प्रहार, मार। ४ प्रयाण, धावा। ५ आक्रमण करना। ६ अवरोध, रोक।

अभ्यवस्कन्दन (सं॰ क्लो॰) अभ्यवस्कन्द देखो।

अभ्यवहरण (सं॰ क्लो॰) अभि-अव-हृ ल्युट्। भोजन-का करना, खाना, निगलना। २ आहार, ख़ुराक़।

अभ्यवहार (सं॰ पु॰) अभि-अव हृ घञ्।

अभ्यवहरण देखो।

अभ्यवहार्य (सं॰ त्रि॰) अभ्यवह्रियते, अभि-अव-हृ ण्यत्। १ भोजनयोग्य भोजनीय, खाने क़ाबिल। (क्लो॰) २ आहार, खाना।

अभ्यवहित (सं० वि०) प्रशमित, निर्वापित, ठण्ढा किया हुआ, जो बुझा दिया गया हो।

अभ्यवहृत (सं० वि०) अभ्यवह्रियते स्म, अभि-अव-हृ-क्त। भक्षित, भुक्त, खादित, खाया हुआ, जो खा डाला गया हो।

अभ्यवायन (सं० क्ली०) अभि-अव इण-अप् वा ल्युट्। १ आभिमुख्य अपयान, नीचेकी ओरका गिराव। २ अपगमन, बुरी चाल। ३ पलायन, फ़रारी, भगोड़ापन।

अभ्यवेत (सं० वि०) मग्न, निविष्ट, अभिनिविष्ट, व्यापृत, लीन, आसक्त, डूबा हुआ।

अभ्ययन (सं० क्ली०) प्राप्ति, उपस्थिति, हासिल, पहुंच।

अभ्यसन (सं० क्ली०) अभ्य-अस-ल्युट्। १ अभ्यास, महावरा, कसरत। २ पुनः पुनः एकरूप क्रियाका करना, बार-बार वैसे ही कामका चलाना। ३ बार बार आवृत्ति, मुतालह, पढ़ाई।

अभ्यसनीय (सं० वि०) १ अभ्यास करने योग्य, महावरा डालने क़ाबिल। २ बार-बार पढ़ने योग्य, जो मुतालह करने क़ाबिल हो।

अभ्यसित, अभ्यास देखो।

अभ्यसितव्य, अभ्यसनीय देखो।

अभ्यसूय, अभ्यासूयक देखो।

अभ्यसूयक (सं० वि०) अभ्यसूयति अभ्यसूयति अभ्य-सूयते वा, अभि-अस उपतापे अस् असूञ् वा कण्वादि० यक्-ण्वुल्। १ अत्यन्त असूयाकर्ता, निहायत बुग़्ज़ रखनेवाला, जो बहुत ज़्यादा डाह करता हो। २ साधुव्यक्तिके गुणमें दोष आरोपक, जो भले आदमी-के हुनरमें ऐब लगाता हो। (स्त्री०) अभ्यसूयिका।

अभ्यसूया (सं० स्त्री०) अभि-असू उपतापे अस् असूञ वा कण्वादि० यक् प्रत्ययान्तात् अ टाप्। परगुणमें दोषारोप, ख़र्वा, दूसरेके हुनरकी ऐबजोई, बुग़्ज़, डाह।

अभ्यस्त (सं० वि०) अभ्यस्यते स्म, अभि-अस-क्त। १ बारम्बार एकरूप कार्यकी आवृत्तिसे युक्त, बार-बार एक ही वैसा काम करनेवाला। २ शिक्षित, तालीमयाफ़्ता, पढ़ा-लिखा। ३ व्याकरणमें द्विगुणित, दुचन्द किया हुआ। (क्ली०) ४ मूलका द्विगुणित आधार, जड़की दुचन्द बुनियाद।

अभ्यस्य, अभ्यसनीय देखो।

अभ्यस्यत् (सं० वि०) अभ्यास करने या पढ़नेवाला, जो महावरा डाल या पढ़ रहा हो।

अभ्यस्तमय (सं० पु०) सूर्यास्तकाल, ग़ुरूब-आफ़ताब। किसीके अनुसार सूर्यका अस्त होना अभ्यस्तमय कह-लाता है।

अभ्यस्तमित (सं० वि०) सूर्यास्तके समय सोनेवाला, जो आफ़ताबके ग़ुरूब होते वक़्त सोता हो।

अभ्याकर्ष (सं० पु०) तालका ठोंकना, ललकार।

अभ्याकाङ्क्षित (सं० वि०) अभ्याकाङ्क्ष्यते स्म, अभि-आ-काङ्क्ष कर्मणि क्त। १ ईप्सित, वाञ्छित, ख़्वाहिश किया हुआ, जो चाहा गया हो। (क्ली०) भावे क्त। २ मिथ्या अभियोग, बनावटी नालिश, झूठा दावा।

अभ्याक्राम (सं० अव्य०) निकट पटापेंग करके, पाससे निकलकर।

अभ्याख्यात (सं० वि०) मिथ्यारूप अभियुक्त, जिसपर झूठा जुर्म लग चुके।

अभ्याख्यान (सं० क्ली०) अभि-आ ख्या-ल्युट्। मिथ्या अभियोग, झूठा जुर्म। 'मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानम्।' (अमर)

अभ्यागत (सं० पु०) अभि-आ-गम कर्तरि क्त। १ अतिथि, अन्यवशे आगत व्यक्ति, मेहमान, दूसरी जगहसे आया हुआ आदमी। (वि०) २ सम्मुखागत, सामने आया हुआ, जो आ पहुंचा हो।

अभ्यागम (सं० पु०) अभिमुखतया गच्छति यत्र, अभि-आ-गम आधारे अप्। १ युद्ध, लड़ाई। २ रण-स्थल, मैदान-जङ्ग, लड़ाईका खेत। कर्मणि अप्। ३ अन्तिक, समीप, क़ुर्ब, पड़ोस। करणे अप्। ४ विरोध, दुश्मनी। भावे अप्। ५ अभ्युत्थान, बढ़ाव, उठान। ६ अभिघात, मार। ७ सम्मुखागमन, पहुंच, मुलाक़ात।

'अभ्यागमोऽन्तिके घाते विरोधाभ्युद्गमादिषु।' (विश्व)

अभ्यागमन (सं० क्ली०) अभि-आ-गम-ल्युट्। अभ्यागम देखो।

अभ्यागारिक (सं॰ पु॰) अभ्यागारे कुटुम्बगतपुत्रादि पोषण-कर्मणि नियुक्त ठन्। १ कुटुम्बगत पुत्रादि पोषण-कार्यमें नियुक्त, जो घरके बाल-बच्चे पालनेमें लगा हो। २ पुत्रादिके पालन निमित्त यत्नवान्, जो बाल-बच्चोंके खिलाने-पिलानेको तदबीर करता रहता हो।

अभ्याघात (सं॰ पु॰) अभि आ-हन-घञ्। १ आघात, ताड़न, चोट, मार। कर्त्तरि घञ्। २ आघातका उपक्रम, मारनेको तय्यारी।

अभ्याघातिन् (सं॰ त्रि॰) अभ्याहन्ति, अभि-आ-हन् ताच्छील्ये णिनुच्। हिंसाशील, आघातकारी, हमला मारनेवाला, जो धावा कर रहा हो।

अभ्याचार (सं॰ पु॰) अभि-आ-चर-घञ्। १ सर्वतो-भाव आचरण, सब तरहकी चाल। २ आक्रमण धावा, हमला, दस्तन्दाजी।

अभ्याज्ञाय (सं॰ पु॰) अभि-आ-ज्ञा-घञ् युक् च। १ अभिज्ञान, पूर्वज्ञात विषयका बिलकुल अनुरूप ज्ञान, समझदारी, पहले जानी हुयी बातको ठीक-ठीक वैसो हो समझ। (सं॰ पु॰) २ आज्ञा, आदेश, हुक्म फर्मान।

अभ्यातान (सं॰ पु॰) अभि आ-तन घञ्। अत्यन्त विस्तार, बहुत ज्यादा फैलाव।

अभ्यात्त (सं॰ पु॰) अभ्यातति सातत्य व्याप्नोति, अभि अत सातत्ये कर्त्तरि क्त। १ सर्वव्यापक परमेश्वर। (त्रि॰) अभ्यादीयतेस्म, अभि-आ-दा-क्त। २ गृहीत, लाया हुआ।

अभ्यात्म (सं॰ त्रि॰) १ अपनी ओर निर्देश किया हुआ, जो अपनी तर्फ झुकाया गया हो। (अव्य॰) २ अपनी ओरको, अपनी तर्फ।

अभ्यात्मतर (सं॰ अव्य॰) अधिक अपनी ओरको, ज्यादातर अपनी तर्फ।

अभ्यादान (सं॰ क्ली॰) आभिमुख्येन आदानम् प्रादि-स॰ अभि-आ-दा-ल्युट्। [illegible] १ प्रथम, प्रारम्भ। २ आरम्भ शुरू।

अभ्याधान (सं॰ क्ली॰) अभीत आधानम्, प्रादि-स॰; अभि आ-धा-ल्युट्। १ सर्वथा मन्त्रादि द्वारा अग्न्या दिका आधान, यथाविधान अग्न्यादि स्थापन। २ संस्थापन, प्रतिष्ठा, जमावट।

अभ्यान्त (सं॰ पु॰) अभि-अम-क्त। रोगयुक्त, पिण्डोड़ित, बीमार, तकलीफ उठानेवाला।

अभ्यापत्ति (सं॰ स्त्री॰) अभि-आ पद्-क्तिन्। अभिमुख आगमन, सामने का आना, आक्रमण, धावा, हमला, चढ़ाई।

अभ्यापात (सं॰ पु॰) विपद्, विघ्न, बाधा, आफत, बदबख्ती।

अभ्यामर्द (सं॰ पु॰) अभ्यते निष्पीड्यते अस्मिन्; अभि-आ मृदि घञ्। १ युद्ध, रण जङ्ग लड़ाई। भावे घञ्। २ निष्पीड़न, तकलीफदिही, दुःखका देना।

अभ्यायंसेन्य (सं॰ त्रि॰) अभि आ-यम बाहु॰ सेन्य। १ अभितो नियन्तव्य रोका जानेवाला। २ अधीन बनाने योग्य या मातहत बनाने लायक हो।

अभ्यारम्भ (सं॰ पु॰) अभि-आ-रभ-घञ्-नुम्। प्रथम आरम्भ, पहला अध्याय, शुरू।

अभ्यारूढ़ (सं॰ त्रि॰) अभि आ-रुह क्त। १ अति आरूढ़, खूब चढ़ा हुआ। २ उच्च, ऊंचा। ३ आगे निकला हुआ, जो सबकृत हो गया हो।

अभ्यारोह (सं॰ पु॰) अभि-आ-रुह-घञ्। १ अभि मुख आरोहण, ऊपरका चढ़ाव। २ एक स्थानसे दूसरे स्थानको परिवर्त, एक जगहसे दूसरी जगहको तबादिला। ३ उन्नति तरक्की। आभिमुख्येनारोहति, देवमावोऽनेन, करणे घञ्। ४ मन्त्रजपविशेष।

अभ्यारोहण (सं॰ क्ली॰) अभ्यारोह देखो।

अभ्यारोहणीय (सं॰ त्रि॰) अभ्यारोढुं शक्यम् अभि आ-रुह-अनीयर्। १ आभिमुख्य आरोहणीय, चढ़ जाने लायक। (पु॰) २ यज्ञ विशेष।

अभ्यारोह्य (सं॰ त्रि॰) आरोहणके योग्य, चढ़ जाने क़ाबिल।

अभ्यावर्त (सं॰ त्रि॰) अभ्यावर्ततेऽ, अभि-आ-वृत् कर्तरि अच्। १ पुनः पुनः आवर्तमान बार-बार वापस आने वाला। २ अभि-आ-वृत-णिच् कर्मणि अच्। ३ बार म्बार आवर्तनीय, बार-बार वापस आने क़ाबिल।

(पु०) भावे घञ्। ४ अतिशय आवृत्ति, फ़ंदमें घ्‌याटा दोहराय। (अव्य०) ५ पुनः पुनः आवृत्ति करके, बार-बार दोहराकर।

अभ्यावर्तिन् (सं० त्रि०) अभ्यावर्तते, अभि-आ-वृत-णिनि। १ सर्वदा स्थितिशील, बार-बार आनेवाला। (पु०) २ वेदोक्त चयमान राजपुत्र।

अभ्यावृत्त (सं० पु०) अभि-आ-वृत् उपसृष्टत्वात् क्त। १ आभिमुख्य आनीत होमशेष द्रव्य, होमकी जो बची हुयी चीज़, सामने लायी गयी हो। (त्रि०) २ बार-म्बार अभ्यस्त, बारम्बार आवृत्तियुक्त, बार-बार मश्‍क़-वरा डाला हुआ, जो बार-बार दोहराया गया हो।

अभ्यावृत्ति (सं० स्त्री०) अभि-आ-वृत-क्तिन्। बारम्बार अभ्यास, पुनः पुनः आवृत्ति, दोहराव, बार-बारका महावरा।

अभ्याश (सं० पु०) अभिमुखं आश्यते व्याप्यतेऽनेन, अभि-आ-अशू व्याप्तौ करणे घञ्। १ निकट, क़ुर्ब, पड़ोस। २ अभिव्यापन, अभिव्याप्ति, पहुंच। ३ फल, नतीजा। (अव्य०) ४ समीप, नज़दीक।

अभ्याशादागत (सं० त्रि०) निकट स्थानसे आगत, जो नज़दीकसे आया हो।

अभ्याशे (सं० अव्य०) समीप, नज़दीक।

अभ्यास (सं० पु०) आभिमुख्येन आस्यते क्षिप्यते पदादि यत्र, अभि-आ-असु क्षेपे आधारे घञ्। १ निकट, समीप, क़ुर्ब, पड़ोस, नज़दीक पास। २ पुनः पुनः अनुशीलन, बार-बारका काम। ३ पुनरावृत्ति, दोहराव। ४ साधन, सामरिक अनुशीलन, सदाका व्यायाम, प्रयोग, स्वभाव, प्रथा, महावरा, जङ्गी कसरत, मुदामी मेहनत, इस्तैमाल, आदत, रिवाज। ५ वेदादिकी आवृत्ति, कण्ठाग्र पठन, ज़ुबानी याददाश्त। ६ शिक्षा, तालीम। ७ धनुर्विद्याका अनुशीलन, तीर चलानेका महावरा। कर्मणि घञ्। ८ व्याकरणोक्त द्विरुक्त धातु भागद्वय, दोबारका दोहराव, तशदीद। ९ काव्यमें—अन्तिम चरणका दोहराव, ग़ज़लके आख़िरी मिलते-मिसरेका बार बार कहा जाना। १० गणित शास्त्रमें—गुणन।

अभ्यासकला (सं० स्त्री०) आसन और प्राणायामकी एकता। योगमें जो चार कला होतीं, उनमें इसका भी नाम पाते हैं। यह विविध साधनके संयोगसे निकलेगी।

अभ्यासता (सं० स्त्री०) अनवरत अनुशीलन, प्रयोग, व्यसन, लगातार महावरा, इस्तैमाल, आदत।

अभ्यासनिमित्त (सं० क्ली०) व्याकरणके द्वित्वका कारण, नहवकी तशदीदका सबब।

अभ्यासपरिवर्तिन् (सं० त्रि०) समीप या निकट भ्रमणकारी, पास या क़रीब घूमनेवाला।

अभ्यासयोग (सं० पु०) अभ्यासेन सर्वदालोचनया योगः, ३-तत्। सर्वदा एक विषयकी चिन्ता द्वारा जात समाधि, जीवात्मा और परमात्माका संयोग, अभ्यास द्वारा किसी कार्यका मन संयोग, बार-बार यादका आना।

अभ्यासव्यवाय (सं० पु०) द्वित्वाक्षरसे उत्पन्न अवकाश, जो वक़फ़ा तशदीदसे निकलता हो।

अभ्यासादन (सं० क्ली०) अभि-आ-सद्-णिच्-ल्युट्। शस्त्रादि द्वारा शत्रुको निर्बल बनानेका काम, शत्रुपक्षपर आक्रमण, शत्रुके सम्मुखगमन, निकट स्थापन, हथियार वग़ैरहसे दुश्मनको कमज़ोर करना, शत्रूपर हमला मारना, दुश्मनका सामना पकड़ना, नज़दीक जा पहुंचना।

अभ्यासी (सं० पु०) अभ्यास उठानेवाला, जो महावरा डालता हो।

अभ्याहत (सं० त्रि०) आहत, स्तम्भित, ज़ख़्मी, चोट खाये हुआ।

अभ्याहनन (सं० क्ली०) आघात, वध, स्तम्भन, मार-पीट, क़त्ल, फटकार।

अभ्याहार (सं० पु०) आभिमुख्येन आहारः आहरणम्, प्रादि-स०। १ अपकारकी इच्छासे सम्मुखका आक्रमण, साक्षात् चौर्य, डाका, दिन-दहाड़ेकी लूट-मार। २ अभियोग, नालिश। ३ कवचादि धारण, बख़्तर वग़ैरहका पहनना। ४ आलिङ्गन, हमागोशी। ५ मेलन, मेल-जोल। ६ आभिमुख्य आनयन, सामनेका लाना। ७ भक्षण, खाना। यह चर्व्य, चोष्य, लेह्य और पेय भेदसे चार प्रकारका होता है।

अभ्याकार्य (सं॰ त्रि॰) मोलन कर लेने योग्य जो या दालनेके लायक हो।

अभ्यादित (सं॰ त्रि॰) अभि-आ-धा क्त। मन्त्रादि द्वारा यथाविधान संस्कार किया हुआ, जो रख दिया गया हो।

अभ्युक्ष (सं॰ त्रि॰) आभिमुख्येन उक्षम् प्रादि-स॰। समक्ष उक्ष, साक्षात् उक्ष, प्रकाशित, सामने ज़ाहिर किया हुआ, जो ऊपर कह दिया गया हो।

अभ्युक्षण (सं॰ क्लो॰) आभिमुख्येन उक्षणम् प्रादि स॰, अभि उक्ष सेचने ल्युट्। सेचन, अधोमुख हस्त द्वारा सेचनरूप संस्कार विशेष, सिंचाई, छिड़काव, आबपाशी। "प्रोक्षणाभ्युक्षणे समे।" (स्म) मूलमन्त्र पढ़ अधोमुख हस्त द्वारा अग्निकुण्डमें जल छिड़क देना चाहिये। इस बातके प्रमाणमें लिखा है,—

"उत्तानेन तु हस्तेन प्रोक्षणं परिकीर्त्तितम्।
न्यञ्चिताभ्युक्षणं प्रोक्तं तिरश्चावोक्षणं स्मृतम्॥" (स्मृति)

जैसे कार्यमें हाथ सीधा रख जो जलसेक किया जाता, वह प्रोक्षण कहलाता है। फिर उलटे हाथसे गिर जानेवाले जलसेकको अभ्युक्षण कहेंगे। इसी तरह हाथ घुमा जो जलसेक होता, उसका नाम अवोक्षण पड़ा है। मीमांसक द्रव्यनिष्ठ अभ्युक्षणादि संस्कारको अदृष्ट विशेष रूप बतायेगा।

अभ्युक्षित (सं॰ त्रि॰) अभि-उक्ष-क्त। अभ्युक्षण किया हुआ, जो छिड़का गया हो।

अभ्युक्ष्य (सं॰ त्रि॰) अभ्युक्षितुं योग्यम्, अभि उक्ष अर्हार्थे ण्यत्। अभ्युक्षणके योग्य, छिड़कने क़ाबिल। (अव्य) उलटे हाथसे जलका छींटा देकर, ऊपर छिड़ककै।

अभ्युचित (सं॰ त्रि॰) साधारण, रीतिमत, मामूली, जो रिवाजमें आ गया हो।

अभ्युच्चगामिन् (सं॰ त्रि॰) १ अतिशय उच्च गमन करते हुआ, जो निहायत ऊंचे चढ़ा जाता हो। (पु॰) २ वृक्ष विशेष।

अभ्युच्चय (सं॰ पु॰) अभि-उत् चि-अच्। वृद्धि, बढ़ती। "दर्शयन् महदभ्युच्चयम्।" (भट्टि ५८)

अभ्युच्छ्रित (सं॰ त्रि॰) अधिरोपित, उन्नीत, उपरि निहित, ऊपर चढ़ाया हुआ, जो बढ़ा दिया गया हो।

अभ्युच्छ्रितकर (सं॰ त्रि॰) उन्नीतकर, जो हाथ उठाये हो।

अभ्युत्क्रुष्ट (सं॰ त्रि॰) उच्चैर्घोष द्वारा प्रशंसित, जिसकी तारीफ़ बुलन्द आवाज़से हो चुके।

अभ्युत्क्रोशन (सं॰ क्लो॰) उच्चैर्घोष, बुलन्द आवाज़, ज़ोर की चिल्लाहट।

अभ्युत्क्रोशनमन्त्र (सं॰ पु॰) प्रशंसाका गीत, जो गाना किसीकी तारीफ़के बारेमें हो।

अभ्युत्थान (सं॰ क्लो॰) अभितः उत्थानम्, प्रादि स॰, अभि-उद् स्था-ल्युट्। १ किसीका आदर करनेके लिये आसन छोड़ खड़ा हो जाना, ताज़ीम। २ सम्मुद्गमन, अवसर हो किसीका आदरपूर्वक आगमन, अगवानी। ३ उद्यम, उद्भव, उच्चपदप्राप्ति, अधिकार-प्राप्ति, तरक्की उठान, ऊंचे जगहका पाना।

अभ्युत्थायिन् (सं॰ त्रि॰) अभ्युत्तिष्ठति, अभि-उद् स्था-णिनि-युक्। उन्नतिशील, उपक्रमायमाण, उठनेवाला, जो खड़ा हो। (स्त्री॰) ङीप्। अभ्युत्थायिनी।

अभ्युत्थायी, अभ्युत्थायिन् देखो।

अभ्युत्थित (सं॰ त्रि॰) अभि-उद् स्था-क्त। अभि-वादनके निमित्त खड़ा हुआ, पूज्य व्यक्तिका सम्मान-रक्षाके लिये आसनसे उत्थित, आभिमुख्य उद्गत उठा हुआ जो उठकर खड़ा हो गया हो।

अभ्युत्थिताश्व—दशरथसे कतएक पूर्व कोई नृपति-विशेष।

अभ्युत्थेय (सं॰ त्रि॰) अभ्युत्थातुं अर्हम्, अभि-उद् स्था उपसङ्ख्यानात् यत्। अभिवाद्य जिसके अभिवादन को आसनादिसे उठना पड़े, ताज़ीमके लायक़, जो अगवानी किये जाने क़ाबिल हो।

अभ्युत्पतन (सं॰ क्लो॰) आभिमुख्येनोत्पतनम्, प्रादि स॰ अभि-उद्-पत-ल्युट्। सम्मुख भाव ऊर्ध्व-गमन, ऊर्ध्वपतन, उद्गमन, झपटा-झपटी कूद-फांद, किसीके ऊपर आकर पड़ना।

अभ्युदय (सं॰ पु॰) अभितः उदयः, प्रादि स॰, अभि-उद्-इण-अच्। १ अभीष्ट कार्यका प्रादुर्भाव,

ख्वाहिश की हुयी बातका हो जाना। २ वृद्धि, उन्नति, वढ़ती, तरक्की। 'अभ्युदये क्षमा।' (हितोपदेश) अभितः उदय. मङ्गलम्, प्रादि-स०। ३ विवाह और पुत्र-जन्मादि रूप इष्टलाभ, शादीका हो जाना। ४ ग्रहका उत्थान, सितारेका निकलना। ५ आरम्भ, आग़ाज़। ६ आनन्द, खुशी। ७ शुभफल, अच्छा नतीजा। ८ उत्सव, जलसा। ९ समापत्ति, दैवयोग, दैवगति, दैवघटन, हादिसा, वाक़िया, माजरा।

अभ्युदयार्थक (सं० त्रि०) अभ्युदयः इष्टलाभः अर्थो निमित्तं यस्य, वहुव्री० कप्। अभ्युदयके निमित्त किया जानेवाला, जो अभ्युदयके लिये हो। आभ्युदयिक श्राद्ध, विवाहादि सकल मङ्गल कार्यमें पहले ही करना चाहिये। किन्तु पुत्रजन्म प्रायश्चित्त प्रभृति कर्मके वाद भी आभ्युदयिक श्राद्धका विधान पाया जाता है।

अभ्युदयिन् (सं० त्रि०) उठते हुआ, जो निकल रहा हो।

अभ्युदयेष्टि (सं० स्त्री०) अघमर्षण यागविशेष।

अभ्युदानयन (सं० क्ली०) अभि-उद्-आ-नी-ल्युट्। अग्निके अभिमुख आनयन, आगके सामने पहुंचाना।

अभ्युदाहरण (सं० क्ली०) अभि-उद्-आ-हृ-ल्युट्। १ अभिमुख कथन, सामनेकी वातचीत। २ अभिमुख उत्क्षेपण, सामनेकी उछाल। ३ किसी पदार्थका विपरीत भावसे निदर्शन, जो मिसाल किसी चीज पर उलटे तौरसे पडती हो।

अभ्युदित (सं० त्रि०) अभितः सम्यक् उदितं उत्क्रान्तं वा प्रातर्विहितं वैधकर्मनिद्रादिवशात् येन यस्य वा, प्रादि वहुव्री०; अभि-उद्-इण-क्त। १ निद्रावशतः प्रातःकालका वैधकर्म न करनेवाला, जो नींदके सबब सवेरेका मुनासिव काम न करता हो।

'सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च।
च प्रमानमिनिर्मुक्तावभ्युदितौ तौ यथाक्रमम्॥' (अमर)

२ सर्वांश उदित, पूरे तौरसे निकला हुआ। ३ कथित, कहा हुआ। ४ प्रादुर्भूत, जो हुआ हो। ५ वर्धित, वढा हुआ। ६ उत्सवकी भांति प्रसिद्ध किया हुआ, जो जलसेकी तरह मशहूर किया गया हो। (क्ली०) ७ सूर्योदय, आफ़तावका निकलना। ८ उद्गम, उठान।

अभ्युदोरित (सं० त्रि०) अभि-उद्-ईर्-क्त। १ सम्मुख कथित, सामने कहा हुआ। २ ऊपर फेंका हुआ, जो चला दिया गया हो। (क्ली०) भावे क्त। ३ कथन, कलाम।

अभ्युद्ग (सं० त्रि०) उठते हुआ, जो निकल रहा हो।

अभ्युद्गत (सं० त्रि०) १ विस्तृत, फैला हुआ। २ अभ्यर्थनाय प्रस्थानित, जो ताज़ीमके लिये वाहर गया हो। ३ उत्थित, उठा हुआ।

अभ्युद्गतराज (सं० पु०) बौद्ध कल्प विशेष।

अभ्युद्गम (सं० पु०) अभि-उद्-गम-घञ्। १ अभ्युत्थान, उन्नति, उद्भव, उठान, वढती, होती। २ अभ्यर्थनाये उठना, ताज़ोम वजानेको खड़ा हो जाना।

अभ्युद्गमन (सं० क्ली०) अभितः उद्गमनम्, प्रादि-स०; अभि-उद्-गम-ल्युट्। अभ्युद्गम देखो।

अभ्युद्दृष्ट (सं० क्ली०) दृग्गोचर होना, देखाई देना, उदय, उठान।

अभ्युद्दृष्टा (सं० स्त्री०) संस्कार विशेष, कोई रस्म।

अभ्युद्धृत (सं० त्रि०) अभि-उद्-हृ-क्त। १ याच्ञा विना आनीत, वेमांगे लाया हुआ। २ अभ्यर्थना करके प्रदत्त, जो ताज़ीमके साथ दिया गया हो। अभि-उद्-धृत। ३ अभिमुख होकर उत्तोलन द्वारा धृत, जो सामने उछालकर पकडा गया हो।

अभ्युद्यत (सं० त्रि०) अभितः सम्यक् उद्यतम्, प्रादि-स०; अभि-उद्-यम-क्त। १ अयाचित अथच किसी व्यक्तिकर्तृक आनीत, वेमांगे लाया या दिया हुआ। २ उद्यक्त, उपक्रम-विशिष्ट, कार्य करनेमें प्रवृत्त, विलकुल तैयार, उठा हुआ, जो काम कर रहा हो।

अभ्युन्दत् (वै० त्रि०) भिगोते हुआ, जो तर कर रहा हो। २ वह जानेवाला, जो वहते जा रहा हो। (स्त्री०) अभ्युन्दती।

अभ्युन्नत (सं० त्रि०) अभितः सम्यक् उन्नतम्, अभि-

उद्-नम कर्तरि क्त। १ सम्यक् उन्नत, बढ़ा-चढ़ा जो ऊंचा हो गया हो। २ समभिव्याप्त, ऊपरको उठा हुआ, जो निहायत ऊंचा या भरा हो।

अभ्युन्नति (सं॰ स्त्री॰) सम्यक् उन्नति या उन्नति, बड़ी तरक्की या खूब-तरक्की।

अभ्युपगत (सं॰ त्रि॰) अभि उप गम क्त म चाप:। १ स्वीकृत, अङ्गीकृत, मञ्जूरशुदा, जो मान लिया गया हो। २ निकट गत, पास पहुंचा हुआ। ३ प्रमाणित, सबूत दिखाया दिया हुआ, जो मुसल्लिम हो। ४ विवक्षित, प्रतीत, उपलक्षित, सूचित, मफ़हूम, मुतसव्वर, माने रखते हुआ। ५ सम, समान तुल्य, अनुरूप, अनुरूप, सधर्मन्, मुताबिक़, मिला, जैसा हो, मानिन्द, हमसफ़र, मुतयाविक़, मिलता-जुलता। (स्त्री॰) अभ्युपगतता।

अभ्युपगन्तव्य (सं॰ त्रि॰) निकट जाने योग्य, जो पास पहुंचने लायक़ हो।

अभ्युपगन्ता (सं॰ पु॰) अभ्युपगन्तृ देखो।

अभ्युपगन्तृ (सं॰ त्रि॰) सम्मुख उपस्थित होने या स्वीकार करनेवाला, जो पास पहुंचता या मञ्जूर कर लेता हो।

अभ्युपगन्त्री (सं॰ स्त्री॰) अभ्युपगन्तृ देखो।

अभ्युपगम (सं॰ पु॰) अभि-उप-गम-अप्। १ समीप गमन, पासका पहुंचना। २ प्रतिज्ञा, स्वीकार, अङ्गीकार, इक़रार, रज़ामन्दी, ठेका, क़ौल-क़रार। ३ नियम क़ायदा। ४ विश्वास, एतबार। ५ सिद्धान्त। यह न्यायशास्त्रके चार सिद्धान्तमें सन्निविष्ट है। जब वैदेके मुनि कोई मानी हुई बात कहते जाती, तब उसकी विशेष परीक्षा अभ्युपगम सिद्धान्त कहलाती है। 'अभ्युपगम: क्रीड़ायामपि ...' (नैष)

अभ्युपगमसिद्धान्त (सं॰ पु॰) अङ्गीकृत तत्त्व, माना हुआ उसूल-मुताबिक़।

अभ्युपगमित (सं॰ त्रि॰) १ अङ्गीकार कराया हुआ, मण्यितिसे प्राप्त, मरजीसे मिला हुआ, जो मना लिया गया हो। (पु॰) २ नियत अवधिका दास, जो मुद्दाम मुक़र्रर वक़्तके लिये हो।

अभ्युपपत्ति (सं॰ स्त्री॰) अभि अतिशयेन उपपत्ति: प्रादि-स॰, अभि-उप-पद् क्तिन्। १ अभिष्ट विचारके और इष्ट सम्पादन रूप अनुग्रह, मेहरबानी प्यार। 'अभ्युपपत्तिरनुग्रह' (अमर) २ सान्त्वना, विपाकृत बचाव। ३ सङ्गति, रक्षा। ४ किसी स्त्रीका गर्भाधान, औरतको हमल।

अभ्युपपत्तुम् (सं॰ अव्य॰) अभित: उपपत्तुम् प्रादि-स॰ अभि-उप-पद् तुमुन्। सान्त्वनाके निमित्त, अनुग्रहार्थ, विपन्नतके लिये मेहरबानीके वास्ते।

अभ्युपपन्न (सं॰ त्रि॰) अभि उप-पद-क्त तस्य न। अनुगृहीत, बचाया हुआ।

अभ्युपयुक्त (सं॰ त्रि॰) नियुक्त, व्यवहृत काममें लगा हुआ, जो इस्तेमाल किया गया हो।

अभ्युपशान्त (सं॰ त्रि॰) निर्वापित प्रशमित ठण्डा किया हुआ, जो कम कर दिया गया हो।

अभ्युपस्थित (सं॰ त्रि॰) आश्रित, अनुगत, समेत, परिहृत साथ, खातिरसे दिया हुआ, जिसको मदद मिली हो।

अभ्युपाकृत (सं॰ त्रि॰) याग सम्पन्न करनेको आहूत, जो किसी सेवाको बुलाया गया हो।

अभ्युपाय (सं॰ पु॰) अभित: उपाय:, प्रादि-स॰, अभि-उप-इण्-अच्। १ स्वीकार, रज़ा, इक़रार। २ अधिक उपाय, कार्य साधन ज़रिया, वसीला, तदबीर, चारा, इलाज, मक़र।

अभ्युपायन (सं॰ क्ली॰) उत्कोच पारितोषिक, रिश्वत, इनाम।

अभ्युपाहृत (सं॰ त्रि॰) समीपागत, आया हुआ, जो पहुंच गया हो।

अभ्युपेत (सं॰ त्रि॰) अभि समीप उपेतम् प्रादि-स॰; अभि उप-इण्-क्त। १ अभिमुखसे समीपगत, पहुंचा हुआ। २ अङ्गीकृत, स्वीकृत मञ्जूर किया हुआ, जो मान लिया गया हो।

अभ्युपेतव्य, अभ्युपेय देखो।

अभ्युपेताकाम (सं॰ त्रि॰) अभिलषित वस्तुके सम्पादनार्थ सिद्धित, जो फायदेके लिये हुयी तमामीकी तलनेमुकि लिये मरबत हो।

अभ्युपेत्य (सं॰ त्रि॰) अभि-उप-इण्-क्यप् तुगागम।

१ अभिगमनीय, पास जाने क़ाबिल। (अव्य०) ल्यप्। २ स्वीकार करके, समीप पहुंचकर।

अभ्युपेत्या (सं० स्त्री०) अभि-उप-इण् भावे ल्यप्। सेवा, खिदमत, टहल।

अभ्युपेत्याशुश्रूषा (सं० स्त्री०) अभ्युपेत्य स्वीकृत्य अशुश्रूषा सेवनाभावः। दासत्व करनेमें स्वीकृत होनेसे उसका अकरण रूप विवाद विशेष, भृत्यके कर्तव्य कर्ममें त्रुटि डालनेपर उसी कार्यकी अवहेलाके निमित्त प्रभु और भृत्यका परस्पर विवाद, मालिक और नौकरकी शर्तका बिगाड।

अभ्युपेय (सं० त्रि०) अङ्गीकार किया जानेवाला, जो मञ्ज़ूर करने क़ाबिल हो।

अभ्युष (सं० पु०) अभित उष्यते लुष्यते वा अग्निना दह्यते, अभि-उष लुष वा बाहुलकात् कर्मणि क्त। १ पौलिका, रोटी। उष भावे कर्मणि वा घञ्। २ अल्प दग्ध अन्न, कुछ जला हुआ अनाज। भावे घञ्। कलायादिका अल्प दहन, दानेकी थोडी भुंजाई। अभि-उष भावे घञ्। ३ भुना हुआ अनाज, बहुरी, भूंगडा। चना मटर वगैरह भूननेपर चट-चटानेसे अभ्युष कहलाता है।

राजनिघण्टुमें अभ्युषका इस तरह गुण लिखा गया है,—यह मधुर, गुरु, रोचक एवं बलकारी होता और श्लेष्मा, रक्त तथा पित्तको बढाता है; फिर अङ्गारपर भूननेसे आग्नेय, वायुवर्धिकर, लघु और बलकारक हो जायेगा।

अभ्युषित (सं० त्रि०) अभि-वस-क्त। सम्मुख रहने-वाला, जो एकत्र वास करता हो, नज़दीक क़याम करनेवाला, जो साथ ही ठहरा हो।

अभ्युषीय (सं० त्रि०) अभ्युष-सम्बन्धीय, बहुरी या भूंगडेसे तअल्लुक़ रखनेवाला।

अभ्युष्य, अभ्युषीय देखो।

अभ्युह्य (सं० अव्य०) १ प्रतिफल निकालकर, नतीजा पैदा करके। २ तर्कना लगाकर, तक़दीर-कलाम मिलाके।

अभ्यूढ़ (सं० त्रि०) १ निकट आनीत, नज़दीक लाया हुआ। २ प्रतिफलित, नतीजा निकाला हुआ।

अभ्यूष, अभ्युष देखो।

अभ्यूषीय, अभ्युषीय देखो।

अभ्यूष्य, अभ्युषीय देखो।

अभ्यूह (सं० पु०) अभि-ऊह-घञ्। १ वितर्क, वहम। २ कृदन्त साधन, तक़दीर-कलामका वहम पहुंचाना। ३ बुद्धि, समझ।

अभ्यूहनीय (सं० त्रि०) अभितः ऊहनीयं ऊह्यं वा अभि-ऊह-अनीयर् यत् वा। तर्कनीय, वहम करने क़ाबिल।

अभ्यूहितव्य, अभ्यूहनीय देखो।

अभ्यूह्य, अभ्यूहनीय देखो।

अभ्येत्य (सं० अव्य०) समीप उपस्थित होके, पास पहुंचकर।

अभ्येषण (सं० क्ली०) १ इच्छा, ख़ाहिश, चाह। २ आक्रमण, हमला, धावा।

अभ्येषणीय (सं० त्रि०) अभिलाष किया जानेवाला, जिसकी चाह लगी रहे।

अभ्योष, अभ्युष देखो।

अभ्योषीय, अभ्युषीय देखो।

अभ्योष्य, अभ्युषीय देखो।

अभ्र (सं० क्ली०) अभ्र-अच्। अभ्रक, अबरक। अन्यान्य विवरण अबरक शब्दमें देखो।

भारतवर्ष, सायिबेरिया, पेरू, मेक्सिको, नारवे, सुइडेन प्रभृति नाना स्थानके पार्वतीय प्रदेशमें यह उप-धातु उत्पन्न होता और सचराचर देखनेमें कांच-जैसा परिष्कार और श्वेतवर्ण रहता है। किसी किसी जातिके अभ्रमें सिलिका ४६-६३ भाग, मैग्नेशिया ३०-३५ भाग एवं जल २-६ भाग मिलता है। तद्भिन्न अन्यान्य जातीय अभ्रमें लौह, मेङ्गेनिज़, क्रोम, फ़्लोरिन् प्रभृति पदार्थ भी विद्यमान रहते हैं। इन सब पदार्थोंके गुणसे श्वेत, धूसर, सब्ज़, लाल, धुंधला, कृष्ण वर्ण एवं क्वचित् पीतवर्ण अभ्र देखनेमें आता है। कोई कोई अभ्र चट्-चटा, कोई विलक्षण स्थितिस्थापक एवं कितना ही अभ्र तोडनेपर परत-परत अलग होजानेवाला रहता है। अभ्र बहुत पतला होता है। सचराचर ३००००० इञ्चसे अधिक मोटा नहीं पड़ता।

अनेक स्थानोंमें दो हाथ व्यासमें भी बड़ा बड़ा अभ्र पाया जाता है। अणुवीक्षणयन्त्रकी परीक्षामें द्रव्य निर्दिष्ट करनेके लिये अभ्र यथेष्ट व्यवहृत होता है। साइबेरिया, पेरू, मेक्सिको प्रभृति स्थानमें खिड़कीपर कांचकी जगह अभ्र ही लगाया जाता है। अभ्रधातुके गुणमें शीतोष्णता बदलनेसे कुछ भी व्यतिक्रम नहीं पड़ता, परन्तु कांचके गुणमें बहुत व्यतिक्रम होता है। इसीसे लालटेनमें भी अच्छा अभ्र लगाया जा सकता है। दीवार खूब साफ और सुन्दर दिखाई देनेसे अनेक देशके राजमिस्त्री अभ्रचूर्ण देकर मन्दिरको रंगते हैं। भारतवर्षके अजमेर आदि नाना स्थानीय अट्टालिकाकी भीतरी छतमें माल्य सम प्रभृति अनेक प्रकारके ताखपर अभ्र चढ़ा है। इससे राजप्रासादका सौन्दर्य बहुत बढ़ता है। तोप बन्दूककी गहरी आवाजके धक्केसे कांच तड़क जाता, परन्तु अभ्र नहीं टूटता, इसलिये यह रणपोतमें भी लगता है। इस देशके मालीराम, दीन विवाह आदि अनेक प्रकार उत्सवमें अभ्रके झाड़ ल्याम फानूस और दूसरे भी कितने ही खिलौने बनाते हैं। अबीरके साथ कोई कोई अभ्र मिलाते हैं। वैद्य लोग अनेक रोगमें औषधके साथ अभ्र प्रयोग करते हैं।

वैद्यमतसे अभ्र चार प्रकार है। यथा,—पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र। कहते हैं कि पूर्वकालमें वृत्रासुरको वध करनेके लिये इन्द्रने वज्र उत्पन्न किया था। इस वज्रसे स्फुलिङ्ग झड़ कर पर्वतोंपर जा गिरा। उन्हींसे अभ्रकी उत्पत्ति हुयी है। इसीसे आज भी लोग कहा करते, कि मेघ गरजनेसे अभ्र उत्पन्न होता है। फिर सुनते हैं कि मेघ हस्तिरूपसे आकाशको चढ़ जाता है। आकाशको चढ़ते समय उसके मुखसे लार टपकता, उसी लारसे अभ्र उत्पन्न होता है। 'रसेश्वर'में लिखा कि गौरीके रजसे अभ्रक धातुकी उत्पत्ति हुई है।

शास्त्रकार कहते हैं—श्वेतवर्ण अभ्र जातिमें ब्राह्मण, रक्तवर्ण—क्षत्रिय, पीत—वैश्य और कृष्णवर्ण शूद्र रहता है। इनमें रौप्य मुक्तादिपर श्वेतवर्ण अभ्र विहित है। रसायनमें रक्तवर्ण, सुवर्णादिमें पीतवर्ण एवं रोगादिमें कृष्णवर्ण अभ्र प्रशस्त होता है।

आगमें डालनेसे पिनाक अभ्रका सब परत खुल जाता है। इसके खानेसे कुष्ठरोग उत्पन्न होता है। दर्दुर अभ्रको आगमें डालनेसे गोल गोल कुप्पेसे पड़ते और एक प्रकारका शब्द निकलता है। इस अभ्रके खानेसे मृत्यु हो सकती है। नागाभ्रका आगमें छोड़नेसे सांपकी फुफकार जैसा शब्द होता है। इसके खानेसे भगन्दर रोग लगता है। वज्राभ्र देखनेमें काला होता है। आगमें डालनेसे यह जैसेका तैसा ही रहता, कोई भावान्तर नहीं पड़ता, इसीसे यह सब अभ्रमें श्रेष्ठ है। उत्तर पर्वतमें जो काला अभ्र होता, वही विशेष गुणकर होता है। दक्षिण पर्वतका अभ्र उतना गुणकर नहीं ठहरता। वज्राभ्रसे सब व्याधि और जरा मिट जाती, और इसका सेवन करनेसे अकालमृत्यु कम होती है। किन्तु अन्यान्य धातुकी तरह बिना शोधित किये अभ्र भी सेवन न करना चाहिये। जिस पार्वतीय प्रदेश या पत्थरोंके स्थानमें अभ्रकी खानि होती, वहांका जल पीना उचित नहीं। पीनेसे अनेक प्रकारका उत्कट रोग लग जाता है।

अभ्र शोधनेकी प्रणाली—पहले कृष्णवर्ण अभ्रको आगमें जलाकर गायका कच्चा दूध छोड़ देते हैं। इस प्रक्रियाको कोई कोई एकबार और कोई कोई पांच सात बार करते हैं। फिर अभ्रको अच्छी तरह धोकर उसके सब तह खोल डालते हैं। सब तह अलग अलग हो जानेसे उसे कागजी नीबू और चौलाई सागके रसमें आठ दिन तक भिगा रखते हैं।

उसके बाद एक गुण उस शोधित अभ्र और उसका चतुर्थांश साठी धान एक साथ कम्बलमें लपेटकर तीन दिन जलमें भिगा रखना चाहिये। फिर उसको हाथसे मलनेपर विशुद्ध अभ्रका कम्बलके छेदसे बाहर गिर पड़ेगा। उसे ही अलग कर लेते और धान्याभ्र कहते हैं।

धान्याभ्रको मन्दारपत्रके रसके साथ पत्थरोंमें पहले अच्छी तरह मर्दन करके टिकिया बना लेते हैं। फिर

टिकियेको मन्दारके पत्तेमें लपेटकर गजपुटसे पकाना चाहिये। इस तरह सातवार मन्दारके आटेसे मर्दन और सात बार पकाकर अन्तमें वटको वौके रसमें फिर मर्दन करना पड़ेगा। पीछे तीन बार पहले ही की तरह गजपुटसे पकाते हैं। इसतरह पक जानेपर यह जारित अभ्र कहा जाता है।

जारित अभ्र और उसीके बराबर गायके घी दोनोको एक साथ मिला कर लौह-पात्रमें पकाना चाहिये। जब घी जल जाय, तब पात्रको उतार ले। इसे अमृतीकरण कहते हैं। इस प्रकारसे प्रस्तुत किया हुआ अभ्र कषाय, मधुर, शीतवीर्य्य, आयुष्कर एवं धातुपोषक होता और त्रिदोष, व्रण, मेह, कुष्ठ, प्लीहा, उदरी, ग्रन्थिरोग तथा क्रमिको नष्ट करता है। मात्रा ३-६ रत्ती रहेगी। इसे मधुके साथ सेवन करना पडता है। वैद्यलोग जारित अभ्रसे नाना प्रकारके औषध प्रस्तुत करते हैं।

मिष्टर जी वाट अपनी "Dictionary of the Economic Products of India"में लिखते हैं :—

अभ्र चार प्रकारका होता है। यथा—Muscovite (लाल), Boitite (काला), Lepidolite (सीसेके रङ्गका) और Lepidomelane।

हिन्दुस्थानके अनेक स्थानोंमें अभ्रककी खानि हैं, ... व्यवहारयोग्य अभ्रक थोड़े ही स्थलोंमें पाया जाता ... यह प्राय: वेढङ्गे पत्थरोंके दर्रेमें मिलता है। मन्द्राजवाले विजगापट्टम जिलेके अन्तर्गत कोलरमें जितने वडे वडे पत्र कामके योग्य चाहिये, उतने ही वडे वडे मिल जाते हैं, परन्तु वह अच्छे नहीं होते। क्योंकि रुपयेके प्राय: बारह सेर मिलते हैं। प्रधानत: इसकी आमदनी विहारके हज़ारीबाग जि़लेसे होती है। वहां धम्वी,कुदरमा,धूब और जामताराकी खानोंसे अभ्रक निकाला जाता है। पास ही गया और मुंगेर जि़लेके रजाऊमें भी नौ इञ्च लम्बे और उतने ही चौडे अभ्रके पत्र मिलते हैं। हज़ारीबाग जि़लेके उत्तरी अंशमें एक फुट या उससे अधिक व्यासवाले मस्कोवाइट (Muscovite)के पत्र निकलते हैं। मेलेट कहता है, मैंने २० × १७ और २२ × १५ इञ्चके पत्र भी देखे; फिर खानि खोदनेवालोंको कभी कभी इससे भी बहुत बड़े पत्र मिले हैं। इस जि़लेका अभ्रक धूम्रां-जैसे भूरे या लाल-भूरे रङ्गका होता है। यह सामान्य मोटाईके पत्रोंसे मिलता और बहुत स्वच्छ रहता है। व्यापारका यही लाल अभ्रक है। जब-तब यह पीले या ज़ैतून जैसे सब्ज़ रङ्गका भी पाया जाता है। मेलेटके कथनानुसार इसी जि़लेमें कभी कभी Boitite और सीसे-जैसे भूरे या गहरे नीले रङ्गका Lepidolite अभ्रक मिलता है। महिसूरमें मसकोवाइट (Muscovite) अभ्रके एक एक फुट लम्बे पत्र निकलते हैं। वह चित्रकारोंके काममें आते हैं। पश्चिमघाट पर्वतश्रेणी और उसकी पूर्व ओरवाली ज़मीनमें लालटेन बनाने और खिडकियोंमें लगाने लायक़ वडे वडे पत्र मिलते हैं। मिष्टर ब्राउयका कथन है, कि वाइनादकी रङ्ग वदनेवाली चट्टानोंके दर्रेमें भी बड़े बड़े पत्र पाये जाते हैं। इरवाइनका कहना है, कि राजपूतानेमें वडे बड़े पत्र खानिसे निकाले जा सकते हैं। मेलेटका मत है, कि टोंकके उत्तर-पूर्व चतुर्भुज पहाड़ी और जयपुरमें भी अच्छे क़दके पत्र मिलते हैं, परन्तु वह हज़ारीबागके अभ्रक-जैसे अच्छे नहीं होते। सतलज नदीवाले बाङ्गतू पुलके पास पत्थरके दर्रोंसे भी बड़े वडे टुकडे निकलते हैं। मि॰ वेडेन पौयेल लिखते हैं, कि गुडगांवमें बहुत अच्छे और वडे वडे पत्र मिले थे, जा सन् १८६४ ई॰ को लाहोरकी प्रदर्शिनोमें देखाये गये।

अभ्रकका चूर्ण कपडा छापनेके काममें व्यवहार किया जाता है, फिर धोबीलोग चमक देनेके लिये उसे कपड़ेमें भी लगा देते हैं।

संस्कृतज्ञ लेखकोंके मतानुसार अभ्रक चार प्रकारका होता है। यथा—सफेद, लाल, पीला और काला। सफेद लालटेन बनानेके काम और काला औषधमें व्यवहार किया जाता है। व्यवहारमें लानेसे पहले इसे शोध लेते हैं। पहले गर्म करके यह दूधमें भिगोया जाता है। उसके बाद तह अलग अलग कर लेते, फिर चौलाई शाकके रस और

कांजिकमें आठ दिन तक उन्हें भिगो रखते हैं। पीछे उन्हें मोटे कपड़ेके टुकड़ेमें रख और थोड़े से धान मिला कर मलते हैं। मलनेसे कपड़ेके छिद्रोंसे अभ्रकका चूर्ण नीचे गिर पड़ता है। उसे बटोर कर इकट्ठा कर लेते हैं। यह धान्याभ्रक कहा जाता है। इस धान्याभ्रकको गोमूत्रमें मिला एक मट्टीके बरतनमें रख उसका मुंह बन्द कर देते हैं। फिर उसे सौ बार आगमें फूंकते हैं। कोई कोई सहस्र बार भी फूंकते हैं। इसे सहस्रपुटित अभ्र कहते हैं। यह आठ रुपये तोला बिकता है। इस अभ्रका रंग ईंटके चूर जैसा लाल होता, खानेमें नमकीन और मीठा मालूम देता है। यह उत्तेजक और पुष्टिकारक होता है। यह रोगोंके साथ रक्ताल्पता, कामला, संग्रहणी, अतीसार, आंव, पुराने ज्वर, शोथ, मूत्ररोग और नामर्दी आदि रोगोंमें काम आता है। रोगोंके साथ देनेसे इसका गुण बढ़ जाता है। मात्रा ६से १२ ग्रेन तक रहेगी।

कोई लोग इसे लोहभस्मतुल्य समझते हैं।

अभ्रकको लालटेन, दरवाजे, और खिड़कियां बनाई जाती हैं। यह चित्रोंमें चमक देनेके काम आता और दर्पणोंके पीछे लगाया जाता है। हिन्दुस्तानमें यह मन्दिर राजभवन मण्डप और कपड़े आदिके सजानेमें लगेगा। अभ्रकका चूर्ण मट्टीके बरतनों और साधारण कपड़ोंमें भी दिया जाता है। चित्रकार इसे चित्रकारीके काममें लाते हैं।

अभ्रंलिह (सं० पु०) अभ्रं मेघं लेढि स्पृशति, अभ्र-लिह्-खश्-मुम्। १ वायु, हवा। (वि०) २ अतिशय उच्च, गगनस्पर्शी, निहायत ऊंचा, आसमानको चूमनेवाला।

अभ्रक, अभ्र देखो।

अभ्रकभस्मन् (सं० क्ली०) अबरककी खाक।

अभ्रकसत्त्व (सं० पु०) ईस्पात, लोहा।

अभ्रङ्कष, अभ्रंकष देखो।

अभ्रज, अभ्र देखो।

अभ्रनाग (सं० पु०) अभ्रस्य मेघस्य नागः हस्ती, ६-तत्। ऐरावत, इन्द्रका हाथी।

अभ्रनामक (सं० पु०) मुस्ता, मोथा।

अभ्रपटल (सं० पु-क्ली०) अभ्रक अबरक।

अभ्रपथ (सं० पु०) अभ्रे गगने पन्था, ७-तत्। गगनमार्ग, विमान, शून्यपथ आसमानकी राह।

अभ्रपिशाच, अभ्रपिशाचक देखो।

अभ्रपिशाचक, अभ्रपिशाच देखो।

अभ्रपुष्प, [illegible] देखो।

अभ्रप्रुष् (वै० स्त्री०) बादलकी बौछ, बूंदाबांदी।

अभ्रम (सं० पु०) भ्रमो भ्रमणं मिथ्याज्ञानं, अभावे नञ्-तत्। १ भ्रमका अभाव भ्रमका न लगना, [illegible]। (त्रि०) नास्ति भ्रमो यस्य यत्र वा, बहुव्री०। २ भ्रमान्त, भ्रमशून्य, न भूलनेवाला, जिसमें कोई भ्रम न रहे।

अभ्रमती (सं० स्त्री०) आनर्त वा काठियारप्रान्तकी एक प्राचीन नदी। (काशी नागरखण्ड ११५।११)

अभ्रमांसी (सं० स्त्री०) अभ्रमिव जटाया मांसी यस्याः बहुव्री०। आकाशमांसीलता, जटामांसी।

अभ्रमातङ्ग, अभ्रनाग देखो।

अभ्रमाला (सं० स्त्री०) अभ्राणां मेघानां माला श्रेणी, ६-तत्। मेघसमूह, मेघश्रेणी, घटा, बादलका जमघट।

अभ्ररोहस्, [illegible] देखो।

अभ्रलिप्त (सं० त्रि०) मेघसे आच्छादित, बादलसे भरा हुआ।

अभ्रलिप्ती (सं० स्त्री०) अभ्रेण लिप्तम्, स्त्रीत्वात् ङीप् ३-तत्। अल्प मेघयुक्त आकाश, जिस आकाशमें थोड़ा बादल रहे।

अभ्रवटिका (सं० स्त्री०) अबरककी गोली। यह रसविशेष ज्वरातिसार रोगमें देना और मटर बराबर गोली रखना चाहिये। इसके बनानेकी विधि यह है,—

> [illegible]
> [illegible]
> [illegible]
> [illegible]
> [illegible]
> [illegible]

श्वेतापराजितायाश्च स्वरसं पलमात्रकम् ।
दापयेत्तत्र गुञ्जाश्च विधिज्ञः कुशलो भिषक् ।
रसतुल्यं प्रदातव्यं चूर्णं मरिचसम्भवम् ।
देयं रसार्धभागेन चूर्णं टङ्कणसम्भवम् ।" (रसरत्नाकर)

ग्रहणीपर चलनेवाली अभ्रवटिका इसतरह बनेगी,—

"पक्वेष्टकाहरिद्राभ्यामगारधूमकेन च ।
शोधितं पारदञ्चैव कर्षार्धं तुल्यया धृतम् ॥
भृङ्गराजरसे गद्य गन्धकं रससम्मितम् ।
ताभ्यां कज्जलिकां कृत्वा भावयित्वा भेषजैः ॥
सिन्दुवाररसे मण्डूकपर्णिकारसे ।
केशराजरसे चैव शीघ्रसुन्दरजे रसे ॥
रसेऽपराजितायाश्च सोमराजीरसे तथा ।
रक्तचित्रकपत्रोत्थे रसे च परिभावितम् ।
रससामसमांशेन छायायां शोषयेद्भिषक् ॥" (राजनिघण्टु)

अभ्रवर्ष (सं० पु०) अभ्रैर्मेघैर्वृष्यते, वृष कर्मणि घञ्। १ मेघ कर्तृक सिच्यमान स्थान, जो जगह बादलसे सींची जाती हो। भावे घञ्। २ मेघवर्षण, बादलका बरसना।

अभ्रवाटक (सं० पु०) अम्रातक वृक्ष, अमडा।

अभ्रवाटिक (सं० पु०) अभ्रेण शून्येन वाटो वेष्टनं यस्य, बहुव्री०। आम्रातक वृक्ष, अमडा। अमड़ेको पत्ती झड जानेसे वृक्ष केवल शून्य द्वारा वेष्टित रहता, इसीसे इसका नाम अभ्रवाटिक पडा है।

अभ्रवाटिका (सं० स्त्री०) अभ्रवाटिक देखो।

अभ्रशिरस् (सं० क्ली०) आकाशका बना हुआ शिर, जो सर आसमान्‌से बना हो।

अभ्रसार (सं० पु०) भीमसेनी कर्पूर, काफ़ूर।

अभ्राज (सं० त्रि०) न भ्राजते, भ्राज-अच्; नञ्-तत्। अनुज्ज्वल, मैला, जो अच्छा न मालूम हो।

अभ्राता (सं० पु०) अभ्रातृ देखो।

अभ्रातृ (सं० त्रि०) नास्ति भ्राता यस्य, बहुव्री०। भ्रातृशून्य, जिसके भाई न रहे।

अभ्रातृक, अभ्रातृ देखो।

अभ्रातृमत्, अभ्रातृ देखो।

अभ्रातृमती (सं० स्त्री०) अभ्रातृ देखो।

अभ्रातृमान् (सं० पु०) अभ्रातृ देखो।

अभ्रातृव्य (सं० त्रि०) नास्ति भ्रातृव्यः भ्रातुष्पुत्रः शत्रुर्वा यस्य, नञ्-बहुव्री०। १ भ्रातुष्पुत्रहीन, जिसके भतीजा न रहे। २ शत्रुरहित, जिसके दुश्मन् न रहे।

अभ्रावी (सं० स्त्री०) अभ्रमु देखो।

अभ्रान्त (सं० त्रि०) भ्रम-क्त, ततो नञ्-तत्। भ्रान्तिशून्य, प्रमादरहित, न घबराया हुआ, जो ग़लतीमें न हो, माफ़, ठहरा हुआ।

अभ्रान्तबुद्धि (सं० त्रि०) विशुद्ध प्रज्ञा-सम्पन्न, जिसकी अक़्ल बिगडा न रहे।

अभ्रान्ति (सं० स्त्री०) भ्रम-क्तिन्, नञ्-तत्। १ भ्रान्तिका अभाव, प्रमादका न पडना, भ्रमणकी शून्यता, घबराहट या ग़लतीका न होना। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ भ्रान्तिशून्य, जो घबराहट या ग़लतीमें न पडता हो।

अभ्रावकाश (सं० पु०) अभ्र आकाशमेव अवकाशः अवसरः। मेघका शरण, बादलकी पनाह।

अभ्रावकाशिक (सं० त्रि०) अभ्रावकाशः अस्त्यस्य, इनि स्वार्थे कन् वा। केवल आकाशावरणयुक्त, जो आकाश भिन्न अन्य आवरणसे विशिष्ट न हो, बारिशके तयीं खुला हुआ।

अभ्रावकाशिन्, अभ्रावकाशिक देखो।

अभ्राह्व (सं० क्ली०) कुङ्कुम, केसर।

अभ्रि, अब्रि देखो।

अभ्रिखात (सं० त्रि) लकडीके फावडेसे खोदा हुआ।

अभ्रित (सं० त्रि०) मेघाच्छन्न, बादलसे भरा हुआ।

अभ्रिय (सं० त्रि०) १ मेघ-सम्बन्धीय, बादलसे पैदा हुआ। (पु०) २ विद्युत, बिजली। (क्ली०) ३ सौदामिनीयुक्त मेघसमूह, जिस घटामें बिजली भरी रहे।

अभ्रूष (सं० पु०) तालुरोगविशेष, तालूकी कोई बीमारी। इसमें स्तब्धलोहित एवं शोणितोत्थ शोथ, ज्वरकी-तीव्र वेदनासे युक्त रहता है।

अभ्रेष (सं० पु०) भ्रेष चलने घञ्, ततो नञ्-तत्। १ युक्तता, योग्यता, क्षमता, पात्रता, उपयोगिता,

उपपत्ति, क़ाबिलियत, लियाक़त मक़दूर। (त्रि०) २ अचलनशून्य जिसका रिवाज न रहे।

अमु (सं० पु०) अम्ब माझ को फ़क़ीर गाड़े रखता हो।

अमत्र (सं० त्रि०) आ समन्तात् अमति विषयी, आ-अम् बाहुलकात् अत्र; उपसर्गकसत्त्वम्। १ महत्, बड़ा भारी, ताक़तवर। २ भीषण, भयदायक, डरावना ख़ौफ़नाक। (क्ली०) ३ अन्न, पानी। ४ मेघ, बादल। ५ निर्झर, झरना। ६ राक्षस, आदमख़ोर। ७ अपूर्व शक्ति अनोखी ताक़त। ८ घोर विपत्ति, बड़ी आफ़त। ९ प्रखरता, तेज़ी। (पु०) १० शक्ति-मानो मनु कहर जुल्म।

अम, आम (सं० पु०) अम गतौ अच् घञ् वा। १ सेवक, नौकर। २ साथी, हमसोहबत। ३ बल, ताक़त। ४ रोग, बीमारी। ५ पाप, नफ़्स। ६ अपक्व अन्नादि, कच्चा अन्न वगैरह।

'अमो रोगे सहाये च आमोऽपक्वे तु वाच्यवत्।' (मेदि)

अमगांव—मध्यप्रदेशके चांदा ज़िलेका एक परगना। इसमें बहुत पहाड़ पड़ा है। सिवा बाणगङ्गाके निकट दूसरी जगह आदमको कोई कभी नहीं देखते। इसमें बाणगङ्गाकी छिनगी हो सहायक नदी बहती है। यहां चावल ऊपर और बड़ी चीज़ खासकर पैदा होगी। पूर्व-सागर-तटसे जितना ही नमक मंगाया जाता है। उत्तरमें तैलगू और दक्षिणमें लोग मराठी भाषा बोलेंगी। तैलङ्गी ही इसके प्रधान व्यापारी हैं।

अमग्न (सं० पु०) न मग्नं यत्र, नञ्-बहुव्री०। सागर विशेष, किसी बहरका नाम। कुशद्वीपके अन्तर्गत ज्वालामुख पर्वतपर आश्वायन राजा रहते थे। वह अपनी भगिनी अन्तर्मदाके साथ तपोवनमें पहुंच तपस्या करने लगे। मायादेवीने नाना प्रकार प्रलोभन देखा उनको तपस्यामें विघ्न डालनेकी विस्तर चेष्टा की थी। किन्तु किसीतरह वह कृतकार्य न हुयीं। अन्तर्मदाने उससे गर्वित हो कहा था,—'त्रिभुवनके लोग अब आकर हमारी पूजा चढ़ायें। हम अभिरूपको अरुन्धतीके सदृश विराजमान हैं। देहान्त होनेसे हम नक्षत्रलोकमें जाकर रहेंगी।' इस गर्वित वाक्यसे मायादेवी अतिशय क्रुद्ध हो गयी थीं। उन्होंने चोरोंको बुला तपोवनमें आग लगवा दी। किन्तु तपोवनमें विष्णु अन्तर्मदाके सहाय रहे। तथापि मायासे पर्वत बन गये थे। उसी पर्वतकी गुहामें राजा और उनकी भगिनी दोनो जा छिपे। इसीसे उस स्थानको स्थानाच्छादित या परिरक्षित कहते हैं। मायादेवी पुनर्वार प्रबल भाड़ बांध उन्हें निरुद्ध बनाने लगी थीं। विष्णु भी पुनर्वार हठात् उस वन तले और जालसे उन्हें बचा लिया था। उस स्थानको रक्षितस्थान कहते हैं। इतने पर भी मायादेवीकी मनस्कामना पूर्ण न हुयी। परिशेष पर उन्होंने अन्तर्मदाको पकड़ किसी सागरके जलमें डाल दिया था। किन्तु विष्णुकी मायासे अन्तर्मदा न डूबीं पानी पर तैरने लगीं। उस दिनसे इसके जलमें कोई वस्तु डालने पर नहीं डूबती। यही इसके अमग्न नाम पड़नेका कारण है।

आधुनिक प्रत्नतत्त्वानुसन्धायी अनुमान बांधते, कि राजा और उनकी भगिनी सिन्धुके उत्तर प्रदेशमें तपस्या करने गये थे, आस्फाल्टाइटिस सागरका ही नाम अमग्न रखा। नहीं कह सकते, यह मीमांसा कहांतक सङ्गत है।

अमङ्गल (सं० पु०) मङ्गल-अभाव; नास्ति मङ्गलं प्रयोजनं यस्मात्, ५ बहुव्री०। १ एरण्डवृक्ष, रेंड़का पेड़। एरण्डव्यवहार न रखनेसे किसी काम नहीं आता। (त्रि०) ६ वा ७-बहुव्री०। २ मङ्गलशून्य अशुभ, बदक़िस्मत, बदबख़्त, बुरा। (क्ली०) नञ् तत्। ३ अशुभ, बदक़िस्मती, कमबख़्ती। ४ अशुभसूचक लक्षणादि जो शिगूफ़ वग़ैरह बुरा हो। हमारे शास्त्रकारने विस्तार अशुभ लक्षणका उल्लेख उठाया है। ब्रह्मवैवर्तपुराणमें इसका विस्तारित विवरण मिलेगा। दिवसमें शृगालका कुकाना, कुत्तेका रोना, रात्रिको उल्लूका बोलना, छीपकली या कड़की कोठेका खांव-खांव करना, घरमें खम्भेका गिरना और यात्राकालमें भग्न या शून्य कुम्भ, तैल लवण, अस्थि कार्पास, कच्छप, कुत्ते, विड़ाल, नग, मल, देवलब्राह्मण, ग्रामयाजक, यमक, पाठ, विष,

नञ्-तत्। ३ अख्यात, अज्ञात, मालूम न होनेवाला, जो दमाग़में समझ न पड़ता हो।

अमतपरार्थ (सं० वि०) अज्ञात विषयमें असम्बद्ध, आम मज़मूनसे लगाव न रखनेवाला।

अमति (सं० पु०) अम अति। १ काल वक़्त। २ चन्द्र, चांद। ३ दम्भ, मक्र। (स्त्री०) ४ दोषि अमत्व। ५ रूप, सूरत। ६ ज्ञानाभाव, बेअक़्ली। ७ असम्यग्बुद्धि, ओछी समझ। (त्रि०) ८ दुष्ट, बदमाश। ९ ज्ञानहीन, बेसमझ। १० दरिद्र, ग़रीब।

अमतिपूर्व (सं० त्रि०) अचेतन, अज्ञात, बेहोश, बेइरादा जिसे पहलेका ख़याल न रहे।

अमतीवम् (सं० त्रि०) अमतिरप्रमक्ता बलिष्ठय अनुवि, वन क्षिप् दीर्घ। १ अप्रमत्त बुद्धिहीन, ओछी समझवाला। २ दरिद्र, निर्धन, ग़रीब, जिसके पास दौलत न रहे।

अमत्त (सं० त्रि०) न मत्तम् नञ्-तत्। अक्षीब, निर्मद बाहोश जो मतवाला न हो।

अमत्र (सं० क्लो०) १ भाजनपात्र, भाजन, बरतन। २ बल, ताक़त। (त्रि०) ३ परिमित, ताक़तवर। ४ अपरिमित, हदसे ज़्यादा।

अमत्रिन् (सं० त्रि०) १ शक्तिशाली, बलवान, ताक़तवर, ज़ोरदार। २ भाजन लिये हुआ, जिसके पास बरतन मौजूद रहे।

अमत्सर (सं० पु०) मद-सरन्, ततो नञ्-तत्। १ अन्यके मङ्गलमें हिंसाका अभाव, दूसरेकी भलाईमें हसदका न करना। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ मात्सर्यरहित, अन्यके प्रति द्वेषशून्य, हसद न रखने वाला फ़य्याज़, जो किसीसे डाह न करता हो।

अमद (सं० त्रि०) हर्षक निरानन्द, बेचैन, ग़मज़दह, अफ़सोसदह, जो उदास रहता हो।

अमदन (सं० क्रि-वि०) इच्छापूर्वक, सरासर, जान-बूझकर।

अमद्य (सं० वि०) सोममाधुर्यके अयोग्य, जो सोमकी मिठाईके क़ाबिल न हो।

अमद्यक (सं० वि०) मधुपर्कके अयोग्य, जो शहद दूध और घी मिलाकर दिया जाने क़ाबिल न हो।

अमधुर (सं० वि०) १ कटु, कड़वा, जो मीठा न हो। (पु०) २ वंशीके ध्वनि दोषमें एक दोष।

अमध्यम (सं० वि०) अमध्यस्थ बीचमें न पड़नेवाला।

अमध्यस्थ (सं० त्रि०) असामान्य, असमबुद्धि जो बराबर न हो।

अमध्यमवर्तिनी (सं० स्त्री०) चेतनजड़ोभय धर्म-वर्तिनी न होनेवाली, जो जानदार और बेजान् दोनों सिफ़तके बीच न रहती हो।

अमन (अ० पु०) आनन्द, शान्ति, चैन बचाव।

अमननीय, अम्नाय देखो।

अमनस् (सं० त्रि०) नास्ति प्रशस्तत्वात् कार्यक्षम मनो यस्य। १ कार्यक्षम मनोहीन, काम करने लायक़ तबीयत न रखनेवाला। २ मनोवृत्तिशून्य, जिसका मन मर जाये। (क्लो०) ३ जो इन्द्रिय इच्छाका न हो, ज्ञानका अभाव, जो मोबार पहुँचा न हो।

अमनस्क (सं० त्रि०) १ इच्छाके इन्द्रियसे रहित, जिसे ज्ञान न रहे ख़ाहिशका ख़याल न रखनेवाला, जिसे मालूम न पड़े। २ अचेतन, बेहोश।

अमनस्विन् (सं० त्रि०) अज्ञान, अमनुष्यधर्मा, बेसमझ, आदमख़ोर-जैसा।

अमनाक् (सं० अव्य०) अधिक, अत्यन्त रूपसे, ज़्यादा बहुत, ख़ूब।

अमनि (सं० स्त्री०) १ गति चाल। अमनिर्देश। (उज्ज्वलदत्त) २ पथ, राह।

अमनिया (हिं० वि०) विशुद्ध, स्वच्छ, पवित्र, पाक, साफ़, जो छुआ न गया हो।

अमनुष्य (सं० पु०) अमानी नञ्-तत्। १ मनुष्य भिन्न पशु, देवता इत्यादि, आदमीको छोड़ जानवर, फ़रिश्ता, दरयूत वग़ैरह। (त्रि०) अमायपुरुष नञ्-तत्। २ मनुष्योचित गुणशून्य, आदमीके क़ाबिल सिफ़त न रखनेवाला, जो इन्सान न हो।

अमनुष्यता (सं० स्त्री०) क्लीवत्व, पौरुषहीनता, पुरुषार्थहीनता, नामर्दानगी, ज़नानापन।

अमनुष्यनिषेवित (सं० त्रि०) मनुष्यशून्य, जहां मनुष्य न रहे, आदमीके जाना जिस जगह आदमी न बसे।

अमनैक (हिं० पु०) कृषकविशेष, कोई खास काश्त-कार। यह अवधमें रहता और मालगुजारी देनेमें अपना खास हक रखता है। २ सरदार, अधिकार-प्राप्त व्यक्ति। (वि०) ३ साहसी, जबरदस्त।

अमनोगत (सं० त्रि०) न मनोगतम्, नञ्-तत्। अनभिप्रेत, खयाल न किया हुआ, नामालूम।

अमनोज्ञ (सं० त्रि०) चित्तको अप्रिय, अनिष्ट, अनीप्सित, दिलको खुश न आनेवाला, नागवार, नापसन्द।

अमनोनीत (सं० त्रि०) न मनोनीतम्, नञ् तत्। १ जो मनःपूत न हो, खराब-खस्ता, मरदूद. गया-गुजरा। २ अनीप्सित, अनभिप्रेत, नापसन्द।

अमनोयोग (सं० पु०) अभावे नञ्-तत्। १ मनो-योगका अभाव, अवधारणाका न रहना, कमतवज्जोही। (वि०) नञ्-बहुव्री०। २ अन्यमनस्क, मनोयोग-शून्य, दिल न लगानेवाला, जिसका खयाल दूसरी जगह लगा रहे।

अमनोयोगिन् (सं० त्रि०) अनवधान, निरपेक्ष, अनासक्त, उपेक्षक, मन्दादर, प्रमत्त, प्रमादिन्, अन-वहित, अनिविष्टचित्त, शून्यहृदय, बेपरवा।

अमनोरम्य, अमनोहर देखो।

अमनोहर (सं० त्रि०) अनभिप्रेत, अनीप्सित, नाग-वार, नापसन्द, जो दिलको न खींचता हो।

अमन्तव्य (सं० त्रि०) ध्यान न दिया जानेवाला, जिसपर खयाल न दौड़े।

अमन्तु (सं० त्रि०) मन-तुन्, ततो नञ्-तत्। १ अज्ञान, नासमझ। २ निरपराध, बेगुनाह।

अमन्त्र (सं० त्रि) नास्ति मन्त्रो वेदपाठो यस्मिन् कर्मणि, बहुव्री०। १ वेदपाठशून्य, जिसमें वेदमन्त्र न पढ़ा जावे। २ वेदमन्त्र न जाननेवाला, जिसे वेद पढ़नेका अधिकार न रहे। (पु०) ३ अवैदिक मन्त्र, मन्त्रशून्य कर्मादि।

अमन्त्रक, अमन्त्र देखो।

अमन्त्रविद् (सं० त्रि०) वेदविधि न जाननेवाला, जिसे वेदका सूत्र मालूम न रहे।

अमन्त्रिका (सं० स्त्री०) अमन्त्र देखो।

अमन्द (सं० त्रि०) १ पटु, होशियार। २ उत्कृष्ट, बढ़िया। ३ तीव्र, चालाक, जो सुस्त न हो। ४ अधिक, प्रधान, जरूरी, ज्यादा। (पु०) ५ वृक्षविशेष, किसी दरख्तका नाम।

अमन्यमान (सं० त्रि०) १ न माननेवाला, जो इज्जत न करता हो। २ आशा न रखते हुआ, जिसे आशा हो न रहे।

अमन्युत (सं० त्रि०) गुप्त क्रोध न रखनेवाला, जो किसी शख्ससे डाह न करता हो।

अमम (सं० पु०) १ भावी उत्सर्पिणीके द्वादश जिन-विशेष। (वि०) नास्ति मम इत्यभिमानः गृहादिषु यस्य, बहुव्री०। २ ममताशून्य, गृहादिके प्रति माया न रखनेवाला, खुदसनायीसे खाली, जिसे बिलकुल दुनयावी मुहव्बत न रहे।

अममता (सं० स्त्री०) निरीहता, निःसङ्गता, बेतमयी, बेगरजी, बेपरवायी।

अममत्व (सं० क्ली०) अममता देखो।

अमम्रि (वै० त्रि०) अक्षर, अमर, जो कभी मिटता न हो।

अमर (सं० पु०) मृ-अच्, ततो नञ्-तत्। १ देवता, फरिश्ता। २ कुलिशद्रुम, सेहुड। ३ अस्थिसंहार वृक्ष, हरजोड। ४ पारद, पारा। ५ सनोवर। ६ मरुद्गण विशेष, उनचासमें एक पवन। ७ विवाह-जोटक नक्षत्रविशेष। इसमें अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्या, हस्ता, स्वाती, अनुराधा, श्रवणा और रेवती नक्षत्र रहता है। ८ सुवर्ण, सोना। ९ रुद्राक्ष। १० हस्ती, हाथी। ११ अमरकोष अभिधानके रच-यिता। लोग इन्हें अमरसिंह कहते हैं। यह बौद्धधर्मावलम्बी रहे और विक्रमादित्यकी सभाको सुशोभित करते थे। १२ गिरिविशेष, किसी पहाडका नाम। १३ सोमगिरिके अन्तर्गत सरोवरविशेष, सोम पहाड़का कोई तालाब। इसे देवसरोवर भी कहते हैं। १४ उकार अक्षरका गूढ़ अर्थ। १५ तेंतीस संख्या। १६ अमरकोष। १७ बम्बईके कच्छ जिलेका स्थान विशेष। यह भुजसे कोई चौबीस क्रोस पश्चिम अवस्थित है। प्रति वर्ष यहां गजनीके अमीर कारकासिमको

कृतिरखाको मेला लगता है। सन् ई०के १४वें शताब्द तक पश्चिमभारतमें भ्रमण करते समय कच्छमें राज्य करनेवाले सम्मा राजपूतों द्वारा मार डाले गये थे। चैत्र कृष्णपक्षमें जो पहला सोमवार पड़ता उसमें मेला शुरू होता और पांच दिनतक रहता है। मन्दिरके और शाह मुराद मेलेका प्रबन्ध करते हैं। प्रति वर्ष हजारों मुसलमान और नीच जातिके हिन्दू यात्री इस जगह आते और रुपया पैसा नारियल कपड़ा बकरा, भेड़, मिठाई तथा छोहारा कब्रपर चढ़ाते हैं। यहां चावल, छोहारे, रङ्गीन कपड़े बैल, ऊट और मिठाईका रोजगार चलता है।

अमरकथा (स० स्त्री०) १ गजपिप्पली, बड़ी पीपल।

अमरकण्टक—पर्वतविशेष, एक पहाड़। यह पर्वत बुंदेलखण्डके रीवा राज्यमें समुद्रतलसे ३४८३ फ़ुट ऊंचे अवस्थित है। इससे सोन और नर्मदा नदी निकली है। यह विन्ध्याचलके सातपुरा पर्वतका एक भाग है और इसकी चोटीपर सुविस्तृत अधित्यका पड़ी है। यहां नर्मदा नदीके चारो ओर सुन्दर मन्दिर बने और कितने ही निर्झर पानीका फौवारा छोड़ा करते हैं। अमरकण्टक हिन्दुओंका एक तीर्थ है और प्रति वर्ष महादेवका मेला लगता है।

अमरकण्टिका (सं० स्त्री०) शतावरी सतावर।

अमरकन्द (स० पु०) कन्दविशेष।

अमरकण्ठ—महिम्नस्तोत्रके टीकाकार।

अमरका, आमरका—बम्बईके सूरत ज़िलेकी कोई पुरानी छावनी। त्रैकूटक महाराज दहसेनने यहां विजय पाकर जो दानपत्र लिखा, उसमें अब्दात संवत् २०७ पड़ा है।

अमरकान्त—संस्कृत पद्याकर नाममालाके रचयिता।

अमरकानिक (सं० पु०) हथियाको पकड़ना।

अमरकाष्ठ (स० स्त्री०) देवकाष्ठ, देवदारु।

अमरकुसुम (सं० स्त्री०) लवङ्ग, लौंग।

अमरकोट—सिन्धुनदके परपारका स्थान विशेष। पहले यह किसी राजपूतराज्यकी राजधानी रहा। इसी स्थानमें प्रसिद्ध बादशाह अकबरका जन्म हुआ था।

अकबर देखो।

अमरकोष (स० पु०) अमरसिंहप्रणीत अभिधान-विशेष। अमरसिंह देखो।

अमरख (हिं०) अमर्ष देखो।

अमरखी (हिं० वि०) क्रोधी गुस्सावर, बुरा माननेवाला।

अमरगाङ्ग—बम्बईके धारवाड़ ज़िलेवाले देवगिरि स्थानके कोई यादव-नृपति। यह भिल्लमके पौत्र, मल्लुगीके पुत्र और करणके भ्राता रहे। अन्य-पुत्र भिल्लम महाराज सन् ११८१ ई०में देवगिरिके सिंहासन पर प्रतिष्ठित थे।

अमरगढ़ (अमरार गढ़)—बर्दमानके गोपभूम प्रान्तका एक प्राचीन नगर। पहले यह सद्गोपवंशके नृपति महेन्द्रनाथ महाराजकी राजधानी रहा। इसके चारो ओर सुदीर्घ दुर्गश्रेणी बनी थी। आज भी उसका भग्नावशेष देखनेमें आता है।

अमरगण (स० पु०) देवतासमाज फरिश्तोंका मजमा।

अमरगोल—बम्बईवाले धारवाड़ ज़िलेके हुबली परगनेका कोई गांव। यहां जो एक शिलालेख मिला था, उसमें महामण्डलेश्वर जयकेश द्वितीयका उल्लेख रहा। उन्होंने सन् १११८ ई० से ११२५ ई० तक राज्य किया था। इस ग्रामके मध्य शङ्करलिङ्गका मन्दिर बना, जो कुछ कुछ गिरने लगा है। मन्दिरकी दीवारों और खम्भोंपर देवदेवीकी मूर्ति अङ्कित है।

अमरचन्द्र—१ परिमलनामक संस्कृतव्याकरणरचयिता। २ वायडगच्छीय जिनदत्तसूरिके शिष्य। इन्होंने कला-कलाप, काव्यकल्पलता, छन्दोरत्नावली, बालभारत प्रभृति संस्कृत ग्रन्थ बनाये थे। ३ विवेकविलास-रचयिता। यह सन् ई०के १३वें शताब्दमें विद्यमान थे।

अमरज (सं० पु०) अमर दुर्मर इव जायते, अमर-जन-ड। १ दुष्खदिरवृक्ष, खमालू। २ देवदारु। ३ नदीवट।

अमरजी—राजपूतानेके एक कवि। 'राजस्थान'में टाडने इनका उल्लेख किया है।

अमरत्व (सं० स्त्री०) अमरता, अमरत्व, अनश्वरता, आनन्त्य, नित्यता हयात-अबदी, हयात-जाविदानी, दवाम, कभी न मरनेकी हालत।

अमरणीय (सं० त्रि०) अमर, अनश्वर, नित्य, लाज-वाल, जो कभी मरता न हो।

अमरणीयता (सं० स्त्री०) अमरत्व देखो।

अमरतटिनी (सं० स्त्री०) देवतावोंकी नदी, गङ्गा।

अमरतरु (सं० पु०) १ देवदारु। २ अर्कादि, अकोडा वगैरह।

अमरता (सं० स्त्री०) १ अनश्वरता, कभी न मरनेकी हालत। २ देवत्व, देवताका भाव।

अमरत्व (सं० क्ली०) अमरता देखो।

अमरदत्त—१ बम्बईवाले खम्भात प्रान्तके नृपतिविशेष। यह राजपूताने—जयपुरके रणस्तम्भगढवाले धंधल पंवारकी २६ वीं पीढीमें उत्पन्न हुवे थे। सन् ई०के १३वें शताब्द अलाउद्दीन् खिलजीने जब रणस्तम्भगढको लूटपाट अपने हाथ किया, तब धंधलको वहांसे भाग खम्भातमें जा बसना पडा। सन् ई०के १६वें शताब्दमें अमरदत्तने शाहजहांको कोई हीरा नजर दिया था। उससे उन्होंने अत्यन्त प्रसन्न हो इन्हें रायकी उपाधि प्रदान की और अपने साथ ही दिल्ली ले जाकर दरबारका मुसाहब बना लिया। यह एक लडका छोडकर मरे थे, जिसने मुरशिदाबादके सेठ मानिकचन्दकी लडकासे अपना विवाह किया। २ एक प्राचीन संस्कृत-शब्दकोषकार।

अमरदारु (सं० पु०-क्ली०) अमराणां प्रियं दारु, शाक०-तत्। देवदारु।

अमरदास—नानकपन्थियोंके दश गुरुमें एक। सिखोंके 'ग्रन्थ'में इनके बनाये भजन मिलते हैं।

अमरदेव—१ मालव देशवाले किसी विक्रमादित्य नृपतिकी राजसभाके रत्न-विशेष। कहते हैं, जब महादेवने स्वप्न देखाया, तब बोध-गयामें अशोकका कोई विहार खोदवा इन्होंने एक शिवमन्दिर बनवाया था। बोधगयासे आविष्कृत १००५ संवत्की शिला-लिपिसे उपरोक्त विषय प्रमाणित होता है।

अमरद्रु (सं० पु०) विट्खदिरवृक्ष, लजालू।

अमरद्विज (सं० पु०) अमराणां देवानां पूजकः द्विजः, शाक०-तत्। देवल ब्राह्मण, पुजारी ब्राह्मण, जो ब्राह्मण देवताका पूजन करता हो।

अमरनाथ (सं० पु०) १ इन्द्र, देवतावोंके मालिक। २ काश्मीरका एक प्रसिद्ध तीर्थ। यहां महादेवका जो स्वयम्भु तुषारलिङ्ग है, उसीका नाम अमरनाथ वा अमरेश्वर पडा है। प्रति वर्ष श्रावण मासकी राखी पूर्णिमाको भारतवर्षके नाना-देशवासी यात्री यहां आते हैं।

अमरनाथ काश्मीरकी पूर्व दिशामें अवस्थित है। इसके उत्तर तिब्बत देश है। यहांकी पर्वतमाला बहुत ऊंची-नीची है। ऊंचाई प्रायः १५०००-१६००० फीट् होगी। क्या शीत, क्या ग्रीष्म—बारहो महीने आगे और तुषार ही तुषार दिखाई देता है। पथ दुर्गम, प्राणिशून्य और तृणशून्य है। सहस्र सहस्र प्रस्तरखण्ड और हिमशिला पतनोन्मुख हो रही है। चलते समय यात्रीके उच्चस्वरमें बोलने अथवा जोरमें पैर फटकने पर उसको धमकसे सारी शिला उसके शिरपर गिर पड़ेगी। इधर भाद्रमास रातदिन वृष्टि हुआ करती, कभी कभी बर्फ भी पड़ जाती है। इतनी विघ्नबाधा रहते भी प्रायः दो हजार यात्री प्रति वर्ष इस स्वयम्भुलिङ्गका दर्शन करने अमरनाथ पहुंचते हैं।

पथ ऐसा दुर्गम रहनेके कारण काश्मीराधिपति यात्रियोंको विशेष सहायता देते हैं। इस महा-तीर्थका दर्शन करनेको भारतवर्षके सुदूर स्थानोंसे यात्री आते हैं। उनमें धनी दरिद्र, योगी संन्यासी, सभी सम्प्रदायके मनुष्य पाये जाते हैं। दरिद्रोंको काश्मीरराज स्वयं राहखर्च देते हैं।

राखी-पूर्णिमासे चौदह पन्द्रह दिन पहले श्री-नगरके निकट रामबागमें सरकारी झण्डा उडा दिया जाता है। इसीको देखकर यात्री क्रमशः एकत्र होते हैं। फिर पूर्णिमासे आठ दिन पहले ही सब यात्री श्रीनगरसे यात्रा करते हैं। अनन्तनागमें झण्डा पहुंचने पर यात्री एकत्र हो जाते हैं, आगे पीछे कोई भी नहीं रहता। वहांसे अमरनाथ २८ क्रोस रह जाता है। बीचमें पांच पडाव पड़ते हैं, फिर तीर्थस्थान मिलता है। पथमें कुछ भी नहीं पाते। अमरनाथमें भी न तो हाट-बाजार और

न मनुष्योंकी बस्ती ही है। इन्हींसे यात्री अमरनाथमें ही आवश्यकीय वस्तु खरीद लेते हैं।

राज-पताका आगे आगे और उसके पीछे पीछे बाजेमें प्राय लिये यात्री चलते हैं। अमरनाथके पथमें सब मिलाकर इक्कीस तीर्थोंमें स्नान किया जाता है। पहले वितस्ता नदीके उस पार कश्यपमुनिका तीर्थ वा योवान मिलता है। वहां कोई देवमूर्ति नहीं। कहते हैं, वहां जो कोई स्नान करता, वह तीर्थ एवं श्रीसम्पन्न होता है।

दूसरा तीर्थ पाण्ड्रेतन है, यह 'पुराणाधिष्ठान' शब्दका अपभ्रंश नाम पड़ता है। भगवती सती और महादेव उनका पीछा कर रहे थे। इसी स्थानमें महादेवने भगवतीका पदचिह्न देख पाया। बहुत समय पहले वहां काश्मीरकी राजधानी रही। महाराज अशोक किसी दिन इस नगरमें राजत्व करते थे। उनके प्रतिष्ठित एक मन्दिरमें बुद्धदेवका दांत रखा था। उसके बाद काश्मीरके राजा अभिमन्युने आग लगाकर समस्त नगरको जला डाला। उसमें देवालयादि भी भस्म हो गये थे। कोई कोई कहते हैं, कि सन् ८११ ई०को पार्थ राजाने यह नगर बसाया था। अभिमन्युने जो नगर ध्वंस किया वह पाण्ड्रेतनके निकट ही रहा। अन्तको जब महापुरहोम् सिकन्दरने काश्मीरमें उत्पात मचाया उस समय भी पाण्ड्रेतन विनष्ट न हुआ था। यहां अभी हाथ चतुष्कोण एक शिवकुण्ड है। अमरनाथ जाते समय यात्री इसी कुण्डमें स्नान करते हैं। पाण्ड्रेतनमें अब भी कितने ही देवालयों और अट्टालिकाओंके भग्नावशेष वर्त्तमान हैं।

तीसरे तीर्थस्थानका नाम पद्मपुर वा पाम्पुर है। यह 'पद्मपुर' शब्दका अपभ्रंश है। पद्म नामक किसी राजाने इसे निर्माण कराया था। यह जगह जगह बिखरे बड़े बड़े स्तम्भ और अट्टालिकाके भग्नावशेष देखनेमें आते हैं।

उसके बाद यात्री यहां स्नान करता, उसका नाम यहुद है। वहां महादेवका एक लिङ्ग विद्यमान है। यहुदके आगे बढ़ने पर अवन्तीपुर मिलता है। महाराज-अवन्तीवर्माने इस नगरको प्रतिष्ठित किया था। कहते हैं, महादेवके वरसे वह इसके ऊपर वास करते रहे। उस समय एकबार महाजलप्लावनमें काश्मीर डूब गया था। परन्तु अपने साधनबलसे अवन्तीवर्माको कोई कष्ट न भोगना पड़ा। अवन्ती-पुरमें अभी अनेक देवालयादिके भग्नावशेष पड़े हैं। उसके बाद वागहस्त उत्तम आयेगा। ८ दस्तो-कि नर कुन् नर्मस, ९ चक्रधर, १० देवकीस्थान, ११ विजये-श्वर, १२ हरिश्चन्द्रपाद, १३ तिगोवर, १४ सुरि-गुफर (शीर गहर), १५ बुबर मां १६ बहुब, १७ सकर, १८ गणेश बुल १९ गोलगङ्गा, २० स्नानेश्वर, सबके अन्तमें पञ्चतरङ्गिणी है। इस झरनेकी पांच शाखायें हैं, इसीसे पञ्चतरङ्गिणी कहते हैं। यात्री इस स्थानमें स्नान करेंगे। स्नानके उपरान्त वस्त्र त्याग कर भूर्जपत्रका वस्त्र पहनते हैं। कोई कोई नङ्गे ही मनकी उल्लाससे हर हर जय-जय कहते हुए आगे बढ़ते हैं। पञ्चतरङ्गिणी अमरेश्वरसे एक कोसपर है। यात्री अपनी अपनी पाथसामग्री प्रभृति यहीं रख देते हैं।

अब अमरेश्वरकी गुहा मिलेगी। इसका प्रवेशपथ प्राय १२ हाथ प्रशस्त है। गुहामें प्रवेश करनेपर पहले कोई १० हाथ सरल पथ आता है। उसके बाद दक्षिण ओर थोड़ा घूमकर प्राय १५ हाथ आगे बढ़ना पड़ता है। गुहाके भीतर अत्यन्त शीत लगता है। ऊपरसे सदा टप टप जल चूआ करता है। महादेवका स्वयम्भू तुषारलिङ्ग यहीं निर्मल स्फटिककी भांति चमकते रहता है। कहते हैं, शायद चन्द्रमाकी तरह इस शिवलिङ्गकी भी ह्रासवृद्धि हुआ करती है। पूर्णिमाके दिन महादेवकी पूर्णमूर्तिका दर्शन होता है। फिर प्रतिपत्से एक एक कला घटने लगती है। अमावस्याके दिन तुषारलिङ्गका कोई चिह्न बाकी नहीं रहता, सब अवयव अदृश्य हो जाता है। फिर शुक्लपक्षकी प्रतिपत्से यह लिङ्ग प्रतिदिन एक एक कला बढ़ने लगता है। स्थान जनशून्य और अत्यन्त भयानक है। बारह महीने यहां मनुष्य नहीं रह सकता। योगी-संन्यासियोंमें कोई कोई तीन चार महीने वास करते हैं। कहीं लोग कहते

हैं, कि चन्द्रमाकी ह्रासवृद्धिके साथ अमरनाथका भी ह्रासवृद्धि हुआ करती है। महाराज गुलाब सिंहने यहां एक रात वास किया था। कहते हैं, किसी समय उन्हें सर्परूपमें दर्शन दे कर महादेव अन्तर्हित हुये। दूसरा भी प्रवाद है, कि यह स्वयम्भू लिङ्ग कदाचित् कपोतरूप धारण करता है। फलतः यह बात मिथ्या है। अमरनाथ जाते समय पण्डे कबूतरोंको कपडेमें छिपा लेते, और अन्तमें अमरनाथको गुफाके पास पहुंचकर उन को छोड देते हैं। यात्री कपोतरूपी महादेवको देखकर भक्ति करते हैं। अमरनाथमें दूसरी भी कई देवदेवी और बैलकी पाषाणमय मूर्ति है।

उज्जैनमें भी अमरनाथ वा अमरेश्वर नामक एक शिवलिङ्ग प्रतिष्ठित था।

३ बम्बई प्रान्तके थाना ज़िलेका एक गांव। यहांसे आध क्रोस दूर एक सुन्दर उपत्यकामें महादेवका प्राचीन मन्दिर बना है। मन्दिरमें हिन्दुवोंकी असली कारीगरी देख पड़ेगी। सम्भवतः मन्दिर सन् ई०के ११ वें शताब्दमें तैयार हुआ था। इस मन्दिरमें जो शिला-लेख मिला, उसमें ९८२ शक अङ्कित है। कल्याणवाले चालुक्योंके अधीनस्थ महामण्डलेश्वर चित्रराजदेव-पुत्र मामवनीराज कदाचित् मन्दिरके बनवानेवाले रहे। इसमें शिव-पार्वती, विमान और कालीकी मूर्ति बहुत अच्छी गढ़ी गयी है।

४ हिन्दुस्थानके भिक्षुकोंका सम्प्रदाय विशेष।

अमरपख (हिं० पु०) अमरपक्ष, पितृपक्ष।

अमरपति (सं० पु०) देवतावोंके प्रभु, इन्द्र।

अमरपद (सं० पु०) १ देवतावोंका स्थान, स्वर्ग। २ मोक्ष, निर्वाण।

अमरपाल—पालवंशीय नृपतिविशेष। भविष्य ब्रह्म-खण्डके मतसे यह देवपालके पुत्र रहे।

(भविष्यब्रह्म० २०।४०)

अमरपुर (सं० क्ली०) १ देवतावोंका नगर, स्वर्ग, अमरावती।

२ ब्रह्मदेशको प्राचीन राजधानी। यह ऐरावती नदीके पूर्व तटपर अवस्थित है। अनेक अनुमानोंका अनुमान है, कि अमरपुर सन् १७८३ ई०में प्रतिष्ठित हुआ था। इसमें एक मन्दिर ही विशेष प्रसिद्ध है। उसकी चारो ओर मुलम्मेदार लकड़ीके २५० खम्भे सुशोभित हैं। मन्दिरके भीतर बुद्धकी बडी भारी धातुमयी मूर्ति है। पहले अमरपुरको चारो ओर २० फीट ऊंची और ७००० फीट लम्बी शहरपनाह बनी थी। सन् १८१० ई०में आग लगनेसे नगर विनष्ट हो गया। फिर १८३९ ई०में भूकम्पसे भी इसे बहुत हानि पहुंची थी। ब्रह्मदेशवाले प्राचीन राजाओंके राजप्रासादका भग्नावशेष अभीतक नगरके मध्य स्तूपाकार पडा हुआ है।

कोई कोई कहते हैं, कि अमरपुर नगर आधुनिक नहीं ठहरता। यह राजधानी अतिप्राचीन है। सन् १६८३ ई०में केवल इसका नाम बदल दिया गया था। तलेमिने आवा नदकी दो शाखाओं और उसके निकटवर्ती दो नगरोंका विषय लिखा है। उन दो नगरोंके नाम उरथेना और नर्दन हैं। उरथेन शब्द राधन शब्दका अपभ्रंश है। यही अमर-पुरका प्राचीन नाम है। इसे पहले आवा और रन्दामरकोट कहते थे। प्रकृत आवा नगर एवं अमरपुरमें प्रभेद है। ब्रह्मदेशमें यह रीति प्रचलित रही,—जब कोई नया राजा होता, तब वह पूर्व राज-धानीको त्याग किसी दूसरे नगरमें अपनी राजधानी स्थापित करता था। इसी प्रथाके अनुसार राजधानी आवासे अमरपुर स्थानान्तरित की गई।

अमरपुष्प (सं० पु०-क्ली०) १ कल्पवृक्ष। २ पूगफल, सुपारीका पौधा। ३ कासतृण। ४ आम्र, आम। ५ केतकी। ६ तालमखाना। ७ गोखरू।

अमरपुष्पक, अमरपुष्प देखो।

अमरपुष्पिका (सं० स्त्री०) १ सोया। २ कांस।

अमरपुष्पी, अमरपुष्पिका देखो।

अमरप्रख्य (सं० त्रि०) देवता-जैसा, जो देवताकी तरह हो।

अमरप्रभ, अमरप्रख्य देखो।

अमरप्रभा-सूरि—एक प्रसिद्ध जैनाचार्य।

अमरप्रभु (सं० पु०) १ इन्द्र। २ विष्णु।

अमरप्रसादसूरि—एक प्रसिद्ध जैनाचार्य।

अमरबेल (हिं॰ पु॰) अमरलता, कोई पीलीलता, अकेर। इसमें जड़ और पत्ती नहीं पाते। यह जिस वृक्षपर फैलता, उसके रससे अपना पेट भरता और उसे निकम्म बना देता है। इसमें श्वेत पुष्प निकलेंगी। वैद्यकमतसे—यह मीठा होता पित्तको दबाता और वीर्य बढ़ाता है।

अमरभर्ता, अमरभर्तृ देखो।

अमरभर्तृ (सं॰ पु॰) इन्द्र, देवताओंके स्वामी।

अमरमल—नैपालके एक प्रसिद्ध राजा। यह सूर्यमल्लके पुत्र और शिवसिंहके पितामह रहे।

अमरमगुणी—दक्षिणके मदुरा नृपतिके एक पुत्र। यह गोविन्दरावके मरनेपर सिंहासनारूढ़ हुये थे। जब यह भी मर गये, तब राजसिंहासन इनके पुत्र काशीम खांको मिला।

अमररत्न, अमनरत्न (सं॰ क्ली॰) स्फटिक, बिल्लोर।

अमरराज (सं॰ पु॰) देवताओंके राजा इन्द्र।

अमरराजशत्रु (सं॰ पु॰) देवताओंके नृपतिका शत्रु, वृत्रासुर, रावण।

अमरलोक (सं॰ पु॰) देवताओंका स्थान, स्वर्ग, बिहिश्त।

अमरलोकता (सं॰ स्त्री॰) स्वर्गका महत्व, बिहिश्तका मज़ा।

अमरवत् (सं॰ अव्य॰) देवताकी भांति, फ़रिश्तेकी तरह।

अमरवर (सं॰ पु॰) इन्द्र, जो व्यक्ति देवताओंमें श्रेष्ठ हो।

अमरवल्लरी, अमरवल्ली देखो।

अमरवल्ली (सं॰ स्त्री॰) १ आकाशवल्ली, अमरबेल। २ मालका। इसका गुण यों लिखा है,—

"[illegible]
[illegible]
[illegible]।" (१८८)

अमरवार—मध्यप्रदेशके छिन्दवाड़े ज़िलेका एक गांव। यह नरसिंहपुरको गये सड़कपर बसा और इसमें मदनपेण्ठ-स्तूप एवं पुलिसका थाना बना है।

अमरविजय—राजपूतानेवाले जोड़ागढ़के एक विख्यात राठौर राजा। टाडके राजस्थानमें लिखा है कि इन्होंने सोलह हज़ार परमारोंको मारकर उक्त राज्य अधिकार किया था। इनके वंशधर जोड़ा कामध्वजकी उपाधि व्यवहारमें लाते रहे।

अमररस (हिं॰ पु॰) आमका रस अमावट। आमका रस निचोड़ कर थाली या कपड़ेपर फैला धूपमें सुखा लेते हैं। वही पीछे अमररस या अमावट कहलाता है।

अमरसरित् (सं॰ स्त्री॰) देवनदी, गङ्गा।

अमरसर्षप (सं॰ पु॰) देवसर्षप राई।

अमरसिंह—१ सुप्रसिद्ध संस्कृत शब्दकोषकार। प्रवादमतसे यह विक्रमादित्यसभाके नवरत्नके एक रत्न और बौद्धमतावलम्बी व्यक्ति रहे। वोपदेवने अपने कविकल्पद्रुममें इन्हें अन्यतम शाब्दिक या वैयाकरणके मध्य बताया है। सदुक्तिकर्णामृतमें अमरसिंहकी कितनी ही कविता उद्धृत हुयी। इनके नामानुसार ही कीर्तिस्तम्भस्वरूप 'अमरकोष' प्रसिद्ध पड़ा है। संस्कृत भाषामें जितना प्राचीन शब्दकोष विद्यमान है उसमें अमरकोष सबसे श्रेष्ठ समझा जाता है। इसीलिये इस कोषकी जितनी टीका बनी, उतनी किसी दूसरे संस्कृत कोषकी नहीं देख पड़ती। अमरकोषकी टीकाओंमें अच्युतउपाध्यायका व्याख्याप्रदीप, अप्पयदीक्षितकी अमरवृत्ति, आशाधरका क्रियाकलाप, काशीनाथकी कामिका, क्षीरस्वामीका अमरकोषोद्घाटन, गोस्वामि रचित बालबोधिनी, नयनानन्द एवं रामचन्द्रशर्माकी अमरकौमुदी, नारायणशर्माकी अमरकोषपञ्जिका, नारायणविद्याविनोदकी शब्दार्थसंदीपिका, नीलकण्ठकी सुबोधिनी, परमानन्दकी अमरकोषमाला, बृहस्पतिकी अमरकोषपञ्जिका, भरतमल्लिककी मुग्धबोधिनी, भानुजीदीक्षितकी व्याख्यासुधा, मथुरेशकी गुरुबालप्रबोधिनी, मथुरेश विद्यालङ्कारकी सारसुन्दरी, मल्लिनाथका अमरपदपारिजात, महादेवतीर्थकी बुधमनोहरा, महेश्वरका अमरकोषविवेक, मुकुन्दशर्माकी अमरबोधिनी, रघुनाथ चक्रवर्तीका त्रिकाण्डचिन्तामणि, राघवेन्द्रकी अमरकोषव्याख्या, रामनाथका त्रिकाण्डविवेक, रामप्रसादकी

वैषम्यकौमुदी, रामशर्माकी अमरकोषव्याख्या, रामस्वामीकी अमरविहृति, रामाश्रमकी अमरकोषटीका, रामेश्वरशर्माकी प्रदीपमञ्जरी, रायमुकुटकी पदचन्द्रिका, लक्ष्मणशास्त्रीकी अमरकोषव्याख्या, लिङ्गभट्टकी अमरबोधिनी, लोकनाथकी पदमञ्जरी, श्रीकराचार्यका व्याख्यामृत, श्रीधरकी अमरटीका और सर्वानन्दका टीकासर्वस्व उल्लेखयोग्य है।

रायमुकुट और भानुजीदीक्षितने अपनी-अपनी टीकामें वृहदमरकोषकी बात भी कही है।

२ राजपूत-वीरकेशरी राणा प्रतापसिंहके ज्येष्ठ पुत्र। राणा प्रतापके जो सत्रह लड़के रहे, उनमें अमरसिंह सबसे बड़े थे। पिताकी मृत्यु होनेसे उन्होंने मेवाड़का राजसिंहासन पाया। आठ वर्षकी अवस्थासे राणा प्रतापके मृत्युकालतक वह सुख-दुःख, सम्पद्-विपद्में सभी समय अपने पिताके पास ही रहे। राणा प्रतापने मरनेसे पहले अमरसिंहको अपने कठोर व्रतमें दीक्षित कर दिया था। प्रतापने जैसे स्वाधीनताके लिये आजन्म युद्ध चलाया, वैसे ही अपने राणा अमरसिंहसे भी चिरवैरी मुगलोंके विपक्षमें युद्ध करने और स्वदेशकी स्वाधीनता अक्षुण्ण रखनेकी शपथ ले लिया। अमरके सिंहासनारूढ़ होनेके बाद आठ वर्षतक मुगल-सम्राट् अकबर जीवित रहे और उन्होंने कई वर्ष मेवाड़के विरुद्ध अस्त्रधारण न किया। इससे राणा अमर एक तरह युद्धविद्या भूल बहुत विलासी बन गये थे। उन्होंने पिताके आदेश और उपदेशपर ध्यान न दे और क्लेशकर कुटीरवास छोड़ उदयसागरके पास कोई सुरम्य प्रासाद बनवाया, फिर वहां विलास-व्यसनमें समय बिताने लगे। उसी समय बादशाह जहांगीरने उनके विरुद्ध युद्धघोषणा की। राणाको बड़ा सङ्कट पड़ गया। उन्होंने मन ही मन स्थिर किया,—यह सुखभोग और विलास व्यसन छोड़ हम अशान्तिकर युद्धमें प्रवृत्त न होंगे, बादशाहके साथ सन्धि कर लेंगे। किन्तु अन्तमें अमर सन्धि करनेमें समर्थ न हुये। मेवाड़के जिन सैकड़ों राजपूतों और सरदारोंने राणा प्रतापके साथ खड़े हो कई बार मुसलमानोंसे युद्ध किया, वह अपना-अपना कर्तव्य न भूले थे। सालुम्बरेके सरदार गोविन्दसिंह-प्रमुख वीरगणकी उत्तेजना और अनुरोधसे अमरसिंह युद्ध करनेपर वाध्य बने। देवीर नामक स्थानमें भीषण युद्ध हुआ था। बादशाहके भाई हारकर भाग गये। किन्तु बादशाह उसपर भी सङ्कल्पच्युत न हुये, थोड़े दिन बाद ही अब्दुल्ला नामक सेनापतिकी अधिनायकतामें मेवाड़के विरुद्ध बहुत मुसलमान-फौज भेजी थी। संवत् १६६६में रणपुर नामक पार्वत्य प्रदेशपर फिर राजपूतोंके साथ मुगलोंका युद्ध हुआ। अब्दुल्ला अपनी फौजके साथ हार गये थे।

बार-बार हार होनेसे जहांगीरका क्रोध और विद्वेषवह्नि प्रचण्ड वेगसे प्रज्वलित हुआ; राजपूतोंमें घराऊ झगड़ा डालनेके लिये उन्होंने एक उपाय निकाला। राणा प्रतापके किसी भाई सगरसिंहने प्रतापका पक्ष छोड़ मुसलमानोंका पक्ष ले लिया था। बादशाहने उन्हीं वृद्ध सगरको राणा बना अरण्यपूर्ण और भग्न चित्तौरगढ़में अभिषिक्त किया। किन्तु चित्तौरके श्मशानमय दुर्गमें राणा बननेसे वृद्ध सगरके मनमें दारुण अनुताप उपस्थित हो गया था। उन्होंने अनुतापसे जर्जरित हो, अमरसिंहको चित्तौरगढ़ प्रत्यर्पणकर, बादशाहके निकट पहुंच और अपनी छातीमें छुरी घुसेड़ पापका प्रायश्चित्त किया। बादशाहका उद्देश्य उलट पड़ा था। अन्तको सन् १६०८ ई०में जहांगीरने अपने लड़के परवीज़को सेनापति बना उनके अधीन बहुत बड़ी फौज मेवाड़ भेजी। खेमनेरकी विशाल रणभूमिमें राजपूत और मुसलमान फिर भिड़ गये। इस बारके युद्धमें भी प्रायः सारे मुगल मृत्युमुखमें पड़े थे। शाहजादे परवीज हारकर भाग खड़े हुये। मुसलमान-ऐतिहासिक इस युद्धका वर्णन अच्छी तरह कर गये हैं। अमरसिंहको राजा होने बाद मुगलोंसे सत्रह बार लड़ना पड़ा। सकल ही युद्धमें उन्होंने जयलाभ किया था।

किन्तु विधिलिपि अखण्डनीया होती है। अन्तमें जहांगीरने अपने रणनिपुण सुदक्ष तनय खुर्रमको

(भावी शाहजहान्) मुग़ल सेनापति बना और बड़ा भारी फौज साथकर राणासे लड़ने भेजा। इधर लगातार युद्ध करनेसे कितने ही राजपूत वीर धराशायी हो गये थे। अतिकष्टसे थोड़ी फौज इकट्ठा कर राणाके ज्येष्ठपुत्र कर्ण खुर्रमकी विशाल वाहिनीसे लड़नेको खड़े हुये। किन्तु इस बार मुग़लोंका आक्रमण कोई व्यर्थ कर न सका था। मुग़लोंकी जयपताका मेवाड़में उड़ने लगी, मेवाड़ने चिरकालकी स्वाधीनता खोयी और राणा सन्धि करनेपर बाध्य हुये। शाहजादे खुर्रमने अमरकी समुचित सम्वर्धना कर उन्हें फिर राज्यग्रहण करनेका आदेश दिया था। किन्तु उन्होंने अपने पुत्र कर्णके शिर राज्यभार डाल और आश्रम अवलम्बन कर शेष जीवनको अतिवाहित किया।

२ जोधपुरवाले राजा गजसिंहके ज्येष्ठपुत्र और नागौरके सामन्तराज। बाल्यकालसे यह अत्यन्त दुर्धर्ष, साहसी और महावीर रहे। दाक्षिणात्यके सकल युद्धमें यह पिताके साथ गये और समर-प्राङ्गणमें इन्होंने अतीव ही पराक्रम किया। यह उग्र स्वभाव होनेके कारण प्रजाको सदा सताते और वह इनके विरुद्ध अभियोग लेकर राजा गजसिंहसे परित्राण पानेकी प्रार्थना करती रही। अवशेषमें राजा गजसिंहने राजधर्मानुसार प्रजारञ्जनके लिये ज्येष्ठपुत्र अमरसिंहको उत्तराधिकारसे वञ्चित रखा। सन् १६३४ ई०के वैशाख मास अमरसिंहको 'देशमाठा' अर्थात् चिरनिर्वासनका दण्ड दिया गया था। निर्वासित अमरसिंहने अपने अनुचरोंके साथ दिल्ली पहुंच बादशाहका आश्रय लिया। इन्हें बादशाहने 'राव'की उपाधि दे तीन हज़ार सवारका मनसब और नागौरका स्वाधीन शासक बना दिया था। असाधुता और उग्र-स्वभावने ही इनके जीवनका शोचनीय परिणाम दिखाया। कुछ दिन यह दिल्लीसे शिकारके बहाने नागौरमें जाकर रहे थे। कई दिन दिल्लीमें इन्हें न देख शाहजहां नाराज़ हुये और अर्थदण्डका भय दिखाया। उग्रतेज अमरसिंहने अपना अपराध न माना, वरं शाहजहांको अपनी कटार देखा कहा था,—'यही हमारी सम्पत्ति है।' बादशाहने उससे विरक्त बन जुर्माना वसूल करने सलावत् खान्को इनके मकान् भेजा। बादशाहकी आज्ञासे सलावत् खान्ने जाकर अमरसिंहके घर पहुंच जुर्माना देनेकी बात कही। अमरसिंह जुर्माना देनेपर राज़ी न हुये और उसी समय सलावत खान्को घरसे निकाल दिया। शाहजहान्ने इसका यह हाल सुन अपना अपमान समझा और उनको सज़ा देनेको सभामें बुला भेजा। अमरसिंह ख़बर पाते ही आमखास दरबारमें जा पहुंचे थे। इन्होंने जाकर देखा,—बादशाह आग-बबूला हो और सलावत् खान् उनको समझा रहे हैं। यह समझ हज़ार सवारके मनसबदार उमरावको कोसते हुये बादशाहके सिंहासनकी ओर झपट पड़े। इन्होंने अपनी कमरमें कटार छिपा रखी थी, सलावत खान्के पास पहुंचते ही उसकी छातीमें घुसेड़ दी। देखते-देखते सलावत खान् सम्राट्के सामने धराशायी हुये थे। फिर इन्होंने सिंहासनपर बैठे शाहजहान्को तलवार फेंक कर मारा किन्तु सौभाग्यक्रमपर वह खम्भेसे टकरा टुकड़े टुकड़े हुयी और बादशाह बाल-बाल बच गये। अमरसिंहके डरसे शाहजहान् ज़नानेमें जाकर छिपे थे। इन्होंने कोषसे तलवार निकाल ली और पांच मुग़ल सरदारोंको आमखासमें ही मार गिराया। किसी मुसलमान् सरदारने अमरसिंहको पकड़नेकी हिम्मत न दिखायी थी। अन्तमें अर्जुन गौड़ नामक एक आत्मीयने साम्हना देनेके बहाने इनपर दारुण अस्त्राघात किया और यह मारते काटते सभास्थलमें ही अनन्त निद्रासे अभिभूत हुये। अमरसिंहके मरनेकी बात सुनते ही राठौरोंने लाल किलेमें पहुंच फिर हत्याभिनय मचा दिया था।

अमरसिंहका विवाह बूंदी-नरेशकी कन्यासे हुआ था। वह आमखासमें पहुंच इनका शव उठा लायीं और इसीके साथ जलकर स्वर्गधामको गयीं। किसी प्राचीन कविने अमरसिंहकी प्रशंसामें कहा है —

"अमरसिंह र दू अमर है बांका बचन बखान।
शाहजहांकी गोदमें हनी सलावत खान।"

अमरसिंह ठापा—एक गोर्खा सेनापति। सन् १८१५ ई०में इनकी अधीनस्थ गोर्खा सेनाने पञ्जाबके मलावन किलेमें घुस कर शरण लिया, जिसे जनरल आक्टर-लोनीने पश्चिम-पर्वतोंके समय स्थानोंसे खदेर दिया था। अन्तमें इन्होंने अपने पुत्रके साथ अंगरेजोंके हाथ आत्मसमर्पण किया। पीछे जो सन्धि हुयी, उसके अनुसार इन्हें नेपाल चले जानेकी आज्ञा दी गयी थी। सन् १८१६ ई०में इनका परलोक हुआ।

अमररसी (हिं० वि०) आमके रस-जैसा, जो अमा-वटकी तरह पोला हो, [illegible]। एक छटाक दहीमें आठ मासे चूना डालनेसे अमररसी रङ्ग बन जाता है।

अमरसुन्दरी (सं० स्त्री०) ज्वराधिकारका औषधविशेष। इसके बनानेका विधान यह है,—

"[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]" ([illegible])

अमरस्त्री (सं० स्त्री०) स्वर्गकी अप्सरा, विहिश्तकी परी।

अमरा (सं० स्त्री०) अमर-टाप्। १ दूर्वा, दूब। २ गुडूची, गुर्च। ३ इन्द्रवारुणीलता, इन्द्रायण। ४ नीलदूर्वा, काली दूब। ५ महाकन्या, घीकार। ६ नीलोहल, बड़े नीलका पेड़। ७ मेषशृङ्गी, बरियारी। ८ वृश्चिकाली, बढ़न्ता। ९ नदीवट। १० जरायु। ११ गर्भनाडी। १२ अमरावती, इन्द्रके रहनेकी पुरी। १३ नाभिनाली। (पु०) १४ अमरता।

अमराई (हिं० स्त्री०) आमका बाग, जिस बागमें आमका ही पेड़ रहे।

अमराङ्गना (सं० स्त्री०) इन्द्रपुरीकी अप्सरा, बिहिश्त की परी।

अमराचार्य (सं० पु०) देवतावोंके गुरु, बृहस्पति।

अमराद्रि (सं० पु०) देवतावोंका पर्वत, सुमेरु।

अमराधिप (सं० पु०) देवतावोंके प्रभु, इन्द्र।

अमरापगा (सं० स्त्री०) देवतावोंकी नदी, गङ्गा।

अमरालय (सं० पु०) देवतावोंका भवन, स्वर्ग।

अमराव (हिं० पु०) अमराई देखो।

अमरावती (सं० स्त्री०) अमरा देवा विद्यन्ते यस्याम्, अमर-मतुप् मस्य वत्वम् दीर्घश्च। १ इन्द्रालय। इस नगरको विश्वकर्माने निर्माण किया था। यह सुमेरु पर्वतपर अधिष्ठित है। यहां जरा, मृत्यु, शोक-ताप कुछ भी नहीं होता। इसके सुरभि धेनु, ऐरावत हस्ती, उच्चैःश्रवा अश्व, अप्सरा और नन्दन-काननवाले मन्दार, पारिजात, सन्तान, कल्पवृक्ष एवं हरिचन्दन—यह पांच वृक्ष ही विशेष प्रसिद्ध हैं। अलकानन्दा इन्द्रपुरीके भीतर होकर बहती है। देवराज इन्द्र यहांके अधीश्वर हैं। [illegible] पास 'इन्द्रालय' नामक एक स्थान है। किसी किसीका अनुमान है, कि वही प्राचीन इन्द्रालय या अमरावती होता और अलकानन्दाका ही आधुनिक नाम अलम् है। वेद और पुराणमें देखा जाता है, कि पहले असुरोंने इन्द्रसे कई बार विरोध किया था। मालूम होता है, इन्द्रसे राजधानी आदि छीन लेनेके लिये ही उन सब बार बार युद्ध करते रहे।

२ मन्द्राजवाले गुण्टूर जिलेका एक सुप्राचीन नगर, जो अक्षा० १६° ३५´ उ० और द्राघि० ८०° २४´ पू० कृष्णा नदीके दक्षिण तटपर अवस्थित है। अमरावतीके स्तूप और मरमर पत्थरवाले रैलिङ्गकी मूर्ति प्राचीन-भारतीय शिल्पका अच्छा आदर्श है। इसे देखकर २००० वर्ष पहलेके धरणिकोट नगरका स्मरण आवे गा। कोई सुचारुरूप गठित स्तम्भ नगरके दक्षिण खड़ा था, जिसका आदर सन् ई०के १८वें शताब्द तक होते रहा। किन्तु सन् ई०का १८वां शताब्द लगते समय किसी स्थानीय ज़मीन्दारने अपना गृह बनवानेको सस्ता मसाला पानेके लालच उसे तोड़वा डाला। कितने ही पुरातत्त्वानु-सन्धायियोंने इसकी मूर्तियोंका नक्शा उतारा, जिनका अब चिह्नतक मिट गया है। फिर भी अनेक स्तूपकी सुन्दर मूर्तियां ब्रिटिशमिउजियम् और मन्द्राजके अजायब घरमें रखी हैं।

शिलालेखके अनुसार अमरावतीके प्रथम स्तूप सन् ई०से २०० वर्ष पहले बनाये गये थे। किन्तु अधिकांश

स्तूप पीछे अर्थात् कुषाणोंके समय तैयार हुये। कुषाणोंका राज्य अमरावतीमें न रहा, वहां अन्ध्रवंश अपना आधिपत्य जमाये था। अन्ध्रवंशके जो दो शिलालेख मिले, उनसे समझते हैं—स्तूप और उसका सुसज्जित रेलिङ्ग सन् १५० और २०० ई० के बीच बना था। सर्वोत्तम रेलिङ्ग या कटहरेका व्यास ६६ गज, परिधि २०० गज और उसकी ऊंचाई ६ गज रही। उसके अङ्गप्रत्यङ्गमें सुसज्जित पत्थर लगे, जिनमें फूलोंके गुच्छे लिये मनुष्य बने और दूसरे नाना प्रकार आकार लिखे थे। स्तम्भतलमें आनन्दप्रद बालक और पशुका चित्र रहा। भीतरकी ओर सजावट ज्यादा थी, बौद्ध पुराणका प्रत्येक विषय अङ्कित था। इसीतरह १६८०० वर्गफीट तकके संस्थानका प्रत्येक भाग अङ्कित नाना-साधनसे भरा रहा।

अमरावतीस्तूपकी एक चूड़ाका चित्र
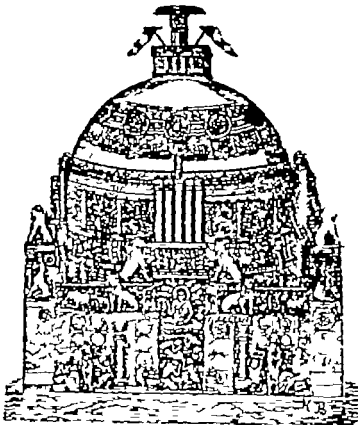
यहां अमरावतीस्तूपकी एक चूड़ाका चित्र दिया गया है। जिसके मध्यस्थलमें एक मूर्ति है। उसके मस्तक पर नागफणा सुशोभित है। सामने चार भक्त प्रणाम कर रहे हैं। नीचे दोनों ओर कई मनुष्य शिरपर कुछ रख लिये जाते हैं। ऊपर दोनों ओर सिंह तथा और भी कई मूर्ति हैं। चूड़ाके शिखरपर चक्र विद्यमान है।

अमरावतीके दूसरे भी कई स्थानमें नाग, चक्र और वृक्षकी प्रतिमूर्ति देखनेमें आती है। किसी स्थानपर पत्थरके मध्यस्थलमें एक नाग, उसकी दाहिनी ओर एक वृक्ष अर्थ ऊपर और बाईं ओर चक्र बना है।

सांचीके रेल या कटहरे भी बुरे नहीं लगते। किन्तु अमरावतीके कटहरे सबसे बड़े और सुचित्रित हैं। दीवालकी नीवपर बालक और नाना प्रकारके पशुकी मूर्ति खुदी है। स्तम्भके नीचे-ऊपर अर्धचन्द्र और मध्यमें पूर्णचन्द्रकी आकृति है। समस्त स्थान नाना प्रकार चित्र विचित्र बना है। द्वारके निकटवर्ती स्तम्भका चित्र अन्य प्रकार है। एक

स्थानमें कोई राजा सिंहासन पर बैठे हैं। कटिमें कपडा लिपटा, शिरपर पगडी बंधी और पगडोके ऊपर मणिमय चन्द्रमा लगा है। दोनों हाथोंमें सोनेके कडे हैं। शरीरमें सिवा कटिके और कहीं भी वस्त्र नहीं देखते। दाहनी ओर और पीछे सभासद्गण हैं। इनका वस्त्राभरण भी राजाके सदृश ही है। एक मन्त्री हाथ जोडकर राजासे कुछ कह रहे हैं। राजा मन लगाकर उनकी बात सुनते हैं। सामने अस्त्रधारी प्रहरी है। इनके सम्मुख युद्धसज्जा लगी है। पैदल सिपाही अस्त्र उठाये हैं। कोई सैनिक घोड़े और कोई हाथीपर सवार है। अजण्टा गुफामें जो मूर्ति खुदीं, उनमें कितनोंहीके शरीर कुरते, चपकन आदि वस्त्रसे ढंके और वह यूनान और ईरानके आदमी-जैसे जान पडते हैं। परन्तु अमरावतीमें किसीके शरीरपर वस्त्र नहीं मिलता और न कोई विदेशी ही मालूम देता है।

इसमें सन्देह नहीं, कि वैभव-समय अमरावतीके स्तूप आकार-प्रकारमें अपूर्व थे। पुराकीर्ति-वेत्ताओंने इसके सम्बन्धमें लिखा है,—

"Study of Plate XXXIII, reproducing the best preserved of such slabs, will dispense with the necessity for detailed description, and at the same time give a good notion of what the appearance of Amarávati stúpa must have been in the days of its glory When fresh and perfect the structure must have produced an effect *unrivalled in the world*". *

भारतीय शिल्पकारोंने रेलिङ्गका अङ्गुल भर स्थान भी खाली नहीं छोड़ा। दिनको सूर्यकी प्रभा और रातको गुम्बदवाले सैकडों प्रदीपके प्रकाशसे जब मरमर चमकता, तब उसे देख कर लोगोंकी आंखमें चकाचौंध लग जाती थी। चन्द्रकान्तमणिका आकार सिंहलके आदर्श-जैसा रहा। सिंह और कुछ दूसरे खचित आकार अशोकवाले समयके असुरीय और ईरानीय नमूनेसे मिलते थे। वास्तवमें इस शिल्पको देखकर शिल्पकार और चित्रकारकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा करना पड़ेगी। पूजाके स्तम्भका ११ फीट लम्बवाला दुन्दुभि कुछ दिन हुये अमरावतीसे खोदकर निकाला गया था। उसके आधार पर जो स्त्री-पुरुष खड़ा, उसकी मूर्ति अतीव सुन्दर आयी और कमलके फूलकी आकृति भी खूब ही बनी है।

अमरावतीमें कुछ मूर्ति पृथक् भी मिली थी। मूर्तिका वस्त्र गुप्तकालसे नहीं, नस्सार और अजण्टेकी १० वीं गुफाके कारुकार्यसे मिलता है।

अमरावतीकी मूर्तिका देखते ही पशुजीवन, अलङ्कार-धारण और मनुष्यकी गतिका चित्र सामने आ जायेगा। शिल्पकारोंने बड़ी ही स्वतन्त्रता और पटुतासे काम किया है।

कितने ही अनुमान करते हैं, कि सन् ३१८ ई०में दन्तपुरीसे लदा जाते समय बुद्धका दांत अमरावतीके भीतर होकर निकला था। उसी समय यहांका बाहरवाला रेलिङ्ग बना। भीतरवाला रेलिङ्ग सम्भवत सन् ई०के पहले दूसरे शताब्द सम्पूर्ण हुआ होगा। उसके कई पत्थरमें पहले न मालूम और क्या क्या खोदा था। इसीसे जान पड़ता, किसी पुरातन अट्टालिकाको तोडकर यह नवीन देवालय निर्मित हुआ है।

सन् ६३८ ई०में चीन-परिव्राजक यूयङ्-चुयाङ्ग यहां आये। उससे प्राय. सौ वर्ष पूर्व यह स्थान जनशून्य हो गया था। फिर भी उन्होंने अमरावतीकी बड़ी प्रशंसा की है।

अमरावतीकी प्राचीनकीर्तिके सम्बन्धपर निम्न-लिखित ग्रन्थमें विस्तृत विवरण दिया गया है,—

Fergusson's *Tree and Serpent Worship*, 2nd ed. (1873); Fergusson's *History of Indian and Eastern Architecture* (2nd ed. by Burgess, 1910), Vol. I, p 119ff; *Annual Report of the Archaeological Survey of India*, 1905-6; Vincent A. Smith's *History of Fine Art in India & Ceylon* (1911), pp. 148-156.

* Vincent A. Smith's History of Fine Art in India and Ceylon, (1911), p. 150.

३ बरार प्रान्तका एक ज़िला। यह अक्षा० २० ३२´ एवं २१ ३६´ ३५´´ उ० और द्राघि० ७७ ११´ ३०´´ तथा ७८ १८´ ३०´´ पू०के मध्य अवस्थित है। अमरावतीसे उत्तर बेतूल ज़िला, पूर्व वर्धा नदी, दक्षिण बासिम एवं बून ज़िला और पश्चिम अकोला तथा एलिचपुर ज़िला पड़ेगा। इसका क्षेत्रफल २७०८ वर्गमील होता है।

अमरावती ज़िला समुद्रतलसे ८०० फीट ऊंचे समान भूमिपर बसा है। इसकी भूमि उत्तरसे दक्षिणको ढलो है। अमरावती और चांदपुरके बीच का पहाड़ पड़ता, उसमें इत्यादि बहुत कम उपजता है। इस ज़िलेकी चिकनी और काली मट्टी गिनायत करके न निकलिमो। पूर्णा नदी अमरावतीके पश्चिम बहती है। जङ्गलमें शिकारकी कोई कमी नहीं देखते।

इतिहास—पुराणमतसे कितने ही वरबारी रुक्मिणी-का मामर्थ विवाह देखने अमरावती आये थे। वह अन्तमें यहीं बसे और देशको बरार कहने लगे। यहां कई शताब्द राजपूतोंका राज्य रहा था। सन् १२८४ ई०में दिल्लीवाले बादशाह फीरोजशाह गिलजायीके दामाद अलाउद्दीनने बरार सहित अमरावतीपर अपना अधिकार जमाया। औरङ्गजेबके मरने बाद दक्षिणके अधिनायक चीनकुलीच खाँने निज़ाम-उल-मुल्ककी उपाधि ग्रहणकर सन् १७२४ ई०में मरा राठोंसे बरार छीन लिया था। सन् १८५३ और १८६१ ई०के सन्धिपत्रानुसार अंगरेजोंने हैदराबादके निज़ामको समझ बरार सौंप अमरावती और कुछ दूसरे ज़िले अपने अधीन किये।

कृषि—रुयी ही यहां अधिक उपजती है। यह दो किस्मकी होती,—बनी और मारी। बनीको जुनमें अन्न बोते और नवम्बरमें चुनते हैं। किन्तु मारी वर्षासे दो सप्ताह पीछे पूर्ण उपजाता को मडरी काली मट्टीमें बोयी जायेगी। यह ११ वीं दिसम्बरसे पहले प्राय तैयार नहीं होती। खद्योंमें धान् ज्वार, किन्तु रतालू अच्छी निकलती है।

शिल्पवाणिज्य—सिवा मोटे कपड़े और दराज कामको लकड़ीकी चीज़के और कुछ यहां नहीं बनता। पुराने समय मोतापुरमें रेशमका व्यवसाय होता था।

वाणिज्य—प्राचीन समय अमरावतीसे बैल गाड़ीपर रुयी ढाई सौ कोस दूर मिर्ज़ापुर बिकने भेजी जाती थी। आजकल रेलवे द्वारा यह बम्बई पहुंचती और अमरावती नगरमें कपास साफ करनेकी कितनी ही कल चलती है। इस नगरमें नागपुरके मसाला, नमक, विलायती कपड़ा, बढ़िया सूत, दिल्लीके चोनी, गुड़, पगड़ी और बनारससे सोनेको मोटा किनारी मंगायी जाती है। ज़िलेका भीतरी कारबार, कुन्दनपुर, भीमटेक, अमरावती नगर, मोरसी, चांदपुर, सुर्तनापुर और बदनेरेमें साप्ताहिक बाजार लगनेसे चलता है।

४ अमरावती ज़िलेका एक तालुक। इसका क्षेत्रफल ६७२ वर्गमील लगता है।

५ अमरावती ज़िलेका म्युनिसिपल नगर और हेड क्वार्टर। यह नगर अक्षा० २० ५५´ ४५´´ उ० और द्राघि० ७७° ४०´ ३०´ पूपर अवस्थित है। बदनेरेसे निकल तीन कोसकी शाखा रेल ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवेसे साथ मिला देती है। इसको चारो ओर पत्थरकी चहारदीवार बनी जो २०से २६ फीट ऊंची और सवा दो मील घेरेमें पड़ती है। उसमें पांच फाटक और चार खिड़की लगी हैं। सन् १८०७ ई० में निज़ाम सरकारने पिण्डारियोंसे अपने सौदागरोंको बचानेके लिये यह दीवार बनवायी रही। एक खिड़कोको खूनारी इसलिये कहलायी, कि उसके पास सन् १८१८ ई०में सात सौ आदमी कट मरे थे। शहरका पानी ठीक नहीं, बहुतसे कुयें खारे पड़े हैं। यहां भवानी या अम्बा-मन्दिर बहुत अच्छा बना है। लोग कहते, कि उस मन्दिरको बने हज़ार वर्ष होते हैं। यह अपने रुयीवाले व्यापारके लिये प्रसिद्ध है। सन् १८७२ ई०में किसी व्यापारीने एक लाख गाड़ी रुयी अमरावतीसे कलकत्ते पैदल भेजी थी।

अमराड़ (स० क्ली०) देवदारु।

अमरिष्णु (वै० त्रि०) अमर, न मरनेवाला।

अमरी, अमरा देखो।

अमरु (सं० पु०) १ अमरुशतक-रचयिता। यह कोई राजा रहे। शङ्कराचार्य देखो।

अमरुत (सं० त्रि०) वायुरहित, निष्कम्प, वेहवा, खमोश।

अमरुफल (सं० क्ली०) उत्तरदेशप्रसिद्ध फल, जो फल शिमाली मुल्कमें मशहूर हो। इसका गुण इसतरह लिखा है,—

"अमरीय फल शीतं मन्दज्वरकर मतम्।
मारं दाहं रक्तपित्तं कामलां मूत्रकृच्छ्रकम्॥
मूत्राश्मरीञ्च हन्तीति ऋषिभि परिकीर्तितम्॥" (वैद्यक निघण्टु)

अमरुत (हिं० पु०) अमरूद, सफरी। इसे मध्य-भारत एवं मध्यप्रदेशमें जाम या बिही, बङ्गालमें प्यारा, दक्षिणमें पेरूफल या पेरुक, नेपाल तराईमें रुन्नी और तिर्हुतमें लताम कहते हैं। (Psidium Gujava) इसका तना कमज़ोर, टहनी पतली और पत्ती पांच-छः अङ्गुल लम्बी होगी। फल कच्चा रहनेसे कसेला और पकनेपर मीठा लगता है। उसमें छोटे छोटे कड़े बीज रहेंगे। फलका गुण रेचक है। अमरुतकी पत्ती, बकला चमड़ा रंगने और सिझानेमें लगेगा। पत्तीके काढ़ेसे कुल्ला करनेपर दांतका दर्द और वह अफीमके साथ मदकमें भी पड़ती है। इलाहाबादका अमरुत भारतमें प्रसिद्ध है।

अमरूद, अमरुत देखो।

अमरेज्य (सं० पु०) देवगुरु बृहस्पति।

अमरेन्द्रतरु (सं० पु०) १ देवदारुवृक्ष। २ निर्गुण्डी क्षुप।

अमरेश (सं० पु०) १ शिव। २ इन्द्र।

अमरेश्वर, अमरेश देखो।

अमरैया, अमराई देखो।

अमरोत्तम (सं० त्रि०) देवतावोंमें सबसे अच्छा, जो फरिश्तोंमें सबसे बढ़कर हो।

अमरोपम (सं० त्रि०) देवताके सदृश, फरिश्ते-जैसा।

अमर्त (वै० त्रि०) अमर, जो कभी मरता न हो।

अमर्त्य (सं० त्रि०) मर्त स्वार्थे यत्, नञ्-तत्। मरण-शून्य, जो मर न सकता हो।

अमर्त्यभुवन (सं० क्ली०) देवतावोंका लोक, स्वर्ग, विहिश्त।

अमर्दित (सं० त्रि०) अनिष्पुषित, अनभिभूत, जो दला-मला न गया हो, मातहत न बनाया हुआ, जो पैरसे कुचला न गया हो।

अमर्धत् (वै० त्रि०) अहिंसक, जो चोट न चलाता हो।

अमर्मजात (सं० त्रि०) दृढ़ अङ्गसे अजात, जो मज़-बूत अज़ोसे न पैदा हुआ हो।

अमर्मन् (वै० त्रि०) शरीरमें अप्रधान, ग्रन्थिरहित, जो जिस्ममें खास न हो, बेगांठ।

अमर्मवेधिन् (सं० त्रि०) प्रधान अङ्गका अहिंसक, मृदु, खास अज़ोमें चोट न देनेवाला, मुलय्यन।

अमर्याद (सं० त्रि०) नास्ति मर्यादा सीमा सम्मानो यस्य यत्र वा, बहुव्री० गौणे ह्रस्वः। सीमारहित, सम्मानविहीन, बेहद, बेइज़्ज़त।

अमर्यादा (सं० स्त्री०) १ सीमाराहित्य, वाजिब हदका लांघ जाना। २ सम्मानशून्यता, बेइज़्ज़ती। ३ उचित अर्चनाका उल्लङ्घन, वाजिब परस्तिशका न करना। ४ प्रागल्भ्य, निर्लज्जता, अतिप्रसङ्ग, अविनय, बेशर्मी, गुस्ताखी।

अमर्ष (सं० पु०) मृष क्षान्तौ घञ्-तत्। १ क्रोध, अक्षमा, गुस्सा। 'कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिघा।' (अमर) २ अधैर्य, बेसबरी। ३ सहनशीलताका अभाव, बरदाश्तका न होना। ४ साहस, हिम्मत। ५ अलङ्कारमतसे व्यभि-चारी भाव विशेष। (त्रि०) ६ असहिष्णु, बरदाश्त न करनेवाला।

अमर्षज (सं० त्रि०) अधैर्य वा घृणासे उत्पन्न, जो बेसबरी या नफ़रतसे पैदा हुआ हो।

अमर्षण (सं० त्रि०) मृष-ल्युट्, ततो नञ्-तत्। १ क्रोधी, गुस्सावर। २ असहन, बरदाश्त न करने-वाला। (क्ली०) भावे ल्युट्। ३ क्रोध, गुस्सा। ४ अक्षमा, नाराजी।

अमर्यवत् अमर्य देखो।

अमर्षहास (सं॰ पु॰) क्रोधका हास, गुस्सेकी हंसी।

अमर्षित (सं॰ त्रि॰) मर्ष क्त, ततो नञ्‌-तत्। क्रुद्ध, क्षमारहित, गुस्सावर, माफ न करनेवाला।

अमर्षिन् (सं॰ त्रि॰) मर्ष णिनि, ततो नञ्‌-तत्। क्रोधी, गुस्सावर।

अमर्षी, अमर्षिन् देखो।

अमल (सं॰ क्ली॰) मलते मोचयति, मल्‌ अच् ततो मल, ततो नञ्‌-तत्। अथवा अम-कलच्। १ अभ्र, अबरक। २ समुद्रफेन। ३ कर्पूर, कपूर। ४ रौप्य माक्षिक, रूपामाखी। ५ कतकद्रुम, निर्मली। ६ गन्ध द्रव्यविशेष। ७ पवित्रता, पाकीजगी। ८ परमात्मा। (त्रि॰) नास्ति मलमस्य, नञ्‌-बहुव्री॰। ९ निर्मल, साफ। १० दोषरहित, बेऐब। (अ॰ पु॰) ११ व्यवहार, बरताव। १२ शासन, हुकूमत। १३ उन्माद, नशा। १४ व्यसन, आदत। १५ प्रभाव, असर। १६ समय, वक्त।

अमलगर्भ (सं॰ पु॰) बोधिसत्त्वविशेष, किसी बोधिसत्त्वका नाम।

अमलता (सं॰ स्त्री॰) १ निर्मलता, सफाई। २ दोषराहित्य, बेऐबी।

अमलतास (हिं॰ पु॰) आरग्वध, गिरिमाला, राजवृक्ष, चितवाली, करकच, भावा, अप-उच हिन्द, खियार-शंबर। (Cassia Fistula)

यह वृक्ष हिमालयके निम्न भागमें उपजता मध्यम परिमाण विशिष्ट एवं पतनशील होता, और भारत तथा ब्रह्मदेशके भीतर बाहर १००० फीटकी उच्चता पर बढ़ता है। खासिया पहाड़के पैमावर तक हिमालयके अञ्चलमें निम्न पार्श्व प्रदेशपर इसे अधिक देखें और छोटा-नागपुर तथा मध्यभारतके वनप्रान्तमें देखा पायेंगे। यह प्रधानतः छोटा और फैलनेवाला वृक्ष रहता, उ चाईमें २० फीटसे अधिक नहीं पड़ता, मार्चमें पत्ती झड़ जाती और अप्रेलमें पीला फूल, ताजी हरी पत्तीके साथ हिलनेवाले गुच्छे साथ जो अप्रेलमें निकलता है। किन्तु कभी-कभी दूसरा मरसूममें फूल खिल जायेगा। इसकी लम्बी, भूरी, लटकनेवाली फली या छिमा जाड़ोंमें पक या बैठ फूट पड़ती और जाड़ेमें पकती है।

छालसे जो लाल अर्क टपकता, वह कड़ा पड़नेसे गोंद जैसा बन जाता है। इसे साधारणतः कमरकस कहेंगे। इसका यथार्थ प्रयोग मालूम लोग नहीं जानते, किन्तु इसे सहोदनयोग बताया करते हैं।

अमलतासका वल्कल चमड़ा रंगनेके काम आता है। मद्रासके लोहारलोग मिट्टीमें वल्कलसे इक्का-जाल रङ्ग बनाते और टिकाऊ रखनेके लिये उसमें फिटकरी डाल देते हैं। दो छटांक वल्कलको दो तोले फिटकरीके साथ उबालेंगे। इस प्रकारकी छाल डालनेसे गहरा पड़ जाता है। युक्तप्रदेशसे अमलतासका वल्कल कुछ बाहर भेजा जाता है।

फलका सार या गूदा और वृक्षका वल्कल दवामें पड़ता है। बराबर दवामें गूदेको सबसे साधारण और लाभदायक विरेचन समझेंगे। वह मधु रेचनकी भांति भी व्यवहृत होता है। फलीको उबालकर गूदा निकालने और बादामआदि तेलके साथ शरीर पर मलनेसे वह स्निग्ध और गर्भवती स्त्रीके लिये निरापद विरेचन ठहरेगा। अल्प मात्रामें रेचक और अधिक मात्रामें उसे विरेचक देखते हैं। वह मधु रेचक और मलबद्धका प्रतिबन्ध मिटानेको लाभदायक होगा। वह प्रायः इमलीके साथ मिलाया और उस दवामें शुद्ध पित्तके लिये उत्तम विरेचन समझा जाता है। बाहरसे उसको गठिये और विसर्प-वातपर लगायेंगे। बच्चोंके ज्वरमें भी वह पड़ता है। फूलका गुलकन्द बनाया और वह बुखार छोड़ानेवाला समझा जायेगा। छाल और पत्ती दोनो को कूट-पीस और तेल डालकर फोड़ेपर लगाते हैं। चर्मरोग—प्रधानतः दद्रुपर भी इसे बाहरसे रखेंगे। सन्ताल इसकी पत्तीका काढ़ा रेचनकी भांति व्यवहार करता है। मूल प्रबल विरेचक होगा। सिंहलवासी इसके मलोक नामको विरेचन बताता है। पञ्जाबमें इसका मूल बातु पुष्ट करने और बुखार छोड़ाने को खिलायेंगे। इसके बीजसे वमन भी कराते हैं।

सन् ई०के १३वें शताब्द सेविल्लेवाले अबुल अव्वासने इसका गुण लोगोंको समझा-बुझा दिया था, उसी समय फलके औषधमें व्यवहृत होनेकी बात उठी।

भुनी हुयी पत्ती भोजनके साथ मृदु-रेचककी भांति खायी जाती है। सन्तान फूलको अधिकतर खाद्य-द्रव्यकी भांति व्यवहार करेगा। फलीका गूदा बङ्गालमें तम्बाकूको ज़ायकेदार बनानेके काम आता है। सारकाष्ठ विस्तीर्ण और अभ्यन्तर-काष्ठ धूसर वा हरिद्राभ रक्तवर्णसे इष्टक-रक्तवर्ण बदलते रहता है। काष्ठ अधिक स्थायी हो, किन्तु साधारणतः यथेष्ट विस्तीर्ण परिमाणका न पड़ेगा। इससे उत्तम स्तम्भ बनता और शकट, कृषियन्त्र एवं शालिमुसलके लिये भी प्रशस्त ठहरता है।

अमलतासिया (हिं० वि०) अमलतासके फूल-जैसा, हलके-पीले रङ्गवाला, गन्धकी, जिसका रङ्ग अमलतासके फूल-जैसा चमके।

अमलदारी (फ़ा० स्त्री०) १ हुकूमत, दख़ल, शासन, अधिकार। २ कनकूत, मालगुज़ारी। रुहेलखण्डमें कोई कृषि ऐसी होती, जिसमें कृषकको उपजके तुल्य कर देना पड़ता है।

अमलदीप्ति (सं० पु०) कपूर, काफ़ूर।

अमलपट्टा (हिं० पु०) कर्मचारीको कार्यमें नियुक्त करनेके लिये दिया जानेवाला अधिकारपत्र, जो दस्ता-वेज़ कारिन्देको काममें लगानेके लिये दी जाती हो।

अमलपतत्रिणी (सं० स्त्री०) अमलपतत्रिन् देखो।

अमलपतत्रिन् (सं० पु०) पश्चात् पतनात् पतत्रः पक्षः सोऽस्यास्तीति; अमलश्चासौ पतत्री चेति, कर्मधा०। वन्यकुक्कुट, जङ्गली हंस। वन्यकुक्कुटका पर देखनेमें अतिसुन्दर लगता, उसीसे यह नाम पड़ा है।

अमलपतत्री, अमलपतत्रिन् देखो।

अमलपत्री (सं० पु०) हंस।

अमलवेत (हिं० पु०) अम्लवेतस, चूक, अम्बरी, चूकपालक, सलूनी, हमाज, तुर्शह। (Rumex Vesicarius) यह वृक्ष प्रतिवर्ष फलता, पीछे मर जाता और छःसे बारह इञ्चतक ऊंचा होता है। इसे प्रधानतः पश्चिम-पञ्जाब, लवणपर्वत और सिन्धुके उस पारवाले पहाड़ पर उपजते देखेंगे। भारतके दूसरे प्रदेशमें भी यह मिलता, किन्तु वहां बो दिया जाता है। लताके रसको भारतवासी शीतल, रेचक और कुछ कुछ मूत्रवर्द्धक समझते हैं। यह दन्तपीड़ा-निवारणके काम आये और अपने रेचक गुणसे वमनको रोकेगा। पूर्ण मात्रामें अमलवेतस कोष्ठप्रदाह रोकने और बुभुक्षा बढ़ानेको खिलाया जाता है। विषाक्त कृमि और वृश्चिकका दंश दूर करनेके लिये कुचली हुयी पत्तीको लेयी चमड़ेपर लगायेंगे। बीजमें भी वैसा ही गुण रहता, फिर संग्रहणीमें भूनकर दिया जाता है। मूलसे भी औषध बनेगा। लता भारतके भीतर-बाहर सबज़ी की तरह लगायी और कच्ची-पक्की दोनो तरह खायी जाती है। प्रायः यह कूपके समीप ढेरका ढेर उग और साल भर बराबर मिल सकता है। इसकी सूखी टहनी हाटमें बिकेगी। वह खट्टी रहती और पाचक चूर्णमें पड़ती है। अम्लवेतस देखो।

अमलमणि (सं० पु०) १ स्फटिक, बिल्लौर। २ कपूर-मणि, कर्पूरगन्धमणिविशेष, जिस जवाहरमें काफ़ूर-जैसी खुशबू आवे।

अमलरत्न (सं० क्ली०) स्फटिक, बिल्लौर।

अमला (सं० स्त्री०) नास्ति मलं दोषः कोऽपि यस्याः, बहुव्री०। १ लक्ष्मी। २ भूम्यामलकी, पाताल-आंवला। ३ सातलावृक्ष, कोई झाड़ी। ४ नाभिनाली, तोंदीकी डोरी। ५ आमलकी, आंवला। (अ० पु०) ६ राजकर्मचारी, सरकारी नौकर। प्रधानतः न्यायालयके कर्मचारियोंको अमला कहते हैं।

अमलाञ्झटा (सं० स्त्री०) भूधात्री, पाताल-आंवला।

अमलात्मन् (सं० पु०) अमलो दोषरहितः आत्मा यस्य, बहुव्री०। १ विशुद्धान्तःकरण योगी, जिस फ़क़ीरका दिल साफ़ रहे। (त्रि) २ विशुद्धान्तःकरण, साफ़ दिलवाला।

अमलानक (सं० क्ली०) अम्लानपुष्प, सदा-बहार, गुल-आदाब।

अमलिन (सं० त्रि०) निर्मल, निर्मल शुद्ध, बेदाग, बैमैल, साफ।

अमली (हिं० स्त्री०) १ अम्लिका इमली। २ कर मर्द, मौलकटी। यह झाड़दार पेड़ हिमालयके दक्षिण मद्रासमें आसामतक उत्पन्न होता है। (अ० वि०) ३ अमलसे तअल्लुक रखनेवाला, जो व्यवहारमें आता हो। ४ अमल करनेवाला, कर्मशील। ५ नशेबाज, जो मादक द्रव्य खाता हो।

अमलूक (हिं० पु०) वृक्षविशेष, कोई पेड़। यह अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, काश्मीर और पञ्जाबसे उत्तर हिमालयकी पहाड़ीपर उपजता। इससे जो जितना ही रस टपकता, वह जमकर गोंद-जैसा बन जाता है। इसको कच्चा-पक्का दोनों तरह खायेंगे। सूखा फल काबुली लाया करते हैं। इसे मकूल भी कहेंगे।

अमलोनी (हिं० स्त्री०) लोनिया, नोनी। यह एक तरहकी घास है। पत्ते छोटे, मोटी और खट्टे रहेंगे। इसकी जो तरकारी बनती उससे भूख बढ़ती है। इसको निचोड़ कर पीनेसे धतूरेका जहर उतर जायेगा। खट्टे पत्तोंकी अमलोनी कुलफा कहलाती है।

अमवक (हिं० वि०) मुतलक, समूचा।

अमवत् (सं० त्रि०) अमा सहार्थे अव्ययम् मतुप् मस्य वः। १ असहाय, बेमदद। अथवा अम रोगस्तद्वतो मतुप्। २ रोगवान् बीमार। अथवा आम मान्द्य वा अमभाव। ३ यत्नवान् तदबीर लड़ानेवाला। ४ भीषण, खूंखार। ५ अधिकारी तालुकदार। (अव्य०) ६ मौसमपरमें, ओरमें।

अमवती (सं० स्त्री०) अमवत् देखो।

अमवा—युक्तप्रदेशके गोरखपुर जिलेका एक ग्राम। यह गोरखपुर नगरसे १६ कोस दूर पड़ेगा। इसमें प्रधानतः गौड़ जातिके हिन्दू किसान रहते हैं। यहां गण्डक नदीके किनारे यह बसा है। नदी अपनी जगह छोड़ कुछ मील दूर पूर्वकी ओर बहने लगी है। किन्तु ग्राम और नदीके बीचकी जगह कभी कभी बाढ़ आनेसे उपजाऊ बन जाती है।

अमवान् (सं० पु०-स्त्री०) अमवत् देखो।

अमविष्णु (सं० त्रि०) विभिन्नदिश् गमनशील, निष्क्रिय, मुख्तलिफ तर्फको जानेवाला, जड़ या गोबर।

अमस (सं० पु०) अम असच्। १ काल, वक्त। २ रोग, बीमारी। ३ निर्बोध बेवकूफी। ४ अज्ञानी व्यक्ति जिस वस्तुकी परख न रहे।

अमसुन (हिं० पु०) वृक्ष विशेष, कोई दरख्त। यह पतला होता और डाल नीचेको झुक जाती है। इसे दक्षिणकी ओर कोकण, कनाड़े और कुर्गके जिलेमें उत्पन्न होते देखेंगे। नीलगिरिपर इसकी अधिकता रहती है। इसको 'जिन्दाप' कहें और खायेंगे। इसके बीजका तैल बहुत प्रसिद्ध है। बाजारमें वह जमी हुयी सफेद कच्ची बत्ती या टिकिये-जैसा बिके और थोड़ी ही गर्मी पहुंचनेसे पिघल जायेगा। उसका गुण मर्दक और संशोधक होता है। जखम बदनपर यह मला जाता है। उससे मरहम भी बनता है।

अमसृण (सं० त्रि०) कठोर, कठिन सख्त, कड़ा, जो मुलायम न हो।

अमस्तक (सं० त्रि०) मस्तकहीन, अशिरस्, बेसर, जिसके सर न रहे।

अमस्तु (सं० स्त्री०) दधि दही।

अमहत (सं० त्रि०) रोगादिसे पीड़ित, जिसको बीमारी वगैरहसे चोट पहुंची हो।

अमहन् (सं० त्रि०) रोगादि निवारक जो बीमारी वगैरहको मिटाता हो।

अमहर (हिं० पु०) कच्चे और छिले हुये आमकी सूखी फांक। इसे दाल और तरकारीमें डालते हैं।

अमहल (हिं० वि०) १ भवन विहीन, बेमकान् जिसके पास घर न रहे। २ व्यापक समाया हुआ।

अमा (सं० अव्य०) मा-का मा, न मा। १ सह, साथ। २ निकट, नज़दीक। ३ भवनमें, मकानपर। (स्त्री०) ४ अमावस्या, अमावस। ५ चन्द्रकी सोलह कला। ६ महाकला। (पु०) ७ आत्मा, रूह। ८ गृह, मकान, घर। ९ इहलोक। १० अपने मेलकी तोरी। इसे अधम समझते हैं। (त्रि०) ११ परि

माणशून्य, वेमिक़दार। १२ अपक्क, कच्चा, जो पका न हो। १३ दुर्भाग्य, कमबख़्त।

अमांस (सं० त्रि०) नास्ति मांसं यस्य, बहुव्री०। १ दुर्बल, लागर, जिसके जिस्मपर गोश्त न रहे। (क्ली०) २ मांस भिन्न अन्य वस्तु, जो चीज़ गोश्त न हो।

अमांसौदनिक (सं० त्रि०) मांसविशिष्ट शालि-भोजनसे सम्बन्ध न रखनेवाला, जो गोश्त मिले भातसे तअल्लुक़ न रखता हो।

अमाक्त (वै० त्रि०) मिलित, सहागत, मिला हुआ, जो साथ-साथ आया हो।

अमावीत (हिं० पु०) शालिविशेष, किसी क़िस्मका चावल। यह अग्रहायणमें प्रस्तुत हो जाता है।

अमाजुर्, अमाजूर (वै० स्त्री०) १ यावज्जीवन गृहनिवास, मकानमें ही वृद्ध हो जानेकी हालत। २ माता-पिताके साथ गृहमें रहते हुये पतिका वियोग, अपने मा-बापके साथ एक ही मकानमें रहते हुये ख़ाविन्दकी जुदायी।

अमात् (सं० त्रि०) १ अमित, अपरिमित, अप्रतीमान, वेअन्दाज़, वेतौल, जिसकी पैमायश न हो सके। (अव्य०) २ निकटमें, पड़ोससे।

अमातना (हिं० क्रि०) निमन्त्रण देना, बुला भेजना, तलब करना।

अमातापुत्र (सं० पु०) माता और पुत्र दोनोका अनस्तित्व, मा और लड़के दोनोका न रहना।

अमातृक (सं० त्रि०) हीनमातृक, मृतमातृक, वेमादर, जिसके मा न रहे।

अमातृभोगीण (सं० त्रि०) माताके व्यवहारमें न आने योग्य, जो माके काम आने क़ाबिल न हो।

अमात्य (सं० पु०) अमा सह विद्यते अस्य त्यप्। १ अभिन्न गृहका परिजन, हमख़ाना, हममसकन, जो आदमी एक ही मकान्में रहता हो। २ मन्त्री, सचिव, वज़ीर, दीवान्। जो धर्मज्ञ, प्राज्ञ, जितेन्द्रिय, सत्कुलीन, और कार्यकुशल रहता, शास्त्रकार उसीको राजाके अमात्य योग्य कहता है।

"अमात्यमुख्यं धर्मज्ञं प्राज्ञं दान्तं कुलोद्गतम्।
स्थापयेदासने तस्मिन् खिन्नः कार्य्यक्षणे नृणाम्॥" (मनु ८।१०)

अमात्र (सं० पु०) मा-उण्-त्रन्-टाप्; नास्ति मात्रा मानं परिच्छेदो वा यस्य, नञ्-बहुव्री० गौणे ह्रस्वः। १ तुरीय ब्रह्म, परमात्मा, जिस चीज़की कोई माप न पड़े। (त्रि०) २ असीम, वेहद, जिसका छोर न मिले। ३ असम्पूर्ण, जो समूचा न हो। ४ अप्रारम्भक, जो असली न हो। ५ अकार-मात्रा विशिष्ट, जो अलिफ़की मिक़दार रखता हो।

अमात्रवत्त्व (सं० क्ली०) १ न्यूनता, दोष, कमी, ऐब। २ प्राण, आत्मा, आध्यात्मिक सार, जान्, रूह, रूहानी माहियत, जान्की जड़।

अमान (सं० त्रि०) १ मानरहित, वेमाप, जिसका कोई ठिकाना न लगे। २ निरभिमान, वेफ़ख़ूर, जिसे घमण्ड न घेरे। ३ अप्रतिष्ठित, वेइज़्ज़त। (अ० पु०) ४ रक्षण, हिफ़ाज़त। ५ शरण, पनाह।

अमानत (अ० स्त्री०) न्यास, निक्षेप, आधि, उपनिधि, तहवील, वदीयत, ज़र अमानत, धरोहर, किसी चीज़का किसीके पास कुछ वक़्तके लिये रखना, सुपुर्द किया हुआ माल।

अमानतदार (अ० पु०) अमानत रखनेवाला शख़्स, जिस व्यक्तिके पास उपनिधि रहे।

अमानन (सं० क्ली०) अमानना देखो।

अमानना (सं० स्त्री०) मान चुरा० पूजायां युच् टाप्, अभावे नञ्-तत्। १ आदरका अभाव, सम्मानकी शून्यता, वेइज़्ज़ती, इज़्ज़तका न रहना। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ मानशून्य, गौरवहीन, वेइज़्ज़त।

अमानव (सं० त्रि०) १ अपौरुषेय, अमानुष, ग़ैर इन्सानी, जो आदमी न हो। २ अतिमर्त्य, मानुपातिग, ख़ारिज अज़ ताक़त-बशरी, आसमानी, जो आदमीकी पहुंचका न हो।

अमाननीय, अमान्य देखो।

अमानस्य (सं० क्ली०) मानसे मनसि साधु मानसयत्, ततो नञ्-तत्। १ दुःख, तकलीफ़। २ पीड़ा, दर्द।

'पीड़ाबाधाव्यथादुःखममानस्यं प्रसूतिजम्।' (अमर)

अमाना (हिं० क्रि०) १ पूरे तौरपर भर जाना, समाना, किसी चीज़के भीतर किसी चीज़का आ जाना। २ प्रफुल्लित होना, बह चलना, अभिमान

देखाना। (पु॰) २ उपवनका द्वार, बगीचेका दरवाज़ा, फाटक।

अमानितत्व, अमान देखो।

अमानिता (स॰ स्त्री॰) सम्मानशीलता नम्रता, आजिज़ी, खाकसारी गरीबी ताबेदारी।

अमानित्व (स॰ क्ली॰) अमानिता देखो।

अमानिन् (स॰ त्रि॰) १ सम्मानशील नम्र, आजिज़ खाकसार, ताबेदार, गरीब। (पु॰ स्त्री॰) अमानी। (स्त्री॰) अमानिनी।

अमानी (हिं स्त्री॰) १ भूमिविशेष कोई खास ज़मीन, जिस ज़मीनका सरकार या ज़मीन्दार रखता है और उसको अपने ज़रिये इन्तिज़ाम करता है। २ भूमिका कार्य विशेष ज़मीनका कोई खास काम। इसका प्रबन्ध अपने ही हाथमें रखते हैं, ठेके पर कभी नहीं छोड़ते। ३ भूमिकरकी प्राप्ति, मालगुज़ारी का वसूल। इसमें ख़राब हुई फ़सलको देख कुछ छोड़ देते हैं। ४ इच्छानुसारिणी क्रिया, जो कार्य अपनी तबीयतके मुवाफ़िक़ की जाती हो।

अमानुष, अमानव देखो।

अमानुषी (हिं॰) अमानव देखो।

अमानुष्य, अमानव देखो।

अमाप (सं॰ त्रि॰) अमान, असीम, बेहद, जिसका कोई नाप न रहे।

अमामसी (स॰ स्त्री॰) अमा सह सूर्येण मा: मासो वा चन्द्रो यस्याम्, बहुव्री॰ गौरादि॰ ङीप्। सूर्य और चन्द्र के एक साथ रहनेकी तिथि अमावस्या।

अमामासी (स॰ स्त्री॰) मास इति मा एव इति, मम् न्याप्ते अप्। अमावसी देखो।

[illegible]

अमाय (स॰ त्रि॰) नास्ति माया यस्य, नञ् बहुव्री॰। १ मायाशून्य, कपटतारहित, सादिक, सच्चा। २ अविद्याहीन, ज्ञानवान्। [illegible] (स्त्री) मायी यासामपरं पश्यन्ती वा तथापि यस्य नञ्-बहुव्री। ३ पीताम्बरशून्य वस्त्रशून्य पीताम्बर न पहने हुआ जिसके पास कपड़ा न रहे। [illegible] (स्त्री) माया मानं न नास्ति यस्य। ४ परि- माणशून्य, इयत्तारहित, बेमिक़दार, बेहद, जिसका कोई नाप न रहे। (क्ली॰) ५ ब्रह्म परमेश्वर।

अमायत् (स॰ त्रि॰) मा मानं तां यत् प्राप्नुवन् मा-इण् शतृ, ततो नञ्-तत्। अपरिमित, बेहद, जिसको कोई नापजोख न रहे।

अमाया (स॰ स्त्री॰) १ मायाका अभाव, मुखालतेकी अदम मौजूदगी। २ अज्ञका ज्ञान, रास्तीका इल्म। ३ मोक्ष आर्जव रास्तबाज़ी सदाक़त, सचाई। (हिं॰ त्रि॰) अमाव देखो।

अमार (सं॰ पु॰) १ जीवन, ज़िन्दगी, न मरनेकी हालत। (हिं॰ पु॰) २ अम्बार, अनाज रखनेकी जगह। यह अरहरके सरकण्डोंकी टट्टीसे घेर छाया और नीचे ऊपर भुस डाल बीचमें अनाजसे भरा जाता है। ३ अमड़ा।

अमारग (हिं॰) अमार्ग देखो।

अमारी (अ॰ स्त्री॰) हाथीका हौदा। इसपर छायाके लिये मण्डप बंधा रहता है।

अमार्ग (स॰ पु॰) मार्गका अभाव, राहकी अदम- मौजूदगी। (त्रि॰) २ मार्गरहित बेराह, जहां चलनेको जगह न मिले।

अमार्गित (सं॰ त्रि॰) अनिरीक्षित, जो आखेट न किया गया हो, तलाश न किया हुआ, जिसके पीछे शिकार करनेको न पड़ हुवे।

अमार्जित (स॰ त्रि॰) मृज् क्त इट्, इति॰, ततो नञ्-तत्। अशुद्ध अपरिष्कृत, नापाक, मैला, जो साफ न किया गया हो।

अमाल (अ पु॰) शासक, अधिकारी, हाकिम।

अमालनामा (अ॰ पु॰) १ कर्मचारीके उत्तम- अधम कार्य लिखनेका पुस्तक, जिस किताब या रजिस्टरमें नौकरोंके भले बुरे काम लिखे जायें।

अमावट (हिं॰ स्त्री॰) अमरस, आमका सूखा रस। आम पकनेपर एक बांसपर रसको निचोड़ते और कपड़ेपर फैलाकर सुखा लेते हैं। यह खानेमें मज़ेदार लगता और चटनी बनानेके काम आता है।

अमावना अमान देखो।

अमावस (हिं॰) अमावस्या देखो।

अमावसी (सं० स्त्री०) अमा सह वसतोऽस्यां चन्द्रार्कौ ; अमा-वस-अप्-वन्, वा पृषो० साधु०, ततो गौरा० ङीप्। अमावस्या।

अमावसु (सं० पु०) १ उर्वशी-गर्भसे उत्पन्न हुये पुरूरवाके पुत्र। यह सात भाई रहे। यथा—आयु, अमावसु, विश्वायु, दृढ़ायु, वनायु एवं शतायु। (हरिवंश) २ चन्द्रवंशीय कुशके चतुर्थ पुत्र। यह वसु एवं कुशिक नामसे भी प्रसिद्ध रहे। (विष्णुपुराण)

अमावस्या, अमावास्या (सं० स्त्री०) अमा सह वसतोऽस्यां चन्द्रार्कौ, अमा-वस अधिकरणे ण्यत् निपातनात् ह्रस्वोपि। कृष्णपक्षको पन्द्रहवीं तिथि। शास्त्रकारगण कहते हैं, कि अमावस्याके दिन एकही राशिमें सूर्य ऊपर और चन्द्रमा नीचे रहता है। वह लोग यह भी कहते हैं, कि अमावस्या तिथिको चन्द्र सूर्यको किरणसे आच्छन्न रहता है, इसीसे उसे कोई देख नहीं सकता।

'अमावस्यान्वमावास्या दर्शः सूर्य्येन्दुसङ्गमः।' (अमर)

"सूर्याचन्द्रमसोर्यः परः सन्निकर्षः सामावास्येति।" (गोभिल०)

'पर सन्निकर्ष' उपर्य्यधोभावापन्न-समसूत्रपातन्यायेनैकराश्यवच्छेदेन सहावस्थानरूप।' (स्मार्त)

विष्णुपुराणके दूसरे अंशके बारहवें अध्यायमें लिखा है, कि कृष्णपक्षमें देवगण और पितृगण चन्द्रका सुधा पान करते हैं। अन्तमें जब एक कला बाकी रह जाती है, तब सूर्य सुषुम्ना नाम्नी रश्मिद्वारा उन्हें फिर परिपुष्ट कर देते हैं।

जब दो कला बाकी रह जाती हैं, उस समय चन्द्र-अमा नाम्नी सूर्यरश्मिमें प्रवेश करता है, इसीसे उस दिनको अमावश्या कहते हैं।

"अमाख्या रश्मौ वसति अमावस्या ततः स्मृता।" (विष्णुपुराण)

अमावस्याके दिन अहोरात्र चन्द्र पहले जलमें, उसके बाद लतामें, फिर अन्तको सूर्यमण्डलमें प्रवेश करता है; इसीसे लता वा लता-पत्र आदि तोड़नेसे ब्रह्महत्याका पाप लगता है।

अमावस्या तिथिमें चन्द्र और सूर्य किस तरह अवस्थान करते हैं, उसे ऊपरके गोभिल-सूत्रमें, स्मार्तने स्पष्ट भावसे प्रकाश नहीं किया। चन्द्र, सूर्य और पृथिवी इन तीनोंका समसूत्रपात पड़नेसे उस समय चन्द्र यदि पृथिवी और सूर्यका मध्यवर्ती रहे, तो उसी दिन अमावस्या होती है। इस चित्रमें सू-से सूर्यमण्डल,
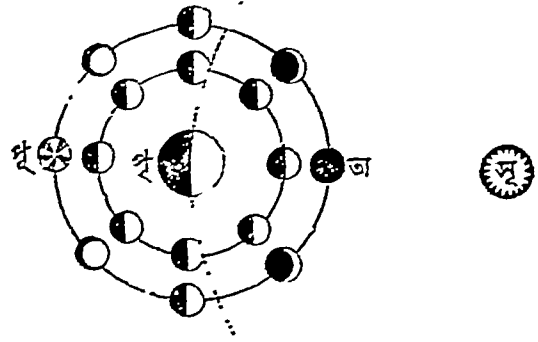
अ-से अमावस्याका चन्द्र, पू-से पूर्णिमाका चन्द्र और पृ-से पृथिवी समझना चाहिये। विन्दु-विन्दु रेखाद्वारा वृत्तका जो कुछ अंश दिखाया गया है, उस पथद्वारा पृथिवी सूर्यके चारों ओर घूमती है। इधर चन्द्रमण्डल फिर उसीके साथ साथ पृथिवीके चारो ओर घूमता है। इसीसे सूर्य, पृथिवी एवं चन्द्र—तीनो प्रति मास दो बार समसूत्रमें अवस्थान करते हैं। उसमें जिस दिन सूर्य और पृथिवीके मध्यस्थलमें चन्द्र आ पड़ता है, उस दिन अमावस्या होती है, एवं जिस दिन सूर्य और चन्द्रके मध्यस्थलमें पृथिवी आ पड़ती है, उस दिन पूर्णिमा होती है। ऐसा होनेका कारण यही है, कि चन्द्र स्वयं ज्योतिर्मय ग्रह नहीं है। उसमें सूर्यकिरण प्रतिविम्बित होनेसे ही प्रकाश पहुंचता है। इसीलिये चन्द्रमाकी जो दिक् सूर्यकी ओर घूमती है, केवल उसी ओर धूप जाती है, दूसरी ओर अन्धकारमें छिपी रहती है। अतएव चन्द्रमण्डलका जो अंश पृथिवी और सूर्य इन दोनोंकी ओर घूमता रहता है, केवल उसी अंशको हमलोग देखते हैं। इस चित्रमें अ-अमावस्याका चन्द्र है। वह सूर्य एवं पृथिवीका मध्यवर्ती हो गया है, इसीसे उसका जो अंश पृथिवीकी ओर फिरा हुआ है उसमें सूर्यका किरण नहीं लगती, और हम लोग

चन्द्रको देख नहीं सकते। इसके अतिरिक्त अमावस्याको चन्द्रमण्डल पृथिवीके निकटसे और कहीं अन्तर्हित तो नहीं हो जाता। सूर्यग्रहण उसी समय चन्द्रमण्डल ठीक पृथिवी और सूर्यके मध्यस्थलमें रहता है। इसलिये चन्द्रकी छाया पड़नेसे हमलोग सूर्यके कुछ अंशको थोड़ी देरतक नहीं देख सकते। फिर जब चन्द्रमा हट जाता, है तब सूर्यमण्डल दिखाई पड़ने लगता है। इस तरह चन्द्रका छाया पतन ही सूर्यग्रहणका कारण है। अमावस्याके दिन सूर्य, चन्द्र और पृथिवी समसूत्रमें रहते हैं, और चन्द्रमण्डल दोनोंके बीचमें आ जाता है, इसीसे सूर्यग्रहण होता है, तद्भिन्न दूसरी तिथिमें सूर्यग्रहण नहीं पड़ सकता।

इस जगह प्रश्न हो सकता है कि प्रति अमावस्याको ही सूर्य, चन्द्र और पृथिवी समसूत्रमें रहती है और चन्द्रमण्डल भी दोनोंके मध्यस्थलमें आ पड़ता है, फिर प्रत्येक अमावस्याके दिन सूर्यग्रहण क्यों नहीं होता? उसका कारण यह है कि इस चित्रपर पृथिवी और चन्द्रका भ्रमणपथ जिस प्रकार समतल क्षेत्रमें दिखाया गया है वस्तुतः आकाशमें ऐसा समतल नहीं आता। यदि वह समतल होता, तो प्रतिमास ही एक बार सूर्यग्रहण पड़ता। चन्द्रका भ्रमणपथ पृथिवीके भ्रमणपथकी ओर कुछ झुका हुआ है। बारीक हिसाब लगानेसे इस वक्रताके कोणका परिमाण ५ ८´+, होता है; और चन्द्रमण्डल घूमते घूमते कभी पृथिवीवाले भ्रमणपथके ऊपर और कभी नीचे आ जाता है, इसीसे जिस समय चन्द्र पृथिवीवाले भ्रमणपथके ऊपर आ तिरछे पार होता है, उस दिन अमावस्या होनेसे सूर्यग्रहण लगता है।

चन्द्रके आकर्षणसे समुद्रका जल स्फीत हो जाता है, इसीसे गङ्गा आदि नदियोंमें उस समय ज्वार उठता है। अमावस्या एवं पूर्णिमाके समय समुद्रका जल अत्यन्त स्फीत होता, इसीसे उस समय बाढ़ आती है। किसी स्थानकी द्राघिमाके ऊपर जब चन्द्र उपस्थित होता है, तब उससे तीन घण्टे बाद ज्वार आता है। चन्द्रकी ओर वाली द्राघिमा एवं उसकी विपरीत दिशामें भी ज्वार होता है। चन्द्रको एक बार घूमकर फिर अपनी द्राघिमाको पहुंचनेमें २४ घण्टे ५० मिनट लगते हैं, सुतरां १२ घण्टे २५ मिनट बाद अहोरात्रमें दो बार ज्वार आता है।

अमावस्यदन्यतरस्याम्। पा ३।१।१२२। अमा एक उपपदके परस्थित वस धातुसे उत्तर अधिकरण वाच्यमें ण्यत् प्रत्यय होता है। वृद्धि होनेपर निपातनमें विकल्पसे ह्रस्व भी होता है। "[illegible]" (सि कौ)।

"[illegible]" (चु ८।११०)

अमावस्याके दिन पढ़नेसे गुरु और चतुर्दशीके दिन पढ़नेसे छात्र मर जाता है।

शास्त्रकारोंने विभिन्न कृत्य कर्मके लिये अमावस्याको कई प्रकारसे विभक्त किया है। चतुर्दशी-युक्त अमावस्याका नाम सिनीवाली और परयुक्त अमावस्याका नाम कुहू है। अमावस्याके दिन तैल लगाना, दाढ़ बनवाना मांस मछली खाना और स्त्रीसम्भोग करना मना है। इस दिन घास और लकड़ि काटना न चाहिये। पुष्या नक्षत्र या अन्य नक्षत्रमें; व्यतीपात या वैधृति योगमें अमावस्या होनेसे उस दिन नदी-स्नान करनेसे सात कुल पवित्र हो जाते हैं। मङ्गलवारको अमावस्याको नदी स्नान करनेसे सहस्र गोदान-का फल मिलता है। सोमवारको सिनीवाली या कुहू अमावस्या हो, तो मौन रह स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल होता है। मुख्य चान्द्र पौषकी अमावस्याको यदि रविवार एवं व्यतिपात योग और श्रवणा नक्षत्र हो तो उसका नाम अर्धोदययोग है। यह योग कभी कभी आता है। अर्धोदय देखो।

अमावस्या ही श्राद्धका प्रशस्त काल है, इसलिये प्रतिमासका कृष्णपक्षनिमित्तक पार्वणश्राद्ध अमावस्याके दिन ही करना होता है। अमावस्याके श्राद्धका प्रशस्तकाल अपराह्ण है। दिनको पांच भाग करनेसे उसके चतुर्थ भागका नाम अपराह्ण है। उसी समय पार्वणश्राद्ध करना उचित है। दोनों

दिनों मुख्य अपराह्ण न मिलनेसे दूसरे दिन अष्टम एवं नवम मुहूर्तरूप गौण अपराह्णमें भी श्राद्धका विधान मिलता है। और आश्विन मासकी अमावस्याको महालया कहते हैं। महालयामें श्राद्ध करनेसे उन्नीस पिण्ड देना पड़ता है। उसका नाम षोडश पिण्डदान है। कार्तिक मासकी अमावस्याका नाम दीपान्विता है। दीपान्विताको श्राद्धके बाद उल्कादान करना पड़ता है। प्रति मासमें अमावस्याका एक-एक व्रत भी प्रचलित है।

अमावासी, अमावस्या देखो।

अमावास्यक (सं० त्रि०) अमावस्याकी रातिको उत्पन्न हुआ, जो अमावसकी रातको पैदा हुआ हो।

अमावास्या, अमावस्या देखो।

अमाष (सं० त्रि०) मुद्गविहीन, शिम्बिकाशून्य, लोबियाकी फली न रखनेवाला, जिसमें लोबियाकी छिया न रहे।

अमाह (हिं० पु०) नेत्ररोगविशेष, नाखूना। इससे आंखमें लाल मांस उभर आता है।

अमाही (हिं० वि०) नेत्ररोग सम्बन्धीय, जो नाखूनेसे तअल्लुक रखता हो।

अमिट (हिं० वि०) १ न मिटनेवाला, जो टिका रहता हो। २ अवश्यम्भावी, जिसके होनेमें फ़र्क न पड़े।

अमित (सं० त्रि०) न मितम्, नञ्-तत्। १ अपरिमित, इयत्तारहित, बेहद, जिसको कोई नाप-जोख न रहे। २ अज्ञात, नादान। ३ अनवधारित, भूला हुआ। ४ अपरिष्कृत, जो साफ़ न किया गया हो। ५ अलङ्कार-विशेष। केशवके मतानुसार साधन जब साधककी सिद्धिका फल उठाता, तब अमितालङ्कार लगता है।

अमितक्रतु (वै० पु०) १ असीम प्रज्ञा-सम्पन्न व्यक्ति, जिस शख़्सकी अक़्लका ठिकाना न लगे। २ असीम शक्तिशाली, बेहद ताक़त रखनेवाला।

अमितगतिसूरि (सं० पु०) एक प्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार। विक्रमसंवत् १०२५के कुछ पहले श्रीअमितगतिसूरिका जन्म हुआ था।

आचार्यवर्य अमितगति बड़े भारी विद्वान् और कवि थे। इनकी असाधारण विद्वत्ताका परिचय पानेको इनके ग्रन्थोंका भलीभांति मनन करना चाहिये। रचना सरल और सुखसाध्य होने पर भी बड़ी गंभीर और मधुर है। संस्कृत भाषापर इनका अच्छा अधिकार था। इन्होंने अपने धर्मपरीक्षा नामक ग्रन्थको केवल दो महीनेमें रचके तयार किया जिसे बांचकर लोग मुग्ध हो जाते हैं। यथा:—

"अमितगतिरिवेदं स्वस्य मासद्वयेन
प्रथितविशदकीर्ति, काव्यमुद्भूतदोषम्।"

धर्मपरीक्षाके अतिरिक्त अमितगतिके बनाये हुए निम्नलिखित ग्रन्थोंका भी उल्लेख मिलता है— १ सुभाषितरत्नसन्दोह, २ श्रावकाचार, ३ भावनाद्वात्रिंशति, ४ पञ्चसंग्रह, ५ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, ६ चन्द्रद्वीप प्रज्ञप्ति, ७ सार्द्धद्वयद्वीपप्रज्ञप्ति, ८ व्याख्याप्रज्ञप्ति, ९ योगसारप्राभृत।

पञ्चसंग्रहमें अमितगतिकी प्रशस्ति इस प्रकार लिखी है—

"श्रीमाथुराणामनघद्युतीनां संघोऽभवद्वृत्तिविभूषितानाम्।
हारो मणीनामिव तापहारी सूत्रानुसारी शशिरश्मिशुभ्रः ॥ १ ॥
माधवसेन गणी गणनीयः शुद्धतमोऽजनि तत्र जनीयः।
भूयसि सत्यवतीव शशाङ्क, श्रीमति सिन्धुपतावकलङ्का ॥ २ ॥
शिष्यस्तस्य महात्मनोऽमितगतिर्मोक्षार्थिनामग्रिमे-
रेतच्छास्त्रमशेषकर्म समितिप्रख्यापनायाकृत।
वीरस्येव जिनेश्वरस्य गणभृद्व्याख्यातमर्थं व्यापको-
दुर्वारस्मरदन्तिदारणहरि श्रीगौतम सत्तम ॥ ३ ॥
यदत्र सिद्धान्तविरोधि बद्ध याह्यं निराकृत्य तदेतदार्यै।
गृह्णन्ति लोका ह्युपकारि यत्नात्तुष निराकृत्य फलं विनम्रम् ॥ ४ ॥
यावन्नीशरो केवलमत्र नीय (यावच्चिरं) तिष्ठति सज्जिवसौ।
तावद्धराधामिदमत्र शास्त्रं सुधाम्बुधिः कर्मनिराशकारि ॥ ५ ॥"
(पञ्चसंग्रह)

इसका सारांश यह है—जिस समय महाराज सिन्धुपति (भोजके पिता) पृथ्वीका पालन करते थे, उस समय कीर्तिशाली माथुरसंघमें एक माधवसेन नामके आचार्य हुए, जिनके गौतमगणधरके समान विद्वान् शिष्य अमितगतिने यह पञ्चसंग्रह ग्रन्थ सम्पूर्ण कर्मसमितियोंको प्रख्यापनाके लिये बनाया।

अमितगतिने संवत् १०५०में सुभाषितरत्नसन्दोह बनाते समय मुञ्जका राज्यकाल बताया और

अपने गुरुके समयमें भि हुए महाराजका राज्य बतलाया है। इससे यह निश्चय होता है कि, मुञ्जके पहले भी सि हुल राज्य कर चुके थे। फिर उनके पीछे भी उनका राजा होना सिद्ध होता है।

धर्मपरीक्षाको प्रशस्तिमें कुछ श्लोक उद्धृत करते हैं—

"सिद्धान्तपाथोनिधिपारगामी
श्रीवीरसेनोऽजनि सूरिवर्यः।
श्रीमाथुराणां यमिनां वरिष्ठः
कषायविध्वंसविधौ पटिष्ठः ॥ १ ॥
ध्वस्ताशेषध्वान्तवृत्तिर्मनस्वी
तस्मात्सूरिर्देवसेनोऽजनिष्ट।
लोकोद्योती पूर्वशैलादिवार्कः
शिष्टाभीष्टः स्थेयसोऽपास्तदोषः ॥ २ ॥
[illegible]
निर्मलोऽमितगतिर्गणनाथः।
वासरो—दिनमणेरिव—तस्मा
ज्जायते स्म कमलाकरबोधी ॥ ३ ॥
नेमिषेणगणनायकस्ततः
पावनं वृषमधिष्ठितो विभुः।
पार्वतीपतिरिवास्तमन्मथो
योगगोपनपरो गणार्चितः ॥ ४ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]"

इसका सारांश यह है कि माथुरसंघके मुनियोंमें वीरसेन नामके एक श्रेष्ठ आचार्य हुए और उनके शिष्योंमें क्रमसे देवसेन, अमितगति (प्रथम) नेमिषेण, और माधवसेन नामके मुनि हुए। अमितगति इन्हीं माधवसेनके शिष्य थे।

अमिततेजस् (सं० त्रि०) असीम तेज सम्पन्न, बेहद रोशनी रखनेवाला जिसकी महिमा या शानका छोर न मिले।

अमितद्युति (सं० त्रि०) असीम प्रभान्वित, बेहद चमक-दमक रखनेवाला।

अमितध्वज (सं० पु०) चन्द्रवंशीय धर्मध्वजके पुत्र।

अमितविक्रम (सं० पु०) अमिता अपरिच्छिन्ना विक्रमास्त्रय पादन्यासपरूपा यस्य अमितः विक्रमः शौर्य-मस्येति वा बहुव्री०। १ विष्णु। (त्रि०) २ बहु विक्रमशाली, अधिक शौर्य सम्पन्न, जो निहायत बहादुर हो।

अमितवीर्य (सं० पु०) असीम शक्तिसम्पन्न बेहद कूवत रखनेवाला।

अमिताक्षर (सं० त्रि०) अनियत अक्षर विशिष्ट, जिसमें हर मुकर्रर हर्फ़ न रहे।

अमिताभ (सं० पु०) १ सावर्णि मन्वन्तरके द्वितीय और भैवत मन्वन्तरके प्रथम गणके देवता। २ कोई ध्यानी बुद्ध। (त्रि०) ३ असीम प्रभासम्पन्न, जिसकी चमक दमक बेहद रहे।

अमितायुस् (सं० पु०) कोई ध्यानी बुद्ध।

अमिताशन (सं० पु०) अमितं अश्नाति प्रलय समये अमित-अश ल्यु। १ सर्वभक्षक परमेश्वर। २ विष्णु। (त्रि०) अमितं अशनं यस्य, बहुव्री०। ३ अपरिमितभोजी, अतिभोजी, बेहद खानेवाला, जिसके खानेका ठिकाना न रहे।

अमितौजस (सं० त्रि०) अदन्त चुरा०, ओज-असुन् ततो नञ् बहुव्री०। अपरिमित बलशाली, बेहद ताक़त रखनेवाला।

अमित्र (सं० क्ली०) अम कद्-त्र। अहहत् शत्रु, दुश्मन अरु।

अमित्रखाद (सं० पु०) शत्रुको खा जानेवाले इन्द्र।

अमित्रगणसूदन (सं० त्रि०) शत्रुका दल नष्ट करनेवाला, जो दुश्मनका गिरोह बरबाद कर डालता हो।

अमित्रघात (वै० त्रि०) १ शत्रुको नष्ट करनेवाला, जो दुश्मनको क़त्ल कर रहा हो। (पु०) २ मौर्यवंशीय एक राजाका नाम (Amitraclates)।

अमित्रघातिन् (सं० त्रि०) अमित्रघात देखो।

अमित्रघ्न (सं० त्रि०) अमित्रघात देखो।

अमित्रजित् (सं० पु०) अमित्र शत्रु जयति, जि क्विप्। १ शत्रुपराजयकारी, दुश्मनको जीतनेवाला। २ इक्ष्वाकुवंशके सुवर्णराजके पुत्र। भागवतपुराणमें इसका नाम अमर्षजित् लिखा किन्तु विष्णुपुराणमें अमित्रजित् ही मिला है।

अमित्रता (सं० स्त्री०) शत्रुता, दुश्मनी, दोस्त न होनेकी हालत।

अमित्रदमन (वै॰ त्रि॰) शत्रुको हानि पहुंचानेवाला, जो दुश्मनको चोट दे रहा हो।

अमित्रसह (सं॰ त्रि॰) अमित्रं शत्रुं सहते, अमित्र-सह-अच्। रिपुजयशील, बलवान्, दुश्मनको जीतनेवाला, ज़ोरदार।

अमित्रसाह (सं॰ त्रि॰) अमित्रं सहते, अमित्रसह-अण्। अमित्रसह देखो।

अमित्रसेना (सं॰ स्त्री॰) शत्रुसेना, दुश्मन्‌की फ़ौज। (अथर्वसं॰ ३।१।१)

अमित्रहन् (वै॰ पु॰) शत्रुको नष्ट करनेवाला, जो दुश्मनको क़त्ल कर रहा हो।

अमित्रायुध (वै॰ त्रि॰) शत्रुको अभिभूत करते हुआ, जो दुश्मन्‌को दबा रहा हो।

अमित्रिन् (सं॰ त्रि॰) विपक्षी, विद्वेषी, दुश्मनी रखनेवाला। (स्त्री॰) अमित्रिणी।

अमित्रिय (सं॰ त्रि॰) प्रतिकूल, ख़िलाफ़।

अमित्र्य, अमित्रिय देखो।

अमिथित (वै॰ त्रि॰) १ अप्रकाशित, जो ज़ाहिर न हो। २ अप्रकोपित, जो नाराज़ न हो।

अमिथ्या (सं॰ अव्य॰) सत्य-सत्य, सच-सच, सच्चेपनसे।

अमिन् (सं॰ त्रि॰) अम अस्यास्ति, अम-इनि। १ गमनशील, चलनेवाला। २ रोगी, पीड़ित, बीमार, जिसके दर्द रहे।

अमिन (सं॰ त्रि॰) मि हिंसा वधकर्म्म वा, बाहुल्यकात् औणादिक नक्-मिनम् ततो नञ्-तत्। १ अहिंसित, जो विनष्ट न हो, न मारा हुआ, जो बरबाद न हो। २ भीषण, खूंखार। ३ अपरिमाण, बेमिक़दार, जिसकी कोई नाप-जोख न रहे।

अमिनत् (वै॰ त्रि॰) १ आघात न करनेवाला, जो चोट न पहुंचा रहा हो। २ अविदारित, जो चोट न खाये हो।

अमिय (हिं॰ पु॰) अमृत, आब-हयात।

अमिय-मूरि (हिं॰ स्त्री॰) अमृतमूल, सञ्जीवनी बूटी, जिस जड़को खाकर मुर्दा जी उठे।

अमिरती, इमरती देखो।

अमिल (हिं॰ त्रि॰) १ न मिलनेवाला, जो दस्तयाब न हो। २ पृथक्, बेमेल।

अमिलतास, अमलतास देखो।

अमिलपट्टी (हिं॰ स्त्री॰) चौड़ी तुरपन, किसी क़िस्मकी सिलाई।

अमिलातक (सं॰ क्ली॰) बेलेका फूल।

अमिलातका (सं॰ स्त्री॰) महाराजतरुणीपुष्पवृक्ष, चमेली।

अमिलित (सं॰ त्रि॰) पृथक्, न मिला हुआ।

अमिलिया पाट (हिं॰ पु॰) एक प्रकारका पटसन।

अमिली, इमली देखो।

अमिश्र (सं॰ त्रि॰) १ संयोगशून्य, न मिला हुआ। २ दूसरेकी अभिसन्धिसे रहित, जिसमें दूसरेकी शिरकत न रहे।

अमिश्रण (सं॰ क्ली॰) मिश्रणका अभाव, मिलावटकी अदम-मौजूदगी।

अमिश्रराशि (सं॰ पु॰) एकाईसे ही पृथक् पृथक् किया जानेवाला राशि, जिस जिन्समें कुछ मिला न रहे। गणितशास्त्रमें एकसे नौ तक संख्या अमिश्र राशि कहलाती है।

अमिश्रणीय (सं॰ त्रि॰) मिश्रणके अयोग्य, मिलानेके नाक़ाबिल, जो मिल न सकता हो।

अमिश्रित (सं॰ त्रि॰) मिश्रणशून्य, बेमिलावट, जिसमें कोई दूसरी चीज़ मिली न रहे।

अमिष (सं॰ क्ली॰) अम भोगे कर्मणि टिषच्। १ लौकिक सुख, दुनियाकी आराम। २ भोग्य वस्तु, मज़ा लेने लायक़ चीज़। ३ अकपट, सत्य, ईमानदारी, सादालौही। ४ असत्य, बेईमानी। (त्रि॰) नास्ति मिषम्छलं यस्य यत्र वा, नञ्-बहुव्री॰ ५ छलशून्य, धोका न देनेवाला।

अमी (हिं॰ पु॰) अमृत, आब-हयात।

"अमी पियावत मान बिन
रहिमन हमैं न सुहाय।" (रहीम)

अमीकर (हिं॰ पु॰) अमृत बरसानेवाला, चन्द्रमा।

अमीत (सं॰ त्रि॰) मी वधे कर्मणि क्त, ततो नञ्-

तत्। १ अविंचित जो मारा न गया हो। (विं॰ पु॰) २ शत्रु, दुश्मन् जो मित्र न हो।

अमीतवर्ण (दे॰ त्रि॰) १ अपरिमित वर्णविशिष्ट, जिसमें बेहद रङ्ग रहें। २ अम्लानवर्णयुक्त, जिसका रङ्ग पीला न पड़े।

अमीन (अ॰ पु॰) न्यायालयके बाहरी कामोंका अधिकारी, जिस कचहरीवाले हाकिमके हाथ बाहरी इन्तजाम रहे। अदालतका डिग्रीका अनुसन्धान होना, भूमि नापना, विच्छेद कराना, कुर्कीकी चीज़ नीलामपर चढ़ाना आदि अमीनका काम है।

अमीमांसा (सं॰ स्त्री॰) अध्याहार या अनुसन्धानका अभाव, बहस या तलाशकी अदम मौजूदगी।

अमीमांस्य (सं॰ त्रि॰) अध्याहार या अनुसन्धान लगानेके अयोग्य जो तलाश या बहस करने काबिल न हो।

अमीर (अ॰ पु॰) १ अधिकारी, हाकिम। २ धनवान्, दौलतमन्द, जिसके पास बहुत रुपया पैसा रहे। ३ अग्रपद, सर्दार। ४ अफ़ग़ानिस्तानके बादशाहकी उपाधि। अफ़ग़ानिस्तानके समस्त भूपति अमीर ही कहलाते हैं।

अमीराना (अ॰ वि॰) अमीर जैसा जिससे दौलत मन्दी मलके।

अमीरी (अ॰ स्त्री॰) १ धनाढ्यता ऐश्वर्य, दौलत मन्दी। २ उदारता, सखावत। (वि॰) ३ अमीर-जैसा, अमीराना, जो धनाढ्यके योग्य हो।

अमीव (सं॰ क्ली॰) अम रोगे ईव। 'अमरोघ' ईव प्रत्यय। (निरु) १ रोग, बीमारी। २ चिंचित, फ़िक्र। ३ पाप, गुनाह। ४ दुःख तकलीफ़। ५ प्रेत, शैतान्।

अमीवचातन (सं॰ त्रि॰) अमीव रोगं चातयति चत णिच्-कर्तरि ल्यु। १ रोगनाशक, बीमारी मिटाने वाला। २ शत्रुघातक दुश्मनको मारनेवाला। (स्त्री॰) गौरादि॰ ङीप्। अमीवचातनी।

अमीवहन् अमीवचातन देखो।

अमीवा (सं॰ स्त्री॰) अमीव देखो।

अमुक (सं॰ त्रि॰) अदस् टेरकच् उ मत्व। अदस् शब्दके अर्थवाला, फलान्, कोई। जब किसी आदमी या चीज़का नाम नहीं लिया जाता, तब उसकी जगह अमुक शब्द आता है।

अमुक्त (सं॰ त्रि॰) १ असमाप्त, जैसा हुआ, जो छूटा न हो। २ जन्ममरणसे आबद्ध, जिसे पैदा होने और मरनेसे छुटकारा न मिला हो। (क्ली॰) ३ अस्त्र, हथियार। जिसे हाथमें पकड़ रखते और मारते समय भी नहीं छोड़ते उस हथियारको अमुक्त कहते हैं। जैसे—छुरी, कटारी, तलवार।

अमुक्ति (सं॰ स्त्री॰) १ मोक्षका अभाव छुटकारेका न मिलना। २ स्वतन्त्रताका अभाव, आज़ादीकी अदम मौजूदगी।

अमुख (सं॰ त्रि॰) मुखरहित बेदहन, जिसके मुंह न रहे।

अमुख्य (सं॰ त्रि॰) अप्रधान, अयोग्य, मातहत, जो बड़ा न हो।

अमुग्ध (सं॰ त्रि॰) अनाकुल, अभय, घबराया न हुआ जो परिप्लुत न हो।

अमुच् (दे॰ स्त्री॰) अमुचि देखो।

अमुची (दे॰ स्त्री॰) चुड़ैल, डाइन।

अमुतस् (सं॰ अव्य॰) अमुष्मात्, अदस्-तसिल् उ मत्व। १ यहांसे, दूसरी दुनियासे, विहिश्तसे। २ इस-पर, इससे। ४ यहांसे, आगे।

अमुत्र (सं॰ अव्य॰) अमुष्मिन्, अदस्-त्रल् उ मत्व। १ वहां, उस स्थानपर। २ परलोकमें, आख़िरतपर। ३ यहां, इस जगह।

अमुत्रत्य (सं॰ त्रि॰) परलोकीय, आयन्दा हालतसे तअल्लुक़ रखनेवाला, जो दूसरी दुनियाका हो।

अमुत्रभूय (सं॰ क्ली॰) अमुत्रस्य भाव, अमुत्र भू भावे क्यप्। १ परलोकका धर्म, उक़बेका फ़र्ज़। २ मृत्यु मौत।

अमुथा (सं॰ अव्य॰) अमुना प्रकारेण, अदस् थाल्। १ इस प्रकार, इसतरह। २ उस प्रकार, उस तरीक़ेसे, वैसे।

अमुद्रच् (सं॰ त्रि॰) अमुमञ्चति, अदस्-अञ्च् गतौ क्विप् न लोप, अद्र्यादेश: उ: मत्व। अदस् शब्दका अर्थमात्र वैसा, ऐसा। (स्त्री॰) अमुद्रीची।

अमुद्रच्च (सं० त्रि०) अमुमञ्चति, अदस्-अञ्चु पूजायां क्विप्, न लोपाभावः अद्र्यादेशश्च। उसका पूजक, जो उसकी परस्तिश करता हो।

अमुमुयच् (सं त्रि०) अमुमञ्चति, अदस्-अञ्चु गतौ क्विप् न लोपः अद्र्यादेशः अद्रेरपि उत्वमत्वे। अदस् शब्दका अर्थप्राप्त, वैसा, ऐसा। (स्त्री०) अमुमुयीचो।

अमुमुयच्च (सं० त्रि०) अमुमञ्चति, अदस्-अञ्च पूजायां क्विप्, न लोपाभावः अद्र्यादेशः अद्रेरपि उत्व मत्वञ्च। उसका पूजक, जो उसकी परस्तिश करता हो। (स्त्री०) ङीप्। अमुमुयच्ची।

अमुया (सं० अव्य०) उस मार्गसे, उस तरीकेपर।

अमुर्हि (सं० अव्य०) उस समय, उस वक्त, तब।

अमुवत्, अदोवत् (सं० अव्य०) अमुष्येव, अदस्-वति। उसकी भांति, फलां शख्स या चीज़की तरह।

अमुष्मिन् (सं० अव्य०) परलोकमें, आक़िबतपर।

अमुष्य (सं० त्रि०) प्रसिद्ध, मशहूर, जिसका नाम फैल पड़े।

अमुष्यकुल (सं० क्ली०) पृषो० अलुक्, ६-तत्। १ प्रसिद्धकुल, मशहूर ख़ान्दान्। (त्रि०) २ प्रसिद्ध कुलमें उत्पन्न, जो मशहूर ख़ान्दान्में पैदा हो।

अमुष्यपुत्र (सं० पु०) पृषो० अलुक्, ६-तत्। प्रसिद्ध-वंश, कुलीन, ख़ान्दानी शख्स।

अमुष्यायण, आमुष्यायण (सं० पु०) विख्यात वंशोत्पन्न अपत्य, मशहूर शख्सका बेटा।

अमूक (सं० त्रि०) १ जो मूक न हो, गूंगा न होनेवाला। २ वक्ता, जो बोल रहा हो। ३ वाचाल, बहुत बात करनेवाला। ४ प्रवीण, होशियार।

अमूढ (सं० त्रि०) १ अलुप्तसज्ञ, बुद्धिमान, होशियार, जिसकी अक्ल गुम न पड़े। २ अकातर, जो घबराया न हो।

अमूदृच (सं० त्रि०) अमूमिव पश्यति असाविव दृश्यते वा, अदस्-दृश अथवा दृश्-क्स सर्वनाम्नः आ अन्तादेशस्ततो आकारस्य उत्वं दस्य मकारः। इसकी भांति, ऐसा, इस तरहका, ऐसी शक्ल या क़िस्मवाला। (स्त्री०) अमूदृशी।

अमूदृश्, अमूदृच देखो।

अमूदृश, अमूदृच देखो।

अमूर (सं० त्रि०) मूर्छ-क्विप् मूः मूर्छा तस्या अभावः अमूः, अमूरस्तस्य कुञ्जादिर। १ अमूढ, जो बेवक़ूफ़ न हो। २ मोहशून्य, जो फ़रेफ़ता न हो।

अमूर्त (सं० त्रि०) मूर्छ-क्त छ लोपः, ततो नञ्-तत्। १ अवयवशून्य, आकार-रहित, अपरिच्छिन्न, परिमाणशून्य, बेअज़ो, बेशक्ल, बेमिक़दार, जिसकी कोई सूरत न रहे। (पु०) २ शिव।

अमूर्तगुण (सं० पु०) अमूर्तस्य गुणाः, ६-तत्। अमूर्त आकाशादिका गुण विशेष, जो ख़ास वस्फ़ बेशक्ल आसमान् वग़ैरहमें हो।

अमूर्तरजस्, अमूर्तरजस, कुशके कोई पुत्र। यह वैदर्भीके गर्भसे उत्पन्न हुये थे।

अमूर्ति (सं० त्रि०) मूर्छ-क्तिन्, ततो नञ्-बहुव्री०। १ मूर्तिशून्य, आकृतिहीन, बेशक्ल, जिसकी कोई सूरत न रहे। (पु०) २ विष्णु। ३ गगनादि, आसमान् वग़ैरह। (स्त्री०) ४ आकार या अवयवका अभाव, शक्ल या अज़ोकी अदम-मौजूदगी।

अमूर्तिमत् (सं० त्रि०) मूर्ति-मतुप्, ततो नञ्-तत्। मूर्तिरहित, बेशक्ल।

अमूर्तिमती (सं स्त्री०) अमूर्तिमत् देखो।

अमूर्तिमान् (सं० पु०) अमूर्तिमत् देखो।

अमूल (सं० त्रि०) नास्ति मूलं यस्य, नञ्-बहुव्री०। आदिकारणशून्य, मूलरहित, असली सबब न रखनेवाला, जिसकी जड़ न रहे।

अमूलक (सं० त्रि०) नास्ति मूलं यस्य, कप् बहुव्री०। अमूल देखो।

अमूला (सं० स्त्री०) अग्निशिखावृक्ष करियारी।

अमूल्य (सं० त्रि०) मूल्यरहित, क्रयके अयोग्य, बेबहा, ख़रीदके नाक़ाबिल, जिसकी कोई क़ीमत न रहे।

अमृक्त (सं० त्रि०) मृज्यते स्म, मृज शुद्धौ क्त, ततो नञ्-तत्। १ अशोधित, अप्रक्षालित, पाक न किया हुआ, जो धोया न गया हो। २ अपीड़ित, तकलीफ़ न दिया हुआ, महफ़ूज़, जिसे नुक़सान न पहुंचा हो।

अमृणाल (सं० क्ली०) श्वेत उशीर, सफ़ेद खस।

अमृत (सं० त्रि०) न-मृ भावे निष्ठा क्त अथवा औणादिक तन् ततो नञ् तत्। १ जीवित, ज़िन्दा, जो मरा न हो। २ मरणशून्य, जो मर न सकता हो। ३ सुन्दर प्रिय अभिलषित, ख़ूबसूरत, प्यारा पसन्दीदा। (पु०) ४ देवता, फ़रिश्ता। ५ इन्द्र। ६ सूर्य। ७ प्रजापति। ८ आत्मा रूह। ९ विष्णु। १० शिव। ११ धन्वन्तरि। १२ पारद, पारा। १३ वनमुद्ग, उड़द। १४ वाराही नाम महाकन्द-जात ज़मींकन्द, सूरन। (स्त्री०) मांसी [illegible]। १५ जल, पानी। १६ समुद्र मथनोत्थ पदार्थ द्रव्य। १७ स्वर्ण, सोना। १८ घृत घी। १९ दुग्ध दूध। २० अन्न अनाज। २१ स्वादु द्रव्य, ज़ायक़ेदार चीज़। २२ रोगनाशक औषध, बीमारी मिटानेवाली दवा। २३ विष, ज़हर। २४ वत्सनाभ, बछनाग। २५ धन, दौलत। २६ मुक्ति, निजात। २७ अमरत्व बक़ा। २८ देवगण। २९ वैकुण्ठ, बिहिश्त। ३० सोमरस। ३१ [illegible]। ३२ अयाचित दान, बेमांगी बख़्शिश। ३३ भोजन, ख़ुराक। ३४ मिठाई। ३५ भात। ३६ चमत्कार, चमक दमक। ३७ बार और तिथि-घटित योग विशेष। ३८ बार और नक्षत्र-घटित योग विशेष। ३९ माहेन्द्र प्रभृति योगके अन्तर्गत योग विशेष। अमृतयोग देखो। ४० ब्रह्म। ४१ पीयूष, आब-हयात। कहते हैं, कि पृथुराजके समयसे पृथिवीने गोरूप धारण किया था। उस समय देवताओंने इन्द्रको बछड़ा बनाकर सुवर्ण-पात्रमें उसी गोरूपा पृथिवीको दूहा। उसमें पृथिवीके स्तनसे अमृत निकला था। पीछे दुर्वासाके शापसे वही अमृत समुद्रमें जा गिरा। शेषको देवासुरके क्षीरोदसागर मथनेपर अमृत पुनर्वार उत्थित हुआ था। लोगोंमें ऐसा प्रवाद पड़ गया है, कि अमृत पीनेसे जरा, मृत्यु प्रभृति कुछ भी नहीं होता।

> "[illegible] पीयूष [illegible]।" (नैषधी)

अमृतक (सं० क्ली०) पीयूष, आबहयात।

अमृतकन्दा (सं० स्त्री०) चन्द्रगुडूची, चन्द्रगुर्च।

अमृतकर (सं० पु०) चन्द्र, चांद, जिस चीज़की किरणमें अमृत रहे।

अमृतकणरस (सं० पु०) अजीर्णविकारका रस, जो रस बदहज़मीपर दिया जाता हो।

> "[illegible]।
> [illegible]।
> [illegible]।" (रसेन्द्रसार सं०)

अमृतकुण्ड (सं० क्ली०) अमृतपात्र, जिस बरतनमें आबहयात रहे।

अमृतकुण्डली (सं० स्त्री०) १ छन्दोविशेष। चान्द्रायणके अन्तमें हरिगीतिकाका दो पद मिलनेसे यह छन्द बन जाता है। २ वाद्यविशेष कोई बाजा।

अमृतकेशव (सं० पु०) अमृतप्रभाका बनवाया हुआ कोई मन्दिर। (राजतरङ्गिणी)

अमृतक्षार (सं० क्ली०) नौसादर।

अमृतगति (सं० स्त्री०) छन्दोविशेष। इसके प्रत्येक चरणमें एक नगण, एक जगण, पुन: एक नगण और अन्तमें गुरु अक्षर रहेगा।

अमृतगर्भ (सं० पु०) अमृत ब्रह्म गर्भे अभ्यन्तरे यस्य, बहुव्री०। १ जीव, जान। २ ब्रह्मा। ३ निद्रा, नींद। (त्रि०) ४ अमृतपूरित, आब-हयातसे भरा हुआ।

अमृतगुटिका (सं० स्त्री०) अजीर्ण रोगकी वटी, जो गोली बदहज़मीपर दी जाती हो।

> "[illegible]।
> [illegible]।" (रसेन्द्रचिन्तामणि)

अमृतचिति (सं० स्त्री०) अमरत्व प्रदान करनेवाली यज्ञीय ईंटका सञ्चय।

अमृतज (सं० त्रि०) पीयूषसे उत्पन्न, जो आब-हयातसे पैदा हो।

अमृतजटा (सं० स्त्री०) अमृतमिव रोगनाशिनी जटा यस्या, बहुव्री०। जटामांसी, जटामासी।

अमृतफला (सं० स्त्री०) हरीतकी, हर।

अमृततरङ्गिणी (सं० स्त्री०) चन्द्रज्योत्स्ना, चांदनी, जिस चीज़की लहर आब-हयात-जैसी रहे।

अमृतता (सं० स्त्री०) अमरत्व देखो।

अमृतत्व (सं० क्ली०) अमृतस्य भावः त्व। मुक्ति, निजात।

अमृतदान (हिं० पु०) खाद्यवस्तु रखनेका पात्रविशेष, जिस बरतनमें खानेकी चीज रखें। यह ढकनेदार रहता है।

अमृतदीधिति (सं० पु०) अमृतमिव तृप्तिकरी दीधितिः किरणोऽस्य, बहुव्री०। चन्द्र, चांद, जिस चीजका किरण अमृतकी तरह तबीयतको आसूदा करे।

अमृतद्युति (सं० पु०) अमृतमिव तृप्तिकरी द्युति-र्दीप्तिर्यस्य, बहुव्री०। चन्द्र, चांद।

अमृतद्रव (सं० त्रि०) अमृत बरसानेवाला, जिससे अमृत टपके।

अमृतधार (सं० त्रि०) अमृत बहानेवाला, जिससे अमृत बहे।

अमृतधारा (सं० स्त्री०) अमृतस्य धारा ६-तत्। १ अमृतविस्तार, आब-हयातका फैलाव। २ छन्दो-विशेष। इसके प्रथम पादमें आठ और द्वितीय पादमें दश अक्षर रहते हैं।

अमृतधुनि (हिं०) अमृतध्वनि देखो।

अमृतध्वनि (वै० स्त्री०) छन्दोविशेष। इसमें २४ मात्रा और प्रथम एक दोहा लगायेंगे। इसतरह यह छः चरण रखता है। फिर प्रत्येक चरणमें तीन-तीन यमक पड़े, जिसपर द्वित्व वर्णका प्रयोग या झटका बैठेगा। प्रायः इसे वीररसपर ही अधिक लिखते हैं।

अमृतनाद (सं० पु०) अमृतमिव आप्यायकः नादः स्वरो यस्य, बहुव्री०। कृष्णयजुर्वेदान्तर्गत उपनिषद् विशेष।

अमृतनादोपनिषत्, अमृतनाद देखो।

अमृतनालिका (सं० स्त्री०) अमृतस्य स्वादुरसस्य नालीव, ६-तत्। १ कर्पूरनालिका विशेष। २ पक्वान्न-विशेष।

अमृतप (सं० पु०) अमृतं समुद्रमन्थनोद्भूतं पाति रक्षति असुरेभ्यः, पा रक्षणे क। १ विष्णु। समुद्रमन्थन-से अमृत निकलनेपर दैत्योंने लेना चाहा था। किन्तु विष्णुने मोहिनीमूर्ति बना उसी अमृतको देवतावोंके लिये बचाया। इसीलिये विष्णुका नाम अमृतप अर्थात् अमृतके रक्षाकर्ता पडा है।

अमृतं पिबति, अमृत-पा पाने क। २ देवता, जो अमृत पीता हो। (त्रि०) अमृततुल्य मधु प्रभृति पानकर्ता, जो आब-हयात जैसा शहद वगैरह पीता हो।

अमृतपक्ष (सं० पु०) अमृतस्य सुवर्णस्य पक्षः, अवि-नाशकत्वात् आत्मीय इव। १ अग्नि, आग। अग्नि सकल वस्तुको दग्ध और विनष्ट कर डालता, किन्तु स्वर्ण को कोई हानि नहीं पहुंचा सकता; वरं उसका गुणागुण देखा देता है। इसीलिये अग्निको अमृतपक्ष कहेंगे। २ स्वर्णवत् वर्णके पक्षसे युक्त पक्षी, जिस चिड़ियेके पर सोने-जैसे चमकें।

अमृतप्राशघृत (सं० क्ली०) काश प्रभृति नाना प्रकार रोगोंका महोपकारी घृत विशेष। चार सेर गायके घीको थोडी सी हल्दीके साथ मिला और मूर्च्छा करके पन्द्रह दिन रख दे। फिर क्वाथके लिये सुपक्व आम-लकीका रस, भूमिकुष्माण्डका रस, ऊखका रस, बधिया बकरेके मांसका क्वाथ और बकरीका दूध चार चार सेर ले। सात सात दिन बाद एक एक वस्तुको घीके साथ पाक करे।

कल्कार्थ—जीवक, ऋषभक, बेणाका मूल, जीवन्ती, सोंठ, शठी, शालपर्णी, चक्रकुल्या, माषपर्णी, मुद्गपर्णी, मेद, महामेद, काकोल, क्षीरकाकोली, कण्टकारी, बृहती, श्वेतपुनर्णवा, रक्तपुनर्णवा, ज्येष्ठीमधु, कौंचका बीज, शतमूल, ऋद्धि, परुषफल, ब्राह्मणयष्टिका मूल, मुनक्का, सिंघाडा, भूम्यामलकी, भूमिकुष्माण्ड, पीपल, बहेडा, कुलके बीजका गूदा, अखरोट, बादाम, पिण्डखजूर, फालसा—प्रत्येक दो दो तोला रहे।

पाक सिद्ध हो जाने पर कल्कद्रव्य छानकर शीतल घृतमें मधु दो सेर, चीनी सवा छः सेर; मरीचचूर्ण, दारचीनीचूर्ण, बडी इलायचीका चूर्ण, तेजपत्र चूर्ण, और नागकेशरका फूल प्रत्येक आधा आधा पल लेकर एक साथ मिला दे।

"जीवकर्षभकौ मेदां जीवन्तीं नागरं शटीम्।
चतस्रः पर्णिनीर्मेदे काकोल्यौ द्वे निदग्धिकाम्॥

है। इसको प्रतिदिन सेवन करनेसे राजयक्ष्मारोग निर्मूल हो जाता है।

अमृतफल (सं० क्ली०) अमृतमिव स्वादु फलम्, मध्यपदलोपी कर्मधा०। १ रुचिफल, नासपाती।

"गुरु वातघ्नं स्वादम्लं रुचिफलं कफकृत्।" (मदनपाल)

"अमृतस्य फलं धातुवर्धकं मधुरं गुरु।

वल्यवात्तं वातहर विदोषघ्न च शामकम्॥" (वैद्यकनिघण्टु)

(पु०) अमृतमिव फलं यस्य, बहुव्री०। २ परवल। ३ पारद, पारा। ४ बुद्धिनामक औषध। ५ धात्रीवृक्ष, आंवलेका पेड़।

अमृतफला (सं० स्त्री०) १ द्राक्षा, दाख। २ किशमिश। ३ आमलकी, आंवला। ४ लघुखर्जूरी, खिन्नी।

अमृतबन्धु (सं पु०) अमृतस्य बन्धुः सोदरः एक समुद्रोत्पन्नत्वात्। १ चन्द्र, चांद। २ अश्व, घोड़ा। चन्द्र और अश्व दोनो समुद्रसे अमृतके साथ पैदा होनेसे अमृतबन्धु कहाते हैं। ३ देवता, फ़रिश्ता।

अमृतबाजार (पूर्वनाम मागुरा)—बङ्गालके यशोर जिलेका एक गांव। इस ग्रामके जमीन्दार स्वर्गीय शिशिरकुमार घोष और उनके भाइयोंने इसे अपनी माता अमृतमयीके नाम पर बसाया था। अमृतबाजार अक्षा० २३° ८′ उ० और द्राघि० ८९° ६′ पू० पर अवस्थित है। पहले यहां १८६८ ई०में बङ्गालियोंका सुप्रसिद्ध अंगरेजी साप्ताहिक समाचारपत्र अमृतबाजारपत्रिका छपते रहा। अब वह कलकत्तेसे दैनिक रूपमें निकलता है।

अमृतबान (हिं० पु०) रौग़नी बरतन, जो मट्टीकी हाडी लाहके रौग़नसे बनती हो। इसमें गुलकन्द, मुरब्बा, अचार, घी, मक्खन वग़ैरह रखा जाता है।

अमृतभल्लातकघृत, (सं० क्ली०) भिलावें प्रभृति द्रव्य-द्वारा प्रस्तुत कुष्ठादि रोगका उपयोगी घृत-विशेष। आठ सेर सुपक्व भिलावेंको ईंटकी सुर्खीमें डालकर एक दूसरी ईंटसे अच्छी तरह घिसे। घिसनेके समय खूब सावधान रहे। हाथमें लुआब लग जानेसे सर्वाङ्गमें कण्डु निकल आ सकते हैं, फिर सारा शरीर भी फूल जाता है।

घिसना अच्छी तरह हो जानेपर टोकरी अथवा बरतनमें रखकर जलसे बारबार धोये। फिर धूपमें सुखाकर सब भिलावेंको सरौतेसे दो दो टुकडे कर डाले। उसके बाद ६४ सेर जलमें सिद्ध करे; जब १६ सेर रह जाय, तब उतार ले। ठण्ढा हो जानेपर उस क्वाथको छानकर ८ सेर गायके दूधके साथ सिद्ध करे। दो सेर रह जानेपर उतारकर चीरका अंश छानकर बाकी क्वाथको ८ सेर गायके घीके साथ पाक करे। पाक शेष हो जानेपर उतार कर रख दे। जब ठण्ढा हो जाय, तब ४ सेर साफ़ चीनी मिलाकर अच्छी तरह हिला दे। इसको मात्रा १ तोलासे १॥ तोलातक या उससे भी अधिक होगी। थोडेसे दूधमें मिलाकर सेवन करे। इससे ख़राब ख़ून साफ़ होता और शरीर बलिष्ठ पड़ जाता है।

अमृतभल्लातकावलेह (सं० पु०) कुष्ठाधिकारका अवलेह, जो ढीला पाक कोढपर खिलाया जाता हो। अमृतभल्लातकघृत देखो। इसको इसतरह बनाते हैं,—

"भल्लातकमध्ययुगं छित्वा द्रोणजले क्षिपेत्।

अष्टमं गुडूच्याश्च तथाम्भसि क्षिपेत्॥

शरावमात्रकं सर्पिः दुग्धं स्यादाढकं तथा।

सितां प्रस्थमितां दद्यात्प्रस्थार्धं माक्षिकं क्षिपेत्॥

सर्वाण्येकत्र भाण्डे तु पचेन्मृदग्निना शनैः।

सुघट्टे घनीभूते पावकादवतारयेत्॥

सप्त चैतानि चूर्णानि मुसली विश्वविषामृता।

वाकुची चाथ दद्रुघ्न पिचुमर्दो हरीतकी॥

अभो धात्री च मञ्जिष्ठा मरिचं नागरं कणा।

यमानी सैन्धवं मुस्तं त्वगेला नागकेशरम्॥

पर्पट पद्मकं चा मुगोर चन्दनं तथा।

गोक्षुरस्य च बीजानि कर्पूरं रक्तचन्दनम्॥

पृथक् पलार्धमात्राणां चूर्णमेषामिह क्षिपेत्।

पलमात्रमिदं प्रातः समश्नीयात्सुखेन हि॥" (भावप्रकाश-मध्यभाग)

दो पसेरी यानी १० सेर भिलावेंको त्वचा निकालकर १) मन यानी ४० सेर पानीमें डाले और उसी जलमें दो पसेरी (१०) गुडूचीको कूटकर छोड दे। फिर १-सेर घृत, आधा मन (२० सेर) दूध १-पसेरी (५ सेर) चीनी और आधा पसेरी (२॥ सेर) मधु-

मिला इन सब द्रव्योंको एक पात्रमें रख मन्द मन्द आँचमें पकाना चाहिये। जब सब द्रव्य मिल कर एक हो जाय, तब पिपा गुड़ची, बाकुची, हड़ुक्ष निम्बको छाल, हर, बहेरा, आँवला, मजिष्ट, काली मिर्च, नागरमोथा, कथा, यमानी सैन्धव, सुरमा, दालचीनी इलायची, नागकेसर, पर्पट तेजपत्र, खस अथवा जटामांसी—खस, चन्दन इन सब वस्तुओंका पृथक् पृथक् आधा आधा पल चूर्ण मिलाना होता है। इसको अमृतमल्लातक कहते हैं। प्रतिदिन जलके साथ एकपल मात्रा खानेसे सब प्रकारका कोढ़ निर्मूल होता है।

अमृतमल्लातकी (सं॰ स्त्री॰) रसायनका योग विशेष। पका हुआ जितना भिलावाँ हो उतना ही ईंटका चूर्ण मिलाकर अच्छीतरह रगड़ कर जलसे धोकर हवामें सुखाना चाहिये। फिर सूखे हुये भिलावेंको कूटकर पृथक् चार चौगुण जलमें पाक करे। जब चौथाई शेष रहे तब उतार कर फिर बराबर दूधमें पाक करे। जब चौथाई शेष हो, तब पुनः उतार कर शीतल हो जानेपर तुल्य घृतमें पाक करे। जब पाक सिद्ध हो जाय तब सब द्रव्यसे आधी चीनी मिलाके घृत भाण्ड (घीड़)में एक पात्रमें रखके ७ दिनतक रखने दे। फिर इसे खानेमें लाना चाहिये। दूसरी इसतरह बनावेंगे—

पकेहुये भिलावेंको छिन्न विदीर्ण कर चौगुण जलमें पाक करके चतुर्थांश शेष रहने पर उतार कर पुनः चतुर्गुण दूधमें पाक करके पुनः तुल्य घृतमें पाक करना चाहिये, जब गाढ़ा हो जाय,तब १६ पल मिश्री या चीनी मिलाकर किसी पात्रमें ७ दिनतक रख छोड़ना चाहिये। पश्चात् इसे सेवन करना होता है।

अमृतभुज (सं॰ पु॰) अमृत भुङ्क्ते, अमृत-भुज् क्विप्, ६ तत्। १ देवता, फरिश्ता। (त्रि॰) अमृतमयाचितं यज्ञशिष्टान्नं वा भुङ्क्ते। अयाचित अथच अन्न-भार्दक यज्ञादेतु आनीत वस्तुका भक्षक, यज्ञसे पितामका भोक्ता, बैमांगे और इत्तफ़ाक़से आये हुये चीज़को खानेवाला, जो यज्ञका बचा हुआ अन्न खाता हो।

अमृतम् (सं॰ त्रि॰) जन्ममरणशून्य, जो न तो पैदा होता और न मरता हो।

अमृतमञ्जरी (सं॰ स्त्री॰) १ गोरक्षदुग्धोद्भव, गोरखमुण्डी। २ सामान्यज्वरका रस विशेष, मामुली बुखारपर दिया जानेवाला कोई रस। इसे खांसीपर भी दें और मात्रा दो या तीन गुञ्जा रखेंगे।

"हिङ्गु च मरिच टङ्ग पिप्पली विषमेव च।
जातीकोषं च सर्वं जम्बीरोत्थैर्विमर्दयेत्॥" (रसेन्द्रसारसंग्रह)

हिङ्गु, मरिच, पिप्पल, विष, जावित्री यह सब वस्तु सम भाग कूटकर नीबूके रसमें घोंटना होता है।

अमृतमण्डूर (सं॰ पु॰) परिणामशूलका रस विशेष, पेटके दर्दकी कोई दवा। इसे इसतरह बनावेंगे—

"मण्डूरस्य पलान्यष्टौ मधुमर्दा रस तथा।
चौपाल घरि क्षौ च तिल मधुपल सर्वे ॥" (रसरत्नाकर)

मण्डूरका ८ पल शतावरी का रस, दूध, घृत दधि, यह सब प्रत्येक चार चार पल एक साथ पकाना होता है।

अमृतमति (सं॰ स्त्री॰) अमृतमति नामक छन्दो-विशेष।

अमृतमन्थ (सं॰ पु॰) दुग्धादिपरिशोधित मन्थ, दूध वगैरहका मथा जाना।

अमृतमथन (सं॰ क्ली॰) जल मथन देखो।

अमृतमय (सं॰ त्रि॰) १ अमर, न मरनेवाला २ अमृतसे परिपूर्ण, जिसमें आब-हयात भरा रहे।

अमृतमहल (हिं॰ स्त्री॰) महिसूर प्रान्तकी कोई मेष।

अमृतमालिनी (सं॰ स्त्री॰) दुर्गा देवी।

अमृतयोग (सं॰ पु॰) अमृतनामा योग, मध्य पदलोपी कर्मधा॰। वार और नक्षत्र या वार और तिथि घटित योग विशेष। रवि एवं सोमवारको पूर्णा, मङ्गलवारको भद्रा, बुध एवं शनिवारको नन्दा, बृहस्पतिवारको जया और शुक्रवारको रिक्ता तिथि होनेसे तिथ्यामृतयोग कहलावेगा। फिर रविवारको हस्ता, सोमवारको श्रवणा, मङ्गलवारको रेवती, बुध

वारको अनुराधा, वृहस्पतिवारका पुष्या, शुक्रवारको रेवती और शनिवारको रोहिणी पडनेसे नक्षत्रामृत-योग होता है। इस योगमें भद्रा, व्यतीपात प्रभृतिका अशुभ प्रभाव न पड़ेगा।

"दिनकरकरयुक्त. सोमसौम्ये च चापि
तुरगमहितभौम सौमपुत्रोऽनुराधा।
सुरगुरुरपि पुष्ये रेवती शुक्रवारे
दिनकरसुतयुक्ता रोहिणी सौख्यहेतुः॥" (पथिम दिता)

अमृतरश्मि (सं० पु०) चन्द्र, चांद।

अमृतरस (सं० पु०) अमृतस्य रस इव रसो यस्य, मध्यपदलोपो बहुव्री०। १ अमृत-जैसा सुस्वादु वस्तु, जो चीज़ आवहयातकी तरह ज़ायकेदार हो। अमृतस्य रसः सारः, ६-तत्। २ सुधारस, अर्क, आवहयात। अमृतं निर्वाणं रस इव यस्य बहुव्री०। ३ परमात्मा।

अमृतरसा (सं० स्त्री०) अमृतस्य रस इव रसो यस्याः, मध्यपदलोपी बहुव्री०। कपिला द्राक्षा, काला अङ्गूर।

अमृतलता (सं० स्त्री०) अमृता नाम्नी लता चेति; कर्मधा; पूर्वपदस्य पुंवद्भावः। गुड़ूची, गुर्च।

अमृतलतादिघृत (सं० क्ली०) पाण्डुरोगके अधिकारका घृतविशेष, जो घी यरक़ान् या कंवल बाईपर दिया जाता हो।

"अमृतलतारसकल्क प्रसाधितं तुरगविदिष सर्पिः।
चीर चतुर्गुणमेतद्दितरेव हलीमकार्तस्य॥" (भावप्रकाश मध्यभाग)

गुड़ूचीका रसकल्क, भैंस का घृत और चौगुणा दूध एकत्र मिलाकर हलीमक रोगसे पीड़ित मनुष्यको देना चाहिये। यह औषध शीघ्र गुण दिखानेवाला है।

अमृतलतिका, अमृतलता देखो।

अमृतलोक (सं० पु०) स्वर्ग, विहिश्त।

अमृतवटक (सं० पु०) अमृतका लड्डू, जो लड्डू खानेसे अमृतकी तरह गुण करता हो। इसे सन्निपातातिसार पर देते हैं।

अमृतवटी (सं० स्त्री०) अग्निमान्द्यका रसविशेष, जो रस भूख न लगनेपर खिलाया जाता हो।

"अमृतवराटकमरिचं विषघनकमागिकैः क्रमम।" (भैषज्यरत्नावली)

२ तोले विष, ५ तोले कड़ि और ८ तोले मरिचको कूट-पीस मठर-जैसी गोली बनाना चाहिये।

अमृतवपु, अमृतवपुस् देखो।

अमृतवपुस् (सं० पु०) अमृतमयं अमृतेन वर्द्धितं वा वपुः शरीरं यस्य, मध्यपदलोपी बहुव्री०। चन्द्र, चांद। सूर्य अपने किरण द्वारा चन्द्रमें सुधारूप अमृत पहुंचाता, इसीसे शुक्लपक्षके बाद चन्द्र बढ़ा करता है। कहा जाता कि चन्द्रका शरीर अमृतमय है। यह अपने देहकी अमृतमय शीतल जलीय कणा द्वारा उद्भिद्गणको बढ़ाया करता है। अविनश्वर परमात्मा और विष्णुको भी अमृतवपुः कहेंगे।

अमृतवर्तिका (सं० स्त्री०) अमृतकी वर्तिका। यह औषध मृत्युञ्जयतन्त्रमें लिखा है—त्रिकटु, त्रिफला, ब्राह्मी, गुड़ूची, चित्रक, नागकेशर, शुण्ठी, भृङ्गराज, निर्गुण्डी, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, शक्रासन, त्वक् एला, गाम्भारीत्वक्, विडङ्ग और वचका दो-दो पल चूर्ण पचास पल कामरूपदेशीय गुड़में मिला २६० बत्ती बनाते हैं। एक बत्ती भोजनसे पहले या सन्ध्याको शीतल जलके साथ खाना चाहिये। इसके सेवनसे शरीरका समग्र रोग दूर हो जाता है।

अमृतवर्ष (सं० पु०) सुधावृष्टि, आव-हयातकी बारिश।

अमृतवल्लरी (सं० स्त्री०) १ गुड़ूची, गुर्च। २ बड़ी पोय।

अमृतवल्लिका अमृतवल्ली देखो।

अमृतवल्ली (सं० स्त्री०) अमृतावल्ली लता, कर्मधा०। चित्रकूटप्रसिद्ध गुड़ूची, चित्रकूटकी मशहूर गुर्च। इसके गुण लिखा है,—

"अमृतस्य च वल्ली स्या हितकारी विषापहा।
किञ्चित्तिक्ता जराव्याधिहरी कुष्ठामनाशिनी।
कामलव्रणशोथघ्नी ऋषिभिः परिकीर्तिता॥" (वैद्यकनिघण्टु)

अमृतवल्लीको ऋषियोंको हितकारी, विषापहा, किञ्चित्तिक्ता, जराव्याधिहरी, कुष्ठामनाशिनी, और कामलव्रण-शोथघ्नी बताया है।

अमृतवाका (सं० स्त्री०) पक्षीविशेष, किसी क़िस्मकी चिड़िया।

अमृतबिन्दूपनिषद्—अथर्ववेदका उपनिषद्विशेष।

अमृतसंयाव (सं० स्त्री०) अमृतमिव संयावम्, मध्यपदलोपी कर्मधा०। घृतपक्व यवचूर्ण प्रस्तुत पक्वान्न विशेष, यवके आटेका घीमें पकाकर बनाया हुआ भोजन। इसके प्रस्तुत करनेकी प्रथाको यह है,—पहले यवका चूर्ण घृतमें पकाकर नये पात्रमें रख लेना चाहिये। फिर उसमें कालीमिर्च, चीनी और कपूर मिलायेंगे। यह मिष्टान्न सुस्वादु और पित्तघ्न होता है।

अमृतसङ्गम (सं० पु०) खर्परिका खपरिया।

अमृतसञ्जीवनी (सं० स्त्री०) गोरक्षदुग्धी नामक क्षुप गोरखमुण्डी।

अमृतसम्भवा (सं० स्त्री०) अमृता इव सम्भवति, सम्-भू-अच्। गुडूची गुर्च।

अमृतसर—१ पञ्जाबका एक डिविजन या कमिश्नरी। यह कमिश्नरी अक्षा० ३१ १०´ एवं ३२ ५०´ १०´ उ० और द्राघि० ७४ १८´ ३५´´ तथा ७५ ४८´ १०´´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल ५३५८ वर्गमील निकलेगा।

२ पञ्जाब प्रान्तका एक जिला। यह जिला अक्षा० ३१ १०´ एवं ३२ ३´ उ० और द्राघि० ७४ २८´ तथा ७५ २०´ पू०के बीच पड़ता है। इसका क्षेत्र फल १५७४ वर्गमील लगेगा। जिलेके उत्तर पश्चिम रावी नदी बहती, जो इसे स्यालकोट जिलेसे अलग करती है। अमृतसरके उत्तर पूर्व गुरदासपुर जिला आता है। दक्षिण पूर्व व्यास नदी इसे कपूरथला राज्यसे पृथक् करती है। इसके दक्षिण पश्चिम लाहोर जिला लगता है।

३ पञ्जाबवाले अमृतसर जिलेकी एक तहसील। यह तहसील अक्षा० ३१ २८´ १५´ एवं ३१ ५१´ उ०, और द्राघि० ७४ ३४´ ३०´´ तथा ७५ २६´ १५´´ पू०के मध्य लगती है। इसका क्षेत्रफल ५५० वर्गमील पड़ेगा।

४ पञ्जाबमें सिखोंका प्रधान पवित्र स्थान। यह नगर लाहोरसे ३५ कोस दूर, अक्षा० ३१ ३७´ १५ उ० और द्राघि० ७४ ५५´ पू० पर अवस्थित, तथा वाणिज्य के लिये विशेष प्रसिद्ध है। हमलोग काशी, वृन्दावन आदि तीर्थस्थानोंको जिस तरह भक्ति करते हैं, मुसलमान जिस तरह मक्काको पवित्र समझते हैं, बौद्धोंके लिये बोधगया जिस भांति पुण्यक्षेत्र है और यहूदी तथा ईसाइयोंके लिये जरुसेलम जैसी पवित्र भूमि है सिखोंकी दृष्टिमें अमृतसर भी ठीक वैसा ही है। यहां 'अमृतसर' नामक एक बड़ा भारी सरोवर है, इसीसे सिख लोग इस नगरको भी 'अमृतसर' कहते हैं।

चार सौ वर्ष पहले यहां एक छोटेसे गांवके सिवा और कुछ भी न था। उस वक्त लोग इसे 'चाकार' कहते थे। पीछे अकबर बादशाहके राजत्वकाल सन् १५७४ ई०में सिखोंके चतुर्थ गुरु रामदासजीने वर्तमान सरोवरको खुदवाकर उसको चारो ओर छोटे छोटे मन्दिर बनवा दिये। उस समय इस नगरका नाम रामदासपुर हुआ। अन्तमें गुरु रामदासके सन्तान अर्जुन जि इसे यहां सिखोंकी राजधानी प्रतिष्ठित करके इसका नाम 'अमृतसर' रख दिया। वही नाम अबतक चला जाता है। यहां सिख हिन्दू और मुसलमान सभी लोग वास करते हैं। अब अनुमान डेढ़ लाख ठहरेगी।

अमृतसरको चारो ओर शहरपनाह बनी हुई है। उसमें तेरह फाटक हैं। पहले इसको चारो ओर खाईं रही। इसके अतिरिक्त आक्रमणसे नगरकी रक्षा करनेके निमित्त सिखोंने यहां किला भी बनवाया था। परन्तु अब वह किला नहीं रहा और उत्तर और किलेकी खाईं भी भर दी गई है। सन् १८०८ ई०में महाराज रणजित् सिंहने गोविन्दगढ़ नामक परिखावेष्टित एक दुर्ग बनवाया था, केवल वही अब तक खड़ा है।

सन् १७६२ ई०में अहमदशाहके पुत्र तैमूरने अमृतसरके प्रधान-प्रधान मन्दिरोंको तोड़ डाला था। सिखोंने उन्हीं मन्दिरोंको फिर बनवाया। उसके बाद अहमदशाहने स्वयं आकर नये मन्दिरोंको फिर तोड़वा दिया। परन्तु केवल मन्दिरोंको ही तोड़ कर उनके मनका क्षोभ न मिटा था। उस वक्त देवा

क्योंकि ऊपर गोहत्या करके उन्होंने स्थानको अपवित्र भी कर दिया। उसी समय अमृतसरमें जगह-जगह मसजिदें भी बनवायी गई थीं। अहमदशाहके चले जाने पर उन मसजिदोंको तोड़कर सिक्खलोग वहां सूअर काटने लगे अन्तमें वर्तमान मन्दिर बना।

अमृतसर बड़ा भारी सरोवर है। क्या ग्रीष्म और क्या वर्षा बारहो महीने उसमें जल भरा रहता है। सरोवरके ठीक वक्षस्थलपर सिक्खोंका देवालय है। यहां रात दिन सिक्खोंके ग्रन्थसाहबका पाठ हुआ करता है। सरोवरकी चारो ओर राजा, राजमन्त्री, प्रधान प्रधान सरदार एवं अन्यान्य धनाढ्योंकी अट्टालिकायें सुशोभित हैं।

अमृतसरके इस मन्दिरका नाम 'दरबार साहब' है। यह सफेद पत्थरका बना हुआ है। देखनेमें बहुत बड़ा नहीं है। मन्दिरका गुम्बट तांबेके पत्रका है, उसपर सोनेका पानी चढ़ा है। इसीसे लोग इसे सुवर्णमन्दिर कहते हैं। सोनेके पानी चढ़ाने में महाराज रणजित्ने बहुत धन व्यय किया था। इसके अतिरिक्त सिक्खोंने जहांगीर प्रभृति बादशाहोंकी कब्रोंसे बहुमूल्य प्रस्तरादि लाकर भीतर लगा दिये हैं। सरोवरके किनारे किनारे सफ़ेद पत्थर लगा हुआ है। बाटसे मन्दिरमें जानेके लिये सफ़ेद पत्थरका सुन्दर पथ बना है। मन्दिरको चारो ओर बरामदा है। प्रायः पांच सौ अकाली पुरोहित इस देवालयकी परिचर्यामें नियुक्त हैं।
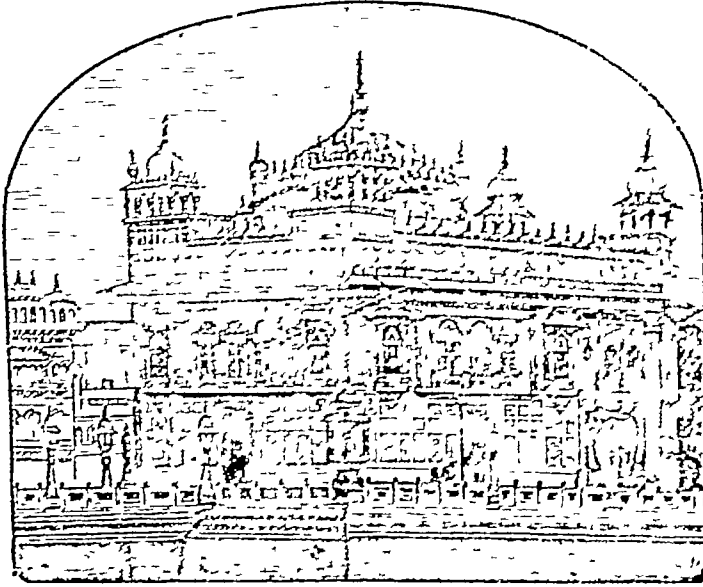
दरबार-साहब

सिंहद्वारसे प्रवेश करनेपर सामने अकालियोंका 'बुङ्ग' प्रासाद दिखाई देता है। यहां सिख गुरुओंके अस्त्र शस्त्र रखे हुए हैं। यहां अनेक गाने बजानेवाले बैठे रहते हैं। प्रतिदिन धार्मिक गीत गानेके लिये ही वे लोग नियुक्त हैं। मन्दिरके भीतर प्रसिद्ध ग्रन्थ साहब विराजमान है। पुरोहित लोग पुष्पादि द्वारा प्रतिदिन ग्रन्थ साहबकी पूजा करते हैं। सब मिलाकर सिक्खोंके दस गुरु हैं—नानक, अङ्गद, अमरदास, रामदास, अर्जुन, हरगोविन्द, हरराय, हरकृष्ण, तेजबहादुर और गुरु गोविन्द सिंह। ग्रन्थसाहब या आदिग्रन्थ नानकका रचा हुआ है। देवालयमें जाकर भक्तिपूर्वक ग्रन्थसाहबको प्रणाम करनेसे पुरोहित लोग दर्शकोंको एक एक आशीर्वादात्मक फूल देते हैं।

मन्दिरको चारो ओर कहीं यात्री लोग स्नान करते हैं; कहीं साधु संन्यासी बैठे दिखाई देते हैं; कहीं भक्तिभावसे बैठकर सिद्ध लोग धर्मपुस्तककी नकल

करते हैं, कहीं दुकानदार कपड़े, कांचो और लोहेके पतहार आदि नाना प्रकार वस्तु बेचते हैं। सरोवरको पूर्व ओर दो बड़े बड़े स्तम्भ हैं। उनके ऊपर चढ़नेसे चारो ओरका दृश्य अति मनोहर दिखाई देता है। "बाबा अतल" नामको एक सभा है, उसको गठनप्रणाली बहुत हो विचित्र है। बाबा अतलको बगलमें कौलसर है। गुरुगोविन्द सिंहको स्त्रीका नाम कौल था। वे बन्ध्या थीं। उन्होंके नामसे कौलसर प्रतिष्ठित है। मन्दिरमें जानेके पहले यात्री इसी सरोवरमें स्नान करते हैं। सरोवर किनारेके सुरम्य वृक्षोंकी शाखायें जलपर झुकी हुई हैं। उनपर सैकड़ों दंयदार मिसरी मूना करती हैं। एक इमलीके नीचे गुलबका तालपत्रक है। गुरु गोविन्द सिंह किस तरह अपनी पत्नी कोलको लाहोरसे ले आये थे इस तालपत्रकपर उसी समयका दृश्य खुदा हुआ है। अमृतसरका 'सन्तोष सर' भी अति मनोहर स्थान है।

अमृतसरसे सात कोस दक्षिण 'तरण तारण' नामक और एक प्रसिद्ध स्थान है। वहां भी एक पुण्यसरोवर है। यह प्राय ३८४ हाथ लम्बा ३८० हाथ चौड़ा और चारो ओर पत्थरसे बंधा हुआ है। महाराज रणजित् सिंहके पौत्र नवनिहाल सिंहने सरोवरके ईशानकोणपर एक स्तम्भ बनवा दिया था। वह अब तक विद्यमान है। उसके किनारे कोढ़ी लोग रहते और नित्य पुण्यसरोवरमें स्नान करते हैं। गुरु अर्जुनसिंहके शायद कुष्ठरोग था। वही इस सरोवरकी प्रतिष्ठा कर गये हैं। कहते हैं कि व्याधिग्रस्त लोग तैरकर इस सरोवरके पार जानेसे नीरोग हो जाते हैं। प्रति मास कृष्णपक्षकी त्रयोदशीको वहां अमावस्या नामका मेला लगता है। मेलेके दिन यात्री लोग आकर तरणतारणके वनमें स्नान और सरोवरकी प्रदक्षिण करते हैं। मेलेमें द्रव्यादिका क्रयविक्रय होता है।

अमृतसरके निकटकी भूमि बहुत उपजाऊ है। किसान बड़े दोआबकी झील, व्यास और रावी नदीसे जल लाकर भूमिको सींचते हैं। गेहूं, यव आदि नाना प्रकारके शस्य, कपास, ऊख, सन, बिगर, तम्बाकू, अफीम एवं और और कितनी ही चीजें यहां पैदा होती हैं। यहां तिब्बत प्रभृति स्थानोंकी बकरियोंके रोयेंका बहुत बढ़िया शाल बनता है। अमृतसरमें प्रायः कम १००० करघे चलते हैं। काश्मीरके आदमी यहांके महाजनोंके पास आकर उन सब करघोंमें शाल तय्यार करते हैं। इसके सिवा अमृतसरमें उत्तम रेशम भी उत्पन्न होता है। नाना स्थानोंके व्यवसायी यहां आकर अनेक प्रकारकी चीजें बेचते और खरीदते हैं। कहते हैं प्रतिवर्ष प्राय चार करोड़ रुपयेके चीजकी आमदनी और रफतनी होती है।

अमृतसहोदर (सं॰ पु॰) घोटक घोड़ा।

अमृतसार (सं॰ पु॰) अमृतस्य दुग्धस्य सारः, ६ तत्। १ घृत, घी। २ नवनीत, मक्खन। ३ पौष्टपाक-विशेष।

अमृतसारज (सं॰ पु॰) अमृतमिव सारः तस्मात् जायते, जन-ड, ६ तत्। गुड़।

अमृतसारजा (सं॰ स्त्री॰) शर्करा, शक्कर, चीनी, खांड।

अमृतसू (सं॰ पु॰) अमृतं किरणरूपं सूते विकिरति, सु क्विप्। १ चन्द्र, चांद। अमृतानां देवानां सूः प्रसूतिः, ६-तत्। २ देवमाता, अदिति।

अमृतसोदर (सं॰ पु॰) अमृतस्य पीयूषस्य सोदरः एकस्मालोत्पन्नत्वात्, ६-तत्। १ उच्चैःश्रवा अश्व। समुद्रमन्थनके समय अमृतके साथ यह घोड़ा निकला था। इसीसे इसका नाम अमृतसोदर पड़ा। २ घोटक मात्र घोड़ा।

अमृतस्रवा (सं॰ स्त्री॰) अमृतमिव स्रवति, सु पचाद्यच् टाप्। १ रुदन्तीलता। २ तायमाणा। (पु॰) मार्वे अप्, ६ तत्। ३ अमृतक्षरण, आब-हयातका टपकना।

अमृतस्रुत् (सं॰ त्रि॰) अमृत टपकाते हुआ, जिससे आबहयात चुये।

अमृतहरीतकी (सं॰ स्त्री॰) पीयूषकी हरीतकी, आबहयातकी हर। यह अजीर्णपर चलती और इस तरह बनती है,—

"धान्यकं जीरकञ्चैव मुस्तकं पटुपञ्चकम्
यमान्यामठपत्रञ्च लवङ्गं त्रिकटु तथा ॥"
प्रत्येकं समभागन्तु ग्राह्य चूर्णानि कारयेत्
सर्वं चूर्णसमं दद्यादभयाचूर्णसंस्कृतम् ॥" (सारकौमुदी)

धान्यक (धनिया), जीरा, मुस्ता, पञ्चलवण, यमानी (यमाईन), आमठपत्र, लवङ्ग, त्रिकटु, (सोंठ, पीपल, मरिच) इन सबके प्रत्येक समभागका चूर्ण करके सब चूर्णके बराबर हरीतकीका चूर्ण मिलाना चाहिये।

"तक्रे सहस्रमभयाफलानि सद्योऽमृतस्य च कोशयेन।
षडूषणं पञ्चपटूनि हिङ्गु यावशजाजीमजमोदकञ्च।
चूर्णेन सम्भाव्य तथा समानं क्षिपेत् शिवाबीजनिवासमध्ये ॥"
(प्रयोगामृत)

दूसरा—१०० हरीतकीका तक्रमें डाल दे। जब वह फूल जाय, तो बीजको निकाल कर षडूषण, पीपल, पीपलमूल, चाव्य, चित्रकमूल, सोंठ, मरिच, यह सब समभाग; पञ्चलवण, हिंङ्गु, यवक्षार, जीरा, कालाजीरा, वनयमानी समभाग—इन सब वस्तुओंका चूर्ण तय्यार करके एकमें मिलाकर हरीतकीके बीज-स्थानमें भर देना चाहिये। इसे अमृत-हरीतकी कहते हैं। यह अजीर्णमें बहुत लाभदायक होती है।

अमृता (सं० स्त्री०) न मृतं मरणमनया, टाप्। १ गुलञ्च, गुर्च। २ आमलकी, आंवला। ३ स्थूलमांस हरीतकी, बड़ी हर। ४ तुलसी। ५ काष्ठधात्री, अतीस। ६ मदिरा, शराब। ७ इन्द्रवारुणी, इन्द्रायण। ८ पारावतपदी, ज्योतिष्मती। ९ गोरक्षदुग्धा, दूधी। १० क्षुद्रातिविषा, काली सींगिया। ११ रक्तत्रिवृता, लाल निसोत। १२ दूर्वा, दूब। १३ पिप्पली, पीपल। १४ लिङ्गिनी, मालकंगनी। १५ नीलदूर्वा, काली दूब। १६ श्वेतदूर्वा, सफेद दूब। १७ नागवल्ली, पान। १८ रास्ना, रसौत। १९ गरुडवल्ली। २० सूर्यप्रभा, खरबूजा। २१ कन्दगुडूची। २२ स्फटिकारिका, फिटकरी। २३ परीक्षित्की माता।

अमृतांशु (सं० पु०) अमृतमिव हर्षिकराः अंशवो यस्य, बहुव्री०। चन्द्र, जिसका किरण अमृत-जैसा हर्षिकर रहे।

अमृताक्षर (सं० त्रि०) अजर-अमर, जो कभी मरता और गिरता न हो।

अमृताख्यगुग्गुलु (सं० पु०) वातरक्त रोगपर दिया जानेवाला अमृत नामक गुग्गुल। चक्रपाणिदत्तकृत-संग्रहमें इसके बनानेका विधान इसतरह लिखा है,—

गुडूची २ शरावक, गुग्गुल १ शरावक और त्रिफला प्रत्येक २ शरावकको ६४ शरावक जलमें डालकर पाक करे। जब चतुर्थांश शेष रह जाय, तब आग-परसे उतार कर उसे फिर पाक करना चाहिये। गाढ़ा हो जानेपर थोड़ा उष्ण रहते दन्त्यादिका चूर्ण प्रत्येक ४ तोलक और त्रिवृत् चूर्ण २ तोलक डाल अच्छी-तरह घोटकर मिला दे। मात्रा बलाबल देख कर देना होगी।

अमृताद्यलौह (सं० पु०-क्ली०) रक्तपित्ताधिकारका लौह, जो लौह रक्तपित्तपर दिया जाता हो। इसके बनानेकी रीति यह है,—गुडूची, त्रिवृता, दन्ती, मुण्डितिका (मुण्डी), खदिर, वृष, चित्रक, भृङ्ग-राज, तालमखाना, कमलकन्द, पुनर्णवा, बरियार, सहिञ्जन, अडूसा मूल, इन्द्रदारक, गोरक्षककटी, शतावरी, कन्द, चाव्य, पिपलामूल, कुष्ठ, और ब्राह्मणयष्ठिका यह सब द्रव्य प्रत्येक एक पल, १६ सेर जलमें डालकर पाक करे। जब अष्टांश (२ सेर क्वाथ) रह जाय, तब आग परसे उतार ले। फिर १ सेर त्रिफलाको २ सेर जलमें पचाये। जब १ सेर क्वाथ बाकी रहे, तब आगसे उतार शुद्ध लौह १६ पल, शुद्ध अभ्रक ४ पल, शुद्ध गन्धक ४ पल, गुड़ ८ पल, गुग्गुल २ पल, घृत १ सेर इन सबको मिला पाक करना चाहिये। जब पाक सिद्ध हो जाय, तब आगसे नीचे उतारे। शीतल होनेसे शहद ८ पल, शुद्धस्वर्ण-माक्षिकचूर्ण २ पल, शिलाजतु ४ तोलक इन सब द्रव्योंको मिलाना चाहिये।

अमृतागुग्गुलु (सं० पु०) राजयक्ष्मापर दिया जानेवाला गुग्गुलु। इसके बनानेका विधान नीचे लिखते हैं, १ सेर गुडूची और त्रिफला प्रत्येक आध सेरको १६ सेर जलमें क्वाथ करे। जब क्वाथ गाढ़ा हो जाय, तब आगसे नीचे उतार थोड़ा उष्ण रहते दन्ती,-गुडूची,

व्योष (सोंठ मिर्च पीपल), विडङ्ग त्रिफला—इन सब वस्तुओंका चूर्ण प्रत्येक आठ पल मिला देना होगा। (रसरत्नाकर)

द्वितीय प्रकार—गुड़ची २सेर, गुग्गुलु १ सेर,आम लकी १ सेर,विभीतक १ सेर, पुनर्नवा १ सेर,हरीतकी १ सेर,इन सबका एकत्र कूट १२ सेर जलमें पाक करे। चतुर्थांश बाकी ८ सेर क्वाथ तैयार करना चाहिये। जब क्वाथ सिद्ध हो जाय, तब क्वाथ कर पुनः पाक करे। जब वह गाढ़ा हो जाय तब आगसे नीचे उतार कर थोड़ा गर्म रहते, दन्ती, गुड़ूची, व्योष, विडङ्ग, त्रिफला प्रभृतिका प्रत्येक ५ तोलाका चूर्ण और २ तोलाका त्रिवृत् चूर्ण मिलाना होता है। मात्रा बलाग्नि देखकर दी जाती है। (चक्रपाणिदत्तका ग्रन्थ)

अमृताह्वरलौह (सं० पु०-क्लो०) रूपदंशका लौह विशेष, जो लौह आतशकको खास दवा है। यह इस कुछपर भी चलता और इस तरह बनता है,—शुद्धपारद, शुद्धगन्धक, शुद्धलौह शुद्धअभ्रक शुद्ध ताम्र, शुद्ध गुग्गुलु शुद्ध भल्लातक (भिलावां) यह सब प्रत्येक एकपल, आमलको चूर्ण ६।पलसे भर कर और विभीतक (बहेरा) का चूर्ण प्रत्येक दो पलसेर भर घृत १६ पल—यह सब द्रव्य १ सेर त्रिफलाके क्वाथसे लौह पात्रमें पाक करे। जब पाक सुसिद्ध हो जाय, तब किसी पात्रमें रख लेना चाहिये। फिर मधु और घृत मिलाकर प्रतिदिन एक रत्तीसे क्रमशः बढ़ाते हुये दूध या नारियलके जल साथ खाना होता है। (रसेन्द्रसारसंग्रह)

अमृतादि (सं० पु०) कषायद्रव्यसमूह कर्म वाला। यह विशेष विस्फोटकपर दिया जाता है,—

गुड़ूची, वृष, पटोल, मुस्ता, सप्तपर्ण खदिर, असितवेत्र (महामालता) निम्ब, हल्दी दारुहल्दी इन सबका काढ़ा पीना होता है। (रसरत्नाकर)

द्वितीय प्रकार—अमृतादि मूत्रकृच्छ्र विनाशक है। गुड़ूची, नागरमोथा, धात्री वाजिगन्धा, त्रिकण्टक, इन सब द्रव्योंको उबालकर पीनेसे अमूल मूत्रकृच्छ्र निर्मूल होता है। (भैषज्यरत्नावली)

अमृतादिवटी (सं० स्त्री०) अमृतादि नामको गोली। यह कफ, त्रिदोष और अग्निमान्द्यपर खिलायी जाती है,—विष १ भाग, कपर्दभस्म १ भाग और मरिच ८ भाग एक साथ पीसकर पानीसे मटर जैसी गोली बांध लेना चाहिये। (भावप्रकाश मध्यखण्ड)

अमृताद्यगुग्गुलु (सं० पु०) भेदरोगपर दिया जानेवाला गुग्गुलु। इसके तैयार करनेकी रीति यह है, गुड़ूची, छोटीएलायची, विडङ्ग, कुटज, कुटजवल्कल, विभीतक हरड़, आंवला, गुग्गुलु यह सब क्रमसे बढ़ाकर—यथा गुड़ूची १ पल हो, तो छोटी एलायची २ पल, विडङ्ग ३ पल—इसतरह परिमाण बढ़ाके सब द्रव्योंको चूर्ण करके मधुमें मिलाना चाहिये। (भैषज्यरत्नावली)

अमृताद्यघृत (सं० क्लो०) वातरक्तका घृत, जो वातरक्त रोगपर लगता है। इसके बनानेका विधान यों लिखा गया है,—घृत ४ शरावक एवं आरग्वध श्वेतपुनर्नवा, कोकिलाक्षमूल, एरण्डमूल और वन मुद्गका कल्कद्रव्य १ शरावक किसी हांडीमें रखे। फिर उसमें आमलकीरस ४ शरावक और जल १२ शरावक डालकर खूब पकाना और घी निकाल लेना चाहिये। (चक्रपाणिदत्तका ग्रन्थ)

अमृताद्यचूर्ण (सं० क्लो०) आमवातका चूर्ण, जो चूर्ण आमवात रोगपर खिलाया जाता है। इसके तैयार करनेकी रीति यह है,—गुड़ूची, नागर, सुधि तिका और अजयको बराबर बराबर रखते और पीस कर चूर्ण बना लेते हैं। (भावप्रकाश मध्यखण्ड)

अमृताद्यतैल (सं० क्लो०) गलगण्डादिका तैल विशेष जो तैल गलगण्डादि रोगपर लगता है। इसके बनानेका विधान नीचे लिखते हैं,

मूर्च्छित तिलका तैल ४ शरावक, गुड़ूची नीमकी छाल कुटजवल्क, अतुमक पोथन देवदारु, काकमाची, बला इन सबका कल्क १ शरावक तय्यार करना चाहिये। पहले १०० पल गुड़ूच्यादिको ६४ शरावक जलमें क्वाथ बनाये। जब १६ शरावक शेष रहे, तब आगसे नीचे उतार कर कल्क और तेलको मिला कर तैल पाककी विधिसे पकाना होता है। (भैषज्यरत्नावली)

अमृताम्बस् (सं० त्रि०) अमृतं अम्बः अन्नमिव तृप्तिकरं येषाम्। सकल देवता।

अमृताफल (सं० क्ली०) अमृतायाः फलम्, ६-तत्। १ परवल। २ रुचिफल, नासपाती।

अमृतायमान (सं० त्रि०) अमृतमिव आचरति, अमृत-क्यङ्-शानच्। अमृततुल्य, पीयूष जैसा, जो आवश्यकताके बराबर हो।

अमृतारिष्ट (सं० क्ली०) विषमज्वरादिका अरिष्ट, जो अरिष्ट विषमज्वरादिपर दिया जाता हो। गुडूची पलशत और दशमूल पलशतको द्रोणचतुष्टय जलमें डाल पकाना और चौथाई बाकी रह जानेसे उतार लेना चाहिये। पीछे इस क्वाथमें गुड तुलात्रय मिला, कृष्णजीरा १६ पल, पर्पट २ पल तथा सप्तपर्ण, त्रिकटु, मुस्तक, नागकेशर, कटुकी, अतिविषा और इन्द्रयव प्रत्येकका १ पल चूर्ण छोड़ते हैं। उसके बाद आवृत-पात्रमें इसे भर तीन मास रखेंगे। (भैषज्यरत्नावली)

अमृतार्णव (सं० पु०) अतिसार और ज्वरातिसार पर दिया जानेवाला रस। इसकी मात्रा १ माषा रहेगी। अनुपानमें धान्य, जीरक वा शाल्मिबीज पड़ता है। इसके बनानेका विधान यह होगा,—हिङ्गु-लोत्थरस, लौह, गन्धक, टङ्कण, शठी, धान्यक, ह्रीवेर, मुस्तक, अम्बष्ठा, जीरक और अतिविषाको बकरीके दूधमें डालकर घोंटनेसे अमृतार्णव तैयार हो जाता है। (भैषज्यरत्नावली)

अमृतार्णवरस (सं० पु०) कासहर रसविशेष, जो रस खांसीको मिटाता हो। गुडूची और पद्मकाठसे ही यह तैयार हो जायेगा। (रसरत्नाकर) वाजीकरण-पर चलनेवाले अमृतार्णवरसमें सूतभस्म यानी रस-सिन्दूर मिलाया जाता है। (रसेन्द्रसारसंग्रह) कासपर दिया जानेवाला अमृतार्णवरस इसतरह बने और मात्रामें २ गुञ्जा पड़ेगा। रास्ना, विडङ्ग, त्रिफला, रसगन्ध, कटुत्रिक, अमृता, पद्मक, क्षौद्र और विष-तुल्यको पीस चूर्ण कर लेते हैं। रसेन्द्रसारसंग्रहके रसायनाधिकार पर भी अमृतार्णव रस चलता और मात्रामें निष्ककी बराबर रहता है।

अमृतार्णवलौह (सं० पु०) कुष्ठाधिकारका लौह, जो लौह कुष्ठपर खिलाया जाता हो। इसे एक माषा मधुके साथ चाट लेना चाहिये।

अमृतावटिका (सं० स्त्री०) सद्योव्रणघ्नी वटिका, जो गोली फौरन् फोड़ा-फुन्सी मिटा देती हो। यह व्रण शोथपर भी चलती है। इसे यों बनायेंगे,—

गुडूची, पटोलमूल, त्रिफला, त्रिकटु, (सोंठ मिर्च पीपल), कृमिघ्न, इन सबका चूर्ण बराबर बराबर और सब चूर्णके बराबर गुग्गुल मिला गुटिका बना प्रति-दिन सेवन करना होता है। (रसरत्नाकर)

दूसरी, अमृतावटिका हृद्दभिधाना होती, व्रणको फायदा पहुंचाती और मात्रामें ८ माषा रहती है। बनानेका विधान यह होगा,—

गुडूची १०० पल, दशमूल १०० पल, पाठा, मूर्वा, बला (बरियार), श्वेत बरियारकामूल, एरण्डमूल यह सब प्रत्येक १० पल, हरीतकी १०० पल, बहेड़ा २०० पल, आमलकी ४०० पल, इन सब द्रव्योंको दो द्रोण (१२७ शरावक) जलमें एकरात्र फुलाना और १ प्रस्थ गुग्गुलुकी पोटली बांधकर उसमें डाल देना चाहिये। पश्चात् दूसरे दिन गुग्गुलुके साथ उक्त द्रव्योंको पाक करे। जब चतुर्थांश क्वाथ शेष रह जाय, तब उतार उसके गुगुलको खूब पचाना चाहिये। पुनः इन सब द्रव्योंको लोहेके पात्रमें पाक करे। जब गाढ़ा हो जाय, तब आगसे उतार कर शीतल होनेपर त्रिफला, त्रिवृता, दन्ती, व्योष (सोंठ मिर्च पीपल), गुडूची, अश्वगन्धा, विडङ्ग, चित्रक, तेजपत्र, छोटी एलायची, नागकेशर, इन सबका चूर्ण प्रत्येक एक एक पल मिलाना होता है। (प्रयोगामृत)

फिर तीसरी अमृतावटिका कुष्ठरोग और वात-रक्तको नाश करती है। यह इसतरह बनेगी,—

गुडूची १०० पल, दशमूल, १०० पल, पाठा, मूर्वा, बरियार, पटोलकी पत्ती, दार्वी, एरण्डमूल, यह सब प्रत्येक १० पल, विभीतक १०० पल, हरीतकी २०० पल, आमलकी १०० पल—सबको ३ द्रोण (१८२ शरावक) जलमें क्वाथ बनाये, अष्टांश शेष रहने पर उतार कर छान ले। पश्चात् गुग्गुलु १ प्रस्थ, घृत आधा प्रस्थ मिला पुनः पाक करे। जब पाक सिद्ध हो जाय, तब गुड घीका

सब १ पल, सोंठ और पीपलका चूर्ण प्रत्येक २ पल देना होता है। (भैषज्यरत्नावली)

अमृताग (सं॰ पु॰) अमृते जले आ-सम्यक् अगेन शेते प्रलयकाले अमृत-आ-शी-ड। १ प्रलय कालमें जलपर सोनेवाले विष्णु भगवान्। अमृतं अश्नाति, अमृत अश-अच्। २ अमृत पानेवाला देवता जो फरिश्ता आबहयात पीता हो।

अमृताशन (सं॰ पु॰) अमृतं अश्नाति अमृतं अशनं यस्य इति वा, अमृत-अश ल्यु। देवता, फरिश्ता।

अमृताशिन् (सं॰ पु॰) अमृताशन देखो।

अमृताश्म (सं॰ पु॰) अमृतो जीवित अश्मा उत्कृष्ट कर्मधा। प्रस्तरविशेष, जीवित प्रस्तर, जान्दार सङ्ग, जीता-जागता पत्थर। ऐसा भी पत्थर होता जो प्राणीकी भांति जलमें तैरते फिरता है।

अमृताष्टक ((सं॰ पु॰) अमृतां गुडूची अमृतोमा मष्टकं यत्र, बहुव्री। पाचन विशेष, ज्वरकमोंकी कोई दवा। यह कषाय गुडूची आदि आठ द्रव्यसे बनता है—गुलञ्च, इन्द्रयव, नीमका बकला, परवलकी पत्ती, कटुकी, सोंठ, रक्तचन्दन और नागरमोथा यह सब दो तोले ले सोलह गुण जलमें बीसी आगसे पकाना चाहिये। कोई चौथाई जल रह जानेसे हांडीको नीचे उतार उसमें चार तोले पीपलका चूर्ण छोड़ देते हैं। इस कषायको पीनेसे पित्तश्लेष्मज्वर, श्वास, अरुचि, वमि, पिपासा और दाह मिट जायेगा। (चक्रदत्त)

अमृतासङ्ग (सं॰ क्लो॰) अमृतस्य विषस्येव आसङ्गो यत्र, बहुव्री॰। खर्परिकातुत्य खर्परिका तूर्मा।

अमृताहरण (सं॰ पु॰) अमृताहर देखो।

अमृतासु (सं॰ त्रि॰) अमृता वियोगरहिता असव प्राणा यस्य, बहुव्री॰। दीर्घजीवी, बहुत दिन जीने वाला जो जल्द न मरता हो।

अमृताहरण (सं॰ पु॰) अमृतं पीयूषं आहरति अप तस्य आहरणं येन वा, अमृत आ-ह ल्युट्। अमृतको हरण-करनेवाले गरुड़। गरुड़के अमृताहरणका विवरण गरुड़ शब्दमें देखो।

अमृताह्वा (सं॰ क्लो॰) अमृतं आह्वयति तुल्यस्वाद त्वेन स्पर्धते, अमृत-आ-ह्वे-क। १ अमृतफल, नासपाती। यह गुरु, वातघ्न, स्वादु और त्रिदोष-नाशक होता है। सुहरप्रान्तमें इसे प्रचुर पाइयेगी। २ आरनूका।

अमृताह्वयतैल (सं॰ क्लो॰) वातरक्तका तैल, जो तैल वातरक्त रोगपर लगता हो। इसके बनानेका विधान नीचे लिखते हैं,—

गुडूची, महत्‌ पञ्चमूल, वृहती कण्टकारी, पृश्निपर्णी, गोक्षुर, पुनर्नवा, रास्ना, एरण्डमूल, कोकिलाक्ष, यह सब प्रत्येक १०० पल, बला १०० पल, कोल, बिल्व, यव, माष, कुलथी, यह सब १ पाठक, यह काश्मर्या (गम्भार) १ द्रोण, इन सबका १०० द्रोण जलमें क्वाथ बनाकर जब ८ द्रोण शेष रहे, तब नीचे उतार कर छान ले पीछे १ द्रोण तैल और चतुर्गुण दूध मिलाकर पकाना चाहिये पुनः चन्दन, खस, केसर, पत्र, एलायची गुड, कुष्ठ, तगर, मधुयष्टिका, यह सब प्रत्येक १ पल और मञ्जिष्ठ आधा पल चूर्ण करके मिलाया जाता है। (चक्रदत्त वातव्याधि)

अमृतेश (सं॰ पु॰) अमृतके ईश, शिव।

अमृतेशय (सं॰ पु॰) अमृते जले शेते अमृत-शी-अच् अलुक् स॰। विष्णु। प्रलयकालमें जलपर सोनेसे विष्णुका नाम अमृतेशय पड़ा है।

अमृतोद्गार, अमृतोद देखो।

अमृतेश्वररस (सं॰ पु॰) यक्ष्मारोगका रसविशेष। इसके तैयार करनेकी रीति यह है—पारामस्म, गुडूचका सत्व बीज, मधु (शहद) घृत, इन सब द्रव्योंको एकत्र मिलाकर यह औषध बनाया जाता है। मात्रा इसकी ६ रत्ती होती है। (रसेन्द्रसार)

अमृतेष्टका (सं॰ स्त्री॰) यज्ञीय इष्टकाविशेष, यज्ञकी खास ईंट। यह मनुष्य, पशु, पक्षी प्रभृतिके शिरसेसे स्वर्णसे बनायी जाती है।

अमृतोत्था (सं॰ स्त्री॰) साहमूत्रा, साबमनिसरी।

अमृतोत्पत्ति (सं॰ स्त्री॰) पीयूषका प्रादुर्भाव, आब हयातकी पैदायश।

अमृतोत्पन्न (सं॰ क्लो॰) अमृतं विषमिव उत्पन्नम्, मध्यपदलोपी कर्मधा॰। खर्परीतुत्य, खपरिया।

अमृतोत्पन्ना (सं० स्त्री०) अमृतमिव स्वादु मधु उत्पन्नं यस्याः, ५-बहुव्री०। मक्षिका, ममाखी। मक्षिका पुष्पसे मकरन्दको ले छत्तेमें मधुसञ्चय करती, इसीसे उसका नाम अमृतोत्पन्ना पड़ा है।

अमृतोदन—सिंहहनुके पुत्रविशेष।

अमृतोद्भव (सं० क्लो०) अमृतं विषमिव उद्भवति, अमृत-उद्-भू-अच्। १ खर्परीतुत्थ, खपरिया। २ आमलको, आवला। (पु०) अमृतं मृत्युञ्जयं शिवमिति यावत् उद्भवते प्राप्नोति भक्तदेयत्वेन। ३ विल्वहृक्ष, बेलका पेड़। ४ धन्वन्तरि।

अमृतोद्भवा (सं० स्त्री०) १ आमलकी, आवला। २ नागरवल्ली, पान।

अमृतोपम (सं० क्लो०) खर्परीतुत्थ, खपरिया।

अमृतोपहिता (सं० स्त्री०) चोपचीनी।

अमृत्यु (सं० पु०) १ मृत्युका अभाव, अमरत्व, मौतकी अदममौजूदगी, बका। (त्रि०) २ अमर, कभी न मरनेवाला। ३ अमरत्व प्रदान करनेवाला। जो बका बख्श देता हो।

अमृध्र (सं० त्रि०) मृधु उन्दने बाहुलकात् रक्, ततो नञ् तत्। १ अहिंसित, न मारा हुआ, जिसे कोई चोट न दे सके।

अमृषा (सं० अव्य०) १ सत्य, सच-सुच, बेशक, असलमें। २ शुद्ध रीतिपर, ठीक तौरसे।

अमृषाभाषिन् (सं० त्रि०) सत्यवक्ता, सच बोलने वाला, जो झूठ न कहता हो।

अमृष्टमृज (सं० त्रि०) विशुद्ध, निहायत पकीज़ा, जिसकी सफ़ाईमें दाग न लगे।

अमृष्य (सं० त्रि०) सहन करनेके अयोग्य, जो बर-दाश्त न हो।

अमृष्यमाण (सं० त्रि०) सहन न करनेवाला, जो बरदाश्त न करता हो।

अमेक्षण (सं० त्रि०) मेक्षणशून्य, बेचमच, जिसमें चलानेको चमच न रहे।

अमेघ (सं० त्रि०) मेघरहित, बेबादल, साफ़, खुला।

अमेज़ना (हिं० क्रि०) १ आमेज़िश रहना, मिलावट होना, मिल जाना। २ आमेज़िश करना, मिला देना।

अमेठना, अमेठना देखो।

अमेदस्क (सं० त्रि०) मेदरहित, बेचर्बी, नागर, दुबला।

अमेधस् (सं० त्रि०)- नास्ति मेधा धारणवती धीर्यस्य, नञ्-बहुव्री०। १ अल्प धारणाशक्तिसम्पन्न, कुछ भी स्मरण न रखनेवाला, बेहाफ़िज़ा, जिसे कुछ भी याद न रहे। २ मूर्ख, बेवक़ूफ़। ३ क्षिप्त, पागल।

अमेध्य (सं० त्रि०) न मेध्यं पवित्रम्, विरोधे नञ्-तत्। १ अपवित्र, अशुद्ध, नापाक। "यदमेध्यमयज्ञत्व।" (श्रुति) (क्लो०) २ विष्ठा, मैला। "अमेध्यानि दिवाकीर्त्ता-मन्नेऽप्यमवानि च।" (मनु ४।५) ३ अपशकुन, बुरा शिगून।

अमेध्यकुणपाशिन् (सं० त्रि०) १ कुणपभक्षक, मुर्दा-ख़ोर। २ अखाद्यमांसभोजी, सड़ागला गोश्त खाने-वाला।

अमेध्यता (सं० स्त्री०) अपवित्रता, अशुद्धता, नापा-कोजगी, मैलापन।

अमेध्यत्व (सं० क्लो०) अमेध्यता देखो।

अमेध्ययुक्त (सं० त्रि०) मलिन, कलुष, मैला, नापाक।

अमेध्यलेप (सं० पु०) पुरीषका लेपन, गोबरकी लिपायी।

अमेध्याक्त (सं० त्रि०) पुरीषसे कलुषित, मैलेसे भरा हुआ, जिसमें गोबरकी खाद पड़ जाये।

अमेन (वै० पु०) मृतपत्नीक, गतभार्य, बेज़न, रंडुवा, जिस शख़्सकी बीबी मर जाये।

अमेनि (वै० त्रि०) मि-नि, ततो नञ्-तत्। परि-च्छेदशून्य, इयत्तारहित, बेबाव, बेमिक़दार। २ आघात न करनेवाला, जो चोट न पहुंचा रहा हो।

अमेय (सं० त्रि०) न मेयम्, नञ्-तत्। १ इयत्ता लेनेके अयोग्य, जिसकी मिक़दार मालूम न हो सके। २ जाननेके अयोग्य, समझमें आ न सकनेवाला।

अमेयात्मन् (सं० त्रि०) महानुभाव, उदारचेता, महाशय।

अमेरिका—एक महाद्वीप। यह उत्तर, मध्य और दक्षिण—तीन भागमें विभक्त है, किन्तु सचरावर उत्तर और दक्षिण—दो ही भाग प्रधान हैं।

उत्तर-अमेरिकाके उत्तर उत्तर महासागर, पूर्व आटलाण्टिक महासागर और पश्चिम एवं दक्षिण प्रशान्त महासागर विद्यमान है। उत्तरसे दक्षिण दिक् पर्यन्त इसका दैर्घ्य ४५०० मील और पूर्वसे पश्चिम पर्यन्त प्रस्थ ४१२० मील पड़ेगा। इसमें भूमिका परिमाण प्राय ८३१८०११ वर्ग मील आता है।

उत्तर-अमेरिकाके विभाग नीचे लिखेंगे,—

विभागका नाम	परिमाण (वर्गमील)
१ ग्रीनलैण्ड	३८००००
२ फ्रान्सीसी अधिकार	११९
३ रूस अधिकृत अमेरिका	३९४०००
४ निउ ब्रटेन (ब्रटिश अधिकार)	१४८००००
५ पश्चिम कानाडा (ब्रटिश अधिकार)	१४७०८१२
६ पूर्व-कानाडा (ब्रटिश अधिकार)	२०१९८८
७ निउ ब्रन्सविक (ब्रटिश अधिकार)	२७०००
८ नोवा स्कोशिया (ब्रटिश अधिकार)	१८७४६
९ प्रिन्स एडवर्ड द्वीप (ब्रटिश अधिकार)	२१३४
१० निउ फाउण्डलैण्ड (ब्रटिश अधिकार)	३६१०
११ ब्रटिश कलम्बिया (ब्रटिश अधिकार)	२२११००
१२ युनाइटेड ष्टेट वा युक्तराज (अमेरिका)	३३०१८३४
१३ मेक्सिकोका मिश्रराज्य	१०३८८६३

प्रधान द्वीप—उत्तर-महासागरमें ग्रीनलैण्ड, साउथ म्प्टन कम्बरलैण्ड काकबरन, विक्टोरिया, बैङ्कस-लैण्ड, ब्रटिश अमेरिकाके पश्चिम सिटका, प्रिन्स ओफ वेल्स, क्वीन शार्लट, बङ्कुबर, बर्मूदास, केपब्रटेन, प्रिन्स एडवर्ड, निउ फाउण्डलैण्ड, एवं वेष्ट इण्डिज द्वीपपुञ्ज।

उपसागर—कालिफोर्निया, मेक्सिको, कम्पीची, हण्ड्राज हडसन, वेफिन, सेण्ट लरेन्स, चीसापीक, कारीब सागर।

प्रणाली—बेरिङ्ग, हडसन, डेविस।

अन्तरीप—प्रिन्स ओफ वेल्स, सेण्ट लुकस्, सेबल, रैस, फ्लोरिडा, हटेरास, कड, फेयरवेल रेस।

उपद्वीप—कालिफोर्निया, आलास्का, लाब्राडर, फ्लोरिडा, नोवास्कोशिया, युकटन।

पर्वत—राकी गिरिश्रेणी-(अथवा प्रास्तर गिरि), प्रशान्त गिरिश्रेणी या सीयेरा नेवाडा, आलेघानी या आपालाचियान्स, मेक्सिकोकी गिरिश्रेणी (उच्च शृङ्ग पोपोकाटिपेटल, १७७८३ फीट), कालिफोर्नियाकी गिरिश्रेणी, सेण्ट इलियस, सेण्ट हेलेन्स, सेण्ट बेदर।

नद-नदी—मेकेञ्जि, मिसौरी, ओरेगन, निउ कोलोराडो, मिसिसिपि, जेमस्, सेण्ट लारेन्स।

हृद—ग्रेटबियर, ग्रेटस्लेव, अथाबास्का, विनिपेग, सुपिरियर, मिशिगन, हुरन, ओण्टारियो, इरी, निकाराग्वा, चपाला।

उत्तर-अमेरिका अतिशय शीतप्रधान स्थान है। इसमें कितनी ही जगह अधिक शीत पड़नेसे न तो कोई वृक्ष और न गेहूं वगैरह शस्य ही उपज सकेगा। इस सकल स्थानमें शिकारी वन्य जन्तुका चर्म लेने आता है। कृषिका मत स्थान वास्तवमें रिओ-ग्रैण्ड नदसे कालिफोर्नियाके उपद्वीपके निकटस्थ पर्यन्त ही मिलेगा।

शीतप्रधान स्थान रहते भी अंगरेजके हाथ आ उत्तर अमेरिकाकी पूर्व दुरवस्था बदली, अब अनेक स्थान सभ्यजातिकी सभ्यताकी वासभूमि बन गया है।

देश और उनकी	राजधानी एवं नगर।

देनिश अमेरिका—१ लिचटेनफेल्स, जूलियेन, हबाव।

फ्रान्सीसी अधिकार—२ सेण्ट पायर।

रूसी अधिकार—३ नया आर्कञ्जल।

ब्रटिश अमेरिका—४ योर्क फैक्टरी, ५ टोरण्टो-हामिलटन, ६ क्विबेक, ओटोवा, ७ फ्रेडरिक्टन, सेण्ट जान, ८ हालिफाक्स ९ चार्लेटन, १० सेण्टजोन्स, ११ निउ वेष्टमिनिष्टर।

युनाइटेडस्टेट—१२ वाशिङ्गटन, बोस्टन, निउ यार्क, फिलाडेलफिया, बल्टिमोर, रिचमण्ड, चार्लस्टन, निउ आर्लीन्स सेण्टलूयी सिनसिनाटी पिटसबर्ग, चिकागो।

मेक्सिको—वेराक्रूज, प्यूबला, मेरिडा।

योटावा नगरमें मुख्य पत्थरकी खानि मिलती है। टोरोण्टोके विश्वविद्यालय और क्विबेक वाणिज्यका स्थान होनेसे प्रसिद्ध है। वाशिङ्गटनमें राज्यके प्रधान कर्ता रहते हैं। वहां जातीय समिति बसती है। निउ-यार्कमें वाणिज्य-व्यवसाय अधिक चलता और नाना

शास्त्र एवं नाना भाषा सीखनेको विश्वविद्यालय बना है। चिकागोसे शस्य भेजा और मंगाया जाता है।

मध्य-अमेरिकामें निम्नलिखित देश विद्यमान हैं,—

देशका नाम	परिमाण वर्गमील	राजधानी
सानमालवेडर	८५००	कजुतेपेक।
निकारागोया	४४०००	ग्रानाडा।
हण्डुरास	५३०००	कोमागागोया।
गोयाटेमाला	५८०००	निउगोयाटेमाला।
कष्टारिका	२५०००	सनहोशे।
मसकिटो		ब्लूफील्डस।
वृटिश हण्डुरास		विलिज।

मध्य-अमेरिका उत्तर अमेरिकामें ही गिना जाता है। किन्तु कोई-कोई इसे स्वतन्त्र भी बना लेगा।

दक्षिण-अमेरिकाकी उत्तर-सीमापर कारीब सागर एवं आटलाण्टिक महासागर, दक्षिण तथा पूर्व दक्षिण-महासागर और पश्चिम प्रशान्त महासागर विद्यमान है। उत्तरसे दक्षिण पर्यन्त दैर्घ्य ४५०० मील, पूर्वसे पश्चिम पर्यन्त प्रस्थ ३००० मील और भूमि-परिमाण प्रायः ७८८०००० वर्ग-मील है। इसके देशादिका विवरण नीचे देखिये,—

देश	शासनप्रणाली	परिमाण	राजधानी।
१ वेनजुयेला	साधारणतन्त्र	४१६६००	काराकास।
२ कोलम्बिया	,,	३७४४८०	चुकुयीसाका।
३ इक्वेडर	,,	३२५०००	क्विटो।
४ पेरु	,,	५८००००	लिमा।
५ चिलि	,,	१७००००	सैण्टियागो।
६ कलम्बिया वृटिश		१२००००	वोगोटा।
७ पाटागोनिया		३८००००	पण्डायेरिनस।
८ वुयेन आयार	साधारणतन्त्र	६००००	वुयेन आयार।
९ उरुगोया	,,	१२०००	मण्टभिडो।
१० पारागोया	,,	७४०००	आसनशन।
११ लाप्लाटा		८२७०००	पेराना।
१२ ब्रेजिल		२३००००	रिटडेजेनवरो।
१३ गायना (वृटिश)		७६०००	जार्जटाउन।
१४ ,, (डालैण्ड-अधिकार)		३४५००	पारामारिवो।
१५ ,, (फान्सीसी)		२१५००	केयेन।
१६ फकलैण्ड द्वीपपुञ्ज		१६०००	पोर्टलूयो।

प्रधान सागर और उपसागर—डेरियान, पनामा, मारकायिवो, गोयाक्विल।

प्रणाली—मेगिलेन।

द्वीप—ट्रिनिडाड, गालापेगन, चिम्रा, जुयान, फार्नाण्डेज, चिलो, वेलिङ्गटन, ष्टेटन, अवोरा, जर्जिया, मरुद्वीप, टेरडेलफिउगो, फकलैण्ड, मराजो।

पर्वत—एण्डिस (उच्चशृङ्ग एकोनकागुया), पेरिम।

आग्नेयगिरि—कोटापेक्सी।

ह्रद—मारोकायिवो, टिटिकाका, सिलवेरो, गुयानकेक।

नदी—ओरिनोको, एसेक्विवो, मागडेलाना, कलरेडो, लाप्लाटा, पारागुया, फ्रान्सिस्को, टोकाण्टिन, आमेजान।

योजक—पनामा। इसी योजक द्वारा अमेरिका उत्तर और दक्षिण भागमें विभक्त हुआ। अब यह खोदकर लहर बनाया गया है।

वेष्ट-इण्डिज अमेरिकाका एक विभाग है। इसमें कितने ही देश और नगर विद्यमान हैं,—

देशका नाम	वर्गमील परिमाण	राजधानी।
हैटी	११०००	हैटी।
डोमिनिका	१८०००	सानडोमिनिगो।
केउवा	४२३८३	हावाना।
पोर्टोरिका	३८६५	सानजयेन।
जामेका	५४६८	स्प्रिंग टाउन।
ट्रिनीडाड	२०००	स्पुरटा।
विण्डवर्ड द्वीपपुञ्ज		व्रिजटाउन।
ववंडो	१६६	,,
सेण्ट विनसेण्ट	१३१	किङ्गष्टन।
टोरेगो	१८७	स्कारवेरो।
सेण्ट लुसिया	२२५	केष्ट्रिस।
एण्टीगुया	१६८	सेण्टजान्स।
मण्टसेरेट	४८	,,
सेण्ट क्रिष्टोफर, एङ्गुयेला	१०३	वेसेटीर।
नेविस	३०	चार्लस टाउन।

द्वीपका नाम		वर्गमील परिमाण	राजधानी
ग्रेर्डिन द्वीपपुञ्ज		११०	
डोमिनिका		२९१	रोज़ो।
बाहामा द्वीपपुञ्ज		५४२२	नसू।
गोयेडेलूप	वायुकूलके	५०३	बेसेटर।
मार्टिनिक	वायुकूलके	३८२	फोर्टरायेल।
सेण्टमार्टिन उत्तर	वायुकूलके	२१	
सेण्टमार्टिन दक्षिण	प्रतिकूल	२१	
कुराकोआ	प्रतिकूल	२१०	विलमष्टेड।
सान्ताक्रुज़	कुमारी	८१	फ्रिडरिकष्टेड।
सेण्टटोमस	कुमारी	३०	
सेण्टबार्थेलमुर	कुमारी	७२	
सेण्टग्राम		२१	कार्येरैनेज़।
तुर्क द्वीपपुञ्ज		४००	
बर्मूडा द्वीपपुञ्ज		२०	हेमिलटन।

वेष्ट-इण्डिज़ द्वीपकी भूमिका परिमाण—प्रायः ९१९१० वर्गमील पड़ता है।

जाति—अमेरिकाका आदिम निवासी ताम्रवर्ण होता है। यह जाति अमेरिकामें प्राय सर्वत्र ही देख पड़ेगी। आदिम निवासी कुछ-कुछ बौना रहता है। उसका होंठ और गाल बड़ा मोटा, बाल काला-लम्बा लगेगा। कोई-कोई अनुमान करता है, कि वह मुगल जातिसे उत्पन्न हुआ था। उसका आदि निवास दक्षिण ऐशिया रहा। बेरिङ्ग प्रणाली पारकर अमेरिका आ पहुंचा। अमेरिका जब ख्रीष्टानोंकी दृष्टि आया, तब वह सिर्फ शिकार ढूंढते फिरता था। कोलम्बस बहु वर्ष बाद भारतवर्ष समझ अमेरिकामें हुआ और आदिमनिवासीको आ देखा। वह उत्तर फिरता केपहार्न प्रदेश पर्यन्त भटकता, दाढ़ीका नाम न मिलता और देह सुचिक्कण रहता है। मुखकी समान पड़े, देखनेमें मन्द न मालूम देतो। हावभाव नम्र अथच अपटुत्व होता है। शरीर लम्बा न लगी और अपसुन्दर देख पड़ेगा। उसका बदन कोमल होता है। वह अपने देहका कोई-कोई अंश चित्र विचित्र बनाते, फिर उसपर जब सूर्यका किरण पड़े तब सुन्दरताका ठिकाना न लगेगा। आदमी वह प्रकृतिका सुकुमार मित्र ठहरता और नहीं जानता, भला-बुरा किसे कहा जाता है। उसे सदा ही प्रभुत्व और अपनी ही चाप समझित पायेंगे। उसके पास कोषागार कुछ भी न रहा और न वह जानता है या कोषागार कैसे बनता है। वह बैलके सिरपर महलोंका कांटा लगा तीर और लकड़ीको बनाकर धनुषको और धार निकाल तलवार बनाता था। युरोपीय उसे रेड इण्डियन कहते हैं। वह सूर्योपासक होता है। पहले जब कोलम्बस अमेरिकाके कूलपर उतरा, तब आदिम निवासीने कोलम्बस और उसके साथीको सूर्यलोक प्रेरित देवदूत समझ भय और भक्ति दिखायी थी। उस समय अमेरिकाके स्थान स्थानमें बड़ राज्य भी बसाते रहा। यद्यपि आदिम निवासी उच्छृङ्खल घूमता, तथापि उसके पहुंपर सोना भी चमका करता था। अब सभ्यजातिके सहवाससे वह भी क्रमसे सभ्य बनते जाता है।

उत्तर-अमेरिकाको प्राचीन जाति इण्डियन, आचटेक, और एसकिमो, इन तीन भागमें बंटी है। कोई प्राचीन इतिहास न मिलते भी आचटेक बहुत पुरानी जाति ठहरती है। किन्तु प्रवाद सुनेंगे,—सैकड़ों वर्ष पहले तोलतेक नामक कोई सुसभ्य जाति उत्तरांचलसे आ अनाहुयाकमें बसी थी। (अनाहुया कहते अब मेक्सिको कहते हैं) उसकी निर्मित विचित्र अट्टालिकाका भग्नावशेष आज भी स्थान-स्थानमें पड़ा है। महामारी, दुर्भिक्ष प्रभृति नाना कारणसे उस जातिके लोग मेक्सिको छोड़कर चले गये थे। सन् ई०के १२वें शताब्दमें चिचिमेक नामक किसी जातिने अनाहुयाक या मेक्सिको पहुंच अपना राज्य जमाया। उसके ११ वर्ष बाद ही आकलहुयान जातिने आ चिचेमिकको यहांसे भगा दिया था।

फिर उत्तर-पश्चिमांचलसे आचटेक जातिने यहां आकर अपना राज्य फैलाया। उस जातिवाले लोग अमेरिकाके सकल अधिवासीसे श्रेष्ठ रहे। शौर्य वीर्य और सभ्यताके गुणसे वह सन् ई०के १४वें शताब्दमें प्रसिद्ध हो गये थे। उस समय अङ्कविद्या, ज्योतिर्विद्या, शिल्प, राजनीति और युद्ध विषयादिमें वही अमेरिका-

के मध्य प्रधान रहे। वह व्यवहारके लिये वस्त्र, अलङ्कार, धातुमय अस्त्रादि और बडी-बडी अट्टालिका बनाते थे। उनका उपास्य देवता तेलकातल-पोका है। आजतेक कहे, कि वह देवता पृथिवीके आत्माका स्वरूप एवं सृष्टिकर्ता ठहरे और मनोहर दिव्यपुरुष समझ उसका ध्यान लगाना पडेगा। आजतेक जातिमें नरबलिकी प्रथा प्रचलित रही। उपरोक्त देवताके उपलक्षमें विपक्षपक्षीय किसी सुलक्षण पुरुषको पकड बलि चढायी जाती थी। बलिदानके समय महासमारोह होते रहा। चार स्थिरयौवना मनोहरा सुन्दरी युवती तेजकातल-पोकेका सेवा किया करती थी। सुविज्ञ लोग नैवेद्य, एवं गन्धद्रव्यादि लाते रहे। पांच आदमी वध्य व्यक्तिका हाथ-पैर पकडते, षष्ठ व्यक्ति लाल कपडे पहन और पत्थरको छुरी उठा हत्यारेका काम करता था। छुरीसे हृत्पद्म छिदनेपर प्राणवायु निकलता या न निकलता, किन्तु वह हृत्पद्म सूर्यदेवको देखा देवताके सम्मुख रख दिया जाते रहा। उसके बाद जो आदमी युद्धसे निहत व्यक्तिको पकड लाता, वह महामांससे व्यञ्जनादि बनवा स्त्रीपुत्रपरिजनके साथ महासमारोहसे खाता था। कहते हैं, कि सन् १५४२ ई०में 'ह्वीटजिलो पोटेकी' देवतावाले मन्दिरकी प्रतिष्ठाके समय ७२३४४ व्यक्ति पूर्वोक्तरूपसे एकबारगी ही बलि चढाये गये थे। तेजकातलपोकेके अधीन दूसरी भी कितनी ही देव-देवी रहती, जिसकी पूजा आजतेक जाति करती है। सन् १६५३ ई०को लन्दन शहरमें आजतेक-वंशीय कोई १७ वर्षका बालक और ११ वर्षकी एक बालिका जा पहुंची थी। बालक और बालिका देखनेमें दोनो खर्व रहे। उनके ले जानेवाले व्यक्तिने बताया था,—'यक्सिमागा नामक प्राचीन नगरके लोग इस बालक और बालिकाको, देवताकी तरह पूजते रहे।' कोई-कोई कहता, कि आजतेक अस्वाभाविक जाति है।

एस्क्रिमा या एस्क्रिमो जाति उत्तर अमेरिकामें प्राय: सर्वत्र ही मिलेगी। अनेक कहते, इस जातिके लोग मुगल जातिसे उत्पन्न हुये हैं। फिर दूसरे बतायें, कि अमेरिकाके रेडइण्डियनसे एस्क्रिमोका सादृश्य रहते वह भी उसी जातिके लोग होंगे। लेथम साहबके मतानुसार यही एकमात्र जाति उभय महाद्वीपमें देख पड़ती है। एस्क्रिमो शब्दका अर्थ आमिषाशी निकलेगा। मालूम देता, कि लोगोंने कच्चा मांस खानेसे ही वह नाम पाया है। अपनेको यह इन्विट अर्थात् लोक कहेंगे। सन् ई०के दशम शताब्दवाले स्कन्दनाभ उन्हें क्रोलिङ्गर अर्थात् धूर्त कहकर पुकारते थे। इस जातिवाले युवकके छोटी-छोटी दाढ़ी होती है, मूछ नहीं देख पडती। पुराने लोग घनी दाढ़ी और कटी मूछ रखते थे। किन्तु इण्डियनकी दशा ऐसी नहीं रहती। वह दाढ़ी-मूछ कुछ भी न रखे, निकलते ही जड़से उखाड़ डालेगा। इसीसे वह जनाना-जैसा जान पडता है। एस्क्रिमो जातिका आदमी पांच साढ़े पांच फीट पर्यन्त बढ़ेगा। पुरुष शिकार मारते घूमता और स्त्री घरका काम चलाती है। मांस खानेके सम्बन्धमें वह प्राय: कुछ सोच-विचार न करेगा। अनेकस्थलमें उसे बेपकाये ही पेटमें डाल लेता है। जिस जन्तुको खाये, पहले उसका निर्गत रक्त वह चूस लेगा। रक्त प्राय: टटका ही पिया जाता है। वह अतिशय अपरिष्कार और उग्र रहेगा। मृग, पशु, पक्षी और मत्स्यके चर्मसे आच्छादन बनता, जो स्त्रीपुरुषके देहका कपडा होता है। उसमें अनेक कुसंस्कार मिलेगा। उपास्य देवता दो रहते हैं। सन् १७२१ ई०में हानिगेड नामक किसी व्यक्तिने ग्रीनलैण्ड जा इस जातिके कितने ही लोगोको ईसायी बना डाला था। एस्क्रिमो निहत पशुका सद्य रक्त तेल और चर्बीसे मिला एक प्रकार अहार बनाता, जो स्वास्थ्यके लिये विशेष उपकारी ठहरता है।

अब उत्तर-अमेरिकामें नाना सभ्य जाति आ बसी है। यूनायिटेड ष्टेटसके सभ्य अंगरेजगणने पृथिवी पर नाना विषयमें उच्च आसन पाया। पहले वह इङ्गलेण्ड राज्यके अधिकारमें रहे, मध्यमें इङ्गलेण्डवासी अंगरेजसे लड़ स्वाधीन बन गये हैं। उनके देशमें राजा न हो, राज्यके मध्य किसी विज्ञ व्यक्तिको सकल

द्वारा निर्वाचनकर राज्यका प्रधान पद दिया जायेगा। उस प्रधान व्यक्तिको अधिवासीके मतानुसार काम करना पड़ता है।*

दक्षिण अमेरिकाका अति प्राचीन कालसे भारत वर्षके साथ संबन्ध रहा। वहां आदिम अधिवासीके मध्य राम-सीताका उत्सव प्रचलित है। (Asiatic Researches, Vol. XI.) इस कालके कितने ही लोग पुराणोक्त पाताल लोक समझते हैं। दक्षिण अमेरिकाका पेरु देश बहुकाल पूर्व भी सभ्यजातिको रहा। पाश्चात्य पण्डित उसी समयको इह पूर्वकाल कहा करते हैं। इहपूर्व जाति सभ्यता, भाषा, और धर्म बातमें, दक्षिण अमेरिकाकी दूसरी जातिसे श्रेष्ठ थी। उसकी शिक्षा, और भास्करविद्याका परिचय, प्राचीन मन्दिरादिके ध्वंसावशेषसे पायेंगे। सकल भग्न मन्दिर पेरुदेशके स्थान-स्थानमें आज भी पड़ा है। टिटिकाका ह्रदके तीर टिया हुआनाकुका ध्वंसावशेष देखेंगे। उसका फाटक दरवाजा पत्थरसे बना, दश फीट ऊंचा और तेरह फीट चौड़ा है। किसी प्रस्तर-स्तम्भकी ऊंचाई, कोई बाईस फीट निकलेगी। मन्दिरके चारों ओर खोदी हुयी देवमूर्ति तीस फीट लम्बी लगती है। टियाहुआनाकुका इतिहास नहीं मिलता। यह बात आज भी ठीक न हुयी, किस समय टिया हुआनाकु नाम रखा गया था। कोई-कोई अनुमान बांधते हैं, कि इहने यह नाम रखा होगा। यह स्थान सागरसे १२८९० फीट ऊंचा पड़ता है। यहां वायु मधुर न मिलेगा। मालूम होता है कि इह पूर्वने इस जगह राजधानी बनायी थी। किन्तु गढ़से साढ़े बारह कोस दूर पचाकमाक नामक कोई प्राचीन स्थान है। वहां बड़े बड़े मन्दिरका ध्वंसावशेष देखनेसे समझ पड़ेगा, कि इह पूर्व जाति आस्तिक रही। 'पचा'का पृथिवी और 'कमाक'का अर्थ बनानेवाला है। मतलब यह, कि पृथिवी निर्माणकारी परमेश्वर उनके उपास्य देवता थे, जिनके नाम पर उपरोक्त स्थान प्रतिष्ठित हुआ। पचाकमाकके मन्दिरमें कोई मूर्ति न रहते अनेक लोगोंका अनुमान है, कि वह निराकार और अव्यक्त परमेश्वरको मानती थी।

इहकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें कुछ निश्चय नहीं ठहरता। स्पेनियनका कहना है, कि मङ्को नामक प्रथम इह टीटीकाका ह्रदके तीर आये, उनके साथ उनकी स्त्री और भाभा ओक्लो भी रहे। मङ्कोके परिचयमें यह इह अर्थात् सूर्यके आदेशपर असभ्यजातिको परित्राण देने पहुंचे थे। उनके हाथमें कोई पतली सोनेकी छड़ी रही। उस छड़ीसे कड़ी भी जमीन् फट और वह प्रस्फुटित हो जाती थी। मङ्कोने उस समय असभ्योंको खेती करना सिखाया एवं विशुद्ध धर्म और समाजनीतिका प्रचार किया। मामा ओक्लोने लड़कियोंको सिलाई और बुनाईका काम बताया था। उसी समय कुजका नगर भी बसा रहा। मङ्को पहले* इह हुये; वह केवल शासन कर्ता ही नहीं, सबके पितासदृश प्रधान पुरोहित भी रहे। सब लोग उनके सुनियमसे बढ़ रहे और असभ्य सभ्य बन गये थे। अन्तको मङ्को सूर्यके निकट जा पहुंचे। यह घटना सन् १०६२ ई॰को है। मङ्कोने चालीस वत्सर राजत्व किया था।

उसी समयसे पेरुवासी क्रम-क्रम उन्नतिलाभ करने लगे उन्नतिके साथ ही निकटस्थ लोगोंके राज्य पर भी उन्होंने हाथ मारा।

तुपक इह युपनकी (११म इह) ने अपना राज्य बहुत दूरतक फैलाया और सन् १४५३ ई॰में चिलि राज्यको अतिक्रम कर मौल नदी पर्यन्त पेरु राज्यकी सीमा पहुंचायी थी। उनके पुत्र हुयना कपकने आमेज़न नदी पार हो क्विटो राज्यपर अपना अधिकार जमाया। उन्हें सन् १४७५ ई॰में राज्यपद मिला था।

* मार्कीन गवर्नमेण्टके आज्ञानुसार प्रकाशित Historical and Statistical Information respecting the History Condition and Prospects of the Indian Tribes of the United States, by H. R. Schoolcraft L. L. D Philadelphia 1, 2, 3rd pt. देखो।

* इह पेरुवीय शब्द है, इसका प्रकृत अर्थ सूर्य होगा। प्राचीन समय राजाको इह कहते थे।

बाद फ्रेञ्च दक्षिण अमेरिकाके मध्य प्रबल और स्वाधीन राज्य बन गया था।

फ्रान्सीसियोंने मेक्सिको और मिसिसिपिका उपकूल अधिकार किया, किन्तु उपनिवेशके संस्थापन को अधिक रक्षा न रही, अंगरेजोंसे झगड़ा ही उनका उद्देश्य था। फ्रान्सीसी अधिकारके मध्य शासनकर्ता ही सर्वेसर्वा होता और राजनीतिका चक्र नाना भावसे चलता है। किसीको उसपर हस्तक्षेप करनेका अधिकार न रहेगा। सन् १७६२ ई०में फ्रान्सने लुइसियाको स्पेनका दे दिया था।

अंगरेज उपनिवेश—स्पानिश और फ्रेंच जातिकी अपेक्षा तत्पर होते हैं। किन्तु वही सबसे पीछे अमेरिका पहुंचे थे। सन् १६०० ई०को निउफाउण्डलैण्ड और वरजिनियामें सर्वप्रथम अंगरेजी उपनिवेश स्थापित हुआ।

सन् १६२० ई०में पुरिटानोंने मैसाचुसेटसको अधिकार किया था। सन् १६३३से १६३८ ई०के मध्य निउ हाम्पशायर और कनेक्टिकटमें अंगरेज जाकर टिकते रहे। सन् १६६४ ई०में उन्होंने निउयार्क निउजर्सी और डेलावर डचोंसे कालोनीयोंसे ले लिया। सन् १६७० ई०को साउथ केरोलिनामें अंगरेजी राज्य स्थापित हुआ था। सन् १७३२ ई०को जर्जिया भी अंगरेजोंके अधिकारमें आया।

अमेरिकाके अंगरेज स्वाधीनता प्रयासी होते हैं। वह किसीके अधिकारमें रहना नहीं चाहते। आज कल युनाइटेड-स्टेटस् अंगरेज सर्वप्रकार स्वाधीन है। यहां दूसरेका शासन नहीं चलता।

उद्भिद और जन्तु—अमेरिकाका उद्भिद और मत्स्यादि पुरातन महादेशसे भिन्न निकलेगा। यहां नाना जातीय वृक्ष उपजता, जिसमें देवदारु आदि किसी प्रकृति भी अधिक रहता है। बृहत् जातीय वृक्ष हिमालय पर्वतपर भी देख पड़ेगा। चावल, जव, राई, गेहूं प्रभृति शस्य उत्पन्न होता है। यहां ज्वार ज्यादा मिलेगी। स्थान-स्थानमें सन और सोमे बोये जाते हैं। ३८ अक्षांशके मध्य तम्बाकू बहुत लगायेंगे। ३० अक्षांशमें रुई उपजती है। नील भी बोया जाये किन्तु महादेशको तरह अधिक न होगा। यहां केले बहुत बढ़ते और लोगोंको खानेमें भी अच्छे लगते हैं। आलू ढेरका ढेर निकलेगा। मानिओक नामक कोई जात होता है। उसको रेशेदार जड़ सुखाकर बुकनी बना लेनेसे आटे जैसी आयेगी। अमेरिकन या मार्किन उसी आटेकी रोटी पकाकर खाता है। किसि देशमें आरारोट उपजेगा। स्थान स्थानमें नारियल, मवा, बादाम और गुलतुरह मिलता है। आजकल युरोपीय सभ्य जातिके उत्साहसे अमेरिकामें नाना जातीय फल फूलका पेड़ लगाया जाता है।

जन्तु नाना प्रकारका होता है। उसमें हरिण, महिष (बाइसन), मेष, शशक, बिडाल, छछूंदर चूहा अम्मोदक, भालू, मालू और लोमड़ी प्राय देशभरमें पायेंगे। अमेरिकाका लोमड़ी बहुत भयानक लगता है। लगड़बग्घा और जागुयार नामक व्याघ्र भी अधिक पायेंगे। घोड़ा, गैंडा, और घोड़ा पुरातन महाद्वीपको तरह रहता है। चिड़िया और पेड़ देशमें नाना रूप अद्भुतका मिलेगा। उत्तर अमेरिका में अपेक्षाकृत होता है। उष्ण प्रधान देशमें वानर मिलेगा, हैं वह कितना ही एशियाके बन्दर जैसा होता है।

यहां बड़े बड़े बाजुवाला ग्रध, चील उल्लू बगुले कौवा, कोयल, पपीहा मक्खीखोरा चिड़िया, नाना जातीय कबूतर प्रभृति खेचर पक्षी उड़ेगा। हंस, राजहंस, सारस प्रभृति जलचर पक्षी भी तैरते फिरते हैं। अमेरिकाके हूमन पक्षीकी कौन प्रशंसा न करेगा।

अमेरिकाके सर्पमें विष अधिक होता है। वह नाना जातीय रहेगा। कच्छप भी अनेक प्रकारका होता है। नदीमें छोटी बड़ी नाना प्रकारकी मछली तैरती हैं। निउफाउण्डलैण्डके किनारे बड़ी बड़ी मछली पकड़ेंगे।

मधुमक्खिका बड़ा बड़ा छत्ता लगाती, जिससे प्रचुर मधु निकलता है। यहां नाना जातीय पिपीलिका होती। किन्तु उसमें दीमक ही अधिक देख पड़ती है।

अमेली (हिं० स्त्री०) अमेलन, मिश्रणका अभाव, आमेलिगका न होना, सफ़ाई।

अमेव (हिं०) अमेद देखो।

अमेट (वै० वि०) गृहमें वलिदान किया हुआ, जो घरमें कुरबान् किया गया हो।

अमोक्य (वै० वि०) बांधनेके अयोग्य, जो बांधा न जा सकता हो।

अमोक्ष (सं० वि०) १ असुक्त, आबद्ध, निजात न पाये हुआ, जो खुला न हो। (पु०) २ स्वतन्त्रता का अभाव, बन्धन, आज़ादीको अदम-मौजूदगी, क़ैद। ३ मुक्तिका अभाव, निजातकी अदम-मौजूदगी भूठी जिन्दगीमें छुटकारेका न मिलना।

अमोघ (सं० त्रि०) न मोघं निष्फलम्, नञ् तत् १ सफल, उत्पादक, नेवादार, ज़रखेज़, सेरहासिल, जो पैदा करनेवाला हो। २ अव्यर्थ, न निकलनेवाला, जो निशानेपर लग जाता हो। (पु०) ३ नदविशेष, कोई ख़ास दरया। ४ विष्णु। ५ शिव। ६ व्यर्थ न जानेका भाव, जिस हालतमें फ़र्क़ न पड़े।

अमोघदण्ड (सं० पु०) दण्ड देनेमें न भूलनेवाले शिव।

अमोघदर्शिन् (सं० पु०) वोधिसत्व-विशेष।

अमोघदृष्टि (सं० त्रि०) अव्यर्थमत, जिसके सुआ-यिनेमें फ़र्क़ न पड़े।

अमोघदेव—कोई प्राचीन संस्कृत कवि। इनका नाम सूक्तिमुक्तावलीमें आया है।

अमोघबल (सं० वि०) अव्यर्थशक्तिशाली, जिसका ज़ोर कभी कम न पड़े।

अमोघराज (सं० पु०) भिक्षु-विशेष।

अमोघवर्ष—राष्ट्रकूटवंशीय प्रसिद्ध नृपति। राष्ट्रकूटवंश शब्द विस्तृत विवरण देखो।

अमोघवाक् (सं० स्त्री०) अव्यर्थ शब्द, खाली न जानेवाला लफ़्ज़, जो बात कभी बिगड़ती न हो।

अमोघवाञ्छित (सं० वि०) अनवरत भाग्यान्वित, कभी दिलगीर न होनेवाला।

अमोघविक्रम (सं० वि०) १ अव्यर्थवीर्य, जिसकी बहादुरीमें कभी फ़र्क़ न आये। (पु०) २ शिव।

अमोघसिद्ध (सं० पु०) पञ्चम ध्यानी बुद्ध।

अमोघा (सं० स्त्री०) १ परवल। २ हरीतकी, हर। ३ विडङ्ग।

अमोचन (सं० क्ली०) १ मुक्तिका अभाव, निजातकी अदम-मौजूदगी। २ बन्धन, क़ैद, छूटने न पाना।

अमोचनीय (सं० त्रि०) स्वतन्त्र करनेके अयोग्य, छुटकारा न पाने क़ाबिल।

अमोचित (सं० त्रि०) आबद्ध, बंधा हुआ, जिसको छुटकारा न मिला हो।

अमोत (सं० क्ली०) अमा सह जतम्, अमा व्ये-क्त। १ अच्छिन्न सदश वस्त्रयुग्म, जिस कपड़ेके जोड़ेका किनारा फटा न रहे। (त्रि०) २ गृहसे जात, जो मकानमें बुना गया हो।

अमोतक (सं० पु०) १ गृहपालित शिशु, मकानमें परवरिश पाया हुआ बच्चा। २ पटकारक, जुलाहा, जो कपड़ा बुनता हो।

अमोतपुत्रका (वै० स्त्री०) गृहपालिता बालिका, जो लड़की मकानमें पली हो।

अमोद (हिं०) आमोद देखो।

अमोद—बम्बईके भड़ोंच ज़िलेका एक प्रधान नगर। यह धाधर नदीसे आध कोस दक्षिण, भड़ोंचसे साढ़े दश कोस उत्तर, बड़ोदेसे पन्द्रह कोस दक्षिण पूर्व और अक्षा० २१° ५८´ ३०´´ उ० एवं द्राघि० ७२° ५६´ १५´´ पू० पर अवस्थित है। यहां लोहेका चाक़ू, छुरा अच्छा बनता और कुछ-कुछ रुयीका रोजगार चलता है।

अमोनिया (अं० पु०) १ नौसादर। २ मूर्च्छा छोड़ा-नेका औषध, जिस दवासे होश आ जावे। (Ammonium chloride) इसे बंगलामें निशादल, गुजरातीमें नवसार, मारवाड़ीमें नवसागर, कनरीमें नवासगर, तामिलमें नवचरम, तैलगुमें नवासागरम्, मलयमें नवसारम्, अरबीमें मिलहुन्नार, फ़ारसीमें नौसादर, भूटानीमें जियतसा, सिंहालीमें नवाचारम् और ब्रह्मीमें ज़रस कहते हैं।

नौसादर पञ्जाबमें बहुत बनता, फिर जमे हुये भर्क़की शक्लमें धातु गलाने और रंगनेके काम आता है। कहते हैं, कि पञ्जाबवाले करनाल ज़िलेके गुम-तलाह गांवमें कुम्हार बहुत पुराने समयसे ईंटका

ढेर नौसादर तैयार करते रहे हैं। इसी मिस्र और भारतमें निम्नलिखित रीतिसे बनायेंगे —

तालाबकी गन्दी मट्टीसे पन्द्रह या बीस हजार ईंट तैयार करते और उसे पजावेको आकरो और रख आग लगा देते हैं। जब ईंट पाकी बने तब उससे गेहुके बनके जैसी कोई भूरी चीज़ निकलेगी। यह चीज़ दो किस्मको होती है—खराब और अच्छी। खराब चीज़ नौसादरकी खाम मट्टी कहाये, पजावे पीछे बीस तीस मन निकले और आठ आने मन बिकेगी। अच्छी चीज़को पपरी कहते, पजावे पीछे एक या दो मनसे ज़ियादा नहीं आते और दो सवा दो रुपये मन बेचते हैं।

खाम मट्टीको नज़लोंसे साफ़कर पानीमें घोलें और कलम बना लेंगे। इसका सारा मैल निकालनेको उपरोक्त क्रिया बार बार की जाती है। फिर जो खालिस चीज़ रहे, वह भी अच्छीतरह आगपर रख उबाली जावेगी। अमोखा बिछा कढ़नेपर कच्चा मगर जैसा नमक तैयार होता है। उसके बाद पपरीको उठा कूटें और पहले कुप्पोंमें मिला देंगे। अन्तमें सबको कांचके गोलेकी बोतलमें भर मुंह बन्द करते हैं। फिर बोतलपर चिकनी मट्टीके सात तह चढ़ावें और उसे नौसादरकी भट्ठीमें रख छोड़ेंगे। पीछे बोतलका मुंह दूसरे शीशेके ढक्कनसे ढांका और उसमें हवा न पहुंचनेको चिकनी मट्टीका लेप तह चढ़ाया जाता है। ऐसा होनेपर इसे किसी बरतनमें भर तीन रात और तीन दिनसे जलती रहनेवाली भट्ठीपर चढ़ा देते हैं। बारह घण्टे पीछे उसको निकाल डालेंगे। इससे उड़े हुये नौसादरकी जगह ताज़ा नौसादर आ जमता है। तीन दिन तीन रातके बाद भट्ठीसे बरतन उतारें, ठण्डा पड़नेसे मुंहको तोड़ें और बाक़ी बरतनको फूल देंगे। बाक़ी मसौंमें बरतनसे नमकका खोपर उठनेपर कोई चीज़ निकलती, वह फाका कहलाती है। फाकी दो तरहकी होगी, बढ़िया और घटिया। बढ़िया फाकी सिर्फ़ दो दिन और दो रात ही आगपर नौसादर चढ़ा रखनेसे बन जाती है। इस हालतपर नमी कुछ कुछ भीतरसे मरे और निकाले पांच छः सेर रहेगी। वह नौवर सोलह रुपये मन बिकता है। घटिया फाकी तीन दिन और तीन रात नौसादर आगपर चढ़ा रखनेसे निकलेगी। इस हालतमें बरतनको गले पूरे तौरपर फाकीसे भर जाते, दस-बारह सेर निकाले पड़ती और तेरह रुपये मन बिक्री होती है।

जो चीज़—गलोंमें नहीं—बरतनके मुंहमें उड़के लगी, वह फूल कहावेगी। यह सुर्मा बनानेके काम आता और चालीस रुपये मन बिकता है।

करनालमें हर साल २१०० मन नौसादर बने, जो १४१००) रुपयेका पड़ेगा। व्यवसायी इसे कारखानेसे दो आठ रुपये मन औसतके हिसाबसे ख़रीद लेते और दूसरे शहर भेज पन्द्रह रुपये मन बेचते हैं। पञ्जाबके दूसरे ज़िलेमें भी पजावेसे नौसादर निकले, किन्तु बहुतायतसे काम न लगेगा।

औषधको भांति नौसादर यकृत् और प्लीहाके रोगपर दिया जाता है। भारतीय वैद्य किसी रोगमें इसे खानेको न कहेंगे। इलाज यकृत् फेफड़ेको सूजन और सिकटी निकल आनेपर नौसादर असरसे लगता है। पन्द्रह या बीस रत्ती मात्रामें खिलानेसे यह आधाशीशीका पीड़ा मिटा देगा। उसको पिट-पीड़ा पर तीस रत्ती मात्रामें यह लाभदायक होता है। दमा और खांसको भी नौसादर फ़ायदा पहुंचायेगा।

अमोरी (हिं॰ स्त्री॰) १ आमका अपक्व फल, आमकी कच्ची कैरी, अंबिया। २ अमड़ा।

अमोल (हिं॰) अमूल्य देखो।

अमोलक (हिं॰) अमूल्य देखो।

अमोला (हिं॰ पु॰) आमका नवजात वृक्ष, जो आमका पौधा हालमें ही गुठलीसे निकल रहा हो। हिन्दुस्तानी लड़का इसे अमोहरा कहता और उखाड़कर इसको गुठलीका बाजा बना डालता है। फिर वह किसी सूखी गुठलीके सिरको पत्थर या किसी लकड़ीपर रगड़ेगा। जब छिलका एक तह घिस जाती और दूसरी दिखायी देने लगती, तब लड़का गुठलीको मुंहमें डाल सीटीकी तरह फूकने और

बजाने लगता है। किन्तु गुठलीका मुंह बिगड जानेसे आवाज़ न निकलेगी। इसीलिये लड़का गुठली रगडते समय विघ्न-बाधा दूर रखनेको नीचे लिखा लटका पढते जाता है,—

"मीर पनीहरा आंबिका—तांबिका।
करिया बंबूरीका केसे बाजे पीं पपीं॥"

अमोसी—युक्तप्रदेशके लखनऊ ज़िलेका एक नगर। यह लखनऊसे कोई चार कोस दूर पडेगा। यहां चौहान राजपूतोंका अड्डा बना है। सन् ई०के १५वें शताब्द मध्य उन्होंने भारोंसे इसको छीन लिया था। अमोसीकी चारो ओर ऊसर मिलेगा।

अमोही (हिं० वि०) अमोह, विरक्त, जो किसीसे मुहब्बत न रखता हो। २ कठोरहृदय, सख्तदिल, जिसे रहम न आये।

अमौआ (हिं० पु०) १ आम्रके रसतुल्य वर्ण, जो रङ्ग आमके अर्क-जैसा हो। यह तरह-तरहका रहता है। २ आम्ररसतुल्य वर्णविशिष्ट वस्त्र, जिस कपडेका रङ्ग आमके रस-जैसा रहे। (वि०) ३ आम्र रसतुल्यवर्णविशिष्ट, जो आमके रस-जैसा रङ्ग रखता हो।

अमौत्रधौत (सं० त्रि०) रजक द्वारा अप्रचालित, जिसको धोबीने न धोया हो।

अमौन (सं० क्लो०) १ निःशब्दताका अभाव, खमोशीकी अदम-मौजूदगी, बोलचाल। २ आत्मज्ञान, रूहका इल्म।

अमौलिक (सं० त्रि०) १ मूलशून्य, बेबुनियाद, जिसकी कोई जड न रहे। २ मिथ्या, झूठ। ३ अयथार्थ, गैरवाजिब।

अमौवा, अमौआ देखो।

अम्दपुर—बरारके बुलडाना ज़िलेका कोई गांव। यह बुलडानेसे दक्षिण-पूर्व दश कोस लगता है। गांवसे दक्षिण कोई पाव कोस एक छोटा पहाड़ है, जिसके दक्षिण और दक्षिण-पूर्व किनारे गहरी-खूबसूरत खाडी पडी है। पहाडकी चोटीपर एक नया भवानीका मन्दिर देखेंगे। मन्दिरमें ऊपरसे इसतरह प्रकाश पहुंचाते हैं, कि वह पूर्ण रीतिसे मूर्तिपर ही पडता और मण्डपमें अन्धकार बना रहता है। मन्दिरके निकट किसी बहुत बडी मूर्तिका ध्वंसावशेष मिलेगा। नाखूनसे एडीतक जो हिस्सा टूटा,वह साढेछः फोट नया है। यह मूर्ति पूर्ण परिमाणमें पचास-साठ फोट रही होगी। इसका अङ्ग-प्रत्यङ्ग अलग अलग गढा गया है।

अम्नस् (वै० अव्य०) १ अज्ञात दशामें, शीघ्र, बेसमझे-बूझे, झटपट। २ वर्तमान समय, अभी। ३ लघुरूपसे, कुछ-कुछ।

अम्नेर—बरारके अमरावती ज़िलेका एक शहर। यह मोरसी तहसीलसे लगता, जाम तथा वर्धा नदीके सङ्गम पर बसता और निवासियोंमें विशेषतः मुसलमान रखता है। यहां जागीरदार और निज़ामसे किसी समय घोर युद्ध हुआ था। सात हज़ार सिपाहियोंकी कब्रें आज भी देखनेमें आयेंगी। नदी किनारे एक पुराना महादेवका मन्दिर बना और उसके नीचे अद्भुत कुण्ड भरा है। २ बरारवाले एलिचपुर ज़िलेके मेलघाटका किला। यह अक्षा० २१° २१′ ४५″ उ०, द्राघि० ७६° ४८′ ३०″ पू० पर अवस्थित है। गार्गा और तापती नदीने मिलकर जो त्रिकोण बनाया, उसको शिखापर इसे लोगोंने खडा किया था। सिवा उत्तर-पश्चिम ओरके किसी राह शत्रु इसपर आक्रमण कर नहीं सकता। फिर तापतीके बायें किनारेकी भूमि ढालू और ऊंची भी पडेगी। क़िला एक एकड़ भूमिपर विस्तृत, आकृतिमें चतुष्कोण, ईंटसे उठा और अपने इधर उधर चार बुर्ज रखता है। इसके पश्चिम कोणको मीनारदार मसजिद देखनेमें सुन्दर और उत्कृष्ट मालूम होगी। सन् १८५८ ई०में इसका सामान उतारा और तोप हटायो गयी थी।

अम्ब (सं० पु०) अम्ब घञ् अच् वा। १ सम्बोधन, पुकार। २ गमन, रवानगी। ३ पिता, बाप। ४ शब्द, वेद, शब्द सुनानेवाला, आवाज, जो आवाज़ लगाता हो। (क्लो०) ५ नेत्र, आंख। ६ जल, पानी। (अव्य०) ७ सुष्ठु, साधु, सम्यक्, खूब, क्या खूब, भला।

अम्बक (सं० क्लो०) अम्बति दूरस्थमपि वस्तु आप्नोति, अम्ब-खुल्। १ नेत्र, चश्म। 'त्रियम्बकं संयमिनं ददर्श।' (कुमार ३।४४) अम्बति स्नेहात् धावति, घञ् स्वार्थे

था। २ पिता, बाप। ३ ताम्र, तांबा। (पु०) ४ पक्वलहय मीनमिरी।

अम्बा (वै० स्त्री०) १ माता, मा। २ उत्तमा स्त्री, अच्छी औरत, ३ जल से लानेवाली स्त्री पानी ले जाती हो।

अम्बर (स० क्लो०) अम्बते शब्दायतेऽस्मिन् मेघाः, अविकृ-परच् प्रत्ययान्तो निपात्यते। १ आकाश आसमान्। २ वस्त्र पड़ोस। ३ वस्त्र, कपड़ा। ४ अभ्र धातु अबरक। ५ कार्पास, कपास। ६ ओष्ठ होंठ। ७ पाप, रुआब। ८ समुद्रजविशेष इसी नामकी कोई खुशबूदार चीज़। ९ कुङ्कुम, केशर। १० परिधि हीर-मुहीत-दायरा घेरा। ११ नगर विशेष एक शहर। अम्बर या आमेर जयपुरकी प्राचीन राजधानी रहा। यह वर्तमान जयपुर नगरसे प्रायः तीन कोस उत्तर पर्वतके मध्यमें अक्षा० २६ ५८ ४५ˊ ३ और द्राघि० ७५ ५१ ३ˊ पू० पर अवस्थित है। महाराज मानसिंहने इस नगरको सुरम्य प्रस्तरकी अट्टालिकाओंसे सुशोभित किया था।

अम्बर शहरका अकसा हुआ नाम आमेर है। कोई कोई इसे हनुबर और अम्बिकेश्वर भी कहते हैं। इस नगरको पहले किसने स्थापित किया था, इसका ठीक पता नहीं लगता। आमेर और उसके निकट वर्ती स्थानमें मीना नामकी एक असभ्य जाती रहती है। मिवाड़के भीलोंके साथ मीना जातिका बहुत साहश्य देखा जाता है। पहले यहांके अनेक स्थानोंमें मीनाओंका एक एक छोटा राज्य था। सम्भवतः अम्बर भी मीनाओंकी राजधानी रहा होगा। उसके बाद यह किस तरह मानसिंहके पूर्वपुरुषोंके हाथ आ गया यह वृत्तान्त पश्चात् कहते हैं।

जयपुरके राजे सूर्यवंशी कहते हैं। ये लोग श्रीरामचन्द्रके द्वितीयपुत्र कुशके सन्तान हैं। कुशसे अपना कहनेसे इस समय १६८ वीं पीढ़ी चलती है। पहले कुशवंशके एक राजाने अयोध्यासे आकर शोण नदके निकट एक पर्वतके ऊपर रोहतासगढ़ नामक दुर्ग बनाया। यहां कुशवंशके राजाओंने कुछ समय तक राज्य किया था। फिर यहांसे आकर उन लोगोंने ग्वालियरके निकट सिन्धु एवं पद्भज नदके समीप कहुया-गढ़में कुछ कालतक राजत्व चलाया। उसके बाद २९५ ई०में यहांसे २५ कोस पश्चिम ग्वालियरका राज्य संस्थापन हुआ। अन्तमें ९६६ ई०में नल नामक अनेक राजाने बुन्देलखण्ड आकर नरवर राज्य संस्थापन किया।

कुशराजाके बत्तीस पीढ़ी बीत गई। उसके बाद सोधासिंह नरवरके राजा हुए। उनके पुत्रका नाम दूल्हा राव था। सोधासिंहकी मृत्युके बाद उनके छोटे भाईने अपने भतीजेको राज्य नहीं दिया। उन्हें नर वरसे निकाल दिया। दूल्हा राव उस समय एकान्त लड़के थे। सन् ९६७ ई०में वे अपनी माताके साथ जयपुरसे ढाई कोस दक्षिण मीनाओंके खो-नगरमें जा पहुंचे।

समय अधिक हो गया, भूख और पथश्रमसे मियाका शरीर क्लान्त था। हतभाग्या जननी पुत्रको एक निर्जन स्थानमें रख आप आहार खोजने गई। लौट कर देखा, कि बच्चा वृक्षमें पड़ा सो रहा और उसके शिरपर फण पसारे एक बड़ा भारी सांप बैठा था। देखते ही उनका कलेजा कांप उठा। एक दिन जो राजरानी थीं आज वे पथकी भिखारिनी बनीं। अन्धेकी लाठीकी तरह एकही थियो सन्तान सम्बल था भाग्यदोषसे शायद वह भी जाता चाहते रहा। दुर्भाग्या जननी रोती रोती पुत्रकी ओर दौड़ी। शब्द पाकर सांप चला गया। दूरसे एक ब्राह्मणने यह व्यापार देखकर रानीसे कहा—'डरो मत। दिखता शीघ्र ही तुम्हारा यह पुत्र राज्येश्वर होगा। दुःखिता जननी अपनी सन्तानको लेकर नगरमें गईं और एक मीना सरदारकी परिचारिका हुई। कहते हैं, कि अन्तमें दूल्हा राव शायद मीना-सरदारका माथ मारकर आप राजा बन बैठे थे। किसी किसीके मतानुसार—जयपुरसे १० कोस दक्षिणपूर्वकी ओर दोसा नगरके सरदारकी कन्याके साथ उन्होंने अपना विवाह किया था। दोसाराज निःसन्तान थे, इसीसे उनकी मृत्युके अनन्तर दूल्हा राव राज्यके उत्तराधिकारी हुए। इस तरह इस विषयमें अनेक मतान्तर हैं।

प्रवाद है, कि दूलह्हा रावने मीना प्रभृति जातियोंके साथ भयङ्कर युद्ध किया था। उसी युद्धमें वे समैन्य खेत आये। उसके बाद रातमें अम्बा अर्थात् माता भगवतीने दयाकर दूलह्हा रावको जिला दिया। इस अद्भुत व्यापारको देखकर मीनाओंने उन्हें राज्यपदपर अभिषिक्त किया। देवीके वरपुत्र दूलह्हा राव अम्बरमें अम्बा देवीकी मूर्ति प्रतिष्ठित कर उनकी पूजा करने लगे। कोई कोई कहते हैं, कि दूलह्हा रावके पुत्र काङ्गल रावने अम्बर जय किया था। फिर किसीके मतानुसार मैदल राव नामक उन्हींके किसी पुत्रने अम्बरको जीता। मैदल रावको अट्ठारह पीढी बाद विहारी वा वहारमल्लका जन्म हुआ। वहारमल्ल बाबरके प्रियपात्र थे। हुमायूंने भी उन्हें मनसब अर्थात् पांच हजार सैन्यका सेनापति बना दिया। मानसिंह इन्हीं विहारीमल्लके सन्तान रहे। इन्होंने ही अम्बर नगरको सुरम्य अट्टालिका प्रभृतिसे सुसज्जित किया था।

कोई कोई कहते हैं, 'अम्बा' देवीके नामसे ही लोग इस शहरको अम्बर कहते हैं। फिर आमेर अम्बरका अपभ्रंश है। अम्बरमें अम्बकेश्वर नामक एक शिवलिङ्ग है। इसलिये अनेक यह बात भी कहते है, कि अम्बकेश्वरसे ही इस नगरका नाम अम्बर हुआ है। धुन्धुर वा धुन्धुवर नामका कारण लोग यह बताते हैं, कि पहले गल्ता पहाडमें धुन्धु नामक एक दैत्य रहता था। उसीके नामके अनुसार सब कोई इस प्रदेशको धुन्धुर वा धुन्धुवर कहते हैं। जयपुर शब्दमें अम्बर राजवंशका विवरण देखो।

अब अम्बर शहरका वर्णन किया जाता है। निर्जन निभृत स्थानमें दोनों ओर पर्वतकी गोदमें यह सुरम्य स्थान मानो अमरावतीके समस्त सौन्दर्यसे सुशोभित किया गया है। जयपुरके ईशान कोणवाले फाटकसे निकलकर उत्तर मुंह जाना पडता है। बराबर सुन्दर पक्की सडक बनी हुई है। इसी राहसे पहले लोग दिल्ली जाते आते थे। फाटकके बाहर कुछ बाईं ओर जयपुरके प्रथम प्रधान मन्त्री चमोर ठाकुरका प्रासाद है। पथकी दोनों ओर पर्वतमाला विस्तीर्ण शरीर फैलाकर पडी हुई है। ग्रीष्मकालमें यहांके पहाड़ी लता-गुल्म सूख जाते, परन्तु वर्षाका जल पाकर फिर मञ्जरित होते हैं। उस समय नगरकी शोभाके साथ तरु लता हंसती रहती हैं।

दोनों ओर पर्वतके नीचे स्थान स्थानपर गहरे तालाब हैं। उनमें कच्छप, कुम्भीर, मत्स्य प्रभृति जलजन्तु कभी ऊपर आते, कभी नीचे जाते, और कभी तैर-तैर सैर करते हैं। दक्षिण ओर मान सागर है। ग्रीष्मकालमें यह स्थान सुशीतल और मनोहर हो जाता है, परन्तु आजकल इसमें बारहो महीने जल नहीं रहता। उससे कुछ दूर बाईं ओर चन्द्रबाग है। पथकी दोनों ओर देशी और नाना प्रकारके विलायती वृक्ष शाखा फैलाये छाया किये रहते हैं। दक्षिण ओर रानियोंकी छत्रियां और बाईं ओर और और लोगोंकी समाधियां हैं। रानियोंकी छत्रियां कुछ बनीं और कुछ नहीं बनीं; छत अधूरी और ऊपर चूड़ा नहीं है। राजाओंने रानियोंकी छत्रियोंको सम्पूर्ण नहीं किया। सडकके किनारे एक एक छोटा देवालय और पथिकोंके विश्रामका स्थान बना हुआ है। अम्बरके बाहर घाटके नीचे प्रसिद्ध 'काले महादेव'का मन्दिर है। प्रवाद है, कि महाराज मानसिंह इस शिवलिङ्गको यशोहरसे ले आये थे।

क्रमसे दो कोस राह खतम हो जानेपर एक कोस और बाकी रह जाती है। परन्तु इस कोसमें चार कोससे भी अधिक श्रम होता है। सीधा ढालू पथ क्रम क्रमसे ऊपर उठता गया है। डोली आदिसे जानेसे कहार पसीने पसीने हो जाते हैं। चार कहार डोलीको कन्धेपर लिये रहते हैं; दो सामनेका डण्डा पकड़कर खींचते और दो दोनों ओर थामे रहते हैं, तब ऊपर लाया जाता है। उतरनेके समय भी ऐसा ही कष्ट होता है। ऊंट, हाथी, घोडा, बैल आदि बलवान पशु भी धीरे धीरे जाते और आते हैं।

ऐसे दुरारोह पथसे कुछ कम आध कोस ऊपर जाकर फिर नीचे उतरना पड़ता है। उसके बाद अम्बर शहर है। पहले बाईं ओर 'दिलाराम' बाग मिलता है। इसमें नाना प्रकारके फल फूलके पेड़

है। बीचमें जलके कई फुहारे हैं, पश्चिम ओर महाकिला है। बागमें सुन्दरके सुन्द मोर चरते फिरते हैं। कोई हवपर बैठा और कभी पूंछ भटकाये देख रहा है कोई जमीनपर छायेमें सो रहा है, कोई पूछ फैलाये और उठाये आनन्दसे नाच रहा है, उनके पास जानेमें तनिक भी न डरेंगे। जयपुर-नरेशकी आज्ञासे इस प्रदेशमें मयूरको कोई नहीं मार सकता। दिलाराम बागको बाईं ओर एक बड़ा भारी सरोवर है।

इस उद्यानसे निकलकर एक सड़क उत्तरको ओर अम्बर नगरमें चली गई है और एक सड़क कुछ दूर पश्चिममें राजप्रासादकी ओर आई है। अम्बरमें और कुछ भी नहीं है। कितने दिनोंकी धूमधामके बाद अम्बर अब सो रहा है। हाट बाजार टूट फूट गया है। पहले यहां बहुत अच्छी बन्दूक और नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्र प्रस्तुत होते थे। वह सब अस्त्र अब भी जयपुरके राजभवनमें रखे हुए हैं। उनके सामने विलायती अस्त्र तुच्छ मालूम होते हैं। महाराज मानसिंहके हाथकी लाठी यहीं बनाई गई थी। विधाताके हाथका नैपुण्य सन्ध्याके आकाश तथा मयूर-पुच्छमें और मनुष्यके हाथका नैपुण्य मानसिंहकी सामान्य एक लाठीमें दिखाई देता है। संसारमें ऐसा सुन्दर और कुछ भी नहीं है। लाठीके ऊपर सुनक्काशी किया हुआ है। उसमें कितने ही रङ्ग और विचित्र चित्र हैं। प्रायः तीन सौ वर्ष हो चला परन्तु आज भी वह नई और ऊपरसे नीचे तक सुन्दरताके भरी हुई है। अब भी वैसे चमकती है। उस समय इस नगरमें और भी अनेक शिल्पकार्यों की उन्नति हुई थी।

अब अम्बरके शिल्पी जयपुर चले गये हैं। अब यहां धनी आदमी नहीं है। केवल सामान्य अन्न खाके प्रजा कष्टसे दिन बिताती है। दुकानोंमें खानेकी अच्छी चीज नहीं मिलती। केवल भुना हुआ चना, मैदा, यव और सत्तू आदि सामान्य चीजें ही पाते हैं। किसी किसी दुकानमें मावेकी मिठाई भी मिलती है।

अम्बरका राजप्रासाद ऊंचे पहाड़के नीचे एक उन्नत स्थानपर बना हुआ है। इसकी पूर्व ओर एक वृहत् सरोवर है। इसी सरोवरके समीप दिलाराम बाग और उसके बाद राजपथ है। राजपथकी पूर्व ओर और एक पर्वतमाला है। राजभवनके दक्षिण ऊंचे पहाड़के ऊपर प्रसिद्ध जयगढ़ है। मानसिंहके भ्राता जगत्सिंहके पौत्र महाराज मिर्ज़ा जयसिंहने इस दुर्गको सम्पूर्ण किया था। जयगढ़में मानसिंहकी बहुमूल्य सम्पत्ति भाण्डारमें बन्द है। दरवाजे पर मुहर लगी हुई है। उस भाण्डारको खोलनेकी आज्ञा किसीको नहीं है। स्वयं जयपुरके महाराज भी उसे आंखसे नहीं देखने पाते। मीना लोग अम्बर राजवंशकी परम विश्वासी प्रजा हैं। पहले यह लोग चारों ओर राजपूतानेमें चोरी डकैती करते फिरते थे, परन्तु यहांके राजाको कभी कोई हानि न करते थे। अम्बरका समस्त राजभाण्डार अब भी मीना जातिके हाथमें है। वह लोग आठो पहर वहां पहरा दिया करते हैं। बङ्गाल जय करनेके बाद महाराज मानसिंहने जयगढ़में एक बहुत ऊंचा विजयस्तम्भ स्थापित किया था। वह कीर्तिस्तम्भ आज भी विनष्ट नहीं हुआ।

राजप्रासादके पश्चिम कुछ दूर ऊंचे पहाड़के ऊपर प्राचीन कुन्तलगढ़ है। यह गढ़ हजार वर्षसे भी पहलेका है। अब टूट फूट गया है, चारों ओर जङ्गल लग गया है। इसमें बाघ और बनैले सूअर छिपे रहते हैं। कुन्तलगढ़से और भी ऊपर भूतेश्वर महादेवका मन्दिर है। यह भी अतिशय प्राचीन है। उत्तर ओरकी दीवारके पास एक बड़ी भारी मसजिद है। अजमेरसे गमनागमनके समय किसी मुसलमान बादशाहने इस मसजिदको बनवाया था।

नीचेके पथसे राजप्रासाद बहुत ऊंचेपर है। परन्तु ऊपर जानेके लिये अच्छी राह बनी हुई है। हाथी, घोड़ा, अथवा पालकी सवारीपर चढ़कर उसपरसे ऊपर जा सकते हैं। पहले ही पूर्वमुख प्रशस्त दीर्घ सिंहद्वार है। उसके ऊपर अंगरेजी घड़ी लगी हुई है। सिपाही लोग रात दिन वहां पहरा दिया करते हैं। उस द्वारसे पश्चिम मुख प्रवेश करने पर राज

भवनके पहले महलका बड़ा भारी आंगन मिलता है। पहले यहां हाथीकी लड़ाई और अनेक प्रकारकी धूमधाम हुआ करती थी। उसके बाद दक्षिण पश्चिमकी ओर जानेसे कुछ ऊपर चढ़ना होता है। चढ़ते ही सामने यशोहरेश्वरी कालीके मन्दिर-का प्रवेशद्वार दिखाई देता है। बाईं ओर महाराजका दीवानखाना है।

२४ परगनाके अन्तर्गत टाकीसे प्रायः दश कोस दक्षिण प्राचीन यशोहर नगर है। वहां प्रतापादित्य राजाकी राजधानी थी। अब यशोहरका नाम निशान भी नहीं है। नगर ध्वंस हो गया है, कई स्थानोंमें जङ्गल भर गया है। इसके निकटवर्ती स्थानमें राजा चन्द्रनाथ रायके वंशके अनेक यशस्वी कायस्थ अब भी वास करते हैं। प्रतापादित्य दिल्लीके बाद-शाहको न मानते थे। इसलिये उन्हें दमन करनेके लिये बादशाहके प्रधान सेनापति ससैन्य बङ्गाल पहुंचे। वहांसे भवानन्द मजुमदारको लेकर यशोहर गये। घोर युद्ध हुआ; अन्तमें प्रतापादित्य परास्त हुए।

स्वदेश जानेके समय मानसिंह यशोहरकी शिला देवीको अपने साथ ले गये और अम्बरमें उन्हें प्रति-ष्ठित किया। वह शिलादेवी अब भी विद्यमान है। देवीकी सेवाके लिये महाराज कितने ही पुजारी भी ले गये थे। वह सब वैदिक श्रेणीके ब्राह्मण हैं। इस समय भी उनके वंशधर यशोहरेश्वरीकी पूजा करते हैं। इन ब्राह्मणोंके अनेक आत्मीय व्यक्ति अच्छे ख्यात विद्य हो गये थे। उनका नाम विद्याधर था। वर्त-मान जयपुर नगर निर्माण करनेके समय उन्होंने ही नक्शा तय्यार कर दिया था। उसी नक्शेके अनुसार यह अपूर्व शहर बना है। मानसिंहके शिलादेवीके ले आनेपर कद्रायने और एक प्रतिमा बनवाकर यशोहरमें प्रतिष्ठित की। धूमघाटके देवालयमें आज भी वही शिलादेवी वर्तमान है।

यहां यशोहरेश्वरीका एक चित्र दिया गया है। देवी अष्टभुजी—महिषमर्दिनी मूर्ति हैं। कटिदेशसे पद-तल तक घाघरेसे छिपा हुआ है। इसीसे सिंह प्रभृति-की मूर्ति दिखाई नहीं देती। देवी बाईं ओरके हाथोंसे ढाल, धनु और महिषासुरकी शिखा पकड़े हुये हैं। फिर एक हाथमें ब्राह्मण लोग फूलोंका छोटासा गुच्छा रख रहे हैं। मालूम होता है, पहले इसमें चक्र था। दाहिने हाथोंमें खड्ग, तीर और त्रिशूल है; फिर एक हाथमें न मालूम कौन अस्त्र है, जो ठीक पहचाना नहीं जाता। मालूम होता है, देवी इस हाथसे वर और अभय देती हैं। किन्तु लोगोंने किस तरह गोलमाल करके बायें हाथका अस्त्र दाहिने हाथमें दे रखा है। प्रतापादित्य, मानसिंह और शिलादेवी देखो।

देवीके मस्तकके ऊपर पीढ़ीमें और गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, शिव और कार्तिकेयकी मूर्ति है। यह प्रतिमा पाषाणमयी और उज्ज्वल कृष्णवर्ण है। न मालूम क्यों बाईं ओर मुख कुछ वक्र किये हुए हैं। इस बारेमें बहुत सी गल्प हैं। कोई कोई कहते हैं, कि मानसिंहके साथ युद्धके समय प्रतापादित्यने सङ्कटमें पड़कर देवीकी स्तुति की थी, परन्तु यशोहरे-श्वरीने उसे नहीं सुना, रूठकर मुख फेर लिया। इसीसे देवीका मुख बाईं ओर कुछ वक्र हो गया है।

यह तो हुआ एक मत। और एक प्रवाद है, पहले मानसिंहके समयमें शिलादेवीके निकट प्रति-दिन नरबलि होता था। कुछ दिनोंके बाद यह कुप्रथा बन्द हो गई, इसीसे रुष्ट देवीने मुंह फेर लिया था। अन्तमें जब महाराजको स्वप्नमें यह सब बातें मालूम हुईं, तब प्रत्यह वह एक बकरेका बलि देने लगे। अब तक वह नियम चला आता है। केवल आश्विन मासकी महाष्टमी और वासन्ती पूजाके समय अधिक धूम होती है। प्रधान प्रधान सरदार और अनेक कर्मचारियोंको साथ लेकर जयपुरके महाराज स्वयं पूजा देखने आते हैं।

बलिदान मन्दिरके ठीक सामने नहीं होता। देवीका मुंह बाईं ओर कुछ वक्र है, इसलिये बलिदान भी मन्दिरकी बाईं ओर होता है। मीना लोग ही प्रतिदिन बलिदान देते हैं। किन्तु महाष्टमी और वासन्तीपूजामें असंख्य भैंसों और बकरोंका बलिदान

दिया जाता है। उस समय क्रुद्ध सरदार लोग भी तलवारसे बलि देते हैं।

शिलादेवीके मन्दिरसे निकलकर बाईं ओर जाने से और एक सिंहद्वार मिलता है। इसके कपाटमें पीतलके पत्र जड़े हैं। यहां भी पहरा पड़ता है। बिना महाराजका आज्ञापत्र दिखाये पहरेवाले भीतर जाने नहीं देते।

इस पथसे प्रवेश करनेपर सामने चौखूंटा आंगन दिखाई देता है। उसको चारों ओर प्रसिद्ध दीवान-खाना है। इसमें लाल पत्थरके चालीस खम्भे हैं। खम्भोंमें सफ़ेद पलस्तर किया हुआ है। ऊपरको छत मेहराबदार है, महाराज मानसिंह यहीं दरबार करते थे। पहले खम्भोंमें पलस्तर नहीं था। कहा जाता है, कि यह दीवानखाना अकबरके दीवान खासकी नकल बनाया गया था। यह समाचार पाते ही—सम्राट्ने आमेरमें कुछ सेना भेज दी। इधर दो पहरके पहले मानसिंहको भी खबर लग गई। बस झटपट उन्होंने सब खम्भोंमें सफ़ेद पलस्तर लगवा दिया। इसलिये आनेपर सम्राट्के लोग और कोई आपत्ति न कर सके। दीवानखानेकी बगलमें पूर्व ओर कई छोटी छोटी कोठरियां हैं।

उसके बाद दक्षिण ओर और एक पीतलका दरवाज़ा है। इस दरवाज़ेसे महलके अन्दर जाना होता है। बीचमें बड़ा भारी आंगन है। उसमें मनोहर उपवन है। इस उपवनमें कहीं फल लगे हैं, कहीं फूल खिले हैं। हवाके झोंकेसे पेड़ोंकी डालियां झोम रही हैं। इसकी पूर्व ओर और एक बड़ा भारी दालान है। इस दालानके पत्थरोंमें ताजमहलके निपुण कारीगरोंका शिल्पकौशल है। इसको चारों ओरपर नज़र अटक जाती है, वहांसे टलना नहीं चाहती। खम्भे सफ़ेद पत्थरके बने हैं। उनपर फूल कटे हुए हैं। फूलोंपर तितलियां उड़ उड़कर बैठ रही हैं। छत मेहराबदार है। मेहराबके नीचे खिड़कियोंके किनारे भी अनेक प्रकारके चित्र विचित्र रङ्ग हैं। उसके ऊपर कांच जड़ा हुआ है। एक मनुष्यके नीचे खड़े होनेसे ऊपर कितने ही मनुष्य दिखाई देते हैं। हाथ डोलानेसे ऊपर कितने ही हाथ डोलने लगते हैं।

इस दालानकी उत्तर ओर एक छोटे द्वारसे जाने पर मानसिंहके स्नान करनेका हम्माम मिलता है; उसके बाद पश्चिम ओर सुरङ्गकी राह जानेसे देवार्चनका कमरा है। हम्माममें सफ़ेद पत्थरका हौज़ बना है, उसके किनारे किनारे मोरियां लगी हैं। स्नानके बाद कहीं शीतल वायु न लगे, इस लिये हम्मामसे निकल अति अप्रशस्त सुरङ्गके पथसे पूजाके घरमें जाना होता है।

पश्चिम ओर नीचेकी मंजिलमें ग्रीष्मकालमें रानियां आकर बैठती थीं। यहां फ़व्वारा और जलको प्रणाली है। उत्तर ओर नीचेसे ऊपर जानेके लिये सीढ़ी नहीं है। नीचेसे ऊपर तक प्रशस्त ढालू पथ है। उसपर जानेमें कोई कष्ट नहीं होता। ऊपरी कमरेमें अनेक प्रकारके चित्र बने हैं, एक जगह मथुरा, वृन्दा वन प्रभृति नगर अङ्कित हैं। गङ्गा-यमुनाके जलमें मछलियां क्रीड़ा करती फिरती हैं। मन्दिरमें देव मूर्ति प्रतिष्ठित है। विचारालयमें विचारपति बैठे हुए विचार कर रहे हैं। चित्रोंमें इसी तरहके कितने ही विषय देखनेमें आते हैं। शिलादेवीकी पूजाके समय रानियां ऊपरसे उत्सव देखती थीं इसलिये दीवारमें झरोखे कटे हुए हैं। उसके बाद पूर्व ओर नीचेवाले दालानके ऊपर और एक छोटा दालान है। यह सफ़ेद पत्थरका बना और अति सुन्दर है। यहांके कमरोंमें किसीका नाम 'जय मन्दिर' किसीका 'सोहागमन्दिर', किसीका 'यशो मन्दिर' और किसीका 'सुखमन्दिर' है। ऊपरके दालानमें रानियां दरबार करती थीं।

ऊपरको छतपर जाकर खड़े होनेसे सभी मनोहर दिखाई देता है। जिधर आंख उठाकर देखिये, उधर ही अपूर्व दृश्य झलकता है। महलके नीचे पूर्व ओर सरोवर है। उसके मध्यस्थलमें द्वीप है। उसके ऊपर मनोहर उद्यान है। उत्तरको ओर अम्ब नगर है। बीच बीचमें देवालय हैं। दक्षिण दिशामें बहुत दूर पर सुरम्य जयपुर शहर है, पूर्व पश्चिममें पहाड़ है।

मन होता है, कि दिन-रात वहां दृष्टिभर चारो ओरकी अपूर्व शोभा ही देखा करें।

फिर आंगनमें उतर कर दक्षिण ओर जाओ, तो रानियोंका अन्तःपुर है। किन्तु रानियोंका घर होनेसे यहां सुन्दर अङ्गको यत्नसे रखनेके लिये मणि-की अट्टालिका नहीं है। ऊपर नीचे पंक्तिकी पंक्ति छोटी छोटी सामान्य कोठरियां हैं। उन्हीमें रानियां रहती थीं। आंगनमें एक नाट्यमन्दिर जलक्रीड़ाके लिये एक हौज, और कई फ़व्वारे हैं। उत्तरके किनारेके नीचे एक कोठरीमें गौरीदेवीका मन्दिर था। वहीं रानियां गौरीकी पूजा करती थीं। रानि-योंको गौरी-पूजाका नियम अब भी प्रचलित है।

आमेरके राजभवनका सौन्दर्य आज भी नष्ट नहीं हुआ। देखनेसे मालूम होता है, मानो अट्टालिका आज ही बनाई गई है। मकानके भीतरी दरवा-ज़ोंमें हाथी-दांत जड़े हुए थे। अब सब टूट फूट गये हैं। कहीं किसी कपाटमें कुछ कुछ निदर्शन देखा जाता है। सौभाग्यलक्ष्मीकी पूर्णदृष्टिके समय मानसिंहने इस सुरम्य अट्टालिकाको बनवाया था। इसके पहले वे जिस मकानमें रहते थे, वह अति सामान्य है। सदर मकानके पश्चिमद्वारसे उतरकर उस पुराने मकानमें जाना होता है।

सदर मकानके पश्चिम दरवाज़ेसे बहुत नीचे उतरना पड़ता है। नीचे अप्रशस्त पथ है। पहले पश्चिम तरफ़के पहाड़पर नगरनिवासियोंके छोटे छोटे घर थे। अब सब मकान गिर पड़े हैं। कहीं गिरी हुई दो एक दीवार खड़ी है, कहीं दीवारके सब पत्थर गिरकर सड़कपर ढेर हो गये हैं। उस समय सब घर कच्चे बनते थे। सिर्फ़ मट्टीके गारेसे पत्थर जोड़ जोड़-कर दीवार उठा दी जाती थी। राजप्रासादके पीछेकी ओर भी कच्ची बनावट देख पड़ती है। परन्तु यह कच्ची जोड़ाई भी बहुत दिनतक रहती है। तीन सौ वर्षके मकान आज भी वैसे ही खड़े हैं।

नीचेकी राह उत्तर मुंह जानेसे दक्षिण भागमें विग्रहका एक ऊंचा मन्दिर मिलता है। उसके बाद कुछ और उत्तर रत्नाकरका वासस्थान है। रत्नाकर अम्बरराजके कुलगुरु थे। इस मकानमें अब कोई नहीं रहता। कई जगह यह गिर भी पड़ा है। वाम भागके ऊंचे पहाड़की दक्षिण दिशामें रत्ना-करकी छत्री, खड़ाऊं और रत्नाकरसागर है। देखनेमें रत्नाकरसागर अति सुरम्य सरोवर है। स्थान भी अति मनोहर है। गुरुकी मृत्यु होनेपर उनकी अन्त्येष्टिक्रिया हो जानेके बाद इसी सरोवरके किनारे उनका भस्म समाहित किया गया था। यह छत्री वही समाधिस्थान है।

और कुछ उत्तर जाकर बाईं ओर चढ़ना पड़ता है। यहांकी राह बहुत ऊंची-नीची है। बाईं ओर कुछ दूर जानेसे सामने नृसिंहदेवका मन्दिर दिखाई देता है। इस मन्दिरके आंगनसे पश्चिमकी ओर 'हिन्दोला' मञ्च है। महाराज जयसिंहकी महिषी सौदामिनी रानीने इस हिण्डोला मञ्चको श्रीकृष्णके प्रीत्यर्थ उत्सर्ग कर दिया था। मञ्चके एक सफ़ेद पत्थरपर उत्सर्गका संवत् दिन आदि खुदा हुआ है।

आंगनसे पूर्व शूरसिंहका गृह है। शूरसिंहके साथ अम्बरराजका कैसा सम्बन्ध था, बहुत कुछ अनु-सन्धान करनेपर भी कुछ निश्चित न हो सका। वे मीनाओंके सरदार थे अथवा मानसिंहके किसी पूर्वपुरुषके दो तीन नाम रहे इसीसे इस नामका गोलमाल होता है। इन सब बातोंकी ठीक मीमांसा करना अत्यन्त कठिन है। किन्तु शूरसिंह मान-सिंहके कोई विशेष आत्मीय थे, और उन्हींके अभ्यु-दयसे अम्बरराजकी श्रीवृद्धि हुई थी, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। कारण, इन शूरसिंहके मकानमें ही अबतक जयपुर राजवंशका राजतिलक होता है और उस समय राजाओंके सिरपर शूरसिंहका छत्र रखा जाता है।

शूरसिंहका गृह अति सामान्य है। आंगन छोटा और ऊपर नीचेके कमरे भी बहुत छोटे हैं। ऊपर जानेमें विपदकी शङ्का होती है,—सीढ़ी एकदम छोटी और सीधी है। महाराज जिस कमरेमें बैठकर सभा करते थे, उसके पश्चिम दक्षिण कोणमें एक वेदी है। वही वेदी शूरसिंहका राजसिंहासन है। इस कमरेको

उत्तर ओरकी दिवारमें ब्राह्मण पुजारियोंने अनेक छोटी छोटी देवमूर्तियां रख दी हैं। उन मूर्तियोंकी नित्य पूजा होती है।

राजभवनकी दक्षिण ओर रानी बालाबाईका मन्दिर है। बालाबाई सूरसिंहकी महिषी थीं। प्रवाद है कि सूरसिंह और बालाबाई दोनों आदमी गुटिकासिद्ध थे। सन्ध्या समय विमानपर चढ़कर दोनों आदमी शून्यपथसे पुरीमें श्रीजगन्नाथका दर्शन करने जाते थे। परन्तु महाराजने इस बातको रानीसे कभी न कहा और रानीने भी इसे उनसे छिपा रखा था। इसलिये एक दूसरेकी बात कोई न जानता था। एक दिन रानीने जगन्नाथजीके मन्दिरके द्वार-पर राजाको देखा। देखते ही लज्जा और भयसे सकुचा गई। परन्तु रानीका मुंह घूंघटमें छिपा था, इससे अपनी महिषीको न पहचान राजाने चिल्ला कर कहा,—"डरो मत, बैठो। लजाती क्यों हो? तुम कन्याके समान हो स्वच्छन्द गतिमानका दमन करो।" जगन्नाथ देवका दर्शन करके रानी घर आई, परन्तु राजाने उन्हें कन्या कह सम्बोधन किया था, इसलिये उस दिनसे उन्हें फिर कभी अपने शयन गृहमें न घुसने दिया। बाला शब्दका अर्थ कन्या और बाईका भी है, इसीसे इस मन्दिरका नाम बालाबाई हुआ है।

सूरसिंहके मकानसे पूर्व महाराज मानसिंहका पूर्व वासस्थान है। यह राजभवन सामान्य धनियोंके मकान जैसा है। इसमें कोई कारीगरी नहीं, कुछ सौन्दर्य नहीं। अब कई जगह यह गिर पड़ा है। बादशाहके निकट दिन दिन मानसिंहकी प्रतिपत्ति बढ़ने लगी, सौभाग्य लक्ष्मी दिन दिन प्रसन्न होने लगीं उसी समय अम्बरका प्रसिद्ध राजभवन बनवाया गया।

राजभवनसे बाहर निकल फिर पूर्वके पथसे कुछ उत्तर पश्चिम कुछ जानेसे बाईं ओर श्वेत प्रस्तरके 'अम्बकेश्वर' महादेव मिलते हैं। किसी किसीके मतानुसार इन महादेवके नामसे ही शहरका नाम अम्बर हुआ है। उसके बाद शहरकी नापाके नीचे और कुछ उत्तर जानेपर एक बड़ा भारी झील दिखाई देता है। इसके कुछ दूर पश्चिम ओर भैरव-नाथका मनोहर पीठस्थान है। ग्रीष्मकालमें यह स्थान अतिशय मनोहर हो जाता है। चारों ओर वटवृक्ष छाया किये हुए हैं, नीचे तनिक भी धूप नहीं आती। वृक्षोंके भीतर एक पत्थरकी भैरवनाथकी मूर्ति खोदकर बनाई गई है, इसीसे लोग इन्हें अनादि लिङ्ग कहते हैं। भैरवनाथके सब अङ्गोंमें सिन्दूर पोता हुआ है। यहांसे फिर पूर्व पथ नगरके भीतर जानेपर जयपुरका राजपथ मिलता है।

अम्बरखाना—भवन-विशेष, कोई मकान। सन् १६३६ ई०को शाहजीने पूनावाले किलेसे दक्षिण यह भवन अपनी धर्मपत्नी जीजी बाई और वीरपुत्र शिवजीके लिये बनवाया था। इसे लालमहल भी कहते हैं। यह बहुत ही मजबूत बना रहा। आज भी कुछ खण्डहर देखनेमें आयेंगे। शिवाजीने अपनी माताके साथ कितने ही वर्ष इसमें निवास किया। शाहजीके तत्त्वावधायक दादाजी कोंडदेव शिवजीकी शिक्षा को देखते और मकानकी भी खबर लेते थे। पेशवा-ओंने आकर इसमें हाथियोंके हौदे रखना शुरू किया। इसीसे लोग इसे अम्बर या अम्बरीखाना कहते हैं।

अम्बरग (सं० त्रि०) आकाशगामी, आस्मानपर चलनेवाला।

अम्बरद (सं० पु०) कार्पास वृक्ष, कपासका पेड़।

अम्बरनाथ—बम्बईके थाना जिलेका एक गांव। इसमें सन् १०६० ई०को अमरनाथका बहुत अच्छा मन्दिर बना था। यद्यपि मन्दिर छोटा, तथापि नक्काशी देखकर दिल खुश हो जाता है। शिवरात्रिको यहां बड़ा उत्सव रहता। मन्दिरमें शिलाहारवंशके शिलालेखपर ९८२ शक खुदा है। गुम्बदपर कितनी ही अच्छी तस्वीरें देख पड़ेंगी। दीवारों खम्भों और छतोंकी कारीगरी देख सभी प्राचीन भारतीय शिल्पियोंकी प्रशंसा करते हैं। गांवका मुखिया ही महादेवको पूजे और दान दक्षिणा लेता। लोग कहते हैं, कि इस मन्दिरको देवताओंने एक रातमें बनाया था।

अम्बरयुग (सं० क्ली०) लहंगा लुगरा, धोती-पिछौरी, घंघरिया-ओढ़निया।

अम्बरशैल (सं० पु०) गगनस्पर्शी पर्वत, जो पहाड़ अपनी ऊंचाईसे आस्मानको चूमता हो।

अम्बरस्थली (सं० स्त्री०) भूमि, जमीन।

अम्बरा (सं० स्त्री०) कार्पासवृक्ष, कपासका पेड़।

अम्बरातक (सं० पु०) आम्रातक वृक्ष, अमडा।

अम्बरान्त (सं० पु०) १ वस्त्रका अवशेष, कपड़ेका सिरा। २ क्षितिज, उफ़क़, जो ज़मीन्‌का किनारा आस्मान्‌से लगा मालूम हो।

अम्बरिया—विहारके ब्राह्मणोंका समाज विशेष।

अम्बरिष, अम्बरीष देखो।

अम्बरीष, अम्बरातक देखो।

अम्बरीष (सं० पु०-क्ली०) अम्ब्यते भर्जनकाले शब्दायतेऽच, अपि ईषन् रकारागमो निपात्यते। अम्बरीषः। उण् ४।२८। १ भर्जनपात्र, कड़ाही, जिस बरतनमें कोई चीज तलें। २ आम्रातक वृक्ष, अमडा। ३ सूर्य। ४ विष्णु। ५ शिव। ६ युद्ध, लड़ाई। ७ नरकविशेष। ८ किशोर, बछेड़ा। ९ अनुताप, पछतावा। १० पुलह नामक ब्रह्मर्षिके पुत्र। ११ मान्धाताके एक पुत्र। यह विन्दुमतीके गर्भसे उत्पन्न हुये थे। १२ सूर्यवंशीय नृपति-विशेष। यह सुश्रुतके पुत्र रहे। किसी समय इन्होंने यज्ञका अनुष्ठान किया, किन्तु कार्य सम्पन्न होनेसे पहले ही इन्द्र जाकर यज्ञीय पशु चोरा लाये थे। इसीसे अम्बरीषने ऋचिक मुनिके सन्तान शुनःशेफको वधार्थ खरीदा।

भागवतमें लिखा है,—अम्बरीष नाभाके पुत्र रहे। इनके परम विष्णुभक्त होनेमें कोई त्रुटि न थी। इसीसे विष्णुने इन्द्र बचानेके लिये अपना चक्र सौंप दिया। विपद् पड़नेसे चक्र आकर अम्बरीषकी रक्षा करता था।

एक वार कार्तिक मासकी द्वादशीको व्रत-पारणके दिन दुर्वासा मुनि इनके मकानपर जा पहुंचे थे। महाराजने यथोचित समादरके बाद अपने गृहमें भोजन करनेको मुनिसे अनुरोध किया। दुर्वासा सम्मत होकर स्नान करने चले गये थे। कितना ही विलम्ब होते भी वह वापस न आये। इसीसे अम्बरीषने पुरोहितकी अनुमति ले भोजन कर लिया, अधिकक्षण फिर दुर्वासाकी राह न देखी थी। अन्तको दुर्वासाने पहुंच यह बात सुनी, क्रोधसे उनका सर्वाङ्ग जलने लगा। उन्होंने महाराजको वध करनेके लिये जटासे कोई उग्रदेवता निकाला था। उसी समय विष्णुके सुदर्शन चक्रने धावा मार उन उग्रदेवताको नष्ट किया और दुर्वासाके पीछे-पीछे दौड़ने लगा। किसी जगह निस्तार न पा अन्तमें दुर्वासा अम्बरीषके ही शरणापन्न हुये थे।

अम्बरौकस् (सं० पु०) अम्बर आकाश ओकः स्थानं यस्य, बहुव्री०। १ वैकुण्ठमें रहनेवाला, जो विहिश्तमें रहता हो। २ देवता, फ़रिश्ता।

अम्बष्ठ (सं० पु०) अम्बायां मातृगर्भे तिष्ठति, अम्बा-स्था-क षत्वं आकारलोपश्च। १ वैश्यकन्याके गर्भ और ब्राह्मणके औरससे जात सङ्कीर्ण जाति विशेष। २ वैद्यजाति, हकीम। ३ देशविशेष, एक मुल्क। ४ युक्तप्रदेशको प्रसिद्ध एक कायस्थ जाति।

।*। हमारे धर्मशास्त्रमें अम्बष्ठ जातिपर निम्नलिखित मीमांसा दी गयी है,—

"अनुलोमा अनन्तरैकान्तरद्व्यन्तरासु जाताः सवर्णाम्बष्ठोग्र-निषाददौष्यन्तपारशवाः।" (गौतमधर्मसूत्र ४।१६)

अर्थात् अनन्तरज, एकान्तरज, और द्व्यन्तरज, क्रमसे जात अनुलोमगण ही सवर्ण, उग्र, अम्बष्ठ, निषाद, दौष्यन्त और पारशव जाति है।

बौधायन-धर्मसूत्रसे भी उक्तमत समर्थित है। ब्राह्मणात् क्षत्रियायां ब्राह्मणो वैश्यायामम्बष्ठः शूद्रायां निषादः। (८।३)

अर्थात् ब्राह्मणके औरस एवं विवाहिता क्षत्रियकन्याके गर्भसे ब्राह्मण, ब्राह्मण और वैश्यकन्यासे अम्बष्ठ एवं शूद्रासे निषाद उत्पन्न होता है।

भगवान् मनुने भी धर्म-सूत्रके अनुसार ही लिखा है। यथा—

"ब्राह्मणात् वैश्यकन्यायामम्बष्ठो नाम जायते।" (१०।८)

अर्थात् ब्राह्मणसे वैश्यकन्याके गर्भमें अम्बष्ठ जाति हुयी है।

महर्षि याज्ञवल्क्यने लिखा है—

निन्दित होता है। अनन्तर-प्रतिलोमको अपेक्षा एकान्तर-प्रतिलोमको भी बुरा समझते हैं। कारण स्मृतिमें लिखा कि अम्बष्ठ और उग्र दोनो ही अनुलोम जाति निन्दित होती है।

प्रसिद्ध टीकाकार सर्वज्ञनारायणने मनुके १०।५० श्लोकको टोकामें बताया है,—'एते सूतादय चिह्नतापिदिता' अर्थात् सूत और अम्बष्ठसे वेण पर्यन्त चिह्नित जाति सकल मानना होगा। मतलब, उनके मतमें यह सकल ही जाति समाजबाह्य ठहरती है। उक्त श्लोकको टीकामें रामचन्द्रने भी कहा है,—'सकर्मभि-वंर्तयन्ती विख्याता एते पौण्ड्रकादय. बहिषु.' अर्थात् पौण्ड्रक, द्राविड, कम्बोज, यवन, शक, पारद, पह्लव, चीन, किरात, दरद, खस, द्विज और शूद्रके मध्य जो बाह्य जाति वा दस्यु कहाये तथा अपसद और अपध्वंसज निर्दिष्ट हो, वह निन्दित कर्म द्वारा ही जीविका चलाता है।

मनूक्त पौण्ड्रकादि क्षत्रियजातिने क्रम-क्रम जैसे क्रियालोप और ब्राह्मणादर्शन हेतु वृषलत्व पाया, वैसे ही निन्दित कर्म द्वारा अम्बष्ठादि और क्रिया-लोप हेतु पौण्ड्रकादिक भी वृषलत्वप्राप्त और बाह्य-जाति कहाया था। वास्तविक अद्यापि दाक्षिणात्यके तिरुवाङ्कोड राज्यमें ऐसे समाजबाह्य अम्बष्ठ वंशका वास रहा है। इस जातिके सम्बन्धमें तिरुवाङ्कोड महाराजके दीवानपेश्कार सुब्रह्मण्य-अय्यरने लिखा था,

"In their dresses, ornaments and festivals they do not differ from the Malayal Sudras of whom according to the Keralotpatti, they form one of the lowest subdivisions The niece is the rightful wife of the son and the daughter that of the nephew.······Among the Ampattans (Ambasthan) fraternal polyandry seems to be common "*

अर्थात् वेशभूषा और उत्सवादिमें मलयाल शूद्र-गणसे वहांके रहनेवाले अम्बष्ठगणका कोई पार्थक्य नहीं पाते। केरलोत्पत्तिके मतसे यह जाति नीचतम शूद्रके मध्य गण्य होती है। भागिनेयी ही उपयुक्त पुत्रवधू और कन्या ही उपयुक्त भागिनेयवधू ठहरती है। इस अम्बष्ठ जातिके मध्य बहुतसे भ्राता मिलित हो साधारणत: एक पत्नी रखेंगे।

सम्भवत: ऐसी निकृष्ट अम्बष्ठ जाति देखकर ही रघुनन्दन, वाचस्पतिमिश्र प्रभृति स्मार्तगणने 'एवमम्बष्ठा-दीनामपि कलौ शूद्रत्वम्' लिख डाला है। सिवा इसके महाराष्ट्र और कर्णाट अञ्चलको वैदु और वेद्द जातिको भी आलोचना करनेमें द्राविडकी अम्पट्ट जातिकी तरह हीन समझना पड़ेगा। वैद्द देखो।

उशनाने जिस अम्बष्ठको बात लिखी, वह अम्बष्ठ जाति हस्तिपकरूप बतायी गयी है,—

"अम्बष्ठाम्बष्ठमार्गं नो देह्यपक्रममाचिरम्।
नो चेत् सकुञ्जरं त्वाद्य नयामि यमसादनम्।"(भागवत १०।४३।४)
'अम्बष्ठो हस्तिप।' (श्रीधरस्वामी)

हिन्दुवोंके राजत्वकालमें हस्तिपक खेती बारी करता, हाथोपर पताका बांधके चलता, रणक्षेत्रमें अस्त्र उठाता और नाना उत्सवके समय हाथोपर आगे-आगे जा अग्निक्रीडा दिखाता था। भागवत-वाला निषादी अम्बष्ठही उशनाका शस्त्रजीवी अम्बष्ठ होगा।

अम्बष्ठ क्षत्रिय—मकदूनियाके वीर सिकन्दर जब पञ्जाब पहुंचे, तब पञ्जाबके दक्षिणमें अम्बष्ठ नामक वीर जाति राजत्व चलाती, जो यूनानी नृपतिसे बहुत लडी थी।† पुराणकार और पाणिनिने भी इस क्षत्रिय जातिकी बात कही है। सुतरां इस जातिको अति-शय प्राचीन कैसे समझेंगे। इसकी अध्युषित वास-भूमि पुराणमें 'अम्बष्ठ' बतायी गयी है।

अम्बष्ठ ब्राह्मण—शाक्य बुद्धके आविर्भाव कालमें अम्बष्ठ नामक कोई ब्राह्मण कपिलवास्तु अञ्चलमें रहते थे। दो सहस्र वर्ष पूर्वरचित दीघनिकायके अन्तर्गत 'अम्बट्ठसुत्त' नामक पालिग्रन्थ उन्हीं अम्बष्ठ ब्राह्मणका बनाया ठहरता और उसमें तत्कालीन ब्राह्मणगणको सामाजिक अवस्थाका खासा परिचय मिलता है। नीचे हम उसका कुछ अनुवाद उद्धृत करेंगे,—

* Census Report of Travancore by N Subrahmanya Aiyar, M.A, M B C M Part 1, p. 27

† Arrian और Quintin Curtius द्रष्टव्य है।

'एकदा भगवान् बुद्धदेव कोशल राज्यके इच्छा नङ्गल नामक वनमें विहार करते थे। उसी समय वहां पुष्करसादी नामक कोई ब्राह्मण भी बसते रहे। उनका अम्बष्ठ नामक कोई पण्डित और त्रिवेदज्ञ शिष्य था। बुद्धदेवके आगमन बाद उन्होंने सुना, कि द्वात्रिंश-लक्षणाक्रान्त कोई महापुरुष वहां आ पहुंचा रहा। उन महापुरुषको देखनेके लिये अम्बष्ठ प्रभृति पण्डित उपस्थित हुये। नानाविध वार्तालाप बाद अम्बष्ठ नानारूप कटुवाक्यसे बुद्धदेवको सम्बोधन करने लगे थे। उससे भगवान्ने अम्बष्ठको आपत्तिका कारण बताया। उन्होंने अत्यन्त असन्तुष्ट हो कहा था,—हे श्रमण गौतम! तुम पापी और तुम्हारा वंश क्रूर स्वभाव एवं निष्ठुर निकलेगा। शाक्यगण नीच और ब्राह्मणके प्रति भक्तिशून्य रहता ब्राह्मणके प्रति यथोचित सम्मान नहीं देखाता, ब्राह्मणसे शाक्यगणका ऐसा व्यवहार अनुचित लगता है।

'बुद्धदेवने कहा हे अम्बष्ठ! शाक्यगणने तुम्हारा क्या अपराध किया है? (इसपर उन्होंने उत्तर दिया) किसी दिन मैं अपने आचार्य पुष्करसादीके कामसे शाक्यगणके विश्रामागार गया था उस समय शाक्य कुमारगण उच्च आसनपर बैठ परस्पर कौतुक करते रहा, मुझे देख किसीने बैठनेको न कहा। बुद्धदेवने उत्तर दिया, शकुन जैसे अपने आसन पर बैठ यथेच्छा आचरण करता वैसे ही शाक्यगण भी अपने कपिलवास्तु नगरमें यथेच्छा व्यवहार करा सकता है। ऐसे सामान्य कारणसे आपको कष्ट पहुंचना उचित नहीं ठहरता।

'अम्बष्ठने कहा,—हे गौतम! वर्ण चार होता है—ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। उसमें क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ब्राह्मणका परिचारक रहता है। इसीसे शाक्यगण ब्राह्मणसे हीन होता और उनका वैसा व्यवहार अनुचित ठहरता है। यह बात सुन भगवान् मन ही मन ऐसी चिन्ता करने लगे—तरुण अम्बष्ठ अति मूर्ख है इसीकारण यह शाक्यगणको नीच बताता और निन्दा करता है। उन्होंने प्रकट भावमें पूछा,—हे अम्बष्ठ! आपका कौन गोत्र है? अम्बष्ठने कहा,—मैं कृष्ण गोत्रसे उत्पन्न हुआ हूं। बुद्धदेव फिर बोल उठे,—आपके मातृ और पितृकुलको वंश-परम्पराके नाम और गोत्रको देखते प्रतीयमान होता, कि शाक्यगण आपका प्रभुस्थानीय और आप उनके दासीपुत्र हैं। शाक्यगणके पूर्वपुरुष इक्ष्वाकु रहे। उन्होंने अपनी प्रियतमा महिषीके पुत्रको अधिकार देनेकी इच्छासे ज्येष्ठ कुमारगणको राज्यसे निकाल दिया था। वह राज्यसे बहिष्कृत हो हिमवन्त प्रदेशके शाकवनमें जा रहने लगा और जातीय पवित्रताकी रक्षाके निमित्त यथोचित विवाहादि सम्बन्धसे आबद्ध हुआ। कुछ काल बाद राजाने अमात्यगणसे पूछा था,—अब कुमारगण कहां रहता है? उसपर अमात्यगणने कुमारोंकी अवस्था यथायथ बता दी। राजा आप ही आप कहने लगे, कि कुमारगणका आचरण शक्य अर्थात् धर्मसङ्गत रहा। उसीसे शाक्य नाम निकला और वही शाक्यगणके पूर्वपुरुष रहे। इक्ष्वाकुराजकी 'दिशा' नामी कोई दासी थी, उसीने कृष्णको प्रसव किया था। उस नवजात शिशुने जन्म मात्रसे माताको पांच प्रकार असभ्य परिष्कार करने और उससे अनेक उपकार पहुंचनेकी कहा। हे अम्बष्ठ! इस समय मनुष्य जैसे पिशाचको पिशाच बताता वैसे ही 'कृष्ण' को सब लोग पिशाच समझते थे। इसीसे काष्णायन गोत्रकी उत्पत्ति हुयी है। वही भिन्न कृष्णगोत्रका आदिपुरुष रहा।

इसीतरह हे अम्बष्ठ! आपके पितृ मातृकुलके पूर्वपुरुषगणका नाम और गोत्र सुननेसे मालूम पड़ता, कि आप लोग शाक्यगणके दासीपुत्र लगते हैं। अम्बष्ठसे ऐसी बात होनेपर सभागत ब्राह्मणोंने कहा,—हे भगवन् गौतम! आप अम्बष्ठको बालक, मूर्ख और दासीपुत्र बता गौरव न घटायें। अम्बष्ठ बहुत प्रज्ञावान् और कुलपुत्र है। भगवान् बोले—आप यदि अम्बष्ठको नीचकुलजात दासीपुत्र और मेरे साथ वाद प्रतिवादके अयोग्य समझें, तो उनके बदले आप ही मेरे साथ उत्तर प्रत्युत्तर करें। फिर यदि आप अम्बष्ठको उच्चकुलजात ठहरायें तो मेरे साथ उन्हें उत्तर प्रत्युत्तर करनेको कहें। भगवान्ने अम्बष्ठसे

कहा,—इसवार आप मेरे प्रश्नका यथायथ उत्तर दीजियेगा। कार्ष्णायण गोत्रकी उत्पत्ति और उनके पूर्वपुरुषका कौन हाल आपने आचार्य, महल्लोक या वृद्ध ब्राह्मणसे सुना है?

उसपर अम्बष्ठने तुष्णीभाव अवलम्बन कर कियत्-क्षण बाद कहा,—हे गोतम। आपने जैसा बताया, मैंने भी वैसा ही सुना है। इसपर समवेत जनवृन्द नाना प्रकार निन्दा करने और कहने लगा,—यह कुलपुत्र नहीं ठहरता, नीच वंशोत्पन्न और दासीपुत्र लगता है। उपस्थित जनवृन्दका वैसा मनोभाव देख बुद्धदेवने अम्बष्ठके आदिपुरुष 'कृष्ण' ऋषिका एक उपाख्यान सुनाया और उसी प्रसङ्गमें राजा इक्ष्वाकुके उन्हें कन्या देनेकी बात भी कह डाली।

बुद्धके समय अम्बष्ठ और ब्राह्मणसमाज। भगवान्‌ने पूछा,—हे अम्बष्ठ! यदि क्षत्रियकुमार ब्राह्मण-कन्यासे सहवास करे और उसके सहवाससे पुत्र उत्पन्न हो, तो उस पुत्रको ब्राह्मणगणके मध्य जल वा आसन मिलेगा या नहीं? अम्बष्ठने उत्तर दिया,—उसे मिलेगा। भगवान्‌ने फिर पूछा,—यज्ञ, श्राद्धादि और अन्यान्य क्रिया-कलापमें वह पुत्र निमन्त्रित होता है या नहीं? अम्बष्ठने कहा,—वैसा ही हुआ करता है। भगवान् बोले,—ब्राह्मणगण उसे वेदमन्त्र देता है या नहीं? अम्बष्ठने बताया,—वेदमन्त्र उसे दिया जाता है। भगवानने प्रश्न किया,—ब्राह्मणकन्याके साथ उसका विवाहादि होता है या नहीं? अम्बष्ठने बताया,—होता है। भगवान्‌ने पूछा,—वह राज्यपर अभिषिक्त किया जाता या नहीं? अम्बष्ठने जवाब दिया,—यह कैसे होगा, क्योंकि उसका मातृकुल क्षत्रिय नहीं ठहरता।

बुद्धदेवने फिर पूछा,—इसीतरह किसी क्षत्रिय-कन्या साथ ब्राह्मण कुमारके सहवास फलसे पुत्र होनेपर वह भी पूर्वोक्तरूपमें सकल विषयका अधिकारी बन राजसिंहासनके योग्य समझा जाता है या नहीं? अम्बष्ठने उत्तर दिया,—यह कैसे होगा, कारण उसका पिता क्षत्रिय नहीं ठहरता। बुद्धदेवने बताया,—सुतरां क्षत्रिय ही श्रेष्ठ समझ पड़ता, ब्राह्मण उसकी अपेक्षा हीन है।

बुद्धदेवने फिर पूछा,—यदि कोई ब्राह्मण किसी अपराधसे मस्तक मुंडवा देशसे निकाला जावे, तो वह ब्राह्मणगणके मध्य जल और आसन पानेका अधिकारी होता या नहीं। अम्बष्ठने उत्तर दिया,—नहीं होता। बुद्धदेवने कहा,—यज्ञ, श्राद्ध और अन्यान्य क्रिया-कलापमें उसे भोजन देते हैं या नहीं। अम्बष्ठने कहा, नहीं देते। बुद्धदेवने पूछा, ब्राह्मण-कन्याके साथ उसका विवाहादि होता है या नहीं। अम्बष्ठने बताया, वह भी नहीं होता।

बुद्धदेव फिर बोले, क्षत्रियगण यदि कारणवश किसी क्षत्रियको मस्तक मुंड़वा निकाल बाहर करे, तो वह ब्राह्मणगणके मध्य जल वा आसन पाता है या नहीं। अम्बष्ठने उत्तर दिया, पाता है। बुद्धदेवने पूछा, यज्ञ और श्राद्धादिमें उसे भोजन देते हैं या नहीं। अम्बष्ठने कहा, देते हैं। बुद्धदेवने दूसरा प्रश्न उठाया, ब्राह्मणगण उसे मन्त्र देगा या नहीं और ब्राह्मण-कन्याके मध्य उसका विवाहादि होगा या नहीं। अम्बष्ठने कहा,ऐसा ही होते रहता है। भगवान् बोल उठे, कोई क्षत्रिय जब इसतरह मुण्डितमस्तक देशसे निकाला जाता, तब वह अत्यन्त हीन अवस्थाको प्राप्त होता; किन्तु वैसी हीन अवस्थामें भी क्षत्रिय ब्राह्मणकी अपेक्षा श्रेष्ठ ठहरता है।

उक्त विवरणसे भी अच्छीतरह समझ पड़ता है, कि बुद्धदेवके अभ्युदयकालमें क्षत्रियप्राधान्य ही रहा। अम्बष्ठ ब्राह्मण होते भी उनके वंशमें क्षत्रियादिके संश्रवका अभाव न था और ब्राह्मण क्षत्रियसे हीन गिना जाता था। अम्बट्ठ सुत्तके उक्त 'अम्बट्ठ' शब्दको कोई कोई रूपक और जातिवाचक बतायेंगे। उनके मतसे अम्बष्ठ और क्षत्रिय जातिके मध्य सामाजिकता पर कुछ गड़बड़ रहा, बुद्धदेवने उसीकी मीमांसा लगा दी थी। किन्तु दीघनिकायकी टीका एवं भोट देशके दुल्व ग्रन्थमें अम्बट्ठ सूत्रका तिब्बतीय अनुवाद विद्यमान है। उसमें अम्बष्ठ शब्दको स्पष्टरूपसे व्यक्ति विशेषका नाम ही बताया है।

अम्बष्ठ कायस्थ—युक्तप्रदेशीय कायस्थगणके कुलग्रन्थधृत पद्मपुराणीय वचनसे समझ पड़ता, कि चित्रगुप्तके

एक ब्राह्मणसे अम्बष्ठ नामक कायस्थोंकी उत्पत्ति हुयी है। इस जातिके मध्य भी बहुतसे लोग शिक्षित्‌समाजमें आधिक्य देखा गये हैं। यद्यापि उनका आचार व्यवहार ब्राह्मण क्षत्रियके तुल्य हो निकलेगा। युक्तप्रदेशके कायस्थ समाजमें प्रवाद है कि अम्बष्ठ कायस्थके पूर्वपुरुषोंने गिरनारपर रहने और अम्बा देवीकी पूजा करनेसे अम्बष्ठ नाम पाया।* वराह पुराणके ११वें अध्यायमें अम्बष्ठ प्रान्तका वर्णन कर्णाट, लाट, काम्बोज और आनर्तके साथ आया है।† सिकन्दरकी चढ़ाईका हाल लिखते आरियनने (Arrian) अम्बष्ठको दक्षिण सुराष्ट्र या गुजरात को अम्बष्ठ बताया। इन कायस्थोंने अम्बष्ठ नाम इसी स्थानके कारण पाया है। आजकल युक्तप्रदेशमें अम्बष्ठ कायस्थ न मिलेगा। कितनों हीके मतानुसार बङ्गालमें इन कायस्थोंको अम्बष्ठ या वैद्य कहते हैं।‡ किन्तु बङ्गालका अम्बष्ठ अपनेको सेनराजवंशका सजातीय बतावेगा। परन्तु सेनवंश-शिरोमणि विजयसेनके शिलालेखमें उन्होंने अपनेको "ब्रह्म क्षत्रिय" और उनके पौत्र लक्ष्मणसेनवाने ताम्रशासनमें "कर्णाट क्षत्रिय" लिखा है। कर्णाटकमें आज भी ब्रह्मक्षत्रिय मिलते जो कायस्थ की तरह लेखकका व्यवसाय चलाते हैं। सेनोंके पूर्वपुरुष कर्णाटकमें रहते थे। सम्भव है, कि उनके साथ अम्बष्ठ भी बङ्गाल गये और सम्बन्ध-सूत्रमें बंधे होंगे। बङ्गला अम्बष्ठ-जातिके कुलग्रन्थमें लिखा है, कि अम्बष्ठोंके अजाति नन्दादि महाराष्ट्र देशमें रहते थे—

"अम्बष्ठ महाराष्ट्रे निवसन्ति ये वैद्य।" (कुलपञ्जिका)

अम्बष्ठका, अम्बष्ठकी देखो।

अम्बष्ठकी (स० स्त्री०) अम्बष्ठ कायति रोगविनाशाय पर्याप्नोति, अम्बष्ठ-कै क। १ लताविशेष, पाठा, हरकिसरी। Stephania hernandifolia. इसके पर्याय हैं—पाठा अम्बष्ठा कुचेली, पापचेलिका एका-ष्ठीला, रसा, तिक्ता, प्राचीना, एलोपिका, वृका, वृकपर्णी, स्थापनी, श्रेयसी रसा, वनतिक्तिका अविद्धकर्णी, अविद्धकर्णा अम्बष्ठका, यूथिका, पिच्छमर्दिका, दीपनी तिक्तपुष्पा, ब्रह्मतिक्ता, शिशिरा, ब्रह्मी, मालती, देवी, वृत्तपर्णी। यह लता देखनेमें बिलकुल गुर्च-जैसी होती है। गुर्चकी अपेक्षा इसकी पत्ती छोटी और डाल सीधे रहेंगे। किन्तु गठनमें कोई प्रभेद नहीं पड़ता। बङ्गालके जङ्गलों और बागोंमें यह बहुत उत्पन्न होती है।

२ मार्गी, भारङ्गी। ३ अम्बष्ठामूल, जोमारीके नियामकी जड़। ४ अम्ललोणी, लोनिया। ५ यूथिका, जूही। ६ मयूरशिखा, कोकन। ७ आम्रातक, अमड़ा। ८ माचिका माकुरचक, पुदीना।

अम्बष्ठा (सं० स्त्री०) अम्बा-स्था क। अम्बष्ठकी देखो।

अम्बष्ठादि (स० पु०) पाठादिगण विशेष। इसमें निम्नलिखित द्रव्य रहेंगे,—अम्बष्ठा, धातकी, कुसुम समङ्गा कट्फल मधुक बिल्व पेशी, रोध्र सावरोध्र, पलाश, नन्दीवृक्ष और पद्मकेशर। यह पक्वातीसार नाशक सन्धानीय, पित्तमें हितकर और व्रणमें रोपण होता है।

"[illegible] पक्वातीसारनाशनी।
सन्धानीयी हिती पित्ते व्रणानामपि रोपणी॥" (सुश्रुत)

अम्बष्ठिका, अम्बष्ठकी देखो।

अम्बष्ठी (सं० स्त्री०) कटुकाभेद, किसी किस्मकी कुटकी।

"[illegible]" ([illegible])

अम्बहट—युक्तप्रदेशके सहारनपुर जिलेका एक शहर। यह सहारनपुरसे दक्षिण पश्चिम आठ कोस अक्षा० २९ १०´ १५˝ उ० और द्राघि० ७७° २२´ ३५˝ पू० पर अवस्थित है। इसका रकबा कोई ५५ एकड़ पड़ेगा। यहां सैयदोंका पीरजादा खान-दान रहता है। शहरके बीच शाह अबुल मअलीकी कब्र बनी, सन् ई०के १०वें शताब्द जिसका नाम बहुत बढ़ गया था। पीरजादे आज भी माफी पाते और अपना एक प्रतिलिपि जिलेमें रखते हैं। वास्तविक यह सुफल फौजकी छावनी रहा।

* W. Crooke's Tribes and Castes of N. W. P. and Oudh, Vol. III p. 190

† "[illegible]
"[illegible]
[illegible]" ([illegible] ११।११)

अम्बहता—उड़ीसाके बालेश्वर जिलेका एक जनपद। यहां एक किला बना हुआ है।

अम्बा (सं० स्त्री०) अम्बति स्नेहात् गच्छति, अम्ब अच् स्त्रीत्वादाकारः। १ माता, मा। २ अम्बष्ठा, पुदीना। ३ पाठा, हरजेवरी। ४ दुर्गा। ५ अप्सरस् विशेष, किसी परीका नाम। ६ काशिराजकी जेष्ठा कन्या। भीष्म,अपने सौतेले भाई चित्रवीर्यके लिये अम्बा और इनकी दो बहनको स्वयंवर-सभासे चोरा लाये थे; किन्तु पहले मनही मन उनके शाल्वराजपर आसक्त हो जानेसे उन्हें वापस भेजा। शाल्वके अपहृता कन्यासे विवाह करनेमें असम्मत होनेपर अम्बाने कठोर तपस्याकर देहको छोड़ दिया। भीष्म ही अम्बाके इतने कष्टका कारण बने थे। इसीसे महादेवके वरसे परजन्ममें अम्बाने शिखण्डीका अवतार लिया। शिखण्डीके पीछे ही महाभारतमें भीष्म मारे गये थे। ७ पाण्डुमाताकी भगिनी। ८ ज्योतिषमें चतुर्थ भाव-वाचक शब्द विशेष।

भारतवर्षके दक्षिण अञ्चल प्रायः प्रत्येक ग्राममें अम्बा देवीकी पूजा होती है। देवीकी कोई विशेष मूर्ति न रहेगी। पुरोहित पत्थरके टुकड़े पर तेल और सिन्दूर चढ़ा पुष्पादिसे अम्बाकी पूजते और छाग-मेषादिको बलि देते हैं। गांवमें हैजा, चेचक, महामारी प्रभृति उपद्रव उठनेसे अम्बाकी पूजा धूमधामसे की जायेगी।

अम्बागङ्गा (सं० स्त्री०) सिंहलकी कोई नदी।

अम्बागढ़ चौकी—मध्यप्रदेशके चांदा जिलेकी जमीन्दारी। यह अक्षा० २०° ३५´ तथा २०° ५१´ २०´´ उ० और द्राघि० ८०° ३१´ १५´´ एवं ८०° ५२´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल २०८ वर्ग मील लगेगा। इसमें जङ्गल और पहाड़ बहुत पड़ता, किन्तु रायपुरकी ओर खेती भी अच्छीतरह होती है। कच्चा लोहा यहां खूब निकलता है।

अम्बाजन्मन् (सं० क्ली०) तीर्थविशेष।

अम्बाजी-दुर्ग—महिसूर राज्यके कोलार जिलेका एक पहाड़। यह समुद्रतलसे ४३९९ फीट उच्च और अक्षा० १३° २३´ ४०´´ उ० एवं द्राघि० ७८° ३´ २५´´ पू० पर अवस्थित है। टीपू सुलतानने पहले यहां किलेबन्दी की थी। इसका जलवायु महिसूरमें अतिशय स्वास्थ्यकर है।

अम्बाड़ा, अम्बाना (सं० स्त्री०) माता, मा।

अम्बाद—दक्षिण हैदराबादका कोई तअल्लुक। यह हैदराबादके उत्तर-पश्चिम अवस्थित है। रकबा ८६० वर्गमील पड़ेगा। इसमें अम्बाद, जामखेर, रोहिलगढ़, बोद्दामपड़ब, गुनसोंगी और एकतूनी प्रधान नगर हैं। महाराष्ट्र-पराभवके पश्चात् यह अंगरेजोंके हाथ लगा था, किन्तु थोड़े ही दिन बाद निजामको सौंपा गया।

अम्बापाटक—गुजरात प्रान्तका एक ग्राम। दुर्गाभट्टके पुत्र और राष्ट्रकूट-नृपति कर्कके समर-सचिव नारायणने नागरिकावाले जैनमन्दिरमें इस ग्रामका कुछ क्षेत्र उत्सर्ग किया था।

अम्बापु, आमड़ा देखो।

अम्बापेट—मन्द्राज प्रान्तके गोदावरी जिलेका एक राज्य। इसका राजस्व कोई २४२१०) रु० देना पड़ता है।

अम्बाप्रसाद—सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि पद्माकरके एक पुत्र।

अम्बाभोना—बेहार और उड़िष्याप्रान्तके सम्बलपुर जिलेका एक गांव। यह बड़गढ़से उत्तर दश कोस पड़ता है। सम्बलपुरी राजाओंके समय यहां किलेबन्दी रही। किसी प्राचीन दुर्गका ध्वंसावशेष आज देखनेमें आयेगा। केदारनाथ महादेवका प्राचीन प्रस्तरमन्दिर कोई सौ वर्ष हुये सम्बलपुर-नरेश राजा जैतसिंहके दीवान् रखनी रायने बनवाया था।

अम्बाला (सं० स्त्री०) अम्बति शब्दं लाति धत्ते अम्बाला-क। १ माता। २ पञ्जाब प्रान्तका एक जिला। चौदहवीं शताब्दीमें अम्बा नामक जनैक राजपूतने इस नगरको बसाया था। इसीसे लोग इसे अम्बाला कहते हैं। यह जिला अक्षा० २९° ४९´ एवं ३१° १२´ उ० और द्राघि० ७६° २२´ तथा ७७° ३९´ पू०के मध्य अवस्थित है। रकबा कोई २५७० वर्गमील लगेगा। इससे उत्तर-पूर्व हिमालय, उत्तर सतलज, पश्चिम पटियाला राज्य एवं लुधियाना जिला और दक्षिण कर्नाल जिला तथा यमुना नदी पड़ती है।

इस ज़िलेकी भूमि सतलज और सिन्धुके बीच समान देखेंगे। किन्तु पूर्वकी ओर बना जङ्गल और पहाड़ मिलता है। इसी पहाड़से घाघरा नदी निकली है। मोरनीके जङ्गलमें दो पक्के झील हैं। लोगोंने इन्हें पूज्य एवं पवित्र माना है। बड़े झीलपर श्रीरामचन्द्रका मन्दिर मिलता जिसमें प्रतिवर्ष धूम धामसे मेला लगता है। दक्षिण पश्चिम ओर इसकी भूमि सम गयी है। जिसमें चारो ओर छोटे-छोटे असंख्य नदी नाले देख पड़ते हैं। घाघरा नदीके पानीसे खेत सींचे जाते हैं। वर्षामें नदी उमड़नेसे जल चारोंपर आतो जातो है। दक्षिणमें घास बहुत होता है। कलेसरके ११८१० एकर जङ्गलमें साखका वृक्ष भरा रहता है। छोटे-छोटे पहाड़ो नालोंको बालूमें थोड़ा बहुत सोना भी हाथ लग जाता है। किन्तु धूलेका कंकड़ ढेरका ढेर मिलेगा। जङ्गलमें शिकार की कोई कमी नहीं देखते, हिंस्र जन्तु भी घूमते फिरते हैं।

इतिहास—अम्बाला भारतीयोंका आदि स्थान है। सरस्वती और घाघराके बीचकी भूमि पवित्र मानी जायगी। सरस्वती नहाने दूर-दूरके लोग आते हैं। किनारे किनारे सुन्दर मन्दिर अपनी शोभा देखावेंगे। थानेश्वर और पेहेवा नगर हृदयका अपनी ओर खींच लेता है। थानेश्वरके सरस्वती कुण्डमें प्रति वर्ष कोई तीन लाख मनुष्य नहाते हैं। चीना परिव्राजक युएन चुआङ्ग सन् ई०के ७वें शताब्द यहां आये थे। उन्होंने इस प्रदेशको सभ्य एवं सुसम्पन्न पाया। उस समय राजधानी श्रुघ्नमें प्रतिष्ठित थो। कितनोंहो आविष्कृत मुद्रासे प्रमाणित होता है, कि मुसलमानों के भारतविजय तक श्रुघ्नमें राजधानीका ठाट-बाट रहा।

अम्बालाके आसपासकी भूमि गज़नवी और गोरी मुसलमानोंके हाथ चली गयी थी। सन् ई० के १४ वें शताब्द फ़ीरोज़शाह बादशाहने हिसारमें पानी पहुंचानेको एक नहर बनवायी। सन् ई० के १८ वें शताब्दान्त सतलजसे दक्षिण सिख राज्य प्रतिष्ठित हो गये थे। जब महाराष्ट्रों और अफगानोंने मुसलमान साम्राज्यको विच्छिन्न किया, तब कितने ही सिख-सरदार सतलज और यमुनाके बीच राजा बन बैठे। सन् १८०३ ई० में महाराष्ट्र अंगरेजोंसे हारे थे। उस समय यह सारी भूमि पटियाला, झींद, नाभा आदि राज्यों में बांटी गयी। किन्तु सन् १८०८ ई० में रणजित् सिंहने पञ्जाबसे कितनी हो सिख फ़ौज ले सतलजको पार किया और उस ओरके नृपतियोंसे राजस्व मांगा था। इस पर सिख-नृपतियोंने मिलकर अंगरेजोंसे साहाय्य प्रार्थना की। अंगरेजोंने बीचमें पड़ झगड़ा मिटा दिया था। सन् १८०८ ई० में अंगरेजोंसे जो सन्धि हुयी उसके अनुसार रणजित् सिंहने छोटे राज्यों पर आक्रमण न करने का वचन सुनाया। सन् १८११ ई० को बीचवाले आभ्यन्तरिक युद्ध भी रोक रखा था। किन्तु राजा एक रूपसे स्वतन्त्र रहे। उन्हें किसी प्रकारका कर देना पड़ता न था। सन् १८४५ ई०में प्रथम सिख युद्ध हुआ। उस समय सिख राजाओंका अधिकार घटाया और अम्बालेमें पोलिटिकल एजण्टको जगह कमिश्नर बैठाया गया था। सन् १८४८ ई०में जब दूसरा सिख युद्ध हुआ और पञ्जाब अंगरेजोंके राज्यमें मिला, तब राजाओंका बचा-बचाया स्वत्व (स्वतन्त्रता) भी जाते रहा। सन् १८५७ ई० को बलवेके समय अम्बालेमें कितनी हो आग लगी और गड़बड़ पड़ी थी, किन्तु उससे कोई भारी हानि न हुयी और न इसके प्रबन्धमें ही विशेष असुविधा आयी।

वाणिज्य व्यवसाय—जो धूम अधिवासियोंके कारण अम्बाले ज़िलेमें बहुत कम देख पड़ेगी। इधरमें लोहेको छोटी छोटी चीज़ अम्बालेमें कालीन और प्रत्येक ग्राममें मोटा कपड़ा बनता है। वाणिज्यका मुख्य स्थान अम्बाला, रूपर, जगाधरी, ख़िज़राबाद, बूरिया और घरार है। इस ज़िलेमें सिन्धु-पञ्जाब और दिल्लीसे रेल आती है। जगाधरीसे कुछ मील दक्षिण यमुना और अम्बालेसे छः मील घाघरा पर लोहेका अमरीको पुल बना पायेंगे। कर्नालसे पक्की सड़क इस ज़िलेमें होकर पटियाला राज्यको चली गयी है। दूसरी पक्की सड़क अम्बालेसे कालका जायेगी। रेल और सड़कके किनारे तार लगा है।

३ इस ज़िलेकी एक तहसील। इसका क्षेत्र-फल ३६६ वर्गमील पडेगा।

४ इसी ज़िलेका प्रधान नगर। यह अक्षा० ३०° २१´ २५˝ उ० और द्राघि० ७६° ५२´ १४˝ पू० पर अवस्थित है। इसकी भूमि घाघरा नदीके तीन मील पूर्व समुद्रतलसे १०४० फीट उच्च बैठेगी। यहां अंगरेजी फौज़की छावनी और ज़िलेकी कचहरी बनी है। किसी अम्बा राजपूतने इसे सन ई०के १४वें शताब्द बसाया था, जिसके अनुसार इसका नाम भी चल पडा। सन १८०८ ई०में जब सतलजके उस पारवाला राज्य अंगरेज़ोंके अधिकारमें आया, तब अम्बाला राज्यपर सरदार गुरुबख्श सिंहजाकी विधवा पत्नी दया कुंवर आधिपत्य चला रही थीं। सन १८२३ ई०में दया कुंवरके मरनेपर सतलजके उस पारवाले राज्यका प्रबन्ध बांधनेको अम्बालेमें पोलिटिकल एजण्ट बैठाया गया। सन १८४३ ई०में नगरसे दक्षिण छावनी पड़ी थी। सन १८४८ ई०को पञ्जाबके अंगरेज़ी राज्यसे मिलनेपर अम्बालेमें ज़िलेका हेड क्वार्टर आया। अम्बाला नगर नये और पुराने दो भागमें विभक्त है। पुरानेकी राह खराब और नयेकी जगह अच्छी निकलेगी। सन १८६८ ई०को अफ़गानस्थानके भूतपूर्व अमीर शेर अली जब भारत आये, तब अम्बालेमें आलीशान दरबार लगा था। नगरमें अन्नका बड़ा बाजार जमता है। अदरक और हलदी भी ढेरकी ढेर बिकती है। यहांसे सूती कपडा, अनाज और क़ालीन चालान किया तथा विलायती कपडा, लोहा, नमक, ऊन एवं रेशम मगाया जाता है।

अम्बाला शहरकी चारो ओर शहर पनाह है। अब यह जङ्गी छावनीके नामसे विशेष प्रसिद्ध है। अम्बाला प्रदेशके अन्तर्गत कोटाहा नामक एक स्थान है। वहांके मरणी नामक जङ्गलके दो ह्रद विख्यात है। इन तालाबोंका जल कभी नहीं सूखता। उनके किनारे किनारे अनेक देवालय हैं। इस प्रदेशके अनेक स्थानोमें पहाड़के झरनोमें बांसके नल लगे रहते हैं। नलके अन्दरसे पानी गिरता है। जाड़े और गर्मीके दिनोंमें स्त्रियां अपने अपने बच्चोंको घासके तकियेके सहारे उन्हीं नलोंके नीचे सुला देती हैं। ब्रह्मतालुपर झरझर पानी गिरता रहता है। कहा जाता है, कि रोग हो चाहे न हो, बच्चोंको ऐसी चिकित्सा न करने से कितने ही बचपनमें ही प्राणत्याग देते हैं। किन्तु इस प्रक्रिया द्वारा सर्दी, खांसी, ज्वर, शीतला प्रभृति कोई रोग नहीं होता।

अम्बाला शहर से प्राय: १७ कोस पर ईशान कोणमें श्रीमूर वा नाहन राज्य है। यहां राजा बाणका वन है। इस प्रदेशमें तांबा, सीसा, लोहा, और नमक पैदा होता है। अम्बालासे शिमला पहाड ४० कोस है।

अम्बालापुले—मन्द्राज प्रान्तके तिरुवांकोर राज्यका एक तअल्लुक। इसका क्षेत्रफल १२१ वर्गमील लगता है।

अम्बालिका (सं० स्त्री०) अम्बालेव, अम्बाला स्वार्थे कन् ह्रस्वः इत्वम्। १ माता, मा। २ काशि-राजकी कनिष्ठा कन्या। स्वयम्बर-सभासे भीष्मने इन्हें चोरा अपने सौतेले भाई विचित्रवीर्यको व्याह दिया था। विचित्रवीर्यके मरनेपर इन्होंके गर्भ और व्यासके औरससे पाण्डुराजने जन्म लिया। ३ अम्बष्ठा, पुर्दीना। ४ पाठा, हरजेवरी।

अम्बाली—बड़ोदा राज्यके सिनोर सबडिविज़नका एक गाव। यहां दत्तात्रेयकी माता अनुसूयाका पवित्र मन्दिर बना है। कहते हैं, कि इस मन्दिरके नीचेकी मट्टी या देवीके स्नानका जल लगानेसे कुष्ठरोग मिट जायेगा। कितने ही कोढ़ी इस ग्राममें टिके रहते हैं। श्रीमान् गायकवाडने कोढ़ियोंके लिये अस्पताल और भिक्षुकोंके लिये अन्नक्षेत्र चला रखा है।

अम्बासमुद्रम्—मन्द्राज प्रान्तवाले तिनेवली ज़िलेके अपने तअल्लुक़का हेड क्वार्टर और नगर। यह अक्षा० ८° ४२´ ४६˝ उ० एवं द्राघि० ७७° २८´ १५˝ पू० पर अवस्थित है। इसमें सबडिविज़नल आफिसर वास करते हैं।

अम्बि (वै० स्त्री०) १ जल, पानी। २ स्त्री, माता, धात्री, औरत, मा, धाया।

अम्बिका (सं० स्त्री०) अम्बेव, अम्बा स्वार्थे कन्

उत्प' त्वम्। १ माता मा। २ दुर्गा। ३ श्वेताम्बर जैनकी शासन-अधिष्ठात्री देवी। इसका एक मन्दिर गिरनार पर्वतपर है, इसको जैन, अत्र न सब पूजते हैं। अजैन लोग इसको अम्बाका मन्दिर कहते हैं। ४ कटुकी, कुटकी। ५ अम्बष्ठा, पुरैना। ६ मायाफलवृक्ष मेनफल। ७ काशि राजकी मध्यमा कन्या। स्वयम्बर सभासे बलपूर्वक हरणकर भीष्मने इन्हें विचित्रवीर्यसे ब्याह दिया था। विचित्रवीर्यके मरनेपर इनके गर्भ और व्यासके औरससे अन्धराज धृतराष्ट्रने जन्म लिया।

अम्बिका—१ बम्बई प्रान्तके सूरत जिलेकी एक नदी। यह बांसदा पहाड़से निकल बड़ोदा राज्यमें बहती है। फिर पश्चिम ओर दो भागमें बंट इसे सूरत जिलेमें पहुंचते पायेंगे। यहांसे यह चिखली और जलालपुरके बीच घूम-घूम चलती और पूर्वासे दक्षिण साढे सात कोस पर समुद्रमें गिरती है। मुंहानेसे कोई छ कोस मध्यकी नहर तक इसकी लहर जायेगी। समुद्रसे कोई तीन कोस इस नदीपर ८७५ फीट लंबा और २८ फीट ऊंचा रेलवेका पुल बना है। अम्बिकामें कावेरी और खरेरा दो नदी आ मिली है। समुद्रके नीचे यह फैलकर थोड़ी थाही बनती है। किनारे तक बड़ा जहाज आ लगेगा। २ बङ्गालके वर्धमान जिलेका एक गांव। कालना देखो।

अम्बिकादत्तव्यास—इनका निवासस्थान भोलायोधाम रहा। सन् १८८८ ई०में यह जीवित थे। इन्होंने हिन्दी लेखकी बड़ी उन्नति की। कितने ही हिन्दी नाटक इनकी लेखनीसे अङ्कित हुये हैं। स्वर्गीया महारानी विक्टोरियाकी जुबिलीपर इन्होंने 'भारत-सौभाग्य' नामक नाटकग्रन्थ लिखा था। बङ्गला उपन्यास 'महमत'का इन्होंने बहुत अच्छा हिन्दी अनुवाद उतारा है।

अम्बिकापति (सं० पु०) अम्बिकाके स्वामी, शिव।

अम्बिकापुत्र (स० पु०) धृतराष्ट्र।

अम्बिकाप्रसाद—बिहारप्रान्तके शाहाबाद जिलेके कोई कवि। इन्होंने भोजपुरी भाषामें कितने ही गीत बनाये हैं। गीत, बहुत उम्दा न ठहरते भी रचयिताकी मातृभाषाके वास्ते आदर्श हैं।

अम्बिकाप्रसाद मिश्र—भयादत्तके पुत्र तथा मनोरम मिश्रके पौत्र थे। इन्होंने ही बेतियाके महाराज श्रीराजेन्द्रकिशोरसिंहको आज्ञानुसार, १८५४ ई०में 'वैधर्विशापतिमिरमार्तण्डोदय' नामक संस्कृत ग्रन्थ रचना किये थे।

अम्बिकेय, आम्बिकेय (सं० पु०) अम्बिकाया अपत्यम्, अम्बिका-ढक्। १ गणेश। २ कार्तिकेय। ३ धृतराष्ट्र।

अम्बिकेयक, अम्बिकेय देखो।

अम्बिवाली—बम्बई प्रान्तके थाना जिलेका एक गांव। इस ग्रामसे कोई पांच मील दूर समनगढके पास इसी नामक एक गुहा भी वर्तमान है। इसे लोगोंने एक पहाड़ी खोदकर बनाया था। गुहासे नदी किनारे तक एक ढालू चट्टान चली गयी है। इसमें एक बड़ासा चौखुण्टा दालान देखेंगे। यह ३२ फीट दीर्घ, १८ फीट चौड़ा और १० फीट ऊंचा है। उसको तीन ओर चार-चार कोठरी पावेंगे। तीनों ओरके आसपास एक नीचा तखता लगा है। सामने और दाहने दो दरवाजे देखेंगे। दरवाजोंसे राह बरामदेको जाती जो ११ फीट पड़ता है। बड़ी दीवारको बाहरी और नासिकवाली तृतीय गुहा—जैसी सजावट रही, चन्दनवार लटकता और फूल झूमता था। किन्तु अब टूट फुट जानेसे कुछ देख न पड़ेगा।

खम्भा भी नासिकके ही नमूनेका है। चोटी पर चपटा चपरा बहुरी ढालतमें देखेंगे। बीचके जोड़े खम्भेमें अठखुण्टा और बाकी दोमें सोलह पहलुवा मझतीर लगा है। राहमें पुरानेको जगह नयाघोदार दरवाजा लग जानेसे यह गुहा ब्राह्मणोंका मन्दिर हो गया। बरामदेके दूसरे खम्भे पर दरवाजेकी बायीं और ऊपरके नीचेको पाली भाषामें कोई लेख लिखा है। खम्भेके चौथाईसे जोड़े पर भी अक्षरका चिह्न देखेंगे। किन्तु वह पढ़नेमें बिलकुल नहीं आता।

अम्बिवोख—बङ्गालदेशान्तर्गत दार्जिलिङ्ग नगरके प्रेम-मन्दिरका निम्नस्थान।

अम्बीर—बंबईप्रान्तकी कर्णाटक जिलेके कोल्हापुर राज्यकी एक छोटी नदी। यह चारणके पास वार्ना नदसे जा मिलती है।

अम्बु (सं० क्लो०) अमति गच्छति देशान्तर अम्यते गम्यते वा प्राणिभिः, अम-उ बुगागमश्च। १ जल, पानी। २ बाला, रूसा घास। ३ लग्नसे चतुर्थ स्थान। ४ चार संख्या। ५ छन्दोविशेष। ६ बालक, बच्चा। ७ पुनर्णवा तैल।

अम्बुक (सं० पु०) १ श्वेतार्कमन्दार, सफ़ेद अकौड़ा। २ रक्तैरण्ड, लाल रेंड।

अम्बुकण (सं० पु०) अम्बुनः कणः, ६-तत्। जलकण, पानीका बुंद। अम्बुकणा-जैसी रूप भी होता है।

अम्बुकण्टक (सं० पु०) अम्बुनि जले कण्टकः शत्रुः ७-६ वा तत्। कुम्भीर, नक्र, शेर-आबी, मगर, घड़ियाल, जो पानीका कांटा हो।

अम्बुकन्द (सं० पु०) शृङ्गाटक, सिंघाड़ा।

अम्बुकिराट, अम्बुकिरात देखो।

अम्बुकिरात (सं० पु०) अम्बुनि जले किरात इव हिंस्रः। कुम्भीर, नाक्र, घड़ियाल, जो पानीमें शिकारीकी तरह निशाना लगाता हो।

अम्बुकोश (सं० पु०) अम्बुनि अम्बुनो वा कोशो वानर इव। १ शिशुमार, सङ्ग-माही, गङ्गाका सूस। २ गोधा, गोह।

अम्बुकुक्कुटिक, अम्बुकुक्कुटी देखो।

अम्बुकुक्कुटी (सं० स्त्री०) जलकुक्कुटी, पनडुब्बी।

अम्बुकूर्म (सं० पु०) अम्बुनि कूर्म इव। शिशुमार, गङ्गामें रहनेवाला सूस।

अम्बुकृत (सं० त्रि०) अस्पष्ट रूपसे उच्चारण किया हुआ जो साफ़ साफ़ न बोला गया हो। व्यर्थ-जल्पित, जो बेहूदा बका गया हो।

अम्बुकृष्णा (सं० स्त्री०) जलपिप्पली, पानीकी पीपल।

अम्बुकेशर (सं० पु०) अम्बुनि जातः केशरो यस्य, बहुव्री०। छोलङ्ग नीबू।

अम्बुक्रिया (सं० स्त्री०) अन्त्येष्टिसंस्कार, जो काम किसीके लिये मरनेपर किया जाता है।

अम्बुग (सं० त्रि०) जलमें गमन करनेवाला, जो पानीमें रहता हो।

अम्बुघन (सं० पु०) वर्षशिला, ओला, आस्मान्से गिरनेवाला पत्थर।

अम्बुचर (सं० त्रि०) अम्बुनि जले चरति, अम्बु चर-ट। जलचर, पानीमें फिरनेवाला, दरयायी। (पु०) २ कर्कट, जलपिपरी। ३ कनखुर।

अम्बुचामर (सं० क्ली०) अम्बुनः चामरमिव। शैवाल, सेवार जो चीज़ पानीपर पत्तेकी तरह फैल जाती हो।

अम्बुचारिणी (सं० स्त्री०) स्थलपद्मिनी, स्थलकमल, गुल-अजायब।

अम्बुचारिन् (सं० त्रि०) अम्बुनि चरति, अम्बु-चर-णिनि, ७-तत्। जलचर, पानीमें घूमनेवाला।

अम्बुज (सं० क्ली०) अम्बुनि जले जायते; जन-ड, ७-तत्। १ पद्म, कमल। २ सारसपक्षी। ३ चन्द्र, चांद। ४ कर्पूर, काफ़ूर। ५ हिज्जलवृक्ष, समुद्रफल, पनियारी। (पु०-क्ली०) ६ शङ्ख। ७ वज्र। (त्रि०) ८ जलजात, पानीमें पैदा हुआ, दरयायी।

अम्बुज—एक कवि, कोई शायर। इनका जन्म सन १८१८ ई०में हुआ था। इन्होंने नीति और नखसिख पर अच्छी कविता बनायी है।

अम्बुजन्मन् (सं० क्ली०) अम्बुनो जन्म अस्य, बहुव्री०। १ पद्म। २ सारसपक्षी। (पु०-क्ली०) ३ शङ्ख।

अम्बुजभू (सं० पु०) ब्रह्मा, जो कमलसे उत्पन्न हो।

अम्बुजस्थ (सं० त्रि०) कमलपर बैठनेवाला, जो कमलपर बैठता हो।

अम्बुजामलकी (सं० स्त्री०) पानीयामलकी, भूइं आंवला।

अम्बुजासन (सं० पु०) अम्बुजं पद्मं आसनं यस्य बहुव्री०। १ ब्रह्मा। २ सूर्य। कर्मधा०। ३ योगका आसन विशेष, पद्मासन।

अम्बुट (सं० पु०) अश्मन्तकवृक्ष, पहाड़ी शिरीष।

अम्बुतस्कर (सं० पु०) सूर्य, आफ़ताब, जो पानीको चोराता हो।

अम्बुताल (सं० पु०) अम्बुनि तालयति तिष्ठति चुरा० तल प्रतिष्ठायां अच्। शैवाल, सेवार।

अम्बुतिया—बङ्गाल प्रान्तके दार्जिलिङ्ग जिलेका एक गांव। सन् १८६० और १८६४ ई०के बीच दार्जिलिङ्ग टी-कम्पनीने यहां चायका बाग लगाया था। इसका मकान ऐसा उमदा देख पड़ता, मानो मनुष्यने उसे तुकदीरमें लिखे लगा रखा है।

अम्बुद (सं० पु०) अम्बु ददाति, अम्बु दा क। १ मेघ बादल। २ मुस्ता, मोथा। (त्रि०) ३ जलदाता, पानी पहुंचानेवाला।

अम्बुधर (सं० पु०) अम्बूनि धरति, अम्बु-धृ-अच्। १ मेघ, बादल। २ नागर मुस्ता नागर-मोथा। ३ भद्रमुस्ता।

अम्बुधि (सं० पु०) अम्बूनि धीयन्ते अत्र, अम्बु धा अधिकरणे कि। १ समुद्र, सागर। २ जलपात्र, पानी रखनेका बरतन। ३ चारसंख्या।

अम्बुधिप्रसवा (सं० स्त्री०) अम्बुधिरिव प्रसूते प्रसूते अम्बुधि-प्र-सू-अच् टाप्। घृतकुमारी, घीकुमार।

अम्बुधिवह्नि (सं० पु०) समुद्राग्नि।

अम्बुधिस्रवा (सं० स्त्री०) स्थूलकन्या, घृतकुमारी, घीकुवार।

अम्बुनाम (सं० क्ली०) १ ह्रीबेर, बाला घास।

अम्बुनिधि (सं० पु०) अंबूनि निधिः, ६ तत्। समुद्र, जलका भाण्डार, सागर, पानीका खजाना।

अम्बुप (सं० पु०) अंबूनि पाति रक्षति पिबति वा, अम्बु पा-क। १ जलाधिप वरुण। २ समुद्र। ३ चक्रमर्द, पमेवार। (त्रि०) ४ जल पीनेवाला, जो पानी पीता हो।

अम्बुपत्रा (सं० स्त्री०) अंबुनि सौकरा पत्रे यस्याः, बहुव्री०। उच्चटाक्षुप, मुलहटी, मौरेठी।

अम्बुपत्रिका, अम्बुपत्रा देखो।

अम्बुपत्री, अम्बुपत्रा देखो।

अम्बुपद्धति (सं० स्त्री०) धारा पानीका बहाव, धमा।

अम्बुपात (सं० पु०) अम्बुपतन देखो।

अम्बुप्रसाद (सं० पु०) अम्बूनि प्रसादयति; अम्बु-प्र-सद णिच्-अण्, उप-स०। कतवाक्षुप, निर्मलीका पेड़। इसका फल घिस कर डालनेसे मैला जल साफ हो जाता है।

अम्बुप्रसादन (सं० क्ली०) अम्बुप्रसाद देखो।

अम्बुप्रसादनफल (सं० क्ली०) कतकफल, निर्मलीका फल।

अम्बुभृत् (सं० पु०) अंबूनि बिभर्ति, अम्बु-भृ क्विप् तुगागम। १ मेघ बादल। अम्बुभृत्‌(-भृत्) (स्वर) २ मुस्तक,मोथा। ३ समुद्र, सागर। ४ अभ्रक। (त्रि०) ५ जल ले जानेवाला, जिसमें पानी भरकर ले जायें।

अम्बुमत् (सं० त्रि०) अम्बूनि सन्त्यस्मिन्, अंबु बाहुल्ये मतुप्। बहुजलयुक्त, जिसमें पानी बहुत रहे।

अम्बुमती (सं० स्त्री०) अम्बुमत् देखो।

अम्बुमयरक (सं० पु०) जलापामार्ग, पानीका चटजोरा।

अम्बुमात्रज (सं० पु०) अम्बुमात्रे जलमात्रे जायते, अम्बुमात्र जन-ड उ-तत्। १ शम्बुक, दुधकी कौड़ी। (त्रि०) २ केवल जलमें उत्पन्न होनेवाला जो सिर्फ पानीमें ही पैदा हो।

अम्बुमुच् (सं० पु०) अम्बूनि मुञ्चति, मुच्-क्विप्, ६ तत्। १ मेघ, बादल। २ मुस्तक मोथा।

अम्बुयष्टिका (सं० स्त्री०) भार्गी, भारङ्गी।

अम्बुर (सं० पु०) अंबु बाहुल्यात् उरच्। द्वारका पक्वाख दरवाजे, देहली, चौखटके नीचेकी लकड़ी।

अम्बुराज (सं० पु०) १ समुद्र, सागर। २ वरुण जलके स्वामी।

अम्बुराशि (सं० पु०) अम्बूनां राशयो यत्र, बहुव्री०। समुद्र, पानीका कटोरा।

"मैनाकमम्बुराशिनं दर्शि।" (शान्तिपर्व)

अम्बुरुह् (सं० क्ली०) अम्बुनि जले रोहति, अम्बु रुह क्विप्। पद्म।

अम्बुरुह (सं० पु०-क्ली०) अम्बु-रुह क। पद्म।

अम्बुरुहा (सं० स्त्री०) अम्बुरुहमिव पुष्पमस्त्यस्याः, अम्बुरुह अर्श आदि० अच्-टाप्। १ पद्मिनी। २ कमल पद्मिनी।

अम्बुरुहिणी (सं० स्त्री०) अम्बुरुहमस्त्यस्याः, अम्बुरुह मत्वर्थे इनि, स्त्रियां ङीप्। पद्मलता, कमलका बेल। अंबुरुहाणां समूह। २ पद्मसमूह कमलका

टेर। अंबुरुहाणां सन्निकृष्टदेशः। ३ पद्मयुक्त देश, जिस मुल्कमें कमल रहे।

अम्बुरोहिणी (सं॰ स्त्री॰) पद्मिनी।

अम्बुरोहिन् (सं॰ क्ली॰) अंबुनि जले रोहति, अंबु-रुह-णिनि। १ पद्म। २ सारस पक्षी।

अम्बुवल्लिक (सं॰ पु॰) कृमिघ्न, कोई पौधा।

अम्बुवल्लिका (सं॰ स्त्री॰) कारवेल्ली, करेला।

अम्बुवल्ली (सं॰ स्त्री॰) १ क्षुद्राकारवल्ली, करेली। २ जलपिप्पली, पानीपिपरी।

अम्बुवाची (सं॰ स्त्री॰) अंबु वाचयति तदर्पणं सूचयति अम्बु-चुरा वच-णिच्-अण् णिच् लोपः। उप-सं ङीप्। जिस समय सूर्य आर्द्रा नक्षत्रके प्रथम चरणमें रहता है, उस स्थितिकालका नाम अंबुवाची है। सूर्यके मृगशिरा नक्षत्र भोगके बाद तीन दिन बीस दण्ड मात्र यह स्थितिकाल है। इसी समय पृथिवी शायद भीतर ही भीतर रजस्वला होती हैं। यथा राज-मार्त्तण्डमें—'मृगशिरसि निवृत्ते रौद्रपादे अम्बुवाची भवतुमति खलु पृथ्वी'। (भवतुमतीति प्रस्नलमार्षम्। काशी) सूर्य मासमें दो नक्षत्र और एक चरण भोग करते हैं। इसीसे वैशाख मासमें अश्विनी और भरणी ये दो नक्षत्र और कृत्तिकाका एक चरण सूर्यका भोग होता है। ज्येष्ठ मासमें कृत्तिकाके शेष तीन पाद, सम्पूर्ण रोहिणी और मृगशिराके दो पादोंको सूर्य भोग करते हैं। फिर आषाढ़ मासके पहले छः दिन चालीस दण्डोंमें मृगशिराके शेष दो पाद सूर्यके भोग होते हैं। उसके बाद जिन तीन दिन बीस दण्ड तक सूर्य आर्द्राके प्रथम चरणमें रहते हैं, उसीका नाम अंबुवाची है। उसी समयसे वर्षा की सूचना होती है। इसीसे लोग इसे अंबुवाची कहते हैं। रुद्रयामलमें लिखा है,—

"प्रावृट्काले समायाति रौद्रं भ्रमगते रवौ।
नाड़ीवेधसमायोगे जलयोगं वदाम्यहम्॥"

सूर्यके आर्द्रा नक्षत्रमें गमन करनेसे वर्षा उपस्थित होगी। उसी समय नाड़ीवेध होनेसे मैं जलयोग अर्थात् वर्षाकालका योग कहूंगा।

ज्योतिषमें लिखा है, जिस दिनके जिस समय सूर्य मिथुन (आषाढ़) में गमन करते हैं, फिर उसी वारके उसी समयमें प्रायः ही अंबुवाची होता है। अंबुवाचीमें वेद वेदाङ्गका अध्ययन निषिद्ध है। उसमें भूमि जोतना न चाहिये। शौचके निमित्त कितने ही खुदी हुई मट्टी व्यवहार करते हैं। यति, विधवा और व्रतस्थ ब्राह्मण इनमें कोई भी स्वपाक व परपाक भक्षण नहीं करते। भक्षण करनेसे चण्डालान्न भोजन का पाप होता है। अंबुवाचीके मध्यमें विधवाको अग्नि स्पर्श न करना चाहिये, इसीसे वे लोग प्रदीप प्रभृति स्पर्श नहीं करतीं। अंबुवाची पड़नेके पहले धानका लावा भून रखती हैं और अंबुवाचीके तीनों दिनोंमें उसीको खाती हैं। कितनीही फल मूल खाकर रहती हैं। (नाहिभीर्दुग्धपानतः। स्मृति) अंबु वाचीमें दूध पीनेसे सर्पभय नहीं रहता।

अम्बुवाचीत्याग (सं॰ पु॰) आषाढ़ कृष्णका तेरहवां दिवस।

अम्बुवाचीप्रद (सं॰क्ली॰) आषाढ कृष्णका दशवां दिवस।

अम्बुवारिणी (सं॰ स्त्री॰) स्थलकमलिनी, गुलाब।

अम्बुवासिन् (सं॰ त्रि॰) अंबुनि जलप्रधाने देशे वसति; अम्बु-वस णिनि, मध्यपदलोपी ७-तत्। जलवासी, पानीमें रहनेवाला।

अम्बुवासिनी, अम्बुवासिन् देखो।

अम्बुवासी (सं॰ पु॰-स्त्री॰) अंबुनि जलप्रधाने देशे वासो यस्याः, ङीप्। रक्तपाटल, पुन्नागका पेड़।

अम्बुवाह्, अम्बुवाह देखो।

अम्बुवाह (सं॰ पु॰) अंबुनि वहति; अंबु-वह-अण्, उप-स॰। १ मेघ, बादल। २ मुस्तक, मोथा। ३ कहार, पानी भरनेवाला। ४ अभ्र, अबरक। ५ सप्त संख्या, सात नम्बर।

अम्बुवाहिन् (सं॰ त्रि॰) अंबुनि वहति दधाति; अंबु-वह-णिनि, ६-तत्। १ जलको रखनेवाला, जिसमें पानी रहे। २ जल ले जानेवाला, जो पानी ले जाये। (पु॰) ३ जलपात्र, पानी भरनेका बरतन। ४ मेघ, बादल। ५ मुस्तक, मोथा।

अम्बुवाहिनी (सं॰ स्त्री॰) पुनःपुनः अंबुनि वहति स्थानान्तरं नयति; अंबु-वह-णिनि, ६-तत्। द्रोणी,

अस्वदेशमें जल पद्ध वालेका पात्रविशेष, हुक्के जिस बरतनमें बैठ मिंचे।

अम्बुविहार (सं॰ पु॰) अम्बुनि जले विहारः, अम्बु इति हृ घञ्, ७-तत्। १ जलक्रीड़ा, सन्तरणादि, पानी का खेल तैरना वगैरह।

अम्बुविस्रवा (सं॰ स्त्री॰) अम्बुनः विस्रवा, अम्बु वि-स्रु अच्। घृतकुमारी, घीकार। इसके पत्तेसे जल निकलता है।

अम्बुवेतस (सं॰ पु॰) अम्बुजातो वेतः, शाक॰ तत्। जलवेतस पानीका बेत।

यो वारिषार्ऽनिरुद्धी यावेरीं परम लेवै। (अमर)

अम्बुशिरीषिका (स॰ स्त्री॰) अम्बुजातः अतः शिरीष-पत्रायें कन्, स्त्रीत्वात् टाप्। जल शिरीषिका, पानीका शमशीस। इसके विदोष, विष कुछ एव अर्श नष्ट होता है।

अम्बुशिरीषी, अम्बुशिरीषिका देखो।

अम्बुशुक्ति (स॰ स्त्री॰) १ जलशुक्ति, घोंगा। २ सड़ावा, घास-फूस।

अम्बुसंरोह (स॰ पु॰) अम्बुनि संरोहति अम्बु सम् रुह आधारे अच्। समुद्र सागर।

अम्बुसरण (स॰ स्त्री॰) अम्बु स-सृ ल्युट्। जलप्रवाह, पानीका बहाव।

अम्बुसर्पिणी (स॰ स्त्री॰) अम्बुनि जले सर्पति गच्छति, अम्बु सृप णिनि, ७-तत्। जलौका, जोंक।

अम्बुसादन (स॰ स्त्री॰) निर्मली बीज, निर्मलीका तुख़्म।

अम्बुसारा (स॰ स्त्री॰) कदलीवृक्ष, केलेका दरख़्त।

अम्बुसाह्व (स॰ पु॰) कुन्द पुष्पवृक्ष कुन्दके फूलका झाड़।

अम्बुसेचनी (सं॰ स्त्री॰) अम्बुनि सिच्यते नौकाजः अनया, अम्बु सिच करणे ल्युट् ६ तत्। नौकासे जल निकालकर फेंकनेको काष्ठमय पात्र, नावसे पानी उलीचनेको लकड़ीका बरतन।

अम्बूकृत (स॰ स्त्री॰) अनम्बु अम्बूकृतम् अम्बु च्वि कृ-क्त। १ निष्ठीवन-युक्त वाक्य, थूककारी हुयी बात। (त्रि॰) २ बका हुआ, जो बकट करा गया हो। ३ थूका हुआ, जिसपर लुआब गिरा हो।

अम्बूर—मन्द्राज प्रान्तवाले उत्तर अरकाट जिलेके वेलूर तअल्लुक़का एक नगर। यह अक्षा॰ १२ ५° २१″ उ॰ और द्राघि॰ ७८° ४४′ १०″ पू॰ तथा वेलूरसे ३०, बङ्गलोरसे ७८ और मन्द्राजसे ११२ मील दूर, कदपनायम् घाटीके नीचे पालार नदीके दक्षिण अवस्थित है। यहांसे वेलूर और सलेमको बढ़िया सड़क गयी है। रेलवे ष्टेशन नगरसे कोई पाव कोस दूर पड़ेगा। अम्बूरदुर्ग पर्वतकी चोटी पर नगर विराजमान है। यहां तेल, घी और नीलका व्यापार बड़े ज़ोरसे चलते देखेंगे। सन् १८५० ई॰में रेलवेके बन जानेसे नदीकी राह माल नहीं भेजते। अम्बूर दुर्ग पर्वतपर क़िला खड़ा है। सन् १७५० ई॰में इस क़िले-के पास जो भयानक युद्ध हुआ, उसमें मुज़फ़्फ़रजङ्गने अरकाटके नवाब अनवर उद्दीनको हरा दिया था। सन् १७६८ ई॰में मन्द्राजको १०वीं पैदल फ़ौजने इस क़िलेको बड़ी बहादुरीके साथ बचाया। बीस वर्ष बाद हैदरअलीने इसका भार इसे ले लिया था, किन्तु बङ्गलोरको सन्धिके अनुसार वापस दिया। सन् १७८२ और १७८८ ई॰मेंजब महिसूरपर चढ़ाई हुयी, तब इस क़िलेमें ऊपर लेने-देनेको फ़ौज रखी गयी थी।

अम्बूरपेट—मन्द्राज प्रान्तके सलेम ज़िलेका एक नगर। यह अक्षा॰ १२ ३० १५″ उ॰ एवं द्राघि॰ ७८° ४१′ १५″ पू॰ पर अवस्थित है। बनियमबाड़ीके अन्तर्गत है।

अम्बूली—बंबई प्रान्तके पूना ज़िलेकी एक छोटी घाटी। इस राह लोग अम्बूलीसे पानु पाते जाते हैं। किन्तु यह व्यापारका मार्ग नहीं ठहरती। उधरसे कल्याण जाना सीधा पड़नेसे इसमें बहुत मुसाफ़िर देखेंगे। यह मोना उपत्यकाकी चोटीपर पड़ती है।

अम्बूरुपाली—मन्द्राज प्रान्तवाले तिरुवाङ्कोड़ राज्यके इरणास तअल्लुक़का एक नगर। यह अक्षा॰ ८ २१′ उ॰ और द्राघि ७६° २४′ १०″ पू॰ पर अवस्थित है। यही एक नगर अलेप्पीसे मिलाती और अमेल मासका मेला स्थानीय व्यापारको बढ़ाता है। सन् १७५४ ई॰तक यहां पेम्मगचारी भूपतियोंको राज धानी रही थी।

अम्बेगांव—बंबईके नासिक जिलेका ग्राम विशेष। यह डिण्डोरीसे पश्चिम साढ़े छः कोस पड़ेगा। इस गांवमें हेमाडपन्थियोंके महादेवका एक बहुत बढ़िया नक़ाशीदार मन्दिर बना था। मन्दिर चालीस फीट लम्बा और छत्तीस फीट चौड़ा रहा। सब छत और दीवार गिर गयी है।

अम्बोल—पञ्जाबके पेशावर जिलेमें उत्तरपूर्व ठीक अंगरेज़ी राज्यकी उस ओर अवस्थित एक पहाड़ी घाटी। इसी घाटीकी राह कई बार अंगरेज़ी फौजने उदग्र पार्वतीय जातियों पर आक्रमण किया था। सन् १८६३ ई०को मुहीम पड़ी रही। स्वात प्रदेशके सितान स्थानमें जो वहाबी मुसलमान रहते, वह पञ्जाबके अंगरेज़ी राज्यमें मिलते समयसे उपद्रव उठाते आये थे। सन् १८५० से १८६३ ई० तक इन्हीं मुसलमानोंके कारण सीमान्तकी प्रजाने अंगरेज़ोंसे शत्रुता रखी। किन्तु यह कभी अंगरेज़ोंका सामना पकड़ते न थे। सन् १८५७ ई०में इन्होंने अंगरेज़ी राज्यमें घुस किसी अफ़सरके डेरे पर धावा मारा। इसीलिये सन् १८५८ ई०में अम्बोल घाटीकी राह पांच हज़ार अंगरेज़ी फौज इनके विरुद्ध भेजी गयी थी। थोड़ीसी असुविधाके बाद अंगरेज़ी फौजने इनके सहायकोंका गांव फूंक, दो क़िला उड़ा और सितानको मिटा दिया। अन्तमें सन्धि होने पर सितान किसी सरदारको सौंपा गया था। किन्तु दो वर्ष बाद ही फिर उपद्रव उठने और अंगरेज़ी राज्य पर आक्रमण पड़ने लगा। सन् १८६३ ई०के सितम्बर मासमें अंगरेज़ी निगहबान फौज पर बड़े जोरसे धावा हुआ था। उसी सालकी १८वीं अक्तोबरको सात हज़ार अंगरेज़ी फौज पञ्जाबसे चल अम्बोल घाटी पर जा पहुंची। २०वीं अक्तोबरको वहाबी मुसलमान इतने जोरसे लड़े, कि अंगरेज़ी फौजको रुकना और कुमक मंगाना पड़ा था। १५वीं दिसम्बरको रातको अंगरेज़ी फौजने दुश्मनकी जगह छापा मारा और १६वीं को अप्रेल गांव जला डाला। अन्तको बुनेर लोग अंगरेज़ोंसे मिले और वहाबियोंको नाश करने पर उद्यत हुये थे। कोई एक ही सप्ताह बीच अंगरेज़ी फौजने बुनेरोंके साथ मलवाइयोंका स्थान भस्म किया। २३वीं दिसम्बरको अंगरेज़ी फौज, शत्रुको परास्त कर अम्बोल घाटी वापस पहुंची थी। इस युद्धमें अंगरेज़ोंके ८४७ और शत्रुके ३००० वीर हताहत हुये।

अम्बोलगढ़—बम्बईके रत्नागिरि जिलेका एक क़िला। यह राजापुर नदीके मुंहाने पहाड़ीपर खड़ा और समुद्रतलसे बहुत कम ऊंचे उठा था, उत्तर और पश्चिम ओर गड्ढा बना रहा। इसका क्षेत्रफल पाव एकर निकलता था। सन् १८१८ ई०में क़िलेने कर्नल इमलकके हाथ आत्मसमर्पण किया। फिर सन् १८६२ ई०में यह बिलकुल टूट-फूट गया, मकान, दीवार या बुर्जका कहीं नाम भी न रहा।

अम्बोली—बंबईवाले थाने जिलेकी सलसीट तहसीलका एक गांव। इस ग्राममें शिला-मन्दिर प्रतिष्ठित है।

अम्बर (वै० पु०) गायक, गवैया, गानेवाला।

अम्ल (सं० पु०) १ अम्लरस, कार्कश्य, तुर्शी, खटाई।

अभ्र (सं० क्ली०) आप्नोति विश्वं व्याप्नोति; आप-अमुन्, ह्रस्वः नुम् भश्च। १ जल, पानी। २ बकार पत्थर। ३ वाला नामक औषध। ४ लग्नसे चतुर्थ राशि। ५ वैदिक छन्दोविशेष। ६ आकाश, आसमान्।

अभ्रःपा (सं० पु०) चातक पक्षी, पपीहा।

अभ्रःसार (सं० क्ली०) अभ्रसां सारं श्रेष्ठम्, ६-तत्। मुक्ता, मोती।

अभ्रःसू (सं० पु०) अम्भांसि जलानि सूते, अम्भस्-सू-क्विप्। १ धूम, धूवां। २ सान्द्रता, बदली। धूवांसे बादल बनता और बादलसे पानी बरसता, इसीसे धूवां अम्भःसू अर्थात् पानी बरसानेवाला कहाता है। फलतः धूम दग्ध पदार्थके जलीयांश भिन्न दूसरा कुछ नहीं ठहरता।

'धूमस्ताश्रपुवाहोऽग्नि-वाही दहनकेतनम्।
अम्भःसू अम्भालय सूरी जीमूतवाहपि ॥' (हेम)

अभ्रःस्थ (सं० त्रि०) १ जलयुक्त, पानीसे भरा हुआ। २ जलमें स्थिति रखनेवाला, जो पानीमें ठहरा हो।

अभ्रस्, अभ्र देखो।

यहां जो लड़ाई हुयी थी, उसमें डिण्डिगल चांदा साहबके हाथ लगा। सन् १७५७ ई०में हैदरअलीके हमला मारते समय भी इस राज्यने बड़ा काम किया था। अंगरेजोंने अपने अधिकारके समय इस राज्यको कोई इक्कीस हजार रुपये वार्षिक कर लगा छोड़ दिया। अम्मायानायकनुर नगरमें दक्षिण-भारत रेलवेका ष्टेशन बना है।

अम्मारी, अमारी देखो।

अम्माल्—वेदान्त-विलास नाटक-रचयिता।

अम्मुगी—वम्बई प्रान्तवाले कल्याण राज्यके कोई कालचुर्य नृपति। यह सिन्धुराजके पुत्र थे। महिसुरके हरिहर स्थानमें जो शिलालेख मिला उसमें लिखा है,—इस राजको कृष्णने प्रतिष्ठित किया था। यह शिवके अवतार थे। उनका जन्म किसी ब्राह्मणीसे हुआ था। वह नापितका काम करते रहे। कालञ्जरमें उन्होंने एक राजाको मारा, जो नरमांस खाता था। इस तरह कृष्णको मध्य-भारतके डाहल-प्रान्तका राज्य मिला। उनके वंशके कितने ही राजायोंने शासन किया था। अन्तमें कन्नम नामक कोई नृपति हुये, उनके दो पुत्र रहे,—विज्जल और सिन्धुराज। ज्येष्ठ-भ्राता विज्जल सिंहासनारूढ़ हुये थे। सिन्धुराजके चार पुत्रका नाम है,—अम्मुगी, शङ्खवर्मन्, कन्नर और जोगम। इनमें सबसे पहले, अम्मुगीको ही राज्यका अधिकार दिया गया था। अम्मुगीके बाद जोगम गद्दीपर बैठे। जोगमके पुत्रका नाम परमाद्दि रहा। परमाद्दिके पुत्र विज्जल जब सिंहासनारूढ हुये, तब यह शिलालेख बनाया गया। सन ११७१ ई०को विज्जलके ज्येष्ठपुत्र सोवीदेवका जो शिलालेख पड़ा, वह उपरोक्त शिलालेखसे नहीं मिलता।

अम्यक् (वै० अव्य०) ओर, तर्फ़।

अम्र (सं० पु०) अम्यते सौरभेन दूरात् ज्ञायते अम्-रक्। आम्र वृक्ष। आमका फल, पत्ता बोध होनेसे क्लोवलिङ्ग होता है।

अम्र वा आम्रका (Mangifera indica) चलता नाम आंव या आम है। छोटा नागपुर और भारतवर्षके दक्षिणमें यह पहले आप ही आप जन्मता था। अब भारतवर्षके सब स्थानोंमें इसके पेड़ लगाये गये और फल भी खूब होते हैं।

आम्र शब्दके ये कई पर्याय देखे जाते हैं—अम्र, आम्र, चूत, रसाल, सहकार, कामशर, कामवल्लभ, कीरेष्ट, माधवद्रुम, भृङ्गाभीष्ट, सीधुरस, मधूली, कोकिलोत्सव, वसन्तदूत, अम्लफल, मोदाख्य, मन्मथालय, मध्वावास, सुमदन, पिकराग, नृपप्रिय, प्रियाम्बु, कोकिलावास, माकन्द, षट्पदातिथि, मधुव्रत, वसन्तद्रु, पिकप्रिय, स्त्रीप्रिय, गन्धवन्धु, अलिप्रिय, मदिरासख।

वैद्यशास्त्रके मतानुसार कच्चा आम कषाय, रुचिकर, कुछ खट्टा और सुगन्धित होता; इसके खानेसे वायु, पित्त और रक्त बढ़ता है। परन्तु और इससे कफ कई प्रकारका रोग भी नष्ट होता है। अपक्व बड़ा अम्ल पित्तकर होता है।

पके आममें कई गुण होते हैं। लोग कहा करते हैं,—'पाके आमके रसो खाई न खाई देहे धर्मो' सुमिष्ट पका हुआ आम सुस्वादु और पुष्टिकर होता है। इससे त्रिदोष नष्ट होता है। इसके खानेसे वर्ण, रुचि, शरीरकी कान्ति, बल एवं मांस बढ़ता है। पानीके साथ पका आम खानेसे क्षयरोग, श्वास, वात, श्लेष्मा प्रभृति अनेक प्रकारके रोगोंमें उपकार दिखाई देता है। घृतके साथ मिलाकर खानेसे वात और पित्त नष्ट होता एवं अग्नि, वर्ण और बल बढ़ता है। दूधके साथ आम शीतल, सुस्वादु, स्निग्ध, किञ्चित् गुरुपाक और अल्प विरेचक होता है। वात पित्तादि रोगमें यह हितकर रहता है। इससे शुक्र, रक्त और बल बढ़ता है।

पके आमका प्रधान गुण यह है, कि इससे विलक्षण कोष्ठशुद्धि होती है। इसलिये अनेक रोगोंमें यह हितकर है। गृहस्थ लोग छिलका सहित कच्चे आमको सुखाकर रखते हैं। क्योंकि उदरामय होने पर उसका क्वाथ खिलानेसे दो ही तीन दिनमें फायदा मालूम होता है। आमका हरा पत्ता, मूल और गुंठली सङ्कोचक है। इसीसे जलमें सिद्धकर खिलानेसे उदरामय रोग नष्ट हो जाता है। पश्चिमके गरीब आदमी पके आमकी गुंठली आगमें भूनकर खाते हैं।

अंठलीके चूर्णको अच्छी तरह धोकर कितनेही उसकी रोटी बनाते हैं। युरोपीय चिकित्सक आमकी अंठली, सोंठ और कच्चे बेलको एक साथ पिस करके रक्तामाशय एवं उदरामय रोगमें देनेसे विशेष उपकार देखते हैं। नाकसे खून गिरनेमें अठलीका रस सुड़कनेसे खून बन्द हो जाता है। रसायन शास्त्रोंकोपियामें लिखा है, कि आमकी अंठली में कुछ गैलिक एसिड है। इससे कृमि नष्ट और बाधक तथा अर्श रोगमें इसका क्काथ खानेसे रोगी सुस्थ हो जाता है। वैद्यराजवल्लभके मतमें इससे तृष्णा, छर्दि मेह एवं अतिसार नष्ट होता है। आमका अचार रुचिकर और अग्निदीपक है।

युरोपीय चिकित्सक कहते हैं, कि कच्चा आम और कच्चे आमकी अंठली मेहप्रदाह, सुजाकी और श्वासकासमें विशेष उपकार करती है। हरे पत्तेको सुखाकर तम्बाकूकी तरह उसका धुआं धूममें पीनेसे श्वासकष्ट और कण्ठरोगका प्रतिकार होता है। डाक्टर ऐन्स्लि कहते हैं कि आमके पेड़का दूध नीबूके रस या तेलके साथ मिलाकर लगानेसे चर्मरोग अच्छा हो जाता है। आमका तख्ता ज्यादा कठिन और स्थायी न होते भी साधारण आदमी उससे किवाड़ आदि बनाते हैं। कपड़ा रंगनेसे पहले अनेक आदमी आमके पत्ते और छिलकेको व्यवहार करते हैं।

हम लोगोंके देशमें कितने ही आदमी कच्चे आम को सुखाकर रखते हैं। उसे, अमरा, अमचूर या अमसो, कहते हैं। पके आमके रसको पतला करके तथा सेते और उसे अमावट कहते हैं। सर्वदा धूप दिखाकर यत्नसे रखनेपर अमचूर और अमावट बारह महीने रहता है, उसमें कीड़े नहीं लगते। परन्तु अमचूरमें हल्दी और नमक न मिलानेसे बर सातके दिनों उसमें कीड़ा लग और वह खराब हो जाता है। स्वभावतः जिसका धातु कोष्ठबद्ध हो यदि वह नित्य अमचूर या अमावट खावे, तो पेटका उद्वेग कम पड़ता है।

वैद्यकोक्त आम्रखण्ड अति उपादेय सामग्री है। इससे क्षयरोग, वायुरोग, अम्लपित्तजनितरोग अरुचि, मेहप्रभृति अनेक प्रकारके रोग दूर हो जाते और देहकी कान्ति तथा बलवृद्धि होती है। इसके प्रस्तुत करनेकी रीति यह है,—खूब मीठे आमका रस कपड़ेसे छान ले। छना रस १६ सेर, साफ चीनी ८ सेर, गायका घी ४ सेर, सोंठका चूर्ण १ सेर, मिर्च का चूर्ण आध सेर, पीपलका चूर्ण आध सेर, दूध आठ सेर, सब द्रव्योंको मूर्च्छित घीमें पकावे। पाक जाने पर पिपरामूल, मुनक्का, धान्य, धनियां, जीरा, काला-जीरा सोंठ, बड़ी इलायची, दारचीनी, तालिशपत्र, इन सबको खूब बारीक पीस और कपड़ेसे छान कर हरेक चीज आध आध सेर लेना चाहिये। तरबूजके बीज कपूर और नाग केशरको चूर्णकर प्रत्येक द्रव्य चौबीस चौबीस तोले और असली मधु चार सेर डाले। इन सब चीजोंको अच्छी तरह एक साथ मिलाकर इस अवलेहको घीके बरतनमें रख दे। बीच बीचमें धूप दिखाना अति आवश्यक है। मात्रा दो तोले थोड़े गर्म दूधके साथ सेवन करना।

आमका मुरब्बा भी खानेमें जायकेदार होता है। यह कोठेको खूब साफ रखता है। जिस आममें एकदम रेशा न हो और पकने पर कड़ा रहे, उसके बड़े बड़े टुकड़े करके घीमें भून ले। फिर उन्हें मिश्रीके रस जैसे गाढ़े चीनीमें छोड़ भांड़में रख दे। आमका मुरब्बा बहुत दिन नहीं रहता।

बङ्गदेशके अनेक स्थानोंमें जो आमका अचार बनता है उसे कासुन्दी कहते हैं। इसके बनाने की रीति यह है—पहले सरसों और राईको अच्छी तरह धोकर सुखा लेना। सूख जाने पर दोनोंको खूब महीन पीस लेना। उसके बाद दश सेर आमको, छील और अंठली निकाल कर टुकड़े टुकड़े करे। पकी हुई १ सेर इमलीका भी बियां निकाल डाले। फिर दो सेर सरसोंके चूर्ण और आध सेर हल्दीको आम और इमलीके साथ ढेकीमें कूटना चाहिये। एक सप्ताह बाद फिर इसके साथ पूर्ववत् १० सेर आम और १ सेर इमली कूटे। एक सप्ताहके बाद फिर उसके साथ पहलेकी तरह १० सेर आम, १ सेर इमली और २। सेर नमक कूट

अच्छी तरह सानकर मिला देना। इस अचारको हांडीमें रखकर उसका मुंह बन्द कर दे। बीच बीचमें धूप दिखा देनेसे यह सडता नहीं, यह सुखरोचक और आग्नेय है। इससे अमलका व्यञ्जन बनानेपर वह खानेमें खूब सुस्वादु होता है। बंगालके स्थान विशेषमें अन्यान्य भी अनेक प्रकारकी कासुन्दी बनती है।

पश्चिम देशका अचार खानेमें बहुत रुचिकर होता है। वह इसतरह बनाया जाता है। जालीदार एक एक आमके चार चार टुकड़े कर उनके भीतरकी आधी अठली निकाल आधी रहने दे। फिर पत्थरके बरतनमें उनमें अच्छी तरह सेंधा नमक मिलाकर धूपमें रख देना। पानी निकलने पर उसे फेंक देना। इस प्रक्रियाको तीन दिन करना पडता है, अन्तमें छोटी मेथी, काला जीरा, सौंफ और मिर्चा कुछ अधकुटा और कुछ समूचा रखे। इस मसालेको अनुमान आधा तोला हरेक आममें भर उसे असली सरसोंके तेलमें डाल दे, और उसके ऊपर थोडासा यह मसाला और सेंधा नमक छोडे। उसके बाद हांड़ीका मुंह बन्द कर। बीच बीच धूपमें रख देना अति आवश्यक है। कुछ दिनमें आम गल जाने पर अचार तय्यार हो जायगा।

भारतवर्ष ही आमका जन्मस्थान है। यह ग्रीष्म प्रधान देशका वृक्ष है। शीतप्रधान देशमें अम्रवृक्ष नहीं जन्मता। कुछ लोनी मट्टीमें आमका पेड़ बडी तेजीसे बढ़ता, शुष्क और कंकरीली मट्टीमें भी यह पैदा होता है। अंठली, गुलकलम और जोडकलमसेही आमके पेड रोपे जाते हैं। पहले गुठलीही रोपी जाती थी। उसके बाद युरोपियोंसे हम लोगोंने कलम लगाना सीखा है। आंठीका पेड बहुत बडा और मतेज होता है, कलमका उतना बड़ा और तेजस्कर नहीं होता। गिरी हुई दीवारकी मट्टी और सूखा कीचड आमके पेडकी जडमें देनेसे यह बडी तेजीके साथ बढता है।

निम्न बङ्गदेशमें पौषमासके अन्तमें आमका मुकुल निकलने लगता है। माघमास सब पेड़ोंमें मुकुल निकल आते हैं। मुकुल खिलनेपर वृष्टिका जल पडने और बीजकोष बंधनेसे फिर फल नहीं लगता। माघ महीनेके अन्त और फाल्गुन मासमें छोटी छोटी अमौरियां लग जाती हैं। ज्येष्ठ महीनेके अन्तमें प्रायः सब आम पक जातेहै। परन्तु भागलपुर, मालदहसे पश्चिम सभी स्थानमें माघ, फाल्गुन मासमें मञ्जर लगते हैं, और आषाढ महीनेमें आम पकना शुरू होता है। मालवप्रान्तके किसी ग्राममें कवि कालिदासका जन्म हुआ था और वे उज्जयिनीमें रहते थे। मेघदूतमें आषाढ मासमें आमके पकनेकी बात लिखी है। अतएव इन दोमें, चाहे जिस स्थानपर उन्होंने मेघदूतकी रचना की हो, आषाढ़ मासमें वहा आम पक जाते थे। 'छन्नोपान्तः परिणतफलद्योतिभि' काननाम्रैः।' (पू० मे० १८) इसपर मल्लिनाथने लिखा है,—'आषाढे वनचूता फलन्ति पच्यन्ते च मेघवातेन इत्याशयः।' इसमें ऐसा सन्देह हो सकता है, कि और और आम इसके पहले पक जाते हैं। किन्तु वास्तवमें देखा जाता है, कुछ पेड़ोंके सिवा युक्तप्रदेशादि प्रदेशोंमें आषाढ मासमें ही आम पकते हैं। फलतः बंगाल देशसे बहुत पीछे वहां आम पकते हैं। बम्बई, मालदह और लङ्गड़ेका लोग अधिक आदर करते हैं। कलकत्तेसे दक्षिण और आसामप्रभृति अनेक स्थानोंमें पकनेके समय आममें कीड़े पड़ जाते हैं। कुछ आमोंकी अंठलियोंमें एक प्रकारके पतङ्ग होते हैं। पका आम काटने पर वे फरसे उड जाते हैं। इस तरहके कीड़े जन्मनेसे आधा आम खराब नहीं होता। किन्तु अन्य प्रकारके कीट अत्यन्त छोटे होते हैं। पके हुये आममें वे किलबिल किलबिल घूमते फिरते हैं। जिस आममें ऐसे कीड़े रहते है, वह आम खाया नहीं जाता। ये सब कीड़े छोटे-छोटे छेदोंसे आमके भीतर घुस जाते और उसके बाद बढ़े होते हैं।

अम्रगान्धिहरिद्रा (सं० स्त्री०) आम्रहरिद्रा, आंबाहरदी।

अम्रवेतस (सं० पु०) अम्लवेतस, अमलवेत, चूक।

अम्रसार, अम्लवेतस देखो।

अम्लचाङ्गेरी (सं० स्त्री०) चाङ्गेरीभेद, खट्टी अम्बोती या मेह।

अम्लचुक्रिका (सं० स्त्री०) कर्मधा०। चिञ्चाम्ल, खट्टा पालक।

अम्लचुड (सं० पु०) अम्लचुक्रिका देखो।

अम्लजम्बीर (सं० पु०) अम्लरसनिम्बुकवृक्ष, खट्टे नीवूका दरख्त।

अम्लटक (सं० पु०) अश्मन्तक वृक्ष, इसके रेशेसे ब्राह्मणकी मेखला वन सकती है।

अम्लता (सं० स्त्री०) कार्कश्य, खटाई, तुर्शी।

अम्लत्वक् (सं० पु०) प्रियालवृक्ष, चिरौंजीका पेड़।

अम्लदीलक (सं० पु०) चुक्र, खट्टा पालक।

अम्लद्रव (सं० पु०) वीजपूरादिरस, बिजौरे नीवू वगैरहका अर्क।

अम्लद्रव्य (सं० क्ली०) वीजपूरादि, बिजौरा नीवू वगैरह।

अम्लनायक (सं० पु०) अम्लं रसं नयति, अम्ल-नी-ण्वुल्। अम्लवेतस, चूक।

अम्लनिम्बुक (सं० पु०) महाम्ल निम्बुक, खट्टा नीवू।

अम्लनिशा (सं० स्त्री०) अम्ला निशा, कर्मधा०। शठीवृक्ष, आंवाहरदी।

अम्लपञ्चक, अम्लपञ्चफल देखो।

अम्लपञ्चफल (सं० क्ली०) पांच खट्टे फल। कोल, दाडिम, वृक्षाम्ल,चुक्रिका एवं अम्लवेतस अथवा जम्बीर, नारङ्गा, अम्लवेतस, तिन्तिडी एवं वीजपुरसे मिलकर अम्लपञ्चक बनता है।

अम्लपत्र (सं० पु०) अम्लं पत्रं यस्य, बहुव्री०। १ अश्मन्तक वृक्ष। २ दण्डालुक, खाम। ३ क्षुद्रपत्रतुलसीवृक्ष, जिस तुलसीके पेडकी पत्ती छोटी रहे। (क्ली०) ४ चुक्रशाक, खट्टा पालक।

अम्लपत्रक (सं० पु०) १ मेगड़ा, मेडा। २ अश्मन्तक वृक्ष। ३ अम्ललोणिका, लोनिया।

अम्लपत्रा (सं० स्त्री०) शुक्रला, भिण्डी।

अम्लपत्रिका (सं० स्त्री०) चाङ्गेरी, मेह।

अम्लपत्री (सं० स्त्री०) अम्लं पत्रं यस्याः। १ पलाशीलता, गूलर। २ चाङ्गेरी, मेह। ३ क्षुद्राम्लिका, छोटी लोनिया।

अम्लपनस (सं० पु०) अम्लः तद्रसः पनसः, कर्मधा०। लिकुचवृक्ष, मन्दार।

अम्लपर्णिका (सं० स्त्री०) १ वृक्षविशेष, कोई दरख्त २ सुरपर्णी, गूलर इसका गुण—वात, कफ और शूलरोगनाशक है। (वैद्यकनिघण्टु)

अम्लपर्णी, अम्लपर्णिका देखो।

अम्लपादप (सं० पु०) वृक्षाम्ल, इमली।

अम्लपित्त (सं० क्ली०) अम्लात् अजीर्णात् जातं पित्तम्। रोगविशेष, कोई बीमारी। इस रोगसे आहारके बाद उदरमें अम्ल मालूम पड़ेगा। कारण, खाया हुआ पदार्थ पित्तके दोषसे खट्टा हो जाता है। रुक्ष, अम्ल, कटु और उष्ण वस्तुका भोजन ही इसका उपादान निकलेगा। लक्षणमें लिखा है,—

> "विरुद्धदुष्टाम्लविदाहिपित्तप्रकोपि पानान्नभुजोविदग्धम्।
> पित्तं स्वहेतूपचितं पुरा यत्तदम्लपित्तं प्रवदन्ति सन्तः॥
> अविपाक क्लमोत्क्लेशः तिक्ताम्लोद्गारगौरवैः।
> हृत्कण्ठदाहारुचिभिरम्लपित्तं वदेद्भिषक्॥
> तच्चद्विधा————अधोगमूर्ध्वगञ्च।" (माधवनिदान)

साराश यह, कि अविपाक, अरुचि, हृदय एवं कण्ठके दाह, तिक्त अम्लके उद्गार आदिसे अम्लपित्तको पहचानेंगे। शूल देखो।

अम्लपित्तान्तकमोदक (सं० पु०) अम्लपित्तका योगविशेष, जो लड्डू अम्लपित्तको मिटाता हो। इस मोदकके बनानेका विधान यह है,—८ पल शुण्ठी, ८ पल, पिप्पली और ८ पल गुवाकचूर्णको ४ शरावक घृतमें डाल एकत्र भूनेंगे। फिर उसमें दो-दो तोले लवङ्गचूर्ण, वचाचूर्ण, कुष्ठचूर्ण, नागकेशरचूर्ण, यमानीचूर्ण, रक्तचन्दनचूर्ण, रास्नाचूर्ण, कृष्णजीरकचूर्ण, यष्टिमधुचूर्ण, तेजपत्रत्वगेलाचूर्ण, सैन्धव, हवुषाकलचूर्ण, शटीमदनफलचूर्ण, जटामासीचूर्ण, अभ्र, रङ्ग, रौप्य, तालीशचूर्ण, पद्मकाष्ठचूर्ण, मूर्वाचूर्ण, वराहक्रान्ताचूर्ण, वंशलोचन, पिप्पलीमूलचूर्ण, शतावरीचूर्ण, शतपुष्पाचूर्ण, पीतभिण्टीमूलचूर्ण, जातीकोषचूर्ण, जातीफलचूर्ण, काकोलीमुस्तकपिप्पलीकर्पूरविडङ्ग-वनयमानीका चूर्ण, लौह और एक तोले स्वर्ण मिलाकर लड्डू बांधते हैं। (भैषज्यरत्नावली)

अम्लवाटिका (सं० स्त्री०) वाटी एव वाटिका; स्वार्थे कन्-टाप्, ह्रस्व इत्वम्। अम्लस्य वाटिका स्थान मिव, ६-तत्। नागवल्लीभेद, किसी किस्मका खट्टा पान।

अम्लवाटी, अम्लवाटिका देखो।

अम्लवाडक, अम्लवातक देखो।

अम्लवातक (सं० पु०) आम्रातक वृक्ष, अमडेका पेड़।

अम्लवासक (सं० पु०) चाङ्गेरी, अमरूल।

अम्लवास्तुक, अम्लवास्तूक देखो।

अम्लवास्तूक (सं० पु०) अम्लरसान्वितो वास्तूकः, कर्मधा०। चुक्रनाम पत्रशाक, खट्टा पालक।

अम्लविदुल (सं० पु०) अम्लवेतस, अमलवेत, चूका।

अम्लवीज (सं० क्ली०) अम्लस्य वीजं कारणम्, ६-तत्। वृक्षाम्ल, इमली।

अम्लवृक्ष (सं० क्ली०) अम्लरसो वृक्षे यस्य, बहुव्री०। वृक्षाम्ल, इमली।

अम्लवेत, अम्लवेतस और अमलवेत देखो।

अम्लवेतस (सं० पु०) अम्लं रसं वयति सर्वपर्वेषु वहति; वेञ्-उण्-असच् तुट्च, वाहुलकात् न आत्वम्। चुक्र, अमलवेत, तुर्शेह, खट्टा शाक। अमलवेत देखो। अम्लवेतसका गुण कषाय, उष्ण और वात, कफ, अर्श, गुल्म, अरोचक प्रभृति रोगनाशक कहा गया है। "भेदिनी प्रसिद्ध।" (राजनिघण्टु)

यह लघु, दीपन, भेदन और हृद्रोग, शूल, गुल्म प्रभृति रोगनाशक, पित्तकर, रोमहर्षण, रूक्षविट्, मूत्र, प्लीहा, उदावर्त, हिक्का, अरुचि, श्वास, काम, अजीर्ण, वमन, वात, कफ प्रभृति रोगनाशक होता है। (भावप्रकाश)

इसके पके फलमें निम्नलिखित गुण रहेगा,—

"दीपन गुरु दारकव।" (राजवल्लभ)

अम्लशाक (सं० पु०) अम्लोऽम्लः शाको यस्य, बहुव्री०। १ चुक्र, चूका। यह अत्यम्ल होता और वात, दाह एवं श्लेष्माको दूर करता है। शकर या चीनी मिलाकर खानेपर इससे दाह, पित्त और कफ मिट जायेगा। (राजनिघण्टु)

अम्लशाकाख्य (सं० क्ली०) चुक्रनामकपत्रशाक, चूका।

अम्लष्टा (सं० स्त्री०) चाङ्गेरी, सेह।

अम्लसरा (सं० स्त्री०) नागवल्लीभेद, किसी किस्मका पान।

अम्लसार (सं० पु०) अम्लरस एव सारः प्रधानं यस्य। १ चुक्र, चूका। २ निम्बुक, नीबू। ३ हिन्ताल वृक्ष। (क्ली०) ४ काञ्जिक, कांजी। ५ चुक्रनामक काञ्जिकभेद, किसी किस्मकी कांजी। ६ भातका मांड।

अम्लसारक (सं० क्ली०) १ काञ्जिक, कांजी। २ चुक्रनामक काञ्जिकभेद, किसी किस्मकी कांजी।

अम्लस्तम्भनिका (सं० स्त्री०) तिन्तिडी, इमली।

अम्लहरिद्रा (सं० स्त्री०) अम्ला अम्लरसाधिका हरिद्रा, कर्मधा०। शटीवृक्ष, आंवाहलदी।

अम्ला (सं० स्त्री०) अम-उण-क्त; अम्लरसोऽस्त्यस्याम्, अर्श आदि०-अच् ततः टाप्। १ चाङ्गेरी, आमरूल। २ वनमातुलुङ्ग, बिजौरा। ३ नागवल्लीवृक्ष। ४ तिन्तिडी, इमली।

अम्लाक्त (सं० त्रि०) अम्लीकृत, खट्टा किया हुआ, जो तुर्श हो गया हो।

अम्लाङ्कुश (सं० पु०) अम्लं अङ्कुशः अङ्कुशाकाराग्रं यस्य बहुव्री०। चुक्र, अम्लवेतस, चूका।

अम्लाटन (सं० पु०) १ महासहावृक्ष, कोई झाड़ी, कटसरैया। यह कषाय, मधुर, तिक्त, उष्णवीर्य और स्निग्ध होता है। (भावप्रकाश) २ गर्भवेदनाहर योग, हमलका दर्द मिटानेवाली दवा। (चिकित्सासारसंग्रह)

अम्लाढ्य (सं० पु०) अरुणनिम्बुक, नारङ्गीका दरख्त।

अम्लात, अम्लातक देखो।

अम्लातक (सं० पु०) अम्लं रस अतति गच्छति प्राप्नोति; अम्ल अत-ण्वुल्, ६-तत्। अम्लवेतस, चुक्र, अमलवेत, चूका।

अम्लातकी (सं० स्त्री०) पलाशीलता, सेह।

अम्लादन (सं० पु०) आद्यते, अद कर्मणि ल्युट्; अम्लं अदनं भक्ष्यम्, कर्मधा०। कुरण्टकवृक्ष, पीली लोनिया।

अम्लाटान, अम्लादन देखो।

अम्लादि (सं० पु०) १ तिन्तिडी, इमली। २ चुक्रनामक पत्रशाक, चूकेकी भाजी।

अम्लाध्युषित (सं० पु०-क्ली०) १ सर्वगताक्षिरोग,

५ प्रजापतिविशेष। ६ गमन, रवानगी। (त्रि०) ७ गमनकर्ता, जानेवाला। (हिं० पु०) ८ मोहा। ९ अग्नि, आग। (सम्बो०) १० हे, अरे।

अयं (सं० सर्व०) यह, इसने।

अय:पान (सं० क्ली०) अयो द्रवीभूतं तप्तलौहं पीयते अत, अधिकरणे ल्युट्। नरकविशेष, किसी दोजखका नाम। इस नरकमें जानेसे यमदूत पापीको तप्त और अग्निवर्ण लौह पिला देते हैं।

अय:प्रतिमा (सं० स्त्री०) अयस: प्रतिमा, ६-तत्। लौहप्रतिमा, सूर्मी, स्थूणा, बुत-आहनी, लोहेकी मूर्ति। 'सूर्मी स्थूणाय:प्रतिमा।' (अमर)

अय:शूल (सं० क्ली०) रन्ध्रादि करणे अयस: शूलमिव, ६ तत्। अय:शूलदण्डाजिनाभ्यां ठक्ठञौ। पा ५।२।७६। १ लौहनिर्मित तीक्ष्ण अस्त्रविशेष, लोहेका कोई तेज़ हथियार। २ अपराधीके प्राणदण्ड निमित्त लौहकीलक, फांसी चढ़नेको सूली। ३ तीक्ष्ण उपाय, कड़ी तदबीर। अयस: शूलमिव सन्तापकम्। ४ शूलरोग, दर्द-शिकम्, पेटकी पीड़ा।

अयक्ष्म (वै० त्रि०) नास्ति यक्ष्मा यस्य, वेदे अच् समा०। १ रोगशून्य, नीरोग, तनदुरुस्त, भला-चङ्गा। नास्ति यक्ष्मा रोगविशेषो यस्य। २ अयक्ष्मा, क्षयरोग-शून्य, ग़ैरमदक़ूक़, जिसे छईकी बीमारी न रहे। ३ स्वास्थ्यकर, सेहतबख्श। (क्ली०) ४ स्वास्थ्य, तनदुरुस्ती।

अयक्ष्मकरण (सं० त्रि०) स्वास्थ्यकर, सेहतबख्श।

अयक्ष्मताति (वै० स्त्री०) १ क्षयरोगको शून्यता, छईकी बीमारीका न होना। २ स्वास्थ्य, तनदुरुस्ती।

अयक्ष्मत्व (वै० क्ली०) अयक्ष्मताति देखो।

अयक्ष्ममाण (सं० पु०) वलिदानकी अनिच्छा, कुर्बानी करनेकी ख्वाहिशका न होना।

अयजनीय (सं० त्रि०) १ यज्ञमें आदर पानेके अयोग्य। २ निन्दित, बदनाम।

अयजुष्क (वै० त्रि०) यज्ञीय पदसे रहित।

अयज्ञ (सं० त्रि०) नास्ति यज्ञो अस्य, नञ्-बहुव्री०। १ अकृतयज्ञ, यज्ञ न करनेवाला। (पु०) २ यज्ञका अभाव। ३ अनुत्तम यज्ञ।

अयज्ञक (सं० त्रि०) यज्ञके अयोग्य, जो यज्ञके काबिल न हो।

अयज्ञदत्त (सं० पु०) न यज्ञदत्त, दुष्ट यज्ञदत्त, जो यज्ञदत्त फ़क़ीर हो।

अयज्ञसाच् (वै० त्रि०) यज्ञ न करनेवाला, जो तुच्छ यज्ञ करता हो।

अयज्ञिय (सं० त्रि०) यज्ञं अर्हति; यज्ञ-घ, ततो नञ्-तत्। यज्ञमें देनेको अयोग्य, जो यज्ञमें देने काबिल न हो।

अयज्यु (सं० त्रि०) यजति; यज युच्, ततो नञ्-तत्। यज्ञ न करनेवाला, जो अध्वर्यु न हो, ख़राब।

अयज्वन् (सं० पु०) विधिना इष्टवान्; यज-क्वनिप्, ततो नञ्-तत्। अकृतयज्ञ, यज्ञ न करनेवाला।

अयणाचार्यसूनु—विष्णुमाहात्म्यपद्धति-रचयिता।

अयत् (सं० त्रि०) निश्चेष्ट, चेष्टा न करनेवाला, जो कोशिश कर न रहा हो।

अयत (सं० त्रि०) यम-क्त, ततो नञ्-तत्। १ अकृतयम, नियमहीन, जो इन्द्रियके दमनमें अशक्त हो, परहेज़ न रखनेवाला, वेक़ायदा, जो इन्द्रियको रोक न सकता हो। यतते; यत-अच्, नञ्-तत्। २ यत्नशून्य, वेतदबीर, कोशिश न करनेवाला।

अयतेन्द्रिय (सं० त्रि०) इन्द्रियको यममें न रखनेवाला, जिसकी इन्द्रिय चलायमान रहे।

अयत्न (सं० पु०) न यत्न:, अभावे नञ्-तत्। १ यत्नका अभाव, आयासाभाव, वेतदबीरी। (त्रि०) नास्ति यत्नो यस्य, बहुव्री०। २ यत्नशून्य, वेतदबीर, कोशिश न करनेवाला।

अयत्नकारिन् (सं० त्रि०) आयासशून्य, चिन्तारहित, शिथिल, तदबीर न लड़ानेवाला, वेपरवा, सुस्त, काहिल।

अयत्नकृत (सं० त्रि०) सरल अथवा प्रस्तुत रूपसे उत्पन्न किया हुआ, स्वत:प्रवर्तित, जो आसानीसे या फ़ौरन् निकल आया हो।

अयत्नज, अयत्नकृत देखो।

अयत्नतस् (सं० अव्य०) विना चेष्टा, वेतदबीर लड़ाये, खुद-ब-खुद, आप ही आप।

अयथावत् (सं॰ त्रि॰) अव्यवस्थ, निश्चेष्ट, शिथिल, नाकाम, बेपरवा, सुस्त, जो तदबीर न बढ़ाता हो।

अयथा (सं॰ अव्य॰) न यथा तुल्ययोग्यत्वे, नञ् तत्। १ विरुद्धता या अनुपयुक्त रूपसे, नामुनासिब या नाकाबिल तौरपर। (त्रि॰) नास्ति यथा तुल्य योग्यता यस्य यत्र वा बहुव्री॰। २ अयोग्य नालायक। अयत्न, बेतदबीर, दौड़-धूप न लगानेवाला। ३ मिथ्या, झूठ। (पु॰) ४ अयोग्य कर्म, नाकाबिल काम।

अयथातथ (सं॰ त्रि॰) यथा योग्यं तथा न भवति, नञ्-तत्। १ अयथा, नामुनासिब। २ निष्प्रयोजन, निरर्थक बेकाम बेफायदा, फ़जूल। (अव्य॰) ३ निरर्थक रूपसे नाकाबिल तौर पर। (क्ली॰) ४ अयथातथ्य अयथार्थका भाव, नामुनासिबत।

अयथातथ्य (सं॰ क्ली॰) अनुरूपताका अभाव, अयुक्तता अनौचित्य अयोग्यता, असदृशता, नामुवाफिकत, नामुनासिबत।

अयथाद्योतन (सं॰ क्ली॰) अनपेक्षित विषयकी सूचना, गैरमुतवक्किअ बातकी खबर।

अयथापूर्व (सं॰ त्रि॰) अभूतपूर्व, अदृष्टपूर्व, ग़ैर मामूल, जिसकी नज़ीर न मिले।

अयथाबल (सं॰ अव्य॰) अपनी बलके विपरीत, अपनी ताक़तके खिलाफ़।

अयथामात्र (सं॰ त्रि॰) मापके उलटा, मापसे खिलाफ।

अयथासुखीन (सं॰ त्रि॰) सुख फेरे हुआ, जो चैनसे भुलाये हो।

अयथार्थ (सं॰ त्रि॰) नास्ति यथा अर्थो यस्य, नञ् बहुव्री॰। १ मिथ्याभूत, मानी या मतलबके मुवाफिक न रखनेवाला, बेमानी। २ अयोग्य नामुनासिब नाकाबिल।

अयथार्थज्ञान (सं॰ क्ली॰) मिथ्या आभास, झूठी समझ।

अयथार्थबुद्धि (सं॰ स्त्री॰) अर्थव्यभिचारी अप्रमात्व ज्ञान। (न्यायमत)

अयथार्थानुभव (सं॰ पु॰) अप्रमात्मक अर्थानुसन्धेय। (विश्वनाथदीपक)

अयथावत् (सं॰ अव्य॰) यथा योग्य रूपमर्हति, यथार्थं यति, ततो नञ् तत्। अननुरूप, गलतीसे, नादुरुस्तीसे।

अयथाशास्त्रकारिन् (सं॰ त्रि॰) शास्त्रके अनुसार काम न करनेवाला, अधार्मिक बुरा, खराब।

अयथेष्ट (सं॰ अव्य॰) इष्टमनतिक्रम्य, यथेष्टम्, ततो नञ् तत्। १ इच्छाके विरुद्ध मर्जीके खिलाफ। (त्रि॰) अर्श आदि॰ अच्। २ अधिक थोड़ा, कम।

अयथोचित (सं॰ त्रि॰) अनुपयुक्त, नाकाबिल, जो मुनासिब न हो।

अयन (सं॰ क्ली॰) अय-ल्युट् वा भावे ल्युट्। १ गमन। २ सूर्य एवं चन्द्रमाका दक्षिणसे उत्तर और उत्तरसे दक्षिण गमन। ३ पथ। ४ स्थान आश्रय। ५ काल। ६ अयनगामी संक्रान्ति। "अयने विषुवे [illegible]।" (स्मृति) ७ ग्रह अयनसाधन शास्त्र। ८ सैन्यनिवेश रूप व्यूह प्रवेशका पथ। ९ राशिचक्रका क्रान्तिवृत्तास्थ स्थान विशेष। १० अंश। ११ अयनाभिमानी देवताका याग विशेष। १२ सूर्यके उत्तर और दक्षिण दिशामें जानेका काल।

तीन ऋतुका एक अयन और दो अयन का एक वर्ष होता है।

> द्वौ द्वौ माघादिमासौ स्यादृतुस्तैरयनं त्रिभिः।
> अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य वत्सरः॥ (अमर)

पहले सब देशके मनुष्योंका ऐसाही विश्वास था कि पृथिवी समतल भूमि है। सूर्य, चन्द्रप्रभृति ग्रहगण इस पृथिवीको केन्द्र कर घूमते फिरते हैं। आखिर हमारे देशके आर्यभट्टने लोगोंका यह भ्रम दूर कर दिया, तो भी वह सूर्यकी ठीक गति स्थिर कर न सके। आजकल युरोपमें ही ज्योतिष शास्त्रकी विशेष उन्नति हुई है। सूर्य एक स्थानमें है, परन्तु स्थिर नहीं है। यह अपनी ही स्थानमें पचीस दिनमें एक बार घूम जाता है। पृथिवी चन्द्र एवं और भी अनेक ग्रह सूर्यके चारो ओर घूमते हैं। इन सब विषयोंको युरोपीय पण्डितोंने सुचारुरूपसे निश्चित किया है।

पृथिवी वर्ष भरमें एक बार सूर्यके चारो ओर घूम जाती है। फिर चौबीस घण्टेमें आप भी एक बार घूमती

है। किन्तु सहज विवेचनामें पृथिवीकी गति ठीक सूर्यकीही गति जान पड़ती है। इसके अतिरिक्त पृथिवी पश्चिम दिशासे पूर्व दिशामें घूमकर आती है। सहज दृष्टिमें यह भी ठीक विपरीत दिखाई देता है।

राशिचक्र ३६० अंशोंमें विभक्त है। राशिचक्रमें,—मेष, वृष, मिथुन, कर्कट, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन यही बारह राशि हैं। अतएव एक एक राशिका परिमाण ३० अंश है। राशिचक्रमें २७ नक्षत्र हैं। इसलिये दो पूर्ण नक्षत्र और एक का एक चरण लेकर एक राशि होता है। अर्थात् प्रत्येक नक्षत्रका परिमाण १३अंश २० कला है। पृथिवीकी मध्यरेखा एवं भचक्रकी मध्यरेखा जहां समसूत्रपातमें मिली उसका नाम क्रान्तिपात है। इस क्रान्तिपातके ऊपरसे उत्तर दक्षिणकी ओर लम्बी जिस एक रेखाकी कल्पना की जाती है, उसे विषुवरेखा कहते हैं। इस देशके ज्योतिषानुसार इस तरहकी गणना की जाती है, कि सूर्य इस रेखासे २७ अंश उत्तर और २७ अंश दक्षिणमें गमनागमन करता है। उसी गतिका नाम अयनगति और उसके एक एक अंशका नाम अयनांश है। किसी किसीके मतमें ६६ वर्ष ८ मासमें एक एक अयनांशकी गति समाप्त होती है। इसलिये ५४ अंश जानेमें ३६०० वर्ष लगते हैं। किन्तु एक एक अयनांश बीतते ७२ वर्ष लगते यही अनेक मनुष्य स्वीकार करते हैं। अयनांश गति द्वारा दिवारात्रका व्यतिक्रम होता है। संप्रति अयनांश २०।४६।१० है, इसलिये इस समय १० आश्विन और १० चैत्रको दिवारात्रि समान होती है। जिस बार अयनांश शून्यमें आ पड़ेगा, उस वर्ष ३० आश्विन और ३० चैत्र को दिवारात्रि समान होगी। कारण, उस दिन सूर्य क्रान्तिपातमें आ उपस्थित होता है। उसके बाद अयनांश जितना बढ़ता है, उतना ही पीछे आकर दिवारात्रि समान होती है। अयन, अयनांश अयनसंक्रान्ति इत्यादिका विशेष विवरण एवं चित्र प्रभृति,—चन्द्र, पृथिवी और सूर्य शब्दमें देखो। आयन-अयनसाध्य, अयनसम्बन्धीय, आयनिक, अयनजात। (स्त्री०) आयनिकी।

अयनकाल (सं० पु०) अयनाधारः कालः, मध्यपदलोपी ६-तत्। अयनांशस्थित काल, ऐतिदाल-लैलोनिहारवाले नुकतोंके बीचका वक्त।

अयनचलन (सं० क्ली०) अयनस्य चलनं वलनं वा, ६-तत्। अयनांशका पूर्व वा पश्चिमके स्थानान्तरको चलन, नुकतायेतिदाल-लैलोनिहारकी मगारिक या मगरिब किसी दूसरी जगहको रवानगी।

अयनज (सं० पु०) अयनात् राशीनां स्वस्वस्थानचलनात् जायते,, जन-ड। अयनांशजात मासादि, नुकतायेतिदाल-लैलोनिहारसे निकला महीना वगैरह।

अयनदेवता (सं० स्त्री०) मार्गके निकट रखी हुयी देवी या मूर्ति।

अयनभाग (सं० पु०) अयनस्य बोधको भागः शाक०-तत्। अयनांश, मुकर्रर मिन्तकत-उलबुरूज या इसलवाले पहले नुकतेके शुरू और बहारी ऐतदिल-उलनहारके मुत-अल्लिक नुकतेके बीचका कमान।

अयनमण्डल (सं० क्ली०) ६-तत्। राशिचक्र और राशिचक्रस्थ सूर्यके गमनका पथ, मिन्तकत उल बुरूज। (Ecliptic)

अयनमास (सं० पु०) अयन-निरूपितो मासः, शाक०-तत्। अयनांशानुसार दिनमानादिके ज्ञानार्थ कल्पित मास, जो महीना नुकते-येतिदाल-लैलोनिहारके मुवाफ़िक दिनका मिकदार वगैरह जाननेको फर्ज़ कर लिया जाता हो।

अयनवलन, अयनचलन देखो।

अयनवृत्त, अयनमण्डल देखो।

अयनसंक्रम (सं० पु०) अयनांशानुसारेण संक्रमः, शाक०-तत्। मेषादि राशिके अयनांशमें ग्रहगणका सञ्चार।

अयनसंक्रान्ति (सं० स्त्री०) अयनघटिता संक्रान्तिः, शाक०-तत्। १ सूर्यकी दक्षिणायनघटित संक्रान्ति, कर्कट-संक्रान्ति। २ सूर्यकी उत्तरायणघटित संक्रान्ति, मकरसंक्रान्ति। ३ चन्द्र-संक्रान्ति।

अयनसंपात (सं० पु०) अयनांशका पतन, नुकतायेतिदाल-लैलोनिहारका गिराव।

अयनांश (सं० पु०) सूर्यगति विशेषका भाग, जो हिस्सा चाव्‌ताक्‌को किसी चालका हो।

अयनांशज (सं० पु०) अयनांशात् जायते, अयनांश-जन-ड। प्रथम क्रान्तिवृत्तान्तर स्थानको परिभ्रमकर उत्पन्न होनेवाला मास जो महीना मुक्‌ता-मैलिदाम लेकोनिहारकी भांचकर निकला हो।

अयनान्त (सं० पु०) अयनकी सीमा, मुक्‌ता-मैलि-दाम-लेकोनिहारका घातिसा।

अयन्त्र (वै० स्त्री०) १ अबाध्यता, मनमानी। २ यन्त्र विशेष कोई हथियार। यह यन्त्र अतिशय मोचन होता और मनुको रोक रखता है।

अयन्त्रित (सं० त्रि०) अबाध्य, स्वतन्त्र, खुद इख्तियार, मनमौजी, जो रोक टोक न मानता हो।

अयःपान (सं० क्ली०) नरक विशेष कोई दोज़ख। इसमें यमदूत पापीको तप्त-तरल लौह पिलाते हैं।

अयःप्रतिमा (सं० स्त्री०) लौहमूर्ति, लोहेका बुत।

अयम—सुप्रसिद्ध चम्पय नृपति नयपालके मन्त्री। इनकी वे सुन्दरमठमें जो शिलालेख मिला, उसपर लिखा है,—इन्होंने एक तालाब खुदवाया और एक भवन बनवाया था। इनका वंश बलुमगोत्रमें हुआ रहा।

अयमित (सं० त्रि०) प्रतिबन्धरहित, अनिवारित, रोका न हुआ, जो कटा न हो।

अयव (सं० पु०) अस्मो यव नहमो वा, नञ् तत्। १ विलाजात कृमिविशेष, मोचरोका कीड़ा। (स्त्री०) यु मिश्रणे कर्तरि अच्, ततो नञ् तत्। २ चन्द्र और सूर्यका वियोजक कृष्णपक्ष, अंधेरा पाख। (त्रि०) नास्ति यवो यवप्राग्भवत्वात् यत्र। ३ यवहीन जिसमें यव न लगी। पित्तश्लेष्मादि तिक्तसाध्य होता, उसमें यवका प्रयोजन नहीं पड़ता।

अयवक (सं० त्रि०) यवरहित, दुष्टयवसंयुक्त, जिसमें यव न रहे, बुरे यववाला।

अयवन् (सं० स्त्री०) कृष्णपक्ष अंधेरा पाख।

अयवस् (सं० पु०) न युतः मिलित चन्द्रसूर्यौ यत्र यु धातोरे असुन्। पर्वमास पक्ष। हमारे प्राप्त कारीके मतसे पर्वमास अर्थात् पूर्णिमाको चन्द्र एव सूर्य अति दूरवर्ती भसम राशिमें रहता किसी तरह मिलन नहीं होता, इसलिये पर्वमास अयवा कह-लाता है।

अयविका (सं० स्त्री०) अयव देखो।

अयव्य (सं० त्रि०) यवके अयोग्य जो यवके काबिल न हो।

अयःशय (वै० त्रि०) लोहमें बैठनेवाला, लोहेका बना हुआ।

अयःशिप्र (वै० त्रि०) लौह हनु वा नासा विशिष्ट, जिसका जबड़ा या नाक भारनी रहे।

अयःशीर्षन् (वै० त्रि०) लौह-शिरस् विशिष्ट, जिसका सर भारनी रहे।

अयःशूल (सं० क्ली०) १ लौहमाल, लोहेका भाला। २ सम्भात्र उपाय, भोमिकी तदबीर।

अयःस्थूण (सं० त्रि०) १ लौहस्तम्भ विशिष्ट, जिसमें भाडनो खम्भे लगें। (पु०) २ ऋषिविशेष।

अयस (हिं०) अयस देखो।

अयशस् (सं० क्ली०) अयशं इलायते; अन् यशस् बुट् च, विरोधे नञ् तत्। १ यशका विरोधी अपवाद, अकीर्ति बदनामी। (त्रि०) नास्ति यशो यस्य, नञ्-बहुव्री०। कीर्तिशून्य, बदनाम नागवार।

अयशस्कर (सं० त्रि०) यशस्-कृ तापिच्छादौ-ट, ततो नञ्-तत्। अकीर्तिकर, अपवादजनक, बदनाम करनेवाला, जिससे हिकारत रहे।

अयशस्य (सं० त्रि०) यशसो हितम् हितार्थे यत्, विरोधे नञ् तत्। कीर्तिशून्य बदनाम।

अयशस्वी (सं० त्रि०) कीर्तिशून्य बदनाम।

अयशी अयशस्वी देखो।

अयश्चूर्ण (सं० क्ली०) लौहकिट्ट, लौहज लोहेका बुरादा या रेत।

अयस् (सं० क्ली०) एति गमयति अयसात्स गमि कर्मभात्। १ लौहमात, लोहा। २ कान्त लौहजुम्बक, चिड़ोका लोहा। एति गच्छति अङ्गमायबादिद्र्व्य शरीर मध्यमय मस्मिमातादिना वा मुहयात् मुहया मर्त गच्छत्यनेन धर्मदानादिना वा। ४ हिरण्य, सोना। मावे असुन्। ५ गमन, रवानगी। अयना निमित्तम्, अन्। ६ धावन, लोहेका हवा वमरह। (पु०) ७ अग्नि, आग।

अयस, अयम् देखो।

अयस्कंस (सं० पु०-क्ली०) अयो विकार: कंस: अयसो वा कंस: पात्रं सत्वम्। लौहनिर्मित पानपात्र, लोहेका कटोरा या आबखोरा।

अयस्कर्णी (सं० स्त्री०) अय इव कर्णावस्या:, सत्वं ङीप्। लौहतुल्य कठिन कर्णयुक्त स्त्री, जिस औरतके कान लोहे-जैसे कड़े रहें।

अयस्काण्ड (सं० पु०-स्त्री०) लौहबाण, लोहेका तीर।

अयस्कान्त (सं० पु०) अयस्सु मध्ये कान्त: रमणीय:, ७-तत्; कस्कादित्वात् सत्वम्। १ कान्तिलौह नामक लौहविशेष, खेड़ीका लोहा। अयसा कान्त: प्रिय:, नैकव्यमात्रेण। २ कान्तपाषाण, चुम्बकपत्थर। यह लिखन, शीत और मेदोविपन्न होता है चुम्बक देखो। ३ शल्य उद्धार चिकित्सा, जिस इलाजमें चुभे हुये हथियारके निकालनेका काम रहे।

अयस्कान्तशिला (सं० स्त्री०) लौहचुम्बक, चुम्बक पत्थर।

अयस्काम (सं० वि०) अयो लौहं कामयते; अयस्-कम् अण्-उपस० सत्वम्। लौहाभिलाषी, जिसे लोहा पानेकी ख्वाहिश रहे।

अयस्कार (सं० पु०) अयो विकार. करोति; अयस्-कृ अण्, उप-स० सत्वम्। १ लौहकार, लोहार। २ जङ्घाका ऊर्ध्वभाग, टांगका ऊपरी हिस्सा।

अयस्कीट (सं० पु०) लौहकिट्ट, लोहेका जङ्ग।

अयस्कुम्भ (सं० पु०) अयो विकार: कुम्भ: सत्वम्, शाक०-तत्। लौहनिर्मित घट, लोहेका घडा।

अयस्कुशा (सं० स्त्री०) अय: सहिता कुशा, शाक०-तत्। लौह-सहित वल्गा, जिस रस्सीमें कुछ-कुछ लोहा लगा रहे।

अयस्कृति (सं० स्त्री०) अयसा कृति: चिकित्सा भेद:, ३-तत्। महाकुष्ठका चिकित्साविशेष।

अयस्ताप (सं० वि०) लौहको उष्ण रक्तवर्ण बनानेवाला, जो लोहेको तपा लाल कर डालता हो।

अयस्थूणा (सं० स्त्री०) अयो निर्मिता स्थूणा, शाक०-तत् वा विसर्गलोप:। १ लौहमय गृहस्तम्भ, लोहेका खम्भा। 'स्थूणा अयस्मय' (ऋग्वेद) २ लौहप्रतिमा, लोहेका बुत। (पु०) अयो निर्मिता स्थूणा यस्य; ६-बहुव्री०, शेषि ह्रस्व.। ३ लौहस्थूणायुक्त गृहस्थ, जिस आदमीके घरमें आहनी खम्भा लगा रहे। ३ ऋषिविशेष। (वि०) ७बहुव्री०। ४ अयोमय अक्षयुत, लोहेकी धुरीवाली। अयस्थूण शब्द शिवादिगणके मध्य आया है।

अयस्पात्र (सं० क्ली०) अयोमयं पात्रम्, मध्यपदलोपी कर्मधा०। लौहमय पात्र, लोहेका बरतन।

अयस्मय (सं० वि०) अयो विकार:, अयस्-मयट्। अयस्मयादीनि छन्दसि। पा १।४।२०। १ लौहमय आहनी, लोहेका। (पु०) २ मनु स्वारोचिषके पुत्रविशेष।

अयस्मयी (सं० स्त्री०) असुरस्के तीन निवासस्थानमें एक।

अया (वै० अव्य०) इस रीतिसे, ऐसे, इसतरह, यों।

अयां (अ० वि०) १ प्रकाशित, खुला हुआ। २ साफ, जो भ्रमात्मक न हो।

अयाचक (सं० वि०) याच्ञा न करनेवाला, जो मांगता न हो। (स्त्री०) अयाचिका।

अयाचित (सं० क्ली०) याच क्त याचितम्, नञ्-तत्। १ अमृताख्य वृत्ति, न मांगनेकी हालत। (पु०) २ उपवर्ष ऋषिका नाम विशेष। (वि०) ३ अप्रार्थित, न मांगा हुआ, जिससे कोई चीज मांगी न जाये। (अव्य०) ४ विना याच्ञा, बेमांगे।

अयाचितवृत्ति (सं० स्त्री०) याच्ञा हीन भैक्ष्यपर निर्वाह, बेमांगी खैरातपर गुजरका करना।

अयाचितव्रत (सं० क्ली०) अयाचितवृत्ति देखो।

अयाचिन् (सं० वि०) याच्ञा न करते हुआ, जो मागता न हो।

अयाची, अयाचिन् देखो।

अयाच्य (सं० वि०) याच्ञाके अयोग्य, जो मांगनेकाबिल न हो।

अयाज्य (सं० वि०) न याजयितुमर्हः; यज-णिच्-यत्, नञ्-तत्। १ बलिदानके अयोग्य, जिसके लिये कुरबानी करना मुनासिब न ठहरे। २ पतित, गिरा हुआ। ३ यज्ञ करनेके अयोग्य। ४ धार्मिक अनुष्ठानमें प्रवेश पानेके अयोग्य।

अयाज्यत्व (सं॰ क्ली॰) पतित होनेका भाव, गिर जानेकी हालत।

अयाज्ययाजक (सं॰ पु॰) पतित व्यक्तिको यज्ञ करानेवाला पुरुष।

अयाज्ययाजन (सं॰ क्ली॰) अयाज्यानां याजनम्, ६ तत्। अयाज्य पतितादिका याजन पतितादिका यागपूजादि करना, पतितादिसबको याग किंवा पूजादि कराना।

अयाज्यसंयाज्य (सं॰ क्ली॰) अयाज्यस्य पतितादेः सम् सम्यक् याज्यम् ६ तत्, अयाज्य सम् यज णिच् यत्। अयाज्ययाजन देखो।

अयातपूर्व (सं॰ त्रि॰) अनुग, अनुयायी, अगला, दूसरा, आयन्दा।

अयातयाम (सं॰ त्रि॰) यातो गतः यामः प्रहर-कालो यस्य नञ्-तत्। १ बलिष्ठ, जो कमज़ोर न हो। २ प्रयोग करनेसे न बिगड़ा हुआ, जो इस्तेमाल कर लिये खराब न हुआ हो। ३ नूतन, टटका। ४ एक प्रहर न बिताये हुआ जिसको एक पहर न लगा हो। ५ विगतदोष, बेऐब। ६ जिसका काम बीत न जाये, मौक़ेका। ७ परिशुद्ध न होनेवाला, जो खाया न गया हो। (क्ली॰) ८ याज्ञवल्क्य द्वारा आविष्कृत यजुर्वेदका अंश विशेष।

अयातयामता (वै॰ स्त्री॰) अनभिभूत बल, नयो लता, ताज़गी, जो ताक़त बिगड़ी न हो।

अयातयामन् (वै॰ त्रि॰) बलिष्ठ, नूतन ताज़ा, जो कमज़ोर न हो।

अयातु (वै॰ त्रि॰) या तु, नञ् तत्। १ राक्षसभिन्न, अहिंसक, न मारनेवाला, जो शैतान् न हो। (पु॰) २ देवता, राक्षस न होनेवाला व्यक्ति।

अयाथातथ्य, आयथातथ्य (सं॰ क्ली॰) न यथातथा भावः, ष्यञ्, नञ् तत्। १ मिथ्यात्व, नारास्ती झूठापन। २ अयथार्थत्व, ग़ैर मुनासिबत, जो बात ठीक न हो।

अयाथार्थिक (सं॰ त्रि॰) १ अनुचित, अयोग्य, ग़ैर मुनासिब जो ठीक न हो। २ कृत्रिम कल्पित, बनावटी, मसनूयी, जो असली न हो।

अयाथार्थ्य (सं॰ क्ली॰) अनौचित्य, अयोग्यता, ग़ैर मुनासिबत, नामुनासिबत।

अयान (सं॰ क्ली॰) नास्ति यानं चलनं यस्य, नञ्-बहुव्री॰। १ स्वरूप, प्रकृति, स्वभाव, सूरत, कुदरत, तबीयत। २ यज्ञ। नञ्-तत्। ३ गमनाभाव, ठहराव, मुक़ाम। (त्रि॰) नास्ति यानं वाहनं गतिर्वा यस्य, नञ् बहुव्री॰। ४ वाहनहीन, बेसवारी। ५ गतिहीन, न चलनेवाला, जो जाता न हो।

अयानत (अ॰ स्त्री॰) सहाय्य, सहारा।

अयानप (हिं॰ पु॰) १ ज्ञानका अभाव, बेसमझी, समझ न आनेकी हालत। २ सादगी, भोलापन, टेढ़े न पड़नेकी हालत।

अयानपन अयानप देखो।

अयानय (सं॰ पु॰) अयः प्रदक्षिणम्, अनयः प्रसव्यम्; प्रदक्षिण प्रसव्यगामिनां शाराणां यस्मिन् परस्परं पदानामसमावेशः। [illegible] १ पासकीड़ाका गोटस्थान्, जिस स्थानमें गोटके जानेसे विपक्षको गोट कोई अनिष्ट कर न सके। (क्ली॰) २ पासकीड़ा विशेष।

अयानयीन (सं॰ पु॰) गोटस्थानगामी पासा, जो गोट खंदी जगह पहुंच गयी हो।

अयानी (हिं॰ स्त्री॰) अज्ञानी, जिस औरतको समझ न रहे।

अयाल (फा॰ पु॰) १ केसर, घोड़े और शेरके गलेका बाल। (अ॰) २ सन्तान-सन्तति, बाल-बच्चा।

अयावक (सं॰ त्रि॰) यावकविहीन, महावरसे खाली, प्रकृत रक्तवर्ण, जो कुदरतन् लाल हो।

अयावन (सं॰ क्ली॰) योग करानेका अभाव, जिस हालतमें मिला न सकें।

अयाश (वै॰ त्रि॰) अयं अश्नाति, अय अश-अण्। राक्षस, सम्पर्कमें अयोग्य, जो साथ रखने क़ाबिल न हो।

अयास् (वै॰ अव्य॰) एति गच्छति सर्वत्र, इण्-आसि। अग्निमें आगपर। [illegible]

([illegible])

अयास्य (वै॰ त्रि॰) अस् क्षिप्-यत्, नञ्-तत्।

१ क्षेपण करानेको अशक्य, जो फेंकवा न सकता हो। २ यापन करनेको अशक्य, जो विताया न जा सकता हो। ३ क्षेपण न किया जानेवाला, जिसे फेंक न सकें। ४ युद्ध द्वारा वश किये जानेको अशक्य, जिसे लड़कर मातहत न बना सकें। (पु०) आस्यात् मुखादयते वहिर्गच्छति; इण्-अय वा अच्, ततः पृषो० पदव्यत्ययः। ५ मुखसे वहिर्गामी वायु, जो हवा मुहसे बाहर निकलती हो। ६ अङ्गिरा वंशके मुनिविशेष। यह सकल लोकके बन्धु-स्वरूप रहे।

अयासोमीय (वै० क्ली०) सामवेदका मन्त्र विशेष।

अयाह्व (सं० क्ली०) कान्स्य धातु, कांसा।

अयि (सं० अव्य०) १ क्या, क्यों। २ अच्छा, खूब। ३ ए, ओ। ४ प्यारी, प्यारे। ५ आयिये, पधारिये। यह अव्यय प्रश्न, अनुनय, सम्बोधन, अनुराग एवं सस्नेह आमन्त्रणमें आता है।

'अयि मिरे प्रीतिमतां सुरारी।' (नैषिधराज)

अयुक्छद (सं० पु०) न युज्यन्ते समतया असमाः छदाः पत्राण्यस्य। सप्तपर्णी वृक्ष, सतनो। सतनी पेड़की हरेक डालमें अलग अलग सात पत्ते रहते, इसीसे उसे अयुक्छद कहते हैं।

अयुक्त (सं० त्रि०) युज-क्त, नञ्-तत्। १ अन्य विषयमें मनोयोग हेतु कर्तव्य विषयसे अनवहित, जो दूसरी बातमें दिल लग जानेपर फर्ज़से अलाहिदा हो। २ असंयुक्त, जुदा, जो मिला न हो। ३ अनियोजित, जो लगा न हो। ४ कसा न हुआ, जिस पर काठी वगैरह न चढ़े। ५ अयोग्य, नालायक़। ६ वहिर्मुख, भगा हुआ। ७ युक्तिशून्य, गंवार। ८ आपद्गत, मुसीबतमें पड़ा हुआ।

अयुक्तकृत् (सं० त्रि०) कुकर्म करनेवाला, जो बुरा काम करता हो।

अयुक्ताचार (सं० पु०) गुप्तपुरुषको नियुक्त न करनेवाला, जो जासूस न रखता हो, राजा, बादशाह।

अयुक्तता (सं० स्त्री०) अप्रयोग, अनियुक्ति, कामसे दूरका रहना।

अयुक्तत्व (सं० क्ली०) अयुक्तता देखो।

अयुक्तपदार्थ (सं० पु०) सन्धय किया जानेवाला शब्दार्थ, लफ़्ज़का जो मानी मुहैया किया जाता हो।

अयुक्तरूप (सं० त्रि०) अनुचित, अयोग्य, नाक़ाबिल, गैरमुनासिब, नालायक़।

अयुक्ति (सं० स्त्री०) अभावे नञ्-तत्। १ युक्तिका अभाव, जुदायी, मेलका न मिलना। २ अन्याय, गैर-मुन्सिफी। ३ अयोग्यता, नाक़ाबिलियत। ४ वंशी बजानेकी चाल।

अयुक्पलाश (सं० पु०) वृक्षविशेष, किसी दरख़्तका नाम।

अयुक्पादयमक (सं० क्ली०) अर्थाक्षर अलङ्कार, तजनीस। छन्दके प्रथम और तृतीय पादमें एक ही शब्द विभिन्न अर्थका द्योतक रहनेसे यह अलङ्कार होता है।

अयुक्शक्ति (सं० पु०) शिव, महादेव।

अयुग (सं० त्रि०) युग्म-भिन्न, विषम, ताक़, अकेला।

अयुगष्ठ, अयुग्मनेत्र देखो।

अयुगपद् (सं० अव्य०) न युगपत्, नञ्-तत्। क्रम-क्रम, एक-एक, धीरे-धीरे।

अयुगपद्ग्रहण (सं० क्ली०) क्रमागत आसेध, जो समझ धीरे-धीरे आती हो।

अयुगपद्भाव (सं० पु०) अनुपूर्वता, क्रमानुसारिता, सिलसिलेवन्दी।

अयुगिषु (सं० पु०) पञ्चबाण, कामदेव।

अयुगू (सं० स्त्री०) अयुजमद्वितोयम् एकसन्तानमिति यावत् अवति गर्भे धारयति, अव-क्षिप्-ऊठ्। काकवन्ध्या, सिवा एकके दूसरा सन्तान न उत्पन्न करनेवाली स्त्री, जो औरत एक ही बच्चा पैदा करती हो।

अयुग्धातु (सं० त्रि०) बीजको विषम संख्यासे विशिष्ट, जिसमें जुज-आज़मका शुमार ताक़ रहे।

अयुग्म (सं० क्ली०) युज्यते समतया; युज्-मक्-कुत्व, नञ्-तत्। १ युग्म न होनेवाला द्रव्य, विषम, ताक़, जो चीज बेजोड़ हो। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ एकादि संख्या-विशिष्ट, एक वगैरह अदद रखनेवाला, जो पूरा न हो।

अयुग्मक (सं० पु०) सप्तपर्णवृक्ष, सतनी।

अयुग्मच्छद (स० पु०) सप्तपर्ण वृक्ष, सतनो।

अयुग्मनेत्र (स० पु०) अयुग्मानि युग्मभिन्नानि नेत्रा यस्य, बहुव्री०। १ शिव। शिवके ललाटपर अतिरिक्त एक नेत्र विद्यमान है इसीसे उनका नाम अयुग्मनेत्र पड़ा। (क्ली०) युग्मच तत् नेत्रञ्चेति कर्मधा०। २ युग्मभिन्न नेत्र अपाङ्गनेत्र।

अयुग्मपत्र अयुक्पत्र देखो।

अयुग्मपर्ण अयुक्पर्ण देखो।

अयुग्मबाण (स० पु०) कामदेव।

अयुग्मवाह (स० पु०) अयुग्मा विषमा सप्त वाहा यस्य बहुव्री०। सप्ताश्व, सूर्य।

अयुग्मशर (स० पु०) अयुग्मा विषमा पञ्चशरा यस्य, बहुव्री०। पञ्चशर विशिष्ट, कामदेव।

अयुग्बाण, अयुक्शर देखो।

अयुज (दे० वि०) विषम, ताक, बेजोड़।

अयुज् (स० त्रि०) न युजाति समतया, युज-क्विप् नञ् तत्। अयुग्म, विषम ताक, बेजोड़, जो पूरा न हो।

अयुज, अयुज् देखो।

अयुत (स० त्रि०) यु-क्त, नञ् तत्। १ असंयुक्त, असम्बद्ध, मिला न हुआ जो मिश्रित न हो। (वै० त्रि०) २ अविमर्दित, विच्छेदशून्य, दफ़न न दिया हुआ, जो परिमाण किया न गया हो। (पु०) ३ राविकके पुत्रविशेष। (क्लो०) ४ दश सहस्र संख्या, दश हजारका शुमार।

अयुतजित्—भजमानके पुत्रविशेष।

अयुतनायिन् (स० पु०) अयुतं पुरुष मेधानाम् अयुतं नयति वा जो भूत णिनि। पुरुवंशके नृपतिविशेष। इन्होंने प्राचीनविन्‌की कन्या सुयज्ञाके गर्भ एव महाभोमके औरससे जन्मग्रहण किया था। अयुत संख्यक नरमेध करनेसे इनका नाम अयुतनायी पड़ा। पृथुश्रवाकी कन्या कामाकि साथ इनका विवाह हुआ था। कामाकि गर्भसे अक्रोधन नामक एक पुत्रने जन्म लिया। (महाभारत आदिपर्व ९५ अध्याय)

अयुतयम (स० अव्य०) अयुतं अयुतं ददाति, वीप्सार्थं कारकात् शस्। अयुत-अयुत, दश दश हजार।

अयुतसिद्ध (स० त्रि०) युतं अपृथग्भूतं सत् सिद्धं युतसिद्धम्। न युतसिद्धम्—नञ् तत्। उपादान अर्थात् समवायो कारण परित्यागकर जिसका उपादान वा ध्यान न किया जाय। जैसे कपाल परित्याग कर देनेसे घटकी उत्पत्ति नहीं हो सकती एव घट कैसी वस्तु है यह भी जनलोग समझ नहीं सकते। इसीसे घट और कपालको 'अयुतसिद्ध' अथवा अपृथक्‌सिद्ध कहते हैं। (जिन दो आधोंको पहले बना और जोड़कर कुम्हार घट प्रस्तुत कर देते, उन्हीं दोनों खण्डोंको कपाल कहते हैं)।

इसका स्थूल तात्पर्य यह है, जहां कुछ अङ्ग प्रत्यङ्ग एकत्र कर देनेसे एक विशेष वस्तुकी उत्पत्ति और उसका गुण तथा क्रियादि प्रकाश हो परन्तु उसी अङ्ग प्रत्यङ्गको परित्याग करनेसे फिर उस वस्तुकी उत्पत्ति नहीं होती और न उससे गुण वा क्रियादिका ही प्रकाश होता है। यथा —हल कैसा होता है यह समझनेके लिये फल, शाखा, फलक मूल अङ्ग, काठ इन सबको एकत्र ग्रहण करना पड़ता है। इन सबको एकत्र ग्रहण करनेसे समझमें आता, हल कैसा पदार्थ है। किन्तु फल फलकादिको परित्याग करनेसे हम लोग नहीं समझ सकते हल कैसा होता है।

ऊपर 'उपादान कारण' कहा गया है। इस बातके कहनेका तात्पर्य यह है कि कुम्भकारका दण्ड घटका निमित्त कारण है। क्यों कि जब कुम्भकार दण्डसे चाकको घुमाता, तब घट निर्माण किया जाता है। किन्तु घट निर्माण कर लिये बाद पर फिर दण्डके साथ घटका कोई सम्बन्ध नहीं, दण्ड एक जगह और घट दूसरो जगह पड़ा रहता है। घटके कपाल साथ घटका वैसा सम्बन्ध नहीं है। उससे पृथक् हो जानेपर फिर घटका अवयव नहीं रहता एव घट न रहनेसे, शुक्लवर्ण या कृष्णवर्ण इत्यादि गुण भी नहीं रहता। घटका हिलना डोलना —किसी प्रकारको क्रिया भी असम्भव हो जाती है। इस लिये गुण भो घटका अयुतसिद्ध है। किन्तु वैदान्तिक इस बातको स्वीकार नहीं करते।

अयुतसिद्धि (स० स्त्री०) यु अमिश्रणे-क्त युतम्;

युतयोः अपृथग्‌रूपेण स्थितयोः सिद्धिः, अभावे नञ्-तत्। पृथक् रूपसे असिद्धि। जैसे, अवयव और अवयवीकी पृथक् पृथक् रूपसे सिद्धि नहीं होती। अर्थात् हस्त पदादि अवयव एवं मनुष्य अवयवी है, यहां अवयव एवं अवयवीकी पृथग्‌रूपसे सिद्धि होनी असम्भव है। फिर द्रव्य और गुण एवं द्रव्य और क्रियाकी पृथग्-रूपसे सिद्धि नहीं हो सकती। अर्थात् द्रव्य न रहनेसे उसका गुण किम्वा क्रिया भी नहीं रह सकती।

अयुतहोम (सं० पु०) यज्ञविशेष।

अयुताध्यापक (सं० पु०) उत्तम शिक्षक, अच्छा उस्ताद।

अयुतायुस् (सं० पु०) १ जयसेन आराविनके पुत्र-विशेष। २ श्रुतवत्‌के पुत्रविशेष।

अयुताश्व (सं० पु०) सिन्धुद्वीपके पुत्रविशेष।

अयुद्ध (सं० क्लो०) १ शान्ति, अविरोध, सुलह, मेल, लड़ाईका न रहना। (त्रि०) २ अपराजित, जो जीता न गया हो। ३ युद्ध न करते हुआ, जो लड़ न रहा हो।

अयुद्धसेन (वै० पु०) अपराजित सैन्यसे सम्पन्न वीर, जिस बहादुरकी फौजको जीत न सकें।

अयुद्ध्वी (वै० अव्य०) विना युद्ध, वे लड़े-भिड़े, सीधे तौरपर।

अयुध (सं० पु०) १ युद्ध न करनेवाला व्यक्ति, जो शख्स लड़ता न हो। (हिं०) २ आयुध, हथियार।

अयुध्य (सं० त्रि०) अपराजेय, जिसे जीत न सकें।

अयुध्विन् (वै० पु०) विजय न पानेवाला वीर, जो लड़नेवाला जोरदार न हो।

अयुनेत्र (सं० पु०) शिव।

अयुव (वै० त्रि०) न यौति, यु बाहु० क। असंसृष्ट, संसर्गशून्य, परेशान् न किया हुआ, जो हिला न हो।

अयूप, अयूप्य देखो।

अयूप्य (सं० त्रि०) यूपे साधु यत्, नञ्-तत्। यूप प्रस्तुत करनेके अयोग्य, जो यज्ञीय पशुरन्धनके काबिल न हो। नीम, नीबू वगैरहकी लकड़ीसे यूप नहीं बनाते, इसीसे उसे अयूप्य कहते हैं। फिर पलाश, खदिर, विल्व प्रभृतिकी काष्ठसे यूप बनता, इसीसे वह यूप्यकाष्ठ ठहरता है।

अये (सं० अव्य०) इण्-एच्। १ सावधान, होशियार, खबरदार। २ दुःख, हाय, अफसोस। ३ अरे, क्या, कहां, क्यों, भला। ४ प्रिये, प्यारे, हां। ५ सुनिये, देखिये, इधर, हुजूर, सरकार। कोप, विषाद, संभ्रम, स्मरण, सम्बोधन प्रभृति स्थलमें यह अव्यय आता है। (हिं० पु०) ६ जन्तुविशेष, कोई जानवर। यह जन्तु अये-अये बोलनेसे ही 'अये' कहलाता है।

अयोग (सं० पु०) युज-घञ्, अभावे नञ्-तत्। १ योगका अभाव अर्थात् विश्लेष, जुदायी, मुफारकत, फर्क। २ ध्यानका अभाव, खयालकी अदममौजूदगी। ३ औषधका अभाव, दवाका न मिलना। ४ रोग-निदानके विरुद्ध चिकित्सा, जो हकीमी मर्जके आसारसे खिलाफ रहे। ५ ज्योतिषोक्त तिथिवारादि जात दुष्ट योग। ६ दो नक्षत्रका योग। ७ कोई मछली। ८ कठिनोद्यम, जानफिशानी, कड़ी दौड़-धूप। ९ वमन द्वारा उपशमनीय रोग, जो बीमारी कै करानेसे छूट सकती हो। १० कूट, सुषमा, जिस बातका मतलब आसानीसे समझ न पड़े। ११ स्वर्ण-कारकी हथौड़ी। १२ विक्षेप, वक्फा, फर्क। १३ अयोग्यता, नाकाबिलियत। १४ अनुपस्थित स्वामी, गैरहाजिर खाविन्द, रंडुवा। १५ अकाल, बुरा वक्त। १६ सङ्कट, मुसीबत, तकलीफ। १७ अप्राप्ति, गैरहासिली; (त्रि०) १८ असंयुक्त, जो मिला न हो। १९ सद्रीतिसे असम्बद्ध, जो साफ साफ जोड़ा न हो। २० प्राणपणसे चेष्टा करते हुआ, जो दिलो-जान्‌से कोशिश कर रहा हो। २१ अप्रशस्त, खराब, जो भला न हो। (हिं०) २२ अयोग्य, नाकाबिल।

अयोगगुड (सं० पु०) लोहगुडिका, लोहेकी गोली।

अयोगव (सं० पु०) अय इव कठिना गौर्वाणी यस्य, निपातने अच्। वैश्य कन्याके गर्भ और शूद्रके औरससे जो सङ्कर जाति उत्पन्न होती है, उसे अयोगव कहते हैं। शास्त्रकार कहते हैं, कि प्रतिलोम जातिमें एक वर्णका व्यवधान रहनेसे उस जातिको स्पर्श कर सकते हैं। वैश्य एवं शूद्रमें केवल एक वर्णका व्यवधान है, इसलिये अयोगव जातिको स्पर्श कर सकते हैं। इस समय प्रकृत अयोगव जाति निर्द्धारित करना बहुत

अयोजन (सं० क्ली०) वियोग, विक्षेप, जुदायी, अलाहदगी, मेलका न मिलना।

अयोजाल (सं० क्ली०) अयोविकार: जालम्, मध्य-पदलोपी कर्मधा०। १ लोहनिर्मित जाल, लोहेका फन्दा। (त्रि०) अय इव दुर्भेद्यं जालं माया यस्य, बहुव्री०। २ दुर्भेद्य-कपट, जिसकी चालाकी समझ न पड़े। ३ लोहजाल-विशिष्ट, जिसमें लोहेका फन्दा पड़ा रहे।

अयोदंष्ट्र (सं० त्रि०) अयोमयी दंष्ट्राग्रधारा यस्य, बहुव्री० गौणे ह्रस्व:। लोहमय दंष्ट्राविशिष्ट, लोहेकी दाढ़वाला, जिसका अग्रभाग लोहमय रहे।

अयोदत्, अयोदंष्ट्र देखो।

अयोदती (वै० स्त्री०) अयोदंष्ट्र देखो।

अयोदाह (सं० पु०) लोहके जलनेका गुण, जो वस्तु, लोहेके जलनेमें हो।

अयोध्य (सं० त्रि०) योद्धुं अशक्यम्; युध-ण्यत्, नञ्-तत्। युद्ध किये जानेको अशक्य, जिससे कोई लड़ न सके।

अयोध्या (सं० स्त्री०) सूर्यवंशी राजाओंकी राजधानी। यह अक्षा० २६° ४८′ २०″ उ० और द्राघि० ८२° १४′ ४०″ पू० पर अवस्थित है। यहांके राजाओंको युद्धमें कोई पराभूत न कर सकता था, इसीसे उनकी राजधानीको लोग अयोध्या कहते हैं।

अयोध्या वा अवध प्रदेश पहले कोशल नामसे प्रसिद्ध था। इसके उत्तर-पूर्वमें नेपाल राज्य, उत्तर-पश्चिममें रुहेलखण्ड, दक्षिण-पश्चिममें गङ्गा, पूर्वमें बस्ती और दक्षिण-पूर्वमें वाराणसी विभाग है। अयोध्यापुरी कोशलकी प्राचीन राजधानी है। मुसलमानोंके समयमें लखनऊ नगर राजधानी था।

अयोध्या प्रदेशके चार प्रधान विभाग हैं। यथा,—लखनऊ, सीतापुर, फैजाबाद और रायबरेली। लखनऊ विभागके अन्तर्गत लखनऊ, उनाव और बाराबंकी; सीतापुरके अन्तर्गत सीतापुर, हरदोई और खेरी; रायबरेलीके अन्तर्गत रायबरेली, सुलतानपुर और प्रतापगढ़—यह तीन-तीन उपविभाग हैं।

अति प्राचीनकाल ही भारतवर्षमें अयोध्या सुप्रसिद्ध स्थान हो गयी थी। सूर्यवंशी नृपति यहां राज्य करते थे। रामायणमें लिखा है, कि स्वयं मनुने अयोध्यापुरी निर्माण की थी। इसकी लम्बाई बारह योजन और चौड़ाई दो योजन रही। महाकवि वाल्मीकिने इस नगरीका जैसा वर्णन किया, उसके पढ़नेसे मालूम होता है, कि उस समय अयोध्या राजधानी विशेष समृद्धशालिनी थी। ब्राह्मण एवं ऋषि शिष्योंको विद्या पढ़ाते, शिल्पी नाना प्रकारके शिल्पकार्य्य चलाते; और नाना देशोंसे आकर वणिक्गण पण्यद्रव्य क्रय-विक्रय करते थे। कलकत्ता आदि नगरोंकी तरह उस समय अयोध्यापुरीमें भी सड़कोंपर पानी छिड़का जाता था। मनुसे लगा ११२ पीढ़ियोंने यहां राज्य किया था। उसके बाद राजा सुमित्रने अयोध्यापुरीको त्याग दिया। उनके परित्याग करनेके बाद सब अट्टालिकायें गिर पड़ीं और धीरे धीरे चारो ओर जङ्गल हो गया।

सूर्यवंशियोंके अयोध्या परित्याग कर देने पर बहुत दिनोंतक यहां बौद्ध धर्मका विशेष प्रादुर्भाव हुआ था। उसके बाद विक्रमाजित् नामक एक राजा यहांके जङ्गलको कटवाकर रामायणकी लुप्तकीर्त्तिका उद्धार करने लगे। हमारे शास्त्रोंमें अयोध्याको मोक्षदायिका-पुरी लिखा है। "अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका। पुरी द्वारवती चैव सप्तैता मोक्षदायिका॥" अयोध्याका ऐसा माहात्म्य देखकर ही शायद विक्रमाजित्ने इस पुरी पर विशेष दृष्टि रखी थी। पहले उन्होंने सरयू नदीका स्नान सुधारा, उसके बाद नागेश्वर महादेवके मन्दिरका उद्धार किया। बौद्ध विप्लवके समय यह मन्दिर विनष्ट न हुआ था।

कहते हैं, कि राजा विक्रमाजित्ने अयोध्यामें ३६० देवालय बनवाये थे। परन्तु इस समय ४२ से अधिक मन्दिर विद्यमान नहीं हैं। अयोध्याके वृद्ध मनुष्य ऐसा कहते हैं, कि मुसलमान सम्राटोंके राजत्वकालमें यहां तीनसे अधिक मन्दिर प्रसिद्ध न थे; इसीसे मालूम होता है, कि अन्यान्य मन्दिर अधिक प्राचीन नहीं हैं।

अयोध्यामें रामकोट विशेष प्रसिद्ध स्थान है। कहते हैं, श्रीरामचन्द्रने इसी स्थानमें दुर्ग निर्म्माण किया था। इस दुर्गकी चारो ओर दश बुर्ज थे। हनुमान्,

सुग्रीव जाम्बुवान् प्रभृति सेनापति इन्हीं दुर्गों पर रह नगरकी रक्षा करते थे। दुर्गके भीतर आठ राज प्रासाद थे।

अयोध्या जानेसे रामसीताके अनेक निदर्शन देखने में आते हैं। पण्डे यात्रियोंके साथ साथ जाकर उन निदर्शनोंको समझा देते हैं। भूभार हरण करनेके लिये श्रीराम पृथिवी पर अवतीर्ण हुये थे। उनका जन्म स्थान अब भी वर्तमान है। यहां कोई मूर्त्ति नहीं है। केवल श्रीरामचन्द्रके ध्वजवज्राङ्कुश अङ्कित पादपद्मका चिह्न पड़ा हुआ है।

जन्मस्थानके निकट ही मुसलमान सम्राट्‌की एक मसजिद है। सन् १५२८ ई॰में बाबरके सिपाही आकर बाबर यहां कुछ दिन रहे थे, उसी समय यह मसजिद बनी। मसजिदके दो पत्थरोंमें सन् ९३५ हिजरी (१५२८ ई॰) खुदा हुआ है। अनेक मन्दिरोंसे पत्थर निकाल निकाल कर यह मसजिद बनाई गई थी। जन्मस्थानका मन्दिर कसौटीके पत्थरका बना था। बाबरकी मसजिदमें अभीतक उसके कई स्तम्भ विद्यमान हैं। मसजिद बननेपर कुछ दिनों तक हिन्दुओं और मुसलमानोंमें खूब विरोध चला था। उसके बाद अयोध्या अंगरेजोंके अधिकारमें आयी, तभीसे जन्म स्थान और मसजिदके बीचमें लोहेका बेड़ा लगा दिया गया है। सुतरां हिन्दुओं और मुसलमानोंमें फिर विरोध होनेकी सम्भावना न रही।

स्वर्गद्वार और राम सीताके स्थानमें भी दो मसजिद हैं। स्वर्गद्वारकी मसजिद औरङ्गजेबकी बनवाई हुई है; परन्तु यह नहीं कहा जा सकता, राम सीताके स्थानकी मसजिद कब बनी थी। इस समय स्वर्गद्वारकी भग्नावस्था है। दो सौ वर्ष हुए वाजूके राजाने रामसीताके मन्दिरका संस्कार करा दिया था, उसके बाद अहल्याबाईकी दृष्टि इसपर पड़ी। अहल्याबाई इन्दोरके होल्कर यशवन्त रावकी पत्नी थीं। सन् १७८४ ई॰में रामसीताके निकटका घाट इन्होंने ही बनवाया था। इस समय भी इस देवालयका व्यय निर्वाह करनेके लिये इन्दोर से प्रति वर्ष २३१) रुपयेकी वृत्ति मिलती है।

रामचरितकी अन्यान्य मूर्तियां अनेक स्थानोंमें गठित हैं। कहीं तपोवनसे विश्वामित्र ऋषि आकर खड़े, कहीं रत्नमालामें सीताको खड़ी बनाते जिसके बेलन आदि अब भी पड़े हुए हैं। कहीं दशरथसे रूठकर कैकेयी सोती और रामको वन भेजकर प्राणप्रिय पुत्र भरतको राजगद्दी दिलानेके लिये दो वर मांगनेको आंखोंमें अश्रु भरती हैं। प्रतिमूर्तियोंकी बनावट पुरानी है; उनमें शिल्पनैपुण्य नहीं फिर भी उन कठिन स्थानोंमें जानेसे अयोध्याके उस पूर्व गौरवको स्मृति आज भी जाग उठती है। अश्वमेधयज्ञका अनुष्ठान तो हुआ, परन्तु सीताजी उस समय वनवासमें थीं। बिना सस्त्रीक हुए यज्ञका संकल्प नहीं होता इसीसे कनकसीता बनवाकर रामचन्द्रजीने यज्ञ किया था। पण्डे अब भी त्रेता-युगकी उन कनकसीताको देखा देते हैं। अबकी बाबरी हुई मसजिद इसी स्थानमें है।

राम स्वयं राजा हुए। किन्तु उनके प्रधान भक्त वीर हनुमान्‌ने प्राण अर्पणकर सीताका उद्धार किया था इसलिये भक्तवत्सल रामने महावीर हनुमान्‌जी को राजा बना दिया। एक स्थानमें वह अपूर्व दृश्य आज भी विद्यमान है। हनुमान् राजवेशमें बैठे हैं, शिरपर मुकुट सुशोभित है, पासमें चमर चल रहा है।

अयोध्यामें प्रवेश करनेपर निकट ही मणिपर्वत मिलता है। शक्तिशेल लगनेसे जब लक्ष्मणजी मूर्छित हुये, तब हनुमान्‌जी विशल्यकरणी लाने गये थे। परन्तु वानरकी जाति, क्या जाने विशल्यकरणी कैसी होती है, इसलिये समस्त गन्धमादन पर्वतको ही उठाये वह शून्यमार्गसे चले जाते थे। जब वे अयोध्याके ऊपर पहुंचे, तब भरतने भ्रमज्ञानमें उनके बाण मार दिया। तीक्ष्ण बाणके लगते ही व्यथित होकर हनुमानजी भूमिपर गिर पड़े। उससे शायद गन्धमादनका कुछ अंश टूट गया था। वह मणिपर्वत यहीं समीप है।

मणिपर्वत ४४ हाथ ऊंचा तथा टूटी फूटी ईंटों और कंकड़ोंसे परिपूर्ण है। इसीसे मालूम होता

कि अट्टालिकाओंके ईंटपत्थरों और कंकडोंको फेंक फेंककर यह पर्वत बना दिया गया है। इस स्तूपके नीचे किसी समय एक फलक मिला था। उसमें यह खुदा रहा,—मगध-राजवंशके नन्दवर्द्धन नामक जैनक राजाने मणिपर्वत निर्माण कराया था।

सुग्रीवपर्वत एवं कुवेरपर्वत नामके और भी दो स्तूप हैं। सुग्रीवपर्वत प्रायः ६ हाथ और कुवेर पर्वत प्रायः १४ हाथ ऊंचा है। कोई कोई अनुमान करते, कि ये सब बौद्धोंके स्तूप हैं।

सरयूके किनारे अनेक घाट हैं, परन्तु सब बंधे हुए नहीं हैं। रामघाट, भरतघाट, लक्ष्मणघाट, शत्रुघ्न-घाट—इसतरह एक एक घाटका एक एक नाम है। इन सब घाटोंमें पूर्वकीर्त्ति कुछ भी नहीं है। रामघाट पर अब धोबी लोग कपडे धोते हैं। गुप्तघाटमें एक सुरङ्ग है। पण्डे कहते हैं, कि इसी सुरङ्गसे रामचन्द्रजीने सरयूजलमें प्रवेश किया था। स्वर्गघाट पक्का बंधा हुआ है। ऊपर मनोहर हृत्ययेणी है। यात्रीलोग यहां स्नान, दान और भोज्यादि उत्सर्ग करते हैं। घर्घरासे कुछ उत्तर कर्णालगञ्जके पास अगस्त्य मुनिका समाधिस्थान है।

अयोध्यामें वैष्णवोंकी सात सम्प्रदायोंके सात मठ हैं। प्रत्येक मठमें एक एक महन्त और उनके चेले रहते हैं।

हनुमान्‌गढीमें निर्वाणी सम्प्रदायका मठ है। इस सम्प्रदायके वैष्णव चार श्रेणियोंमें विभक्त हैं; यथा—कृष्णदासी, तुलसीदासी, मणिरामी और जानकीशरणदासी। निर्वाणी अखाडेमें प्रायः छः सौ चेले हैं; उनमें प्रायः तीन सौ सर्वदा उपस्थित रहते हैं।

रामघाट एवं गुप्तघाटपर निर्मोही सम्प्रदायके वैष्णवोंका अखाडा है। कहते हैं, प्रायः दो सौ वर्ष हुए गोविन्ददास नामक एक वैरागीने जयपुरसे कुछ निष्कर भूमि पाकर अयोध्याके रामघाटपर एक मन्दिरकी प्रतिष्ठा की थी। उसके बाद गुप्तघाटपर और एक अखाडा स्थापित हुआ। वस्ती, मनकापुर और खुर्दावादमें इस सम्प्रदायके वैष्णवोंकी निष्कर भूमि है।

दिगम्बरी और एक सम्प्रदायके वैष्णव हैं। प्रायः दो सौ वर्ष हुए श्रीवलरामदासने अयोध्या आकर यह मठ स्थापन किया था। इस अखाडेमें १४।१५ चेलेसे अधिक नहीं रहते। इन लोगोंके भी निष्कर भूमि है।

शुजाउद्दौलाके शासनकालमें चित्रकूटसे दयाराम नामक एक व्यक्तिने आकर खाकी सम्प्रदायके वैष्णवोंका अखाडा जमाया था। प्रवाद है, कि वन जाते समय लक्ष्मण सर्वाङ्गमें भस्म लगाकर रामचन्द्रके साथ हुये, इसीसे खाकी वैष्णव सर्वाङ्गमें भस्म पोते रहते हैं। इस अखाडेमें प्रायः १८० चेले हैं। उनमें से प्रायः ५० चेले सर्वदा उपस्थित रहते हैं।

महानिर्वाणी सम्प्रदायका अखाडा भी शुजाउद्दौलाके शासनकालमें स्थापित हुआ था। पुरुषोत्तमदास महन्तने कोटावूंदीसे आकर इस अखाडेको लगाया। इस अखाड़ेमें प्रायः २५ चेले हैं। सभी प्रायः तीर्थाटन किया करते हैं

मन्सूर अलीखांके शासनकालमें रतिराम नामक एक महन्तने जयपुरसे आकर सन्तोषी सम्प्रदायका मठ स्थापन किया था। किन्तु दो महन्तोंके बाद वैरागी लोग इस स्थानको त्याग कर चलते बने, अखाड़ा भी टूट-फूट गया। उसके बाद निधिसिंह नामक एक धनवान् पुरुषने पुराने मठका स्थापन निर्दिष्ट कर वहां एक मन्दिर बनवा दिया था। अन्तमें कुशलदास नामक सन्तोषी सम्प्रदायके कोई वैष्णव आकर एक अशोक वृक्षके तले रहने लगे। वहीं उनकी मृत्यु हुई थी। महन्तकी मृत्युके बाद रामकृष्णने वहां वर्त्तमान मन्दिर बनवा दिया।

शुजाउद्दौलाके ही शासनकालमें श्रीवीरमलदासने कोटेसे आकर निरालम्बी सम्प्रदायका मठ स्थापन किया था। किन्तु कुछ दिनोंके बाद यह अखाड़ा छोड़ दिया गया, उसके बाद नृसिंहदास नामक और एक वैरागीने आकर वर्त्तमान मन्दिर बनवाया।

अयोध्यापुरी स्थापित होनेके बाद यहां अनेक राजविप्लव और धर्मविप्लव हो गये हैं। ऊपर विक्रमाजित् राजाकी बात कही जा चुकी है। सुननेमें आता है, कि उन्होंने शायद अस्सी वर्ष अयोध्यामें राज्य किया

था। फिर समुद्रपाल नामक एक योगीने अभिचार मंत्र द्वारा उनके प्राणको उड़ा दिया। प्राणवायुके देह छोड़ जाने पर सिद्ध योगीने उस मृत शरीरमें प्रवेश किया था। इस योगीकी सात पीढ़ीने यावत् अयोध्या में राजत्व चलाया। परन्तु इन लोगोंका राजत्वकाल जिस तरह निर्दिष्ट हुआ है उसपर एक दम विश्वास नहीं किया जा सकता। प्रवाद है ६४२ वर्ष तक अयोध्यामें समुद्रपालोंका आधिपत्य रहा। अतएव हिसाब करनेसे प्रत्येक राजाका राजत्वकाल ८१ वर्षसे भी अधिक हो जाता है।

कोशलमें श्रावस्ती नामक और एक प्राचीन प्रसिद्ध स्थान है। इक्ष्वाकुसे आठवीं पीढ़ीके बाद युवनाश्वके पुत्र श्रावस्त राजाने इस नगरको बसाया था। अनेक दिनों तक यहां बौद्ध धर्मका अनुशीलन चला।

कपिलवस्तुमें शाक्यमुनिने जन्म ग्रहण किया था। उसके बाद अयोध्यामें आकर वे धर्मप्रचार करने लगे। सन् ई०से ५५० वर्ष पहले कुशीनगरमें उन्होंने निर्वाण मुक्तिको लाभ किया था।

सन् ४००ई०में चीनपरिव्राजक फाहियान श्रावस्ती आये। उस समय महानगर टूट गई थी, उसके भीतर मन्दिर और महाविहारका भग्नावशेष पड़ा हुआ था। कई दरिद्र संन्यासियोंके अतिरिक्त नगरमें और कोई भी न रहा। उसके बाद सातवीं शताब्दीमें युएन-चुयाङ अयोध्या आये थे। आकर उन्होंने उस समय भी बीस बौद्ध मन्दिर देखे। उन मन्दिरमें प्रायः तीन हजार बौद्ध महन्त रहते थे। उस समय ब्राह्मणोंके भी प्रायः बीस मन्दिर विद्यमान रहे। युएन्-चुयाङ्ने अयोध्याको अ द्भु त लिखा है।

अयोध्यामें छः जैन मन्दिर हैं। आदिनाथ जैनियोंके प्रथम तीर्थङ्कर हैं। यही अयोध्या नगरी उनका जन्मस्थान है। उन्होंने आबू पर्वत पर प्राणत्याग किया था। अयोध्याके स्वर्गद्वारके समीप मुराई टोलेमें एक स्तूपपर उनका मन्दिर बना है। मन्दिरके निकट मुसलमानोंकी कितनी ही कब्र और एक मसजिद भी है। द्वितीय तीर्थङ्कर अजितनाथ हैं। उन्होंने भी अयोध्यामें जन्म ले समेतशिखरपर प्राणत्याग किया था। इटौरा सरोवरके पश्चिम किनारे उनका मन्दिर स्थापित है। अभिनन्दननाथ जैनियोंके चतुर्थ तीर्थङ्कर हैं। इन्होंने भी अयोध्यामें जन्म ले समेतशिखरमें प्राणत्याग किया। अयोध्याकी सरायके समीप इनका मन्दिर बना है। पञ्चम तीर्थङ्करका नाम सुमन्तनाथ और चतुर्दशका अनन्तनाथ है। इन सबने अयोध्यामें जन्म लिया और समेतशिखर या पारसनाथ पहाड़पर प्राणत्याग किया था। रामकोटके भीतर सुमन्तनाथका मन्दिर है। अनन्तनाथका मन्दिर गोलाघाटके नाले किनारे है। ये पांच दिगम्बर जैनियोंके मन्दिर हैं। इनके अतिरिक्त श्वेताम्बर जैनियोंका भी एक मन्दिर है। जैनियोंके मन्दिर अधिक प्राचीन नहीं हैं।

दर्शनसिंहके मन्दिरमें लाल पत्थरके एक महादेव हैं। नर्मदा नदीके पत्थरको गढ़कर यह देवमूर्ति तैयार हुई है। मन्दिर चुनारके पत्थरका बना है। यहां एक बड़ा भारी घण्टा है। उस घण्टेको बजानेसे चारो ओर गम्भीर नाद गूंज उठता है। ऐसा बड़ा भारी घण्टा बनानेके लिये दर्शनसिंहने नेपालके कारीगरोंके पास अपना आदमी भेजा था। घण्टा बनकर तय्यार तो हुआ, परन्तु नेपालसे अयोध्या लाते समय राहमें टूट गया। इतरां नेपालका नमूना देखकर अयोध्यामें ही वर्तमान घण्टा ढला था।

मणिपर्वतके समीप दो कब्र हैं। मुसलमान कहते, कि इन कब्रोंमें शेथ और पैगम्बर गड़े हैं। पहले यहां गणेशकुण्ड नामक एक कूप था, अब सोमगिरि नामक दो छोटे-छोटे स्तूप हैं। सोमगिरि क्या है इसका विशेष वृत्तान्त जाननेको कोई उपाय नहीं। यहांसे आध कोस दूर और एक कब्र देखनेमें आती है। यहां एक दरवेश या संन्यासी रहते थे। वे कहते रहे कि यही बाइबल-उपदिष्ट नोहाका समाधिस्थान है। इसे मशहोर सिकन्दर (अलेक्-सन्दर)ने इस कब्रको बनवा दिया था।

बहू बेगमकी कब्र भी एक उत्तम स्थान है। बहू बेगम और अवधके नवाबने मकबरेके लिए ऐसा प्रबन्ध किया था कि उनकी सम्पत्तिमेंसे तीन लाख रुपये कब्र बनानेके लिये अलग रख दिये जायें;

उसके सिवा कब्रस्तानमें जो दाई नौकर रहती और अतिथि फ़क़ीर आता, उसके खर्चको उनको ज़मींदारीसे वार्षिक दश हजार रुपये निर्दिष्ट होते। सन् १८१६ ई०में वेगमकी मृत्यु हुई थी। पीछे कब्रका काम चला। किन्तु बीच बीचमें अनेक बाधाविघ्न उपस्थित हुए थे। अन्तमें सन् १८५७ई०के सिपाही-विद्रोह बाद क़ब्र तय्यार हुई। इस समय यहांके व्यय निर्वाहको गवर्नमेण्ट वार्षिक ४८३३) रुपये देती और क़ब्रके संस्कारको १०००) रुपये अमानत रखती है।

इस समय अयोध्यामें सब मिलाकर ९६ मन्दिर हैं। उनमें ६३ विष्णुमन्दिर और ३३ शिवमन्दिर हैं। इसके अतिरिक्त मुसलमानोंकी ३६ मसजिदें हैं। प्रतिवर्ष रामनवमीके उपलक्ष्यमें यहां मेला लगता है। मेलेमें कमसे कम ५००००० आदमी आते हैं।

प्राचीन कालके अनेक राष्ट्रविप्लवों बाद सन् १८५६ ई०को अयोध्या अंगरेजोंके अधिकारमें आयी। सबसे पहले सूर्यवंशीय राजा यहां राज्य करते थे। उसके बाद श्रावस्तीके राजाओंने बहुत दिनतक यहां राजत्व चलाया। बौद्धधर्मके प्रादुर्भाव समय राजा अशोकका यहां विशेष आधिपत्य था। काश्मीरके राजा मेघवाहनके समय अयोध्या उनके अधीन थी, ऐसे अनेक जनप्रवाद हैं। विक्रमाजित्ने मेघवाहनको युद्धमें परास्तकर रामचरितकी लुप्तकीर्तिका उद्धार किया था। विक्रमाजित्के बाद गुप्त और पालवंशियोंने ६४३ वर्ष यहां राजत्व चलाया। किन्तु अयोध्या नगरी फिर जङ्गलसे परिपूर्ण हो गई थी।

सन् ई०को आठवीं शताब्दीमें थारु नामकी एक असभ्य जाति हिमालय पर्वतसे आ अयोध्याका जङ्गल साफ करने लगी। परन्तु मालूम होता है, कि किसानीके सिवा उसका और कोई उद्देश्य न था। इसीसे उसने राज्य फैलानेका कभी यत्न न किया। पीछे उत्तर-पश्चिमसे सोमवंशके राजाओंने पहुंच थारु लोगोंको मार भगाया। सोमवंशी राजे जैनमतावलम्बी थे। ग्यारहवीं शताब्दीके अन्तमें कन्नौजके राजा चन्द्रदेवने चन्द्रवंशीय राजाओंको दूरकर अयोध्या और उत्तर कोशलपर अपना अधिकार जमा दिया।

उसके बाद अयोध्यापुरी भड नाम्नी एक असभ्य जातिके हाथमें पड गई। भड़ लोग भी जैन मतावलम्बी थे।

सन् ११९४ ई०में शहाबुद्दीन् गोरीने कनोज जीत अयोध्याको लूटा था। उसी समयसे बहुत दिनकी प्राचीन आर्य राजधानी मुसलमानोंके अधिकारमें चली गई। अवधके मुसलमान बादशाहोंका विवरण मालमल शब्दमें देखो।

अयोध्या प्रदेशमें गङ्गा, गोमती, घर्घरा एवं राप्ती यही चार नदियां प्रसिद्ध हैं। यहां अनेक छोटे-छोटे सरोवर हैं। यहांकी भूमि बहुत उपजाऊ है। परन्तु आजकल बहुत भूमि ऊसर हो गई है। यव, गेहूं, चना, मकई, तिल, सरसों, बाजरा, अनेक प्रकारकी दाल, ऊख, तम्बाकू, नील, कपास, गोरा और आम प्रभृति नानाप्रकारका फल यहां यथेष्ट परिमाणमें उत्पन्न होता है। पहले यहां अपर्याप्त लवण बनता था। अब गवर्नमेण्टने उसे बन्द कर दिया है। पहले यहां वनहस्ती, भैंस, बाघ, शूकर प्रभृति वन्य पशु भी बहुत उपद्रव करते थे। अब वे प्रायः दिखाई नहीं देते। परन्तु नीलगाय, हरिण और मोर झुण्डके झुण्ड ऊसर भूमिमें चरते फिरते और बीच बीच किसानोंके खेतमें जाकर उपद्रव मचाते हैं। वृन्दावनकी तरह अयोध्यापुरीमें भी असंख्य वानर भरे हुए हैं। यात्री लोग उन्हें चना और लड्डू खिलाते हैं।

अयोध्याके अन्तर्गत खैरागढके सालकी लकड़ी अत्यन्त विख्यात है। यह सालवन गवर्नमेण्टके अधिकारमें है। गवर्नमेण्टके आदमी सालके पेड़ोंको काट काट घर्घरा नदीमें बेड़ा बांधते और उसे बहाकर बहरामघाट ले जाते हैं। यह सब लकड़ियां कलसे चिरती है। अयोध्यामें महुवे और शीशमके पेड भी बहुत होते हैं।

अयोध्याकाण्ड (सं० क्लो०) अयोध्यायास्तन्नगरीवृत्तान्तविवृतेः काण्डं वर्गः, ६-तत्; तादृश्याः काण्डं वर्गो यस्मिन् पुस्तके, बहुव्री० वा। सप्तकाण्ड रामायणका द्वितीय काण्ड। इस काण्डमें रामके राज्याभिषेक प्रस्तावसे अत्रिमुनिके आश्रममें जानेतक सकल विषय वर्णित है।

अयोध्याधिपति (सं॰ पु॰) अयोध्याके भूपति, अयोध्याके बादशाह।

अयोध्याप्रसाद—१ रसतरङ्गिणीटीका एवं छन्द रत्नाकरकी नौका नाम्नी टीका रचयिता। २ भुवनदीपककी टीका-रचयिता।

अयोध्याप्रसाद वाजपेयी—युक्तप्रदेशवाले रायबरेली जिलेके सातनपुरवा ग्रामवासी कोई प्राचीन कवि। यह सन् १८८१ ई॰में जीवित रहे। इन्हें संस्कृत और हिन्दी भाषाका अच्छा ज्ञान था। इन्होंने सुस्वादु और चमत्कृत कविता बनायी है। छन्दानन्द, साहित्य-सुधासागर और रामकवित्तावली इनके रचित ग्रन्थमें उल्लेखयोग्य है। शिवसिंहके कथनानुसार यह महन्त रघुनाथदास या चन्द्रपुरमें राजा जगमोहन सिंहके साथ रहते थे। इन्होंने अपना उपनाम अवध लिखा है।

अयोध्याराम (आजू गोसाईं) गोस्वामी विशेष। अयोध्याराम गोस्वामीका निवासस्थान बङ्गालका हालीशहर और पिताका नाम रामराम गोस्वामी रहा, जो संस्कृत भाषाके विलक्षण पण्डित थे। आजू गोसाईं ऐसे प्रसिद्ध पुरुष नहीं परन्तु चरित्र कुछ कौतुकावह रहा। यह पागल जैसे थे। परन्तु उस पागलपनके भीतर कुछ कवित्वशक्ति छिपी हुई थी। कविरञ्जन रामप्रसाद सेन भी उसी नगरके निवासी रहे। अतएव दोनों एक ही समयके आदमी हुये। जब राजा कृष्णचन्द्र हालीशहर आते, तब दोनो आदमियोंको मुकाबिल कौतुक देखते और रामप्रसाद जब कोई गीत बनाते तब आजू गोसाईं दिल्लगी उड़ाकर उस गीतका उत्तर देते थे। अयोध्याराम नामक और एक व्यक्तिने सत्यनारायणकी कथा बनायी थी, परन्तु वे उतने प्रसिद्ध नहीं।

अयोध्यावासिन् (सं॰ त्रि॰) अयोध्याका रहनेवाला, जो अयोध्यामें रहता हो।

अयोध्यावासी—युक्तप्रदेशका वैश्य-समाजविशेष। यह समाज आगरा और इलाहाबादके जिलों तथा अवधमें मिलता है।

अयोनि (सं॰ स्त्री॰) यवति मिश्रयति अन्नमोचितादि कारणसामग्री अनया, नञ्-तत्। १ योनिभिन्न अन्य स्थान। २ जो अन्य सामग्रीका न हो। (त्रि॰) नास्ति योनिरुत्पत्तिस्थानं यस्य, नञ्—बहुव्री॰। ३ अजन्य, योनिसे उत्पन्न न होनेवाला। ४ नित्य, उत्पत्ति और नाशसे रहित। (पु॰) ५ ब्रह्मा। ६ शिव। ७ सुवर्ण, कुन्दना।

अयोनिक (सं॰ त्रि॰) न आयाता योनिर्यस्य नञ्-बहुव्री॰ कप्। १ योनि सम्बन्ध ठीक न रखने वाला। २ जिसकी उत्पत्तिका कारण जाना न गया हो।

अयोनिज (सं॰ त्रि॰) न योनिर्जायते, ५ तत्। योनिसे अजात जो योनिसे उत्पन्न न हुआ हो। (स्त्री॰) २ तीर्थविशेष।

अयोनिजत्व (सं॰ क्ली॰) योनिसे उत्पन्न न होनेकी स्थिति।

अयोनिजेश (सं॰ पु॰) शिव।

अयोनिजेश्वर, अयोनिजेश्वरतीर्थके महादेव।

अयोनिजेश्वरतीर्थ (सं॰ क्ली॰) तीर्थविशेष।

अयोनिसम्भव अयोनिज देखो।

अयोपाष्टि (सं॰ त्रि॰) लौहमयष्टिविशिष्ट, लोहेका भाला रखनेवाला।

अयोमय (सं॰ त्रि॰) अयसो विकारः, विकारे मयट्। लौहविकार जात, लोहेसे बना हुआ।

अयोमल (सं॰ क्ली॰) अयसो मलमिव, ६ तत्। लौहकिट्ट, लोहेका मैल। "अयोमलं मण्डूरम्।" (हिन्दीय) लोहेको जलानेसे आगीको ऐंठ—मैलो जो चीज निकलती, वह अयोमल कहलाती है। इसका गुण लोहे जैसा ही है। सौ वर्षका अयोमल उत्तम, अस्सीका मध्यम और साठका अधम होता है।

अयोमुख (सं॰ क्ली॰) अयो विकाररूपं मुखं यस्य। १ लाङ्गलादि, हल वगैरह। (पु॰) २ बाण, तीर। ३ दानव विशेष। ४ पर्वतविशेष। (त्रि॰) ५ लौह-मुखविशिष्ट, लोहेके मुंहवाला, लोहेकी नोक रखनेवाला, जिसकी नोक लोहेसे मिढ़ी।

अयोरज, अयोरजस् देखो।

अयोरजस् (सं॰ क्ली॰) लौहकिट्ट, लोहेका मैल।

अयोरस (सं॰ पु॰) अयोमल देखो।

अयोवस्ति (सं० पु०-स्त्री०) वस्तिकर्म विशेष।
"एरण्डमूलं निःक्वाथ्य मधुतैलं ससैन्धवम्।
एष युक्त अयोवस्तिः सवचापिप्पलीफलः॥" (भावप्रकाश)

मधु, तैल, सैन्धव, वच एवं पिप्पलीके साथ एरण्ड-मूलका काढा बनानेसे अयोवस्ति तैयार होता है।

अयोविकार (सं० पु०) लौहव्यापार, अयोनिर्माण, लोहेका काम, जो चीज़ लोहेसे बनी हो।

अयोहत (वै० त्रि०) लोहेकी नक़्क़ाशीवाला, जिसपर लोहेके बेलबूटे बने हों।

अयोहनु (वै० त्रि०) लौहहनुविशिष्ट, लोहेके जबड़े रखनेवाला।

अयोहृदय (सं० त्रि०) अयोवत् कठिनं हृदयं मनो यस्य, बहुव्री०। कठिनचित्त, निर्दयचित्त, दयाशून्य, लोहे-जैसे दिलवाला, सख़्त, अफ़सोस न करनेवाला।

अयौक्तिक (सं० त्रि०) अननुरूप, असमान, अयोग्य, जो ठीक न हो।

अयौगपद्य (सं० क्ली०) असमकालीन अस्तित्व, जो मौजूदगी एक वक़्तपर न रहे।

अयौगिक (सं० त्रि०) नियमित व्युत्पत्ति-विहीन, जिसकी जड ठीक न रहे।

अयौधिक (सं० पु०) १ युद्ध न करनेवाला व्यक्ति, बुरे तौरसे लड़नेवाला, जो शख़्स लडाई न करता हो। २ दूसरोंसे समता न किया जानेवाला योद्धा, जिस सिपाहीसे लडनेमें दूसरा बराबरी न कर सके।

अय्मान् (सं० त्रि०) अयते गच्छति, अय—कर्तरि मनिन्। १ गमनकर्ता, चलनेवाला। अय्यते गम्यतेऽनेन, करणे मनिन्। २ गमनमें सहायता देनेवाला, जो चलनेमें मदद देता हो।

अय्याजी भट्ट—ज्ञानानन्दके शिष्य और रामगीता एवं शिवगीताके सुबोधिनी टीका-रचयिता।

अर (सं० पु०) अर्यते गम्यतेऽनेन इयर्ति ऋच्छतेर्वा, अप्। १ जैनियोंकी वर्तमान अवसर्पिणीके अष्टादश तीर्थङ्कर। अरनाथ देखो। २ जैनियोंके कालचक्रका द्वाद-शांश। यह अवसर्पिणी कालका षष्ठभाग होता है। ३ ब्रह्मलोकका कोई समुद्र। (क्ली०) ४ चक्रकी नेमि और नाभिके मध्यका काष्ठ, आरी। ५ कोण, कोना। ६ शैवाल, सेवार। (हिं०) ७ हठ, जिद। (त्रि०) ८ शीघ्रग, तेज़। ९ न्यून, कम।
'अरं शीघ्रे च चक्राङ्गे शीघ्रगे पुनरन्यवत्।' (मेदिनी)

अरंग (हिं० पु०) सुगन्ध, खुशबू, महक।

अरंड (हिं० पु०) एरण्ड, रेंड, अंडा। इसे बंगलामें भेरेंडा, आसामीमें एरी, नैपालीमें अरेटा, विहारीमें अण्डी, उड़ियामें गव, नागपुरीमें ग्रंडी, कानपुरीमें रेंढी, पञ्जाबीमें हरनौली, अफ़ग़ानीमें बुज़-अंजीर, सिन्धुवीमें हेरां, दक्षिणीमें रंड, बम्बैयामें एरण्डी, मारवाड़ीमें पुरंडीच, गुजरातीमें दिवेली, अरबीमें खिरवा और फ़ारसीमें बेदअंजीर कहते हैं। (Ricinus communis)

आधुनिक औषधिशास्त्रज्ञ इस वृक्षको अफ़रीक़ाका अधिवासी बताते हैं। वहीं से यह भारतमें आया और वहीं जङ्गली तौरपर मिला भी है। इसे भारतमें सब जगह बोते और गांवके पास प्रायः लगा देते हैं। संस्कृतके प्राचीन पुस्तकमें इसका वर्णन मिलनेसे कोई-कोई इसे भारतका अधिवासी भी बताता है। हिमालयके निर्जन वनमें यह जङ्गली तौरपर उगता है। इसके बीजसे जो तेल निकलता, वह खूब धूम-धामसे बिकता है। बीज दो प्रकारका होता है, बडा और छोटा। बड़ेका चिराग़ वग़ैरह जलाने और छोटेका तेल दवाके काम आता है। कलपुरज़ेमें भी अण्डीका तेल ही लगता है। इस तेलकी रोशनी सबसे अच्छी होती है। यह बहुत धीरे-धीरे जलता है, आग लगनेका कोई डर नहीं रहता। भारतकी सारी रेलवे अण्डीका ही तेल जलाती है। इससे धुआं कम निकलता है। दूसरे तेलमें यह गुण नहीं देखते। साबुन, बत्ती, फुलेल और अतर बनानेमें इसे सबसे अच्छा और सस्ता पायेंगे। लन्दन और पेरिसका गन्धी इसीसे शिरमें लगानेको बढिया तेल बनाता है। यह हलका जुलाब देनेमें बहुत काम आवेगा। बीजके बकला छोडाने और साफ़ करनेमें ज़्यादा खर्च लगता है। इस तेलका बना वार्निंश गाड़ी, तस्वीरके चौखटे, चमडे, नक़्शे और कपड़े पर खूब

बढ़ता है। जाड़े मौसममें अण्डीका भी तेल पड़ता है।

इसकी पत्ती हिन्दुस्तानमें गाय-भैंसको भिगोकर भूसीके साथ दी जाती है जिससे दूध ज्यादा और गाढ़ा उतरता है। सिवाय आदके खलीसे एक गैस भी बनती है जिसकी रोशनी बहुत बढ़िया होती है। इलाहाबादके रेलवे ष्टेशनपर इस गैससे चिराग़ जलाया जाता है।

अण्डीकी खाद गन्ने, गेहूं और आलूके खेतमें डालनेसे उपज बढ़ जाती है।

सिवा इसके अण्डीका तेल घोड़े कुत्तोंपर लगानेसे भी बहुत फायदा पहुंचाता है। तम्बाकू और लाल मिर्च मिलाकर इसकी जड़के बकलेसे गोली बनता और पेचिस होनेपर घोड़ेको खिलाते हैं। भारतवासी इसकी पत्ती कूटकर बालप्रसविनी स्त्रीके दुग्धका स्राव रोकनेको स्तनपर लगाते हैं। सुश्रुतमें इसकी जड़ और बीजसे कितने ही औषध बनानेकी बात लिखी है। यह अजीर्ण, उदरामय, ज्वर और शोथपर भी चलता है। वातरोगके लिये यह अतिशय लाभदायक है। कमरका दर्द, पिपड़ीकी सूजन और फूला रह जानेकी बीमारी इससे दूर हो जाती है।

मुसलमान हकीमोंका मत है,—यह दो तरहका होता,—लाल और सफ़ेद। किन्तु लाल बड़े ही कामकी चीज़ होती है। यह औषधद्रव्य एक विरेचक होता है और पक्षाघात, श्वास, शोथ, गुल्म, आध्मान, वातव्याधि तथा जलोदर पर दिया जाता है। शहदके साथ इसके दश बीजकी मींगी मलकर खानेसे खासा जुलाब उतरता है। सौरदानके समय इसके बीजका पुलटिस वातग्रस्त जातोंकी सूजन मिटानेको चढ़ाते हैं। पत्तोंमें यह गुण न्यून परिमाणमें मिलता है। अफीम वगैरह नशा ज्यादा चढ़नेसे इसका ताजा अर्क कै करानेको पिलाते हैं। जवके आटेके साथ इसकी पत्तीका पुलटिस आंख आनेपर बांधते हैं।

किन्तु बीजकी मींगी खानेसे प्राण जानेका डर रहता है। दो-एक आदमी इसी तरह मर भी गये हैं।

इसकी पत्ती चरनेसे गाय भैंसका दूध बढ़ जाता है। बीजका बकला छलके इसको गर्म करनेमें जलाते हैं। लकड़ी काटकर सुखा लेनेसे छानोछप्परमें लगाते हैं। इसकी लकड़ीमें कीड़ा नहीं पड़ता। मधुमक्खियां इसे बहुत चाहती और प्रायः इसपर अपना छत्ता लगाती हैं।

युक्तप्रदेशके आजमगढ़ जिलेमें यह दो तरहका होता है—रेंड़ी और मटरेंड़ी। रेंड़ी मटरेंड़ीसे कुछ लम्बी रहती और एक सालमें ही कट जाती है। किन्तु मटरेंड़ीको दो तीन साल तक खड़ी रखते हैं। इससे तेल भी बहुत अच्छा निकलता है। अण्डेको इस प्रदेशमें प्राय खेतको चारो ओर बो देते हैं। इसकी खेती अलग नहीं की जाती। सिर्फ इलाहाबादमें यमुना किनारे बारह तेरह हजार एकड़ भूमिपर यह बोया जाता है। मकानके पास बेलको बेल चढ़ानेको प्रायः इसे लगाते हैं।

यह मौसमके अन्त या वर्षाके आरम्भमें बोया जाता है। खेतमें अठारह इंचके फासलेपर इसका बीज बोते हैं। पौधेके चारो ओर पानी इकट्ठा न होनेको जड़पर मट्टी चढ़ा देते हैं। मार्च और अप्रेल मासमें बीज पकने पर, तोड़कर धूपमें सुखाकर उसका छिलका निकाल डालते हैं।

बीजको उबाल कर कुरकी तेल निकलता है। तेली यह काम कभी नहीं करता। पहले बीजको कुछ भून, फिर ओखलोमें कूटकर पीछे पानीमें डाल उबालते हैं। ऐसा करनेसे तेल ऊपर उठ आता है। साधारणतः बीजसे आधा तेल निकलता है।

अरंभ, (हिं०) आरम्भ देखो।

अरंभना (हिं० क्रि०) १ शब्द निकालना आवाज़ देना। २ शुरू करना, आरम्भ करना।

अरड़न (हिं० वि०) १ ठिठक जानेवाला, जो चलता हो। (पु०) २ वृक्षविशेष कोई दरख्त।

अरई (हिं० स्त्री०) गाड़ी हांकनेकी छोटी छड़ी। इसके सिरपर लोहेकी कील लगी रहती है। नट-खटी दिखाने या आगे न बढ़नेपर अरई लगा बैलको चलाते हैं।

अरक (सं० पु०-क्ली०) १ शैवाल, सेवार। २ जैन समय-विभाग, जैनियोंका पृथक् किया हुआ समय। ३ चक्रका सर्क्षि, पहियेका अरा। (अ० पु०) ४ आसव,भभकेसे उतारा हुआ रस। ५ रस, निचोड। ६ स्वेद, पसीना।

अरकगीर (फा० पु०) नमदेका कोई टुकडा। इसे घोड़ेकी पीठपर लगा ज़ीन खींचते हैं।

अरकाट (अरुकडु)—१ मन्द्राज प्रान्तके उत्तर अरकाट जिलेका एक तअल्लुक। इसका क्षेत्रफल ४३२ वर्गमील है। इसकी लम्बाई पूर्वसे पश्चिम ३२ और चौडाई १२ मील है। जमीन उपजाऊ नहीं है और सिवा चूनेवाले कङ्कडके दूसरा धातु भी नहीं मिलता। मकान बनानेको पत्थर मुश्किलसे पाया जाता है। मामन्दूर और कलवायी तालावों से ढेरको ढेर मछली पकडती हैं। प्रधान व्यवसाय खेती, बुनाई और चमडेकी रंगाईका रहता है।

२ मन्द्राज प्रान्तके उत्तर अरकाट जिलेका प्रधान नगर। यह शब्द तामिल भाषाका है। अरुका छः और कडूका अर्थ किला है। इसतरह अरकाट माने छः किलेका शहर होता है।

यह नगर पालार नद किनारे मन्द्राजसे साढ़े बत्तीस कोस दूर अक्षा० १२° ५५′ २३″ उ० और द्राघि० ७९° २४′ १४″ पू० पर बसा है। इसमें अरकाट जिलेका हेडक्वार्टर है। पहले यहां कर्णाटक प्रान्तके नवाबकी राजधानी प्रतिष्ठित थी। सिवा पश्चिमतटको कुछ चावल भेजे जानेके इस नगरमें दूसरा व्यवसाय नहीं चलता और न सिवा चूड़ियां बननेके दूसरा काम ही होता है। यद्यपि कुछ वर्ष यहां सुनहली गोटा-किनारी और छींट बनती-बिकती थी, परन्तु अब इससे डेढ कोस दूर वालाजापेट नगरने अपनी समृद्धि फैला इसका शिल्प-व्यवसाय विगाड दिया है।

ऐतिहासिक दृष्टिसे अरकाट बड़े महत्त्वकी सामग्री है। किन्तु पूर्व समयका अधिक चिह्न देख नहीं पडता। सन् १७१२ ई०में महिसुरके विरुद्ध-युद्ध चलानेको दिल्लीवाली फौजके अधिनायक सआदतउल्ला-खान् अपना डेरा यहीं उठा लाये थे। उनके अधिकार-समय बीस वर्ष और उनके उत्तराधिकारी दोस्त अलीके सिंहासनारूढ होनेपर यह सरकारी राजधानी रहा। युद्धमें दोस्तअलीके मारे जानेपर यहां झगडेकी जड जमी। सन् १७४२ ई०में दोस्तअलीके उत्तराधिकारी सब्दरअली और सन् १७४४ ई०में सब्दरअलीके उत्तराधिकारी सैयदमुहम्मदकी इसी नगरमें हत्या हुयी थी। कितनी ही बार दूसरे-दूसरेके अधिकारमें जा अन्तको सन् १७५१ ई०में इस नगरका किला अंगरेजी फौजके हाथ लगा। सन् १७५१ ई०की २५वीं अगस्तको लार्ड क्लाइव मन्द्राजसे २०० युरोपीय और ३०० भारतीय सिपाही ८ मैदानी तोपोंको साथ ले आगे बढ़े और पांच दिन बाद इस नगरसे पांच कोस दूर अपना डेरा आ डाला। अंगरेजी फौजका साहस देख अरकाट किलेकी फौज आंख मूंदकर भाग खडी हुयी। दूसरे दिन क्लाइवने बेलडे भिड़े किलेको ले लिया। किला छूटनेकी खबर पा कर्णाटकके नवाब चांदा साहबने अपने पुत्र राजा साहबके अधीन ४००० देशी और १५० फ्रान्सीसी सिपाही किला जीतनेको भेजे थे। २३वीं सितम्बरको राजा साहबने कितनी ही पैदल फौज और सवारके साथ किलेको आ घेरा। किलेमें सिर्फ ६० दिनका सामान बचा, किन्तु पानी बहुत भरा पडा था। ५० दिन तक किलेमें तोपका गोला लगनेसे जो छेद होता. वह रातको भर दिया जाता रहा। किलेमें कोई बडी भारी तोप थी, जो ३१ सेरका गोला फेंकती थी। क्लाइवने वही तोप किसीतरह किलेके बडे बुर्जपर चढा नवाबके महलमें रोज़ एक गोला फेंकना शुरू किया। चौथे दिन तोप फटी और उससे नवाबको हिम्मत बढ गयी। उन्होंने किलेकी दीवारसे थोड़ी दूर एक पोश्ता बना उसपर तोपखाना रखा। किन्तु क्लाइवने तय्यार होनेपर उसपर ऐसे गोले मारे, कि घण्टे भरमें ही वह टूट-फूट कर ढेर हो गया और उसके ५० आदमी काम आये। फिर मुरारि राव महाराष्ट्र अपने सवारोंके साथ क्लाइवको साहाय्य देनेपर राजी हुये। राजा साहबने ऐसा देख क्लाइवसे आत्मसमर्पण करनेको कहा, किन्तु उन्होंने उसे

साफ अस्वीकार किया। इससे लेनेकी बात भी सुबेदारपर टाल दी गयी। आत्मसमर्पणकी आशा न पा राजा साहबने १४वीं नवम्बरको हमला मारा। एक अच्छी लड़ाई चली। राजा साहबके चार सौ और किलेके पांच छः आदमी मरे। किन्तु अन्तमें राजा साहबकी फौज हारकर पीछे हटी। किलेमें रात बड़ी चिन्तासे कटी थी। किन्तु सबेरे घेरनेवाले कहीं देख न पड़े।

सन् १७५८ ई०में अरकाटका किला फ्रान्सीसियोंके हाथ चला गया। दूसरे वर्ष दो बार उसके लेनेकी अंगरेजोंने कोशिश की, लेकिन कोई काम न निकला। सन् १७६० ई०में अंगरेजोंने किलेको घेर सात दिनको गोलेबारीसे उसे ले लिया था। फिर बीस वर्षतक अरकाटका किला अंगरेजोंके दोस्त नवाब मुहम्मद अलीके हाथ रहा। किन्तु सन् १७८० ई०में महिसुरके इस किलेतक बढ़ आनेपर अरकाट हैदर अलीको सौंपा गया, जिन्होंने सन् १७८३ ई०तक अपने हाथ रखा। टीपू सुलतानने किलेबन्दीको तोड़ मरोड़ छोड़ा था। सन् १८०१ ई०में नवाबने कर्णाटकके साथ अरकाट भी अंगरेजोंको दे दिया। नगरके समीप नवाबके वंशजोंकी आज भी सम्पत्ति विद्यमान है। नवाबका महल तो ढेर हो गया और न किलेका ही कोई निशान् रहा। महल और किलेके बीच नवाब अमादत उल्लाकी कब्र बनी है, जिसके लिये सरकारकी तर्फसे माहवार खर्च मिलता है। इसके पास ही बड़ी जामा मसजिद है।

अरकाट उत्तर—मन्द्राज प्रान्तका एक जिला। यह अक्षा० १२ ३०´ एवं १३ १५´ उ० और द्राघि० ७८ ११´ तथा ८० ३´ पू०के बीच अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल ७२५६ वर्गमील है। इसके पश्चिम महिसुर राज्य, उत्तर कडापा एवं नेल्लोर, दक्षिण सलेम तथा दक्षिण अरकाट और पूर्व चिङ्गलपट है।

इस जिलेका उत्तर एवं पश्चिम भाग पार्वत्य तथा ऊसर और दक्षिण एवं पूर्व अंश समान तथा समतल है। पूर्वघाटको पर्वतश्रेणी अपनी दक्षिण और आगे बढ़ती हुयी इससे दक्षिण पश्चिमसे उत्तर-पूर्व है और नागरी उत्तर-पूर्व कोणको पार करती है। पूर्वघाट पर्वत बालाघाट और पायनघाटके बीचमें है। इस समय पहाड़की मामूली ऊंचाई समुद्रतलसे २५०० फीट ऊपर है। दक्षिण-पश्चिमको जवादी पहाड़ पड़ता है उसकी चोटी कहीं-कहीं समुद्रतलसे ३००० फीट ऊंची है। यही अम्बदी या पालारकी विस्तृत उपत्यका इस पहाड़को पूर्वघाट पर्वतसे अलग करती है। अम्बूरके पास जवादी और पूर्व-घाट दोनो पर्वत बिलकुल मिले हुये हैं। इस पर्वतमें लोहा और तांबा ढेरका ढेर पाया जाता है। महिसुर राज्यमें जिलेकी सीमाके पास सोना मिलनेसे उसके इस जिलेमें भी रहनेकी सम्भावना है। कोयलेका कहीं पता नहीं चलता, किन्तु चूना और मकान बनानेका बढ़िया पत्थर बहुत मिलता है। पालार सबसे बड़ी नदी है। यह जिलेके दक्षिण पश्चिम या उत्तर और बहती हुई जवादी पर्वतसे पूर्व जा समुद्रमें मिली है। राहमें उससे दो बड़ी नदी चेयार और पायनी मिल जाती हैं। अम्बूर और गुडियातम पालारकी छोटी सहायक नदी है। जिलेके पूर्व नैऋतमें आरणयवन और कोर्तलयार प्रवाहित हैं। प्रायः बारहो महीने नदी सूखी रहती है। पानी उसकी गहरी बालूमें डूब जाता है। फिर भी नहरें काट लोग उसीसे पानीसे खेत सींचते हैं। इससे पानीकी कमी कभी नहीं होती। १८०० वर्गमीलपर जङ्गल फैला है जिसमें तिहाई सरकारका है। लाल चन्दनकी लकड़ी बहुत अच्छी होती है। दीमक न लगनेके कारण लोग इससे मकानोंका ढांचा और दरवाजेका पल्ला बनाते हैं। लाल रङ्ग निकालनेको यह यूरोप भी भेजी जाती है। जङ्गलमें हाथी भैंसा, चीता भेड़िया भालू, तरह तरहका हिरन व्याघ्र और सूअर घूमते फिरते हैं।

इतिहास—उत्तर अरकाट प्राचीन द्राविड़ देशका अंश है। इसके आदिम निवासी कुरुम्ब थे, जो किसी राजाको न रखते थे। सबसे पहले एकक-वंशके कमण्डु कुरुम्बप्रभु राजा बनाये गये। पल्लव नृपतियोंका किला पुरलूरमें रहा और काञ्चीवरम

सबसे बड़ा नगर था। सन् ई०के ७वें शताब्दमें पल्लव-राजवंशका पराभव होनेसे कोङ्ग और चोल नृपति प्रधान बने। सन ई०के ८वें या ९वें शताब्द चोलोंने करम्बोंको यहांसे निकाल बाहर किया।

काञ्चीपुर चोल-नृपतियोंकी राजधानी हुआ और गोदावरीतक फैला। किन्तु तैलङ्ग और विजय-नगरके राजावोंसे युद्ध होनेपर चोलोंका जोर घट गया। सन ई०के १७वें शताब्दके मध्य महाराष्ट्रोंका अभ्युदय होनेसे विजयनगरवालोंका भी प्रभाव कम हो गया। शिवाजीने दक्षिण-भारतमें अपना अधिकार फैला रखा था। वेङ्काजी शिवाजीके सौतेले भाई और वर्तमान ताञ्जोर राजवंशके प्रतिष्ठाता थे। बीजापुर-राज्यकी ओरसे कर्णाटकमें उन्हें जागीर मिली थी। सन १६६४ ई०में अपने बाप शाहाजीके मरनेपर वेङ्काजी वह जागीर पा गये। सन १६७६ ई०में शिवाजी जागीर लेनेके लालचसे उत्तर-अरकट-की कम्मूर घाटीसे कर्णाटक जा पहुंचे थे। वेल्लूर, अरनी और दूसरी जगहका किला तोड़ वह अपने भाईकी सारी जागीर दबा बैठे। कर्णाटक जाते समय शिवाजी अपने राज्यका उत्तरप्रान्त गोलकुण्डाके नवाबको सौंप आये थे। वहां उपद्रव उठनेकी खबर पा उन्हें झटपट वापस जाना पड़ा। शिवाजी जीती हुयी जागीर दूसरे सौतेले भाई सन्ताजीको दे चले थे, जिन्हें वेङ्काजीने धीरे-धीरे दबा लिया। अन्तमें वेङ्काजीसे आधी आमदनी लेनेपर शिवाजीने जागीर छोड़ दी। इसी बीचमें बादशाह औरङ्गजेबने दक्षिणकी अराजकता मिटानेपर कमर बांधी। सन् १६९८ ई०में औरङ्गजेबके सिपहसालार जुलफकार खान्‌ने जञ्जी ले दाउदखान्‌को अरकटका हाकिम बना दिया। सन् १७१२ ई०तक मुसलमान हाकिम जञ्जीमें रहा और पश्चमांश देनेवाले मुसलमान कृषकको खाने-कमानेके लिये भूमि देता गया। सन् १७१२ ई०में ही सआदतउल्ला खान्‌ने कर्णाटकका नवाब बन अरकटको अपनी राजधानी बना लिया।

सन् १७९२ ई०में महिसुरका द्वितीय युद्ध समाप्त होते ही वर्तमान ज़िलेवाले घाटका ऊपरी भाग अंगरेज सरकारको दिया गया। सन् १८०१ ई०में नवाबके कर्णाटक अंगरेजोंको सौंपनेपर अरकटका उत्तर-भाग' नामक एक ज़िला खुला। सन् १८०३ ई०में नारागन्ती, कम्मूर, करकमबाटी, छपगुर, तम्बा, वङ्गारी, पुलिचिरला, पोलूर, गेगराल, पकाल और गेद्रगूंट राज्यके बलवा मचानेपर अंगरेजी फोज उन्हें दबानेको भेजी गयी। इस ज़िलेके अरकट, वेल्लूर और चन्द्रगिरि आदि नगरमें ऐतिहासिक समिति वर्तमान है। सन् १६४० ई०में बीजपुर-नरेशसे अंगरेजोंने उनके राज्यवाले 'मन्द्राजपटम्' नगरमें एक कारखाना खोलनेकी आज्ञा मांगी थी।

इस ज़िलेमें तामिल और तेलगु भाषा चलती है। दक्षिण तअल्लुक़में जैन अधिक देख पड़ते हैं। वह ज़मीन्दारी करते और आनन्दसे रहते हैं। बनजारा वगैरह घूमते रहते हैं। जङ्गल और पहाड़में इरूला, येदिकाली, यानादी और मलयाली नामक आदिम-निवासी रहते हैं। वे शहद, मोम, छाल, लड़, सुपारी वगैरह जङ्गली चीज़को मैदानी आदमीयोंके हाथ बदलसे, जो उनसे अधिक सभ्य मालूम होते हैं। किसान सिवा धार्मिक उत्सवके दूसरी जगह अपना गांव छोड़कर बहुत कम जाते हैं। भैंस सस्ती मिलती है। इस ज़िलेमें नहर निकालनेका सुभीता नहीं पड़ता।

यहांसे चावल और सीरा बाहर बिकने जाता है। नमक, लोहा, कपड़ा और रुई अपने खर्चको मंगाया करते हैं। आमदनीकी बनिस्बत रफ़्तनी ज़्यादा होती है। कपड़ेकी बुनाईका ही काम अधिक होता है। किन्तु वालाजापेटका कालीन, वन्देवेकी चटाई, तोरुपतिकी पीतलवाली चीज़ और लकड़ीकी नक़्क़ाशी, पुङ्गनूरका लोहेवाला सामान, गुडियातमका मट्टीवाला बरतन और कलस्त्रीवाली शीशेकी पोत देखने लायक़ होती है। ज़िलेमें रेलवे और सड़क-की कोई कमी नहीं है। सन् १८२६ ई०में पहले पहल सरकारी मदरसा खुला था।

यहां मलेरिया ज्वरका प्रकोप अधिक फैला रहता

है। वर्षा समाप्त होने पर उसका चमत्कार बढ़ जाता है। कुष्ठरोग साधारणतः फैल और चरवरीसे मई तक चेचक चिपट जाता है। मवेशी ढेर और मुर्गी बीमारीसे मरती है।

दक्षिण-अरकट—मन्द्राजप्रान्तका एक जिला है। यह अक्षा० ११° १०´ एवं १२° २१´ १०˝ उ० और द्राघि० ७८° ३१´ १०˝ तथा ८०° १´ १५˝ पू०के मध्य अवस्थित है। इस जिलेका रकबा ४८०१ वर्गमील है। दक्षिण अरकटसे उत्तर चिङ्गलपट एवं उत्तर-अरकट, पूर्व बङ्गालकी खाड़ी, दक्षिण त्रिचनापल्ली तथा तञ्जोर और पश्चिम सलेम जिला है। यह जिला आठ तअल्लुकमें बंटा है। फ्रान्सीसी बसती पुदिचेरी इसीके भीतर है। पश्चिममें सिवा कलरायन पर्वतके दूसरी जगह पहाड़ नहीं दिखायी देता। समुद्र किनारे और पुदिचेरी तथा कुड्डलूरके पास भी कुछ पहाड़ आ गया है। इसमें तिरुमलय पर्वतपर कोई सवारी जा न सकती। उसकी बगल ताड़ और जङ्गलसे भरीभरी रहती है। पर्टो-नोवोसे डेढ़ कोस दक्षिण कोलरुन नदी इस जिलेकी दक्षिण पूर्व सीमापर अठारह कोसके अन्दर बहकर बङ्गालकी खाड़ीमें गिरती है। वेल्लार भी इकतालीस कोस जिलेके भीतर बह और मणिमुक्ता नदीको ले पोर्टो-नोवोके पास समुद्रसे मिलती है। दोनो नदीमें कोई तीन कोस तक समुद्रकी लहर चढ़ती है। गडिलम् या गरुड़नदी सेलम झीलसे निकल और ५८ कोसका चक्कर मार कुड्डलूरसे पाव कोस उत्तर बङ्गालकी खाड़ीमें गिरती है। पोन्नेयार महिसूरकी समतलोसे बहती और ७५ कोसका धावा लगा कुड्डलूरसे डेढ़ कोस उत्तर खाड़ीमें मिलती है। सेय्यो नारायणमङ्गलम् झीलसे निकलती और तोण्डेयार तथा पाम्बैयारको साथ ले अरियानकुप्पम् तथा चिन्नवीरामपट्टनम्के पास दो मुहानेसे समुद्रसे मिलती है। सिवा सरकारोंके जितना ही अरक्षित जङ्गल भी देखे जाते, जिसमें तञ्जोर जिलेके मवेशी चरने आते हैं। बाघ, चीता और भालू तो कम, किन्तु जङ्गलमृगा, हिरन, जङ्गली कुत्ता, सूअर और भेड़ बहुत देख पड़ता है।

सन् १६७४ ई०में जिञ्जि(सेञ्जि)-नृपतिके बसनेको बुलानेपर अंगरेजोंका सम्बन्ध इस जिलेसे लगा था। बातचीत तो चलती रही, किन्तु सन् १६८२ ई० तक कोई काम न बना, तब अंगरेजोंने कुड्डलूरमें कारबार करनेको एक कोठी खोली। इसमें सफलता न होनेपर कुछ ही महीने बाद पुदिचेरीसे पांच कोस उत्तर कुनीमेड़ूमें अंगरेजी बसती हुई थी। सेञ्जि शासक हरको राजाके भूमि देनेपर सन् १६८१ ई० में कुड्डलूरको कोठी फिर खुली, और पोर्टो-नोवोमें कोई छोटी बसती बनायी गयी। चार वर्ष पीछे अंगरेजोंने महाराष्ट्रोंसे सेण्ट डेविड दुर्गकी जमीन खरीदी और कुनिमेड़ूकी बसती छोड़ दी। कर्णाटकके युद्धमें कुड्डलूरने बड़ा काम बनाया था। सन् १७५८ ई०में फ्रान्सीसियोंने सेण्ट डेविड दुर्ग और कुड्डलूरको अधिकार कर किला तोड़-फोड़ डाला। किन्तु दो वर्ष बाद वन्दिवासका युद्ध समाप्त होते ही अयार-कूटने फिर कुड्डलूरको अधिकार किया, उनके पहुंचनेकी खबर पा फ्रान्सीसी इस सेण्ट डेविड दुर्गसे भाग खड़ा हुआ था। सन् १७८१ ई०में फ्रान्सीसी सेनापति और टीपू सुलतानने नगरको फिर कोई तीन वर्ष अपने हाथ रखा। अन्तमें कुड्डलूर अंगरेजों और पुदिचेरी नगर फ्रान्सीसियोंको सन्धिके अनुसार मिला था। सन् १८०१ ई० में अरकटप्रान्त अंगरेजोंके हाथ आनेसे 'अरकटका दक्षिण विभाग' (The Southern Division of Arcot) नामक एक जिला बना।

दक्षिण अरकटके अधिवासी तामिल भाषा बोलते हैं। चेटी या सेठी लोग धनवान् होते हैं। ब्राह्मण जमीन्दारी और सरकारी नौकरी करते हैं। कोरवारको चोर बताते। पहाड़ी जमीनमें मलयाली रहवार और किन्नियार मिलता। तिरुवान-मलूरके मुसल-मानोंमें अरबोंका उपनिवेश प्रतिष्ठित है। इस जिलेके प्रधान नगरोंका नाम—चिदम्बरम्, कुड्डलूर, पणरुटि, पोर्टो नोवो, तिण्डिवनम् तिरुवण्णमलय, वल्लनूर, विल्लुपुरम् और वृद्धाचलम् है। इस जिलेमें सौ आदमीमें पचाससे ज्यादा काम करनेवाले

न निकलेंगी। यहां पचास तरहका चावल होता है। प्राय: तूफान समुद्र तटपर जोरशोरसे चलता रहता है।

यहां नील, चीनी, गुड, नमक, चटाई, मट्टीका बरतन, तेल तथा रुई एवं रेशमका धागा और कपडा बनता है। नमक सरकारी देख भालमें तैयार होता है। महिसुरसे रेशम रंगा कुम्भकोनममें रंगा और चिदम्बरमें बुना जाता है। सन् ई०के १८वें शताब्द ईष्ट इण्डिया कम्पनीने कई जगह कपडेका काम खोला था, जो अब बिगड गया। जिलेके भीतर अनाज,मट्टीके बरतन, शराब, तेल, नील, चीनी, गुड, नमक, चटाई और कपडेका काम चलता है। तिरुनमलय, चिदम्बरम्, वृद्धाचलम्, कूडलूर, कैर्म, श्रीमुष्ण, कुवागम्, मयलम् और मलयानूरमें हरसाल मेला लगता है। इरुलार शहद, मोम, माजूफल और रंगनेकी छाल बेच अपना काम निकालता है। कम्मकूरिची, तिरुनमलय और तिरुकोइलूर तअल्लुकमें बहुत कच्चा लोहा मिलता है। 'खान साहब' नहर कोलरुन तथा वड़वार नदीको वेल्लारसे जोड़ता है। किन्तु नहर तङ्ग रहनेसे बडा जहाज़ चल नहीं सकता। जिलेमें आठ तअल्लुक हैं,—चिदम्बरम्, कूड़लूर, कम्मकूरची, तिण्डिवनम्, तिरुकोइलूर, तिरुवन्नमलय, विल्लुपुरम् और वृद्धाचलम्। पहले यहां डाका बहुत पडता था, किन्तु अब सरकारी इन्तज़ाम होनेसे रुक गया।

अरकटो (हिं० पु०) पतवार घुमानेवाला मांझी।

अरकना (हिं० क्रि०) १ टक्करखाना। २ तड़का खाना, फट जाना।

अरकनाना (अ० पु०) पुदीने और सिरकेका अरक।

अरकना-बरकना (हिं० क्रि०) टालम टोल लगाना, मुंह फेर चल देना, खेंचतान मचाना, ध्यान न जमाना।

अरक़बादियान (अ० पु०) सौंफका अर्क़।

अरकला (हिं० पु०) अर्गल, रोक, ठहराव।

अरकान (अ० पु०) राजके प्रधान कर्मचारी, रियासतके खास कामदार। यह रुक्न शब्दका बहुवचन होता है।

अरकासार (हिं० पु०) तड़ाग, तालाब।

अरकोल (हिं० पु०) कौलीग, लाखर। यह वृक्ष हिमालय पर्वतपर होता और झेलमसे आसामतक २०००से ८००० फीट ऊंचे मिलता है। इसके गोंदको ककरासिंगी कहते हैं।

अरक्त (सं० पु०) लाक्षा, लाख।

अरक्षणी (सं० स्त्री०) न रक्षते न रक्षितुं शक्या वा; रक्ष-ल्युट् अनीयट् वा, नञ्-तत्। अविवाहिता एवं दशम वत्सरसे अधिक वयस्का बालिका, जो क्वारी लड़की दश सालसे उम्रमें ज़ियादा हो।

अरक्षस् (सं० वि०) नास्ति रक्षो रक्षसुल्यं बाधकं यस्य, नञ्-बहुव्री०। १ बाधकरहित, जिसपर शैतान्का साया न रहे। २ अहिंसित, सत्यव्रत, नुक़सान् न पहुंचानेवाला, ईमानदार।

अरक्षित (सं० वि०) १ अपरिपोषित, अशरण, अनाश्रय, बेहिफ़ाजत, बेपनाह, जिसको देखभाल रखी न जाये।

अरग (हिं० पु०) अरगजा। यह द्रव्य पीत एवं सुगन्धित होता है। देवतापर चढ़ा लोग इसे माथेमें लगाते हैं।

अरगजा (हिं० पु०) सुगन्धित द्रव्य विशेष, कोई खुशबुदार चीज़। इसे केशर, चन्दन एवं कर्पूरादि मिलाकर बनाते और शरीरमें लगाते हैं।

अरगजी (हिं० वि०) १ अरगजेके रङ्ग जैसा, जिसका रङ्ग अरगजेकी तरह रहे। २ अरगजेके सुगन्ध जैसा, जिसकी खुशबू अरगजेकी तरह रहे। (पु०) ३ अरगजे-जैसा रङ्ग, जो रङ्ग अरगजेकी तरह हो।

अरगट (हिं० वि०) पृथक्, भिन्न, जुदा, अलग।

अरगण्ट (वै० ग्रा०) उपत्यका, घाटी, दरह, दो पहाड़के बीचकी राह।

अरगन (अ० पु०) वाद्यविशेष, कोई बाजा। (Organ) इस बाजेको धौंकनीसे बजाते। स्वर आनेको इसमें नली लगती है।

अरगनी (हिं० स्त्री०) वस्त्रादि लटकानेकी लकड़ी या रस्सी। इसे कपडे वग़ैरह टागनेको घरमें बांधते हैं।

अरगल अर्गल देखो।

अरगवानी (फ़ा॰ पु॰) १ रंग लाल। (वि॰) २ गहिरे लाल रंगका।

अरगाना (हिं॰ क्रि॰) १ पृथक् करना, जुदा होना, अलग रहना। २ चुपचाप बैठना बात न करना, मौन धारण करना। ३ निर्वाचन निकालना, चुनना, छांटना।

अरग्वध (स॰ पु॰) प्रयो॰ आकार क्रम। १ आर ग्वधवृक्ष, अमलतास गिरमालक, राजवृक्ष।

यह अतिमधुर, शीतल और गुरुक होता है। इसके सेवनसे ज्वर, कण्डु, कुष्ठ, मेह, कफ और विटम्भ दूर हो जाता। (राजनिघण्ट)

यह स्रंसन, मृदु और हृद्रोग एवं उदावर्त नाश करता है। इसका फल स्रंसनगुणयुक्त रुच्य, कोष्ठ शुद्धिकर और कुष्ठ कफ एवं ज्वरघ्न होता है।

इसका पत्ता रेचक और कफ एवं मेदको मिटाने वाला होता। पुष्प स्वादु, शीतल तिक्त ग्राहक और तुवर होता। पाकमें मज्जा मधुर, स्निग्ध, अग्निविवर्धन, रेचक और पित्तवातको नाश करती है।

(क्ली॰) २ सर्पाकृपम किसी किस्मका साप्।

अरघ, अर्घ देखो।

अरघट्ट (स॰ पु॰) अरघट्टमावहयत् घटादि अस्यते अस्मिन् यत्र येन वा। १ महाकूप, बड़ो गहरा कुआं। अर शीघ्रं अच्यते, अर यह क्वचिद् अर्थ वा। कूपसे जल निकालनेका काष्ठविशेष, रहट।

अरघट्टक, अरघट्ट देखो।

अरघा (हिं॰ पु॰) अर्घ्यदेनेका ताम्रपात्र विशेष जिस तरहके बरतनसे अर्घ दें। २ जलधरी शिव लिङ्ग स्थापित करनेका पात्र। ३ चबना, कुयेंका गचका पानी निकालनेवाली राह।

अरचाम, आरज़म देखो।

अरङ्कृत् (वै॰ वि॰) १ सन्नीवप्रदरूपसे कार्य चलाने वाला, जिसके कामसे जो खुश रहे। २ प्रस्तुत हो जानेवाला, जो पुजारीकी तरह काम करता हो।

अरङ्गत (वै॰ वि॰) १ समर्थ, सज्जीभूत, तैयार। २ सन्तुष्ट काम, फायदा, अच्छा हुआ।

अरङ्कृति (वै॰ स्त्री॰) सेवा आराधन, खिदमत, परस्तिश।

अरङ्ग (स॰ पु॰) १ मत्स्यविशेष, कोई मछली। २ मचलना, बिगड़ना।

अरङ्गम (वै॰ वि॰) १ समीप आनेवाला, जो देखाई दे रहा हो। (पु॰) २ गति, चाल। ३ परि-मित गमन, थोरा चलना।

अरङ्गर (वै॰ पु॰) कृत्रिम विष, बनाया हुआ जहर।

अरज्जा (स॰ स्त्री॰) अरजा देखो।

अरजिस् (सं॰ वि॰) विरक्त, शान्तराग जीमा।

अरजिसत्र (सं॰ पु॰) बौद्धोंके देवविशेष।

अरजी (स॰ स्त्री॰) अरजा देखो।

अरजुदी (स॰ वि॰) मायबीयता, मधुपीका पेड़।

अरङ्गुप (वै॰ वि॰) सोत्साह प्रशंसा करनेवाला, मकान शब्द सुनानेवाला जो होसलेके साथ तारीफ करता हो, बुलन्द आवाज़ देते हुआ।

अरचन, अर्चन देखो।

अरचना (हिं॰ क्रि॰) पूजना परस्तिश करना।

अरचल (हिं॰ स्त्री॰) अड़चन, झमेला, रोक झगड़।

अरचि, अर्चि देखो।

अरज्, आरज़ और अर्ज देखो।

अरजक (स॰ पु॰) १ अश्वविशेष कोई घोड़ा। इसका दोनो पिछला और एक दाहना पैर सफेद या किसी एक रङ्गका होता है। इसको ऐबी समझते। २ पतित जातिका पुरुष जो अपूत कमीनो कौमका हो। ३ वर्णसङ्कर। (वि॰) ४ नीच, कमीना।

अरजस् (सं॰ वि॰) रज अस्य न सन्ति, नास्ति रजोगुणो यस्य। १ रजोगुणके कार्य कामक्रोधादिसे शून्य। २ रेणुरहित, जिसमें धूलो न रहे। ३ स्वच्छ, शुद्ध पाक, साफ। ४ मासिक धर्मविहीन स्त्री, जिसे महीना न होवे।

अरजस्क अरजस देखो।

अरजा (स॰ स्त्री॰) १ पूतकुमारी, पोशकार। २ भार्गव ऋषिकी कन्या।

अरजास् (स॰ स्त्री॰) नवयौवना बालिका, नौजवान लड़की।

अरजी, अर्जी देखो।

अरजुन, अर्जुन देखो।

अरज्जु (सं० क्लो०) नास्ति रज्जुः बन्धनसाधनं यत्र। १ बन्धनागार, बांधनेकी जगह। इस जगहसे रस्सी न रहते भी जानवर भाग नहीं सकते। (त्रि०) २ रज्जु-रहित, जिसमें रस्सी न लगी।

अरझना (हिं० क्रि०) लिपट जाना, फंसना।

अरट (सं० पु०) न रटति गुप्तमन्त्राणां प्रकाश-यति, रट-वन्, नञ्-तत्। पृथुश्रवा नृपतिके मन्त्रि-विशेष।

अरटु (सं० पु०) अरं शीघ्रं अटति, अट-अल् वा, उण् पृषो० साधु। श्योना वृक्ष।

अरटु (सं० त्रि०) १ अरटुकाष्ठसे निर्मित, जो श्योनेका लकड़ीका बना हो। (पु०) २ पुरुष विशेष, किसी आदमीका नाम।

अरडींग (हिं० वि०) शक्तिशाली, ताकतवर।

अरण (सं० त्रि०) रणन्ति गर्जतेऽस्मिन्, रणशब्दे आधारे घ, नास्ति रणो युद्धं यस्य, नञ्-बहुव्री०। १ युद्धशून्य, जिसमें लड़ाई न रहे। नास्ति रणः शब्दो येन। २ रिपु देखकर जिसका वाक्य भयसे न फूटे, दुश्मनको देखकर खौफसे न बोलनेवाला। ३ क्रीड़ाहीन, जो खेलता न हो। ४ दुःखित, रञ्जीदह। ५ विगत, गया-गुजरा। ६ अपरिचित, अजनबी। ७ दूरस्थित, फासलेपर रहनेवाला। (क्लो०) ८ गमन, उपस्थिति, चाल, दाखिला। ९ निवेश, निधान, इन्दिराज, इदखाल। १० शरण, पनाह। (पु०) ११ चित्रकवृक्ष, चीतका पेड़।

अरणि (सं० पु०-स्त्री०) ऋच्छति गच्छति, ऋ-अनि। १ अग्न्युत्पादक मन्थनकाष्ठ, जिस लकड़ीको घिसनेसे आग निकले। २ लकड़ीके जिन दो टुकड़ोंको घिसकर आग बनायें। (पु०) ३ सूर्य। ४ अग्नि। ५ क्षुद्राग्निमन्थवृक्ष, गनियार, अंगेथु। ६ श्योनाकवृक्ष। ७ चित्रकवृक्ष। (स्त्री०) ८ मार्ग, राह। ९ क्षपणता, वखिली।

अरणिवह्निमन्थेपि स्मृतो निर्मन्थ दारुणि। (विश्व)

अरणि यन्त्रसे यज्ञमें आग बनाते हैं। यह दो भागमें विभक्त होता—अधरारणि और उत्तरारणि। इसे शमीगर्भ अश्वत्थसे तैयार करते हैं। उत्तरा-रणिको अधरारणिके छेदमें डाल, रस्सीसे मथानीको तरह घुमानेसे छेदके नीचे रखा हुआ कुश जल उठता है। अरणि मन्थनके समय वेद पढ़ा जाता है। यज्ञमें प्रायः अरणिमन्थनसे निकली हुई ही आग काम देती है।

अरणिक (सं० पु०) अरणये अग्निमन्थनाय साधुः ठन्। अग्निमन्थन वृक्ष।

अरणिका (सं० स्त्री०) अरणिक देखो।

अरणिमत् (सं० त्रि०) १ दोनो अरणिसे सम्बन्ध रखनेवाला। २ अरणिसे उत्पन्न किया जानेवाला।

अरणी, अरणि देखो।

अरणीकेतु (सं० पु०) अरणी केतुरस्य। महाग्नि-मन्थ वृक्ष, बड़ा गनियार।

अरणीसुत (सं० पु०) अरणीद्वय-घर्षणेन सुतः जातः। ३ शाक० तत्। शुकदेव। महाभारतमें लिखा है, कि वेदव्यास देवताके निकट वर पा अरणी-द्वय घर्षण द्वारा अग्न्युत्पादनको चेष्टामें रहे, उसी समय रूपवती घृताची अप्सरा देख पड़ी। उसको देखनेसे ही ऋषिके मनमें विकार आ गया। घृताचीने उसे समझ शुकी पक्षिणीका रूप बनाया था। व्यास-देवने इन्द्रिय दमनके निमित्त अनेक यत्न लगाया, किन्तु किसीतरह कृतकार्य हो न सके। हस्तस्थित अरणीपर शुक्र गिरते भी उन्होंने अरणीमन्थन न छोड़ा। उसीसे शुकदेवका जन्म हुआ और अरणी-सुत नाम पड़ा।

अरण्य (सं० क्लो०) अर्यते गम्यते पश्चाशत् वर्षात् परं तदनन्तरं वा यत्र। १ वन, जङ्गल।

'अटव्यरण्यं विपिनम्।' (अमर)

शास्त्रकारोंके पचास वत्सर वयःक्रम बाद वन जानेकी व्यवस्था देनेसे उसका नाम अरण्य पड़ा है। यह उद्यान, महावन, उपवन और प्रमोदवनके भेदसे चार प्रकारका होता है। उद्यानमें रागी क्रीड़ा करते और महावनमें सिंहादि पशु रहते हैं। उप-वन गांवके पासमें और प्रमोदवन राजाके घरमें

या करणे ल्युट्। १ वन जानेका वाहन विशेष, जिस सवारीमें बैठ जङ्गल पहुंचें। (क्लो॰) भावे ल्युट्। २ वनगमन, जङ्गलकी रवानगी।

अरण्यरक्षक (सं॰ पु॰) अरण्ये रक्षति; अरण्य-रक्ष ण्वुल्, ६-तत्। वनरक्षक, जङ्गलका मुहाफ़िज़।

अरण्यरजनी (सं॰ स्त्री॰) वनहरिद्रा, जङ्गली हलदी।

अरण्यराज् (सं॰ पु॰) वननृपति, जङ्गलका बाद-शाह। यह शब्द सिंहके लिये विशेषणरूपसे आता है।

अरण्यराज्य (सं॰ क्लो॰) वनसाम्राज्य, जङ्गलकी बादशाहत।

अरण्यराशि (सं॰ पु॰) अरण्यजातः राशिः, मध्य-पदलोपी कर्मधा॰। १ वन्यपशुजातीय राशि, जङ्गली जानवरका झुण्ड। ज्योतिषशास्त्रोक्त सिंहादि राशि।

अरण्यरुदित (सं॰ क्लो॰) अरण्ये रुदितं रोदनम्, सप्तमी वा अलुक्। अरण्यरोदन, वृथा आक्षेप, बेफ़ा-यदा रुलायी।

अरण्यरोदन, अरण्यरुदित देखो।

अरण्यवत् (सं॰ अव्य॰) वनकी भांति, जङ्गलकी तरह।

अरण्यवायस (सं॰ पु॰) अरण्यस्य वायसः। वनकाक, जङ्गली कौवा।

अरण्यवास (सं॰ पु॰) अरण्ये वासः वसतिः। वनवास, जङ्गलमें रहना।

अरण्यवासिन् (सं॰ त्रि॰) अरण्ये वसति, अरण्य-वस-णिनि। १ वनवासी, जङ्गलका रहनेवाला। (पु॰) मुनि प्रभृति।

अरण्यवासिनी (सं॰ स्त्री॰) अत्यम्लपर्णी लता, अमरबेल।

अरण्यवास्तुक, अरण्यवास्तूक देखो।

अरण्यवास्तूक (सं॰ पु॰) ६-तत्। कुणञ्जर, जङ्गली बथुवा। यह मधुर, रुच्य, दीपन और पाचन होता है। इसका शाक त्रिदोषघ्न, मधुर, रुच्य, दीपन, ईषत् कषाय, संग्राही और लघु होता है। (राजनिघण्टु)

अरण्यशालि (सं॰ पु॰) अरण्यजातः शालिः, मध्य-पदलोपी कर्मधा॰। नीवारधान्य, जङ्गली चावल।

अरण्यश्वन (सं॰ पु॰) वनकुक्कुर, लकड़बग्घा।

अरण्यशूकर (सं॰ पु॰) अरण्यस्थः शूकरः, मध्य-पदलोपी कर्मधा॰। वनवराह, जङ्गली सूअर।

अरण्यशूरण (सं॰ पु॰) अरण्यजातः शूरणः, शाक॰ तत्। वनज शूरण, जङ्गली जमीकन्द।

अरण्यश्वन् (सं॰ प्र॰) १ वृक, भेड़िया। २ कपि, बन्दर।

अरण्यषष्ठी (सं॰ स्त्री॰) अरण्ये पूजनाय षष्ठी, शाक॰-तत्। १ ज्येष्ठमासकी शुक्लषष्ठी, अरण्ये पूज्या षष्ठी। ज्येष्ठशुक्लषष्ठीकी उपास्य देवी।

"ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे षष्ठी चारण्यसंज्ञिता।
स्कन्देनैककरास्तस्मट्यम्नि विपिने प्रिय॥
तां विन्ध्यवासिनीं स्कन्दषष्ठीमाराधयन्ति च।
कन्दमूलफलाहारा लभन्ते सन्ततिं शुभाम्॥" (राजमार्तण्ड)

ज्येष्ठमासके शुक्लपक्षकी षष्ठीको अरण्यषष्ठी कहते हैं। उस दिन स्त्रियां हाथमें एक-एक चामर ले वनमें जातीं और विन्ध्याचलवासिनी षष्ठी देवीको मनाती हैं। कन्द, मूल और फल खाकर व्रत रहनेसे शुभ सन्तान मिलता है।

स्थान-स्थानमें इस तिथिको षष्ठीकी प्रतिमा बना-कर भी पूजा की जाती है। षष्ठी देवीके ध्यानका मन्त्र नीचे लिखते हैं,—

"द्विभुजां गौरवर्णाभां पद्मपत्रोपशोभिताम्।
वराभयप्रदां षष्ठीं रत्नाभरणभूषिताम्॥
गन्धर्वैः संस्तुतां देवीं क्रोडे चार्पितपुत्रिकाम्॥"

अरण्यसभा (सं॰ स्त्री॰) वनसभा, जङ्गली अदालत।

अरण्यसम्भूत (सं॰ पु॰) कर्कोटक, गोलकांकर।

अरण्यहरिद्रा (सं॰ स्त्री॰) वनहरिद्रा, जङ्गली हलदी। यह कुष्ठ और वातरक्तको मिटाती है। (भावप्रकाश) मतान्तर यह कटु, मधुर, रुच्य, अग्निदीपन, तिक्त एवं कुष्ठवातनाशक होती और रक्तदोष, विष, श्वास, कास तथा हिक्काको दूर करती है। (वैद्यकनिघण्टु)

अरण्यहलदीकन्द (सं॰ पु॰) अरण्यहरिद्रा देखो।

अरण्या (सं॰ स्त्री॰) ओषधि विशेष, कोई जड़ी-बूटी।

अरण्याध्यक्ष (सं॰ पु॰) अरण्ये रक्षणादौ नियुक्तो-ऽध्यक्षः, शाक॰-तत्। वनरक्षक, जङ्गलका कोई हाकिम जिसे सरकार प्रजाकी रक्षाके लिये जङ्गलमें रखे।

अरण्यानि अरण्यानी देखो।

अरण्यानी (सं० स्त्री०) महदरण्यम् अरण्य ङीष् आनुक् च। १ महारण्य, बृहत् वन बहुत बड़ा जङ्गल। २ अरण्यपालयित्री अधिदेवता जङ्गलकी देवी। प्राचीन समयमें ऋषि वनदेवीका स्तव करते थे—

"अरण्यान्यरण्यान्यसौ या प्रेव नश्यसि।
कथा ग्रामं न पृच्छसि न त्वा भीरिव विन्दति।
वृषारवाय वदते यदुपावति चिच्चिकः।
आघाटिभिरिव धावयन्नरण्यानिर्महीयते।
उत गाव इवादन्त्युत वेश्मेव दृश्यते।
उतो अरण्यानिः सायं शकटीरिव सर्जति।
गामङ्गैष आ ह्वयति दार्वङ्गैषो अपावधीत्।
वसन्नरण्यान्यां सायमक्रुक्षदिति मन्यते।
न वा अरण्यानिर्हन्त्यन्यश्चेन्नाभिगच्छति।
स्वादोः फलस्य जग्ध्वाय यथाकामं नि पद्यते।
आञ्जनगन्धिं सुरभिं बह्वन्नामकृषीवलाम्।
प्राहं मृगाणां मातरमरण्यानिमशंसिषं।"(ऋक् १०।१४६।१-६)

अरण्यानि अरण्यानि! आप मानो मिटो जा रही हैं। आप ग्रामका पथ क्यों पूछ नहीं लेतीं? क्या आप निर्भय रहती हैं? वृषको पुकारने बाद जब चिचिकपक्षी वाद्यकी भांति बोलते बोलते उड़ता तब अरण्यानीको बड़ा आनन्द आता है। गाय भैंस चरने और मनुष्यका गृह देख पड़नेसे सायंकालकी अरण्यानी मानो गाड़ी हांकती है। अरण्यमें रहनेसे गाय भैंसको पुकारने और वृक्ष काटनेपर मालूम देता, मानो वह चीत्कार कर रही हैं। अरण्यानी किसीको नहीं मारतीं। फिर भी कोई दूसरा (बनका पशु प्रभृति) चोट कर सकता है। सुस्वादु फल खा लोग उनके राज्यमें यथाभिलाष रहते हैं। हम अरण्यानीका स्तव करते, वह मृगादिकी माता हैं। वह आञ्जनगन्धि सुरभि और अकृष्टक्षेत्रसे प्रचुर अन्न पा जाती हैं।

अरण्यचन्द्रिका (सं० स्त्री०) अरण्ये पतिता चन्द्रिका ज्योत्स्नेव ७-तत्। निष्फल वेशभूषा, वैफल्यदा सजावट। ग्रामकी ज्योत्स्नाका आनन्द सब कोई लेता, किन्तु निर्जन वनकी चन्द्रिका किसी काम नहीं आती. इसीसे वह निष्फल है। जिस वेशभूषाको देख पतिका मन मुग्ध न जाये, वह भी निष्फल और अरण्यचन्द्रिका कहाती है।

अरण्यचम्पक (सं० पु०) वनचम्पक, जङ्गली चम्पा। यह शीतल, कटु, और वीर्य एवं मन्दाग्निकारक होता है।

अरण्यचर (सं० त्रि०) अरण्ये चरति, अरण्य-चर-ट, ७-तत् वा अलुक् स। वनचर, जङ्गली, जो जङ्गलमें रहता हो।

अरण्यछाग (सं० पु०) वनछाग, जङ्गली बकरा।

अरण्यज (सं० त्रि०) १ वनमें उत्पन्न, जो जङ्गलमें पैदा हुआ हो। (पु०) २ तिलकल्प, तिलका पेड़।

अरण्यआर्द्रक (सं० स्त्री०) अरण्यार्द्रका देखो।

अरण्यआर्द्रका (सं० स्त्री०) अरण्यजा आर्द्रका, कर्मधा०। जङ्गली आदरख। यह कटु, पथ्य रुचिकर, बल और आग्नेय होती है। (राजनिघण्टु)

अरण्यजीर (सं० पु०) अरण्यस्य जीर, ६-तत्। कटुजीरक जङ्गली जीरा।

अरण्यजीर उष्ण, तुवर एवं कटुक होता, वात रोचकता और कफ तथा व्रणको मिटाता है।

अरण्यजीरक अरण्यजीर देखो।

अरण्यजीव (सं० त्रि०) आरण्येन अरण्यजेन फला-दिना जीवति अरण्य जीव अणुपपदात् क। वनोद्भव फलादि द्वारा जीवित, जो वनमें पैदा हुए फल वगैरह खाकर जीता हो। वानप्रस्थादि आचारवान् जन वनमें रहते और कन्दमूलफल खाकर अपना निर्वाह करते हैं।

अरण्यदमन (सं० पु०) देवनेका दरख्त।

अरण्यद्वादशी (सं० स्त्री०) मार्गशीर्षकी शुक्ला द्वादशी। इस तिथिको लोग व्रताचरण करते हैं।

अरण्यद्वादशीव्रत (सं० स्त्री०) अरण्यद्वादशी देखो।

अरण्यतुलसी (सं० स्त्री०) वनतुलसी [illegible], जङ्गली तुलसी। यह [illegible]भेदसे दो प्रकारकी होती है।

बड़ी अरण्यतुलसी उष्ण, कटु, एवं सुगन्धि

होती और वात, त्वग्दोष, विसर्प तथा विषको दूर करती है। छोटी अरण्यतुलसी कटु, उष्ण, तिक्त, रुच्य, अग्निदीपन, हृद्य, विदाह, लघु पित्तल, तथा रूक्ष रहती और कण्डु, विष, छर्दि, कुष्ठ, ज्वर, वात, कृमि, कफ, दद्रु तथा रक्तदोषको मिटाती है। इसका बीज दाह और शोषमें लाभदायक होता है।

अरण्यत्रपुसक (सं० पु०) वन्यत्रपुष, जङ्गली ककड़ी।

अरण्यत्रपुसी (सं० स्त्री०) इन्द्रवारुणी, इन्द्रायण। २ महाकाल लता, लाल इन्द्रायण।

अरण्यधर्म ((सं० पु०-क्ली०) अरण्ये आचरणीयो धर्मः,७-तत् वा शाक० तत्। वानप्रस्थ धर्म। वानप्रस्थ देखो।

अरण्यधान्य (सं० क्ली०) प्राणान् दधाति, धा इति यत् नुटौ धान्यम्. अरण्ये जात धान्यम् शाक० तत् ७-तत् वा। नीवारादि वनधान्य, जङ्गली चावल।

अरण्यधेनु (सं० पु०) वनजात गो, जङ्गली गाय।

अरण्यनृपति, अरण्यपति देखो।

अरण्यपति (सं० पु०) अरण्यानां लक्षणया तत्स्थ चौराणां पतिः वा, अलुक्-स०, ६ तत्। १ वनका राजा, जङ्गलका मालिक। २ अरण्यचर व्याधका पति, जङ्गलमें घूमनेवाला शिकारीका मालिक। ३ रुद्र।

रुद्रही लीलाक्रमसे चौररूप बनाते अथवा विश्वमय कहाते हैं। इसलिये चौरादिको रुद्ररूप समझना चाहिये। दूसरे, चौरादि शरीरमें जीव और ईश्वर—दो रूपसे रुद्र रहते हैं। इसमें जीवका ही पर्याय चौरादि होता और वही जीव ईश्वररूप रुद्रको बताता है। (माधव)।

अरण्यपलाण्डु (सं० पु०) वनजात पलाण्डु, जङ्गली प्याज। यह मूत्रविरेचक, श्लेष्महर और अत्युग्र रहता है। मात्रासे अधिक हो जानेपर इसे वान्तिक्षत् और मलभेदन पाते। शोथ, श्वास, कास और मूत्रसङ्गमें यह काम आता है। (भावप्र हिता)।

अरण्यपिप्पली (सं० स्त्री०) वनपिप्पलीनाम क्षुप, जङ्गली पीपलका पेड़।

अरण्यायन (सं० क्ली०) अरण्ये अयनं वानप्रस्थधर्म अस्त्यस्मिन् अर्श-आदि अच्। ब्रह्मचर्य, ब्रह्मचारीका धर्मविशेष।

अरण्यीय (सं० त्रि०) वनयुक्त, जङ्गली।

अरण्येतिलक (सं० पु०) सप्तम्या अलुक्, ७-तत्। वनतिल, जङ्गली तिल। जङ्गली तिलसे तेल नहीं निकलता। इसलिये जो द्रव्य रूपवान् रह गुणरहित हो, वह भी इसी नामसे पुकारा जाता है।

अरण्येऽनूच्य (वै० त्रि०) अरण्ये वने अनूच्यः नियतपाठ्यो मन्त्रो यस्य, अलुक् बहुव्री०। १ अरण्य पावके पाठ्य मन्त्र द्वारा संस्कृत। यह शब्द पुरोडाशादिका विशेषण होता है। (पु०) २ अरण्यका पाठ्य मन्त्र विशेष।

अरण्यौकस् (सं० पु०) अरण्यं ओकः स्थानं यस्य, बहुव्री०। मुनि, वानप्रस्थ, जङ्गलमें रहनेवाला फकीर।

अरत (सं० त्रि०) न रतम्, नञ्-तत्। १ विरत, दुनियाकी चीजसे दूर रहनेवाला। २ मन्द, धीमा। (क्ली०) ३ अमैथुन, सोहबतदारीकी अदम मौजूदगी।

अरतत्रप (सं० त्रि०) अरता विरता त्रपा लज्जा यस्य, बहुव्री०। १ मैथुनमें लज्जा न करनेवाला, जिसे सोहबत दारीमें शर्म न लगे। (पु०) २ श्वान, कुत्ता।

अरति (सं० पु०) ऋच्छति गच्छति, ऋ गतौ इत्यतिः। १ उद्वेग, तेजरफ्तारी, झपट। 'अरतिरुद्वेग'। (उज्ज्वलदत्त) २ क्रोध, गुस्सा। ३ गमन, रवानगी। ४ अधिकार, दखल। ५ आक्रमण, हमला। ६ सेवक, नौकर। ७ स्वामी, मालिक। ८ चिन्ता, फिक्र। ९ बुद्धिमान् व्यक्ति, दाना शख्स। (स्त्री०) रमक्तिन्. नञ्-तत्। १० अस्थिरचित्त, डावांडोल तबीयत। ११ रागका अभाव, अनिच्छा, तबीयतपर रङ्गका न चढना। १२ रतिविरह, जुदाई। १३ इष्टवियोग, दिलचाही चीजका न मिलना। १४ असन्तोष, लालच। १५ नायककी कन्दर्प-जनित दशा। १६ पित्तरोग, सफ़देकी बीमारी। (त्रि०) नास्ति रतिर्यस्य, नञ्-बहुव्री०। १७ अनुरागहीन, धीमा, सुस्त। १८ असन्तुष्ट, नाखुश। १९ जैन शास्त्रोक्त कर्मविशेष। इसके उदयसे चित्त चञ्चल रहता और किसी बातमें न लगता है।

अरतिस, अरतीस (हिं० वि०) तीन दहायी और आठ एकायीसे मिलकर बननेवाली। यह शब्द संख्यावाचक विशेषण होता है।

अरत्नि (सं० पु०) ऋादि० ऋ गतौ कत्निच् यण् च, नञ्-तत्। १ कनिष्ठाङ्गुलि भिन्न बंधो मुट्ठी।

"अङ्गुलि घरो रत्नि कोऽरत्नि प्रकाश किः। (अमरटीका)

२ कुर्पर, कुहनी, कोना। ३ बाहु, हाथ। ४ कुहनासे कनिष्ठाङ्गुलि पर्यन्त परिमाण। इस मापसे प्राचीनकाल यज्ञकी वेदी बनती थी।

अरत्निक (सं० पु०) स्वार्थे कन्। कुर्पर, कुहना।

अरत्निमात्र (सं० त्रि०) हाथभर, जो मापमें एक हाथसे ज्यादा न हो।

अरथ (सं० त्रि०) १ रथरहित, बैगाड़ी, जो रथपर चढ़ा न हो। (हिं०) २ अर्थ देखो।

अरथात, (हिं०) अर्थात् देखो।

अरथाना (हिं० क्रि०) अर्थ लगाना, मानी बताना।

अरथिन् (सं० पु०) रथविहीन योद्धा, जिस सिपाहीके पास लड़नेका रथ न रहे।

अरथी (वै० पु०) न रथि सारथिः, नञ् तत् वैदे दोघ। १ सारथि भिन्न जो यजन माड़ा न हांकता हो। (हिं० स्त्री०) २ विमान अनाज़ा, टिकटी। इसे लकड़ीसे सिढ़ी जैसी बनाते और मुर्दा जानेके काममें लाते हैं।

अरद (सं त्रि०) न सन्ति रदा दन्ता यस्य नञ्-बहुव्री०। १ दन्तविहीन बालक, जिस बच्चेके दांत न निकला हो। २ भग्नदन्त, टह पोपला, जिसका दांत गिर गया हो।

अरदख (हिं० पु०) किसी किस्मका दरख्त। यह महा किनारे उपजता है।

अरदन, अरद और अर्दन देखो।

अरदना (हिं० क्रि०) १ लातसे मारना, रौंदना कुचलना। २ मार डालना नष्ट करना।

अरदल (हिं० पु०) हज विरिन्, कोई दरख्त। यह मन्द्राज प्रान्तके पश्चिम घाट और सिंहलद्वीपमें उपजता है। इसका पोला गोंद पानीमें नहीं गलता घुलता है। इससे पोले रङ्गका बढ़िया पानीय बनता है। पीतका तैल पीतकमें दिया जाता है। इसकी लकड़ी भूरी होती और उसपर नीली धारी रहती है।

अरदली (हिं० पु०—Orderly) चपरासी, हाजि-रबाश। यह किसी हाकिमके पास रहता और उससे आकर मिलनेवाले आदमीको ख़बर करता है।

अरदावा (हिं० पु०) दलामका अन्न, जो अनाज कुचल डाला गया हो।

अरदास (हिं० स्त्री०) १ अर्जदाश्त, निवेदनयुक्त उपहार, जो भेंट विनतीके साथ चढ़ती हो। २ ईश्वर प्रार्थना। नानकपन्थी प्रत्येक शुभ कार्यके आरम्भमें अरदास करते हैं।

अरध अर्ध देखो।

अरन (सं० त्रि०) नास्ति रणं यस्मात् रण् क्वचित् नञ्-तत्। १ युद्ध-कर्तृक अरक्षित, जिसे दुश्मन् मार न सके। २ कमज़ोर जो युद्ध न हो। ३ सफ़द, धुम-धुरस।

अरन (हिं० पु०) १ किसी किस्मकी निहाई। यह नोकदार होता है। २ अरण्य देखो।

अरना (हिं० पु०) १ जङ्गली भैंसा। यह जङ्गलमें रहता और मामूली भैंसेसे मज़बूत होता है। इसके छुड़ाव शरीर पर बड़ाबड़ा बाल रहता है। सींग लम्बा मोटा और पैना होता है। यह बहुत ज़ोरदार होता और शेरसे भी लड़ता है। (क्रि०) २ अड़ना देखो।

अरनाथ—अष्टादश तीर्थङ्कर। बलभद्र रामचन्द्र और नारायण लक्ष्मणके समयमें होनेवाले बीसवें मुनि सुव्रत तीर्थङ्करसे पहिले हुए थे। इनके पिताका नाम सुदर्शन और माता का नाम मित्रसेना था। ये काश्यपगोत्रो हस्तिनापुर राजा थे। फाल्गुन शुक्ला तृतीया को रेवती नक्षत्रमें जिस समय इन (अरनाथ) का जीव जयन्त विमान नामा स्वर्गसे चलकर रानी मित्रसेनाके गर्भमें आया उस समय रानीने सोलह शुभ स्वप्न देखे और उनका फल पतिसे पूछा। उत्तरमें महाराजने उन स्वप्नोंका फल तीर्थङ्कर पुत्र रत्नकी प्राप्ति होना बतलाया। गर्भके दिन पूरे होनेपर मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्दशीको पुष्यनक्षत्रमें इनका जन्म हुआ। युवा होनेपर राज्य सिंहासनपर विराजे।

इकक्कीस हजार वर्ष पर्यन्त तो ये मण्डलेश्वर राजा रहे, बाद इनके चक्रवर्तित्वके चिह्नस्वरूप सुदर्शन-चक्रादि नव निधि चतुर्दश रत्नोंका प्रादुर्भाव हुआ। जैनियोंके भूगोलानुसार जम्बुद्वीपस्थ भरत-क्षेत्र सम्बन्धी एक आर्य और पांच म्लेच्छ खण्डोंके सम्पूर्ण राजाओंको जीतकर छह खण्ड पृथ्वीके राजा-धिराज बननेवालेको चक्रवर्ती कहते हैं। इनके नवनिधि और १४ रत्नोंके सिवा ८६ हजार स्त्रियां, १८ करोड़ घोड़े, ८४ लाख हाथी, ८४ लाख रथ, तीन करोड़ गौवें थीं। ३२ हजार मुकुटधारी राजा चरणोंमें नमते थे। इन्होंने इस विभूतिको २१ हजार वर्ष तक भोगा। एकदिन शरद् ऋतुके मेघोंको अकस्मात् नष्ट होते देख इनको वैराग्य उत्पन्न हुआ, सांसारिक भोग विलास उसी समान अनुभवमें आने लगे। तत्-काल ही अपने पुत्र अरविन्दकुमारको राज्य सौंप आप सहेतुक नामा वनको वैजयन्तिका नामक देवोंद्वारा वाहित पालकीमें विराजमान होकर गये। वहां मार्गशीर्ष शुक्ला दशमीके दिन सन्ध्या समय रेवती-नक्षत्रमें एक हजार राजाओंके साथ नग्न बालकके समान हो तपश्चरण कर मुनि हुए। उसी समय इनको चौथा मनःपर्यय ज्ञान (सबके मनस्थ पदार्थों-का जाननेवाला ज्ञान) उत्पन्न हुआ। तप ग्रहण करनेके पश्चात् प्रथमपारणा (आहार) चक्रपुर नगरके स्वामी अपराजितके यहां किया। इस प्रकार सोलह वर्षतक भगवान्‌के तप करनेपर उसी सहेतुक वनमें कार्तिक शुक्ला द्वादशीके दिन अपराह्ण काल रेवती नक्षत्रमें आमवृक्षके नीचे ६ उपवास करनेके पश्चात् ४ घातिया कर्मोंका नाश और इनके केवलज्ञान (संसारके भूत भविष्यत् वर्तमानके सम्पूर्ण पदार्थोंको युगपत् जाननेवाला ज्ञान) का प्रादुर्भाव हुआ। उस समय चारों प्रकारके देव उत्सवके लिये आये। भग-वान्‌का समवशरण (सभामण्डप) रचा गया। इनके समवशरणमें कुम्भाय प्रभृति ३० गणधर (भगवान् दिव्यध्वनिका विशेषार्थ करनेवाले) और पूर्वाङ्गके ज्ञाता ६१० मुनि, सूक्ष्म बुद्धिके धारक शिक्षक मुनि ३५८३५, अवधिज्ञानके धारी २८००, केवलज्ञान-नेत्रके धारक २८००, विक्रिया ऋद्धिके धारक ४३००, मनःपर्यय-ज्ञानके धारक २०५५, अनुत्तरवादी सोलह सौ, कुल पचास हजार मुनि और यक्षिला आदि साठ हजार आर्यिका (साध्वी), एकलाख साठ हजार श्रावक, तीन लाख श्राविका, असख्यात देवदेवी और तिर्यञ्च सभासद् रहते थे। इन सबको समवशरणमें विराजमान हो धर्मोपदेश देते थे। जिस समय आयुमें एकमास शेष था, उस समय भगवान् सम्मेतशिखर पर्वत (पार्श्वनाथ पहाड़) पर एक हजार मुनीश्वरोंके साथ प्रतिमा योगसे विराजे और चैत्र-कृष्ण अमावस्याके दिन रेवती नक्षत्रमें पूर्व रात्रिके समय मोक्षको प्राप्त हुए।

अरना (हिं॰ स्त्री॰) अरणी, वृक्ष विशेष। यह हिमालयपर होती है। इसका फल लोग खाते और गुठलीको भी काममें लाते हैं। काश्मीर और काबुलमें उपजनेवाली अरनी बहुत उम्दा होती, इसकी लकड़ीसे चरखेको कितनी हीं सबोव बनती है। यह माघ फाल्गुन फूलती-फलती और श्रावण-भाद्र मासमें पकती है। अरणि देखो।

अरन्तुक (सं॰ क्लो॰) तीर्थविशेष। यह कुरुक्षेत्रके अन्तर्गत और स्यमन्तपञ्चकका सीमाभूत-स्थान है।

अरन्धन (सं॰ क्लो॰) न-रन्धनं अभावे नञ्-तत्। पाकका अभाव, भोजनका न बनना, चूल्हेका न जलना। भाद्र और आश्विन मासकी संक्रान्तिको अरन्धनकी व्यवस्था दी गयी है। अरन्धनके पूर्व दिन स्त्रियां अन्न-व्यञ्जन पका रखती हैं। चूल्हेको लीप-पोतकर पूजा होती है। गांवमें लोग एक दूसरेको निम-न्त्रण देते। बालक-बालिका न्योता खाकर घूमते फिरती हैं। लोगोंको यही संस्कार है,—अरन्धनके दिन चूल्हा जलाने और भोजन बनानेसे सांप काटता है।

अरन्ध्र (सं॰ वि॰) नास्ति रन्ध्रं छिद्रं यस्य, नञ्-बहुव्री॰। १ निविड़, घना। २ छिद्रशून्य, बेसूराख। ३ निर्दोष, बेऐब।

अरप (वै॰ वि॰) १ अहिंसित, चोट न खाये हुआ। २ पापरहित, शुद्ध, बेगुनाह, पाकीज़ा।

अरबखर्व (सं॰ पु॰) शुद्धपक्ष, पांच बुद्धोंका नाम। इस शब्दका प्रत्येक अक्षर एक एक बुद्धको बताता है।

अरपन, अर्पण देखो।

अरपन-मक्का (हिं॰ वि॰) अस कम बेशुमार।

अरपना (हिं॰ क्रि॰) देना वस्तुगत भेंट चढ़ाना।

अरपस् (वै॰ क्रि॰) रप्यते व्याप सर्व समस्त वाप्यते रव कर्मेचि अप्सुम्, नास्ति पाप यस्य, नञ् बहुव्री॰। पापशून्य बेगुनाह।

अरपा (हिं॰ पु॰) १ कोई मसाला। (वि॰) २ दिया अर्पा।

अरब (हिं॰ वि॰) १ अबुद सौ करोड़। (पु॰) २ सौ करोड़की संख्या। ३ घोटक घोड़ा। ४ इन्द्र। (अ॰ पु॰) देशविशेष, एक मुल्क। (Arabia)

यह मायाद्वीप दक्षिण पश्चिम एशियामें अक्षा॰ १२ ३०´ एवं १२ १५´ उ॰ और द्राघि॰ ३२ ३०´ तथा ६ पू॰के मध्य अवस्थित है। इसमें पश्चिम लोहित-सागर, दक्षिण अदनकी खाड़ी तथा भारतसागर, पूर्व ओमन तथा ईरानकी खाड़ी और उत्तर सोरियाकी मरुभूमि है। आकारमें यह मायाद्वीप चतुष्क समचक जैसा है। इसका क्षेत्रफल १२००००० वर्गमील होता है।

दृश्य—साधारणतः अरब उच्च भी अधित्यका ठहरता जो दक्षिण-पश्चिमसे उत्तर-पूर्वको ढलता और दक्षिण पश्चिमके अन्त खूब उच्च पड़ता है। पश्चिममें यह ३००८१८० फ़ीट तक उच्च उठता और समुद्रकूल एव पर्यन्तके बीचकी १०मील भूमि नीची छोड़ता है। पूर्वके अन्तमें कठोर पत्थरदार पहाड़ है। इसका भूमितल प्रधानतः खालो और सूखा रहता है। इसमें एक-तिहाई रेगिस्तान और बाको बसनेके योग्य ज़मीन् है। यहां पानीको कमी रहती और वर्षा भी कम होती है। इसके पहाड़ बहुत कम ऊंचे हैं।

अरब शब्द हिब्रू भाषाका है। इसका अर्थ 'अस्त होना' है। मतलब यह, कि जो जाति सूर्यास्त दर्शको ओर रहती वह अरब कहलाती है। कोई कोई इस शब्दका हिब्रूके 'अराबा' शब्दसे निकला बतलाते हैं। अराबाका अर्थ 'मरुभूमि' है।

प्राचीन भूगोलवेत्ताने अरबको सीमा कुछ अधिक निकाली थी। प्लिनीके मतमें मेसोपाटेमियाके कुछ अंश और आरमेनियाको सीमातक अरबदेश रहा। (Hist. Nat. 5-24) जेनोफनने यूफ्रेटिस उपकूलके बालुकामय स्थान और अरक्सेस नदीके दक्षिण तीर पर्यन्त इसकी सीमा रखी थी। प्राचीन पाश्चात्य भूगोल-वेत्ताके मतसे अरब देश पांच प्रदेशमें विभक्त है,—१ यमन, २ हेजाज़, ३ तिहामा, ४ नेजद और ५ एमामा। इस देशके कितने ही स्वाधीन राज्योंमें निम्नलिखित प्रधान हैं —

१ यमन—यह प्रदेश लोहितसागरके उपकूल एवं हेजाज़ नेजद और हज़्रामौतको सीमातक माना जाता है। इसमें साना, मोखा, ज़ेबिद, बाइट-उल-फक़ी, होदेदा और लोहिया नगर विद्यमान है।

२ अदन—इसमें मशहूर अदन बन्दर मौजूद है।

३ लोबेयान् राज्य।

४ येफ़ोद-उल-लोवायन।

५ अबू आरिश। यह लोहितसागरके किनारे बसता और जैज़ान नामक नगर रखता है।

६ ओमान्।

७ माहारा। इस राज्यमें बेदुयिन लोग रहते हैं।

८ हेज़राम। यह प्रदेश अधिक उर्वर होता, ऊंट और घोड़ासे विख्यात है।

९ ओमन। यहां मस कटके सुलतान्‌का अधिकार है। यहां यव गेहूं ज्वार, कद्दू, अङ्गूर और खजूर उपजता है। जस्ते और तांबेकी खानि भी मौजूद है। रोस्ताक नगरमें इमामका मकान् है।

१० हेजाज़। यह मुल्क मुसलमानोंको पुण्यभूमि है। मक्का और मदीना इसीके अन्तर्गत है। मुहम्मदके मरने बाद यहां कान्स्टाण्टिनोपलके सुल्तानका अधिकार हुआ था। वह इस पुण्यस्थानको रक्षाके लिये कोई कर्मचारी रख देते रहे। उसके बाद वह्हाबियोंने सर उठाया और यहांके शरीफ़ने स्वाधीन बननेकी चेष्टा की। उसी समय तुर्कस्थानके पाशा और मक्केके प्रधान शरीफ़में झगड़ा भी हो गया था। शरीफ़ने पाशाका ख़ितामस्कर छिना लोड़ और उन्हें विष देकर मार डाला। वह्हाबियोंने उसके

विगड शीघ्र ही उनका निपात किया था। फिर मिस्रके शासनकर्ता मुहम्मद अली प्रधान बने और वहह्नावियोंको हरा हेजाजपर अपना दखल जमा बैठे। कुछ दिन हेजाल मिस्रकी दृष्टिमें रहा था। सन् १८४० ई०को मिस्र और तुर्कस्थानमें युद्ध छिडनेसे हेजाज तुर्कस्थान सुलतान्के हाथ लगा। इस प्रदेशका प्रधान नगर मक्का, मदीना और जद्दा हैं। मक्का देखो।

११ सिनायी पर्वतका मरुस्थल। यह अरबकी उत्तर-पश्चिम दिक् पर अवस्थित है। सिवा दो-एक शहरके यहां दूसरी जगह ऊसर और पहाड ही मिलता है। स्वाधीन वद्दूयिन राज्य चलाते हैं। सूज, टोर वगैरह बन्दर इसी प्रदेशमें है। सिनाई पहाड़में गोल पत्थर बहुत होता, ज्यादा ऊंची जगह कहीं-कहीं कीमती पत्थर भी मिल जाता है। ऊंची अधित्यका-पर जेबेलमूसा और उसीके पास वाद्‌विलोक्ष मिनाई गिरि वर्तमान है। इसी जगह सेण्ट केथरिनका मनो-हर आश्रम बना है। जेबेल मूसाके स्वच्छ सलिलमें प्रस्रवण पाया जाता है। उसे देखते ही आंख ठण्डी होती है। यहां अमरूद, खजूर और अनार वगैरह सुखाद्य फल उपजता है।

१२ नेजद। इस प्रदेशसे उत्तर सीरियाकी मरु-भूमि, दक्षिण यमन तथा हद्रामौत, पूर्व इराक-अरबी और पश्चिम हेजाज एवं लासा है। अरबके बीच यह प्रदेश सबसे बडा है। यहां वद्दूयिन जाति रहती है। बडी गर्मी पडते भी बीच-बीच साफ़ और ठण्ढी हवा लोगोंको तर-ताजा बनाती है। यह राज्य धर्मोन्मत्त वहह्नावियोंके अधिकारमें है। डिरायिया प्रधान नगर है। सन् १८१८ ई०में इब्राहीम पाशाने इस नगरको जीता था। उस समय यहां बड़ा-बडा बाईस मठ और तीस विद्यालय था। यह नगर अधिक उर्वर है। यव, गेहूं प्रभृति शस्य और खजूर, अनार, आडू, अङ्गूर, तरबूज, खर-बूजा वगैरह मेवा खूब पैदा होता है।

१३ लासा या हजारा। यह प्रदेश ईरान-खाडीके पश्चिम किनारे अवस्थित है। यहां अधिकांश वद्दू-यिन ही बसे हैं। इसका प्रधान नगर लासा है। यहांके लोग समुद्रसे मोती निकाल और पिण्ड-खजूरको ले-दे अपनी जीविका चलाते हैं।

१४ हद्रामौत। इस प्रदेशसे दक्षिण-पूर्व भारत-महासागर, उत्तर-पूर्व ओमन, उत्तर नेजद और पश्चिम यमन पड़ता है। यहां नमकका कारबार बहुत है। कितनी ही जगह वद्दूयिन बसता है। इसका अधिकांश मस्कट-इमामके अधिकारमें था। दफर और केशिन प्रधान बन्दर हैं। सको-तरा द्वीपपर भी इसी राज्यका अधिकार है। यह स्थान अगर-चन्दनके लिये प्रसिद्ध है।

अरबमें कोई बड़ी नदी नहीं है। छोटी नदी अधिकांश गर्मीमें सूख जाती है। किसी-किसी प्रदेश-पर वर्षमें एकबार भी पानी नहीं बरसता।

पृथिवीके मध्य अरब देश अत्यन्त उष्णप्रधान है। भारतवर्षके युक्तप्रदेशमें जो लू लगती, उससे भी ज्यादा गर्म और आग-जैसी हवा ग्रीष्मकालमें यहां चलती है। उसके सामने जानेसे फ़ौरन् मौत आती और थोडी ही देरमें देह सड-गल जाती है। लू चलते समय गन्धक-जैसी खुशबू निकलती है। गर्म हवा जिस ओरसे आती, उस ओरकी लाली देख अरब-अधिवासीकी पहले ही आंख खुलती है। उसी समय वह जमीन्-पर उलटे लेट जाता और ऊंट वगैरह जानवर भी माथा झुका रखा पाता है। लू जमीन्से कुछ ऊपर रहती, इसलिये ऊपर कही हुई तरकीबसे मुसाफ़िर बचता है। मामूली तौरपर बीच-बीचमें ठहरकर तीन दिनतक लू चलती है।

उक्त प्रदेशको छोड ईरान खाडीका कितना ही द्वीप भी अरब जातिके अधिकारमें है। फिर इन द्वीपमें प्रत्येक स्वाधीन है, जिनमें आबोयाल, हर-मूज, करेक वगैरह प्रसिद्ध है। इस स्थानके अधि-वासीका प्रधान जीवनोपाय मोती निकालना, नाव चलाना और मछली पकडना है। खजूर, सांवेकी रोटी और समुद्रकी मछली यहांके लोगोंका एकमात्र खाद्य है।

अरबमें उत्पन्न द्रव्य—मुसब्बर, गूगुल और मुर वगैरह

अनुकूल चीज मिलनेसे बहु प्राचीन कालावधि अरब सर्वत्र प्रसिद्ध है। यहां अकीक, मरकत, वैदूर्य इन्द्र नील प्रभृति मणिमाणिक्य भी पाया जाता है। मोतियोंके जैसा अच्छा होता वैसा दुनियामें किसी जगह नहीं देख पड़ता। वट, खजूर, नारियल, ताड़, केला, बादाम, खूबानी, सेव, नासपाती, पिस्तादाना पपीता, इमली, नारङ्गी और बबूल भी खूब उपजता है। अवाबेसे तुरञ्जबीन् नामक जो अर्क निकलता, वह अरब जातिके बहुत काम आता है। जगह-जगह गेहूं यव, ज्वार, उड़द, मसूर और तम्बाकू बोयी जाती है। कहवा बहुत अच्छी होती है। यहांकी सोनामाखी बड़े ही कामदेनेकी चीज है। नैजद प्रदेशमें नील होता है। सिवा इसके रेड़ अमलतास मया, काय फल, तिल, आम तरह-तरहका खरबूजा सब्जी, और जड़ी-बूटी भी देखनेमें आता है। जगह-जगह जस्ता और लोहा मिलता है।

जानवरमें ऊंट अरब जातिका पूरा साथी है। लड़कपनसे अरब जाति इसे भूखप्यास मारती, उसके छ टको भी देखे तो काम होतो है। यह जानवर १६।१६ दिन बे-खाये पिये काम कर सकता है। अरब जाति इस जानवरका दूध मायके दूधकी तरह पीती है।

अरबी घोड़ा दुनियामें मशहूर है। यहांका खच्चर गधा भी खूब तेज होता, जिसपर चढ़कर सिपाही युद्धमें चढ़ता है। जगह-जगह बकरी भेड़, जंगलमें हरिण, हरिण पहाड़ी बकरा, भेड़िया, सायमा और गीदड़ घूमते फिरता है। यमन और अदन प्रदेशमें झुण्डों पेडुमका बन्दर उछलते देखेंगे। उकाब, बाज, चील वगैरह तरह तरहकी चिड़िया भी बहुती है।

अरबोंका वृत्तान्त—अरब लोग सेमेतिक जातिसे उत्पन्न हुए हैं। इनका प्राचीन इतिहास ज्यादा न मिलेगा। प्राचीन अरब जातिके साथ भारतवर्षका वाणिज्य-सम्बन्ध रहा। पुरातन इतिहासलेखक हेरोदोतासने लिखा है,—ईरानके बादशाहने दारा याम हैस्तास्पिस् एशियाखण्डसे पश्चिम सब देशों लोगोंको जीत लिया था किन्तु अरब उस समय भी स्वाधीन थे। जब कम्बायिसिम् मिश्र जीतने चले, तब उन्होंने अरब जातिका सहारा लिया था। अलक्सन्दर अरब देशको अधिकार करनेके लिये तैयार हुये थे, किन्तु मर जानेसे उनको आशा पूरी न पड़ी। दिओदोरासने कहा है—यह जाति प्रबल पराक्रान्त और इसकी जन्मभूमि मरुप्रदेश होती है, फिर इसीको मालूम रहता, मरुमें कहां पानी मिलता है। रोमक कई बार इस देशपर चढ़ आये किन्तु खानेकी चीज मौजूद न रहनेसे वापस गये। अगस्तसके राजत्वकालमें ईलियास्गलास नामक कोई व्यक्ति अरब जीतने आया और ओरोदास नामक किसी अरब-अधिवासीने उसे साहाय्य दिया, किन्तु खानेकी चीज हाथ न आनेसे उसको भी अरब छोड़ना पड़ा था।

अरब जातिका जो प्राचीन इतिहास मिलता, उससे हमें पूर्वतन अधिपतियोंका नाम ही मालूम देता है। इसका उल्लेख नहीं मिलता—किसने कौन समय कितने दिन राजत्व किया था। सेमितिक जातीय जोक्तनके पौत्र शेम प्रथम अरब आये थे, उसके बाद इसी जातिके इस्माईल नामक दूसरे व्यक्तिने अरबमें घर बनाया।

प्रसिद्ध मुसलमान इतिहास-लेखक अबुलफिदाने अरब जातिको दो भागमें बांटा है—प्राचीन और वर्तमान। प्राचीन भागमें आद, समूद, तस्म, जादिस, जोहोम आमलीक प्रभृति नामक कई शाखा है। इस जातिके यत्सामान्य प्रवाद भिन्न दूसरा कोई हाल नहीं मिलता। आद जातिके शद्दाद नामक किसी व्यक्तिने इरम नगर और उसका बाग लगाया था।

वर्तमान अरब जातिका दो दल होता है, आती और असली। प्रथम दल कातन या जोक्तन और द्वितीय दल इब्राहीमके पुत्र इस्माइलके वंशसे उत्पन्न हुआ है। कातन अरबके दक्षिण अंचल और इस्माइल वंश हेजाजमें रहता है।

कातनके लड़केका नाम यारब था। कोई कोई कहता, इसी यारब शब्दसे इस देशका नाम अरब हुआ है। यारबके यशाब, यशाबके अबुदुल शाम और

अब्दुल नामके लडके कत्तान् तथा हिम्यार थे। खातन-वंशमें हिम्यार सर्वप्रथम राजा हुए। उन्होंने खसूद जातिको यमनसे निकाल राजमुकुट पहना था। पचास वर्षके राजत्व बाद हिम्यार मर गये। उनकी मृत्यु पीछे किसीके मतसे तत्पुत्र वोखिल और किसीके मतसे भ्राता कत्तान् सिंहासनपर बैठे थे। अनेक पुरुष अतीत होनेपर आक्रान नामक कोई व्यक्ति यमनका राजा बना और एक बडा काम कर देशको उपकार पहुंचाया था। उससे पहले हिम्यार शस्य उत्पादनके लिये नहर निकाल समुद्रका पानी लाये थे। इस नहरसे यमनका विशेष उपकार होता, किन्तु मध्य-मध्य पार्वतीय प्रबल वायुसे जल उछल उछल समस्त यमनको डूबा बडा अनिष्ट करता था। यह क्लेश मिटानेको आक्राननें मारेबके बीच दो पहाडसे एक बडा बाध बंधवा दिया। सन् ई०के तीसरे शताब्द यह बांध टूट जानेसे यमन प्रदेश जलमें डूब गया था। उस समय उम्र बीन आमिर ओरके मोसाकिया यमनके शासनकर्ता थे। उन्होंने भावी विपद् आते देख पहले ही यमन प्रदेशस्थ समस्त पैतृक सम्पत्ति वेंच डाली और आक प्रदेशमें जाकर रहने लगे। उम्रके मरनेपर उनके वंशधर नाना स्थानमें फैल गये थे। उम्र-पुत्र जेफनेका परिवारवर्ग सीरिया पहुंचा और दामस्कससे दक्षिण-पूर्व घसनी राज्य जा जमाया। कालक्रमसे इस वंशके सकल लोग ईसायी बन गये थे। उम्रके अपर पुत्र तालिबसे आउस और ख़ूशरोज़ नामक दो दल हुए, जो यात्रेव (मदीने)में जाकर रहने लगे। उम्रके पौत्र रबिया मक्के गये और उनके सन्तान ख़ाजा कहलाये थे। मक्केवाला कावा अतिप्राचीन कालसे अरब जातिका पवित्र तीर्थ समझा जाता है। ख़ाजा वंशके घमरूने बीन लोहिया बेकर और यमनसे आये दूसरे लोगोंकी मददसे काबा जीत लिया। बेकरके दलवालोंने देखा, कि अपरिचित विदेशीयके कावा जीतनेसे उनकी हिंसा हुई थी। उन्होंने कोराइसवाले इस्माइलको मिला ख़ाजावोंको शासनाधिकारसे निकाल दिया। सन् ४६४ ई०को काबा कोराइस जातिके अधिकारमें पहुंचा था। मक्का देखो।

कोराइस-राज कोसायीके पौत्र हसन बडे ही दयालु रहे। एकवार दुर्भिक्ष पडा, उसमें उन्होंने अपना सञ्चित रत्न सकल प्रसन्नतापूर्वक बांटा था। उनके पुत्र अब्दुल मतालिब थे। अब्दुल मतालिबके समय आब्राहाम नामक कोई युरोपीय और एक ईसाई कितनी ही फौज़ ले काबा जीतने आया था। किन्तु उन्होंने उसे युद्धमें हरा काबा तीर्थको बचा लिया। उसी समय दूसरी भी अद्भुत घटना हुई,—आब्राहाम-की फौज मक्केमें घुस तो गई, किन्तु वह जिस हाथी-पर चढकर आये, उसको हिम्मत आगे बढनेकी किसी तरह न पडी। उसी बीच हसन-पौत्र अबदुल्लाके एक पुत्र सन्तान भूमिष्ठ हुआ, जिसका नाम मुहम्मद रखा गया। (सन् ५७१ ई०) मुहम्मद देखो।

पुरातत्त्व—मुहम्मदके जन्म लेनेसे पहले अरब नक्षत्रोंकी उपासना करते और लम्बे-चौडे मैदानमें पश्वादि चराते घूमते थे। अनन्त सुनील आकाश उनके शिरपर शोभा देखाता और नक्षत्रोंका किरण उन्हें आमोद देता था। सूर्य, चन्द्र प्रभृति ग्रहगण प्रतिदिन नव-नव भावसे निकल उनके मनमें भय, भक्ति और प्रेमको आभा डालते रहा। उसीके साथ-साथ उन्होंने नक्षत्रोंका पूजना सीखा। उनके मध्य हिम्यार जाति प्रधानतः सूर्य, केनाना जाति चन्द्र, तापी जाति अगस्त्य और मिसाम जाति वृषको उपासना करती थी। यमन प्रदेशके सबा शहरमें शुक्रका कोई मन्दिर रहा। कहते हैं, पहले मक्केवाली मसजिद-में भी शनिकी पूजा होती थी। कुरानमें भी अल्लाट, अलउज्जा और मेनाट-तीन देवीका नाम मिलता है। नखले नगरमें अल्लाट देवीका मन्दिर रहा, जिन्हें थाकेफ जाति पूजती थी। मोगरोंने यह मन्दिर तोड़-फोड़ डाला। कोराइस और केनाना जाति अलउज्जा देवीको वृक्षमूर्तिसे पूजा करते रही। हुदसायलों और ख़ाजावोंकी उपास्य देवी मेनाट थीं। कोरायस आसेब देव और नैला देवीको भी पूजते रहे। ईरान खाडीके द्वीपकी तिमिस नामक अरबजाति

सूर्योपासना करती, जो उसने प्राचीन पारसियोंसे सीखी थी। भूत प्रेत पिशाच, अप्सरो, किन्नरो प्रभृतिको भी प्राचीन अरब जाति मानती रही। अरबके पुराने लोग सामुद्रिक, स्वप्रकाश, फलितज्योतिष और भौतिक विद्याको बड़े आदरकी दृष्टिसे देखते थे। नक्षत्रादिकी गति समझनेको उनके पास मान यन्त्रादि विद्यमान रहा। कथा कहानीपर वह बहुत विमुग्ध थे। कहते हैं, किसीके कथा कहनेपर लोग जो जो वही कथा कहते रहे। (प्राचीन अरब जातिके व्यवहार विषयको Journal of the Bombay Branch, Royal Asiatic Society Vol. XII देखो।)

प्राचीन अरब जातिके साथ भारतवासी और अपरापर जातिका वाणिज्य होता था। (J. A. S. Bengal. VII. 519) रामायणादिमें लोहित-सागरका उल्लेख भी मिलता है।

सन् ई॰के सप्तम शताब्द अरबका उत्तरांश यूनानियों यूफ्रेतिस नदीका तटस्थान ईरानियों और दक्षिण भाग हबशियोंके अधिकारमें था; सिवा इनके अपर सकल स्थान स्वाधीन रहा। सन् ५७० या ५७१ ई॰में मुहम्मदने जन्म लिया था। चालीस वत्सरके वयःक्रमकालपर उन्होंने अपना धर्ममत व्यक्त किया। यह धर्म फैलानेमें बारह वर्ष बीता और मक्केमें घोर विद्रोहानल भड़का था। मुहम्मदको विपक्षगणसे उनका प्राण लेना चाहा। मुहम्मद भागके यास्रेब भाग गये। उसी समय यास्रेब मदीना या मदीनात अन्‌-नबी (अर्थात् भविष्यद्वक्ताका नगर) कहलाया और उनके शिष्यगणने सन् हिजरीकी गणना लगायी। फिर मक्का अधिकृत हुआ और अरब लोगोंको समझाने लगा,—सिवा अल्लाके दूसरा कोई ईश्वर नहीं, मुहम्मद उनके पैगम्बर हैं। मुहम्मदने अरब वालोंको जगत्में अपना धर्म फैलानेका आदेश दिया था। उस समय यह कुरान और तलवारके साहाय्यसे चारो ओर नव धर्मका धूम उठाने लगे। इनका पूर्वमत और आचार व्यवहार एककाल ही समय-स्रोतमें डूबा, जिसका कुछ दिन बाद अस्तित्व तक न रहा।

उसी समय ईरान देश हीनतेज हो गया। अर-बुवका मन इतना शिथिल पड़ा, कि नव-नव धर्म उसपर अपना आधिपत्य जमाने लगा था। फिर मुहम्मदका मत ईरानमें फैला, वहां अरबोंकी सत्ता बढ़ती गयी। सन् ई॰के सप्तम शताब्द पश्चात नवधर्मके प्रधान रक्षक बने। खलीफा मोयाबि-यरके स्पेन देश भाग जानेसे कर्दोवेमें उमैयद खलीफाने अपना राज्य जमाया। क्रीट, कार्सिका सारदिनिया और सिसिली द्वीप अरबोंके हाथ आ पड़ा था।

अब्बास वंशके राजगणने बगदादको अपनी राजधानी बनाया। इस वंशमें कितने ही विद्योत्-साही राजा हुए थे। उनमें खलीफा मन्सूर हारुन्-अल्-रशीद और मामून् मशहूर हैं। इनके समय नानादेशीय विचक्षण पण्डित बगदादको राजसभामें उपस्थित रहे। उनमें भारतवर्षीय शास्त्रविद् पण्डित गणका भी नाम मिलता है। येन-अल्-अस्मा कितब कातुल अतबा नामक ग्रन्थमें देखेंगे—इन नृप तियोंकी बगदाद राजधानीमें भारतवर्षीय गणित, ज्योतिष और चिकित्साशास्त्र प्रभृति पढ़ाया जाता था।

अरबोंने वाणिज्यमें विशेष उन्नति पायी थी। ईरान, सीरिया, मीसोपोतमिया और स्पेन देश जीतने बाद वह नाना देशोंमें पहुंच व्यवसाय वाणिज्य चलाने लगे। सन् ई॰के अष्टम शताब्द इन्होंने भारत-वर्षमें पैर रखा था। उसी समय कितने ही हिन्दू नरपतियोंको इसलाम धर्मकी दीक्षा दी गयी। इति हास रचयिता गिबन साहबने लिखा है,—अरबोंके द्वारा ही रोमक साम्राज्यका अधःपतन हुआ। कोई कोई कहता—सन् ई॰के एकादश शताब्द अरबोंने ही सर्वप्रथम अमेरिकाका दूं ढ़ निकाला था।

अरबमें बदूयिन नामक जाति रहती है। कोई-कोई इसे अरबका आदिम अधिवासी बताते हैं। इसका धर्म दस्युवृत्ति है। इसमें अभी घोड़ा और ऊंटो मेषपालक रहते हैं। मरुभूमि इसका वास-स्थान है। पहले यह अरबके प्राचीन धर्मका मानती

द्राघि० ८७° १´ ३०´´ से ८७° ४४´ ४५´´ पू०के मध्य अवस्थित है। रकबा १०४४ वर्गमील है। २ इसी नामकी तहसील का गांव। यह पनार नदी किनारे अक्षा० २६° ८´ १५´´ उ०, और द्राघि० ८७° ३२´ ५६ पू० पर बसा और पुरनिया नगरसे पन्द्रह कोस उत्तर है।

अररिवस् (सं० क्ली०) रा दाने क्सु, नञ्-तत्। १ दान न करनेवाला व्यक्ति, जो देता न हो। २ शत्रु, दुश्मन्।

अररु (सं० पु०) ऋच्छति प्राप्नाति अरि भावम्। १ शत्रु, दुश्मन्। २ आयुध, हथियार। ३ असुर विशेष। (त्रि०) ४ गमनस्वभाव, चलनेकी आदत रखनेवाला।

अररुस् (सं० पु०) ऋ बाहु० अरुस्। उपद्रव उठानेको आनेवाला शत्रु, जो दुश्मन धूम मचानेको आया हो।

अररे (सं० अव्य०) अरं शीघ्रं राति, रा-डे। अरर, अरे। यह सम्बोधन वाक्य मान्य व्यक्तिके लिये नहीं, स्नेहपात्र या नीचके लिये आता है।

अरल (सं० पु०) १ श्योणाक वृक्ष, सोना। २ सिन्धु प्रान्तकी एक नदी। कराची जिलेका मंछर भील इसी नदी द्वारा अपना जल सिन्धु नदमें पहुंचाता है। यह अक्षा० २६° २२´ से २६° २७´ उ० और द्राघि० ६७° ४७´ से ६७° ५३´ पू० पर अवस्थित है। नारा और मंछर भीलके साथ सिन्धुसे समानान्तर इसको पचास कोस तक बहते पायेंगे। सेहवानमें इसके किनारे रेलवेका बन्दर ष्टेशन बना है।

अरला (सं० स्त्री०) हंसपत्नी, हंसिनी।

अरलु (सं० पु०) अरं लायते गृह्णाति। १ श्योणाक वृक्ष, टेंटूका पेड। २ गन्धाषरचूर्ण। ३ गर्भज्वर। ४ वेतस वृक्ष।

अरलुक, अरलु देखो।

अरलुपुटपाक (सं० पु०) श्योणाकत्वक्कृत पुटपाक, टेंटूकी वकलेसे बनाया गया पुटपाक। जो पुटपाक अरलुकी त्वक्से बनता, वह अग्निदीपन और मधु एवं मोचरस मिलानेसे सर्व अतिसारको जीतनेवाला निकलता है।

अरलेश्वर—बम्बई-प्रान्तके धारवाड जिलेका एक तअल्लुक। यह हङ्गलसे उत्तर-पूर्व पांच मील पर बसा और इसमें कदम्बेश्वरका प्रस्तर-मन्दिर बना है। मन्दिरमें मूर्तिकी दक्षिण ओर एक स्तम्भ पर शक ८८८, मकरतोरणपर शक १०१० और प्रधान द्वारके सम्मुख एक स्तम्भपर स्वर सवत्सर अङ्कित है।

अरव (सं० पु०) रु-अप्-यण्, नञ्-तत्। १ रवका अभाव, आवाजकी अदममौजूदगी। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ रवशून्य, बे आवाज, शोर-गुल न करनेवाला।

अरवन (हिं० पु०) १ कच्ची काटनेवाली फसल। २ सबसे पहले काटो और खलिहानमें न लगा घरमें लायी हुई फसल, अंवासी, कवारा। इस अन्नसे देवताको पूजते और ब्राह्मणको खिलाते हैं।

अरवल (हिं० पु०) घोडेके कानकी जडमें गर्दनकी ओर रहनेवाली भौंरी। यह एक ओर रहनेसे अशुभ और दोनों ओर रहनेसे शुभ होती है।

अरवा (हिं० पु०) १ बे उबाले या भूने धानसे निकाला हुआ चावल। २ आला।

अरवाकुरिचो—मन्द्राज प्रान्तके कोयम्बतोर जिलेका एक गांव। यह अक्षा० १०° ४६´ ३०´´ उ० और द्राघि० ७७° ५७´ पू० पर बसा है। यहां चमडे और कपडेका खासा रोजगार चलते देखेंगे। महिसूर-नृपतिने इस ग्राममें 'विजयमङ्गल' नामक जो किला बनवाया, उसे अंगरेजो फौजने तीन बार सन् १७६८, १७८३ और १७९० ई०में जबरन् छीन लियाथा।

अरवाती (हिं० स्त्री०) ओलती, छज्जेके जिस किनारेसे पानी नीचे गिरे।

अरवाह (हिं० स्त्री०) लडाई, झगड़ा।

अरवाही (हिं० वि०) झगडालू, लडाका।

अरविन्द (सं० क्ली०) अरा: चक्रस्य नाभिनेम्योरन्तरालस्थकाष्ठानि तादृशानि दलानि विद्यन्ते, अर-विद्-श। गवादिषु विन्दे: संज्ञायाम्। पा ३।१।१३८ वा र्त्त०। तत —शे मुचादीनाम्। पा ७।१।५९। १ पद्म, कमल। २ नीलोत्पल, नीले रङ्गका कमल। ३ रक्तकमल, लाल कमल। ४ सारसपक्षी। ५ ताम्र, तांबा।

अरविन्द-दलप्रभ (सं॰ स्त्री॰) ताम्र तांबा।

अरविन्दनयन (सं॰ पु॰) कमल जैसी आंखवाले विष्णु।

अरविन्दनाभ (सं॰ पु॰) अरविन्द नाभौ यस्य, बहुव्री॰ अच् समा॰। नाभिमें कमल रखनेवाले विष्णु

अरविन्दनाभि (सं॰ पु॰) विष्णु। "कलतापहरविन्दनाभे" (भाग १५८)

अरविन्दबन्धु (सं॰ पु॰) कमलके साथी, सूर्य।

अरविन्दयोनि (सं॰ पु॰) कमलसे निकलनेवाले ब्रह्मा।

अरविन्दलोचन, अरविन्दनयन देखो।

अरविन्दाक्ष अरविन्दनयन देखो।

अरविन्दसद् (सं॰ पु॰) कमलपर बठनेवाले ब्रह्मा।

अरविन्दिनी (सं॰ स्त्री॰) अरविन्दस्य निकटस्थ देशादिः, इनि ङीप्। १ पद्मयुक्त देश, जिस मुल्कमें कमल रहें। २ पद्मसमूह, कमलका ढेर। ३ पद्म लता। ४ पद्मिनी।

अरवी (हिं॰ स्त्री॰) आलु, कन्द विशेष। यह दो तरहकी होती है,—सफेद और काली। इसकी जड़से मिला डण्ठल निकलता और उसके नीचे पत्ता लगता, जो पान जैसा रहता है। खानेमें इसे जायकेदार, लसदार और जनजनाहट लिये पाते हैं। इसके पत्ते को लोग तरकारी बनाते हैं। यह बैशाख-ज्येष्ठ बोयी और श्रावणमासमें खोदी जाती है।

अरश्मन् (वै॰ त्रि॰) नास्ति रश्मिरस्य, वैदि बहु॰ अन् समा॰। रस्सीरहित, बेलगामडोर, जिसमें रस्सी न रहे। यह शब्द रथादिका विशेषण होता है।

अरस (सं॰ पु॰) अभावे नञ् तत्। १ आलस्यका अभाव, कामपर जो लगनेकी सी। रसकी जरूरत। २ मधुरादि रस भिन्न, जो चीज मीठा खट्टा वगैरह न हो। ३ निकृष्ट रस खराब अर्क। (त्रि॰) नास्ति रसो यस्य नञ्-बहुव्री॰। ४ रसशून्य, जिसमें अर्क न रहे। ५ अचतुर, कमजोर। ६ नीरस फीका। (अ॰ पु॰) ७ छत। ८ प्रासाद महल।

अरसठ, अड़सठ देखो।

अरसट्ट (हिं॰ पु॰) मालगुजार आमद और खर्च लिखनेका खाता।

अरसन-परसन, अरस-परस देखो।

अरसना परसना (हिं॰ क्रि॰) मिला भेंटी करना।

अरस परस (हिं॰ पु॰) १ दर्शन स्पर्शन, देखा-भाली। २ क्रीड़ा विशेष, कोई खेल आंखमिचौनी छुआ-छुई। इस खेलमें पहले किसी लड़केको चोर बना उसकी आंख मूंद देते और फिर सब लड़के भागते हैं। वह आंख खोलकर दूसरे लड़केको छूनेको दौड़ता है। जो लड़का छू जाता, उसे ही दांव देना पड़ता है।

अरसा (अ॰ पु॰) १ समय वक्त। २ विलम्ब देर।

अरसात (सं॰ पु॰) छन्दोविशेष। यह चौबीस अक्षरका होता और सात भगण पर एक रगण रखता है।

अरसाना (हिं॰ क्रि॰) आलस्य आना, सुस्ती दौड़ना, नींद लगना।

अरसाश (वै॰ स्त्री॰) रसशून्य पदार्थका भोजन बैमोरकी चीजकी खुराक। २ शरीर शायन बिछनेका रियाज।

अरसाशिन् (सं॰ त्रि॰) १ रसशून्य द्रव्य खानेवाला, जो बेमोरका चीज खाता हो। २ शरीरको सालने-वाला, जो जिस्मपर रियाज उठाता हो।

अरसिक (सं॰ त्रि॰) रस वेत्ति, रस-ठन् नञ्-तत्। १ अरसज्ञ मजे को न समझनेवाला। २ रस-बोधरहित, जिसे कविताका सुबूर न आये। ३ भौंडा बेजायका।

अरसी (हिं॰ स्त्री॰) अलसी, तीसी।

अरसौहा (हिं॰ वि॰) अलस, काहिल सुस्त।

अरसौंहां अरसौहा देखो।

अरसी ठक्कुर—कोई प्राचीन संस्कृत कवि।

अरहट (हिं॰ पु॰) अरघट देखो।

अरहन (हिं॰ पु॰) तरकारीमें पड़नेवाला बेसन या आटा।

अरहना (हिं॰ स्त्री॰) अर्चन, पूजा, पवित्रिम।

अरहर (हिं॰ स्त्री॰) आढ़की तुवर। (Cajanus Indicus) यह अनाज भारतमें अधिक बोया जाता है। इसे कोई भारत और कोई अफ्रीकाका पौधा बताता है। यह चार पांच हाथ ऊंची रहती और

हरेक सींकमें तीन-तीन पत्ता रखती, जो एक ओर भूरी और दूसरी ओर हरी होती है। खानेमें पत्ती कसैली निकलती है। इसका बीज बरसातमें बोया जाता है। अग्रहायण-पौष मास इसमें पीला फूल लगता, जिसके झड़नेसे डेढ़ दो इञ्च और चार-पांच दानेवाली फली आती है। इसके बीजमें दो दाल होती है। यह फाल्गुनमें पकती और चैत्रमें कटती है।

अरहर दो तरहकी रहती,—छोटी और बड़ी। बडीका 'अरहरा' और छोटीका नाम 'रसमुनिया' है। पानी मिलनेसे इसका पौधा कई वर्ष हराभरा बना रहता है। देशभेदसे इसका नाम भेद भी पड जाता है। मध्यप्रदेशमें हरोना मिश्री, बङ्गालमें मघवा, देतो और आसाममें इसे पलवा, देव या नली कहते हैं।

मुंहमें छाला पड़नेसे लोग इसकी पत्ती चबाते और फोड़ा-फुन्सीपर भी पीसकर लगाते हैं। लकडी जलायी जाती और छप्पर छानेमें काम आती है। टहनी और पतले डण्ठलसे खाचा, टोरी वगैरह बुनते हैं। इसकी दाल जल्द हजम होती और बीमारको बडा फायदा पहुंचाती है। गुणमें इसे गर्म और सूखी पायेंगे। हिन्दुस्थानवासी प्रायः इसी दालको खाता है।

अरहस् (सं० पु०) गोपनका अभाव, पोशीदगीकी अदम-मौजूदगी।

अरहित (सं० त्रि०) सम्पन्न, भरा-पूरा।

अरहेड (हिं० स्त्री०) पशुदल, चौपायेका झुण्ड।

अरा, आरा देखो।

अराअरी (हिं० स्त्री०) वढ़ाचढ़ी, बाज़ी, होड।

अराक़ (अ० पु०) १ अरब देशका प्रान्त विशेष। २ अराक् प्रान्तका घोड़ा।

अराकान—१ वृटिश ब्रह्मदेशका प्रान्त विशेष। इसमें चार जिले हैं,—अकयाब, उत्तर-अराकान, क्योकप्यू और सण्डोवे। जङ्गलको छोड इसका क्षेत्रफल १४५२६ वर्गमील है। सन् १८२६ ई०को यह अंगरेज़ी राज्यमें मिला। हिन्दुवोंके निकट पूर्व यह स्थान 'रमाङ्ग' या 'रभाङ्ग' नामसे परिचित था।

२ अराकान प्रान्तकी प्राचीन राजधानी।

अराकान और बङ्गालवाले टिपराके राजा बीच चटगावकी सीमापर युद्ध हुआ और कई बार उन्होंने उसे अधिकार भी किया था। सन् ई०के १६वें शताब्दांत अराकान-नृपतिने फिर चटगांवको जीत अपने राज्यमें मिला लिया। यह गोवा, कोचिन, मलक्का वगैरहके साहसी और भगोड़े पोर्तुगीजोंको नौकर रख, अपनी चालाकी और हिम्मतके जोरसे जहाजी बेड़ेके हाकिम बन लूट-मार करते थे। सुन्दरवन उनकी घोर आक्रमणसे विनष्ट हुआ। ढाकाके मुसलमानोंके जहाज चल-फिर न सकते थे। पोर्तुगीज, मघ या अराकानवासियोंके सहारे कितनी ही बार बङ्गालसे आदमियोंको गुलाम बनाकर पकड ले गये। कहते हैं, मघोंके उपद्रवसे वाकरगञ्जके इधर-उधर लोगोंने रहना ही छोड दिया; किन्तु सन् १६३८ ई०में चटगांवके मघ-शासन-कर्ता मुकुटरायने अराकान राजासे लड़ अपना प्रान्त बङ्गालके शासक इसलाम खान् मुसहीको सौंपा था।

सन् १६६४-६५ ई०में नवाब शायस्ता खान् बङ्गालके शासक बने। उसी वर्ष उन्होंने ढाकेमें कितनी ही नाव और तेरह हजार फौज इकट्ठे कर मघ लुटेरोंको मार भगानेका प्रबन्ध बांधा। हुसेनबेग तीन हजार सिपाही नाव पर चढा समुद्रकी राह आगे बढे और शायस्ता खानके लड़के बुजुर्ग उम्मेदखान् दश हजार फौज ले खुश्कीकी राह उन्हें मदद देने चले। हुसेनबेगने मघना नदी पहुंच आलमगीर नगरके किले पर एकाएक आक्रमण किया और अराकान-नृपतिकी फौजको हरा उसे अपने हाथ लिया था। वहांसे वह सन्द्वीप टापूको रवाना हुए और बातकी बातमें धोकेसे मघोंका जहाजी बेडा जा जीता। हुसेनबेगने पोर्तुगीजोंसे अराकान-नृपतिकी नौकरी छोड़ बङ्गालमें जाकर बसनेको कहा और वैसा न करनेपर प्राणदण्ड देनेको धमकाया था। पोर्तुगीजोंके राजी होनेपर अराकान-नृपति उन्हें नष्ट कर बदला लेनेपर उद्यत हुए। उन्हें रातो रात अपना माल-असबाब छोड़ चटगांवसे भागना पडा था।

उम्मेदखान्‌की फौजने किसी नदीपर पहुंच अराकानियोंको युद्धके लिये तैयार पाया था। किन्तु मुगल सवारोंको देख उनके छक्के छूट गये और पीछे पैदों चटगांवको भागना पड़ा। हुसेन-बेगने उम्मेद खान्‌की फौज आनेसे पूर्व अपना जहाजी बेड़ा समीपके खाड़ीमें बढ़ाया था। कुमरिया नामक स्थानके समीप अराकानियोंने तीन सौ हथियार बन्द नाव ले हुसेन बेगपर आक्रमण किया। यद्यपि हुसेनबेग पोर्तुगीजोंके सहारे शत्रुको पदानत करनेपर कृतकार्य हुए, किन्तु नावको भगी लड़ाई देख उनके होश उड़ गये थे। क्योंकि अपना बेड़ा जल्द-जल्द किनारे लगा उम्मेदखान्‌की फौजका सहारा लिया। दूसरे दिन अराकानियोंके युद्ध आरम्भ करने पर उम्मेदखान्‌ने ऐसा मौका मारा कि उन्हें पीछे ही हटना पड़ा। उसके बाद दोनो फौज् चटगांवको रवाना हुई। चटगांवके अराकानी अपने जहाजी बेड़ेकी हार देख रातको किला छोड़ भागे जा रहे थे। उसी समय मुगल सवारोंने उनके दो हजार आदमी कैद कर गुलामकी तौरपर बेच डाले। अराकानियोंका आक्रमण रोकनेको उम्मेदखान् चटगांवमें कितनी ही फौज छोड़ गये थे।

अराकान योमा—पर्वत श्रेणीविशेष। यह आसामदेश और मणिपुरके पर्वतसे पश्चिम त्रिपुरा, चट्टग्राम और उत्तर अराकान तक ब्रह्मदेशकी पूर्वसीमा निर्धारित करता है। उत्तर अराकानमें इसको जो शाखा आती, वह नीलपर्वत कहाती और समुद्रतलसे ७१०० फीट ऊंची है। उत्तरकी दक्षिणवाटा नीचे ऊंची रहनेसे चलने-फिरनेके काम नहीं आती। आमको घाटी अच्छी है। यहां पानी कम मिलता और तरी ज्यादा रहती है।

अराज (सं० त्रि०) विरल रामझोल, बोमा, ठण्डा, जिसे मौज न रहे।

अराज (हिं० वि०) १ नृपतिरहित, राजाको न रखनेवाला। (पु०) २ अराजकता बलवा।

अराजक (सं० त्रि०) नास्ति राजा यस्मिन्, नञ्-बहुव्री० कप्। राजशून्य, बेबादशाह।

अराजकता (सं० स्त्री०) राजा न रहनेकी स्थिति, जिस हालतमें बादशाह न रहे।

अराजन् (वै० पु०) राजा न होनेवाला व्यक्ति, जो स्वयम् बादशाह न हो।

अराजभोगिन् (सं० त्रि०) राजाके व्यवहार अयोग्य, जो बादशाहके काम आने काबिल न हो।

अराजस्थापित (सं० त्रि०) राजाकी आज्ञासे अप्रतिष्ठित, जिसको सरकारी सेंसन न मिला हो।

अराजिन् (वै० त्रि०) न राजते, राज-णिनि, नञ्-तत्। १ दीप्तिशून्य, जो चमक रौशनी न रखनेवाला। २ धर्मभिभूत, जो राजा न हो। राजा अधिष्ठातृत्वेना-स्त्यस्य, ब्रीह्यादि० इनि, ततो नञ्-तत्। ३ राज-शून्य, बेबादशाह।

अराटकी (सं० पु०) अरं स्वाङ्ग गद् प्रत्ययेन वा अम्यत् जीवति, अर वा जीव-अच्। १ रथकार, गाड़ी बनानेवाला, बढ़ई। (त्रि०) नास्ति राजीवं यस्य, नञ्-बहुव्री०। २ पद्मशून्य, कमलसे खाली।

अराटकी (वै० स्त्री०) अजशृङ्गी, मेढ़ासिंगी।

अराड़ जाना (हिं० क्रि०) गर्भपात होना, हमल गिरना। यह शब्द पशुके गर्भपातका ही द्योतक है।

अराति (सं० पु०) न राति ददाति किमपि कुयते वा। १ शत्रु, दुश्मन। रिपौ वैराराति प्रत्यर्थि परिपन्थि-शात्रवाः। (अमर) २ ज्योतिषोक्त षष्ठस्थान। ३ कामादि षट् रिपु। ४ छः संख्या। (वै० स्त्री०) ५ दानाभाव, कंजूसियतको अदममौजूदगी। ६ अप्रसन्नता नाराजी। ७ क्रोध, दुश्मनी। ८ असफलता, नाकामयाबी। ९ दुर्दिन, बुरा वक्त। (त्रि०) १० अतिगमनशील, खूब चलनेवाला।

अरातिदूषण (वै० त्रि०) शत्रु वा दुर्दिननाशक, दुश्मन या बुरे वक्तको दूर करनेवाला।

अरातिदूषी, अरातिदूषण देखो।

अरातिभङ्ग (सं० पु०) शत्रुका पराभव, दुश्मनकी हार।

अरातिह, अरातिदूषण देखो।

अरातीयत् (वै० त्रि०) १ विद्रोही, कपट, कपटी, जलील। २ शत्रुवत् आचरण करनेवाला, जो तन मोच् देनेकी फिक्रमें लगा हो।

अरातीयु (वै॰ त्रि॰) अरातिरिवाचरति, अराति-क्यच्-उ। शत्रु तुल्य आचरणशील, दुश्मनकी तरह काम करनेवाला।

अरातीवन्, अरातीयत् देखो।

अराद्दि (वै॰ स्त्री॰) अपराध, दोष, पाप, गुनाह, इज़ाव, ऐब।

अराधन, आराधन देखो।

अराधना (हिं॰ क्रि॰) १ आराधन लगाना, उपासना करना। २ पूजना, अरचना। ३ जप करना, ध्यान साधना।

अराधस् (वै॰ त्रि॰) राधा धनं तन्नास्ति यस्य, बहुव्री॰। १ धनरहित, बेदौलत। २ कृपारहित, नामेहरवान।

अराधी, आराधी देखो।

अराना, अड़ाना देखो।

अरावा (अ॰ पु॰) १ रथ, गाड़ी, बहल। २ तोप रखनेकी गाड़ी। ३ लड़ाकी तोपोंका साथ-साथ एक ओरको दागा जाना।

अराम, आराम देखो।

अराय (वै॰ त्रि॰) रायते यज्ञादौ दीयते दक्षिणा दिल्लेन वा, रा कर्मणि घञ् युक् च, नञ् बहुव्री॰। धनशून्य, दानहीन, गरीब, बखील।

अरायक्षयण (वै॰ त्रि॰) १ पिशाचादिको नाश करनेवाला, जो शैतानको नापैद कर देता हो। (क्ली॰) २ पिशाचादिका नाश,शैतानका मटियामेट।

अरायचातन, अरायक्षयण देखो।

अरायल—युक्तप्रदेशके इलाहाबाद ज़िलेका एक ग्राम। यह यमुनाके दक्षिण किनारे गङ्गाके सङ्गमपर बसा है। यहां हिन्दुओंका कोई बहुत पुराना शहर रहा, जिसके बसनेकी तारीख़ गुम हो गयी। अकबर बादशाहने फिरसे बनवा इसका नाम जलालाबाद रखा था।

अरायी (वै॰ पु॰-स्त्री॰) पिशाचादि, शैतान।

अरारूट, अरारोट देखो।

अरारोट (हिं॰ पु॰) वृक्ष विशेष, तीखुर। (Arrowroot, Maranta arundinacea) यह पहले अमेरिकाके डोमिनिका,बारबेडोस और जामिका मास्त-में मिला था। कहते हैं, सन् १७५६ ई॰में लोग इसे जामिकाके बागमें बोते और इसको जड़से खासा भोजन बनाते रहे। सबसे पहले यह सिलहटमें लगाया गया था। भारतमें तीखुर उत्पन्न होते भी कितने ही लोग इसे अमेरिकाका ही वृक्ष बताते हैं। किन्तु पूर्व समय भारतका तीखुर युरोपमें प्रसिद्ध था।

मई मास इसको जड़ ज़मीनमें गाड़ी जाती है। क्यारी तीन-चार इञ्च गहरी दो फीटके फर्क पर रहती, जिसमें डेढ़-डेढ़ फुट दूर जड़ गड़ती और उस पर ढांकनेको मट्टी पड़ती है। दोमट और बलुई ज़मीन इसके लिये फ़ायदेमन्द है। पौधेको उगने पर आलूकी तरह निराते हैं। इसकी पानीको बड़ी ज़रूरत रहती है। यह अगस्तमें फूलता और जनवरी फरवरीमें काम लायक़ होता है। किन्तु फ़सल तैयार होनेसे एक या दो महीने पहले इसमें पानी नहीं देते। क्योंकि उस समय सींचनेसे इसकी जड़ कची रह जाती है। पत्ती झड़नेसे जड़को खोदकर निकालते हैं।

इसके बनानेकी तरकीब बहुत सीधी है। जड़को अच्छी तरह धो और लकड़ीकी बड़ी ओखलीमें कूट-कर लेयी बना लेते हैं। फिर वही लेयी पानीसे भरे बरतनमें रखी जाती है। ऐसा करनेसे रेशा पानीपर तैरने लगता, जो फिर कूटा और उसी बर्तनमें डाला जाता है। रेशेको गाद अच्छी तरह निकल आनेसे फेंक देते हैं। अन्तको बतनका पानी दूध-जैसा देख पड़ता है। उस पानीको मोटे कपड़ेसे दूसरे बतन-में छान लेना चाहिये। गाद नीचे बैठ जानेसे मैला पानी फेंक साफ़ पानी भरते हैं। जब गाद अच्छी तरह जम जाती, तब बर्तनका पानी धीरेसे ढाल देते हैं। उसके बाद वही गाद काग़ज़ पर धूपमें सुखानेसे अरारोट बनता है।

यह रोगी और शिशुके लिये महोपकारी खाद्य है। इसके हज़म होनेमें कोई खट-खट नहीं। भारतवर्षके हलवायी इससे तरह-तरहको मिठाई बनाते, जिसे लोग व्रतके दिन खाया करते हैं।

अराल (सं॰ पु॰) अरं शीघ्रं आलाति गल्लाति मनः, अर-आ-ला-क। १ मदस्रावी हस्ती, मतवाला हाथी।

२ अर्थरस राल, धूना। ३ मालकस। (त्रि॰) ४ वक्र, टेढ़ा। ५ अग्रिमें चारों ओर फैला हुआ। ‘अराल वक्र त्रि। [illegible]।’ (हेम)

अरालपक्ष्मनयन (सं॰ त्रि॰) टेढ़ी पलकवाला।

अरालय—बम्बई कोल्हापुर राज्यवासी चमारोंके पूर्व पुरुष। कहते हैं कि इन्होंने अपनी आंखका लता बना महादेवजीको अर्पणके लिये दिया था। उसीसे नाराज़ हो महादेवजीने इन्हें जन्म भरके लिये मोची बना डाला।

अराला (सं॰ स्त्री॰) १ अपवित्र स्त्री, नापाक औरत। २ असत् स्त्री, कमीन औरत।

अरावन् (सं॰ त्रि॰) रा वनिप् नञ् तत्। अदाता कृपण, बखील, बख्शिश न करनेवाला।

अरावल, अरल देखो।

अरावली—पर्वतश्रेणी विशेष, एक लम्बा पहाड़। यह अक्षा॰ २५ एवं २६ ३०´ उ॰ और द्राघि॰ ७३ ३०´ तथा ७५ पू॰के मध्य अवस्थित है। इसका अङ्ग तीन सौ मील राजपूताने राज्य और अजमेर ज़िलेके बीच फैला है। इसमें कितनी ही बड़ी चट्टानें और चोटियां मौजूद हैं। उनकी चौड़ाई कहीं साठ मील और ऊंचाई एक हज़ारसे तीन हज़ार फीट तक है। सबसे बड़ा पहाड़ आबू ५६५२ फीट ऊंचा है। अरावलीमें सुरसुरा ठोस काला शीशा बिल्लोरी और रंगदार पत्थर मिलता है। इसकी चोटी मोती जैसी चमका करती है। उत्तर ओरसे लूनी और सभी नदी निकल बाहरके रणमें जा गिरती है। दक्षिण ओर भी कितनी ही नदी बहती, जिनमें चम्बल यमुनाकी बड़ी सहायक है। इस पर्वतमें कृषि योग्य वा वन अधिक नहीं मिलता। कितनी ही जगह ढेरका ढेर पत्थर और रेत पड़ा, फिर कितनी ही जगह कोरा पत्थर भी भरा है। चट्टानदार पहाड़के बीचकी उपत्यका रेतीली बहुत है। कहीं कहीं तर जगह पर खेती भी होती है। अजमेर नगरके निकटकी भूमि अतिशय उर्वरा है। पर्वतपर भील लोग दूर दूर बसते हैं। यह पर्वतश्रेणी कुछ कुछ दिल्ली तक चली गयी है।

अरास—गुजरात प्रान्तका स्थान विशेष। यह आनन्द और महीके बीच जो मैदान पड़ता, उसपर अवस्थित है। सन् १७२३ ई॰को यहां हमीद खान् और सूरतके सूबेदार रुस्तम अली खान्से घमासान लड़ाई हुई थी। अन्तको पीलाजी गायकवाड़की साहाय्यसे रुस्तम अलीने हमीद खान्को मार भगाया।

अरासनार—मन्द्राज प्रान्तके तञ्जोर ज़िलेकी कावेरी नदीका मुहाना। यह प्रवाह धाराके दक्षिण तट अक्षा॰ १०° ५६´ उ॰ एवं द्राघि॰ ७९° ११´ पू॰से निकलता और पूर्वको ओर बीस कोस बह करिकालपर समुद्रमें जा गिरता है। इस मुहानेसे हज़ारों एकर भूमि सिंचती और लाखों रुपया आता है।

अरि (सं॰ पु॰) ऋच्छति गच्छति अभिघातार्थम्। १ शत्रु, दुश्मन। २ रथाङ्ग गाड़ीका हिस्सा। ३ चक्र, पहिया। ४ विट्खदिर, दुर्गन्ध खैर, अरिमेद। यह कषाय, कटु, तिक्त और रक्तपित्तघ्न होता है। (राजनिघण्ट) ५ काम, क्रोध, लोभ, मद, मात्सर्य—यह छः वृत्ति। ६ छः संख्या। ७ ज्योतिषोक्त लग्नसे छठा स्थान। ८ ईश्वर। ईश्वर अपराधीको शास्ति देनेसे इस नाम पर पुकारा जाता है। ९ ज्योतिषशास्त्रोक्त परस्पर अरिग्रह। रविका शत्रु शनि, मङ्गलका बुध, बुधका चन्द्र, बृहस्पतिका बुध तथा शुक्र, शुक्रका रवि एवं चन्द्र और शनिका अरि रवि चन्द्र तथा मङ्गल होता है। चन्द्रका कोई भी ग्रह अरि नहीं। सिवा इसके कोई राशिस्थ ग्रह अन्य राशिस्थसे प्रथम, पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम और नवम स्थानमें रहनेसे उसका तत्कालीन अरि बनता है। अवकहड़ और अकडम चक्रके चतुर्थ कोष्ठ एवं चतुर्थ कोष्ठस्थ सम्भवको भी अरि कहते हैं।

अरिमा बंध—उड़ीसा प्रान्तके अनुल ज़िलेकी एक जाति। इसने अपनी प्राचीन पद्धति नहीं छोड़ी। इस जातिके लोग भैंसेको बलि चढ़ाते, विवाहमें सूअरका मांस खाते और हरिण एवं पक्षीको भी मार अपना पेट भरते हैं। [illegible] अपना सम्पूर्ण सामाजिक व्यवहार इस जातिसे बन्द कर रखा है।

अरिंद (हिं० पु०) इन्द्र-जैसा प्रबल शत्रु, जो दुश्मन निहायत जोरदार हो।

अरिकर्षण (सं० पु०) शत्रुको खींचनेवाला व्यक्ति, जो शख्स दुश्मनको मुती बना लेता हो।

अरिकुल (सं०क्ली०) शत्रुका वंश, दुश्मनका खान्दान्।

अरिकेशरी—१ बम्बई प्रान्तवाले उत्तर कोङ्कन जिलेके शिलाहारवंशज नृपति विशेष। सन् १०१७ ई०को यह समग्र कोङ्कनमें अपना राजत्व फैलाये थे। इनका दूसरा नाम केशोदेव रहा। २ सपादलक्षवाले चालुक्य नृपति प्रथम युद्धमल्लके पुत्र। यह जोलेमें राजत्व चलाते रहे। वह प्रान्त अब धारवाड़ जिलेमें मिल गया है। इन्होंने शक ८६३ में पम्पा नामक जन कविसे कनाडी भाषामें 'विक्रमार्जुनविजय' वा 'पम्पा-भारत' लिखाया था। इनके पुत्रका नरसिंह और पौत्रका नाम दुग्धमल्ल रहा।

अरिकेशी—केशीके शत्रु श्रीकृष्ण।

अरिक्कोद—मन्द्राज प्रान्तके मलवार जिलेका एक नगर। यह अक्षा० ११° १४´ १०´´ उ० और द्राघि० ७६° ३´ २१´ पू० पर अवस्थित और बेपुर नगरसे दश कोस पूर्व बेपुर नदीके ही दक्षिण किनारे बसा है। अरिक्कोट अपनी लकडीवाले व्यवसायके लिये प्रसिद्ध है।

अरिक्त (सं० त्रि०) पूर्ण, भरा-पूरा, जो खाली न हो।

अरिक्थभाज् (सं० त्रि०) ऋक्थं पितृपैतामहादि क्रमागतधनं भजते पतितादिना न लभते; अरिक्थ भज्-ण्वि, असूर्य्यम्पश्या इति वदसमर्थसमा०। अनंश, लावारिस, जो बुराकाम करनेसे अपने बाप-दादेकी जायदाद पा न सकता हो।

अरिक्थीय, अरिक्थभाज देखो।

अरिक्षिप—श्वफल्कके एक पुत्र।

अरिगूर्ण, अरिगूर्त देखो।

अरिगूर्त (वै०पु०) अरये तद्वधाय गूर्त उद्यतः, शाक० तत्। शत्रुको मारनेपर उद्यत, जो दुश्मनका कत्ल करनेको तैयार हो।

अरिघ्न (सं० पु०) शत्रुको नाश करनेवाला व्यक्ति, जो शख्स दुश्मनको मार डालता हो।

अरिचिन्तन (सं० क्ली०) १ शत्रुके विरुद्ध किया हुआ षड्यन्त्र, जो साजिश दुश्मनके खिलाफ़ की गयी हो। २ परराष्ट्र-प्रबन्ध, गैरमुल्की मामलेका इन्तजाम।

अरिचिन्ता (सं० स्त्री०) अरिचिन्तन देखो।

अरिता (सं० स्त्री०) अरेर्भावः, तल् टाप्। शत्रुता, दुश्मनी।

अरित्र (वै० पु०) ऋच्छति गमयति पारान्तरम्। नाविक, कर्णधार, मलाह, केवट, मांझी।

अरित्र (वै० क्ली०) अर्य्यतेऽनेन, ऋ करणे इत्र। नौका चलानेका डण्डा, डांड़। केनिपातक, पतवार, सुक्कान। 'अरित्रं केनिपातकम्' (अमर) ३ जहाज़, नाव। ४ सोमपात्र। ५ गमनसाधन वाहनादि, चढ़नेकी सवारी। (पु०) ६ व्यक्तिविशेष, किसी शख्सका नाम। (त्रि०) ७ जाता हुआ, जो हांक रहा हो। ८ शत्रुसे बचानेवाला, जो दुश्मनसे हिफ़ा-जत रखता हो।

अरित्व (सं० क्ली०) अरिता देखो।

अरिदमन (सं० त्रि०) १ शत्रुको दमन करनेवाला, जो दुश्मनको दबा देता हो। (पु०) २ दशरथके पुत्र और लक्ष्मणके लघुभ्राता शत्रुघ्न।

अरिदान्त (वै० पु०) अरिः शत्रुः दान्तः दमितो येन, बहुव्री०। शत्रुको अभिभूत करनेवाला, जो दुश्मनको हराता हो। २ यदुवंशीय क्षत्रियविशेष।

अरिद्विद्वादश (सं० पु०) अरीणां ग्रहाणां परस्परं द्वाभ्यां द्वादश ग्रहाः यत्र। डजन्त बहुव्री०। विवाहका निषिद्ध योगविशेष। धनु मकर, कुम्भ मीन, मेष वृष, मिथुन कर्कट, सिंह कन्या, तुला वृश्चिक—इन सबके परस्पर मिलनेसे अरिद्विद्वादश योग होता है। अर्थात् वरका राशि यदि धनु और कन्याका मकर हो, तो विवाह निषिद्ध है। इसीतरह कुम्भ मीनादि भी निषिद्ध हैं। द्विद्वादश कहनेका तात्पर्य किसी राशिसे दूसरे राशिका बारहवें स्थानमें पड़ना है।

अरिधायस् (वै० त्रि०) अरिभिरीश्वरैर्धीयते, अरि-धा-असुन्। १ ईश्वरधार्य। २ प्रसन्नतासे दुग्ध प्रदान करने-वाला, जो राजीसे दूध देता हो। ३ बहुमूल्य, कीमती।

अरिन् (सं॰ स्त्री॰) चक्र पहिया।

अरिनन्दन (सं॰ त्रि॰) अरीन् शत्रून् नन्दयति तोष-यति अरि नन्द णिच्-ल्यु, उप-समा॰। १ शत्रुको सन्तुष्ट करनेवाला, जो दुश्मनको खुश करता हो। २ इन्द्रियासक्त, मनःसपरस्त। ३ असमायक बद चाहत।

अरिनिपात (सं॰ पु॰) शत्रुका आक्रमण, जो हमला दुश्मनने मारा हो।

अरिघ्न (सं॰ त्रि॰) शत्रु द्वारा भी मर्मघातप्रास जिसको तारीफ दुश्मन भी करे।

अरिन्दम (सं॰ त्रि॰) अरीन् शत्रून् दाम्यति शम-यति दमयति वा, दमि णमनार्थी णच् मुम् च। १ पराभिमावक दुश्मनको जीतनेवाला। २ काम क्रोधका निवारक। (पु॰) ३ व्यक्तिविशेष किसी यादवका नाम। ४ मुनिविशेष।

अरिपु—नल राजाके पिता।

अरिपुर (सं॰ स्त्री॰) शत्रुका नगर या देश दुश्मन का शहर या मुल्क।

अरिपूरिम (सं॰ पु॰) विट्खदिर, दुर्गन्ध खैर।

अरिप्र (सं॰ त्रि॰) रिप्र पापं तदस्ति यस्य नञ् बहुव्री॰। १ पापरहित बेगुनाह। (स्त्री॰) रिप्र कुत्सित, ततो नञ् तत्। २ कुत्सित न होनेवाला जो खराब न हो।

अरिफित (सं॰ त्रि॰) रेफ न बननेवाला, जो बदल कर 'र्' न हो। यह विसर्गका विशेषण है।

अरिभ (सं॰ पु॰) अरिमेद देखो।

अरिमद (सं॰ पु॰) अरि अनिष्टकारित्वात् रोग विशेषरूपं मृद्नाति नाशयति, अरि मद अच्, उप-समा॰। १ कासमर्द क्षुप कसौंदी। इसका पत्र रुचिकर वृष्य विषकासरक्तघ्न मधुर, वातकफघ्न पाचक एवं कण्ठशोधन होता विशेषतः काम तथा विषको दूर करता और धारक एवं लघु रहता है। (राजनिघ॰) (त्रि॰) २ शत्रुको दमन करनेवाला जो दुश्मनको कुचल डालता हो।

अरिमर्दन (सं॰ त्रि॰) अरीन् मृद्नाति मृद ल्यु। १ शत्रुको मर्दन करनेवाला जो दुश्मनको कुचल डालता हो। (पु॰) २ शत्रुघ्नके सहोदर। यह श्वफ-ल्कके औरस और गान्दिनीके गर्भसे उत्पन्न रहे। ३ विजय नरेश मातृसमातके भाई। यही शाप वश कुम्भकर्ण हुए थे।

अरिमित्र (सं॰ पु॰) शत्रुका सहायक, दुश्मनका दोस्त।

अरिमेजय (सं॰ पु॰) अरीनेजयति कम्पयति, अरि एज णिच्-खश् मुम् च, उप समा॰। १ शत्रुको कंपाने वाला मनुष्य, जिससे दुश्मन कांपे। २ श्वफल्कके एक पुत्र।

अरिमेद (सं॰ पु॰) अरिं रोगरूपं मेदति हिनस्ति मिद अच्। १ विट्खदिर, दुर्गन्ध खैर। अरिमेदस्त्वचः कषाय उष्ण, तिक्त, मूत्रघ्न, शोषाति-सार कासनाशक और विसर्पघ्न होता है। (राजनिघण्टु) इसके व्यवहारसे मुख एवं दन्तरोग, कण्डू विष, शोथ, कृमि कुष्ठ और व्रण मिट जाता है। (भावप्रकाश) २ कृमिविशेष कोई कीड़ा।

अरिमेदक, अरिमेद देखो।

अरिमेदाद्यतैल (सं॰ क्ली॰) तैलौषधभेद। यह मुख-रोगको हितकर है। मूर्छित तिलका तैल ८ शराव, अरिमेद (विट्खदिर)की त्वचा १२। शराव, ६४ शराव जलमें क्वाथ करे। जब १६ शराव शेष रहे, तब आग परसे उतार और कपड़ेसे छान मञ्जिष्ठादिका कल्क द्रव्य प्रत्येक दो तोला और तैल यह सब तैल पाककी विधिसे पकाना चाहिये। (चक्रदत्तसंग्रह ग्रन्थ)

अरियनकाल—मन्द्राज प्रान्तवाले तिरुनावेल्ली राज्यके महोहो जिलेका एक गांव, घाटी और मुख्यस्थान। यह घाटीको चोटीसे प्राय तीन हजार उपत्यकामें अक्षा॰ ८ ५८ ३५″ उ॰ और द्राघि॰ ७० ११′ ११′ पू॰ पर अवस्थित है। पश्चिमभूमि बहनेका कारवार पुनगिपर तिनेवेल्लीसे त्रिवन्द्रम् जाने आनेको यह घाटी बड़ी राह बन गयी है।

अरियाकुप्पम्—मन्द्राज प्रान्तके दक्षिण अरकाट जिलेका एक जिला और मुहाना। यह पुदिचेरीसे डेढ़ कोस दक्षिण पश्चिम फ्रान्सीसी अधिकारके अन्तर्गत अक्षा॰ ११ ५५′ उ॰ और द्राघि॰ ७८ ४२′ पू॰ पर

अवस्थित है। सन् १७४६-६० ई०को पुंदिचेरीमें जो युद्ध हुआ, उसमें इस किले और मुहानेने बड़ा काम किया दिया था।

अरियाना (हिं० क्रि०) अबे-तबे करना, तू-तड़ाक निकालना, तिरस्कारयुक्त वाक्यसे सम्बोधन लगाना।

अरियापाद—मन्द्राज प्रान्तके तिरुवाङ्कोड राज्यका पवित्र देवायतन। यह अक्षा० ८° १७′ उ० और द्राघि० ७६° ३८′ ५१ पू० पर अवस्थित है। इसका भवन उल्लेख-योग्य है। दूसरे जो कमरे आराम लेने वगैरहको बने, उनके सबब भी कितने हो लोग यहां आ पहुंचते हैं। अप्रेल मासमें बड़े समारोहसे वार्षिकोत्सव होता है। राज्यसे कितना हो धन मन्दिरके व्ययनिर्वाहार्थ दिया जाता है।

अरियाल खान्—निम्न बङ्गालदेशका नदविशेष। यह अक्षा० २२° ३७′ ३०″ एवं २३° २६′ उ० और द्राघि० ८०° ७′ ३०″ तथा ८०° ३३′ ४५″ पू०के मध्य अवस्थित है। इसे फरीदपुर नगरके पास पद्मासे निकल फरीदपुर और वाकरगञ्ज जिलेमें बहते पायेंगे। ग्रीष्ममें इसकी चौड़ाई १७०० और वर्षामें ३००० गज़ रहती है। अपनी कितनी ही शाखा फैला यह मौरगञ्जके पास मेघना नदीमें जा मिला है। इसमें हर जगह बड़ी नाव चल सकती है।

अरिराष्ट्र (सं० क्ली०) शत्रुका देश, दुश्मनका मुल्क।

अरिला (सं० स्त्री०) अरिरपि लायते स्थ्यते गमनाक्रियायते यया,अरि-ला करणे क्विप्। मात्रावृत्त विशेष। इसमें सोलह मात्रा रहती है। अन्तमें दो लघु वर्ण या एक यगण लगता है। जगण इसके बीच नहीं पड़ता। इस वृत्तको कहनेसे शत्रुका मन भी पिघल जाता है।

अरिलोक (सं० पु०) विद्रोही जन या शत्रुका देश, दुश्मनी रखनेवाली कौम या दुश्मनका मुल्क।

अरिव (हिं० पु०) अरिन्न देखो।

अरिवन (हिं० पु०) उवका, फंसरी, रस्सीके अगले छोरका फन्दा। इसमें लोटे या घड़ेको फांस कुयेंसे पानी निकालते हैं।

अरिष (सं० पु०) नास्ति रिषो मलस्य वाधको यस्मात्; रिष हिंसाया क, नञ्-बहुव्री०। १ अपामांसज रोग विशेष, जो बीमारी दस्तको रोक देती हो। (क्ली०) न रिष्यते केनापि प्रकारेण वाध्यते; रिष कर्मणि क, नञ्-तत्। २ अविच्छिन्न धारावर्षण, जो वारिश रुकती न हो।

अरिषड़ष्टक (सं० क्ली०) षट् च अष्टकाश्च द्वन्द्व० ततः अरिभूतं, मध्यपदलोपी कर्मधा० बहुव्री० वा। विवाहनिषिद्ध योग विशेष। वर एवं कन्या उभयका राशि गणनासे षष्ठ वा अष्टम होनेको षडष्टक कहते हैं। इस योगमें विवाह करनेसे दम्पतीका मृत्यु या कलह होता है। ज्योतिषमें दो प्रकार का षड़ष्टक लगता है,—अरिषड़ष्टक और मित्रषड़ष्टक। उसमें सिंह-मकर, कन्या मेष, मीन-तुला, कर्कट-कुम्भ, वृष-धनु और मिथुन वृश्चिकवालेका नाम अरिषडष्टक है।

अरिषड्वर्ग (सं० पु०) अरीणां अन्तः शत्रूणां कामक्रोधादीनां षड्वर्गः, शिवभागवतवत् समासः। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य नामक छः अन्तः शत्रु।

अरिषण्य (वै० त्रि०) न रिष्यति हिनस्ति, रिष हिंसायां अन्यक्, नञ्-तत्। अहिंसक, जो किसीको तकलीफ न पहुंचाता हो।

अरिषण्यत् (वै० त्रि०) हिंसा न किया जानेवाला जिसको तकलीफ न पहुंचायी जाती हो।

अरिष्ट (सं० पु०) रिष हिंसायां क्त, नञ्-तत्। १ रीठेका वृक्ष। इसका गुण यह है—कटु, तीक्ष्ण, उष्ण, लेखन, गर्भपातकर, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक और ग्रहपीड़ा-दाह शूलनाशक। (वैद्यकनिघण्ट) २ लसुन। ३ निम्बवृक्ष। ४ गुडूची। ५ काक। ६ कङ्क। ७ वृषभासुर। इसे कृष्णने मार डाला था। ८ वलिका पुत्र दैत्य विशेष। ९ अनिष्टसूचक भूकम्पादि उत्पात। १० अनिष्ट स्थानका रवि प्रभृति ग्रह। ११ औषध विशेष।

औषधोंसे बने हुए मद्यको आसव और क्वाथको अरिष्ट कहते हैं। गुडूची, अभया, चित्रक, दन्ती,पिप्पलादि अनेक औषधियोंसे बना हुआ क्वाथ भी अरिष्ट कहाता है। इसका गुण अर्श, शोथ, ग्रहणी, श्लेष्मादि रोग नाशक है।

अरिष्टाह्व (सं० पु०) रीठाकरञ्ज, बड़ा रीठा।

अरिष्टि (सं० स्त्री०) रिष-क्तिन्, अभावे नञ्-तत्। रिष्टि वा हिंसाका अभाव, चोटकी अदम-मौजूदगी।

अरिष्टिका (सं० स्त्री०) १ रीठी। २ कटुकी।

अरिष्ठ (वै० त्रि०) अरये अरौ वा तिष्ठति, अरि-स्था-क वेदे षत्वम्। शत्रुनाशके निमित्त स्थित, जो दुश्मनको मारने खड़ा हो।

अरिसिंह—काव्यकल्पलतासूत्र-रचयिता।

अरिह (सं० पु०) पुरुवंशीय नृप विशेष।

अरिहन (हिं० पु०) १ शत्रुघ्न। २ वीतराग। ३ रेहन।

अरिहा (सं० त्रि०) १ शत्रुसंहारक, दुश्मनको कत्ल करनेवाला। (पु०) २ शत्रुघ्न, लक्ष्मणके छोटे भाई।

अरी (हिं० अव्य०) अयि, एरी, ओरी,। (स्त्री०) २ अड़ी, मौका, जिस वक्त कोई काम अटक रहे। (वि०) ३ अटकी हुई।

अरीठा (हिं० पु०) अरिष्ठ, रीठा।

अरीढ़ (सं० त्रि०) लिह आस्वादे क्त, नञ्-तत्। १ शत्रु द्वारा अनभिभूत, जो दुश्मनसे दबा न हो। २ अनास्वादित, जो चखा न गया हो।

अरीत (हिं० स्त्री०) १ रीतिका अभाव, चालके खिलाफ काम। २ कुरीति, बुरी चाल।

अरीरुह (वै० त्रि०) चाटा न हुआ, जो चाटा न गया हो।

अरीहण (सं० पु०) राजा विशेष, कोई बादशाह।

अरीहणादि (सं०पु०) अरीहण आदिर्यस्य, बहुव्री०। निर्वृत अर्थवाले वुञ् प्रत्ययके निमित्त पाणिन्युक्त शब्दसमूह। इसमें निम्नलिखित शब्द होते हैं,—अरीहण, द्रुघण, द्रुहण, भगल, उलन्द, किरण, साम्परायण, क्रौष्ट्रायण, औष्ट्रायण, त्रैगर्तायण, मैत्रायण, भास्त्रायण, वैमतायन, गौमतायन, सौमतायन, धौमतायन, सौमायन, ऐन्द्रायण, कौन्द्रायण, खाडायन, शाण्डिल्यायन, रायस्पोष, विपथ, विपाश, उद्दण्ड, उदञ्चन, खाण्डवीरण, वीरण, काशकृत्स्न, जाम्बवन्त, शिंशपा, रैवत, बैल्व, सुयज्ञ, शिरीष, वधिर, जम्बु, खदिर, सुशर्मन्, दलघ्न, भलन्दन, खण्ड, कनल, यज्ञदत्त और सार।

अरु (सं० पु०) १ आरग्वध वृक्ष, लटजीरा। २ रक्तखदिर, लाल खैर। ३ क्षतव्रण, चोटका जख्म। ४ मर्म, जिस्मकी नाजुक जगह। ५ सन्धिस्थान, गांठ, जोड़। ६ सूर्य, आफताब। (हिं० अव्य) ७ और।

अरुंषिका (सं० स्त्री०) अरुंषि मर्मस्थानान्यधि-कृत्य जाता, ठन् पृषो० मुम्। क्षुद्ररोगविशेष, कोई बीमारी। इससे माथेपर कई मुंहवाले फोड़े उभर आते हैं।

अरुई, अरवी देखो।

अरुक् (सं० त्रि०) सुस्थ, जिसे बीमारी न रहे।

अरुकटि, अरकाट देखो।

अरुगण, अरुक् देखो।

अरुङ्निमेष (सं० स्त्री०) नेत्ररोग विशेष, आंखकी कोई बीमारी।

अरुच् (वै० त्रि०) नास्ति रुक् दीप्तिर्यस्य, बहुव्री०। दीप्तिहीन, बेरौशनी, जिसमें चमक न रहे।

अरुचि (सं० स्त्री०) नास्ति रुचिर्भोजनाभिलाषो यत्र; रुच्-इनि, नञ्-बहुव्री०। भोजनानिच्छा, खानेको जीका न चाहना। २ मुखपीड़ाविशेष, मुंहकी कोई बीमारी। इसमें खानेसे कोई चीज अच्छी नहीं लगती। ३ घृणा, नफरत। (त्रि०) नञ् ६-तत्। ४ निराभिलाष, बेख्वाहिश। ५ निस्पृह, लापरवा। ६ इच्छाहीन, बेतबीयत। ७ आसक्तिहीन, शौक न रखनेवाला। ८ दीप्तिहीन, बेरौशनी। अरोचक देखो।

अरुचिकर (सं० त्रि०) अरुचि उत्पन्न करनेवाला, जिसे खानेको जी न चहे।

अरुचिर (सं० त्रि०) अग्राह्य, घृणित, नागवार, नफरत अङ्गेज।

अरुच्य, अरुचिर देखो।

अरुज् (सं० त्रि०) १ न पकनेवाला, जो पीप न देता हो। २ सुस्थ, तन्दुरुस्त।

अरुज (सं० पु०) न रुजति; रुज-क, नञ्-तत्। १ आरग्वध वृक्ष, लटजीरा। २ दानव विशेष। (क्ली०) ३ कुङ्कुम, केशर। ४ सिन्दूर। (त्रि०) नास्ति रु-

अरुणपुष्पी (सं० स्त्री०) बन्धुजीवक वृक्ष, लाल दुपहरीका पेड़।

अरुणप्रिया (सं० स्त्री०) अरुणस्य प्रिया, ६-तत्। १ सूर्यकी भार्या। संज्ञा, और छाया सूर्यकी भार्या मानी गयी है। २ अप्सरा।

अरुणप्सु (वै० त्रि०) अरुणः रक्तवर्णः प्सुः रूपं यस्य, बहुव्री०। रक्तवर्णविशिष्ट, लाल रङ्गवाला।

अरुणबभ्रु (वै० त्रि०) अरुणताविशिष्ट पीतवर्ण, सुर्खी लिये पीला।

अरुणमक्षिका (सं० त्रि०) रक्तमक्षिका, लाल माछी।

अरुणमल्लार (सं० पु०) मल्लार विशेष। इसके समग्र स्वर शुद्ध रहते हैं।

अरुणयुज् (वै० त्रि०) रक्तकिरणाभाविशिष्ट, जिस पर लाल किरणकी रोशनी पड़े।

अरुणलोचन (सं० पु०) अरुणे रक्ते लोचने यस्य, बहुव्री०। १ पारावत, कबूतर। २ कोकिल, कोयल। (त्रि०) १ रक्तवर्ण चक्षुयुक्त, सुर्ख आंखवाला।

अरुणशिखा (सं० पु०) कुक्कुट, मुर्गा। "उठे लखन निसि बिगत सुनि अरुणशिखा धुनि कान।" (तुलसी)

अरुणसर्प (सं० पु०) तक्षक सर्प, जहरीला सांप।

अरुणसार (सं० पु०) हिङ्गुल, हींग।

अरुणसारथि (सं० पु०) सूर्य, जिसका गाड़ीवान् अरुण रहे।

अरुणा (सं० स्त्री०) ऋ-उनन् टाप्। १ अतिविषा। २ गुड़। ३ मदरारिरस। ४ मञ्जिष्ठा, मंजीठ। ५ लाचातैल। ६ श्वेतपुण्डरीक, पांडरी। ७ त्रिवृता, लाल चोलाई। ८ नवा, कदम्बका फूल। ९ श्यामालता। १० इन्द्रवारुणी लता, लाल इन्द्रायण। ११ गुञ्जा लता, घुंघची। १२ पुनर्णवा। १३ मुण्डीरी, गोरखमुण्डी। १४ रक्तवर्णा गो, लाल गाय। १५ नदी विशेष।

अरुणाई (हिं० स्त्री०) अरुणता, सुर्खी, लाली।

अरुणाग्रज (सं० पु०) गरुड, विष्णुका वाहन।

अरुणात्मज (सं० पु०) अरुणस्य आत्मजः, ६-तत्। सूर्यपुत्र शनि, सावर्णमनु, कर्ण, सुग्रीव, यम, अश्विनीकुमारद्वय और जटायुको लोग सूर्यका पुत्र मानते हैं।

अरुणात्मजा (सं० स्त्री०) अरुणस्य आत्मना स्वरूपेण जायते, जन-ड-टाप्, ६-तत्। सूर्यकन्या। यमुना और तपतीको सूर्यकन्या कहते हैं।

अरुणात्मिका (सं० स्त्री०) कुमरिच, लाल मिर्च।

अरुणानुज (सं० पु०) सूर्यके भाई गरुड।

अरुणाभ (सं० क्ली०) वज्रलौह, खेडीका लोहा।

अरुणार, अरुणारा देखो

अरुणार्क (सं० पु०) रक्तार्क, लाल अकोडा। यह वात, कुष्ठ, कण्डू, विष, व्रण, प्लीहा, गुल्म, अर्श, कफ, उदरमल, कृमि, मेद शोथ, एवं विसर्पको मिटाता और कटु, तिक्त तथा उष्ण होता है। इसका पुष्प कृमि, कुष्ठ, कफ, अर्श, विष, रक्तपित्त, गुल्म तथा शोथको दूर करता और मधुर, तिक्त एवं धारक रहता है। (भावप्रकाश)

अरुणार्चिस् (सं० पु०) सूर्य, आफ़ताब।

अरुणावरज (सं० पु०) अरुणस्य अवरजः। गरुड।

अरुणाश्व (वै० त्रि०) लाल घोड़े जोतनेवाला। यह मरुत्सका विशेषण है।

अरुणित (सं० त्रि०) अरुणः क्रियते स्म; अरुण क्रत्यर्थे णिच्, कर्मणि क्त तारकादि० इतच् वा। १ लाल रंगा हुआ, जो रङ्गकर सुर्ख बनाया गया हो। २ रक्तवर्ण, सुर्ख, लाल।

अरुणिमन् (सं० पु०) अरुणता, सुर्खी, लाली।

अरुणिमा, अरुणिमन् देखो।

अरुणीकृत, अरुणित देखो।

अरुणीय—अथर्ववेदका पचीसवां उपनिषत्।

अरुणीययोग, अरुणीय देखो।

अरुणोचण, अरुणलोचन देखो।

अरुणोद (सं० क्ली०) अरुणं रक्तवर्णं उदकं जलं यस्य, बहुव्री० उदकस्योदादेशः। १ सरोवरविशेष, कोई तालाब। २ मन्दरपर्वतसे निःसृत नदी विशेष। ३ समुद्रविशेष। जैन इस समुद्र द्वारा पृथिवीको आवेष्टित मानते हैं। ४ लोहितसागर।

अरुणोदक (सं० क्ली०) अरुणं रक्तवर्णं उदकं यस्य, बहुव्री० समासविधेरनित्यत्वान्नोदादेशः। मन्दर पर्वतस्थित सरोवर।

थे। किन्तु अरुन्धती मन ही मन जानती, कि वशिष्ठके मनमें व्यभिचारका दोष उत्पन्न हुआ; इसीलिये वे पतिकी अवज्ञा करती थीं। उसी पापसे उनकी प्रभा धूमारुणकी तरह मलिन हो गई है, उनके श्री नहीं है; कभी वे दिखाई देती हैं और कभी अलक्ष्य होकर दुर्निमित्तकी भांति लोगोंके दृष्टिगोचर होती हैं। (आदिप० २३४ अ०)।

४ दक्षकन्या धर्मकी पत्नी। दक्षके पचास कन्यायें थीं। उनमेंसे दश धर्मको, तेरह कश्यपको और सत्ताईस चन्द्रको प्रदान की गयीं।

धर्मको जो कन्यायें व्याही गई थीं उनके नाम ये हैं,—अरुन्धती, वसु, यामी, लज्जा, भानु, मरुत्वती, सङ्कल्पा, मुहूर्ता, साध्या, विश्वा और जिह्वा। अरुन्धती का पारिभाषिक नाम जिह्वा है। मृत्युकाल निकट आनेपर लोगोंको जिह्वाका अग्रभाग नहीं दिखाई देता। अतएव मृत्युके पूर्व अरुन्धती दिखाई नहीं देती। यह बात नक्षत्र और जिह्वाके अग्रभाग दोनोंमें घटती है।

अरुन्धतीजानि (सं० पु०) अरुन्धती जाया यस्य, निङ् समा०। अरुन्धतीके स्वामी वशिष्ठ मुनि।

अरुन्धतीदर्शनन्याय (सं० पु०) अरुन्धत्या दर्शनमिव न्यायः, शाक०तत्। अरुन्धतीके देखने जैसी चाल। अरुन्धती नक्षत्र देखनेमें पहले स्थूल दर्शन द्वारा स्थानको ठहरा, पीछे सूक्ष्म दर्शन द्वारा उसपर दृष्टि डालते हैं। इसीतरह प्रथम स्थूल दर्शन द्वारा किसी चीजको देख पीछे सूक्ष्म दर्शन द्वारा उसके रूपमें मग्न होना अरुन्धतीदर्शनन्याय कहाता है।

अरुन्धतीनाथ, अरुन्धतीजानि देखो।

अरुप्पुकोट्टयी—मन्द्राज प्रान्तवाले मदुरा जिलेके रामनाद राज्यका एक गांव। इसमें बङ्गालोंकी अनोखी जाति अरम्बकूटन् रहती है, जो दूसरी बङ्गाल जातिसे नहीं मिलती। इस जातिके लोग किसी किस्मकी नौकरी चाकरी करनेसे दूर रहते हैं। दूसरे लोगोंसे विवाह करना भी इनमें निषिद्ध है।

अरुमंध, अरुम्तुदर्यसि देखो।

अरुवा - (हिं० पु०) अरु, लताविशेष। इसका पत्ता पान-जैसा होता और जड़में कन्द बैठता है। लताकी गांठसे जो सूत निकलता, वह चार पांच अङ्गुल बढ़कर मोटा हो कन्द बन जाता है। कन्दकी तरकारी बनाते हैं। खानेसे यह कनकना लगता है। बरयी पानके साथ इसे बोता है। २ उल्लू चिड़िया।

अरुशहन् (सं० पु०) रक्तवर्ण मेघको नाशकरनेवाले इन्द्र।

अरुष् (सं० त्रि०) नास्ति रुट् यस्य; रुष्-क्विप्। अक्रोध, गुस्सा न करनेवाला, जिसका मिज़ाज मुलायम रहे।

अरुष (सं० त्रि०) १ रक्तवर्ण, सुर्ख़, लाल। (पु०) २ ज्वाला, लपट। ३ सूर्य, दिन। ४ रक्तवर्ण मेघ, लाल बादल। यह तूफ़ान् आते समय देख पड़ता है।

अरुषा (सं० त्रि०) भूम्यामलकी।

अरुषी (सं० स्त्री०) इयर्ति गच्छति वादित्य योदयेनान्त प्रतिदिनं प्रापयति वा स्तोत्रन् ऐश्वर्यादि; ऋ-उषन्, पिप्पलादेराकृतिगणत्वादीकारः अथवा आ-रुच् दीप्तौ डुपच्, टिलोपः आङो ह्रस्वः; अरोचते अरुषी अथवा अरुषमिति रूपनाम सामर्थ्यादत्र शुक्लविषयं, शुक्लवर्णा अरुषी। १ उषा, तड़का। २ रक्तवर्ण अश्व, लाल घोड़ी। ३ ज्वाला, लपट। ४ मनुकी कन्या और और्वकी माता। महाभारतमें लिखा है, कि मनुकी कन्याका नाम अरुषी रहा। भृगुपुत्र च्यवनके साथ इनका विवाह हुआ था। अरुषीके पुत्रको और्व कहते रहे। वह जननीका ऊरुदेश तोड़ कर निकले थे।

"अरुषी तु मनो. कन्या तस्य पत्नी यशस्विनी।
और्वस्तस्यां समभवदूरुं भित्त्वा महायशा.।" (आदिप० ६६।१०)

अरुष्क (सं० स्त्री०) अरुर्मर्मस्थानपर्यन्तं कायति व्यथयति, अरुस्कै-क पत्वम्। भल्लातक वृक्ष, भिलावेंका दरख़्त। भिलावेंका चूर गात्रमें लगनेसे क्षत पड़ जाता, इसीसे वह अरुष्क यानी दुःख देनेवाला कहाता है।

अरुष्कर (सं० पु०) अरुः व्रणं पीड़ां वा करोति; अरुस्-कृ-ट, उपसमा० पत्वम्। १ भल्लातक वृक्ष

शिकारीका पेड़। (तस्मिन्नरुष्करोऽग्निमुखी भल्लातकी त्रिषु। (अमर) २ पीड़ादायक वस्तु, तकलीफदेह चीज़। अरु करोति अरुष्कर। (अमर) ३ अरुर्मिका माथेकी फुनसी। (क्ली०) ४ भल्लातक फल भिलावाँ। ५ व्रणविशिष्ट धन। ६ अरुःसम चीज।

अरुष्कृत (सं० त्रि०) आहत जख़्मी, घायल, जो चोट खा गया हो।

अरुर्माण (सं० स्त्री०) व्रणका औषध विशेष, ज-ख़्मकी कोई दवा।

अरुस् (सं० पु०) ऋच्छति सततं गच्छति, ऋ उस्। १ सूर्य, आफ़ताब। २ रक्तखदिर, लाल खैर। (क्ली०) ३ मर्मस्थान, नाज़ुक जगह। ४ व्रण घाव चोट। ५ क्षत जख़्म। ६ नेत्र आँख। (त्रि०) ७ आहत, जख़्मी।

अरुर्मिका (सं० स्त्री०) मस्तककी त्वकका दुःखदायी व्रण फोड़ेवाली खालकी तकलीफ़देह फुनसी।

अरुहा (सं० स्त्री०) न किमपि रोहति, रुह क। भूमि आमलकी भुंईआंवला।

अरूक्ष (वै० त्रि०) न रूक्षम् विरोधे नञ्-तत्। स्निग्ध, मसृण चिकना, मुलायम जो रूखा न हो।

अरूक्षता (वै० स्त्री०) स्निग्धता चिकनाई, मुला-यमियत।

अरूक्षित अरुक्ष देखो।

अरूद्ध, अरुद्ध देखो।

अरूढ़, अरुढ़ देखो।

अरूप (सं० त्रि०) नास्ति रूपं यस्य बहुव्री०। १ रूपशून्य बेशक्ल जिसकी सूरत न रहे। २ कुरूप, बदशक्ल जिसकी अच्छी सूरत न रहे। (क्ली०) ३ सांख्योक्त प्रधान। ४ वेदान्तोक्त ब्रह्म। कुत्सितार्थे नञ् तत्। ५ कुत्सित रूप ख़राब शक्ल।

अरूपक (सं० त्रि०) १ अलङ्कार रहित, बे-इस्तेआर। यह शब्द कविताका विशेषण है। (पु०) बौद्ध योगियोंकी भूमि या दरजा। यह चार प्रकारका होता है—आकाशायतन, विज्ञानायतन, आकिञ्चन्यायतन और नैवसंज्ञा संज्ञायतन।

अरूपता (सं० स्त्री०) १ रूपशून्यता, बेशक्ली। २ असमानता, नाहमवारी।

अरूपवत् (सं० त्रि०) अरूप देखो।

अरूपहार्य (सं० त्रि०) रूपेण ह्रियते; रूप हृ-ण्यत्-३ तत्, ततो नञ् तत्, यद्वा रूपेण न हार्यम् असमर्थ समा०। सौन्दर्यादि द्वारा वश न होनेवाला, जो खूबसूरतीके असरसे काबूमें न आता हो।

अरूपावचर (सं० पु०) बौद्ध दर्शनानुसार चित्तवृत्ति विशेष। इससे अरूपलोक देख पड़ता है। यह कुशल, विपाक एवं क्रियाके चार चार प्रकार होनेसे बारह तरहका होता है।

अरूषित (सं० त्रि०) अरुष देखो।

अरूरना (हिं० क्रि०) क्रोध उठाना, पीड़ा पहुंचना।

अरूसना (हिं० क्रि०) विदारित होना, उलझ जाना, घुसना।

अरुष (सं० पु०) ऋच्छति गच्छति, ऋ उषन्। १ सूर्य, आफ़ताब। अरुः इति। (उज्ज्वलदत्त) २ सर्प, सांप।

अरूष अरुषा देखो।

अरे (सं० अव्य०) १ ए, भो, हेय, सुन। २ आश्चर्य तथा भय, आह, भगवान्। यह अव्यय सम्बोधन मात्र किया जाता है। क्रोध या आश्चर्यके समय और नीच व्यक्तिके बोलते इस शब्द द्वारा सम्बोधन किया जाता है।

अरेणु (वै० त्रि०) १ रेणुरहित, बेगर्द। (क्ली०) २ रेणुरहित वस्तु, धूलसे खाली चीज़, आकाश आसमान।

अरेतस् (सं० त्रि०) वीर्यविहीन, वीर्य न रखनेवाला, बेतुख़्म, जिसमें तुख़्म न रहे।

अरेपस् (सं० त्रि०) रेपः पापं नास्ति यस्य, नञ्-बहुव्री०। निष्पाप, पापशून्य निर्दोष, बेगुनाह, पाकीज़ा।

अरेरना (हिं० क्रि०) मसलना, पिसना।

अरेरे (सं० अव्य०) अरे शब्दका द्विरुक्ति। अरे, ओरे। यह नीचको बुलाने और क्रोध देखाने में आता है।

अरैन—पञ्जावके झेलम जिलेकी एक जाति। इस जातिके संख्यामें कोई साढ़े पन्द्रह हज़ार लोग खेती-बारीका काम बहुत अच्छी तरह करते हैं।

अरोक (सं० क्लो०) रुच् दीप्तौ घञ्; रोकश्छिद्रं दीप्तिश्च, नञ्-बहुव्री०। १ छिद्रशून्य, बेसूराख़। २ दीप्तिशून्य। बेरौशनी। (हिं० वि०) ३ रोक न रखनेवाला, जो रुकता न हो।

अरोकदत् (सं० त्रि०) अरोका निश्छिद्रा दन्ता अस्य, बहुव्री० वा दत्रादेशः। १ सटे हुए दांत रखनेवाला, जिसके दांत सटा हुआ रहे। २ दीप्तिशून्य दन्त विशिष्ट, जिसके दांत काला रहे।

अरोकदन्त, अरोकदत् देखो।

अरोख, अरोष देखो।

अरोग (सं० त्रि०) नास्ति रोगोऽस्य, नञ्-बहुव्री०। १ रोगशून्य, तामज, जिसे बीमारी न रहे। (क्लो०) अरोगस्य भावः, ष्यञ्। २ आरोग्य, रोगका अभाव, तन्दुरुस्ती, बीमारीकी अदम मौजूदगी।

अरोगण (वै० त्रि०) अरोग देखो।

अरोगता, आरोगता देखो।

अरोगिता (सं० स्त्री०) स्वास्थ्य, तन्दुरुस्ती।

अरोगिन्, (सं० त्रि०) अरोग देखो।

अरोगी, अरोग देखो।

अरोग्य (सं० त्रि) अरोग देखो।

अरोग्यता, अरोगिता देखो।

अरोच (हिं० पु०) अरुचि, नापसन्दी, बेख़ाहिशी।

अरोचक (सं० पु०) न रोचयति प्रीणयति रुच्-णिच्-ण्वुल्, नञ्-तत्। रोगविशेष, जिस रोगमें क्षुधा और इच्छा रहनेपर भी खाया न जाय, अरुचि, जिसमें खानेकी वस्तु सुस्वाद न लगे।

अरोचक अर्थात् अरुचि रोग खुद कोई स्वतन्त्र बीमारी नहीं है। यह दूसरे रोगका उपसर्ग मात्र है। स्त्रियोंको गर्भावस्थामें अरुचि होती है। नवज्वर, पुरातनज्वर, अजीर्ण रोग, कास, कृमि प्रभृति अनेक रोगोंमें अरुचि सुनी है। क्रोध, शोक, मानसिक चिन्ता और आलसी स्वभाव ये भी अरुचिके प्रधान कारण हैं।

अरुचि होनेका कारण रोग प्रभृतिसे पाकयन्त्रमें व्यतिक्रम पड़ना है। पाकयन्त्रमें व्यतिक्रम होनेसे जिह्वा और मुखग्रन्थिका रस नहीं निकलता। भीतर आमरस, पैंक्रियाटिक रस, पित्त एवं आंतका रस भी यथानियम बाहर नहीं होता। इसीसे कोई वस्तु खानेसे उसका परिपाक होना कठिन हो जाता है। वैद्यकग्रन्थमें अरोचक रोग प्रधानतः तीन श्रेणियोंमें विभक्त किया गया है। यथा—वातिक, पैत्तिक और श्लेष्मिक। इसके सिवा आगन्तुक और त्रिदोष जनित अरुचि भी होती है।

सचराचर देखनेमें आता है, कि अरुचि होनेपर किसीके मुंहसे अम्ल, किसीके मुंहसे लवणाक्त और किसीके मुंहसे तिक्तजल निकलता, शरीर दुर्बल और मन सर्वदा उद्विग्न बना रहता है। कोई काम करनेकी इच्छा नहीं होती। खानेकी चीज़में या तो किसी प्रकारका दुर्गन्ध मालूम होता है या कोई स्वाद ही नहीं आता। किन्तु यह उपसर्ग होनेपर हमारे देशमें प्रायः सभी रोगी अम्ल खाना पसन्द करते हैं।

अरोचककी चिकित्सा करनेमें पहले मूल रोगका प्रतीकार होना आवश्यक है। मूल रोग बना रहनेपर केवल आग्नेय औषध प्रयोग करनेसे कोई फल नहीं होता। अतएव जिस रोगके साथ अरुचि हो, उसकी उपयुक्त चिकित्सा करना कर्तव्य है। औषधोंमें एलोपैथीमतसे पेप्सिन् विशेष हितकर है। भोजनके पहले इसे तीन चार ग्रेन खाकर पीछे आहार करना चाहिये। कुनैन ४ ग्रेन, इपिकाक चूर्ण १ ग्रेन, जेन्सियानका सार ८ ग्रेन—इसकी चार गोलियां बना भोजनके पहले एक एक गोली खानेसे आहारमें रुचि उत्पन्न होती है।

वैद्यशास्त्रके मतानुसार वायुजनित अरुचिमें वस्तिक्रिया, पैत्तिक अरुचिमें विरेचन और श्लेष्माजनित अरुचिमें वमन करानेकी व्यवस्था है। अजवायिन, इमली, सोंठ, अम्लवेतस, दाड़िम, अम्लकुल, प्रत्येक दो दो तोला; धनिया, लवण, जीरा, दारुचीनी, प्रत्येक एक एक तोला; पीपल १००, मिर्च १००,

-बीना चार पल—सब चीजोंको एक साथ पीसे। फिर थोड़ा थोड़ा चूर्ण मुंहमें रख धीरे धीरे निगलनेसे अरुचि रोग नष्ट हो जाता है।

अरोचक रोग होनेपर रोगीको यथासम्भव व्यायाम और नियम वायुसेवन करना चाहिये। परन्तु ज्वर और कासादि रोग रहनेपर व्यायाम मना है। सहज को परिपाक होनेवाला और पुष्टिकर द्रव्य भोजन करना उचित है। शरीर दुर्बल होनेके डर जबर्दस्ती अधिक भोजन करना कर्तव्य नहीं कारण उससे उदरामय उठ सकता है।

अरोचकिन् (सं० त्रि०) अरुचि रोगसे पीड़ित जिसे भूख न लगनेकी बीमारी रहे।

अरोचमान (सं० त्रि०) दीप्तिशून्य, धुंधला, जो चमकता न हो।

अरोचिष्णु, अरोचमान देखो।

अरोड़ (सं० त्रि०) वीर, बहादुर, बहर।

अरोड़ा—पञ्जाबकी कोई जाति। यह अपनेको क्षत्रियोंके बराबर समझती है।

अरोदन (सं० क्ली०) अभावे नञ् तत्। १ रोदनका अभाव अश्रुधारोंकी अदममौजूदगी जिस हालतमें न रोये। (त्रि०) नास्ति रोदनं यस्य, नञ्-बहुव्री०। २ रोदनशून्य, जो रोता न हो।

अरोधन (सं० क्ली०) अभावे नञ् तत्। १ रोक का अभाव रोककी अदममौजूदगी। (त्रि०) २ बाध रहित, बेपरदा, जो खुला हो।

अरोध्य (सं० त्रि०) न रोध्यम्, नञ् तत्। अबाध्य बेरोक, मनमाना, जिसे कोई रोक न सके।

अरोपण (सं० क्ली०) अभावे नञ् तत्। १ रोपणका अभाव लगाने न जमनेकी हालत। (त्रि०) नास्ति रोपणं यस्य नञ् बहुव्री०। रोपणशून्य, लगाया न जानेवाला।

अरोपन, अरोपण देखो।

अरोर—सिन्धु प्रान्तके शिकारपुर जिलेकी रोहरी तहसीलका एक टूटा फटा गांव। यह रोहरीसे पूर्व चार कोस अक्षा० २७° ३९' उ० और द्राघि० ६८° ९८' पू० पर अवस्थित है। पहले यहां सिन्धुके हिन्दू नृपतियोंकी राजधानी थी, सन् ७११ ई०में मुसलमानोंने इसको उनसे छीन लिया। यह पहले सिन्धु नदके किनारे बसा था। भग्नावशेषमें आलम गोरकी मसजिद है। कालिका देवीकी गुहाको हिन्दू पवित्र मानते और प्रति वर्ष धूमधामसे उसका मेला लगाते हैं।

अरोष (सं० पु०) अभावे नञ् तत्। १ क्रोधाभाव गुस्सेकी अदममौजूदगी। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ क्रोधशून्य, बेगुस्सा, जिसे गुस्सा न हो।

अरोषण अरोषण देखो।

अरोहना (हिं० क्रि०) आरोहण करना चढ़ना।

अरोहा, अरोही देखो।

अरौद्र (सं० त्रि०) न रौद्रम्, विरोधे नञ् तत्। १ सौम्यमूर्ति जो भयङ्कर न हो। २ सुन्दर आकृति, खूबसूरत। ३ रागद्वेषादिशून्य झटझटसे बाहर। (पु०) ४ विष्णु।

अरौन—मध्य भारतवाले ग्वालियर राज्यके गूना सूबेका एक परगना। यह परगना बागोरमें बसा है।

अर्क (सं० पु०) अर्च्यते असौ अर्च कर्मणि घञ् यद्वा अर्कयति तपतापयति, चुरा० अर्क्य कर्तरि अच अर्कति स्तवते वा कर्मणि घञ। १ सूर्य, आफताब। २ इन्द्र। ३ विष्णु। ४ पण्डित, इल्मदार शख्स। ५ ताम्र, तांबा। ६ ज्येष्ठ, बड़ा। ७ रविवार। ८ अन्न, अनाज। ९ यज्ञ। १० मन्त्र। ११ वृक्ष, दरख्त। १२ सप्तमी तिथि। १३ उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र। १४ द्वादश संख्या। १५ अर्कोपरसम्भार रस। १६ किरण, विद्युत्प्रभा। १७ अग्नि, आग। १८ क्षुप विशेष आक मन्दार। यह श्वेत और रक्त भेदसे दो प्रकारका होता है। इसका गुण कटु, उष्ण, वातजित् दीपनीय शोथ व्रण कण्डु कुष्ठ, कृमि अर्श अर्श, विष रक्त पित्त, गुल्म, प्लीहादि रोगका नाशक है। १९ ताम्र। २० चिन्तामणि रस। २१ स्फटिक। २२ रक्त पुष्प। (हिं) २३ अरक रस। (त्रि०) २४ अर्चनीय परस्तिश किये जाने क़ाबिल।

अर्ककला (सं० स्त्री०) शारदातिलक मन्त्रोक्त कला

विशेष। इसका प्रयोजन सूर्यकी उपासनामें पड़ता है। संख्यामें यह बारह रहती है। इसका रूप पोत और अङ्ग ककारादिसे ङकार पर्यन्त वर्ण भूषित है। बारहो कलाका नाम तपिनी, तापिनी धूम्रा, मरीचि, ज्वालिनी, रुचि, सुषुम्ना, भोगदा, विश्वा. बोधिनी, धारिणी और क्षमा है।

अर्ककान्ता (सं० स्त्री०) अर्कः सूर्यः सूर्यकिरणो वा कान्तः प्रियो यस्याः, बहुव्री०। १ आदित्यभक्ता, कनफटी, हुलहुल। २ सूर्यप्रिया। ३ संज्ञा, नाम। ४ छाया, साया। ५ पद्म, कमल।

अर्ककीर्ति—जैन गुरु विशेष। बम्बई प्रान्तवाले कनारी ज़िलेके मालखेड़ा-राष्ट्रकूट नृपति तृतीय गोविन्दने विमलादित्यके शनिग्रहको शान्तिको कुछ भूमि जैन मन्दिर बनवानेके लिये ताम्रफलकपर लिख इनके नाम उत्सर्ग की थी। ताम्रफलकपर शक संवत्‌के ज्येष्ठ शुक्लपक्षकी दशमी तिथि तथा सोमवार अङ्कित है।

अर्कक्षीर (सं० क्ली०) आकका दूध, मन्दारका दूध। यह कृमि और व्रण नाशक तथा कुष्ट, अर्श, उदररोगादिमें हितकर है। (राजनिघण्टु)

यह तिक्त, लवण, उष्णवीर्य (गर्म) लघु, स्निग्ध, गुल्म, उदर, कुष्ट हरण करनेवाला तथा विरेचनमें हितकारक है। (भावप्रदीपकार म यह)

अर्कक्षेत्र (सं० क्ली०) अर्कस्य क्षेत्रम्, ६-तत्। १ सिंहराशि। २ भाद्र मास। ३ उड़ीसा प्रान्तका तीर्थ विशेष।

अर्कगन्धिका (सं० स्त्री०) क्षीरविदारी, क्षय भूमि कूष्माण्ड, काला विलारीकन्द।

अर्कचन्दन (सं० पु०-क्ली०) अर्कस्य प्रियः प्रियं वा चन्दनः चन्दनं वा, शाक० तत्। रक्त चन्दन, लाल चन्दन।

अर्कच्छन्द (सं० क्ली०) अर्कमूल, आककी जड़।

अर्कज (सं० पु०) अर्काज्जायते, अर्क-जन-ड,५-तत्। १ यम। २ शनि। ३ अश्विनीकुमारद्वय। ४ सुग्रीव, ५ कर्ण। उपरोक्त व्यक्ति सूर्यके पुत्र होनेसे अर्कज कहाते हैं।

अर्कजा (सं० स्त्री०) १ यमुना। २ तपती। उपरोक्त नदी सूर्यकी कन्या होनेसे अर्कजा कहाती हैं।

अर्कतनय (सं० पु०) ६-तत्। १ कर्ण। २ वैवस्वतमनु। ३ सावर्णि मनु।

अर्कतनया, अर्कजा देखो।

अर्कतैल (सं० क्ली०) कुष्ठाधिकारका तैल विशेष, कोढ़का कोई तेल। ८ पल कड़वा तेल, ८ पल आकके पत्तेका रस, १ पल निशा और १ पल मनःशिला एकमें घोंटनेसे यह तेल बनता है। (भारकौमुदी)

अर्कत्व (सं० क्ली०) दीप्ति, चमक।

अर्कत्विष् (सं० स्त्री०) प्रकाशका किरण, सूर्यकी दीप्ति, आफताबकी रोशनी।

अर्कदल (सं० पु०) १ आदित्यपत्र क्षुप, कनफटिया। २ अर्कवृक्ष, आकका पेड़।

अर्कदिन (सं० क्ली०) सौर वार, सूर्यका दिन।

अर्कदुग्ध (सं० स्त्री०) अर्कस्य तन्नामक वृक्षस्य दुग्धं दुग्धवत् शुभ्रत्वात् निर्यासः, ६-तत्। मन्दारका रस, अकौड़ेका दूध।

अर्कनन्दन, अर्कज देखो।

अर्कनयन (सं० पु०) अर्कः सूर्यो नयनं यस्य, बहुव्री०। विराट् पुरुष। पुराणमें लिखते, कि विराट् पुरुषके सूर्य, चन्द्र और अग्नि यह तीन नेत्र हैं।

अर्कनामन् (सं० पु०) अर्क इति नाम यस्य, बहुव्री०। रक्तार्क, लाल अकौड़ेका पेड़।

अर्कनामा, अर्कनामन् देखो।

अर्कपत्र (सं० पु०) अर्कवत् प्रशस्तं पत्रं यस्य, बहुव्री०। १ अर्क वृक्ष, अकौड़ेका पेड़। २ आदित्यपत्रक्षुप, कनफटिया। (क्ली०) अर्कस्य पत्रम्, ६-तत्। ३ अर्क वृक्षका पत्र, अकौड़ेका पत्ता।

अर्कपत्रा (सं० स्त्री०) १ ईश्वरमूल वृक्ष, लता विशेष। यह विषका औषध होती है। २ सुनन्दा। ३ अर्कमूल।

अर्कपत्रिका, अर्कपत्रा देखो।

अर्कपर्णी, अर्कपत्रा देखो।

अर्कपर्ण, अर्कपत्र देखो।

अर्कपर्णिका (सं० स्त्री०) माषपर्णी।

अर्कपाद (सं० पु०) १ सूर्यकान्तमणि, आतशी शीशा। २ निम्बवृक्ष, नीमका पेड़।

अर्कपादप (सं० पु०) पादैर्मूलैः पिबति पादेभ्यः, सूर्यकिरणेभ्य पाति रक्षति वा, पा क पादप, अर्कः अर्कवृक्ष इव उग्ररस पादपः, कर्मधा० तत्। १ निम्ब वृक्ष नीमका पेड़। कर्मधा०। २ अर्कवृक्ष आकका पेड़।

अर्कपुत्र, अर्कज देखो।

अर्कपुष्पा (सं० स्त्री०) चोरकाकोली दूधदार कन्द। यह हिमालय पर्वतपर उत्पन्न होती है।

अर्कपुष्पिका (सं० स्त्री०) १ सूर्यकी, अर्कपुष्प। २ चोरवृक्ष चोरकाकोली, रक्तापराजिता।

अर्कपुष्पी अर्कपुष्पिका देखो।

अर्कप्रभागुटिका (सं० स्त्री०) रसायनाधिकारमें रसकी कोई गोली। इसका विधान इस तरह लिखा है—शुद्ध पारा २ निष्क, शुद्ध ताम्रचूर्ण १ निष्क—इनका पिण्ड गूंथ दो पहरतक छायामें १ प्रहर तक पञ्चपत्रतरह नुलमें निमर्दन कर, गोलाकार बनाकर तब और विशाखमें साथ दीवारमें चार प्रहर पर्यन्त पाक कर पीछे वटिका बनानी चाहिये। इसको १ वर्षमें भर पलाशबीजका तैल और गौका दूध मिलाकर एक वर्ष सेवन करनेसे मनुष्य दश हजोंके समान बलयुक्त बन सूर्य-जैसा प्रभावाली हो जाता है। (रसेन्द्र)

अर्कप्रिया (सं० स्त्री०) अर्कं प्रीणाति, अर्क प्री क। १ आदित्यभक्ता, कनपटिया। २ जवापुष्प जवाशिका फूल। ३ सूर्यप्रिया भार्या, छाया प्रभृति।

अर्कबन्धु (सं० पु०) अर्कस्य बन्धुः सा॰प्रायसात् विप्रावस्थाका अर्क बन्ध उ। १ गौतम। यह इक्ष्वाकु कुलोद्भव शाक्यवंशीय बुद्ध रहे। गौतमबाबबन्धु। (अमर) अर्कौ बन्धुरस्य बहुव्री०। २ पद्म। कवि कहता कि सूर्यको देखनेमें पद्म फूलता इसलिये अर्कबन्धु पद्मका नाम है।

अर्कबान्धव अर्कबन्धु देखो।

अर्कभ (सं० क्ली०) अर्केण युक्तं आक्रान्तं वा भं नक्षत्रम् शाक० तत्। १ सूर्याक्रान्त नक्षत्र सूर्यके साथ एक को राशिमें पड़ा हुआ नक्षत्र। ६ तत्। २ सूर्याश्रित सिंहराशि। ३ उत्तरफल्गुनी नक्षत्र। (त्रि०) अर्कस्येव भा दीप्तिर्यस्य, बहुव्री०। ४ तेजको चमकदार। ५ रक्तवर्ण युक्त काम।

अर्कमाला (सं० स्त्री०) अर्कस्य अर्कं वा माला भासहा अर्कविरचसम्बन्धेन असौन्दर्यात्। १ कनफटिया लता। २ ब्राह्मी। ३ सूर्यको उपासना करनेवाली स्त्री।

अर्कभूति (सं० स्त्री०) १ ताम्रभस्म तांबेका कुश्ता। यह क्रमि, कफ, मेह पित्त, और मनोविकारादिका नाशक होती है। २ और, ताम्ररस।

अर्कमण्डल (सं० क्ली०) सूर्यका वृत्त आफताबका दायरा।

अर्कमूर्तिरस (सं० पु०) रसविशेष, यह रस सान्निपातिक ज्वरपर प्रयोग किया जाता है। इसमें इतने द्रव्य दिये जाते हैं,—गोरा ८ माष पारा १ माष, गन्धक द्विगुण घोडशांश विष यह सब द्रव्य एकत्र खूब घोंट कर अर्कमूर्तिरस बनाया जाता है। इसको त्रिदोषदाहनभ भी कहते, तब उक्त द्रव्य ताम्र पात्रमें रखते और आगकी भांच पित्तवर्ग (मनुष्य महिष, मयूर छाग, अश्व इन सबका पित्त पित्तवर्ग कहलाता है), कषाय करते, यह धातुकके रसमें भाव करके बनाते हैं। (भैषज्यरत्नावली)

अर्कमूल (सं० पु०) अर्क सर्पविकारमें प्रशस्तं मूलं यस्य, बहुव्री०। ईश्वरमूल, धरिमस्य। इसका मूल सर्प एवं वृश्चिकदंश पर उपकार करता है। इसे कूट पीस कर पिलाते और क्षत पर भी लगाते हैं। इसके सेवनसे स्त्रीका मासिक धर्म खुल जाता है। विशू चिका, अतीसार प्रभृति रोगमें भी इसे कालो मिर्चके साथ पीसकर पिला देते हैं। पत्तोंके रसमें कुछ नशा रहता है। पेटकी बीमारीमें अर्कमूलकी जाल बहुत फायदा पहुंचाती है। इसका रस तीसरी भी बूंद तक देना चाहिये। (स्त्री०) अर्कमूला।

अर्करेतोज (सं० पु०) अर्कस्य रेतस जायते, अर्क रेतस् जन ड। सूर्यके पुत्र विशेष। इसका दूसरा नाम रैवन्त, ब्रह्म और सूर्यवाहन है।

अर्कलवण (सं० क्ली०) अर्कक्षार, किसी किस्मका नमक।

अर्कलूष (सं० पु०) लूषयति यत्ने पशून् छिनत्ति, अर्कः पण्डितयासौ लूषयेति कर्मधा०। ऋषिविशेष।

अर्कवत् (सं० वि०) विद्युत् प्रभाविशिष्ट, जिससे बिजलीकी चमक निकले।

अर्कवर्ष (सं० पु०) सौर वत्सर।

अर्कवल्लभ (सं० पु०) अर्कस्य वल्लभः प्रियः अर्कपूजाप्रशस्तरक्तवर्णपुष्पत्वात्। १ बन्धुक वृक्ष, अड़हुलका पेड़। (पु० क्ली०) अर्को वल्लभो यस्य, बहुव्री०। २ पद्म।

अर्कवल्ली (सं० स्त्री०) आदित्यभक्ता, अड़हुल।

अर्कविवाह (सं० पु०) अर्कस्य कन्यात्वेन कल्पितस्य विवाहः, ६-तत्। तृतीय विवाह सिद्धिके निमित्त अर्क वृक्षको कन्या मानकर विवाह। तीसरा विवाह करनेसे पहले अकोड़ेके साथ विवाह करना चाहिये। (विधानपारिजात)

अर्कवेद, अर्कवेध देखो।

अर्कवेध (सं० पु०) अर्कस्य अर्कवृक्षस्येव वेधो वेधनं यत्र। तालीशपत्र वृक्ष। जिस मकानका मध्य पूर्व-पश्चिम लम्बा पड़ता, वह भी अर्कवेध कहाता है।

अर्कव्रत (सं० पु०-क्ली०) अर्कोपासनार्थं व्रतं व्रतो वा, ६-तत्। १ माघ मासको शुक्ल-सप्तमीको किया जानेवाला व्रतविशेष। २ आरोग्यसप्तम्यादि सूर्यव्रत। अर्को यथा पृथिव्या रसं गृह्णाति तद्वत् राज्ञः करग्रहणरूपं व्रतम्। ३ करग्रहण, राजस्वग्रहण, खिराजका लेना। सूर्यको तरह जलरूपी धन लेकर पीछे उसे मेघरूपी दानसे दे देना राजाका अर्कव्रत कहाता है।

अर्कशोक (वै० पु०) किरणको दीप्ति, शुवाको चमक।

अर्कसाति (वै० स्त्री०) पद्याविष्कार, कविताको उत्तेजना, गायरीका शोर।

अर्कसुता (सं० स्त्री०) १ क्षुद्रापराजिता, काली विष्णुकान्ता। २ यमुना।

अर्कसुधा (सं० स्त्री०) अर्कात्यसुधा, अकोड़ेका दूध। यह गुल्मरोगको मिटाती है। (वैद्यकनिघण्टु)

अर्कसूनु, अर्कज देखो।

अर्कसोदर (सं० पु०) अर्कस्य इन्द्रस्य सोदरभ्रातेव उपकारकत्वात्। १ ऐरावतहस्ती। २ भयानक व्यक्ति, खौफनाक शख्स, जिसे देखनेसे डर लगे।

अर्कहिता (सं० स्त्री०) ६-तत्। १ अर्कभक्ता अड़हुल। (त्रि०) २ सूर्यको हितकर, आफताबका फायदा पहुंचानेवाला।

अर्कादिगण (सं० पु०) गणविशेष। अर्क, अलर्क, नागदन्ती, विशल्या, भार्गी, रास्ना, इन्द्रपुष्पी, वृश्चिकाली, करञ्ज, प्रत्यक्पुष्पी, अलवणा, तापसवृक्ष, इस सबको अर्कादिगण कहते हैं। यह कफ, मेद, विष, कुष्ठ, व्रण प्रभृति रोगोंको शोधन तथा दमन करनेवाला है।

अर्काश्मन् (सं० पु०) अश्नोति व्याप्नोति संहन्ति वा; अर्क-अश-मनिन्, शाक० तत्। १ सूर्यकान्तमणि, आतशी शीशा। यह पत्थर सूर्यका किरण पड़नेसे जलने लगता है। अर्क इव रक्ता अश्मा, शाक० तत्। २ इरुणोपल, लाल, चुन्नी।

अर्काश्मा, अर्काश्मन् देखो।

अर्काह्व (सं० पु०) १ तालीशपत्र। २ सूर्यकान्तमणि, आतशी शीशा। ३ अर्कवृक्ष, अकोड़ेका पेड़।

अर्किन् (वै० त्रि०) अर्च्यतेऽनेन मन्त्रेण, अर्च करणे घञ् सोऽस्यास्ति इनि। अर्चनसाधन मन्त्रयुक्त, जिसमें अर्चनसाधन मन्त्र रहें।

अर्की (सं० पु०) मयूर, मोर।

अर्कीय (सं० त्रि०) अर्कसम्बन्धीय, आफताबसे तात्लुक रखनेवाला।

अर्केन्दुसङ्गम (सं० पु०) अर्कश्च इन्दुश्च तयोः सङ्गमो मिलनं यत्र, बहुव्री०। अमावस्या तिथि, सूर्य और चन्द्रका मिलन।

अर्केश्वररस (सं० पु०) रस विशेष। यह वातव्याधिके उपशमनार्थ दो प्रकारका होता, तृतीय रक्तपित्त और चतुर्थ कुष्ठको शमन करता है। पहला इस प्रकार बनाया जाता है—पारा ४ भाग और गन्धक १० भाग तांबेके पात्रमें निम्नाभिमुख बन्दकरके ऊपर भस्मसे भरा हुआ १ मट्टीका बरतन रखे। फिर

करणे घञ् न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वम्। २ पूजाका उपचार दूर्वा, तण्डुल प्रभृति। ३ पूजनोपचार अर्पण। इसमें जल, दुग्ध, कुशाग्र, दधि, सर्षप, तण्डुल और यव पड़ता है। ४ जलदान, सामने पानीका छोड़ना। ५ हस्तप्रक्षालनार्थ जल प्रदान, हाथ धोनेको पानीका दिया जाना। ६ हस्तप्रक्षालन-जल, हाथ धोनेका पानी। ७ मुक्ताविशेष, कोई मोती। ८ उपहार, भेंट, चढ़ावा।

अर्घट (सं० क्ली०) भस्म, कुशता।

अर्घदान (सं० क्ली०) अर्घ समर्पण, भेंटका चढ़ावा।

अर्घपात्र (सं० पु०) अर्घ देनेका बरतन, अर्घा। यह तांबेका होता और देवताको जल देनेके काम आता है।

अर्घबलाबल (सं० क्ली०) मूल्य निर्धारण, दामका निर्ख, वाजिब क़ीमत, भावको घटा-बढ़ी।

अर्घसंस्थापन (सं० क्ली०) वस्तु-मूल्य निर्धारण, चीजके दामका निर्ख। सौदागरसे चीजका दाम बंधाना राजाका काम है। यह सप्ताह वा पक्षके मध्यमें एक बार अवश्य होना चाहिये।

अर्घा (हिं० पु०) १ जलहरी। २ अर्घपात्र।

अर्घार्ह (सं० त्रि०) अर्घ देने योग्य।

अर्घीश (सं० पु०) अर्घः पूजोपचार विशेषोऽस्त्यस्य भक्तादेयत्वेन, अर्घ-इनि ईश, कर्मधा०। सकल देवताके मध्य पूज्यतम महादेव।

अर्घ्य (सं० त्रि०) अर्घ्यते पूज्यते अर्घ-ण्यत् न्यङ्क्वादि कुत्वम्, अर्घमर्हति अर्घ-यत् वा। १ पूजनीय। अर्घाय देयं यत्। २ पूजा करनेको दूर्वा जल प्रभृति उपकरण। देवताकी पूजा करनेके समय पाद्य अर्घ्य देकर पूजा होती है। उस समय घरमें अतिथि वा पूजनीय व्यक्तिके आनेसे गृहस्थ लोग पाद्य अर्घ्य देकर उसकी पूजा करते हैं।

(क्ली०) अर्घं मूल्यमधिक मर्हति यत्। ३ जरत्कारु तपोवनका वृक्षजात मधु। अतिशय मूल्यवान् होनेके कारण इसे अर्घ्य कहते हैं।

अर्घ्यके लिये जलदानकी व्यवस्था सामान्य और विशेष भेदसे दो प्रकार है। सामान्य अर्घ्यका नियम यह है,—प्रोक्षणी पात्रको बाईं ओर पहले एक त्रिकोणवृत्त बनाये। पीछे उसमें आधारशक्तिको पूजा करनी होती है। आधारशक्तिकी पूजा हो जाने पर पात्रको अस्त्रमन्त्रसे धो डाले। धोनेके बाद प्रणवादि मन्त्र उच्चारण-पूर्वक उस पात्रमें जल भरना आवश्यक है। उसके अनन्तर अङ्कुशमुद्राद्वारा 'गङ्गे च यमुने' इत्यादि मन्त्रपाठ करते करते सूर्यमण्डलसे तीर्थको आवाहन करे। अन्तमें प्रणवमन्त्र द्वारा गन्ध-पुष्पादिसे पूजा करके धेनुमुद्रा दिखाना और आठ वा दश बार प्रणव पाठ करना चाहिये। यही सामान्य अर्घ्य है।

विशेष अर्घ्यका नियम यह है,—कोषेकी बाईं ओर त्रिकोणमण्डल बनाकर उसके ऊपर त्रिपदिकाको रखे। उसके बाद शङ्खको अस्त्रमन्त्रसे धोकर उस त्रिपदिकाके ऊपर रख एवं उलटी ओर मातृका मन्त्र पढ़ और गन्धपुष्पादि डाल शङ्खमें जल भर दे। इन सब प्रक्रियायोंके समाप्त हो जाने पर त्रिपदिकासे अग्निमण्डलकी, शङ्खसे सूर्यमण्डलकी एवं जलसे सोममण्डलकी पूजा करनी पड़ती है। उसके बाद अङ्कुशमुद्रा द्वारा सूर्यमण्डलसे गङ्गा प्रभृति तीर्थका आवाहन करे। गङ्गादि तीर्थका आवाहन हो जाने पर मन्त्रपाठपूर्वक हृदयसे देवताका आवाहन करना पड़ता है। कूर्चमन्त्र द्वारा अवगुण्ठन कर अस्त्रमन्त्र द्वारा गालिनीमुद्रा दिखा एकबार उस जलको देखे। अन्तमें अङ्गन्यास मन्त्र द्वारा विभक्तकर गन्धपुष्पादिसे देवताको पूजा करनी होती है। देवताकी पूजा समाप्त हो जाने पर मत्स्यमुद्राद्वारा उस पर हाथ ढक दे एवं आठ बार मूलमन्त्र जपे। सबके अन्तमें धेनुमुद्रा दिखाकर शङ्खसे थोड़ासा जल कोषेमें डाल देना चाहिये।

अर्घ्यतस् (सं० अव्य०) उचित मूल्यपर, वाजिब दामसे।

अर्घ्याट (सं० पु०) शुक्रला, तालमखाना।

अर्घ्यात, अर्घ्याट देखो।

अर्घ्याल, अर्घ्याट देखो।

अर्घ्यार्ह (सं० पु०) मुचुकुन्द वृक्ष।

वस्त्राणि वा स्वजाततूलेन, अर्ज--णिच्-ण्वुल्। १ कार्पास वृक्ष, कपासका पेड़। २ क्षुद्र तुलसीवृक्ष-भेद, बबयी। ३ श्वेत वर्वरी, सादी बबयी। ४ श्वेत पलाश वृक्ष, सफेद टेसूका पेड़। (त्रि०) अर्जति अर्थान्, अर्ज-कर्तरि-ण्वुल्। ५ उपार्जक, पैदा करनेवाला, जो रुपया कमाता हो।

अर्जकर्ण (सं० पु०) असन वृक्ष, सज, असना।

अर्जदाश्त (अ० स्त्री०) निवेदनपत्र, दरख्वास्त।

अर्जन (सं० क्ली०) अर्ज भावे ल्युट्। १ स्वहेतुभूत व्यापार विशेष, उपार्जन, अपने अपने कामकी पैदायश। २ संग्रह, धरोहर। मनुने सात प्रकारके धनलाभको धर्मसङ्गत अर्जन बताया है,—

"सप्तवित्तागमाधर्म्या दायो लाभ' क्रयो जयः।
प्रयोग. कर्मयोगय सत्प्रतिग्रह एव च ॥"(मनु १०।११५)

पैत्रक धन, गच्छित धन, (जो धरोहर कोई रखके मर जाये और जिसका दूसरा दावेदार न हो) बन्धु-बान्धव कर्तृक दत्त धन और मूल्य द्वारा क्रीत वस्तु ब्राह्मण प्रभृति चार वर्णके पक्षमें धर्मसङ्गत अर्जन है। दूसरेको जीत जो धन मिलता, क्षत्रियके पक्षमें वह भी धर्मसङ्गत अर्जन होता है। व्याज, कृषि, वाणिज्य प्रभृतिसे जो धन आता,वह वैश्यके ही पक्षमें धर्मानुगत अर्जन कहाता है। सत्प्रतिग्रह ब्राह्मणके पक्षमें धर्म-सङ्गत अर्जन है। फिर ब्राह्मण याजन और अध्यापनसे जो धन पाता,वह भी धर्मसङ्गत अर्जन ही कहाता है। शूद्र एव सङ्कर जातिके पक्षमें दास्यवृत्ति द्वारा प्राप्त धन धर्मसङ्गत अर्जन होता है।

अर्जनीय (सं० त्रि०) १ प्राप्तव्य, हासिल करने क़ाबिल। २ संग्रहणीय, इकट्ठा करने लायक़।

अर्जमा (हिं०) अर्यमा देखो।

अर्जित (सं० त्रि०) १ उपार्जन किया हुआ, जो कमाया गया हो। २ संगृहीत, इकट्ठा किया हुआ।

अर्जी, अर्जदाश्त देखो।

अर्जी दावा (अ० स्त्री०) दावेकी अर्जी, जो दरख्वास्त दीवानीमें नालिश करनेको दी जाती हो।

अर्जी मरम्मत (अ० स्त्री०) शोधनका आवेदनपत्र, जो दरख्वास्त पहली दरख्वास्तकी बिगड़ी बात बनानेको दी जाती हो।

अर्जुन (सं० पु०) अर्जयति यशः अर्ज-णिच्। १ पार्थ, पाण्डुपुत्र। २ अर्जुन घास। ३ हैहय कार्तवीर्य। ४ करवीर। ५ मयूर। ६ श्वेत वर्ण। ७ रूप। ८ नेत्ररोग विशेष। ९ इन्द्र पुत्र। १० अर्जुन वृक्ष। (त्रि०) ११ शुभ्रगुणविशिष्ट।

अर्जुन पाण्डु राजके तृतीय पुत्र रहे। इन्द्रके औरससे कुन्तीके गर्भमें इनका जन्म हुआ था। यह पहले एक इन्द्र थे। पीछे राज्यभ्रष्ट एवं हीनबल होकर हिमालयकी एक गुफामें रहने लगे। अन्तमें महादेवकी आज्ञाके अनुसार मर्त्यलोकमें आकर इन्होंने जन्म ग्रहण किया।

अर्जुन द्रोणाचार्यके प्रिय शिष्य रहे। यह महाधनुर्धर और महायोद्धा थे। इनके पास अक्षय तूणीर, गाण्डीव धनुष एवं कपिध्वज रथ विद्यमान रहा। स्वयं श्रीकृष्ण इनके सारथी थे। अर्जुनका वीरत्व पृथिवीमें विख्यात है। इन्होंने लक्ष्य वेधकर द्रौपदीको प्राप्त और खाण्डववन जलाकर अग्निको तुष्ट किया था। कुरुक्षेत्रके युद्धमें इन्होंने अपरिसीम वीरत्व दिखाया। इन्होंने द्रौपदी, सुभद्रा और चित्राङ्गदाका पाणिग्रहण किया था। अभिमन्यु अर्जुनके पुत्र एवं परीक्षित पौत्र थे।

महाभारतके विराटपर्वमें अर्जुनके दश नाम लिखे हैं। यथा—अर्जुन, फाल्गुन, जिष्णु, किरीटी, श्वेतवाहन, बीभत्सु, विजय, कृष्ण, सव्यसाची और धनञ्जय। इसके अतिरिक्त इनके और भी कई नाम प्रचलित हैं। यथा—पार्थ, शक्रनन्दन, गाण्डीवी, मध्यमपाण्डव, श्वेतवाजी, कपिध्वज, राधाभेदी, सुभद्रेश, गुडाकेश और बृहन्नल।

अर्जुन प्रभृति दश नाम क्यों पड़े थे, यह बात इन्होंने विराटपुत्र उत्तरसे स्वयं कही थी—पृथिवी भरमें मेरे जैसा रङ्ग और किसीका नहीं है और मैं सर्वदा विशुद्ध कर्मका अनुष्ठान किया करता हूं, इसीसे लोग मुझे अर्जुन कहते हैं।

"पृथिव्यां चतुरन्तायां वर्णों मे दुर्लभः समः।
करोमि कर्म शुक्लञ्च तस्मादर्जुनमां विदुः॥"
(विराट० ४४ अ ९ श्लो०)

गोलकण्ठने इसकी टीकामें लिखा है—"अर्जुन इति च्छविमतिमानार्जनोपायेषु रत्नत्वम् भवति वर्णो दीप्तिः सम ऋजुः दीप्तिमत्वात् समत्वात् शुक्लकर्मकरत्वाच अर्जुन इत्यर्थः।

यह समस्त देशको जीत विपुल धनप्रदान करते हुए उसीमें रहते थे इससे इनका नाम धनञ्जय हुआ। युद्धमें जाकर बिना जय किये, यह कभी लौटते न थे इसलिये इनका नाम विजय पड़ा। इनके रथपर अर्जुन के रथमें सफेद रंगके घोड़े जुते रहते थे, इसीसे लोग इन्हें श्वेतवाहन कहने लगे। हिमालयपृष्ठपर दिनके समय उत्तरफल्गुनी एवं पूर्वफल्गुनी नक्षत्रोंके सन्धि क्षणमें इनका जन्म हुआ था इसीसे यह फाल्गुन नामसे विख्यात हुये। दानव युद्धके समय इन्द्रने इन्हें उज्ज्वल रत्नकिरीट पहना दिया था, इसलिये लोग इन्हें किरीटी कहकर पुकारने लगे। अर्जुनने युद्धकालमें कभी घृणितकर्म नहीं किया इसीसे बीभत्सु नाम पाया था। यह दाहने हाथकी तरह सव्य अर्थात् बांये हाथसे गाण्डीवको चढ़ाकर बाण छोड़ सकते थे, इससे इनका दूसरा नाम सव्यसाची रहा। (सव्येन वामेनापि हस्तेन सचितु ज्याकर्षणादि-क्रियायां समर्थं गौणमस्येति सव्यसाची इत्यर्थः)। अर्जुनको कोई डरा न सकता था इसीसे इन्होंने जिष्णु नाम पाया। देखनेमें अर्जुन उज्ज्वल कृष्ण वर्णके रहे इसलिये बचपनमें या पाण्डु राज इन्हें प्यारसे कृष्ण कहकर पुकारा करते थे।

अर्जुनक (सं० वि०) १ अर्जुनसम्बन्धीय, अर्जुनसे ताल्लुक रखनेवाला। (पु०) २ अर्जुनपूजक जो अर्जुनको पूजता हो।

अर्जुनच्छाय (वै० त्रि०) श्वेतानुबन्ध विशिष्ट, सफेद चमोलेवाला जिसके सफेद तितल्या रहे।

अर्जुनघृत (सं० क्ली०) घृतौषध भेद। यह हृद्रोगमें हित है। इसके बनानेका विधान इस प्रकार है—अर्जुनका त्वक् ६४ पल, जल ६४ शरावक, एकत्र सि पाक करे। जब चतुर्थांश यानी १६ शरावक शेष रहे तो उतारकर कपड़ेसे छान ले। पीछे इसमें अर्जुनको छालका कल्क १ शराव मूर्च्छित घृत ४ शराव मिलाकर पचन पकाइये।

(चक्रपाणिदत्तक० व रा०)

दूसरा प्रकार—घृत ४ शराव, अर्जुनसरस ४ शराव, कल्कार्थ अर्जुनत्वक् १ शराव छोड़ते हैं। बनानेकी रीति पूर्ववत् ही समझना चाहिये।

(भैषज्यरत्नावली)

तीसरा प्रकार—मूर्च्छित गायका घी ४ सेर क्वाथार्थ अर्जुनकी छाल ८ सेर, जल ६४ सेर, किसी बरतनमें डाल पकाना चाहिये। शेष १६ सेर रह जानेसे उतार लेते हैं। कल्कार्थ अर्जुनको छाल १ सेर, यह सब एक जोमें साथ पकाये। मात्रा १ से २ तोले तक है। सब तरहके हृद्रोगमें यह विशेष उपकार करता है।

अर्जुनच्छवि (सं० त्रि०) श्वेत, सफेद।

अर्जुनतस् (सं० अव्य०) अर्जुनकी ओरसे।

अर्जुनत्वक (सं० स्त्री०) अर्जुनवल्कल, अर्जुन पेड़का बकला।

अर्जुनध्वज (सं० पु०) ६ तत्। अर्जुनके रथ ध्वज हनुमान्।

अर्जुननामाख्य (सं० पु०) अर्जुन वृक्ष।

अर्जुनपाकी (सं० स्त्री०) अर्जुन इव पाकः पक्वादिर्यस्याः गौरे जातित्वात् ङीष्। श्वेतपाकी, लता विशेष। इसका पक्व सफेद होता है।

अर्जुनरोग (सं० पु०) नेत्ररोगभेद (Stye or hardeolum) बिलनी। यह सामान्य स्फोटक रोग भिन्न और कुछ भी नहीं दुर्बल मनुष्यके पलक किनारे एक फोड़ा निकलता है। उसे क्रमशः छेद और मवलोका प्रलेप देनेसे फोड़ा पक जाता है। फिर उसका ऊपरी भाग कुछ काट डालनेसे पीब निकलती है। हिन्दुस्तानमें अर्जुन होनेसे लोग पुरानी दीवारका लोचना घिसकर लगा देते है। एक फोड़ा होनेसे और तीन चार फोड़े निकल सकते हैं।

अर्जुनवृक्ष (सं॰) वृक्षभेद। (Terminalia Arjuna) पाण्डुपुत्र अर्जुनके नामका पर्याय भी अर्जुनवृक्षमें प्रयुक्त होता है। पर्याय हैं—नदीसर्ज, वीरतरु, इन्द्रद्रु, ककुभ, शम्बर, पार्थ, चित्रयोधी, धनञ्जय, वैरातङ्क, किरीटी, गाण्डीवी, शिवमल्लक, सव्यसाची, कर्णारि, करवीरक, कौन्तेय, इन्द्रसूनु, वीरद्रु, कृष्णसारथि, पृथाज, फाल्गुन, धन्वी। यह अवध, बंगाल, मध्यभारत और दक्षिणाञ्चलमें बहुत होता है। इसका पेड़ अमरूदके पेड़ जैसा देख पड़ता है। पत्ती और छाल भी प्रायः अमरूद ही जैसी होती है। यह अमरूदके वृक्षसे भी बहुत बड़ा बैठता है। वर्षाकाल इसमें फल लगते हैं। फूल छोटे और कुछ सफेद होते हैं। उनसे बहुत ही कड़ा मीठा गन्ध निकलता है।

इसकी छाल रक्तवर्ण, अत्यन्त सङ्कोचक और बलकर होती है। चमड़ेको चिकना करने और कपड़ा रंगनेमें वह व्यवहारका जाती है। वैद्यकशास्त्रके मतानुसार यह हृद्रोगका महौषध है। हृत्पिण्डके सब रोगोंमें वैद्य लोग इसे व्यवहार करते हैं। इसके क्वाथसे घावको धो डालनेसे पीप और (मवाद) नहीं निकलता, घाव शीघ्र ही सूख जाता है। हड्डी टूट जानेसे इसका क्वाथ वा चूर्ण सेवन करना पड़ता है। उससे दर्द कम पड़ता और हड्डी जुड़ जाती है।

अर्जुनस (सं॰ त्रि॰) अर्जुनवृक्षसे अतिशय पूर्ण, जिसमें अर्जुनके पेड़ हदसे ज्यादा रहें।

अर्जुनसुधा (सं॰ स्त्री॰) अर्जुनोत्थ सुधा, अर्जुनके पेड़से निकला रस। यह कफको काटती है।

(वैद्यकनिघण्टु)

अर्जुनाख्य (सं॰ पु॰) १ कामरूप। २ अर्जुन वृक्ष।

अर्जुनाट (सं॰ त्रि॰) दर्भकाशघातक।

अर्जुनाद्यघृत (सं॰ क्ली॰) घृतौषधविशेष। इसके प्रस्तुत करनेकी रीति यह है—अर्जुन, पटोल, निम्ब, वच, दाप्यक, मञ्जिष्ठ, मल्लातक, अगुरु, घन, गदा, अनल, चन्दन, अभ्र, गोक्षुरक, सोमवल्क, हरिद्रा, त्रिफला, इतने द्रव्योंका क्वाथ तय्यार करके, पीछे मल्लातक और अञ्जन, दीप्यक और लोध्र, मञ्जिष्ठ और अतिविषा इन पृथक् पृथक् दो दो द्रव्योंका कल्क कषाय तय्यार करना चाहिये। यदि कफ वातसे मेह उत्पन्न हुआ हो, तो तैल, और पित्तसे मेह उत्पन्न हुआ हो, तो घृतको इन सब द्रव्योंके साथ पकाते हैं।

(भावप्रकाश)

अर्जुनायन (सं॰ क्ली॰) उत्तरप्रान्तका देश विशेष, कोई शिमाली मुल्क। वराहमिहिरने इसका उल्लेख किया है।

अर्जुनारिष्टसच्छन्न (सं॰ त्रि॰) अर्जुन एवं निम्ब वृक्षसे आवृत, जो अर्जुन और नीमके पेड़से भरा हो।

अर्जुनी (सं॰ स्त्री॰) अर्जुन-अन्यतो ङीप्। १ उषा, अनिरुद्धकी स्त्री। अर्जुनमिति रूप नाम, तथात्वादित्वरश्मिसम्बन्धात् श्वेतम्, अर्जुनो श्वेता; यद्वा अर्जुन्यो गावः ता अस्याः सन्ति, वाहनत्वेन मत्वर्थीय ईकारः व्यत्ययेन हलुद्यादिलोपः। २ बाहुदा नदी, करतोया नदी। यह हिमालयसे उत्पन्न हो गङ्गामें जा गिरी हैं। ३ गो, सफेद गाय। ४ दूती, कुटनी। 'अर्जुनी गवि। उषायां करतोयायां कुट्टन्यामपि च क्वचित्।' (त्रिक)

अर्जुनोपम (सं॰ पु॰) अर्जुन. वृक्षभेदः उपमा यस्य, शाके ह्रस्वः। शाकद्रुम, सागूका दरख़्त।

अर्ण (सं॰ पु॰) तनादि॰ ऋगण-अच्। अकारादि वर्ण, अक्षर, हर्फ। "मातृकार्णाः"। (तन्त्र) २ शाकवृक्ष, सागूका पेड़। ३ तरङ्ग, लहर। ४ छन्दोविशेष, यह दण्डकका भेद है। (क्ली॰) ५ युद्धकोलाहल, लड़ाईका शोर। (त्रि॰) ६ गमनस्वभाव, चलने-फिरनेवाला। ७ फेन देता हुआ, जिससे फेन निकले। ८ निरानन्द, बेचैन।

अर्णभव (सं॰ पु॰) शङ्ख।

अर्णव (सं॰ पु॰) अर्णांसि जलानि दातृत्वेन सन्त्यस्य वा सलोपः। १ जलदाता, जो पानी पहुंचाता हो। २ सूर्य। ३ इन्द्र। ४ समुद्र। ५ तरङ्ग, लहर। ६ वायुमण्डल। ७ छन्दोविशेष। (त्रि॰) ८ व्याकुल, जोश खाया हुआ। ९ फेन देता हुआ, जो खौल रहा हो। ९ निरानन्द, बेचैन। १० चार संख्या।

अर्णवज (सं॰ पु॰) अर्णवात् जायते; अर्णव-जन-ड,

अनन्तर वृत्तिद्वारा उपार्जित धनको शबल कहते हैं। अर्थात् अपनेसे नीच जातिकी वृत्तिद्वारा जो धन उपार्जन किया जाता, उसका नाम शबल है। जैसे ब्राह्मणका क्षत्रिय वृत्तिद्वारा उपार्जित और क्षत्रियका वैश्य वृत्तिद्वारा उपार्जित धन इत्यादि। अन्तरित वृत्ति द्वारा उपार्जित धनका नाम कृष्ण है। अर्थात् नीचेके एक वर्णको अतिक्रम कर उसके बादके वर्णकी वृत्ति द्वारा जो अर्थ उपार्जन किया जाता है, उसे कृष्ण कहते हैं। जैसे ब्राह्मणका वैश्यवृत्ति द्वारा और क्षत्रियका शूद्र वृत्ति द्वारा उपार्जित अर्थ। सब वर्णों के पक्षमें पैतृक किंवा वस्तु बान्धव प्रदत्त अथवा विवाहके समय प्राप्त धन शुक्ल होता है। फिर उत्कोच, शुल्क एवं निषेध वस्तुकी विक्रीसे प्राप्त अथवा परोपकारके बदले मिला हुआ धन शबल कहा जाता है।

पाशा प्रभृति जुवा खेलने एवं नाच, गान, चोरी, परपीडन, ठगपने तथा दुस्साहसके कामसे जो धन लाभ होता है, हमारे शास्त्रकार उसे कृष्ण कहते हैं।

३ प्रयोजन, मतलब अर्थ शब्दसे प्रयोजन भी समझा जाता है। प्रयोजन दो प्रकारका है,—मुख्य एवं गौण। जो दूसरेकी इच्छाके अधीन नहीं है, उसे मुख्य अर्थ कहते हैं। 'मुझे जिसमें सुख हो कभी दुःख न मिले'। यहां दो इच्छाओंका विषय सुख और दुःखका अभाव ही मुख्य प्रयोजन है। फिर जो अन्य इच्छाके अधीन है, उसे गौण अर्थ कहते हैं। जैसे भोजन करनेसे क्षुधा निवृत्ति होती है। यहां क्षुधानिवृत्ति भोजनकी इच्छाके अधीन रहनेसे गौण है। यद्यपि प्रयोजन नाना प्रकारका है, तथापि शास्त्रकार प्राधान्यके हेतु धर्म अर्थ काम मोक्ष यही चार प्रकारका अर्थ स्वीकार करते हैं। क्योंकि अन्यान्य प्रयोजन इन्हींमें आ जाता है। साङ्ख्यवादी स्वर्ग और अपवर्ग—यही दो प्रकारका पुरुषार्थ मानता है। दुःखकी अत्यन्त निवृत्ति अर्थात् मोक्षरूप प्रयोजन अन्य इच्छाके अधीन न रहनेसे प्रधान है, धर्म अर्थ काम उसके साधन हैं। उनमें भी धर्म अर्थका एवं अर्थ कामका साधन है। अर्थात् धर्म करनेसे अर्थ होता एवं अर्थ होनेसे काम्य कार्य्य अनायास ही हो जाता है।

४ निमित्त, वास्ता। कर्मणि अच्। ५ विषय। ६ शब्दादि। ७ ज्ञेयवस्तु; जाननेका विषय। ८ तत्त्व आवापादि। अर्थ चिन्ता शब्द देखो। ९ यथार्थ। १० वस्तु-स्वभाव। ११ निवृत्ति। १२ ज्योतिषोक्त लग्नसे दूसरा गृह। १३ प्रकार। भावे अच्। १४ अभिलाष। १५ प्रार्थना। कर्मणि अच्। १६ अर्चनीय विष्णु। १७ फल।

अर्थकर (सं० त्रि०) अर्थंकरोति, अर्थ कृ हेत्वादौ ट। १ धनका साधन, रुपया देनेवाला। २ उपयोगी, मुफीद। (स्त्री) अर्थकरी।

'अर्थकरी च वद्या।' (हितोपदेश)

अर्थकर्मन् (सं० क्ली०) प्रधान कार्य, खास काम।

अर्थकाम (सं० पु०) १ उपयुक्तता एवं इच्छा, धन तथा अभिलाष, दौलत और खुशी। (त्रि०) २ धनस्पृह, दौलतका ख्वाहिशमन्द।

अर्थकिल्विषिन् (सं० त्रि०) धनका पापी, दौल-तका वेईमान, जो रुपया लेने-देनेमें साफ़ न हो।

अर्थकृच्छ्र (सं० क्ली०) अर्थे अर्थस्य वा कृच्छ्र, ७ वा ६ तत्। १ धनका कष्ट, दौलतकी तकलीफ़। २ कष्टसाध्य प्रयोजन, मुश्किलसे निकलनेवाला काम।

अर्थकृत् (सं० त्रि०) अर्थं करोति, अर्थ-कृ-क्विप् तुक्। अर्थकर, दौलत देनेवाला।

अर्थकृत्या (सं० स्त्री०) लाभका कार्य, जो काम फायदेके लिये किया जाता हो।

अर्थक्रम (सं० पु०) अर्थस्य क्रमः, ६-तत्। जैमिन्युक्त छः के अन्तर्गत क्रमविशेष। छः प्रकारका क्रम यह है—शब्दक्रम, अर्थक्रम, पाठक्रम, स्थानक्रम, मुख्यक्रम और प्रवृत्तिक्रम। शब्दक्रम और अर्थक्रम साथ ही आनेपर अर्थक्रम बलवान् होनेसे उसीके अनुसार कार्यका अनुष्ठान करते हैं। यथा,—

"अग्निहोत्र जुहोति यवागूं पचति"। (श्रुति)

अर्थात् अग्निहोत्र करता और यवागू पकाता है। किन्तु यवागू पकाकर ही अग्निहोत्रयाग होता

है। इसलिये श्रुतिका शब्दक्रम छोड़ अर्थक्रमसे पहले यवागूको ही पकाते हैं।

अर्थगत (सं॰त्रि॰) अर्थे गतम्, ७ तत्। १ मतार्थ, बेफायदा, बेमतलब। (पु॰) २ अलङ्कार शास्त्रोक्त अर्थाश्रित दोष विशेष शायरीमें मानी बिगड़ जानेका ऐब।

अर्थगरीयस् (सं॰ त्रि॰) अर्थान्वित, अभिप्रायगर्भ, मानीदार, जिसमें मतलब खूब भरा रहे।

अर्थगौरव (सं॰ क्ली॰) ६ तत्। अल्प कथामें अर्थका आधिक्य थोड़ी बातका बड़ा मतलब। इसी प्रकारका शब्द प्रशंसनीय होता है। भारवि कविको रचना प्रायः अर्थगौरवसे भरी है जिससे अलसमाजमें उनका बनाया किरातार्जुनीय अति आदरको सामग्री ठहरा है।

अर्थघ्न (सं॰ त्रि॰) अर्थं हन्ति, ताच्छील्यादौ ट। अर्थनाशक, रुपया बरबाद करनेवाला, फजूलखर्च।

अर्थचन्द्रिका (सं॰ स्त्री॰) कर्कटशृङ्गी काकड़ा सिंगी।

अर्थचिन्तक (सं॰ पु॰) राज्यके आय व्ययकी चिन्ता रखनेवाला मन्त्री, जो वज़ीर बादशाहोंके आमद खर्चका ख्याल रखता हो।

अर्थचिन्ता (सं॰ स्त्री) अर्थानां सन्धिकर्तव्य तन्त्रा-व्ययादीनां चिन्ता, ६ तत्। मन्त्रीके कर्तव्य राजाङ्ग तन्त्र और आयव्ययादिकी चिन्ता, अपनी और दूसरेकी बादशाहीमें किये जानेवाले कामका ख्याल।

अर्थजात (सं॰ क्ली) अर्थानां जातम् ६ तत्। १ धनसमूह, दौलतका ढेर। (त्रि॰) अर्थं जातो यस्य बहुव्री॰। २ धनसम्पन्न, दौलतमन्द। ३ अभिप्रायगर्भ मानीदार।

अर्थज्ञ (सं॰ त्रि॰) अर्थं जानाति अर्थ-ज्ञा क। प्रयोजनज्ञ, मानी समझनेवाला, जो मतलब निकाल लेता हो।

अर्थतत्त्व (सं॰ क्ली॰) १ सत्य, मूल विषय, रास्ती, असली मतलब। २ किसी विषयको सच्ची हमा मामलेकी या हालत असलमें रहे।

अर्थतस् (सं॰ अव्य॰) अर्थ—तसिल्। १ किसी प्रयोजन विषयपर, खास मतलबसे। २ अर्थानुसार, मानीके मुताबिक। ३ वस्तुतः, असलमें सच सच। ४ अर्थात् यानी।

अर्थद (सं॰ त्रि॰) अर्थान् धनानि ददाति, अर्थ-दा-क। १ धनद, दौलत देनेवाला। २ उपयोगी, फायदेमन्द। ३ उदार, सखी। (पु॰) ४ धनदान द्वारा सन्तोष-कारी शिष्य वा छात्र जो शागिर्द या तालब-इल्म दौलत दे खुश करता हो। ५ कुबेर।

अर्थदण्ड (सं॰ पु॰ क्ली॰) जुर्माना, दौलतको सज़ा, जो रुपया किसी कुसूरकी सज़ाके तौरपर वसूल हो।

अर्थदूषण (सं॰ क्ली॰) अर्थानां दूषणम् ६ तत्। अन्यके धनका अपहार, दूसरेकी दौलतका बिगाड़। सम्पत्तिका अनुचित ग्रहण, दौलतकी गैरवाजिब गिरफ्तारी। ३ अनुचित व्यय, फजूलखर्ची। ४ वाक्यार्थमें दोषारोपण, किसीके मानीमें ऐबजोयी।

अर्थना (सं॰ स्त्री॰) अर्थ चुर्-टाप्। याच्ञा, मांग। २ भिक्षा, भीख। ३ अर्दना, तकलीफदिही।

"याच्ञा भिक्षार्थनार्दना।" (अमर)

अर्थनिबन्धन (सं॰ त्रि॰) धनसे प्रयोजन रखनेवाला, जिसका सबब दौलतमें रहे।

अर्थनिश्चय (सं॰ पु॰) अभिप्रायका निर्णय, इरादाका फैसला।

अर्थनीय (सं॰ त्रि॰) याच्ञाके योग्य मांगने काबिल।

अर्थपति (सं॰ पु॰) अर्थानां पतिः, ६ तत्। १ राजा बादशाह। २ कुबेर। ३ धनीश्वर, दौलतमन्द शख्स।

अर्थपर (सं॰ त्रि॰) १ धनोपार्जनपर कटिबद्ध जो दौलत कमानेमें लगा हो। २ व्ययपराङ्मुख कञ्जूस जो खर्च करनेसे मुंह चोराता हो।

अर्थपिशाच (सं॰ त्रि॰) धनका भूत, दौलतका शैतान् जो रुपयेके लिये सताने करनेमें चूकता न हो।

अर्थप्रकृति (सं॰ स्त्री॰) अर्थानां प्रयोजनानां प्रकृति कारणम् ६-तत्। प्रयोजनहेतु नाटकादि कार्यका कारण पञ्चक।

अर्थप्रयास (सं॰ पु॰) अर्थानां धनानां तन्त्रावस्थाया-

दीनाश्च प्रयोगः नियोगः। १ ऋणदान वाणिज्यादि रूप धनवृद्धिकर वृत्ति वा व्यवहार, दौलतका इस्तेमाल, जो काम रुपया बढ़ानेका हो। २ वृद्धिजीविका, सूद-खोरी। ३ मन्त्रके कर्तव्य तन्त्र और आवापादिका यथाक्रम नियोग, अपनी और दूसरेकी बादशाहीके आमद-खर्चका काम। इसे मन्त्री करता है।

अर्थप्रसादनी (सं० स्त्री०) धामनवृक्ष।

अर्थप्राप्त (सं० पु०) शब्दं विना केवलेनार्थेन प्राप्तः, ३-तत्। अर्थप्रकाश करनेको शब्द न रहते भी तात्-पर्य द्वारा समझा जानेवाला विषय, जो बात मानीदार लफ़्ज़ न मिलते भी मतलबसे ही समझ ली जाती हो।

अर्थप्राप्ति (सं० स्त्री०) १ धनका आगम, रुपयेकी कमायी। २ अभिप्राय सिद्धि, मतलबका निकास।

अर्थबन्ध (सं० पु०) अर्थैः विषयैः शब्दादिभिः बन्धः। १ शब्दादि द्वारा बन्ध, लफ़्ज़ वगैरहकी बन्दिश। २ धनकृत बन्धन, दौलतकी जकड़। ३ मूलपंक्ति, अस्त।

अर्थबुद्धि (सं० त्रि०) स्वार्थी, खुदगर्ज़, जो अपना ही मतलब देखता हो।

अर्थबोध (सं० पु०) मुख्य आशयका अभिज्ञान, असली मतलबका ज़ाहिरा।

अर्थभाज् (सं० त्रि०) सम्पत्तिविभागका अधिकारी, जो रुपये-पैसेके बंटवारेका हक़दार हो।

अर्थभावना (सं० स्त्री०) अर्थानां भावना, ६-तत्। १ सर्वजनक याग-साधन भावना। २ अर्थचिन्ता, दौलतकी फ़िक्र।

अर्थभृत (सं० पु०) अधिक वेतन पानेवाला, जिसकी तनख़्वाह बड़ी रहे।

अर्थभेद (सं० पु०) विभिन्नता, अर्थका अन्तर, फ़र्क़, मानीकी जुदायी।

अर्थमर्यादा (सं० स्त्री०) अर्थस्य कारणस्य मर्यादा, सकल कारण वस्तुका मेलन, पूरे मतलबकी चीज़का मिलान।

अर्थमात्र (सं० क्ली०) अर्थ एव मयूर व्यंसकादित्वात् चिदेव चिन्मात्रमितिवत् अवधारणार्थमात्र शब्देन नित्य सम्पत्ति, धन, जायदाद, दौलत, रुपया-पैसा।

अर्थमात्रा (सं० स्त्री०) अर्थस्य मात्रा, ६-तत्। १ अल्पधन, थोड़ी दौलत। २ धनांश, दौलतका हिस्सा। ३ बहुधन, बड़ी दौलत। ४ धन बाहुल्य, दौलतकी बढ़ती। ५ धनका परिमाण, दौलतका मिक़दार।

अर्थलाभ (सं० पु०) धनकी प्राप्ति, दौलतकी कमायी।

अर्थलुब्ध (सं० त्रि०) धनलोलुप, दौलतका ख़्वाहिश-मन्द, लालची कञ्जूस।

अर्थलेश (सं० पु०) धनकी अल्पता, दौलतकी कमी।

अर्थलोभ (सं० पु०) धनका अभिलाष, दौलतकी ख़्वाहिश, लालच।

अर्थवत् (सं० त्रि०) अर्थोऽस्त्यस्य, अर्थ-मतुप मस्य वः। १ अर्थयुक्त, दौलतमन्द। २ सार्थक, मानीदार। (अव्य०) अर्थेन तुल्य क्रिया अर्थ इव अर्थस्येव अर्थ-मर्हति वा वति। अर्थके न्याय, मतलबकी तरह, मानीके मुवाफ़िक़।

अर्थवत्त्व (सं० क्ली०) सार्थकता, मानीखेज़ी।

अर्थवर्गीय (सं० त्रि०) द्रव्याधिकरण युक्त, चीज़की मद रखनेवाला।

अर्थवाद (सं० पु०) अर्थस्य लक्षणया स्तुत्यर्थस्य निन्दार्थस्य वा वादः, वद-करणे-घञ्; ६-तत्। १ प्रशंसनीय गुणवाचक शब्द, प्रशंसनीय वाक्य। २ निन्दनीय दोषवाचक शब्द, निन्दनीय वाक्य। भावे घञ्। ३ स्तुत्यर्थ कथन। ४ निन्दार्थ कथन।

गौतमसूत्रके मतसे वेदका दो विभाग है—मन्त्र एवं ब्राह्मण। उसमें "आकृष्णेन रजसा" इत्यादिको ब्राह्मण और सन्ध्यावन्दनादिको मन्त्रभाग कहते हैं।

वेदका ब्राह्मणभाग तीन भागोंमें विभक्त है। यथा—विधि, अर्थवाद एवं अनुवाद। "विध्यर्थवादानुवाद-वचनविनियोगात्।" (गौ० सू० २।६१)

जिस वाक्यद्वारा कोई व्यवस्था की जाती, उस विधायक वाक्यका नाम विधि है। "विधिविधायकः।" (गौ० सू० २।६२) जैसे, 'जो मनुष्य स्वर्गलाभकी इच्छा रखे, वह अग्निहोत्र याग करे।' यहां स्वर्ग-लाभेच्छुक मनुष्यके लिये अग्निहोत्र यागकी विधि की गई।

अर्थवाद चार प्रकारका है,—स्तुत्यर्थवाद, निन्दार्थ-

है। वस्तुतः उससे सब कारकोंको ही समझना होगा। कारण, कारकोंमें जो विभक्ति रहती है, वही सब प्रकृतिके साथ अन्वित होकर अपना अपना अर्थ प्रकाश करती है। एवं अर्थ प्रकाश करते समय वे अन्य पदोंकी अपेक्षा नहीं करतीं। वाचस्पतिमिश्रने वेदान्तकी टीकामें इन बातोंको लिखा और तर्कालङ्कारने यों उदाहरण दिया है,—'व्रीहीन् वहन्ति'। आशुधान्य अवधान करेगा अर्थात् कूटेगा। यहां 'व्रीहि' शब्दमें द्वितिया विभक्ति रहनेसे धानको कूटकर भूसी रहित करना होगा, ऐसा घात्वर्थ प्रकाश होता है। यहां इस अर्थके प्रकाशनको अन्य पदकी आवश्यकता नहीं पड़ी।

भाष्यमें लिङ्ग शब्दका अर्थ समता बताया गया है। समता शब्दसे अर्थका सामर्थ्य समझ पड़ता है। जैसे,—'हविर्देवसदनं दामि'। इस मन्त्रको कहां नियोग करना चाहिये, यह लिखा न रहनेपर भी—'दाप् लवणे'—इस छेदनार्थ दा धातुसे निष्पन्न दामि पदके हविश्छेद सामर्थ्य हेतु हविश्छेदनमें ही इसका विनियोग समझा जाता है।

परस्पर अन्वययुक्त तिङन्त और सुबन्त पदसमूहका नाम वाक्य है। कौन काम किसतरह करना होता, इस अपेक्षाका नाम प्रक्रिया वा प्रकरण है। समान देश वा क्रमको स्थान कहते हैं। योगबल वा यौगिकका नाम समाख्या है।

लिङ्गकी अपेक्षा श्रुतिका अर्थ बलवत् है। जैसे,-'पायसेन दध्ना जुहोति'। (श्रुति)। पायस (पयः प्रकाशक मन्त्र, पयः पृथिव्या इत्यादि) और दधि द्वारा होम करे। यहा दधि द्वारा ही होम करना श्रुतिसम्मत है। उसमें अन्य किसी पदकी अपेक्षा न रहनेसे पहले उसीका अर्थबोध होता, अतएव वही प्रधान कहा जाता है। पीछे पयः पृथिव्या इत्यादि मन्त्र द्वारा होम करनेका बोध, मन्त्रके सामर्थ्य हेतु विलम्बमें होता है। इसलिये श्रुतिकी अपेक्षा इसे दुर्बल कहते हैं। इस तरह लिङ्ग वाक्यादिकी अपेक्षा बलवान् है।

अर्थवृद्धि (सं० स्त्री०) धन सञ्चय, दौलतका अम्बार।

अर्थवेद (सं० पु०) शिल्पशास्त्र, कारीगरीका इल्म।

अर्थवैकल्य (सं० क्ली०) १ सत्यातिक्रम, बातकी पोशीदगी। २ वाक्छल, वक्रोक्ति, खिलाफ़ बयानी।

अर्थव्यपाश्रय (सं० पु०) अर्थस्य प्रयोजनस्य व्यपाश्रयः स्थानम्, ६-तत्। १ प्रयोजन सम्बन्ध, अभिधेयका आश्रय, मतलबकी जगह, मानीका ठिकाना (वि०) २ सप्रयोजन, मतलबी।

अर्थव्यय (सं० पु०) धनोत्सर्ग, दौलतका खर्च।

अर्थव्ययज्ञ (सं० त्रि०) अर्थस्य धनस्य व्ययप्रणाली जानाति; अर्थव्यय-ज्ञा-क, ६-तत्। न्यायव्ययी, क़ायदेसे खर्च करनेवाला।

अर्थव्ययसह (सं० त्रि०) मितव्ययी, किफ़ायती।

अर्थशास्त्र (सं० क्ली०) अर्थस्य मन्वादिप्रणीत राजनीत्यादि दृष्टविषयस्य शास्त्रम्, ६-तत्; तत्प्रतिपादक शास्त्रम्, शाक० तत् वा। अर्थ नीतिविषयका शास्त्र, जिस इल्ममें दौलतका बयान् रहे। यह रुपये कमाने, बचाने और बढ़ानेकी बात बताता है।

सम्प्रति चाणक्य वा कौटिल्यका अर्थशास्त्र प्रकाशित हुआ है। उसे देखकर हम समझ सकते हैं, सन् ई०से चार-पांच शताब्द पहले हिन्दुवोंकी राजनीति कैसी रही। अर्थशास्त्रमें जिस प्राचीन धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक विषयकी आलोचना निकली, उसकी सूची नीचे लिखी है,—प्रथम विनयाधिकारमें राजवृत्ति, विद्यासमुद्देश, आन्वीक्षिकी-स्थापना, त्रयीस्थापना, वार्तास्थापना, दण्डनीति-स्थापना, वृद्धसंयोग, इन्द्रियजय, अरिषड्वर्गत्याग, राजर्षिवृत्त, अमात्योत्पत्ति, मन्त्रिपुरोहितोत्पत्ति, उपधासे अमात्यका शौचाशौचज्ञान, गूढ़पुरुषोत्पत्ति, सत्त्रोत्पत्ति, गूढ़पुरुषप्रणिधि, सञ्चारोत्पत्ति, स्वविषयमें कृत्याकृत्यके पक्षका रक्षण, परविषयमें कृत्याकृत्यके पक्षका उपग्रह, मन्त्राधिकार, दूतप्रणिधि, राजपुत्ररक्षण, अवरुद्ध वृत्त, अवरुद्ध अवस्थाकी वृत्ति, राजप्रणिधि, निशान्त प्रणिधि, आत्मरक्षितक। दूसरे अध्यक्ष प्रचाराधिकारमें—जनपदका निवेश, भूमिके छिद्रका विधान, दुर्गका विधान, दुर्गका निवेश, सन्निधाताका चेयकर्म, समाहर्ता समुदयका प्रस्थापन,

अक्षपटलका गाणनिक्य अधिकार, युक्तसे अपहृत समुदयका प्रत्यानयन, उपयुक्तपरीक्षा, शासनका अधिकार, कोषमें रखने योग्य रत्नकी परीक्षा आकर कर्मान्तका प्रवर्तन, अक्षशालामें सुवर्णका अध्यक्ष विशिखामें सौवर्णिक प्रचार, कोष्ठके आगारका अध्यक्ष, पण्य (बाज़ो)का अध्यक्ष, कुप्यका अध्यक्ष आयुधके आगारका अध्यक्ष, तुलाके मानका पौतव, देशकालका मान शुल्कका अध्यक्ष, शुल्कका व्यवहार, सूत्रका अध्यक्ष सीताका (खेती) अध्यक्ष, सुराका अध्यक्ष सूनका अध्यक्ष, गणिकाका अध्यक्ष नौकाका अध्यक्ष गायका अध्यक्ष, अश्वका अध्यक्ष हस्तीका अध्यक्ष हस्तीका प्रचार रथका अध्यक्ष पत्तिका अध्यक्ष, सेनापतिका प्रचार, मुद्राका अध्यक्ष, विवीतका अध्यक्ष समाहर्ताका प्रचार, गृहपति वदेहक तापसका व्यञ्जन प्रणिधि, नागरक प्रणिधि। तीसरे धर्मस्थीयाधिकारमें—व्यवहारकी स्थापना विवादके पदका निबन्ध, विवाहका संयुक्त, विवाहका धर्म, स्त्रीके धनका कल्प आधि वेदनिक, शुश्रूषा, भर्म पारुष्य द्वेष, अतिचार, उपकार, व्यवहारका प्रतिषेध, निष्पतन, पथ्यनुसरण, ह्रस्वप्रवास, दीर्घप्रवास, दायका विभाग, पुत्रका विभाग, दायका क्रम, अंशका विभाग, वास्तुक, घरका वास्तुक, वास्तुका विक्रय सीमाका विवाद, मर्यादाका स्थापन बाधाका बाधिक विवीत क्षेत्रके पथकी हिंसा, समयका अनपाकर्म ऋणका आदान, औपनिधिक दास-कर्मकरका कल्प, स्वामीका अधिकार, भृतकका अधिकार, सम्भूय समुत्थापन विक्रीत क्रीतका अनुशय दत्तका अनपाकर्म अस्वामिक विक्रय, स्वस्वामीका सम्बन्ध साहस, वाक् पारुष्य, दण्डपारुष्य, द्यूतका समाह्वय प्रकीर्णक। चौथे कण्टक शोधनाधिकारमें—कारुकका रक्षण वैदेहकका रक्षण उपनिपातका प्रतीकार, गूढाजीवीकी रक्षा, सिद्ध व्यञ्जनसे माणव प्रकाश, शङ्कारूप कर्मका अभिग्रह आशु मृतककी परीक्षा वाक्यकर्मका अनुयोग, सर्वाधिकरणका रक्षण, एकाङ्गके वधका निष्क्रय, शुद्ध चित्र (अनेक) दण्डकल्प, कन्याका प्रकर्म, अतिचारका दण्ड। पांचवें योग वृत्ताधिकारमें—दाण्डकर्मिक, कोषका अभिसंहरण भृत्यका भरणीय, अनुजीवीका वृत्त समयका आचारिक राज्यका प्रतिसन्धान, एकैश्वर्य। छठे मण्डल योन्यधिकारमें—प्रकृतिकी सम्पत्, शमका व्यायामिक। सातवें षाड्गुण्याधिकारमें—षाड्गुण्य समुद्देश, क्षयके स्थानकी वृद्धिका निश्चय संश्रयकी वृत्ति समहीन ज्यायस्में गुणका अभिनिवेश हीनसन्धि विगृह्यासन सन्धायासन, विगृह्य यान सम्भाय यान सम्भूय प्रयाण यातव्य और अमित्रके अभिग्रहकी चिन्ता क्षय-लाभ विराग हेतु प्रकृतियोंका सामवायिक विपरिमर्श संहित प्रयाणिक परिपणित, अपरिपणित अपसृत, सन्धि द्वैधीभाविक, सन्धि विक्रम यातव्य वृत्ति अनुग्राह्य मित्रविशेष मित्रसन्धि हिरण्यसन्धि भूमिसन्धि, अनवसित सन्धि कर्मसन्धि पार्ष्णिग्राहचिन्ता, हीनशक्ति-पूरण, बलवानसे विग्रह करके उपरोध हेतुक दण्डोपनत वृत्त दण्डका उपनायी वृत्त सन्धिका कर्म सन्धिका मोक्ष, मध्यम चरित उदासीन चरित, मण्डल चरित। आठवें व्यसनाधिकारमें—प्रकृतिके व्यसनका वर्ग, राजा और राज्यके व्यसनकी चिन्ता पुरुषके व्यसनका वर्ग पीड़नका वर्ग, कोषके सङ्गका वर्ग स्तम्भका वर्ग बलके व्यसनका वर्ग, मित्रके व्यसनका वर्ग। नवें अभियास्यत्कर्माधिकारमें—शक्ति देश और कालके बलाबलका ज्ञान यात्राका काल बलके उपादानका काल, सन्नाहका गुण प्रतिबल कर्मके पश्चात् कोपकी चिन्ता, बाह्य और अभ्यन्तरकी प्रकृतिके कोपका प्रतिकार क्षय व्यय और लाभका विपरिमर्श बाह्य और अभ्यन्तरकी आपत् दूष्य शत्रुका संयुक्त अर्थ, अनर्थ एवं संशयसे युक्त और उपाय तथा विकल्पसे उत्पन्न सिद्धि। दसवें संग्रामाधिकारमें—स्कन्धावारका निवेश स्कन्धावारका प्रयाण बलव्यसनके अवस्कन्दकालका रक्षण, कूट युद्धका विकल्प स्वसैन्यका उत्साहन, स्वबल और अन्य बलका योग युद्धकी भूमि पत्ति अश्व रथ और हस्तीका कर्म पक्षकक्षोरस्यका बलाग्रसे व्यूह विभाग, सारफल्गुका बलविभाग, पत्ति अश्व रथ और हस्तीका युद्ध दण्डभोगके मण्डलका असंहत व्यूहन, उसके प्रति

व्यूहका स्थापन। ग्यारहवें सङ्घवृत्ताधिकारमें भेदका उपादान, उपांशुका दण्ड। बारहवें आबलीयसाधिकारमें दूतका कर्म, मन्त्रका युद्ध, सेनाके मुख्यका वध, मण्डलका प्रोत्साहन, शस्त्र-अग्नि और रसका प्रणिधि, वीवधासारका प्रसारवध, योगका अतिसन्धान, दण्डका अतिसन्धान, एक विजय। तेरहवें दुर्गलम्भोपायाधिकारमें—उपजाप, योगका वामन, असर्पका प्रणिधि, पर्युपासनका कर्म, अवमर्द, लब्धप्रशमन। चौदहवें औपनिषदिकाधिकारमें—परघातका प्रयोग, प्रलम्भन, अद्भुत उत्पादन, भैषज्य और मन्त्रका प्रयोग, स्वबलके उपघातका प्रतीकार। पन्द्रहवें तन्त्रयुक्त्यधिकारमें—तन्त्रको युक्ति।

अर्थशौच (सं० क्ली०) अर्थाना अर्थोपार्जनानां शौचं शुचित्वम्, ६-तत्। अर्थार्जनकी शुद्धि, दौलत कमानेकी पाकीज़गी। मनुने सकल प्रकारके शौच मध्य न्यायार्जनको ही प्रधान माना है।

अर्थसंग्रह (सं० पु०) अर्थाना संग्रहः, ६-तत्। धनसञ्चय, दौलतका इकट्ठा करना।

अर्थसंस्थान (सं० क्ली०) अर्थानां संस्थानं स्थिति यस्मात् येन वा, अर्थ-सम्-स्था अपादाने करणे वा ल्युट्। १ धनोपार्जनसाधन प्रतिग्रहादि, दौलत कमानेका काम। भावे ल्युट्, ६-तत्। धनकी स्थिति, दौलतकी हालत, ख़ज़ाना।

अर्थसञ्चय (सं० पु०) अर्थानां धनाना सञ्चयः समुच्चयः समूहश्च, ६-तत्। धनसंग्रह, धनसमूह, दौलतका अम्बार, रुपये पैसेका ढेर।

अर्थसमाज (सं० पु) अर्थानां धनाना अभिधेयानां कारणाना वा समाजः समूहः, ६-तत्। धनसमूह; अभिधेयसमूह; कारणसमूह।

न्यायशास्त्रके मतसे, जहां द्रव्यका कोई विशेष धर्म अर्थात् गुण उत्पादन करनेको अन्यान्य कारणोंके साथ दूसरे भी किसी विशेष कारणकी आवश्यकता होती है, वहा उस कारणसमूहको अर्थसमाज कहते हैं। एवं वे सब कारण मिलकर जिस धर्मविशिष्टको उत्पादन करते हैं, उसका नाम अर्थसमाजग्रस्त है।

जैसे, कपडा बुननेके लिये नाल, करघे और सूतकी आवश्यकता होती है। नीले रङ्गका कपडा बुननेमें नाल आदि चाहिये, लाल कपडा बुननेके लिये भी विना नाल वगैरह काम नहीं चल सकता। अतएव नाल, करघा और सूत कपडे मात्रके ही सामान्य कारण हैं,—सभी कपड़ेके बुननेमें इन कई उपकरणोंकी आवश्यकता पडती है।

जो कारण, सब तरहके कपडोंकी उत्पत्तिमें पहले विद्यमान रहता, वह वस्त्रमात्रका प्रतिकारण कहा जाता है। नाल, सूत प्रभृति यदि नील वस्त्रके ही प्रति कारण होते, तो लाल रङ्गका कपडा बुनते समय इन सबकी आवश्यकता न पड़ती। इससे नाल प्रभृति वस्त्रमात्रके सामान्य कारण हैं सही, परन्तु वर्णके सामान्य कारण नहीं हैं। अतएव नील प्रभृति वर्णके उत्पन्न करनेको अन्य कारणका विद्यमान रहना आवश्यक है।

देखा जाता है, कि सूत नीलवर्ण होनेसे वस्त्र भी नीलवर्ण होता है। परन्तु केवल सूत नील वर्णका होनेसे वस्त्र नील वर्णका नहीं बनता। सूत, सूतका नीला रङ्ग, नाल और करघा ये सब कारण एकत्र मिलनेसे नील वस्त्र उत्पन्न होता है। अतएव नील वस्त्रका कोई पृथक् कारण न रहते भी दोनों कारणोंके मिल जानेसे वह बन जाता है, इसलिये नीलवस्त्रत्व अर्थसमाजग्रस्त हुआ। इसीसे जो धर्म पृथक् कारणका कार्य्यतावच्छेदक न ठहर सामान्य दोनों कारणोंके मिलनेसे सिद्ध होता है, उस धर्मको अर्थसमाजग्रस्त कहते हैं।

अर्थसमाहार (सं० पु०) अर्थानां धनानां समाहारः सम्यक् आहरणम्, ६-तत्। १ धनार्जन, धनसंग्रह, रुपयेका पैदा करना, दौलतका अम्बार। अर्थानां अभिधेयानां समाहारः सङ्क्षेपः, ६-तत्। २ अर्थका संक्षेप करना, मानीका मुख़्तसिर।

अर्थसम्बन्ध (सं० पु०) अर्थाना धनानां सम्बन्धः संस्रवः, ६-तत्। १ धनसम्बन्ध, अर्थसंसर्ग, दौलतका ताल्लुक़। शास्त्रकारोंने कहा है,—जिसके साथ विशेष प्रणय रखनेकी इच्छा हो, उससे किसी प्रकारका अर्थसम्बन्ध रखना न चाहिये।

"अर्थेनोऽपितुमा प्रीतिं नैव कामिनीत्व।
न कुर्वीत अनर्थ किमट अनर्थं मे तथा।" (म भि)

२ अर्थसम्बन्धि प्रयोजक माध्योय अपतित पुत्र त्वादि। ३ लौकिक व्ययादि, दुनियाकी खरीद अर्थ रह। अर्थस्य वाच्यार्थस्य सम्बन्ध ६ तत्। ४ वाच्यादि अर्थ का सम्बन्ध मानीका तालुक।

अर्थसाधक (स॰ पु॰) १ विषयके प्रतिपक्षका आनयन, बातके मतलबका निकास। २ दशरथके मन्त्रिविशेष। ३ पुत्रजीव वृक्ष, जियापूत। इसके फलकी माला बनाकर लड़कोंको पहनायी जाती है। लोग कहते कि उससे वह नीरोग और भूत-प्रेतकी बाधासे दूर रहते हैं।

अर्थसाधन (स॰ पु॰) १ पुत्रजीव वृक्ष, जियापूत। २ रोठवृक्ष, बड़ा रीठा।

अर्थसार (स॰ पु॰) अधिक सम्पत्ति, ज्यादा दौलत।

अर्थसिद्ध (सं॰ त्रि॰) अर्थेन अयोग्यताविशिष्टेन सिद्धम् ३ तत्। बिना शब्द योग्यतासे जो सिद्ध होनेवाला, जो बेतकल्लुफ मतलबसे ही साबित हो। जैसे 'पानी भरनेको घड़ा लावो' कहनेसे यही घड़ा लाना पड़ेगा, जिसमें छेद न हो। क्योंकि फूटे घड़ेमें पानी नहीं ठहरता। यह मत मीमांसकका है। (पु) २ पुत्रजीव वृक्ष जियापूतका पेड़। ३ श्वेतनिर्गुण्डी सफ़ेद सँभालू। ४ कृष्णनिर्गुण्डी स्याह सँभालू।

अर्थसिद्धक, अर्थसिद्ध देखो।

अर्थसिद्धि (स॰ स्त्री॰) अर्थेन तात्पर्येण योग्यता विशिष्टेन वा सिद्धिः, ३-तत्। १ तात्पर्य द्वारा सिद्धि मतलबकी कामयाबी। ६ तत्। २ धनकी सिद्धि, दौलतकी कामयाबी।

अर्थहर (स त्रि॰) अर्थान् धनानि हरति अन्यायेन ताच्छिल्यादी। १ परका धन हरण करनेवाला, जो दूसरेकी दौलत चोरा लेता हो। (पु॰) २ चोर।

अर्थहीन (सं॰ त्रि॰) अर्थेन हीनः, ३-तत्। १ धनहीन, दरिद्र। बेदौलत, गरीब। २ अभिप्राय शून्य, बेमानी। ३ अफल, नाकामयाब।

अर्थागम (स॰ पु॰) अर्थानामागमः, ६ तत्। १ आय, आमदनी। २ धनार्जन, रुपयेकी कमायी। अर्थं आगम्यतेऽनेन, करणे अप्। ३ धनके उपार्जनका हेतु क्रयविक्रयादि, रुपया पैदा करनेको खरीद-फ़रोख्त वग़ रह। ४ शब्दार्थकी उपस्थिति, लफ्ज़के मानीकी मौजूदगी।

अर्थात् (सं॰ अव्य॰) १ अर्थकी दशाके अनुसार, मानमेके मुताबिक। २ वस्तुतः, दरहकीक़त असलमें। ३ यानी।

अर्थाधिकार (सं॰ पु) कोषाध्यक्षका कार्य, धन या सम्पत्तिका रक्षण, खज़ानचीका काम, दौलत या जायदादकी रखवाली।

अर्थाधिकारिन् (सं॰ पु॰) कोषाध्यक्ष वैतनाध्यक्ष, खज़ानची, तनख्वाह बाँटनेवाला।

अर्थाना (हिं॰ क्रि॰) अर्थ लगाना मानी बताना, समझाना।

अर्थानुवाद (सं॰ पु॰) मानीका तर्जुमा, किसी मतलबको बार बार कहना।

अर्थान्तर (स॰ क्ली॰) अन्योऽर्थः अर्थान्तरम्, राजा राजान्तरवत् मयरव्य॰ तत्। १ अन्य अर्थ, दूसरा मतलब। न्याय मतमें कहे प्रसिद्धिको प्रयुक्त वाक्य अनुरोध सिद्धिके अनुकूल पड़नेसे अर्थान्तर होता है। २ निष्प्रयोजन वाक्य बेमतलब बात। ३ प्रकृतिके अनुपयुक्त वाक्य, जो बात कुदरतके मुवाफ़िक़ न हो। ४ वादीमके अन्तर्गत निग्रह स्थान विशेष। इसके कहनेसे प्रतिवादी द्वारा वादीका निग्रह होता है। ५ अन्य कारण, दूसरा सबब।

अर्थान्तरन्यास (स॰ पु॰) अर्थान्तरं न्यस्यतेऽत्र, अर्थान्तर नि अस् आधारे घञ्, अर्थान्तरस्य न्यासो यत्र वा। अर्थालङ्कार विशेष। एक प्रकारके अर्थ-द्वारा अन्य प्रकारका अर्थ समर्थन करनेको अर्थान्तर न्यास कहते हैं। अलङ्कारिकोंने इसे आठ प्रकारमें विभक्त किया है। यथा,—

"सामान्य वा विशेषेण विशेषस्तेन वा यदि।
कार्यञ्च कारणेनेदं कार्येण च समर्थ्यते।
साधर्म्येणेतरेणार्थान्तरन्यासोऽष्टधा ततः।"

विशेष अर्थद्वारा सामान्य अर्थका समर्थन ; सामान्य

अर्थद्वारा विशेषार्थका समर्थन, कारण द्वारा कार्य्यका समर्थन एवं कार्य्य द्वारा कारणका समर्थन। फिर ये आठ प्रकार समान धर्म और विधर्म द्वारा दो भागोंमें विभक्त किये गये हैं।

विशेष द्वारा सामान्यका समर्थन, यथा—

"बृहत्सहायः कार्यान्तं क्षोदीयानपि गच्छति।
सम्भूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा॥"

अति चुद्रतर व्यक्ति भी महत्की सहायतासे कार्य्यका पार पा जाता, इसीसे गिरि-निर्झरिणी,महानदी गङ्गाके साथ मिलकर समुद्रको प्राप्त होती है।

यहां श्लोकके दूसरे पादमें—गिरि-निर्झरिणी, वृहत् सहाय गङ्गाके साथ मिल समुद्रको प्राप्त होती,—इस विशेषद्वारा, क्षुद्रतर व्यक्ति महत्का आश्रय पानेसे कार्य्य उद्धार कर सकता, यह सामान्य समर्थन किया गया।

सामान्यद्वारा विशेषका समर्थन, यथा—

"यावदर्थपदां वाचमेवमादाय माधवः।
विरराम महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः॥"

महत् व्यक्ति स्वभावसे ही अल्पभाषी होते हैं। इसीसे माधव ऐसी अर्थयुक्त एक बात कहकर चुप हो गये।

यहां श्लोकके दूसरे पादमें,—महत् व्यक्ति अधिक नहीं बोलते,—इस सामान्यद्वारा श्लोकके प्रथमपादमें माधवने सारवान् अल्प बात कही—यह विशेष समर्थन किया गया।

कारण साधर्म्यद्वारा कार्यका समर्थन, यथा—

"पृथ्वि स्थिरा भव भुजङ्गम धारयैनां
त्वं कूर्मराज तदिदं द्वितयं दधीथाः।
दिक्कुञ्जराः कुरुत तत्त्रितये दिधीर्षां
देवः करोति हरकार्मुकमाततज्यम्॥"

जनकालयमें जब रामचन्द्र शिवधनु भङ्ग करनेको उठे, तब लक्ष्मणने पृथिवी आदिसे कहा—हे पृथिवि! तुम स्थिर हो! अनन्त! तुम इसे धारण करो। कूर्मराज! तुम पृथिवी और नागराज दोनोंको साधो। हे अष्टदिग्गज! तुम लोग पृथिवी, अनन्त और कूर्मराज इन तीनोंको ही धारण करनेकी इच्छा करो। क्योंकि आर्य्य रामचन्द्र धनुषको चढ़ा रहे हैं।

यहां, रामचन्द्र धनुषको चढ़ा रहे हैं—इस कारण द्वारा पृथिवी प्रभृतिके स्थिर होने इत्यादि कार्य्यका समर्थन किया गया।

कार्य्यसाधर्म्यद्वारा कारणका समर्थन, यथा—

"सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।
वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः॥"

सहसा कोई काम न करे। कारण, अविवेचना ही परम आपदका स्थान है। गुणानुरागिणी लक्ष्मी विवेचक मनुष्यको आपही वरण करती है।

यहां, लक्ष्मी आप ही वरण करती हैं—इस कार्यद्वारा, सहसा कोई काम न करे—इस विवेचना रूप कारणका समर्थन किया गया।

ऊपरके सब श्लोक समान धर्मविशिष्टके उदाहरण हैं। वैधर्म्य विशिष्ट यथा,—

"इत्थमाराध्यमानोऽपि क्लिश्नाति भुवनत्रयम्।
शाम्येत् प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः॥"

तारकासुर इस तरह पूज्य होनेपर भी त्रिभुवनको कष्ट देता है। कारण, दुर्जन अपकार करनेसे शान्त होता है।

यहां, दुर्जन अपकार करनेसे शान्त होता—इस वैधर्म्य द्वारा, दुर्जन सदयाचरण करनेसे शान्त नहीं होता, यही समर्थित हुआ। इस श्लोकमें दुर्जनका अपकार करनेसे शान्त होना सामान्य एवं दुर्जनका अनुकूलाचरण करनेसे शान्त न होना विशेष है। और पूर्व श्लोकमें,—सहसा कार्य्य न करना आपदकर नहीं है, यह कार्य्य वैधर्म्यका समर्थन करता है।

अर्थान्वित (सं॰ त्रि॰) १ धनसम्पन्न, दौलतमन्द, जिसके पास रुपया रहे। २ अभिप्रायगर्भ, मानीदार।

अर्थापत्ति (सं॰ स्त्री॰) अर्थस्य अनुक्तार्थस्य आपत्तिः प्राप्तिः सिद्धिरिति यावत्। मीमांसकके मतसे, जो विषय प्रकाश करके नहीं कहा गया, किसी शब्दद्वारा उसी विषयकी सिद्धि। यथा,—'स्थूलकाय देवदत्त दिनमें भोजन नहीं करता'। देवदत्त दिनमें भोजन

नहीं करता, तो भी उसका शरीर स्थूल है। इतनी स्थूलता देख यह समझा जाता कि वह रातमें भोजन करता है। कारण, एकदम अनाहार रहनेसे वह क्षय हो जाता। देवदत्त क्षय हो जाता—यह अनुपपत्तिज्ञान, देवदत्त रातमें भोजन करता है, इस ज्ञानका जनक हुआ। इसलिये देवदत्त रातमें भोजन करता है, यह ज्ञान अर्थापत्ति कहा जाता है। नैयायिक व्यतिरेक व्याप्तिज्ञानसे इसे अनुमानका अन्तर्भूत बताते हैं, अतिरिक्त प्रमाण नहीं ठहराते। जो आदमी रात और दिनको भोजन नहीं करता, उसका शरीर स्थूल नहीं रह सकता—इसीको वे लोग व्यतिरेकव्याप्ति कहते हैं।

अर्थस्यापत्तिर्यस्मात् (५ बहुव्री०)। अर्थापत्तिका साधन, उपपाद्य ज्ञान। जिसके विना किसी द्रव्य आदिकी उत्पत्ति नहीं होती, उसका नाम उपपाद्य है। रातको विना भोजन किये स्थूलता नहीं रह सकती, इसलिये स्थूलता उपपाद्य है। फिर जिसके अभावमें किसी वस्तुकी असिद्धि होती है, उसे उस वस्तुका उपपादक कहते हैं। रात्रिभोजनके अभावमें स्थूलता नहीं रह सकती, अतएव रात्रिभोजन ही उपपादक है। रात्रिभोजन कल्पनारूप प्रमीति ज्ञानका विषय है।

३ अर्थालङ्कार विशेष।

"दण्डापूपिकयान्यार्थागमोऽर्थापत्तिरिष्यते।" (साहित्यदर्पण)

दण्डापूपन्यायद्वारा जिस अर्थकी सिद्धि हो, उसे अर्थापत्ति कहते हैं। जैसे, किसी कमरेमें कुछ पूआ और एक डंडा रखा था। सवेरे सबने देखा, कि पूआ नहीं और डंडेमें चूहेके दांतका चिह्न बना था। इसलिये डंडेमें चूहेके दांतका चिह्न देखकर यह स्थिर हुआ, कि पूआको चूहा खा गया। इसीका नाम दण्डापूपन्याय है। ऐसे न्याय द्वारा जो ज्ञान सिद्ध होता है, अर्थापत्ति वही है। इसमें कभी प्रस्तावित अर्थद्वारा अप्रस्तावित अर्थकी और कभी अप्रस्तावित अर्थद्वारा प्रस्तावित अर्थकी उपस्थिति होती है।

प्रस्तावित अर्थसे अप्रस्तावित अर्थकी उपस्थिति, यथा—

"हारोऽयं हरिणाक्षीणां लुठति स्तनमण्डले।
मुक्तानामप्यवस्थेयं के वयं स्मरकिङ्कराः॥" (साहित्यदर्पण)

यह हार रमणीके स्तनपर लोट रहा है। मुक्ता-ओंकी ही जब यह दशा है तब हमलोग तो कन्दर्पके दास हैं हमारी बात कौन चलाये; अर्थात् हम लोग तो उसपर लोट ही जा सकते हैं।

इस श्लोकमें 'मुक्तानां' इस पदके दो अर्थ हैं। पहला—मुक्ता अर्थात् रत्नमुक्ता और दूसरा—मुक्त अर्थात् मुक्तिपानेवालेका। मुक्तागण अचेतन पदार्थ है। उससे रमणीका आलिङ्गन असम्भव है। किन्तु असम्भव होनेपर भी वह जब उसको आलिङ्गन करता, तब हम लोगोंके लिये तो यह नितान्त सम्भवपर है। इसीको अर्थापत्ति कहते हैं। यहां मुक्तागणके वर्णनीय होनेसे प्रस्तावित और कामपीड़ित व्यक्तिकी बात अप्रस्तावित विषय है।

अप्रस्तावित अर्थद्वारा प्रस्तावितकी उपस्थिति यथा,—

"विललाप स बाष्पगद्गदं सहजामप्यपहाय धीरताम्।
अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु॥" (रघु)

स्वाभाविक धैर्य परित्यागकर अजराजने बाष्प-गद्गद स्वरसे विलाप किया था। अति तप्त होनेसे लोहा भी जब नम जाता तब शरीरधारीकी कौन बात; अर्थात् वह तो अवश्य चञ्चल हो सकता है। अति तप्त लोहा भी जब गलकर चञ्चल हो जाता तब प्राणी तो चञ्चल होगा ही—यही यही अर्थापत्ति है। वर्णनका विषय न होनेसे लोहा अप्रस्तावित और शरीरधारी प्रस्तावित है। (रसमञ्जरी)

अविज्ञायमान (विना कहे हुये) अर्थमें जो दूसरा अर्थ सहसा प्राप्त हो जाता यह भी अर्थापत्ति कहलाता है। जैसे,—मेघ न रहनेसे वृष्टि नहीं होगी। ऐसा बोलनेपर साफ मालूम पड़ता कि मेघ रहनेसे वृष्टि होती है। इसमें रहनेसे यह अर्थ स्वतः ठहरता है। (अनुमान-नामामृत ४७१)

कोई कोई मीमांसक अर्थापत्तिको दूसरा प्रमाण मानते हैं। नैयायिक और वैशेषिक कहते हैं, कि

अर्थापत्ति अनुमान ही के अन्तर्गत है ; दूसरा कोई प्रमाण नहीं।

अर्थापत्ति, दो प्रकारको होती है—दृष्टार्थापत्ति, और श्रुतार्थापत्ति। इसमें, देवदत्त दिनको नहीं खाता—ऐसा देखनेपर दृष्टार्थापत्ति और विदित होनेपर श्रुतार्थापत्ति होती है। दृष्टार्थापत्तिका उदाहरण, यथा—जीवित देवदत्तका निजालय (गृह) में रहना न देखकर बाहर रहना कल्पना किया जाता है। यदि घरमें न रहनेसे बाहर रहना भी न माना जाय, तो जीवित रहनेकी उपपत्ति (विश्वास) नहीं हो सकती, इसलिये बाहर रहनेकी कल्पना होती है। श्रुतार्थापत्ति, यथा—स्थूल देवदत्त दिनको भोजन नहीं करता यहा दिनके भोजन न करनेवालेको, रात्रिमें भी भोजन न पानेसे स्थूलत्व कैसे हो सकता, इसलिये रात्रिमें भोजन करनेको कल्पना होती है। श्रुतार्थापति भी अनुमितानुमान है। जैसे, स्थूल देवदत्त इत्यादि वाक्यके द्वारा स्थूलत्वका अनुमान लगा उसी चिह्नसे रात्रिका भोजनका अनुमान किया जाता है।

अर्थापत्तिसम (सं० पु०) जाति। अर्थापत्तिसे प्रतिपक्ष (अन्यपक्ष) की सिद्धिको अर्थापत्तिसम कहते हैं। (गौतमसूत्र ५।२१)

शब्द प्रयत्नान्तरीयक अर्थात् प्रयत्नसे उत्पन्न होने कारण, घटके सदृश अनित्य होता है। ऐसा पक्ष स्थापित करनेपर, अर्थापत्तिके द्वारा प्रतिपक्ष (नित्य) की साधन करनेवाला अर्थापत्तिसम कहा जाता है। यदि प्रयत्नान्तरीयकत्व और अनित्य साधर्म्यके हेतु शब्द अनित्य होता, तो नित्य साधर्म्य रहनेसे वह नित्य भी हो सकता है। क्योंकि इसके नित्यत्वमें अस्पर्शत्व साधर्म्य है। (वात्स्यायन ५।१।२१)

अर्थापत्तिके आभाससे, प्रतिपक्ष साधनकी प्रत्यवस्थान अर्थापत्तिसम होता है। अर्थापत्ति ही उक्तसे अनुक्तको आक्षेप करती अर्थात् लाती है। यह शब्द अनित्य ठहरता, ऐसा कहने ही से विदित होता, कि अन्य नित्य है। एवं दृष्टान्तकी असिद्धि और विरोध भी होता है। कृतकत्व (यानी प्रकृतिप्रत्ययसे निष्पन्न होने)के कारण शब्द अनित्य है—ऐसा कहनेपर अर्थात् उत्पन्न हुए दूसरे हेतुसे बोध या सत्प्रतिपक्ष पड़ जाता है। फिर यदि अनुमानसे अनित्य कहा जाय, तो प्रत्यक्षसे नित्य बोध होता है। (गौतमवृत्ति ५।११)

अर्थाय (सं० अव्य०) कारण वश, बमवब।

अर्थायिन् (सं० वि०) धनका मान करने या विषय प्राप्तिकी इच्छा रखनेवाला, जो दौलतकी इज्जत करता या कोई मतलब निकालना चाहता हो।

अर्थालङ्कार (सं० पु०) अलङ्कार विशेष। इसमें अर्थका गौरव रहता है।

अर्थिक (सं० पु०) अर्थयते, अदन्त चुरा० अर्थ-णिच्-णिनि कुत्सितार्थे कन्। प्रातःकाल निद्रित राजाको स्तुति पाठकर जगानेवाला, जो सबेरे सोते हुए बादशाहको तारीफ करके जगाता हो।

अर्थित (सं० वि०) अदन्त चुरा० अर्थ-णिच्, गौणे कर्मणि क्त। १ याचित, जिससे कुछ मांगा जा चुके। (क्लो०) २ इच्छा, खाहिश, दरखास्त।

अर्थितव्य (सं० वि०) याच्ञा किये जाने योग्य, जो मांगे जाने काबिल हो।

अर्थिता (सं० स्त्री०) १ याच्ञा, कामना। २ भिक्षुकको दशा, मांगनेवालेकी हालत।

अर्थित्व (सं० क्लो०) अर्थिता देखो।

अर्थिन् (सं० पु०) अर्थयते ; अदन्त चुरा० अर्थ-णिच्-णिनि, णिच् लोपः। १ याचक, मांगनेवाला। २ सेवक, खिदमतगार। ३ अनुजीवी, मातहत।

'सेवकार्थ्यनुजीविनि' (अमर) अर्थो धनमस्यास्ति, अस्त्यर्थे इनि। ४ धनशाली, दौलतमन्द। ५ धनस्वामी, दौलतका मालिक। ६ कार्याकाङ्क्षी, गर्जमन्द। ७ वादी, मुद्दई।

अर्थिसात् (सं० अव्य०) अर्थिभ्यो देयमधीनं करोति, अर्थिन्‌सात्। याचककी ओरसे, मांगनेवालेकी तर्फ।

अर्थि, अर्थिन् देखो।

अर्थी (सं० अव्य०) कारण वश, वसवब।

अर्थोत् (वै० त्रि०) १ कार्यरत, परिश्रमी, काम करनेवाला, मिहनती। २ आशुकारी, जल्दबाज।

अर्थप्सु (सं॰ त्रि॰) धनाभिलाषयुक्त, दौलतका ख्वाहिशमन्द।

अर्थप्सुता (सं॰ स्त्री॰) धनाभिलाष दौलतको ख्वाहिश।

अर्थेहा, अर्थेप्सुता देखो।

अर्थोपक्षेपक (सं॰ पु॰) अर्थान् प्रयोजनानि उप क्षिपति, अर्थ उप क्षिप ण्वुल्। नाटकका अङ्ग विशेष, खेलका कोई हिस्सा। विष्कम्भक, प्रवेशक, चूलिका, अङ्कावतार और अङ्कमुखको नाव्यशास्त्रमें अर्थोपक्षेपक कहते हैं।

अर्थोपम (सं॰ क्ली॰) अर्थोपमा देखो।

अर्थोपमा (सं॰ स्त्री॰) अर्थेनैव उपमा न तु शब्दे नोक्ता। उपमालङ्कार विशेष।

"आर्थीतुल्यसमानाद्यास्तुल्यार्थे यत्र वा वतिः। (साहित्यदर्पण)

यदि तुल्य वा समानादि शब्द रहे अथवा "तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः। पा ५।१।११५—इस सूत्रके अनुसार तुल्यार्थमें वति रहेगी, तो उसका नाम अर्थोपमा वा आर्थी उपमा होगा। तुल्य समानादि शब्द रहनेसे 'कमलके तुल्य मुख,' यह बात कहनेपर उपमेय मुखमें कमलका, 'कमल मुखके तुल्य' यह बात कहने पर उपमान कमलमें मुखका और 'कमल एवं मुख तुल्य' इस बातके कहनेपर दोनोंमें दोनोंका साहश्य समझा जाता है। ऐसे अर्थके अनुसन्धान हेतुसे ही साहश्य झलकता, इसीसे उसका नाम आर्थी उपमा वा अर्थोपमा है। तुल्यार्थमें विहित वति रहनेपर भी ऐसे अर्थानुसन्धानसे साहश्यका बोध होता है अतएव वहां भी आर्थी वा अर्थोपमा कहना होगा। विशेष विवरण उपमा शब्दमें देखो।

अर्थोपार्जन (सं॰ पु॰) धन वा सम्पत्तिकी प्राप्ति, दौलत या जायदादकी कमायी।

अर्थोष्म (सं॰ क्ली॰) धन धनाभिमान, धनिकता दौलत, दौलतका गरूर, दौलतमन्दी।

अर्थ्याध (सं॰ पु॰) कोषाध्यक्ष, खजाञ्ची।

अर्थ्य (सं॰ त्रि॰) अर्थात् प्रयोजनात् अनपेतम् अर्थ-यत्। १ न्याय्य वाजिब। २ सार्थक, मानी। ३ प्रयोजक, मतलबी। ४ धनवान्, दौलतमन्द। ५ पण्डित, समझदार। अर्थे कर्मणि यत्। ६ याच्य, मांगा जाने काबिल। ७ प्रार्थनीय, अर्ज किये जाने लायक। अर्थाय साधु यत्। ८ अर्थसाधन दौलत देनेवाला। (स्त्री॰) ९ शिलाजतु। १० गेरू, लाल मट्टी।

अर्दन (सं॰ क्ली॰) अर्द ल्युट्। १ याचन, मांग। २ पीड़न तकलीफ़ दिही। ३ गमन, जाना। ४ गमन, रवानगी। (त्रि॰) ५ विचलित, अमनशील, जो ठहरे न घूमता हो। ६ पीड़क, तकलीफ़ दिह।

अर्दना (सं॰ स्त्री॰) अर्द चुरा॰ भावे युच्। १ भिक्षा, भीख। २ वध हिंसा, क़त्ल, तकलीफ़-दिही। (हिं॰ क्रि॰) ३ पीड़ा पहुंचाना, मारना कूटना, तकलीफ़ देना।

अर्दनि (सं॰ पु॰) १ अग्निरोग, आगकी बीमारी। २ याञ्चा मांग। ३ अग्नि, आग।

अर्दली अरदली देखो।

अर्दित (सं॰ त्रि॰) अर्द-क्त। १ याचित। २ गत। ३ पीड़ित। (क्ली॰) ४ वायुव्याधिविशेष, मुखमण्डलका पक्षाघात (Facial paralysis), सिरके अर्धभागका अवश हो जाना।

मुखमण्डलका दो प्रकारकी स्नायुद्वारा स्पन्दन कार्य सम्पन्न होता है। यथा,—पोर्शियो डिउरा (Portio dura) वा सप्तमयुगल स्नायुकी मुखमण्डलस्थित शाखा एवं पञ्चम युगलस्नायुके तृतीयांशकी गण्डगण्डविहीन (Non ganlionic) शाखा। पञ्चमयुगल स्नायुकी प्रथम एवं द्वितीयांश और तृतीयांशकी गण्डगण्डयुक्त शाखा द्वारा यहांका स्पर्शानुभावकता कार्य निकलता है।

पोर्शियो डिउरा एवं पञ्चम युगलके तृतीयांशकी स्पन्दनकारी शाखाके ऊपर कोई आघात लगने अथवा दूसरा कारण पड़नेसे इस स्थानका व्यतिक्रम पड़नेपर मुखमण्डलमें पक्षाघात होता है। सचराचर मुख मण्डलको एक ही ओर पक्षाघात पड़ता है। जिस ओर पक्षाघात लगता है, रोगी उस ओरकी आंखको मूंद नहीं सकता। मुखको दोनों ओरका भाव मिलानेसे बड़ी विसदृशता दिखाई देती है। अमुक ओरकी नासिकाका स्पन्दन नहीं होता, रोगी उस

ओरको सिकोड भी नहीं सकता। हनु अर्थात् गालकी हड्डी कुछ लटक आती और मुखके शेषभागसे लार और खाद्यद्रव्य गिर पड़ता है। रोगीके हंसने पर असुस्थ ओर कुछ टेढ़ी हो जाती और बहुत खराब दिखाई देती है। रोगी साफ़ बोल और ओष्ठवर्णका उच्चारण कर नहीं सकता। किन्तु मुखका ऐसा व्यतिक्रम होनेपर भी रोगी अनायास खाद्य द्रव्यको चबा सकता है। इसीसे समझा जाता है, कि असुस्थ ओर चैतन्य न रहता सही, परन्तु पञ्चम युगल स्नायुमें कोई वैलक्षण्य नहीं पड़ता। प्रायः मुखकी दोनो ओर पक्षाघात देखनेमें नहीं आता। फिर भी किसी किसी आदमीके वैसा हो सकता है। उस दशामें आंख और नाकके ऊपर विशेष दृष्टि रखनेसे रोग समझ पड़ता है।

शारीरिक दुर्बलता बढ़ने एवं दुर्बल मनुष्यके सोते समय मुखमें शीतल वायु लगनेसे यह रोग हो जाता है। सड़े दांत, स्नायुशूल, खोपड़ीके भीतरी अर्बुद, कानके निकटवर्ती शङ्खास्थिस्थित प्रस्तराशीय रोग प्रभृति एवं अन्यान्य नाना कारणोंसे मुखमण्डलमें पक्षाघात लग सकता है। यह रोग प्राय सांघातिक नहीं होता, परन्तु मस्तिष्कमें पीडा रहनेसे विपद् आ सकती है।

चिकित्सा—यदि कोई मूल रोग हो, तो उसका प्रतीकार करना नितान्त आवश्यक है। लौहघटित बलकर औषध, हलका जुलाब, आयोडि इड-अव पोटाश प्रभृति औषधोंसे विशेष उपकार पहुंचता है। रागियोंको बिजलीका ज़ोर देने और घिसनेसे भी ज्य़ादा आराम मिलता है।

अवधौत मतसे मालिश करनेका घी—नेवलेकी चर्वी, सूअरकी चर्वी, बकरेकी चर्वी, सैन्धव नमक, अश्वगन्धाकी छालका रस पांच पुराना घी—आधा आधा पाव और कुचिलाका बीज लाये। पहले सब घी और चर्वीको किसी पत्थरके बरतनपर मिला धूपमें हाथसे रगडे। दूसरे दिन धूपमें सेंधा नमक देकर सब चर्वी ऐसे घिसे, कि नमकका नाम मात्र भी न रहे। उसके बाद कुचिलेके एक एक बीजसे चर्वीको रगड़ना चाहिये। घिसते घिसते जब बीज चुक जाये, तब अश्वगन्धाका रस देकर चर्वीको धूपमें फिर रगड़े। इसतरह हर रोज़ पहर भर घिसकर चर्वीको धूपमें रख दे। अश्वगन्धा-रसके जलका अंश सूख जाने पर औषध व्यवहारके योग्य होता है। इसे पक्षाघात पर मालिश करनेसे शीघ्र प्रतीकार पहुंचता है।

होमियोपैथिक चिकित्सक मुखके पक्षाघातमें बेलेडोना, एकोनाइट, बारायिटा कार्बोनिका और कास्टिक वगैरह दवा देते हैं। आंखकी ऊपरी पलकके स्पन्दनशून्य हो जानेका महौषध जेलसिमिनम है।

वैद्यशास्त्रमतसे—स्वेद, अभ्यङ्ग, शिरोवस्ति, पान, नस्य और भोजनके अनन्तर घृतपान करनेसे अर्दित रोग दूर हो जाता है।

मुखके पक्षाघातमें साधारणतः वैद्यलोग कटुतैल मर्दन, अश्वगन्धाका प्रलेप, घृत मर्दन एवं मांसभोजनकी व्यवस्था करते हैं। पश्चात् विस्तारित विवरण पक्षाघात शब्दमें देखो।

अर्दितिन् (सं॰ पु॰) अर्दितमस्ति यस्य इनि। मुखके पक्षाघातका रोगी, जिसके मुंहमें लक़वा लग गया हो।

अर्दीयमान (सं॰ वि॰) दुःखित, पीडित, आज़ुर्दा, थका-मांदा।

अर्देशीर—ईरानी शहर सीस्तानवासी बहमानके लड़के। सन् ११८४ ई॰में इन्होंने पारसी धर्मग्रन्थ वन्दिदादकी एक नकल उतारी थी। हरबद महयार भारतसे सीस्तान जा उस नक़लको ले आये। सन् १३२३ ई॰को कम्बे नगरमें ईरानवासी कै खुशरु और रुस्तम मेहरवानने उसे देख दूसरी भी नक़लें उतारी थीं।

अर्देशीर नौशेर्वान्—ईरानी शहर किरमान्‌के पुरोहित। सन् १५७८ ई॰में अकबर बादशाहके प्रार्थना करने पर पारसी धर्मोपदेशकोंने इन्हें भारत अपना मत फैलानेको भेजा था। इन्होंने यहां आ अकबरको अपने धर्मका सम्पूर्ण कर्मकाण्ड सिखाया और सीस्त्रोसेखला भी पहनायी। अकबरने इन्हींके उपदेशानुसार अपने ज़नानख़ानेमें अग्निदेवका मन्दिर बनाया और

पशुमपुत्रकयो इसे सौंप कहा या—क्या रात का दिन, किसी समय इस मन्दिरकी पवित्र भमि छुमने न पावे।

अर्द्धमोर पपकाम—प्राचीन समयके कोई मिस्रवासी व्यापारी। यह मिस्रके जहाजपर चोर्तें बाद प्राचीन समयमें भारत बेचने आते रहे। इमानोंमें मिल अर्ध पञ्चोंमें एक बार इनपर सिन्धुनदके समीप घोर आक्रमण किया था।

अर्द्धमी—काठियावाड़के गोंडल-नरेशकी प्राचीन राज धानी। इसे गोंडलसे उत्तर-पूर्व और राजकोटसे दक्षिण कोस दूर पायेंगे। इसके पूर्व ओर एक कुछ बना है। सन् १८१८ ई०में कोटरा सङ्गानी राज्यके प्रतिहाता सांगोजीको यह जागोरमें दे दी गयी थी। यहां को जमीन् बहुत अच्छी और पास ही गोंडल नदीमें गिरनेवाला नाला बहता है।

अर्धमान (सं० त्रि०) पीड़ित, नाजुर्दा जिसको तकलीफ मिल रही हो।

अर्ध (सं० पु०) अर्थ हवी माने कम। १ हडि बढ़ती। भाधारे अम। २ स्थान प्रभृति, मकान वगैरह। कर्मणि अम्। ३ एकदेश, भाग, टुकड़ा, हिस्सा। ४ वृद्धि मासिका आधार, बदनेकी बुनियाद। ५ वायु, हवा। ६ समीप, पास। (त्रि०) कर्तरि ऋघ् कर्मणि अच्। ७ वर्धित, टटा फूटा। (क्ली०) अर्ध न्यवन्। पा ५।४।२। ८ समानांश, दो बराबर टुकड़ेमें एक।

अर्धक (सं० पु०) जलसर्प पनिहा सांप।

अर्धकघातिन् (सं० पु०) वद।

अर्धकपाटसन्धिक (सं० पु०) वाङ्ग्दीर्घकपाटीत गाखापाशिकर्षकस्याकृति विशेष।

अर्धकाल (सं० पु०) शिव।

अर्धकूट, अर्धकूट देखो।

अर्धकृत (सं० पु०) अर्ध कृतम्। असम्पूर्ण सम्पा दित, पूरा न किया हुआ, जो अधूरा बना हो।

अर्धकेतु (सं० पु०) बद्र विशेष।

अर्धकेशिको (सं० पु०) हिन्दुस्तानमें प्रचलित विशेष नाटकके लिये बनियारकी एक गान।

अर्धकोटी (सं० स्त्री) आधा करोड़, पचास लाख।

अर्धकोश (सं० पु०) आधा खजाना।

अर्धकौड़विक, आर्धकौड़विक (सं० त्रि०) अर्ध-कुड्व परिमाणमर्हति, अर्ध कुड्व ठञ्। अर्धकुड़ के परिमाणयोग्य, जो सोलह तोलेके बराबर हो।

अर्धक्रोश (सं० पु०) आध कोस एक मोल।

अर्धखार (सं० स्त्री०) अर्ध खार्याः, एकदेशो टच् समा०। खारीमानार्ध, आधी खारी आठ द्रोण। (क्ली०) अर्धखारी।

अर्धगङ्गा (सं० स्त्री०) अर्ध गङ्गायाः एकदेशो तत्। कावेरी नदी। कावेरी नहानेसे गङ्गास्नानका आधा फल मिलता है।

अर्धगर्भ (सं० त्रि०) अर्धं वत्सरस्यार्धे षण्मासपादो पौषादो वा ब्रह्माण्डस्यार्धे गगने वा गम गर्भस्थानीय सुदर्श येन। सूर्यके किरण विशेषसे सम्बन्ध रखने-वाला। षण्मासत्र पर्व पौषादि मास सूर्य अपने किरणसे पृथिवीका जल खींच आकाशके गर्भरूप मध्यस्थलमें धूमादि सञ्चार लगाता है। इसीसे ज्योतिषमें उस किरणको अर्धगर्भ कहते हैं।

अर्धगुच्छ (सं० पु०) अर्ध चन्द्रमस गुच्छः, कर्मधा०। चतुर्विंशति गुच्छक हार, चौबीस लड़ोंको माला।

अर्धगुञ्जा (सं० स्त्री०) अर्ध गुञ्जायाः एकदेशो तत्। आधी रत्ती।

अर्धगोल (सं० पु०) ख़लका अर्ध भाग दायरेका आधा टुकड़ा, निस्फ दुनिया।

अर्धचक्रवर्तिन् (सं० पु०) नौ काले वासुदेव और विष्णुके नौ शत्रुका नाम। (जैनशास्त्र) चक्रवर्ती देखो।

अर्धचक्रिन्, अर्धचक्रवर्तिन् देखो।

अर्धचन्द्र (सं० पु०) अर्धं चन्द्रस्य, एकदेशो तत्। १ चन्द्रका अर्ध भाग चांदका निस्फ टुकड़ा। २ नखका क्षतचिह्न, नाखुनका दाग। ३ गलहस्त, हाथसे गलेकी टोप। किसीका गला दबाते समय अङ्गुलीमें अर्धचन्द्रकी आकृति देख पड़ती है। ४ बाण विशेष, कोई तीर। यह अर्धचन्द्र जैसा लगता है। ५ अठजी। अगली बोलीमें सङ्केतके समय अठन्नीको

भी अर्धचन्द्र कहते हैं। ६ मयूरपिच्छ, मोर-पङ्खकी आंख। ७ त्रिपुण्ड् विशेष। यह अर्धचन्द्र जैसा लगाता है।

अर्धचन्द्रक (सं० पु०) अर्धचन्द्र इव मयूरस्य, सुप्सु० समा०। मयूरपिच्छका चन्द्र, मोरपङ्खका चंदोवा।

अर्धचन्द्रा (सं० स्त्री०) १ त्रिवृता, निसोत। २ कृष्णत्रिवृता, कालानिसोत।

अर्धचन्द्राकार (सं० पु०) अर्धचन्द्राकृति देखो।

अर्धचन्द्राकृति (सं० स्त्री०) अर्धचन्द्रस्य आकृतिरिव आकृतिर्यस्य। १ अर्धचन्द्राकार काच, निस्फ, चांद-जैसा शीशा। (वि०) २ अर्धचन्द्राकार, निस्फ चांद-जैसा।

अर्धचन्द्रिका (सं० स्त्री०) १ कर्णस्फोट लता, कन-फोड़ा। २ कृष्णत्रिवृता, कालानिसोत।

अर्धचोलक (सं० क्ली०) अर्धं चोलस्य, एकदेशी तत्, संज्ञायां कन्। आधी अंगिया, छोटी चोली।

अर्धजरतीयन्याय (सं० पु०) लौकिकन्यायभेद। इसका तात्पर्य यही है, कि एक वस्तु एक ही समयमें दो विपरीत धर्मयुक्त नहीं हो सकता। जो वृद्ध है, उसीका फिर तरुण होना असम्भव लगता है। मुर्गीका कोई अंश पकाया जाता, फिर वही मुर्गी किसी अंशसे अण्डे दे रही है—ऐसा कभी हो नहीं सकता।

अर्धजरतीयन्याय—इस वाक्यकी व्युत्पत्तिके विषयमें एक दृष्टान्त है। किसी वृद्ध नैयायिकके पास एक गाय थी। वे उस गायको बेचनेके लिये हाटमें ले गये। खरीदार लोग आकर उनसे पूछने लगे, गाय कितने वर्षकी है। ब्राह्मणने मन ही मन सोचा,—"वृद्धका ही अधिक आदर होता है। निमन्त्रणको जानेसे सभामें सब कोई मेरा सम्मान करता और सर्वत्र ही मुझे अधिक विदायी भी मिलती है।" यही समझकर उन्होंने कहा,—इसकी उम्र बहुत है। बूढ़ी गाय किस कामकी! सुतरां किसीने उसे न ख़रीदा।

नैयायिकने गायके साथ घर लौट ब्राह्मणीसे सब हाल कहा था। उस पर ब्राह्मणी झुंझलाकर बोल उठी,—"तुम्हारी कैसी बुद्धि है, तुमने ऐसी गायको बूढ़ी क्यों बताया? वृद्ध कहनेसे उसे कौन मोल लेगा।"

दूसरे दिन ब्राह्मण फिर उस गायको बाज़ार ले गये। खरीदारोंने जब गायकी उम्र पूछी, तब उत्तरमें उन्होंने कहा—"बाबू! यह तो अभी कुछ ही दिनकी और सिर्फ पहली बार बियानी है।" यह सुन वे लोग हंसकर कहने लगे,—कल आपने इसे वृद्ध और आज तरुण बताया, ऐसा कभी हो सकता है। इसपर ब्राह्मणने उत्तर दिया,—"यह बात असम्भव नहीं है। मेरी गाय वृद्ध और तरुण भी है। शास्त्रकार आत्माको पुरातन कहते हैं। अतएव इस गायके नवीन शरीरमें पुरातन आत्मा विद्यमान है। सुतरां गो शब्द कहनेसे गोदेहावच्छिन्न पुरातन आत्मा एवं तरुण गाय समझी जाती है।" किन्तु चना चबाना और शहनायीका बजाना एक ही साथ नहीं हो सकता,—

"एकसाथ नहिं होंहि भुवालू।
हंसब ठठाय फुलाउब गालू॥" (तुलसी)

अर्धजल (सं० क्ली०) जलक्रिया विशेष, मुर्देका नहलाना। चितापर पहुंचानेसे पहले शवको जो नहलाते और आधा पानी आधा जमीनमें रखते, उसे अर्धजल कहते हैं।

अर्धजाह्नवी (सं० स्त्री०) अर्धं जाह्नव्याः, एकदेशी तत्। अर्धगङ्गा, कावेरी नदी।

अर्धज्योतिका (हिं० स्त्री०) ताल विशेष।

अर्धतनु (सं० स्त्री०) अर्ध शरीर, निस्फ जिस्म।

अर्धतिक्त (सं० पु०) असम्पूर्णः तिक्तः। निम्बवृक्ष विशेष, नेपाली नीमका पेड़।

अर्धतूर (सं० पु०) वादित्र विशेष, किसी किस्मका बाजा।

अर्धदग्ध (सं० वि०) अधजला, आधा जला, झुलसा हुआ।

"अर्धदग्ध कर मरनकी विधि हु न दिखवत योग।" (तुलसी)

अर्धदिन (सं० क्ली०) अर्धं दिनस्य, एकदेशी

अर्धपश्चाल-देशजात, जो अर्धपश्चाल देशमें पैदा हुआ हो।

अर्धपादा (सं० स्त्री०) भूम्यालको, भुयीं आंवला।

अर्धपादिक, आर्धपादिक (सं० त्रि०) अर्धपादं तच्छेदमर्हति, ठञ्। अर्धपादच्छेद योग, अर्धपाद परिमाण, दमडी भर।

अर्धपारावत (सं० पु०) अर्धेन अङ्गेन पारावत इव। १ वनकुक्कुट, जङ्गलकी मुर्गा। २ तित्तिर पची, तीतर।

अर्धपुलायित (सं० क्ली०) अश्वकी एक गति, मोठा पोयिया।

अर्धपुष्पा (सं० स्त्री०) महावला, कोई पौधा।

अर्धपूर्ण (सं० त्रि०) आधा भरा, निस्फ, खाली।

अर्धपोहल (हिं० पु०) वृक्ष विशेष, कोई पौधा। इसकी पत्ती मोटी होती है।

अर्धप्रस्थिक, आर्धप्रस्थिक (सं० त्रि०) अर्धप्रस्थेन क्रीतम् ठञ्। अर्धप्रस्थ-परिमित द्रव्य द्वारा क्रीत, जो आधे प्रस्थमें खरीदा गया हो।

अर्धप्रहर (सं० त्रि०) आधा पहर, डेढ़ घण्टा।

अर्धप्रादेश (सं० पु०) १ आधा बित्ता। २ आधा सेतु। ३ आधा मुल्क।

अर्धभाग (सं० पु०) अर्धं भागस्य एकदेशो तत्। १ आधा हिस्सा। २ खण्ड, टुकड़ा।

अर्धभागिक, अर्धभाग देखो।

अर्धभागिन्, अर्धभाज् देखो।

अर्धभाज् (सं० त्रि०) अर्धं भजति, भज-ण्वि, उप० समा०। अर्धांशका अधिकारी, आधेका हिस्सेदार।

अर्धभास्कर (सं० पु०) दोपहर।

अर्धभोजन (सं० क्ली०) अर्धाशन, आधे पेटका खाना।

अर्धभोटिका (सं० स्त्री०) किसी किस्मकी रोटी।

अर्धभ्रम (सं० क्ली०) अर्धं चरणार्धपर्यन्तं भ्रमो वर्णसाजात्यात् पाठक्रमेण आवर्तनं यत्र, बहुव्री०। जिस श्लोकमें आधे चरणके अक्षर एक एक करके बायीं ओरसे दाहनी अथवा दाहनी ओरसे बायीं किंवा ऊपरसे नीचे या नीचेसे ऊपरको पढ़नेपर एक ही जैसा पाते, उसे अर्धभ्रम कहते हैं,—

"तादृगर्धभ्रमं नाम श्लोकार्धभ्रमणं यदि।" (सरस्वतीकण्ठाभरण)

यह शब्दालङ्कार विशेष है। इसमें शब्द गूंथनेके सिवा कोई अर्थवैचित्र्य नहीं होता। ऐसे श्लोकमें ऊपर लिखे हुए मतके अनुसार नाना ओरसे अक्षर गिरनेपर भी अर्थ जैसेका तैसा ही बना रहता है।

अ	भी	क	म	ति	के	ने	हे
भी	ता	न	न्द	स्य	ना	ग	ने
क	न	त्स	का	म	से	ना	के
म	न्द	का	म	क	म	स्य	ति

(माघ १९।७१)

इस श्लोकमें प्रथम चरणके प्रथमार्धका चार अक्षर बायीं ओरसे दाहिनी ओर पढ़ जानेपर 'अभीकम' होता है। फिर प्रत्येक चरणका पहला अक्षर ऊपरसे नीचेकी ओर पढ़नेपर भी "अभीकम" ही आता है। द्वितीय चरणके प्रथमार्द्धका चार अक्षर बायीं ओरसे दक्षिणको पढ़नेपर 'भीतानन्द' और प्रत्येक चरणके प्रथमार्द्धका दूसरा अक्षर ऊपरसे नीचेको पढ़ जाते भी 'भीतानन्द' ही पड़ता है। तीसरे चरणके प्रथमार्द्धका चार अक्षर बायीं ओरसे दाहिनी ओर को पढ़ जानेपर 'कनत्सका' और प्रत्येक चरणके प्रथमार्द्धका तीसरा अक्षर ऊपरसे नीचेको पढ़नेपर भी 'कनत्सका' ही बैठता है।

चतुर्थ चरणके प्रथमार्धका चार अक्षर बायीं ओरसे दाहिनी ओर पढ़ जानेपर 'मन्दकाम' और प्रत्येक चरणके चौथे अक्षरको ऊपरसे नीचेकी ओर पढ़नेपर भी 'मन्दकाम' ही बनता है।

सब चरणके प्रथमार्धका अक्षर इसीतरह बाएँसे दाहने और ऊपरसे नीचेको पढ़ जाते भी एक ही जैसा रूप होता है।

दूसरे प्रथम चरणके शेषार्धका चार अक्षर बाईंसे दाहिनी ओरको पढ़ जानेपर 'तिकेनेहे' और प्रत्येक चरणके शेषार्धका अवशिष्ट अक्षर नीचेसे ऊपरको पढ़ते भी 'तिकेनेहे' ही लगता है।

द्वितीय चरणके शेषार्धका चार अक्षर बाईं

ओरसे दाहिनी ओरको पढ़ जानेपर 'प्रमाममें' और प्रत्येक चरणके मंपार्धको उलटी ओरका दूसरा अक्षर नीचेसे ऊपरको पढ़ने भी 'प्रमाममें' ही मिलता है।

तृतीय चरणके मंपार्धका चार अक्षर बाईंसे दाहिनी ओर पढ़ जानेपर 'मषिनाडि' और प्रत्येक चरणके मिपार्धको उलटी ओरका तीसरा अक्षर नीचेसे ऊपरको पढ़ने भी 'मषिनाडि' ही मंठता है।

चतुर्थ चरणके मंपार्धका चार अक्षर बाईंसे दाहिनी ओर पढ़ जानेसे 'कमस्पति' और प्रत्येक चरणके मंपार्धको उलटी ओरका चौथा अक्षर नीचेसे ऊपरको पढ़ने भी 'कमस्पति' ही निकलता है।

अर्ध अर्ध चरणमें अक्षरका इस रीतिसे भ्रम अर्थात् भ्रमण या आवर्तन होनेपर श्लोकको अर्धभ्रम कहते हैं। अग्निपुराणमें अर्धभ्रम श्लोक 'अर्धभ्रमक' कहा गया है। अर्धभ्रम या अर्धभ्रमक श्लोक अनुष्टुप् भिन्न और किसी छन्दमें नहीं रचा जाता।

अ	भी	क	म	ति	कि	मि	के
भी	ता	म	न्द	प	मा	य	कि
क	न	सुध	का	म	मि	भा	कि
म	न्द	का	म	क	म	न्द	ति

अग्निपुराणमें इस तरह खड़ी पांच और तिरछी भी रेखा खींचकर बत्तीस कोठ बनानेकी व्यवस्था है। एक एक कोठेमें श्लोकके अक्षरोंको यथाक्रम रखकर ऊपर कही हुई रीतिसे पढ़ना पड़ता है। परन्तु माघ और भारविमें इस तरह रेखा खींचकर कोठ बनानेकी व्यवस्था नहीं है।

अर्धमागधी (स॰ स्त्री॰) प्राकृत भाषा विशेष कोई पुरानी जबान। इसमें यह मथुरा और पटनाके बीच चलती थी। प्राकृत देखो।

अर्धमाणव अर्धमाणवक देखो।

अर्धमाणवक (स॰ पु॰) अर्धं माणवकस्य, एकदेशी तत्। द्वादश यष्टिका माला बारह लड़ीका हार।

अर्धमात्रा (स॰ स्त्री॰) अर्धं मात्रायाः, एकदेशी तत्। १ बिन्दु चन्द्राकार ब्रह्म। २ अर्धपरिमाण आधा वजन। ३ महीतमात्र और अक्षको अर्ध-मात्राका उच्चारण काल। (त्रि॰) ४ एक वर्ण, व्यञ्जन।

अर्धमारिष (स॰ पु॰) निघण्टुकारके मतसे विशेष, चित्रकारोंसे दिया जानेवाला कोई शुमार। दशमूलीय क्वाथसे शतावरीको पोस डाले। फिर दो-दो पल सेन्धव, घृत मधु और एक पल तन मिलानेसे यह तैयार होता है। इसके सेवनसे सर्वरोग मिटता है। (चक्रदत्त संग्रह)

अर्धमार्गे (स॰ अव्य॰) आधी राहमें।

अर्धमास (सं॰ पु॰) अर्धं मासस्य एकदेशी तत्। एक पक्ष, पन्द्रह दिन, आधा महीना।

अर्धमासतम (सं॰ त्रि॰) १ प्रति पक्ष किया जाने या होनेवाला, जो हर पखवारे हो। २ एक पक्ष रहनेवाला, जो एक पखवारे टिकता हो।

अर्धमासशस् (स॰ अव्य॰) प्रतिपक्ष, पन्द्रह दिनमें, पखवारे पखवारे।

अर्धमासीक, अर्धमासतम देखो।

अर्धमाहुरी (सं॰ स्त्री॰) सेफमाई भक्षधारा विशेष।

अर्धमुष्टि (स॰ पु॰ स्त्री॰) आधी मुट्ठी, जो मुट्ठी आधी बन्द और आधी खुली हो।

अर्धयाम (स॰ पु॰) अर्धं यामस्य प्रहरस्य, एकदेशी तत्। दिवा तथा रात्रिका अष्टांश, दिन और रातका आठवां हिस्सा, डेढ़ घण्टा।

अर्धरथ (स॰ पु॰) अर्धं अरम्यं रथ। अरम्यं रथी, अर्ध रा मिपाही। जो और रथपर बैठ युद्ध करनेमें दूसरे रथीकी अपेक्षा रखता, वह अर्धरथ कहाता है।

अर्धरात्र (स॰ पु॰) अर्धं रात्रेः, एकदेशी समास। १ रात्रिका अर्धभाग, दो प्रहर रात्रि, आधी रात। २ निशीथ, महानिशा अपपरारात्र, निशब्यात, मुहतम बोधेच पहलेकी रात।

"अर्धराव गइ कपि नहिं आवा।" (तुलसी)

अर्धरात्रसमय (सं० पु०) रात्रिके अर्ध भागका समय, आधीरातका वक्त।

अर्धरात्रार्धदिवस (सं० क्लो०) विषुव, विषुवत्, दिनरात बराबर होनेका समय।

अर्धर्च (सं० पु०-क्लो०) अर्ध ऋचः, एकदेशी अच् समा०। ऋक्का अर्धभाग।

अर्धर्चशस् (सं० अव्य०) प्रत्येक पदपर, हरेक मिसरेमें।

अर्धर्चादि (सं० पु०) अर्धर्च इति शब्द आदौ येषाम्। अर्धर्चाः पुंसि च। पा।२।४।३१। पाणिनिका कहा हुआ शब्द गणभेद। इस गणमें निम्नलिखित शब्द रहता, जो पुंलिङ्ग एवं क्लीवलिङ्ग भी होता है,—अर्धर्च, गोमय, कषाय, कार्षापण, कुतप, कपाट, शङ्ख, चक्र, गूथ, यूथ, ध्वज, कबन्ध, पद्म, गृह, सरक, कंस, दिवस, युप, अन्धकार, दण्ड, कमण्डलु, मण्ड, भूत, द्वीप, द्यूत, धर्म, कर्मन्, मोदक, शतमान, यान, नख, नखर, चरण, पुच्छ, दाडिम, हिम, रजत, सक्तु, पिधान, सार, पात्र, घृत, सैन्धव, औषध, आढक, चषक, द्रोण, खलीन, पात्रीव, षष्टिक, वार, वाण, प्रोथ, कपित्थ, शुष्क, शील, शुल्व, सीधु, कवच, रेणु, कपट, सीकर, मुसल, सुवर्ण, यूप, चमस, वर्ण, चीर, कर्ष, आकाश, अष्टापद, मङ्गल, निधन, निर्यास, जृम्भ, वृत्त, पुस्त, क्ष्वेडित, शृङ्ग, शृङ्खल, मधु, मूल, मूलक, शराव, शाल, वप्र, विमान, मुख, प्रग्रीव, शूल, वज्र, कर्पट, शिखर, कल्क, नाट, मस्तक, वलय, कुसुम, तृण, पङ्क, कुण्डल, किरीट, अर्बुद, अङ्कुश, तिमिर, आश्रम, भूषण, इल्कस, मुकुल, वसन्त, तड़ाग, पिटक, विटङ्क, माष, कोश, फल, दिन, दैवत, पिनाक, समर, स्थाणु, अनीक, उपवास, शाक, कर्पास, चषाल, खण्ड, दर, विटप, रण, वल, मल, मृणाल, हस्त, सूत्र, ताण्डव, गाण्डीव, मण्डप, पटह, सौध, पार्श्व, शरीर, फल, पुर, राष्ट्र, विश्व, अम्बर, कुट्टिम, मण्डल, ककुद, तोमर, तोरण, मञ्चक, पुङ्ख, मध्य, वाल, वल्मीक, वर्ष, वस्त्र, देह, उद्यान, उद्योग, स्नेह, स्वर, सङ्गम, निष्ठ, क्षेम, शूक, छत्र, पवित्र, यौवन, पालक, मूषिक, वल्कल, कुञ्ज, विहार, लोहित, विषाण, भवन, अरण्य, पुलिन, दृढ़, आसन, ऐरावत, शूर्प, तीर्थ, लोमश, तमाल, लोहदण्डक, शपथ, प्रतिसर, दारु, धनुस्, मान, गुड़, वितङ्क, सत्र, सहस्र, ओदन, प्रवाल, शकट, अपराह्ण, नीड, शकल, कुणप, ऋण, पूर्व, बुस्त, निगड, स्यून, नाल, कटक, कण्टक, कुमुद, इध्याम, विडङ्ग, पिण्याक, विशाल आर्द्र, हल, योध कुक्कुट, कुड़व, खण्डल, पञ्चक, कान्त, वसु, स्नेन, स्तन, सत्र, कलह, वर्चस्, तण्डक, तण्डुल।

अर्धलक्ष्मीहरि (सं० पु०) अर्धं लक्ष्म्या आकारे यस्य तादृशो हरिः। लक्ष्मी सहित मिलित विष्णु।

"ऋषि प्रजापति छन्दो गायत्री देवता पुन।
अर्धलक्ष्मीहरि प्रोक्त गौतमेन यदृच्छकम्।" (गौतमीयतन्त्र)

इनके ध्यानका मन्त्र यह है,—

"उद्यत्प्रद्योतनशतरुचिं तप्तहेमावदातं
पार्श्वद्वन्द्वे जलधिसुतया विश्वधात्रा च जुष्टम्।
नानारत्नोल्लसितविविधाकल्पमापीतवस्त्रम्
विष्णुं वन्दे दरकमलकौमोदकी चक्रपाणिम्॥"

अर्धवस्त्रसंवीत (सं० त्रि०) अर्धपरिच्छदविशिष्ट, आधे कपड़े पहने हुआ।

अर्धविसर्ग (सं० पु०) अर्धं विसर्गस्य एकदेशी तत्। आधे विसर्ग—जैसा जिह्वामूलीय और उपध्मानीय।

अर्धवीक्षण (सं० क्लो०) अर्धं वीक्षणस्य, एकदेशी-तत्। अपाङ्ग दर्शन, तिरछा नज़ारा।

अर्धवीरुत्का (सं० स्त्री०) कृष्णा दूर्वा, काली दूब।

अर्धवृत्त (सं० क्लो०) १ वृत्तका अर्धांश, दायरेका आधा हिस्सा। २ वृत्तके परिधिका अर्धांश, दायरेके घेरेका आधा हिस्सा।

अर्धवृद्ध (सं० त्रि०) आधा बुड्ढा, दरमियानी उम्र-वाला।

अर्धवृहती (वै० स्त्री०) अर्ध श्वास, आधी सांस।

अर्धवैनाशिक (सं० पु०) अर्धं असम्पूर्णः वैना-शिकः बौद्ध विशेषः। वैशेषिक शास्त्र-प्रणेता।

अर्धवैशस (सं० क्लो०) अर्धस्य वैशसः वधः। अर्ध विनाश, निस्फ कत्ल।

अर्धव्यास (सं० पु०) वृत्तकी त्रिज्या, दायरेका निस्फ कुतर।

अर्धगत (स॰ क्लो॰) १ पञ्चाशत, पचास। २ गत एक पञ्चाशत, डेढ़ सौ।

अर्धगन (स॰ क्लो॰) अर्ध गगनस्य, एकदेशी तत् नि॰ साइ। अर्धभोजन, आधो खुराक।

अर्धगफर (स॰ पु॰) अर्ध गगम्य र्षं गफर'। क्षुद्र मत्स्य विशेष, दक्षपान, कोई छोटो मछलो।

अर्धगन्ध (स॰ त्रि॰) सन्द गन्धविशिष्ट, थोमो बाबाळवाला।

अर्धगराव (स॰ पु॰) मर्मात इय, बत्तोस तोला।

अर्धगरावक, अर्धशराव देखो।

अर्धगेय (स॰ त्रि॰) आधा बाकी जो सिर्फ आधा बच गया हो।

अर्धग्राम (स॰ त्रि॰) आधा बदरीका, जो बादल से मिला, बिरा हो।

अर्धश्लोक (स॰ पु॰) अर्ध श्लोकस्य, एकदेशी तत्। श्लोकका अर्धभाग, प्रथम पादद्वय।

अर्धमघात (स॰ त्रि॰) आधा जगा हुआ, जिसमें आधो मूधन पैदा हो चुकी।

अर्धसफर अर्धशफर देखो

अर्धसम (स॰ त्रि॰) अर्धेन सम। अर्धके समान आर्धके बराबर।

अर्धसमवृत्त (स॰ क्लो॰) वृत्तविशेष सोरठा। इसमें प्रथम तृतीय और द्वितीय चतुर्थ पाद समान रहता है।

अर्धसव (स॰ पु॰) पैदक, कदू चिड़िया।

अर्धसोरिन् (स॰ पु॰) अर्धसीरम्य कृषकाद्युपरा-दियवस्य अस्ति अस्य, अस्त्यर्थे इनि। अधके खेतमें खेती कर उपजका अर्ध भाग पानेवाला कृषक जो किसान दूसरेका खेत कमाता और फसलका आधा हिस्सा पाता हो।

अर्धहार (स॰ पु॰) अर्धः हारः। चौंसठ या चालीस लड़ोका हार।

अर्धह्रस्व (स॰ क्लो॰) अर्धाक्षर, आधा वर्ण।

अर्धांश (स॰ पु॰) अर्ध अंशस्य, एकदेशी तत्। अर्धभाग, आधा हिस्सा।

अर्धांशिन् (स॰ त्रि॰) अर्धभागका अधिकारी, जिसका हिस्सा पानेवाला।

अर्धावशेषजल (स॰ क्लो॰) अर्धावशेष पक्व जल, जो पानी जलकर आधा रह गया हो। यह वातपित्त को मिटाता है। (राजनिघण्टु)

अर्धाकार (स॰ पु॰) १ अकारका अर्ध भाग। २ अवग्रह, समासके पदका विभाग।

अर्धाङ्ग (स॰ क्लो॰) १ शरीरका अर्ध भाग जिस किस। २ पक्षाघात, फ़ालिज, लकवा। इस रोगमें आधा अङ्ग मारे पड़ता है। ३ शिव।

अर्धाङ्गिनी (स॰ स्त्री॰) पत्नी बीबी।

अर्धाङ्गी (स॰ पु॰) शिव।

अर्धांश (स॰ पु॰) अर्ध अर्धस्य तुल्यांशस्य, एक॰ तत्। समान भागका अर्धांश, चतुर्थांश, आधेका आधा, चौथायी।

अर्धाकविया—बिहारके बनोविया और कैमवार बस कारको एक शाखा।

अर्धालिंग (स॰ पु॰) अलसर्प, अलिका सांप।

अर्धावभेदक (स॰ पु॰) शिरोरोग विशेष अर्ध-कपाली, आधासोसी। इसको उत्पत्ति और लक्षण इस प्रकार लिखो है—रूक्षवस्तु खाने अध्यशन प्राग्वातावश्याय, मैथुन वेगसन्धारण (मूत्रादिक अवरोध करने), अधिक परिश्रम व्यायाम प्रभृति कारणोंसे वायु कुपित हो केवल या कफसे मिल, शिर, भ्रू, नेत्र, कर्ण, ललाटके अर्धभागमें जो शस्त्र ताड़न सदृश तीव्र वेदना (पीड़ा) उत्पन्न करता, उसको अर्धाव-भेदक कहा जाता है। (भावप्रकाश)

२ समान अंशमें विभाजन, बराबर हिस्सेका तकसीम।

अर्धावभेद, अर्धावभेदक देखो।

अर्धासन, अर्धासन देखो।

अर्धाष्टम—गुजरात प्रान्तका कोई प्राचीन ज़िला। सन् ११८१ ११७३ ई॰में पण्डितप्रवर हेमचन्द्र जैन चालुक्यनृपति कुमारपालके मन्त्री रहे। कहते हैं, कि विक्रमीय संवत् ११४५ को कार्तिकपूर्णमासीको हेम चन्द्रने इस ज़िलेके धन्धुक गांवमें चाचिग नामक किसी मोढ़ो बनियेके घर जन्म लिया था। माता पाहिनी चालुप्य गोत्रको रहीं हेमचन्द्रको लड़कपनमें लोग

चङ्गोदेव कहते थे। सन् १०८८-११७० ई०में जैनाचार्य देवचन्द्र पाटनसे धन्धुक गये, जिन्हें देख चङ्गोदेव पीछे जा बैठे। लड़केको होनहार पा देवचन्द्र चकराये और लोगोंको अपने साथ ले चाचिगके मकान् पहुंचे थे। उस समय चाचिग घरमें न रहा, किन्तु उसकी पत्नीने आदरके साथ आचार्यका स्वागत किया और मांगने-पर अपना पुत्र चङ्गोदेव उन्हें सौंप दिया। जैनाचार्यने पुत्रको कर्णावती पहुंचाया और उदयन मन्त्रीके लड़कों साथ जा रखा था। चाचिग मकान्में लड़के को न पा बहुत घबराया और बिना देखे अन्नजल ग्रहण न करनेका शपथ उठाया। कर्णावती पहुंच उसने झुंझलाकर आचार्यसे लड़केको वापस मांगा था। किन्तु उदयनके कहनेसे वह उन्हें देवचन्द्रके पास हो छोड़नेपर राज़ी हो गया। सन् १०८७ ई०में चाचिगने पुत्रको आठ वर्षको अवस्थापर दीक्षा दिला सोमचन्द्र नाम रखा था। जब वह पढ़-लिखकर धुरन्धर विद्वान् हुए, तब देवचन्द्र उन्हें हेमचन्द्र कहने लगे। सन् १११० ई०में कोई इक्कीस वर्षकी अवस्थापर हेमचन्द्रने अपनी प्रकर्ष विद्याके कारण 'सूरि' उपाधि पायी थी। सिद्धराजने उनकी बात सुनते हो आचर्यमें आ विद्वद्वर कहके सम्मानित किया। सिद्धराजके साथ हेमचन्द्र सोमनाथपाटन पहुंचे और शिवलिङ्गके सामने पूज्य दृष्टिसे झुके थे। उन्होंने 'सिद्धहेमचन्द्र' नामक व्याकरण ग्रन्थ अपने और महाराजके नामपर बहुत ही अच्छा बनाया है। 'अभिधान-चिन्तामणि' और 'अनेकार्थनाममाला' पुस्तक भी उन्हींका लिखा है। उन्होंने कुमारपाल नृपतिसे अहिंसा रखनेकी प्रतिज्ञा करा ली थी। जब कुमारपालने धर्मका सबसे बड़ा काम करनेको पूछा, तब हेमचन्द्रने सोमनाथके मन्दिरका जीर्णोद्धार ही बता दिया। उनके कहनेसे कुमारपालने मद्य-मांसका व्यवहार छोड़ा और अपने राज्यमें जीवहिंसा न होनेका ढिंढोरा पिटाया था। कहते हैं, अनहिलवाड़के किसी बनियेकी कुल जाय-दाद एक जूं मारनेके कारण ज़ब्त हुई रही। कुमार-पालके समय उन्होंने अच्छे-अच्छे साहित्यिक और धार्मिक ग्रन्थ लिखे। उनमें अध्यात्मोपनिषद् वा योगशास्त्र, त्रिषष्टिशलाकापुरुष-चरित, परिशिष्ट-पर्व, प्राकृत शब्दानुशासन, लिङ्गानुशासन, द्वयाश्रय, छन्दोनुशासन, देशीनाममाला और अलङ्कार-चूडा-मणि उल्लेख-योग्य है। सन् ११७२ ई०में ८४ वर्षको अवस्थापर हेमचन्द्र मरे थे। कुमार-पाल नृपति उनको मृत्युपर फूट-फूट रोये और लाखों आदमी चिताकी भस्म मस्तकपर लगानेको ले गये।

अर्धामन (सं० क्लो०) अर्धं आमनस्य, एक० तत्। १ आमनका अर्ध भाग। अर्धं मस्यत्रं अमनं त्यागः। २ स्रेहदान, इज़्ज़तका सलाम। ३ अकुसुमन, इल-ज़ामको मुवाफ़ी।

अर्धिक (सं० त्रि०) अर्धमर्हति, ठिठन्। अर्धभाग-विशिष्ट, निस्फ़, हिस्सेसे तामुक रखनेवाला।

अर्धिन् (सं० त्रि०) अर्धं ग्रहीतव्यतया अस्त्यस्य, इनि। अर्ध भाग लेनेवाला, निस्फ़का हिस्सेदार।

अर्धीकरण (सं० क्लो०) अर्ध भाग बनानेकी क्रिया, आधा हिस्सा निकालनेका काम।

अर्धुक (वै० त्रि०) ऋध वाहु० उकञ्। वृद्धिशील, सम्पन्न, कामयाब।

अर्धेन्दु (सं० पु०) अर्धं इन्दोः, एक० तत्। १ चन्द्रका अर्ध भाग, आधा चांद। २ नख चिह्न, नाखूनका निशान। ३ अर्धचन्द्र बाण। ४ गलहस्त, गल बहिया। ५ अतिप्रौढ स्त्रीको योनिमें अङ्गुलि प्रयोग।

अर्धेन्दुमौलि (सं० पु०) अर्धेन्दुः मौलौ मस्तके यस्य। चन्द्रचूड़ शिव।

अर्धेन्दुशकला (सं० स्त्री०) १ नासारोग विशेष, नाककी कोई बीमारी। २ कपालरोगभेद, खोपड़े का कोई आज़ार। ३ ओष्ठ रोग, होंठकी बीमारी। ४ अर्बुदरोग, फोड़ा फुन्सी। ५ गलरोग, गर्दनका आज़ार। ६ कर्णरोग, कानकी बीमारी।

अर्धेन्द्र (सं० त्रि०) जिसमें आधा हिस्सा इन्द्रका रहे।

अर्धोक्त (सं० क्लो०) अर्धं उक्तम्। १ अर्ध, कथन, निस्फ़, कलाम। (त्रि०) २ आधा कहा हुआ, जो साफ़-साफ़ बताया न गया हो।

अर्घोक्ति (सं• स्त्री•) अर्धकथन, मिस्ल कलाम।

अर्घोदक (सं• क्ली•) अर्धदेहव्यापकं उदकम्, शाक०-तत्। देहके निम्नार्धभाग पर्यन्त जल, जो पानी जिस्मके आधे जिस्मे तक पहुंचता हो।

अर्घोदकक्षीर (सं• क्ली•) अर्घोदकयुत दुग्ध, आधे पानीमें पका हुआ दूध।

अर्घोदय (सं• पु•) अर्धस्य समस्तस्य पुण्यस्य उदयो यत्र, बहुव्री•। योग विशेष। माघमासकी अमावस्याको रविवार, व्यतीपात और श्रवण नक्षत्र पड़नेसे यह योग लगता है। इसमें स्नान करनेसे परम पुण्य मिलता है। अर्घोदय दिनमें ही होता रात्रिको कभी नहीं पड़ता।

अर्घोदयासन (सं• क्ली•) अर्धस्य उदयेन अर्ध' शेषेण आसनम्। साधकजनका आसनविशेष।

अर्घोदित (सं• त्रि•) १ आधा निकला हुआ, जो आधा उठा हो। २ आधा कहा हुआ, जो पूरा न बताया गया हो।

अर्घोरुक (सं• क्ली•) अर्धोरु तक जानेवाली, जांघ ढ। १ छोटा घाघरा। (त्रि•) २ ऊरुके मध्य भागतक पहुंचनेवाला।

अर्ध्य (सं• त्रि•) अर्धम् अर्ह तत्र भव वा, अर्ध यत्। १ अर्धसम्बन्धी, निस्फसे तालुक रखनेवाला। २ पूरा किया जानेवाला। ३ सामने जो हासिल किये जानेको हो।

अनावी—बम्बईके सूरत प्रान्तका एक ग्राम। यह बर्सपुरसे कोई साढ़े चार कोस दूर है। यहां गर्म पानीका एक झरना बहता, जिसपर प्रतिवर्ष चैत्र मासमें पौर्णमासीको मेला लगता है।

अर्नाल—बम्बई प्रान्तीय थाना जिलेकी बसाईन तट मोहनके समीप गांवका एक किला। मुसलमानोंके राज्यकाल पोर्तगीजोंने इसे बनाया था। यह बैतरण नदके मुहानेपर अवस्थित है। गुम्बद, मेहराब और कमरा वगैरह मुसलमानी ढंगका रहते भी इसके भीतर हिन्दू अधिकारका चिह्न देखेंगे।

अर्नेज—बम्बईके अहमदाबाद जिलेकी धोलका तह-सीलका एक गांव। इसका मामला आमदनी सामाजो गायकवाड़के प्रबन्धानुसार अगरेज-सरकार भूत भवानी मन्दिरके महाजनोंको दे देती है। प्रतिदिन प्रातःकाल साधुओंको सदाव्रत मिलता है।

अर्णोराज—गुजरातवाले सांभर प्रान्तके नृपति विशेष। चालुक्य नृपति कुमारपालको इन्होंने युद्धमें पराजय किया था। अन्तको कुमारपालने अपनी कन्या इन्हें व्याह दी। इनके भतीजे चौरजवल सोम भरियके उत्तराधिकारी बने थे। सोम भरियके विरुद्ध अनवा हौनेपर इन्होंने शत्रुका सुख तोड़ अपना प्राण खोया।

अर्पण (सं• क्ली•) ऋ णिच्-पुक्-ल्युट्। १ प्रदान, बख्शिश, सुपुर्दगी, निक्षास। २ निक्षेप डाल, फेंक फांक। ३ स्थापन रखाव, लगाव। ४ त्याग, छूट। कर्मेषि ल्युट्। ५ हरि प्रभृति। अधिकरणे ल्युट्। ६ अग्नि प्रभृति। सम्प्रदाने ल्युट्। ७ देवता प्रभृति।

अर्पणीय (सं• त्रि•) प्रदान वा स्थापन किया जानेवाला, जो देने या रखनेको हो।

अर्पना अरपना देखो।

अर्पल्ली—मध्यप्रदेशके चांदा जिलेका एक परगना। यह अक्षा• १८ २८ १५″ एवं १८° ४८´ ३१″ उ• और द्राघि• ७८ ४८´ १५´ तथा ८० ११´ ३०″ पू•के मध्य अवस्थित है। इसके भीतरी दो गांवमें छोटा सबसे बड़ा निकलेगा। जङ्गल और पहाड़ बहुत मिलता है। किन्तु जगह जगह तालाब भरे और नाले बहा करते हैं।

अर्पित (सं• त्रि•) ऋ णिच्-पुक्-क्त। १ प्रदत्त, दिया हुआ। २ स्थापित, जो रखा गया हो। ३ सञ्चित गया हुआ।

अर्पितकर (सं• त्रि•) १ हाथ फैलाते या बढ़ाते हुआ। २ विवाहित, जिसकी शादी हो चुके।

अर्पिस (सं• पु•) ऋ णिच् पुक्-इसन्। १ अग्र मांस, आगेका गोश्त। २ हृदय दिल।

अर्प्य (सं• त्रि•) ऋ णिच्-पुक् यत्। १ स्थाप्य होनेमें काबिल। २ निक्षेपणीय लगानेके लायक।

अर्बदर्ब (हिं• पु•) द्रव्य सम्पत्ति, दौलत माल टाल।

अर्बुद (सं• क्ली•) अर्ब हिंस् तम्मे अर्दति उद्-रच्-ङ। दश कोटि संख्या १०,०००००००

"विंशतिर्विंशतं शतं दशशतं सहस्रं, सहस्रादयुतं नियुतं प्रयुतं ततदम्बमर्बुदो मेघो भवत्यरणमम्बु तद्द्वोऽम्बु वदोऽम्बु मदमातीति वाम्बु-मद्भवतीति वा स यथा महान् बहुर्भवति वर्षस्तदिवार्बुदम्"। (निरुक्त नैघण्टुककाण्ड ३।२।४)

इसकी टीकामें इस तरह लिखा गया है,—

'अरणशीलम् 'अम्बु' तस्य दाता मेघः, स 'अम्बुद' तस्य, 'स यथा' उदकमात्रमाप्यमानः 'महान् बहुर्भवति वर्षं न् तदिवार्बुदम्', तदिव वर्षं न् वद बहुद्रव्यमात्र भवति, तदर्बुदमित्युच्यते।' (देवराज)

अम्बुनि ददाति अम्बु-दा-क, मकारस्य रेफः। २ मेघ। ३ पर्व्वत विशेष। आबू देखो। ४ असुर विशेष। (पु०) ५ कद्रुका सन्तान सर्पविशेष। ६ रोगभेद। ऊपरी चमड़ेके नीचे मांस, नस, नाड़ी एवं हड्डी आदि नाना स्थानोंमें जो गूमड़े निकल आते और स्वतन्त्र भावसे बढ़ते रहते उनको अर्बुद (tumor) कहते हैं।

यह रोग अनेक प्रकारका होता है। उसमें एक सामान्य अर्बुद है। सामान्य अर्बुद रोगमें प्राण नष्ट नहीं होता। फिर कोई सांघातिक भी है। जैसे कर्कट प्रभृति रोग। रक्तमें कोई विशेष दोष लगनेसे इस जातिका गूमड़ा निकलता है। देहमें कर्कट आदि जातिके गूमड़े निकलनेपर प्राण रक्षाका कोई उपाय नहीं। इसके अतिरिक्त दूसरे प्रकारका भी गूमड़ा होता है। पहले उत्कट नहीं मालूम पड़ता, परन्तु अन्तमें सांघातिक ठहरता है।

अचराचर गूमड़ेकेके भीतर एक गोलाकार कोष रहता, जिसे काट डालनेपर अन्दरसे कुछ रस निकलता है। किसी किसी जगह बाल, दांत, हाड़, रक्त, मेद और एक प्रकारका काला गलित पदार्थ भी निकल आता है।

वक्षस्थल, मूत्राशय, मस्तिष्क, कान, नाक, यकृत, जिह्वा, अण्डाधार, योनि एवं जरायु प्रभृति शरीरके नाना स्थानोंमें अर्बुद उठता है।

उपदंश रोगकी शेष-अवस्था अथवा कौलिक उपदंश रोगमें हाड़पर गूमड़ा पड़ता है। दांतकी जड़का हाड भी कभी कभी बढ़ जाता और उसमें एक प्रकारका स्राव निकल आता है। अंगरेजीमें इसे एपिउलिस कहते हैं। विना हाड निकाले ऐसा गूमड़ा दूर नहीं होता। परन्तु यह चिकित्सा अतिशय उत्कट है। बड़ी बड़ी धमनियोंमेंसे भी गूमड़ा फूटता है। अंगरेजीमें इसे एनुरिज़म् कहते हैं। यह रोग बहुत कठिन है। पुरुषके अण्ड-कोषमें जो गूमड़ा निकलता है, उसे हम लोग जल दोष वा कोषवृद्धि कहते हैं। किसी किसी किस्मका गूमड़ा पहले एक जगह उठता है, फिर धीरे धीरे दूसरी जगह खिसक जाता है। ज़हरीला गूमड़ा अस्त्रसे काट देनेपर बार बार उसी जगह अथवा शरीरके किसी दूसरे स्थानमें फूट पड़ता है। वह फिर अस्त्रसे काट न दिया जानेपर क्रमशः गलकर रोगीका प्राण ले लेता है।

सामान्य गूमड़ा निकलनेपर भी अस्त्र चिकित्सा भिन्न प्रायः दूसरे कोई प्रतीकार नहीं। गूमड़ा फूटने-पर सुचिकित्सकका परामर्श लेना उचित है। अव्य-वसायी गूमड़ेपर अनेक प्रकारकी दवा लगाकर ज़ख़म बना डालता, परन्तु स्थलविशेषमें उससे विपद पड़ सकती है।

६ मस्सा भी एक प्रकारका अर्बुद रोग है। किसी किसीके सारे शरीरमें फुलौरी जैसा बड़ा बड़ा काला मस्सा निकलता है। किसी किसी मनुष्यकी पीठका ऊपरी भाग काला पड़ता, उस लखेरीपर कीड़ेके छत्ते जैसा ऊंचा नीचा और कहीं कहीं फुलौरीके माफिक मस्सा उतरता है। इसे पेशिक अर्बुद कहते हैं। किसी किसी मनुष्यके कपाल एवं शरीरके अन्यान्य स्थानमें पर्त पर्त पर एपिथिलियम् जमकर भेड़के छोटे सींग-जैसा अर्बुद उठता है।

अर्बुदाकार (सं० पु०) बहुवार वृक्ष, चालतेका पेड़।

अर्बुदाद्रिज (सं० पु०) मेषशृङ्गी, मेढ़ासींगी।

अर्बुदि (सं० पु०) अर्बुद इवाचरति, अर्बुद-क्विप्-इन्। १ सर्वव्यापक ईशान। २ असुर विशेष। यह आकारमें सांप-जैसा रहा। इन्द्रने इसे मार डाला था।

अर्बुदिन् (सं० त्रि०) अर्बुदग्रस्त, जो सूज गया हो।

अर्बूर (सं० क्ली०) १ आहुल्या नामक्षुप, तगरका पेड़।

अर्भ (सं० पु०) ऋच्छति गच्छति स्वल्पं प्राप्नोति

मूर्ख वा, ऋ-अन्। १ बालक, बच्चा। २ छाग। ३ पयःपान शिशु, पन्द्रह दिनका बच्चा। (त्रि०) ४ अल्प, थोड़ा, कम।

अर्भक (सं० पु०) ऋच्छति वर्धते ऋधु वुन् भकार यागमादेश। "अर्भकस्य [illegible]" ऋक् १।११। १ बालक, बच्चा।

"अर्भकको [illegible]" (तुलसी)

२ मूर्ख, विक्षिप्त, बेवकूफ़, दीवाना। (त्रि०) ३ सूक्ष्म बारीक। ४ कृश, कमज़ोर। ५ सदृश, बराबर।

अर्भट—कोई प्राचीन संस्कृत कवि। सुभाषितावलीमें इनका उल्लेख है।

अर्भग (वै० त्रि०) अर्भं अल्प गायति, गैबाहुल्ये डक्। बालक बच्चा।

अर्भा (सं० स्त्री०) गुग्गुल।

अर्माबी—बम्बई प्रान्तके बेलगांव ज़िलेका एक छोटा गांव। यह गोकाकसे उत्तर दो कोस रायबागको सड़कपर बसा है। कहते हैं सन् १८८१ ई०के समय यहां एक सुन्दर भवन बना, जिसके चारो ओर आमका बाग़ लगा था। बसान मूरने मनु-तरायोंको बड़ी तारीफ़ की है।

अर्म (सं० पु०-क्ली०) ऋच्छति ऋधु मन् वा मन्। "[illegible]" ऋक् १।१३०। १ नेत्ररोगविशेष।

अर्मरोग (Pterygium) पांच प्रकारका होता है। यथा,—प्रस्तारी अर्म, शुक्ल अर्म, रक्त अर्म, अधिमांस अर्म एवं स्नायु अर्म।

आंखकी सफ़ेद जगह पर एक तरहका पतला चमड़ा चढ़ जाता है। साधारण बोलचालमें इसे नाख़ुना कहते हैं। यह चमड़ा नाकके निकटवर्ती अश्रुकोषसे लेकर आधा अब जगह निकलता देखा जाता है। अंग्रेज़ीमतमें ऐसी जैसे पतले नाख़ुनको प्रस्तारी अर्म (membranous) कहते हैं। परन्तु यही नाख़ुना मोटा हो जानेपर मांस अर्म (fleshy) कहाता है। ऊपर लिखे अनुसार वैद्योंने इसे पांच प्रकारमें विभक्त किया है।

१। नाख़ुना यदि पतला, फैला हुआ, उसका नीला और कुछ लाली लिये होता, तो उसे प्रस्तार्यर्म कहते हैं।

२। नाख़ुना यदि कुछ सफ़ेद और कोमल रहता, तो वह शुक्लार्म कहा जाता है।

३। नाख़ुना यदि कमलके फूलकी पखड़ी तरह कुछ लाल और कोमल होता, तो उसका नाम रक्तार्म है।

४। खूब कोमल, पतले तथा यकृत्की तरह अर्मयुक्त नाख़ूनको मांसार्म कहते हैं।

५। कठिन, शुक्लवर्ण, बहुमांसयुक्त एवं प्रस्तारी अर्मसे उत्पन्न नाख़ूनका नाम स्नायु अर्म है।

इस रोगपर वैद्य लोग आंखमें लगानेके लिये चन्द्रप्रभावर्ती, नयनसुखावर्ती आदि औषधकी व्यवस्था करते एवं छिन्नकाहृत आनेको देते हैं।

अंग्रेज़ीमतसे प्रथमावस्थापर नेत्रमें लगानेके लिये सहोषध औषध उत्तम है। ५ बूंद टिंक्चर आयोडिन और ४ ड्राम गुलाब जल एक साथ मिलाकर आंखमें डालनेसे बहुत लाभ होता है। मांस बढ़कर आंखकी पुतली पर आनेकी सम्भावना होनेसे नश्तर देकर उसे निकाल डालना पड़ता है।

(क्ली०) २ बहुवाचके ग्राम एवं नगरादि।

अर्मक (सं० त्रि०) १ महीन, सूक्ष्म, तंग पतला। (क्ली०) २ महीनता, तंगी।

अर्मगांव—मन्द्राज प्रान्तके नेल्लूर ज़िलेका टीबू और चिरागघर। (Light House) यह अक्षा० १३° ५९´ उ० और द्राघि० ८०° १०´ पू० पर अवस्थित है। चिरागघरसे पूर्व उत्तर कम चिह्नके ७१ फीट ऊपर टीबू पड़ता, जो पांच छः कोससे देखनेमें आता है। सन् १६२८ ई०को कोरोमण्डल सागरतट पर पहली अंग्रेज़ी बस्ती पड़नेमें अर्मगाम मूदलयारने बड़ा साहाय्य दिया था उन्हींके नामपर यह स्थान अभिहित किया गया।

अर्मण (सं० पु०) ऋ बाहु० मन्। १ द्रोण परिमाण, ३२ सेर। २ कूटजावलेह। यह [illegible] भारको मानता है। ([illegible])

अर्वाक् (वै० अव्य०) समीप, पास।

अर्वाक्काल (सं० पु०) अर्वाक् अवरः कालः कर्मधा०। १ अवरकाल, पश्चात् काल, पिछला वक्त। (त्रि०) २ पश्चात्कालजात, पीछे पैदा हुआ।

अर्वाक्कालिक (सं० त्रि०) आधुनिक काल सम्बन्धीय, नव, हालके जमानेसे ताल्लुक रखनेवाला, नया।

अर्वाक्कालिकता (सं० स्त्री०) नवीनता, नयापन, नयेकी ताशीर।

अर्वाक्कूल (सं० क्ली०) नदीका आसन्न तट, दरियाका नज़दीक किनारा।

अर्वाक्सामन् (वै० पु०) सोमयाग करनेका तीन दिन।

अर्वाक्स्रोतस् (सं० पु०) अर्वाक् अधोगामिस्रोतो रेतः आवो यस्य, बहुव्री०। १ ऊर्ध्वरेता न होनेवाला व्यक्ति, जिसका वीर्य निकल पड़े। अर्वाक् निम्नगामी स्रोतः प्रवाहो यस्य। २ नद, दरया। (त्रि०) अर्वाक् अधोगामिस्रोतो रेत आवो येन। ३ नीचेकी ओर वीर्य छोड़नेवाला। यह शब्द सिद्ध एवं योगिका विशेषण होता है।

अर्वाग्बिल (वै० पु०) अर्वाग्बिलो यस्य बहुव्री०। १ चमस। २ यज्ञका पात्रविशेष। (त्रि०) ३ निम्नाभिमुख, जिसके नीचेकी ओर मुंह रहे।

अर्वाग्वसु (वै० पु०) अर्वाक् सम्मुखे वसु धनरूपं धनं यस्य, बहुव्री०। १ मेघ बादल। (त्रि०) २ धन प्रदान करनेवाला जो दौलत दे रहा हो।

अर्वाच् (सं० त्रि०) अर्वेन अवमं अञ्चति प्राप्नोति, अर्वन्-अञ्च क्विन् अस्ताति, तस्य लुक्। १ पश्चात् कालवर्ती, पिछले वक्तवाला। २ आधुनिक नूतन, नया। ३ अज्ञ, नादान। (अव्य०) अर्वाग्देशे देशात् देशो अर्वाक् काले कालात् कालो वा, अस्तातिः तस्य लुक्। ४ पश्चाद् देशमें, पिछले मुल्कमें। ५ पश्चात् कालमें पिछले वक्त। ६ मध्यमें, बीचमें। (स्त्री०) ङीप्। अर्वाची।

अर्वाचीन (सं० त्रि०) अर्वाग्भवति, ख। १ पश्चात् काल जात, जो पिछले वक्त पैदा हो। २ आधुनिक, नूतन नया। ३ अज्ञ, नादान। (अव्य०) ४ इस पार्श्वमें, इस ओर। ५ यहांसे, पासे।

अर्वाचीनता (सं० स्त्री०) नूतनत्व, नयापन।

अर्वाचीनत्व (सं० क्ली०) अर्वाचीनता देखो।

अर्वावत् (वै० त्रि०) अर्वा अधम उत्तर इति यावत् कालः अस्त्यस्य अन्यकालत्वेन अर्वन्-मतुप्, मस्य व न लोप पू० दीर्घश्च। १ अर्वाचीन, नया। (स्त्री०) २ अर्वाचीनता, नयापन।

अर्वावसु (वै० पु०) अर्वा अश्वया अर्वा वा क्रियमाणोऽस्मिन्यज्ञादिरस्मिन् वा सम्यम्रूपेण वसति, अर्वन्-वस क। १ देवताका होतृविशेष। २ होमकर्ता।

अर्वी—१ मध्यप्रदेशके वर्धा जिलेकी तहसील। यह अक्षा० २०° ४५′ एवं २१° १′ १५′ उ० और द्राघि० ७८° १०′ १०″ तथा ७८° ४०′ पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ८०० वर्गमील निकलेगा। २ मध्यप्रदेशके वर्धा जिलेका नगर। यह अक्षा० २०° ५८′ ४५″ उ० तथा द्राघि० ७८° १६′ १६″ पू०पर अवस्थित और वर्धा नगरसे उत्तर-पश्चिम सत्रह कोस दूर है। महाराष्ट्र शासन समयमें यहां अर्वी परगनेके हाकिमने अपनी कचहरी बनायी। कहते हैं सवा तीन सौ वर्ष पहले नेकड़ू शाह वालीने यह नगर बसाया था। नेकड़ूशाहको कोई हिन्दू और कोई मुसलमान बताते हैं। किन्तु उनकी कब्रको हिन्दू और मुसलमान दोनों ही पूजते हैं। व्यापारका काम धूमधड़ाका देख पड़ता है।

अर्बुक (सं० पु०) अर्वति हिनस्ति शत्रून्, अर्व हिंसने बाहु० उकञ्। प्राचीन दक्षिण देशस्थ नृपविशेष। सहदेवने दिग्विजयको जा इन्हें जीत लिया था।

अर्श (सं० त्रि०) अर्शति गच्छति प्राय सौख्यम्, अश-अच्। १ अश्लील, कुरूप। २ पापिष्ठ, गुनहगार। (क्ली०) ३ हानि, नुकसान। ४ अर्शोरोग, बवासीरकी बीमारी।

(अ० पु०) ५ आकाश, आसमान। ६ अर्श, तखत।

अर्शःकुठाररस (सं० पु०) रसभेद। यह रस अर्श यानी बवासीर रोगमें हितकर है। इसके बनानेको

रीति यह है—शुद्ध पारा १ पल, शुद्ध गन्धक २ पल, मृत ताम्र, मृतलौह प्रत्येक ३ पल, त्रिकटु, (सोंठ, मिर्च, पीपल) लाङ्गली, दन्ती, चित्रक, पुष्कर, प्रत्येक २ पल, यवक्षार, टङ्कण, सैन्धव, प्रत्येक ५ पल, गौका मूत्र ३२ पल, थूहरका दूध ११ पल, इन सब द्रव्योंको एकत्र करके मृदु-अग्निसे जब तक पिण्ड न हो पकाना चाहिये। मात्रामें दो माष दिया जाता है। (भैषज्यरत्नाव)

दूसरा—शुद्धपारा १ पल, शुद्ध गन्धक २ पल, मृतलौह २ पल, मृत ताम्र २ पल, दन्ती, त्रूषण (सोंठ, मिर्च-पीपल) शूरण, वंशलोचन, टङ्कण, यवक्षार, सैन्धव, प्रत्येक ५ पल, थूहरका दूध ८ पल, गोमूत्र ३२ पल, इन सब द्रव्योंको पूर्ववत् पाक करके दो माष बराबर प्रति दिन सेवन करना चाहिये। (रसेन्द्रसारसं ग्रह)

अर्शःसूदन (सं॰ पु॰) सूरण, जमींकन्द।

अर्शआदि (सं॰ पु॰) अर्शस् इति शब्द आदिर्येषाम्, बहुव्री॰। अर्श आदिभ्योऽच्। पा ५।२।१२७ अस्त्यर्थके अच् प्रत्यय निमित्त शब्दसमूह। इसमें निम्नलिखित शब्द सम्मिलित हैं,—अर्शस्, उरस्, तुन्द, चतुर, पलित, जटा, घाटा, अघ, कर्दम, अम्ल, लवण, स्वीय, अङ्गाङ्गी, भाव, वर्ण, आकृतिगण।

अर्शोघाय (सं॰ पु॰) अर्शः गुदव्याधिः आयो येषाम्, बहुव्री॰। अतिपापोद्भव रोग समूह, बड़े पापसे पैदा होनेवाली बवासीर वग़ैरहकी बीमारी।

अर्शस, अर्शस् (सं क्लो॰) ऋच्छति प्राप्नोति गुदम् ऋ अर्तेरुट् च। उण् ४।१९१। इत्यसुन् शुट् च सुट् इत्यादिरित्यर्थः। गुह्यरोगविशेष। अर्श रोगके प्रायश्चित्तमें ३८४०० कौड़ी किम्वा उनके दाम बराबर चांदी या सोना दान करना पड़ता है।

अर्शरोग (Hæmorhoids) सरलान्त्रसे नीचे मलद्वारके बाहर और भीतर भी होता है। इसमें मेंड़के स्तन जैसी छोटी छोटी कलियां निकलती हैं। इन कलियोंको चलती बोलीमें मस्सा कहते हैं। किसीके यह मस्सा मलद्वारसे बाहर, किसीके भीतर तथा किसीके बाहर और भीतर दोनों जगह निकलता है। बीच बीचमें अर्शसे अल्प वा अधिक रुधिर गिरा करता है। कभी कभी जलन होनेसे मस्सा खूब फूलता और उससे दूषित रस तथा पीव पड़ता है। उस समय रोग कठिन हो जाता है।

बालककाल वा यौवनावस्थामें यह रोग प्रायः किसीको नहीं होता। यौवनकाल बीत जानेपर ही अर्शोरोग पैदा होता है। पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंको यह रोग अधिक सताता है। स्वभावतः जिसका कोठा साफ़ नहीं रहता और जो शारीरिक परिश्रम नहीं करता, उसीके अर्शोरोग होनेकी अधिक सम्भावना है। फिर माता पिताके रहनेसे सन्तानको भी लग सकता है। अतिविरेचक औषध सेवन करने, नाना प्रकारका मसाला देकर मत्स्य, मांस, व्यञ्जन आदि खाने और सर्वदा शौकमें रहनेसे अर्शोरोग होता है। जिन रोगोंमें यकृत्की क्रिया शिथिल पड़ जाती, अथवा मलद्वारसे सुचारुरूप रक्त सञ्चालित नहीं होता, उनमें यह रोग लगनेकी आशङ्का है। पेटमें आंव पड़ने और गर्भावस्था आनेसे किसी किसी स्त्रीके अर्श हो जाता है।

असलमें अर्श कोई स्वतन्त्र नहीं, दूसरे रोगका उपसर्ग मात्र है। सुतरां इसका मूल कारण दूर करना ही चिकित्साका प्रधान उद्देश्य है। जो लोग स्वभावसे ही आलसी हैं, उन्हें प्रातः काल एवं सन्ध्या समय निर्मल वायुमें बहुत देरतक टहलना चाहिये। उपयुक्त व्यायाम भी इस रोगके लिये बहुत ही अच्छा है। कितने ही भले आदमी घरके भीतर कन्धेपर बोझ ढोया करते हैं। ऐसा प्रवाद है, कि बहंगीपर बोझ ढोनेसे अत्यन्त कठिन अर्श रोग भी अच्छा हो जाता है। विश्वास आता, कि व्यायामादिसे यह उद्देश्य सिद्ध हो सकता है। उससे यकृत् और अन्त्रका रक्ताधिक्य मिटता, उत्तमरूपसे रक्त सञ्चालित होता रहता, मूत्राशयकी उग्रता कम पड़ जाती और परिपाक शक्ति बढ़ती है, सुतरां अर्श रोगका मूल कारण फिर नहीं रह सकता।

और एक बात पर ध्यान रखना आवश्यक है।

ऐसा उपाय करना चाहिये जिससे हर रोज मलका कोठा साफ हो जाया करे। मलत्याग करनेके समय जोर देकर न कांखना और सुपथ्य द्वारा रोगीको कोठा साफ रखना चाहिये। बारबार जुलाब लेनेसे आंत तेजहीन हो जाती है। हिन्दुस्तानमें खूब पका हुआ नारियल, पपीता पालक साग, मूंगकी दाल, आम एवं दूध आदि सुपथ्य खानेसे हर रोज कोठा साफ हो सकता है। विशेष आवश्यक होनेसे बीच बीचमें रेंड़ीका जुलाब ले लेना चाहिये। वैद्य शास्त्रके मतसे जमीकन्दसे अर्श रोग दूर हो जाता है।

अथर्वीत ओषधमें जाती हुयियाके मूल अथवा अमोला की जड़को ताबेके यन्त्रमें रख कर कमरसे बांध देनेपर कितनों ही का अर्श रोग अच्छा होता देखा गया है। थूहरके दूध साथ थोड़ीसी हल्दी मिलाकर लगानेसे अथवा कोपातकीका चूर्ण मलनेसे मस्सा गिर जाता है। घोड़ेका दूध सूअरका दूध, कड़वी कद्दूका पत्ता, अनिष्ट करेंदेका पत्ता, सब बराबर बराबर ले बकरीके मूत्र साथ पीसकर मस्सेपर लेप चढ़ानेसे उपकार होता है। परन्तु जब किसी तरहके उपायसे फायदा न हो, तब अच्छे डाक्टरसे मस्सेको कटवा डालना चाहिये।

अर्शस (सं त्रि) अर्शो गुदव्याधिरस्त्यस्य, अर्शस अस्त्यर्थे अच्। अर्शोरोगयुक्त, जिसे बवासीरकी बीमारी रहे। 'अर्शोरोगयुतोऽर्शसः।' (अमर) अर्शरोग होनेपर जो व्यक्ति प्रायश्चित्त करनेसे दूर रहता है, उसे किसी वैद्य कर्म कार्यका अधिकार नहीं होता।

अर्शसान (वै० पु०) अश्नाति भायविता मश्नाति, अश-असानच् गुक् अट् च। १ अग्नि, आतिश। 'अर्शसानोऽग्निः' (उज्ज्वल) २ सन्देह नामक असुर। (त्रि०) ३ घातक, हिंसक, चोट पहुंचानेकी कोशिश करनेवाला।

अर्शिन् (सं० त्रि०) अर्श अस्त्यस्य इनि। अर्शस देखो।

अर्शी, अर्शस देखो।

अर्शेद बेग—टीपू सुलतानके आदी हाकिम। सन् १७८४ ई०को इन्होंने मन्द्राजके मलबार प्रान्तमें रैयतवारी नियम चलाया, जिसपर काश्तकारको अपनी पैदायशका आधेसे कुछ ज्यादा हिस्सा सर-कारको देना पड़ता था।

अर्शोघ्न (सं० पु०) अर्शो गुदव्याधिं हन्ति अर्शस-हन्-क, उप० समा०। १ शूरण जमीकन्द। २ भल्लातक, भिलावां। ३ सर्जिक्षार, सज्जी मट्टी। ४ तेजपत्र। ५ श्वेतसर्षप, सफेद सरसों। ६ कटु शूरण कड़वा जमीकन्द। ७ तक्र विशेष, किसी किस्मका मठा। इसमें तीन हिस्से पानी और एक हिस्से मठा रहता है। (त्रि०) ८ अर्शोरोगहर, बवासीर मिटानेवाला।

अर्शोघ्नवर्ग (सं० पु०) वर्ग विशेष, दवाका कोई मजमूआ। इसमें निम्नलिखित द्रव्य रहते हैं,—कुटज, बिल्व नागर अतिविषा, अभयासव, दारुहरिद्रा वचा और चव्य। यह वर्ग बवासीरको दूर करता है।

अर्शोघ्निकल्लता (सं० स्त्री०) शैलवल्क।

अर्शोघ्नी (सं० स्त्री०) १ तालमूली, काली मूसर। २ भल्लातक भिलावां।

'अर्शोघ्नी तालमूल्यां भल्लातक्यामपीष्यते च। (मेदि)

अर्शोज (सं० पु०) भगन्दर रोग।

अर्शोयन्त्र (सं० क्ली०) यन्त्रविशेष, कोई आला। यह गोस्तनाकार होता और अर्शोरोग देखनेके काम आता है।

अर्शोयुक्त, अर्शस देखो।

अर्शोरोग (सं पु०) अर्शस् देखो।

अर्शोरोगयुत, अर्शस देखो।

अर्शोवर्त्मन् (सं० क्ली०) नेत्रवर्त्मगत रोग विशेष, आंखकी पलकका कोई रोग। इसमें आंखको पलक पर ककड़ीके बीज जैसे कुछ कुछ दर्द करनेवाली, चिकनी और नम फुन्सी पड़ जाती है। यह रोग सन्निपातसे उत्पन्न होता है। (माधव निदान)

अर्शोहररस (सं० पु) रसविशेष। यह बवासीरको दबा देता है। गन्धक, ताम्रभस्म एवं गन्धकको बराबर ले और ताजे अनारके अर्कमें घोट वटी तैयार करते हैं। एक माशा खानेसे अर्शोरोग दूर होगा। रत्नाकर)

अर्शोहित (सं॰ पु॰) अर्शसि तद्रोगे हितः तन्नाशकत्वात्, ७-तत्। १ भल्लातक, भेलावां। २ सूरण, जमींकन्द। (त्रि॰) ३ अर्शोहितकर, ववासीरमें फ़ायदा पहुंचानेवाला। अर्शसि अहितम्, ७ तत्। ४ अर्शोरोग वढ़ानेवाला, जिससे ववासीरकी वोमारी बढ़े।

अर्षण (सं॰ क्लो॰) ऋष गतौ भावे ल्युट्। १ गमन, रफ़्तार। ऋष्यतेऽनेन, करणे ल्युट्। २ गमनसाधन शकटादि, गाड़ी वग़ैरह सवारी। (त्रि॰) ३ गमनशील, चलने फिरनेवाला।

अर्षणी (वै॰ स्त्री॰) भीषण पीड़ा, गहरा दर्द।

अर्सस्, अर्शस देखो।

अर्सा, अरसा देखो।

अर्सी, अलसी देखो।

अर्सीकीर—महिसुर राज्यके हसन ज़िलेका गांव। यह अक्षा॰ १३° १८´ ३८´´ उ॰ और द्राघि॰ ७६° १७´ ४१´´ पूर्व पर अवस्थित है। यहां पाषाण-लेखसे अङ्कित मन्दिर बने, जिनमें चालुक्य-शिल्पके चिह्न वर्तमान हैं। होयसल वल्लाल नृपतियोंके भी कितने ही स्मारक देख पड़ते।

अर्ह (सं॰ पु॰) अर्ह्यते पूज्यते; अर्ह चुरा॰ कर्मणि घञ्। १ स्तुति एवं नमस्कार प्रभृति द्वारा आराधनीय ईश्वर। २ विष्णु। ३ इन्द्र। ४ पूजा, परस्तिश। ५ गति, चाल। ६ योग्यत्व, क़ाविलियत। ७ मूल्य, दाम। ८ सुवर्ण, सोना। (त्रि॰) ९ पूजनीय, परस्तिश पाने लायक़। १० योग्य, क़ाविल। ११ मूल्यवान्, क़ीमती।

अर्हण (सं॰ क्लो॰) अर्ह भावे ल्युट्। १ पूजा, परस्तिश। अर्ह्यतेऽनेन, करणे ल्युट्। २ सम्मान साधन द्रव्य, इज़्ज़त वनानेका सामान।

अर्हणा (सं॰ स्त्री॰) १ पूजा, परस्तिश। 'पूजानमस्यापचितिः सपर्य्यार्चार्हणाः समाः।' (अमर) (सं॰ अव्य॰) २ योग्यताके अनुसार, ठीक-ठीक। ३ साधनके अनुसार, हैसियतके मुवाफ़िक़।

अर्हणीय (सं॰ त्रि॰) अर्ह्यते, अर्ह कर्मणि अनीयर्। १ पूजनीय, परस्तिशके क़ाविल। अर्ह्यतेऽनेन, करणे अनीयर् अर्हणे साधु छ वा। २ पूजासाधन, जिससे किसीकी परस्तिश करें।

अर्हत् (सं॰ त्रि॰) अर्ह प्रशंसायां शतृ। १ पूज्य, पूजने लायक़। २ योग्य, क़ाविल। ३ प्रशंसित, मशहूर। (पु॰) ४ जिनदेव, जैनियोंके देवता।

जैनमतसे—जीवको इस संसारमें दुःख देनेवाले ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय, अन्तराय, वेदनीय, आयु, नाम, गोत्र ये आठकर्म हैं। इनमेंसे पहिले चार कर्मोंको घातिया (आत्माके अनन्तज्ञान, सर्वज्ञत्व, अनन्तदर्शन, अनन्तसुख, अनन्तवीर्यको आछ्त करनेवाले) और शेष चारको अघातिया कर्म कहते हैं। तपके प्रभावसे जिस समय यह आत्मा घातिया कर्मोंको नष्ट कर देता, उस समय इसके पूर्वोक्त चारो गुणोंका आविर्भाव होता है। उससे वर्तमान, भूत, भविष्यत् कालके सम्पूर्ण पदार्थोंको आत्मा युगपत् जानता और रागद्वेषविहीन (वीतराग) हो जाता है। ऐसे आत्माको अर्हत् (अर्हन्त) केवली, सर्वज्ञ, वीतराग आदि नामोंसे पुकारते हैं। अर्हत् (केवली) दो प्रकारके होते हैं—एक सामान्य, दूसरे तीर्थङ्कर। तीर्थङ्कर केवलियोंके केवलज्ञान होनेसे पहिले गर्भ, जन्म, और तपके समय देवता स्वर्गसे आकर उत्सव किया करते है। फिर सामान्य केवलियोंके केवलज्ञान होते समय ही देवता उत्सव करते है। जिस समय केवलज्ञान होता है, उस समय कुवेर इन्द्रकी आज्ञासे समवशरण (धर्मसभा) की रचना वनाते हैं। उसमें १२ श्रेणी (दर्जा) होती, जिनमेंसे एकमें मुनि, एकमें आर्यिका, एकमें श्राविका, एकमें श्रावक, एकमें पशुपक्षी, ४में चारो तरहके (भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी, वैमानिक) देव, और चारमें चारो प्रकारकी देवाङ्गनायें वैठकर भगवान्का पवित्र उपदेश सुनती हैं। भगवान्के विराजनेका एक ख़ास स्थान होता, जिसे गन्धकुटी कहते हैं। कुवेर रत्नमय सिंहासनपर सुवर्णके कमल रचता है, भगवान् उसपर भी चार अङ्गुल अन्तरिक्ष विराजते हैं। देव उनपर चंवर ढुरते हैं, कल्पवृक्षोंके फूलोंकी वर्षा होती है। देवोंद्वारा वजाये गये दुन्दुभि वाजोंके

शब्दोंसे आकाश पूर्ण हो जाता है। उस समय भगवान्‌के शरीरका तेज एकसाथ उगे हुए अनेक सूर्यों के तेजसे भी अधिक चमकता है। उनके बैठे समयकी विभूति दर्शनीय और अति विचित्र है। भगवान्‌के प्रभावसे चारो तरफ सौ सौ योजन (चार सौ कोस) तक दुर्भिक्ष नहीं पड़ता, परस्पर विरोधी जीव किसीको किसी प्रकार कष्ट नहीं पहुंचाते, भगवान् पर किसी तरहका उपसर्ग नहीं उठता, उनको क्षुधा तृषा नहीं लगती, उनके शरीरकी परछाईं नहीं पड़ती आंखोंके पलक नहीं लगते, केश और नख नहीं बढ़ते। उनका शरीर स्फटिकसा निर्मल रहता है। घातिया कर्मों के नाश होनेसे भगवान्‌के ये अतिशय प्रकट होते हैं भगवान्‌का उपदेश अर्ध-मागधी भाषामें होता है जिसे सब अपनी अपनी भाषामें समझ लेते हैं। समवसरणमें कुत्ता, बिल्ली, सिंह, गाय सांप, नेवला आदि परस्पर विरोधी जीव भी रहते हैं, परन्तु उन सबमें बड़ा प्रेम होता है, कोई किसीको कष्ट नहीं देता। भगवान् जहां जहां विहार करते, वहां वहां सब ऋतुओंके फल फूल लग जाते हैं। कांचके समान पृथिवी निर्मल देखती है। वायुकुमार देव यह एक योजन (चार कोस) भूमिको साफ करते हैं। मेघकुमार देव शीतल, मन्द, सुगन्धित जल बरसाते हैं। स्वर्गके देव भगवान्‌के चरणोंके नीचे सुवर्णके कमलोंको रखते जाते हैं, सब दिशायें स्वच्छ हो जाती हैं। देवतालोग भगवान्‌का जयकार बोलते हैं, धर्मचक्र भगवान्‌के आगे चलता है। यह चौदह देवकृत अतिशय भगवान्‌को केवलज्ञान उत्पन्न होनेसे बनते हैं। भगवान् भूख प्यास, राग, द्वेष, जन्म, जरा, मरण, रोग शोक भय आश्चर्य, निद्रा थकावट, पसीना, घमण्ड, मोह, अरति (अरुचि) और चिन्ता इन अठारह दोषोंसे रहित और क्षायिकसम्यक्त्व, क्षायिकचरित्र, केवलज्ञान, केवल दर्शन अनन्त दान, अनन्तलाभ, अनन्तभोग अनन्त उपभोग, और अनन्तवीर्यसे शोभायमान होते हैं। इसका पर्याय नीचे लिखते हैं—अर्हत्, जिन, पारगत, त्रिकालवित्, क्षीणाष्टकर्मा, परमेष्ठी, अधीश्वर, शम्भु, स्वयम्भू, भगवान्, जगत्प्रभु, तीर्थंकर, तीर्थकर, जिनेश्वर, स्याद्वादी, अभयद, सार्व, सर्वज्ञ सर्वदर्शी केवली, देवाधिदेव, बोधद, पुरुषोत्तम, वीतराग।

४ बुद्धविशेष। ५ बौद्धोंके सबसे बड़े पुरोहित।

अर्हत् आचार—काठियावाड़के वलभी या वालोद नगरनिवासी प्राचीन महापुरुष। सन ६१० ई०को इन्होंने वालोद नगरसे थोड़ी दूर बौद्धविहार बनाया था, जिसमें बोधिसत्त्व गुणमति और स्थिरमतिने अपने आश्रमके समय ठहर सुप्रशंसित निबन्ध लिखा।

अर्हत्तम (स० त्रि०) अतिशय योग्य, सर्वोत्तम, अति पूजनीय, निहायत क़ाबिल सबसे अच्छा।

अर्हन्त (स० पु०) अर्ह बाहु० झ। १ जैन देव, अर्हत्। २ बुद्धविशेष। ३ बौद्ध साधु। ४ शिव। (त्रि०) ५ योग्य लायक़।

अर्हरिष्वणि (वै० त्रि०) शत्रुको हरानेवाला, जो दुश्मनको दबा देता हो।

अर्हा (स० स्त्री) पुरा० अर्ह भ टाप् च। १ पूजा, परस्तिश। २ लायकाका भाव।

अर्हित (स० त्रि०) अर्ह क्त। पूजित, परस्तिश पाये हुआ।

अर्ह्य (स० त्रि०) अर्हति आदि अर्ह-यत् पुरा० अर्ह-ण्यत्। १ योग्य, क़ाबिल। २ पूज्य, इज्ज़तदार। ३ उचित, मुनासिब, वाजिब।

अल (स० स्त्री०) अलति भूषयति वारयति पर्याप्नोति वा, अल-अच्। १ वृश्चिकपुच्छकण्टक, बिच्छूकी पूंछका कांटा, डङ्क। २ हरिताल। ३ मनःशिलादि भूषण। ४ कहोल। ५ काक पुरुष।

अलक (हिं० पु०) पार्श्व, बगल।

अलक (स० पु० स्त्री०) अलति भूषयति मुखम् अल क्वुन्। १ काकुल, जुल्फ।

'अलक हरिल होते चीकनरतो।' (तुलसीदास)

२ चित्त भ्रान्त, पागल कुत्ता।

३ एक प्राचीन संस्कृत ग्रन्थकार। यह जयानकके पुत्र रहे। अलङ्कारसर्वस्वमें रत्नकण्ठने इनका उल्लेख किया है। इन्होंने काव्यप्रकाशको परिकर अध्यायसे

पतली डालियोंमें लाह लगती, पहले उन्हें पेड़से काट लेना पड़ता है। फिर डालियोंके जिन जिन अंगोंमें लाह रहती है, उन उन अंगोंको छोटे छोटे टुकड़े करके धूपमें सुखा लेनेसे कीड़े मर जाते हैं। इसे खोपड़ा लाह कहते हैं। फिर किसी बड़े बरतनमें इस लाहको भरकर पकानेसे लाल रङ्ग अलग निकल आता है। अन्तमें उन पतली पतली डालियोंको ऊपर रखनेसे सब लाह नीचे टपक पड़ती है। किसी किसी स्थलमें खोपड़ा लाहको पहले चूरकर पानीमें धो डालनेसे वर्णक द्रव्य निकल आता है। उसके बाद लाह टपका ली जाती है।

समस्त लाह और लाहके रङ्गको संस्कृत भाषामें अलक्त, लाक्षा, याव प्रभृति कहते हैं। लाहके रसको पहले आगपर चढ़ाकर कुछ गाढ़ा करना पड़ता है। कोई कोई उसमें थोड़ीसी फिटकिरी मिला देते हैं। फिर रुनकी गोली बनाकर उसपर उस रङ्गको ढाल देनेसे महावर तय्यार हो जाता है। यह महावर स्त्रियोंके लिये परम मङ्गलमयी सामग्री है। सधवा स्त्रियां शृङ्गार करनेके पहले पैरमें महावर दिलाती हैं। पहले इस देशके पुस्तक एवं मन्त्रादि महावरसे ही लिखे जाते थे। अब पहननेके यन्त्र आदि लिखनेमें महावर व्यवहार किया जाता है। लगानेके महावर भिन्न लाक्षारस वैद्यके तैल और औषधके अनुपानमें व्यवहृत होता है। इससे वस्त्र और चमड़ा भी रङ्गा जाता है। प्रति वर्ष कई हजार मन लाह इङ्गलैण्ड जाती है। वहां सैनिक विभागके वस्त्र रङ्गनेके काम आती है। अब क्रमिदानेका चलन हो जानेसे लाक्षारसका आदर दिन दिन कम होता जाता है।

लाक्षाका अपभ्रंश लाह है। संस्कृत भाषामें लाहके ये कई पर्याय पाये जाते हैं,—अलक्त, राक्षा, लाक्षा, जतु, याव, द्रुमामय, रक्षा, अरक्त, जतुक, यावक, अलक्तक, रक्त, पलङ्कषा, क्रमि, वरवर्णिनी।

महावर अर्थात् लाक्षारसके ये कई पर्याय देखे जाते हैं,—अलक्तक, जतुरस, राग, निर्भर्त्सन, जननी, जनकरी, सम्पद्या, शुक्रवर्तिनी।

वैद्यशास्त्रके मतसे लाक्षारस तिक्त एवं उष्ण है। इससे कफ, वायुरोग, रक्तवमन, व्रण, कण्ठरोग प्रभृति नष्ट हो जाते हैं।

अलक्तक (सं॰ पु॰) अलक्त स्वार्थे कन्। १ लाक्षा, लाख। यह तिक्त, उष्ण, रुक्ष एवं कफ, वात, आम और व्रण मिटानेवाला होता है। (राजनिघण्टु) यह वर्णकर, हिम, बल्य, स्निग्ध, लघु, तुवर तथा अनुष्ण रहता एवं कफ, पित्त, रक्त, हिक्का, काम, ज्वर, व्रण, उरक्षत, वीसर्प, कृमि, कुष्ठ और विशेषत: व्यङ्गको दूर करता है। (भावप्रकाश) यह रजोरोधी और रक्तपित्त, क्षय, प्रदर एवं सरक्त अतीसारका विघातक है। (चरकसंहिता) २ महावर। यह लाखसे बनता और सौभाग्यवती स्त्रीके पैरमें लगता है।

अलक्तकनगरी—बम्बई-प्रान्तके कनाड़ा जिलेका गांव। सन् ४८८-८९ ई॰को यह किसी जैन-मन्दिरकी जागीरमें लगा था।

अलक्तरस (सं॰ पु॰) लाखका रस, लाहका रंग।

अलक्षण (सं॰ क्ली॰) लक्ष्यते दृश्यते, चुरा॰ लक्ष-न अङागमश्च; न लक्षणम्, नञ्-तत्। १ अशुभ चिह्न, दुर्निमित्त, बुरे आसार। (वि॰) नास्ति लक्षणं सुचिह्नं यस्य, नञ्-बहुव्री॰। २ लक्षणशून्य, बेनिशान। ३ अशुभसूचक, बदशिगून, खराब।

अलक्षणीय, अलक्ष्य देखो।

अलक्षित (सं॰ वि॰) न लक्षितम्, नञ्-तत्। १ अज्ञात, जो देखा न गया हो। २ लक्षण द्वारा अननुमित, जिसे चिह्नसे पहचान न सकें। ३ अकृतचिह्न, बेनिशान।

अलक्षितान्तक (सं॰ त्रि॰) अकस्मात् मृत्युग्रास, जो अचानक मर गया हो।

अलक्षितोपस्थित (सं॰ वि॰) अज्ञातरूपसे उपस्थित होनेवाला, जो चुपके-चुपके आ पहुंचा हो।

अलक्ष्मी (सं॰ स्त्री॰) लक्ष्यते चुरा॰ लक्ष-लक्षे मुट् च। उण्। ३।१६०। इति ई मुट् च। ततो विरोधे नञ्-तत् लक्ष्मीके विरुद्ध, निर्ऋति। अलक्ष्मी शब्दके स्थानमें आलक्ष्मी शब्दका व्यवहार है।

अलक्ष्मी शब्दके ये कई पर्याय देखे जाते हैं,—नरकदेवता, कालकर्णी, कालकर्णिका, ज्येष्ठादेवी।

अलगनी (हिं॰ स्त्री) कपड़ा टांगनेकी डोरी।

अलगरज़ (अ॰ वि॰) निर्द्वन्द्व, वेपरवा, जिसे कोई फ़िक्र न रहे।

अलगरज़ी (अ॰ स्त्री॰) १ निर्द्वन्द्वता, वेपरवायी, वेखटके रहनेकी हालत। (वि॰) २ अलगरज़, वेपरवा।

अलगर्द (सं॰ पु॰) न लजते लज्जते क्वापि गमने; लज-क्विप्-लक्, ततो नञ् तत्—अलक्‌मेकस्तमर्दयति अर्दति वा, अलज्‌अर्द-अच्। सर्पविशेष, किसी क़िस्मका सांप।

अलगर्दा (सं॰ स्त्री॰) सविष जलौका, ज़हरीली जोंक।

अलगर्ध, अलगर्द देखो।

अलगाना (हिं॰ क्रि॰) अलग करना, जुदा रखना, साथमें न मिलाना, हटा देना।

अलगाव (हिं॰ पु॰) पृथक्त्व, जुदायी, फ़र्क़।

अलगावा, अलगाव देखो।

अलग़ोज़ा (अ॰ पु॰) वंशी विशेष, किसी क़िस्मकी छोटी बांसुरी।

अलग्न (सं॰ वि॰) लस्ज लज वा क्त, ततो नञ्-तत्। १ असंसृष्ट, जुदा। (क्ली॰) २ ज्योतिषोक्त पापग्रहयुक्त लग्न। ३ अप्रशस्त लग्न।

अलजल (सं॰ त्रि॰) असम्बन्ध सम्भाषण करते हुआ, जो वेसिर पैरकी वात उड़ा रहा हो। २ स्खलत्-वादी, साफ़ न बोलनेवाला, जो तोतला रहा हो।

अलघु (सं॰ त्रि॰) न लघुः, विरोधे नञ्-तत्। १ लघु न होनेवाला, गुरु, वज़नी, जो हलका न हो। "अलघुनि दव वर्षा प्रदमनस्यव।" (शुश्रुत) २ दीर्घ, लम्बा, जो छोटा न हो। ३ गौरवयुक्त, घमण्डी। ४ भीषण, ख़ौफ़नाक। (स्त्री॰) विकल्पे ङीप्। अलघ्वी, अलघु।

अलघुप्रतिज्ञ (सं॰ त्रि॰) गौरवयुक्त प्रतिज्ञा-सम्पन्न, जो सञ्जीदा तौरपर ठहराया गया हो।

अलघूपल (सं॰ पु॰) शिला, चट्टान, बड़ा पत्थर।

अलघूष्मन् (सं॰ पु॰) भीषण उष्णता, कड़ी गर्मी।

अलङ्करण (सं॰ क्ली॰) अलम्-कृ भावे-ल्युट्। १ भूषण, ज़ेवर, गहना। करणे ल्युट्। २ कङ्कणादि भूषण द्रव्य, जिस चीज़से गहना बने। ३ शृङ्गार, सजावट।

अलङ्करिष्णु (सं॰ त्रि॰) अलङ्कर्तुं शीलमस्य, अलम्-कृ-इष्णुच्। १ भूषणकारी, सजानेवाला। २ भूषणशील, ज़ेवरका शौक़ीन, जिसे साज-बाज अच्छा लगे। ३ अलङ्कारयुक्त, मण्डित, भूषित, ज़ेवर पहने हुआ, सजा-बजा। ४ परिष्कृत, साफ़, सुथरा। (पु॰) ५ शिव।

अलङ्कर्त्तृ (सं॰ त्रि॰) अलम्-कृ-तृच्। भूषणकर्ता, सजानेवाला, जो गहना पहनाता हो।

'अलङ्करिष्णुरलङ्कर्ता।' (अमर)

अलङ्कर्मीण (सं॰ त्रि॰) कर्मणे क्रियायै अलं समर्थः, ख। कर्मक्षम, कार्यदक्ष, होशियार, जो काम बनानेमें चालाक हो।

अलङ्कार (सं॰ पु॰) अलम्-कृ-भावे घञ्। १ भूषा, अलङ्क्रिया। अलङ्क्रियतेऽनेन अलम्-कृ-करणे घञ्। २ भूषण, आभरण, हार, केयूर प्रभृति। 'अलङ्कारस्त्वाभरणं परिष्कारो विभूषणं। मण्डनञ्च।' (अमर)।

मनुष्य जातिकी यह स्वाभाविक इच्छा रहती है, किस तरह सुन्दर दिखाई पड़े और किस तरह बात सुननेमें अच्छी लगे। पशु पक्षियोंमें भी यह साध एकदम कम नहीं है। मयूरीका मन लुभानेके लिये मयूर पूंछ फैलाकर उसके सामने नाचता फिरता है। पक्षिणीका चित्त आकर्षण होनेके लिये अनेक पक्षियोंका कण्ठस्वर सुमिष्ट होता है।

मनुष्य सजधज देखना पसन्द करता है। इसलिये क्या धनी क्या दरिद्र, क्या सभ्य क्या असभ्य—सभी अपनी अपनी रुचि सम्भावना एवं निपुणताके अनुसार नगर गृह एवं देहको सजाया करते हैं। असभ्य जातिके पास धन नहीं, रुचि भी मार्जित नहीं है, वैसी शिल्पनिपुणता भी नहीं है, इसीसे वे लोग सामान्य द्रव्यसे अपना अपना घर और देह सजा रखते हैं। अनेक असभ्य जातियोंके घरकी सजावट केवल मृत देहकी अस्थि रहती है। उनके अङ्गके भूषण भी सामान्य ही होते हैं। कौड़ी, फलके बीज, सूअर-

के दाँत, पत्तोंके पर पशुओंके पूछ, इन लोगोंको सजा-बना है। फिर सभ्य लोग काठ काँच पत्थर, कपड़े आदि नाना प्रकारके द्रव्योंके बरतने लगते हैं। इन सब द्रव्योंमें कितनी ही प्रकारकी विचित्र चित्रकारी रहती है। इनके बहुतसे अलङ्कार भी मनोहर होते हैं। सोना चाँदी, मोती, मणि विचित्र रत्न प्रभृतिसे भी लोग अलङ्कार बनाते हैं।

अति प्राचीन काल ही भारतवर्षमें नाना प्रकारके बहुमूल्य अलङ्कारोंका चलन हुआ था। यह देश उष्णप्रधान है इसलिये सर्वाङ्गको वस्त्रसे ढक रखने की आवश्यकता नहीं होती, सर्वाङ्गमें आभरण पहननेका खूब सुभीता पड़ता है। पुरातन देवमन्दिरों में जो सब मूर्तियाँ खुदी हुई हैं, उनमें अनेक प्रकारके अलङ्कार देखे जाते हैं। उनमेंसे अंगूठी गलेमें मोतीकी माला हाथमें कङ्कण, कानमें कुण्डल—और कितने नाम लें। प्राचीन संस्कृत पुस्तकोंमें अनेक प्रकार अलङ्कारके नाम हैं। देवासुरके समय देवता-ओंने नाना प्रकारके अलङ्कारोंसे देवीको विभूषित किया था। शकुन्तलाको पतिगृह जानेके समय अच्छे अच्छे वस्त्र आभूषण पहनने थे। परन्तु अनसूया और प्रियम्वदा वनवासिनी थीं। वे फिर कहाँसे वनमें रहीं अतएव भूषण पहनाना जानती न थीं। तथापि चित्रपटमें यह देखकर, कहीं कौन अलङ्कार था उन लोगोंने उसको शकुन्तलाको साज दिया। संस्कृत भाषाके नामकोष, अमर, हेमचन्द्र प्रभृति पुस्तकोंमें भी अलङ्कारका विशेष विवरण है। इन्होंसे मालूम होता है, कि अति प्राचीन काल भी इस देशमें बहुमूल्य अलङ्कारका विशेष चलन था। संस्कृत पुस्तकोंमें इन सब अलङ्कारोंका विवरण है—

१। मस्तकके अलङ्कार—माल्य गर्भक, ललामक आपीड़ बालपाश्या, पारितथ्या हंसतिलक, दण्डक, चूड़ामण्डन, चूड़िकाबन्धन मुकुट।

माल्य—इसका दूसरा नाम माला वा स्रक है। स्त्रियाँ फूलोंकी माला गूँथकर जूड़ेमें बाँधती हैं।

गर्भक—इसका दूसरा नाम प्रभ्रष्टक है। कोई कहता कि यह जूड़ेकी माला विशेष है। किसी-के मतानुसार यह आजकलकी घुण्डीदार सूई जैसा एक प्रकारका काँटा होता है। स्त्रियाँ इसे जूड़ेमें खोंस देती थीं। अमरकी टीकामें महेश्वरने लिखा है कि बालोंके बीचमें जो माला पहनी जाती, उसका नाम गर्भक और शिखामें जो माला लटकती रहती है, उसे प्रभ्रष्टक कहते हैं। "केशमध्ये स्थ माला गर्भकमुच्यते। प्रभ्रष्टकं शिखायां लम्बमान स्रग्दाम"।

ललामक—अमरकोषमें यह अलङ्कार भी एक प्रकारकी मालामें गिना गया है। इसकी जमीनपर तीन चारसे सीधे सोनेके पत्ते, बीचमें मणिमय चाँद, जिसकी दोनों ओर जड़े हुए रत्न और नीचे मोतीकी झालर रहती है। देशमें यह ज्यादातर बेंदी जैसा होता है। स्त्रियाँ इसे मस्तकके सामने पहनती हैं। इस अलङ्कारकी दोनों ओर ओर मध्यस्थलके चाँदका ऊपरी भाग जूड़ेमें लगा रहता है। इसकी मोतीकी झालर ललाटपर लटकती, इसीसे इसे ललामक या ललाम कहते हैं।

"पुरोन्यस्तं ललाटस्थं तिलक ललामकम्।" (भरत)

आपीड़—इसका दूसरा नाम शेखर है। शिखामें पहननेकी मालाको आपीड़ वा शेखर कहते हैं।

बालपाश्या—महेश्वरके मतसे यह भी माँगका अलङ्कार है। परन्तु स्वामी बालमें लगानेकी मोती मालाको बालपाश्या कहते हैं।

"बाली तु प्रवर्तं यत्र ग्रथितं मुक्ताभिर्लम्बिका।" (भरत)

पारितथ्या—यह अलङ्कार आजकलकी बेंदी है। यह सोनेकी होती। और इसमें रत्न जड़े रहते हैं। अमरसिंहके मतसे बालपाश्या एवं पारितथ्या दोनों एक ही अलङ्कार हैं।

हंसतिलक—यह सोनाका और देखनेमें पीपलके पत्ते जैसा होता है। इसके बीचमें मणिमुक्ता जड़े रहते हैं। स्त्रियाँ इसे ललाटके ऊपर पहनती हैं।

दण्डक—यह अलङ्कार बाला जैसा होता है। यह सोनेके पत्तरका बनता और इसपर मोती जड़ा जाता है। इससे झुनझुन शब्द निकलता है।

चूड़ामण्डन—दण्डके ऊपरी भागको सोनाके सिवे

प्राचीन समयमें चूड़ामण्डनका चलन था। इस अलङ्कार की आकृति केतकीदलकी तरह होती है। यह सोनेका बनता है।

चूड़िका—यह सोनेकी बनती और इसकी आकृति कमल जैसी होती है। यह जूड़ेके पीछे पहना जाती है।

लम्बन—यह अलङ्कार चूड़िकामें लटका रहता, इसीसे इसका नाम लम्बन पड़ा है। इस समय इसे पश्चिमाञ्चलमें झालर कहते है। छोटे छोटे सोनेके फूलोंकी दोनों ओर मोती झूलते एवं मध्यस्थलमें इन्द्रनील आदि मणि जड़े रहते हैं। यह अलङ्कार आजकल कई तरहका हो गया है।

मुकुट—यह सोने और मणिमुक्ताका बनता है। इसकी दोनों कंगूरे और बीचमें ऊंची चूड़ा रहती है। चूड़ेमें पक्षीके सुन्दर पर रहते हैं। मुकुट अनेक प्रकारका होता है। पहले इस देशके राजा और रानियां ही मुकुट पहनती थीं। इस समय भी ब्रह्म प्रभृति देशोंके बड़े बड़े घरानेकी प्रायः सभी स्त्रियां मुकुट पहनती है।

२। मुक्ताकण्टक, द्विराजिक, त्रिराजिक, स्वर्णमध्य, वज्रगर्भ, भूरिमण्डल, कुण्डल, कर्णपूर, कर्णिका, शृङ्खल एवं कर्णेन्दु—ये सब कानके गहने हैं।

मुक्ताकण्टक—समान आकारके मोतियोंको पतले तारमें गूंथ और गोलाकार बनाकर स्त्रीपुरुष दोनों ही पहनते थे। अनेक स्थानोंमें अब भी इसका चलन है।

द्विराजिक—इसका वर्तमान नाम गोखुरू है। सोनेके बाला जैसी दोनों घेरोंका बगलमें मोती और बीचमें नीलमणि जड़ा रहता है।

त्रिराजिक—गोखुरू जैसा होता है। बीचमें मोती जड़े रहनेके कारण यह त्रिराजिक कहा जाता है।

स्वर्णमध्य—गोखुरूका मध्यस्थल यदि सोनेका बना हो, तो उसे स्वर्णमध्य कहते हैं।

वज्रगर्भ—इसके मध्यस्थलमें माणिक, दोनों किनारे मोती और मोतीके मध्यभागसे नीचे रत्नका बुलाक लटकता रहता है।

भूरिमण्डन—यह भी प्रायः वज्रगर्भ जैसा ही अलङ्कार है। इसके किनारे मोती, बीचमें हीरा और उसके मध्यमें माणिक जड़ा रहता है।

कुण्डल—यह सिढ़ीकी तरह चढ़ा उतार बनता है। इसमें पंक्तिसे हीरे जड़े और उसमें छः या आठ घेरे रहते हैं। आजकल राजपूताना, पञ्जाब और गुजरात प्रभृति स्थानोंमें स्त्री-पुरुष सभी कुण्डल पहनते हैं। कुण्डलका दूसरा नाम कर्णवेष्टन है।

कर्णपूर—फूल जैसे कानके गहनेका नाम कर्णपूर है। इस समय कर्णफूल, झुमका, चम्पा, फुंदना प्रभृति कई तरहके कर्णपूरका चलन है।

कर्णिका—इसका दूसरा नाम तालपत्र वा ताड़पत्र है। हिन्दीमें इसे पतीला कहते हैं।

शृङ्खल—यह कानमें पहननेको एक प्रकारकी झालर है और विशुद्ध सोनेका बनता है। संयुक्त-प्रान्तादि स्थानोंमें स्त्रियां इस समय भी इस गहनेको पहनती हैं।

कर्णेन्दु—स्त्रियां इस अलङ्कारको कानके पीछे पहनती थीं।

ललाटिका—इसका दूसरा नाम पत्रपाश्या है। सोनेका चांद या चौकोन-अठकोन पत्तेपर रत्न जड़े रहते हैं। हिन्दुस्थानकी स्त्रियां अब भी इस अलङ्कारको पहनती हैं।

३। प्रालम्बिका, उरःसूत्रिका, देवच्छन्द, गुच्छ, गुच्छार्द्ध, गोस्तन, अर्द्धहार, माणवक, एकावली, नक्षत्रमाला, सरिका, भ्रामर, नीललवणिका, वर्णसर, वज्रमङ्कलिका, वैकक्षिक—ये सब कण्ठके अलङ्कार हैं।

प्रालम्बिका—नाभीतक लटकती हुई सोनेकी मालाका नाम प्रालम्बिका है। नाभीतक लटकते हुए हारका साधारण नाम ललन्तिका वा लम्बन है। अमरने इसे एक प्रकारको मालामें गिना है।

उरःसूत्रिका—नाभीतक लटकते हुए मुक्ताहारका नाम उरःसूत्रिका है।

देवच्छन्द—एक सौ लड़ीके हारको देवच्छन्द कहते हैं।

गुच्छ—बत्तीस लड़ीकी मोती-मालाको गुच्छ कहते हैं। "द्वात्रिंशद्यष्टिको गुच्छः।" (भरत)

गुच्छार्ध—चौबीस लड़ीके मुक्ताहारका नाम गुच्छार्ध या अर्धगुच्छ है। "चतुर्विंशतियष्टिको गुच्छार्धः।" (भरत)

गोस्तन—चौलड़े मुक्ताहारका नाम गोस्तन है। "चतुर्यष्टिको गोस्तनः।" (भरत)

अर्धहार—बारह लड़ीके मुक्ताहारको अर्धहार कहते हैं। "द्वादशयष्टिरर्धहारः।" (भरत) किन्तु मतान्तरमें ६४ लड़ीके हारको अर्धहार कहते हैं।

माणवक—बीस लड़ीके मुक्ताहारका नाम माणवक है। "विंशतियष्टिको माणवः।" (भरत) परन्तु मतान्तरमें २४ लड़ीके मुक्ताहारका माणवक और १२ लड़ीके हारका नाम अर्धमाणवक है।

एकावली—एक लड़ीकी मोती मालाका नाम एकावली है।

नक्षत्रमाला—२७ मोतियोंके एकावली हारका नाम नक्षत्रमाला है। "सैवैकावली सप्तविंशतिमौक्तिकैः कृता नक्षत्रमाला भवेत्।"

झामर—बड़े बड़े मोतियोंका सुन्दर एकावली हार बनाया जाता, मध्यमाकार मोतियोंकी माला झामर है।

"अङ्गुष्ठमात्रैः मुक्ताभिः ग्रथिता या एकावली भवेत्।
मध्ये मुक्ताफलैर्युक्ता झामरं परिकीर्तितम्।" (रत्नपरीक्षा)

नीलमध्यमिका—यह पांच सात अथवा नौ लड़का मुक्ताहार है। इसके उपान्तमें मनोहर नीलमणि जड़ा रहता है। इसके दानें मोतीके तारमें गूँथे जाते हैं। फिर एकके बाद दूसरे दानेका क्रमसे छोटा रख सब तारोंके अग्रभागोंका एक जगह मिलाकर बांध दिया जाता है। बांधकर उस पर इन्द्रनील मणि जड़ा जाता है। इसकी प्रत्येक लड़ीके मध्यमें नीलकान्त मणिको भुकभुका लटकता रहता है। ऐसे हारका नाम नीलमध्यमिका है।

अवंसर—नीलमध्यमिका जैसा मुक्ताहार गूँथकर उसमें हरिन्मणि एवं नीलमणि लगा देनेसे उसे अवंसर कहते हैं।

तरिका—गलेमें ठीक अँटने लायक, नौ या दस मोतीके हारको तरिका कहते हैं।

मध्यमङ्गलिका—तरिका-हारके बाहर नीलकान्त-मणिका गुच्छा लगानेसे उसे मध्यमङ्गलिका कहते हैं।

वैकक्षिक—गलेसे जो माला यज्ञोपवीतकी तरह ढेढ़ी होकर वक्षःस्थलके ऊपर आ पड़ती है, उसे वैकक्षिक कहते हैं।

४। पदक एवं बन्धूक ये दोनों वक्षःस्थलके अलङ्कार हैं। पदक कई तरहका होता है। इस अलङ्कारका आज भी सब जगह चलन है। यह सोनेके छल्लोंसे या पटलोंसे चक्र या पत्रके आकारका बनता है। बहुमूल्य पदक देखनेमें एक जैसा होता है। उसके किनारे किनारे और बीचमें हीरकादि जड़े रहते हैं। रत्नरज्जुमें लटकाकर वक्षःस्थलपर जो पदक धारण किया जाता है उसे बन्धूक कहते हैं।

५। केयूर अङ्गद कटक, वलय, चूड़ एवं वाहल—ये सब बाहुके अलङ्कार हैं।

केयूर—अनन्त जैसे रत्नखचित बाजूके गहनेको केयूर कहते हैं। यह बाहुमें पहना जाता है। हिन्दुस्थानमें इसे बाजूबन्द कहते हैं। केयूरका दूसरा नाम अङ्गद है। मतान्तरसे केयूरमें झब्बा न रहनेसे इसे ही अङ्गद कहते हैं।

'केयूरमङ्गदं तुल्ये अङ्गदं बाहुभूषणम्' (रत्नम

अनन्त—सोने आदिसे बने हुए विविध आकारके अलग अलग दानोंको एकत्र गूँथ देनेसे उसे अनन्त कहते हैं। इसका हिन्दुस्थानी नाम पहुँची है।

कटक—रत्नखचित सोनेके कड़ेका नाम कटक है।

वलय—हिन्दुस्थानमें इसे कड़ा कहते हैं। यह अनेक प्रकारका होता है। गरीब आदमी लोहे पीतल और चांदीके कड़े पहनते हैं। मध्यम श्रेणीवाले सोनेका कड़ा बनाते और धनी लोग उसमें सोनारसे बराबर अनेक प्रकारके हीरकादि जड़ाते हैं। हाथके पहुंचेमें कड़ा पहना जाता है। बङ्गदेशमें इसे केवल स्त्रियां, परन्तु संयुक्तप्रान्त, पञ्जाब आदिमें स्त्रीपुरुष दोनों ही पहनते हैं। यह गहना गोल होता है। अच्छे कड़ेकी दोनों ओर बाघ, सिंह या सांपके मुंह बने रहते हैं।

चूड़—ऐसे परिमाणका गोलाकार अलङ्कार जो कड़ेकी तरह आसानीसे पहनाया न जा सके और बहुत ढीला भी न हो। यह सोनेकी पतली पतली शलाकाओंका बनाया जाता है। इसमें दोनों ओर कील लगाना पड़ता है। ऐसे करभूषणको चूड़ कहते हैं। अब यह अनेक प्रकारका हो गया है।

अर्धचूड़—चूड़के अर्धपरिमाण अलङ्कारका नाम अर्धचूड़ है। आजकलकी लहरिया चूड़ी जैसे वलयको आवापक कहते हैं। रत्नखचित वलयाकृति अलङ्कार-का नाम पारिहार्य है।

कङ्कण—यह सोनेका होता और ठीक कलके घेरेके उपयोगी रहता है। इसके किनारे किनारे कङ्कड जैसे दाने पडते हैं। कङ्कण कई तरहका होता है।

६। उङ्गलीमें जो अलङ्कार पहना जाता है, उसे अङ्गुरीयक या अंगूठी कहते हैं। अति प्राचीन काल ही इस देशमें आजकल जैसी नामाङ्कित 'सील अंगूठी' का चलन हुआ था। इसका विवरण अङ्गुरि शब्दमें देखो। अंगूठीमें नाम खुदा रहनेपर उसे मुद्रा, मुद्रिका एवं अङ्गुलिमुद्रा कहते हैं। "साक्षराङ्गुलिमुद्रा स्यात्।" (अमर)

आजकलकी तरह पहले इस देशमें हीरकादि खचित नाना प्रकारकी अंगूठियां थीं और उनके अलग अलग नाम भी थे। जिस अंगूठीके दोनों ओर दो हारे और बीचमें हरिन्मणि वा नीलमणि जड़ा रहता, उसे 'द्विहीरक' कहते हैं। त्रिकोण अंगूठीके बीचमें यदि हीरा और तिनों कोनोंपर दूसरे दूसरे मणि जड़े हों, तो वैसी अंगूठाका नाम 'वज्र' है। गोलाकार अंगूठीकी चारों ओर यदि हीरा और मध्यमें मणि जड़ा हो, तो उसका नाम 'रविमण्डल' है। ऋजु अथच आयत, चौकोन एवं क्रमशः जो उन्नत रहे, और मध्यस्थलमें हीरा जड़ा हो, तो वह 'नन्द्यावर्त' कहा जाती है। जिस अंगूठीमें चमकीला माणिक, उत्तम मुक्ता, सुरम्य प्रवाल, मरकत, पुष्पराग, हीरक, इन्द्रनील, पीतमणि एवं वैदूर्य जड़ा हो, उसका नाम 'नवरत्न' या 'नवग्रह' है। अंगूठीका घेरा यदि हीरोंसे घिरा हुआ हो, तो उसे 'वज्रवेष्टक' कहते हैं। जिस अंगूठीकी दोनों ओर छोटे हीरे और बीचमें बड़ा हीरा जड़ा हो, उसका नाम 'त्रि-हीरक' है। जो अंगूठी देखनेमें सांपके फन जैसी हो, जिसके गोल घेरेमें हीरे जड़े हों और जो अनेक रत्नोंसे सुशोभित हो, उसे 'शुक्तिमुद्रिका' कहते हैं।

७। काञ्ची, मेखला, रसना, कलाप, काञ्चीदाम एवं शृङ्खल ये सब कमरके अलङ्कार हैं।

काञ्ची—आजकलके जञ्जीर जैसे एकहरे अल-ङ्कारको काञ्ची कहते हैं।

मेखला—अठलड़ी काञ्चीका नाम मेखला है। मालूम होता है, आजकलका चन्द्रहार और सूर्यहार पहले मेखलाके नामसे प्रसिद्ध था।

रसना—सोलह लड़ीकी काञ्चीका नाम रसना है।

कलाप—पचीस लड़ीकी काञ्चीका नाम कलाप है।

काञ्चीदाम—जो चार अङ्गुल चौड़े सोनेका बना हो, जिसमें झालर और घुंघरु लगे हों और जो नितम्बके नीचे तक आ जाय, उस अलङ्कारका नाम काञ्चीदाम है। चार्वोदार जञ्जीरकी नाईं पहले शृङ्खल अलङ्कार बनता था।

८। पादचूड, पादकटक, पादपद्म, किङ्किणी, पादकण्टक, मुद्रिका—ये पैरके अलङ्कार हैं।

पादचूड—यह हाथके चूड़ेकी तरह सोनेकी शलाकाका बनता है। इसका घेर पांवके घेर जैसा और उसमें अनेक प्रकारके हीरकादि जड़े रहते हैं। ऐसे अलङ्कारको पादचूड़ कहते हैं।

पादकण्टक—सोनेके बने हुये, तीन श्रेणीयुक्त, जोड़के स्थानोंमें कीलोंसे बंधे हुये, चौकोन, छकोन या अठकोन, ऊपर सोनेके छोटे छोटे दाने उभरे हुए, झुन् झुन् शब्दयुक्त, अलङ्कारका नाम पादकण्टक है। इस समय यह हिन्दुस्थानमें पाजेबके नामसे प्रसिद्ध है।

पादपद्म—यह इस समय चरणचाप वा चरण-पद्म कहा जाता है। इसमें तीन या पांच सिकलियां, इसमें नाना प्रकारके रत्न जड़े और सन्धिस्थानमें कील लगा रहती हैं।

किङ्किणी—आजकल इसे घुंघुरु कहते हैं। यह

सोनेकी बनाई जाती है। इसके भीतर कङ्कड़ रहता, इसीसे चलनेके समय बजती है।

मुद्रिका—यह रत्नकी बनी, चौड़ी और लम्ब रहती है। चलनेके समय यह भी बजती है।

नूपुर—यह सोनेका बनता, और इसमें नाना प्रकारके रत्न जड़े रहते हैं। एड़ीके पीछेसे एक मोटी अङ्गुलतक घेरे रहता है। इसके भीतर भी कङ्कड़ रहता, इसीसे चलनेके वक्त इससे भी शब्द निकलता है। आजकल भद्रघरकी स्त्रियां नूपुर नहीं पहनतीं। नाचनेवाली ही नाचनेके समय इसे पहन लेती है।

मनुष्यकी आदिम अवस्थामें सोना चांदी या मणिमुक्ता नहीं थे। यदि कहीं किसीके पास ये सब रत्न रहते भी, तो उस समय लोग इनका व्यवहार और आदर न करते थे। इसीसे प्रथमावस्थामें मनुष्य अस्थि प्रभृतिके अलङ्कार प्रस्तुत करते थे। धातुओंमें लोहा ही पहले मनुष्यके व्यवहारमें आया है। अब भी देखा जाता है, कि पर्वतके असभ्य और अशिक्षित आदमी चाहे और कुछ भी न जानें पर खानिसे लोहा निकालकर अस्त्र आदि बना लेते हैं। इसीसे मालूम होता है, हमारे देशके आदमी सबसे पहले शङ्ख और लोहेके गहने बना सके थे। इसीलिये इन दोनों गहनोंकी अबतक इतनी मर्य्यादा है। स्त्रियां चाहे जितना बहुमूल्य अलङ्कार क्यों न पहने हों, परन्तु हाथमें लोहा अवश्य रखना चाहिये। लोहा न रखनेसे पतिके लिये बहुत अमङ्गल समझा जाता है। शङ्ख पहननेकी प्रथा दिन दिन उठती जाती है। परन्तु इस अलङ्कारको इस समय भी जो स्त्रियां पहनतीं, वे इसका विशेष आदर करती हैं। शङ्खकी चूड़ी पहननेके समय उसपर सिन्दूर, दूब और धान चढ़ाकर सम्मान करना पड़ता है। इसके सिवा वृद्धि शान्तिको एकबार किया भी देती हैं। इससे साफ ही मालूम होता है, कि लोहा और शङ्ख ही इस लोगके देशका प्रथम अलङ्कार था।

अब यह विहार संयुक्तप्रान्तादि स्थानमें नाना प्रकारके अलङ्कारका चलन हो गया है। १०।१५ वर्ष पहले इस देशकी स्त्रियोंका शिरोभूषण कुछ भी न था। केवल बालक, बालिका और युवतियां जूड़ा बांधकर उसमें बड़ी बड़ी झुप्पी लगा लेती थीं। झुप्पीका आकार मल्लिका फूलकी कलीके समान रहता, परन्तु वह उससे भी कुछ मोटी और बड़ी होती, अब अवस्थानुसार झुप्पी सोने और चांदीकी बनायी जाती थी। अब भी हिन्दुस्तानके नाना स्थानोंमें झुप्पीका चलन है और कितनी ही स्त्रियां केशविन्यास करके उसके अग्रभागमें फूल जैसी एक बड़ी सी झुप्पी बांध देती हैं।

अब बङ्गाल और संयुक्तप्रान्तकी स्त्रियोंके शिरके कितने ही प्रकारके अलङ्कार हो गये हैं। बालिका और युवतियां मांगमें सींथी गहना पहनती हैं। इसका आकार ठीक सीमन्तकी तरह होता है। यह मांगके ऊपरसे शिरके मध्यभाग तक लम्बा होकर आता है। इसकी ज़मीन सोनेकी होती है। बीच बीचमें रत्न जड़े रहते हैं। नीचेकी ओर किनारे किनारे मोतीकी झालर लगती है। बीचमें लगी हुई झुम्-झुमी कपालपर आ लटकती है। ऊपरकी ओर एक पट्टी जूड़ेसे बंधी रहती है।

लटमें बांधनेके लिये चांदी वा सोनेकी जञ्जीर रहती है। जूड़ेमें लगानेके लिये फुलीदार नाना प्रकारके फूल, तितलियां, परीका गोटा और फीता होता है। इसके सिवा शिरके और अधिक अलङ्कार नहीं दिये जाते।

मालूम होता है, प्राचीन काल भारतवर्षमें नाकका अलङ्कार न था। अमरादिकी पुस्तकोंमें इसका उल्लेख नहीं है। नथ, बेसर, बुलाक, बुन्दा प्रभृति नाकके अलङ्कार कबसे चले हैं—यह कहा नहीं जा सकता। नथ सोनेके गोलाकार तारका बनता है। इसकी एक ओर बंसीकी तरह एक प्रकारका टेढ़ा कांटा रहता और दूसरी ओर उस कांटेको फंसानेके लिये एक छेद रखकर तारके कुछ अंशको नथमें लपेट देना पड़ता है। इसीसे छेदकी तरफ दूसरी ओरसे मोटी हो जाती है। इस मोटी ओर लोग अपनी अवस्थाके अनुसार मूंगा या मोती लगा देते हैं। इसके बाद नथके बीचमें

अलङ्गामिन् (सं॰ त्रि॰) अलं पर्याप्तं गच्छति, अलम्-गम्-णिनि। १ प्रचुर गमनशील, खूब चलनेवाला, जो हमेशा चलता हो। २ शत्रुके प्रति गमनशील, दुश्मन्की तर्फ़ बढ़नेवाला।

अलङ्घन (सं॰ क्ली॰) अनतिक्रम, अनत्यय, अभङ्ग, गैरमुतजाविज़ी, न लांघनेकी हालत।

अलङ्घनीय, अलङ्घ्य देखो।

अलङ्घनीयता, अलङ्घ्यता देखो।

अलङ्घ्य (सं॰ त्रि॰) न लङ्घ्यम्, लङ्घ-ण्यत्। अनतिक्रम्य, जो लांघने लायक़ न हो।

अलङ्घ्यता (सं॰ स्त्री॰) १ अनतिक्रम्यता, जिस हालतमें लांघ न सकें। २ गौरवान्वितता, इज़्ज़तदारी। ३ अधिकारयुक्त नियम, फ़र्ज़ क़ायदा। ४ श्रेष्ठता, बड़ाई।

अलच्छ (हिं॰) अलक्ष्य देखो।

अलज (सं॰ पु॰) १ पक्षिविशेष, कोई चिड़िया। (हिं॰ वि॰) २ निर्लज्ज, बेशर्म।

अलजी (सं॰ स्त्री॰) अला पर्याप्ता सती जायते, जन-ड गौरा॰ ङीष्। १ प्रमेहपिटिकारोग, जिरियानकी फुन्सीका आज़ार। यह रक्त, सित, स्फोटवती और दारुण होती है। (सुश्रुत) २ नेत्रसन्धिज रोग, आंखके जोड़की बीमारी। ३ शूकदोष विशेष। जो बीमारी लिङ्ग बढ़ानेकी दवा लगानेसे पैदा हो।

अलज्ज (सं॰ त्रि॰) निर्लज्ज, बेहया, जिसे शर्म न लगे।

अलञ्जर (सं॰ पु॰) अलं पर्याप्तं जृणाति, जृ-अच्। झझर, पानी रखनेको मट्टीका बरतन।

अलञ्जीविक (सं॰ त्रि॰) अलं पर्याप्तं जीविकायै। जीविकानिर्वाहको यथेष्ट, जो गुज़र करनेको काफ़ी हो। यह शब्द धनादिका विशेषण है।

अलञ्क्षुग (सं॰ त्रि॰) अलं पर्याप्तं क्षुयते, अलम्-क्षुप बाहु॰ कर्मणि क। भक्षण करनेको पर्याप्त, खानेके लिये काफ़ी।

अलति (सं॰ पु॰) अल बाहु॰ अतिच्। गीत विशेष, कोई नगमह।

अलदामी—बङ्गालके तांतियों और मुरशिदाबादके कैवर्तोंकी एक शाखा।

अलदेमौ—अवधके सुलतानपुर ज़िलेका परगना। कहते हैं, पहले यह परगना भारोंके अधिकारमें रहा, जिनके अलदे नामक नरेशने गोमतीके वामतटपर क़िला बनाया था, उसीसे परगनेका यह नाम पड़ा। कितने ही पुराने क़िले और टूटे-फटे शहर भार अधिकारके चिन्हस्वरूप विद्यमान हैं। राजकुमारोंका प्रभाव यहां फैला, जिनका डेरे, मेवापुर, नानामौ और पारसपत्तोंमें राज्य है। इस परगनेका क्षेत्रफल २४८ वर्गमील है। इसमें कितने ही पुश्तैनी चोर रहते हैं।

अलन्तम (सं॰ त्रि॰) योग्य पर्याप्त, शक्तिशाली, लायक़, काफ़ी, ताक़तवर।

अलन्तराम (सं॰ अव्य॰) अलम्—तरप् आमु। अतिशय, ज़्यादातर, बहुत।

अलन्दी—बम्बईके पूना ज़िलेका शहर। प्रत्येक वर्ष कार्तिक कृष्ण एकादशीको यहां ज्ञानेश्वरके मन्दिरमें बड़ा मेला लगता और सिर-कर (Poll tose) से बहुत रुपया आता है। मन्दिरका प्रबन्ध छः व्यक्तियोंके हाथमें रहता, जिन्हें अधिवासियोंकी अनुमतिसे कलक्टर चुन लेता है। मन्दिरमें तीन द्वार लगा—चन्दूलाल, सेंधिये और गायकवाड़का दूसरा द्वार प्रधान और बाज़ारके सामने है। मन्दिरकी चारो ओर जो मेहराबदार परिक्रमा खिंचा उसे अब लोगोंने अपने निवासका स्थान बना लिया है। मण्डप भी बड़ा और मेहराबदार है। ज्ञानेश्वरके समाधिपर लाल कपड़ेवाले साधुकी मूर्ति बैठी और उसके पीछे विठोवा तथा सखमायी देवताकी प्रतिमा प्रतिष्ठित है। ज्ञानेश्वर विष्णुका अवतार समझा जाता और अहर्निश दीपक जला करता है। कहते हैं, तीन सौ वर्ष पहले मन्दिर अम्बेकर देशपांडे, सवा सौ वर्ष पहले मण्डप सेंधियाके दीवान रामचन्द्रराव शेनवे, परिक्रमा एवं पश्चिम भित्ति पेशवा और बरामदा निज़ामके दीवान चन्दूलालने बनवाया। कोई छः सौ वर्ष हुए ज्ञानेश्वर साधुने इस नगरमें जन्म लिया था। इनके भाईका निवृत्ति तथा सोपान और बहनका नाम मुक्ता बायी रहा। पिता चैतन्यके सन्यासी

होनेसे यह लोग मर्देसहर समझे जाते थे। किन्तु इन्होंने गोदावरी तटस्थ पैठान तीर्थ जाकर ब्राह्मणोंसे अपना संस्कार कराना और जनेऊ पहनाना चाहा। पहले उन्होंने इनकी बात बिलकुल सुनी न थी। अन्तको ज्ञानेश्वरने जब भैंसेसे वेद पढ़ाये और ब्राह्मणोंमें पितर बुलाये, तब चमत्कार देख वह संस्कार करनेपर सम्मत हुए। ज्ञानेश्वरके अलन्दी वापस आते राहमें वेद पढ़नेवाला भैंसा मरा और उन्होंने उसे समाधि दे म्हसोबा नाम रखा था। कुमार तालुकके कोलवाड़ी गांवमें भैंसेका समाधि बना, जिसका पूजन चैत्र मास एकादशीको बड़े समारोहसे होता है। चांगदेव साधु जब आकाश मार्गसे सिंहपर चढ़ सांपका चाबुक फट कारते पहुंचे, तब ज्ञानेश्वर किसी दीवार पर बैठ और उसे उड़ा बहुत ऊंचे उनसे जा मिले थे।

अलम्बन (सं० त्रि०) अर्श प्रभृतं अलमस्त्यस्य, अर्श आदित्वात् अच्। समधिमानी, काफी दौलत रखनेवाला।

अलम्धूम (सं० पु०) अलं पर्याप्त धूम। धूमसमूह काफी धुवां।

अलप (हिं० वि०) १ अल्प, थोड़ा। (स्त्री०) २ मरणसमय, मौतका वक्त।

अलपत् (सं० त्रि०) भाषण न करते हुआ, खमोश, जो बोलता न हो।

अलप्तगीन्—बुखारेके प्रधान सिहजन। यह सामान बादशाहके समय खुरासानमें शासक-पदपर प्रतिष्ठित रहे। सन् ८६२ ई० को इन्होंने पद छोड़ अपने अनुयायियोंके साथ ग़ज़नीको यात्रा की। अमीर मन्सूर सामानीके सिंहासनारूढ़ होनेका विरोध करना ही इनके वापस जानेका प्रधान कारण था। इन्होंने अपना छोटा राज्य स्थापित कर ग़ज़नीको राजधानी बनाया। सन् ८०६ ई० में इनके मरनेपर राज्यका अधिकार अबू इसहाक् नामक पुत्रको मिला था।

अलपाका (अं० पु०) अमेरिकाका ऊंट। (Alpaca) यह दक्षिण-अमेरिकाके पेरु प्रान्तमें होता है। इसका बाल लम्बा और मुलायम रहता है। २ अलपाकाका ऊन। ३ कपड़ाविशेष, कोई कपड़ा। यह अलपाका ऊनके साथ रेशम या सूत मिलानेसे बनता और प्रायः काले रङ्गका होता है।

अलफ् (अ० पु०) आगेके दोनों पैर उठा पिछले पैरोंके बल घोड़ेका खड़ा होना।

अलफ्खान्—दिल्लीके तुर्की बादशाह अलाउद्दीन खिलजीके सेनापति या सिपहसालार। सन् १२८० ई० में इन्होंने गुजराती राजपूतोंकी राजधानी पाटनको विध्वंस किया था।

अलफा (अ० पु०) परिच्छदविशेष किसी किस्मका कुरता। यह बहुत घेरदार और लम्बा रहता है। बांह लगायी नहीं जाती। मुसलमान फ़कीर इसे अकसर पहना करता है।

अलबट्टी (हिं० स्त्री०) बमर, ऐंठ, गांठ।

अलबत्ता (अ० अव्य०) १ निःसन्देह, बेशक। २ हां, ठीक ठीक समझना। ३ परन्तु, लेकिन।

अलबम (फ़ा० Album) चित्र रखनेवाला पुस्तक, जिस किताबमें तसवीरें रहें।

अलबेला (हिं० वि०) १ बांकातिरछा, छैलछबीला। २ अनुपम बेजोड़। ३ निर्द्वन्द्व बेपरवा, मस्त हुआ। (स्त्री०) अलबेली।

अलबेलापन (हिं० पु०) १ ठाटबाट, चिकनपट। २ खूबसूरती, सुघरायी। ३ निश्चिन्तता बेपरवायी, ठाट-मठोल।

अलब्ध (सं० त्रि०) अप्राप्त, हाथ न आया हुआ, जो मिला न हो।

अलब्धनाथ (सं० त्रि०) निराश्रित, बेदोस्त, जिसके कोई सहायक न रहे।

अलब्धभूमिकत्व (सं० क्ली०) समाधिकी अप्राप्ति, जिस हालतमें समाधि न पायें।

अलब्धाभीप्सित (सं० त्रि०) हताश, नाउम्मेद, जिसका हौसला मारे पड़े।

अलभमान (सं० त्रि०) लाभ न उठाते हुआ, जिसे फायदा न पहुंचे।

अलभ्य (सं० त्रि०) प्राप्तिके अयोग्य, जिसे पा न सकें।

अलम् (सं० अव्य०) अल्प वाहु० अमु। १ भूषित रूपसे, सजावटमें। २ पर्याप्त प्रकारसे, काफी तौरपर। ३ वारण करके, रोकते हुए। ४ निरर्थक, वेफ़ायदे। ५ शक्तिसे, जबरन्। ६ अतिशय, निहायत। ७ सम्पूर्ण रूपमें, पूरा-पूरा। ८ प्रचुर, खूब। ९ नहीं, बस। १० शावाश।

अलम (अ० पु०) १ पश्चात्ताप, अफ़सोस। २ पताका, झण्डा।

अलमनक (अं० Almanac) जन्त्री, पत्रा।

अलमर (हिं० पु०) वृक्ष विशेष, कोई पौधा।

अल मसूदी—प्राचीन मुसलमान ऐतिहासिक। इन्होंने उमर वादशाहके भारतसे घृणा करनेका कारण यह लिखा है, किसी भविष्यवक्ताने उनसे भारतको अति दूरस्थ देश और वलवायियोंका घर वता दिया था।

अलमस्त (फ़ा० वि०) १ मदोन्मत्त, मतवाला। १ निर्द्वन्द्व, वेपरवा।

अलमारी (पोर्तगीज़ Ulmaria शब्दका अपभ्रंश) किसी किस्मका सन्दूक या आला। यह लकड़ीकी वनती है। चीज़ रखनेके लिये इसमें कई दर रहते और इसे किवाड़से वन्द करते हैं। अकसर दीवारमें भी तख़्ता लगाकर यह बना दी जाती है।

अलमास (फ़ा० पु०) हीरक, हीरा।

अल-मुक़तफ़ी-वि-अमरिल्लाह—अव्वास वंशके ३१ वें खलीफ़ा और अल-मुस्तज़हरके लड़के। सन् ११३९ ई०को यह अपने भतीजे अल-रशीदकी जगह गद्दी-पर वैठे और कोई २४ वत्सर राज्यकर सन् ११६० ई०को मरे थे। इनके लड़के अल-मुस्तंजदने पीछे वग़दादकी खलाफ़त पायी।

अलमुतवक्किल-अल-अल्लाह—अव्वास वंशके १०वें खलीफ़ा और अलमोतसिम-विल्लाहके लड़के। इनका पहला नाम अबुलफ़ज़ल जफ़र रहा। इन्होंने सन् ८४७ ई०को अपने भाई अलवासिक़का उत्तराधिकार पा वग़दादमें जुल्मकी धूम उठा दी। भूतपूर्व खलीफ़ाके वज़ीरने इनके सिंहासनारूढ़ होनेपर पहले झगड़ा लगाया था, जिससे इन्होंने उन्हें क़ैद करा और पीछे गर्म कांटोंसे भरी लोहेकी भट्टीमें फेंकवा बुरे तौरपर जलाकर मरवा डाला। इनके शासनकाल ईसा-नियोंने यूनानियोंके विरुद्ध कई वार विजय पाया था। यह यहूदियों और ईसाइयोंको वहुत घृणित समझते और फटकार देते रहे। किन्तु उतनेसे ही इन्हें शान्ति न मिली, इन्होंने लोगोंका करवला जाना वन्द और हसन वग़ैरह शहीदोंकी खाक जिन क़ब्रोंमें रखी थी, उनको वरवाद किया। यह १४ वर्ष ९ मास और ९ दिन राज्य चलाते रहे। सन् ८६१ ई०की २४ वीं दिसम्बरको इनके लड़के अल-मुस्तनसरने इन्हें मरवा खिलाफ़तका उत्तराधिकार अपने हाथ लिया। शत्रुने इनका शरीर काट सात टुकड़े कर दिया था।

अल मुतीय विल्लाह—अव्वास जातिके २३ वें खलीफ़ा और मुक़तदिर विल्लाहके लड़के। सन् ९४६ ई० को अलमुस्तकफ़ीके मरने वाद वग़दादके तख़्तपर वैठ यह २७ वत्सर ४ मास राजा रहे और सन् ९७४ ई० को मर गये। इनके लड़के अलतयने पीछे वग़-दादकी गद्दी पायी थी।

अलमुस्तकफ़ी विल्लाह—अव्वास वंशके २५ वें खलीफ़ा और अल मुक़तदिरके लड़के। सन् ९४१ ई० को यह अपने भाई अलराज़ीकी जगह वग़दादके तख़्तपर वैठे और तीन वर्ष ११ मास ९ दिन राज्य कर सन् ९४५ ई० को मर गये। पीछे इनके भतीजे और अलमुक़तफ़ीके लड़के अलमुस्तकफ़ीको राज्यका उत्त-राधिकार मिला था।

अल मुवफ़्फ़िक़ विल्लाह—वग़दादवाले खलीफ़ा मुतव-क्किल-विल्लाहके लड़के और अल मातमिद-खलीफ़ाके भाई। अलमातमिद खलीफ़ाको इन्होंने शत्रुसे लड़ते समय वड़ी मदद पहुंचायी थी। सन् ८९१ ई० को यह कुष्ठ रोगसे पीड़ित हो मर गये। मरते समय इन्होंने कहा था,—मैं एक लाख सिपाहियोंका सेना-पति हूं, किन्तु उनमें अपने-जैसा हतभाग्य किसीको नहीं पाता। सन् ८९२ ई० को अलमोतमिदके मरनेपर इनका लड़का वग़दादमें सिंहासनारूढ़ हुआ।

अल मुस्ताली विल्लाह—फ़ातिमा वंशके १६ वें खलीफ़ा। यह अपने वाप अलमुस्तनसर विल्लाहकी जगह मिस्र

इन्होंने कोई ७ वर्ष राज्य कर सन् ११७८ ई० को अपना शरीर छोड़ा। इनके लड़के अलनासिर बिल्लाहको सिंहासनका उत्तराधिकार मिला था।

अलम्पट (सं० पु०) १ भवनका भीतरी भाग, मकानका अन्दरूनी हिस्सा। २ अन्तःपुर, जनानखाना। (त्रि०) ३ जितेन्द्रिय, पाकदामन, जो परस्त्रीगामी न हो।

अलम्पशु (सं० पु०) अलं यज्ञे निरर्थकः पशुः। १ यज्ञके लिये अप्रशस्त पशु। (त्रि०) २ पशु पालने योग्य, जो मवेशी रख सकता हो।

अलम्पुरुषीण (सं० पु०) अलं समर्थः, पुरुषाय, अलम्पुरुष स्वार्थे ख। १ प्रतिमल्लादि पुरुष, जो शख्स दूसरेसे कुश्ती लड़ सकता हो। (त्रि०) २ पुरुषके योग्य, जो आदमी बन रहा हो। ३ पुरुषके अर्थ पर्याप्त, जो आदमीको काफ़ी हो।

अलम्बमुष्कक (सं० पु०) मुष्कक वृक्ष, मोखेका पेड़, वनपलास।

अलम्बल (सं० पु०) १ पर्याप्तबलयुक्त, खूब ताकतवर। २ शिव।

अलम्बा (सं० स्त्री०) १ तिक्तालाबू, कड़वी लौकी। २ स्थावर विषान्तर्गत पत्रविष, पत्तीका ज़हर।

अलम्बुशा (सं० स्त्री०) गोरक्षमुण्डी, गोरखमुण्डी।

अलम्बुद (सं० क्ली०) बालक, बच्चा।

अलम्बुद्धि (सं० स्त्री०) अलं व्यर्था पर्याप्ता वा बुद्धिः। १ निरर्थक बुद्धि, फ़ज़ूल फ़हम, जो समझ किसी कामकी न हो। २ पर्याप्त बुद्धि, काफ़ी फ़हम, जो समझ पूरी हो।

अलम्बुष (सं० पु०) अलं पुष्णाति, अलम्-पुष-क पृषो० पकारस्य वकारः। १ वान्तिरोग, क़ैकी बीमारी। २ प्रहस्त, फैली हुई मुट्ठी। ३ रावणके एक मन्त्री। ४ राक्षस विशेष। घटोत्कचने इसे मार डाला था। ५ भूकदम्बवृक्ष, अजवायनका पेड़।

अलम्बुषा (सं० स्त्री०) १ लज्जावती लता। यह मधुर, लघु और कृमि, कफ तथा पित्त मिटानेवाली होती है। (भावप्रकाश) २ भूकदम्ब, अजवायन। ३ महाश्रावणी, गोरखमुण्डी। ४ गुग्गुल। ५ वृषगाध लौह। ५ लौहमल, लोहेका जङ्ग। ६ चूर्ण विशेष। यह आमवातको दूर करता है। (चक्रपाणिदत्तकृत ८८६) ७ अप्सरो विशेष, कोई परी। ८ गण्डीरी, घेरा, रोक। इस जलरेखाको कोई लांघ नहीं सकता। स्वर्णमृग मारनेको जाते समय रामचन्द्र सीताको चारो ओर यही रेखा खींच गये थे, जिससे बाहर हो रावणने उन्हें हरण किया।

अलम्बुषाद्यचूर्ण (सं क्ली०) औषधविशेष। यह चूर्ण आमवातमें हित है। बनानेका प्रकार यों है—अलम्बुषा, गोक्षुर, गुडूची, वृद्धदारक, पीपल, त्रिवृत्ता, मुस्ता, वरुण, पुनर्नवा, त्रिफला, नागर, इन सब द्रव्योंको खूब महीन चूर्ण बना चूर्णके बराबर मण्डूर चूर्ण मिलाना चाहिये। इसका अनुपान दधि, मण्ड, काञ्जिक, दूध, तक्र, मांसका रस प्रभृति है। इनमें समय पर जो मिल जाये, उसीके साथ सेवन करे। (चक्रपाणिदत्तकृत ८८६)

अन्यप्रकार—अलम्बुषा, गोक्षुर, वरुणमूल, गुडूची, इन सबका क्रमशः भाग बढ़ाकर सबके समभाग वृद्धदारकका चूर्ण मिलाना होता है।

(चक्रपाणिदत्तकृत ८८६)

तीसरा—अलम्बुषा, गोक्षुर, वरुणका मूल, गुडूची, नागर यह सब बराबर एकत्र करके चूर्ण बनाना चाहिये। (भावप्रकाश)

अलम्बुसा, अलम्बुषा देखो।

अलम्बोर्ध्वस्तनी (सं० स्त्री०) जिस स्त्रीका स्तन लम्बा और उभरा न हो, छोटे और झुके हुए सीनेकी औरत।

अलम्बौष्ठी (सं० स्त्री०) जिस स्त्रीके लम्बा ओष्ठ न रहे, छोटे होंठवाली औरत।

अलम्भूष्णु (सं० त्रि०) अलम्-भू-ग्ष्णु। समर्थ, क़ाबिल, पूरा।

अलय (सं० पु०) १ अविलयन, सनातनत्व, सबात, टिकाव,। (त्रि०) २ भवनविहीन, लामकाम, जिसके घर न रहे।

अलर-बलर (हिं० वि०) खराब, बुरा।

अल-रशीद—अब्बास वंशके ५वें खलीफा और मेहदीके

नगरके राजा हुए। मिश्र और सिरीया मुहम्मद इब्न तालके यहुक्षमें पड़ा, जो पहले वहां शासक रहा। अफ़रीका और स्पेन बहुत दिन पहले ही स्वतन्त्र बन बैठा था। सिसिली और क्रीटमें स्थानीय नृपतिने राज्य चलाया। समानीय वंशके अल्-नस्र-इब्न-अहमदने खुरासान और मालवरुन्नहरको घर दबाया। दोलामतीय प्रथम वंशके नरेशोंने तवरिस्तान, जुरजन और माज़िन्दरान पर क़बज़ा किया। कुछ समय पहले ही अबू अली मुहम्मद इब्न ईसेलियास अल् सामानीने किरमान प्रान्त छीन लिया था। करमतीय अबू ताहिर इमाम, बहरीन और इच्च जिलेके मालिक रहे। इसीतरह समग्र राज्य विछिन्न हो जानेपर खलीफाका अधिकार घटा और सारा काम बिगड़ गया। इन्होंने ७ वर्ष २ मास और ११ दिन राज्य किया था। सन् ८४१ ई०को इनके मरनेपर भ्राता अल् सुत्तकीने सिंहासनका उत्तराधिकार पाया।

अलर्क (सं० पु०) अलम् अर्च्यते या, अर्च-अच्, अर्च-घञ्, वा शकन्ध्वादित्वात् टेर्लोपः। १ पागल कुत्ता। २ श्वेत मन्दार। ३ कृमिविशेष। महाभारतके शान्तिपर्वमें इसका विवरण लिखा है। सत्ययुगमें अलर्क नामक एक असुर था, एकबार वह बलपूर्वक भृगुकी स्त्रीको हर ले गया। इसपर क्रुद्ध हो भृगुने उसे यह शाप दिया,—'रे दुर्मति! तूने जो पाप किया, उसके लिये तू मूत्रश्लेष्मभोजी कीट होकर भूतलमें जन्मग्रहण करेगा। फिर जब मेरे वंशमें राम नामक एक पुरुष अवतार लेंगे, तब उनके शुभदर्शनसे तू पापमुक्त होगा।'

द्वापरयुगमें ब्राह्मणका कपट वेश धारणकर कर्ण परशुरामसे ब्रह्म अस्त्रादि सीखने गये थे। एक दिन परशुराम कर्णकी जांघपर शिर रखकर सो रहे। उसी समय खून पीनेके लिये एक कीड़ा कर्णकी जङ्घामें काटने लगा। उस कीड़ेके आठ पैर, तेज़ दांत, सुई जैसे रोयें और सूअर जैसी सूरत थी। कदाचित् गुरुकी नींद टट जाय, इस भयसे कर्ण चुपचाप ज्योंके त्यों बैठे रहे? आख़िर उनको जङ्घासे रुधिर बहकर परशुरामकी देहमें लगा और उनकी नींद टूट गई। उठकर उन्होंने देखा, तो पासमें उस कीड़ेको पाया। रामकी दृष्टि पड़ते ही वह कीड़ा पापमुक्त हो गया।

४ महाराज शत्रुजित्तनय ऋतध्वजके पुत्र। कुमार ऋतध्वज महर्षि गालवप्रदत्त कुवलय नामक अश्व पा कुवलयाश्व नामसे विख्यात हुए थे। वह किसी समय एक पापकर्मा दैत्याधम द्वारा उठाये गये गालवाश्रमका विघ्न मिटाने उक्त अश्वपर चढ़ दुर्मति शूकररूपी दैत्य मारनेको उसके पीछे पातालपुर पहुंचे और वहां गन्धर्वराज विश्वावसुकी दुहिता मदालसाका पाणिग्रहण किया। उसके बाद प्रधान-प्रधान असुरोंको मार मदालसाके साथ साथ घोड़ेपर चढ़ अपने घर वापस आ गये। कालक्रमसे मदालसाके गर्भमें ऋतध्वजके विक्रान्त, सुबाहु और शत्रुमर्दन नामक तीन पुत्रोंने जन्म लिया था। पीछे चौथा पुत्र भूमिष्ठ होनेपर मदालसाने स्वामीके आज्ञानुसार इसका अलर्क नाम रख दिया। राजकुमार अलर्कने कुमारकालमें कृतोपनयन हो, विशिष्ट ज्ञान पा मातृसमीप राजधर्म, वर्णधर्म, आश्रमधर्म एवं नित्यनैमित्तिकादि भेदसे गार्हस्थ्यधर्म सीख यौवनमें पदार्पण करते हुए यथाविधान दारपरिग्रह किया। इसके बाद पिता ऋतध्वज चरम वयसमें उपनीत हो इन्हें राज्य दे तपश्चरण निमित्त वनको गये थे। राजकुमार अलर्क राज्य पा माताके उपदेशानुसार न्यायसे पुत्रकी तरह प्रजापालन करने लगे। इसीतरह कुछ समय राज्य करने बाद यह अपने दूसरे बड़े भाई सुबाहुके चक्रान्तसे काशिराज द्वारा निपीड़ित होनेपर महामति दत्तात्रेयके शरणापन्न हुए। उक्त महाभागके उपदेशानुसार आत्मविवेक लाभ कर इन्होंने सांसारिक बन्धनके छेदनकी वासनासे काशीपति और अग्रज सुबाहुको समुदाय राज्य देनेका प्रस्ताव उठाया था। किन्तु वह राज्य देनेका हेतु सुनकर वे कुछ लिये-दिये ही अपने स्थानको वापस गये। पीछे यह भी अपने ज्येष्ठपुत्रको राज्य सौंप आत्मसिद्धिके लिये वनको चल दिये। (मार्कण्डेयपुराण)

अलर्पिराति (वै॰ त्रि॰) सम्प्रदानोत्सुक, शीघ्रदानेच्छु, जल्द देनेवाला।

अलल्टप्पू (हिं॰ वि॰) मनमाना, वाहियात।

अललबछेड़ा (हिं॰ पु॰) १ घोड़ेका बच्चा। जबतक घोड़ा दूध पीता और सवारी नहीं देता, तबतक अलल बछेड़ा कहलाता है। २ अनभिज्ञ बालक, नादान लड़का। (स्त्री॰) अलल-बछेड़ी।

अललाना (हिं॰ क्रि॰) ज़ोरसे शब्द निकालना, ज़ोर ज़ोर बोलना।

अलक्षामवत् (वै॰ त्रि॰) उत्तेजित होनेवाला, जो उत्सुकाको बन रहा हो।

अलले (स॰ अव्य॰) वाह वाह क्या खूब, शाबाश। नाटकमें जो विदूषकका अभिनय करता उसकी बोलीमें प्रायः यह शब्द काम आता है।

अलम्बा (सं॰ स्त्री॰) १ ज्योतिष्मती, रतनजोत। २ हरीतकी, हड़।

अलवर—१ राजपूतानाके प्रान्तका राज्य। यह अक्षा॰ २७° ४´ १३´´ एवं २८° उ॰ और द्राघि॰ ७६° १०´ तथा ७७° १३´ पू॰के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तर गुड़गांव, नाभा राज्यका बावल एवं जयपुरका कोट कासिम परगना, पूर्व भरतपुर तथा गुड़गांव और दक्षिण एवं पश्चिम जयपुर राज्य है। राज्यका क्षेत्रफल ३१४१ वर्गमील है।

यह स्थान प्रायः पर्वतमय है। प्रतापसिंह नामक व्यक्ति वर्तमान महाराव नृपतियोंके आदि पुरुष रहे। पहले दो ग्राम और मचारी नामक स्थानके अधीश्वर ही प्रतापसिंहका अधिकार था। सन् १७७१ ई॰को जाटों, मुगलों और महाराष्ट्रोंमें परस्पर विवाद बढ़ा, उस समय जयपुरके महाराज भी नाबालिग थे। सुविधा पाकर प्रतापसिंह स्वाधीन हुए और इसका समस्त दक्षिण अंश दबाय बैठे। १७९१ ई॰को प्रतापके स्वर्गवास बाद उनके पोष्यपुत्र बख्तावर सिंहको यह राज्य मिला था। सन् १८०३ ई॰को महाराष्ट्रोंसे युद्ध होते समय बख्तावरने अंगरेजोंका पक्ष लिया। इस युद्धके बाद ही अंगरेज सरकारने इस राज्यका अधिकांश उत्तरांश बख्तावरको सौंप दिया था। उससे सालकी अमद राज्यका आय दस लाख हो गया।

पहले अलवरनरेश अंगरेज सरकारको कोई खबर देते न थे। सन् १८१२ ई॰को बख्तावरने जयपुर राज्यका अधिकृत धोबी और सिक्रावा दुर्ग छीन लिया। अंगरेज सरकारके कहनेसे भी उन्होंने इन दोनों दुर्गोंको वापस देनेसे इनकार किया। इसपर अंगरेजोंकी फौज अलवर आ पहुंची। बख्तावरने फिर निस्तार न देख दोनों दुर्ग छोड़ दिया था। बख्तावरके मरनेपर उनके पोष्यपुत्र बानीसिंह इस राज्यके महाराव बने।

बख्तावरके बलवन्त सिंह नामक कोई जारज पुत्र था। उनके मरनेपर उसने भी उत्तराधिकार पानेकी चेष्टा लगायी। बानी और बलवन्त सिंहमें विवाद बढ़ गया था। सरकारने बलवन्त सिंहके लिये जो व्यवस्था निकाली, वह बानीसिंहने न मानी। इसीसे अंगरेजी फौज अलवर भेजी गयी थी। उस समय पशुविभागमें पड़ अलवरका उत्तर अंश बानीसिंहने बलवन्त सिंहको सौंप दिया। सन् १८५७ ई॰को बानीसिंह स्वर्गवासी हुए। उनके तेरह वर्षके पुत्र शिवदान सिंह महाराव बने थे। सन् १८७० ई॰को शिवदान सिंहने इहलोक परित्याग किया। उनका कोई भी उत्तराधिकारी न रहा। कितने ही अनुसन्धानके बाद नरूक वंशोद्भव ठाकुर मङ्गलसिंह अलवरके राजा बनाये गये।

अलवर नरेश अंगरेज सरकारकी ओरसे सम्मानार्थ पन्द्रह तोपोंकी सलामी पाते हैं। यह राज्य चौदह भागमें बंटा है—१ तिजारा, २ बहरोड़, ३ मन्दावर, ४ कृष्णगढ़, ५ गोविन्दगढ़, ६ रामगढ़, ७ अलवर, ८ बानसूर, ९ कठूमर, १० लक्ष्मणगढ़, ११ राजगढ़ थानागाजी, १२ बलदेवगढ़ और १३ प्रतापगढ़।

इस राज्यका आधेसे अधिक भाग कृषिकार्यमें लगता और माषो ज्वार, बाजरा, धान्य, यव, चना, गेहूं, अफीम तम्बाकू, रूई, इक्षु तथा धान्य उपजता है। पहले इस राज्यमें कितने ही कोईके कारखाने रहे, किन्तु अब एक भी नहीं देख पड़ता। तिजारा

नामक स्थानमें कागज़ बनता है। राजाके पास १८०० सवार, ८७५० पैदल, १० बड़ी और २८० छोटी तोप रहती है।

२ अलवर राज्यकी राजधानी—इस नगरका एक ओर पहाड़ और तीन ओर चहारदीवारी बनी है। लोग कहते हैं, कि निकुम्भ नामक राजपूतोंने चहारदीवारी उठवायी थी। नगरमें पांच फाटक लगे हैं। सड़कें भी खूब पोख्ता बनी हैं। प्रधान भवन यह है,—१ महाराजका प्रासाद, २ महाराज बख्तावर सिंहकी छतरी, ३ जगन्नाथका मन्दिर, ४ कचहरी, तहसीलदारी और ५ त्रिपोलिया यानी फीरोज़ शाह बादशाहके भाई तरङ्ग सुल्तानकी पुरानी कब्र। मुसलमानी इमारतमें मोकनकी सिजदहगाह बहुत अच्छी बनी है। त्रिपोलियाके ठीक १००० फीट ऊपर किला खड़ा, जिसमें नरूक नरेशों का प्रासाद और दूसरी इमारत उठी है। शहरकी चहारदीवारी पहाड़ी चोटीके साथ घाटी पार कर कोई दो मील तक चली गयी है। कहते हैं, कि उसे भी निकुम्भ राजपूतोंने ही उठाया था। जैनियों और सरावगियोंके भी पांच बड़े-बड़े मन्दिर बने हैं। सीलीसेढ़ झील आध कोससे ज़्यादा लम्बी और औसतमें ४०० गज़ चौड़ा बैठता है। झीलसे इस नगरतक साढ़े चार कोस लम्बी नहर लगी, जिससे इधर उधरकी शोभा बढ़ गयी है। मछली बहुत ढेरं पड़ती है। झीलके आस-पास शिकारकी कोई कमी नहीं। लोग प्रायः उसके किनारे आनन्द करने जाते हैं। वाणीविलास प्रासाद और उद्यान नगरसे आध कोस दूर और अपनी विचित्र शोभाके लिये मशहूर है। रजीडण्टीके पासका तालाब बहुत अच्छा है। इस नगरसे चारो ओर पक्की सड़क गयी है।

अलवल्ल (हिं० पु०) मान, नख़रा, ढकोसला।

अलवांती (हिं० स्त्री०) प्रसूता, ज़च्चा, जो औरत बच्चा जन चुकी हो।

अलवासिक् बिल्लाह—अब्बास वंशके ८वें खलीफा और अल मौतसिम बिल्लाहके पुत्र। सन् ८४२ ई०की ५वीं जनवरीको यह बगदादकी गद्दीपर बैठे थे। दूसरे ही वर्ष इन्होंने आक्रमण कर सिसिलीको जीत लिया। यह ५ वत्सर ७ मास १ दिन खलीफा रहे और सन् ८४७ ई०को मर गये। इनके भाई अलमुतवक्किलने राज्यका उत्तराधिकार पाया।

अलवान् (अ० पु०) पशमीने या उनकी चादर। यह अकसर सादा रहता है, गोटा किनारी कुछ नहीं लगता।

अलवायी, अलवांती देखो।

अलवाल (सं० क्ली०) लवं जलकणा न आलाति गृह्णाति रहिर्भूमिर्यस्मात्; लव-आ-ला-क, ततो नञ्-तत्। थलहा, पेड़की चारो ओर पानी रोकनेको मट्टीका बना हुआ घेरा।

अलस् (सं० वि०) दीप्तिहीन, धुंधला, जो चमकता न हो।

अलस (सं० वि०) न लसति कस्मिंश्चित् कार्ये व्याप्रियते; लस अच्, ततो नञ्-तत्। १ दीर्घसूत्री, क्रियामन्द, सुस्त, टालमटोल करनेवाला, जो ज़रूरी काम छोड़ बैठता या पड़ा रहता हो। 'मन्दस्तुन्द परिमृज आलस्य शीतकोऽलसः।' (अमर) (पु०) २ पादरोग विशेष, खरवा। खराब कीचड़ लगनेसे पैरकी अंगुलीके बीचका सड़ना गलना अलस या खरवा कहाता है। (सुश्रुत) ३ विशूचिकाका अवस्थाभेद, किसी क़िस्मका हैज़ा। ४ क्षुद्रकुष्ठरोगभेद, किसी क़िस्मका कोढ़। ५ व्याल जाति ज्वर, कोई बुख़ार। ६ जिह्वारोग, ज़बानका आज़ार। ७ वृक्षभेद, कोई पेड़। 'अलस. पादरोगे स्यात् क्रियामन्दे द्रुमान्तरे।' (विश्व) ८ मुनि विशेष।

अलसक, अलस देखो।

अलसगमन (सं० क्ली०) १ मन्दगमन, सुस्त चाल। (वि०) अलसं गमनं यस्य, बहुव्री०। २ मन्दगामी, धीरे-धीरे चलनेवाला।

अलसता (सं० स्त्री०) आलस्य, सुस्ती।

अलसत्व (सं० क्ली०) अलसता देखो।

अलसा (सं० स्त्री०) न लसति व्याप्रियते; लस-अच्, ततो नञ्-तत् टाप्। १ कार्य करनेमें अक्षम स्त्री, जो औरत काम करनेमें होशियार न हो। २ हंसपदीलता, लाजवन्ती। 'अलसा हंसपद्याम्।' (विश्व)

अलसाना (हिं० क्रि०) अलस होना, सुस्त पड़ना, झुकना, झपकी लेना।

पर अवस्थित और बदावं नगरसे दक्षिण-पूर्व साढ़े पांच कोस दूर है। सन् १४५० ई० को दिल्लीकी बादशाही छोड़ बदावं आनेपर अलाबुद्दीनने इसे अपने नामपर बसाया था। शहरकी जमीन सारस्वत ब्राह्मणोंके अधिकारमें वर्षों से चली आती है। अलाबुद्दीन् ही उन्हें यह दे गये थे।

अलाबु, अलाबू (सं० स्त्री०) न लम्बते शब्दायते लवि (लवि रमेर्नलोपश्च। उण् १।८७) इति उ वा ऊ न लोपः णित्वाद्वृद्धिश्च। तुम्बी, तुम्बक, तुम्बा, पिण्डफला, महाफला, लबुका, तुम्बिका, कद्दू, लौकी।

अलाबु (Langenaria vulgaris, Bottle gourd) शब्दके अपभ्रंशमें हमलोग बराबर लौका या लौकी कहते हैं। यह एक प्रकारकी लताका फल है। इसके पत्ते गोल और डालीके पास कटे होते हैं। पत्तेकी जडमें बड़े-बड़े रेशे होते हैं। ठाट और छप्परपर चढ़नेके समय यही रेशा पल्लव और शाखा आदिमें लपट जाता है। वसन्त और शीत कालमें कद्दू होता है। परन्तु यत्न करनेसे यह लता दूसरी ऋतुमें भी लग सकती है।

प्रधानतः कद्दू दो तरहका होता है,—लम्बा और गोल। इसके अलावा रङ्ग रूप भी कई तरहका देखा जाता है। कोई कद्दू खूब हरा, कोई हलका सफ़ेद, और कोई पीलापन लिये सफ़ेद होता है। किसी-किसी कद्दूका ऊपरी हिस्सा गोल और नीचेका चिपटा होता है। इसकी वीणा, तानपूरा और सितार बनाया जाता है। कितने ही कद्दू गोल होते हैं, परन्तु उनके नीचेका भाग चिपटा नहीं होता। किसी-किसी कद्दूके नीचेका भाग गोल होता सही, परन्तु शिरके ऊपर गड्ढा रहता, जिस पर फिर कुछ अंश उन्नत हो जाता है। उदासी लोग इसीको जल पीनेकी तुम्बी बनाते हैं। जिस कद्दूके ऊपर ऐसा गड्ढा नहीं होता, वैष्णव सम्प्रदाय उसीसे गोपीयन्त्र प्रस्तुत करता है। कोई कोई कद्दू तीन चार हाथ लम्बा होता है। फिर एक जातिकी तुम्बीको 'कड़वी लौकी' कहते हैं। देखनेमें यह सख्त, या कुछ पीत-मिश्रित श्वेतवर्ण होती और खानेमें कड़वी लगती है।

वैद्यशास्त्रके मतसे,—लौकी मिष्ट, हृद्य, रुचिकर, भेदक और गुरुपाक है। इससे पित्त और कफ नष्ट होता है। परन्तु राजवल्लभ कहते हैं, कि इससे कफ बढ़ता है। युरोपीय चिकित्सकोंने भी परीक्षा करके इसके गुणको देखा है। इसके बीजका तेल कपालमें लगानेसे शिरका दर्द दूर हो जाता है। पेशाब बन्द हो जानेपर लौकी, इसके पत्ते, डाली या रेशेका रस सेवन करानेसे पेशाब उतर आता है। ज्वरमें रोगी जब प्रलाप करता, उस समय इसका सत शिरमें लगा देनेसे बहुत उपकार होता है। प्रवाद है, कि अत्यन्त प्रसववेदनाके समय यदि घूरके ऊपरकी लौकीका अखण्ड मूल गर्भिणीके बालमें बांध दिया जाय, तो तुरत ही प्रसव हो जाता है।

लौकी लताकी डाली, अगले हिस्से, शाक और फल सबकी तरकारी बनती है। नवमी तिथिको अलाबु न खाना चाहिये। गोल कद्दू खानेका भी शास्त्रमें निषेध है।

अलाबुक (सं० पु०) अश्वके मुखका रोग विशेष, घोड़ेके मुंहका आज़ार। इसमें घोड़ेके मुंहसे दुर्गन्ध निकलता, तालु सूज जाता और घास या दाना खाने पर दर्द होने लगता है। (जयदत्त)

अलाबुका (सं० स्त्री०) १ कटुदुग्धालाबू, कड़वी सफ़ेद लौकी।

अलाबुनी (सं० स्त्री०) १ कटुदुग्धालाबू, कड़वी सफ़ेद लौकी। २ कटुतुम्बी, कड़आ कद्दू। ३ मिष्ट तुम्बीलता, मीठी लौकीकी बेल।

अलाबुपात्र (सं० क्ली०) तुम्बा, कद्दूका बरतन। इसे प्रायः साधुसंन्यासी ही व्यवहार करते हैं।

अलाबुमय (सं० त्रि०) अलाबु-निर्मित, जो कद्दूसे बना हो।

अलाबुविधि (सं० पु०) अलाबुसे रक्तमोक्षण, लौकीसे खूनका निकालना।

अलाबुसुहृत् (सं० पु०) अम्लवेतस, अमलवेत।

अलाबू, अलाबु देखो।

अलाबूकट (सं० क्ली०) अलाबुना रजः, अलाबू रजोऽर्थे कटच्। अलाबुका रजस, लौकीका रोयां।

अलाबूयन्त्र (सं० स्त्री०) यन्त्रविशेष, कोई बाजा।

अलाभ (सं० पु०) हानि, लाभका अभाव, नुकसान, फायदा न होनेकी हालत।

अलाम (हिं० वि०) अल्लामा, मक्कार, बातूनी, झूठी बात बना धोका देनेवाला।

अलामत (अ० स्त्री०) लक्षण, निशान्, दिखावा।

अलायक (हिं० वि०) नालायक, अयोग्य, खराब।

अलायो (हिं० वि०) १ अलस सुस्त, ढीला। २ बिहार प्रान्तके मुंगेर ज़िलेकी पहाड़ी नदी। कमुओ ग्रामसे दो कोस दक्षिण यह झूल नदमें गिरती और ग्रीष्म ऋतुमें सूख जाती है।

अलायोपुर (आलायपुर)—बङ्गाल प्रान्तके खुलना ज़िलेका गांव। यह भैरव एवं अठारबङ्का नदीके सङ्गम और अक्षा० २२ ३८ उ० तथा द्राघि० ८८ ३१ पू० पर बसा है। यहां प्रधानतः मट्टीके बहुत बढ़िया बरतन बनते हैं।

अलाय्य (वै० त्रि०) न लाह० याय्य, रस्य लकार। १ गमनशील, आगे बढ़नेवाला। (पु०) २ इन्द्र।

अलार (स० पु०) अरायते, ऋ-घञ्, गुण् अत्, रस्य लकार। १ कपाट, किवाड़। २ द्वार, दरवाज़ा। (हिं०) ३ अलाव, धूनी, भट्ठी।

अलाल (हिं० वि०) १ अलस अकर्मण्य काहिल, निकम्मा।

अलाव (हिं० पु०) अलात, कौड़ा। शीतकालमें अपने दरवाज़ेके सामने तापनेको लोग जिस गड्ढेमें घास-फूस और लकड़ी-काठ डाल आग सुलगाते उसे अलाव कहते हैं।

अलावज (हिं० पु०) वादित्र विशेष, कोई बाजा। पुराने समय यह चमड़ेसे मढ़कर तैयार किया जाता था।

अलावनी (हिं० स्त्री०) वादित्रविशेष कोई बाजा। पुराने समय इसे तारसे बजाते थे।

अलावलपुर—पञ्जाब प्रान्तके जालन्धर ज़िलेको करतारपुर तहसीलका शहर। यह अक्षा० ३१ २६´ उ० और द्राघि० ७५ ४२´ पू० पर अवस्थित है। इस नगरमें तोशक दरीको स्त्र निर्माणकी बैठनी और जूतोंसे बड़ी आमदनी उठती है।

अलावा (अ० क्रि० वि०) सिवा, अतिरिक्त, मिला, जोड़।

अलास (सं० पु०) न लस्यति अनेन, करणे घञ्। १ जिह्वास्फोट, जीभका फोड़ा। २ जिह्वागत मुखरोग, जीभमें होनेवाली मुखकी कोई बीमारी। इसमें दुष्ट कफशोणितसे जिह्वातलपर दारुण शोथ उठता है। उसके बढ़ जानेसे जीभ जकड़ और जड़में पक जाती है। (सुश्रुत)

अलास्य (सं० त्रि०) अलस काहिल।

अलाहाबाद—१ युक्तप्रान्तका डिविज़न या विभाग। यह अक्षा० २४° ३०´ एवं २६ ३०´ ३१´´ उ० और द्राघि० ७८ १८ ३०´´ तथा ८३ ७´ ४२´´ पू० के मध्य अवस्थित है। कमिश्नर इस विभागको शासन करते हैं। इसमें कानपुर, फतेहपुर, बांदा, अलाहाबाद, हमीरपुर और जौनपुरका ज़िला लगता है। इसका क्षेत्रफल ११०३२ वर्गमील है। इस विभागमें कोई ६० लाख आदमी बसते हैं।

२ युक्तप्रान्तका ज़िला। यह युक्तप्रान्तीय छोटे लाटके नीचे अक्षा० २४° ४०´ एवं २५ ४० ११ उ० और द्राघि० ८१ ११´ ३०´´ तथा ८२ २१´ पू० के मध्य अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल २८३११ वर्गमील है। इसके उत्तर प्रतापगढ़ ज़िला, पूर्व जौनपुर मिर्ज़ापुर, दक्षिण रीवा राज्य और दक्षिण पश्चिम तथा पश्चिम बान्दा फतेहपुर पड़ता है। यह ज़िला पूर्व-पश्चिम कोई छैंतीस कोस लम्बा और दक्षिण उत्तर कोई बत्तीस कोस चौड़ा बैठता है।

प्राकृतिक आकार—अलाहाबाद गङ्गा और यमुनाके सङ्गमपर है। इसमें अच्छे अच्छे लोग अधिक रहते हैं। जङ्गल बहुत कम है। खेत सींचनेको नहर कूंवे कम रहते बड़ा सुभीता पड़ता है। अनाज और मक्का खूब उपजता है। गङ्गाके दो कोस दक्षिण पहाड़ मिलता है। चीता, भेड़िया, हिरण और जङ्गली सूअर प्रायः देखनेमें आता है।

गङ्गा, यमुना, टोंस और बेलन इस ज़िलेकी प्रधान नदी है। वर्षामें गङ्गा ६०-७० फीट गहरी और जहाज चलाने लायक हो जाती है। रामघाट और

फाफामौमें गङ्गापार उतरनेको नाव खड़ी रहती है। पश्चिमको ओर अलवर झील पड़ता, जो ढायी मील लम्बा और दो मील चौड़ा है। प्रतापपुर, देवरिया और राजापुरमें पत्थर निकलता है। अकबर बादशाहने प्रतापपुर और देवरियासे ही पत्थर मंगा अलाहाबादका किला बनवाया था।

इतिहास—महाभारतमें अलाहाबादके इधर उधरकी भूमि 'वारणावत' बतायी गयी है। पांचों पाण्डवने अपने वनवासका समय इसी प्रान्तमें बिताया। रामचन्द्रके वनवास समय भी चण्डाल-नृपति गुहकने सिङ्गरौरमें उनका स्वागत किया था। सन् ई० से २४० वर्ष पहले बौद्ध नृपति अशोकका अलाहाबादके किलेमें जो शिला-स्तम्भ खड़ा, उसपर इस प्रान्तका सच्चा और पुराना हाल लिखा है। उसमें अशोकके नाम साथ सन् ४थी ई० वाले समुद्रगुप्तके विजयका भी विस्तारित विवरण मिलता है। सन् १६०५ ई० को मुगल बादशाह जहांगीरने फिर स्तम्भ खड़ा करवा फारसीमें अपने सिंहासनारूढ़ होनेका वर्णन दिया है। सन् ४१४ ई० में चीनके बौद्ध-परिव्राजक फाहियानने इस प्रान्तको कोशल-नरेशके अधीन पाया था। दो शताब्द बाद उनके देशवासी युअनचुअङ्गने प्रयागमें आकर दो बौद्ध मठ और कितना ही हिन्दू मन्दिर देखा। फिर सन् ११८४ ई० तक कोई हाल न मिला, जब शहाबुद्दीन गोरीने इस प्रान्तपर आक्रमण किया था। उस समयसे अङ्गरेजी राज्य आरम्भ होनेतक यह प्रान्त मुसलमानोंके हाथ रहा। सन् ई० के १३ वें और १४ वें शताब्द अलाहाबाद कोड़ेका परगना समझा जाता, जहां शासक अधिष्ठित था। सन् १२८६ ई० को कोड़ेमें मुईजुद्दीन् और उनके पिताका सुप्रसिद्ध मिलन हुआ। पुत्रने उसी समय बलबनके स्थानमें दिल्लीके सिंहासनका अधिकार पाया और पिता उसका विरोध करने दौड़ा था। किन्तु अन्तमें दोनों मिल-जुलकर राजधानी पहुंचे। सन् ई० के १३ वें शताब्द [illegible] अलाबाद अलाउद्दीन्के अधीन रहा, जिन्होंने कोड़ेमें [illegible] सुलतान फीरोज़ शाहको [illegible]

पीछे इस प्रान्तके शासकोंमें खूब मारकाट चली। सन् १५२९ ई० को बाबरने पठानोंसे इसे छीना था, अकबरने अलाहाबाद नाम रख दिया। अपने पिताके समय शाहजादे सलीम शासक बनकर अलाहाबादमें रहते थे। खुसरू बागका मकबरा सलीमके बनवायी लड़केकी याद दिलाता है। सन् ई० के १८ वें शताब्द बुंदेलों और महाराष्ट्रोंने कई बार अलाहाबादपर धावा मारा, जब बुंदेलखण्डके महाराज छत्रसालने मुगल शासकोंपर अपनी तलवार उठायी थी। पीछे अराजकता फैलनेपर किसी समय अवधके नवाबों और किसी समय महाराष्ट्रोंका इस प्रान्तपर अधिकार रहा, अन्तको सन् १७६५ ई० में अंगरेजोंने अलाहाबाद नगर दिल्लीके नामधारी सम्राट् शाह आलमको वापस दिया। कुछ वर्ष तक अलाहाबादमें शाही दरबार लगा था, किन्तु सन् १७७१ ई० को शाह आलम् दिल्ली फिर पहुंचे और महाराष्ट्रोंके हाथ जा पड़े। अंगरेजोंने अलाहाबाद अवधके नवाबको पचास लाख रुपये नकदमें दे डाला था। नवाबने खिराज अदा न कर सकनेपर गङ्गा और यमुनाके बीचका कितना ही देश अङ्गरेजोंको सौंपा, जिसे एकमें मिलाकर अलाहाबाद ज़िला बनाया गया। सन् १८५७ ई० की ६ठीं जूनको अलाहाबादके सिपाहियोंने बलवा उठा अपने बहुतसे राजपुरुषोंको वध किया था। उसी बीच नगरवासियोंने भी उद्दण्ड हो जेलके कैदियोंको छोड़ा और जिसी युरोपीय या युरेशायको पाया, उसीको मारपीट ठिकाने लगाया। किन्तु सिखोंकि साहाय्यसे किला अंगरेजोंके हाथ रहा। फिर ११वीं जूनको कर्नल नीलने बलवाइयोंको हटा नगर और देशन ले लिया था। पीछे अलाहाबादके प्रबन्धमें कोई झगड़ा न पड़ा।

अलाहाबाद जिलेमें कोई पन्द्रह लाख आदमी रहते, जिनमें ब्राह्मण बहुत मिलते हैं। अलाहाबाद ही इस जिलेमें ऐसा शहर है, जिसमें पांच हजारसे ज्य़ादा आदमी रहता है। किलेमें खासो युरोपीय [illegible]ौज पड़ी है। यमुना किनारे कुछ टूटे-फूटे पुराने [illegible] ध्वंसावशेष भी देख पड़ता है। व्यापारियों

और कमकीनियोंको अपनी अपनी पञ्चायतके अनुसार काम करना होता है।

इस ज़िलेमें अच्छी ज़मीन बहुत कम मिलेगी। खादका व्यवहार बढ़ा और नहर निकलनेसे खेत सींचनेका सुभीता हो गया है। इलाहाबाद नगरके आसपास अमरूद, नारङ्गी, नाशपाती, अनार, नीबू, केले, करौंदे, आम वग़ैरहका बाग़ लगा, जिससे खूब फल उतरता है। गांवोंमें आम, महुवा इमली और आंवला बहुत है।

इलाहाबाद ज़िलेका व्यवसाय-वाणिज्य ठाकुरों और बनियोंके ही हाथ है। सिवा कङ्कड़ और सज्जी मट्टीके दूसरा धातु यहां नहीं मिलता। माघमें ज़िलेके सामने त्रिवेणी सङ्गमपर बड़ा मेला लगता है। ईष्ट इण्डियन रेलवेने इसे पूर्व-पश्चिम इस छोरसे उस छोरतक पार किया है। नैनीमें यमुनापर लोहेके अठतीसोंका जो पुल बना, वह १११० गज़ लम्बा और नदीसे १०६ फीट ऊंचा है। इस ज़िलेमें भरवारी, सिरसा रोड, करछाना, नैनी, इलाहाबाद, मनौरी, मारवारी, और सिराथू ईष्ट इण्डियन रेलवेके स्टेशन हैं। ग्रैण्ड ट्रङ्क रोड नामक पक्की सड़क अड़तीस कोसतक इलाहाबाद ज़िलेमें रेलवेके समानान्तर निकली है। यमुनाके उसपार बाड़े परगनोंमें बड़ी गर्मी पड़ती और लूएं चलती है।

१ इस ज़िलेकी तहसील। इसका क्षेत्रफल ११२ वर्गमील है।

२ इस प्रान्तकी राजधानी। इसका अक्षा० २५ २६´ उ० और द्राघि० ८१ ५५´ ११´´ पू० है। यह नगर यमुनाके बाम तटपर बसा है। यमुना और गङ्गा मिलनेसे जो त्रिकोण बना, उसी पर क़िला खड़ा है। सन् १५७५ ई० को अकबरने क़िला बनवाया था। किन्तु त्रिवेणी सङ्गमपर एक पुराना क़िला भी रहा। सन् ई० से पहले ३रे शताब्द सलूकसके दूत मेगास्थेनिस यह नगर देखने आये थे। सन् ई० के ७वें शताब्द चीन-परिव्राजक यूयनचुआङ्ग इस नगरको देख लिख गये हैं,—"प्रयाग गङ्गा यमुनाके सङ्गमपर बड़े रेतीले मैदानसे पश्चिम बसा है। नगरके मध्य ब्राह्मणोंका मन्दिर मिलता है। उसमें एक रुपया चढ़ानेसे दूसरी जगह हज़ार रुपये चढ़ानेका फल होता है। मन्दिरके प्रधान भवन सम्मुख एक वृक्ष देख पड़ता, जिसकी शाखाप्रशाखा इधर-उधर खूब फैली है। लोग उसे नरभक्षक प्रेतका स्थान बताते हैं। इसकी चारो ओर उन यात्रियोंके अस्थिका ढेर लगा, जिन्होंने मन्दिरके सम्मुख अपना प्राण विसर्जन किया है। शरीर छोड़नेकी प्रथा अनादि समयसे चली आती है।" फिर जनरल कनिङ्गमने कहा है—'हमारी समझमें चीन परिव्राजकने जिस प्रसिद्ध वृक्षका वर्णन लिखा, वह निःसन्देह अक्षयवट है। आजकल यह वृक्ष ज़मीनके नीचे अंधेरे दालानमें रहा, जो चीनपरिव्राजकके बताये मन्दिरका ही अवशेष मालूम देता है। रशीदुद्दीनने अक्षयवटको गङ्गा यमुनाके सङ्गमपर अवस्थित बताया है। उससे महमूद गज़नवीकी तारीख़ आती है।

प्राचीन समय इलाहाबादको कोई [illegible] हाथ रहा। सन् ११९४ ई० को पहले पहल मुसलमानोंने इसे शहाबुद्दीनकी देखरेखमें जीता था। सन् १५२८ ई० को बाबरने यह नगर पठानोंसे छीना और १५७५ को अकबरने क़िला बनवा इसका नाम इलाहाबाद रखा। अकबरका शासन समाप्त होते समय शाहज़ादे सलीम इलाहाबादके ज़िलेसे शासक बनकर रहे थे। सलीम जब दिल्लीके सिंहासनपर बैठे, तब उनके लड़के खुसरूने बखेड़ा उठाया; किन्तु शीघ्र ही वे दबकर अपने बड़े भाई परवेज़को सौंपा गया। सन् १६१५ ई० को खुसरूके मरनेपर खुसरोबाग़ इलाहाबादमें एक मक़बरा बनवाया गया था। सन् ई० के १८वें शताब्द मुग़ल शक्ति नष्ट होते समय इलाहाबादने बहुत बुरे दिन देखे। सन् १७३६ ई० को यह महाराष्ट्रोंके हाथ आ पड़ा, जिन्होंने सन् १७५१ ई० तक राज्य किया था। किन्तु पीछे फ़र्रुख़ाबादके पठानोंने शहर तोड़फोड़ दिया। सन् १७५३ ई० में अवधके नवाब सफ़दर जङ्गने इलाहाबाद ले १७६५ तक अपने हाथ रखा। सन् १७६५ ई० के अक्टोबर मास बक्सरमें जीत होनेपर अंगरेज़ोंने इलाहाबाद

बादशाह शाह आलमको सौंप दिया था। किन्तु सन् १७७१ ई० को शाह आलमके महाराष्ट्रोंसे जा मिलनेपर अंगरेजोंने धोका समझ पचास लाख रुपये पर इसे अवधके नवावको दे दिया। किन्तु नवावके कर न दे सकनेपर उनसे अलाहाबाद नगर और जिला अंगरेजोंने पाया था। सन् १८३३ से १८३५ ई० तक अलाहाबाद युक्तप्रदेशकी राजधानी रहा, पीछे सरकार आगरे चली गयी। सन् १८५८ ई० को सिपाहियोंका बलवा मिटनेपर यह नगर फिर अपने प्रान्तकी राजधानी बना है।

सन् १८५७ ई० के विद्रोह समय इस नगरमें बड़ी मारकाट हुई। मेरठमें बलवा उठनेकी खबर १२ वीं मईको अलाहाबाद पहुंची थी। ६ ठीं जूनको सन्ध्या समय सिपाहियोंने खुले तौरपर उपद्रव उठा कितने ही अंगरेज़ोंको मार डाला और ख़ज़ाना लूट लिया। बलवेके वक्त, कितने ही जख़्मी और माली अंगरेज़ किलेमें रहे। लूटमारमें शहरके लोगोंने सिपाहियोंको साथ दिया, ईसाइयोंका मकान जलाया और हरेक युरोपीयको पकड ठिकाने लगाया था। कैदख़ाना तोड़ा और कैदी छोड़ा गया। कोई मौलवी नगरके नरेश बने थे। ११वीं जूनको जनरल नीलके न पहुंचनेतक किलेकी फौज बलवाइयोंका सामना पकडते रही। उन्होंने आते ही दारागञ्जके दलको मार भगाया। १५ वीं जूनको किलेकी तोपोंने गोले मार कीडगञ्ज और मूलगञ्जपर क़ब्ज़ा किया था। १८ वीं जूनको सवेरे अलाहाबाद बलवाइयोंसे ख़ाली हुआ।

किला आज भी देखने योग्य बना और गङ्गायमुनाके सङ्गमपर मस्तक उठाये खड़ा है। इहातेमें अफसरोंका मकान, बारूदखाना और बारिक है। पुराने महलमें अस्त्रागार रखा गया है।

बड़ी-बड़ी इमारतोंमें सरकारी दफतर, कचहरी, युरोपीय बारिक, अजायबखाना और लाईब्रेरी है। अलाहाबादका म्यूर सेण्ट्राल कालेज युक्तप्रदेशकी शिक्षाका प्रधान स्थान है। सन् १८७४ ई० में लार्ड नोर्थ ब्रुकने इसकी नीव डाली थी। नैनीका अलाहाबाद सेण्ट्राल जेल जैसा बडा कैदख़ाना भारतमें दूसरी जगह देख नहीं पडता।

यद्यपि इस नगरमें कोई बड़ा व्यापार नहीं होता, तथापि उत्तरभारतकी रेल खुल जानेसे कितना ही माल आया जाया करता है। प्रयाग शब्दमें अपरापर विवरण देखो।

अलिंश (वै० पु०) पिशाच, शैतान्।

अलि (सं० पु०) अलति दंशे, अल-इ। १ भ्रमर, भौंरा। २ वृश्चिक, बिच्छू। ३ काक, कौवा। ४ कोकिल, कोयल। ५ मदिरा, शराब। (हिं० स्त्री०) ६ सखी, सहेली।

अलिक (सं० क्ली०) अल्यते भूष्यते, अल कपिल्लिकादित्वात् इकन्। १ ललाट, मत्था। 'अलाटमलिकम्।' (अमर) २ कपोल, गाल।

अलिकमत्स्य (सं० पु०) १ अङ्गार। २ भिन्नतिल। ३ तैलभृष्टमांस। ४ पिष्टक।

अलिकसन्दर, अलिक्सन्दर देखो।

अलिकुल (सं० क्लो०) अलिकी पंक्ति, भौंरेका झुण्ड।

अलिकुलप्रिया (सं० स्त्री०) काष्ठशेवती, चमेली।

अलिकुलसङ्कुल (सं० पु०) अलिकुलेन भ्रमरसमूहेन सङ्कुलः व्याप्तः। १ कुलक वृक्ष, हरसिंघारका पेड। (त्रि०) २ भ्रमरसमूह-व्याप्त, भौंरेके झुण्डसे भरा हुआ।

अलिकुलसङ्कुला (सं० स्त्री०) १ कण्टकशेवती, कांटोली सेवती। २ कुलक वृक्ष, हरसिंघारका पेड।

अलिक्लव (वै० पु०) पक्षिविशेष, किसी क़िस्मकी चिड़िया। यह मुर्दाख़ोर होता है।

अलिगर्द (सं० पु०) अलिरिव वृश्चिक इव गर्धति दंष्टुमाकाङ्क्षति, अलि-गृध-अच्। जलसर्प, पनिहा साप।

अलिगु (सं० पु०) अलेर्भ्रमरस्येव मधुरा गौर्वाणी कान्तिर्वा यस्य, बहुव्री०। गर्गादिके अन्तर्गत ऋषिविशेष।

अलिङ्ग (सं० त्रि०) नास्ति लिङ्गं ज्ञापकहेतु चिह्नं यस्य, नञ्-बहुव्री०। १ अनुमान लगानेके हेतुसे शून्य, जिसे फर्ज करनेको कोई सबब न मिले। २ लिङ्ग-

रहित, जो कोई चिह्न न रखता हो। (पु०) ३ वेदान्त मतसे सिद्ध परमात्मा। नञ्‌ तत्। ४ लिङ्गभिन्न जो कोई चिह्न न हो। ५ दुश्चिह्न, बुरा निशान्।

अलिङ्गिन् (सं० त्रि०) न लिङ्गी वेशधारी, नञ् तत्। धर्मध्वजी, सच्चा।

अलिजिह्वा (सं० स्त्री०) क्षुद्रजिह्विका, मुखका कौवा। (Uvula) यह मुखमें कठिन तालुके प्रान्तभागपर ऊपरसे नीचेको लटकती और मांसमय होती है। जुकाम या खांसी होनेसे अलिजिह्वा आकारमें कुछ बढ़ जीभकी जड़के नीचे और गलेके पास पहुंच जाती, इसीसे खांसीका ज़ोर ज़ियादा पड़ता है। ज़ियादा बढ़नेसे हमारे देशको स्त्री सज्जी मट्टी और चना एकमें मिला इसके अग्रभागपर लगा देती हैं। इसी लिये चिकित्साके मतसे इसपर कास्टिक लोशन लगाना चाहिये। किन्तु बहुत ही बढ़ जानेसे इसके अग्र भागका किञ्चित् अंश काट डालना आवश्यक है।

तुण्ड देखो।

अलिजिह्विका, अलिजिह्वा देखो।

अलिञ्जर (सं० पु०) अलीन् मक्षिकादीन् जरति तुच्छयति तिरस्करोति वा, अलि जॄ-अच्, पृषो० मुम्। १ अम्लय कलाधार, पानी रखनेको मट्टीका छोटा बरतन, झझभर, सुराही। २ जल विशेष किसी किस्मका आबखुरा। यह रूक्ष, शीतल, विशद, तुवर, मधुर, क्षार, तिक्त, स्वादिष्ट, वातकृत् एवं पचने पर कटु निकलता और श्वास कास तथा श्लेष्माको दूर करता है। (वैद्यनिघण्टु)

अलिता (सं० स्त्री०) अलसाक खपरा। यह रूक्ष एवं तिक्त होती, लघु, अरुचि, कण्ठरुज, व्रण दोष कफ तथा वातको दूर करती और दूसरे गुणमें लाक्षावत् रहती है। (वैद्यनिघण्टु)

अलिदूर्वा (सं० स्त्री०) अलिरिव अलिता दूर्वा, कर्मधा०। मालादूर्वा किसी किस्मकी दूब।

मालादूर्वा देखो।

अलिन् (सं० पु०) अलं भूषिता पुच्छाभरणलक्ष्मी तदाकारे अस्त्यर्थ वा विषतीक्ष्ण, अस्त्यर्थे इनि। १ वृश्चिक, बिच्छू। २ भ्रमर, भौंरा।

अलिन (सं० त्रि०) अल बाहु० इनन्। १ पर्याप्त, काफ़ी। २ दृढ़, भारा। ३ अपरिमित, अनगिनत। ४ तपस्याद्वारा अति शुद्धि प्राप्त। (वै० पु०) ५ जाति विशेष, कोई कौम।

अलिनी (सं० स्त्री०) भ्रमरसमूह, भौंरेका झुण्ड।

अलिन्द (सं० पु०) अलति भूषयति, अल कर्मणि बाहु० किन्दच्। १ द्वारप्रकोष्ठ, दरवाज़ेका कमरा। २ बहिर्द्वारस्थ चत्वर बाहरी दरवाज़ेका चबूतरा। ३ द्वारदेश बरामदा। ४ देश विशेष, कोई मुल्क। ५ तद्देशवासी अलिन्दका बाशिन्दा। महाभारतके उद्योगपर्वमें अलिन्द नृपतिका नाम लिखा है।

अलिपक (सं० पु०) न लिप्यते एकत्र स्थाक्रम्यते; लिप कर्मणि वुन्‌ नञ् तत्। १ भ्रमर, भौंरा। २ कोकिल, कोयल। ३ कुक्कुर, कुत्ता। ४ दंश विषकृत, माछीदार।

अलिपत्रा अलिपत्रिका देखो।

अलिपत्रिका (सं० स्त्री०) अलिवत् चित्र रूप पत्रं यस्याः, बहुव्री०। वृश्चिकपत्राख्य लता, बिछुआकी बेल।

अलिपर्णिका अलिपत्रिका देखो।

अलिपर्णी, अलिपत्रिका देखो।

अलिप्रिय (सं० क्ली०) अलेः भ्रमरस्य प्रियं, ६ तत्। १ रक्तोत्पल, लाल कमल। २ धाराकदम्ब वृक्ष। ३ आम्रवृक्ष, आमका पेड़। ४ कदम्बवृक्ष कदमका दरख़्त।

अलिप्रिया (सं० स्त्री०) १ पाटलावृक्ष, पाडरीका पेड़। २ सूक्ष्म वृक्ष, छोटी जामनका दरख़्त।

अलिम्पा (सं० स्त्री०) अनभिलाष, वैराग्यसे, ख़ाहिश न रखना।

अलिमक (सं० पु०) अलिरिव मयते विरवयति स्वेन, अलि मन् कर्मणि वुन्। १ भेक, भेड़क। २ कोकिल, कोयल। ३ भ्रमर, भौंरा। ४ मधूक वृक्ष, महुआका पेड़। ५ पद्मकेसर, कमलका रेशा। 'अलिमकोंके लिये भाये कमलों।' (शिव)

अलिमाला (सं० स्त्री०) भ्रमरसमूह, भौंरेका झुण्ड।

अलिमोदा (सं० स्त्री०) अलीन् भ्रमरान् मोदयति आह्लादयति; अलि-मुद-णिच्-अण्, उप० समा०। अग्निकारी वृक्ष, अरनीका पेड़।

अलिमोहिनी (सं० स्त्री०) केविका पुष्पवृक्ष, केव ड़ेके फूलका दरख़्त।

अलिम्पक, अलिमक देखो।

अलिम्बक, अलिमक देखो।

अलिया (हिं० स्त्री०) आलय, कोई चीज़ रखनेकी जगह। यह अकसर दीवारमें बनायी जाती है।

अलिल (सं० पु०) ऋच्छति सततं शून्ये परि-भ्राम्यति, ऋ-इलच् रस्य लः। वेदान्तप्रसिद्ध गगन-विहारी पक्षी विशेष, कोई ख़याली परिन्द।

अलिवल्लभ (सं० पु०) अलीनां वल्लभः प्रियः, ६-तत्। रक्तपाटला वृक्ष, लाल पांडरीका पेड़। (स्त्री०) अलिवल्लभा।

अलिवाहिनी (सं० स्त्री०) अलीन् वाहयति सौर-भेन इतस्ततो भ्रमयति, अलि-वह-णिच्-णिनि ङीप्। केविका वृक्ष, केवड़ेका पेड़।

अलिविराव (सं० पु०) भ्रमरसंगीत, भौंरेकी भनकार।

अलिविरुत (सं० क्ली०) अलिविराव देखो।

अलिसमाकुल (सं० पु०) पुष्पवृक्ष विशेष, किसी क़िस्मकी सेवतीका पेड़।

अली (हिं० स्त्री०) १ सखी, सहेली। २ पंक्ति, क़तार। (पु०) ३ भौंरा।

अली अकबर—बम्बई प्रान्तवाले कम्बे और सूरत ज़िलेके शासक। पहले यह घोड़ेके सौदागर रहे और ईरानके इस्फ़हान प्रान्तसे सात असली अरबी घोड़े आगरे बेचने लाये थे। शाहजहांने छः घोड़े पचीस हज़ार रुपयेमें ख़रीदे और सातवेंसे अत्यन्त प्रसन्न हो पन्द्रह हज़ार रुपये दिये। सन् १६४६ ई०को इनके किसी हिन्दू द्वारा मारे जानेपर मुबज्ज़िन्-उल्-मुल्कको शासनका उत्तराधिकार मिला था।

अली आबाद—युक्तप्रदेशके बाराबङ्की ज़िलेका गांव। यह अक्षा० २६: ५१´ उ० तथा द्राघि० ८१: ४१´ पू०में पड़ता और दरयाबादसे रुदौली जानेवाली सड़कपर बसता है। पहले अली-आबाद अपने करघों और कपड़ेके कामोंके लिये मशहूर था। इसमें ज़्यादातर जुलाहे रहते हैं।

अली इब्राहीम खान्—विहार प्रान्तीय मुंगेर ज़िलेवाले हुसैनाबाद गांवके कोई सम्भ्रान्त पुरुष। दिल्लीके बादशाह शाह आलमने सरोपाव, शशहज़ारीकी जगह और अमीन-उद्-दौला अज़ीज़-उल-मुल्कका ख़िताब दिया था। 'सैर-उल-मुतख़रीन्' में इनकी बड़ी तारीफ़ लिखी है। पहले अलीवर्दी खान्ने इन्हें मुरशिदाबाद बुला बड़ी उपाधि दी पीछे यह नवाब मीर क़ासिम अली खान्के एतबारी मुसा-हब बन गये थे। इन्होंने उन्हें नेपालपर चढ़ने और अंगरेज़ोंसे लड़नेको रोका। पटनेमें मीर क़ासिमके हार जानेपर भी यह स्वामिभक्त बने रहे। बक्सरमें हार मीर-क़ासिमके उत्तरकी ओर भागनेपर इन्होंने मुरशिदाबाद वापस आ नवाब मुबारक-उद्-दौलाके दीवानका पद पाया। अन्तको इन्होंने मुहम्मद रज़ा खान्की कह-सुनकर कंदसे छोड़ा दिया था। नवाब, मुन्नी बेगम और गवरनर-जनरलके ऊंची जगह देते भी यह उससे अलग रहे। फिर इन्होंने वरेन हेष्टिङ्गसके साथ जा चेतसिंहका उपद्रव शान्त होने-पर सन् १७८१ ई० को बनारसकी जजी पायी थी। भाईका नाम अलीक़ासम रहा। इनके लड़के नवाब अली खान्को सरकारने खान् बहादुरका ख़िताब दिया था।

अलीक (सं० क्ली०) अल्यते भूष्यते अलति इष्टं निवारयति वा, अल-कीकन्। अलीकादयश्च। उण् ४। २५। १ ललाट, मत्था। २ मिथ्या, नाराःती, झूठ। 'अलीकमप्रिये भाळे वितथे।' (हेम) ३ स्वर्ग, विहिश्त। (त्रि०) अलीकमस्त्यस्य। ४ अप्रिय, नागवार। ५ मिथ्याविशिष्ट, नाराःत। (हिं० स्त्री०) ६ बेराही, कुरीति। (वि०) ७ बेराह, मार्गसे विचलित।

अलीकता (सं० स्त्री०) मिथ्या, नाराःती, झूठापन।

अलीकमत्स्य (सं० पु०) अलीकः भ्रष्टः मत्स्यः

द्रव। पिदक विशेष, तिल द्वारा भाड़ारपर भूना हुआ मावविशेष, तैलमें भुनी हुई उड़दकी पकोड़ी।

पलीकिम् (स० त्रि०) १ अप्रिय, नागवार, जो भला मालूम न होता हो। २ असत्य, झूठ, धोखा देनेवाला।

पलीक्य, पलीकिम् देखो।

पलीमऊ—१ युक्तप्रदेशके एटा जिलेकी तहसील। यह गङ्गा और काली नदीके मध्य अवस्थित है। इसमें चार परगने लगते हैं,—पाळमनगर, बरना, पटियाली और निधिपुर। इसका भूमिपरिमाण प्रायः ३२२ वर्गमील है। २ इसी तहसीलका नगर। यहां पक्की सड़क बाजार और पड़ा बड़ा मकान बना है। इसमें सन् १८८१ ई०को बनी मालूत खानकी मसजिद और महीका किला प्रधान है।

पलीगढ़—युक्तप्रदेशका एक जिला। यह अक्षा० २७ २८´ ३०´´ तथा २८° १० उ० और द्राघि० ७७ ३१´ ११´´ एवं ७८° ३१´ ११´´ पू० के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल १९११ वर्गमील है। इसके उत्तर बुलन्दशहर जिला, पूर्व एटा, दक्षिण मथुरा जिला और पूर्व मथुरा जिला तथा यमुना नदी पड़ती है।

भौतिक दृश्य—यह जिला गङ्गा और यमुनाके बीच उस बड़े कछारका प्रधान अंश होता, जो साधारणतः दोआब कहलाता है। बरातल चौड़ा और पूरा मैदान है जो समुद्रतलसे ६०० फीट ऊंचा पड़ता और दक्षिण पूर्वको कुछ ढलता है। दोनों ओर नदीकी घाटी मौजूद है। बीचसे गङ्गाकी नहर निकली, जो मैदानको सींच देती और फरुखाबादके पास दो शाखामें बंट कानपुर तथा इटावेको चली जाती है। नहरसे खेत सदा हरे-भरे रहते, जिनके पास अच्छे अच्छे गांव बसते हैं। अंगरेजी राज्य होनेसे इस जिलेका जङ्गल काट डाला गया है। कोई १६७६ एकर भूमिमें घास वगैरहका काम है। किसीको इस जमीनका शौक नहीं देखते। सरकारने अपनी ओरसे जितना हो बाग लगाया है। नदीमें जगह जगह पिंडोल मिलता, जो पानी पानीसे बढ़ा पड़ता किन्तु इधर उधर बालूदार जमीन भी मौजूद है। दक्षिणकी ओर उपज सबसे अच्छी होती है। बरातलसे कुछ ही फीट नीचे प्रत्येक स्थानमें कड़ड़ निकलता है। यह मकान बनाने और सड़कपर बिछानेके काम आता है। कहीं जमीन ऊसर पड़ता, जिसमें कुछ उपज नहीं बढ़ता। दिनको ऊसर बरफ-जैसा चमकता है। नहर निकलनेसे इसकी बढ़ती हुयी है। दक्षिण-पूर्व गङ्गा और पश्चिम यमुना नदी बहती है। नदी किनारे पशु चरते हैं। काली नदी इस जिलेमें उत्तर पश्चिमसे दक्षिण पूर्वको बहती हुयी एटा जिले जा पहुंचती है। इसपर दो जगह पुल बंधा है। नीमनदी काशीनदीमें जा मिलती है। सकसायी और मोहनपुरमें पुल बंधा, और पानी खेत सींचनेके काम आता है। कर्णनदी, हियाल, सेंमर और रिन्द गर्मीमें सूख जाती है। साधारणतः इस जिलेका मैदान बहुत उपजाऊ है।

इतिहास—इस जिलेके प्राचीन इतिहासमें कोयल नगरका कुछ हाल मिला, जिसके पास किला और रेलवे-स्टेशन बना है। कहते हैं कि कोमवराव किसी चन्द्रवंशीय नृपतिने इसे अपने नामपर बसाया, किन्तु बलरामने कोल दैत्यको मार वर्तमान नाम रखा था। फिर कोई इस जिलेको राजपूतोंकी सम्पत्ति बताता, जिनमें बैरनके राजाने सन् ई० के १२ वें शताब्दमें तक अपने अधीन रखा। सन् ११८४ ई० को कुतब-उद्दीन् दिल्लीसे कोयलपर चढ़े थे। मुसलमान ऐति हासिकका कहना है—'उस समय जो लोग होशि यार रहे, वह मुसलमान हो गये, किन्तु जिन्होंने अपनी पुरानी चाल न छोड़ी, वह तलवारसे मारे पड़े।' फिर नगरमें मुसलमान शासकोंका प्रभाव बढ़ा, किन्तु हिन्दू राजाओंने भी अपना बल बनाये रखा था। सन् ई० के १४ वें शताब्द तैमूरके आक्रमणसे इसे बड़ी क्षति उठाना पड़ी। सन् १५२६ ई० को मुगलोंके दिल्ली लेने बाद बाबरने अपने साला कचक अलीको कोयल का शासक बनाया था। अकबरके समय इस जिलेमें बड़ी ही धूमधाम रही। कितनी ही मसजिद आज भी खड़ी और मुग लोंके समयकी याद दिलाती है। किन्तु औरङ्गजेबके मरने बाद यह जिला जब

उस समय पटनेमें बड़ा विभ्राट् उपस्थित था। बञ्जारा नामक एक चोरोंके दलने अब चारो-दलेके इसकी नगरमें खूब और लूट-पाट लोगों को व्यतिव्यस्त कर दिया। इस तरह उपद्रव मचा, कि सरकारी खजानेका रुपया भी वाज लूट लेते थे। अलीवर्दीने उन दुष्टों और कितने ही दुर्दान्त जमींदारोंको दमन करनेके लिये अनेक चापगान सैन्य संग्रह की। अब्दुलकरीम खाम् उसके अध्यक्ष रहे। बहुत परिश्रमसे चोरो और जमींदारोंको दमन कर, उनका सञ्चित धनरत्नादि इन्होंने ग्रहण किया। इनकी दक्षता एवं चतुर बुद्धि देख दिल्लीके सम्राट्ने 'महावतजङ्ग' उपाधिसे विभूषित किया था।

जो लोग बहुत चतुर होते, वे प्राय अधिक सन्दिग्ध रहते हैं। इन्होंने भी सन्देहके फन्देमें पड़ अपने प्रिय सेनाध्यक्ष अब्दुल करीम खाम्को हत्या कर डाली। सन् १७४० ई०को सम्राट् मुहम्मद शाहके प्रधान सचिव ऐजाज् खाम्ने इनको बङ्गाल, बिहार और उड़ीसाका शासनभार अर्पण किया। उस वर्ष अलीवर्दी खाम्ने नवाब सरफराज खाम्के विरुद्ध युद्धयात्रा की। उसी समय सरफराजको मृत्यु हुई। अलीवर्दी सरफराजका सञ्चित बहुत द्रव्य प्राप्त किया, तथा मुहम्मद शाह और दिल्लीके प्रधान अमीरको प्रसन्न रखनेके लिये १ करोड़ ७० लाख रुपया नजरानाके तौरपर भेज था दिया। उस समय सम्राट्ने इनको बङ्गाल, बिहार और उड़ीसाका सूबेदार एवं सात हजार सैन्यका नायक बना, यथा अब सुरुज और हिसाम-उद्-दौला प्रभृति कतिपय उपाधि प्रदान किये थे।

मनुष्यका मन सब समय समान नहीं रहता। अलीवर्दी एक समय सम्राट्की आंखमें खटक गये। १७४१ ई०को सम्राटने सुरीद खाम्को सरफराजका समस्त सञ्चितादि एवं दो वर्षकी आमदनी वसूल करनेके लिये बङ्गाल भेजा। किन्तु अलीवर्दी कौशलसे सुरीदको राजमहलमें रख कार्य कई लाख रुपया नगद ले उनके समीप उपस्थित हुये। इस घटनाके कुछ दिन बाद उड़ीसाके शासनकर्ता मुर्शिद-कुलीके विरुद्ध युद्धयात्रा की। मुर्शिद कुली पराजित हो जामाता सहित बालेश्वर भाग गये। अलीवर्दी अपने भ्रातुष्पुत्र सैयद अहमदको उड़ीसाका भार दे मुर्शिदाबाद चले आये।

कुछ दिन बाद सैयदके अत्याचारसे प्रजा विद्रोह उठा। लोगोंने सैयदको कैदकर बुकर खाम्पर शासनभार डाला। यह समाचार सुनते ही अलीवर्दी ससैन्य महानदीके तीरपर उपस्थित हुए, और बुकर खाम्को परास्त कर मुहम्मद मासूम् खाम्को शासन भार सौंपा। सन् १७४१ ई०को रघुजी भोंसलाने बङ्गालका चतुर्थांश कर लेने भास्करपण्डितको ससैन्य बङ्गाल भेजा।

वर्धमानमें महाराष्ट्रोंके साथ युद्ध हुआ था। उन्होंने प्रस्ताव किया, कि दस लाख रुपये पानेसे लौट जाते। अलीवर्दी पहले उनके प्रस्तावसे सम्मत हो गये थे। किन्तु लोभीकी आकाङ्क्षा मोठ नहीं जाती, अर्थलोलुप महाराष्ट्र करोड़ रुपया मांगने लगे। असम्भव प्रार्थना सुन इन्होंने रुपया देना अस्वीकार किया था।

सन् १७४२ ई० को भास्कर पण्डितके सैन्यगणने जगत्सेठका धनागार लूट लिया और हुगली, वर्धमान वीरभूम राजशाही राजमहल, मेदिनीपुर तथा बालेश्वर पर्यन्त अधिकार किया। उसी समय अलीवर्दीखाम्ने कलकत्ताके अङ्गरेजोंको नगरके चारो तरफ खाता खोदनेकी आज्ञा दी थी, उसे अब 'मराठा डिच' कहते हैं। सन् १७४३ ई०को रघुजी भोंसले भवानके लड़ने आये थे। उसी समय पेशवा बालाजी राव भी सम्राट्से प्राप्य ग्यारह लाख रुपये लेने इनके पास पहुंचे। पेशवाने रघुजीको भगानेमें मदद की। समय पाकर वह अलीवर्दीसे मिल गये और रघुजीके पैर उखाड़ दिये। सन् १७४४ ई०को भास्कर पण्डितने फिर इनके विरुद्ध अस्त्र उठाया था। किन्तु अन्तको वह इनसे मिलते ही वैकुण्ठधाम सिधारे।

सन् १७४५ ई०को सेनापति मुस्तफा खाम्ने इनसे विवाद बढ़ा बिहार पर आक्रमण मारा था। अलीवर्दी खाम्के आदेशसे जब तत्कालीन शासनकर्ताने

नीचा देखाया, तब उन्होंने चुनारमें जा आश्रय लिया। सन् १७४४ ई० को रघुजी भोंसलेने फिर इनके विरुद्ध अस्त्र उठाया, किन्तु विहार और कटकके युद्धमें पराजय पाया था। उसी वत्सर अलीवर्दीके दौहित्र शीराज् उद्-दौलाका महासमारोहसे विवाह हुआ। सन् १७४७ ई० को इन्होंने मीरजाफर खान्को कटकके महाराष्ट्रोंपर आक्रमण करनेको भेजा था।

उस समय शमशेर खान् विहारके शासनकर्ता रहे। उन्होंने जैन्-उद्-दीनको मार डाला और अलीके भाई हाजी अहमद एवं उनकी कन्याको वन्दी वना विहारपर अधिकार जमाया। विद्रोहीको दवानेके लिये यह स्वयं ससैन्य विहार आये और भागलपुरमें महाराष्ट्रोंसे लड़ पड़े थे। फिर जामीजी और मीर हवीवने चालीस हजार सवारोंके साथ विद्रोहियोंमें मिल जानेकी चेष्टा चलायी। किन्तु सुचतुर और विचक्षण अलीवर्दीके रण-नैपुण्यसे उनकी आशा पूरी न उतरी। घोरतर युद्ध हुआ। विद्रोहियोंके अधिनायक सरदार खान् और शमशेर खान् खेत आये थे।

सन् १७५० ई० को इन्होंने कटकसे महाराष्ट्रोंको मार भगाया। किन्तु उन्होंने फिर इस प्रदेशको जीत लिया था। महाराष्ट्रोंके अत्याचारसे वङ्गदेशमें आवालवृद्ध-वनिता सभी व्यतिव्यस्त हुये। इतना उपद्रव वढ़ा, कि अन्तःपुरकी रमणी वालकोंको महाराष्ट्रोंका डर देखा-देखा सुलाती रही।

उपद्रवसे प्रजा वचानेके लिये यह महाराष्ट्रोंको कटक प्रदेश और वङ्गालका चतुर्थांश करस्वरूप देनेपर सम्मत हुये। इसी पर महाराष्ट्रोंके उत्पातसे वङ्ग देश छूटा था। इन्होंने भयभीत प्रजाको फिर अपने अपने देश ला गृहादि वनानेका आदेश दिया और जमीनमें प्रचुर शस्य उत्पन्न होनेपर ध्यान लगाया। १६ वत्सरके राजत्व वाद सन् १७५६ ई० को ६ठीं अप्रेलको नवाव अलीवर्दी खान् ८० वर्षकी अवस्थापर उदरीरोगसे आक्रान्त हो मर गये।

अलीवर्दी ज्ञानी और कार्यकुशल रहे। यह वाल्यकालमें कभी हथा अलस-आमोदसे समय विताते न थे। प्रातःकाल होनेसे दो घण्टे पहले शय्यासे उठते और ईश्वरका भजनादि कर सवेरे राजकार्य देखने सभामें जा पहुंचते। इन्हें पद्य और इतिहास वहुत प्रिय था। कहते हैं, इन्होंने राजा कृष्णचन्द्रसे वारह लाख रुपया नजराना मांगा और रुपया न आनेसे उन्हें कैद किया। पीछे कृष्णचन्द्रकी वैषयिक वुद्धिसे सन्तुष्ट हो इन्होंने उन्हें अव्याहति दी और उनसे धर्मसम्वन्धीय नाना विषय पर सर्वदा वात की थी। कृष्णचन्द्र प्रायः प्रति रजनीके प्रथम भाग नवावके पास रहते और मध्य-मध्य उर्दू भाषामें महाभारत प्रभृतिको अनुवाद कर सुना देते। नवाव इससे वहुत आमोदित होते थे।

इनमें अर्थप्रयासका दोष रहा। किन्तु उससे यह प्रजाका सर्वनाश कर धन वटोरनेकी चेष्टा न चलाते थे। मरनेसे कुछ दिन पहले यह अपने उत्तराधिकारी शीराज-उद्-दौलाको समझाने लगे,—"शीराज! विदेशी लोगोंका विश्वास न करना। वह किसी तरह इस देशमें वढ़ने न पायें। सावधान! उन्हें इस देशमें कहीं किला वनाने न देना।"

अलीशाह—सूर जातिके वीरविशेष। सन् १५२८ ई० को अस्सी गुजराती नाव ले यह चौल नदीपर पहुंचे और अहमदनगरकी भूमि तथा पोर्तुगीज् व्यवसायको वड़ी क्षति दी।

अलीष्ट (सं० पु०) तिलकवृक्ष, तिलका पेड़।

अलीह (हिं०) अलीक देखो।

अलु (सं० स्त्री०) १ क्षुद्र कलसी, छोटा घड़ा, गगरी। २ तुलसी वृक्ष। (स्त्री०) ३ मूल, जड़।

अलुक् समास (सं० पु०) नास्ति विभक्तेर्लुग् यत्र, वहुव्री० अलुक् चासौ समासश्चेति, कर्मधा०। अलुगुत्तर पदे। पा ६।३।१। विभक्तिके लुक्से शून्य समास, जिस समासमें विभक्ति वनी रहे। दो प्रभृति पदमें समास सजानेसे मध्य पदकी विभक्तिका लोप हो जाता है। जिस स्थलमें विभक्ति वनी रहती, वह अलुक् समास कहलाता है। 'जले चरतीति जलचर' जैसा समास लगानेसे जल शब्दकी सप्तमी विभक्तिका लोप हो गया, किन्तु 'जलेचर' रूप रखनेसे वह

भी रहो, सुतरां यह अलुक् समास ठहरा। इसीके अनुसार सकल स्थलमें अलुक् समास नहीं कर सकते। वैयाकरणने इसका विशेष नियम बना दिया है। अलुक् समास अवसरसे ही आता है।

अलुक (सं॰ क्लो॰) १ आलुकसाधारण, कमलकन्द। यह शीतल, बाष्पेय, मलस्तम्भन, मधुर, गुरु, रुच, दुर्जर, बलवर्धन, स्तन्यवर्धन, मल मूत्र कफ-वात-वृद्धिकर और रक्तपित्तघ्न होता है। (भावप्रकाश) २ आलूबोखारा। ३ आमिष मांस।

अलुभना, अलभना देखो।

अलुटना (हिं॰ क्रि॰) आगे-पीछे पांव पड़ना, डग मगाना।

अलुन्दा—बम्बई प्रान्तके सतारा जिलेका गांव। यह सतारेसे उत्तर हायी कोस शिवगङ्गाके दक्षिण तट पर बसा है। सतारेमें जो प्राचीन ताम्रफलक निकला उसमें लिखा है कि अलुन्दा विष्णुवर्धन प्रथमने ब्राह्मणोंको जागीरमें दे डाला था।

अलुप्त (सं॰ त्रि॰) अक्षत, जो गुम या कम न हुआ हो।

अलुप्तमहिमन् (सं॰ त्रि॰) अक्षत कीर्तिविशिष्ट, जिसकी कीर्ति बिगड़ी न हो।

अलुब्ध (सं॰ त्रि॰) न लुब्धम् नञ् तत्। लोभशून्य, जो लालची न हो।

अलुब्धत्व (सं॰ क्ली॰) लोभशून्यता, लालची न होनेकी हालत।

अलुम्पत् (वै॰) अलुम्प देखो।

अलूच (वै॰ त्रि॰) न रूक्षम् वैदे रस्य लः। अरूक्ष, मृदु, चिक्कण, मुलायम, चिकना, जो रूखा न हो।

अलून (सं॰ त्रि॰) अक्षत, साबित, जो कटा न हो।

अलूना—लवण भक्षण न करनेवाला शैवसम्प्रदाय विशेष, जो शैव साधु नमक न खाता हो।

अलूप (हिं॰ वि॰) लुप्त, गुम, दिख न पड़नेवाला।

अलूबारी—बङ्गाल प्रान्तके दारजिलिङ्ग जिलेका गांव। सन् १८५६ ई॰को इस गांवमें कापुसियन और दारजिलिङ्गकी चाय-कम्पनीने पहले पहल चायका बाग लगाया था।

अलूमिनियम (अं॰ पु॰) धातुविशेष, किसी मिट्टीका अम्ल। (Aluminium) यह सफेद और कुछ कुछ नीला होता है। धूप और पानीमें रखनेसे भी यह तांबे, लोहे या पीतलकी तरह ज्यादा नहीं बिगड़ता। इसके बरतनमें पानीकी कोई चीज रखनेसे जैसीकी तैसी ही बनी रहती है। इससे कच्चा सोडा और ईस्पात साफ किया जाता है। इससे रसोईके बरतन भी बहुत बनते हैं। टारपीडो नाव जहाज और मोटरमें यह अच्छा काम देता है। इससे तार भी तैयार होता है। इसके हलकेपनने लोगोंको मोहित कर लिया है।

अलूव—बम्बई प्रान्तवाले कनाड़ा जिलेके नृपति विशेष। पैठनके ताम्रफलकमें लिखा, कि अलूप तमय महाराज चित्रवाहके कहनेसे सन् १०८ ई॰को सालियोगी ग्राम उत्सर्ग किया गया था। पुलिकेशि द्वितीयने अलूपके वंशजोंको रणमें परास्त कर अपने अधीन बनाया।

अलूया—उड़ीसा प्रान्तके सम्बलपुर जिलेका ब्राह्मण समाज विशेष।

अलूर—१ महिसुर राज्यके हसन जिलेका गांव। यहां चावलका बड़ा बाजार लगता है। २ मन्द्राज प्रान्तके बेलारी जिलेकी तहसील। इसका क्षेत्रफल ६३६ वर्गमील है। काली जमीन रुईकी पैदावारके लिये बहुत अच्छी है। किन्तु खेत सींचनेका सुभीता नहीं पड़ता। उक्त तहसीलका सदर। यह कुछ टीलेपर बसता और कोई प्रधानता नहीं रखता है।

अलूला (हिं॰ पु॰) तरङ्ग, लहर।

अले अरे देखो।

अलेक्सन्दर—जगद्विख्यात महावीर। मुसलमान लोग इन्हें सिकन्दर कहते हैं। सुप्राचीन शिलालिपिमें 'अलिकसन्दर', 'अलिकसर' और 'अलकर' नाम मिलता है। मकदूनिया-नृपति फिलिपके औरस और ओलिम्पियाके गर्भसे इनका जन्म हुआ था।

एक समय औरस विशेष ओलिम्पिक रथदौड़में जीते रहे। उनके सेनापति पार्मेनोने भी इलिरीय युद्धमें जीत और प्रसूति निकट पहुंच सम्वाद सुनाया—अकस्मात् एफिसस नगरकी डायना देवीका मन्दिर

गिर गया। उसी समय मकदूनिया-नृपतिने सुना, कि उनके लड़का हुआ था। फिलिपने जाकर पुत्रका मुंह देखा। दैवज्ञ लोग कहने लगे,—यह पुत्र पृथिवीका राजा होगा। फिलिपने कुमारका नाम अलेक्सन्दर रख दिया।

अलेक्सन्दरने शैशवावस्था विता डाली। प्रथम लिओनिदास् नामक व्यक्ति इनके प्रधान शिक्षक बने थे। १३ वर्ष वयःक्रमके समय फिलिपने प्रसिद्ध दार्शनिक अरिष्टटलको पुत्रकी शिक्षामें लगा दिया। अरिष्टटलके सुशिक्षागुणसे अलेकसन्दरकी मनोवृत्ति खुल गयी थी। उसी शिक्षाके फलसे यह भविष्यत्‌में विस्तीर्ण साम्राज्यका शासन कर सके। समयानुसार अरिष्टटलने राजनीतिके सम्बन्धपर कोई ग्रन्थ लिखा, जिसका प्रधान उद्देश्य अलेक्सन्दरको शिक्षा देना था। इनके भाग्यमें जैसा शिक्षक रहा, वैसा किसी दूसरे युरोपीय राजाको न मिला।

पढ़ते समय अलेक्सन्दरके हाथमें सर्वदा ही इलियट रहता और आकिलेशके वीरत्वकी कहानी सुनना बहुत अच्छा लगता था। जब आकिलेशका वीरत्व इनके स्मृतिपथमें उदय होता, तब वीरमद चढ़ आता; तलवार झनझना उठती। लोग कहते, अलेक्सन्दर ही पहले आकिलेश रहे। वस्तुतः ट्रय-वीर आकिलेशके वंशमें इनकी माताने जन्म लिया था।

वीरत्वके परिचय देनेका समय आ पहुंचा। फिलिप इन्हें राज्य सौंप युद्धको चले गये। उस समय इनका वयस १६ वर्ष रहा। फिर कितने ही लोग विद्रोही भी बने थे। किन्तु इन्होंने उन्हें दबा दिया। उसी समयसे लोग इन्हें राजा और फिलिपको सेना-पति कहने लगे। फिलिप इनका बड़ा प्यार करते और यह भी उन्हें बहुत चाहते थे।

वयस बढ़नेसे लोगोंकी मतिगति पलट जाती है। उसीसे ऐसा उपयुक्त पुत्र रहते भी फिलिपने क्लिओ-पेट्राको व्याह लिया था। विवाह करनेपर यह पितासे मन ही मन कुछ विरक्त हुए। थोड़े दिन बाद फिलिप गुप्त रूपसे मार डाले गये थे। लोग कहने लगे, सिकन्दर उस हत्याकार्यमें लिप्त रहे। पीछे यह स्वाधीन भावसे मकदूनियाके अधिपति बने, किन्तु निरापद रह न सके।

अट्टालास नामक क्लिओपेट्राके छोटे मामाने क्लिओ-पेट्राकेगर्भसे उत्पन्न फिलिपके दूसरे लड़केको राज्य दिलानेकी चेष्टा लगायी थी। उसी समय उत्तर और पश्चिमको असभ्य जातिने भी स्वाधीन होनेको अस्त्र उठाये रहे। डिमस्थिनिस् मकदूनियाके विपक्ष हुए, जिससे समस्त यूनान देशमें हल चल पड़ गयी। अलेक्-सन्दरने देखा,—चारो ओर महा विपद् है; यदि हम इस महाविपद्‌से न छूटे, तो राज्य, धन, मान सब कुछ हाथसे निकल जायेगा। बुद्धिमान् महावीर अति सत्वर कोई निष्पत्ति ढूंढने लगे। इन्होंने हेकेटस् सेनापतिको आदेश दिया—आप फौजके साथ एशिया जायें और जैसे हो सके, दुर्वृत्त अट्टा-लासका मार या पकड़ हमारे पास ले आयें। महा-वीरका आदेश प्रतिपालित हुआ, हेकेटस्‌ने अट्टा-लास्‌को पराजित और निहत किया। इधर अलेक्-सन्दर सेनापतिको आदेश सुना फौजके साथ यूनान जा पहुंचे थे। थेसेली विना युद्ध ही हाथ आ गया। वहांसे यह विओसियाकी ओर चल पड़े थे।

थिब्सके लोग स्वप्नमें देखते रहे,—हम फिर स्वाधीन होंगे, अधीनताका क्लेश अब उठाना न पड़ेगा। किन्तु उनका सुखस्वप्न टूट गया, सुननेमें आया, महावीर अलेक्सन्दर थिब्सके काडमिया दुर्गपर जा पहुंचे। अथेन्सके अधिवासी इन्हें पागल बता उपहास उड़ाते रहे, किन्तु अकस्मात् आगमन सुन सब डर गये। सभी अप्रस्तुत थे, उतना शीघ्र युद्धका आयोजन लगा न सके। उस समय उन्होंने विनीत भावसे इनके पास दूत भेजा, जिसने आकर कहा,—सभी अथेन्सवासी महावीरके आग-मनसे आनन्दित हैं; दुःख केवल इसी बातका है, कि महावीरके पारस्य आक्रमणको उपयुक्त सैन्य इकट्ठा कर नहीं सकते। इन्होंने दूतको समादर दिया था। यूनानके सभी लोग इनसे झुक गये, केवल स्पार्टानोंने इनके अधीन रहना न चाहा।

अलेक्सन्दर मरुभूमिया वापस आये थे। फिर वह रीतिमत रक्षसका तमाम असभ्य लोगोंको दबाने उत्तरकी ओर चल पड़े। दानियुब नदीके तीर तीर सुम् नामक असभ्योंके अधिपति हार गये थे। उसी जगह अपरापर अनेक जातिने इनकी अधीनता स्वीकार की।

इधर स्वाधीनता-प्रिय यूनानी डिमस्थिनिसके उत्साहवाक्यसे प्रणोदित हो उत्तेजित हो गये थे। उन्होंने अपदस्थ स्वाधीनताके उद्धारको जीवन उत्सर्ग करनेका संकल्प किया। उसी समय यूनानमें गप उड़ी,—अलेक्सन्दर इलिरीय युद्धमें मारे गये हैं। थिबसवासी मरुभूमियावालोंको अपने देशसे भगाने और यूनानके अपरापर स्थानमें दूत भेज सबको भड़काने लगे। पीछे संवाद मिला,—अलेक्सन्दर मरे नहीं, आज भी जीते और थिबसमें आ पहुंचे हैं। पहले इन्होंने सन्धिका प्रस्ताव उठाया किन्तु लोगोंने उसे हंसी दिल्लगीमें उड़ा दिया था। अलेक्सन्दरके सेनापति पारदिकास् उन्हें समुचित शास्ति देनेको आगे बढ़े। भीषण समर हुआ था। असंख्य यूनानी मरे और रक्तकी नदी बह चली। यूनानके इतिहासमें ऐसा भीषण काण्ड कभी हुआ न था। कोई छ हजार थिब्सके लोग मरे और साठ हजार उम्र भरके लिये गुलाम बने। यूनानके दूसरे लोग इस दृष्टान्तसे डरके और जन्मभूमिके स्वाधीन करनेकी आशा बिलकुल छोड़ बैठे थे।

अलेक्सन्दर मरुभूमियाको लौट पड़े। इस बार यह गुरुतर व्रतके उद्योगमें यत्नवान् हुए। बाल्यकालसे इनके मनमें इस बातकी आशा रही — ईरान राज्य जीतें और एशियाखण्डके अधीश्वर बनें। इनके पिताने बहुत दिनसे ईरान जीतनेको नानाप्रकार आयोजन लगाया था किन्तु कृतकार्य हो न सके। फिर भी वह प्राण पर्यन्त जीव ईरान जीतने-को आशा रखे थे। उसी समय इनके कतिपय बन्धुने विवाह कर लेनेको कहा, किन्तु इन्होंने उनकी कोई बात न सुनी और अपना जो कुछ सम्पत्ति था,] वह बन्धुओंको दे डाला। इस महाकार्यमें जानेके पारदिकासने इनसे कहा,—आपने सब सामान तो दूसरेको दे डाला, अपने लिये क्या उपाय सोचा है? इन्होंने इसप्रकार उत्तर दिया,—आशा हमारे साथ है। इनकी अनुपस्थितिमें अन्तिपेतर मरुभूमियाके शासनकर्ता हुए थे।

वसन्तके प्रारम्भमें अलेक्सन्दर एशियाभिमुख बढ़े, साथमें पांच हजार सवार और तीस हजार पैदल थे। सब लोग आबिडसमें आ पहुंचे। आबिडसके पास ही आकिलिसरी नामक स्थान भी है जहां इनका वंश ट्रय पत्तनके मध्य गाड़ा गया था। यह स्वयं हिफेस्टियानको साथ ले आकिलिसका समाधिस्थान देखने पहुंचे और उसे देखते ही वीरमदसे उत्तेजित हुए। पूर्वपुरुषके वीरत्वकी बात सोचते सोचते इन्होंने यह स्थान छोड़ा और फौजमें मिल सीधे ईरान जीतनेका कदम बढ़ाया।

नानास्थान लांघ यह ग्रानिकस नदी किनारे पहुंचे थे। उस नदीके पूर्वकूल ईरानके बादशाहकी फौज शत्रुकी राह देखती रही। इन्होंने उसी वक्त ईरानकी फौजपर हमला मारा। मरुभूमियावाले वीरोंके युद्धकौशलसे ईरानियोंके पैर उखड़ गये थे। अलेक्सन्दरकी जो तलवारसे ईरान् राज दरायुसके जामाता धराशायी हुए।

उसी समय रोडस द्वीपके शासनकर्ता मिमनन नामक कोई यूनानी ईरानकी ओर मरुभूमियासे बहुत लड़े थे। इन्होंने उन्हें भी नीचा दिखाया। असंख्य यूनानी और ईरानी फौज काम आयी थी। कोई दो हजार सिपाही कैद हुए। पीछे इन्होंने एशिया माइनर, लाइसिया, पाम्फीलिया, करिया, पाफ्लागोनिया और कप्पदोकिया नामक जनपद जीते थे। सिड्नस नदी किनारे पहुंच यह बीमार पड़े। इस अवस्थामें इनके बन्धु पार्मेनियोने चिट्ठीमें लिखा था,—'सावधान! कोई चिकित्सक आपको विषाक्त औषध खिला मार न डाले।' इन्होंने बन्धुका पत्र पाते ही अपने चिकित्सक फिलिपको बुला भेजा और उनसे दवा लानेको कहा। औषध खानेसे विपद सर गये। लोगोंने अचम्भा किया,

शान्ति देनेके निमित्त आगे बढ़े। उस समय बैक्ट्रिया, हिर्कानिया, हेरात, काबुल और समर्दियानाके अधिपति बन बैठे थे।

चारो ओर खबर फैल गयी,—'अलेकसन्दर बैक्ट्रियाको शान्ति देने आते हैं।' समर्दियानाके क्षत्रपतिने बैसासको पकड़ा दिया। बैसासने समुचित शास्ति पायी थी। इसी समय पार्मेनियोके पुत्रने अलेकसन्दरके विरुद्ध षड़यन्त्र रचाया। महावीर मक्दूनियापतिको उसकी खबर मिल गयी थी। इन्होंने गुस्सेमें आ पितापुत्र दोनोंको मार डाला। सेनापति पार्मेनियो निर्दोष रहे। उन्हें अपने पुत्रके षड़यन्त्रको बात मालूम न थी। सब लोग इस बातपर अलेकसन्दरसे नाराज हुए, कि बिना दोष ही सेनापति मारे गये। प्रवाद रहा,—किस व्यक्तिने किसी समय चिकित्सकके विषपानसे अलेकसन्दरको बचाया, उसे क्या अच्छा पुरस्कार मिलना था।

सन् ई०से ३२८ वर्ष पहले इन्होंने सब लोगोंको जीत लिया, दूसरे वर्ष समर्दियाना जा पहुंचे। वह स्थान पर्वतमय रहा। शीतके समय युद्धकी विशेष सुविधा न मिलनेसे यह मौलक नामक स्थानमें ठहर गये थे। वसन्तकालमें पर्वत-पथत अधिकान्त युद्धके बाद अलेकसन्दरने समर्दियानाको अधिकारमें लाया। इस युद्धमें बाक्त्रियाके कोई राजपुत्र और रक्षणा नामक उनकी कन्या बन्दी बनी थी। इन्होंने रक्षणाके अनुपम रूपसे मुग्ध हो विवाह कर लिया। कुछ दिन बाद हर्मेलस काल्लोस्थेनिस नामक परिदर्शकके किसी शिष्यने इनके विरुद्ध तलवार उठायी थी। इस बार मक्दूनियाकी कितनी ही फौज मारी गयी किन्तु धीरवीर अलेकसन्दरने उन्हें यथोचित शास्ति दे दी।

सन् ई०से ३२७ वर्ष पहले यह भारतपर आक्रमण करनेको आगे बढ़े थे। साथमें १२०,००० फौज रही। अलेकसन्दरने सेनापति टलेमी और हिफा हियान कितनी हो घुमिन्दा फौज ले सिन्धुको ओर पहले ही दौड़ पड़े थे।

अलेकसन्दर तक्षक काबुर नामक स्थानमें आ पहुंचे। वहांसे इन्होंने कुनियो (Choaspes) और गौरी नदी (Gyraeus) पार हो वरणा (Aornos) को अधिकृत किया। पीछे यह सिन्धुनद पार करके गये थे। सन् ई०से ३२६ वर्ष पहले इन्होंने पञ्जाबमें पैर रखा। राहमें सिन्धुनद तीरवर्ती कितने ही पहाड़ी लोगोंसे लड़ना पड़ा था। उस समय तक्षशिलाराज बहुमूल्य उपहार ले और इनके पास पहुंच पहाड़ियोंके विरुद्ध साहाय्य दिया। इन्होंने वितस्ता (Hydaspes) नदीतीर जा देखा, कि पुरव (Porus) नामक कोई प्रबल पराक्रान्त हिन्दू नरपति असंख्य सैन्य ले युद्ध करने आगे बढ़ा था। अविलम्ब ही रणवाद्य बजने लगा। हिन्दुओं और यवनोंमें घोरतर संग्राम उपस्थित हुआ था। अवशेषमें पुरवराज हार गये। अलेकसन्दर हिन्दू राजाका वीरत्व देख अतिशय सन्तुष्ट हुए और उनके साथ मित्रता स्थापन की। युद्धके पहले पुरवराज वितस्ता और चन्द्रभागाके जनपद पर ही शासन चलाते थे पीछे अलेकसन्दरके दूसरे भी कितने ही जनपद जीत उनको सौंप दिये। इस कामसे पुरवराज पर तक्षशिला-नृपति बहुत नाराज हो गये थे।

एकमात्र यह वितस्ता किनारे रहे, उसके बाद बुकेफल और निकाया नामक दो नगर बसा चन्द्रभागाके पार जा पहुंचे। इरावती किनारे काठी नामक प्रबल जातिके साथ इन्हें कई बार लड़ना पड़ा था, किन्तु वह किसी तरह अधीन न हुई। इन्होंने काठी जातिका राज्यादि जीत उन लोगोंको बांट दिया जो वशमें आ गये थे।

वर्षरा नदी किनारे आ इन्होंने सुना, कि उससे पूर्व और दूसरा भी रत्नाकर समृद्धिशाली जनपद है। यह खबर पा इन्हें लोभ लगा। किन्तु इनके किसी सैन्य सामन्तने आगे बढ़ना चाहा न था। सिपाही बहुत दिनसे जन्मभूमि छोड़ घूमते रहे, उस समय उन्हें घर वापस जानेकी उत्कण्ठा हुई। अलेकसन्दरको बैमन लौटना पड़ा। इन्होंने अपने भारत-आक्रमणका स्मरणचिह्न बना रखनेको वर्षरा नदी किनारे बड़े बड़े बारह बुर्ज बनवाये थे। जाते समय

यह घर्घरा नदी पर्यन्त अधिकृत सकल स्थान पुरुराजको सौंप चले।

इन्होंने वितस्ता नदी तीर वापस आ सिन्धुनदके मुहानेमें पहुंचनेको जहाजपर चढ़ दक्षिणाभिमुख यात्रा की थी। वर्तमान मूलतानके निकट मालव (Malli) नामक जातिसे भीषण युद्ध हुआ, जिसमें इनके गुरुतर आघात आया था। उस घटनासे सैन्यगण भी भग्नोत्साह हो गया था। किन्तु इन्होंने शीघ्र ही आरोग्य पाया। इनके आरोग्यका समाचार सुन अपरापर मालवगण बहुमूल्य उपढौकन भेज वशीभूत बना था।

इन्होंने वितस्ता और सिन्धु-नदके सङ्गमस्थानपर कई किले और जहाजी अड्डे निर्माण कराये। उस जगह मूषिक (Musicanus)-राज इनसे लड़ पड़े थे। किन्तु उत्थानमात्रसे ही वह खेत आये।

सिन्धु और कराचीके पासका समुदय स्थान जीत यह ईरान वापस पहुंचे थे। वहां इन्होंने दरायुसकी कन्या स्तातिरासे विवाह किया। उस समय कोई दश हजार मकदूनियाके सिपाही ईरानी लड़कियोंको व्याह प्रभुके अनुवर्ती हुए थे। इन्होंने उन्हें कितना ही यौतुक दे डाला।

ताइग्रीस नदीतीर पहुंच इन्होंने बुढ़े सिपाहियोंको देश वापस जाने कहा था। उसी समय हिफाष्टियान नामक इनके बन्धु और प्रिय सेनापति मर गये। बन्धुके मरनेसे यह बहुत ही कातर पड़े, मानो उनके साथ इनका वीर्यसूर्य भी अस्तमित हुए। बादशाहीक तरह बडी धूमधामसे हिफाष्टियानको मट्टी दी गयी थी।

अलेक्सन्दर बाबिलनकी ओर बढ़े। राहमें कितने ही हवाओंने इन्हें वहां जानेसे रोका था। किन्तु यह उनकी बात न मान बाबिलन आ पहुंचे। उस जगह यूनान, इटली, कार्थेज, स्किदीया, आइथोनिया प्रभृति स्थानके राजदूतगणने इनकी सम्मानरक्षाकी थी।

बाबिलन राजधानी बनाया गया। उसी जगह अलेक्सन्दर महाकार्यमें व्याप्टत हुए थे। इन्हें इच्छा रही,—समस्त जगत् जीतें और सभ्यताके आलोकसे विश्वमण्डलको चमकायेंगे। किन्तु मनकी वासना मनमें ही रह गयी। फिर जयका उद्योग लगाते-लगाते पीड़ित हुए और १२ वर्ष ८ मास राजत्व कर जगत्पूज्य महावीर सिकन्दरने कालका आतिथ्य स्वीकार किया। महासमारोहसे इनका शवदेह सुवर्ण आधारमें रचित रह अलेक्सन्द्रिया नगरमें गाडा गया था।

इस बातपर बडा झगडा उठा,—'अब राजा कौन होगा'। किसी समय कई बन्धुने इनसे पूछा था,—आपका उत्तराधिकारी कौन होगा। वीरवरने उत्तर दिया,—'योग्य व्यक्ति।' लोग इनका पद देनेको योग्य व्यक्ति ढूंढने लगे। उस समय रुक्षणा गर्भवती रहीं। मृत्युके समय यह अपनी राज अङ्गुरी पारदिकासको सौंप गये थे। उससे सबने समझ लिया,—रुक्षणाके पुत्रको शैशवावस्थामें पारदिकास् रक्षकस्वरूप रह राजकार्य चलायेंगे। रुक्षणाके पुत्र होनेपर वही बात आगे आयी।

ऐसा कहना ठीक नहीं पड़ता, कि अलेक्सन्दरने मनुष्यरक्तसे मेदिनी भर अपना आधिपत्य फैलाया था। इन्होंने पाश्चात्य सभ्यता, पाश्चात्य भाषा और पाश्चात्यनीति अपने अधिकृत राजसमूहमें बांट दी। पश्चिम श्वेतद्वीप और पूर्व चीनराज्यके प्रान्तदेश तक सकल स्थानके महाकाव्यमें मकदूनिया-वीरका नाम मिलता है। विशेषतः पारस्य (ईरान) प्रभृति स्थानमें इनके सम्बन्धपर कितनी ही अद्भुत-अद्भुत उपकथा निकली हैं। यहांतक, कि प्राचीन कालके लोक इन्हें देवता माननेसे हिचकते न थे। वस्तुतः इन महावीरसे ही प्राचीन भूतत्त्व, प्राणितत्त्व, भूवृत्तान्त प्रभृति अनेक आवश्यकीय विषय उद्घाटित हुए है। फिर इन्हीं महावीरका अनुसरण लगा युरोपीयगण रत्नप्रसू भारतवर्षका पथ ढूंढ सका था।

अलेख (हिं॰ वि॰) १ अननुमेय, अलक्ष्य, समझमें न आनेवाला। २ लिखनेके नाक़ाबिल, बेतादाद, जिसका हिसाब न लगे।

२ उड़ीसा प्रान्तीय सम्बलपुर जिलेके कुम्भ-

पटियाकी तर्फ। सन् १८६३ ई०को पतीक्षसाहोने इसे कटकमें फेंकाया था जहांसे मीत् कमकपुर जिसेमें था पहुँचा। पतिकारी देखो।

पतीषा, पतीच देखो।

पतीषो (हि० वि०) न्यायविहीन, जालिम, गैर वाजिब काम करनेवाला।

पतीब—कम्बईके काठियाड़ राज्यका पर्वतविशेष। यह जाबलीके खागसरीतक फैला और दक्षिण-पश्चिम भागी का छ भागमें बह गया है।

पतेपक (स० त्रि०) नास्ति सेपः कुत्रापि यस्य इति बहु, नञ्-बहुव्री०। १ निःसक्तस्य, ताहुक न रखने वाला। २ निर्लेप, वैराग, जो फंसा न हो। लिप्-सुक, नञ् तत्। ३ लेपन न करनेवाला, जो लीपता न हो। (पु०) ४ परमात्मा।

पतेषि, पते देखो।

पतेय (स० त्रि०) १ अधिक, ज्यादा बहुत, जो कम न हो। (अव्य०) २ बिलकुल नहीं।

पतेयेक (सं० त्रि०) दृढ़, मजबूत, कायम जो डिगता न हो।

पतेया, पतिया देखो।

पलोक (सं० पु०) न लोक्यते प्राणिभिरोप्यते, लोक कर्मणि घञ्, ततो नञ् तत्। १ पातालादि, जमीनके भीतरका मुल्क। २ लोकका अभाव, दुनियाका अदम मौजूदगी। ३ असत्का अन्त, दुनियाका खातिमा। ४ अदृश्य लोक, ग़ैरमुतअल्लिक दुनिया। ५ जनका अभाव, लोगोंकी अदम मौजूदगी। ६ अदृश्य वस्तु, देख न पड़नेवाली चीज। (हिं०) ७ मिथ्या कलङ्क, झूठी बदनामी। (त्रि०) नास्ति लोको यत्र, नञ्-बहुव्री०। ८ निर्जन, वीरान्, जहां लोग न रहें। ९ पञ्चतपुण्य, पुण्य न करनेवाला। १० न देखनेवाला। (अव्य०) लोकस्याभावः, अभावे अव्ययी०। ११ लोकाभावमें, लोगोंके न रहनें, एकान्तमें।

पलोकन (सं० क्ली०) अन्तर्धान, तिरोधान अदर्शन, अदमरूयत, देख न पड़नेकी हालत।

पलोकना (हिं० क्रि०) दृष्टि डालना, नजर बढ़ाना, देखना भालना।

पलोकनीय (सं० त्रि०) अदृश्य, गुप्त, देख न पड़नेवाला।

पलोकसामान्य (स० त्रि०) लोकसामान्य इतर जनसाधारणं न भवति, अन्यार्थे नञ् तत्। असाधारण, महत्, ग़ैरमामूली, बड़ा, जो दूसरे लोगोंके बराबर न हो।

पलोका (सं० स्त्री०) नास्ति लोको हरियेन अर्थ- बाहुबादिभिराच्छादनात् लोकात् टाप्। १ रज्जु विशेष, किसी किस्मकी रेट। २ भित्तिस्थ रज्जु, दीवारमें लगी हुई रेट।

पलोकित (सं० त्रि०) पड़ष्ट देखा न हुआ।

पलोक्य (स० त्रि०) लोकाय स्वर्गादि लोकमोगाय हित तत लाहु वा, हितार्थे साधर्यें वा यत् ततो नञ्-तत्। १ असाधारण, अमान्य-भाग्य, ग़ैरमामूली, बेहूक। २ स्वर्गादि लोकको पतावन, जिसे करनेसे स्वर्ग न मिले।

पलोक्यता (स० स्त्री०) स्वर्गादि प्राप्तिको अयोग्यता, बिहिश्त पहुँचनेकी नाकाबिलियत, जिस हालतमें स्वर्ग न जा सकें।

पलोना (हिं० वि०) १ पलवक बैनमक, नमक न पड़ा हुआ। २ फीका, बेजायका, स्वादरहित।

पलोप (हिं०) लोप देखो।

पलोपा (हिं० पु०) वृक्षविशेष, कोई दरख्त। यह हमेशा हरा भरा रहता है। इसकी लकड़ी कुछ मुलायम और मजबूत होती है। यह नाव, गाड़ी, घर बनानेमें काम आती है और पानीमें पड़ी रहनेसे भी नहीं बिगड़ती।

पलोपाङ्ग (वै० त्रि०) दूषित पङ्ग न रखनेवाला, जो बैगव पड़ा रखता हो।

पलोभ (स० पु) लोभो धनादिस्पृहा तस्य अभावः, नञ् तत्। १ धनादिकी पतिस्पृहाका अभाव, दौलत वगैरहके लालचकी अदममौजूदगी। (त्रि०) नास्ति लोभो यस्य, नञ्-बहुव्री०। २ लोभरहित, लालच न रखनेवाला, अलोभी।

पलोभिन् (सं० त्रि०) लोभोऽस्यास्ति इति ततो नञ् तत्। लोभशून्य, लालचसे खाली।

अलोपश (सं० पु०) मत्स्य विशेष, किसी किस्मकी मछली। यह वितस्ति-परिमित, श्वेताङ्ग एवं सूक्ष्मशल्क होता है। इसका मांस बलवीर्य बढ़ाता और पुष्टिकर ठहरता है। (राजनिघण्टु)

अलोमशा (सं० स्त्री०) वृक्षविशेष, कोई दरख्त।

अलोमहर्षण (सं० स्त्री०) रोमरोममें आनन्द न भरनेवाला, जिसमें खुशीसे रोंगटे न उठें।

अलोल (सं० त्रि०) न लोलम् नञ्-तत्। १ अचञ्चल, ठहरा हुआ, जो डोलता न हो। २ तृष्णारहित, जो लालची न हो।

अलोला (सं० स्त्री०) छन्दोविशेष, कोई बहर। इसके प्रत्येक चार पदमें चौदह चौदह अक्षर रहते हैं।

अलोलिक (हिं० पु०) अचञ्चलता क़याम। ठहराव।

अलोलु (सं० त्रि०) प्रत्यक्ष विषयसे निरपेक्ष, जाहिर बातकी परवा न रखनेवाला।

अलोलुत्व (सं० क्लो०) प्रत्यक्ष विषयसे निरपेक्षता, जाहिर बातकी बेपरवायी।

अलोलुप (सं० त्रि०) नञ्-तत्। १ अनभिलाष, बेख्वाहिश, अच्छी चीज़ सामने पड़ते भी जिसका दिल न चले। २ लोभशून्य, लालच न करनेवाला।

अलोह (सं० पु०) न लोहति ऐहिक-धनादि लब्धुमिच्छति लुह कर्तरि अच्, ततो नञ्-तत्। १ पाणिन्युक्त नडादिके अन्तर्गत ऋषि-विशेष। (क्लो०) नञ्-तत्। २ लौहभिन्न वस्तु, जो चीज़ लोहा न हो।

अलोहित (सं० त्रि०) नञ्-तत्। १ रक्तशून्य, खून्से खाली। २ अरक्त, जो लाल न हो। (पु०) ३ रक्तपद्म, लाल कमल।

अलौङ्गपय—ब्रह्म-प्रदेशवाले पेगू जिलेके मोतसोको ग्रामाधिप। सन् १७५३ ई० तैलेङ्गोंको बलवा मचाने इन्होंने हरा आवा राजधानीमें अपना राजवंश प्रतिष्ठित किया, १७५८ में पेगूको जीत अन्तिम तैलङ्ग नृपति व्याहमैङ्गतोरजाको कैदी बनाया। यह अपने वीरत्व गुणके कारण अधिक प्रशंसाभाजन हो गये हैं।

अलौकिक (सं० त्रि०) लोकेषु विदितं ठक्। नञ्-तत्। लोकमें अविदित, जिसे लोकमें नहीं जानते। नैयायिक मतसिद्ध चक्षु प्रभृति इन्द्रियके निकटस्थ न होनेपर भी वस्तुके प्रत्यक्ष होता है। जैसे एक घटको सम्मुख देखनेसे पृथिवीके सब घटोंका ज्ञान होता है। नैयायिक लोग प्रत्यक्षको लौकिक और अलौकिक यही दो प्रकारका कहते हैं। उनमें निकटस्थ जो घट देखा जाता है, उसका नाम लौकिक प्रत्यक्ष है। और जो घट सम्मुख नहीं देखा जाता अथच घटत्व रूप एक धर्माकान्तहेतु सभी हैं, ऐसा ज्ञान होता है, उसका नाम अलौकिक प्रत्यक्ष है।

अलौकिकत्व (सं० क्लो०) शब्दका अप्राप्य उपागम, जिस हालतमें लफ्ज़ अजीब लगे।

अलौकिकसन्निकर्ष (सं० पु०) न लोकेषु विदितः सन्निकर्षः। नञ्-तत्। प्रत्यक्षसाधनसन्निकर्ष इन्द्रिय और विषय अर्थात् प्रत्यक्षकी विषयीभूत जो वस्तु है, इन दोनोंके सम्बन्धका नाम सन्निकर्ष है। सामान्य लक्षण, ज्ञान लक्षण एवं योगज,-यही तीन प्रकारका अलौकिकसन्निकर्ष है। उनमें जिस किसी एक घटके नेत्रके निकटस्थ होनेसे घटत्व रूप सामान्यधर्मद्वारा सकल घटोंका जो ज्ञान होता है, वह सामान्य लक्षणके अधीन है। घट देखनेसे जो ज्ञान घटविशिष्ट समझा जाता है, वह ज्ञान लक्षणके अधीन है। एवं योगियोंके योगद्वारा जो सब घटपटादिका ज्ञान होता है, उसे योगज कहते हैं।

अल्क (सं० पु०) १ वृक्षविशेष, कोई पेड़। २ शरीरका अवयव, जिस्मका अज़ा।

अल्क-पल्क—बम्बई प्रान्तके नासिक जिलेका स्थान-विशेष। सन् १६३५ ई०को शाहजहांके सेनापति ख्वानखानान्ने अहयी-तहयी किलेके साथ इसे भी छीन लिया था।

अल्तमश—गुलाम खान्दानके सबसे बड़े पुत्र और ३रे पठान बादशाह। इन्होंने सन् १२११ से १२३६ ई० तक दिल्लीमें हुकूमत की। लिखनवती और सिन्धुके शासकोंको स्वाधीन बननेसे इनके हाथों नीचा देखना पड़ा था। किन्तु मुगल आक्रमणसे यह मरते मरते बचे।

चङ्गेज खान्‌की फौज किसी अफगान शाहजादेको हटाते सिन्धु तक घुस आयी थी, परन्तु दिल्ली पहुंच न सकी। सन् १२३६ ई० में इनकी मृत्यु हुई और शाहजादी रजियाको दिल्लीकी गद्दी मिली थी।

अल्ता—बम्बई प्रान्तके कोल्हापुर राज्यकी तहसील। सन् १८६७-६८ ई०को इसकी पैमायश, बन्दोबस्त शुरू और १८६९-७० को खतम हुआ था। इसमें इकतीस गांव बहुत अच्छे हैं।

अल्ताय बिल्लाह—बगदादके २१वें खलीफा और अल मुतीय बिल्लाहके पुत्र। सन् ९७४ ई०को यह अपने बापकी जगह गद्दीपर बैठे थे। १७ वर्ष ८ मास राज्य करनेके बाद सन् ९९१ ई०को बहा उद्-दौलाने इन्हें सिंहासनसे उतार कादिर बिल्लाहको खलीफा बनाया।

अल्ताहिर बि अमर बिल्लाह मुहम्मद—बगदादके ३५वें खलीफा और अल्-नासिर बिल्लाहके पुत्र। सन् १२२५ ई०को यह अपने बापकी जगह बगदादकी गद्दीपर बैठे थे। इन्होंने ९ मास ११ दिन राज्यकर अपना प्राण छोड़ा और इनके लड़के ३६ अल्मुस्तनसरको सिंहासनका उत्तराधिकार मिला।

अल्नावर—बम्बई प्रान्तके धारवाड़ जिलेका ग्राम। यह धारवाड़से दश कोस पश्चिम बेलगांव दण्डेयाल तथा धारवाड़ गोवा सड़कके पास पर बसता है।

अल्प (सं० त्रि०) [illegible]। उ ३।२३। १ क्षुद्र, छोटा। २ ईषत्, कम। ३ मरणार्थ, जो मरनेवाला हो। ४ अप्राप्य, नायाब, कम मिलनेवाला। ५ अचिरस्थायी, ज्यादा न टिकनेवाला। (अव्य०) ६ थोड़ा, कम।

अल्पक (सं त्रि०) अल्प-स्वार्थे कन्। १ क्षुद्र, ईषत् छोटा, कम। (अव्य०) २ न्यून रूपसे, थोड़ा-थोड़ा। (पु०) ३ जवास, जवासा। ४ भूमिजम्बुक नामको वासन।

अल्पकार्य (सं० क्ली०) क्षुद्र विषय, छोटा काम।

अल्पकेशिका, अल्पकेशी देखो।

अल्पकेशी (सं स्त्री०) अल्पः क्षुद्रः केश इव अस्याः, बाहुल्यात् ङीप्। १ भूतकेशी, अपील दूब। २ ईषत् केश-युक्त स्त्री, जिस औरतके बाल छोटे रहें।

अल्पक्रीत (सं० त्रि०) ईषत् धनसे क्रय किया हुआ सस्ता, जिसकी खरीदमें थोड़ा रुपया लगे।

अल्पगन्ध (सं० क्ली०) अल्पो गन्धो यस्य बहुव्री०। १ रक्तकैरव, लाल बघोला। २ रक्तकमल। ३ अल्पगन्ध युक्त वस्तु मात्र, जिस चीजमें ज्यादा खुशबू न रहे। (त्रि०) ४ अल्पगन्धि अल्प-गन्ध युक्त।

अल्पगोधूम (सं० पु०) वनगोधूम, जङ्गली गेहूं।

अल्पघण्टिका (सं० स्त्री०) क्षुद्रघण्टपुष्पी, सनयी।

अल्पचेष्टित (सं० त्रि०) जड़, अलस, [illegible], सुस्त।

अल्पच्छद (सं० त्रि०) ईषत् संवीत, अर्धावृत-पोश, अच्छीतरह कपड़े न पहने हुए।

अल्पजीविन् (सं० त्रि०) अल्पायु, ज्यादा न जीनेवाला, जिसे मौत जल्द आये।

अल्पज्ञ (सं० त्रि०) ईषत् ज्ञान युक्त, कम समझ।

अल्पज्ञता (सं० स्त्री०) ईषत् ज्ञान होनेकी स्थिति, कम समझी, किस बातमें कम समझी।

अल्पतनु (सं० त्रि०) अल्पा क्षुद्रपरिमाणा तनुः शरीरं यस्य बहुव्री०। १ खर्व, वामन, छोटे जिस्म-वाला। २ दुर्बल, अल्प शक्तियुक्त, दुबला।

अल्पता (सं० स्त्री०) १ न्यूनता, सूक्ष्मता, छोटाई बारीकी। २ अधीनता, मातहती।

अल्पत्व (सं० क्ली०) अल्पता देखो।

अल्पदक्षिण (सं० त्रि०) न्यून दक्षिणा देनेवाला, जो ज्यादा भेंट चढ़ाता न हो।

अल्पदृष्टि (सं त्रि०) परिमित ज्ञानयुक्त, महदूद दृश्य रखनेवाला जिसकी निगाह बड़ी न रहे।

अल्पधन (सं० त्रि०) ईषत् धनसम्पन्न, थोड़ी दौलत रखनेवाला, जिसके पास ज्यादा रुपया न रहे।

अल्पधी (सं० त्रि०) ईषत् बुद्धियुक्त कमसमझ, जिसे ज्यादा अक्ल न रहे।

अल्पनायिकाचूर्ण (सं० क्ली०) अरुचीमें हितकर औषध विशेष। अभ्रकभस्म १ माष त्र्यूषण (मिर्च,

सोंठ, पीपल) प्रत्येक तीन भाग, चिवु ३ भाग, गन्धक ८ माष, पारा ४ माष, इन्द्रायन एक पल और तीन भाग, इस सबको चूर्ण करके एकत्र मिलाकर १ भाग परिमाण खाकरके पीछे काञ्जि पीना चाहिये। (रसचिन्तामणि)

अल्पनिद्रता (सं० स्त्री०) पित्तजन्य निद्राल्पता-रोग, नींद कम पड़नेकी बीमारी।

अल्पपत्र (सं० पु०) अल्पं पत्रं यस्य, बहुव्री०। १ क्षुद्रपत्र तुलसी वृक्ष, तुलसीके जिस पौधेकी पत्ती छोटी रहे। २ रक्तपद्म, लालकमल। ३ अल्पपत्र-युक्त वृक्ष मात्र, छोटी पत्तीका कोई भी पौधा।

अल्पपत्रक (सं० पु०) गिरिज मधूक वृक्ष, पहाड़ी दुपहरियेका पौधा।

अल्पपत्रिका (सं० स्त्री०) रक्त अपामार्ग क्षुप, लाल लटजीरा।

अल्पपत्री (सं० स्त्री०) १ मिश्रेया, सौंफका पौधा। २ सुपत्नी, मूसरका पेड़।

अल्पपद्म (सं० क्ली०) अल्पं असम्पूर्णं पद्मम्, कर्मधा०। रक्त कमल, लाल कमल।

अल्पपरीवार (सं० त्रि०) ईषत् अनुयायिवर्ग-विशिष्ट, जिसके बन्धु प्रभृति कम रहे।

अल्पपर्णिका, अल्पपर्णी देखो।

अल्पपर्णी (सं० स्त्री०) मुद्गपर्णी, मसूर।

अल्पपशु (वै० त्रि०) न्यून पशुयुक्त, थोड़े मवेशी रखनेवाला

अल्पपुण्य (सं० त्रि०) क्षुद्र धर्मकार्यविशिष्ट, मज-हबके छोटे काम करनेवाला।

अल्पपुष्पिका (सं० स्त्री०) पीत करवीर, पीला कनेर।

अल्पप्रजस् (सं० त्रि०) ईषत् सन्तान वा प्रजायुक्त, जिसके औलाद या रैयत कम रहे।

अल्पप्रभाव (सं० त्रि०) अगुरु, तुच्छ, बेवजन, नाचीज़।

अल्पप्रभावत्व (सं० क्ली०) तुच्छता, हिक़ारत।

अल्पप्रमाण (सं० पु०) अल्पं प्रमाणं यस्य, बहुव्री०। १ लतापनस, तरबूज़। २ चेलानक, खरबूज़ा। (त्रि०) अल्प गुरुतायुक्त, जिसके कम वज़न रहे। ४ न्यून प्रमाणविशिष्ट, जिसमें ज़्यादा सुबूत न रहें।

अल्पप्रमाणक, अल्पप्रमाण देखो।

अल्पप्रयोग (सं० त्रि०) ईषत् नियुक्त, ज़्यादा इस्ते-मालमें न आनेवाला।

अल्पप्राण (सं० पु०) अल्पयामो प्राणः प्राण-वायोः वाह्यप्रयत्नविशेषश्चेति, कर्मधा०। १ वर्ण विशेषके उच्चारण-विषयमें मुखसे वहिर्गत प्राणवायुका प्रयत्न विशेष, य, र, ल, व, क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, और म इन अक्षरोंको मुंहसे निकालनेकी कोशिश।

"बाह्यप्रयत्नस्त्वेकादशधा विवारः श्वासः नादो घोषो अघोषो-ऽल्पप्राणो महाप्राण उदात्तोऽनुदात्त स्वरितश्चेति।" (सिद्धान्तकौमुदी)

अल्पः प्राणः प्राणक्रिया यस्योच्चारणे, बहुव्री०। २ वर्णविशेष, अल्पप्राणक्रियासे हो निकलनेवाला वर्ण, जिस हर्फ़के बोलनेमें ज़्यादा कोशिश करना न पड़े। वर्गका प्रथम, तृतीय एवं पञ्चम वर्ण तथा य, र, ल, व, और अन्तस्थ लघु वैयाकरण. वेदसिद्ध वर्गका यम-नामक पञ्चम वर्ण संयुक्त हिरुक्तके मध्यस्थित पूर्व सदृश प्रथम और तृतीय लघु वर्णको अल्पप्राण कहते हैं। (त्रि०) अल्पः प्राणः बलं वायु र्यस्य यत्र वा, बहुव्री०। ३ अल्प-बल-युक्त, कम ताक़त।

अल्पबल (सं० त्रि०) निर्बल, कमज़ोर।

अल्पबाध (सं० त्रि०) अधिक बाधा न डालनेवाला, जो कम दिक़ करता हो।

अल्पबुद्धि (सं० त्रि०) मूर्ख, नादान, कम समझ।

अल्पभाग्य (सं० त्रि०) ईषत् ऐश्वर्ययुक्त, कम-बख़्त।

अल्पभाषिन् (सं० त्रि०) ईषत् सम्भाषण करने-वाला, कमसख़ुन, जो ज़्यादा न बोलता हो।

अल्पमध्यम (सं० त्रि०) क्षुद्र कटिविशिष्ट, पतली कमरवाला।

अल्पमस्तक (सं० पु०) चित्रकक्षुप, चीतका पौधा।

अल्पमक्षिका (सं० स्त्री०) मक्षिकाविशेष, छोटी माछी।

अल्पमात्र (सं॰ क्ली॰) १ अल्पता, कमी। २ ईषत् समय, थोड़ी देर।

अल्पमारिष (सं॰ पु॰) मारिषति न किमपि हिनस्ति, शत्रुवात् न अल्प क्षुद्रकायमासौ मारिष श्चेति कर्मधा॰। क्षुद्रमारिष, छोटी चौलाई। [illegible]। (वैद्य) इसका शाक लघु, शीत-वीर्य रुच, पित्त कफनाशक, मल मूत्र निःसारक, रुच, दीपन और विषघ्न होता है। (भावप्रकाश)

अल्पमूर्ति (सं॰ त्रि॰) अल्प शरीर विशिष्ट, छोटे जिस्मवाला।

अल्पमूर्तिस् (सं॰ स्त्री॰) अल्प सञ्चक पदार्थ, कोई छोटी चीज।

अल्पमूल्य (सं॰ त्रि॰) अल्प मूल्यविशिष्ट कम कीमत, सस्ता।

अल्पमेधस् (सं॰ त्रि॰) अल्पा ईषत् मेधा धारणा शक्तिर्यस्य, असिजन्त बहुव्री॰। अल्प धारणा शक्ति युक्त, दुर्मेध, अधिक स्मरण न रखनेवाला कमसमझ, नावाकिफ, पामर।

अल्पम्पच (सं॰ त्रि॰) अल्प अल्पपरिमाण पचति, अल्प पच कर्तरि खश् मुम् च उप॰समा॰। १ अल्प परिमित पाक करनेवाला, कृपण बावर्ची, जो पेट काटता हो। (क्ली॰) २ अल्पपाकसाधन पात्र, छोटी हाँडी।

अल्परसा (सं॰ स्त्री॰) हेमवती, सोनजुही।

अल्पवयस् (सं॰ त्रि॰) अल्प अवस्थावाला, कम सिन, जो उमरमें ज्यादा न हो।

अल्पवयस्क, अल्पवयस्।

अल्पवलक (सं॰ पु॰) तित्तिरपक्षी, तीतर।

अल्पवादिन् (सं॰ त्रि॰) ईषत् भाषण करनेवाला कम सखुन जो ज्यादा बोलता न हो।

अल्पविद्य (सं॰ त्रि॰) अल्प ज्ञानविशिष्ट, मूर्ख, कुशिक्षित, अशिक्षित, कम इल्म, जो सीखा-पढ़ा न हो।

अल्पविषय (सं॰ त्रि॰) परिमित परिमाणवाला, तुच्छ विषय सम्बन्ध मरबूत गुञ्जायशका जो छोटी बातमें पड़ा हो।

अल्पश, अल्पशस् देखो।

अल्पशक्ति (सं॰ स्त्री॰) छन्दोविशेष कोई बहर।

अल्पशक्ति (सं॰ त्रि॰) अल्प बलविशिष्ट, कम ताकत, कमजोर।

अल्पशमी (सं॰ स्त्री॰) अल्पा चासौ शमी चेति, कर्मधा॰। क्षुद्र शमीवृक्ष।

अल्पशस् (सं॰ अव्य॰) १ मित परिमाणमें, थोड़े दरजेपर, कुछ कम। २ क्रमश:-क्रमश:, कदम कदम, दूरसे। ३ समय विशेषपर, कभी, जब, तब।

अल्पशुक्रता (सं॰ स्त्री॰) पित्त-जन्य शुक्राल्पता रोग, अथवा बिगड़नेसे पैदा हुई वीर्य कम पड़ जानेकी बीमारी।

अल्पशोफ (सं॰ पु॰) सर्वाङ्गरोग पाँवकी शोथ बीमारी।

अल्पसरस् (सं॰ क्ली॰) अल्प सर, कर्मधा॰। क्षुद्र जलाशय, छोटा तालाब।

अल्पसरोवर—बड़ोदा राज्यस्थ बाकी जिलेके सिद्धपुर स्थानका पवित्र तालाब।

अल्पस्वायु (सं॰ त्रि॰) ईषत् स्नायु-विशिष्ट जिसकी नसें कम रहें।

अल्पाकाङ्क्षिन् (सं॰ त्रि॰) ईषत् अभिलाष रखनेवाला कमख्वाहिश जो थोड़ेसे ही खुश हो।

अल्पाक्षि (सं॰ त्रि॰) सूक्ष्म छिद्र विशिष्ट, जिसमें बारीक बख्ये पड़े।

अल्पायु (हिं॰) अल्पायुस् देखो।

अल्पायुस् (सं॰ पु॰) अल्पम् आयुर्जीवितकालो यस्य। बहुव्री॰। १ बकरी। मालूम होता है, इस समय में चौपायोंमें ही आयुका परिमाण रखकर बकरीका अल्पायु कहा गया है। महर्षि काश्यपके मतानुसार—[illegible]' बकरीकी परमायु तेरह वर्ष होती है। पर कितने ही छोटे छोटे कीड़े एक वर्षसे अधिक नहीं बचते। अतएव उन जैसा अल्प जीवी और कोई नहीं है।

कर्मधा॰। २ जिस प्राणीका जितने समय जीवित रहना उचित है उसकी अपेक्षा न्यून काल। मनुष्यकी परमायु स्वाभाविक सौ वर्ष है। परन्तु पुराणादिमें

जो अधिक परमायुकी बात लिखी है, वह वर्णना बाहुल्य भिन्न और कुछ भी नहीं है।

हमारे देशके कितने ही आदमियोंकी धारणा है, विधाताने जितनी आयु निर्द्धारित कर दी है। उसका क्षय नहीं होता। पर शास्त्रकारों और प्राचीन वैद्य शास्त्रका वैसा मत नहीं है। याज्ञवल्क्य कहते हैं,—

"वर्त्त्याधारस्नेहयोगाद् यथा दीपस्य संस्थिति ।
विक्रियापि च दृष्टैवमकाले प्राणसंक्षय ॥"

जैसे बत्ती,आधार और तेलके संयोगसे दीप जलता है, पर तेज हवा आदि लगनेसे तेल रहनेपर भी प्रदीप बुझ जाता है, उसी तरह क्रिया विकार होनेसे परमायु रहते भी प्राणीका जीवन नष्ट हो जाता है।

चरकमें भी लिखा है, कि नियति एवं परिमित आयुपर विश्वास करना असाधु है। जो लोग ऐसा विश्वास करते हैं, वे लोग भी मन्त्र, रसायन और व्यवहार करते देखे जाते हैं। तथा प्रचण्ड वा उन्मत्त जन्तुके निकटसे भाग जाते हैं। अतएव ऐसे आदमी मुंहसे नियति एवं निर्दिष्ट परमायुकी बात कहते हैं, परन्तु वास्तवमें मन ही मन उसे स्वीकार नहीं करते। आयु वृद्धि एवं क्षयका विवरण आयु शब्दमें देखो।

अल्पारम्भ (सं० पु०) नियमित आरम्भ, क़ायदेका आग़ाज़, सिलसिलेवार शुरू।

अल्पाल्प (सं० वि०) अल्पः प्रकारः अल्पः द्विरुक्तिः। १ अति अल्प, निहायत क़लील, बहुत थोड़ा। अल्पं पादः तस्मादल्पं अर्धम्, ५-तत् वा। २ अर्ध, निस्फ़, आधा। (अव्य०) ३ थोड़ा-थोड़ा, धीरे-धीरे।

अल्पाल्पक, अल्पाल्प देखो।

अल्पास्थि (सं० क्ली०) परूषक फल, फालसा।

अल्पाहार (सं० पु०) १ लघु भोजन, हलका खाना। २ पथ्याचरण, परहेज़। (वि०) ३ पथ्यसे रहनेवाला, परहेज़गार।

अल्पाहारिन् (सं० वि०) लघुभोजन करनेवाला, परहेज़गार, जो कम खाता हो।

अल्पिका (सं० स्त्री०) १ वनमक्षिका जाति, कोई जङ्गली माछी। २ मुद्गपर्णी, मसूर। ३ अल्पमात्रा, थोड़ी ख़ुराक।

अल्पित (सं० वि०) अल्पं क्रियते स्म, अल्प तत्करोति णिच् कर्मणि क्त। अल्पीकृत, कम किया हुआ, जो घट गया हो।

अल्पिष्ठ (सं० वि०) अतिशयेन अल्पम्, इष्ठनीष्ठिद्भावात् अल्पस्य टिलोपः। अतिशय अल्प, निहायत कम, बहुत थोड़ा।

अल्पिष्टकीर्ति (सं० वि०) न्यून प्रशंसाविशिष्ट, कम शोहरत, जो ज़्यादा मशहूर न हो।

अल्पीकृत (सं० वि०) १ क्षुद्र बनाया हुआ, जो छोटा किया गया हो। २ चूर्णीकृत, कुचला हुआ। ३ घटाया हुआ, जो अददमें कम किया गया हो।

अल्पीभूत (सं० वि०) १ न्यून पड़ा हुआ, जो छोटा पड़ गया हो। २ घटा हुआ, जो अददमें कम पड़ा हो।

अल्पीयस् (सं० वि०) इदमनयोः अतिशयेन अल्पम्। अल्पता, ज़्यादा कम। जब दो द्रव्यमें एक ज़्यादा कम पड़ता, तब यह शब्द आता है। (स्त्री०) अल्पीयसी।

अल्पेच्छु, अल्पाकाङ्क्षिन् शब्द देखो।

अल्पेतर (सं० वि०) बृहत्, बड़ा, जो छोटा न हो।

अल्पेशाख्य (सं० त्रि०) क्षुद्र शाखाविशिष्ट, कमीना ख़ान्दान, जो अच्छे घरानेका न हो।

अल्पोन (सं० वि०) ईषत् न्यून, कुछ कम, जो बिलकुल पूरा या तैयार न हो।

अल्पोपाय (सं० पु०) क्षुद्र उद्योग, हक़ीर ज़रिया।

अल्‌फ़ ख़ान्—व्यक्ति विशेष. सन् १३०० ई० को इन्होंने गुजरातका सोमनाथ मन्दिर तोड़ा था। पाटनवाले भद्रकाली मन्दिरकी दीवारमें जो टूटा-फूटा पत्थरीला शिला-लेख मिला, उसमें सोमनाथके मन्दिरका वृत्तान्त सविस्तर लिखा है। इसमें सन् ११६८ ई० या वल्लभी ८५० पड़ा है। लेखमें देखेंगे,—सोमेश देवका मन्दिर पहले सोमने सोने, रावणने चांदी, कृष्णने लकड़ी और भीमदेवने पत्थरका बनाया था। कुमारपालके अधीन गण्ड बृहस्पतिने फिर मन्दिरकी पूर्वावस्था स्थापन किया। गण्ड बृहस्पतिके लिये शिला

इतिहासमें निम्नलिखित विषय वर्णित है,—'यह पाशुपत पाठशालाके व्याख्याता ब्राह्मण, मालव नरेशके शिक्षक और सिद्धराज जयसिंहके मित्र रहे। सोमनाथमें इन्होंने कितने ही मन्दिरोंका जीर्णोद्धार कराया और नया देवालय बनवाया था। मालव नृपतिके राज्य न करते यह कुमारपालके केदारेश्वरका मन्दिर भी ठीक करा गये। कुमारपालका समय बीतनेपर गण्ड बृहस्पतिके सन्तान सोमनाथके धार्मिक कार्य करते रहे।'

अल्बीरूनी—अरब देशके कोई ग्रन्थकार। सन् १०१० ११ ई० को इनका मूलग्रन्थ 'तारीख हिन्द' भारतमें संग्रह किया गया था। अबूरैहान् अल्बीरूनी देखो।

अल्बूकर्क—पोर्तगीज भारतके द्वितीय शासक। सन् १५०८ ई० को इन्हें फ्रांसिस्को डी अलमीदासे पोर्तगीज भारतका शासनभार मिला था। इन्होंने पोर्तगीज प्रभाव भारतमें बहुत फैलाया और कालीकट जीत न सकनेपर सन् १५१० ई०में गोवाको कर दबाया। सिंहली चारो और लङ्काका कर यह मलक्काके मालिक बने और श्याम तथा मालाक्का द्वीपके साथ व्यवसाय चलाने लगे थे। सन् १५१५ ई० को इन्होंने ईरानी खाड़ी और लोहित सागरकी जल यात्रासे लौट गोवामें शरीर छोड़ा।

अल्मवाडे—मन्द्राज प्रान्तके कोयम्बटूर जिलेका नगर। यह कावेरीके वामतट कोयम्बटूरसे साढ़े बत्तीस कोस पूर्व, अक्षा० ११ ८ उ० और द्राघि० ७७ ४८´ पू० पर अवस्थित है। सन् ई०के १७वें शताब्दमें यह स्थान अतिशय प्रधान रहा। सन् १७६८ ई० को कुछ दिन इस नगरमें अंगरेजी फ़ौज पड़ी, हैदर अलीका दल आते ही इसे छोड़ गयी थी।

अल्महदी—अब्बास वंशके ३रे खलीफा। सन् ७७५ ई० को ८वीं अक्तोबरको यह बगदादमें अपने बापकी जगह गद्दीपर बैठे थे। अकसमजनाका बदला ही सबसे बड़ी बात हुआ। इनके सिंहासनारूढ़ होनेपर ७ वर्ष तक यूनानियोंसे युद्ध चला, किन्तु किसीका पक्ष गिरा न था। मजनाका बदला दब जानेसे इन्होंने अपने लड़के हारून् अल् रशीदको ८५ हज़ार सिपाही ले यूनानी राज्यपर आक्रमण करनेको कहा। यह यूनानी फौजको हरा और देशको ध्वंस और तलवारसे बढ़ा कान्स्टाण्टिनोपल तक जा पहुंचे थे। यूनानी महारानीने अधमोल हो और ७०००० अशर्फी वार्षिक कर देनेको कह सन्धि कर ली। हारून् लूटसे मालोमाल बन बगदाद वापस गये थे। कहते हैं, सन् ७८१ ई० को किसी दिन सवेरे सूर्य अकस्मात् धुंधला पड़ा और दोपहर तक अंधेरा छाया रहा। हसना नामक किसी वेश्याने अज्ञान वश इन्हें विष दे दिया था। उसने अपनी प्रतिद्वन्द्वी वेश्याको जहरसे भरी नासपाती नजर की जिसने उसे खलीफाको सौंपा। यह नासपाती खाते-खाते मर गये थे। इनके बड़े लड़के अल्हादी सिंहासनके उत्तराधिकारी हुए।

अल्मामून—अब्बास वंशके ७वें खलीफा और हारून् अल् रशीदके द्वितीय पुत्र। इनका उपनाम अबुल रहा। सन् ८१३ ई०को ६ठीं अक्तोबरको अपने भाई अल् अमीनके मारे जानेपर यह बगदादके खलीफा बनाये गये। सन् ८२० ई०को इन्होंने अपने सेनापति ताहिर इब्न हुसेन और उनके सन्तानको खुरासान राज्यका समग्र अधिकार सौंप दिया था। दूसरा झगड़ा न उठते भी अफरीकाके मुसल्मानोंने सिसिली पर हमला मार कितने ही स्थान छीन लिये। इन्होंने ग्रीकका ग्रंथ विशेष जोता, अच्छे अच्छे यूनानी पुस्तकका अरबीमें अनुवाद कराया और बहुमूल्य ग्रन्थका संग्रह लगाया था। इन्हें बगदादमें ज्योतिषकी पाठशाला स्थापन करनेका भी यश मिला। खुरासानकी राजधानी तूसमें यह रहने लगे। इनके ही उत्साहसे खुरासान विद्वानोंका स्थान और तूस बगदादका प्रतिद्वन्द्वी हो गया। सन् ८३३ ई०को १८वीं अगस्तको एशिया माइनरमें २० वर्ष और कुछ मास राज्य करने बाद यह मरे और तरसूसमें गड़े थे। इनकी पत्नी बोरान ८० वर्ष जीकर सन् ८८४ ई०को २२ वीं सितम्बरको चल बसी। राज्यका उत्तराधिकार इनके भाई मौतसिम बिल्लाहको मिला था।

इनके मरनेपर इन्हें बग़दादकी गद्दी मिली थी। सन् ८६५ ई०को मिस्रके ख़लीफ़ा ख़ुमरावियाकी लड़कीसे बड़ी धूमधामके साथ इनका विवाह हुआ। इन्होंने क़र्मतियोंसे युद्ध तो किया, किन्तु कितनी ही फ़ौज मारी गयी और सेनापति अल् अब्बास क़ैद हुए थे। अपने विवाहके बाद ही इन्होंने ख़ुमरावियाके लड़के हारुन्‌को सदाके लिये अवासम और किन्निस रीन्‌का शासक बनाया, जिन्हें उसने ४५ हज़ार दीनार (अशर्फ़ी) वार्षिक कर देनेपर मिस्र और सिरीयामें मिला लिया। सन् ९०२ ई०को ९ वर्ष ८ मास और २५ दिन राज्यकर यह मर गये। इनके लड़के अल् मुक़्तफ़ी बिल्लाहको राज्यका उत्तराधिकार मिला था।

अल्ल (हिं० पु०) वंशकी संज्ञा, ख़ान्दान्‌का नाम।

अल्लक (सं० पु०) १ कक्कोलविशेष, किसी क़िस्मकी शीतलचीनी। २ धान्यक, धनिया।

अल्लका (सं० स्त्री०) धान्यक, धनिया।

अल्लम-गल्लम (हिं० पु०) १ कूड़ा करकट, अलर-बलर। २ वाही-तबाही, आयं-बायं।

अल्लम प्रभुदेव—प्राचीन संस्कृत योगशिक्षक। स्वात्मारामने 'हठयोगप्रदीपिका'में इनका उल्लेख किया है।

अल्लहगञ्ज—युक्तप्रान्तके फ़रुख़ाबाद ज़िलेकी अलीगढ़ तहसीलका नगर। यह फ़तेहगढ़ शहरसे साढ़े छः कोस उत्तर-पूर्व अवस्थित है। इसमें थाना, डाकख़ाना, सराय और स्कूल बना है। सप्ताहमें दो बार बाज़ार लगता है।

अल्लहबन्द—बम्बई प्रान्तीय सिन्धु सीमाका मटिहा ढेर। यह अक्षा० २४°२१′ उ० और द्राघि० ६८° ११′ पू०पर अवस्थित है। इसमें बालू और घोंघेसे मिली खारी मट्टी भरी है। लम्बाईमें पचीस और कहीं-कहीं चौड़ाईमें यह आठ कोस बैठता है। सन् १८१९ ई०को भूकम्प होनेसे अल्लहबन्द ऊपर उठ आया था। सन् १८२५ ई०को सिन्धुनद बढ़नेपर यह बन्द टूटा और पानीने नीचे ढलकर एक झील बना दिया।

अल्ला (सं० स्त्री०) १ माता, मा। २ धान्यक, धनिया। (फ़ा० पु०) २ परमेश्वर, ब्रह्म। अल्लोपनिषत्‌में अल्लाके भजनकी बात लिखी है,—

"अस्माल्लां इल्ले मित्रावरुणौ दिव्यानि धत्ते।
इल्लल्ले वरुणो राजा पुनर्ददुः।
हयामि मित्रो इल्लां इल्लेति।
इल्लाल्लां वरुणो मित्रो तेजस्कामा।
होतारमिन्द्रो होतारमिन्द्रो महासुरिन्द्राः।
अल्लो ज्येष्ठं श्रेष्ठं परमं पूर्णं ब्रह्माणमल्लां।
अल्लो रसुर महमदरकबरस्य अल्लो।
अल्लां आदल्लाबुकमेककं।
अल्लां बुक निखातकम्।
अल्लो यज्ञेन हुतहुत्वा अल्ला।
सूर्यचन्द्रसर्वनक्षत्रा अल्लो ऋषीणां।
सर्वदिव्या इन्द्राय पूर्वं मायापरमन्त
अन्तरिक्षा अल्ला पृथिव्या अन्तरिक्षं।
विश्वरूपं दिव्यानि धत्ते इल्ले।
वरुणो राजा पुनर्दद्रु।
इल्लाकबर इल्लाकबर इल्लेति।

इल्लाल्ला इल्ला इल्लाल्ला अनादिस्वरूपा अथर्वणी शाखां हुं ह्रीं जनान् पशून् सिद्धान् जलचरान् अदृष्टं कुरु कुरु फट्।

असुरसंहारिणी हुं अल्लो रसुर महमदरकं बरस्य अल्लो अल्लां इल्लल्लेति इल्लल"। अल्लोपनिषद् देखो

अल्लाना (हिं० क्रि०) चिल्लाना, गला फाड़-फाड़के आवाज़ निकालना, ग़ुल मचाना, शोर करना।

अल्लामा (अ० स्त्री०) कलह करनेवाली स्त्री, लड़ाका औरत।

अल्लायी (हिं० स्त्री०) पशुका कण्ठगत रोग, चौपायेके गलेकी बीमारी, घंटियार।

अल्लु (सं० क्ली०) आलुक, आलूबोखारा।

अल्लूर—मन्द्राज प्रान्तके नेल्लूर ज़िलेका नगर। यह अक्षा० १४° ४१′ ३०″ उ० और द्राघि० ८०° ५′ २१″ पू०पर अवस्थित है। इसमें प्रधानतः धान बोनेवाले किसान रहते हैं। तीन उम्दा तालाबोंसे खेत सींचे जाते हैं। सब-मैजिष्ट्रेटकी कचहरी और डाकख़ाना मौजूद है।

अल्लेप्पी—मन्द्राज प्रान्तके त्रिवाङ्कोड़ राज्यका बड़ा बन्दरगाह और शहर। यह अक्षा० ९° २९′ ४५″ उ० और द्राघि० ७६° २२′ ३१″ पू०पर अवस्थित है। मन्द्राजसे ४६४ और कोचिनसे ३३ मील दक्षिण-समुद्रतट पर इसे पाते हैं। यह समुद्र और थानेके

अवका (सं० स्त्री०) अव-कु-न्, चिपकादित्वात् न इत्वम्। शैवाल, सेवार।

अवकाद (दे० वि०) अवका भोजन करनेवाला, जो सेवार खाता हो।

अवकाश (सं० पु०) अव-काश-घञ्। १ विश्राम लेनेका समय, आरामका वक्त। २ अवसर, मौका। ३ समय, वक्त। ४ स्थान, मुकाम। ५ अतिरिक्त समय, फुरसत। ६ दृष्टिपात, नजर। ७ छन्दो-विशेष, कोई बहर। इसे पढ़ते समय लक्ष्य विशेष-पर दृष्टि रखना पड़ती है।

अवकाशवत् (सं० वि०) विस्तृत, कुशादा, लम्बा-चौड़ा।

अवकाश्य (सं० वि०) अवकाश छन्द पढ़ते समय प्रविश पाया हुआ।

अवकिरण (सं० क्ली०) फैलाव, बिखेरना।

अवकीर्ण (सं० वि०) अव-कृ कर्मणि क्त। १ व्याप्त। २ चूर्णीकृत, जो चूर्ण किया गया हो। ३ ध्वस्त। ४ नष्ट। भावे क्त। ५ नष्ट ब्रह्मचर्य, जिस ब्रह्मचारीका ब्रह्मचर्य-व्रत भङ्ग हो गया हो।

अवकीर्णिन् (सं० पु०) अवकीर्णं ब्रह्मचर्य्यव्रत-विरोधिरेतः स्त्रिसमनेन (इष्टादिभ्यश्च। पा ५।२।८८) इति इनि। ब्रह्मचर्यव्रत-भङ्गकारी जन। जो ब्रह्मचारी स्त्रीसङ्गादि द्वारा व्रत भङ्ग करता है। 'अवकीर्णी क्षतव्रतः।' (अमर) स्त्रीसङ्गसे व्यतिरिक्त भी रेतः स्राव होने-पर व्रत भङ्ग होता है, परन्तु अवकीर्णित्व नहीं होता। अल्पप्रायश्चित्तसे ही यह दोष छूट जाता है। यदि ब्रह्मचारी इच्छावशतः स्त्रीगमन करें, तो उनको तज्जन्य दोषनिवृत्तिके लिये निम्नलिखितानुसार प्रायश्चित्त कर्तव्य है। वन या चतुष्पथमें जा लौकिक अग्निसे रक्षोदेवत गर्दभको मार किंवा नैऋत दैवत चरु पाक करके, 'कामाय स्वाहा, कामकामाय स्वाहा, निऋत्यै स्वाहा, रक्षो-देवताभ्यो स्वाहा' इस मन्त्र-द्वारा आहुति प्रदान करनेसे शुद्धि लाभ कर सकते हैं। अनिच्छावश अर्थात् स्वप्नादिमें यदि ब्रह्मचारीका शुक्र स्राव हो जावे, तो वह गन्धपुष्प द्वारा सूर्यकी पूजा कर फिर (पुनर्मामैत्विन्द्रियम्) इस ऋचाको तीन बार जप ले। यही उसका प्रायश्चित्त और इसीसे शुद्धिलाभ भी होता है। यथा—

> "स्वप्ने सिक्त्वा ब्रह्मचारी द्विजः शुक्रमकामतः।
> स्नात्वार्कमर्चयित्वा त्रिः पुनर्मामित्यृचं जपेत्॥" (मनु २।१८१)

अवकुञ्चन (सं० पु०) १ समेटना। २ बटोरना।

अवकुटार (सं० वि०) अव स्वार्थे कुटारच्। १ अत्यन्त-निम्न, बहुत नीचा। (क्ली०) २ वैरूप्य, विरूप, बद-सूरत, जिसकी कान्ति अच्छी न हो।

अवकृष्ट (सं० वि०) अव-कृष्-क्त। १ दूरीकृत, दूर किया हुआ। २ निष्कासित, निकाला हुआ। 'निष्कासितोऽवकृष्टः स्यात्।' (अमर) ३ निगलित, नीचे उतारा हुआ। ४ नीच, नीच जाति। अवकृष्टं गृहमार्जना-दिना अवकर्षणमस्त्यस्य अर्श-आदि-अच्। (पुं०) ५ घरमें झाड़ू लगानेवाला दास या नौकर।

अवकृष्य (सं० वि०) अव-कृष्-कर्मणि क्यप्। १ आक-र्षणीय, आकर्षण करने योग्य, जिसे खींचकर ले आवें। २ दूरीकरणीय, त्याज्य, जो छोड़ देने लायक हो। (अव्य) अव कृष्-ल्यप्। ३ आकर्षण करके।

अवक्लृप्ति (सं० वि०) अव-क्लृप्-क्तिन्। सम्भावना।

अवकेशिन् (सं० वि०) अव असम्पूर्णेन केन सुखेन ईशते ऐश्वर्यवान् भवति पत्रवादि सत्त्वेपि फलराहि-त्यात् अवक-ईश-इनि। १ वन्ध्य वृक्ष, जिस वृक्षमें फल लगता न हो। 'वन्ध्योऽफलोऽवकेशी च।' (अमर) अव असम्पूर्णाः केशा विद्यन्ते अस्य इनि। अल्पकेशयुक्त, जिसके बाल थोड़ा रहे।

अवकोकिल (सं० वि०) अवक्रुष्टं कोकिलया प्रादि० स०। १ कोकिलकी तरह बोलनेवाला। (पु०) २ कोकिलाका शब्द, कोयलकी बोली।

अवकखन (हिं० पु०) देखना।

अवक्तव्य (सं० वि०) न वक्तव्यम्, नञ्-तत्। १ बोलनेके अयोग्य, जो बोलने लायक न हो। २ अश्लील। ३ निषिद्ध। ४ मिथ्या।

अवक्त्र (सं० वि०) नास्ति वक्त्रं मुखं यस्य। नञ् बहुव्री०। व्रणविशेष, किसी किस्मका फोड़ा। जिस फोड़ेके मुंह न रहे।

अवखाद (सं० पु०) अवज्ञातो निन्दितो खादो खाद्यम्, प्रा० स०। निन्दित खाद्य।

"भाव अवखादो अति व।" ऋक् ८।३१।४।

'अवमतव्य. खादो गुगुस्विनद्दविविशेष।' (सायण)

अवगण (सं० वि०) गणभिन्न, अकेला।

अवगणन (सं० क्ली०) अव-गण भावे ल्युट्। १ अवज्ञा, निन्दा, तिरस्कार। २ पराभव, पराजय हार। ३ अपमान। नीचा देखना। ४ गिनती।

अवगणित (सं० वि०) अव गण्यते स्म अव-गण-कर्मणि क्त। १ अनिश्चित। २ निन्दित, अपमानित, अवज्ञात, तिरस्कृत। ३ पराजित, पराभूत। ४ नीचा देखा हुआ। ५ गिना हुआ।

अवगण्ड (सं० पु०) अव गम-ड। अमन्ताड्ड। उण् ।।१०१। इति ड नास्येत्वम्। गण्ड: कपोल: अव निन्दितो गण्डो येन। प्रादि बहुव्री०। गण्डस्य व्रण-विशेष, गालपरका कोई फोड़ा, गरगण्ड नामक रोग विशेष।

अवगत (सं० वि०) अव-गम-क्त। १ निम्नगत, नीचे गया हुआ। २ गत। ३ ज्ञात, मालूम, बुद्ध, बुधित, विदित। ४ जाना, प्रतिपन्न। ५ अवमित। ६ गिरा हुआ।

अवगतना (हिं० क्रि०) सोचना, समझना, विचारना।

अवगति (सं० स्त्री०) अव-गम भावे क्तिन्। १ निश्चय-ज्ञान। २ बुद्धि, धारणा, समझ। ३ कुगति, नीचगति।

अवगथ (सं० पु०) अव गच्छो अगमत् अव-गम (निशीथगोपीथावगथा। उण् २।९) इति थक्। प्रातः-स्नात, जो प्रातःकाल स्नान करता हो। 'अवगथ स्नान स्नात।' (उज्ज्वलदत्त)

अवगदित (सं० वि०) अव गद-कर्मणि क्त। अपवादयुक्त, जो निन्दायुक्त कहा गया हो।

अवगम (सं० पु०) अव-गम-भावे अप्। निश्चय ज्ञान।

अवगमन (सं० क्ली०) देख सुनकर किसी बातके अभिप्रायको जान लेना, जानना, समझना।

अवगर्हित (सं० वि०) निन्दित, जघन्य।

अवगाढ (सं० वि०) अव-गाह-क्त। यहां अव-शब्दके अकारका विकल्प लोप होनेपर 'वगाढ़' रूप होता है। (अपि शब्द देखो) १ निविड। २ अन्तःप्रविष्ट। चिन्ता या जल प्रभृतिके मध्य प्रविष्ट। निमग्न। जो फिक्र या जलमें डूबा हो। ३ कठिन, या घन वस्तु विषयीभूत पदार्थ। जैसे घटज्ञानके विषय, घट-घटत्व एवं घट और घटत्वका संसर्ग सम्बन्ध। 'घट लाओ' ऐसा बोलनेपर घटत्वविशिष्ट घट, उसका सम्बन्ध जो समवाय—यह तीन वस्तु जाना जाता है। अतः अवगाढ शब्दमें यह तीन ही मालूम पड़ता है।

अवगारना (हिं० क्रि०) समझाना, बुझाना, जताना, चितावना।

अवगाह (सं० पु०) अव गाह घञ्। १ स्नान। जलमें मलमलकर स्नान करना। २ अन्तःप्रवेश, भीतर प्रवेश। ३ अवगति। ३ ज्ञान द्वारा विषयी करना, जो ज्ञानसे जाना जाये। आधारे घञ्। ४ स्नानका स्थान, तालाब प्रभृति। (अवगाह देखो) इसका विकल्पसे आकार लोप होनेपर 'वगाह' रूप होता है (अपिशब्द देखो)

अवगाहन (सं० पु०) अव-गाह-ल्युट्। १ पानीमें घुसकर स्नान, निमज्जन। २ प्रवेश, पैठ। ३ मथन, विलोडन। ४ चाहना, खोज, छान, बीन। ५ चित्त धंसाना, लीन होकर विचार करना।

अवगाहना (हिं० क्रि०) १ घुसकर स्नान करना, नहाना, निमज्जन करना। २ डूबना, धंसना, पैठना, मग्न होना। ३ थहाना, छानना, छान बीन करना। ४ मथना, विचलित करना, हलचल डालना। ५ चलाना, डुलाना, हिलाना। ६ सोचना, विचारना, समझना। ७ धारण करना, ग्रहण करना।

अवगाह्य (सं० वि०) अवगाहितुमर्हम् अव गाह-अर्हार्थे ण्यत्। १ स्नानादि योग्य जलादि। २ अन्तः प्रवेश्य। जिसका मर्म बुझा जाये। जिसमें प्रवेश किया जाये। ३ विषयी कार्य घटादि। (अव्य) अव-गाह-ल्यप्। अवगाहन करके।

अवगाहित (सं० पु०) स्नान किया हुआ। नहाया हुआ, जो स्नान कर चुका हो।

अवगीत (सं॰ त्रि॰) अव गै-क्त ईकारस्य आत्त्वम् आत ईत्वं। १ निर्वाद। २ विवादशून्य। ३ अपवाद ग्रस्त। ४ दुष्ट। ५ गर्हित, निन्दित। मुहुर्मुह, जो बारंबार देखा गया हो। (यद्गीतन्तु निर्वाद स्याद्गर्हितं। त्रिक) (क्ली॰) भावे क्त। निन्दा। अपवाद।

अवगुण (सं॰ पु॰) अव-गुण क। १ दोष, दूषण, ऐब। २ अपराध, गुनाह, खोटाई।

अवगुण्ठन (सं॰ क्ली) अव-गुण्ठ-ल्युट्। १ मुख आवरण करना, मुख ढंकना। २ घूंघट डालना। करणे ल्युट्। मुखाच्छादनका वस्त्र, जिस कपड़ेसे मुंह ढांका जावे पर्दा, घूंघट, बुर्का।

अवगुण्ठनमुद्रा (सं॰ स्त्री॰) मुद्रा विशेष। तर्जनी अङ्गुली दीर्घ और उसका अग्र भाग थोड़ा वक्र बना बाहर रखकर बाम हाथकी मुट्ठी बांध इधर उधर भ्रामित करने (घुमाने)को अवगुण्ठनमुद्रा कहते हैं।

अवगुण्ठनवती (सं॰ स्त्री॰) घूंघटवाली स्त्री, जो मुंह पर घूंघट डाले हो।

अवगुण्ठिका (सं॰ स्त्री॰) अवगुण्ठयति आच्छादयति। अव-गुण्ठ णिच्-ण्वुल् णिच् लोपः स्त्रीत्वात् टाप् अत इत्वम्। १ जो स्त्री मुख आवृत करे (छिपावे) उसको कर्तृत्व विवक्षामें वस्त्रको भी अवगुण्ठिका कहते हैं। २ घूंघट। ३ यवनिका, पर्दा चिक।

अवगुण्ठित (सं॰ त्रि॰) अव-गुण्ठ णिच्-क्त इट् णिच् लोप। १ आच्छादित। २ आवृत। ३ चूर्णीकृत, जो चूर किया हो।

अवगुण्ठ्य (सं॰ त्रि॰) अवगुण्ठयति आच्छादयति अव गुण्ठ चुरादि णिच् कर्मणि यत् णिच् लोप। १ आच्छाद्य, आच्छादन करने योग्य, जो छिपाने लायक हो। (अव्य॰) अव-गुण्ठ-ल्यप् णिच् लोप। २ आच्छादन कर, छिपाकर।

अवगुम्फन (सं॰ पु॰) गूंथन, गुहन, ग्रथन, गुंथाई।

अवगुम्फित (सं॰ त्रि॰) अव-गुम्फ कर्मणि क्त। ग्रथित, गूंथा हुआ, गुहा हुआ।

अवगुर्य (सं॰ त्रि॰) अवगूर्यते उद्यम्यते अव-गुर ण्यत्। १ मारनेको उठाया जानेवाला। (अव्य॰) ल्यप्। २ मारनेको उठाकर। ३ उद्यम करके।

अवगूहन (सं॰ क्ली॰) अवगूह्यते सन्धिकार्यं निषिध्यते अव-गुह-ल्युट्। १ अवग्रह, विच्छेद, पद पाठ कालमें किञ्चित् अवसान। अर्थात् जिस समय सन्धि न हो।

अवगोरण (सं॰ क्ली॰) अव-गुर-ल्युट्। वध करनेके निमित्त खड्गादि अस्त्र, मारनेके लिये हथियार का उठाना।

अवग्रह (सं॰ पु॰) अव-ग्रह-अप्। १ विच्छेद। दो पदके मध्य किञ्चित् अवसान अर्थात् सन्धिका प्रतिबन्ध। जैसे 'विम्बोष्ठ' यहां 'विम्बौष्ठ' ऐसा रूप नहीं होता है। २ अतिरोध, अनावृष्टि, वर्षाका अभाव। ३ प्रतिबन्धक। ४ हस्तिका ललाट, हाथीका माथा। ५ गजसमूह गजयूथ। ६ स्वभाव, प्रकृति। ७ ज्ञान विशेष। ८ रुकावट, अटकाव, अड़चन, बाधा। ९ शाप शब्द। १० अनुग्रहका उलटा। ११ शाप, कोसना।

१२ जिनमतानुसार ज्ञानके मति श्रुत, अवधि, मनःपर्यय केवल ये पांच भेद हैं। पांच इन्द्रिय और मनकी सहायतासे जो ज्ञान होता है उसे मतिज्ञान कहते हैं। उसके मूलमें ४ भेद हैं—अवग्रह, ईहा अवाय धारणा। इन्द्रिय और पदार्थके योग्यस्थानमें (मौजूद जगहमें) रहनेपर सामान्य प्रतिभासरूप दर्शनके पीछे अवान्तर सत्ता सहित वस्तुके विशेष ज्ञानको अवग्रह कहते हैं। मतिज्ञानके पहिले होने वाले सामान्य अवलोकन (प्रतिभासमात्र)को दर्शन कहते हैं, जैसे कि रास्तेमें चलते हुए किसी मनुष्यको तृणका स्पर्श हुआ तो "कुछ पदार्थ लगा" इस प्रकारके सामान्य प्रतिभासको तो दर्शन कहते हैं और कोमल कठोर आदि विशेष जानना अवग्रह है इसके दो भेद हैं। व्यञ्जनावग्रह अर्थावग्रह। अव्यक्त पदार्थोंके ज्ञानको व्यञ्जनावग्रह कहते हैं जैसे—कोरा (नवीन) सकोरामें जल दो चार बिन्दु डालनेसे गीला नहीं होता परन्तु बार बार सींचनेसे आर्द्र हो जाता है अर्थात् उसमें जल व्यक्त होने लगता है। इसी प्रकार श्रोत्रादि इन्द्रियोंके अवग्रहमें प्रकट होनेयोग्य शब्दादि

रूप परिणत हुए पुद्गल परमाणुओंके स्कन्ध दो तीन समय पर्यन्त जबतक कि व्यक्त नहीं होते तबतक तो व्यञ्जनावग्रह है और बार बार ग्रहण करनेसे जब व्यक्त हो जाते हैं तब अर्थावग्रह होता है। व्यञ्जनावग्रह नेत्र और मनसे नहीं होता इनसे केवल अर्था-(व्यक्त) वग्रह ही होता है। इसके उत्तर भेद १२० हैं।

अवग्रहण (सं० क्लो०) अव-ग्रह भावे ल्युट्। १ प्रतिरोध। २ अनादर। ३ ज्ञान।

अवग्राह (सं० पु०) अव-ग्रह-घञ्। १ वृष्टि व्याघात, पानीका न बरसना। २ सूखा। ३ हस्तिका ललाट। ४ शाप, कोसना।

अवघट (सं० पु०) अव-घट आधारे घञ्। १ गर्त, गड्ढा। २ छिद्र। करणे घञ्। ३ पेषणयन्त्र, पीसनेका कल, जांता, चकरी प्रभृति। भावे घञ्। ४ चालन। ५ घौंटा वा घुरान। १ कुघट। २ अटपट। ३ अड़बड। ४ विकट। ५ दुर्गम। ६ कठिन। ७ दुर्घट। (क्लो०) भावे ल्युट्, अवघटन (अवघट देखो)। (स्त्री०) युच् टाप् अवघटना।

अवघटित (सं० त्रि०) अव-घट-कर्मणि क्त। चालित, चलाया हुआ, जो चलाया गया हो।

अवघर्षण (सं०क्लो०) अव-घृष्-ल्युट्। १ नीचे रख घिसना। २ घर्षण। ३ मार्जन।

अवघात (सं० पु०) अव-हन-घञ्। १ चोट, अवहनन। २ चाउल प्रभृति। ३ हनन। ४ ताडनमात्र, सभी तरहका ताडन। घन प्रहार।

अवघातिन् (सं० त्रि०) अवहन्ति अव-हन-णिनि उपधावृद्धिः हकारस्य घकारः। अवघातक, जो घात करता हो। (स्त्री०) ङीप्। अवघातिनी। अवघातिका, घात करनेवाली स्त्री। जो स्त्री घात करती हो।

अवघुष्ट (सं० त्रि०) अव-घुष्-क्त। प्रचारित, जनाया हुआ, जो सबको जना दिया गया हो।

अवघूर्णन (सं० क्लो०) अव-घूर्ण-भावे ल्युट्। सब जगह घूम करके।

अवघोटित (सं० त्रि०) अव-घुट विनिमये क्त। १ परिवर्तित, उलट-पलट किया हुआ। २ बदली वस्तु, बदलीकी हुई चीज। परिवर्त विवाहमें वर और कन्याको भी अवघोटित कहा जाता है। ३ सर्वदिग्वेष्टित, चारो तरफ घिरा हुआ। परिवृत्त, अनेक देश घूम प्रत्यागत। सब देशसे घूमकर आया हुआ। ४ व्याहत, रुका हुआ।

अवघोषण (सं० क्लो०) अव-घुष्-भावे ल्युट्। इस तरह उच्च स्वरसे कहा हुआ, कि सब कोई जान गया हो। (स्त्री०) युच् टाप्—अवघोषणा, उच्च घोषणा। जोर-जोरसे कहना।

अवघ्राण (सं० त्रि०) अवघ्रायतेस्म अव-घ्रा-कर्मणि क्त, वा तकारस्य नकारः। जिसका घ्राण (गन्ध) ले लिया गया हो। जो वस्तु सुंघा हुआ हो। (क्लो०) भावे क्त। घ्राण लिया, सुंघा। नुदविदोन्दत्राघ्राह्रीभ्योऽन्य-तरस्याम्। पा ८।२।५६। नुद, विद, उन्द, त्रै, घ्रा, ह्री ये सब धातुके निष्ठाको विकल्पसे न होता है।

अवघ्रात (सं० त्रि०) अवघ्रायतेस्म अव-घ्रा-कर्मणि क्त। यहां निष्ठाके स्थानमें नकार न हुआ। जिसका घ्राण ले चुके। जो सुंघा हुआ हो। (क्लो०) भावे क्त। सुंघा हुआ। निष्ठाके न होनेका सूत्र अवघ्राण शब्दमें देखो।

अवचक्षण (सं० त्रि०) अव कुत्सितं च ष्टे चक्ष-कर्तरि ल्यु। १ कुत्सिताख्यानकर्ता, खराब बात बोलनेवाला। २ निन्दाकारी, जो दूसरेकी निन्दा करता हो। ३ अपवादकारी, झूठा किसीका दोष लगानेवाला। चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि। अयं दर्शनेऽपि। इकारोऽनुदात्तो युक्तर्थे विवचण प्रथम'। (सिद्धान्तकौ०) कात्यायनने वार्तिकसूत्र किया है 'चक्षनयीय प्रतिषेधो वक्तव्यः।' अस् एवं अन् प्रत्यय विधान करनेसे ख्या नहीं होता। तज्जन्य नृ-चक्ष-अस् नृचक्षा राक्षसः। एवं वि-चक्ष-अन विचक्षण, अव-चक्ष-अन अवचक्षण इत्यादि रूपसिद्ध हुआ है।

अवचट (हिं० पु०) अनजान। अचक्का। कठिनाई। अवघट। अंडस। चपकुलिस।

अवचन (सं० क्लो०) न वचनं कुत्सायां, नञ्-तत्। १ निन्दा। अभावे नञ्-तत्। २ वचनाभाव, वचनका न रहना। (त्रि०) नास्ति वचनं यस्य। नञ् बहुव्री०। ३ वाक्यशून्य, जो बोलता न हो। ४ गुंगा।

अवचनीय (सं० त्रि०) वक्तुमर्हं वच्-अर्हार्थे अनीयर्

ततो नञ् तत्। १ बोलनेके अयोग्य वाक्य, जो बात बोलने या कहने योग्य न हो। २ अश्लील वाक्य, फूहर या नीच बात। वचनीयं भिन्न ततो नञ् तत्। अनिन्दनीय प्रशंसनीय। जो प्रशंसा करने योग्य हो।

अवचय (सं॰ पु॰) अव-चि-अच्। पुष्पादि चयन करना, चुनकर इकट्ठा करना। फल या फूल तोड़कर बटोरना।

अवचाय (सं॰ पु॰) अव चि-घञ्। १ हस्तद्वारा पुष्प फलादिका चयन करना। यदि (लाठी) प्रभृति द्वारा या चौर्यादि द्वारा चयन होनेपर अच् प्रत्ययनिष्पन्न अवचय शब्द होता है। हस्तादाने चेरस्तेये। पा ३।३।४०, यदि हस्त द्वारा चयन करना अर्थ मालूम पड़े तब ही चिधातुके उत्तर घञ् प्रत्यय होता है। हस्तेन [illegible] (कब एवं कि भी)

अवचित (सं॰ त्रि॰) अवचीयते स्म अव-ची कर्मणि क्त। १ संचित, इकट्ठा किया हुआ। २ अर्पित पुष्पादि "अवचितबलिपुष्पा" (कुमारसम्भव १।६०) जो पूजाके लिये पुष्प चयन करती है।

अवचितगढ़—बम्बई प्रान्तके कोलाब जिलेका किला। बाहरी दीवारको जो कंटीली मजबूत बनी है, उससे साबित होता है, कि प्राचीन और विदेशी बहुत कदर करते थे।

अवचूड़ (सं॰ स्त्री॰) अवनतं चूड़ायाः। १ प्रादि॰ स॰। १ ध्वजाका अधोमुख वस्त्र। ध्वजाका निम्न मुख भाग चामरादि। (त्रि॰) अवनता चूड़ा जिसे ब्रादि वस्त्र, प्रादि बहुव्री॰। २ मस्तकका चूड़ा या किरीटादि शून्य ध्वजायुक्त। ३ जिसका चूड़ा संस्कार हुआ न हो।

अवचूरी (सं स्त्री॰) टिप्पणी। टीका।

अवचूर्णन (सं॰ क्ली॰) अव-चूर्ण भावे लुट्। १ पेषण पीसना। चूर्ण करना। अव चर णिच् लुट्, णिच् लोप। २ चूर्ण करना, ध्वंस करना। ३ वस्तुतोल द्रव्यविशेष।

अवचूर्णित (सं॰ त्रि॰) अव-चूर्ण पेषणे कर्मणि क्त जो चूर्ण किया हो। गुंडा किया द्रव्य। चूर्ण रकअस्मी, अवचूर्णि इस नामधातुके उत्तर क्त। चूर्ण करके जिसका ध्वंस किया गया हो।

अवचूल (सं॰ क्ली॰) अवनता चूड़ा अर्श आद्यच् बहुव्री। यहाँ डकारके स्थानपर अन्तमें लकार हो गया है। ध्वजाके अधभागमें बंधा अधोमुख वस्त्र और चामरादि। ध्वजादिका अङ्गविशेष। व्याकरणके अच् मध्ये डकार स्थाने ळ होता है एवं ढकारके स्थानमें ळ्हकार हो जाता है। सायणाचार्य "अग्निमीळे पुरोहितम्" इत्यादि १।१।१ ऋग्वेदके भाष्यमें लिखे हैं—[illegible] (ऋक्प्राति) [illegible] इसी तरह अच् व्यतिक्रम हो परिशिष्टमें ढकार मूर्धन्य वर्ण रहनेसे ळ्हकार हो जाता है। इसका विशेष विवरण ळकार शब्दमें देखो।

अवचूलक (सं॰ क्ली॰) अवचूलमिव प्रकृति, इवार्थे समासायां वा कन् प्रत्यय। चामर।

अवच्छद (सं॰ पु॰) ढकना। सरपोश।

अवच्छिन्न (सं॰ त्रि॰) अव-छिद-क्त। किसी विशेषण द्वारा जिसे विशेष रूपसे कहा गया है। जैसे—'जटा-वच्छिन्न तापस' ऐसा कहनेसे यह समझा जाता है कि जटाद्वारा तापसका अन्यान्य व्यक्तियोंसे विशेष किया गया है। अर्थात् यहाँ जटा विशेषण स्वरूप है। जटा देखकर समझा जाता है, कि जटाधारी व्यक्ति एक तपस्वी है। विशेषण द्वारा विशेष करनेको एवं किसी वस्तु द्वारा सीमा निर्दिष्ट हो जाय उसे भी अवच्छिन्न कहते हैं। जैसे घटको कारणता दण्डत्वा-वच्छिन्न है, ऐसा कहनेसे घटकी कारणता सब दण्डोंमें हो है, दण्ड भिन्न और किसीमें नहीं है, यही समझा जाता है अर्थात् यहाँ दण्डत्व द्वारा घटको कारणताकी सीमा निर्दिष्ट की गई है। जो एक वस्तुसे दूसरे वस्तुको व्यवच्छेद अर्थात् विभिन्न कर देता है उसका नाम अवच्छेदक है। अवच्छेदकके धर्मको अवच्छेदकता कहते हैं। अवच्छेदकता-धर्ममें कहीं स्वरूप सम्बन्ध विशेष और कहीं अनतिरिक्त वृत्तित्व देखा जाता है। जैसे दण्डका दण्डत्व स्वरूप धर्म दण्ड ही में रहता है, दण्डभिन्न अन्य किसी

वस्तुमें दण्डत्व नहीं रह सकता। और भी दण्डमें जो सब धर्म है, उसके अतिरिक्त अन्य धर्मको वह विभिन्न कर देता है, इसलिये वह घटादिका कारणता-वच्छेदक होता है। इसके उसके द्वारा दण्डका निरूपण किया जाता है।

जिसका अभाव है वही उस अभावका प्रतियोगी है। जैसे, 'घटका अभाव,' ऐसा कहनेसे घट ही उस अभावका प्रतियोगी है। प्रतियोगीके धर्मका नाम है प्रतियोगिता। 'घटका अभाव' कहनेसे, वह प्रतियोगिता घटभिन्न अन्य किसी वस्तुमें रह नहीं सकती। सुतरां वह पटादिके अभावकी प्रतियोगिताको व्यवच्छेद कर देती है। इसलिये घटत्व उसका अवच्छेदक है। अतएव वह प्रतियोगिता ही घटत्वावच्छिन्न है।

परिमाणादिसे इयत्ता करनेको अवच्छिन्नत्व कहते हैं। जिस वस्तुकी इयत्ताकी जाती है, वही वस्तु उसका परिमाणावच्छिन्न है। जैसे, द्रोणव्रीहि, द्रोण परिमाणावच्छिन्न व्रीहि; अर्थात् द्रोणपरिमित व्रीहि।

विशिष्ट अर्थात् स्थित अर्थमें भी 'अवच्छिन्न' शब्द प्रयुक्त होता है। जैसे,—'गृहावच्छिन्न आकाश,' गृहविशिष्ट अर्थात् गृहमें स्थित आकाश।

वेदान्त-मतसे, अन्तःकरणावच्छिन्न चैतन्य जीव, अर्थात् अन्तःकरणविशिष्ट वा अन्तःकरणमें स्थित चैतन्यका नाम जीवात्मा है।

अवच्छिन्नवाद (सं० पु०) अवच्छिन्नस्य अन्तःकरण विशिष्टतया जीवस्य वादो व्यवस्थापनं यत्र। बहुव्री०। वेदान्तमें ऐसा मत स्वीकार किया गया है, कि अन्तःकरणमें चैतन्य रूप जीवात्मा है। अतएव उसके प्रतिपादक मतको 'अवच्छिन्नवाद' कहते हैं।

यह अवच्छिन्नवाद दो प्रकारका है। कोई कोई कहते हैं, कि अन्तःकरणमें प्रतिविम्वविशिष्ट चैतन्यका नाम जीवात्मा है। और किसीके मतसे, अन्तःकरण-विशिष्ट चैतन्यका ही नाम जीवात्मा है। इन दोनों पक्षोंमें अन्तःकरणावच्छिन्नवादी, अन्तःकरण प्रतिविम्बावच्छिन्नवादीको यह कहकर दोष देते हैं, कि रूपविशिष्ट वस्तुका ही प्रतिविम्ब होता है। किन्तु चैतन्य-रूपशून्य निरवयव वस्तु है, सुतरां उसका प्रतिविम्व रहना असम्भव है। अधिकन्तु, प्रतिविम्ब आप कुछ भी नहीं है, वह अन्य वस्तुकी छाया मात्र है, उसका अपना अस्तित्व कुछ भी नहीं है। सुतरां प्रतिविम्बको जीवात्मा कहनेसे जीवात्माका भी कुछ भी अस्तित्व नहीं रहता। अतएव जो खुद कोई चीज नहीं है, उसका बन्धन और मोचन कैसे सम्भव हो सकता है।

नैयायिककी तरह वैदान्तिक भी स्वीकार करते हैं, कि आकाश एकके सिवा दो वा उससे अधिक नहीं है। पर उसी एक आकाशके स्थानभेदसे विभिन्न प्रकारके नाम होते हैं। उसी तरह चैतन्य भी एक ही है, केवल अन्तःकरण प्रभृति आधारविशिष्ट कहनेसे उसका भिन्न भिन्न नाम होता है। घटके चारो ओर आकाश वेष्टित रहता है, पर उस घटको स्थानान्तरित करनेसे उसके चारो ओरका आकाश उसके साथ साथ नहीं जाता। जीवात्माकी भी ठीक वही दशा है। इहलोक और परलोकमें उसकी गतिविधि नहीं है। केवल उपाधि भेदसे ही उसे 'इहलोक गमन' किंवा 'परलोकगमन' ऐसा नाम दिया जाता है। उसी कारणसे जीवात्माके बन्धन एवं मोचनमें कोई व्याघात नहीं लगता।

जो उपाधिद्वारा इस अज्ञानाधीन संसारमें प्रवृत्ति होती है, उसीका नाम जीव है। उस जीवका बन्धन होता है। जिस उपाधिसे परमात्मारूपसे संसारमें प्रवृत्ति नहीं होती, उसका बन्धन भी नहीं होता, सुतरां मोक्ष होता है।

अवच्छिन्नत्व (सं० क्ली०) १ व्यापकत्व। यथा सरोवरमें वह्निमत्ता (अग्निकी स्थिति) युक्त समुद्र निरूपित प्रतिबन्धकता रहनेपर, सरोवर वह्निमान् नहीं है, ऐसा निश्चयीभूत विषयको अवच्छिन्नत्व कहते हैं। (गदाधर)

२ सामानाधिकरण्य। जैसे वह्निव्याप्य धूमवान् पर्वत, ऐसा परामर्शनिरूपित धूमनिष्ठ दो विषय (सम्बन्ध और रूप) का अवच्छेद्य तथा अवच्छेदक भाव। ३ स्वरूपसंबन्ध विशेष, जैसे आगे (ऊपर)

अर्थात् कपिसंयोग मूलमें नहीं शाखामें होता, इत्यादि स्थलमें वृक्षाधिकरण मूलका वृक्षनिष्ठ कपिसंयोग भावावच्छेदकत्व, और वृक्षाधिकरण शाखादिका वृक्षनिष्ट कपिसंयोगावच्छेदकत्व है। २ अवच्छेदकत्व नामक विषयतात्मक स्वरूप सम्बन्ध विशेष। यथा वह्निसाधन पर्वतमें 'पर्वतो वह्निमान्' यह अनुमित्यात्मक ज्ञानीय वह्निनिष्ठ विधेयता निरूपितोद्देश्यतावच्छेदकत्व है। ३ स्वाश्रयजन्यत्व या स्वाश्रयविशेषणत्व। जैसे—धात्वर्थतावच्छेदक फल शालित्व कर्म होता है,—यहां पर फलमें धात्वर्थका अवच्छेदकत्व है। ४ व्यापकत्व। यथा—पर्वतत्वावच्छेदसे वह्निमें पर्वतत्व व्यापक अग्निप्रतियोगिक संयोगत्वका अवगाहमान संसर्गतावच्छेदकत्व होता है। ५ व्याप्यत्व। जो विषय अनुमितिका प्रतिबन्धक हो। जैसे 'ह्रदो न वह्निमान्' अर्थात् तालाब अग्नि युक्त नहीं—ऐसा निश्चय होनेपर 'ह्रदो वह्निमान्' इस अनुमिति जन्य ज्ञानका प्रतिबन्ध होता; अतएव उसका अवच्छेदकत्व है। ६ तदधिकरण वृत्तिसे ज्ञायमानत्व। जैसे घट पट नहीं—इत्यादिसे घटत्वमें पटनिष्ठ (पटमें रहनेवाली) प्रतियोगिताको अवच्छेदक माना जाता है। ७ विशेषणत्व। ८ नियामक। कोई नियामक, कोई अवच्छेदकत्व कहते हैं। सामान्यतः अवच्छेद्य और अवच्छेदक भाव दो तरह का होता है। स्वरूप सम्बन्ध रूप और व्याप्य व्यापक भाव। उसमें प्रथम इस समय—गोष्ठमें गो नहीं—ऐसा कहनेपर एतत्काल गवाभावका अवच्छेद्यावच्छेदक भाव है। दूसरे—पृथिवी रूपवती हैं—इत्यादिमें रूप और पृथिवीत्वका अवच्छेद्य अवच्छेदक भाव है। (गदाधरी)

अवच्छेदकत्वनिरुक्ति (सं० पु०) अवच्छेदकत्वे तत् पदार्थनिर्णयविषये निर्निश्चया उक्तिर्यस्मिन्, बहुव्री०। १ नवद्वीपनिवासी रघुनाथ शिरोमणि-कृत अवच्छेदकत्व पदार्थनिर्णायक न्यायशास्त्रके अनुमान-खण्डान्तर्गत ग्रन्थविशेष। (स्त्री०) अवच्छेदकत्वे तत् पदार्थनिश्चयविषय उक्तिः, ७-तत्। २ अवच्छेद-पदार्थकी निर्णायक उक्ति।

अवच्छेदन (सं० क्ली०) १ कटायी, तराशी। २ विभाजन, तक़सीम, बंटवारा। ३ पहचान, शिनाख़्त।

अवच्छेद्य (सं० त्रि०) अवच्छेत्तुं अर्हम्, अव-छिद-अर्हार्थे ण्यत्। १ छेदनार्ह, काटनेके काबिल। २ अवधारणीय, यक़ीन् लाने लायक़। ३ विशेषणीय, तारीफ़के क़ाबिल। (पु०) ४ अवच्छेदार्ह पदार्थ, अलग रखने लायक़ चीज़। जैसे घटनिष्ठ घटाभावको प्रतियोगिता घटत्व द्वारा ही अवच्छेद्य बनती अर्थात् उस जगह घटत्व ही अन्य प्रतियोगिता हटा घटप्रतियोगिताको अलग करता है।

अवच्छेद्यावच्छेद (सं० पु०) साधारण बनानेवाला, जो विभेद न रखता हो।

अवछंग, उछंग देखो।

अवजनित (सं० त्रि०) उत्पन्न हुआ, पैदा हुआ।

अवजय (सं० पु०) अव-जि-अच्। पराजय, हार।

अवजित (सं० त्रि०) १ परास्त, जीता हुआ, जो हार गया हो। २ अनवधारित, दिलसे उतर जानेवाला।

अवजुष्ट (सं० त्रि०) देखा-भाला, जाना-माना, समझा-बूझा।

अवज्ञा (सं० स्त्री०) अव-ज्ञा-अङ्-टाप्। १ अनादर, बेइज़्ज़ती। २ अवमानना, नाफ़रमानबरदारी। ३ पराजय, हार। ४ काव्यालङ्कारविशेष। इसमें एक वस्तु दूसरेके दोष-गुण नहीं लेता।

अवज्ञान (सं० क्ली०) अव-ज्ञा-भावे ल्युट्। १ अवमान, अनादर, तिरस्कार।

अवज्ञेय (सं० त्रि०) अव-ज्ञा कर्मणि यत्। १ अनादरणीय, अपमानके योग्य। २ तिरस्कार्य्य, तिरस्कारके योग्य।

अवट (सं० पु०) अव. तलपर्य्यन्तमटति अव-अट्-अच्। १ गर्त, गड्ढा। २ भूमिके मध्यस्थित रन्ध्र, कुण्ड। ३ छिद्र। ४ कूप। "अन्तरमवटच्छिद्र निम्यथर्म रम्भुरीवकहरदया।" (हलायुध) ५ देहस्थ निम्नस्थान, गलेके नीचे कंधे और काख प्रभृतिका गड्ढा। ६ हाथियोंको फंसानेके लिये गड्ढा। इसे घाससे ढांक देते हैं।

७ नरक विशेष। (पु०) नञ्-तत्। ८ वटसे भिन्न, वट छोड़ कर दूसरा कोई पेड़।

अवटना (हिं० क्रि०) १ मथना। २ किसी द्रव पदार्थको आगपर बना गाढ़ा करना।

अवटनिरोधन (सं० पु०) अवटे गर्ते निरुध्यते यत्र अवट नि-रुध-घञर्थे ल्युट्। नरक विशेष, जिस नरकमें मनुष्के बीच पापी लोग वह भोग करते हैं।

अवटि (सं० स्त्री०) अवति रक्षति मर्यादिकं अव-अटि। १ गर्त गड्ढा। २ कूप। (स्त्री०) वा ङीप् अवटी।

अवटीट (सं० त्रि०) अवटी नाकवाला जिस व्यक्तिकी नाक चपटी हो।

अवटु (सं० पु०) अव टीक् ड। १ गर्त गड्ढा। २ वृक्षविशेष, कोई पेड़। ३ कूप कुआं। ४ ग्रीवाका पश्चात् भाग। ५ देहका निम्न स्थान। ६ वटु ब्राह्मण नञ्-तत्। ६ जो ब्राह्मण न हो।

अवटुज (सं० पु०) अवटौ अवटोर्वा जायते अवट-जन-ड ७ वा ५ तत्। १ मस्तकका पश्चिम केश चोटी। २ कुलक।

अवटोदा (सं० स्त्री०) अवटस्य कूपस्य उदकमिव उदकं यस्याः, ६ बहुव्री० उदकस्य उदादेश ततः स्त्रीत्वात् टाप्। भारतवर्षीय नदी विशेष, भारतवर्षकी कोई नदी।

अवड्ड (सं० पु) अव अवगता डड्डि यतः, यस्तो यस्मात् ५ बहुव्री। बहुलमान, बाजार। मता स्तरमें इस अर्थमें अवड्ड शब्द व्यवहृत होता है।

अवडीन (सं० क्ली) अव-डीङ्-ईन् विहायसागती भावे क्त योदित्वात्तस्य नकार। अवरोहणरूप पक्षी की गति विशेष, आकाशसे उपरसे पक्षियोंका नीचे आना। भट्टिका। ७। ९। ११। इकार इर्तत्याग धातुके उत्तरस्थ निष्ठाके स्थानमें नकार होता है। "अवडीनं प्रडीनं च डीनानडीनकम्" (म भा ।)

अवत (सं० पु०) अव-अत-अच्। कूप। निघण्टुमें कूपका यह जितना भी पर्याय है—कूप, कातृ, कर्त, वव्र काट, खात, अवत, क्रिवि, सूद, उत्स, ऋश्यदात्, कारोतरात्, कुशय, वेदट, अवट। "अवे कृत्वोत्सं ?"

ऋक् ।६४।१। 'अवताय्यो नरतौय्यवत् कूपं।' कृत्वाल्मनुष्यादिपरीक्ष्य संसिञ्चम्। (सायण)

अवतंस (सं० पु क्ली०) अवतंसयते अलङ्क्रियते अनेन। अव तन्स-करणे घञ। १ कर्णपूर, कर्णपुर, कर्णभूषण। २ शिरोभूषण, शिरका भूषण मुकुट-किरीट प्रभृति। 'करवल्ली कर्णपूरमिवर्णे।' (मा) ३ टीका। ४ मेंड। ५ माला हार। ६ भांजी सुरकी। ७ भाईका पुत्र, भतीजा। ८ दूल्हा। ९ शिरिज्ञक।

अवतंसित (सं० त्रि०) अव-तंस-क्त। भूषित, अलङ्कृत। इसमें विकल्प अकारका लोप हो जानि-पर 'वतंसित' रूप रहता है। वष्टि भागु रीको।

अवतमस (स० क्ली०) अवततं व्याप्तं तमः अवतत-मादित्व०। व्याप्त अन्धकार, भरा पूरा अन्धकार। अवसमन्धेभ्यस्तमसः। पा ५।४।७९। अव, सम, अन्ध इन सब शब्दसे परस्थित तमस शब्दके उत्तर अच् प्रत्यय होता है।

अवतरण (सं० क्ली०) अव तृ भावे ल्युट्। १ उपरसे नीचे आना, उतरना। २ पार होना। ३ शरीर धारण करना, जन्म ग्रहण करना। ४ प्रतिकृति, नकल। ५ प्रादुर्भाव। अवतीर्यते येन करणे ल्युट्। ६ नद्यादिका सोपान, घाटकी सिढ़ी। ७ सिढ़ी, जिससे उतरें। ८ तीर्थ, घाट।

अवतरणिका (स० स्त्री०) १ ग्रन्थकी प्रस्तावना, भूमिका उपोद्घात, अवतरणी। २ परिपाटी, रीति।

अवतरणी (सं० स्त्री०) अवतरति ग्रन्थोऽनया अव तृ करणे लुट्। १ ग्रन्थके प्रस्ताव निमित्त मुख-बन्ध, ग्रन्थकी प्रस्तावनाके लिये जो भूमिका इस अभि-प्रायसे लिखी जाती है, कि विषयकी संगति मिल जाय, मन्धारम्भ, उपोद्घात। २ परिपाटी, रीति।

अवतरना (हिं० क्रि०) प्रकट होना, उपजना, जनमना।

अवतार (सं० पु०) अवतीर्यते अनेनास्मिन् वेति करणे अधिकरणे वा। अवे तृस्त्रोर्घञ्। पा ३।३।१२० । १ तीर्थ। २ वापी। ३ पुष्करिणी कूपादिका सोपान तालाब कुएं वगैरहकी सिढ़ी। ४ प्रादुर्भाव अवतरण। ५ देवताओंका पृथ्वीपर अवतार।

पुराणादिमें असंख्य अवतारोंकी बात लिखी है। उनमें ये कई प्रसिद्ध हैं,—ब्रह्मा, नारद कपिल, दत्तात्रेय, यज्ञ, ऋषभदेव, पृथु, मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, वेदव्यास, धन्वन्तरि, मोहिनी, राम, बलराम, कृष्ण, नरनारायण, बुद्ध एवं कल्की।

पृथिवी और वेदके उद्धार तथा दुष्टोंके दमनके लिये विष्णुने दश बार भूमण्डलमें अवतार ग्रहण किया था। विष्णुके दश अवतार यथा,—१ मत्स्यावतार, २ कूर्मावतार, ३ वराह अवतार, ४ नृसिंहावतार, ५ वामन अवतार, ६ परशुराम अवतार, ७ रामावतार, ८ कृष्ण और बलराम अवतार, ९ बुद्ध अवतार, १० कल्की अवतार।

मुण्डमाला तन्त्रके मतानुसार प्रकृतिसे ही ये सब अवतार उत्पन्न हुए थे—कृष्णरूपा काली, रामरूपा तारिणी, कूर्मरूपा बगला, मीनरूपा धूमावती, नृसिंहरूपा छिन्नमस्ता, वराहरूपा भैरवी, परशुरामरूपा सुन्दरी अर्थात् षोड़शी, वामनरूपा भुवनेश्वरी, बुद्धरूपा कमला और कल्कीरूपा मातङ्गी। दशावतार देखो।

अवतारण (सं० क्ली०) अव-तृ-णिच्-ल्युट्। १ भूतकी झाड। २ वस्त्रके अञ्चलसे भूतका अर्चन। ३ ग्रन्थकी प्रस्तावना। (स्त्री०) करणे ल्युट् अवतारणी। 'अवतारणभूतादि गृहे वस्त्राञ्चलार्चने।' (विश्व)

अवतारना (हिं० क्रि०) १ उत्पन्न करना, रचना। २ उतारना, जन्म देना।

अवतारित (सं० त्रि०) अव-तृ-णिच्-क्त। १ अवरोपित। २ रचित।

अवतारी (हिं० वि०) १ उतरनेवाला, अवतार ग्रहण करनेवाला। २ देवांशधारी।

अवतीर्ण (सं० त्रि०) अव-तृ-कर्तरि क्त। १ कृतावगाहन, जो नदी प्रभृति मंझा चुका हो। २ कृतावरोहण, जो ऊपरसे नीचे आ गया हो। ३ अन्यरूपविशिष्ट प्रादुर्भूत, जो दूसरा रूप धर आया हो।

अवतूलन (सं० क्ली०) अव-तूल अवघट्टनार्थे णिच् भावे ल्युट् णिच् लोपः। तूलद्वारा अवघट्टन किया हुआ, जो रुईसे तौला गया हो।

अवतोका (सं० स्त्री०) अवपतितं गर्भस्थापत्यं यस्याः। प्रादि ६-बहुव्री०। जिस स्त्रीके गर्भ न रहे, स्रवद्गर्भा, गर्भ गिरानेवाली स्त्री। 'अवतोकाद् स्रवद्गर्भा।' (अमर)

अवत्त (सं० त्रि०) अव-दा-क्त। १ खण्डित। २ दत्त, दिया हुआ। ३ देकर पुनः गृहीत। अच उपसर्गात। पा ७।४।४७। कितसंज्ञक तकारादि प्रत्यय परे रहनेसे अजन्त उपसर्गसे पर घु संज्ञक दा स्थानमें तकार होता है।

अवत्तिन (सं० त्रि०) अवत्तमस्त्यस्य अवत्त (इष्टादिभ्यश्च। पा ५।२।८८ इति इनि)। जो खण्डित हो गया हो, जिसकी आशा नष्ट हो गयी हो।

अवत्सार (सं० पु०) न वत्सं सन्तानं ऋच्छति लभते वत्स-ऋ-घञ्, ततो नञ् तत्। ऋग्वेदोक्त ऋषि विशेष। 'अवत्सारस्य स्पृणवाम रण्वभिः।' (ऋक् ५।४४।१०) "अवत्सारस्य वेयास्यैताम्।" (इति सायण)

अवदंश (सं० पु०) अवदश्यते मद्यपानानन्तरं चर्व्यते अव-दंश-कर्मणि घञ्। मद्यपानके रुचिकर द्रव्य, मद्यपानके समय जो बड़े आदि खाए जाते हैं, गजक, चाट, शुद्धि।

अवज्ञात (सं० त्रि०) अव-ज्ञा-क्त। १ अनादृत, तिरस्कृत, वेइज्जत, जो झिड़का गया हो।

अवदत्त (सं० त्रि०) अवदातुं दत्वा पुनर्ग्रहीतुं दातुं वा आदि कर्मणि कर्तरि क्त दद् आदेशः। १ खण्डित, जो देकर फिर ले लिया गया हो। २ दत्त। आदि कर्मणि क्तः कर्तरि च। पा ३।४।७१। आदिकर्म अर्थात् कर्मके पूर्व क्रियाका उल्लेख रहने पर कर्तृवाच्य क्त प्रत्यय होता है। भाव एवं कर्मवाच्यमें यथाविहित क्त प्रत्यय होता है। आदि कर्म कर्तरि प्रभृतिसे क्त विधान, यथा—प्रकृतः कटं देवदत्तः। प्रकृतः कटो देवदत्तेन। प्रकृतं देवदत्तेन। दो दद्घोः। पा ७।४।४६। कदत्संज्ञक तकारादि प्रत्यय परे रहनेसे घुसंज्ञक दाके स्थानमें दद् आदेश हो जाता है। (अन्य सूत्र अवत्त शब्दमें देखो)

अवदन्त (सं० पु०) बालक, बच्चा।

अवदरण (सं० क्ली०) अव-दृ-भावे ल्युट्। विदारण, मारकाट।

अवदलित (सं॰ त्रि॰) मड़का, फटा, टूटा, पिटपटा, जो फट पड़ा हो।

अवदाघ (सं॰ पु॰) अवदहति प्राणिनोऽस्मिन्, अव दह आधारे घञ्, न्यङ्कादित्वात् कुत्व घत्वम्। १ निदाघ, धूप। २ ग्रीष्मकाल, गर्मीका मौसम।

अवदात (सं॰ पु॰) अव-दैप् शोधे क्त। १ शुभ्र, सफेद रङ्ग। (त्रि॰) २ सफेद, उजला। ३ स्वच्छ, साफ। ४ पीत, हरिद्राभ, पीला बसन्ती। ५ सुन्दर, खूबसूरत।

'अवदातं किमि धीत रिवदं ...' (शिव)

अवदान (सं॰ क्ली॰) अव दो दैप् वा ल्युट्। १ प्रशस्त कर्म, अच्छा काम। २ खण्डन तोड़ फोड़। ३ पराक्रम, ताकत। ४ अतिक्रम, उलङ्घन। ५ अति कारण अपायोंका नाश। ६ कमीर, यश।

'अवदानकीर्त्तिं कथयन्ति ...' (जैन)

अवदान्त (सं॰ पु॰) शिग्रुकम पौधा।

अवदान्य (सं॰ त्रि॰) १ कृपण, कञ्जूस। २ पराक्रमशाली, ताकतवर। ३ उल्लङ्घनकारी लांघ जानेवाला।

अवदारक (सं॰ त्रि॰) अवदारयति, अव-दृ णिच् कर्मणि अण्। १ विदारक फोड़नेवाला। २ खन्ता, खनचा, कुदाल।

अवदारण (सं॰ क्ली॰) अव-दृ णिच् भावे ल्युट्। १ विदारण अवयव विभाग, तोड़-फोड़, टुकड़े टुकड़े बनाना। अवदार्यते अनया गर्त्तादिमनेन, करणे ल्युट्। ३ खनित्र खन्ता, खनचा।

अवदारित (सं॰ त्रि॰) अवदार्यते स्म अव दृ णिच् कर्मणि क्त। १ विदारित फटा हुआ। २ विमार्जित, तहनोम किया हुआ।

अवदावद (सं॰ त्रि॰) अवद्य मर्यादा न रखनेवाला, जो बुरा नाम न रखता हो।

अवदाह (सं॰ पु॰) अवगतो दाहो भावकत्वात् यस्य, प्रादि बहुव्री॰। १ उशीर, खस। २ आमलक वन। अवदाह भावे घञ्। ३ ज्वरादि जन्य गात्र दाह बुखार वगैरहसे पैदा हुई जिस्मकी जलन। ४ अग्नि द्वारा दहन आगसे जल जाना वगैरह।

अवदाहेष्ट (सं॰ क्ली॰) वीरणमूल, खस।

अवदाहेष्टकापथ (सं॰ क्ली॰) उशीर, खस।

अवदीर्ण (सं॰ त्रि॰) अव-दृ क्त ईर दीर्घ तकारस्य नकारः। १ विदीर्ण फटा हुआ। २ द्रवीभूत, पिघला हुआ। ३ आश्चर्यान्वित ताज्जुबमें पड़ा हुआ। ४ विभक्त, बंटा हुआ।

अवदोह (सं॰ पु॰) अवदुह्यते, दुह-कर्मणि घञ्। १ दुग्ध, दूध। भावे घञ्। २ दोहन, दुहाई।

अवद्य (सं॰ त्रि॰) न वद गर्ह्ये यत् निपातनात्। 'गर्ह्यं वक्तुम्।' (सिद्धान्तकौमुदी) १ अधम पापी। २ पापी, गुनहगार। ३ निन्द्य, धिक्कारके काबिल। ४ कथना-योग्य, निकृष्ट। ५ प्रतिकूल, बुरा। (क्ली॰) ६ गर्ह्य, कन्याके दानमें एक दोष। ७ ऐब।

अवद्यगोहन (वै॰ त्रि॰) अभिशाप मिटा देनेवाला, जो पातित्य दूर कर देता हो।

अवद्यभी (वै॰ स्त्री॰) पापका भय, गुनाहका खौफ।

अवद्यवत् (वै॰ त्रि॰) कुत्सित पश्चात्तापकारी, बदकुमार, अफसोसनाक।

अवद्योतन (सं॰ क्ली॰) अव-द्युत-णिच् भावे ल्युट्। प्रकाशन, रोशनीदिही, चमकीका पेशाव।

अवद्योतित् (सं॰ त्रि॰) प्रकाश फैलानेवाला, जो चमक रहा हो।

अवद्रङ्ग (सं॰ पु॰) हाट, बाजार।

अवध (सं॰ पु॰) १ अवधका अभाव कत्लको अदम मौजूदगी। २ कोशल अयोध्या। यह अक्षा॰ २५ ३४ एवं २८ ३४ उ॰ और द्राघि॰ ७९ ४१ तथा ८३ ८ पू॰ के मध्य अवस्थित है। युक्तप्रदेशके छोटे लाट इसका प्रबन्ध करते हैं। क्षेत्रफल २४२१६ वर्गमील है। इसके उत्तर नेपालका स्वतन्त्र राज्य उत्तर-पश्चिम रोहेलखण्ड विभाग, दक्षिण-पश्चिम गङ्गा नदी, दक्षिण-पूर्व बनारस विभाग और पूर्व बस्ती जिला पड़ता है। इसकी राजधानी लखनऊ नगर है।

अवध खुला मैदान है। यह दक्षिण पश्चिम गङ्गा नदीसे हिमालयकी तराई तक फैला है।

उत्तर सीमापर कुछ जङ्गल रहते भी बाकी जगहमें खेती किसानी और बसतीकी भरमार है।

गङ्गा, गोमती, घाघरा और राप्ती प्रधान नदी हैं। गोमती पीलीभीत जिलेसे निकलती और लखनऊ, सुलतानपुर, जौनपुर जाते हुई सैयदपुरके पास गङ्गामें गिरती है। कथना, सरायन, सायी और नन्द गोमतीकी शाखा है। प्रतापगढमें वेहती और हरदोईमें सांदी बडी झील है। गोंडा और बहरा-ईच जिलेमें राप्ती बहती है। घाघराके दक्षिण तटपर फैजाबादका जिला आबाद है। खेरी, सीता-पुर और हरदोई जिला खेरागढ जङ्गलसे गङ्गा किनारे कन्नौज तक फैला है। लखनऊ, बाराबङ्की और उनाव बीचका जिला है। रायबरेली, प्रतापगढ गङ्गाके वाम-तट और सुलतानपुर गोमतीकी दोनों ओर बसा है।

अवधकी जमीन् अधिक उपजाऊ है। कहीं-कहीं चिकानी मट्टी या बालू देखते हैं। साधारणत: पानी २५ फीट गहरे निकलता है। ऊसरमें सख्ततसे सख्त घास उगती है। इस प्रान्तमें कोई मूल्यवान् धातु नहीं होता। पुराने समय नमक बहुत बनता था, जिसे अंगरेज सरकारने बन्द करा दिया। कङ्कड ज्यादा होता और सडक कूटनेके काम आता है। सालमें कितनी ही फसल होती और तालाव, आमका बाग या बांसकी कोठी भी जगह जगह मौजूद रहती है। गरीबोंके घरोंपर इमलीके पेड छाया किये हैं। केला, अमरूद, कटहल, नीबू और नारङ्गी गांवकी शोभा बढाती है।

सरकारी जङ्गल बहुत अच्छा है। खेरागढ़में साखूके लट्ठे कटते और बहराम घाटमें उनके तख्ते चिरते हैं। शीशम और दूसरी लकडी छत पाटनेके काम आती है। महुवेका फल-फूल और लकडी-काठ सब कुछ अच्छा होता है। झीलोंमें जङ्गली चावल, कमल गट्टा और सिंघाड़ा उपजता है।

पहले गोंडेके जङ्गलमें हाथी घूमता था, किन्तु अब कहीं भी देख नहीं पडता। इसी तरह जङ्गली भैंसा और चीता भी गुम हो गया है। किन्तु भेडिया इधर-उधर घूमा करता है। नीलगाव बहुत होता और फसलको चर जाता है। गङ्गा और गोमतीके ऊसरमें हिरण छर्लांगे भरा करता है। झीलोंमें मुरगाबी और बतख तैरती है। सांप काटनेसे कितने ही आदमी सालमें मरते है। घराऊ जानवरोंमें घोडा, मवेशी, भैंस, गधा, सूअर, भेड, बकरा और मुर्गा प्रधान है।

इतिहास—फैजाबादके पास हिन्दुओंका पवित्र तीर्थ अयोध्यापुरी विद्यमान है। अयोध्या देखो। घाघरासे उत्तर थोडी दूर करनलगञ्जके पास अगस्त्य मुनिका समाधि बना है। श्रावस्तीमें शाक्य मुनिने कितने ही बौद्ध चेले मूंडे थे। काश्मीरमें शकाधिपति कनिष्कके वैद्य सम्मेलन करनेपर श्रावस्तीसे दो पण्डित भेजे गये। श्रावस्तीका पतन होनेपर विक्रमादित्यने काश्मीर-के राजा मेघवाहनको हरा अवध स्वतन्त्र कर दिया। सन् ४०० ई०को चीनपरिव्राजक फाहियानने श्रावस्ती नगरमें ऊंची दीवार और टूटा-फूटा मन्दिर तथा प्रासाद पाया, किन्तु बौद्ध महन्तोंका जोर घट गया था। सन् ई०के ७वें शताब्द युअङ्ग-चुअङ्गने श्राव-स्तीको बिलकुल खाली देखा।

सन् ई० के ८-वें या ९-वें शताब्द ताहरोंने जङ्गल साफ़ कराया था। कोई सौ वर्ष बाद किसी सोम-वंशीयने अपना प्रभाव जङ्गली अधिवासियोंपर डाल दिया। सन् ई० के ११ वें शताब्द कन्नौजके राठोर-नृपतिने अवधके जैनियोंको हराया था।

पीछे भारोंका राज्य फैल चला। किन्तु सन् १२४६ ई० को दिल्लीके बादशाह नसीर-उद्-दीन् मुहम्मदने उन्हें नीचा देखाया। सन् ११९४ ई० को कन्नौजके गिरनेपर शहाबुद्दीन गोरीने अवधको लूटा मारा था। सबसे पहले मुहम्मद बख्तियार खिलजीने अपना अड्डा यहां जमाया। कुतुबुद्दीनके मरनेपर उन्होंने अलतमशकी वश्यता अस्वीकार की और उनके लडके गियासुद्दीन् बङ्गालके पुश्तैनी शासक बन बैठे। पीछे हिन्दुओंने बलवा खडा कर १२०००० मुसलमान मार डाले थे। शाहजादे नसीरुद्दीन बलवा दबाने भेजे गये और सन् १२४२ ई० को कामरुद्दीन कैरो अयोध्याके शासक बने। जौनपुरके नवाब इब्राहीम

शाह गरबोंने नगर नगरमें मुसलमान शासक रख दिये थे। उनके समय बड़े-बड़े भूपति नाम मात्र हुये। किन्तु उनके मरनेपर राजा त्रैलोक्यचन्द्रने मुसलमानोंके विरुद्ध उपद्रव उठाया था। मुसलमानोंके पर उखड़े और त्रैलोक्यचन्द्र राजा बन बैठे। बाबरने इसका मार अयोध्यामें मसजिद बनवायी थी।

महाराष्ट्रोंके अभ्युदय समय औरङ्गजेबके बाद भारत बिगड़ो और अवध स्वतन्त्र हो गया। सन् १७२२ ई० को सआदत अली खान् अवधके सूबेदार बने थे। सन् १७३९ ई० को उनकी मृत्यु हुई और दामाद सफदर जङ्गने नवाबी पायी। किन्तु सन् १७५६ ई० को सफदर जङ्गके लड़के शुजा उद्दौलाके समय एक नयी बात पड़ी थी। उन्होंने बङ्गालमें मीर कासिमको अंगरेजोंसे लड़ते देख बिहार प्रान्त पर अधिकार करना चाहा। इसलिये वह मुगल बादशाह शाह आलम और बङ्गालके निर्वासित नवाबको ले पटनेपर झपट पड़े। किन्तु उन्हें अन्त कार्य हो बक्सरको हटना हुआ। सन् १७६४ ई० के अक्तोबर मास मेजर मनरोने वहां उन्हें पूरे तौरपर हरा अवधपर अधिकार जमाया था। नवाब बरेलीको भागे और हतभाग्य बादशाह अंगरेजोंसे जा मिले। सन् १७६५ ई० को जो सन्धि हुई, उसके अनुसार अवध प्रान्तका कोड़ा अलाहाबाद बादशाह और बाकी देश शुजाउद्दौलाको दिया गया। कोड़ा और अलाहाबाद बादशाहसे ले लेनेकी इच्छा देख सन् १७६८ ई०को नवाबकी फौज ३५००० रखी गयी और उसे रणकौशल सीखनेकी आज्ञा न हुई।

सन् १७७५ ई० को शुजा उद्-दौला मरे और उनके लड़के आसफ-उद्-दौला गद्दीपर बैठे थे। उसी समय अंगरेजोंने उनसे सन्धि की, जिसके अनुसार उन्हें कोड़ा, अलाहाबाद दिया और बनारस, जौनपुर, गाजीपुर, राजा चेतसिंहका राज्य लिया गया। किन्तु आसफ-उद्-दौलाने कर्जसे तङ्ग आ अपनी मा बहू बेगमका धन छीनना चाहा था। बेगमके प्रार्थना करनेपर अंगरेजोंने बीचमें पड़ झगड़ा मिटा दिया। पीछे आसफ उद् दौला ऐयाशीके अपराधमें आकर रहने लगी थी। सन् १७८१ ई० को चुनारमें नवाबसे मिस्टर वारेन हेष्टिङ्गसने फिर सन्धि की, जिसके अनुसार एक हमीदको छोड़ सारी अंगरेजी फौज अवधसे हटा ली गयी। अवनम देखो।

सन् १७९८ ई० को आसफ-उद् दौलाका उत्तराधिकार सौतेले भाई सआदत अली खान्ने पाया था। सेन्धियाके डरानेसे उन्होंने अपना आधा राज्य अंगरेजोंको इस लिये सौंप दिया, कि वह सेन्धियाके आक्रमणसे देशको बचायेंगे। सआदत अलीके उत्तराधिकारी गाजी उद्-दीन् हैदरने पहले पहल सन् १८१९ ई०को राजाका उपाधि पाया था। पीछे सन् १८२७ ई० को नसीर-उद्-दीन हैदर, १८३७ को मुहम्मद अली शाह और १८४२ को अमजद अली शाह गद्दी पर बैठे। सन् १८४७ ई० को अवधके अन्तिम नवाब वाजिदअली शाह राजा हुये थे। सन् १८५६ ई० के फरवरी मास अंगरेजोंने अवधपर अधिकार किया और बारह लाख रुपया वार्षिक वाजिद अलीके व्ययनिर्वाहार्थ बांध दिया।

सन् १८५७ ई० के मार्च मास लखनऊमें बलवा उठा और उसके अन्ततक समस्त अवध बलवाइयोंके हाथ आ पड़ा था। ४ थी जुलाईको सर हेनरी लारेन्स गोलोंके घावसे मरे, किन्तु २५ वीं सितम्बरको औटराम और हेवलकने लखनऊकी फौजको आकर उद्धार किया, जो तीन महीने किलेमें घिरे रहे थे। (त्रि) १ न मारने योग्य।

अवध बख्श—एक हिन्दुस्तानी कवि। प्राय सन् १८३० ई०को इन्होंने जन्म लिया था। इनके पदमें शान्तिरस भरा है। शिवसिंह सरोजमें इनका परिचय है।

अवधातव्य (सं० त्रि०) अव-धा-कर्मणि तव्य। १ मनोयोगका विषय। २ बोधका विषय जिसमें मनोयोग किया जाये।

अवधान (सं० क्ली०) अव-धा-ल्युट्। १ मनोयोग विशेष। २ मनका योग, चित्तका समाध, चित्तकी वृत्तिको निरोधकर उसे एक ओर लगाना। ३ समाधि। ४ ध्यान। ५ सावधानी चौकसी।

अवधार (सं० पु०) अव-धृ-णिच्-अच्। निश्चय।

अवधारण (सं० क्ली०) अव-धृ-णिच्-ल्युट्। १ परिच्छेद। २ निरूपण। ३ संख्यादि द्वारा इयत्ता करना। ४ परस्पर विभिन्न रूपमें व्यवस्थापन होना। ५ निश्चय, विचारपूर्वक निर्धारण करना।

अवधारणीय (सं० त्रि०) अव-धृ-णिच् कर्मणि अनीयर्। निरूपण करने योग्य, निर्धारणके योग्य, निश्चययोग्य।

अवधारना (हिं० क्रि०) धारण करना, ग्रहण करना।

अवधारित (सं० त्रि०) अव-धृ-णिच् कर्मणि क्त। निर्धारित, निश्चित।

अवधार्य (सं० त्रि०) अव-धृ-णिच्-कर्मणि यत्। १ निश्चय करने योग्य, अवधारणीय, अवधारण करने योग्य। २ निर्णेय, निर्णय करने लायक। (अव्य०) अव-धृ-णिच् ल्यप्। ३ अवधारण कर।

अवधि (सं० पु०) अव धा-कि। १ सीमा। २ काल, ३ चित्ताभिनिवेश, अवधान, मनोयोग, अपादान, जिससे सीमा की जाय। पूर्व और पर सीमा यही दो प्रकारकी है। जैसे, कलकत्ता अवधिसे काशी अवधिका गाडीभाडा इतना है। यहां कलकत्ता पूर्व अवधि एव काशी पर अवधि है।

प्रकारान्तरसे अवधि तीन प्रकारकी है—देशकृत, कालकृत एवं बुद्धिकल्पित। देशकृत, कलकत्ता अवधिसे इत्यादि। चन्द्रके ग्रास अवधिसे मोक्ष अवधि तक जप करना। यहां ग्रासकाल अवधिको कालकृत पूर्व अवधि, एवं मोक्षकाल अवधिको कालकृत पर अवधि कहते हैं। कुलकामिनी जो बात कहती है, वह सखीकर्णावधि अर्थात् इतना धीरे धीरे कि वह पासकी सखी ही सुन सकती, दूसरा कोई नहीं। यहां कुलकामिनीके मुखको कविका बुद्धिकल्पित पूर्व अवधि और जो सखी उसकी बात सुनती है, उस सखीके कानको पर अवधि कहते हैं।

अवधिज्ञान (सं० क्ली०) जैन शास्त्रानुसार ज्ञान विशेष। जिस ज्ञानके द्वारा इन्द्रियोंकी सहायताके विना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी अवधि (मर्यादा)को लिये हुये पदार्थ प्रत्यक्ष (स्पष्ट) जाने जावें। वह अवधिज्ञान देव और नारकियोंको तो जन्मसे ही होता है। मनुष्य तथा तिर्यञ्चोंको तपश्चरण व्रत नियम द्वारा प्राप्त होता है। मनुष्य और तिर्यञ्चोंको जो अवधिज्ञान होता है, उसके ६ भेद हैं—अनुगामी, अननुगामी, वर्द्धमान, हीयमान, अवस्थित, अनवस्थित। जो अवधिज्ञान अन्य जन्ममें या क्षेत्रमें भी साथ जाय, वह अनुगामी है, जो साथ न जाय, जिस जन्ममें या जिस क्षेत्रमें उत्पन्न हुआ हो, उसी जन्म या क्षेत्रतक रहे, सो अननुगामी है। जो परिणामोंकी विशुद्धिसे जितने द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी मर्यादासे उत्पन्न हुआ हो, उससे बढता ही रहे घटे नहीं, सो वर्द्धमान, और जो संक्लेश परिणामोंसे घटता ही रहे, सो हीयमान है। जो कभी न घटे और न बढे एकसा ही रहे, सो अवस्थित और जो घटता बढता भी रहे, सो अनवस्थित है। (पृथिवी, जल, अग्नि, पवन, अन्धकार और छाया आदिसे व्यवहित द्रव्योंका प्रत्यक्ष तथा आत्माका भी ज्ञान हो।

अवधि दर्शन (सं० पु०) जनशास्त्रानुसार अवधिज्ञान द्वारा पदार्थोंके जाननेसे पहिले सामान्य सत्ताका प्रतिभास होना। अवधिज्ञान।

अवधिमत् (सं० त्रि०) अवधि रस्त्यस्य मतुप्। अवधि विशिष्ट। अर्थात् निर्धारित समय युक्त। नव्य नैयायिक अवधिको ही पञ्चमीका अर्थ स्वीकार करते हैं।

अवधिमान (हिं० पु०) समुद्र।

अवधी (सं० त्रि०) १ अवध-सम्बन्धी, अवधका। २ अवधी बोली। अवधकी भाषा। विहारके मुसलमान और कायस्थ यही भाषा बोलते हैं। सभ्य सम्भाषणमें भी इसीका व्यवहार होता है। गयामें इसके बोलनेवाले हजारों आदमी मौजद हैं।

अवधीयमान (सं० त्रि०) अव-धा-कर्मणि शानच् आकारस्य इत्यम्। जो विषय मनोयोग करने लायक हो।

अवधीर—अवज्ञायां अदन्तचुरादि प० सक० सेट्।

लट् अवधीरयति। लुङ् आववधीरत् लिट् अवधीरयामास। लुट् अवधीरयिता।

अवधीरणा (सं॰ स्त्री॰) अवधीर णिच्-भावे युच्। अवज्ञा, तिरस्कार।

अवधीरित (सं॰ त्रि॰) अवधीर-णिच्-कर्मणि क्त। अवज्ञात, तिरस्कृत अपमानित। जिसका तिरस्कार किया गया हो। "अवधीरितमङ्गलाध्वन।" (रघुवंश)

अवधूत (सं॰ त्रि॰) अव धू-क्त। १ कम्पित। २ कृष्ण यजुर्वेदान्तर्गत उपनिषद् विशेष। ३ अभिभूत, निक्षिप्त अनादृत। (पु॰) ४ संन्यासिविशेष।

अवधूत संन्यासियोंमें कुछ शैव और कुछ वैष्णव रहते हैं। महानिर्वाणतन्त्र एवं प्राणतोषणीमें शैव अवधूतोंका विवरण लिखा है। दत्त-सम्प्रदायमें भी इसी सम्प्रदायका विवरण देखा जाता है। महानिर्वाणतन्त्रमें प्रधानतः चार प्रकारके अवधूत संन्यासियोंकी कथा पाई जाती है—ब्रह्मावधूत, शैवावधूत, भक्तावधूत एवं कुलावधूत। ब्राह्मण क्षत्रिय एवं वैश्यका ब्रह्मोपासक होनेसे यति या ब्रह्मावधूत कहते हैं। इस अवस्थामें वे लोग गृहस्थाश्रममें रह अथवा संसारधर्म त्यागकर संन्यासी हो सकते हैं। विधिपूर्वक पूर्णाभिषिक्त होनेपर संन्यासी शैवावधूत कहा जाता है।

गोरखपन्थी सिरमें दीर्घ और अस्तव्यस्त केश रखते हैं। कोई रुद्राक्ष और कोई हड्डीकी माला पहने रहता है। उनमें कोई विवस्त्र कोई केवल कौपीन धारण किये हुए, एक किसीके पहनें भस्म और किसीके रक्तचन्दन लिप्त रहता है। उनके हाथमें मनुष्यकी खोपड़ी, काठदण्ड मृगचर्म, परशु कटार, डमरु एवं झर्झर रहता है। उनमें कोई कोई गेरुआ वस्त्र भी पहनते हैं। सभी गोरखपन्थी गांजा और मद्य सेवन करते हैं।

कुलाचारके अनुसार अभिषिक्त होकर जो साधक गृहस्थाश्रममें रहता है, उसे कुलावधूत कहते हैं।

महार्णवतन्त्रमें दश प्रकारके अवधूतोंकी बात लिखी है—तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य गिरि पर्वत सागर, सरस्वती, भारती एवं पुरी।

जो संन्यासी त्रिवेणी प्रभृति तीर्थ स्थानोंमें रह स्नानादि करते उन्हें तीर्थ जो आश्रमनिवासी हैं और आश्रमधर्म पुनर्जन्मसे मुक्तिकाम करते वे आश्रम कहे जाते हैं। जो वन एवं निर्झरमें वास करते, उन योगियोंको वन कहते हैं। जो अरण्यमें वास करते और सर्वदा आनन्दित रहते हैं, उनका नाम अरण्य है। जो संन्यासी गिरिमें वास करते और गीताभ्यासमें निरत रहते एवं जिनकी बुद्धि गम्भीर और अचल होती है उन्हें गिरि कहते हैं। जो पर्वतके मूलमें वास करते हैं, ध्यानमें प्रवीण एवं सारासार परब्रह्मतत्त्वज्ञ हैं वे पर्वत कहे जाते हैं। जो संन्यासी सागरसङ्गम पर और भावसे बैठकर ईश्वरकी आराधना करते हैं उनका नाम सागर है। स्वरवादी एवं सुकवि संन्यासीका सरस्वती कहते हैं। सविद्यान् एवं दुःखविवर्जित संन्यासी भारती कह जाते हैं। तत्त्वज्ञ एवं परब्रह्मनिरत संन्यासीका नाम पुरी है।

अवधूत वैष्णव रामानन्दके शिष्य हैं। इस समय भी बङ्गदेशके नाना स्थान एवं भारतवर्षके किसी किसी प्रदेशमें इस श्रेणीके वैष्णव बहुत पाये जाते हैं। इनका आचार व्यवहार अतिशय कुत्सित है। इस सम्प्रदाय वाले जातिभेद नहीं मानते और न उनके पान भोजनका ही कोई नियम है। उनके सिरमें बड़ बड़े बाल, गलेमें स्फटिक प्रभृतिकी माला, कमरमें कौपीन, देहमें कथियोंका कुरता और हाथमें नारि-यलकी खिलो रहती है। ये लोग सर्वदा अत्यन्त अपरिष्कार भावसे रहते हैं। लोग इन्हें बावले भी कहते हैं। बङ्ग देशके स्थान स्थानमें इनके अखाड़े हैं। एक एक अखाड़ेमें दो तीन अवधूत और उनकी कई दासियां रहती हैं। ये लोग इस बहाने सभी जातिको अपने सम्प्रदायमें मिला लेते हैं। गोपीचन्द्र और एकतारा प्रभृति इनके वाद्ययन्त्र हैं। भिक्षा मांगनेके समय गृहस्थके द्वारपर जाकर पहले ये लोग 'और अवधूत' का नाम स्मरण करते फिर बाजा बजाकर गीत गाते हैं। इनमें कितने ही गृहस्थोंकी लड़कियोंको नष्ट करनेकी चेष्टा करते, इसीसे समाजमें घृणास्पद हैं।

५ एक प्राचीन संस्कृत कवि। सुभाषितावलीमें इनका उल्लेख है। ६ भगवद्भक्तिस्तोत्ररचयिता।

अवधूनन (सं० क्लो०) अव-धू-णिच्-नुक-ल्युट्। १ चालन, झाड। २ चिकित्सा विशेष।

अवधूलन (सं० क्लो०) धूलिं करोति अव-धूलि-तत्करोतीत्यर्थे णिच् भावे ल्युट्। अवचूर्णन, चूर्ण करना, बुकनी बनाना।

अवधृत (सं० त्रि०) अव-धृ-कर्मणि क्त। अवधारित, निश्चित, नियमित, व्यवस्थापित।

अवधृष्य (सं० त्रि०) अव-धृष् कर्मणि क्यप्। १ अवधर्षणीय, तिरस्कारयोग्य। २ पराभवनीय। (अव्य०) अव-धृष्-ल्यप्। ३ तिरस्कारकर, अपमानकर।

अवधेय (सं० त्रि०) अव-धा कर्मणि यत्। १ निधेतव्य, ध्यानदेने योग्य। २ निवेश्य, स्थापनीय। ३ श्रद्धेय, श्रद्धाके योग्य। ४ ज्ञातव्य, जानने योग्य। (क्लो०) भावे यत्। ५ मनोयोग।

अवधेश—बुंदेलखण्डके प्रसिद्ध कवि। यह ब्राह्मण चरखारी राज्यके रहनेवाले थे। सन् १८४० ई०को इन्होंने इहलोक छोड़ा। कहते हैं, इनकी कविता रसीली रही। शिवसिंहने लिखा, कि उन्हें इनकी कविताका कोई पूर्ण पुस्तक मिला न था।

अवध्र (सं० त्रि०) अव-वध-रक् नञ्-तत्। अहिंसक। "अवध्रं ज्योतिरदितेः ऋतावृधो देवस्य।" (ऋक् ७।६६।१०) 'अवध्रम् अहिंसकम्।' (सायण)

अवध्वंस (सं० पु०) अव-ध्वन्स-घञ्। १ परित्याग, छोड़ना। २ नाश। ३ चूर्णन, चूर चूर करना। ४ निन्दा, कलङ्क। "अवध्वंस परित्यागे निन्दनेऽप्यथ चूर्णने।" (विश्व)

अवध्वस्त (सं० त्रि०) अव-ध्वन्स-क्त। १ नष्ट। २ निन्दित। ३ चूर्णित। ४ त्यक्त। 'अवध्वस्तस्तु चूर्णिते। त्यक्तनिन्दितयोरपि।' (हेम)

अवन (सं० क्लो०) अव-ल्युट्। १ प्रीणन, प्रसन्न करना। २ रक्षण, रक्षा करना, बचाव। ३ प्रीति। ४ हर्ष। 'अवनं रक्षणप्रीत्योः।' (हेम)

अवनत (सं० त्रि०) अव-नम्-क्त। १ अधोमुख। २ आनत, नीचा, झुका हुआ। ३ पतित, गिरा हुआ। ४ कम। ५ कृतनमस्कार, प्रणाम किया हुआ।

अवनति (सं० स्त्री०) अव-नम-क्तिन्। १ औद्धत्यका अभाव, अगर्व, विनय, नम्रता। २ घटती, कमती, घाटा, न्यूनता, हानि। ३ अधोगति, हीनदशा, तनज्जुली। ४ झुकाव, झुकना।

अवनद्ध (सं० त्रि०) अव-नह-क्त। १ ग्रथित, रोपित, वेष्टित, बद्ध। (क्लो०) २ मृदङ्गादि वाद्य। नहीध पा ८।२।३४। क्त परे या प्रत्ययमें वर्तमान नह धातुका हकारके स्थानमें धकार होता है।

अवनम्र (सं० त्रि०) अव-नम-र। अतिशय नम्र। अवनम्र शब्दमें मूल देखो।

अवनय (सं० पु०) अव-नी भावे अच्। अधःपतन, नीचे गिरना।

अवनयन (सं० क्लो०) अव-नी-ल्युट्। अवस्थापन, गर्तमें प्रोक्षणका शेष जल डालना।

अवना (हिं०) आना।

अवनाट (सं० त्रि०) नासिकायाः नतम्। अवनतार्थे नासिकायाः नाटच् प्रत्ययः। चिपटी नाकवाला, जिसके नाक चिपटी रहे।

अवनाय (सं० पु०) अव-नी घञ्। अधोनयन, अधोप्रापण, नीचे लेजाना। अवोदोर्नियः। पा ३।३।२६। अव और उत् यही दो उपसर्गसे परे नी धातुके उत्तर घञ् प्रत्यय होता है। 'अवनायोऽधोनयनम्।' (सि० कौ०)

अवनाम (सं० पु०) अव-नम-घञ्। अवनति, सत्या नमाकर नमस्कार करना।

अवनि, अवनी (सं० स्त्री०) अवति रक्षति प्रजाः अव्यन्ते वा भूपः अव-अनि (अर्तिसृधृधम्यश्यविभ्योऽनिः। उण् २।१०२। इति अनि) 'कृदिकारादक्तिनः वा ङीपि अवनीत्यपि।' १ भूमि, मही, मेदिनी, पृथिवी, जमीन। २ त्रायमाणा लता। अवन्ति जगत् स्फोटकेन, अव्यन्ते प्राणिभिस्तिराटिनिर्माणेन अव-अनि। ३ नदी। (निरु०) वेदमें अवनीका अर्थ नदी होता और प्रायः बहुवचनान्त रूप देखा जाता है। "धामिन्नक्षोरवनयः समुद्रम्।" ऋक् ३।५८।८। 'अवनयो नद्यः' (सायण) अवन्ति कर्मणि। ४ अङ्गुलि। "दशावनिभ्यो दशकक्ष्येभ्यो" ऋक् १०।९४।७। 'कर्मण्यवन्ति गच्छन्त्यवनयः। दशावनयोऽङ्गुलयः।' (सायण)

अवनिक्त (सं० त्रि०) अव-निज्-क्त। क्षालित, धौत, शोधित, धोया हुआ (वस्तु विशेष)।

हैं। इसमें एक मसजिद, हिन्दुओंके अनेक देव-मन्दिर एवं इस समयकी एक राज-अट्टालिका देखनेमें आती है। ७५°५६´ पूर्व द्राघिमा एवं २३°२६´ उत्तर अक्षरेखामें अवन्ती अवस्थित है। हमारे देशके भूवेत्तागण कहते हैं, लङ्कासे सुमेरु पर्वततक रेखा खींचनेपर उससे १६ अंश दूर अवन्तीका स्थान निर्दिष्ट होता है। उज्जयिनी और मालव शब्द देखो।

अवन्ती नदी—इसका दूसरा नाम शिप्रा है। कितने ही अनुमान करते हैं, कि मालव देशमें पहले दो अवन्ती नदियां थीं। इनमें एक पारियात्र पर्वतसे निकली है। शिप्रा नदी चम्बल नदमें जा मिली है। दूसरी अवन्ती नदी सागरमतीकी एक शाखा है।

अवन्तिका (सं० स्त्री०) उज्जयिनी नगरी, उज्जैन। इस नगरीको मुनियोंने मोक्षदायिका बताया है,—

"अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका।
पुरी द्वारवती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः"॥ (स्कन्दपुराण)

अवन्ति देशकी भाषा भी अवन्तिका कहाती है। आलङ्कारिकोंने व्यवस्था बांधी है, नाटकादिमें धूर्तोंकी भाषा अवन्तिका रहना चाहिये—

"प्राच्य विदूषकादीनां धूर्तानां स्यादवन्तिका" (साहित्य दर्पण)

अवन्तिखण्ड—स्कन्दपुराणका अंशविशेष।

अवन्तिदेव—१ कश्मीरके प्राचीन नृपति विशेष। २ संस्कृत भाषाके कोई कवि।

अवन्तिपुर, अवन्तीपुर (सं० क्ली०) अवन्तिः अवन्ती वा पूः। १ उज्जयिनी, उज्जैन। २ कश्मीर राज्यका नगर विशेष। राजा अवन्तिवर्माने विश्वौकःसार नामक स्थानमें इस नामकी पुरी बसायी थी। फिर इसमें इन्होंने अवन्तिस्वामी और अवन्तीश्वर नामक दो महादेव लिङ्ग प्रतिष्ठित कराये। प्राचीन अवन्तिपुर वेहात नदके दक्षिण कूलपर रहा, अब उसका कोई पता नहीं। किन्तु इन दोनों मन्दिर और नगरकी चारो ओर प्राचीरका भग्नावशेष आज भी देखते हैं।

अवन्तिवर्मा—कश्मीरके कोई राजा। यह सुखवर्माके पुत्र रहे। उस समयके मन्त्री शूरने उत्पलापीड़ राजाको सिंहासनसे उतार अवन्तिवर्माको बैठा दिया था। इन्होंने सन् ८५५ ई० को राजा बन २८ वर्ष राजत्व किया।

अवन्तिब्रह्म, अवन्तीब्रह्म (सं० पु०) अवन्तिषु अवन्तीषु वा ब्रह्म-टजन्त। ७-तत्। अवन्ती देशवासी ब्राह्मण।

अवन्तिभूपाल (सं० पु०) अवन्तीके नृपति, उज्जैनके राजा, राजा भोज।

अवन्तिसोम, अवन्तीसोम (सं० क्ली०) अवन्तिषु अवन्तीषु वा जातः सोम इव। काञ्जिक, काञ्जी। सौवीर, कुल्माष, अभिषुत, धान्याम्ल, कुञ्जल।

'आरनालकसौवीरकुल्माषाभिषुतानि च।
अवन्तिसोमधान्याम्लकुञ्जलानिच काञ्जिके तु' (अमर)

अवन्ती (सं० स्त्री०) १ उज्जैन। २ उज्जैनकी राना। ३ नदी विशेष। अवन्ति देखो।

अवन्तीदेश (सं० पु०) उज्जैन प्रान्त।

अवन्तीश्वर (सं० पु०) कश्मीरके नृपति अवन्तिवर्माका बनवाया मन्दिर।

अवपतन (सं० क्ली०) उतार, गिराव।

अवपन्न (सं० वि०) अव-पद्-क्त। १ संसृष्ट, निकला हुआ। २ सहपक्व, साथ ही पका हुआ। ३ नीचे पड़ा हुआ।

अवपाक (सं० पु०) अव अपकर्षे पच्-घञ्। १ अपकृष्ट पाक, खराब भोजन। कर्मणि घञ्। २ अपकृष्ट पक्ववस्तु, खराब तौरसे पकी हुई चीज। अपकृष्टः पाको यस्य बहुव्री०। ३ मन्द पाककारक, खराब पकानेवाला।

अवपाटिका (सं० स्त्री०) क्षुद्र रोगान्तर्गत शूक-रोग, लिङ्गके घूंघटका चीरफाड़। जो मनुष्य हर्ष या बलसे अल्पीयःयोनिवाली (रजस्वला-धर्मरहित, थोड़ी उमरकी) स्त्रीके साथ सम्भोग करता, हाथसे लिङ्गपर धक्का मारता या घूंघटको जबरदस्ती खोलता, उसके यह रोग होता है। (भावप्रकाश)

अवपात (सं० पु०) अव-पत भावे घञ्। १ अधः-पतन, गिराव। अव-पत-णिच्-अच्। २ अधःपातन, फैलाव। अव पतति अस्मिन् आधारे घञ्। ३ हाथी पकड़नेको बड़ा गड्ढा।

अवभास (सं० पु०) अव-भास भावे घञ्। १ प्रकाश, रौशनी, चमक। २ ज्ञान, समझ। ३ मिथ्या ज्ञान, झूठी समझ। ४ स्थान, जगह।

अवभासक (सं० त्रि०) अव-भासयति, अव-भास-णिच् खुल्। १ प्रकाशक, रोशनी देनेवाला। (क्ली०) २ सर्व प्रकाशक कूटस्थ चैतन्य, परमात्मा।

अवभासकत्व (सं० क्ली०) प्रकाश, रौशनी, चमक-दमक।

अवभासकर (सं० पु०) देव विशेष।

अवभासप्रभ (सं० पु०) देवयोनि विशेष।

अवभासप्राप्त (सं० क्ली०) बौद्धमतसे जगत्‌विशेष, किसी दुनियाका नाम।

अवभासिका (सं० स्त्री०) शरीरके ऊपरका चर्म, ऊपरी खाल।

अवभासित (सं० त्रि०) अव-भास-णिच् क्त इट णिच् लोपः। १ प्रकाशित, रौशन। २ लक्षित, ज़ाहिर।

अवभासिन् (सं० त्रि०) प्रकाशमान, चमकीला।

अवभासिनी, अवभासिका देखो।

अवभिन्न (सं० त्रि०) विभाजित, खण्डित, विच्छिन्न, तक़सीम किया हुआ, टूटा फूटा, जो छिट गया हो।

अवभुग्न (सं० त्रि०) सिमटा, सुकड़ा, दबा हुआ।

अवभृथ (सं० पु०) अव अवसाने बिभर्ति पोषयति यज्ञम्, अव-भृञ्-क्यन्। १ प्रधान यज्ञ समाप्त होनेपर दूसरे यज्ञका आरम्भ, दीक्षान्त यज्ञ। २ होम विशेष। कोई यज्ञ करनेपर न्यूनातिरिक्त दोष लगनेसे यह होम होता है। ३ अन्त्य दिवस, आख़िरी दिन। ४ यज्ञाङ्ग स्नान, यज्ञके समयका नहान। ५ अष्टक। "दक्षावभृथमीलिता।" कथ ८। ८१। २०।

अवभृथस्नान (सं० क्ली०) यज्ञस्नान, यज्ञके बादका नहान।

अवभेदिन् (सं० त्रि०) छेदनकारी, विभाजक, तक़सीम करनेवाला, जो टुकड़े-टुकड़े उड़ा देता हो।

अवभ्र (सं० पु०) निकाल ले जाना, उड़ा देना।

अवभ्रट् (सं० त्रि०) अव भ्रशते भ्रश्यति वा, अव-भ्रन्श्‌ भ्रश वा क्विप्। अधःपतित, नीचे गिरा हुआ, जो ऊपरसे गिरकर नीचे आ गया हो।

अवभ्रट (सं० त्रि०) नासिकाया नतम्, प्रादि समास; नतार्थे नासिकाका भटच् प्रत्ययः। १ चपटी नाकवाला, जिसके नाक नीचे बैठ रहे। (क्ली०) २ चपटी नाक रखनेकी हालत।

अवम (सं० पु०) अवति सर्व कार्येषु नैकृष्टं धारयति। १ अधम, निकृष्ट, कमीना, ख़राब। २ दिन-क्षय, अहस्पर्श। एक बार दो तिथिका क्षय पड़नेसे जैसे तीन तिथिका, वैसे ही एक तिथिको तीन बारका स्पर्श होनेसे भी दिन क्षय, अहस्पर्श या अवम कहा जाता है। क्रमशः तिथिका स्थितिकाल कम पड़नेपर वारघटित पूर्वोक्त अवम घट जाता है। फिर तिथि बढ़नेसे परोक्त अवम बढ़ा करता है। जैसे—रविवारको ५८ दण्ड चतुर्थी और पीछे पञ्चमी हो, तो यह समस्त सामवार भाग मङ्गलवारको भी दो दण्ड रह सकती है। ज्योतिषशास्त्रमें यह अवम तिथि यात्रादि अनेक कार्यमें निषिद्ध है। इसीसे इसको अवम अर्थात् निकृष्ट समझते हैं।

'निकृष्टप्रतिकृष्टार्वरेफयाप्यावमाधमाः।' (अमर)

अवति रक्षति मर्यादाः। ३ रक्षक, मुहाफ़िज़, सब तकलीफ़से बचानेवाला। ४ पितृगण विशेष। पितृगण तीन प्रकारका होता है, अवम, ऊर्ध्व और काव्य। अव्यते निन्द्यतेऽनेन करणे अम्। ५ पाप, गुनाह।

अवमत (सं० त्रि०) अव-मन-क्त अनुनासिकलोपः। १ अवज्ञात, नामालूम। २ तिरस्कृत, बेइज़्ज़त। ३ अवगणित, बेशुमार। ४ अवमानित, बेक़द्र। ५ परिभूत, नापसन्द।

'अवगणितमवमतावज्ञातेऽवमानितञ्च परिभूते।' (अमर)

अवमताङ्कुश (सं० पु०) अवतोऽवज्ञातोऽङ्कुशस्ताडनं येन, बहुव्री०। दुर्दान्त हस्ती, मतवाला हाथी, जिसे महावत अङ्कुश मार रोक न सके।

अवमति (सं० स्त्री०) अव-मन् भावे क्ति अनुनासिक लोपः। १ अवज्ञा, नाफ़रमांबरदारी। २ अनादर, बेइज़्ज़ती। ३ तिरस्कार। ४ घृणा, नफ़रत। (पु०) ५ प्रभु, मालिक।

अवमतिथि (सं० स्त्री०) अवम सर्वमङ्गलकार्येषु अधमा चासौ तिथिश्चेति, कर्मधा०। १ एकबार आठ

तीन तिथि। २ तीन बार स्पर्श एक तिथि।
इसका विस्तृत विवरण अवम शब्दमें देखो।

अवमत्य (सं॰ अव्य॰) तुच्छतासे, नफरतके साथ, नाक भौं चढ़ाकर।

अवमदिन (सं॰ क्ली॰) अवम अवमस्य तत् दिनञ्चेति। १ एकबारगी हो लगी हुई तीन तिथि। २ तीन बार लगी हुई एक तिथि।

अवमन्तव्य (सं॰ त्रि॰) अव-मन्-तव्य। अवज्ञेय, अनादरणीय नफरत अङ्गेज़, काबिलतहकीर, जो दूर रखने लायक हो।

अवमन्तृ (सं॰ त्रि॰) अव मन्-तृच्। १ घृणा करनेवाला, जिसे नफरत रहे। २ घृणित, नफरत अङ्गेज़, ख़राब। ३ अवज्ञा करनेवाला, गुस्ताख़।

अवमन्थ (सं॰ पु॰) अवमथ्नाति लिङ्गोद्धयति, अव मन्थ-अच्। १ शूकरोग भेद। जिसका लिङ्ग छोटा रहता और जो अवस्थाके विना ही वृद्धि करनेकी इच्छासे लिङ्गके ऊपर किसी वस्तुका प्रलेपादि लगाता उसके अर्पिका प्रभृति १८ प्रकारका रोग उत्पन्न होता है। इस रोगमें लिङ्गपर बड़ी बड़ी और घनी फुन्सियां पड़ जातीं एवं पीड़ा और रोमाञ्च होने लगता है।

२ वातपाकी रोमभेद। (सुश्रुत)

अवमर्द (सं॰ पु॰) अव मृद भावे घञ्। १ पीड़न। २ घर्षण करण। ३ सूर्य तथा चन्द्रका विक्षेप। ४ ग्रहण विशेष। इसमें राहु सूर्य और चन्द्रको बड़ी देर तक छिपाये रखता है।

अवमर्दन (सं॰ क्ली॰) १ पीड़न, जुल्म। २ दलन, मालिश। (त्रि॰) ३ पीड़ा पहुंचानेवाला, ज़ालिम।

अवमर्दित (सं॰ त्रि॰) पिष्ट, पादाक्रान्त, पीसा, मला या कुचला हुआ।

अवमर्म (सं॰ पु॰) मर्म, संयोग, जवाहरात।

अवमर्श (सं॰ पु॰) अव-मृश् घञ्। १ आलोचना। २ नाटकका सन्ध्यङ्ग विशेष। इस अर्थमें विमर्श ऐसा पाठ भी प्रचलित है।

अवमर्षण (सं॰ क्ली॰) १ अधैर्य, असहनशीलता बेसब्री, बरदाश्त कर न सकनेकी हालत। २ विस्मरणशील।

अवमान (सं॰ पु॰) अव मन् भावे घञ्। अवज्ञा, तिरस्कार, अपमान, अनादर।

अवमानन (सं॰ क्ली॰) अवमानना देखो।

अवमानना (सं॰ स्त्री॰) अव-मन् णिच् युच् णिच् लोप नित्य स्त्रीत्वात् टाप्। अपमान करना।

अवमाननीय (सं॰ त्रि॰) घृणित, अनादरके योग्य बेइज्जतीके काबिल।

अवमानित (सं॰ त्रि॰) अव चुरा॰ मन-णिच्-क्त इट् णिच् लोप। १ अपमानित, जिसका अपमान किया गया हो। २ अवज्ञात। ३ अवगणित। ४ अवमत। ५ परिभूत।

अवमानिता (सं॰ स्त्री॰) अनादर, बेइज्जती।

अवमानिन् (सं॰ त्रि॰) अवमन्यते अवमानयति वा अव-मन णिनि। १ अपमानकर्ता, अनादर करने वाला। अवमानमस्त्यस्य अस्त्यर्थे इनि। २ अवमानविशिष्ट अनादरयुक्त, तिरस्कार पाये हुआ।

अवमान्य अवमाननीय देखो।

अवमार्जन (सं॰ क्ली॰) अव-मृज भावे ल्युट्। १ शोध करण धोनाधोयी। २ प्रक्षालन, झाड़। अव मृज्यते मलिन करणे ल्युट्। ३ जिसके द्वारा मार्जित (धोया) किया जाय, जल प्रभृति। ४ अङ्कुश मोचन। "[illegible]" [illegible] '[illegible]' ([illegible])

अवमुच्य (सं॰ अव्य॰) खोल या खाल उतार कर।

अवमूत्रयत् (सं॰ त्रि॰) ऊपर मूतनेवाला, जो किसीपर पेशाब करता हो।

अवमूर्धन् (सं॰ त्रि॰) अवनतो मूर्धा यस्य। अधोमुख नीचे मुंहवाला।

अवमूर्धशय (सं॰ त्रि॰) अवमूर्धा सन् शेते, अव-मूर्ध-शी अच्। अधोमुख शयन करनेवाला, जो सर लटकाकर सोता हो।

अवमूर्धशायिन् अवमूर्धशय देखो।

अवमृत्य (सं॰ अव्य॰) १ नोचखसोटकर। २ मार तोड़कर।

अवमृश्य (सं॰ त्रि॰) स्पर्श करने योग्य, जो छूनेको हो।

अवमोचन (सं० क्लो०) अव-मुच् भावे ल्युट्। १ उन्मोचन, खोलखाल। २ स्वातन्त्र्यप्रदान, आज़ाद कर देनेकी हालत।

अवमोटन (सं० क्लो०) अव-मुट्-णिच्-ल्युट्। मोच, वल।

अवयजन (सं० क्लो०) अव-यज गतौ करणे ल्युट्। १ अपगमनसाधन, जल्द जानेका काम। २ पृथक् याग, निराला यज्ञ।

अवयव (सं० पु०) अवयुयते कार्यद्रवेण सम्बध्यते, अव-यु मिश्रणे कर्मणि अप्। १ अंश, भाग. जिस उपादानसे कोई द्रव्य बने, हिस्सा, टुकड़ा। यु अमिश्रणे अप्। २ अङ्ग, उपकरण, समुदायका एकदेश, अजो लड़ीरेका कोई हिस्सा। ३ वाक्य विशेष, किसी किस्मका जुमला।

न्यायमत-प्रसिद्ध परार्थके अनुमानसाधन वाक्यको भी अवयव कहते हैं। अनेकोंके मतसे वह पांच प्रकारका होता है। किन्तु कोई-कोई उसे तीन प्रकारका भी बताता है। पांच प्रकार यह हैं,—१ प्रतिज्ञा, २ हेतु, ३ उदाहरण, ४ उपनय, ५ निगम। पर्वतको अग्निविशिष्ट बताना प्रतिज्ञा वाक्य है। धूमहेतु हेतुवाक्य होता है। भट्ठीकी तरह किसी वस्तुमें धूम होनेसे अग्नि रहना उदाहरण कहाता है। धूमको वह्निका व्याप्य बताना उपनय वाक्य है। किसी स्थानमें धूम रहनेसे अग्नि होनेका जो सिद्धान्त निकलता, वही निगम कहाता है।

अवयवशस् (सं० अव्य०) अंश-अंश, टुकड़े-टुकड़े।

अवयवस्थान (सं० क्लो०) शरीर, जिस्म, अजा रहनेकी जगह।

अवयवार्थ (सं० पु०) शब्दके मिश्रित अंशोंका अर्थ, लफ़्ज़के मुरक्कब हिस्सोंका मानी।

अवयविन् (सं० त्रि०) अवयवः कारणत्वेनास्त्यस्य इनि। १ अवयव रखनेवाला। जैसे, दो कपाल अवयवसे घड़ा बनता और अवयवी कहाता है। जन्य द्रव्यत्वका नाम अवयवित्व है। नैयायिक अवयवित्वको अवयवसे भिन्न और अतिरिक्त पदार्थ मानते हैं। मुक्तावलीमें अवयवीका प्रमाण दिखाया गया है। यथा,—बहु परमाणु, एकत्र होनेसे ही अवयवी मानना पड़ता है। किन्तु आपत्ति आती, परमाणु इन्द्रियग्राह्य न रहनेसे घटादि कैसे प्रत्यक्ष हो सकता है। इसका उत्तर है,—एक परमाणुके प्रत्यक्ष न पड़ते भी परमाणु-समूहको साफ़-साफ़ देखते हैं। जैसे, दूरसे एक केश दृष्टिगत नहीं होता; किन्तु अधिक केश किसी स्थानमें रहने पर दूरसे ही झलकता है।

अवयवी (सं० पु०) पक्षी, चिड़िया। अवयविन् देखो।

अवया (वे० त्रि०) १ निकल जाने या बन्द होनेवाला। २ शत्रुके वर्जन निमित्त गमनकारी, जो दुश्मन्को रोकने जाता हो।

अवयाज् (सं० क्लो०) अवयुज्य पृथक्कृत्य इज्यते, अव-यज कर्मणि णिव। १ अवयजन, पृथक् याग, अलगसे हविर्भाग स्थापन। (त्रि०) २ अपकृष्ट यागकारी, ख़राब यज्ञ करनेवाला।

अवयातहेलस् (वे० पु०) क्रोधको शान्त किये हुये व्यक्ति, जो शख़्स अपना गुस्सा ठण्डा कर चुका हो।

अवयातृ (सं० त्रि०) अव-या-तृच्। १ पृथक्-कर्ता, अलग करनेवाला। २ शान्तिस्थापक, जो ठण्डा पड़ जाता हो।

अवयान (सं० क्लो०) अव-या-ल्युट्। १ अपगम, उतार, हटाव। २ शान्ति, सदका।

अवयुन (वे० त्रि०) नास्ति वयुनं यस्य, नञ् बहुव्री०। १ कान्तिशून्य, बेरौनक़। २ प्रज्ञाशून्य, बेअक़्ल। नञ्‌तत्। ३ अप्रज्ञान, समझमें न आनेवाला।

अवर (सं० त्रि०) न वरम्, नञ्-तत्। १ देवतासे श्रेष्ठ न होनेवाला, जो फ़रिश्तेसे अच्छा न हो। २ अल्पप्रिय न होनेवाला, जो कम प्यारा न हो। ३ चरम, बड़ा। ४ अधम, पाजी। ५ अर्वाचीन, नया। ६ पश्चाद्वर्ती, पीछे रहनेवाला। नास्ति वरः श्रेष्ठो यस्मात्, ५-बहुव्री०। ७ अतिश्रेष्ठ, बहुत बड़ा। (पु०) ८ पश्चाद्वर्ती देश, पीछेका मुल्क। ९ पश्चाद्वर्ती काल, पीछेका वक़्त। न वरः, नञ्-तत्।

१० बर न होनेवाला व्यक्ति, जो यथास दुल्हा न हो। (स्त्री०) ११ हस्तिशरीरका पश्चाद्भाग, हाथीकी जांघका पिछला हिस्सा। (स्त्री०) १२ पश्चाद्वर्ती दिक्, पीछेकी सिम्त।

अवरवक (सं० त्रि०) पाजक मुसाफिर, जो देखभाल रखता हो।

अवरज (स० पु०) अवरस्मिन् काले जायते अवर जन-ड। १ कनिष्ठ सहोदर भ्राता छोटा भाई। 'अवरजो न कनिष्ठ ...' (अमर) २ शूद्र। ३ नीच कुलोत्पन्न अधम। (स्त्री०) टाप्। अव रजा। कनिष्ठ सहोदर भगिनी छोटी बहिन। ४ शूद्रा। अवरस्मात् जायते जन ड। पुम्वद्भाव। ५ छोटी बहनका लड़का, भागिनेय, भाञ्जा। (स्त्री०) टाप्। भागिनेयी।

अवरत (सं० त्रि०) अव रम् क्त अनुनासिकलोप। १ विश्रान्त। २ विरत, प्रेम न रखनेवाला। ३ अलग, पृथक्। ४ स्थिर, ठहरा हुआ। ५ अनवरत सतत बराबर।

अवरतम् (स० अव्य०) अवर तसिल्। अवर, अवरको अवरद्वारा, अवरके उद्देश अवरमें अवरका, अवरमें इत्यादि। सम्पूर्ण विभक्ति स्थानमें तसिल् प्रत्यय होता है।

अवरति (स० स्त्री) अव रम् क्तिन्। १ विराम ठहराव। २ निवृत्ति, छुटकारा। '...' (अमर)

अवरदारक (स० स्त्री०) स्थावर विधानान्तर्गत पत्र विधिविशेष किसी पत्नीका अक्षर।

अवरपरम् (वै० अव्य०) एकके बाद दूसरा, एक एक।

अवरपुरुष (स० पु०) सन्तान, औलाद वासवर्ग।

अवरवर्ण (सं० पु०) अवरः हीनोभूतो वर्णः। कर्मधा। शूद्र।

अवरवर्णक अवरवर्णज देखो।

अवरवर्णज (स० पु०) अवरवर्णे जायते अवर वर्ण जन ड। १ शूद्र। २ निकृष्टवर्णजात रङ्क।

अवरव्रत (स पु०) नास्ति वरं श्रेष्ठं यस्मात् तदवरं तयोक्तं व्रतं नियमो यस्य बहुव्री०। १ सूर्य। सूर्यको जगत्में प्रतिनियत किरण द्वारा प्राणियोंका जल खींचकर पुनर्बार यथाकाल देना पड़ता है। यह दोनो काम सूर्यके प्रति उत्कृष्ट व्रत बन गये हैं। इसीसे सूर्यका नाम अवरव्रत है। २ अर्कवृक्ष, अकौड़ेका पेड़। (त्रि०) अवरं अधमं व्रतमस्य। ३ हीनव्रत, मन्दनियमयुक्त, अधम।

अवरशैला (स० स्त्री०) बौद्ध मठ विशेष।

अवरशैल (स० पु०) अवर पश्चाद्वर्ती शैल कर्मधा। १ पश्चाचल। २ एक प्रसिद्ध बौद्धविहार।

अवरस्तात् (स० अव्य०) अवर प्रथमार्थे अस्ताति। पश्चात् देश, काल किंवा दिक्।

अवरस्पर (वै० त्रि०) १ सबसे पिछला पगला रखने वाला जो पीछेसे आखिरीका कायिल हो।

अवरहस (स० स्त्री) अव अवतत रह अवजनप्रा० स०। अति निर्जन जहां कोई भी जीव न रहे।

अवराधक (हि०) १ आराधना करनेवाला, जो पूजा करता हो। २ दास सेवक।

अवराधन (हिं० पु०) आराधन उपासना, पूजा, सेवा।

अवराधना (हिं क्रि०) उपासना करना, पूजना, सेवा करना।

अवरावी (सं० पु०) पूजक, उपासक आराधक।

अवरार्ध (स० स्त्री०) अवरक तत् अर्धश्चेति, समास०। १ अपर भाग, ऊपरी हिस्सा। २ देहका पश्चाद्भाग जिसका पिछला हिस्सा। ३ नाभिसे पाद पर्यन्त देहका निम्न भाग नाभीसे पैरतक जिस्मके नीचेका हिस्सा। (अव्य) ४ क्रमशः धीरे-धीरे।

अवरार्धतम् (स० अव्य०) निम्न भागसे, नीचे-नीचे।

अवराध्य (स० त्रि) अवरार्धे भव यत्। १ नीच भाग जात, आखिरी हिस्सेसे निकला हुआ। २ न्यून, कम। ३ अधम योद्धा। ४ निम्न या निकटस्थित नीचे या पास पड़ा हुआ। (स्त्री०) ५ अधमतम भाग छोटेसे छोटा हिस्सा।

अवरावर (स त्रि०) अतिशय निम्न, निहायत छोटा।

अवरिका (सं० स्त्री०) धन्याक, धनिया।

अवरीण (सं० त्रि०) अव अपकृष्टं रीयतेस्म, अव-री कर्मणि क्त। तिरस्कृत, धिक्कृत, फटकारा हुआ, जो डांटा-डपटा गया हो।

'अवरीणोऽधिक्कृतश्च।' (अमर)

अवरीयस् (सं० त्रि०) न वरीयः, नञ्‌तत्। १ नीच, कमीना, जो अच्छा न हो। २ अति अल्प, बहुत थोड़ा। (पु०) ३ सावर्ण मनुके पुत्रविशेष। (स्त्री०) अवरीयसी।

अवरुग्न (सं० त्रि०) अव-रुज् क्त ओदित्वात्तस्य नः। रुग्ण, मरीज़।

अवरुज्य (सं० अव्य०) तोड़-फोड़ कर, टुकड़े-टुकड़े उड़ाके।

अवरुद्ध (सं० त्रि०) अव सर्वथा रुध्यतेस्म, अव-रुध कर्मणि क्त। १ प्रतिबद्ध, रुंधा हुआ। २ बद्ध, बंधा हुआ। ३ गुप्त, छिपा हुआ।

अवरुद्धा (सं० स्त्री०) १ रखनी, नीचे बैठी हुई अपनी जातिकी स्त्री। २ उढरी, जो औरत नीचे बैठ गयी हो।

अवरुद्धि (सं० स्त्री०) अव-रुध भावे क्तिन्। १ अवरोध, घेरा। २ लाभ, फ़ायदा।

अवरुध्यमान (सं० त्रि०) अवरोधप्राप्त, घिरा हुआ।

अवरूढ़ (सं० त्रि०) अव-रुह-क्त। १ कृतावरोहण, उतरा हुआ। २ उत्पाटित, उखाड़ा हुआ।

अवरूप (सं० त्रि०) १ कुरूप, बदशकल। २ वर्ण-सङ्कर, कमीना।

अवरेखना (हिं० क्रि०) १ तसवीर खींचना, रेखा लगाना। २ दृष्टि डालना, देखना-भालना। ३ अनु-मान लगाना, अन्दाज़ बांधना। ४ स्वीकार करना, समझना-बूझना।

अवरेण (सं० अ०) निम्न भागमें, नीचे।

अवरेब (हिं० पु०) १ वक्र चलन, तिरछी रफ़्तार। २ कपड़ेका तिरछा काट। ३ फन्दा। ४ मुश्किल, बुराई। ५ बहस, तकरार। ६ बोलीठोली, ताना-ज़नी।

अवरेबदार (हिं० वि०) १ तिरछे काटका। २ पेचीला।

अवरेबी, अवरेबदार देखो।

अवरोकिन् (वै० त्रि०) प्रकाशमान, रौशन, चम-कीला।

अवरोचक (सं० पु०) अव अनादरे रोचयति, अव-रुच्-णिच्-ण्वुल्, णिच् लोपः। अरुचिकारक रोगविशेष, जिस बीमारीमें कोई चीज़ खानेसे अच्छी न लगे।

अवरोध (सं० पु०) अव-रुध भावे घञ्। १ विरोध, मुख़ालफ़त, झगड़ा। २ क़ैद, घेरा। अव-रुध कर्मणि घञ्। ३ तिरोधान, गुम पड़नेकी हालत। ४ राजाके अन्तःपुरमें रहनेवाली स्त्री। अव-रुध आधारे घञ्। ५ राजाका अन्तःपुर, बादशाहका महल। 'अवरोधविरोधाय ... ' (विश्व) ६ ढक्कन। ७ बाड़ा। ८ चौकीदार। (वै०) ९ उतार, नीचेको आना। १० पौधेकी जड़से निकली हुई कोंपल।

अवरोधक (सं० त्रि०) १ रोकनेवाला। (पु०) २ रक्षक, रहनुमा। (क्ली०) ३ घेरा, बाड़ा।

अवरोधन (सं० क्ली०) अव-रुध भावे ल्युट्। निरोध, रोकटोक। २ क़ैद, फसाव। अवरुध्यन्ते राजयोषितो यस्मिन्, अव रुध आधारे ल्युट्। ३ राजाका अन्तः-पुर। (वै०) ४ उतरनेकी हरकत, उतार।

अवरोधना (हिं० क्रि०) १ बेड़ा बांधना। २ रोक-टोक करना

अवरोधायन (सं० क्ली०) अवरोधस्य प्रतिरोधस्य राजयोषितो वा अयनं गृहम्, ६-तत्। राजाका अन्तःपुर, बादशाहका हरम।

अवरोधिक (सं० पु०) अवरोधे राजान्तःपुरस्य राज-योषितो वा रक्षणे नियुक्तः। रानीके प्रासादका रक्षक, मुहाफ़िज़ हिरम।

अवरोधिका (सं० स्त्री०) अन्तःपुरवासिनी राजाकी स्त्री, जो रानी महलमें रहती हो।

अवरोधित (सं० त्रि०) घेरा हुआ, रोका गया।

अवलम्बन (सं॰ क्ली॰) अव लवि भावे ल्युट्। १ आलम्बन, टेक। आधारे ल्युट्। २ आश्रय, आधार। करणे ल्युट्। ३ आश्रयके योग्य दण्डादि, सहारा देने लायक लकड़ी वगैरह। ४ क्षेमविशेष, किसी किस्मका मुकाम।

अवलम्बना (हिं॰ क्रि॰) आश्रय लेना सहारा पकड़ना, ठहरना।

अवलम्बित (सं॰ त्रि॰) अव-लवि कर्मणि क्त। १ आश्रित, जिसका सहारा पकड़ा गया हो। २ शीघ्र करना। कर्तरि क्त। अवतीर्ण।

अवलम्बितव्य (सं॰ त्रि॰) १ अवलम्बन देने योग्य, सहारा पकड़ने काबिल। २ शीघ्रताविशिष्ट, चालाक।

अवलम्बिन् (सं॰ त्रि॰) १ अवलम्बनकर्ता अव लम्बन करनेवाला सहायता लेनेवाला। २ अव तारक, जो उच्च स्थानसे निम्न स्थानमें उतरता हो। "अवनिं नीचैरिमिनि अवलम्बुनामवमृतेषु" (शिशुपाल) ३ सहारा देनेवाला, रक्षा करनेवाला।

अवलम्बी अवलम्बिन् देखो।

अवलम्ब्य (सं॰ त्रि) १ सहारा लेते हुये। २ विश्राम रखते हुये। ३ राह देखते हुये।

अबला (सं॰ स्त्री॰) नास्ति बलं यस्याः। नञ् बहुव्री॰। १ स्त्री योषित्। (स्त्रीयोषिदबला। अमर) २ प्रियङ्गु।

अवलिप्त (सं॰ त्रि॰) अव लिप-क्त। १ गर्वित, घमण्डी, जो घमण्ड रखता हो। "अवलिप्तेषु दैत्येषु" (चण्डी) २ लेपन किया हुआ लगा हुआ, पोता हुआ, जो सब तर्फ या सब प्रकार लेपनयुक्त हो। ३ चामड़ा लिपटा हुआ।

अवलिप्तता (सं स्त्री॰) गर्व, गुरूर, घमण्ड।

अवलिप्तत्व (सं॰ क्ली॰) अवलिप्तता देखो।

अवली (हिं॰ स्त्री॰) १ पंक्ति कतार। २ समूह झुण्ड। ३ धान्यविशेष। यह पहले पहल खेतसे काटा जाता है। ४ जो अन्न मजदूरोंको एकबार मेंड़से काटता हो।

अवलीक (हिं॰ त्रि॰) अपराध शून्य, अपराधरहित, पापशून्य जिसमें पाप न हो, निष्पाप, निष्कलङ्क, शुद्ध।

अवलीढ (सं॰ त्रि॰) अव लिह-क्त। १ भक्षित, भोजन किया हुआ, जो वस्तु खाया गया हो। २ चाटा हुआ, जो चीज जिह्वाके अग्रभाग द्वारा धीरे-धीरे खाया गया हो। ३ व्याप्त।

अवलीला (सं॰ स्त्री॰) अवरालीलाया प्रा॰ समा॰। जो वस्तु क्रीड़ाकी अपेक्षा सहज हो अनायास, अनादर, अपमान।

अवलुञ्चन (सं॰ क्ली॰) अव लुञ्च-ल्युट्। १ छेदन, काटना। २ उत्पाटन, उखाड़ना, नोचना। ३ बन्धन न करना। ४ अलग रखना। ५ छोड़ाना, खोलना। ६ अपनयन, दूरीकरना, हटाना। ७ छी लाना। ८ मुण्डन। ९ कौटिल्य मुसली।

अवलुञ्चित (सं॰ त्रि॰) अवलुञ्चा उत्पाटनं सा संजातास्य। सञ्जातार्थे तारकादित्वात् इतच्। १ उत्पाटित उखाड़ा हुआ नोचा हुआ। २ अप नीत, दूर किया हुआ, हटाया हुआ। ३ अकृत बन्धन, बन्धन न किया हुआ बेबांधा। ५ छेदित काटा हुआ। ६ खुला हुआ, मुक्त।

अवलुण्ठन (सं॰ क्ली॰) अव-लुठि भावे ल्युट्। १ भूमिमें एक ओर पोट होना परिवर्तन, महीमें उलट पलट करना लोटना।

अवलुण्ठित (सं॰ त्रि॰) १ लेटा हुआ। २ लोटा हुआ।

अवलुम्पन (सं॰ क्ली॰) कूद फांद।

अवलून (सं॰ त्रि॰) कटा हुआ।

अवलेख (सं॰ पु॰) अव-लिख भेदने भावे घञ्। पृथक् किया हुआ पदार्थ, अलग जमायी हुई चीज़।

अवलेखन (सं॰ क्ली॰) पृथक्करण, अलगाव।

अवलेखना (हिं॰ क्रि॰) १ खोदना, खनना, खुर-चना। २ चिह्न लगाना, लकीर खींचना।

अवलेखा (सं॰ स्त्री॰) १ मूढपाट। २ आलवाल।

अवलेप (सं पु॰) अव लिप् भावे घञ्। १ गर्व, घमण्ड। २ लेपन, उबटन। ३ भूषण। ४ सम्बन्ध। ५ दूषण दोष देना (दोष लगाना)।

"अवलेप्य नवेन्द्राई वसे हृदयेऽपि च। (शिव)

वहुव्रो० वा कप्। १ अवाङ्मस्तक, मुंह लटकाये हुआ। २ मुंडभर, जिसके सर नीचे और पैर ऊपर रहे। (पु०) ३ नेत्ररोग, आंखका आज़ार।

अवशेन्द्रियचित्त (सं० वि०) मन और इन्द्रियपर वश न रखनेवाला, जिसके दिल और अज़ो क़ाबूमें न रहे।

अवशेष (सं० पु०-क्ली०) अव-शिष भावे घञ्। १ कृत-कार्य वा कृतपदार्थका शेष, किये हुये कामका खातिमा। कर्मणि घञ्। २ अवशिष्ट, बची-बचायी चीज़।

अवशेषित (सं० त्रि०) अवशिष्ट, बाक़ी, बचा हुआ।

अवशोष (सं० पु०) अव शुष भावे घञ्। अत्यन्त शुष्क होनेकी बात, निहायत खुश्की।

अवश्य (सं० त्रि०) न वश-यत्। १ अनायत्त, जो तावेमें न हो। २ अनधीन, आज़ाद रहनेवाला। (अव्य०) ३ निश्चय, ज़रूर, बिलाशक।

अवश्यक (सं० वि०) १ निश्चयात्मक, ज़रूरी। (पु०) २ तुषार, पाला। ३ अर्धावभेदक शिरोरोग, आधा-शीशी। ४ गुड़।

अवश्यकता (सं० स्त्री०) निश्चय, ज़रूरत।

अवश्यकरण (सं० क्ली०) अवश्यं करणम्, मकार-लोपः। १ नियत करण, मुक़र्रर करनेकी बात। २ अकरणकी निवृत्ति, न करनेका दूर होना।

अवश्यकार्य (सं० वि०) निःसन्देह कर्तव्य, जिसे करना ज़रूर रहे।

अवश्यकारिन् (सं० त्रि०) ज़रूरी काम करनेवाला।

अवश्यपाच्य (सं० त्रि०) निःसन्देह पाक किया जानेवाला, जिसके पकानेमें कोई शक न रहे।

अवश्यपुत्र (सं० पु०) अवश्यश्चासौ पुत्रश्चेति, कर्मधा०। किसी प्रकार शासन किया न जानेवाला पुत्र, खोटा बेटा, जो लड़का हाथसे बेहाथ निकल गया हो।

अवश्यम् (सं० अव्य०) अव-श्यै डमु। १ निश्चय, ज़रूर। २ नित्य, हमेशा। ३ प्रयत्न, तजवीज़से। 'अवश्यं' निश्चयमये।' (विश्व) ४ मृग, ज़ोरसे। ५ बाढ़, बुलन्द, आवाजीसे। ६ अतिशय, निहायत। 'अवश्यं भव्योऽवश्यम्।' (हलायुध) (वि०) ७ अनायत्त, बेक़ाबू।

अवश्यमेव (सं० अव्य०) निःसन्देह; ज़रूर बिला-अटक।

अवश्यभाविन् (सं० वि०) निःसन्देह होनेवाला, जो ज़रूर ही हो।

अवश्या (सं० स्त्री०) अवश्यायते शैत्यं प्राप्नोति, अव श्यै-क टाप्। १ कुज्झटिका, कुहरा। २ अवशी-भूत स्त्री, जो औरत क़ाबूमें न हो।

अवश्याय (सं० पु०) अव-श्यै-ण। १ कुज्झटिका, कुहरा। २ नीहार, ओस। 'अवश्यायस्तु नीहारः।' (अमर) ३ अभिमान, घमण्ड। ४ दर्प, शेख़ी। 'अवश्यायो हिमे दर्पे।' (हेम) ५ शिशिर, ठण्डक।

अवश्याया (सं० स्त्री०) कुज्झटिका, कुहरा।

अवश्रयण (सं० क्ली०) अव-श्रि-ल्युट्। चूल्हेसे उतार स्थानान्तरमें रखना।

अवश्वरूम (वै० अव्य०) उड़ जानेकी तरह, एक फूंकमें, सरासर।

अवष्कयणी, अवष्कयिणी (सं० स्त्री०) अवम् रक्षणं चिकेति जानाति दुग्धदानादिना अवम्-कि-ल्युट्-ङीप्। पक्षे मष्कगतौ अयन् पृषो० मकारस्य वकारः। मष्कय एकहायनो वत्सः सोऽस्त्यस्याः इति ङीप्, नञ्-तत्। अचिरप्रसूता गौ, अल्प दिनकी ब्यायी गाय, जिस गौके थोड़े दिनका बच्चा हो। 'चिरप्रसूता बष्कयिणी।' (अमर) "वत्सैः बष्कयिणी धेनुः" काव्य ११।६४॥ 'बष्कयिणी तामेकहायनो वत्सः।' (माघव)

अवष्टब्ध (सं० वि०) अव-स्तम्भ-क्त यत्वम्। १ आसन्न, नज़दीकी, लगा हुआ। २ आक्रान्त, नज़दीक आया हुआ। ३ आश्रित, मुहताज। ४ अवलम्बित, सहारा पकड़े हुआ। ५ प्रतिरुद्ध, रुका हुआ।

अवष्टभ्य (सं० अव्य०) १ सहारेसे बलमें, पकड़-कर। २ रोकते हुये, गिरफ़्तारीमें।

अवष्टम्भ (सं० पु०) अव-स्तम्भ-घञ्, यत्वम्। १ प्रारम्भ, आग़ाज़, शुरू। २ अनम्रता, कड़ापन। ३ आलम्बन, सहारा। कर्मणि घञ्। ४ स्तम्भ, खम्भा। ५ सुवर्ण, सोना। ६ मुक़ाम, ठहराव। ७ उत्तमता, उम्दगी। ८ रोक, अटकाव। ९ पक्षाघात, लक़वा।

अवष्टम्भन (सं० क्ली०) अवष्टम्भ देखो।

अवष्टम्भमय (सं० त्रि०) सोनेका, जो सोनेसे बना हो।

अवष्वाण (सं० पु०) अव-ष्वन-घञ्। खानाकसे भोजन, खाद।

अवस् (सं० स्त्री०) अव भावे असुन्। १ रक्षा, हिफाजत। कर्मणि असुन्। २ यश, नामवरी। ३ धन, दौलत। ४ गमन, रवानगी। ५ तृप्ति, प्रसन्नता खासूदगी, खुशी। ६ अभिलाष, ख्वाहिश। (अव्य०) ७ निम्न देशमें, नीचे।

अवस (सं० पु०) अवति रक्षति अव-असच्। उणादिकोंसिसि नहिषीभ्यः। उण ३।११७। १ राजा बादशाह। २ सूर्य। ३ पथ, पाथेय। ४ रक्षक मुहाफिज। ५ पाथेय विशेष तोशह रसद। ६ आकन्द वृक्ष।

अवसक्त (सं० त्रि०) अव-सञ्ज-क्त। १ सम्मग्न लगा हुआ। २ अभिलाषयुक्त ख्वाहिशमन्द। (स्त्री०) भावे क्त। ३ संसर्ग, लगाव।

अवसक्थिका अवसक्थिका देखो।

अवसक्थिका (सं० स्त्री०) अवसक्ते अवलम्बे सक्थि यो यस्यास्, बहुव्री० कप् टाप्। १ पर्यङ्कबन्ध, पट बांधन। २ योग करनेका आसन विशेष। ३ लंगोटी, विट।

अवसत्थम, अवसथ देखो।

अवसज्जन (सं० स्त्री०) आलिङ्गन, हमागोशी, मुहब्बतमें हाथोंसे हाथोंका मिलाना।

अवसत्कोल (सं० स्त्री०) अव-सम्-कोल-क पोदित्वात्सन्। पक्षियोंको आकाशसे उतरनेको कोई गति, जिस चालसे चिड़ियां नीचे उतरें।

अवसथ (सं० पु०) १ जनपद बसती। २ ग्राम, गांव। ३ छात्रोंके रहनेका स्थान मदरसा, पाठशाला। (स्त्री०) घर, मकान।

अवसथ्य अवसथ देखो।

अवसन्न (सं० त्रि०) अव-सद् कर्तरि क्त। १ विषाद प्राप्त, नाखुश। २ विनाशोन्मुख बरबाद जाने वाला। ३ जिसके कार्यमात्रमें व्यवहार को कायदा काम बना न सकता हो। ४ समाप्त खत्म। ५ आलसयुक्त, नाकाबिल।

अवसन्नता (सं० स्त्री०) १ दुःख रञ्ज। २ अवसाद, दिलगीरी। ३ समाप्ति, खातिमा।

अवसन्नत्व (सं० स्त्री०) अवसन्नता देखो।

अवसन्न (वै० त्रि०) समाधि प्रयत्न् जो मनुष्यसे निकाल दिया गया हो।

अवसर (सं० पु०) अव-सृ अधिकरणे अ। १ प्रस्ताव, तकलियेको बात चीत। 'अवसर अवसरज्ञ।' (अमर) २ प्रकृति विशेष मौका। ३ वत्सर साल। ४ मन्त्र विशेष। ५ वर्षण, पानीका बरसना। ६ वृष्टि, बारिश। ७ समयका अवकाश, फुरसत। ८ काल वक्त। ९ उतार नीचो जगह। १० अलङ्कार विशेष। इसमें किसी विषयके सामयिक सङ्गतका वर्णन करते हैं।

अवसरवाद (सं० पु०) दार्शनिक सिद्धान्त विशेष, कोई मज़हबी उसूल। यह वाद विज्ञानवादियोंका है। इसके अनुसार जीव नहीं ईश्वर ही कर्ता और ज्ञाता होता यह समय शारीरिक कार्य चलाता है।

अवसरामय (सं० पु०) अवसरा अर्थ यो यत्र बहुव्री०। अर्धरात्र आधीरात।

अवसरी वदरव—बम्बई प्रान्तके पूना जिलेका नगर। यह पूनासे साढ़े सात कोस दूर पड़ता है। पश्चिम द्वारके पास भैरवका मन्दिर खड़ा है जिसे महरपैठ नामक किसी बनियेने सौ वर्ष हुये बनवाया था। दालानमें हिन्दुओंके कितने ही पौराणिक चित्र अङ्कित हैं। द्वारके मखपति प्रतिरूप नाना प्रकारके वर्णसे रंजित किये जाते हैं। दीपक रखनेको दो स्तम्भ भी द्वारके सम्मुख अति सुन्दर बने हैं अधारखानेपर पत्र रखा जो चोखा अड़ा यह मानो इसीकी बात कर रहा है।

अवसर्ग (सं० पु०) अव-सृज घञ्। १ अप्रतिबन्ध रोक टोककी अदममौजूदगी। २ स्वतन्त्रता, आजादी। ३ स्वेच्छाचार, मनमानी।

अवसर्जन (वै० स्त्री०) मुक्ति, छुटकारा।

अवसर्प (सं० पु०) अवसर्पति पश्चाद्गच्छति आ मित्र, अव सृप-अच्। १ चर, जासूस। २ भृत्य, नौकर। ३ दास, गुलाम।

अवसर्पण (सं० क्लो०) उतार, नीचेकी कदमका रखना।

अवसर्पिणी (सं० स्त्री०) १ जैनियोंका युग विशेष। २ अधोगामिनी स्त्री, नीचे उतरनेवाली स्त्री।

अवसर्पिन् (सं० त्रि०) अव-सृप-णिनि। अधोगन्ता, निम्नगामी, नीचे जानेवाला।

अवसर्पी, अवसर्पिन् देखो।

अवसव्य (सं० त्रि०) अपसव्य, दक्षिण, दाहना, जो बायां न हो।

अवसा (वै० स्त्री०) स्वातन्त्र्य, अप्रतिबन्धकत्व, छुटकारा, आज़ादी।

अवसातृ (वै० पु०) मुक्तिदाता, छुटकारा देनेवाला, जो छोड़ देता हो।

अवसाद (सं० पु०) अव-सद-घञ्। १ नाश, बरबादी। २ विषाद, रञ्ज। ३ स्वकार्यमें अक्षमत्व, अपना काम कर न सकनेकी हालत। ४ अवसन्नता, पज़मुर्दगी। ५ कारणकी खराबी, सबबकी बुराई। ६ समाप्ति, ख़ातिमा।

अवसादक (सं० त्रि०) अवसादयति, अव-सद्-णिच्-ण्वुल्-णिच् लोपः। १ अवसन्नकारक, डुबानेवाला, जो काम बिगाड़ देता हो। २ कार्यमें अक्षमता-सम्पादक, थकानेवाला, जो सुस्त हो। ३ ममाप्त होनेवाला, जो खत्म हो। ४ खेदकारी, रञ्जीदा करनेवाला।

अवसादन (सं० क्लो०) अव-सद्-णिच् भावे ल्युट्। १ विनाशन, बरबादी। २ कार्यमें अक्षमता सम्पादन, थका डालनेकी बात। ३ सुश्रुतोक्त व्रणचिकित्सा, फूले हुये जख्मको घटाना।

अवसादनी (सं० स्त्री०) महाकरञ्ज, बड़ा करौंदा।

अवसादित (सं० त्रि०) डुबाया, थकाया, मुरझाया या सताया हुआ।

अवसान (सं० क्लो०) अव-सो-ल्युट्। 'विरामोऽवसानम्। पा १।४।११०' १ विराम, ठहराव। २ समाप्ति, अञ्जाम। ३ सीमा, हद। ४ समापन, नतीजा। ५ शेष, अख़ीर। ६ मृत्यु, मौत। अवस्यति तिष्ठति अस्मिन्, आधारे ल्युट्। ७ स्थान, जगह। ८ दहन स्थान, जलानेका मुकाम। ९ श्मशान, मरघट। "अवसानं दग्ध्यानम्।" (अजय) १० शब्दका अन्तिम भाग, लफ़ज़का आख़िरी हिस्सा। ११ छन्दका अन्त, बहरका ख़ातिमा। (वै० त्रि०) १२ वस्त्र धारण न करते हुये, जो पोशाक पहन रहा न हो।

अवसानक (सं० त्रि०) शेष होनेवाला, विनाशोन्मुख, जो ख़त्म पड़ या मर रहा हो।

अवसानदर्श (वै० त्रि०) किसीके वासस्थानपर दृष्टि डालता हुआ, जो किसीको मञ्जिल-मकसूदको देख रहा हो।

अवसान्य (सं० त्रि०) छन्दके अन्तसे सम्बन्ध रखनेवाला।

अवसाम (सं० क्लो०) अवरं साम अकन्त प्रादिनत्। अधम साम, जो साम मरणकालमें गाया जाता हो।

अवसाय (सं० पु०) अव सो-घ। १ समाप्ति, ख़ातिमा। २ शेष, बाक़ी। ३ निश्चय, पोख़्तगी। (अव्य०) ल्यप्। ४ समापन करके, पूरे उतारके। ५ निश्चय करके, ठहराके। ६ विमोचन करके, छोड़के।

अवसायक (सं० त्रि०) अव-सा ण्वुल्। १ निश्चयकारक, ठीकठाक करनेवाला। २ समापक, पूरे उतारनेवाला।

अवसायिता (हिं० स्त्री०) ऋद्धि।

अवसायिन् (सं० त्रि०) अधिवासी, बाशिन्दा।

अवसाय्य (सं० अव्य०) पूर्ण कराके, पूरे उतारके।

अवसारण (सं० क्लो०) हटाव, सरकाव।

अवसि (हिं० क्रि० वि०) निश्चय, जरूर।

'अवसि देखिये देखन जोगू।' (तुलसी)

अवसिक्त (सं० त्रि०) अव-सिच्-क्त। १ क्षतसेक, अङ्गामें छींटें मारे हुआ। २ आसुत, सींचा हुआ। ३ स्नात, नहाया हुआ।

अवसित (सं० त्रि०) अव-सो-क्त। १ समाप्त, खतम। २ ऋद्ध, खुश-खुरम। ३ राशीकृत, ढेर किया हुआ। ४ ज्ञात, मालूम। ५ निश्चित, ठहराया हुआ। ६ सम्बद्ध, मिला हुआ। (क्लो०) ७ पका और मंडा हुआ धान्य, जो चावल पक और मंड चुका हो। ८ आवासस्थान, रहनेका मुकाम।

अवसितमति (स० त्रि०) ज्ञाता, दिलमीर, जो अपना काम कर न सका हो।

अवसी (हिं० पु०) अपक्व दशामें काटा हुआ शस्य, जो अनाज कच्चा हो काट लिया गया हो गहर।

अवसुप्त (स० त्रि०) सोया हुआ जो नींदमें हो।

अवसृष्ट (सं० त्रि०) अव सृज क्त। १ दत्त, दिया हुआ। २ त्यक्त, छोड़ा हुआ। ३ निःसृत, निकाला हुआ।

अवसे (स० अव्य०) अव तुमर्थे असन्। रक्षा करनेके निमित्त, हिफ़ाज़त रखनेके लिये।

अवसेक (स० पु०) अव सिच् घञ्। १ सब ओर सेकका काम, चारो ओर छिड़काव। २ नियवर्त्मि रोग विशेष, आंखका कोई आजार। ३ रक्तमोक्षण, खूनरेज़ी।

अवसेकिम (सं० पु०) अवसेकेन निर्वृत्तः, अव सेक इमन्। भक्ष्यविशेष, बड़ा या मुंगोड़ा।

अवसेख (हिं०) अवशेष देखो।

अवसेचन (सं० क्ली०) अव सिच् ल्युट्। १ सब दिक् सेचनका काम चारो ओर छिड़काई। २ अधो दिक् रक्तप्रसावक रोगविशेष, नीचेकी ओर खून बहाने वाला आजार। ३ रक्तमोक्षण खूनरेज़ी। अवसेचन जोंक या सींगी लगाने और नश्तर देनेसे होता है।

अवसेय (सं० त्रि०) अवसात् ग्रस्य अर्हं या, अव सो प्रकार्ये अर्हार्थे वा यत्। १ निर्णयको योग्य जो फ़ैसल किया जा सकता हो। २ समाप्य, पूरे उतरने क़ाबिल। ३ अवबोध्य, दरयाफ़्त होने लायक़।

अवसेर (हिं० स्त्री०) १ विलम्ब, अबेर। २ चिन्ता, फ़िक्र। ३ दुःख, परेशानी।

अवसेरना (हिं० क्रि०) क्लेश पहुंचाना तकलीफ़ देना।

अवस्कन्द (सं० पु०) अवस्कन्द्यते सुखादनन्तरं क्रिया याय प्रतिगम्यतेऽस्मिन् आधारे घञ्। १ जयेच्छुके सैन्यनिवेशका स्थान, जिस जगह लड़नेवालेकी फ़ौज पड़े। २ शिबिर डेरा। ३ तम्बू। आगे बञ्। ४ अवतरण उतार। ५ अवगाहन स्नान, पानीमें घुसकर जो नहानेकी रसम्। ६ आक्रमण, हमला।

अवस्कन्दन (सं० क्ली०) अव स्कन्द्-ल्युट्। १ सहसा पड़ कुछ करने वाला काम, जो गुप्तरूप सब घात करानेसे हो। २ अवगाहन, पानीका संक्षाना। ३ अवतरण, उतार। ४ आक्रमण, हमला।

अवस्कन्दित (स० त्रि०) १ आक्रमण किया गया, जो मारा गया हो। २ अध पतित नीचे पड़ा हुआ। ३ मिथ्याप्रमाणित, जो झूठा ठहरा हो। ४ धात, लगाया हुआ, जो लगा रखा हो।

अवस्कन्दिन् (स० त्रि०) १ ऊपर छलांग मारता या डालता हुआ। २ आक्रमण करता हुआ, जो हमला मार रखा हो।

अवस्कयणी (सं० स्त्री०) बहुत दिनके अन्तर प्रसूता गौ, जो गाय बहुत दिन बाद ब्यायी हो।

अवस्कर (स० पु०) अवकीर्यते कोष्ठादधो विक्षिप्यते अव स्कृ कर्मणि अप् सुट्। १ उच्चार तबद्रफ़ुज़ा। २ मलम, तलछीप। ३ मलत गोबर। ४ पुरीष मैला। ५ बवरक कूड़ाकर्कट। ६ विष्ठा, गू मोबर। ७ विष, ज़हर। ८ मलमात्र। अपादाने अप्। ९ गुह्यदेश। "अवस्करे कृमयो" (मिन)

अवस्करक (स त्रि०) अवस्करे जात वुन्। १ विष्ठा जात, गू मोबरसे पैदा। २ मोपमोपस्थान जात, पाखानेसे सुखानेसे पैदा हुआ। (पु०) ३ कृमि विशेष कोई कीड़ा। ४ मह्नो, मेहतर। ५ झाड़ू।

अवस्करमन्दिर (स० पु०) १ टट्टी, पाख़ाना, नाली।

अवस्कर (स० त्रि०) अव वेदरोक्ते स्कुनाति स्कुनोति वा, अव स्कु उक्तौ कर्तरि अच्। १ विपदसे उद्धार न करनेवाला जो आपत्से बचाता न हो। २ विलक्ष क़ाबिल। (पु) ३ कृमिविशेष, कोई कीड़ा।

अवस्तरण (स० क्ली०) अव स्तृ भावे ल्युट्। विस्तार, आवरणके नीचे फैलाव।

अवस्तात् (सं० अव्य०) अवरस्मिन् अवरस्यात् अवरं स्थानेषु अर्वेषु अस्ताति तद्धितवादेश। नीचे निम्न मानमें।

अवस्तात्प्रपदन (स० त्रि) नीचेसे प्राप्त हुआ या नीचेसे मिला हो।

अवस्तार (सं॰ पु॰) अवस्तियते, अव-स्तृ कर्मणि घञ्। १ जवनिका, क़नात, परदा, चिक। २ शय्या, पलंग।

अवस्तु (सं॰ क्लो॰) न वस्तुः, अप्रशस्तो नञ्-तत्। १ अप्रशस्त वस्तु, नाक़ाबिल चीज़। २ तुच्छ वस्तु, हक़ीर चीज़। ३ वस्तुका अभाव, चीज़की अदम मौजूदगी। ४ वेदान्तमतसे—अज्ञानादि जड़समूह, दुनियावी चीज़की बेसबाती, नापायदारी।

अवस्तुत्व (सं॰ क्लो॰) अवस्तुता देखो।

अवस्त्र (सं॰ त्रि॰) १ वस्त्रविहीन, नग्न, कपड़ेसे ख़ाली, नंगा।

अवस्त्रता (सं॰ स्त्री॰) वस्त्र न होनेकी बात, कपड़ा न रखनेकी हालत, नङ्गापन।

अवस्था (सं॰ स्त्री॰) अव-स्था-(वामरूपोऽस्त्रियाम्) इति क्तिन् वाधनात् अङ्। स्त्रीत्वात् टाप्। कालकृत देहादिकी दशा, आकार, अवस्थान, स्थिति, कालकृत भाव विकार विशेष। यास्कके मतानुसार यह छः प्रकारकी है। यथा—१ जन्मना। २ विद्यमान रहना। ३ वृद्धि होना। ४ विपरीत होना। ५ क्षीण होना। ६ नाश होना।

योगशास्त्रके मतसे अवस्था पांच प्रकारकी है। यथा,—अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष एवं अभिनिवेश।

"अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः क्लेशाः।" पातञ्जल साधनपाद सू॰ ३।

अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष एवं अभिनिवेश—इन्हींको क्लेश कहते हैं।

"अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषां प्रसुप्ततनु विच्छिन्नोदाराणाम्।" पात॰ सा॰पा॰सू॰४।

मोह अर्थात् अनात्माके प्रति आत्माभिमानको अविद्या कहते हैं। उक्त अविद्या,—प्रसुप्ततनु, विच्छिन्न एवं उदर यह चार प्रकारसे विभक्त अस्मिताकी, प्रसुप्तादि चार प्रकारसे विभक्त राग, द्वेष एवं अभिनिवेशकी जन्म भूमि है।

इस बातके कहनेका कारण यही है, कि मोह न उत्पन्न होनेसे अस्मितादिकी उत्पत्ति नहीं होती इसलिये अस्मितादिकी अपेक्षा अविद्या ही प्रधान है।

"अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या।"

पात॰ सा॰ पा॰ सू॰ ५।

अनित्य वस्तुमें नित्य अशुचिमें शुचि, दुःखमें सुख आत्मभिन्न वस्तुमे आत्मा ऐसे बोध करानेवाला मोहका नाम अविद्या है।

"दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मतेवास्मिता।" पात॰ सा॰ पा॰ सू॰ ६।

दृग्शक्ति प्रकृति भिन्न पुरुष एवं जिस शक्तिसे देखा जाता है, इन दोनोंमें अभिन्न विश्वास करनेको अस्मिता कहते हैं। जैसे,—आत्मा और देह सम्पूर्ण विभिन्न होनेपर भी आत्मा एवं देहको अभिन्न सोचकर हम लोग यह कहा करते हैं—"मैं हूं।"

"सुखानुशयी रागः।" पात॰ सा॰ पा॰ सू॰ ७।

सुखकी आशा करनेको राग कहते है।

"दुःखानुशयी द्वेषः।" पात॰ सा॰ पा॰ सू॰ ८।

यो एकबार दुःख भोग चुका है, फिर जिसमें दुःख न आवे, इसलिये दुःखकर पदार्थको देखनेसे उसके मनमें जो क्रोध होता है, वह विद्वेष कहा जाता है।

"स्वरसवाही विदुषोऽपि तथारूढोऽभिनिवेशः।" पात॰ सा॰ पा॰ सू॰ ९।

स्वरवाही अर्थात् पूर्व जन्ममें मृत्यु हुई थी, उसी दुःखको ख़्याल कर, लोगोंके मनमें अकारण ही ऐसा जो भय होता है कि, इस जन्ममें शरीर और विषयादि विनष्ट न हों, पुनः पुनः उसके संकल्पको अभिनिवेश कहते हैं।

सांख्यके मतसे अवस्था तीन प्रकारकी है। यथा,—अनागत, अभिव्यक्त, एवं तिरोभाव। कार्य्यके प्रकाश पानेके पहले वह सूक्ष्म भावसे कारणमें अवस्थिति करती है। ऐसे प्रागभाव अवस्थाको अनागत अवस्था कहते हैं। उसके बाद कारणके कार्य्यद्वारा जो फल प्रकाश होता, उसे अभिव्यक्त अवस्था कहते हैं। शेषमें कारणके ध्वंसको तिरोभाव कहते हैं।

वेदान्तिकोंके मतसे—जीवदशामें जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति एवं मृत्युके बाद मोक्ष यही चार प्रकारकी अवस्था है। इस मतके अनुसार मुग्धावस्था सुषुप्तिके अन्तर्गत है।

वयोभेदसे कुछ अवस्थायें होती हैं। स्मृतिशास्त्रमें उनका निरूपण किया गया है। यथा,—पांच वर्षको उम्र तक कौमारावस्था, दश वर्ष तक पौगण्डावस्था,

अवहत (सं० वि०) अव-हन् कर्मणि क्त। अल्प आघात द्वारा वितुषीकृत, अधकूटा।

अवहति (सं० स्त्री०) अव-हन-क्ति। १ अवघात, चोट। २ अल्प आघातसे वितुषी करनेका व्यापार, नर्म-कुटाई। ३ ढेंकी या ओखलीमें अल्प-अल्प आघात।

अवहनन (सं० क्ली०) अव-हन भावे ल्युट्। १ अव-घात, मारकूट। २ धान्यादिका वितुषीकरण व्यापार, धानकी कुटाई। अवहन्यते रुधिरमनेन करणे ल्युट्। देहस्थ रक्तावह स्थानविशेष, फेफड़ा।

अवहरण (सं० क्ली०) अव-हृ-ल्युट्। १ स्थाना-न्तरका ले जाना, चोरी, ऐयारी। २ युद्धस्थानसे सैन्य-गणका शिविरमें जाना, मोरचाबन्दीसे फौजकी डेरेको रहनुमायी।

अवहलोड—वम्बई प्रान्तके पञ्चमहल ज़िलेका ग्राम। यहांसे आधकोस दूर जो मन्दिर बना उसमें संस्कृत शिलालेख विद्यमान है।

अवहस्त (सं० पु०) अवरं हस्तस्य, एकदेशि-तत्। हस्तपृष्ठ, हाथका ऊपरी हिस्सा।

अवहार (सं० पु०) अवहरति स्वामिनमप्रार्पयित्वा रहाति वस्तुजातम्, अव-हृ कर्तरि ण। (भवहारावहारागवा-पालानुपसख्यानम्। पा ३।१।१२२ वार्तिक।) १ चौर, चोर। २ निहङ्ग, घड़ियाल, नाकू। ३ जलमातङ्ग, सूंस। ४ निमन्त्रण, पुकार, बुलावा। ५ निमन्त्रित विप्र-गणके उद्देश्यसे खाने या ले जानेवाला द्रव्य, भेंट, पूजा, सीधा। ६ युद्धस्थानसे सैन्यगणको विश्रामके लिये शिविरमें गमन, मोर्चेबन्दीसे फ़ौजको आरामके लिये डेरेमें रहनुमायी। ७ युद्ध या पाशक्रीडाका विराम, लड़ाई या खेलका ठहराव।

अवहारक (सं० पु०) अव-हृ-ण्वुल्। १ ग्राह, घड़ियाल। २ जलहस्ती, सूंस। (त्रि०) ३ युद्धसे सैन्यगणको निवारण करनेवाला, जो लड़ाईसे फ़ौज-को हटा ले जाता हो। ४ स्थानान्तरको ले जाने-वाला, जो दूसरी जगह पहुंचाता हो।

अवहार्य (सं० वि०) अव-हृ-ण्यत्। १ दान किया जानेवाला, जो वापस देना पड़ता हो। २ स्थानान्तरमें ले जाने योग्य, जो दूसरी जगह पहुं-चानेके काबिल हो। ३ समाप्य, पूरा करने लायक। ४ दण्ड्य, सज़ा पाने काबिल।

अवहालिका (सं० स्त्री०) अवहलति अधःस्थित्वा ऊर्ध्वं गच्छति, अव-हल विक्षेपे ण्वुल् ततो टाप् इत्वम्। प्राचीर, दीवार।

अवहास (सं० पु०) अव-हस्-घञ्। १ उपहास, मज़ाक़, ठट्ठा। २ मृदुहास्य, मुसकराहट, मुसकी।

अवहास्य (सं० वि०) अव-हस् कर्मणि ण्यत्। उपहासके योग्य, मज़ाकके क़ाबिल।

अवहित (सं० त्रि०) अव-धा-क्त। १ सावधान, होशियार। २ विख्यात, मशहूर। ३ नियत, नियुक्त, लगाया, रखा हुआ।

अवहितकरणकलाप (सं० त्रि०) स्थिर, ठहरा हुआ, जिसके हवास काम न करें।

अवहितता (सं० स्त्री०) १ विनय, ग़र्ज़। २ ध्यान, गौर।

अवहिताञ्जलि (सं० त्रि०) हाथ जोड़े हुये, दस्त-बसता।

अवहित्था (सं० स्त्री०) न बहिस्तिष्ठति, अव-स्था-क पृषो० साधु। १ बाहरके आकारका गोपन, ऊपरी सूरतका छिपाव, ज़मानासाज़ी, फफरदलाली। २ नायक और नायिकाका व्यभिचार भाव विशेष।

अवही (हिं० पु०) किसी क़िस्मका बबूल। यह पञ्जाबके कांगड़े ज़िलेमें उपजता और आठ फीटकी लपेट रखता है। मैदानमें इसका आधिक्य रहता। लोग इसकी लकड़ीसे हलमाची बनाते और तख़्ते चीर छतको पाटते हैं।

अवहेल (सं० क्ली०) अव-हेड हेल वा, बजर्थे क। १ अनादर, बेइज़्ज़ती। २ अवज्ञा, नाफ़रमांबरदारी।

अवहेलन, अवहेल देखो।

अवहेलना (हिं० क्रि०) तिरस्कार करना, फटकार देना, बात न मानना।

अवहेलाव (सं० स्त्री०) अवहेल देखो।

अवहेलित (सं० त्रि०) अव-हेल-इतच्। १ अव-हेलाविशिष्ट, बेइज़्ज़त। (क्ली०) भावे क्त। २ अनादर, बेइज़्ज़ती।

अवाज, आवाज देखो।

अवाजिन् (वै० त्रि०) वाचामिनो वाजिनः, नञ्-तत्। १ मूर्ख, बेवक़ूफ़। (पु०) २ अनुत्तम अश्व, ख़राब घोड़ा।

अवाजी (हिं० वि०) १ शब्दकारी, आवाज़ लगानेवाला।

अवात (वै० त्रि०) नास्ति वातं हिंसनं यत्र। १ अहिंसित, जो मारा न गया हो। २ अशुष्क, जो सूखा न हो। ३ जीता न हुआ, जो फ़तेह न हुआ हो। ४ वायुशून्य, बेहवा।

"अवातमात पुरुहूत इन्द्रः।" (ऋक् ६।१८।१) 'अवाता अबृक्ष।' (सायण)

अवातित (सं० त्रि०) अधःपतित, नीचे गिरा हुआ।

अवातुल (सं० त्रि०) फूला न हुआ, जो बादीसे सूजा न हो।

अवादा, वादा देखो।

अवादिन् (सं० त्रि०) न वादी, वद-णिनि। १ अविरोधी, मुख़ालिफ़त न करनेवाला। २ अवटनशील, शान्त, झगड़ा न लगानेवाला।

अवाध (सं० त्रि०) नास्ति बाधा यत्र। बाधाशून्य, अनर्गल, आफ़तसे अलग।

अवाध्य (सं० त्रि०) नञ्-तत्। बाधाके अयोग्य, निषेध न सुनने या बाधा न माननेवाला, जो रोकनेसे न मानता हो।

अवान (सं० क्ली०) अव-अन-अच्। १ शुष्क फलादि, सूखा मेवा वग़ैरह। (पु०) २ श्वासप्रश्वास, सांस लेनेका काम।

अवान्तर (सं० त्रि०) अवगतमन्तरं मध्यम्, प्रादि-समा०। १ प्रधानके मध्यगत, बड़ेके बीचमें पड़ा हुआ। २ प्रसङ्गक्रमसे उत्थापित, बातके सिलसिलेसे निकला हुआ।

अवान्तरदिश् (सं० स्त्री०) अवान्तरा द्वयोर्दिशो-र्मध्ये दिक्। दो दिक्के मध्यस्थित कोण वा दिक्, कम्पासका दरमियानी मुल्क।

अवान्तरदिशा, अवान्तरदिश् देखो।

अवान्तरदेश (सं० पु०) बीचके प्रान्तका स्थान, दरमियानी जगह।

अवान्तराम् (वै० अव्य०) मध्य, बीच, दरमियान्।

अवापित (सं० त्रि०) वप्-णिच्-क्त-युक्, नञ्-तत्। १ आरोपित, जो बोया न गया हो। २ छेदन न किया हुआ, जो काटा न गया हो।

अवापितधान्य (सं० क्ली०) न वापितं धान्यम्, नञ्-तत्। रोपित धान्य, लगाया हुआ धान। राजवल्लभके मतसे वापितकी अपेक्षा अवापित धान्यमें गुण अल्प होता है।

अवाप्त (सं० त्रि०) अव-आप्-क्त। प्राप्त, दस्तयाब, जो हाथ आ गया हो।

अवाप्तवत् (सं० त्रि०) १ ग्रहण करते या लेते हुये, जो पाया ले रहा हो। २ रखता हुआ, जो पाल रहा हो।

अवाप्तव्य (सं० त्रि०) अव-आप्-तव्य। प्राप्तव्य, जो लाना या कमाना हो।

अवाप्ति (सं० स्त्री०) अव-आप्-क्तिन्। प्राप्ति, हासिल।

अवाप्य (सं० त्रि०) अव-आप्-ण्यत्। १ प्राप्य, मिलनेवाला। न वाप्यम्, नञ्-तत्। २ वपनके अयोग्य, आरोप्य, जिसे बो न सकें, जो लगाया जाता हो। (अव्य०) अव-आप्-ल्यप्। ३ पाकर, हासिल होनेसे।

अवाम (सं० क्ली०) न वामम्। १ दक्षिण, दाहना। २ अनुकूल, राजी। ३ शोभन, ख़ूब सूरत।

अवाय (सं० पु०) अव-इन्-घञ्। १ अवयव, अङ्ग। "अवायं विमोदिने।" ऋक् ७।१०४।७ (त्रि०) २ अनुकूल, राजी। (हिं०) ३ अनिवार्य, कट्टर।

अवायी (हिं० स्त्री०) आगमन, आमद, पहुंच।

अवार (सं० पु० क्ली०) न वार्यते जलेन गमनायत्र; वृ-आधारे घञ्, नञ्-तत्। १ नदी प्रभृतिका-पूर्वपार, दरया वग़ैरहका नज़दीकी किनारा। नास्ति वारो गमनस्य वारणमत्र। २ प्रार्थना भिन्न, जो बात अर्ज़ न हो। "अवनीरवारत।" ऋक् १०।६५।६।

अवारजा (फ़ा० पु०) १ पत्रविशेष, कोई बही। इसमें असामीका जोत, जमाख़र्च, याददाश्त, गोशवारा-वग़ैरह लिखा जाता है।

अविकल (सं० त्रि०) नञ्-तत्। १ व्याकुल न रहनेवाला, जो बेचैन न हो। २ पूर्ण, भरा-पूरा। ३ निश्चल, चिन्ताशून्य, शान्त। ४ अविसम्वादी।

अविकल्प (सं० क्ली०) विकल्पताशून्य, निश्चित। असन्दिग्ध, सन्देहसे रहित, जिसे किसी तरहका सन्देह न रहे।

अविकार (सं० पु०) नञ्-तत्। १ विकारका अभाव, दोषका न रहना। (त्रि०) नास्ति विकारो यस्य। २ विकारशून्य, विकाररहित, निर्दोष, जिसमें ऐब न हो।

अविकारिन् (सं० त्रि०) नञ्-तत्। विकार न करनेवाला, जो विकारजनक न हो।

अविकारी (सं० पु०) अविकारिन् देखो।

अविकार्य (सं० त्रि०) नञ्-तत्। विकार्यशून्य, जिसके परिणाममें कोई विकार्य न रहे। विकार्य दो प्रकारका होता है। किसी वस्तुके पूर्व प्रकृतिका एकदम विनष्ट हो जाना अर्थात् अवस्थान्तर प्राप्त कर लेना और गुणका कुछ परिवर्तन होना।

अविकृत (सं० त्रि०) प्रकृतगुणयुक्त, जो अवस्थान्तरित न हुआ हो, जो विगडा न हो। क्तिन् अविकृति (स्त्री०) विकारका अभाव।

अविक्रान्त (सं० त्रि०) १ अतुलनीय, जो बराबरी करने लायक न हो, अनुपम। २ दुर्बल, कमजोर।

अविक्रिय (सं० त्रि०) नञ्-बहुव्री०। विकारशून्य, जिसमें विकार न लगा हो, बेदाग।

अविक्रीत (सं० त्रि०) नञ्-तत्। जो विक्रीत न हुआ हो। जो बेचा न गया हो।

अविक्रेय (सं० त्रि०) नञ्-तत्। विक्रयके अयोग्य, जो बेचने लायक न हो।

अविक्षत (सं० त्रि०) नञ्-तत्। अविनष्ट, जो चोज खराब न हुयी हो, शुद्ध, स्वच्छ।

अविक्षित (सं० त्रि०) नास्ति विशेषेण क्षितं क्षयो यस्य। विशेष रूप क्षयशून्य, जो अधिक नष्ट न हुआ हो। "रराणो अविक्षित"। ऋक्। ५।३३।८।

अविक्षिप (सं० त्रि०) विक्षेप्तुं न शक्यं क्षिप-क। विक्षिप्त करनेमें अशक्त, जो पागल कर न सकता हो।

अविक्षीण, अविक्षित देखो।

अविगत (सं० पु०) १ जो विगत न हो। २ अज्ञात, जाननेके अयोग्य। ३ अनिर्वचनीय, जिसका वर्णन न हो सके। ४ नाश शून्य, जिसका नाश न होता हो, नित्य।

अविगन्धा, अविगन्धिका (सं० स्त्री०) अजगन्धा वृक्ष, कोई पेड।

अविगर्हित (सं० त्रि०) नञ्-तत्। अनिन्दित, जिसकी निन्दा न की जा सके, प्रशंसनीय।

अविगीत (सं० त्रि०) नञ्-तत्। अनिन्दित, प्रशंसनीय।

अविघ्न (सं० पु०) विज-क्त, नञ्-तत्। १ कमरख। २ करमर्दक वृक्ष। ३ पानी आवला। ४ जो उद्विग्न न रहता हो।

अविग्रह (सं० त्रि०) नास्ति विग्रहो समासवाक्यं यस्य। १ व्याकरणोक्त जिस पदमें नित्य समास रहे। नास्ति विशेषरूपेण ग्रहो यस्य। २ अज्ञात, जो विशेष रूपसे जाना न गया हो। नास्ति विग्रहो मूर्ति र्यस्य। ३ मूर्तिशून्य, निरवयव, निराकार, जिसके शरीर न हो। ४ मीमांसकोक्त विग्रहशून्य देवता, परमेश्वर।

अविघ्न (सं० पु०) विहन्यतेऽस्मिन् वि-हन-यत्नार्थेक विघ्नः, नञ्-तत्। १ विघ्नाभाव, विघ्नकी अदम मौजूदगी। नञ्-बहुव्री०। २ विघ्नशून्य, जिसे किसी तरहका विघ्न न हो। (अव्य०) ३ विघ्नाभावसे।

अविघात (सं० पु०) विघातका अभाव, विघ्नका न होना।

अविचक्षण (सं० त्रि०) वि-चक्ष-ल्युट् विचक्षणम्। नञ्-तत्। अपटु, मन्द, मूर्ख, बेवक़ूफ़, जो विचक्षण न हो।

अविचल (सं० पु०) स्थिर, अचल, अटल, जो विचलित न हो।

अविचाचलि (वै० त्रि०) चल-यङ्-कि किन् वा; अतिशयेन चाचरित्रः, ततो नञ्-तत्। अतिशय चलन-

रहित, जो बहुत ज्यादा चलता न हो। 'मुक्तविकारि-चारि'। (कथ १।१८।११)

अविचार (स० पु०) १ अन्याय, अत्याचार। २ अज्ञान, अविवेक। (त्रि) नञ् बहुव्री०। ३ विचार शून्य, जिसे विचार न रहे, मूर्ख, बेवकूफ। अवीनां मेषाणां चारो यत्र बहुव्री०। ४ जहां भेड़ चरता हो। न विगतचारो दूतो यस्य। ५ दूतयुक्त, जिसके चरादि रहे।

अविचारित (स० त्रि०) नञ् तत्। अविवेचित, बिना विचारा, जिसके विषयमें कुछ विचारा न गया हो।

अविचारिन् अविचारी देखो।

अविचारी (सं० पु०) १ विचारहीन, अविवेकी वे समझ। २ अत्याचारी अन्यायी। (स्त्री०) अविचारिणी।

अविचाल्य (स० त्रि०) न विचाल्यम् अन्यथाकार्यं नञ् तत्। स्थिर ठहरा, टिका।

अविचेतन (त्रि०) विशेषेण चेतनो प्रादि तत् ततो नञ् बहुव्री०। १ संज्ञारहित, बदहोश, वेहवास। २ विज्ञानरहित। "बेहब्बीवेतनाम्ति" कथ५१ ५७

अविच्छिन्न (सं० स्त्री०) नञ् तत्। १ अविच्छेद जिसका विच्छेद न हुआ हो। २ समस्त, जो बीचमें खाली न हो। ३ अटूट, निरन्तर लगातार, जो टूटा न हो।

अविच्छेद (सं० पु०) अभावे नञ्-तत्। १ विच्छेदका अभाव। (त्रि०) नञ् बहुव्री०। २ विच्छेदशून्य।

अविज्ञ (स० त्रि०) अभिज्ञ, जो प्रवीण न हो।

अविज्ञात (स० त्रि०) नञ्-तत्। अज्ञात, जो अच्छी तरह जाना न हो, अनजाना, बेसमझा बूझा।

अविज्ञाट (सं० त्रि०) विज्ञाता जीवस्तद्भिन्नश्च। परमेश्वर।

अविज्ञेय (सं० त्रि०) दुर्ज्ञेय, जाननेके अयोग्य जो जाना न जा सके।

अविडीन (स० क्ली०) नञ्-तत्। पक्षियोंका सम्मुख दिशामें गमन।

अवित (स० त्रि०) अव-क्त। पालित, जो पाला गया हो। रक्षित, रखा पाया हुआ।

अवितत् (त्रि०) विरुद्ध, प्रतिकूल, उलटा, जो रक्खाके मुताबिक न हो।

अवितत्करण (सं० पु०) १ पाशुपत दर्शनके अनुसार कर्म जो अन्य मतवालोंके विचारमें निन्दित हो। २ लोकयात्रानुसार कार्याकार्यकी विवेचनामें उद्दिग्न पुरुषकी तरह लोकनिन्दित कर्म करना। ३ विरुद्धाचरण।

अवितथ (सं० त्रि०) असत्य, मिथ्या, झूठ।

अवितथ (स० क्ली०) नञ्-तत्। १ सत्य। (त्रि०) २ सत्यविशिष्ट, जिसमें सच रहे।

अवितथावद (स० पु०) व्याहत और निरर्थक शब्दोंका उच्चारण उलटा-पुलटा कहना, अकबक बकना।

अवितर्कित (सं० त्रि०) १ तर्कशून्य, जिसमें तर्क न किया गया हो। २ निःसन्देह, बिना तर्कका।

अवितर्क्य (सं० क्ली०) तर्कयितुमशक्यम्। नञ्-तत्। तर्क करनेको अशक्य, जिससे तर्क हो न सके।

अवितारिन् (सं० त्रि०) वितारो वितरणं अस्त्यस्य इनि, नञ् तत्। ठहरनेवाला, टिकाऊ, स्थिर लोप। अनपायिनी। अवितारिणी इदे॰। कथ ५।५४।

अविद्ध (स० त्रि०) अव क्त। रक्षक रक्षा करने वाला।

अवित्त (स० त्रि०) विद् क्त-नञ्-तत्। १ अविख्यात, जो मशहूर न हो। नञ् बहुव्री०। २ धनरहित, धन हीन, निर्धन, जिसके धन न रहे।

अवित्ति (सं० स्त्री०) विद क्तिन् अभावे नञ्-तत्। १ लाभका अभाव, अलाभ। २ ज्ञानाभाव, ज्ञानका न होना। (त्रि०) नञ् बहुव्री०। ३ ज्ञानशून्य, जिसके ज्ञान न हो। ४ लाभशून्य जिसको लाभ न हो।

अविध्यत्र (सं० पु०) न विशेषेण अध्यते रसायनार्थं दिवु खञ्-कर्मणि बाहु० क, नञ्-तत्। पारद पारा।

अविधुर (स० त्रि०) व्यथ-करण् सम्प्रसारणं किच। नञ्-तत्। अविधुर, वियोगशून्य, जिसे वियोग न रहे।

अविथ्या (सं॰ स्त्री॰) अवये हिता अवि थ्यन्। युथिहृच, जूहीका पेड़।

अविद (सं॰ वि॰) मूर्ख, अनजान।

अविदग्ध (सं॰ वि॰) कच्चा, जो जला या पका न हो।

अविदाहिन् (सं॰ त्रि॰) न विदाही, नञ्-तत्। १ असन्तापक, जो किसीको सन्ताप न दे। २ अदाहक, जो किसीको न जलावे।

अविदित (सं॰ त्रि॰) न विदितम्, नञ्-तत्। अज्ञात, जो जाना न गया हो। १ परमेश्वर। २ अप्रकट, गुप्त।

अविदुग्ध (सं॰ क्ली॰) ६-तत्। मेषी दुग्ध, भेड़का दूध।

अविदूर (सं॰ क्ली॰) न विदूरम्, नञ्-तत्। १ समीप, कुर्ब। (वि॰) २ निकटस्थ, नजदीकी।

अविदूरतः (सं॰ अव्य॰) निकट, पास, नजदीक।

अविदूष्य (सं॰ क्ली॰) मेषीदुग्ध, भेड़का दूध।

अविदूस (सं॰ क्ली॰) अवेर्मेष्या दुग्धम्, अवि दुग्धे दूसच् न पत्वम्। मेषीदुग्ध, भेड़का दूध।

अविद्ध (सं॰ वि॰) वेधा न हुआ, जो छेदा न गया हो।

अविद्धकर्णा, अविद्धकर्णी देखो।

अविद्धकर्णिका, अविद्धकर्णी देखो।

अविद्धकर्णी (सं॰ स्त्री॰) अविद्धः निश्छिद्रः पर्ण एव कर्णो यस्याः बहुव्री॰ स्त्रीत्वात् ङीप्। पाठा नामक लता, हरज्योरी।

'पाठाम्बष्ठाविद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा।
एकष्ठीला पापचेली प्राचीना वनतिक्तका॥' (अमर)

अविद्धदृश् (सं॰ त्रि॰) सर्वद्रष्टा, सबको देखनेवाला।

अविद्धवर्चस् (सं॰ त्रि॰) सुप्रसिद्ध, मशहूर, जिसके नामपर दाग न लगे।

अविद्ध (सं॰ स्त्री॰) दुष्टगिराव्यधन।

अविद्य (सं॰ त्रि॰) १ मूर्ख, बेवक़ूफ़। २ विद्यासे सम्बन्ध न रखनेवाला, जो इल्मसे सरोकार न रखता हो।

अविद्यमान (सं॰ त्रि॰) विददिवा॰ कर्तरि शानच् ततो नञ्-तत्। १ अनुपस्थित, ग़ैरहाज़िर। २ असत्, नेस्तनाबूद।

अविद्या (सं॰ स्त्री॰) न विद्या विरोधे नञ्-तत्। विद्याविरोधिनी, अज्ञान, ज्ञानाभाव, अहम्मति, मैं ही ऐसा ज्ञान। अथाज्ञानमविद्याऽहम्मतिः स्त्रियाम्। (अमर) विशेष विवरण अवस्था शब्दमें देखो।

न्यायके मतसे ज्ञानाभावको अविद्या कहते हैं। सांख्यादिके मतसे, यह ज्ञानका विषयीभूत प्रागभाव ज्ञान अनागतावस्था है। यह अवस्था शास्त्रोक्त अविद्या अस्मिता इत्यादि रूपसे पांच प्रकारकी है। इस अविद्याको नैयायिक लोग अदृष्ट कह कर स्वीकार करते हैं। क्षणिकविज्ञानवादी कहते हैं, कि बाह्य वस्तु, नहीं है। केवल उसका क्षणिक ज्ञान होता है। बाह्य वस्तु न रहनेपर भी मिथ्याज्ञानरूप अविद्याद्वारा सब बाह्य वस्तु ही कल्पित होती है। सांख्यवादी उसे यह कहकर दोष देते हैं, जो कोई वस्तु ही नहीं है, ऐसी अविद्या किसीका बन्धक नहीं हो सकती। इसीसे अद्वैतवादियोंमें अविद्या न रहनेपर वे लोग बद्ध नहीं होते। जैसे स्वप्नमें देखी हुई रस्सीसे प्रकृत बन्धन नहीं पड़ता। यहां भाष्यकारने एक आपत्ति उठाई है।

"न विरोधो न चोत्पत्तिर्न बद्धो न च साधकः।
न मुमुक्षुर्नवै मुक्त इत्येषा परमार्थता॥
बन्धमोक्षौ सुखं दुःखं मोहापत्तिश्च मायया।
स्वप्ने यथात्मनः ख्यातिः संसृतिर्न तु वास्तवी॥" (भाष्य)

उत्पत्ति नहीं, बन्धन नहीं एवं उसका साधक नहीं, मुमुक्षु नहीं, मुक्त भी नहीं। स्वप्नमें आत्मविषयक ज्ञान होता, फिर उसकी स्मृति मात्र रह जाती है। परन्तु वह जिस तरह वास्तविक नहीं, उसी तरह अविद्याद्वारा बन्धन, मोक्ष, सुख, दुःख एवं मोह की उत्पत्ति होती है। वास्तवमें यह सब कुछ भी नहीं है।

अतएव बन्धनादि विषयपर कोई विरोध न रह गया। अन्तमें भाष्यकारने यही कहकर समाधान किया, वैसा होनेसे विज्ञानद्वारा अद्वैत (जीव और परमात्माका एकत्व) श्रवणके बाद बन्ध निवृत्तिके

अविनाभाविन् (सं॰ त्रि॰) व्यापकं विना न भवति, भू-णिनि अविनाभाववत् शाक् असमर्थ समा॰। व्याप्य, जिसमें कोई चीज़ घुस जाये।

अविनाभूत (सं॰ त्रि॰) व्यापकं विना न भूतम्, अविनाभाववत् शाक॰ असमर्थ-समा॰। व्याप्त, मामूर, घुसा हुआ।

अविनाश (सं॰ पु॰) रक्षा, विनाशका अभाव, हिफ़ाज़त, नेस्तनाबूदीकी अदम-मौजूदगी।

अविनाशिन् (सं॰ त्रि॰) न विनश्यति, वि-नश-णिनि, नञ्-तत्। अविनश्वर, नित्य, लाज़वाल, मुदामी।

अविनाशी, अविनाशिन् देखो।

अविनासी (हिं॰ वि॰) १ अविनाशी, लाज़वाल। (पु॰) २ ईश्वर।

अविनिगम (सं॰ पु॰) न्यायविरुद्ध सिद्धि, मन्तिकके खिलाफ़ नतीजा।

अविनिर्मोक (सं॰ त्रि॰) छूटसे खाली, जिसमें कुछन छुटे।

अविनिवर्तिन् (सं॰ त्रि॰) पश्चात्पद न होनेवाला, आगे बढ़नेवाला।

अविनीत (सं॰ त्रि॰) न विनीतम्, नञ्-तत्। १ विनयशून्य, नाशायिस्त। २ अशिक्षित, मूर्ख, बेवक़ूफ़। ३ कुक्रियासक्त, बुरे काममें लगा हुआ। ४ उद्धत, बखेड़िया। 'अविनीत समुद्धत'।' (अमर)

अविनीता (सं॰ स्त्री॰) कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी, जो औरत भली न हो।

अविनीय (सं॰ पु॰) वि-नी क्यप् निपातनात्; नञ् तत्। १ कल्कभिन्न, जो ओषधियोंका निचोरा रस न हो। २ पिष्ट औषध भिन्न, जो कूटी पीसी दवा न हो। ३ पापभिन्न, जो पाप न हो। (त्रि॰) नास्ति विनीयो यस्य, नञ्- बहुव्रो॰। ४ चूर्ण औषध-शून्य, जिसमें कूटी-पीसी दवा न रहे। ५ पापशून्य, बेगुनाह। (अव्य॰) ६ विनय न कर, बे अर्ज़ गुज़ारे।

अविनेय (सं॰ त्रि॰) विनेतुमशक्यम्, वि-नी शक्यार्थे यत् ततो नञ्-तत्। दुर्दमनीय, कट्टर।

अविन्ध्य (सं॰ पु॰) राक्षस विशेष, कोई राक्षस। यह रावणका एक मन्त्री रहा।

अविन्ध्या (सं॰ स्त्री॰) विन्ध्यपादनिःसृता नदी विशेष, कोई दरया।

अविपक्तिकरचूर्ण (सं॰ क्ली॰) अम्लपित्ताधिकारका चूर्ण, सफ़ूफ़, यह मेदेकी तुर्शी पर दिया जाता है। त्रिकटु (सोंठ, मिर्च, पीपल), त्रिफला (आंवला, हर, बहेरा), मुस्तक, बीज, विडङ्ग, एवं एला पत्र सबको बराबर-बराबर ले कूट-पीसके छान डाले। फिर सबके बराबर इसमें लवङ्ग डालना चाहिये। अन्तमें त्रिवृच्चूर्ण सबसे दूना डाल पीछे सबके बराबर चीनी छोड़े। इस चूर्णको चिकने बरतनमें रखते और अम्लपित्तपर भोजनके आदिमें मधु या घृत मिलाकर खाते हैं। (रसेन्द्रसारसंग्रह)

अविपक्व (सं॰ त्रि॰) अपक्व, कच्चा, जो पका न हो।

अविपक्वबुद्धि (सं॰ त्रि॰) अनुभवरहित, बेतजर्बा, जिसे वकफ़ियत न रहे।

अविपश्च (सं॰ त्रि॰) मन्युशून्य, बेदुश्मन्।

अविपट (सं॰ पु॰) अवीनां विस्तारः, अवि विस्तारे पटच्। मेषका विस्तार, ऊर्णामय वस्त्र, ऊनी कपड़ा।

अविपत्तिकरचूर्ण, अविपक्तिकरचूर्ण देखो।

अविपद् (सं॰ स्त्री॰) ऐश्वर्य, आनन्द मङ्गल, खुशहाली, अमनचैन।

अविपन्न (सं॰ त्रि॰) १ अप्रताडित, जिसके चोट न लगे। २ विशुद्ध, खालिस, साफ़।

अविपर्यय (सं॰ पु॰) विपर्ययका अभाव, सिलसिलेबन्दी।

अविपश्चित् (सं॰ त्रि॰) न विपश्चित्, विरोधे नञ्-तत्। विचारशून्य, अविवेकी, नाखांदा, बेवक़ूफ़।

अविपाक (सं॰ पु॰) विशेषेण पच्यते फलरूपेण, वि-पच-घञ् ततो नञ्-तत्। १ अपरिपाक, बदहज़मी। २ फल रूपसे अपरिणत धर्म और अधर्म प्रभृति।

अविपाल (सं॰ त्रि॰) अवीन् पालयति, अवि-पा-णिच्-ल-ः। मेषपालक, गडरिया।

अविपित्तक (सं॰ पु॰) चूर्णविशेष। यह अम्ल पित्त रोगको दूर करता है। अविपत्तिकरचूर्ण देखो।

अविपुल (सं॰ त्रि॰) न विपुलम्, विरोधे नञ्-तत्। क्षुद्र, छोटा, नाचीज़।

अविरुद्ध (सं॰ त्रि॰) न विरुद्धं। नञ्-तत्। १ विरोध शून्य, जो विरुद्ध न हो। २ अप्रतिकूल, अनुकूल, मुवाफ़िक़। ३ एकत्र सहावस्थित। ४ बन्धनरहित।

अविरोध (सं॰ पु॰) न विरोधः, नञ्-तत्। अद्वैर, अविद्वेष, एकत्र अवस्थान, विवादका अभाव अनुकूलता, मेल, अगति, मुवाफ़िक़त, साधर्म्य, समानता अविरोधी। (त्रि॰) जो विरोधी न हो, अनुकूल, मित्र, हित।

अविलक्षण (सं॰ त्रि॰) विलक्षणो विजातीयः, नञ्-तत्। अविजातीय, जो दूसरी जात न हो, भेदक धर्मशून्य।

अविलक्ष्य (सं॰ त्रि॰) नास्ति विशेषेण लक्ष्यं व्याजः उद्देश्यं शरव्यं वा यस्य, नञ् बहुव्री॰। १ व्याजशून्य, कपटसे रहित। २ उद्देश्यशून्य। ३ शरव्यशून्य, जो सिकार न हो। ४ प्रतिकारशून्य, जिसका प्रतिकार हो न सके। (अव्य) ५ लक्ष्य न करके, निशाना न बैठाकर।

अविलम्बित (सं॰ त्रि॰) वि-लवि-क्त, नञ्-तत्। विलम्बशून्य, त्वरया युक्त। (अव्य॰) शीघ्र, सत्वर, चपल, जल्द।

अविला (सं॰ स्त्री॰) अविं मेषं लाति पतित्वेन गृह्लाति अवि-ला-क-स्त्रीत्वात् टाप्। १ मेषी, भेड़ी। (त्रि॰) नास्ति विलं यत्र नञ्-बहुव्री॰। २ गर्तशून्य, जहा गड्ढा न हो।

अविलास (सं॰ पु॰) न विलासः, नञ्-तत्। १ विलासका अभाव। २ अप्रकाश हावभाव आदि कलाका अभाव। ३ लीलाका अभाव। (त्रि॰) ४ हावभावादि रहित।

अविलोकन, अवलोकन देखो।

अविवक्षित (सं॰ त्रि॰) नञ्-तत्। बोलनेमें अनीप्सित, जो तात्पर्यके विषयीभूत न हो।

अविवर (सं॰ क्ली॰) न विवरम्, नञ्-तत्। १ विवर न होनेवाला, जो छिद्र न हो। (त्रि॰) नास्ति विवरं यत्र, नञ्-बहुव्री॰। २ नीरन्ध्र। ३ घन। ४ गर्तशून्य।

अविवाच्य (सं॰ क्ली॰) नास्ति विशेषेण वाच्यो मन्त्रादिर्यत्र, नञ्-बहुव्री॰। अग्निष्टोम यज्ञका शेष दशम दिन, इस दिन यज्ञ करनेवाला कोई समन्त्र कर्मादि न करे, ऐसा श्रुति स्मृतिमें निषेध है।

अविवाद (सं॰ पु॰) विरुद्धो वादः वाक्यं व्यवहारविशेषश्च विवादः, अभावे नञ्-तत्। १ विरुद्ध वाक्यका अभाव, एक वाक्य। २ व्यवहार विशेषका अभाव। ३ विरोधका अभाव। (त्रि॰) नञ्-बहुव्री॰। ४ विरुद्ध वादादि शून्य, विवादरहित, निर्विवाद।

अविवाहित (सं॰ त्रि॰) विवाहसम्पन्नातोऽस्य विवाहितम्, नञ्-तत्। अनूढ़, क्वारा, जो व्याहा न हो। विवाहित पुरुष यदि किसीसे प्रसक्त हो, तो उस स्त्रीको भी अविवाहित कहा जायेगा।

अविवाहिन् (सं॰ त्रि॰) १ विवाह न करनेवाला, जो शादी न करता हो। २ विवाह सम्बन्धीय, शादीसे ताल्लुक रखनेवाला। ३ विवाहार्थ निषिद्ध, जो शादीके लिये मना हो।

अविविक्त (सं॰ त्रि॰) न विवक्तम्, नञ्-तत्। १ असम्पृक्त न होनेवाला, जो अलग न हो। २ एकीभूत, गंठा हुआ। ३ अपवित्र, नापाक। ४ जनाकुल, आबाद, जो उजाड़ न हो। ५ अविवेकी, जो परहेज़गार न हो।

अविविक्तदृश् (सं॰ त्रि॰) असम्पृक्त दृष्टिसे न देखनेवाला, जो सबको बराबर देखता हो। जो पुरुष इस संसारमें सम्पूर्ण पदार्थको ईश्वरका रूप समझ भेदभावसे नहीं देखता, वही अविविक्तदृश् कहाता है।

अविदुग्ध (सं॰ पु॰) मेषशृङ्गी, मेढ़ासींगी।

अविवेक (सं॰ पु॰) विवेकः विशेषेण ज्ञानम्, अभावे नञ्-तत्। विशेष ज्ञानका अभाव, अविवेचना, अविमृश्यकारिता, बेवफ़ूफ़ी, नादानी। अविवेक ही विषम आपदका स्थान है अर्थात् अविवेचनासे ही अतिशय आपद् आती है। नैयायिकोंका मत है— अन्योन्य तादात्म्य आरोपके हेतु विशेष ज्ञानका अभाव अविवेक कहाता, जैसे शुक्तिमें रजतका ज्ञान है। वास्तविक शुक्ति रजत नहीं होती। ऐसे स्थान पर अतादात्म्यमें तादात्म्यज्ञान गंठता है। इसी हेतु विशेष ज्ञानका अभाव मिथ्याज्ञान होनेसे अविवेक

कहाता है। आत्मवादी समझाता, अयोग्य तादात्म्य आत्मरूप मिथ्याज्ञान ही अविवेक है। (त्रि०) २ विवेकशून्य, बेवकूफ, गंवार।

अविवेककृत (सं० त्रि०) अविवेकसे किया हुआ, जो बे सोचे समझे हो।

अविवेकता (सं० स्त्री०) अविवेचना, बेवकूफी, नादानी।

अविवेकत्व (सं० क्लो०) अविवेकता देखो।

अविवेकिन् (सं० त्रि०) अविवेचक देखो।

अविवेकी, अविवेचक देखो।

अविवेचक (सं० त्रि०) नञ्‑तत्। कर्तव्याकर्तव्य विवेचनारहित, जिसे भला बुरा समझ न पड़े।

अविवेचना (सं० स्त्री०) अविवेकता बेवकूफी नादानी, भला बुरा समझ न पड़नेकी हालत।

अविवेन (वै० त्रि०) वि‑वेन मुक्ति संज्ञायां च नञ्‑तत्। १ इच्छाहीन, अविगतकाम यथाकाम प्राप्तिसम्पन्न, चाह रखनेवाला। "विवेनि ममवर्दिन्वम।" ऋक् ९।२१।१। २ मिथ्यावादी न होनेवाला, जो पक्ष‑मन्द न हो। (अव्य०) ३ इच्छाहीन होकर, खुशी खुशी।

अविशङ्क (सं० त्रि०) निर्भय बेखौफ निडर, जिसे शङ्का न रहे।

अविशङ्का (सं० स्त्री०) न विशेषेण शङ्का अभावे नञ्‑तत्। विशेष शङ्काका अभाव, एतबार, भरोसा।

अविशङ्कित (सं० त्रि०) वि‑शकि कर्तरि क्त विशेषेण शङ्का सञ्जाताऽस्येति तारकादित्वादितच् वा ततो नञ्‑तत्। विशेषरूप शङ्कारहित, जिसे खौफ न लगी।

अविशस्त (वै० त्रि०) नञ्‑तत्। असमित, जिस तनमें अङ्गुलभ जो यज्ञमें भली भांति अलग कर न सकता हो।

अविशिर (सं० स्त्री०) सूर्यावर्तका पत्र, मटकौरैका शोभ।

अविशुद्ध (सं० त्रि०) विशुद्धे नञ्‑तत्। १ विशुद्ध न होनेवाला, जो खालिस न हो। २ अपवित्र, नापाक।

अविशुद्धि (सं० स्त्री०) विशोध नञ्‑तत्। अशुद्धि विपरीत, दोष नापाकी छुआछूत। अग्निमाचार्यका मत है, कि सोमादि यज्ञमें पशु एवं यवमुद्गादि बीजक नाशका कारण होनेसे अविशुद्धि हिंसादोषको शान्तिका हो बड़ी जायेगी। ज्योतिष्टोमादिमें यज्ञके लिये होमा प्रधान अपूर्व एवं पश्वादि हिंसाजनित दुरदृष्ट निकलता है। किन्तु अल्प प्रायश्चित्तसे ही वह दुरदृष्ट मिट जाता है।

अविशेष (सं० पु०) न विशेषः, अभावे नञ्‑तत्। १ भेदक धर्मका अभाव, अभेद। २ ऐक्य, एका। (त्रि०) नास्ति विशेषो यत्र यस्य वा। ३ विशेष शून्य तुल्य बराबर।

अविशेषज्ञ (सं० त्रि०) विशेषं न जानन्ति, विशेष ज्ञा‑क। विशेषानभिज्ञ भेदक‑धर्मानभिज्ञ, जो ज्यादा जानता न हो।

अविशेषित (सं० त्रि०) न विशेषितम्, नञ्‑तत्। जिसमें अन्य वस्तुसे विशेषरूप भेद न डाले जो दूसरी चीजसे ज्यादातर अलग की न गयी हो।

अविश्रान्त (सं० त्रि०) वि‑श्रम क्त दीर्घत्वं अस्य नत्वञ्च ततो नञ्‑तत्। विरामरहित, अनन्त, जो थकता या रुकता न हो।

अविश्लिष्ट (सं० त्रि०) विश्लेषे नञ्‑तत्। विश्लिष्ट न होनेवाला, जो मिला न हो।

अविश्वमिन्व (वै० त्रि०) सब वस्तुमें व्याप्त न होनेवाला, जो सब चीजमें भरा न हो।

अविश्वविद (वै० त्रि०) प्रत्येक ज्ञानमें अज्ञात, जो हरेक बात मालूम न पड़ता हो।

अविश्वसनीय (सं० त्रि०) वि‑श्वस् अनीयर्, नञ्‑तत्। विश्वास करनेके अयोग्य जो एतबार करने लायक न हो।

अविश्वस्त (सं० त्रि०) नञ्‑तत्। विश्वासका योग्यतासे हीन, सन्दिग्ध एतबारको लियाकतसे खाली, जो एतबारी न हो।

अविश्वास (सं० पु०) न विश्वासः, अभावे नञ्‑तत्। १ विश्वासका अभाव, सन्देह, एतबारकी अदम मौजूदगी। (त्रि०) २ विश्वासशून्य, बेएतबार, जिसे कोयी एतबारी न समझे।

अविश्वासा (सं० स्त्री०) चिरप्रसूत गौ, जो गाय बहुत दिनकी व्यायी हो।

अविश्वासिन् (सं० त्रि०) न विश्वसिति, वि श्वस्-णिनि। विश्वास न करनेवाला, जिसे एतबार न आये।

अविश्वासी, अविश्वासिन् देखो।

अविष (सं० पु०) अवति रत्नादीन् नगान् वा, अव रक्षणे कर्तरि टिषच्। १ समुद्र। २ राजा। ३ आकाश। (त्रि०) ४ रक्षक, रखवाला। ५ विषशून्य, जहरसे खाली।

अविषक्त (सं० त्रि०) न विषक्तं विश्लिष्टम्, नञ्-तत्। असंलग्न, असंयुक्त, जो लगा या मिला न हो।

अविषम (सं० त्रि०) न विषमम्, विरोधे नञ्-तत्। १ विषम न होनेवाला, सम, हमवार, जो नाहमवार न हो। २ संयुक्त, मिला हुआ। ३ सुगम, सीधा, जिससे आने-जानेमें कोई खटका न रहे।

अविषय (सं० पु०) न विषयः, नञ्-तत्। १ अगोचर, गुम हो जानेकी हालत। २ अप्रतिपाद्य माया, दुनियाकी झूठी चीज़। ३ अनुपस्थिति, ग़ैर हाज़िरी। (त्रि०) ४ अदृश्य, गुम। ५ इन्द्रियातीत, मालूम न होनेवाला।

अविषयीकरण (सं० क्ली०) वृथा चेष्टा, बेकामका काम।

अविषह्य (सं० त्रि०) न विशेषेण सह्यम्, नञ्-तत्। १ सह्य करनेको अशक्य, जो सहा न जाता हो। (अव्य०) २ सह्य न करके, बे बरदाश्त किये।

अविषा (सं० स्त्री०) १ अतिविषा। २ निर्विषचण, जद्दार। यह घास हिमालयपर उत्पन्न होती है। इसमें सफेद कन्द निकलता है। कन्दको क्षतपर घिसकर लगा देनेसे सांप-बिच्छूका जहर उतर जाता है। अविषा मुस्तक जैसा आकार रखती है।

अविषाद (सं० पु०) १ प्रसन्नता, आनन्द-मङ्गल, खुशी, चैन-चान। (त्रि०) २ प्रसन्न, खुश।

अविष्टम्भ (सं० पु०) अभावे नञ्-तत्। १ आलम्बाभाव, आश्रयका अभाव, पनाहकी अदममौजूदगी। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ आलम्बनशून्य, बेसहारा।

अविष्ठ (वै० त्रि०) अतिशयेन अविता रक्षिता, अवित्-इष्ठन् तृणोर्लोपः। १ अतिशय रक्षक, बड़ा मुहाफ़िज़। २ अतिशय प्रसन्न, निहायत राज़ी। ३ अतिशय ध्यान देनेवाला, जो बहुत गौर करता हो।

"यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठ।" ऋक्। ७।२८।५।

अविष्या (वै० स्त्री०) अव-गतौ इसुन्, अविगतिमिच्छति क्यच् भावे अ स्त्रीत्वात् टाप्। १ अभिलाष, ख्वाहिश। २ गमनेच्छा, जानेकी तबीयत। "अविष्यामनु व्रत।" ऋक् २।३८।३।

अविष्यु (सं० त्रि०) अविष-क्यष्-उ। रक्षा करनेकी इच्छा रखनेवाला, पालनकाम। "माता मूरा अविष्यव।" ऋक ८।४५।२३।

अविस् (सं० क्ली०) अव-भावे-इसुन्। १ रक्षण, हिफ़ाज़त। २ गति, चाल।

अविसंवाद (सं० पु०) न विशेषेण संवादः अभावे नञ्-तत्। १ प्रमाणके अनुसरणका अभाव, सुबूतके मुवाफ़िक न चलना। न विसंवादः विरोधे नञ्-तत्। २ प्रमाणका अनुसरण, सुबूतकी हमराही। ३ यथार्थ विषयार्थक, वाजिब बातका मानना।

अविसंवादिन् (सं० त्रि०) न विसंवदति णिनि विरोधे नञ्-तत्। १ प्रमाणानुयायी, सुबूतपर चलनेवाला। २ यथार्थवादी, वाजिब बोलनेवाला। ३ सफल पदार्थ, पता पाये हुआ।

अविसर्गिन् (सं० त्रि०) संलग्न, लगा हुआ, जो छोड़ता न हो।

अविसोढ (सं० क्ली०) अवेर्दुग्धम् अवि-सोढच् न पत्वम्। मेषी दुग्ध, भेड़का दूध।

अविस्तर (सं० त्रि०) विस्तारशून्य, छोटे मिक्दार या दायरेवाला, जो फैला न हो।

अविस्तार (सं० पु०) विस्तारका अभाव, इस्तैमालकी अदममौजूदगी।

अविस्तीर्ण (सं० त्रि०) सङ्कुचित, अनियुक्त, विस्ताररहित, छोटा, फैला न हुआ, सिकुड़ा हुआ, जो काममें न लगा हो।

अविस्तृत (सं० त्रि०) क्षुद्र, संलग्न, मिला हुआ, जो सटा हो।

निर्मूल, बेजड। (पुं०) ८ योगशास्त्रोक्त निर्बीज चित्त वृत्तिका परिणाम निरोध, योग भिन्न अन्यत्र चित्त वृत्ति निवारण।

अवीजक (सं० वि०) १ बीजशून्य, तुख्मसे खाली। २ वपनरहित, जो बोया न गया हो।

अवीजधर्मी (सं० वि०) बीजका धर्म न रखने-वाला, जो तुख्मकी खसलतसे खाली हो।

अवीजा (सं० स्त्री०) गोस्तनीसदृशगुण द्राक्षा, किशमिश।

अवीत (सं० क्लो०) न वीतं वित्तादवगतम्, नञ्-तत्। अनुमान, फ़र्ज़, अन्दाज़।

अवीदुग्ध (सं० क्लो०) मेषीदुग्ध, भेडका दूध।

अवीमूत्र (सं० क्लो०) मेषीमूत्र, भेडका मूत।

अवीर (सं० वि०) न वीरम्। १ जो वीर न हो। २ जो बलवान् न हो। वीरः पुत्रादि स नास्ति यस्य नञ्-बहुव्री०। ३ पुत्रादिशून्य, जिसके लडका वग़ैरह न रहे।

अवीरघ्नी (वै० स्त्री०) अवीरहन् देखो।

अवीरता (वै० स्त्री०) पुत्रका अभाव, पिसरकी अदममौजूदगी, बालबच्चेका न होना।

अवीरहन् (वै० वि०) मनुष्यवध न करनेवाला, जो आदमियोंको मारता न हो।

अवीरा (सं० स्त्री०) १ पुत्र और पतिसे रहित स्त्री, जिस औरतके लडका और खाविन्द न रहे। २ स्वतन्त्र स्त्री, आज़ाद औरत।

अवीर्य (वै० वि०) निर्बल, प्रभावरहित, कमजोर, बेअसर।

अवीह (हिं० वि०) अभय, निडर, जो डरता न हो।

अवु (सं० वि०) अव-उ। जो हविर्द्वारा तर्पण करता हो। "अवोभाभिहितानुष्यवः प्रियामुयक्षिया अर्था।" ऋक् १०।१३२।५। 'अवोर्हविर्भि स्तर्पयितु। अवतेरौणादिक उप्रत्यय।' (सायण)

अवुक (सं० पु०) छाग, बकरा।

अवृक (वै० वि०) वृणोति समन्तादृयाप्नोति, वृ-कक् ततो नञ्-तत्। १ मृगभिन्न, जो हिरण न हो। नास्ति वृकः आवरकः मृगो वा यस्य यत्र वा, नञ्-बहुव्री०। २ मृगशून्य, हिरणसे खाली। ३ हिंसक रहित, जहां खूंख़ार जानवर न रहे। ४ सच्चा, रास्त। ५ रक्षित, महफ़ूज़। (क्लो०) ६ रक्षा, शान्ति, हिफ़ाज़त, मेल। 'पर्णो यम्ध्नतादहक'।' ऋक् १।१८८।१५।

अवृच (सं० वि०) वृचशून्य, दरख़्तसे खाली।

अवृचक, अवृच देखो।

अवृजिन (वै० वि०) छल न करनेवाला, सच्चा, जो अपने दोस्तको वक्त पर छोडता न हो। यह शब्द आदित्यका विशेषण है।

अवृत (वै० वि०) १ अप्रतिहत, जो रोका न गया हो। २ अधीन न बना हुआ, जो दबाया न गया हो। ३ अनिर्वाचित, जो चुना न गया हो। ४ अर-क्षित, जो बचाया न गया हो।

अवृत्ति (सं० स्त्री०) वृत्तिर्वर्तनादिः, नञ्-तत्। १ स्थितिका अभाव, न ठहरनेकी हालत। २ जीवि-काका अभाव, रोज़ीकी अदममौजूदगी। ३ विवरण-का अभाव, तफ़सीलकी अदममौजूदगी। (वि०) नास्ति वृत्तिः स्थित्यादिर्यस्य। ४ स्थितिहीन, बेठि-काना। ५ जीविकाशून्य, बेरोज़गार। ६ विवरण-रहित, बेतफ़सील।

अवृत्तित्व (सं० क्लो०) अनस्थित्व, अदम-मौजूदगी।

अवृथा (सं० अव्य०) कृतकार्य होकर, सफलतासे, कामयाबीके साथ।

अवृथार्थ (सं० वि०) कृतकार्य, सफलमनोरथ, कामयाब।

अवृन्द (सं० पु०) पुष्पवृक्षभेद, किसी क़िस्मका फूलदार पेड।

अवृद्धिक (सं० क्लो०) नास्ति वृद्धिः लाभरूपः यस्मिन्, नञ्-बहुव्री०; शेषाद्विभाषेति वा कप्। वृद्धिहीन मूलधन, सूदसे खाली जमा। (वि०) २ वृद्धिरहित, न बढनेवाला। ३ ब्याज न रखनेवाला, जिसपे सूद न लगे।

अवृध (वै० वि०) न वर्धते, वृध-कर्तरि-क। वृद्धि-शून्य, बेबाढ। "पर्णोग्रदा अवृधा अवरम्।" ऋक् ७।६।३।

अवृष्टि (सं० स्त्री०) अभावे नञ्-तत्। १ वृष्टिका अभाव, बारिशकी अदममौजूदगी। २ दुर्भिक्ष, क़हत। (पु०) नास्ति वृष्टिर्वर्षणं यस्मात्, नञ्-५-बहुव्री०। ३ वृष्टिशून्य मेघ, जो बादल बरसता न हो।

अवेष्टि (वै० स्त्री०) यज्ञ द्वारा प्रायश्चित्त, जो शान्ति यज्ञसे हो।

अवैतनिक (सं० त्रि०) वेतनशून्य, वेतनखाह, अनरेरी, जो वगैर उजरत काम करता हो।

अवैदिक (सं० त्रि०) वेदसे सम्बन्ध न रखनेवाला, जो वेदमें न हो।

अवैद्य (सं० त्रि०) वैद्य न होनेवाला, जो तवीब न हो।

अवैध (सं० त्रि०) विधेरागतं तत आगतमिति अण्, ततो नञ्-तत्। विधिमें न होनेवाला, निषिद्ध, वेक़ायदा।

अवैधव्य (सं० क्ली०) विधवाया: विगतभर्त्रा: भव:, भवार्थे ष्यञ् अभावे नञ्-तत्। पतिराहित्याभाव, सधवावस्था, सोहाग, अहवात।

अवैमत्य (सं० क्ली०) वैमत्यं अनेकमत्यम्, अभावे नञ्-तत्। १ मतभेदाभाव, ऐकमत्य, रायमें फ़र्क़ का न पडना। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ ऐकमत्ययुक्त, हमराय।

अवैयात्य (सं० क्ली०) वियातो धृष्ट: भावार्थे ष्यञ् आद्यचो वृद्धि: ततो नञ्-तत्। १ धार्ष्ट्याभाव, ढिठाईका न होना। २ सलज्जत्व, शरमिन्दगी। (त्रि०) नास्ति वैयातं यस्य, नञ्-बहुव्री०। ३ सलज्जत्व युक्त, लज्जा-विशिष्ट, शरमीला, जो ढीठ न हो।

अवैर (सं० क्ली०) वैरं विरोध:, नञ्-तत्। १ विरोध का अभाव, दुश्मनोकी अदममौजूदगी। (त्रि०) नास्ति वैरं यस्य, नञ्-बहुव्री०। २ विरोधशून्य, दुश्मनी न रखनेवाला। (पु०) ३ युधिष्ठिर।

अवैरहत्य (वै० क्ली०) मनुष्योंकी अहिंसा, वधसे रक्षा, आदमियोंका मारा न जाना, क़त्लसे हिफ़ाज़त।

अवैराग्य (सं० क्ली०) वैराग्यं विषयवैमुख्यं तेन नञ्-तत्। विषयाभिलाष, दुनियावी चीज़की खाहिश। सांख्योक्त धर्माधर्म ज्ञानाज्ञान वैराग्यावैराग्य ऐश्वर्या-नैश्वर्य इस आठ प्रकार प्रकृति धर्मके अन्तर्गत यह भी एक धर्मविशेष है।

अवैलक्षण्य (सं० क्ली०) वैलक्षण्यं भेदकधर्म: वैयात्य-वत् भावार्थे ष्यञ् सिद्धम्; अभावे नञ्-तत्। १ भेदक-धर्मका अभाव, अभेद, फ़र्क़ का न पडना। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ भेदक धर्माभावविशिष्ट, अभिन्न, वेफ़र्क़, एक-जैसा।

अवोक्षण (वै० क्ली०) अव-उक्ष भावे-ल्युट्। तिरछे हाथसे जलसेकरूप दैवकार्य। अभ्युक्षण देखो।

अवोद (सं० पु०) अव-उन्द भावे-घञ् निपा० न लोप:। १ अवक्लेदन, छिडकाव। 'अवोदोऽवक्लेदनम्।' (सिद्धान्तकौमुदी) २ आर्द्रक, अदरक। (त्रि०) तत: अस्त्यर्थे अर्श आदि अच्। ३ क्लिन्न, क्लेदयुक्त, तर, भीगा, छिडका हुआ।

अवोदेव (वै० अव्य०) देवानामवस्तात् पश्चादर्थे अव्ययी०। देवतादिके पश्चात् देशादिमें।

अवोप (सं० पु०) अव-उप कर्मणि-घञ्। १ उष्णान्न, गर्म दाल भात या पूरी-तरकारी।

अवोपीय (सं० त्रि०) उष्णान्नको हितकर, गर्म खानेमें डालने या मिलाने काबिल।

अवोप्य, अवोपीय देखो।

अब्द (सं० पु०) अवतीत्यब्द:; अव-रक्षणे-कर्तरि-द पृषो० दृढभाव:। १ वत्सर, साल। २ मेघ, बादल। ३ पर्वतविशेष, कोई पहाड। ४ पुस्तक, किताब। ५ मुस्तक, मोथा। अब्द देखो।

"अमकादो भविद्वेको इन्द्रीवर्वोलरीमया।" (साहित्यदर्पण)
'अब्दस्तु वत्सरे मेघे गिरिभेदे च पुस्तके।' (विश्व)

अब्दप (सं० त्रि०) अब्दं वत्सरं पाति, अब्द-पा-क: ज्योतिषोक्त वत्सराधिप, वर्षका राजा।

अब्य (वै० त्रि०) अवौ भवं अवि दिगादि० यत्। मेषशरीरजात, भेड़के जिस्मसे पैदा। 'अब्यो वारे. परि-पूरित।" ऋक् ९।१।१।

अव्यक्त (सं० पु०) वि-अञ्ज-क्त, नञ्-तत्। १ विष्णु। 'विष्णावव्यक्तिनात्यक्तौ।' (अमर) २ कन्दर्प। ३ शिव। ४ सांख्यमतसे—सर्वकारण-प्रधान। ५ वेदान्तमें—अज्ञान। ६ सूक्ष्मशरीर। (क्ली०) ७ निराकार परमेश्वर। ८ प्रकृति। ९ आत्मा। (त्रि०) १० अस्पष्ट, छिपा हुआ। ११ मूर्ख, बेवकूफ़।

'अव्यक्त प्रकृतावात्मन्यस्पष्टेऽस्फुटमूर्खयो:।' (हेम)

अव्यक्तक्रिया (सं० स्त्री०) बीजगणितकी क्रिया जिस तरीकेसे जब्रोमुक़ाबला लगे।

तथा किस परिमाणका होता और अव्यङ्ग क्यों कहाता है? साम्बके इस प्रश्नको सुनकर महर्षि भगवान् व्यासने उत्तर दिया,—मैं अव्यङ्गका सविस्तर लक्षण कहता हूं, सुनो। देवता, ऋषि, नाग, गन्धर्व, अप्सरस्, यक्ष, राक्षस प्रभृति यह सबही देवता ऋतुक्रमसे भगवान् सूर्यके शरीरमें वास करते हैं। इनमें वासुकिने जहां वर्षमें एकवार सूर्योदय होता है, ऐसे अपने स्थानपर आ शीघ्र दिवाकरको नमस्कार करके गांगेयसे भूषित दुग्धतुल्यद्युत शुभ्र 'अव्यङ्ग' सूर्यके प्रीत्यर्थ समर्पण किया। भगवान् प्रभाकरने भी उनकी प्रसन्नताके लिये उक्त अव्यङ्गको अपने मध्य भागमें बांध लिया। यह नागराजके अङ्गसे उत्पन्न और भानु द्वारा धारण किया गया, अतएव सूर्यकी भक्ति रखनेवाले पुरुष सूर्यकी प्रसन्नताके लिये इसको धारण करते हैं। तत्त्वविधानसे भोजक शुचि होता है। इसके नित्य धारण करनेसे, सूर्य प्रसन्न होते हैं। सूर्योपासक जो भोजक इसे धारण नहीं करते, वे सौरहीन पूजाके अयोग्य एवं उच्छिष्ट समझे जाते और सूर्यको पूज नहीं सकते हैं। यदि हठात् वे सूर्य भगवान्को पूजते, तो रौरव नरकमें पड़ते हैं। यह जानकर अव्यङ्गके विना सूर्योपासक व्यक्ति न हसे, न खड़ा हो, और न पूजा करे अर्थात् क्षणमात्रभी उसको अव्यङ्गहीन नहीं रहना चाहिये। यह एक वर्णका बनाया जाता है। २०० अङ्गुलका उत्तम, १२० अङ्गुलका मध्यम और १०८का ह्रस्व होता है, इससे अधिक ह्रस्व न रहना चाहिये। इसी आकृतिका 'अव्यङ्ग' विश्वकर्माने बनाया था। मध्यमावस्थामें भोजकोंके १०० अङ्गुलका भी हो सकता है। संस्कृत अर्थात् स्नान-संध्यादि शौचयुक्त भी इसके विना पवित्र नहीं होता, फिर इसके धारणसे उसी समय पवित्र हो जाता है। एवं हविर्होमादि उसकी सब क्रियायें शुभ हो जाती हैं। हे राजन् अव्यङ्ग, पतिताङ्ग, ख्सार, इन नामोंसे पहचाने जाते हैं।

जन्द अवस्तामें अवग्रहको 'ऐवाङ्गहनेम्' और पारसीमें 'कुश्ती' कहते हैं। यह एक प्रकारका सूत होता, जिससे पारसियोंके 'इजश्न' नामक पूजनमें 'वारसम' या समिधा बांधना पड़ती है। इसे खजूरकी पत्तासे तैयार करते हैं। काटनेसे पहले पुजारी खजूरकी पत्ती, पेड और अपनी छुरीपर सङ्कल्पका जल छिड़क देता है। 'अरवासगाह' या यज्ञस्थलपर जलकुम्भमें डालकर लानेसे पत्ती लम्बी-लम्बी चीर कर धागे-जैसी धज्जी बनायी जाती है। फिर छः धज्जीको एक साथ तीन इस ओर और तीन उस ओर रख किसी सिरे पर गांठ लगा देते हैं। उसके बाद दाहनी ओरकी लच्छीसे एक त्रिपद और बायीं ओरकी लच्छीसे दूसरा त्रिपद जोरसे मरोड़ा जाता, जिसमें मिलाकर रखनेपर दोनों त्रिपद मुड़कर एक सूत्रक बनता और फिर दूसरे सिरेपर गांठ लगानेसे दृढ़ हो जाता है। इस तरह तैयार होनेपर ऐव्यङ्गहनम्को कर्मकाण्डके लिये 'वरसमदान' पर रखते हैं।

भारतीय आर्य ब्राह्मण जिस प्रकार यज्ञोपवीत पहनते और विना उसके किसी कर्मकाण्डके अधिकारी नहीं होते, उसी प्रकार सौर ब्राह्मण सूर्यपूजा और पारसी भी अव्यङ्गके विना अग्निपूजा नहीं कर सकते।

अवग्रङ्गाङ्ग (सं० त्रि०) सुचारुरूपनिर्मित, पूर्ण, सुडौल, समूचा, जिसके अङ्ग पूरा रहे।

अव्यङ्गाङ्गी (सं० स्त्री०) अव्यङ्गं सौष्ठवमङ्गं यस्याः, बहुव्री० अङ्गात् ङीप्। सर्वाङ्गसम्पन्न स्त्री, जिस स्त्रीके किसी अङ्गमें विकार न हो।

अवग्रचस् (वै० त्रि०) अप्रशस्त, तङ्ग, जो लम्बा-चौड़ा न हो।

अव्यञ्जन (सं० क्ली०) नास्ति व्यञ्जनं शुभाशुभचिह्नं शृङ्गे यस्य नञ्-बहुव्री०। १ शृङ्गहीन पशु, सिंह व्याघ्रादि। (त्रि०) २ सुलक्षणशून्य, जिसके कोई शुभलक्षण न रहे। ३ चिह्नशून्य। ४ उपकरण शून्य।

अव्यण्डा (सं० स्त्री०) न विगतमण्डं वीजं यस्याः। १ शूकशिम्बि, केवाच। २ भूम्यामलकी, भुयिं आंवला।

अवग्रति (वै० स्त्री०) १ सन्तोष, आसूदगी, छकाछकी। २ अभिलाष, खाहिश।

अव्यतिकर (सं० पु०) नञ्-तत्। १ संसर्गाभाव, संगतिका न रहना। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ संसर्गशून्य, वेमेल।

अनधिकरण जल ह्रदादि उसमें नहीं होता। इसीसे पर्वतमें अग्नि अनुमानके लिये धूमको अव्यभिचरित हेतु कहते हैं। प्राचीन नैयायिक इसीको व्यभिचरित हेतु बताते हैं। 'धूमवान् वह्नि' वह्नि हेतु धूम विशिष्ट, अर्थात् यह नहीं, जहां वह्नि वहीं धूम भी रहता है। क्योंकि अग्निदग्ध लौहपिण्डमें अग्नि तो होता, किन्तु धूम देख नहीं पड़ता। इसीसे उसे व्यभिचरित हेतु कहते हैं। शृङ्खलखण्डीय पदार्थवित् पण्डितोंका मत है,—जहां अग्नि हो, वहां अल्प वा अधिक और सहज दृश्य वा अदृश्य धूम अवश्य ही रहेगा। धूमसे व्यतिरेक अग्नि ठहर नहीं सकता।

अव्यभिचार (सं० पु०) न व्यभिचारः, अभावे नञ्-तत्। व्यभिचारका अभाव, अन्यथाका अभाव, नैयत्य-रूप, पायदारी, हमेशगी।

अव्यभिचारिन् (सं० त्रि०) न व्यभिचरति; वि-अभि-चर-णिनि, नञ्-तत्। १ किसी भी प्रतिकूल हेतु द्वारा रोका न जा सकनेवाला, जो भूलता-भटकता न हो। २ किसी प्रकार असत् पथको अव-लम्बन न करनेवाला, जो किसी तरह बुरी राह जाता न हो। ३ न्यायमतसे—साध्य साधक व्याप्तिविशिष्ट हेतु। ४ किसी प्रकार बाधा न उठानेवाला, जो किसी तरह बिगड़ता न हो। ५ पुख्ता, नेक, परहेजगार, भला।

अव्यभिचारी, अव्यभिचारिन् देखो।

अव्यय (सं० क्ली०) वि-इण् एरजित्यच् व्ययन्ततो नञ्-तत्। स्वरादि-निपातमव्ययम्। पा १।१।३७। सकल विभक्ति और सकल वचनमें एकरूप शब्दवृत्ति धर्म, जो शब्द सब विभक्ति, वचन और लिङ्गमें एक ही तरह लगता हो। जैसे स्वर प्रातर इत्यादि।

"सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥" (आथर्वण श्रुति)

(पु०) २ शिव। ३ विष्णु। ४ आद्यन्तरहित, परब्रह्म। (त्रि०) ५ विकारशून्य, जिसमें कोई फ़र्क़ न पड़े। ६ प्रवाहरूप सर्वत्र स्थित, सब जगह भरा रहनेवाला। ७ अव्ययफलदाता, मुराद पूरी करने-वाला। नञ्-बहुव्री०। ८ व्ययहीन, बेख़र्च। ९ अवि-नश्वर, लाज़वाल। (सं०) १० अविमय, भेड़से निकलने-वाला, जो भेड़के चमड़ेसे बना हो।

अव्ययत्व (सं० क्ली०) अनश्वरत्व, बरबाद न होनेकी हालत।

अव्ययवर्ग (सं० पु०) अव्ययका समूह, हमेशा एक जैसे रहनेवाले लफ़्ज़ोंका ज़ख़ीरा।

अव्यया (सं० स्त्री०) गोरक्षमुण्डी, गोरखमुंडी।

अव्ययात्मन् (सं० त्रि०) अव्यय आत्मा स्वभावो यस्य, बहुव्री०। अविनश्वर, लाज़वाल, जो बिगड़ता न हो।

अव्ययीभाव (सं० पु०) अनव्ययमव्ययं भवति भू कर्तरि घः तस्मिन् परे अव्यय-च्वि। व्याकरणसिद्ध समास विशेष। लिङ्ग विभक्ति प्रभृतिके अर्थमें अव्यय पदके समर्थके (आकाङ्क्षित पदके) सहित समास होता है, उसे ही अव्ययीभाव समास कहते हैं।

अव्ययीभावः। पा २।१।५। अधिहरागामम्। (सिद्धान्त कौ०) अव्यय-मित्यादि। पा २।१।६। विभक्ति, समीप, वृद्धि, अर्थाभाव, अत्यय, असंप्रति, शब्दप्रादुर्भाव, पश्चात्, यथानुपूर्व, यौग-पद्य, सादृश्य, सम्पत्ति, साकल्य, अन्त, इन सब अर्थोंमें अव्ययीभाव समास होता है। ऊपर लिखे हुए अर्थोंके व्यतीत असादृश्यादि अर्थोंमें भी अव्ययीभाव समास आता है। यथा—अपदिशम् इत्यादि।

अव्ययीभावश्च। पा १।१।४१। अव्ययीभावान्वित पद भी अव्यय होता है। यथा,—'अधिहरि'। अव्ययीभावमें क्लीबलिङ्गके कार्य साधनके लिये क्लीबलिङ्ग भी लगता है। निद्रा सम्प्रति न युज्यते इति अतिनिद्रम्। नपुंसकलिङ्ग स्वीकार करनेसे ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य। पा १।२।४७। इस सूत्रद्वारा निद्राशब्दमें आकार ह्रस्व हुआ है। एवं 'दिशोर्मध्यमपदिशम्।' अयं नपुंसकं स्यात्। (सिद्धान्त कौ०) पा २।४।८४। क्लीबेऽव्ययन्त्वपदिशं दिशोर्मध्ये। (अमर) अकारान्त भिन्न अन्य अव्ययीभावकी परस्थित विभक्ति-का लुक् होता है। अव्ययादाप्सुपः। पा २।४।८२। अव्ययके परस्थित आप् एवं सुप्का लुक् होता है। यहां आप् लुक्का विधान अनर्थक है। 'आप् ग्रहणं व्यर्थमलिङ्गत्वात्।' (सिद्धान्तकौमुदी) नाव्ययीभावादतोऽमत्वपञ्चम्याः। पा २।४।८३। अकारान्त अव्ययीभावकी परस्थित पञ्चमी भिन्न

विभक्तिका लुक् नहीं होता। किन्तु उसके स्थानमें अम् आता है। यथा,—उपकृष्ण समीपम् उपकृष्णम्। यहां विभक्तिके स्थानमें अम् हो गया है। [illegible]। कृष्णके समीपसे चले गये हैं। यहां पञ्चमी विभक्तिका लुक एवं उसके स्थानमें अम् भी नहीं हुआ। पञ्चम्यन्त अकारान्त शब्दका ही रूप हुआ है। 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' पा २।४।८३। अकारान्त अव्ययीभावको परस्थित तृतीया एवं सप्तमीका बहुलभाव अर्थात् तृतीया और सप्तमीके स्थानमें अम् होता कभी तृतीयान्त अकारान्त शब्दका ही रूप धारण करता और कभी नित्य अम् आता है। यथा—अपदिशम् अपदिशेन। अपदिशं अपदिशे। '[illegible]।' (सिद्धान्तकौमुदी)

अव्ययित (सं० पु०) यमकानुप्रासभेद। इसमें यमकाक्षरोंके बीच दूसरा पद नहीं पड़ता।

अव्यर्थ (सं० पु०) नञ्-तत्। १ सफल सुफेद, जो बेफायदे न हो। २ सार्थक, कामकी, पुर असर।

अव्यलीक (सं० त्रि०) विरोधे नञ्-तत्। १ प्रिय प्यारा, खुशगवार। २ सत्य, रास्त, सच्चा।

अव्यवधान (सं० क्ली०) नञ्-तत्। १ व्यवधानका अभाव फर्कको अदमम़ौजूदगी। २ नैकट्य, कुर्ब, पड़ोस। (त्रि०) नास्ति व्यवधानं यस्य, नञ्-बहुव्री०। १ व्यवधानशून्य, आड़से खाली। ३ निकटस्थ, पासका।

अव्यवसाय (सं० पु०) निश्चय उद्यमश्च व्यवसायः। अभावे नञ्-तत्। १ निश्चयका अभाव, यकीनका न होना। २ उद्यमका अभाव, कारबारका न रहना। (त्रि०) नास्ति व्यवसायो यस्य। नञ्-बहुव्री०। १ निश्चयशून्य, उद्यम रहित, आलसी।

अव्यवसायिन् (सं० त्रि०) न व्यवस्यति वि-अव-सो णिनि एव कर्त्तरि सुप् च नञ्-तत्। १ उद्यमशून्य, निरुद्यमी। २ अनुद्यत, आलसी, पुरुषार्थहीन। ३ निश्चयशून्य।

अव्यवसायी, अव्यवसायिन् देखो।

अव्यवस्था (सं० स्त्री०) वि-अव-स्था भावे-अङ्-टाप्, ततो नञ्-तत्। १ शास्त्रोक्तविधि नियमका अभाव यह करना और यह न करना चाहिये ऐसे विचारका न होना। २ मानादि विरह व्यवस्था, अविधि। (त्रि०) नास्ति व्यवस्था यस्य, नञ्-बहुव्री०। १ मर्यादाशून्य, बेकायदा। ३ अविहित। ४ स्थिति-रहित, चञ्चल।

अव्यवस्थित (सं० त्रि०) नञ्-तत्। १ मानादि मर्यादारहित, बेमर्याद। २ अनियतरूप बैठिका लिया। ३ अस्थिर, चञ्चल।

अव्यवहार्य (सं० त्रि०) वि-अव-हृ-ण्यत्, नञ्-तत्। जो व्यवहारके योग्य न हो। ब्रह्महत्यादि महापातक द्वारा कोई मनुष्य पतित होनेसे जब तक प्रायश्चित्त नहीं करता, तबतक अव्यवहार्य रहता है। ऐसी अवस्थामें उसका याजन, उसके साथ वेदपाठ और भोजनादि करना न चाहिये। किन्तु उस पतित व्यक्तिके प्रायश्चित्त करनेपर सपिण्ड ज्ञातिवाले उसके साथ पवित्र जलाशयमें स्नान करके जलपूर्ण नवीन घट प्रक्षेप और कुटुम्बवाले उसे ग्रहण करेंगे। फिर उसका याजन, उसके साथ वेदपाठ और पहलेकी तरह भोजनादि सब लोग कर सकेंगे। कोई कभी उसकी निन्दा न करेंगे। परन्तु बिना प्रायश्चित्त किये उसके साथ व्यवहार करना उचित नहीं।

"प्रायश्चित्ते तु चरिते पूर्णकुम्भमपां नवम्।
तेनैव सार्द्धं प्रास्येयुः स्नात्वा पुण्ये जलाशये॥" मनु ११।१८७।
"एनस्विभिरनिर्णिक्तैर्नार्थं किञ्चित् सहाचरेत्।
कृतनिर्णेजनांश्चैव न जुगुप्सेत कर्हिचित्॥" मनु ११।१८९।

प्रायश्चित्तके बाद व्यवहारके विषयमें याज्ञवल्क्य संहितामें ऐसा प्रमाणवाक्य लिखा हुआ है —

"प्रायश्चित्तैरपैत्येनो यदज्ञानकृतं भवेत्।
कामतो व्यवहार्यस्तु वचनादिह जायते॥" याज्ञवल्क्य-संहिता ३।२२६।

मिताक्षरामें इस श्लोककी ऐसी व्याख्या की है—प्रायश्चित्त करनेसे अज्ञानकृत पाप दूर होता है, फिर ज्ञानकृत तथा कामकृत पापका उपयुक्त प्रायश्चित्त करनेसे दोषी मनुष्य इस संसारमें व्यवहारके योग्य हो जाता सही, परन्तु उसका पाप दूर नहीं होता। प्रायश्चित्तविधायक श्रुतिवचन द्वारा यही निश्चित हुआ है।

परन्तु शूलपाणिने 'कामतो व्यवहार्य्यस्तु' यहां 'व्यवहार्य्यस्तु'के पहले एक अकार प्रक्षेप कर 'अव्यवहार्य्य' पद ग्रहण किया है। इससे वे कहते हैं, कि प्रायश्चित्त करनेसे पाप चला जाता है, किन्तु अपराधी व्यक्ति समाजमें व्यवहारयोग्य नहीं होता। रघुनन्दन एवं भवदेवने भी शूलपाणिका ही मत ग्रहण किया है।

'कामतो व्यवहार्य्यस्तु'—वास्तवमें यहां अकार है कि नहीं, इसमें विषम सन्देह है। काशीके स्वर्गीय बालशास्त्री अद्वितीय पण्डित थे। उन जैसे धर्मशास्त्रप्रवीण व्यक्ति आजकल प्रायः देखनेमें नहीं आते। उनका कहना है, कि धर्मशास्त्र काव्य नहीं है। काव्यमें दो तीन प्रकारका अर्थ होनेसे कविकी गुणज्ञता प्रकट होती है। परन्तु धर्मशास्त्रमें दो अर्थ होनेसे महाविपद् है। अबतक किसी पुस्तकमें 'व्यवहार्य्यस्तु' के पूर्व लुप्त अकारका चिह्न नहीं देखा गया। अतएव 'अव्यवहार्य्यः' इस प्रकारका पद स्वीकार करना युक्तियुक्त नहीं है। इसके अतिरिक्त मनुसंहितामें महापातकादि जनित पतित व्यक्तिके प्रायश्चित्तके बाद व्यवहार्य्यके सम्बन्धमें जैसी व्यवस्था की गई है, उसके श्लोकोंको ठीक क्रमसे पढनेसे ऐसा निश्चित होता है,—किसी किसी पापमें प्रायश्चित्त करनेपर भी पतित व्यक्ति अव्यवहार्य्य होता है। इसीसे महात्मा बालशास्त्रीने ऐसी व्यवस्था दी थी, कि कोई ब्राह्मण ज्ञानकृत ब्रह्महत्या पापका अपराधी होनेसे (हमें स्मरण होता है, कि इन्दोर राज्यमें) वह प्रायश्चित्तके बाद समाजमें व्यवहार्य्य हो सकेगा। फलतः मिताक्षरा, मदनपारिजात, जिकन, नृसिंहप्रसाद, अपरार्क प्रभृति बहुमान्य प्राचीन मतानुसार महापातकादिके प्रायश्चित्तके बाद दोषी व्यक्ति समाजमें व्यवहार्य होता है। केवल जो मनुष्य बालक, स्त्री एवं शरणागतका प्राण नष्ट करता है, और उपकार करनेसे उपकारको नहीं मानता, वह प्रायश्चित करनेपर भी व्यवहार्य नहीं होता।

"बालघ्नांश्च कृतघ्नांश्च विशुद्धानपि धर्मतः।
शरणागतहन्तंश्च स्त्रीहन्तृंश्च न संवसेत्।" मनु ११।१८१।

हमने काशी, मिथिला, गवालियर, काश्मीर, महाराष्ट्र, तैलङ्ग प्रभृति नाना स्थानोंके प्रसिद्ध प्रसिद्ध पण्डितोंके साथ परामर्श किया था; उन लोगोंने भी कहीं 'कामतो व्यवहार्यस्तु' इत्यादि वचनमें लुप्त अकार नहीं देखा। जयपुराधिपतिके पुस्तकालयमें चार सौ वर्षका हाथका लिखा हुआ एक पुराना पुस्तक है। उसमें भी 'व्यवहार्यः' पद ही देखनेमें आया। कलकत्तेमें स्वर्गीय तारानाथ तर्कवाचस्पति महाशयने जो धर्मशास्त्रसंग्रह पुस्तक छपवाया था, श्रीयुक्त भवानीचरण-वन्द्योपाध्यायने जो धर्मशास्त्र प्रकाशित किया था एवं बम्बई नगरमें जो याज्ञवल्क्यसंहिता प्रकाशित हुई थी, उनमेंसे किसीमें भी 'अव्यवहार्यः' पद गृहीत नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त याज्ञवल्क्य संहिताकी चार पाच बहुमान्य टीकायें हैं। सभी टीकाकारोंने 'व्यवहार्य' पद ही रखकर व्याख्या की है। अतएव इस स्थलमें अकार प्रक्षेप करना कहांतक विवेचनासङ्गत है, सो नहीं कहा जाता।

इससे पहले मिशनरी लोगोंने यहांके कितने ही मनुष्योंको खृष्टान कर डाला था। हमारे देशमें ऐसी प्रथा प्रचलित है, यदि कोई हिन्दू एक बार यवन हो जाय, तो वह फिर समाजमें ग्रहण नहीं किया जाता। इसलिये विना समझे एकवार खृष्टानी धर्म अवलम्बन करनेसे फिर समाजमें नहीं आ सकते। इस अनिष्टकरी प्रथाको रहित करनेके लिये स्वर्गीय महात्मा राजा-राधाकान्त देव बहादुरने बङ्गदेशके समस्त पण्डितोंको इकट्ठा किया था। भाटपाडाके सिवा नवद्वीप प्रभृति सभी स्थानोंके उस समय प्रसिद्ध प्रसिद्ध पण्डित सभामें उपस्थित थे। बहुत कुछ विचार करनेके बाद उन लोगोंने यही स्थिर किया, कोई हिन्दू खृष्टानी धर्म अवलम्बन करनेके बाद अभच्यभच्चणादि दोषसे दूषित होनेपर यदि फिर अपने धर्ममें लौट जाना चाहे, तो चतुर्विंशति वार्षिकव्रतानुकल्प दानादिरूप प्रायश्चित्तके बाद समाजमें व्यवहारके योग्य हो सकता है। इस पण्डित समाजने 'कामतो व्यवहार्यस्तु' में अकार प्रक्षेप नहीं किया। वस्तुतः विचार करनेसे

गुरुपाकिका प्रकार प्रक्षेप करना अवश्य काम पड़ता है।

अव्यवहित (सं॰ त्रि॰) वि अव-धा-क्त नञ्-तत्। व्यवधान रहित, जमा हुआ। जिन दो द्रव्योंके बीच कोई वस्तु नहीं होता उन्हें अव्यवहित कहा जाता है।

अव्यवहृत (सं॰ त्रि॰) नञ्-तत्। १ व्यवहारसे बाहर, जो इस्तेमालमें न आया हो। २ मोमादि द्वारा दूषित जो काममें लगनेसे बिगड़ा हो। ३ बोल चालसे बाहर, जो बोलनेमें न आता हो।

अव्यवाय (सं॰ पु॰) व्यवायका अभाव संयोग, मजाम्को अदमसौजूदगी, विराम, पुरसतका न मिलना, ढ़ी रखनेकी हालत।

अव्यसन (सं॰ क्ली॰) न व्यसनम् नञ्-तत्। १ व्यसनाभाव बुरी आदतकी अदमसौजूदगी, अच्छी चाल। (त्रि॰) नञ्-बहुव्री॰। २ व्यसनरहित, बुरी आदत न रखनेवाला, परहेजगार अच्छा भला, जो बुरा काम करता न हो।

अव्यसनिन् (सं॰ त्रि॰) नञ्-तत्। व्यसनशून्य, बे ऐब भला। (स्त्री॰) अव्यसनिनी।

अव्यस्त (सं॰ त्रि॰) न व्यस्त विक्षिप्त विपर्यस्त पृथग्भूतं वा नञ्-तत्। १ अविक्षिप्त, जो घबराया न हो। २ अविपर्यस्त जो बिखरा न हो। ३ समस्त, समूचा, जो टूटा-फूटा सड़ा-गला या बिगड़ा-बिगड़ाया न हो। ४ अपृथग्भूत मिला हुआ, जो अलग न हो।

अव्याकुल (सं॰ त्रि॰) नञ्-तत्। १ निराकुल जो घबराया न हो। २ स्वच्छन्द, आज़ाद, जो बंधा न हो। ३ सख्त, तन्दुरुस्त।

अव्याकृत (सं॰ त्रि॰) वि आ-कृ-क्त, नञ् तत्। १ अप्रकाशित, जो ज़ाहिर न हो। (क्ली॰) २ वेदान्त मतसे—अप्रकटीभूत एवं बीजरूप जगत्का कारण। ३ अज्ञान, नादानी। ४ सांख्यादि मतसे—प्रधान, मुख्य वस्तु।

अव्याख्या (सं॰ स्त्री॰) व्याख्याका अभाव, वर्णनको स्पष्टताका अभाव गोपन, बयान्को सफाईका न होना, पोशीदगी।

अव्याख्यात (सं॰ त्रि॰) व्याख्यारहित, गुप्त, बे-बयान्, पोशीदा, जो खोलकर बताया न गया हो।

अव्याख्यान (सं॰ क्ली॰) अव्याख्या देखो।

अव्याख्येय (सं॰ त्रि॰) १ व्याख्याके अयोग्य, बेबयान् जिसे कोई समझ न सके। २ व्याख्याकी आवश्यकता न रखनेवाला, सरल आसान् जिसके बयान् करनेकी ज़रूरत न पड़े।

अव्याघात (सं॰ त्रि॰) १ व्याघातरहित, रोका न जानेवाला। २ समूचा, भरा हुआ लगातार, जो टूटा-फूटा न हो।

अव्याज (सं॰ पु॰ क्ली॰) न व्याजम् अभावे नञ् तत्। १ छलका अभाव, धोकेकी अदमसौजूदगी। "इद किमव्याजमनोहरं वपुः।" (शकुन्तला) २ व्याजका अभाव बहानेबाजीकी अदमसौजूदगी।

अव्यापक (सं॰ त्रि॰) व्याप्नोति वुञ् ततो नञ्-तत्। १ व्यापक न होनेवाला, जो मामूर न हो। २ परिच्छिन्न घिरा हुआ। ३ इयत्ता-विशिष्ट, महदूद।

अव्यापकता (सं॰ स्त्री॰) अव्यापकत्व देखो।

अव्यापकत्व (सं॰ क्ली॰) १ व्यापक न होनेका विषय, मामूर न होनेकी बात।

अव्यापन्न (सं॰ त्रि॰) जीवित ज़िन्दा, जो मरा न हो।

अव्यापार (सं॰ पु॰) न व्यापारः अभावे नञ् तत्। १ व्यापारका अभाव, कामको अदमसौजूदगी, बेकारी। २ अकार्य, जो अपना काम न हो। (त्रि॰) नञ्-बहुव्री॰। ३ व्यापारशून्य बेकाम। अव्यापारी देखो।

अव्यापारी (सं॰ पु॰) १ उद्यमरहित, बेकाम। २ सांख्यमतमें—क्रियाजनक संयोगसे रहित जो काम कर न सकता हो।

अव्यापिता (सं॰ स्त्री॰) अव्यापकत्व देखो।

अव्यापित्व (सं॰ क्ली॰) अव्यापकत्व देखो।

अव्यापिन् (सं॰ त्रि॰) न व्याप्नोति वि आप णिनि, नञ् तत्। १ अव्यापक, जो समाया न हो। २ परिच्छिन्न, घिरा हुआ। ३ इयत्ताविशिष्ट, थोड़ा मोटा।

परन्तु शूलपाणिने 'कामतो व्यवहार्य्यस्तु' यहां 'व्यवहार्य्यस्तु'के पहले एक अकार प्रक्षेप कर 'अव्यव हार्य्य' पद ग्रहण किया है। इससे वे कहते हैं, कि प्रायश्चित्त करनेसे पाप चला जाता है, किन्तु अपराधी व्यक्ति समाजमें व्यवहारयोग्य नहीं होता। रघु-नन्दन एवं भवदेवने भी शूलपाणिका ही मत ग्रहण किया है।

'कामतो व्यवहार्य्यस्तु'—वास्तवमें यहां अकार है कि नहीं, इसमें विषम सन्देह है। काशीके स्वर्गीय बालशास्त्री अद्वितीय पण्डित थे। उन जैसे धर्मशास्त्रप्रवीण व्यक्ति आजकल प्रायः देखनेमें नहीं आते। उनका कहना है, कि धर्मशास्त्र काव्य नहीं है। काव्यमें दो तीन प्रकारका अर्थ होनेसे कविकी गुणज्ञता प्रकट होती है। परन्तु धर्मशास्त्रमें दो अर्थ होनेसे महाविपद् है। अबतक किसी पुस्तकमें 'व्यव-हार्य्यस्तु' के पूर्व लुप्त अकारका चिह्न नहीं देखा गया। अतएव 'अव्यवहार्य्यः' इस प्रकारका पद स्वीकार करना युक्तियुक्त नहीं है। इसके अतिरिक्त मनुसंहितामें महापातकादि जनित पतित व्यक्तिके प्रायश्चित्तके बाद व्यवहार्य्यके सम्बन्धमें जैसी व्यवस्था की गई है, उसके श्लोकोंको ठीक क्रमसे पढ़नेसे ऐसा निश्चित होता है,—किसी किसी पापमें प्रायश्चित्त करनेपर भी पतित व्यक्ति अव्यवहार्य्य होता है। इसीसे महात्मा बालशास्त्रीने ऐसी व्यवस्था दी थी, कि कोई ब्राह्मण ज्ञानकृत ब्रह्महत्या पापका अपराधी होनेसे (हमें स्मरण होता है, कि इन्दोर राज्यमें) वह प्रायश्चित्तके बाद समाजमें व्यवहार्य्य हो सकेगा। फलतः मिता-क्षरा, मदनपारिजात, जिकन, नृसिंहप्रसाद, अपरार्क प्रभृति बहुमान्य प्राचीन मतानुसार महापातकादिके प्रायश्चित्तके बाद दोषी व्यक्ति समाजमें व्यवहार्य होता है। केवल जो मनुष्य बालक, स्त्री एवं शरणा-गतका प्राण नष्ट करता है, और उपकार करनेसे उप-कारको नहीं मानता, वह प्रायश्चित करनेपर भी व्यवहार्य नहीं होता।

"बालघ्नांश्च कृतघ्नांश्च विशुद्धानपि धर्मतः।
शरणागतहन्तृंश्च स्त्रीहन्तृंश्च न संवसेत्।" मनु ११।१८१।

हमने काशी, मिथिला, गवालियर, काश्मीर, महाराष्ट्र, तैलङ्ग प्रभृति नाना स्थानोंके प्रसिद्ध प्रसिद्ध पण्डितोंके साथ परामर्श किया था; उन लोगोंने भी कहीं 'कामतो व्यवहार्यस्तु' इत्यादि वचनमें लुप्त अकार नहीं देखा। जयपुराधिपतिके पुस्तकालयमें चार सौ वर्षका हाथका लिखा हुआ एक पुराना पुस्तक है। उसमें भी 'व्यवहार्यः' पद ही देखनेमें आया। कल-कत्तेमें स्वर्गीय तारानाथ तर्कवाचस्पति महाशयने जो धर्मशास्त्रसंग्रह पुस्तक छपवाया था, श्रीयुक्त भवानी-चरण-वन्द्योपाध्यायने जो धर्मशास्त्र प्रकाशित किया था एवं बम्बई नगरमें जो याज्ञवल्क्यसंहिता प्रका-शित हुई थी, उनमेंसे किसीमें भी 'अव्यवहार्य्यः' पद गृहीत नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त याज्ञवल्क्य संहिताकी चार पांच बहुमान्य टीकायें हैं। सभी टीकाकारोंने 'व्यवहार्य' पद ही रखकर व्याख्या की है। अतएव इस स्थलमें अकार प्रक्षेप करना कहांतक विवेचनासङ्गत है, सो नहीं कहा जाता।

इससे पहले मिशनरी लोगोंने यहांके कितने ही मनुष्योंको खृष्टान कर डाला था। हमारे देशमें ऐसी प्रथा प्रचलित है, यदि कोई हिन्दू एक बार यवन हो जाय, तो वह फिर समाजमें ग्रहण नहीं किया जाता। इसलिये बिना समझे एकबार खृष्टानी धर्म अवलम्बन करनेसे फिर समाजमें नहीं आ सकते। इस अनिष्टकारी प्रथाको रहित करनेके लिये स्वर्गीय महात्मा राजा-राधाकान्त देव बहादुरने वङ्गदेशके समस्त पण्डितोंको इकट्ठा किया था। भाटपाड़ाके सिवा नवद्वीप प्रभृति सभी स्थानोंके उस समय प्रसिद्ध प्रसिद्ध पण्डित सभामें उपस्थित थे। बहुत कुछ विचार करनेके बाद उन लोगोंने यही स्थिर किया, कोई हिन्दू खृष्टानी धर्म अवलम्बन कर-नेके बाद अभक्ष्यभक्षणादि दोषसे दूषित होनेपर यदि फिर अपने धर्ममें लौट जाना चाहे, तो चतु-र्विंशति वार्षिकव्रतानुकल्प दानादिरूप प्रायश्चित्तके बाद समाजमें व्यवहारके योग्य हो सकता है। इस पण्डित समाजने 'कामतो व्यवहार्यस्तु' में अकार प्रक्षेप नहीं किया। वस्तुतः विचार करनेसे

गूढ़पाधिका प्रकार प्रक्षेप करना अवगत जान पड़ता है।

अव्यवहित (सं॰ त्रि॰) वि अव धा-क्त, नञ्-तत्। अवधान रहित, जमा हुआ। जिन दो द्रव्योंके बीच कोई वस्तु नहीं होता, उन्हें अव्यवहित कहा जाता है।

अव्यवहृत (सं॰ त्रि॰) नञ्-तत्। १ व्यवहारसे बाहर, जो इस्तेमालमें न आया हो। २ मोमादि द्वारा दूषित जो काममें लगनेसे बिगड़ा हो। ३ बोल चालसे बाहर, जो बोलनेमें न आता हो।

अव्यवाय (सं॰ पु॰) अवकाशका अभाव संयोग, अवकाशकी अदममौजूदगी, मिलाप, फुरसतका न मिलना, लगी रहनेकी हालत।

अव्यसन (सं॰ क्ली॰) न व्यसनम्, नञ् तत्। १ व्यसनाभाव बुरी आदतकी अदममौजूदगी, अच्छी चाल। (त्रि॰) नञ्-बहुव्री॰। २ व्यसनरहित, बुरी आदत न रखनेवाला, परहेजगार, अच्छा, भला, जो बुरा काम करता न हो।

अव्यसनिन् (सं॰ त्रि॰) नञ्-तत्। व्यसनशून्य, बे ऐब भला। (स्त्री॰) अव्यसनिनी।

अव्यस्त (सं॰ त्रि॰) न व्यस्त विक्षिप्त विपर्यस्त पृथग्भूत या नञ्-तत्। १ अविक्षिप्त, जो घबराया न हो। २ अविपर्यस्त जो बिखरा न हो। ३ समस्त, समूचा, जो टूटा-फूटा, सड़ा-गला या बिगड़ा-बिगड़ाया न हो। ४ अपृथग्भूत मिला हुआ, जो अलग न हो।

अव्याकुल (सं॰ त्रि॰) नञ्-तत्। १ निराकुल, जो घबराया न हो। २ स्वच्छन्द, आज़ाद, जो बंधा न हो। ३ स्वस्थ, तन्दुरुस्त।

अव्याहत (सं॰ त्रि॰) वि आ-कृ-क्त, नञ् तत्। १ अप्रकाशित, जो ज़ाहिर न हो। (क्ली॰) २ वेदान्त मतसे—अप्रकटीभूत एवं बीजरूप जगत्‌का कारण। ३ अज्ञान, नादानी। ४ सांख्यादि मतसे—प्रधान, सूक्ष्म वस्तु।

अव्याख्या (सं॰ स्त्री॰) व्याख्याका अभाव, वर्णनकी स्पष्टताका अभाव मोपन, बयान्‌की सफ़ाईका न होना, पोशीदगी।

अव्याख्यात (सं॰ त्रि॰) व्याख्यारहित, गुप्त, बे-बयान्, पोशीदा, जो खोलकर बताया न गया हो।

अव्याख्यान (सं॰ क्ली॰) अव्याख्या देखो।

अव्याख्येय (सं॰ त्रि॰) १ व्याख्याके अयोग्य, बेबयान्, जिसे कोई समझ न सके। २ व्याख्याकी आवश्यकता न रखनेवाला सरल, आसान् जिसके बयान् करनेकी ज़रूरत न पड़े।

अव्याघात (सं॰ त्रि॰) १ व्याघातरहित रोका न जानेवाला। २ समूचा, भरा हुआ लगातार, जो टूटा-फूटा न हो।

अव्याज (सं पु॰ क्ली॰) न व्याजम् अभावे नञ् तत्। १ छलका अभाव, धोकेकी अदममौजूदगी। "इव विव्याजमनोहरं वपुः।" (शकुन्तला) २ मायाका अभाव बहानेकी अदममौजूदगी।

अव्यापक (सं॰ त्रि॰) व्याप्नोति व्याप्‌-ण्वुल् ततो नञ्-तत्। १ व्यापक न होनेवाला, जो सामूर न हो। २ परिच्छिन्न घिरा हुआ। ३ इयत्ता-विशिष्ट, महदूद।

अव्यापकता (सं॰ स्त्री॰) अव्यापकत्व देखो।

अव्यापकत्व (सं॰ क्ली॰) १ व्यापक न होनेका विषय, सामूर न होनेकी बात।

अव्यापन्न (सं॰ त्रि॰) जीवित ज़िन्दा जो मरा न हो।

अव्यापार (सं॰ पु॰) न व्यापारः, अभावे नञ् तत्। १ व्यापारका अभाव, कामकी अदममौजूदगी, बेकारी। २ अकार्य, जो अपना काम न हो। (त्रि॰) नञ्-बहुव्री॰। ३ व्यापारशून्य बेकाम। अव्यापारी देखो।

अव्यापारी (सं॰ पु॰) १ उद्यमरहित, बेकाम। २ सांख्यमतमें—क्रियाजनक संयोगसे रहित जो काम कर न सकता हो।

अव्यापिता (सं॰ स्त्री॰) अव्यापकत्व देखो।

अव्यापित्व (सं॰ क्ली॰) अव्यापकत्व देखो।

अव्यापिन् (सं॰ त्रि॰) न व्याप्नोति वि आप णिनि, नञ् तत्। १ अव्यापक, जो समाया न हो। २ परिच्छिन्न, घिरा हुआ। ३ इयत्ताविशिष्ट छोटा मोटा।

अव्यापी, अव्यापिन् देखो।

अव्याप्त (सं० त्रि०) न व्याप्तम्, नञ्-तत्। परिच्छिन्न, महदूद, जो समाया न हो।

अव्याप्ति (सं० स्त्री०) न व्याप्तिः, अभावे नञ्-तत्। व्याप्तिका अभाव, मामूर न होनेकी बात। व्याप्ति देखो।

अव्याप्य (सं० त्रि०) १ व्याप्य न होनेवाला, जिसमें घुस न सकें। २ संपूर्ण विषयसे पृथक्, जो हर हालमें लग न सके। ३ अद्भुत, निराला, ख़ास। (अव्य०) ४ व्याप्त न होके, बेघुसे।

अव्याप्यवृत्ति (सं० त्रि०) अव्याप्य सर्व्वावच्छेदमव्याप्य वृत्तिः स्थितिर्यस्य, बहुव्री०। अव्याप्य वर्त्तते इत्यव्याप्य वृत्ति (न्यायभाष्य)। निज अधिकरणके अंश विशेष वा काल विशेषमें अवस्थित पदार्थ, जो पदार्थ अधिकरणादिमें व्यापक न रहता हो। जैसे घट और उसका संयोग गृहके सब स्थानमें वैसे ही आत्मामें ज्ञान भी सर्वदा भरा नहीं रहता। अतएव स्वाधिकरणमें अंशभेद और कालभेदसे ही संयोगादि रहते हैं, इसीसे उसका नाम अव्याप्यवृत्ति है। एवं वृक्षके अग्रे कपिसंयोग है, किन्तु मूलमें नहीं,—इसे दैशिक अव्याप्यवृत्ति कहते हैं। आत्मामें इस समय सुखादि हैं, परन्तु दूसरे समय नहीं रहते—यह भी अव्याप्यवृत्ति कहा जाता है।

अतएव देश और काल व्याप्यवृत्तिके नियामक हैं। उनमें देशमें रहनेसे देश, वा कभी काल भी उसका अवच्छेदक होता है, जैसे गोष्ठमें इस समय गो हैं; यहां गोष्ठ और समय ये दोनों ही गो अवस्थिति संयोगके नियामक होते हैं। एवं इस समय आत्मामें सुखादि हैं, यहां कालस्थित पदार्थ जो सुखादि हैं, उनका नियामक आत्मारूप देश हुआ। इसीसे सयोग विभागादिरूप जो अव्याप्यवृत्ति है, वह दैशिक और कालिक है। उसी तरह आत्मामें सुख दुःख इच्छा द्वेष यत्न धर्म अधर्म भावनाख्य संस्कार देहावच्छेदमें रहनेपर भी घटावच्छेदमें नहीं रहते एवं आत्मामें भी सर्वदा नहीं रहते, इसलिये वे अव्याप्यवृत्ति हैं, एवं शब्द जिस देश और जिस कालमें रहता, वही देश और वही काल उस शब्दका नियामक होता है। गन्धादि भी कालिक अव्याप्यवृत्ति हैं, वे स्वाधिकरणमें ही उत्पत्तिकालमें नहीं रहते। नैयायिक लोग कहते हैं, कि घटादिके उत्पत्तिकालमें गन्धादि नहीं रहता। उसके बाद उसकी उत्पत्ति होती है। फिर वही गन्धादि प्रलयपर परमात्मामें भी नहीं रहता। अतएव वह अव्याप्यवृत्ति है। संयोग सम्बन्धमें घटादि भी उसीतरह दैशिक एवं कालिक अव्याप्यवृत्ति है।

अव्यायत (सं० त्रि०) अनधिकृत, टिका हुआ, जो छीना न गया हो।

अव्यायाम (सं० पु०) न व्यायामः, नञ्-तत्। १ व्यायामका अभाव, कसरतकी अदममौजूदगी। २ विशेषरूप विस्तारका अभाव, बड़े फैलावका न रहना। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। ३ परिश्रमादि व्यापारशून्य, कसरत वग़ैरहके कामसे खाली।

अव्यावर्तक (सं० त्रि०) न व्यावर्तयति इतरेभ्यो निवारयति; वि-आ-वृत-णिच्-ण्वुल्, णिच् लोपः, ततो नञ्-तत्। १ अकृतनिवारण, निवारण न करनेवाला, जो रुकता न हो। २ अन्यसे भेद न करनेवाला, जो सबको बराबर समझता हो।

अव्यावर्तन (सं० क्ली०) वि-आ-वृत-णिच्-ल्युट्, लोपः ततो नञ्-तत्। १ अन्यको निवारणका न करना, दूसरेको न रोकना। २ प्रत्यावर्तनका अभाव, वापस न आनेकी हालत। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। ३ व्यावृत्तिशून्य, अन्यके निवारणसे शून्य, वापस न आनेवाला, जिसे कोई न रोके।

अव्यावृत्त (सं० त्रि०) १ संयुक्त, लगा हुआ। २ जैसेका तैसा, जो उलटा-सुलटा न हो।

अव्याहत (सं० क्ली०) न व्याहतम्, नञ्-तत्। १ व्याघातका अभाव, रोकका न लगना। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ व्याघातशून्य, बेरोक। व्याहतं मिथ्यार्थकं तन्न भवति। ३ सत्यविशिष्ट, सच्चा, जो झूठा न हो। ४ नूतन, नया। ५ हताश न होनेवाला, जो नाउम्मेद न रहे।

अव्याहतत्व (सं० क्ली०) अव्याहतस्य भावः त्व।

अशक्ति (सं० स्त्री०) अयोग्यता, निर्बलता, नपुंसकता, नाक़ाविलियत, कमजोरी, नामर्दी। सांख्यमतसे—बुद्धि एवं इन्द्रियके विपर्यय अर्थात् नाकाम हो जानेको भी अशक्ति कहते हैं। यह अशक्ति अट्ठाइस प्रकारकी होती है,—ग्यारह इन्द्रिय और सत्रह बुद्धिकी। बुद्धिकी सत्रह अशक्तिमें नव तुष्टि और आठ सिद्धिकी अशक्ति आती है।

अशक्य (सं० त्रि०) न शक्यम्, शक-यत्, नञ्-तत्। १ असाध्य, असम्भव, ग़ैरमुमकिन, जो बन न सकता हो। २ अकरणीय, किया न जानेवाला। (पु०) ३ काव्यालङ्कार विशेष। इसमें बाधा वश किसी कार्यके हो न सकनेका भाव देखाते हैं।

अशक्यार्थ (सं० त्रि०) निष्प्रयोजन, प्रभावशून्य, बेफ़ायदा, बेतासीर, लाहासिल, जिससे काम न बने।

अशग—शान्तिपुराण रचयिता प्राचीन संस्कृत कवि।

अशङ्क (सं० त्रि०) १ निर्भय, निर्द्वन्द्व, बेख़ौफ़, जिसे कोई डर न रहे। २ रक्षित, निश्चित, महफ़ूज़, पक्का।

"निपट निरदंग अवध अगद।" (तुलसी)

अशङ्का (सं० स्त्री०) अभावे नञ्-तत्। १ संशयका अभाव, शकको अदममौजूदगी। २ भयका अभाव, ख़ौफ़को अदममौजूदगी।

अशङ्कित (सं० त्रि०) शङ्कि-क्त, नञ्-तत्। १ अभीत, ख़ौफ़ न खाये हुआ। २ सन्देहरहित, बेशक, पक्का।

अशठ (सं० त्रि०) पुण्यात्मा, नेक, भला, जो बुरा न हो।

अशत्रु (सं० पु०) न शत्रुः कर्मणि, नञ्-तत्। १ चन्द्र। २ मित्र, दोस्त। ३ युधिष्ठिर। (त्रि०) नास्ति शत्रुर्यस्य, नञ्-बहुव्री०। शत्रुरहित, बेदुश्मन्, जिसे किसीसे दुश्मनी न रहे।

अशन् (वै० पु०) १ फेंककर मारनेका पत्थर। २ मेघ, बादल।

अशन (सं० क्ली०) अश्-ल्युट्। (पु०) अश्-ल्यु। १ पीतशाल वृक्ष। साधारण बोलचालमें इसे आसनका पेड़ कहते हैं। असन जैसा दन्त्य सकारका भी प्रयोग होता है। २ व्याप्ति। ३ भोजन। कर्मणि-ल्युट्। ४ भोज्य। (क्ली०) ५ अन्न।

स्थान विशेषसे अनेक प्रकारके वृक्ष अशन वा आसन नामसे प्रसिद्ध हैं। यथा—(Pterocarpus Marsupium) इसका मारवाड़ी नाम आसन है। हिन्दीमें सज और उड़िया भाषामें इसे पियासाल कहते हैं। इसका पेड़ बहुत बड़ा होता है। संयुक्तप्रदेशमें बांदा प्रभृतिसे उत्तर यह बहुत पैदा होता है। ऊपरकी लकड़ी भूरी, काले दाग़ वाली, अत्यन्त कठिन और स्थायी होती है। पक्की आसनकी लकड़ीमें पालिश अच्छी लगती है। इसके भीतरकी लकड़ीमें लाल दूध रहता, लकड़ी भीग जाने वा कच्ची रहनेपर उसमें पीला दाग पड़ जाता है। इसकी लकड़ीके दरवाजे, खिड़कियां, कड़ियां, नौकायें, गाड़ियां आदि बनती हैं। रेलगाड़ीके स्लिपर बनानेमें यह बहुत काम आता है।

(Terminalia tomentosa) इसे हिन्दीमें आसन कहते हैं। इसका बंगला नाम भी आसन वा पियासाल है। पञ्जाब, दक्षिण भारतवर्ष और ब्रह्मदेशमें यह बहुत उत्पन्न होता है। इसके ऊपरकी लकड़ी कुछ सफेद और लाल होती एवं भीतरकी लकड़ी भूरी कृष्णवर्ण, कठिन, और लहरदार रेखा सहित रहती है। इसकी पक्की हुई लकड़ीमें पालिश अच्छी मालूम देती है। सब लोग इसे 'काला आसन' कहते हैं।

(Populus ciliata) इसका पञ्जाबी नाम सफेदा, आसन इत्यादि है। शिमला पहाड़पर इसे बैलुन और नेपाली 'बह्लीकाठ' कहते हैं। इसका पेड़ बड़ा होता है। लकड़ी धूसर वर्ण, उज्ज्वल और कोमल होती है।

(Briedelia retusa) इसका भी मारवाड़ी नाम आसन है। पञ्जाबमें इसे पायर कहते हैं। अवध, बङ्गदेश, दक्षिण भारत एवं ब्रह्मदेशमें यह बहुत पैदा होता है। इसकी लकड़ी धूसर रंगकी होती और उसमें पालिश अच्छी लगती है।

अशनक, असनक (सं० पु०) असन पुष्पाकार धान्य विशेष, असनके फूल-जैसा धान।

अशनकृत् (वै॰ त्रि॰) भोजन बनाये हुआ, जो खाना पका रहा हो।

अशनपति (वै॰ पु॰) भोजनका प्रभु, खुराकका मालिक।

अशनपर्णी (सं॰ स्त्री॰) अशनस्य पीतसालस्य पर्णमिव पर्णमस्याः; बहुव्री॰ पर्णान्तजातित्वात् ङीप्। १ विजयसार। २ गोकर्णीलता, अपराजिता।

अशनपुष्प (सं॰ पु॰) अशनपुष्पाकार मालि, अस नामसे मशहूर धान।

अशनमञ्जिका (सं॰ स्त्री॰) आस्फोता, सामान्य अपराजिता।

अशनवत् (वै॰ त्रि॰) भोजन रखनेवाला, जिसके पास खुराक रहे।

अशना (सं॰ स्त्री॰) अशनमिच्छति; अशन इच्छा में क्यच् प्रत्यय॰ अशनाय, तत' क्विप' सर्वाभाव' अकार यकारयोर्लोपश्च। १ भोजनेच्छा, खानेकी ख्वाहिश। २ गङ्गा निकाला, सफेद सेम।

अशनाया (सं॰ स्त्री॰) अशनमिच्छति, अशन इच्छार्थे क्यच् प्रत्यय॰ अशनाय, ततः अ टाप्। १ भोजनेच्छा, खानेकी ख्वाहिश। "अशनायया अशनायेच्छया।" (भाष्य) २ गङ्गानिकाला सफेद सेम।

अशनायित (सं॰ त्रि॰) अशनमिच्छति; अशन क्यच् प्रत्यय॰ अशनाय, कर्तरि क्त इट् अतो लोप'। १ भोजनेच्छायुक्त, खानेकी ख्वाहिश रखनेवाला। २ क्षुधित भूखा। (स्त्री॰) भावे क्त। ३ भोजनेच्छा, खानेकी ख्वाहिश, भूख।

अशनायुक (सं॰ त्रि॰) अशनां भोक्तुमिच्छां याति प्राप्नोति, अशनया क्ष अकारलोप' तत स्वार्थे कन्। भोजनेच्छायुक्त, खानेका ख्वाहिशमन्द।

अशनि (सं॰ पु॰ स्त्री॰) अश्नुते व्याप्नोति तेजसा विश्वम् अश् व्याप्तौ अनि। १ मेघोत्पन्न तेज, बादलसे निकलो चमक। २ इन्द्र। ३ अनुताप, अन्तिम अस्त्र। ४ इन्द्रका वज्र। ५ शस्त्र विशेष। ६ विद्युत्। ७ अग्नि। ८ विद्युदग्नि। ९ हीरक, हीरा।

"अशनिः कोऽपि कुलिशः स्वरूपयाम् स्वरूपि।" (ज्योतिष)

भागवतके षष्ठस्कन्धमें लिखा है—इन्द्रने वृत्रासुरको मारनेके लिये दधीचि मुनिकी अस्थि लेकर विश्वकर्मासे अशनि बनवाया था।

अशनिप्रभ (सं॰ पु॰) राक्षस विशेष, किसी आदमखोरका नाम।

अशनिमत् (वै॰ त्रि॰) विद्युत् फेंकनेवाला, जो बिजलीसे भरा हो।

अशनीय (सं॰ त्रि॰) अशनके योग्य भोजनके उपयुक्त, खाने काबिल।

अशपत् (वै॰ त्रि॰) शाप न देते हुआ, जो कोस न रहा हो।

अशब्द (सं॰ पु॰) नञ्-तत्। १ शब्दभिन्न अर्थ, अल्फाज़से जुदा माने। २ वाच्य, बोली ठोली। (त्रि॰) नास्ति शब्दो वैदादी वाचकशब्दो वा यस्य, नञ् बहुव्री॰। ३ शब्दहीन, आवाज़से खाली।

अशम् (वै॰ अव्य॰) असुखकरतासे, बैचैनीसे, तकलीफ़से।

अशम (सं॰ पु॰) अदमन, अशान्ति अकृत्य, जोश ख़रोश, बेकरारी।

अशमु (सं॰ पु॰) अशम, असद्भव, बुराई।

अशरण (सं॰ त्रि॰) शरणशून्य, बेपनाह, जिसके कोई बचाव न रहे।

अशरफी (फा॰ स्त्री॰) १ मोहर, सावरिन, गिनी। यह सिक्का सोनेका बनता था। २ पुष्पविशेष, गुल अशरफी। यह पीला होता है।

अशराफ (अ॰ त्रि॰) भद्र, भला, शरीफ़, जो बदमाश न हो।

अशरीर (सं॰ त्रि॰) नास्ति शरीरं तदभिमानो वा यस्य, नञ् बहुव्री॰। १ देहशून्य, गैरमुजस्सिम, जो जिस्म न रखता हो। (पु॰) २ परमात्मा। ३ शरीरका अभिमान न रखनेवाले जीवन्मुक्त याज्ञ नारदादि। ४ मीमांसोक्त देवमात्र। ५ कामदेव।

अशरीरता (सं॰ स्त्री॰) शरीरस्य भाव' तल्। १ शरीरसम्बन्ध राहित्य, जिस्मकी ताल्लुक़का न रहना। २ मोक्ष, जीते मरनेसे छुटकारा।

अशरीरिन् (सं॰ त्रि॰) देहशून्य, गैरमुजस्सिम, जिसके जिस्म न रहे।

अशर्म, अशर्मन् देखो।

अशर्मन् (सं॰ क्लो॰) विरोधे नञ्-तत्। १ असुख, दुःख, दर्द, तकलीफ। (त्रि॰) नञ्-बहुव्री॰। २ सुखशून्य, दुःखी, कमबख्त, तकलीफ पानेवाला।

अशस् (वै॰ त्रि॰) आशीर्वाद न देनेवाला, अशुभचिन्तक, प्रशंसा न करनेवाला, बदख्वाह, बददुवा देनेवाला, जो तारीफ करता न हो।

अशस्त (वै॰ त्रि॰) अशुभ, ख़राब, जो अच्छा न हो।

अशस्तवार (वै॰ त्रि॰) १ अवर्णनीय कोषसे सम्पन्न, जिसके पास बयानसे बाहर खज़ाना रहे। २ स्वेच्छासे धन देनेवाला, जो बेमांगे दौलत बख्शता हो।

अशस्ति (वै॰ स्त्री॰) १ शाप, बददुवा। २ शाप देनेवाली, जो बददुवा देती हो।

अशस्तिहन् (वै॰ त्रि॰) शाप छोड़नेवाला, जो बददुवाको रद कर देता हो।

अशस्त्र (सं॰ त्रि॰) शस्त्ररहित, बेहथियार, जो तलवार वगैरह न बांधे हो।

अशाका, अशका देखो।

अशाखा (सं॰ स्त्री॰) नास्ति शाखा यस्याः, नञ्-बहुव्री॰। १ शूलीतृण, मोला घास। २ शाखाशून्य लता, जिस बेलमें डालें न रहें। नारियल, ताड़ और खजूरको अशाखा कह सकते हैं।

अशान्त (सं॰ त्रि॰) न शान्तम्, विरोधे नञ्-तत्। १ दुरन्त, असन्तुष्ट, वन्य, भयङ्कर, नाखुश, खूंख्वार, जङ्गली, खौफ़नाक, जो ठण्डा न हो। २ अविरत, सन्देहयुक्त, बेचैन, फिक्रमन्द, जो घबरा रहा हो। ३ अधार्मिक, बेमज़हब, जो पवित्र न हो।

अशान्तता (सं॰ स्त्री॰) शान्त न होनेका भाव, शमताराहित्य, शोर ग़रीव, मडमड़ियापन।

अशान्ति (सं॰ स्त्री॰) अभावे नञ्-तत्। १ शान्तिका अभाव, चञ्चलता। २ शमताका अभाव, अस्थिरता, हलचल। (त्रि॰) नञ्-बहुव्री॰। ३ शमताशून्य, जल्दबाज़।

अशालीन (सं॰ त्रि॰) प्रगल्भ, ढीठ, निर्भय।

अशालीनता (सं॰ स्त्री॰) धृष्टता, ढिठाई।

अशाश्वत (सं॰ त्रि॰) न शाश्वतं नञ्-तत्। १ अनित्य, उत्पत्तिविनाशशाली, पैदा और नाश होनेवाला। २ अस्थिर, हरवक्त न ठहरनेवाला।

अशासन (सं॰ क्लो॰) अभावे नञ्-तत्। १ शासनका अभाव, हुकूमतकी अदममौजूदगी। (त्रि॰) नञ्-बहुव्री॰। २ शासनशून्य।

अशातावेदनीय (सं॰ पु॰) जैनशास्त्रानुसार कर्मविशेष। इसके प्रादुर्भावसे दुःखका अनुभव होता है।

अशास्य (सं॰ त्रि॰) शास-बाहुल॰ ण्यत् नञ्-तत्। शासन करनेके अशक्य, जिसको किसी प्रकार शासन किया न जा सके।

अशिक्षित (सं॰ त्रि॰) न शिक्षितम्, विरोधे नञ्-तत्। १ शिक्षाशून्य, जो शिक्षा न पाया हो, बेपढ़ा-लिखा। २ अविनीत, अभद्र, अनाड़ा, गंवार, मूर्ख, बेवक़ूफ़। ३ गति नैपुण्यहीन, जो अच्छी चाल न चलता हो।

अशित (सं॰ त्रि॰) अश-कर्मणि-क्त। १ भक्षित, खाया हुआ। कर्तरि-क्त। २ भोजनमें व्यस्त, आसूदा। भावे क्तः (क्लो॰) ३ भक्षण, खाना।

अशिव (सं॰ पु॰) अश संहतौ (अश्विरिश्च दश्चयौ। उण् १।१५०) इति इव। चोर, चोर। अश्यते देवैर्भक्ष्यते, अश भोजने कर्मणि इव। देवभक्ष्यचरु, देवताके खाने योग्य खीर।

अशिथिल (सं॰ त्रि॰) विरोधे नञ्-तत्। जो शिथिल न हो, दृढ़, मज़बूत, फुरतीला।

अशिपद (वै॰ त्रि॰) न शीपदः पादरोगभेदः, वेदे पृषो॰ न लोपः। नञ्-तत्। १ श्लीपदरोगका अभाव, फीलपावे बीमारीकी अदममौजूदगी। (त्रि॰) नास्ति श्लीपदो रोगो यस्य, नञ्-बहुव्री॰। २ श्लीपदरोगशून्य, जिसके फीलपावा न रहे। "अशिपदा मवम्।" ऋक् १।१०।८।

अशिमिद (सं॰ त्रि॰) शिमि वधकर्मा शिमिं हिंसां ददाति, शिमि-दा-क; ततो नञ्-तत्। अहिंसक, जो किसी जीवको मारता न हो। "अशिमिदा, मवम्।" ऋक् १।१०।८।

अशिर-आशिर, (सं॰ पु॰) अश्नाति सर्वं भुङ्क्ते,

अघ—(कर्मण। अन् ।१४४) इति विरच् किच्चे हृदि। १ राक्षस। अयाति व्याप्नोति विश्वम्। २ सूर्य। ३ अग्नि। ४ चोरा। (...) (स्त्री॰) टाप्। व्यापिका स्त्री, चर जगह जाने या रहनेवाली औरत।

अघिरस् (स॰ पु॰) नास्ति शिरो मस्तकमस्य नञ्-बहुव्री॰। १ कबन्ध, मस्तकहीन वीर। (त्रि॰) २ अधपुच्छ, जिसका अग्रभाग न हो। वा कप्। अघिरस्क। कबन्ध, शैशिरका धड़, जिसका माथा न हो।

अघिरस्त्राण (स॰ क्ली॰) शिरसा सह स्नानमव गाहनम्, स्नान तत् ततो नञ्-तत्। शैशिर डुबाये स्नान, यथा पर्यन्त डूबा कर स्नान।

अघिव (स॰ क्ली॰) न शिवम् विरोधे नञ्-तत्। १ मङ्गल न होनेवाला अमङ्गल। (त्रि॰) २ जो मङ्गलयुक्त न हो, तप। नास्ति शिव कल्याणमस्मात् नञ्-ब बहुव्री॰। अमङ्गलसूचक। अशान्त शब्द देखो।

अशिशिषा (स॰ स्त्री॰) अशितुमिच्छा, अश-सन् दिसीव इट् भावे अ टाप्। भोजनेच्छा खानेकी ख्वाहिश।

अशिशु (स॰ पु॰) न शिशुः, विरोधे नञ् तत्। १ शिशु न होनेवाला, जो बच्चा न हो, युवा। कोई कोई कहते हैं, आठ वर्ष तक शिशु—फिर नवसे पन्द्रह वर्ष पयन्त अशिशु कहलाता है। (त्रि॰) नास्ति शिशुः यस्य, नञ्-बहुव्री॰। २ शिशुरहित, बेऔलाद, जिसके पास बच्चा न रहे। (स्त्री॰) अशिश्वी, शिशु रहित स्त्री। अशिशिर्ण भवता। ...।४।१।८७ इस सूत्रसे सन्धी और अशिश्वी यह दो ङीप् प्रत्ययान्त शब्द निपातन द्वारा सिद्ध होता है। नास्ति शिशुरस्या इति अशिश्वी। वेदमें "अशिशु" भी रूप बनता है।

अशिष्ट (स॰ त्रि॰) न शिष्टम् नञ्-तत्। १ जो उपदेश पाये न हो। २ जो शासन किया न गया हो। शिष्टः साधुः, विरोधे नञ् तत्। ३ असाधु, दुःशील, अविनीत, उजड्ड, बेहदा। ४ नास्तिक। ५ धर्मशास्त्रकारक व्यभिचारविशिष्ट, जो सब धर्मका अवादि भक्षण करता हो।

अशिष्टता (स॰ स्त्री॰) १ असाधुता, दुःशीलता बेहूदगी, ढिठाई।

अशिष्ठ (स॰ त्रि॰) अश्नाति अश भोजने अश् अतिशायने इष्ठन्। १ अतिशय भोक्ता, बहुत खाने-वाला। (पु॰) २ अग्नि। सबको भक्षण करने कारण अग्निको भी अशिष्ठ कहते हैं।

अशिष्य (स॰ त्रि॰) शिष्यते, शास-कर्मणि क्यप् आत इत्वं अलक्ष शिष्यम्, ततो नञ् तत्। शासनका अविषय, जिसके मति या जिस विषयमें कोई नियम न हो। अशिष्यं संज्ञा प्रमाणत्वात्। पा १।२।५३। ... (सिद्धान्तकौमुदी) पाणिनि प्रथम सूत्र बनाया—लुपि युक्तवत् व्यक्तिवचने। पा १।२।५१। प्रत्ययके लुप होनेपर प्रकृतिका लिङ्ग और वचन आता है। उसके बाद 'तदशिष्यम्' इत्यादि सूत्र किया। इसका तात्पर्य यह है कि लुप् करने पर प्रकृतिके लिङ्ग और वचन होनेका शासन अर्थात् नियम नहीं रहता। कारण सदा ही उसका प्रमाण है अर्थात् पूर्वाचार्योंने प्रत्ययके लुप् करनेपर जिस सकल शब्दमें प्रकृतिका न्याय लिङ्ग और बहुवचन प्रयोग किया है वे ही सब शब्द बहुवचनान्त होंगे एवं उसी प्रकार साधित पदके स्थलमें जहां एकवचनान्त प्रयोग किया है वहां एकवचनान्त ही प्रयोग होगा। 'पञ्चालानां निवासो जनपद पञ्चालाः' यहां बहुवचनान्त और 'ब्रह्मावर्तानां निवासो जनपद ब्रह्मावर्तम्' यहां एकवचनान्त ही प्रयोग हुआ है। कविकुल चूडामणि कालिदासने मेघदूतमें उभय प्रकार प्रयोग प्रदत्त किया है। जैसे—"...(पू मेघ १।)" यह बहुवचनान्त पदका निदर्शन है। "... ..." (पू मेघ॰४८) यहां एकवचनान्त पदका निदर्शन है। इसीलिये विश्वकोषके अवन्ति शब्दमें कई एक बहुवचनान्त जनपद शब्द दिखा करके अवन्तिमें कहा है कि उसमें अध्याय भी होता है।

अशिश्विका (स॰ स्त्री॰) अनपत्या, जिस औरतके औलाद न रहे।

अशीत (स॰ क्ली॰) न शीतम् विरोधे नञ् तत्। १ उष्णता, गर्मी। २ उष्णस्पर्श, गर्म चीज़। (त्रि॰)

कालभेदे नास्ति शीतं यस्य, नञ्-बहुव्री०। ३ शीत-शून्य, सर्दीसे खाली, जिसे ठण्ढक न मालूम पडे। किसी प्राचीन कविने कहा है,—

"अशीतास्तरवो माघे फाल्गुने पशुपक्षिणः।
चैत्रे जलचराः सर्वे वैशाखे नरवानराः॥"

माघ मासमें वृक्ष, फाल्गुनमें पशु-पक्षी, चैत्रमें जलचर और वैशाखमें नर-वानरका शीत छूट जाता है। ४ अस्सिवां, अस्सीका, जो गिननेसे अस्सीकी जगह पडता हो।

अशीतकर (सं० पु०) अशीतः उष्णः करः किरणो यस्य। उष्णांशु, सूर्य, आफताब।

अशीतकिरण, अशीतकर देखो।

अशीतम (वै० पु०) अश्नाति, अश भोजने इन् ततः मतुप्। भोक्तृप्रधान अग्नि, सबको खा जानेवाली आग।

अशीतरुच्, अशीतकर देखो।

अशीतल (सं० त्रि०) उष्ण, गर्म, जो ठण्डा न हो।

अशीता (सं० स्त्री०) भूमिकुष्माण्ड, भुईं कुम्हडा।

अशीति (सं० स्त्री०) अष्टानां दशतां अशीभावः ति प्रत्ययश्च, अष्टौ दशतः परिमाणमस्य। पङ्क्ति विंशति त्रिंशच्चत्वारिंशत् पञ्चाशत् षष्टिसप्तत्यशीति-नवतिशतम्। पा ५।१।५८। १ अस्सी संख्या। २ अस्सी संख्याविशिष्ट, जो चीज़ अस्सीकी अदत रखती हो। (त्रि०) ३ अस्सी संख्या परिमित।

अशीतिक (सं० त्रि०) अस्सी वर्षवाला, जो अस्सी सालकी उम्रका हो।

अशीतिभाग (सं० पु०) अस्सिवां भाग या हिस्सा, अस्सीमें एक टुकड़ा।

अशीर्ण (सं० त्रि०) शीर्ण न होनेवाला, सड़ा न हुआ, जो कमज़ोर पड़ा न हो।

अशीर्षन्, अशीर्षिक देखो।

अशीर्षिक (सं० त्रि०) नास्ति शीर्षं यस्य। १ मस्तक-रहित, सर न रखनेवाला, जिसके मत्था न रहे। २ अस्त्रशून्य, हथियारसे खाली।

अशील (सं० क्ली०) न शीलम्, विरोधे नञ्-तत्। १ दुष्ट शील, बुरा मिज़ाज। २ दुष्टस्वभाव, खराब खसलत। (त्रि०) नास्ति शीलं यस्य, नञ्-बहुव्री०। ३ शीलताशून्य, नाशायिस्ता। ४ दुष्टशील, बद-मिज़ाज।

अशुक्लजा, अशुक्ला, अशीता देखो।

अशुच् (सं० स्त्री०) न शुक् अभावे नञ्-तत्। १ शोकका अभाव, अफसोसकी अदममौजूदगी। (त्रि०) नास्ति शुगस्य, नञ्-बहुव्री०। २ शोकशून्य, अफ़सोस न रखनेवाला, जो रञ्जीदा न हो।

अशुचि (सं० त्रि०) १ अग्नि न होनेवाला, जो आग न हो। २ आषाढ़ मास न होनेवाला, जो असाढ न हो। ३ कृष्णवर्ण, काला, जो शुक्ल या सफ़ेद न हो। ४ शृङ्गाररस न होनेवाला। ५ शौचशून्य, पाकीज़गीसे खाली। ६ अपवित्र, नापाक, मैला कुचैला।

अशुचिता (सं० स्त्री०) अपवित्रता, नापाकीजगी, गन्दगी।

अशुचित्व, अशुचिता देखो।

अशुद्ध (सं० त्रि०) न शुद्धम् विरोधे नञ्-तत्। शुद्ध नहीं, दोषयुक्त, अपवित्र। कोई भी विषय नाना प्रकारसे अशुद्ध हो सकता है। किसी पदको लिखनेके समय व्याकरणादि लक्षणानुसार विहित कार्य न करनेसे दुष्ट वा अशुद्ध कहते हैं।

शास्त्रनिषिद्ध कर्मके अनुष्ठानका नाम दोष है। उक्त दोषसे दूषित व्यक्ति वा द्रव्यको दुष्ट वा अशुद्ध कहते हैं। जिस द्रव्यके स्पर्श करनेसे विना स्नान किये शुद्धलाभ नहीं होता, उसका नाम दुष्ट और उस द्रव्यके स्पर्श करनेवाले व्यक्तिको दुष्ट वा अशुद्ध कहा जाता है। स्वास्थ्यके अभावसे शारीरिक जो वातपित्तादिका दोष होता है, उस दोषयुक्त व्यक्तिको भी दुष्ट वा अशुद्ध समझेंगे। रजस्वला होनेपर कहा जाता, कि स्त्री अशुद्ध है। वृहस्पति एवं शुक्रके वार्द्धक्य, अस्त और बाल्यादिसे काल अशुद्ध होता है। किसी ग्रन्थके लिखनेमें लिपिकरप्रमाद वा स्खलनादि दोष हो जानेसे वह भी अशुद्ध कहलाता है।

अशुद्धवासक (सं० पु०) सन्दिग्ध आचरणवाला, आवारा, जिसके कोई ठौर-ठिकाना न रहे।

अशुद्धि (सं० स्त्री०) नञ्-तत्। १ शुद्धिका अभाव, पाकीज़गीकी अदममौजूदगी। २ दोष, ऐब। (त्रि०) नास्ति शुद्धिर्यस्य, नञ् बहुव्री०। ३ शुद्धिहीन, पाकी-ज़गीसे बाहर। ४ दुष्ट, बदमाश। ५ अपाक, नापाक।

अशुन (हिं०) अशनि देखो।

अशुभ (सं० क्ली०) नञ्_तत्। १ अमङ्गल, बद-बख्ती। २ अशुभसूचक मङ्गलादि पापग्रह। ३ पाप, गुनाह। (त्रि०) नास्ति शुभं यस्मात् नञ् ३-बहुव्री०। ४ अशुभविशिष्ट, खराब बुरा। यात्राकालमें काकादि का बोलना और शून्य कलसी प्रभृतिका देख पड़ना भी अशुभ समझा जाता है।

अशुभोदय (सं० पु०) अपशकुन, बदशिगूनी।

अशुक्ल (सं० पु०) नञ्-तत्। १ शुक्ल न होने वाला वर्ण, जो रङ्ग सफेद न हो। २ कृष्ण, काला रङ्ग। (त्रि०) ३ कृष्णवर्ण, स्याह काला।

अशुश्रूषा (सं० स्त्री०) १ शुश्रूषाका अभाव, खिदम-तगारीकी, नौकरी या अदब कार्यमें चूकना पड़ना।

अशुष (वै० त्रि०) न शुष्यति शुषपचत्वात् कः, नञ्-तत्। १ भक्षण करता हुआ, जो खा रहा हो। २ अशोषक, जो सुखाता न हो। ३ शुष्क न होने वाला, जो सूखता न हो।

अशुष्क (सं० त्रि०) सरस, नम, हरित, तर, ताज़ा, हरा, जो सूखा न हो।

अशूकज (सं० पु०) शुष्कशालि, शूकशून्य धान्य, किसी किस्मका चावल।

अशूकजव अशूकज देखो।

अशूद्र (सं० पु०) शूद्र न होनेवाला व्यक्ति, जो अस्‌ल शूद्र न हो।

अशून्य (सं० त्रि) नञ् तत्। १ अहीन, जो खाली न हो। २ पूर्ण, भरा-पूरा।

अशून्यशयन, अशून्यशयनव्रत देखो।

अशून्यशयनद्वितीया अशून्यशयनव्रत देखो।

अशून्यशयनव्रत (सं० क्ली०) न शून्यं शयनं यस्या येन यस्माद्वा, नञ्-बहुव्री०। व्रत विशेष। पुरुषके यह रखनेसे उसकी शय्या भार्याशून्य और स्त्रीके यह व्रत रखनेसे उसकी भी शय्या पतिशून्य नहीं होती। भविष्यपुराणमें लिखा है—वर्षाकालके चातुर्मास्यके मध्य श्रावणमासवाले कृष्णपक्षकी द्वितीयासे लगा प्रतिकृष्णद्वितीयाके कार्तिक मास पर्यन्त यह व्रत रखना पड़ता है। यह विष्णुव्रत चार वत्सरमें समापन होता है। जितेन्द्रिय बन जो यह व्रत करता है, उसकी शय्या शून्य नहीं होती।

अशूला (सं० स्त्री०) सँभालू।

अशृङ्ग (सं० त्रि०) शृङ्गशून्य, सींग या चोटी न रखनेवाला।

अशृप्य (सं० पु०) असमयपक्व धान्यविशेष। (त्रि०) पाकमके अयोग्य, नया, कच्चा, जिसे कोई पका न सके या जिसकी लगाम न लगे।

अशृत (सं० त्रि०) न शृतं पक्वम् नञ्_तत्। १ अपक्व, जो पका न हो। अविक्लिन्न, जो मुलायम न हो।

अशेव (वै० त्रि०) शेवं सुखम् अस्य, नञ्-तत्। असुखकर, तकलीफ़देह। २ क्लेशकर, दर्द पहुँच।

"शेव शिव, शिवमेव।" ऋक् [illegible]

अशेष (सं० पु०) अभावे नञ्_तत्। १ शेषाभाव, बाकीकी अदममौजूदगी। (त्रि०) नास्ति शेषोऽन्तो यस्य नञ्-बहुव्री०। २ शेषशून्य, बेहदूद, जिसका छोर न रहे। ३ शेषरहित, बाकी न रखनेवाला, पूरा, समूचा।

अशेषतस् (सं० अव्य०) सम्पूर्ण रूपसे पूरे तौर पर।

अशेषता (सं० स्त्री०) सम्पूर्णता तमामी कुलियत।

अशेषस्, अशेषतस् देखो।

अशेषस् (वै० त्रि०) सन्तानशून्य, बे औलाद जिसके बालबच्चे न रहें।

अशेषसाम्राज्य (सं० पु०) शिव जिन महादेवके राज्यका छोर न है।

अशैशिर अशिशिर देखो।

अशोष (सं० पु०) पर्वत विशेष, जैनियोंके कोई देवता।

अशोक (सं० पु०) नास्ति शोको यस्मात्। नञ् ३ बहुव्री०। १ अनामख्यात वृक्षविशेष। कविलोग

वर्णन किया करते हैं, कि स्त्रियोंका पादाघात पानेसे अशोकवृक्ष फूल उठता है। 'पदाघातादशोकः' इत्यादि। परन्तु इस वर्णनका कारण क्या है, सो कुछ भी स्थिर नहीं किया जाता

अशोक दुर्गोत्सवकी नवपत्रिकामें लगता है। यथा,—

"कदली दाडिमी धान्य हरिद्रा मानक कचु।
बिल्वोऽशोको जयन्ती च विज्ञेया नवपत्रिका।"

अशोकका फूल लाल और पीला होता है, इसीसे उसके वृक्षका नाम भी रक्ताशोक एवं पीताशोक है। शास्त्रकारोंने लिखा है कि चैत्रमासकी शुक्लाष्टमीको अशोककी आठ कलियोंको खा लेनेसे फिर शोक नहीं रहता। अशोकपानका मंत्र—

"त्वामशोक हराभीष्ट मधुमाससमुद्भव।
पिबामि शोकसन्तप्तो मामशोकं सदा कुरु।"

हे चैत्रमासजात शिवके इष्टसाधन अशोक मैं शोक-सन्तप्त होकर तुम्हें पान करता हूं, तुम सर्वदा मुझे शोकरहित करो।

२ वकुलवृक्ष। (क्ली०) ३ पारा। (स्त्री०) ४ कटुकवृक्ष। (वि०) नञ्-बहुव्री। ५ शोकशून्य। (पु०) ६ विष्णु

(Saraca indica) अशोकके ये कई पर्याय देखे जाते हैं,—शोकनाश, विशोक, वञ्जुलद्रुम, वञ्जल, मधुपुष्प, अपशोक, कङ्केलि, केलिक, रक्तपल्लव, चित्र, विचित्र, कर्णपूर, सुभग, दोहली, ताम्रपल्लव, रोगितरु, हेमपुष्प, रामावामाङ्घ्रिघातन, पिण्डीपुष्प, नय, पल्लवद्रु।

अशोकका वृक्ष देखनेमें ठीक लीची या नागकेशरके पेड़ जैसा होता है। वसन्तऋतुमें यह फूलता है। फूल गुच्छेदार, हलका गुलाबी रंगका और देखनेमें बहुत कुछ रङ्गनके फूलके नाईं होता है। जब फूल खिलते हैं, उनके सौन्दर्य्यसे संसार आलोकित हो जाता है।

भावप्रकाशके मतसे इसकी छाल शीतल, तिक्त एवं कषाय है। इससे तृष्णा, दाह, क्रमि, शोष एवं विषका नाश होता है। वैद्य लोग स्त्रियोंके रजो-दोषमें इसकी छाल व्यवहार करते हैं। २ प्रसिद्ध मौर्यसम्राट्। [अशोक-प्रियदर्शी देखो।]

अशोककानन, अशोकवाटिका देखो।

अशोकघृत (सं० क्ली०) घृतभेद, कोई घी। यह प्रदराधिकारपर दिया जाता है। ४ शरावक गव्यघृत और २ शरावक अशोकमूलका वकला १६ शरावक जलमें पकाये, ४ शरावक शेष रहनेपर नीचे उतार ले। फिर २ शरावक जीरक १६ शरावक जलमें गर्मकर ४ शरावक बाकी बचनेसे उतारे और ४ शरावक केशराजरस, ४ शरावक तण्डुलोदक एवं ४ शरावक छागदुग्ध उसमें मिलाये। अन्तको चार-चार तोले जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, जीवन्ती, यष्टिमधु, पियालबीज, परुषकफल, रसाञ्जन, यष्टिमधु, अशोकमूल, द्राक्षा, शतावरी और तण्डुलीयकमूलका चूर्ण डालते हैं। इन सब वस्तुओंके एकमें पक जानेपर शर्करा देना चाहिये। (भैषज्यरत्नावली)

अशोकतरु (सं० पु०) अशोकवृक्ष, अशोकका पेड़।

अशोकतीर्थ (सं० क्ली०) अशोकनामकं तीर्थं, शाक० तत्। काशीक्षेत्रके अन्तर्गत तीर्थविशेष।

अशोक-त्रिरात्र (सं० क्ली०) त्रयो रात्रयः समाहृताः त्रयाणां रात्रीणां समाहारो वा अद् समा० ततः अशोकाख्यं त्रिरात्र शाक० तत्। नास्ति शोको येन तादृशं त्रिरात्रं वा। हेमाद्रिके व्रतखण्डसे उद्धृत विष्णुधर्मोत्तरोक्तव्रताङ्गविशेष। यह व्रत अग्रहण, ज्येष्ठ, या भाद्र मासकी पूर्णिमासे आरम्भ करके एक वर्षके बाद उद्यापन किया जाता है। इसमें प्रत्येकदिन एक बार ही भोजन करना पड़ता है। विधिपूर्वक इस व्रतको करनेसे शोकका भय नहीं रहता।

अशोकनग, अशोकतरु देखो।

अशोकनृपति, अशोक-प्रियदर्शी देखो।

अशोक-पुष्पमञ्जरी (सं० स्त्री०) दण्डक छन्दभेद। इस छन्दमें २८ अक्षर रहता और लघु गुरुका कोई नियम नहीं ठहरता है।

अशोकपूर्णिमा (सं० स्त्री०) नास्ति शोको यया, नञ्-बहुव्री० ततः तयोक्ता, पूर्णिमाः कर्म० वा पूर्वपदस्य

धीरे धीरे अशोककी प्रवृत्ति भीषणसे भीषणतर हो उठी। उन्होंने एक रमणीय वधागार स्थापन किया और चण्डगिरिक नामके एक कुमारको उसका रक्षक बनाया। मनुष्यका प्राण हरण उसका परम प्रिय कार्य था। सैकड़ों मनुष्य अनजानमें उस वधागारमें जाकर शूलमें शूलकर मर गये। कुछ दिनोंके बाद समुद्र नामक एक साधु भिखारी इच्छासे उस वधागारमें गये। उस घरमें जो जाता था वह फिर बाहर न निकलता था। पर कई दिन बीत गये, उस साधुके प्राण न निकले। यह देख दुर्दान्त चण्डगिरिक अवाक् हो गया। उसने उस साधुके प्राणनाश करनेकी यथेष्ट चेष्टा की पर किसी तरह साधुके प्राण न निकले। अन्तमें चण्डगिरिकने इस बातकी खबर राजाको दी। राजा स्वयं साधुको देखने आये। आकर उन्होंने देखा, कि उस भिक्षुके आधे शरीरमें कमल बढ़ रहा और आधेमें आग धधक रही है तथा सारा शरीर शून्यमें लटक रहा है। यह देख राजाने विस्मयके साथ उस साधुका परिचय पूछा। भिक्षुने उत्तर दिया —"मैं वही परम कारुणिक धर्मात्मा बुद्धपुत्र हूं, संसारके महाभय भवबन्धनसे मुक्त हो गया हूं। महाराज! सुनिये। भगवान् कह गये हैं कि मेरे परिनिर्वाणके सौ वर्ष बाद पाटलिपुत्रमें अशोक नामक एक राजा होगा। वह चतुरंग चक्रवर्ती धर्मराज मेरा शरीर धातुविस्तार करेगा। ८४००० धर्मराजिका प्रतिष्ठा करेगा। अतएव हे नरेन्द्र! उस नाथकी पूजा करके धर्म विस्तार करो।"

यह सुन राजा विस्मित हुए। बुद्धके नामसे उनके हृदयमें चित्तप्रसाद उपस्थित हुआ। उन्होंने हाथ जोड़कर भिक्षुसे कहा,—"दशबलसुत! मुझे क्षमा कीजिये। मैं बुद्धगण और धर्मकी शरण लूं।" इसके बाद राजाने सम्मानसहित भिक्षुको विदाय किया। अब अशोककी रुधिरपिपासा दूर हो गई। उस महाविभव चण्डगिरिक वा उस रमणीय वधागारका अस्तित्व लोप हो गया। अब वह चण्डाशोक धर्माशोकके नामसे विख्यात होने लगा।

अजातशत्रुने जो द्रोणस्तूप निर्माण किया था, अशोकने उसे खुदवा डाला और उसमेंसे शरीरधातु निकालकर नागोंकी सहायतासे रामग्राममें एक बड़ा भारी स्तूप प्रतिष्ठित किया। इसके बाद नानास्थानोंमें नानाधातुगर्भ सुवर्ण, रजत, स्फटिक एवं वैदूर्यखचित चौरासी सहस्र करण्डकी स्थापना की।

अशोक धर्मासक्त हो उठे। एकदिन उन्होंने स्थविरयशाको कहा, कि मैं एक दिनमें चौरासी हजार धर्मराजिका स्थापन करना चाहता हूं। स्थविर यशाने भी युक्ति दिखाई। अशोकराजका मनोरथ पूर्ण हुआ। तबसे वे धर्माशोकके नामसे प्रसिद्ध हुए।

एक दिन अशोकने सुना कि मथुरामें उपगुप्त नामका स्थविर है। उसके ऐसा न्यायशास्त्र और बुद्धमत और कोई नहीं है। राजाने उसे देखनेकी इच्छा प्रकटकी मन्त्रियोंने उपगुप्तको लानेके लिये दूत भेजना चाहा। परन्तु यह बात राजाको अच्छी न लगी। उन्होंने स्वयं जाकर उपगुप्त शास्त्रीसे मिलनेकी इच्छा प्रकट की। उधर उपगुप्तने भी सुना कि मौर्य सम्राट् मेरे निकट आना चाहते हैं। अशोकके धर्मानुरागसे सन्तुष्ट होकर उन्होंने तुरत ही नावपर बैठ मथुरासे पाटलिपुत्रकी यात्रा की। उपगुप्तके पहुंच जानेपर राजपुरुषने अशोकको यह शुभ समाचार दिया। उपगुप्तके आगमनका समाचार घोषणा करनेके लिये मौर्यराजने घण्टा बजानेकी आज्ञा दी। राजाके आदेशसे पाटलिपुत्र नगरी खूब सज्ज हो गई। पिछली रातमें उठकर स्वयं राजा नगरसे आगे जाकर उन्हें ले आये। उपगुप्तके समागमसे अशोक कृतार्थ हुए। अशोकको साथ ले जाकर उपगुप्तने कपिलवस्तु आदि स्थान सारनाथ प्रभृति बुद्धके लीलाक्षेत्रोंको दिखाया। उन सब पवित्र बुद्धक्षेत्रोंमें सम्राट्ने बुद्धकी अर्चना एवं असंख्य स्तूपादि निर्माण करा दिये।*

जिस समय अशोक ८४००० धर्मराजिका प्रतिष्ठित की, उसी समय देवी पद्मावतीके गर्भसे 'धर्मवर्धन' नामक एक परम रूपवान् पुत्र उत्पन्न हुआ। उसके

* [illegible] है।

पास आये। अशोक नयनरत्न पुत्रको नेत्रविहीन देखकर मूर्च्छित हो गये। कुछ देरके बाद जब मूर्च्छा टूटी, तो कुणालको गोदमें बैठाकर राजाने पूछा,—"बताओ बेटा! तुम्हारे ये दोनों सुन्दर नेत्र किस तरह नष्ट हुए।"

इसपर कुणालने कहा,—"बीती बातके लिये शोक मत कीजिये। सभी अपना अपना कर्मफल भोग करते हैं मैं भी भोग करता हूँ। क्यों किसीको दोष दूँ।"

अन्तमें जब राजाको मालूम हो गया, कि यह काम तिष्यरक्षिताका ही है, तब उन्होंने उसे बुलाकर लाल लाल आँखें करके कहा,—"केवल तेरी आँखें ही नहीं, नाक, कान सब अङ्गोंको काट डालूँगा, तब तुझे मालूम होगा कि तूने मेरे हृदयको कैसा कष्ट दिया है।"

अब कुणालने हाथ जोड़कर पितासे कहा,—"राजन्! तिष्यरक्षिता अनार्योचिता है, आप आर्य्य होकर क्रोध न कीजिये। मैत्री और क्षमाकी अपेक्षा और कोई धर्म नहीं है। मेरी आँखें निकलवाकर यदि माता सचमुच ही प्रसन्न हुई हों, तो उसी सत्यके गुणसे मेरी आँखें फिर हो जायँगी।" सत्यसे क्या नहीं होता। कुणालविश्वासके प्रभावसे तुरत ही कुणालकी आँखें पहलेकी ही तरह हो गईं, पर अशोकने तिष्यरक्षिताको क्षमा नहीं किया। उस पापिष्ठाको देह जतुगृहमें दग्धीभूत हुई।*

जिस समय राजा अशोकने ८४००० धर्मराजिकाओंकी प्रतिष्ठा और पञ्चवार्षिकव्रतका अनुष्ठान किया उसी समय उनके भाई वीतशोक तीर्थिकोंपर अनुरक्त हो गये। वे लोग उन्हें समझाते, कि श्रमण शाक्य पुत्रोंका मोक्ष नहीं है। वीतशोक भी यही समझते, वरं श्रमणोंके साथ जितनी ही बार उनका विरोध हो जाता था। अशोकको यह अच्छा न लगता था।

उन्होंने वीतशोकको धर्ममतमें लानेका एक अपूर्व उपाय निकाला। अपने मन्त्री उपगुप्तको बुलाकर पूछा, कि किसी तरह वीतशोकको सिंहासनपर बैठा सकते हो? एकदिन अमात्यगण अशोकके अङ्गोंको लेकर स्नानागारमें गये और वीतशोकसे कहा—"राजाकी मृत्युके बाद आप ही राजा होंगे। इस समय सजधजकर सिंहासन पर बैठिये, तो देखें, कि आप कैसा शोभते हैं।" वीतशोक मन्त्रियोंकी बातोंमें आ गये और अशोकके राजआभरणको पहनकर सिंहासनपर विराजे। ठीक उसी समय अशोक आ पहुँचे। 'कौन है?' अशोकके इतना कहते ही समस्त घातकोंने आकर वीतशोकको चारो ओरसे घेर लिया। अब अशोकने गम्भीर स्वरसे कहा—"देखो वीतशोक! मेरी उपेक्षा करके तुम सिंहासनपर बैठे हो। अच्छा सात दिनके लिये मैंने राज्य छोड़ दिया, इसके बाद घातकोंके हाथसे तुम्हारी मृत्यु होगी।"

सात दिनके लिये वीतशोक राजा हुए। नाच गान और आनन्दकी नदी बह चली। सातवें दिन घातकोंने आकर उनके अन्तिम दिनकी बात सुना दी। राजवेशमें वीतशोक अशोकके पास आये। अशोकने पूछा, "भाई! इन कई दिनोंमें कैसा सुख भोग किया। नाच गानमें कैसा आनन्द पाया।" इसपर वीतशोकने कहा,—"सुख कहाँ है। नाचगान देखा नहीं सुना नहीं गन्धमें आघ्राण पाया नहीं, रसास्वादन किया नहीं। देखा है केवल यही, मानो मौतरूपधारी घातकगण द्वारपर खड़े हैं।"

अशोकने कहा,—"भाई! यदि मृत्युसे इतना डरते हो, तो उसकी चिन्ता क्यों नहीं करते जिसमें मरण ही हो नहीं।" वीतशोकने कहा,—"मैंने उसी सम्यक्सम्बुद्धकी शरण ली। धर्म और भिक्षुसङ्घकी शरण ली।" वीतशोकने उसी समय प्रव्रज्या ग्रहण की। झोली, चीवर और कमण्डलु ही वीतशोकका आश्रयस्थान हुआ। वे भिक्षा माँगकर जो लाते उसीसे अपनी शरीर रक्षा करते। नानादेश, नाना नगरोंमें होते हुए वे प्रत्यन्त देशमें पहुँचे। वहीं वे महाव्याधिग्रस्त हुए। यह समाचार पाते ही अशोकने उनकी चिकित्साके लिये औषधादि भेज दिये।

* दिव्यावदानमें कुणालावदान।

माघने और सङ्घमित्राके स्वामी अग्निब्रह्मने संन्यास धर्म अवलम्बन किया। उनकी देखादेखी हजारों मनुष्य बौद्धधर्ममें दीक्षित हुए थे। अशोककी धर्मोन्मत्तता क्रमसे प्रबल होने लगी।

उपराज तिष्यके संन्यासधर्म ग्रहण कर लेने पर अशोकने अपने प्रियपुत्र (महिन्दो) महेन्द्रको उपराज बनानेकी इच्छा की थी, पर कुछ ही दिनोंमें महेन्द्रने भी संन्यास ग्रहण कर लिया। स्थविर महादेवने महेन्द्रको दीक्षित किया। स्थविर माध्यन्तिकने उनके लिये कर्मवचन अनुष्ठान किया। इसी समय धर्मपाल सङ्घमित्राके उपाध्याय एवं आयुपाली उनके आचार्य हुए। अशोकके छठवर्षमें महेन्द्र और सङ्घमित्रा दोनोंने प्रव्रज्या ग्रहण किया।

कहावत प्रसिद्ध है, कि बहुते योगी मठ उजार। धीरे धीरे बौद्ध आचार्य और उपाध्यायोंकी संख्या इतनी बढ़ी एवं इतना मतभेद होने लगा, कि अन्तमें गोल-माल मच गया और भारतके सर्वत्रके बौद्धारामोंमें उपोषथ एवं प्रावरण बन्द हो गया। इस तरह सात वर्ष बीत जानेपर इसकी खबर अशोकको लगी। उन्होंने कहला भेजा, कि मेरे अशोकाराममें जितने भिक्षु रहते हैं सभी उपोषथव्रत पालन करें। इसपर भिक्षुसङ्घने उत्तर दिया, कि तीर्थिकोंके साथ हम लोग उपोषथव्रत पालन न कर सकेंगे। राजाको यह खबर मिली। व्रतपालन न करनेसे किसे अधर्म हुआ। राजाके मनमें सन्देह उत्पन्न हुआ। उन्होंने मोग्गलि पुत्त तिष्यके निकट जाकर अपने मनका सन्देह कहा। तिष्यने 'तित्तिरजातक' सुनाकर सम्राट्को कहा,— 'प्रतीचा न रहनेसे पाप नहीं होता।' मोग्गलिपुत्तके उपदेशसे राजाको ज्ञान हुआ।

अब अशोकके अधीन राजगण एवं बन्धुगण सम्राट्के परामर्शसे स्तूपादि बनवाने लगे। सम्राट्ने भी बौद्धधर्मके प्रचारके लिये महेन्द्रको सिंहल भेज दिया।

सिंहलराज प्रियतिष्यने महेन्द्रसे बौद्धधर्मकी दीक्षा ली। उसके बाद प्रमदावर्गके उद्देश्यसे सङ्घमित्रा भी सिंहल गई थी और सिंहलराजमहिलाओंने उनसे दीक्षा ली थी।

कुणालका अन्धत्व।

हेमचन्द्ररचित त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरितके मतसे,—बिन्दुसारके अशोकश्रीने जन्मग्रहण किया। बिन्दुसारकी मृत्यु हो जाने पर उन्होंको राज्य मिला था। अशोकके कुणाल नामक एक पुत्र हुआ। अशोकने कुणालको उज्जयिनीपुरी दी। वे वहां जाकर रहने लगे। उनकी रक्षाके लिये कुछ शरीररक्षक नियुक्त हुए। इस तरह आठ वर्ष बीत जानेपर एकदिन राजा अशोकने एक लोकसे सुना, कि कुणालका अध्ययनकाल उपस्थित हुआ है यह सुनकर राजा बहुत सन्तुष्ट हुए और तुरत ही उन्होंने अपने हाथसे कुणालको एक पत्र लिखा। सहज ही समझमें आ जानेके लिये यह पत्र प्राकृत भाषामें ही लिखा गया। उसमें एक जगह 'अध्ययन करें' के स्थानमें 'अधीउ' लिखा गया था।

जिस समय राजा पत्र लिख रहे थे, उस समय उनके पास कुणालकी एक विमाता बैठी हुई थी। पत्रको धीरे धीरे राजाके हाथसे लेकर उसने पढ़ा। पढ़नेपर उसके मनमें हिंसा उत्पन्न हुई। कुणालको राज्यसे वञ्चित कर अपने पुत्रको राजसिंहासनपर बैठानेके लिये वह मन ही मन कोई उपाय सोचने लगी। उसी समय राजा कुछ अन्यमने हो उठे। अवसर पाकर कुणालकी विमाताने अपनी कामना पूर्ण की। पत्रमें जहां 'अधीउ' लिखा था, उसमें अपनी आंखके काजलसे एक बिन्दु बैठाकर 'अधीउ' को उसने 'अंधीउ' बना दिया। राजाने भूलसे दूसरी बार पत्रको नहीं पढ़ा, अपने नामकी मुहर देकर चिट्ठीको उज्जयिनी भेज दिया।

उधर कुणालने पितृनामाङ्कित पत्रको पाकर पढ़ने उसे माथे पर चढ़ाया, फिर एक कायस्थसे उसे पढ़ाने लगे, पत्र पढ़कर वह एकदम विषण्ण हो गया। उसे विषण्ण देख कुणाल आप ही पत्र पढ़ने लगे। पत्रमें 'अंधीउ' देख उन्होंने सोचा, कि हमारे मौर्यवंशमें कभी किसीने गुरुकी आज्ञा लङ्घन नहीं की। अतएव यदि मैं यह न करूं तो सभी मेरे दृष्टान्तपर चलेंगे। सुतरां मैं गुरुकी आज्ञा लङ्घन न करूंगा। इतना कह उन्होंने

तप्तशलाकासे अपने हाथसे अपनी दोनों आंखें फोड डाली। उधर अशोक यह समाचार पाकर अपने कूटलेखके लिये आत्माको बार बार धिक्कारकर अत्यन्त दुःखित हुए। वे चिन्ता करने लगे,—"हाय! मेरी सब आशा भरोसा मट्टी हो गयी। मैंने जिसे युवराज बनाकर फिर राजा बनानेका इरादा कर लिया था, वह अब राज्य वा मण्डल किसीके उपयुक्त नहीं है। मेरी मनकी इच्छा मन ही में रह गयी।" इस तरह सोच विचारकर राजाने कुणालको एक समृद्धिशाली ग्राम दिया। कुणाल उसमें रहने लगे।

कुछ दिनोंके बाद उनकी शरत्श्री नाम्नी स्त्रीके गर्भसे एक पुत्र हुआ। कुणाल विमाताका मनोरथ व्यर्थ करनेके इरादेसे राज्य लाभ करनेके लिये पाटलिपुत्र गये। वहां जाकर गाने बजानेसे सबका मन मोह लिया। सभी उन्हें प्यार करने लगे। धीरे धीरे यह बात राजाके कानमें पडी। वे अन्धे गायकको अपने प्रासादमें बुलाकर पर्देकी ओटसे उसका गाना सुनने लगे। अन्धेने गीतिच्छन्दमें अति मधुर स्वरसे इन बातोंको कहा,—"हाय! चन्द्रगुप्तका प्रपौत्र, विन्दुसारका पौत्र और अशोकश्रीका पुत्र यह अन्धा आज राह राह भीख मांगता फिरता है।" गाना सुनकर राजाने अन्धेसे पूछा,—"तुम कौन हो।" इसके उत्तरमें अन्धेने कहा,—"महाराज! मैं आपका पुत्र कुणाल हूं। आपहीके आदेशसे मैं अन्धा हुआ हूं।"

यह बात सुन राजाने सहसा पर्देको हटा दिया और डबडबाई हुई आंखोंके साथ पुत्रको आलिङ्गन करके पूछा,—"वत्स! तुम क्या चाहते हो।" इस पर कुणालने कहा,—"पिता! मेरे एक पुत्र हुआ है। आप उसीको राजतिलक दीजिये।" पुत्र कुणालकी बातसे तुष्ट होकर राजाने उसकी बात स्वीकार की एवं महासमारोहके साथ पौत्रको राजभवनमें लाकर उसका नाम 'सम्प्रति' रखा।

पहले वचन दे देनेके कारण अशोकने दश ही दिनके बाद बहुत ही कम उम्रमें अपने पौत्रको राजसिंहासनपर बैठा दिया। राजसिंहासनपर बैठनेके समय सम्प्रति दुधपीते बच्चे थे। धीरे धीरे उम्रके साथ साथ उनकी बुद्धि, विक्रम और विद्या प्रभृति राजोचित समस्त गुण बढ़ने लगे। उन्होंने जैनधर्म ग्रहण किया।

उसी समय धर्मविप्लव उपस्थित हुआ, सुतरां सब जैन आकर पाटलिपुत्रमें इकट्ठे हुए। इकट्ठे होकर सबने उसी समय एक सङ्घ जोड़ा और उसका नाम श्रीसङ्घ रख दिया। इस सङ्घमें जैन धर्मशास्त्र संगृहीत हुआ। (परिशिष्ट पर्व)।

प्रियदर्शीके अनुशासनसे * परिचय।

बौद्ध एवं जैन ग्रन्थोंसे अशोकका जो विवरण लिखा गया है, उसमें प्रकृत बात रहनेपर भी अत्युक्ति और काल्पनिक बातें मिल गई हैं, इसमें सन्देह नहीं। इसलिये उनका प्रकृत परिचय जाननेके लिये उनके राज्यकालके उत्कीर्ण अनुशासनोंको ही अवलम्बन करना पड़ता है। इन अनुशासनोंसे प्रियदर्शीका अतिसंक्षिप्त परिचय मिलता है। वही अब कहा जाता है।

अनुशासनसे प्रियदर्शीके बालकपनका परिचय नहीं मिलता। उनकी गिरिलिपिसे प्रकट है, वे पहले अतिशय मृगयाप्रिय और युद्धप्रिय थे। राजा होकर ही वे बौद्धधर्मके अनुरागी नहीं हुए। पहले वे अतिशय मांसप्रिय थे। प्रथम गिरिलिपिसे प्रकट है, 'सुपथ्यके लिये उनकी पाकशालामें प्रतिदिन बहुत जीववध होता था। उनके अभिषेकके आठवें वर्षके बाद उन्होंने कलिङ्ग जय किया। उसमें एक लाख पचास हजार आदमी कैद हुए थे। लाख आदमी (युद्धमें) निहत हुए और उससे कई गुना कालके कलेवा हो गये।' इस संक्षिप्त विवरणसे मालूम पड़ता है, कि जिस समय वे राजपदपर अधिष्ठित हुए थे, उस समय वे समग्र भारतके एकच्छत्र अधिपति न हो सके थे, अथवा बौद्ध वा जैनधर्मपर भी उनका विशेष आस्था थी, ऐसा नहीं मालूम होता। उनकी दूसरी,

* प्रियदर्शीका अनुशासन दो श्रेणियोंमें विभक्त है। कुछ तो गिरिमालाके ऊपर खुदे हुए हैं, वे गिरिलिपि (Rock edict) और बाकी कुछ स्तम्भमें उत्कीर्ण हैं, वे स्तम्भलिपि (Columnar edict) के नामसे प्रसिद्ध हैं।

पांचवें और तेरहवें शिलालिपिसे मालूम होता है उनके राजत्वके चौदहवें वर्षके भीतर वर्त्तमान भारत तथा इस भागके भी अधिक उनके साम्राज्यभुक्त हो गया था। उस समय उत्तरमें हिमालयको पाद देशस्थ तराई ([illegible]), दक्षिणमें मेसूर और कोसा नदीका उत्तरांश, पूर्वमें बङ्गोपसागर और ब्रह्मपुत्रनद एवं पश्चिममें भारतको वर्त्तमान पश्चिमसीमा—इस विस्तीर्ण भूभागमें उनका शासनदण्ड परिचालित हुआ था। सीमान्तवर्त्ती प्रदेशोंमें जो सब राजे राज्य करते थे और जो सब नगर अवस्थित थे, उनके सम्बन्धमें तेरहवीं लिपिमें इस तरह लिखा हुआ है,—

"विजयमें यही (विजय) देवताओंके प्रिय (प्रियदर्शी) मुख्य विजय (समझते हैं) यथा—धर्मविजय, उन्होंने देवताओंका प्रिय पाया है। यहां (उनके अधिकारमें) और सर्व अपरान्त देशमें छः सौ योजन दूरपर अन्तियोक नामा राजा है, बादमें चार राजा तुरमय, अन्तिकिनि, मक और अलिकसुदर नामके (हैं), दक्षिणमें चोड़, पाण्डु (पाण्ड्य), ताम्रपर्णिय (ताम्रपर्णी) और सिंह राजा भी (हैं)।" *

यवन, कम्बोज, पैतैनिक, गन्धार, रिष्टिक वा राष्ट्रिक, विश और व्रजि, नाभक और नाभपन्ति, भोज, अन्ध्र और पुलिन्दगणने भी उनकी अधीनता स्वीकार की थी।

दक्षिणसीमान्तवर्त्ती अविजित देशोंमें चोड़, पाण्ड्य, सत्यपुत्र, केरलपुत्र और ताम्रपर्णीका उल्लेख उनके अनुशासनमें है। †

शासनकी सुव्यवस्था करनेके लिये उन्होंने कुछ नियम बनाये थे। प्रत्येक प्रधान नगर 'महामात्र' नामक राजकर्मचारीके अधीन रहता था। समस्त साम्राज्य कई प्रदेशोंमें विभक्त किया गया था। प्रत्येक प्रदेशका शासन करनेके लिये एक एक 'प्रादेशिक' नियुक्त थे। कई प्रदेशोंका एक-एक राज्य गठित था। एक एक राज्य 'राजुक' नामक एक प्रधान शासक-कर्मचारीके अधीन रहता था। राज्य कई प्रधान अंशोंमें विभक्त थे। उनमें पाटलिपुत्र, उज्जयिनी, तक्षशिला और तोसलि प्रधान था। पाटलिपुत्रमें सम्राट्की राजधानी थी।* उज्जयिनी, तक्षशिला और तोसलिका शासनभार एक एक राजकुमारके हाथमें दे दिया गया था। सम्राट्ने स्वराज्य एवं परराज्यका समाचार जाननेके लिये 'प्रतिवेदक' नामक एक श्रेणीका कर्मचारी नियुक्त कर रखा था। ये लोग आकर प्रजा और मंत्रियोंके गुप्त कार्यादिका समाचार सम्राट्को देते थे।

कलिङ्ग विजयके समय बहुतसे आदमियोंके खूनसे उनके हृदयका भाव पलट गया। इसी समयसे उनके चित्तमें ममता और अहिंसा वृत्ति जाग उठी।

वयोवृद्ध और ब्राह्मणोंके साथ पहले उनका अनुराग बौद्ध धर्मपर हुआ, फिर तो अन्तमें वे पक्के बौद्ध हो गये। और बौद्धधर्मके प्रचारके लिये कमर कस कर खड़े हो गये। असि वा बलप्रयोग द्वारा अथवा प्रलोभन दिखाकर अपना सदुद्देश्य साधन करनेके लिये अग्रसर नहीं हुए। सब लोगोंपर दया, दान, धर्म उपदेश और साधुशिक्षा ही उनके धर्मप्रचारका उपाय हो उठी।

उन्होंने दसवें वर्ष घोषणा की,—"पहले उत्सव भोगके लिये जो विहारयात्रा होती थी, वह अबसे धर्मयात्रा होगी।" श्रमण, ब्राह्मण व वृद्धोंसे भेंट मुलाकात, दीन दरिद्रोंको दान, धर्मप्रचार और धर्म शिक्षाके लिये ही इस धर्मयात्राकी सृष्टि हुई।" बारहवें वर्ष सम्राट्ने जनसाधारणका यथोचित प्रबन्ध कर दिया। उसी वर्ष उनका धर्मानुशासन लिपिबद्ध हुआ। सद्धर्मपालनके लिये सब जीवोंके प्रति अहिंसा, ब्राह्मण श्रमण और कुटुम्बियोंके साथ सद्व्यवहार, पितामाता, गुरुजन तथा बड़ोंकी सुश्रूषा प्रभृति, आज्ञायें प्रचारित हुईं। राजुक और प्रादेशिकोंका आदेश दिया गया कि उन लोगोंको राजकाज निर्वाह और धर्मप्रचार करनेके लिये प्रति पांचवें वर्ष अपने अपने इलाकेका दौरा करना होगा। पिता, माता, बन्धुबान्धव, ज्ञाति, ब्राह्मण और श्रमणोंकी सुश्रूषा,

---

* Epigraphia Indica, Vol. II. P. 473.

† दूसरी और तेरहवीं लिपि देखना।

जीवोंका दान और पाखण्डियोंके ऊपर निन्दा-विमुखता इत्यादि चलते हैं, कि नहीं, इसपर लक्ष्य रखना होगा। प्रजाकी इच्छा, अमात्य वा पञ्चायतका विवाद वा ठगोंकी बात सुनानेके लिये प्रतिवेदकगण जब चाहें उनके पास जा सकेंगे। सब काम शीघ्र सुसम्पन्न हो जानेके लिये ही सम्राट्ने ऐसा आदेश किया था।

उस समय भी यज्ञयूपमें यथेष्ट पशुवध होता था, यज्ञके लिये पशुवध करना ब्राह्मणधर्ममें निन्दित नहीं वरं अनुष्ठेय है। सम्राट्ने घोषणा कर दी,—"आहारके लिये किसी जीवका वध करना अकर्त्तव्य है। यज्ञयूपमें भी जीवनाश करना उचित नहीं। राजरन्धनशालामें आहारके लिये किसी जीवकी हत्या न होगी।"*

प्रियदर्शीने निज राज्यमें और दूरदेशीय विभिन्न स्वाधीनराज्योंमें भी मनुष्य एवं साधारण पशुकी प्राणरक्षाके लिये दो प्रकारके चिकित्सालय संस्थापन किये थे। जहां औषध न मिलती थी, वहां नवीन बीज रोपन कराया था। उनकी आज्ञासे सर्वसाधारणके लिये कुयें खुदवाये गये थे।

उनके धर्मानुशासनका प्रचार होता है, कि नहीं और सर्वसाधारण उसके अनुसार काम करते हैं कि नहीं, यह देखनेके लिये प्रियदर्शीने अपने अभिषेकके तेरह वर्षके बाद 'धर्ममहामात्य' नामक कुछ अमात्योंको नियुक्त किया था।†

इस समय सर्वसाधारणके हितके लिये प्रियदर्शीका चित्त आपही आकृष्ट हुआ था, दूसरेके लिये उनका हृदय व्याकुल हो उठा था। इस समय उन्होंने जो सद्धर्म प्रचार किया, उसकी मूल नीति यही थी,—

१ जीवकी अहिंसा, २ पितामाताकी शुश्रूषा, ३ बन्धु और ज्ञातिवर्गके साथ सद्व्यवहार, ४ ब्राह्मण एवं श्रमणोंको दान देना और उनकी शुश्रूषा करना, ५ दीन और भृत्योंके साथ सद्व्यवहार, ६ विधर्मियोंके प्रति निन्दाविमुखता, ७ श्रम, भावशुद्धि, कृतज्ञता और दृढ़भक्ति।*

* ७ वीं गिरिलिपि।

† पञ्चम गिरिलिपि।

गिरिलिपिमालाकी आलोचना करनेसे ऐसा नहीं मालूम होता, कि वे राजत्वकी चौदहवें वर्ष तक सम्पूर्णरूपसे बौद्ध हो गये थे। ब्राह्मणधर्ममें लालित पालित होनेके कारण ब्राह्मणधर्मपर भी उनका अनुराग ह्रास न हुआ था। अशोकके पितामह चन्द्रगुप्त जैनधर्मानुरागी थे। अधिक सम्भव है, कि आजीवक और जैनसंसर्गसे उन्होंने पहले अहिंसाधर्म सीखा हो, और वयोवृद्धि एवं ज्ञानवृद्धिके साथ साथ बौद्धाचार्योंके प्रभावसे वे धीरे धीरे बौद्ध हो गये हों।

दाक्षिणात्यमें मैसूरके अन्तर्गत चित्तलदुर्गके अधीन सिद्दापुरसे आविष्कृत गिरिलिपिमें लिखा है,—

"देवगणके प्रिय (प्रियदर्शी) ने यह कहा है, कि ढाई वर्षसे अधिक मैं उपासक था, किन्तु (उस समय भी) कोई चेष्टा नहीं की। छः वर्ष क्यों, उससे भी अधिक समय तक मैं सङ्घमें उपगत था। उस समयमें (धर्म) की वृद्धिके लिये चेष्टा की थी। जो सब मनुष्य (ब्राह्मण) जम्बूद्वीपमें सत्य अनुमित थे, वे सब इस समय देवगणसहित असत्य प्रतिपन्न हुए।" †

प्रियदर्शीने ठीक किस समय बौद्धधर्म ग्रहण किया, यह जाननेका उपाय नहीं। उनकी तेरहवीं गिरिलिपिसे प्रकट है, कि उन्होंने अभिषेकके आठवें वर्षके बाद (नववर्षमें) कलिङ्ग विजय किया। वहां बहुतसे प्राणियोंकी हत्या देखकर उनके मनमें अनुताप हुआ। उसी अनुतापसे उनका मन धर्मपथपर दौड़ा। ऐसे स्थलमें ऐसा मालूम पड़ता है, कि अभिषेकके दशवें वर्ष वे उपासक हुए।

पालिमहावंशके मतसे, राज्यलाभके चार वर्ष बाद अशोकका अभिषेक हुआ। यदि यही सच है, तो राज्यलाभके अन्ततः चौदह वर्ष बाद उन्होंने बौद्धधर्मग्रहण किया। निग्लीवके अनुशासनमें लिखा है, अभिषेकके चौदह वर्ष बाद प्रियदर्शीने कोणागमन नामक गतबुद्धके पूर्वस्थित स्तूपको बढ़ाया।‡

* द्वितीय गिरिलिपि। † पञ्चम गिरिलिपि। ‡ सप्तम गिरिलिपि।

पडेरियाकी गिरिलिपिसे भी मालूम होता है, कि अभिषेकके बीस वर्ष बाद इन्होंने शाक्यबुद्धके जन्मस्थान लुम्बिनी ग्राममें जाकर बुद्धकी पूजा की और उस ग्रामको बुद्धके उद्देशसे करवर्जित कर दिया।

प्रियदर्शीने बौद्धधर्मके प्रचारके लिये भी विशेष चेष्टा की थी। जयपुरके अन्तर्गत भाब्रासे आविष्कृत गिरिलिपिमें ऐसा ही लिखा है,—

'राजा प्रियदर्शी मागधसङ्घको अभिवादन करके कहते हैं, निरापद सबकी इच्छा करते हैं। आप लोगोंको मालूम है, बुद्ध, धर्म और सङ्घका प्रवाद और सम्मानना करता हूं। भगवान् बुद्धने जो कुछ कहा है, सभी सुभाषित है। जहांतक मैं आदेश कर सकता हूं वहां तक मैं उसको घोषणा करना इसलिये उत्तम समझता हूं, कि उससे सद्धर्म चिरस्थायी होगा, धर्मपर्याय यही है—विनयसमुत्कर्ष, आर्य्यवंश, अनागतभय मुनिगाथा, मौनेयसूत्र, उपतिष्यप्रश्न और लाघुलोवादमें मृषावाद भगवान् बुद्ध कर्तृक परिभाषित है। मेरी इच्छा है, कि बहुतसे भिक्षु और भिक्षुणियां अविरत इन धर्मपर्यायोंको सुनें और ध्यान करें; उपासक और उपासिकायें भी ऐसा ही करें। इसी अभिप्रायसे यह लिखवाया, जिसमें सर्व साधारणको मेरी इच्छा मालूम हो जाय।'

उक्त धर्मपर्याय या धर्मग्रन्थोंमें कुछका आभास पाया गया है। विनयसमुत्कर्ष—विनयपिटकका सारांश प्रातिमोक्ष (पातिमोक्ख) अनागतभय—सूत्रपिटकके अङ्गुत्तरनिकायग्रन्थका 'अरञ्ञकानागतभयसुत्त,' उपतिष्यप्रश्न—विनयपिटकका महावग्ग ग्रन्थके 'सारिपुत्र-प्रश्न, मुनिगाथा—सूत्रपिटकके सुत्तनिपातके अन्तर्गत 'मुनिगाथा' नामक १२वां सूत्र लाघुलोवादमें मृषावाद—मज्झिमनिकायका अम्बलट्ठिका राहुलोवाद नामक ६१वां सूत्र।

सिंहलके दीपवंश और महावंशमें भी लिखा है, कि अशोकके समयमें दूसरी धर्मसङ्गीति हुई थी और उसमें बुद्धके उपदेशमूलक शास्त्रोंका संग्रह हुआ था।

केवल भारतमें ही नहीं, विदेशमें भी धर्मप्रचार करनेके लिये प्रियदर्शीने विशेष यत्न किया था। जहां अन्तियोक (Antiochus), तुरमय (Ptolemy), अलिकसुन्दर (Alexander) आदि यवनराज राज्य करते थे। मिस्र, ग्रीस प्रभृति सुदूरदेशोंमें भी प्रियदर्शीने धर्मप्रचारक भेजे थे। सहसरामकी गिरिलिपिमें २५६ भिक्षु या धर्मप्रचारकोंका उल्लेख है। सिंहलके दीपवंशमें दश प्रधान धर्मप्रचारकोंके नाम और उनमेंसे कौन किस देशमें भेजे गये थे, उसका उल्लेख है। यथा,—काश्मीर और गान्धारमें मध्यन्तिक (मध्यान्तिक), महिष (महिसुर)में महादेव, वनवासी (या उत्तर कानड़ा)में रक्षित, अपरान्त देशमें काम्बोज देशीय धर्मरक्षित, महाराष्ट्रमें महाधर्मरक्षित, योनदेश (सिरीय और पश्चात्य ग्रीकराज्यों)में महारक्षित, हिमवत्प्रदेशमें मज्झम (मध्यम), सुवर्णभूमि (ब्रह्म मलय आदि स्थानों)में शोण और उत्तर एवं सिंहलमें महेन्द्र (महिन्दो)।

धर्मोन्नति और राज्यवृद्धिके साथ साथ प्रियदर्शीकी दया भी विश्वव्यापिनी हो गई थी। उनके पञ्चम स्तम्भलिपिमें लिखा है —

'देवताओंके प्रिय राजा प्रियदर्शी यह कहते हैं, अभिषेकके छब्बीस वर्ष बाद नीचे लिखे हुए जीवोंका वध बन्द कर दिया गया—शुक, सारिका, अरुण चक्रवाक, हंस नान्दीमुख, गिलाट, जतुका अम्बाकपीलिका, दुडी, अनठिकामत्स्य, वेदवेयक, गङ्गापुपुटक, संकुजमत्स्य कफटशयक, पण्णसस, सृमर, षण्डक, ओकपिण्ड पलसत, श्वेतकपोत ग्राम्यकपोत, और दूसरे दूसरे चौपाये, जो भोगमें नहीं आते और खाये नहीं जाते; अजका (बकरी), एड़का (भेड़ी), शूकरी, गर्भिणी या दुग्धवती ये सभी अवध्य हैं। उनके छ महीनेसे कमके बच्चे भी अवध्य हैं। कुक्कुट न काटना, तुषमें जीव दग्ध न होगा। अभिप्राय वा हिंसार्थ वनको न जलाना। जीवद्वारा अन्य जीवका पोषण न करना। तीन चातुर्मास्य, पौष पूर्णिमा, चतुर्दशी, पञ्चदशी एवं प्रतिपद् और प्रति उपवासके दिन मत्स्य अवध्य है। इन सब दिनोंमें मछलोंकी बिक्री भी न होगी। उस दिन नागवन और कैवर्तभोगमें जो और और जीव रहेंगे, वे

भी अवध्य हैं। अष्टमी, चतुर्दशी और पूर्णिमा, तिष्य और पुनर्व्वसु नक्षत्रयुक्त दिन, तीन चातुर्मास्य, और पर्वदिनमें वृष, अज, मेष, शूकर और अन्यान्य जीव खासि न किये जायंगे। तिष्य और पुनर्वसु, चातुर्मास्य पूर्णिमा और चातुर्मास्य पक्षमें अश्व वा गोको लाञ्छित न करना।'

वे बौद्धधर्मावलम्बी और बौद्धोंपर अनुरक्त होनेपर भी ब्राह्मण और श्रमणपर समान भक्ति दिखाते थे। बौद्ध होनेके बाद उन्होंने यज्ञमें पशुवध होनेकी निन्दा की है और 'जो सब मनुष्य जम्बूद्वीपमें सत्य अनुमित होते अब देवगणसहित असत्य प्रतिपन्न हुए' इत्यादि उक्ति द्वारा ब्राह्मणधर्मपर कटाक्ष करनेपर भी वे विद्वान् ब्राह्मणका यथेष्ट समादर करते थे।

वे जीवनके अन्ततक बौद्ध रहे, कि नहीं, सो नहीं कहा जा सकता। वे अभिषेकके बीस वर्ष बाद आजीवक जैनियोंपर भी सदय हुए थे, यह बराबरकी लिपिसे प्रकट होता है। इसीसे कोई कोई अनुमान करते हैं, कि अशोकने अन्तमें आजीवकधर्म अवलम्बन किया था। जैन ग्रन्थोंसे भी मालूम होता है, कि अशोककी जीवद्दशामें राज्यकाल शेष हो आनेपर और उनके शिशुपौत्र सम्प्रतिके उनके द्वारा राजपद लाभ करनेपर पाटलिपुत्रमें श्रीसङ्घ हुआ था, और पहले बौद्धशास्त्र जिस तरह सङ्गृहीत हुआ था, इस श्रीसङ्घमें उसी तरह जैनाचार्योंने जैनशास्त्र संग्रह किया था।

अशोक प्रियदर्शीका कालनिर्णय।

'तीत्थुगलिय-पयन्न'* और 'तीर्थोद्धारप्रकीर्ण'† नामक प्राचीन जैन-शास्त्रके मतसे जिस रातको तीर्थङ्कर महावीर स्वामीने सिद्धि पायी, उसी रातको पालक राजा अवन्तीके सिंहासनपर बैठे थे। पालकवंश ६०, उसके बाद नन्दवंश १५५, मौर्यवंश १०८, पुष्यमित्र ३०, बलमित्र एवं भानुमित्र ६०, नरसेन वा नरवाहन ४०, गर्दभिल्ल १३ और शकराजने ४ वर्ष राजत्व किया। महावीरस्वामीके परिनिर्वाणसे शकराजके अभ्युदयकाल पर्यन्त ४७० वर्ष बीते थे। इधर सरस्वती-गच्छकी पट्टावलीसे देखते, कि विक्रमने उक्त शकराजको हराया सही, किन्तु सोलह वर्ष तक राज्याभिषिक्त न हुए। उक्त सरस्वती-गच्छकी गाथामें स्पष्ट लिखा है,—"वीरात् ४९२, विक्रमजन्मान्त वर्ष २२, राज्यान्त वर्ष ४" अर्थात् शकराजके ४७० और विक्रमाभिषेकाब्दके ४८८ अर्थात् सन् ई०से ५४५-४ वर्ष पहले महावीरस्वामीको मोक्ष मिला था।

पूर्ववर्ती ऐतिहासिक वीरमोक्षके ४७० वर्ष बाद शकराजका पराजय और विक्रमका अभिषेक-मान सन् ई० से ५२७ वर्ष पहले वीरमोक्षाब्द ठहराते रहे। किन्तु अब हम सरस्वतीगच्छकी गाथासे अच्छी तरह समझते हैं, कि यह भी १७ वर्ष बाद अर्थात् सन् ई० से ५४५ वर्ष पहले वीरमोक्ष हुआ था। आश्चर्यका विषय है, कि सिंहल, ब्रह्म, श्याम प्रभृति बौद्ध-समाजमें उक्त वीरमोक्षके दूसरे वर्ष ही बुद्धका निर्वाणाब्द निर्णीत किया गया। सिंहलवाले पाली महावंशके मतसे बुद्ध-निर्वाणके २१८ वर्ष बाद अशोकका राज्याभिषेक हुआ था।‡ इधर जैनाचार्य हेमचन्द्रके परिशिष्टपर्वमें लिखा है,—वीरमोक्षाब्दके

---

* "ज रयणिं सिद्धिगओ अरह तित्थ करो महावीरो।
त रयणिमवन्तिराअभिसित्तो पालओ राजा॥
पालगरज्जो सट्ठी पणपन्नसयं वियाण नंदाणं।
मरुयाणं अट्ठसयं तीसा पुण पूसमित्ताण॥
बलमित्त-भाणुमित्ता सट्ठीचत्ताय होंति नरसेणे।
गद्दभसयमेगं पुण पडिवन्नो तो सगोराया॥
पंचयमासा पंचयवासा छच्चे वहुंति वाससया।
परिनिव्वयस्स अरहतो उपन्नो सगो राया॥" (तीत्थुगलियपयन्न)

† "ज रयणिं कालगओ अरिहा तित्थ करो महावीरो।
तं रयणिं अवंतिवई अभिसित्तो पालओ राया॥ १॥
सट्ठी पालग रन्नो पणपन्नसयंतु होइ नंदाण।
अट्ठसयं मुरियाण तीसंचिय पुस्समित्तस्स॥ २॥
बलमित्त-भाणुमित्ता सट्ठी वरिसाणि चत्त नरवाहणो।
तह गद्दभिल्लरन्नो तेरसवरिसा सगस्स चउ॥ ३॥"
(तीर्थोद्धारप्रकीर्ण)

‡ "जिननिब्बानतो पच्छा पुरे तस्साभिसेकतो।
अट्ठारसं वस्ससतं द्वयमेवं विजानियं॥"
(महावंश ५म परि०

न कौशिकको उसमें स्नान करनेसे अश्वमेध फल प्राप्त होता है। विष्णुके मतसे यदि बुधवारको पुनर्वसु नक्षत्र युक्त चैत्रमासकी शुक्ल अष्टमी हो तो सब नदियोंमें स्नान करनेसे वाजपेय यज्ञका फल लाभ होता है।

अशोक (सं० पु०) शुच अच् नञ्-तत्। शोका भाव रहनेको अष्टमीव्रतमी।

अशोच्य (सं त्रि०) शुच-कर्मणि-ण्यत्, नञ् तत्। १ शोकानर्ह, रञ्ज न करने काबिल। २ पाप नाशी।

अशोथनेत्रपाक (सं० पु०) बिना शोथ नेत्रपाकरोग, जिस आंखके कोयेमें सूजन न रहे।

अशोभना (सं० स्त्री०) अभावे नञ्-तत्। १ शोभा का अभाव, अप्रकाशकी अष्टमी, मन्दगी, मैला पन। २ भूषणका न रहना। (त्रि०) नास्ति शोभनं यस्य नञ् बहुव्री०। ३ शोभनशून्य, मैला-कुचैला, मन्दा। ४ अयुक्त गलत।

अशोधित (सं० त्रि०) शुध् णिच्-क्त टद् शुध न शोधित, नञ्-तत्। १ जलादि द्वारा धौत न किया हुआ मैला मन्दा जो पानी वगैरहसे साफ़ किया न गया हो। २ परिशोधन किया हुआ, जो अदा न किया गया हो। ३ शुद्ध न किया हुआ, जो सही न किया गया हो।

अशोभन (सं० स्त्री०) शुभ-भावे-ल्युट, अभावे नञ्-तत्। १ मङ्गलका अभाव, खुशीकी अदमगी। (त्रि०) कर्तरि ल्यु, नञ्-तत्। २ कुरूप, जो खूबसूरत न हो। ३ कुत्सित, खराब बुरा।

अशोरी (अशौरी) बम्बई प्रान्तका थाना जिलेके सहिम ताल्लुकाका किला। यह पर्वतके शिखरपर अवस्थित है। इसके इधर उधर ऐसा उच्च स्थान नहीं पड़ता जिसपर तोप लगाया जा सके। पर्वत काट कर एक सङ्कीर्ण मार्ग निकाला गया है। इस मार्गमें दो मनुष्य साथ चल नहीं सकते। थोड़े ही वीर इसकी रक्षाको यथेष्ट होते और पाषाण लुढ़काकर कितनी ही सेनाको नाश कर सकते हैं। पहले बहुत तक महाराष्ट्रोंका इसपर अधिकार रहा था।

अशोषणीय, अशोष देखो।

अशोष्य (सं० त्रि०) शुष णिच्-कर्मणि यत् शोप., नञ्-तत्। शोषण किये जानेको अयोग्य जिसे कोई सुखा न सके।

अशौच (सं० क्ली०) शुचेर्भावः शौचं ततो नञ्-तत्। शुचिका अभाव, अपवित्रताका भाव, स्मृतिशास्त्रविहित कर्ममें अनधिकारसम्पादक अशुद्धावस्था।

निकटके ज्ञातिकुटुम्बमें किसीकी मृत्यु होजाने किंवा किसीके पुत्र-कन्या उत्पन्न होनेसे शरीर कुछ दिन अशुद्ध रहता है। इसीको हम लोग साधारण अशौच कहते हैं।

शास्त्रमें दो प्रकारका अशौच निर्दिष्ट हुआ है,— कालकृत एवं वस्तुका स्वाभाविक धर्मकृत। शरीरमें मल आदि हो जानेसे जबतक वह सब धुल न हो जाये तबतक देह अशुचि रहती है। निकट ज्ञातिके किसीके पुत्र कन्या जन्मने या किसीकी मृत्यु होनेसे कुछ दिनके लिये शरीर अशुचि हो जाता है; इसका नाम कालकृत अशौच है। मल मूत्र [illegible] आदि स्वभावतः अशुद्ध है।

ज्ञातिके पुत्र कन्या उत्पन्न होनेसे जो अशौच होता, उसे जन्म अशौच कहते हैं। ज्ञातिकी मृत्यु होनेसे जो अशौच होता है उसका नाम मरण अशौच है।

अतिप्राचीन कालसे सब देशोंमें सभी जाति कुछ न किसी तरहसे अशौच स्वजनकी मृत्युके बाद किसी न किसी तरहसे अशौच ग्रहण करती आती है। अशौचके समय शोक प्रकाश करनेके लिये कितने ही शोकसूचक वस्त्र धारण करते हैं। हमारे देशके हिन्दू मातापिताकी मृत्युके बाद गलेमें नये कपड़ेका टुकड़ा बांधते हैं। अशौचके समयमें वे लोग तेल नहीं लगाते, जूता नहीं पहनते, छाता नहीं लगाते और हजामत नहीं बनवाते। दिनमें केवल हविष्यान्न भोजन करते और रातमें थोड़ासा दूध आदि पी लेते हैं। ऐसे समयमें स्त्रीसंगादि सब तरहके सुख भोग निषिद्ध हैं।

प्राचीन यहूदियोंमें अशौचकाल केवल सात दिन था, कोई कोई तीस दिन अशौच मानते थे। अशौचके समय सभी हजामत बनवा डालते, एक याह

डालते, जूता न पहनते, तेल न लगाते और स्नान न करते थे। संयम सहित सभी भूमिपर सो रहते थे। ग्रीस देशवासी तीन दिन अशौच मानते थे। केवल स्पार्टावालोंमें दश ही दिन अशौच माननेकी प्रथा थी। अशौचके समय वे लोग हजामत बनवाकर काला कपडा पहन लेते और किसीके सामने बाहर न होते थे। रोमदेशमें स्वामीके मरनेपर स्त्री एक वर्ष तक अशौच मानती थी, पर पुरुषोंका अशौच थोड़े ही दिन रहता था। अशौचके समय स्त्रियां सफेद और पुरुष काला कपडा पहनते थे। पहले स्पेनदेशवासी भी अशौचके समय सफेद कपडा ही पहनते थे। आजकल युरोपवासी अशौचके समय काला कपड़ा पहनते हैं; कोई कोई हाथपर काला कपड़ा लगा लेते हैं। पत्र लिखनेके समय जो कागज और लिफाफा व्यवहार करते, उसके चारो ओर काली लकीर छपी रहती है। तुर्क लोग अशौचके समय गहरे नीले रङ्गका कपडा पहनते हैं।

हिन्दूओंके जनन और मरण अशौचका नियम यों है,—सात पुरुषतक ब्राह्मणका १० दिन, क्षत्रियका १२ दिन, वैश्यका १५ दिन और शूद्रका एक महीना। चाण्डाल, मेहतर, मोची आदि नीच जातिवाले केवल दश ही दिन अशौच मानते हैं।

अशौचके कुछ दिन बीत जानेपर यदि ज्ञाति कुटुम्बियोंको वह समाचार मिले, तो उन्हें बाकी कई दिन ही अशौच मानना होता है। मरणका अशौच बीत जानेके बाद यदि एक वर्षके भीतर ज्ञातियोंको वह समाचार मिले, तो त्रिरात्र अशौच रहता है। एक वर्षके बाद मरणाशौच सुननेसे सपिण्डगण स्नान करके शुद्ध हो जाते हैं। किन्तु एक वर्षके बाद मातापिताका मृत्यु-समाचार पानेपर पुत्रके लिये एक दिन अशौच रहता है। एक वर्षके बाद पतिकी मृत्युका समाचार पानेसे स्त्रियोंको एक दिन अशौच होता है। दूसरे वर्ष सुननेसे सद्यः अशौचान्त हो जाता है। किन्तु शुभ अशौच वा खण्डाशौच बीत जानेके बाद उसकी खबर मिलनेपर फिर अशौच नहीं मानना पडता।

दीक्षागुरुकी मृत्युके बाद त्रिरात्र अशौच होता है। जिससे वेदवेदाङ्गादि शास्त्र पढा जाता है, उसकी मृत्युका अहोरात्र अशौच होता है।

सब वर्णोंके लिये दश पुरुषतक जनन और मरण अशौच त्रिरात्र होता है और चोदह पुरुषतक पक्षिणी अर्थात् दो दिन और एक रात। (पूर्व दिन एवं मध्यकी रात और उसके बादका दिन, इसीका नाम पक्षिणी है)।

जन्मनाम स्मरणतक अर्थात् उभय पूर्वपुरुषोंके नाम स्मरणतक सब वर्णोंका एक दिन अशौच होता है। उसके बाद स्नान करके ज्ञातिगण शुद्ध हो जाते हैं। मातामहकी मृत्युमें त्रिरात्र।

मौसेरा भाई, फुफेरा भाई, ममेरा भाई, भाञ्जा, पितामहीभगिनीपुत्र, पितामही-भ्रातृपुत्र, दौहित्र, भगिनी, मामी, मातुल, मौसी, फूफू, गुरुपत्नी, मातामही एवं एक ग्रामवासी श्वसुर सासकी मृत्युमें पक्षिणी। मातामह भगिनी पुत्र, मातामहीभगिनीपुत्र, मातामहीभ्रातृपुत्र, और एक ग्रामवासी सगोत्र व्यक्तिके मरनेमें अहोरात्र। पितामाताकी मृत्युमें विवाहिता कन्याका त्रिरात्र अशौच। (विशेष विशेष कारणसे विशेष विशेष अशौचकालका विवरण शुद्धितत्त्वमें देखो)।

अशौचका समय बीतजानेपर सज्जाति हिन्दू भोजन बनानेकी हाड़ी वगैरहको फेंक देते हैं। मरणाशौचके अन्तवाले दिन क्षौरकर्म्मादि करना पडता है। ज्ञातिगण घरसे कुछ दूर अथवा गावके किनारे जाकर हजामत बनवाते; उसके बाद स्नान करके सब कोई घर आते हैं। मातापिताके मरणाशौचमें पुत्र इसी दिन पूरक पिण्डादि देते हैं। अन्तमें क्षौरकर्मके उपरान्त स्नानादि करके स्त्रियोंके साथ घर आते और पूर्णघट तथा अन्नव्यञ्जनादिका दर्शन करते हैं।

पूर्वकाल आर्योंमें अशौचान्तके दिन जो सब क्रियायें प्रचलित थी, अब उनमें एक भी नहीं है। तैत्तिरीय आरण्यकमें इसे 'शान्तिकर्म'के नामसे लिखा है। आश्वलायनने इस क्रियाको श्मशानमें सम्पन्न

करनेकी व्यवस्था दी है। ज्ञातियोंमें स्त्रीपुरुष सभी मिल कर रास्तेके उपलमंपर बैठते थे। इस कर्मका सिर पूर्वकी ओर रखा जाता और बाल उत्तरकी ओर फिरा दिये जाते थे। उपलमंपर बैठनेका मन्त्र यह है—

> "आरोहतायुर्जरसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यतिष्ठ।
> इह त्वष्टा सुजनिमा सजोषा दीर्घमायुः करतु जीवसे वः॥
> यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथ ऋतव ऋतुभिर्यन्ति साधु।
> यथा न पूर्वमपरो जहात्येवा धातरायूंषि कल्पयैषाम्॥"

तुम लोग दीर्घकालतक जीनेकी इच्छा करते हो, इस आयुष्कर चर्मपर आरोहण करो। इस कर्मको सुजात एवं सुरत्नभूषित अग्नि तुम लोगोंको दीर्घायु दान करें। जिस तरह दिनके बाद दिन और ऋतुके बाद ऋतु आती है जिस तरह ज्येष्ठ कनिष्ठको नहीं परित्याग करते, हे धातः। उसी तरह तुम भी इन लोगोंकी परमायु वृद्धि करो।

इसके बाद मृतव्यक्तिका पुत्र आग जलाकर अश्व काठके स्रुक्से बार बार आहुति देता था। फिर ज्ञातिगण अग्निसे उत्तर पूर्व मुख खड़े हो कर रास्तेके उपलमें प्रार्थनापूर्वक यह मन्त्र पढ़ते थे। अन्तमें स्त्रियां 'इमा नारीरविधवा' इत्यादि * मन्त्र पढ़कर आंखमें काजल देती थीं। यह काजल हिमालय पर्वतके त्रैककुदका बनाया जाता और कुशकी नोकसे आंखमें लगाया जाता था। †

स्त्रियोंके आंखमें काजल लगा लेनेके बाद सभी उपला ध्माते ध्माते पूर्वकी ओर जाते। जानेके समय यह मन्त्र पढ़ना पड़ता था,—

> "इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन्नभूद्भद्रा देवहूतिर्नो अद्य।
> प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः॥" ‡

ये लोग मृतव्यक्तिको परित्यागकर लौटे जाते हैं। इन लोगोंके कल्याण, जय और आनन्दके निमित्त अपने देवताओंको आह्वान करते हैं। इन लोग दीर्घायु लाभकर पूर्वमुख जाते हैं।

इस तरह मन्त्र पढ़कर स्त्रियां सबके आगे आगे चल जातीं। मृतव्यक्तिका पुत्र अशौचापहारी पूर्वके पदचिह्नोंको मिटता जाता। इसके बाद अध्वर्यु मन्त्र पढ़ते हुए सबके पीछे लोष्ट्रद्वारा व्रत करते थे। परिधि बनाकर तुरत ही यह मन्त्र पढ़ना पड़ता था—

> "इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम्।
> शतं जीवन्तु शरदः पुरूचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन॥"

'जीवित मनुष्योंके लिये मैं यह परिधि देता हूं। अर्थात् इन लोगोंको जिसमें और किसीको जिसमें इसे अतिक्रम करना न पड़े। इस पर्वताकार लोष्ट्र द्वारा मृत्युको ओटमें रखकर इन लोग जिसमें सौ शरत्काल (सौ वर्ष) जीते रहें।

अन्तमें घर आकर सभी यवागू और शाकमांस खाते थे।

अशौचत्व (सं॰ क्लो॰) अशुद्धता, नापाकी, गन्दगी, मैलापन, साफ न रहनेकी हालत।

अशौचसङ्कर (सं॰ पु॰) अशुचि अवस्थाभेद। जनन एवं मरण अशौचके मध्य पुनर्वार जनन एवं मरण अशौच आनेसे अशौचसङ्कर कहाता है। अशौचमें इसका विस्तारित विवरण लिखा है।

अशौचान्त (सं॰ पु॰) अशौचकालके छूटनेका दिन। दशम दिन ब्राह्मण और द्वादश दिन क्षत्रिय का अशौचान्त होता है।

अशौर्य (सं॰ क्लो॰) अभावे नञ् तत्। १ वीरताका अभाव, बहादुरीकी अदमामौजूदगी। (त्रि॰) नञ्-बहुव्री॰। २ पराक्रमशून्य, बेहिम्मत, जो बहादुर न हो।

अश्न (वै॰ त्रि॰) अश्नुते व्याप्नोति अश्नाति वा, अश नक्। १ व्यापक, मामूर, भरा जानेवाला। २ भोजनशील, खाऊ, पेटू। ३ व्याप्त, भराया हुआ। (पु॰) ४ पत्थर विशेष। ५ भोजनका छूटनेका पत्थर। ६ मेघ बादल।

---

* ऋग्वेदके अष्टमके ४ [illegible] आश्व [illegible] समय 'इमा नारीरविधवाः' इत्यादि मन्त्र प्रयुक्त होता था। अनुस्तरण एवं अनुमरण शब्द देखो।

† "[illegible] लिमवनुपचरं। [illegible]" (तैत्तिरीय आरण्यक ६।१०।८)

‡ ऋग्वेद १ के अध्याय १० के [illegible] सूक्तमें यह मन्त्र है। यहां इसका कुछ अंश दिया गया है।

"मदुदर्श्यैर्मगो नाशनो भवति यन्नु गुर्यात्"। (ऋक् १।१०३।१।)

अश्नया (वै० स्त्री०) क्षुधा, भूख।

अश्नीतपिबता (सं० स्त्री०) अश्नीत पिबत इत्युच्यते यस्मात् निदेशक्रियायाम्, मयूरव्यं० समा०। भोजन एवं पानका आदेश, खाने-पीनेको आज्ञा।

अश्म (सं० पु०) १ पर्वत, पहाड़। २ स्वर्ण-माक्षिक, सोनामाखी। (वै०) ३ मेघ, बादल।

अश्मक (सं० पु०) अश्मेव स्थिरः निश्चलत्वात्, इवार्थे कन्। शाल्वावयवप्रत्यग्रथकलकूटाश्मकादिञ्। पा ४।१।१७३। १ ऋषि विशेष। २ देश विशेष, कोई मुल्क। महाभारतमतसे यह देश भारतवर्षके दक्षिण अव-स्थित। किन्तु बृहत्-संहितामें इसे उत्तर-पश्चिम माना है। किसी-किसीने इसे भारतके मध्यस्थलमें बताया है। अश्वक देखो।

अश्मकदली (सं० स्त्री०) अश्नुते अश मनिन् कर्मधा०। काष्ठकदली, पहाड़ी केला।

अश्मकर (सं० क्ली०) स्वर्ण, सोना।

अश्मकुट्ट (सं० पु०) अश्मनि प्रस्तरे धान्यादिकं कुट्टयति, कुट्ट-अण्, उप०-समा। १ वानप्रस्थविशेष। इनके पास उखल प्रभृति नहीं रहता, प्रस्तरसे ही धान्यादि कुटते हैं। (वि०) २ पत्थरसे कूटने पीसनेवाला। ३ पत्थरसे कूटा-पीसा।

अश्मकुट्टक, अश्मकुट्ट देखो।

अश्मच्छाच्छ्रहा (सं० स्त्री०) वेलन्तरवृक्ष, कोई दरख्त। यह कटीली होती है।

अश्मकेतु (सं० स्त्री०) अश्मेव केतुरस्याः। क्षुद्र पाषाणभेद क्षुप, कोई खुशबूदार पेड़।

अश्मगन्धा (सं० स्त्री०) अश्मन इव गन्धो लेशोऽस्याः। पृश्निपर्णी लता, पथरचटा।

अश्मगर्भ (सं० पु०) अश्मेव जातो गर्भो यस्य। मरकत, हरित्मणि, पन्ना।

अश्मगर्भक (सं० पु०) तिनिश वृक्ष, तरुलका पेड़।

अश्मगर्भज, अश्मगर्भ देखो।

अश्मगुड़ (सं० पु०) अश्मनिर्मितो गुडः। १ पत्थरका गोला। २ पत्थरका बट्टा।

अश्मघ्न (सं० पु०) अश्मानं हन्ति, हन्-टक्। पाषाणभेदनवृक्ष, कोई पेड़।

अश्मचक्र (वै० वि०) पाषाण-परिधि-वेष्ठित, पत्थरके दायरेसे घिरा हुआ।

अश्मज (सं० क्ली०) अश्मनो जायते, जन-ड। १ शिलाजतु। अश्मेव जायते। २ लौह, लोहा। ३ गेरू।

अश्मजतु (सं० क्ली०) अश्मनो जायते, जन-तुन् डिश्च। शिलाजतु।

अश्मजतुक, अश्मजतु देखो।

अश्मजाति (सं० स्त्री०) अश्मनो जातिः सामान्य-मस्य। मरकत मणि, पन्ना।

अश्मदारण (सं० पु०) अश्मान दारयति, दृ-णिच्-ल्यु। १ प्रस्तर तोड़नेका यन्त्र विशेष, टाकी, जिस औज़ारसे पत्थर फोड़ें। २ प्रस्तर विशेष, जिस पत्थरसे चक्की उड़े।

अश्मदिद्यु (वै० वि०) अतिशयेन द्योतते, यङ् लुक् द्युतिगमिजुहोतीनां द्वे च। पा ३।२।१७८ सूत्रे वार्त्तिकं, सप्त, द्युतिस्वाप्यो स प्रसारणम्। पा ७।४।६७। इति सम्प्रसारणे बाहु० डु प्रत्ययः दिद्यु आयुधं अश्म व्यापकं अश्ममयं वा दिद्यु यस्य। १ व्याप्त आयुध, जो हथियार चला रहा हो। २ अश्ममय आयुध, बहुत कड़े हथियार रखनेवाला। "दिद्युमरसो मरो धाम दिद्यव।" (ऋक् ३।३४।१।)

अश्मन् (सं० पु०) अश व्याप्तौ अश भोजने मनिन्। १ पाषाण, पत्थर। २ पर्वत, पहाड़। ३ चकमक पत्थर। ४ चट्टान। ५ मेघ, बादल। ६ विद्युत्, बिजली। ७ आकाश। ८ ब्राह्मण विशेष। (वि०) ९ व्यापक, मामूर, समाया हुआ। (वै०) १० भोजन करता हुआ, जो खा रहा हो। अश्मन् शब्द उक्थादि गणके मध्य पठित है।

अश्मन्त (सं० क्ली०) अश्मनोऽन्तोऽत्र, शाक० पर-रूपत्वम्। १ अशुभ, बुरा। २ मरण, मौत। ३ चूल्हा, भट्ठी। ४ अनवधि, गैरमहदूद वक्त। ५ चेत्र, मैदान, खेत।

अश्मन्तक (सं० क्ली०) अश्मानं अन्तयति, अन्त-णिच्-ण्वुल् शकन्ध्वादित्वात् पररूपत्वम्। १ चल्हा,

मट्टी। ५ मल्लिका आच्छादन। ६ दीपाधार, दीवट। (पु०) ३ अश्मोटक, कोई पेड़। ४ तृणविशेष, कोई घास। ६ अश्मपत्र। ७ कोविदारक वृक्ष।

अश्मन्मय (वै० त्रि०) अश्मनो विकारः, मयट् वेदे न भलोप। पाषाणमय, पथरीला पत्थरका बना हुआ।

अश्मन्वत् (वै० त्रि०) प्रस्तरवान्, पथरीला।

अश्मन्वती (वै० स्त्री०) ऋग्वेदोक्त नदीभेद। चर्मण्वती नदी देखो।

अश्मपुष्प (सं० क्ली०) अश्मनः पुष्पमिव। शैलज, शिलाजतु।

अश्ममाल (सं० क्ली०) अश्मन भालयति चूर्णित करोति, भल विकल्पन पृषो० अकारस्य लत्वम्। शाकभाज्य विशेष, श्यामशिम्बा, सेम।

अश्मभिद् (सं० पु०) अश्मानमुद्भिद्य जायते। १ पाषाणभेदी वृक्ष जो दरख़्त पत्थरको भेद कर सकता हो। यह मूत्रकृच्छ्रके लिये उपयोगी होता है। पाषाणभेदी देखो।

अश्मभेद, अश्मभेदक, पाषाणभेद देखो।

अश्ममय (सं० त्रि०) अश्मन्मय देखो।

अश्मयोनि (सं० पु०) अश्मा योनिरस्य। १ मरकत मणि, पन्ना। २ अश्मान्तक वृक्ष।

अश्मर (सं० त्रि०) अश्मन् चतुर्थ्यां र। प्रस्तर सम्बन्धीय, पथरीला।

अश्मरी (सं० स्त्री०) अश्मानं राति रा-क गौरादित्वात् ङीष्। मूत्रकृच्छ्र, रोग विशेष, पथरी। यकृत्, वैक्रि यम् एवं मूत्रयन्त्रमें पथरी हो सकती है। मनुष्य एवं गोरू घोड़ा भेड़, सूअर, प्रभृति और और पशुओंके शरीरमें भी पथरी होती है। फिर मूत्र मूत्रनालीसे यह मूत्राशयमें आ जाती और धीरे धीरे बढ़ती रहती है। कभी कभी कोई बड़ी पथरी तोलमें आधसेर तक होती है।

शरीरमें पथरी होनेसे ऐसा लक्षण दिखाई देता है—कटिमें पीड़ा ऊपर दायेंसे कुछ बोझल मालूम होता है, पेशाबका रङ्ग खराब हो जाता है, श्रम करनेके समय कभी कभी खून निकल आता और शरीर क्षय एवं अशक्त हो जाता है। कभी कभी इसमें भी पथरी बड़ी भारी हो जाती है। ऐसी दशामें वस्तिप्रदेशके निकट शूल और दाह उठता है। तब नश्तर देकर पथरीको निकालना पड़ता है।

इसके मूत्रपथको होकर मूत्राशयमें पथरीको आनेके समय रोगीको असह्य कष्ट होता है। बार बार पेशाब करनेकी इच्छा होती है। पेशाब थोड़ा और खून संचित आता है। अण्डकोषमें दर्द होता है और वह सिमटकर ऊपर उठता है। उसके भीतर भी बहुत पीड़ा होती है। ऐसी अवस्थामें रोगी कभी कभी वमन भी करता है।

मूत्राशयवालोंसे मूत्राशयमें पथरीके आजानेपर रोगीको बार बार पेशाब करनेकी इच्छा होती है। मूत्रपथ, गुह्यप्रदेश एवं वस्तिस्थलमें पीड़ा होती है। कभी कभी पथरीके मूत्रपथके मुखपर आ जानेसे हठात् पेशाब बन्द हो जाता है। पथरीको उष्णतासे कभी कभी पेशाबके साथ खून भी आता है। यदि नीचे न आकर पथरी मूत्राशयमें ही पड़ी हो तो [illegible] उत्पन्न होती है।

मूत्रयन्त्रकी पथरी अनेक प्रकारकी होती है। उनमें छः प्रकारकी बहुत देखी जाती है। यथा,—

१। यूरिक एसिड् एमोनिया। यह प्राय शैशवावस्थामें होती है। इस पथरीका रङ्ग काईसा होता है; ऊपर समतल, कभी कभी दानेदार भी होती है। फुंकनेमें धुआँ मन्द होता है; फिर पोटाशियम्के साथ एमोनिया निकलता है। कार्बोनेट अव पोटाश या सोडाके संयोगसे गल जाती है। यूरिक-एसिडकी पथरी कभी दूर नहीं होती। इस जातिकी पथरी बहुत कम देखनेमें आती है।

२। ऊरिक एसिड या लिथिक एसिडकी पथरी। यह भूरा रङ्गकी होती है। ऊपरी भाग समतल और कभी कभी दानेदार होता है। फुंकनेसे चिटक हो जाती, तब धूप गन्ध निकलता है, अन्तमें दग्ध हो जानेपर थोड़ासा भस्म रह जाता है। पोटाश इससे गल जाती है। इस दूधसे विशेष

मिला देनेसे श्वेतवर्ण चूर्ण गिरता है। इस जातिकी पथरी सचराचर देखी जाती है।

३। अग्ज़ोलेट् अव् लाइम—यह कटा छाण वर्णकी होती है। ऊपरी भाग ऊंचा नीचा होता है। फुकानलसे विकृत हो जाती है। लवण-द्रावकसे द्रव होती है।

४। फस्फेट अव् लाइम—पांसुट कटावर्ण। समतल। फुकानलसे द्रव नहीं होती। लवणाम्लसे द्रव हो जाती है।

५। एमोनिया मेगनेसियन फस्फेट—प्रायः श्वेतवर्ण। उच्चनीच। फुकानलसे एमोनिया निकलता है। जलमिश्र द्रावकसे यह द्रव जाती है।

६। सिष्टिक् अक्साइड—इसका रङ्ग श्वेत होता है। ऊपरी भाग उच्चनीच। फुकानलसे धूम निकल जाता है। जलमिश्र लवणद्रावकसे द्रव हो जाती है।

मूत्राशयमें शलाकाखण्ड वा और कोई द्रव्य पड़ा रहनेसे उसके चारो तरफ भी नाना प्रकारके पदार्थ जम जाते हैं। उसका लक्षण भी पथरी ही जैसा है।

एलोपैथी चिकित्सा—इस रोगकी चिकित्सामें तीन उद्देश्य साधन करने पड़ते हैं। १—रोगीका बल बढ़ाना और कष्ट दूर करना। २—जिसमें नई पथरी पैदा न हो और पैदा हुई पथरी बढ़ने न पावे। ३—मूत्राशयसे पथरी निकालना।

प्रथम उद्देश्य साधनके लिये रोगीको पुष्टिकर लघु पथ्य देना। कमरमें दर्द रहनेसे बेलोडोनाके पलस्तरसे बहुत कम पड़ जाता है, मूत्राशयसे खून निकलता हो तो टिञ्चर ष्टील दश बूंद जलके साथ अथवा पांच छः ग्रेन गेलिक एसिड सेवन कराना। हृदयसे मूत्रानुप्रणाली होकर पथरीके मूत्राशयमें उतरनेके समय अतिशय कष्ट होता है। ऐसी अवस्थामें गर्मजलसे स्नान, यवका माड, ७ बूंद अफीमका अरिष्ठ सेवन प्रभृति व्यवस्थासे उपकार होता है।

द्वितीय उद्देश्य साधनके लिये पथरीके विधानोपादानकी अवस्था समझकर चिकित्सा करनी पड़ती। यूरिक एसिड धातुसे निरामिष पथ्य प्रशस्त है। यवके माड़से विलक्षण उपकार होता है। ऐसा उपाय करना चाहिये जिसमें नित्य कोठ परिष्कार हो। इस तरह पथरीमें क्षार औषध बहुत उपकार करती है। उसमें बाइकार्बोनेट अव् पोटाससे बहुत फायदा होता है। लिकर पोटाससे भी विशेष लाभ होता है। फस्फेटाधिक्य धातुमें नाइट्रोमिउरटिक द्रावक सेवनसे रोगका प्रतीकार होता है। इसमें अधिक मानसिक चिन्ता करनी उचित नहीं। अग्ज़ेलिक् एसिड आधिक्य धातुमें शर्करा सेवन करना मना है। इसमें भी नाइट्रो-मिउरेटिक द्रावक उपकार करता है।

३—पथरीके मूत्राशयमें आ जानेपर अथवा मूत्राशयमें पथरी पैदा होनेपर पहले बहुत देरतक पेशाब न करना। उसके बाद जोरसे पेशाब करनेसे छोटे छोटे कङ्कर निकल सकते हैं। पथरी बड़ी हो तो नश्तर दिलाना चाहिये।

हमारे देशके वैद्य वरुण छालका क्वाथ सेवन कराते हैं। इससे पथरी गल जाती है। मूत्रकृच्छ्र देखो।

अश्मरीकृच्छ्र (सं० पु०) मूत्रकृच्छ्र, जिस बीमारीमे पेशाब न आवे या कम उतरे।

अश्मरीघ्न (सं० पु०) अश्मरीं हन्ति, हन्-टक्। वरुणवृक्ष, बिलासी।

अश्मरीप्रिय (सं० पु०) महाशालिधान्य, बड़ा धान।

अश्मरीभेद (सं० पु०) पाषाणभेद वृक्ष, जो पेड़ पत्थर भेद कर सकता हो।

अश्मरीभेदन (सं० क्ली०) पाषाणभेदक, अश्मरीघ्न, जिससे पेशाब न उतरने या कम आनेकी बीमारी मिटे।

अश्मरीरिपु (सं० पु०) १ वृहच्चणक, बड़ा चना। २ ज्वार।

अश्मरीशर्करा (सं० स्त्री०) मूत्रकृच्छ्र विशेष, पेशाबकी कोई बीमारी। इस रोगमें हृत्पीड़ा, सक्थिसदन, कुक्षिशूल, कम्प, तृष्णा, ऊर्ध्वग अनिल, कार्ष्ण्य, दौर्बल्य, पाण्डुता, अरोचक, अविपाक आदि लक्षण देख पड़ता है। (सुश्रुत)

अश्मरीहर (सं० पु०) अश्मरीं हरति, हृ-अच्। १ देवधान्य, ज्वार। २ वरुण वृक्ष, बिलासी।

अश्मर्याहरयन्त्र (सं॰ क्ली॰) अश्मरी नामक मूत्रकृच्छ्रके सदृश बाहर करनेका यन्त्र, जिस पथरीसे बिगड़ा पेशाब रुका होवे।

अश्मलाज (सं॰ क्ली॰) शिलाजित। (स्त्री॰) अश्मलाजा।

अश्मवत् (सं॰ त्रि॰) अश्मा अस्त्यस्य मतुप् मस्य वत्व बकार। १ पाषाणविशिष्ट, जिसमें पत्थर रहे। २ पाषाणकी तरह कठिन जो पत्थर जैसा कड़ा हो।

अश्मवर्मन् (वै॰ क्ली॰) पत्थरकी दीवार या ढाल।

अश्मव्रज (सं॰ त्रि॰) पाषाण सम्बन्धीय, जो चट्टानमें शामिल हो।

अश्मसम्भव (सं॰ क्ली॰) शिलाजतु।

अश्मसार (सं॰ पु॰ क्ली॰) अश्मनः सार इव। १ लौहादिधातु लोहा। २ मारकौर, रसात।

अश्मसारमय (सं॰ त्रि॰) लौहनिर्मित, लोहेका बना हुआ।

अश्ममाला (सं॰ स्त्री॰) बालवदनी, पहाड़ी बेला।

अश्मपुष्पा (सं॰ स्त्री॰) पाठा, पाषाणादि, करञ्जारी।

अश्महन् (सं॰ पु॰) पाषाणभेद पत्थरचटा।

अश्महन्मन् (वै॰ क्ली॰) हन्यते अनेन हन् मनिन् हन्म पायुषम् अश्मनिर्मितं हन्म मध्य॰ तत्। १ लौहनिर्मित अस्त्र, लोहेका बना हथियार। "[illegible]" (ऋक् ४।१७।१) २ विद्युत्पात, बिजलीका कड़क।

अश्मरा, अश्मन् देखो।

अश्माहन् (सं॰ पु॰ क्ली॰) १ कपाटकवत् जिसके द्वारका दरवाजा। २ शिलाजतु।

अश्मादि—(पाणिनि ४।२।८०) चातुरर्थिक र प्रत्ययके निमित्त पाणिनि कथित शब्दसमूह। अश्मन्, यूथ, ऊष, मीन, नद, दर्भ, वृन्द, गुड, खण्ड, नग, शिखा, कोट, पाम, कन्द, कान्द, कुल, गह्व, गुड़, कुण्डल, पीन, गुह।

अश्मान्तक (सं॰ क्ली॰) अश्मकारक मर्म, पथरी रोग।

अश्माश्य (वै॰ त्रि॰) चट्टानके बहनेवाला।

अश्मेर (सं॰ पु॰ क्ली॰) अश्माश्मन्तक रोग। पथरी रोग।

अश्मोत्थ (सं॰ क्ली॰) अश्मनः उत्तिष्ठति उत्-स्था-क। शिलाजतु।

अश्योनता (सं॰ स्त्री॰) श्वेतशिग्रुता, सफेद सिहुता।

अश्र (सं॰ क्ली॰) अश्नुते नेत्रम् अश-बाहु॰ रक। १ अश्रुजल, आंखका पानी, आंसू। २ रुधिर, खून। ३ कोण, कोना।

अश्रद्ध (सं॰ त्रि॰) १ श्रद्धाहीन, एतबार न रखनेवाला।

अश्रद्दधान (सं॰ त्रि॰) श्रत्-धा-शानच्। श्रद्धाहीन, एतबार न रखनेवाला, जिसे श्रद्धा न रहे।

अश्रद्धा (सं॰ स्त्री॰) श्रत्-धा-अङ्। [illegible]। न श्रद्धा। नञ् तत्। १ धर्मादि, ना एतबारी, ईश्वर विश्वास या प्रेमका न होना। २ अरोचक भूख न लगनेकी बीमारी। (त्रि॰) नञ् बहुव्री॰। ३ श्रद्धाशून्य, बेएतबारी।

अश्रद्धेय (सं॰ त्रि॰) श्रत्-धा-यत्, नञ्-तत्। आदरके अयोग्य जो इज्जतके काबिल न हो।

अश्रप (सं॰ पु॰) राक्षस, आदमखोर, जो खून पीता हो।

अश्रम (सं॰ पु॰) १ अक्लान्तता, ताज़गी। २ श्रमका अभाव, मिहनतकी अदममौजूदगी, सुस्ती, काहिली। (वै॰ त्रि॰) ३ अक्लान्त जो थका मांदा न हो।

अश्रमण (वै॰ त्रि॰) १ अक्लान्त, बेताब, जो थका मांदा न हो। (सं॰ पु॰) २ साधु या बौद्ध सन्न्यासी न होनेवाला व्यक्ति।

अश्रवण (सं॰ क्ली॰) श्रवणका अभाव, न सुनना, सरासी सोम बहरापन।

अश्रातम् (वै॰ अव्य॰) अपक्व रीतिसे, बे पकाये कच्ची हालतमें।

अश्राद्ध (सं॰ त्रि॰) श्राद्ध न करनेवाला, श्राद्धमें सम्बन्ध न रखनेवाला, जो श्राद्ध कर न सकता हो।

अश्राद्धभोजिन् (सं॰ त्रि॰) श्राद्धं न भुङ्क्ते, भुज णिनि नञ्-समा॰। श्राद्धमें भोजन न करनेवाला, जो श्राद्धमें खाता न हो।

अश्राद्धिन् (सं० पु०) श्राद्धं भुक्तमनेन श्राद्ध इनि ततो नञ्-तत्। अश्राद्धभोजिन् देखो।

अश्राद्धेय (सं० पु०) नञ्-तत्। श्राद्धके अयोग्य, जो श्राद्धके लायक न हो। पिताके घर अनूढ़ावस्थामें ऋतुमती होनेवाली कन्या साथ जो विवाह करता, वह ब्राह्मण अश्राद्धेय और अपांक्तेय ठहरता है।

अश्रान्त (सं० वि०) श्रम कर्तरि क्त, नञ्-तत्। १ श्रमरहित, बेतकान, जो थका-मांदा न हो। (अव्य०) २ अविश्राम, अनवरत, नित्य, लगातार, बराबर, हमेशा।

अश्राव्य (सं० त्रि०) श्रवण वा कथनके अयोग्य, जो सुनने या कहने लायक न हो।

अश्रि (सं० स्त्री०) आ-श्रि-इग् ह्रस्वो डिद्वद्भावश्च। १ गृहादिका कोण, मकान वगैरहका कोना। २ अस्त्रादिका अग्रभाग, हथियार वगैरहकी नोक।

अश्रित (वै० त्रि०) १ कठिन प्रवेश, जिसमें कोई पहुंच न सके। २ अनवरत, जो रुकता न हो।

अश्रिन् (सं० त्रि०) आंसू बहानेवाला, जो रो रहा हो।

अश्रिमत् (सं० त्रि०) कोणविशिष्ट, नुकीला।

अश्री, अश्रि देखो।

अश्रीक (सं० त्रि०) नास्ति श्रीर्यस्य, बहुव्री० वा कप्। १ शोभाशून्य, बदनुमान, जो देखनेमें खूबसूरत न हो। २ हतभाग्य, कमबख्त, जो अच्छा न हो।

अश्रीमत् (सं० त्रि०) हतभाग्य, कान्तिशून्य, बदबख्त, बेरौनक, जो चमकीला न हो।

अश्रीर (वै० त्रि०) न श्री अश्री अस्त्यर्थे र। १ कुत्सित, खराब। २ अमङ्गल, अशुभ, नागवार। बदनुमान, जो अच्छा लगता न हो। "अश्रीर चित्त तनुमा।" ऋक् ८।२१४।

अश्रील (सं० त्रि०) असमृद्ध, हतभाग्य, बदबख्त, जो बढ़ता न हो।

अश्रु (सं० क्ली०) अश्नुते व्याप्नोति नेत्रमदर्शनाय अश-क्रु निपात्यते, अथवा अश-डुन्-रुट् च। नेत्रजल, अश्क, आंसू, जो पानी आंखसे निकलता हो। काव्यके नव सात्त्विक अनुभावोंमें यह भी आता है।

अश्रुकणा (सं० स्त्री०) नेत्रजलका बिन्दु, अश्कका कतरा, आंसूका बूंद।

अश्रुत (सं० त्रि०) नञ्-तत्। १ सुना न जानेवाला, जो सुन न पड़ता हो। २ वेदविरुद्ध, जो वेदसे मिलता न हो। (पु०) ३ कृष्णके पुत्र विशेष। ४ द्युतिमत्के पुत्र।

अश्रुतपूर्व (सं० त्रि०) पहले सुना न जानेवाला, जो पेश्तर सुन न पड़ा हो।

अश्रुतवत् (सं० अव्य०) न सुनेकी तरह, गोया सुन ही न पड़ा हो।

अश्रुति (सं० स्त्री०) १ श्रवणका अभाव, सुन न पड़नेकी हालत। २ वेद द्वारा अप्रतिपादित विषय, जो बात वेद बताता न हो।

अश्रुतिधर (सं० त्रि०) १ श्रवण पर आघात न लगाता हुआ, जो सुननेपर चोट मारता न हो। २ वेद न जाननेवाला।

अश्रुनाली (सं० स्त्री०) भगन्दर रोग।

अश्रुपरिपूर्णाक्ष (सं० त्रि०) नेत्रमें जल भरा हुआ, जिसके आंखमें आंसू भरे।

अश्रुपरिप्लुत (सं० त्रि०) नेत्रजलसे नहाया हुआ, जो आंसूसे तर पड गया हो।

अश्रुपात (सं० पु०) ६-तत्। क्रन्दन, नेत्रजलका प्रवाह, रुलाई, आंसूका गिरना।

अश्रुपूर्ण (सं० त्रि०) नेत्रजलसे भरा हुआ, अश्कसे लबालब, जो आंसूसे भरा हो।

अश्रुपूर्णाकुल (सं० त्रि०) रोते और दुःख उठाते हुए, जो रोते और दुःख रहा हो।

अश्रुपूर्णाक्ष, अश्रुपरिपूर्णाक्ष देखो।

अश्रुमुख (सं० त्रि०) अश्रुपूर्णं मुखं यस्य। १ नेत्रजलपूर्ण मुखयुक्त, जिसके मुंहमें आंसू भरा रहे। (पु०) २ गतिविशेष, कोई चाल। ज्योतिषमें—मङ्गल जब अपने उदय-नक्षत्रसे दशवें, ग्यारहवे और बारहवें नक्षत्रपर टेढ़ा चलता, तब अश्रुमुख निकलता है।

अश्रुलोचन (सं० त्रि०) नेत्रमें अश्रु रखनेवाला, जो आंखमें आंसू भरे हो।

अश्वनादि सप्त स्थानसे घोड़ेकी उत्पत्ति हुई है। इसलिये अश्वोत्पत्तिस्थान कहनेसे सात संख्या समझी जाती है।

घोड़ा किस स्थानका आदि जन्तु है, इस विषयमें बहुत मतभेद है। वेदमें घोड़ेकी बात लिखी है। अतएव पहले ही एशियाके नाना स्थानोंमें घोड़े पाये जाते थे और आर्यगण घोड़ोंको रथमें जोतते थे, इसमें सन्देह नहीं। कोई कोई कहते हैं, कि अफ्रिका घोड़ाका आदि वासस्थान है और मिस्रके आदमियोंने पहले पहल घोड़ा पोसना शुरू किया था। एशिया, अफ्रिका, युरोप और अमेरिकामें बहुत दिनोंके मरे हुए समय और गेंडेकी हड्डियोंके साथ घोड़ोंकी हड्डियां भी पाई जाती हैं। कोलम्बसने जिस समय अमेरिका आविष्कार किया था, उस समय वहां घोड़े न थे। इसीसे हड्डी देखकर विश्वास होता है, कि पहले अमेरिकामें घोड़े थे, परन्तु कोलम्बसके समयमें वहांके घोड़ोंका नाश हो गया था। युरोपियोंके वहां घोड़ा छोड़ देनेसे अब फिर वहां बहुतसे जङ्गली घोड़े हो गये हैं।

स्थानभेदसे घोड़ोंकी आकृति और वर्ण नाना प्रकारका होता है। कोई घोड़ा बड़ा और कोई छोटा होता है। सचराचर अल्प रक्तवर्ण, श्वेत एवं कृष्ण वर्णके घोड़े देखनेमें आते हैं। अष्ट्रेलिया, अरब, और बरबराके घोड़ेही अधिक प्रसिद्ध हैं। कच्छ देशका घोड़ा मझोले डीलका होता है। और ब्रह्मदेशका छोटा घोड़ा बलवान्, कष्टसहिष्णु, बुद्धिमान् और प्रभुभक्त होता है। अरबी घोड़े इन्हीं सब गुणोंके लिये अधिक विख्यात हैं।

पहले आर्यगण घोड़ा काटकर यज्ञ करते थे, उसका नाम अश्वमेध है। यज्ञ समाप्त हो जानेपर याज्ञिकगण उसके हृदयकी वसा और मांससे होम करते और कुछ मांस खाते भी थे। आजकल किसी किसी देशके आदमी घोड़ेका मांस खाते हैं। फ्रान्समें इसका बहुत चलन है। लण्डनमें कुत्ते और बिल्लियोंके खानेके लिये घोड़ेका मांस बिकता है। कितने ही जातियां घोड़ीका दूध पीती हैं। काल्मक लोग घोड़ीको दूधसे एक प्रकारकी मदिरा तय्यार करते हैं। घोड़ेके केशर और पूंछके बालसे चिड़िया फसानेकी फन्दा, जाली, पापोष और एक प्रकारका कपड़ा बनाया जाता है। इसके चमड़ेसे मेज मढ़ी जाती है।

अश्वबलको साफ सुथरा और सूखा रखना और ऐसा बनाना चाहिये, जिसमें हवा खूब आती हो। चना, यव, गेहूं, यव और गेहूंकी भूसी, सूखी घास घोड़ेका खास खुराक है। हमारे देशके धनी घी, चीनी और गुड़ भी घोड़ेको खिलाते हैं। डाकपुरुषके वचनानुसार घोड़ा साठ वर्ष जीता है। परन्तु घोड़ा तीस, पैंतीस और चालीस वर्ष तक जीता रहता है।

घोड़ा चौपाया है। शरीरके परिमाणानुसार गदहेसे इसके कान छोटे होते हैं। देह और पूंछमें बाल होते हैं। इसके खुर जुड़े रहते हैं। चारो पैरोंमें घुटनेके ऊपर भीतरको आर अस्थिमय चिन्ह होता है। इसीसे लोग कहते हैं, कि पहले घोड़ेके पंख होते थे। वे पंख अब कट गये हैं, केवल उनके चिन्ह मात्र रह गये हैं। कुछ आदमी पक्षीराज घोड़ेका किस्सा भी कहते हैं। पक्षीराज घोड़ेके पर होते हैं, उसीसे वह शून्यमें उड़ सकता है। घोड़ा खड़ा खड़ा सोता है।

आइन्-इ-अकबरीमें घोड़ा सात श्रेणियोंमें विभक्त किया गया है,—अरबी, पारसी, मुजन्नस, तुर्की, याबू, ताजी और जङ्गली। घोड़ेके पैर ऊंचा कर दीर्घभावसे चलनेको टाप् कहते हैं। पैरका कर धीरे धीरे चलनेका नाम कदम है। पीठको हिलाकर दौड़नेको दुल्की कहते हैं। लोहेके ब्रुससे घोड़ेका खरहरा किया जाता है। घोड़ेके टापमें लोहेकी नाल बांधी जाती है, इससे दौड़नेके समय पैरोंमें चोट नहीं लगती। घोड़ेकी पीठपर बैठनेके आसनका नाम जीन है। जीन चमड़े वा कपड़ेका बनता है। जीनके दोनों ओर पैर रखनेके लिये रिकाब लटकती रहती है। घोड़ेके मुंहके लगामको खींचकर इशारा करनेसे चाहे जिधर ले जा सकते हैं। पहले सूतजातिवाले ही घोड़का रथ हांकते थे। राजा नल अश्वविद्यामें विशेष

रहा था। (महाभारत वन)। चरकादिमें 'अश्ववैद्यक' और नकुलके शालिहोत्रमें सर्वप्रकार अश्वक रोगकी चिकित्सा सविस्तार वर्णित है। नकुल देखो। रति-शास्त्रानुसार अश्वजातीय पुरुष। उसका लक्षण—काठके समान देह दृढ़, निर्भय, मिथ्यावादी, दरिद्र और बादमाश भिक्षुक।

अश्वक (सं० त्रि०) १ अश्व सदृश, अश्व जैसा, घोड़ेके मानिन्द जो घोड़ेकी तरह काम करता हो। (पु०) २ टट्टू छोटा घोड़ा। ३ खराब घोड़ा जो घोड़ा अच्छा न हो। ४ आवारा घोड़ा, जिस घोड़ेके मालिकका पता न मिले। ५ चोरी घोड़ा। ६ कुलिङ्ग पक्षी गौरैया। ७ कोई प्राचीन जनपद। भारतके उत्तरपश्चिमप्रान्तमें अवस्थित था। ग्रीक पुराविदोंने Assakani नाममें उल्लेख किया।

अश्वकन्दक (सं० पु०) अश्वगन्धा असगंध।

अश्वकन्दा (सं० स्त्री०) अश्वस्य गन्धः इव गन्ध कन्दे यस्याः बहुव्री० वा टाप्। १ अश्वगन्धा, असगंध। २ वनस्पति विशेष, कोई जड़ी बूटी।

अश्वकन्दिका, अश्वकन्द देखो।

अश्वकर्ण (सं० पु०) अश्वस्य कर्ण इव पत्र यस्य। १ अश्वका कर्ण, घोड़ेका कान। २ शालवृक्ष विशेष किसी किस्मके शालका पेड़। ३ शालामात्र। इसका अपर पर्याय कर्णद्रुम तार्क्ष्यप्रसव सस्यसम्बरण अश्व, दीर्घपत्र सुगन्धि और कौषिक है। ४ पलाश भेद, किसी किस्मके ढाकका पेड़। ५ पर्वत विशेष, कोई पहाड़। (क्ली०) ६ वाग्भटसम्मतनामा अस्थिभग्न विशेष। हड्डियोंका खास किस्मसे टूट जाना।

अश्वकर्णक, अश्वकर्ण देखो।

अश्वकर्णिका (सं० स्त्री०) अश्वकर्ण देखो।

अश्वखातरा (सं० स्त्री०) अश्वखातरा घोड़ाचावर। यह तिक्त, कासघ्न और दीपन होती है। (राजनिघण्ट)

अश्वखातरिका, अश्वखातरा देखो।

अश्वखावरिका, अश्वक्रान्ता देखो।

अश्विकिनी (सं० स्त्री०) अश्वस्य कं सुखं तत् सदृश, आरोह स्थानम् इति कौशात् ङीप्। अश्विनी नक्षत्र।

अश्वकुटी (सं० स्त्री०) तवेला, अस्तबल घोड़ोंके रहनेकी जगह।

अश्वकुशल (सं० त्रि०) घोड़ा फेरनेवाला, जो घोड़ेपर खूब चढ़ता हो।

अश्वकोविद, अश्वज्ञ देखो।

अश्वक्रन्द (सं० पु०) १ देवसेनापति विशेष। २ पक्षी कोई चिड़िया।

अश्वक्रान्ता (सं० स्त्री०) १ सङ्गीतशास्त्रोक्त मूर्च्छना विशेष। इसका सरगम इस तरह बंधा है,— ममप-धनि सरीममपधनि। २ तन्त्रोक्त जनपदभेद।

अश्वखरज (सं० पु०) अश्वश्च खरो च, अश्वा च खरश्च ताभ्यां जायते पुंवद्भाव। अश्वतर, खच्चर।

अश्वखुर (सं० पु०) अश्वस्य खुरमिव आकृतिरस्य। १ नखीनामक गन्धद्रव्य, नख। २ घोटकखुर, घोड़ेका सुम।

अश्वखुरा (सं० स्त्री०) श्वेतापराजिता, कोवाठेंठी।

अश्वखुरी, अश्वखुर देखो।

अश्वगति (सं० स्त्री०) १ घोटककी गति, घोड़ेकी चाल। २ छन्दोविशेष, कोई बहर। इसमें चार चरण और प्रत्येक चरणमें सोलह अक्षर रहता है।

अश्वगन्धा (सं० स्त्री०) अश्वस्य गन्ध इव गन्धो मूले यस्याः। क्षुपविशेष। (Withania Somnifera) अश्वगन्धाका अपर पर्याय यह है—हयगन्धा, वाजिगन्धा, अश्वगन्धिका, अश्वा, तुरगगन्धा, कम्बुका, अश्वावरोहिका कम्बुकाष्ठ, अवरोहिका, वाराहकर्णी, वातघ्नी, श्यामला, कामरूपिणी, काला, प्रियकरी, गन्धपत्री, वर्यनिया वराहपत्री।

वैद्यशास्त्रके मतमें—यह कटु, उष्ण, तिक्त, मदकर और शुक्रवृद्धिकारी है। इससे वायु कास, श्वास क्षय, व्रण प्रभृति अनेक रोग नष्ट होता है। यह पेड़ भारतवर्षके उष्ण एवं शुष्क स्थानमें उत्पन्न होता है। यहां बङ्गालादि देशमें भी कहीं-कहीं देखा जाता है। अधिकतर यहां इसके परिवर्तनमें आकन्द (अकुवा) द्रव्य व्यवहृत होता है। बहुत लोग कहते हैं कि अश्वगन्धा और आकन्द एक ही माल है।

अश्वगन्धाके मूल वलकार, धातुपरिवर्तक, शुक्रवृद्धिकर होता है। यह क्षय, काश, बालकोंका दौर्बल्य-रोग एवं वातकी पीड़ामें विशेष उपकार करता है। कोई-कोई कहते हैं, कि इससे प्रस्राव और निद्रा होती हैं। पृष्ठाघात, पुरातन क्षत एवं किसी स्थान फूल उठने पर इसके पत्ते और छालका लेप देनेसे उपकार होता है। अस्थिभङ्ग (हड्डीटूट) हो जाने पर या वातपीड़ा, अस्थिपीडादिमें इसका लेप यन्त्रणा निवारण करता है। इसका फल मूत्रकर होता है। इससे अश्वगन्धाघृत, अश्वगन्धातैल प्रभृति नानाप्रकार औषध प्रस्तुत होता है।

अश्वगन्धाघृत (सं० क्ली०) औषध विशेष। यह चार प्रकारका होता है। इसमें पहला बाल-रोगाधिकारमें गुणद है। बनानेकी रीति यह है—घृत ४ शराव, अश्वगन्धा कल्क १ श०, दूध ४ शराव, जल १६ शराव। यह सब चीज एक साथ पचानेसे तैयार होता है। मतान्तरसे इसमें दूध ४० शराव मिलानेको भी लिखा है। (सारकौमुदी, भैषज्यरत्नावली)

दूसरा वातव्याधिहितकारक। अश्वगन्धा १६ शराव ६४ शराव जलमें पाककरके शेष १६ शराव कषाय तैयार करना चाहिये। पीछे घृत ४ शराव और दूध १६ शराव मिलाकर विधिपूर्वक पचाया जाता है। (चक्रदत्त—वातव्याधिचिकित्सा)

तृतीय और चतुर्थ प्रकार—वातव्याधि एवं क्षयमें उपकारक है। इसे प्रस्तुतकरनेकी विधि—अश्वगन्धा १२॥० शराव जल ६४ शरावका पादशेष १६ शराव सुपवित्र क्काथ एवं छागमांस २५श० जल १२८ शरावमें खूब पाक करके शेष रस ३२ श०, गव्य दूध १६ श० तथा काकोली, क्षीरकाकोली, मधुक, मेदा, महामेदा, जीवन्ती, जीवक, वला, इलायची, शतावरी, द्राक्षा, विदारी, क्षुद्रजीरक, मुद्गपर्णी, शूकशिम्बी, पीपली, ऋषभक यह सब द्रव्य प्रत्येक १ कर्ष, एकत्र मिलाकर पाक करना चाहिये। जब पाक सिद्ध हो जाय, तब आगपरसे उतार शीतल होनेपर चीनी ४ पल और मधु ८ पल मिलाना होता है। (प्रयोगामृत)

अच्छी जगहमें उत्पन्न भया हुआ अश्वगन्धा १०० पल शुभदिनमें लाकर खूब महीन कूटकरके १ द्रोण जलमें धीरे धीरे पाक करना, जब चतुर्थांश शेष रह जायतो उतारकर कपड़ेसे छान लेना चाहिये। फिर घृत १ प्रस्थ एवं गौका दूध ३ प्रस्थ तथा २०० पल-मांसका पूर्वोक्त प्रकारसे निकाला हुआ कषाय। काकोली, क्षीरकाकोली, मेदा, महामेदा जीरक, कृष्णजीरक, स्वयंगुप्ता, ऋषभक, एला, मधुक, मृद्वीका, शूर्पपर्णी, जीवन्ती, चपला, वाला, नारायणी, विदारी यह सब औषधियोंका खूब महीन पीसा हुआ चूर्ण डालकर एकत्र पाक करना चाहिये। पाकसिद्ध तथा शीतल हो जानेपर मधु एवं चीनी मिलानी होती है। (रसरत्नाकर, भैषज्यरत्नावली)

अश्वगन्धातैल (सं० क्ली०) औषधभेद। यह दो प्रकारका होता है। पहला वातव्याधिमें हितकर है। इसके तैयार करनेकी रीति इस तरह है—तिलका तैल ४ शराव अश्वगन्धा १२॥० शराव और जल ६४ शरावका शेष १६ शराव क्काथ, मृणालादिका मिला हुआ कल्क १ शराव एक साथ विधिपूर्वक पकाना चाहिये। (चक्रदत्त)

दूसरा रसायनाधिकारमें उपकारक। इसमें कल्कके लिये अश्वगन्धा, कुष्ठ, मांसी, सिंहीफल यह सब १ शराव, दूध १६ शराव, तिलका तैल ४ शराव। एकत्र पचानेसे तैयार होता है। (चक्रदत्त)

अश्वगन्धाद्यचूर्ण (सं० क्ली०) औषधविशेष। यह चूर्ण स्वरभङ्गनाशक है। अश्वगन्धा, अजमोदा, पाठा, त्रिकटु (सोंठ मिर्च पीपल) त्रिक, शतपुष्प, ब्रह्म-वीज, सैन्धव यह सब सम भाग और इसके अर्द्ध भाग वचको एक साथ पीस कर चूर्ण तैयार करना चाहिये। फिर मधु और घीके साथ १ कर्ष-मात्र प्रति दिन सेवन करनेसे बहुत फायदा दिख-लाता है। (रसरत्नाकर)

अश्वघोष भदन्त—एक प्राचीन बौद्ध आचार्य। सुभाषिता-वलीमें इनकी कितने ही कविता उद्धृत हुआ है।

अश्वदेव—प्राचीन संस्कृत कवि। सुभाषितावलीमें इनका उल्लेख है।

अश्वमोयुग (सं० क्ली०) अश्व द्वित्वे मोयुगच्। अश्वद्वय, घोड़ेकी जोडो।

विशेष। (Ficus religiosa) इसका हिन्दी नाम पीपर वा पीपल है। पीपल शब्द पिप्पल शब्दका अपभ्रंश है। अनेक स्थानोंमें यह पांकड नामसे प्रसिद्ध है, परन्तु पांकड स्वतन्त्र वृक्ष हैं।

अश्वत्थके ये कई पर्याय देखे जाते हैं,—बोधिद्रुम, चलदल, पिप्पल, कुञ्जराशन, अच्युतावास, चलपत्र, पवित्रक, शुभद, बोधिवृक्ष, याज्ञिक, गजभक्षण, श्रीमान्, चीरद्रुम, विप्र, मङ्गल्य, श्यामल, गुह्यपुष्प, सेव्य, सत्य, शुचिद्रुम, धनुवृक्ष।

अश्वत्थवृक्ष कई प्रकारका होता है। यथा—गईभाण्ड, गजदण्ड, बेलिया पिप्पल, नन्दीवृक्ष इत्यादि। अश्वत्थका वृक्ष बहुत बड़ा होता है। चारो ओर इसकी शाखा प्रशाखायें फैल जाती हैं, चैत्र वैशाखके महीनेमें नव नये पत्ते निकलते और वायुके झोंकेसे झर झर हिलते हैं, तब इस वृक्षकी अपूर्व शोभा दिखाई देती है। किसी किसी पीपलके नये पत्ते हरित मिश्रित श्वेतवर्णके और किसीके लाल होते हैं; इसीसे कवि लोग स्त्रियोंके करपल्लवके साथ इसकी तुलना करते हैं। पीपलके पेडमें आघात करनेसे सफेद दूध निकलता है। चिडीमार इसीसे चिड़िया फसाते हैं। इसके दूधसे गटापार्चा बन सकता है। यह वृक्ष डूमर जातिका है, इसीसे इसमें फूल नहीं लगते। यह एक वर्षमें दो बार फलता है। फल जब पकते हैं तो चिड़ियां उन्हें खाती है। हाथी, गोरू, भैंस, बकरी, भेड आदि जन्तु इसके पत्तेको खाना बहुत पसन्द करते हैं।

अश्वत्थ हमलोगोंके देशका पवित्र वृक्ष है। न इसका पत्ता तोड़ना चाहिये और न इसे काटकर लकड़ी बनानी चाहिये। पर इस नियमका प्रतिपालन सब कोई नहीं करते। वैशाख महिनेमें हो कितने इसका पत्ता नही तोडते और शूद्र लोग प्रायः उस पेड़को काटना नहीं चाहते। अश्वत्थवृक्ष स्वय विष्णुरूपी है। पद्मपुराण उत्तरखण्ड १६० अध्यायमें लिखा है, कि एकदिन गौरीशङ्कर एकान्तमें क्रीड़ा-कौतुक कर रहे थे, उसी समय देवताओंने अग्निको ब्राह्मणके वेशमें वहां भेज दिया। अग्निके वहां पहुंचने पर सुखमें बाधा पडनेके कारण पार्वतीने क्रुद्ध होकर देवताओंको यह शाप दिया,—'तुमलोग वृक्षयोनि प्राप्त हो।' उसी शापसे ब्रह्मा पलाशवृक्ष, विष्णु अश्वत्थ-वृक्ष एवं रुद्र वटवृक्ष हुए। भगवद्गीतामें भी लिखा है, कि श्रीकृष्णने अर्जुनको कहा था,—"सब वृक्षोंमें मुझे अश्वत्थवृक्ष समझना।"

अश्वत्थवृक्षके मूलमें थाला बनाकर वैशाख मासमें जल देनेसे महा फल होता है। पीपलके पेड़को देखकर प्रणाम करनेसे आयु और सम्पद् बढ़ता है। अगर बांया अङ्ग फरके अथवा और कोई अशुभ लक्षण दिखाइ पड़े, तो पीपलके मूलमें जल देनेसे कोई अनिष्ट नहो होता। जल देनेका मन्त्र,—

"चक्षुःस्पन्दं भुजस्पन्दं तथा दुःस्वप्नदर्शनम्।
शत्रूणाञ्च समुत्थानमश्वत्थ शमयाशु मे॥"

वैद्यशास्त्रके मतानुसार अश्वत्थ मधुर, कषाय और शीतल है। इससे कफ, पित्त और दाह नष्ट होता है। इसका फल शीतल और अतिशय हृद्य है। इससे रक्त, पित्त, विष, दाह, छर्दि, शोष, अरुचि एवं योनिदोष नष्ट होता है।

इसकी छाल सङ्कोचक है। कोमल छाल और पत्तेको क्वाथसे पुरातन प्रमेह रोगमें उपकार होता है। फलको चूर्ण कर खानेसे भूख बढती और कोठा साफ होता है। इसका बीज शीतल एवं धातु-परिवर्तक है। चर्मरोगमें इसको छालका क्वाथ सेवन करनेसे उपकार होता है। इसका नवीन पल्लवाङ्कुर विरेचक है, अवधूत लोग हरिताल भस्म करनेके समय अश्वत्थभस्म व्यवहार करते हैं। होमादि कार्यमें पीपलकी लकड़ी लगती है। शमीवृक्षपर जो पीपल जन्मता है, ऋषिगण उसकी अरणि बनाते थे। पीपलका तख्ता बहुत दिन नहीं टिकता और न उसपर अच्छी पालिश हो होती है।

अश्वत्थक (सं० पु०) अश्वत्थस्य फलं अश्वत्थः तद्युक्तः कालोऽप्यश्वत्थः, तस्मिन् देयमृणम् इत्यर्थे (कलाप्यश्वत्थयवबुसाद्वुन्। पा ४।३।४८) १ अश्वत्थका फल लगते समय देने योग्य ऋण। स्वार्थे कन्। २ अश्वत्थवृक्ष, पीपलका पेड़।

अश्वत्थकुण (सं पु०) अश्वत्थस्य पाकः (पीलादि-कर्णादिभ्य कुणप्। पा ५।२।२४) पके हुये पीपलका फल, पकुआ।

अश्वत्थफलका (सं० स्त्री०) वरुणा।

अश्वत्थपत्रका, अश्वत्थफलका देखो।

अश्वत्थभिद्, अश्वत्थभेद देखो।

अश्वत्थभेद (सं० पु०) अश्वत्थस्य भेदः विशेषो यत्र। नन्दी वृक्ष, किसी किस्मका पीपल।

अश्वत्थसदृशा (सं० स्त्री०) अश्वत्थिका, किसी किस्मका पीपल।

अश्वत्था (सं० स्त्री०) १ पूर्णिमा तिथि। २ छोटा अश्वत्थ, किसी किस्मका पीपल।

अश्वत्थामन् (सं० पु०) अश्वस्येव स्थाम बलमस्य पृ० सकारस्य तकारादेश। १ कृपीके गर्भ और द्रोणाचार्यके औरससे जात एक महावीर। इन्होंने भूमिष्ठ होते ही उच्चैःश्रवा अश्वकी तरह शब्द निकाला था, इसीसे इनका नाम अश्वत्थामा पड़ा। "अश्वस्येवास्य यत् स्थाम नदतः प्रदिशो गतम्। अश्वत्थामैव बालोऽयं तस्मान्नाम्ना भविष्यति॥" (महाभारत आदिपर्व १३०।४०-४८) अश्वत्थामाने कुरुक्षेत्रके युद्धमें महापौरुष दिखाया था। कहते हैं इनकी मृत्यु नहीं, यह अमर हैं। २ मालवपतिके मालव राज इन्द्रवर्माका हाथी। कुरुक्षेत्रके युद्धमें द्रोणाचार्य महाविक्रमसे पाण्डवोंकी सेनाको विनष्ट कर रहे थे। इसलिये श्रीकृष्णचन्द्र अर्जुनसे बोले, 'द्रोणको उत्पन्न करके बिना मारे और कोई रक्षा नहीं है। अतएव सब कोई उनके निकट यह सम्वाद दीजिये, कि अश्वत्थामा हत हो गया।' पाण्डव पक्षके लोगोंने ऐसा ही किया, परन्तु द्रोणाचार्यने किसी की बात न मानी। वे बोले—युधिष्ठिरके मुखसे यह समाचार बिना सुने हमको विश्वास नहीं हो सकता। युधिष्ठिर सत्यवादी रहे, मिथ्याबातमें उन्हें नरकभय हुआ था। इधर अश्वत्थामा मारा गया यह बिना होने युद्धमें पराजय होते रहा। उसी समय मालव राजके अश्वत्थामा नामक हस्तीकी मृत्यु हुई थी। इसीसे युधिष्ठिर भीमसे कहके 'अश्वत्थामाहत' ऊंचे स्वरसे कहके 'इति गज' यह बात अस्फुट धीरे धीरे बोले। उधर द्रोणाचार्य शेष कथा सुन न पानेसे समझे, कि सचमुच उनका पुत्र अश्वत्थामा विनष्ट हो गया।

अश्वत्थामा, अश्वत्थामन् देखो।

अश्वत्थिक (सं० त्रि०) अश्वत्थेन चरति, अश्वत्थ-ठक्। (पा ४।४।८) अश्वत्थ फल खानेवाला जन्तु, जो जानवर पीपलका फल खाता हो।

अश्वत्थिका, अश्वत्थी देखो।

अश्वत्थी (सं० स्त्री०) पिप्पलादेराकृतिगणत्वात् ङीष्। १ क्षुद्रपत्राश्वत्थ, पाकर। यह मधुर, कषाय, रक्तपित्तघ्न, विषघ्न, दाहघ्न और गर्भिणीके लिये हितकर होती है। (राजनिघण्टु) २ क्षुप-विशेष, कोई पौधा। यह वनमें उत्पन्न होती और पीपलजैसे छोटे-छोटे पत्ते रखती है। इसका पर्याय—मधुपर्णी, पत्रिका, क्षुद्रपत्रिका, पिप्पलिका, वनस्था, अश्वत्थिका।

अश्वद (सं० त्रि) अश्वप्रदान करनेवाला, जो घोड़ा बख्शता हो।

अश्वदंष्ट्र (सं० पु०) १ गोक्षुर क्षुप, गोखुरूका पेड़। २ हिंस्रजन्तु विशेष, कोई खूंख्वार जानवर।

अश्वदंष्ट्रा (सं० स्त्री०) अश्वस्य दंष्ट्रा इव आकारोऽस्य तत्सादृश्यात्। गोक्षुरक्षुप, गोखुरूका पेड़।

अश्वदा (वै० पु०) अश्व प्रदान करनेवाला पुरुष, जो अश्व घोड़ा बख्शता हो।

अश्वदावन्, अश्वद देखो।

अश्वदूत (सं० पु०) घोड़सवार हरकारा, जो डाक घोड़ेपर चढ़कर खबर देता हो।

अश्वनाय (सं० पु०) अश्वं नयति अश्व-नी-अण्। उप० समा० यद्वा नयति, कर्तरि अच् नायः, अश्वस्य नायः ६ तत्। अश्वपालक सईस, जो अश्व घोड़ा पालता हो।

अश्वनाम (सं० पु०) श्वेतकरवीर, सफेद कनेर।

अश्वनियन्त्रिका (सं० स्त्री) अश्वचालिका लगाम।

अश्वनिर्णिज् (वै० त्रि०) अश्वविभूषित, घोड़ोंसे सजा हुआ।

अश्वान्त (सं० त्रि०) अश्वस्य घोटकस्य अन्ते व्याप्य अन्त्य अवश्य वा अन्तो नाशो यस्य, अश्वादि देवोऽस्य

बहुव्री०। १ अशुभ, बुरा। २ मृत, मुर्दा। (पु०) ३ क्षेत्र, मैदान्। ४ चुल्ली, चूल्हा, भट्टी। ५ अनवधि, मुद्दतकी घटमसौजूदगो। ६ मरण, मौत। ७ प्राणि-हिंसाका स्थान, मकृतल, जिस जगहमें जानवर मारे जायें। अश्वन्तमशुभे क्षेत्रे चुल्ल्यामनवधौ मृतौ। (हैम)

अश्वप (सं० पु०) अश्वं पाति रक्षति, अश्व-पा क। १ अश्वपालक, सयीस। २ अग्निपालक, आगकी हिफाजत करनेवाला। ३ साग्निक, जो आगके साथ हो।

अश्वपति (वै० पु०) ६-तत्। १ अश्वपालक, सयीस। २ रामायणप्रसिद्ध कैकेय राजविशेष। यह भरतके मातुल रहे। ३ असुरविशेष। ४ राजोपाधिभेद।

अश्वपत्यादि (सं० पु०) अश्वपतिरिति शब्द आदि र्येषाम्, बहुव्री०। अश्वपत्यादिभ्यश्च। पा ४।१।८४। प्राग्दी-व्यतीय अर्थमें यण् प्रत्ययके निमित्त पाणिन्युक्त शब्द-समूह। यथा,—अश्वपति, ज्ञानपति, शतपति, धन-पति, गणपति, स्थानपति, यज्ञपति, राष्ट्रपति, कुल-पति, गृहपति, धान्यपति, वन्धुपति, धर्मपति, सभा-पति, प्राणपति, क्षेत्रपति, पशुपति, अधिपति।

अश्वपर्ण (वै० त्रि०) अश्वाना पर्ण गमन यत्र, बहुव्री०। अश्वके पर्णवाला, जिसमें घोड़ेके बाजू रहें। यह शब्द रथ एवं मेघका विशेषण है। "समय पर्णायरनि।" ऋक् ६।४७।३१।

अश्वपर्णिका (सं० स्त्री०) भूतकेशीलता, भूतकेश।

अश्वपर्णी, अश्वपर्णिका देखो।

अश्वपस्त्य (वै० त्रि०) व्याप्तगृह। "अश्व प्रजावद्रयि-मश्वपस्त्य" ऋक् ८।८८।३१। 'अश्वपस्त्य व्याप्तगृह' (सायण)

अश्वपाद (सं० त्रि०) अश्वस्य पाद इव पादो यस्य, बहुव्री०। अश्वके पैरकी तरह पादयुक्त, जिसके घोड़े-जैसा पैर रहे।

अश्वपाल (सं० पु०) अश्वान् पालयति, पा-णिच्-लुक्-अण्, अच् वा, णिच् लोपः। घोटकरक्षक, सयीस।

अश्वपुच्छक (सं० पु०) खड्गलता, कांस, कुश।

अश्वपुच्छा (सं० स्त्री०) १ पृश्निपर्णी, पठौनी। २ माषपर्णी, किसी किस्मके दालदार अनाजकी झाड़ी।

अश्वपुच्छिका, अश्वपुच्छी देखो।

अश्वपुच्छी (सं० स्त्री०) अश्वस्य पुच्छमिव पुच्छं केशरो यस्याः, बहुव्री०। माषपर्णी वृक्ष, किसी किस्मके दालदार अनाजका पेड़।

अश्वपुटभावना (सं० स्त्री०) द्वाविंशतपलपरि-मित द्रव्यकी भावना, टपाना बाईस मिनट तक आव-जुलाल।

अश्वःपुष्पी (सं० स्त्री०) १ मल्लकी वृक्ष, कुंदरुका पेड़। २ द्रवन्ती।

अश्वपृष्ठ (सं० क्ली०) घोटकका पृष्ठ, घोड़ेकी पीठ।

अश्वपेज (सं० पु०) ऋषिविशेष।

अश्वपेजिन् (सं० त्रि०) अश्वपेज ऋषि-प्रणीत ग्रन्थ पढ़नेवाले। यह शब्द बहुवचनान्त है।

अश्वपेशस् (वै० त्रि०) अश्वेन पेशस रूपं निरूपणीयं यस्य। अश्व द्वारा निरूपणीय, जिसे घोड़ा देखे-भाले। "अश्वपेशसमश्वे।" ऋक् २।१।१६।

अश्ववडव (सं० पु०) अश्वश्च वडवा च, द्वन्द्व०। विभाषा वृक्ष-मृग-तृण-धान्य-व्यञ्जन-पशुशकुन्यश्ववडव-पूर्वापराधरोत्तराणाम्। पा २।४।१२। अश्व एवं अश्वा, घोड़ा-घोड़ी।

अश्वबन्ध (सं० पु०) १ अश्वपालक, सायीस, घोड़ा बांधनेवाला। २ पद्यविशेष, कोई बहर। चित्र-काव्यके अनुसार यह छन्द घोड़ेकी मूर्तिमें इसतरह लिखा जाता, जिसमें अक्षरसे अङ्ग-प्रत्यङ्ग तथा आभू-षणादिका नाम निकलता है।

अश्वबन्धन (सं० क्ली०) १ घोटकका बन्धन, घोड़ेकी अगाड़ी-पिछाड़ी। (त्रि०) २ घोटकके बन्धनमें काम आनेवाला। जो घोड़ा बांधनेमें काम आता हो।

अश्ववला (सं० स्त्री०) १ मेथिका, मेथी। २ नारीकी भाजी।

अश्ववाल (सं० पु०) अश्वस्य वालः केशर इव तदा-कारपुष्पत्वात्। काशतृण, कांस।

अश्ववाहु (सं० पु०) अश्वौ दीर्घौ बाहू यस्य, बहुव्री०। यदुवंशीय चित्रकके पुत्र। हरिवंशमें इनका विशेष विवरण है।

अश्ववृष (वै० त्रि०) अश्वोंपर अवस्थित, घोड़ोंपर टिका हुआ।

वसन्त काल उपस्थित होनेपर वीर्य्यवान् राजा दशरथ पुत्रलाभार्थं अश्वमेध यज्ञ करनेकी अभिलाषसे ऋषि वशिष्ठजीके निकट गये। वशिष्ठ ऋषिने यज्ञकर्मकुशल वृद्ध ब्राह्मण, परमधार्मिक वृद्ध स्थापत्य-कर्म-कुशल व्यक्ति, कर्मकारक भृत्य, चर्मकार प्रभृति शिल्पी, चित्रादि शिल्पकार, सूत्रधार, खनक, गणक, नट, नर्तक और बहुश्रुत शास्त्रज्ञ शुचि पुरुषोंको कहा, कि तुम लोग राजाकी आज्ञासे यज्ञोपयोगी समुदाय कार्य निर्वाह करो, तथा बहु सहस्र ईंट लाकर अनेक गुणसमन्वित राजयोग्य अनेक गृह, ब्राह्मणोंके वासयोग्य बहुविध अन्नपानयुक्त सुदृढ़ उत्तम गृह और अनेक देशोंसे आनेवाले नृपति तथा अन्यान्य ग्रामवासी प्रभृतियोंके लिये यथायोग्य गृह निर्माण करो। * * * सब लोग मिल करके आये और वशिष्ठजीसे बोले, आपका अभिमत समस्त कार्य सुविहित हो गया, कोई एक कार्य भी अङ्गहीन न हुआ।

अनन्तर वशिष्ठ ऋषिने सुमन्त्रको बुलाकर यह बात कही, पृथिवीमें जितने धार्मिक नृपति एवं समस्त देशीय ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, इन सबको आदर-सत्कारपूर्वक बोला लावो। सुमन्त्रने वशिष्ठजीकी बात सुनकर, राजाओंको अयोध्यानगरीमें आनयनार्थं कार्यदक्ष पुरुषोंको आदेश किया। पीछे स्वयं भी शीघ्र ही गमन किया। अनन्तर कई एक दिनमें महीपालगण राजा दशरथके निमित्त अनेक रत्न लेकर अयोध्यानगरीमें समागत हुए। परे वशिष्ठ प्रधान द्विजोत्तमके साथ ऋष्यशृङ्गको आगे करके यज्ञभूमि पर गये और यथाशास्त्र विधिसे यज्ञकर्म आरम्भ किये। श्रीमान् राजा दशरथ पत्नियोंके सहित दीक्षित हुए। अनन्तर सम्वत्सर पूर्ण होनेपर अश्व प्रत्यागत हुआ और सरयू नदीके उत्तरतीरपर यज्ञ आरम्भ किया गया। वेदपारग याजकोंने शास्त्रानुसार विधिपूर्वक अनुष्ठान करने लगे। प्रवर्ग्य और उपसद नामक दो कर्म यथाविधि करके, अन्यान्य कर्म सकल निर्वाह किया। पीछे सब देवताओंको पूजा करके सन्तोषपूर्वक प्रातःसवन प्रभृति कर्म निर्वाह किया। तदनन्तर प्रस्तरसे सोमलताको कूट करके रस निकाला। फिर मध्यदिनका सवन अनुष्ठित हुआ। श्रेष्ठ वही ब्राह्मण-महात्माने दशरथका तृतीय सवन भी शास्त्रानुसार यथावत् समाधान किये। उस समय सकलदिवसमें एक ब्राह्मण, या परिश्रान्त क्षुधित नहीं रहे। इस यज्ञके उपलक्षमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, तापस, संन्यासी, वृद्ध, बालक, महिला, एवं व्याधित सभी व्यक्ति भोजन करते थे। अध्यक्षगण पुनः पुनः अन्न एवं विविध वस्त्र प्रदान करते थे। इस प्रकार सहर्ष सोत्साह यज्ञ हुआ। यज्ञयूप उत्थापनके समय शिल्पशास्त्राभिज्ञ व्यक्तिगण विल्वकाष्ठ निर्मित ६, खदिर निर्मित ६, बेलयूपके समीप स्थापनके लिये पलाशनिर्मित ६, श्लेष्मातक निर्मित १, व्यस्त बाहु परिमित देवदारु काठका बनाया हुआ २। यह सब मिल करके २१ यूप विधिपूर्वक विन्यास किया गया। यह स्वर्ण स्पर्शयुक्त रूपवाली अष्टकोणसमन्वित सुदृढ़ एक विंशति यूप काञ्चनसे भूषित प्रत्येक एक विंशति वस्त्रसे अलङ्कृत और गन्धपुष्पसे पूजित हो करके ऐसा शोभायमान हुआ, जैसे दीप्तिशाली सप्तमहर्षि स्वर्गमें विराजमान रहते हैं। इसके बाद शिल्पियोंने ईंटसे शास्त्रोक्त परिमाण चयनीय अग्निकुण्ड निर्माण किया, जो गरुडकी तरह त्रिकोणाकृति और स्वर्णनिर्मित पक्षसमन्वित एवं अष्टादश हस्त परिमित हुआ था। अनन्तर इस यज्ञमें शामित्र कर्म उपस्थित होनेपर ऋषियोंने,शास्त्रमें जौन जौन देवताको जो जो बलि विहित है, उन देवताओंके उद्देश्यसे वही बलि प्रोक्षण किये। उस समय बहुतर जलचर, भुजङ्ग, पशु, पक्षी और वही अश्व प्रभृति सकल बलि प्रोक्षण करके वे ही सब यूपोंमें तीन सौ (३००) पशु और श्रेष्ठ अश्व रत्नको बन्धन किये। पीछे कौशल्यादेवीने परम प्रमोदके साथ सब भावसे उस श्रेष्ठ अश्वकी परिचर्या करके तीन खण्ड तलवारसे छेदन किये। उन्होंने धर्मकामनासे सुस्थिर चित्तसे उस अश्वके सहित एक रात्र व्यतीत की।

अनन्तर होता, उद्गाता, अध्वर्यु ऋत्विग् प्रभृतिने

याज्ञमें अश्वका जो अङ्ग हवनार्थ विहित है उसको यथाविधि अग्निमें हवन किया। इसके बाद राजा दश रथने न्यायानुसार यज्ञ समापन होनेपर, होताके पूर्व देश, अध्वर्युके पश्चिम देश, ब्रह्माके दक्षिण देश एवं उद्गाताके उत्तरदेश, दक्षिणा प्रदान की। ऋत्विक् प्रभृति ब्राह्मणोंको समग्र पृथिवी दक्षिणा प्रदान करके अत्यन्त हर्ष हुये थे। अनन्तर सब कोई बोले,हे भूपते! हम लोगको राज्यका प्रयोजन नहीं, सुतरां पृथिवी पालन कर नहीं सकते हैं। अतएव आप इसका मूल्य देकर ले लीजिये। मणि रत्न, वसन, गो इनमें जो उपस्थित हो, वही देकर पृथिवी ले लीजिये। उस समय प्रजापालक दशरथने वेदपारग ब्राह्मणको दश लाख गो और दश कोटि सुवर्ण प्रदान किया और इसी तरह ऋत्विक् प्रभृतिको भी दिया। अनन्तर अभ्यागतोंको कोटि सुवर्ण प्रदान किये। उस समय ऐसा कोई याचक न रहा जो दान न पाया हो। (रामायण आदिकाण्ड १३श और १४श सर्ग)

ऐतरेय ब्राह्मणमें जनमेजय पारिक्षित मायात मानव शतानीक सात्राजित, आम्बष्ठ, युधांश्रौष्टि औग्रसैन्य, विश्वकर्मा भौवन सुदास् पैजवन, मरुत्त आविक्षित, अङ्गराज वैरोचन, भरत दौष्यन्ति, दुर्मुख पाञ्चाल, अत्यराति जानन्तपि प्रभृति राजाओंका अश्वमेध यज्ञका प्रसङ्ग है। (ऐतरेय-ब्राह्मण ८ अ० २१ व २३ ८ अध्याय देखिये) रामायणमें राजा दशरथ और रामका महाभारतमें युधिष्ठिरका अश्वमेध यज्ञ सविस्तृत वर्णित है। हिन्दुराजगणमात्र ही किसी न किसी समय अश्वमेध यज्ञका अनुष्ठान अवश्य करते थे, इसका आभास पाया जाता है। बौद्ध और जैन प्रभावकाल मौर्य्यवंशके समय वैदिक क्रिया सहित अश्वमेध यज्ञ बन्द हो गया था। शुङ्गवंश-प्रतिष्ठाता पुष्यमित्रने फिर अश्वमेध यज्ञका प्रवर्तन किया, नाना पुराण और माल विकाग्निमित्र नाटकमें इसका परिचय मिलता है। इसके बाद महाविहार कालमें पुन अश्वमेधयज्ञ बन्द हो गया, पीछे चतुर्थ शताब्दीके गुप्त-सम्राट समुद्रगुप्तने पुनः अश्वमेधयज्ञ प्रवर्तन किया। गुप्त उपलक्षमें उनका अश्वमेध-मुद्रा प्रचलित है। गुप्त वंशके बाद उत्तरभारतसे अश्वमेध यज्ञानुष्ठान एक प्रकार लोप हो जाने पर भी दाक्षिणात्यमें चालुक्य, यादव प्रभृति वंश बराबर अश्वमेधयज्ञ करते रहे। नाना शिलालिपि और ताम्रलेखसे इसका आभास पाया जाता है।

प्रधान प्रधान राजपुत नरपतियोंने अश्वमेध यज्ञ करते हैं। बङ्गदेशीय स्मार्त रघुनन्दन कलिमें अश्व मेध यज्ञका निषेध किये, तथापि हिन्दुराजगण यज्ञ करनेसे विरत नहीं हुये। जयपुरका सुप्रसिद्ध नरपति सवाइ जयसिंह ई०के १८श शताब्दीमें अश्वमेध यज्ञ किये थे। महानन्द पाठक रचित 'अश्वमेध-पद्धतो'में इसका परिचय पाया जाता है और उस अश्वमेध यज्ञके विषयमें कविकलानिधि कृष्ण भट्ट कर्तृक राम युतागाका हिन्दुस भाषामें रचित प्राकृत गाथा भी गीत हुआ करती है। यह गाथा अश्वमेधपद्धतिसे उद्धृत हुई है। राजेन्द्रवर्मा नामक एक सामन्तराजाने अश्वमेधयज्ञ करनेकी अभिलाषसे याज्ञिक पण्डित महानन्दपाठकके द्वारा उक्त अश्वमेधपद्धति सङ्कलन कराये थे। यह पद्धति अति वृहत् है। इसमें अश्व मेध यज्ञमें जो जो द्रव्यका प्रयोजन तथा जिस जिस अनुष्ठानका आवश्यक है सो सबका विस्तारपूर्वक वर्णन है। कलकत्ता एसोयाटिक सोसाइटीमें इसकी हस्तलिखित एक पोथी है।

पूर्व कालमें साधारणतः सार्वभौम नरपति अश्व मेध यज्ञ करते थे। किन्तु इस समय जब हिन्दु समा जमें कोई सार्वभौम नृपति नहीं है तो किस तरह अश्वमेधयज्ञ हो सकता है? इसके उत्तरमें पद्धतिकार महानन्द पाठक ऐसा प्राचीन प्रमाण उद्धृत किये है "अथ कात्यायन् ... राजसूयाश्वमेध सर्वकाम्य। अपि ... ॥ ... विज्ञान- ... ।' अर्थात् कात्यायन- श्रौतसूत्रके मतसे अश्वमेध राजयज्ञ है। अर्थात् सर्व फलकामनाके लिये राजा मात्र ही अश्वमेधयज्ञ कर सकते हैं अभिषिक्त और गुणवान् क्षत्रियमात्र ही

निर्वपति। २ समाप्त तु स्विष्टकृदिडम्। ३ अग्रमन्त्रे प्रथमस्य प्रचेतस इति यथालिङ्ग याज्यानुवाक्या। ४ वैधातवीययोदधन्ति। ५ तस्यां मध्ये ददाति।६ उदवसाय विराधपूर्वे के समामनन्ति। ७ तदाह दादश मर्योदिनाम् न स्थिते निर्वपेद्वादशभिरिष्टिभिरेष्ये तेति। ८ तद् तथा न कुर्यात्। शतैव मर्योदिनान् न स्थिते निर्वपेत्। तैरन्वह शतमानि शतानि ददाति। ९ स्त्रियाश्रयो वामन्ता स्वानुपश्यन् न वनमनं यस्मै। १० सर्वे निपाम्। आग्नेया वामन्ता। ऐन्द्रा गैन्धा। मारुता पार्श्ना वा वार्षिका। ऐन्द्राग्नाः। शारदा। ऐन्द्रावारुण्यता हैमन्तिका। ऐन्द्रावैष्णवा शैशिरा। ११ स वत्सराय निवदम इति सर्वे देयमांसयो पशुरश्वेन यज्ने। १२ स तिष्ठते ऽश्वमेध। १३ (१३ कण्डिका)

(कात्यायनश्रौत सूत्र २० अध्या)

अश्वमेधकाण्ड (सं० क्ली०) शतपथब्राह्मणका माध्यंदिनशाखाके तेरहवां तथा काण्वशाखाके १५श काण्ड।

अश्वमेधदत्त—पौराणिक नृपतिभेद। (महाभारत आदि० और विष्णुपुराण)

अश्वमेधिक (सं० क्ली०) अश्वमेधमधिकृत्य कृतः ग्रन्थः, ठक् ठन् वा। १ महाभारतके अन्तर्गत चतुदश पर्व। (पु०) २ अश्वमेध यज्ञके योग्य अश्व। (वि०) ३ अश्वमेध यज्ञसम्बन्धीय।

अश्वमेधीय, अश्वमेधिक देखो।

अश्वमोहक (सं० पु०) श्वेतकरवीर, सफ़ेद कनेर।

अश्वया (वै० स्त्री०) अश्व प्राप्त करनेकी इच्छा, घोड़ा लानेकी ख़ाहिश।

अश्वयान (सं० क्ली०) अश्वभ्रमण, घोड़ेको सवारी। घोटकारोहण वात-पित्त, अग्नि एवं श्रम बढ़ाता, मेद, वर्ण एवं कफ मिटाता और बली पुरुषका हितकर होता है। (दिनचर्या)

अश्वयु (वै० वि०) अश्वमिच्छति, अश्व क्यच्-उः। १ अश्वयुक्त, घोड़ा लिये हुआ। २ अश्वकी इच्छासे युक्त, जिसे घोड़ेकी ख़ाहिश रहे।

अश्वयुज् (सं० स्त्री०) अश्वेन अश्वमुखेन युज्यते, युज्-क्विप्। वकगाताभिजिदश्वयुक्शतभिषजो वा। पा ४। ३। ३६। १ अश्विनी नक्षत्र। (वि०) २ अश्विनी नक्षत्रजात, जो अश्विनी नक्षत्रमें पैदा हो। (वै० वि०) ३ अश्व लगानेवाला, जो घोड़ा कस या जोत रहा हो। (पु०) ४ अश्विनी नक्षत्रयुक्त काल। ५ चान्द्र आश्विन मास। ६ अश्वयुक्त रथादि, घोड़ागाड़ी।

अश्वयुज (सं० पु०) आश्विन मास, क्वारका महीना।

अश्वयूप (वै० पु०) यज्ञीय अश्व बांधनेका स्थान, जिस जगह अश्वमेध यज्ञका घोड़ा बांधा जाये।

अश्वयोग (वै० वि०) अश्व जोतवाता हुआ, जो घोड़ा जोतता रहा हो।

अश्वरक्ष, अश्वरक्षक देखो।

अश्वरक्षक (सं० पु०) अश्वं रक्षति, रक्ष-ण्वुल्। घोटकपालक, घोड़ेका सायीस।

अश्वरत्न (सं० क्ली०) अश्वः रत्नमिव, उपमित समा०। १ घोटकश्रेष्ठ, बढ़िया घोड़ा। २ उच्चैःश्रवा, इन्द्रका घोड़ा "उच्चैःश्रवसमश्वानाम्।" (गीता)

अश्वरथ (सं० पु०) अश्वयुक्तो रथः, शाक० तत्। घोटकयुक्त रथ, घोड़ागाड़ी, जिस गाड़ीमें घोड़े जुतें।

अश्वरथा (सं० स्त्री०) अश्व रथ इव यस्याम्। गन्धमादन पर्वतके निकटकी नदी।

अश्वराज (सं० पु०) अश्वानां अश्वेषु मध्ये वा राजा। उच्चैःश्रवा नामक घोटक, इन्द्रका घोड़ा।

अश्वराधस् (वै० वि०) घोड़े सजाता हुआ, जो घोड़ेको साज़सामान्से ठीक कर रहा हो।

अश्वरिपु (सं० पु०) १ करवीर वृक्ष, कनेरका पेड़। २ महिष, भैंसा।

अश्वरोधक (सं० पु०) अश्वं रुणद्धि, रुध-ण्वुल्। श्वेतकरवीर वृक्ष, सफ़ेद कनेरका पेड़।

अश्वरोह (सं० पु०) अश्वं रोहति, रुह-अण् उप० समा०। अश्वारोही, घोड़ेका सवार।

अश्वरोहका (सं० स्त्री०) अश्वगन्धा, असगंध।

अश्वरोहा, अश्वरोहका देखो।

अश्वल (सं० पु०) अश्वं लाति, ला-क ६-तत्। १ अश्वग्राहक ऋषि विशेष। २ इन ऋषिकी याज्ञवल्क्यके प्रति प्रश्न एवं प्रत्युत्तर रूप आख्यायिकाका प्रतिपादक ब्राह्मण (वेदांश) विशेष। ३ विदेहपति राजा जनकके होतृपुरोहित। (क्ली०) ३ क्षुद्रतृण विशेष, किसी किस्मकी छोटी घास। यह तृण बल्य, रुच्य एवं पशुको हितकर होता है। (वैद्यकनिघण्टु)

अश्वलक्षण (सं० क्ली०) लक्ष्यते ज्ञायते शुभाशुभमनेन, लक्ष करणे ल्युट् ६-तत्। घोटकका शुभाशुभ-

सूचक चिह्न विशेष, जिस निशानसे घोड़ेका भला-बुरा समझ पड़े।

अश्वललित (सं० स्त्री०) छन्दोमञ्जरीोक्त तेईस अक्षरके पादका पूर्व वृत्त विशेष। जिस वृत्तमें यथा क्रम न ज भ ज भ ज भ ल ग नामक गण रहता और जिसके आठ तथा बारह अक्षरमें यति पड़ता, उसका नाम अश्वललित है। छन्दोमञ्जरीकारने इसीको भद्रितनया कहा है।

अश्वलाला (सं० स्त्री०) अश्वस्य लालेव यस्याः रैप। १ ब्रह्मसर्प। २ कृष्णाश्म सर्प, कबरीला सांप।

अश्वलोमन् (सं० पु०) १ घोटकलोम, घोड़ेका रोयां। २ सर्पविशेष किसी किस्मका कबरीला सांप।

अश्वलोमा, अश्वलोमन् देखो।

अश्ववक्त्र (सं० पु०) अश्वस्य वक्त्रमिव वक्त्रं यस्य, बहुव्री०। १ किन्नर, किम्पुरुष, देव योनि विशेष। २ हयग्रीव, विष्णुमूर्तिविशेष। तन्त्र सारमें इनका ध्यान इस प्रकार है—

"[illegible]।
[illegible]।"

अश्ववत् (सं० त्रि०) अश्वा सन्त्यस्य भूम्नि मतुप् मस्य व। १ अश्वयुक्त, जिसके पास घोड़ा रहे। (अव्य) अश्वे इव अश्व वा वति। २ घोड़ेकी तरह। अश्वमर्हति वति। अश्वपानीके योग्य घोड़ा पाने लायक।

अश्ववदन (सं० पु०) किसी देशका प्राचीन नाम। [illegible] देखो।

अश्ववह (सं० पु०) अश्वेनोह्यते, अश्व-वह कर्मणि वा अच्। १ अश्वके वहनीय घोड़ेके ले जाने लायक। २ अश्वारोही घोड़ेपर चढ़नेवाला या घोड़ेपर चढ़े हुए।

अश्ववार (सं पु०) अश्वं वारयति, अश्व-वृ-णि ह णिच्-अच्। १ हयनिवारक, घोड़ेको रोकनेवाला। २ अश्वारोही, घोड़सवार। स्वार्थे कन्, अश्ववारक घुड़सवार। कन्, अश्ववारक अश्वारोही।

अश्ववाल (सं० पु०) १ दैत्यजातिका कनामप्रसिद्ध शरविभेद, कीसवाल। [illegible] देखो। २ घोड़ेका लोम। ३ तृणभेद। [illegible] देखो।

अश्ववाह् (सं० पु०) अश्वं वहति वहिर यज्ञकार्य प्रापयति, अश्व-वह णिच् उपधा ह्रस्व। अश्वको यज्ञ-शालामें ले जानेवाला, जो अश्वमेधके घोड़ेको यज्ञ-स्थानमें ले जाता हो।

अश्ववाह (सं० पु०) अश्वं वाहयति चालयति, वह णिच् अच्, णिच् लोपः। घोड़सवार, जो घोड़ेपर चढ़ता हो। स्वार्थे कन्। अश्ववाहक घोड़ा हांकने-वाला। ल्युट्। अश्ववाहन, जिसकी घोड़ेपर सवारी रहे।

अश्वविक्रयिन् (सं० त्रि०) अश्वं विक्रेतुं शील-मस्य, वि क्री णिनि। घोड़ा बेचकर जीविका करनेवाला जो सौदागर घोड़े बेचता हो।

अश्वविद् (सं० पु०) अश्वं तत्सम्बन्धिशास्त्रं वेत्ति विद्-क्विप् ६ तत्। १ नलराज। महाभारत—वन पर्वके ७१ अध्यायमें राजा नलको अश्वतत्त्वज्ञताका विषय वर्णित है। (त्रि०) २ अश्वज्ञानकर्ता, जो घोड़ा जानता हो।

अश्ववैद्य (सं० पु०) अश्वस्य अश्वानां वा वैद्य चिकि-त्सक ६-तत्। अश्वचिकित्सक, जो घोड़ेकी चिकि-त्सा करता हो। नकुल, शालिहोत्र, जयदत्त प्रभृतिके बनाये अश्वशास्त्रमें अश्वचिकित्साका वर्णन है।

अश्वशङ्कु (सं० पु) अश्वस्य शङ्कु ६ तत्। १ घोड़ा बांधनेका खूंटा। अश्वस्य शङ्कुरिव। २ दनुके पुत्रविशेष। महाभारत आदिपर्व ६० अध्यायमें दनुके चालीस पुत्र मध्य अश्वशङ्कुका भी नाम परिगृहीत हुआ है।

अश्वशाला (सं० स्त्री०) अश्वस्य अश्वानां वा शाला गृहं ६ तत्। १ घोड़ेका घर, घुड़साल, अस्तबल। जयदत्तकृत अश्वशास्त्रमें घोड़ेका घर निर्माण करनेके लिये ऐसा विधि किया है—अस्तबलको पूर्व और उत्तर तरफ कुछ ढालू होना चाहिये। उसमें बांस, बाड़, किम्वा कोई कुछ कांटे रहने न पाय। घरके भीतर पूर्ण रूप सूखा हो। अस्तबलको एक तरफ, बैरीके काठकी आड़ रखी जाती है। घोड़ेके सम्मुख दरवाजेमें घाम् पड़ता है। इसका होनेपर घोड़ा कभी जगह छोटमोट होता है। अनेक लोग अस्तबलमें वानर बांध देते हैं। उन्हें विश्वास है, इससे घोड़ेको किसी प्रकारको पीड़ा नहीं होती।

अश्वशास्त्र (सं॰ क्ली॰) अश्वस्य लक्षणज्ञापकं शास्त्रं, शाक॰ तत्। शालिहोत्रकृत घोड़ाके लक्षणादिका ज्ञापक शास्त्र। नकुल और जयदत्तका बनाया भी कोई अश्वशास्त्र है।

अश्वशिरस् (सं॰ क्ली॰) अश्वस्य शिरः ६-तत्। १ घोड़ेका मस्तक। अश्वस्य शिर इव शिरो यस्य, बहुव्री॰। २ दानव विशेष, कोई दैत्य। महाभारत मध्य दनुके चालीस पुत्रोंमें इसका नाम गृहीत हुआ है। ३ हयग्रीव नामक विष्णुकी मूर्ति।

अश्वशृगालिका (सं॰ स्त्री॰) अश्वशृगालयोर्वैरं द्वन्द्वात् वैरे-वुन् टाप् अत इत्वम्। घोड़े और शृगालकी लड़ाई।

अश्वश्चन्द्रा (सं॰ त्रि॰) अश्वैः चन्द्रति आह्लादयति, चदि-णिच्-रक्-णिच् लोपः टाप्। ३ तत्। वेदे पृषो॰ सुडागमः। घोड़ेसे आह्लाद लेनेवाली स्त्री, जो औरत घोड़ेसे मजा पाती हो।

अश्वषड्गव (सं॰ क्ली॰) अश्वानां षट्कं, अश्व षट्के षड्-गवच्। (प्रकृत्यर्थस्य षट्त्वे षडगवच्। वार्त्तिक, पा ५।२।२९ सूत्रे)। छः घोड़ा।

अश्वसनि (सं॰ त्रि॰) अश्वं सनुते ददाति, सन् सर्वधातुभ्यो इन्। उण ४।११२। इति इन् ६-तत्। अश्वदाता, जो घोड़ा देता हो।

अश्वसा (सं॰ त्रि॰) अश्वं सनुते अश्व-सन जनसनखनक्रमगमोविट्। पा ३।२।६७। इति विट्। विड्वनोरनुनासिकस्यात्। पा ६।४।४१। इति आत्वम्। अश्वदाता, घोड़ा दान करनेवाला, जो घोड़ा देता हो।

अश्वसाद (सं॰ पु॰) अश्वं सादयति गमयति, अश्व-सद-णिच् उपधावृद्धिः अण्-णिच् लोपः उपस॰। अश्वचालक, घोड़ा हांकनेवाला, घुड़सवार।

अश्वसादिन् (सं॰ पु॰) अश्वेन सीदति गच्छति, सद-णिनि ३-तत्। अश्वारोही, घोड़ेपर चढ़नेवाला, घोड़सवार।

अश्वसूक्त (सं॰ पु॰) वेदका सूक्त विशेष। इसमें घोड़ेका बयान है।

अश्वसेन (सं॰ पु॰) अश्वानां सेना यस्य, बहुव्री॰। १ जिनपितृविशेष। २ नृप विशेष, कोई राजा। इनके पुत्र सनत्कुमार थे। ३ तक्षकपुत्र सर्पविशेष।

अश्वसेननृपनन्दन (सं॰ पु॰) ६-तत्। सनत्कुमार।

अश्वस्तन (सं॰ त्रि॰) श्वोभवः श्वस्-ल्यु तुट् च श्वस्तनः नञ्-तत्। केवल वर्तमान दिन जात, दूसरे दिन न रहनेवाला।

अश्वस्तनिक (सं॰ त्रि॰) अश्वस्तनमस्त्यस्य, मत्वर्थे ठन् नञ्-तत्। जो गृहस्थ केवल वर्तमान दिनके योग्य धन सञ्चय कर सकता हो, जिसके धन दूसरे दिन न रह सके।

अश्वस्तोमीय (सं॰ क्ली॰) अश्वस्य स्तोमं स्तुतिरस्ति, अश्व मत्वर्थे छ। अश्वको स्तुतिसे युक्त सूक्त विशेष। ऋग्वेदके १ला मण्डलका १६२ सूक्तमें अश्वकी स्तुति है—

"मा नो मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतः परि ख्यन्।
यद्वाजिनो देवजातस्य सप्तेः प्रवक्ष्यामो विदथे वीर्याणि॥"
(ऋक् १।१६२।१)

हम अश्वको स्तुति करनेको प्रवृत्त हुए हैं। मित्र, वरुण, अर्यमा, आयु, इन्द्र, ऋभुक्षा, मरुत् प्रभृति देवता जिसमें निन्दा न करें। इस हेतु बहु मन्त्रवान् देवजात अश्वके यज्ञ विषयमें वीर्यकी कथा हम कहेंगे। इसी तरह २२ ऋक्में भी घोड़ेकी स्तुति की गई है।

अश्वस्थान (सं॰ क्ली॰) ६-तत्। अश्वके रखनेका गृह, जहां घोड़े बांधे जायें, अस्तबल।

अश्वहन्तृ (सं॰ पु॰) अश्वं हन्ति, हन्-तृच्। ६-तत्। करवीर फूलका वृक्ष, कनेरका पेड़। (त्रि॰) अश्वनाशक, घोड़ेको नाश करनेवाला।

अश्वहय (वै॰ पु॰) अश्वेन हिनोति गच्छति, हि-कर्तरि अच्। अश्वयुक्त रथ पर सर्वदा गमन करनेवाला, जो घोड़ागाड़ीपर चलता हो। "प्रत्यर्धिर्यज्ञानामश्वहयो रथानां।" (ऋक १०।२६।५)

अश्वहृदय (सं॰ क्ली॰) अश्वस्य हृदयं मनोगत भावादि। १ अश्वविद्याविशेष। २ अश्वाभिलाप, घोड़ेकी ख्वाहिश।

अश्वाच (सं॰ पु॰) अश्वस्य अक्षीव अच्-समा॰। देवसर्षपका वृक्ष, सरसोंका पेड़।

देवता पराम्त होते हैं। उस यज्ञका अनुष्ठान देख इन्द्र एक पहाड उखाडकर अपने वज्र समेत च्यवनकी ओर दौडे। परन्तु महर्षिका योगबल असामान्य था; उन्होंने तुरत ही जल छिडककर इन्द्रको पकड लिया। फिर उनके यज्ञकुण्डसे मद नामक एक राक्षस उत्पन्न हुआ। उसके स्वर्गसे मर्त्यतक मुंह पसारनेसे उसमें इन्द्रादि देवता चले गये। लाचार और कोई उपाय न देख देवताओंने अश्विन्के साथ सोमपान किया।

इस उपाख्यानसे अनुमान होता है, कि आर्योंने प्रथमतः सहज ही अश्विन्को देवता नहीं स्वीकार किया। इधर अनेक ऋङ्मन्त्रोंमें (१।५८,८।५५,८।५।१०-१०।) मिलता है, कि सोमपान करानेके लिये ऋषियोंने अश्विन्को यज्ञस्थलमें बुलाया था।

ऋग्वेदमें अश्विन्के जन्मका विवरण यों लिखा है,—'त्वष्टाने अपनी कन्या सरण्युका विवाह करनेकी इच्छा की। यह समाचार पाकर जगत्के देवतादि आ उपस्थित हुए। विवस्वान्की विवाहिता भार्या यमकी माता भाग गई। उसके बाद मर्त्य-लोगोंसे अमरकन्या (सरण्यु) छिपा दी गई। अन्तमें सरण्यु जैसी ही और एक कन्या उत्पन्न कर देवता-ओंने विवस्वान्को समर्पण की। उसी अश्वरूपिणी सरण्युके गर्भ और विवस्वान्के औरससे अश्विन्का जन्म हुआ।'*

यहां सायणाचार्यने लिखा है, कि सरण्यु एवं विवस्वान्ने अश्विनी एवं अश्वरूपमें सम्भोग किया था, उसीसे अश्विन्का जन्म हुआ। ('यदा तस्याया पतिस्त्वाश्व रूपात्मना सम्भोगकाले रेतः पतितमासीत् तदाश्विनौ जनयामासेत्यर्थः' इति सायण)।

निरुक्तमें (१२।१।१०) इन दो ऋक्का ऐसा विवरण लिखा है,—"तत्र इतिहास. समाचक्षते,त्वाष्ट्री सरण्युर्विवस्वत आदित्याद्यमौ मिथुनौ जनयाञ्चकार। सा सवर्णामन्यां प्रतिनिधायाश्वं रूपं कृत्वा प्रदुद्राव। स विवस्वानादित्योऽश्वमेव रूपं कृत्वा तामनुसृत्य सम्बभूव। ततोऽश्विनौ जज्ञाते सवर्णायां मनु।"

त्वष्टाकी कन्या सरण्युके गर्भ और आदित्य विव-स्वान्के औरससे यमज सन्तान उत्पन्न हुआ था। फिर वे अपनी ही जैसी और एक स्त्रीको रख और खुद घोडीका रूप धर कर भाग गईं। विवस्वान्ने घोडेका रूप धर पीछे पीछे जाकर उनके साथ सम्भोग किया। उसीसे अश्विन्का जन्म हुआ। सवर्णाके गर्भ और सूर्यके औरससे मनुका जन्म हुआ था।

ऋग्वेदके ७ मण्डलके १२ सूक्तके २ ऋक्के भाष्यमें सायणाचार्यने अश्विन्का जन्मवृत्तान्त यों लिखा है,—त्वष्टाके दो यमज सन्तान हुआ, उनमें सरण्यु कन्या और त्रिशिरा पुत्र सन्तान था। उन्होंने विव-स्वान्के साथ सरण्युका विवाह कर दिया। उनके गर्भ और विवस्वान्के औरससे यम और यमी नामकी यमज पुत्रकन्या उत्पन्न हुई थी। सरण्युने स्वामीसे छिपाकर अपनी ही जैसी एक स्त्री उत्पन्न कर उसीके पास अपना यमज सन्तान रख दिया। फिर वह घोडीका रूप धरकर भाग गई। विव-स्वान्ने विना जाने ही उस काल्पनिक सरण्युके साथ भोग किया, उसीसे मनुका जन्म हुआ। मनु अपने पिताकी ही भांति तेजस्वी राजर्षि हुए थे। किन्तु पीछे जब विवस्वानको मालूम हुआ, त्वष्टा-की कन्या प्रकृत सरण्यु कहीं चली गई है, तब सरण्युकी तरह उन्होंने भी घोडेका रूप धरकर उनका पीछा किया। स्वामीको पहचानकर सरण्यु सम्भोगकी इच्छासे उनके पास गईं। अश्वरूपी विवस्वान्ने उनकी इच्छा पूर्ण की। उस समय अतिशय वेगसे भूमिपर शुक्रपात हुआ। अश्वरूपिणी सरण्युने गर्भकी कामनासे उस शुक्रको सूंघा। सूंघते ही दो पुत्र जन्मे। उनमें एकका नाम नासत्य और दूसरेका दस्र हुआ। अश्विन्के नामसे उन्हीं दोनोंकी स्तुति की जाती है।†

---

* "त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोतीतीदं विश्वं भुवनं समेति।
यमस्य माता पर्युह्यमाना महो जाया विवस्वतो ननाश।
अपागूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः कृत्वी सवर्णामददुर्विवस्वते।
उताश्विनावभरद्यत्तदासीदजहादु द्वा मिथुना सरण्यूः॥"
(ऋक् १०।१७।१-२

† "अभवन्मिथुनौ त्वष्टुः सरण्युस्त्रिशिरा सह।
स वै सरण्युं प्रायच्छत् स्वयमेव विवस्वते॥

अष्टाध्यायी सूत्रग्रन्थ। २ अष्टाध्याययुक्त ऋग्वेदका अंशविशेष। ३ आठ चीज़का एकत्र संग्रह। यथा—हिङ्ग्वष्टक। ४ आठश्लोकवाला स्तोत्र वा काव्य। जैसे रुद्राष्टक, गङ्गाष्टक, भ्रमराष्टक। ५ मनुके अनुसार अवगुणविशेष। इसमें १ पैशून्य, २ साहस, ३ द्रोह, ४ ईर्ष्या, ५ असूया, ६ अर्थदूषण, ७ वाग्दण्ड, और ८ पारुष्य ये आठ अवगुण हैं। (त्रि०) ८ अष्ट संख्या-परिमित।

अष्टकट्वरतैल (सं० क्ली०) तैलविशेष। यह तैल वातरक्त और ऊरुस्तम्भमें हित है। तैल ४ शरावक, दही ४ शरावक, तक्र ३२ शरावक, पीपल एवं सोंठ प्रत्येक २ पल (मतान्तरसे मिला हुआ दो पल) यथा विधि पकाना चाहिये। (रसरत्नाकर)

अष्टकर्ण (सं० पु०) अष्टौ कर्णौ यस्य। चतुर्मुख ब्रह्मा। ब्रह्माके चार मुख और प्रत्येक मस्तकमें दो दो कर्ण हैं, अतएव उनको अष्टकर्ण कहते हैं।

अष्टकर्मन् (सं० पु०) अष्टौ कर्माण्यस्य। आठ प्रकार कर्मयुक्त राजा। अष्टगतिक शब्दसे भी यह अर्थ मालूम पड़ता है। राजाका आठ प्रकार कर्म यह है—

"आदाने च विसर्गे च तथा प्रैषनिषेधयो।
पञ्चमे चार्थवचने व्यवहारस्य चेक्षणे।
दण्डशुध्योः सदा रक्तस्तेनाष्टगतिको नृपः॥"

१ करादिका लेना, २ विसर्ग अर्थात् भृत्यादिको धन देना, ३ प्रैष यानी अमात्यादिका दृष्टादृष्ट अनुष्ठान, ४ निषेध—अर्थात् दृष्टादृष्टके विरुद्ध क्रिया, ५ अर्थवचन—कार्यमें सन्देह होनेके निमित्त उसका नियम करना, ६ व्यवहारका ईक्षण अर्थात् प्रजादिको ऋण देनेके प्रति दृष्टि। ७ दण्ड अर्थात् पराजित व्यक्तिसे अर्थग्रहणादि व्यापार, ८ शुद्धि अर्थात् पापादि करने पर उसका प्रायश्चित्त। मेधातिथिके मतमें—अकृतारम्भ, कृतानुष्ठान, अनुष्ठित विशेषण, कर्मफल-संग्रह, साम, दान, भेद, एवं दण्ड।

अष्टकमल (सं० पु०) हठयोगके अनुसार मूलाधारसे ललाट पर्यन्त ये आठ कमल भिन्न भिन्न स्थानोंमें माने गये हैं। मूलाधार, विशुद्ध, मणिपूरक, स्वाधिष्ठान, अनाहत, आज्ञाचक्र, सहस्रारचक्र, और सुरतिकमल।

अष्टका (सं० स्त्री०) अश्नन्ति पितरोऽस्यां तिथौ अश् इष्यशिभ्यां तकन्। उण् ३।१४८। इति तकन्। १ श्राद्ध विशेष। २ तिथिविशेष, अष्टमी। ३ गौणचान्द्र, पौष, माघ एवं फाल्गुन मासको कृष्णाष्टमी। ४ अष्टमीके दिनका कृत्य अष्टका याग। ५ अष्टकामें कृत्य श्राद्ध। अष्टका श्राद्ध तीन प्रकारका होता है—अपूपाष्टका, मांसाष्टका एवं शाकाष्टका, यह यथाक्रम गौणचान्द्र पौष, माघ एवं फाल्गुन मासकी कृष्णाष्टमीको किया जाता है।

अष्टकाङ्ग (सं० क्ली०) अष्टमङ्गं यस्य। चौसर खेलनेका पासा। इसको प्रत्येक पङ्क्तिमें आठ घर रहनेसे इसको अष्टाङ्ग कहते हैं।

अष्टकिक (सं० त्रि०) अष्टका ऽस्त्यस्य, व्रीह्या० ठन्। अष्टकायुक्त। उक्त अर्थमें 'अष्टकी' शब्द भी प्रयुक्त होता है।

अष्टकुल (सं० क्ली०) कुलविशेष। पुराणके अनुसार सर्पोंके आठकुल हैं—शेष, वासुकि, कम्बल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, और शङ्ख, तथा कुलिक तक्षक, महापद्म, शङ्ख, कुलिक, कम्बल, अश्वतर, धृतराष्ट्र और बलाहक।

अष्टकुली—अष्टकुल सम्बन्धीय, जो सर्पोंके आठ कुलमें उत्पन्न हो।

अष्टकृष्ण (सं० पु०) आठ प्रकारके कृष्ण। वल्लभ कुलके लोग आठ कृष्ण मानते हैं—१ श्रीनाथ, २ नवनीतप्रिय, ३ मथुरानाथ, ४ विट्ठलनाथ, ५ द्वारकानाथ, ६ गोकुलनाथ, ७ गोकुलचन्द्रमा और ८ मदनमोहन।

अष्टकृत्वस् (सं० अव्य०) अष्टन् स ख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच्। पा ५।४।१७। इति कृत्वसुच्। आठबार।

अष्टकोण (सं० क्ली०) अष्टौ कोणा अस्य। १ अष्टकोणयुक्त क्षेत्र, जिस खेतमें आठ कोने रहें। २ यन्त्र विशेष, तन्त्रानुसार कोई यन्त्र। ३ कुण्डल विशेष, अठकोना कुण्डल। चलित भाषामें इसको अठकोना कहते हैं। (त्रि०) ४ आठ कोनेका।

अष्टक्य (सं० त्रि०) अष्टकेन क्रीतः, गवा० यत्।

आठ संख्यक द्रव्यकि द्वारा किया हुआ, जो आठ संख्यक द्रव्यसे परीक्षा गया हो।

अष्टखण्ड—ऋग्वेद आठ अष्टकमें ऋक्संहिता विभक्त है।

अष्टगन्ध (स० पु०) आठ सुगन्धदार चीज़ोंका मिलान।

अष्टगव (सं० क्ली०) अष्टानां गवां समाहारः; अच्। आठ गौ। आठ बैलगाड़ीके अर्थमें 'अष्टागव' रूप होगा।

अष्टगुण (सं० त्रि०) अष्टभिर्गुणकैर्, गुण अभ्यासे कर्मणि अ। आठगुण। १×८, ३×८ इत्यादि।

अष्टगुणमण्ड (सं० पु०) मण्डविशेष। भुने मूंग और चावलको दशगुण जलमें पाक करना चाहिये। पाक तैयार हो जानेपर उसमें नीचे लिखे द्रव्य मिलाना पड़ता है—हिङ्गु, सैन्धव, धान्य सोंठ, मिर्च और पोपलका चूर्ण। इसका गुण क्षुधावर्धन, बलकर और वह्निशोधन है। (वैद्यक-निघण्ट)

अष्टगृहीत (सं० त्रि०) अष्टकृत्वो गृहीतम्। आठ बार ग्रहण किया हुआ, जो आठबार लिया गया हो।

अष्टचत्वारिंशत् अष्टाचत्वारिंशत् (सं० स्त्री०) अष्टाधिका चत्वारिंशत्। (विभाषाष्टकादि बन् प्रकरो वर्णे पद्म्। पा ६।३।४८।) ४८, अड़तालीस संख्या।

अष्टतय (सं० त्रि०) अष्टावयवा अस्य, अष्टन् तयप्। १ आठ अवयवयुक्त जिसके आठ अवयव रहें। (क्ली०) २ आठ संख्या।

अष्टतारिणी (सं० स्त्री० बहुव०) कर्मधा०। भगवतीकी आठमूर्ति—तारा, उग्रा, महोग्रा वज्रा, काली सर स्वती, कामेश्वरी, चामुण्डा।

"तारा चोग्रा महोग्रा च वज्रा काली सरस्वती।
कामेश्वरी च चामुण्डा इत्यष्टौ तारिणी स्मृता॥" (तन्त्रसार)

अष्टताल (सं० पु०) आठ तरहकी ताल—१ आड़ २ दोज, ३ ज्योति, ४ चन्द्रशेखर, ५ गञ्जन, ६ पञ्च ताल, ७ रूपक और ८ समताल।

अष्टत्रिक (स० क्ली०) अष्टाहतं त्रिकम्। ८×३ आठ गुणित तीन अर्थात् २४ चौबीस। (त्रि०) २ चौबीस संख्यायुक्त।

अष्टत्व (स० क्ली०) अष्टानां भाव त्व। आठ संख्या, ८।

अष्टदंष्ट्र (सं० पु०) ६ बहुव्री०। ऋग्वेदोक्त दानव विशेष, कोई राक्षस।

अष्टदल (सं० पु०) अष्टौ दलानि यस्य। १ अष्टपत्र पद्म, आठ पत्तेका कमल। (त्रि०) २ आठदलवाला, अठकोना, अठपहलू।

अष्टदिक्करिणी (स० स्त्री०) बहुव०। अष्ट दिशामा' करिण्य'। आठ दिशाकी हथिनी। अभ्रमु, कपिला, पिङ्गला अनुपमा ताम्रकर्णी, शुभ्रदन्ती, अङ्गना और अञ्जनावती यह आठ ऐरावतकी पत्नी।

अष्टदिक्पाल (सं० पु०) अष्टौ दिश' पालयति, पा णिच् अण्, उप० समा०। दिशाके आठ रक्षक इन्द्र, अग्नि यम निऋति, वरुण, वायु, सोम और ईशान। यह अष्ट दिक्पाल है।

अष्टदिग्गज (सं० पु०) बहुव०। अष्टदिशुस्था गजा'। आठ हाथी—ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अञ्जन, पुष्पदन्त, सार्वभौम और सुप्रतीक। यह आठ दिग्गज हैं।

अष्टदिश (स० स्त्री०) बहु। आठ ओर, पूर्व, अग्नि, दक्षिण, नैऋत, पश्चिम, वायु, उत्तर, और ईशान, यही आठ दिशायें हैं।

अष्टद्रव्य (स० क्ली० बहुव०) आठ चीज़; अश्वत्थ उदुम्बर (गूलर), प्लक्ष (पाकर), न्यग्रोध (बट) तिल, सिद्धार्थ (सरसों), पायस (खीर) और आज्य (घी) यह आठ द्रव्य कहलाते और हवनमें काम आते हैं।

अष्टधा (सं० अव्य) अष्टन् प्रकारे धाच्। आठप्रकार, आठ तरह आठ ढङ्गे।

अष्टधातु (त्रि० त्रि०) १ अष्टधातुसे प्रस्तुत जो आठ धातुओंसे बना हो। २ दृढ़, मज़बूत। ३ उत्पाती, उपद्रवी।

अष्टधातु (स० पु बहुव०) अष्टौ धातव., कर्मधा०। आठधातु—सोना, चांदी तांबा, रांगा जसता सीसा, पीतल, लोहा। कोई कोई पारेको भी धातु मानता है।

अष्टनाग (सं० पु०) आठ सर्पराज १ अनन्त २ वासुकी, ३ तक्षक, ४ कर्कोट, ५ पद्म, ६ महापद्म, ७ शङ्ख, और ८ कुलिक।

अष्टपद (सं० पु०) अष्टपद देखो।

अष्टपदी (सं० स्त्री) १ आठ पदोंका समूह। २ गीतिविशेष, कोई गीत। इसमें आठ पद रहते हैं। ३ वेला पुष्पका गाछ। यह शीत, लघु एवं कफ, पित्त, और विषका नाशक है।

अष्टपर्वत—१ महेन्द्र, २ मलय, ३ सह्य, ४ शुक्तिमान्, ५ ऋक्षवान्, ६ विन्ध्य, ७ पारिपात्र और ८ हिमालय, यह अष्टकुलाचल है। पद्मपुराणमें केवल सात ही कुलाचल गृहीत हुआ है।

अष्टपाद—अष्टपात् (सं० पु०) अष्टौ पादा यस्य, बहुव्री० वा अन्त्यलोपः। १ माकडी, लूता। २ शरभ, टिड्डीपक्षी। ३ शार्दूल।

अष्टपादिका (सं० स्त्री०) लता विशेष। १ काष्टमल्लिका। २ छायरमाली।

अष्टपुष्पी (सं० स्त्री०) अष्टाना पुष्पाणा समाहारः। पुष्पाष्टक। अष्टपुष्पी, भी रूप होता है।

अष्टभाव (सं० पु०) स्तम्भ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभङ्ग, वैस्वर्य, कम्प, वैवर्ण्य, और अश्रुपात। (वैद्यक निघण्टु)

अष्टभुजा (सं० स्त्री०) अष्टौ भुजाः अस्याः। देवीकी मूर्तिविशेष, दुर्गा।

अष्टभुजी (सं० स्त्री०) अष्टभुजा देखो।

अष्टम (सं० त्रि०) अष्टानां पूरणः डट् मयट् च। आठ संख्याका पूरण, आठवा।

अष्टमकालिक (सं० त्रि०) अष्टमः कालः भोजने ऽस्यास्य, ठन्। जो वानप्रस्थ तीन दिन उपवास करके चतुर्थदिनकी रात्रिमें भोजन करते हैं।

अष्टमङ्गल (सं० क्ली०) अष्ट प्रकारं मङ्गलद्रव्यम्, शाक० तत्। आठ प्रकार मङ्गल द्रव्य वा पदार्थ— मृगराज (सिंह), वृष, नाग, कलश, चामर, वैजयन्ती, भेरी और दीपक। किसी किसीके मतमें—ब्राह्मण, गौ, अग्नि, स्वर्ण, घृत, सूर्य, जल एवं राजा। दुर्गोत्सव और विवाहादि कर्ममें अष्टमङ्गल द्रव्य लगता है। (पु०) श्वेतवर्ण मुख वक्षः खुर केश पुच्छ-युक्त घोडा भी अष्टमङ्गलमें गृहीत है।

अष्टमङ्गलघृत (सं० क्ली०) वाल-रोग-हरघृतौषध, बच्चोंकी बीमारी छुड़ानेवाला घी। वच, कुष्ठ, ब्राह्मी, सर्षप, शारिवा, सैन्धव और पिप्पलीके एक शरावक कल्कमें ४ शरावक घृत डाले, फिर घृतपाकविधिसे एक आढक जलमें इन सब चीजोंको पका ले। यह घी बच्चोंके लिये बहुत अच्छा होता है। (भावप्रकाश)

अष्टमान (सं० क्ली०) अष्टौ मुष्टयः ; परिमाणमस्य। प्रसृतिद्वय, एक कुडव, बत्तीस तोला।

अष्टमासिक (सं० त्रि०) प्रति अष्ट मासमें एक बार होनेवाला, अठमासी, एकअमाही, जो आठ महीनेमें एक बार हो।

अष्टमिका (सं० स्त्री०) शुक्तिपरिमाण, तोलचतुष्टय, चार तोला।

अष्टमी (सं० स्त्री०) अष्टानां पूरणी। तिथि विशेष, चन्द्रकी सोलह कलाके मध्य प्रतिपत्से अष्टम कला, आठवीं। शुक्लाष्टमी एवं कृष्णाष्टमी दो अष्टमी होती है। पक्षपर्वके मध्य रहनेसे अष्टमीको वेदपाठ, स्त्रीसङ्ग, तैलाभ्यङ्ग, मांसभोजन प्रभृति निषिद्ध है। इस तिथिको नारियल और अरहरकी दाल खाना न चाहिये। पहले अष्टमीको किसी अपराधीकी परीक्षा की न जाती थी। अष्टमीको प्रायश्चित्त करना भी मना है।

अशू-क्त, अष्ट संघातं व्याप्तिं वा माति, मा-क गौरा० ङीप्। २ क्षीर काकोली, एक जडी।

अष्टमुष्टि (सं० पु०) अष्टौ मुष्टयः परिमाणमस्य, अण् द्विगोर्लुक्। कूंचो बराबर नाप।

अष्टमूत्र (सं० क्ली०) गोच्छागमेषमहिषाश्वहस्त्युष्ट्रगर्दभीमूत्र, गाय, बकरी, भेड, भैंस, घोडी, हथिनी, उंटनी और गधीका पेशाब।

अष्टमूर्ति (सं० पु०) अष्टौ भूम्यादयो मूर्तयो यस्य, बहुव्री०। भूमि प्रभृति अष्टमूर्तिधर शिव। अष्टन् शब्दमें इन आठ मूर्तियोंका विवरण देखो।

(स्त्री०)) कर्मधा०। २ आठ मूर्ति।

अष्टमूर्तिधर (सं० पु०) अष्टानां मूर्तीनां धरः। भूमि प्रभृति आठ प्रकार मूर्तिधारी शिव। अष्टन् शब्दमें अष्टमूर्तिका विवरण देखो।

अष्टमूल (सं० त्रि०) त्वग्मासशिरास्नायवस्थिसन्धिकोष्ठमर्म मूल ; त्वग्, मांस, शिरा, स्नायु, अस्थि, सन्धि, कोष्ठ और मर्म यह आठ मूल ।

अष्टमौक्तिकस्थान (सं॰ क्लो॰) गज-हस्ति सर्प मत्स्य मेघ-वंश शूकर शुक्ति, मोती पैदा होनेकी आठ जगह, सीप-हाथी-साँप मछली बादल बाँस सूअर सीप।

अष्टरत्नि (सं॰ त्रि॰) अष्टौ रत्नय अर्थमानमस्य। आठ मुट्ठा हाथ बराबर (आठ फीट)।

अष्टरसाश्रय (सं॰ त्रि॰) कविताके आठ रससे भरा हुआ।

अष्टर्च (सं॰ पु॰) आठ पदका मन्त्र।

अष्टलोहक (सं॰ क्ली॰) बहुव॰। अष्ट धातु विशेष। यथा—१ सुवर्ण २ रजत, ३ ताम्र, ४ रङ्ग, ५ सीस, ६ पित्तल, ७ कान्तलोह, ८ मुण्डलोह; या १ सोना, २ चाँदी ३ ताँबा, ४ राँगा, ५ सीसा, ६ पीतल, ७ लोहा ८ फौलाद।

अष्टवर्ग (सं॰ पु॰) अष्टविधानामौषधिद्रव्याणां वर्गो समूह। १ आठ प्रकार औषधि विशेषका गण। यथा,—१ मेद २ महामेद ३ ऋद्धि, ४ वृद्धि, ५ जीवक ६ ऋषभक ७ काकोली, ८ क्षीरकाकोली। अष्ट वर्गके मध्य समस्त द्रव्य अब नहीं मिलता और यह भी कहा जा नहीं सकता, वह क्या पदार्थ है। अष्टवर्ग शीतल अति शुक्रल, ४ बृंह, दाह पित्त-रक्तशोषघ्न, स्तन्यकृत् और गर्भदायक होता है। (भावप्र॰) यह रक्तपित्त, व्रण वायु और पित्तको मिटाता है। (राजनिघण्टु) मतान्तरसे यह हिम, स्वादु, बृंहण, गुरु, भग्नसन्धानकृत् एवं कामविलास-बल वर्धन होता और क्षय, दाह, ज्वर मेद तथा क्षयको दूर करता है। (भावप्रकाश) चरकसंहिता देखो।

अष्टादीनां राशिमित्रत्यादीनां वर्गो यत्र, बहुव्री॰। २ शुभाशुभ फलसूचक जन्मकालीन राशिभेद चक्रभेद, दृष्टदायका चक्र। जैसे,—सूर्य भि इसे २ ४ ७,८,९, १०, ११ और कर्कटसे ३,६,१०,११ राशिपर रहनेसे शुभ फल देता है। इसी तरह अन्यान्य ग्रहके फला फलको कथा ज्योतिष शास्त्रमें लिखी है।

अष्टवर्गप्रतिनिधि (सं॰ पु॰) अष्टवर्गका प्रतिनिधि, जो चीज़ अष्टवर्गको जगह काम आती हो। मेदा और महामेदाके अभावमें शतावरी, काकोली क्षीरकाकोलीके स्थानमें भूमिकुष्माण्डका मूल, काकोली क्षीरकाकोलीकी जगह अश्वगन्धाका मूल और ऋद्धि-वृद्धिके स्थानमें वाराहीकन्द पड़ता है। (भावप्रकाश) मतान्तरसे मेदाकी जगह अश्वगन्धा, महामेदाके स्थानमें शारिवा, जीवकके लिये गुड़ूची, ऋषभक न मिलनेसे वंशलोचन, ऋद्धिके बदले बला और वृद्धिके अभावमें महाबला डालना चाहिये।

अष्टविध (सं॰ त्रि॰) आठ तरहका, आठ तरह वाला।

अष्टविभाग (सं॰ क्ली॰) धर्म-लोभ लैङ्ग-पैय आप्य, मौल्य-भवार निर्णय-रूप मोक्षपद।

अष्टशत (सं॰ क्ली॰) आठ सौ।

अष्टश्रवण (सं॰ पु॰) अष्टौ श्रवणानि कर्णाघि वा यस्य। ब्रह्मा। इनके चार मुख रहनेसे आठ श्रवण होते हैं।

अष्टश्रवस् अष्टश्रवण देखो।

अष्टसाहस्रिक (सं॰ त्रि॰) अष्टसहस्र परिमित आठ हजारवाला।

अष्टसिद्धि (सं॰ स्त्री॰) आठ प्रकार सिद्धि, अष्टसिद्धि यथा—१ अणिमा, २ महिमा, ३ लघिमा, ४ प्राप्ति, ५ प्राकाम्य, ६ ईशित्व, ७ वशित्व, एवं ८ कामाव सायिता।

अष्टाकपाल (सं॰ त्रि॰) अष्टासु कपालेषु संस्कृतम्, अच् तस्य लुक्। १ अष्टकपालमें संस्कृत पुरोडाशादि आहुतिके आठ खप्परमें पका हुआ पुरोडाशादि। २ यज्ञ विशेष। इस यज्ञके लिये आठ कपालमें पुरोडाशादि पका देवताको चढ़ाते हैं।

अष्टाक्षर (सं॰ त्रि॰) अष्टाक्षराणि यत्र पादे। १ आठ अक्षरका, जो आठ हर्फ़ रखता हो। (पु॰) २ छन्दःप्रकार विशेष। ३ आठ अक्षरयुक्त अनुष्टुप् जातीय वर्णवृत्त विशेष।

अष्टागव (सं॰ क्ली॰) आठ बैलकी गाड़ी, जिस गाड़ीमें आठ बैल जुते।

अष्टाङ्ग (सं॰ पु॰) अष्टौ अङ्गानि यस्य। १ यम-नियम आसन—प्राणायाम—प्रत्याहार—धारणा—ध्यान—समाधि इत्यादि। अष्टाङ्ग योगविशेष। २ हाथ पैर, जानु, छाती, सिर दृष्टि वचन मन भूमिपर रख और प्रणम्य

व्यक्तिकी ओर देख सादर सम्भाषपूर्वक प्रणाम करना।

"पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यामुरसा शिरसा दृशा।
वचसा मनसा चेति प्रणामोऽष्टाङ्ग ईरितः॥" (तन्त्रसार)

दोनों पांव, दोनों हाथ, दोनों घुटने, वक्षःस्थल और मस्तककी भूमिमें टिकानेके बाद एक बार मस्तक उठाकर नमस्यको भक्तिभावसे दर्शन करना, फिर प्रणामका मन्त्र कहते कहते गद्गद मनसे भूमिष्ठ होना। कोई कोई कहते हैं, वचनस्थ 'दृशा' पदसे ऐसा समझा जाता है, कि प्रणाम करनेके समय पहले दाहिनी आंख फिर बाईं आंखके कोनेको भूमिमें छुवाये। ३ जल, दुग्ध, कुशाग्र, दधि, घृत, तण्डुल, यव, श्वेतसरसों—इन सबका अष्टाङ्ग अर्घ्य। सूर्यके अर्घ्यके द्रव्य ये हैं,—जल, दुग्ध, कुशाग्र, घृत, मधु, दधि, रक्तचन्दन और रक्तकरवीर। ४ शारीफलक अर्थात् पाशा खेलनेका चौखट। इस चौखटकी प्रत्येक पंक्तिमें आठ घर रहते, इसीसे इसे अष्टाङ्ग कहते हैं। ५ अष्टाङ्ग चिकित्सा,यथा—१ शल्य, २ शालाक्य, ३ कायचिकित्सा, ४ भूतविद्या,५कौमार-भृत्य, ६ अगदतन्त्र, ७ रसायनतन्त्र, ८ वाजीकरण।

१। शल्य—शरीरके किसी स्थानमें तीर आदि अस्त्र या और कोई चीज़ चुभ जानेपर उसका विधान।

२। शालाक्य—ऊर्द्ध्वजत्रुप्रदेशस्थित (Supra-claviculan region) एवं नेत्र, कर्ण, मुख, नासिका प्रभृति स्थानोंकी चिकित्सा।

३। कायचिकित्सा—सकल शरीरके कष्टों, यथा ज्वर, उदरामय, उन्माद आदि रोगोंकी चिकित्सा।

४। भूतविद्या—भूत पिशाचादिकी चिकित्सा।

५। कौमारभृत्य—शिशुपालनके लिये धात्री-विद्या एवं दुग्धादिका दोष संशोधन।

६। अगदतन्त्र—सर्प कीटादिके डस लेनेपर झाड़फूंक और औषध प्रयोग।

७। रसायनतन्त्र—ऐसा उपाय जिसमें शरीर शीघ्र ही वृद्ध जैसा न बने एवं आयु और बल बढ़े।

८। वाजीकरण—शरीरको क्षीण और शुष्क प्रभृति दुर्बलताके लक्षण प्रकाश होनेका प्रतिविधान।

अष्टाङ्गघृत (सं० क्ली०) वाजीकरणका घृत।

अष्टाङ्गधूप (सं० पु०) कर्मधा०। धूपविशेष। गुग्गुल, निम्बपत्र, वच, कुष्ठ, हरीतकी, यव, श्वेतसर्षप और घृत इन सब चीज़ोंको इकट्ठाकर कपड़ेमें मज़बूतीसे बांधे। फिर रोगीके सारे शरीरको कपड़ेसे ढक और निर्धूम अङ्गारके ऊपर इस पोटलीको रखकर धूप दे। इससे विषमज्वर नष्ट होता है।

अष्टाङ्गनय, नयाङ्ग देखो।

अष्टाङ्गपात, अष्टाङ्गप्रणाम देखो।

अष्टाङ्गप्रणाम (सं० पु०) अष्टाङ्गद्वारा प्रणाम, सिजदा, झुक-झुकके की जानेवाली बन्दगी।

अष्टाङ्गमैथुन (सं० क्ली०) मैथुनके आठ अङ्ग विशेष। स्मरण, कीर्तन, केलि, दर्शन, गोपनीय वार्ता-लाप, सङ्कल्प, अध्यवसाय, और क्रियानिष्पत्ति—यही मैथुनके आठ अङ्ग हैं।

अष्टाङ्गयोग (सं० पु०) आठ अङ्गसे होनेवाला योग। १ यम २ नियम ३ आसन ४ प्राणायाम ५ प्रत्या-हार ६ धारणा ७ ध्यान एवं ८ समाधि। यमादिका विवरण अपने-अपने शब्दमें देखो।

अष्टाङ्गरस (सं० पु०) रसविशेष। यह अर्शमें उपकारक है। लौहकिट्ट, मण्डूर, फलत्रय (त्रिफला) यह सब एकत्र मिलानेसे अष्टाङ्गरस तैयार होता है। (रसेन्द्रसारसंग्रह) गन्धक, रसेन्द्र (पारा), मृतलौहकिट्ट, तीन पल त्रूषण, वह्निभृङ्ग, इन सबको बराबर लेकर शाल्मली और गुड़ूचीके रसमें ३ पहर अच्छी तरह घोटनेसे यह बनता है। मात्रा निष्कमात्र है। (रसेन्द्रसार-संग्रह)

अष्टाङ्गलवण (सं० क्ली०) कफसे उत्पन्न मदात्यय-नाशक औषध विशेष। इसे बनानेका क्रम यह है। सौंचरलवण (सज्जीमाटी), कृष्णजीरक, अम्लवेतस, अम्ललोणिका, इन सबका चूर्ण समभाग एवं दालचीनी, एलायची और मिर्चका चूर्ण प्रत्येक अर्द्धभाग तथा चीनी एक भाग यह सब चीज़ एकत्र मिलाना चाहिये। (चक्रपाणिदत्तकृत संग्रह)

अष्टाङ्गवैद्यक (सं० क्ली०) वैद्यकके आठ अङ्ग, दवा करनेके आठ तरीके, यथा,—शालाक्य,

को लेकर सात विभाग किया गया है। जैसे,—
१ पिताके ऋण लेनेपर पुत्र उसे चुकावेगा। २ परन्तु पिता सुरापानादि दोषमें आसक्त होकर कर्ज ले, तो पुत्र उसके लिये दायी नहीं। ३ जो पुत्र पिताके धनका अधिकारी न होगा, वह पिताका ऋण भी परिशोध न करेगा। ४ जो पुत्र पिताके धनका अधिकारी होगा, वही पिताके ऋणके लिये भी दायी ठहरेगा। ५ विदेशस्थ पिताका ऋण बीस वर्षके बाद और जो ऋण वृद्धिके साथ लिया जाता, उसे वृद्धिके साथ ही परिशोध करना आवश्यक है। ६ उत्तमर्णमें ऋणदान। ७ उत्तमर्णमें ऋण आदान। सब मिलाकर यही सात प्रकार हैं।

२ निक्षेप—अपना धन दूसरेके पास जमा रखनेको निक्षेप कहते हैं।

३ अस्वामिविक्रय—जिस धनमें जिसका स्वत्व नहीं होता, उसी धनको वह यदि बेच देता, तो अस्वामिविक्रय कहा जाता है।

४ सम्भूय-समुत्थान—अनेक आदमी मिलकर जो वाणिज्यादिका अनुष्ठान करें, तो उसका नाम सम्भूय समुत्थान है।

५ दत्ताप्रदानिक—जो वस्तु एकबार किसीको दे दी गई है, क्रोधादि करके यदि वह छीन ली जाय, तो उसे दत्ताप्रदानिक कहते हैं।

६ वेतनादान—भृत्य प्रभृतिके वेतन न देनेका नाम वेतनादान है।

७ सम्विद्व्यतिक्रम—सब लोग मिलकर कोयी कार्य करनेकी प्रतिज्ञाके बाद यदि उसके विरुद्ध चलें, तो वह सम्विद्व्यतिक्रम कहा जाता है।

८ क्रयविक्रयानुशय—किसी द्रव्यको खरीदकर उसे बेचनेके बाद यदि अधिक लाभकी आशाको अनुशोचना की जाय, तो उसे क्रयविक्रयानुशय कहते हैं।

९ स्वामिपाल—स्वामी और पशुपालकके साथ जो विवाद होता, उसका नाम स्वामिपाल है।

१० सीमाविवाद—भूमि प्रभृति सीमाके लिये प्रजामें जो झगड़ा होता है, उसे सीमाविवाद कहते हैं।

११ वाक्पारुष्य और दण्डपारुष्य—अर्थात् गालीगुफ्ता और मारपीट।

१२ स्तेय—दूसरेकी वस्तु चुरानेको स्तेय कहते हैं।

१३ साहस—बलपूर्वक किसीकी चीजको छीन लेना साहस है।

१४ स्त्रीसंग्रहण—किसी स्त्रीके साथ परपुरुषका अनुराग होनेसे उसका नाम स्त्रीसंग्रहण है।

१५ स्त्रीपुंसधर्म—दम्पतीमें जैसा सद्भाव और नियम रहना आवश्यक है, वह स्त्रीपुंसधर्म कहा जाता है।

१६ विभागविवाद—पैतृक धनके विभाग करनेमें जो विवाद उपस्थित होता, उसका नाम विभागविवाद है।

१७ द्यूत—बाजी लगाकर जूआ पाशा वगैरह खेलनेको द्यूत कहते हैं।

१८ आह्वय—बाजी लगाकर भेड़ा या चिड़िया लड़ानेका नाम आह्वय है।

अष्टादशशतिकमहाप्रसारणी-तैल (सं० क्ली०) तैलौषध विशेष। यह तैल वात व्याधिमें उपकारक होता है। प्रस्तुत करनेकी रीति यह है—तिलका तेल १६ सेर, क्वाथके लिये मूल और पत्र सहित ३७॥ सेर, गन्धप्रसारणी १२॥ सेर, झिण्टीमूल १२॥ सेर, शतावर १२॥ सेर, अश्वगन्धा १२॥ सेर, दशमूल प्रत्येक १२॥ सेर, केतकी १२॥ सेर—इन सब द्रव्योंको प्रत्येकके ४ गुण जलमें पाक करके पृथक् पृथक् क्वाथ प्रस्तुत करना चाहिये। फिर दहीकी काञ्जी १६ सेर, छागके मांसका क्वाथ १६ सेर, चूर्ण १६ सेर, दूध १६ सेर दही १६ सेर। कल्कार्थ तगर, मदनफल, कुठ, नागेश्वर मुस्ता, गुड़त्वक् रास्ना, सैन्धव, पीपल, जटामांसी यष्टिमधु, मेद, महामेद, जीवक, ऋषभक, शुलफा, नखी, सोंठ, देवदारु, काकोली, क्षीरकाकोली, वच और भिलावेंको मींगी यह सब प्रत्येक ८ तोला एकत्र करके पका ले। (भैषज्यरत्नावली)

अष्टादशाङ्ग (सं० पु०) कषायविशेष। यह सन्निपात ज्वरमें हित और चार प्रकारका होता है—दशमूलादि, भूनिम्बादि, द्राक्षादि, मुस्तादि। पञ्च-

जैसे दशमूल सोंठ गुड़ूची, पोष्कर, दुरालभा, भार्गी, कुटजबीज, पटोल, कटुरोहिणी इतने द्रव्य रहते हैं। दूसरेमें—भूनिम्ब देवदारु दशमूल, सोंठ पञ्चाब्द तिक्ता, इन्द्रबीज धनियां, और इभकण (गजपीपल) यह सब द्रव्य पड़ता और यह कषाय तन्द्रा, प्रलाप, अरुचि दाह और ज्वर प्रभृति रोगोंको शीघ्र नाश कर देता है।

तीसरेमें—द्राक्षा, अमृता सोंठ, गुड़ूची, मुस्तक रक्तचन्दन, नागर धनिया, वासक, कण्टकारि, पुष्कर, और पिचुमर्द इतने द्रव्य पड़ते हैं।

चौथा—मुस्ता पर्पट धन, देवदारु, महौषध त्रिफला, धन्वयास (दुरालभा) शीतो कम्पिलक, त्रिवृत् विशालिका पाठा वचा, कटुरोहिणी मधुक और पीपलीमूल यह सब द्रव्योंसे बनाया जाता है।

(चक्रद०, भावप्रकाश)

अष्टादशाङ्गलौह (सं० क्ली०) पाण्डु रोगाधिकारका औषधविशेष। इसको प्रस्तुत करनेकी रीति यह है—चीरायता देवदारु दारुहल्दी, मोथा गुड़ूच कुटकी, पटोल, दुरालभा (जवासा) पर्पटक (क्षेतपापड़), निम्ब त्रिकटु (सोंठ पीपल मिर्च), वह्नि चित्रक विडङ्ग, जटामांसी यह सब द्रव्य सम भाग ले कर सबके समान लौह चूर्ण सबके बराबर मधु (शहद)-के साथ वटिका बनानी चाहिये। इसके साथ इसे सेवन करनेसे सब प्रकारका पाण्डुरोग निर्मूल होता है। (चक्रदत्त—पा रो)

अष्टादशोपचार (सं० पु०) कर्मधा०। तन्त्रोक्त पूजाका अठारह प्रकार उपचार। यथा—१ आसन, २ स्वागत ३ पाद्य ४ अर्घ ५ आचमनीय, ६ स्नान, ७ वस्त्र ८ उपवीत, ९ भूषण १० गन्ध ११ पुष्प, १२ धूप, १३ दीप १४ अन्न १५ तर्पण, १६ माल्यानुलेपन, १७ नमस्कार और १८ विसर्जन।

अष्टादिगाब्दिक (सं० पु०) शब्द वृत्ति अष्टौ आदि आब्दिक, आदिभूत आब्दिकः, शाक०तत्। तत॰ अष्टौ च ते आदिमाब्दिकाश्चेति, कर्मधा० समासान्त हिगु। आठजन प्रसिद्ध आब्दिक। यथा,—इन्द्र चन्द्र काशकृत्स्न, आपिशली, शाकटायन, पाणिनि,

अमर और जैनेन्द्र। इन आठ लोगोंने प्रथम शब्द शास्त्रको प्रणयन किया था, इसीसे इनका यह नाम पड़ा।

अष्टाध्यायी (सं० स्त्री०) १ शतपथ ब्राह्मणका पञ्चदश काण्ड। इसमें आठ अध्याय सन्निविष्ट हैं। २ पाणिनि-व्याकरण।

अष्टानवत (स० त्रि०) अट्ठानवे संख्या-सम्बन्धीय अट्ठानवेवां।

अष्टापद (स० पु०-क्ली०) अष्टौ अष्टौ पदानि यस्मिन्, संख्या शब्दस्य वीप्सायां पाठ अर्थ-वाचि। १ चौपर खेलनेको कपड़ेका बना घर विसात। अष्टसु कोष्ठेषु पद प्रतिष्ठा यस्य। २ स्वर्ण सोना। ३ शरभ। यह आठ पैरका पशु होता और अपनी पीठपर सिंहको भी दबाकर उड़ जाता है। ४ मकड़ी। ५ धतूरा। अर्द्ध यथा स्यात् तथा पद्यते। ६ कृमि कीड़ा। ७ चन्द्रमल्लिका। अष्टसु दिक्षु आप पते। ८ कील, कांटा। ९ कैलासपर्वत। अष्टाभि सिद्धिभिराप्यते। १० अणिमादि अष्टसिद्धि।

अष्टापदपत्र (सं० क्ली०) सुवर्णपत्र सोनेका वरक।

अष्टापदी (स० स्त्री०) चन्द्रमल्लिका, चांदनीका पेड़।

अष्टापाद् (स० पु०) आठ पैर वाला जिसमें आठ पद रहें।

अष्टापाद (सं० त्रि०) आठसे बटा हुआ जिसके आठ भागमें रहें।

अष्टाप्राय (सं० त्रि०) अष्टाभिरापद्यते गुण्यते, आ पद कर्मणि क्त। अष्टगुण अठगुणा, अठहरा, जिसमें आठ लड़ रहें।

अष्टाविंशति (स० स्त्री०) अष्टाधिका विंशति, आत् अष्टादेश। १ अट्ठाईस संख्याविशिष्ट। पूरणे डट्। अष्टाविंश। पूरणे तमप्। अष्टाविंशतितम।

अष्टाविंशतितत्त्व (सं० क्ली०) अष्टाविंशतिस्यांशेषु तत्त्वम्। रघुनन्दनमहाचार्य प्रणीत मलमासादि अष्टाविंशति विषयक स्मृतिनिबन्ध विशेष। यथा,—मलमास दायतत्त्व, संस्कार, शुद्धिनिर्णय, प्रायश्चित्त, विवाह तिथि, जन्माष्टमीव्रत दुर्गोत्सव व्यवहार एकादशी प्रभृतिका निर्णय, तड़ागोत्सर्ग, वृषोत्सर्ग प्रभृति

सर्ग, दीक्षा, सामवेदीका श्राद्ध, यजुर्वेदीका श्राद्ध, और शूद्रका कृत्यतत्त्व।

अष्टार (सं० त्रि०) अष्टौ अरा इव कोणा यस्य। अष्टकोणयुक्त, अठकोना। इस अर्थमें 'अनाम्र' 'अष्टकोण' इत्यादि शब्द भी प्रयुक्त होते हैं।

अष्टारचक्रवत् (सं० पु०) अष्टारं अष्टकोणं चक्रमस्त्यस्य, मतुप् मस्य वः। जिन विशेष। हाथमें अठकोन चक्र रहनेसे इन्हें 'अष्टारचक्रवान्' कहते हैं। इनके अपर पर्याय यह हैं,—मञ्जुश्री, ज्ञानदर्पण, मञ्जुभद्र, मञ्जुघोष, कुमार, स्थिरचक्र, वज्रधर, प्रज्ञाकाय, वादिराट्, नीलोत्पली, महाराज, नील, शार्दूलवाहन, धियाम्पति, पूर्वजिन, खड्गी, दण्डी, विभूषण, बालव्रत, अहचीर, सिंहकेलि, शिखधर, वागीश्वर। यह जैनसाधु और नृपति भी रहे।

अष्टारथ—भीमरथके पुत्रविशेष।

अष्टावक्र (सं० पु०) अष्टकृत्वो वक्रः, कृत्वो संख्यासुजर्थे परा (अष्टम स्थानाम। ण ६।३।१२५) इति दीर्घः। ऋषिविशेष। सुमतिके गर्भ और कहोडके औरससे इनका जन्म हुआ था। उद्दालकसे कहोड शास्त्रादि पढ़ते रहे। शिष्यकी सेवा शुश्रूषासे तुष्ट होकर उद्दालकने उनके साथ अपनी कन्या सुमतिका विवाह कर दिया। सुमतिका दूसरा नाम सुजाता है।

कुछ दिनोंके बाद सुमति गर्भवती हुई। एकदिन पत्नीके समीप बैठकर कहोड़ वेदपाठ कर रहे थे। पढ़नेमें स्थान स्थान पर कुछ भूल हो रहा था। सुमतिकी गर्भस्थ सन्तानने उन भूलोंको बता दिया। इसपर कहोड़ने क्रोध करके कहा,—"अभी तू भूमिष्ठ नहीं हुआ। गर्भ होमें तेरा स्वभाव इतना वक्र है, अतएव तू अष्टावक्र होकर जन्म ग्रहण करेगा।" उसी शापके प्रभावसे जन्म लेनेपर उस शिशुका शरीर आठ जगहसे टेढ़ा हुआ था।

अष्टावक्र जिस समय गर्भहीमें थे, उसी समय एकदिन सुमतिने कहोड़से कहा,—"मेरा दशवां मास उपस्थित है। तुम्हारे पास धन नहीं, इसलिये राजा जनकसे जाकर धन मांगो।" कहोड़ जनकसे धन मांगने गये। वहां वन्दी नाम वरुणके एक पुत्र थे। वेदमें उनकी दक्षता असाधारण थी। वेदविचारमें कहोडको परास्तकर उन्होंने समुद्रमें डाल दिया। समुद्रतलमें वरुणके निकट जाकर वे उनके यज्ञमें अभिषिक्त हो गये।

इधर अष्टावक्रका जन्म हुआ। बारह वर्षकी अवस्थामें पिताकी दुरवस्था सुनकर वे जनकपुरी गये। उनके साथ उनके मामा श्वेतकेतु भी थे। वहां वेदविचारमें वन्दीको परास्तकर वे अपने पिताको उद्धार कर लाये। पुत्रसे सन्तुष्ट होकर कहोड़ने उन्हें समङ्गा नदीमें स्नान करनेको कहा। समङ्गामें स्नान करनेसे अष्टावक्रकी वक्रता दूर हो गई, पर वक्र नाम न गया।

अष्टावक्रने जनकराजको जो उपदेश दिया था, उसका नाम अष्टावक्रसंहिता है। इन्हींके आशीर्वादसे भगीरथने दिव्य गङ्गा लाभ किया और इन्हींके शापसे कृष्णकी महिषियां डाकूके हाथमें पड़ीं। अर्जुन देखो।

अष्टावक्ररस—शोधित पारा १ भाग, गन्धक २ भाग, स्वर्ण १ भाग, रौप्य ८० भाग, सीसा, तांबा, खर्पर, वङ्ग प्रत्येक १० भाग। इन सब वस्तुओंको वटकी झुरीके रसमें एक पहर और घृतकुमारीके रसमें एक पहर घोटना। फिर समतल्ल बोतलमें रखकर उसके मुहको चां-खड़ीके टुकड़ेसे बन्द कर बालूभरी हांड़ीमें इस बोतलको रख देना। बालू बोतलके गलेतक भरा रहे। फिर क्रमशः तीन दिन तक उसे आगपर रखना। स्वर्ण पातित होकर जो औषध बोतलके गलेमें लग जाये उसे निकाल लेना। इसकी मात्रा दो रत्ती है। पानके रसके साथ खाना होता है। इसके सेवनसे सम्पूर्णरूपसे बलवीर्यकी वृद्धि होती है।

अष्टावक्रीय (सं० क्लो०) अष्टावक्रमधिकृत्य कृत. ग्रन्थः छ। अष्टावक्रको अधिकार करके रचित ग्रन्थ, अर्थात् जिस ग्रन्थमें अष्टावक्रका उपाख्यान हो। महाभारत वनपर्वके १३२से १३३ अध्याय। अष्टावक्रने विचारसे वरुणपुत्र वन्दीको परास्त करके अपने पिता कहोडको उद्धार किया था। इन कई अध्यायोंमें अष्टावक्रके शास्त्रार्थका विवरण है।

अष्टाश्रि (सं० त्रि०) अष्टकोण-विशिष्ट, अठकोना। (क्लो०) अष्टकोण गृह, अठकोना घर।

हङ्गरीमें नजिदृल्लार और प्लातेन झील ही अधिक प्रसिद्ध हैं। इनमें पहलीका परिमाण ४०० वर्गमील और दूसरीका १०० वर्गमील है। नजिदृल्लारके ऊपर बारहो महीने वाष्पीय जहाज चलते हैं। इन दोनों झीलोंके चारो ओर अङ्गरके बाग लगी हुए हैं।

नदनदी—अष्ट्रीयामें कितनी ही नदियां बहती हैं, किन्तु इष्ट्रिया और कष्ट प्रान्तमें नाला भी ढूंढे नहीं मिलता। इसकी नदियोंकी धारायें तीन ओरको जाती हैं,—उत्तर, दक्षिण और पूर्व। किसी प्रधान नदीका मुहाना इस देशमें नहीं पड़ता। दानूब नदीमें जहाजरानी खूब हो सकती है। लिञ्ज और वियेनाके बीच इस नदीकी शोभा देखते ही बनती है।

दानूब नदी प्रायः २३४ वर्गमील अष्ट्रीयाके भीतर बहती हुई ओसोवा होकर चली गयी है। दक्षिण भागमें इन, वौन, एन्स, लिया, राब, द्री और सेव, तथा वामभागमें मार्च, ओवाग, निडवा, ग्रान, थिस और वेगाओथिमिस इसकी शाखायें हैं। विश्चुला नदी वाल्टिक सागरमें गिरती है। इसकी शाखाका नाम वग है। एल्व नदीकी शाखाओंके नाम मेलदो और एजार, निस्तार एवं आदिज। राइन नदका केवल सात कोस अंश कन्सनन्स झीलके ऊपर होकर चला गया है। इसोञ्जो, जार्मान्ना, कार्क और नारेन्ता नदी आड्रियातिक समुद्रमें जाकर गिरी है।

खनिज प्रस्रवण—अष्ट्रीयाकी तरह अधिक और मूल्यवान् खनिजप्रस्रवण युरोपके दूसरे प्रान्तमें देख नहीं पड़ते। विशेषतः यह बोहेमियामें मिलते, जहां कितने ही मनुष्य इन्हें देखने पहुंचा करते हैं। कार्लसवड, मेरीनवड, फ्रानजेन्सवड और विलिनके क्षारस्वभाव प्रस्रवण सबसे बड़े हैं। गीसूवलका क्षारस्वभाव और अस्लीकृत जल चौका-वर्तनके काम आता है। सब मिलाकर कोई १५०० प्रस्रवण अष्ट्रीयामें वर्तमान हैं।

सागरतट—अष्ट्रीयाकी सम्पूर्ण सीमाका दशमांश ही सागरतट है। आद्रियाटिक-तट १००० मील विस्तृत और अधिक दन्तुरित है। इष्ट्रियाका प्रायोद्वीप, त्रिट और क्वारनेरो अखातके बीच पड़ता, जिसमें बहुत सुरक्षित खाड़ी है। क्वार्नेरोके अखातमें क्वारनेरो द्वीप भी मिलते, जिनमें चेरसो, वेगलिया और लूसिन प्रधान हैं। इसोञ्जो मुहानेके पश्चिम तटपर कच्छोंकी भरमार है। किन्तु ट्रीष्टके अखात और इष्ट्रियन प्रायोद्वीपका तट ढालू होनेसे बहुतसे बन्द और पोताश्रय सुरक्षित हैं। अष्ट्रीयाके प्रधान समुद्र पोताश्रय एवं आयुधागार ट्रीष्ट, कपोडिष्ट्रिया, पिरानो परेञ्जो, रोविग्न और पोला हैं। दालमेशिया-तट पर भी कितने ही सुरक्षित बन्द मिलते, जिनमें जरा, कटारो और रगूसा मुख्य हैं। किन्तु कहीं-कहीं यह बहुत ही ढालू है, जहां कोई चढ़कर ना नहीं सकता। हां, तटके साथ द्वीपोंका समूह लगा, जहां शीत ऋतुके समय आद्रियाटिकमें तूफान चलनेपर जहाजोंको लङ्गर डालनेका सुगम स्थान मिल जाता हैं।

भूतत्त्व—अष्ट्रो-हङ्गरीय साम्राज्यमें अल्प्स और कार्पथियान पर्वत प्रधान हैं। इन दोनोंके बीच हङ्गरीकी समभूमिका टरसियारी स्तर और बाहर उत्तरकी ओर दूसरा प्रदेश पड़ता है। कारपेथियान अल्प्स पर्वतके बीचके छिद्रने मियोसीन समयसे इन दोनो प्रान्तोंको जोड़ा है। बाहरी ओर पहले गढ़ा रहा, किन्तु अब वह पूर गया है। गालिशियामें नीष्टरकी पुरानी चटानें निकल पड़ी हैं। सिलूरियान और डिवोनियान गर्भपर भुरभुरा पत्थर झलक मारता है। मालूम होता है, डिवोनियान समयके बाद भूमि सूख गयी थी। किन्तु उपर क्रिटेशेउस समय आरम्भ होते हो किनोसेनियान समुद्र फूट पड़ा। १२।१५ कोसका उन्नतावनत देश नीष्टरको कार्पथियान उपकण्ठसे पृथक् करता है। प्रुथ उपत्यकामें मियोसीन समयसे अधिक पुराना गर्भ देखनेमें नहीं आता। उपरोक्त उन्नतावनत देशमें और उत्तर-पश्चिम और पलेओजोइक स्तर क्रिटेशेउस गर्भके नीचे दब गया है। लेमवर्गमें १६५० फीट छेदनेपर भी सिनोनियान आधार मिला न था। क्राकोसे पश्चिम क्रिटेशेउस गर्भ जुरासिक और त्रियासिक स्तरसे विस्तृत है। साइलेशियामें पलेओजोइक गर्भ फिर धरातल-

पर निकल आया है। शहरोंके बीच पहाड़ मैदान पर बढ़ा और उत्तर पूर्व और कार्पेथियानसे जा मिला है।

कृषिकार्यके सुभीतेके लिये अष्ट्रीयामें जगह जगह पर नहर खोदी गई है। परन्तु ये सब नहरें बहुत पुरानी नहीं हैं। किन्तु अष्ट्रीयामें वियेनासे निउस्टाद तक जो नहर है, वह बीस कोस और हङ्गरीके अन्तर्गत दानूब एवं थिसके बीचमें जो वाकुमार नहर है, वह पैंतीस कोस लम्बी है। बेगा एवं तेमिसके बीचमें रोमकोंने जो नहर खुदवाई थी, उसे बेगा नहर कहते हैं। उसकी लम्बाई ३२ कोस है।

कृषि—अष्ट्रीयामें शिल्पका जितना ही काम क्यों न रहते भी कृषिकार्य लोगोंको बहुत लाभ पहुंचाता है। सन् १८०० ई०को यह देशके कोई आधे आदमी कृषिकार्यसे ही अपना निर्वाह करते थे। भूमि बहुत उपजाऊ है। ७३१०२००१ एकर भूमिमें खेती होती और बाकी दूसरे काम आती है। बोहेमिया, गालि शिया, मोरेविया और निम्न अष्ट्रीयामें अधिक कृषिकार्य चलता है। निम्नलिखित द्रव्य खूब पैदा होते हैं—गेहूं, राई, यव, बाजरा, मकई-ज्वार और आलू। किन्तु जो द्रव्य खेत जोतनेसे उपजता, उससे इस देशका पेट नहीं भरता। हङ्गरीसे बहुतसा गेहूं और मकई-ज्वार मंगा अष्ट्रीयाके लोग अपना उदरपोषण करते हैं। अष्ट्रीयासे सिर्फ यव और बाजरा बाहर भेजा जाता है। टिरोल और साल्जबर्गमें खेती बहुत कम होती है। यहांसे जितना ही मेवा बाहर जाता है। टिरोलका सेब, बोहेमियाका बेर और दालमेशियाका अञ्जीर तथा अनार बहुत प्रसिद्ध है। अङ्गूर भी बहुत उत्पन्न होता है।

काठ—अष्ट्रीयामें खेतीसे जियादा काठ पड़ता है। बुकोविनामें सबसे अधिक और गालिशियामें सबसे न्यून काठ है। सिन्दूर देवदारु, बीच आम और बुकोआर-जैसे वृक्षोंसे राज्यको बड़ा आय होता है। जङ्गलका काम वैज्ञानिक रीतिसे चलाते हैं।

सम्पत्ति—सैकड़े पीछे राज्यका ४८वां अंश ... में लगा है। बुकोविना, साल्जबर्ग, गालिशिया, मा और बोहेमियामें जितने ही छोटे छोटे राजा बसते हैं। जागीरको जमीन् ज्यादातर जङ्गली है।

रेल—अष्ट्रीयामें रेलका काम बड़ी धूमधामसे चलता है। देश पर्वतमय होनेसे रेल बनानेमें मवर्ने-मेण्टको बहुत मत्था मारना और रुपया खर्च करना पड़ा है। सेमेरिङ्ग रेलवे सन् १८५४ ई०को तैयार हुई थी। यह ऐसे पार्वत्य देशपर पड़ी कि बनावटको देख लोगोंकी बुद्धि चकरा जाती है। आदिसे अब तक रेलोंका अधिकार अष्ट्रीय सरकार अपने ही हाथ रखती है।

अष्ट्रीया निम्न—एन्स नदीके निम्न प्रदेशको निम्न अष्ट्रीया कहते हैं। इससे पूर्व हङ्गरी उत्तर बोहेमिया एवं मोरेविया, पश्चिम बोहेमिया तथा ऊपर अष्ट्रीया और दक्षिण ष्टीरिया पड़ता है। इसका क्षेत्रफल ७६५४ वर्गमील है। दानूब नदी इसे दो भागमें विभक्त करती है। वाल्डवीरटेलका पार्वत्य प्रदेश बोहेमिय और मोरेविय अधित्यकासे सम्बन्ध रखता है। दानूब, एन्स और मार्च नदीमें जहाज आता जाता है। वड़ेनमें गन्धकी, डिउस-अल्टेनबर्गमें फौलादी, पयरा बर्गमें लोहेका और बोसलौमें उष्ण प्रस्रवण प्रवाहित है। जल-वायु साधारण होते भी प्राय: बदलते रहता है। भूमि अधिक उपजाऊ नहीं ठहरती और न उससे इसके अधिवासियोंका काम ही निकलता है। लकड़ी तो अधिक नहीं देख पड़ता, किन्तु शिकार और मछलीका बाजार गर्म रहता है। अल्पस पर्वतके भीतर कुछ कोयला और लोहा निकलता है। किन्तु इस प्रदेशमें काम-काज खूब होता है। वीनरवाल और सेमरिङ्ग प्रदेशमें जितने ही कारखाने खड़े हैं। धातु चकी दवा, कागज, चमड़े, रेशम कपड़े औजार, चीनी और तम्बाकूका काम बहुत देख पड़ता है। वियेना बहुत बड़े व्यापारका केन्द्र है। अष्ट्रीया जैसा धन जन सम्पन्न प्रदेश दूसरा नहीं निकलता। यहां सैकड़े पीछे निन्नानबे मनुष्य पढ़े लिखे हैं।

अष्ट्रीया-ऊपर—एन्स नदीके उपरका प्रान्त ऊपर अष्ट्रीया कहाता है। इससे उत्तर बोहेमिया, पश्चिम बावेरिया, दक्षिण साल्जबर्ग एवं ष्टीरिया और पूर्व

निम्न अष्ट्रीया पडता है। अल्पायिन प्रदेशमें भूरा कोयला बहुत है। सारजेनबर्गकी नहरसे दानूब और एल्बके बीच जहाज आते-जाते हैं। यहांका जलवायु न तो बहुत अच्छा न ख़राब ही है। अधिवासी जर्मन जातिके और रोमान केथलिक हैं। कृषिकार्य ऐसी धमसे चलता, कि अन्न बहुत उपजता है। इस प्रदेश-जैसे चरागाह अष्ट्रीयामें दूसरी जगह नहीं मिलते। मवेशी पैदा और लकडी तैयार करनेसे इस प्रदेशको अधिक लाभ होता है। खनिज पदार्थमें लवण अधिक निकलता है। तीस खनिज निर्झरमें इसचालका सैन्धव और हालका फौलादी स्रोत प्रधान है। ष्टीरमें लोहे और दूसरे धातुका काम बहुत बनता है। कल पुर्जा, नैनू, रूई और काग़ज़ भी तैयार होता है। यहांसे नमक, पत्थर, लकड़ी, जानवर, ऊनी और फौलादी चीज़ तथा काग़ज़ बाहर भेजा जाता है।

अष्ट्रीया-हङ्गरी—इसका सरकारी नाम अष्ट्रो-हङ्गरीय-मनार्की है। इससे पूर्व रूस एवं रूमानिया, दक्षिण रूमानिया, सरविया, तुर्कस्थान, तथा मण्टेनीग्रो, पश्चिम आद्रियाटिक सागर, इटली, सुजारलैण्ड, लीक-टनष्टीन एवं जर्मन साम्राज्य तथा रूस पडता है। इसका क्षेत्रफल २३९९७७ वर्गमील है। सर्वसाधारण अपनी भाषामें इसे डुवेल मनार्की वा द्वैतराज्य कहते हैं। सन् १८७८ ई०को बरलिनमें जो सन्धि हुई थी, उसके अनुसार बोसनिया और हरजेगोविना राज्योंका प्रबन्ध अष्ट्रीया-हङ्गरीके हाथ लगा और सन् १९०८ को उन्हें अपने अधिकारभुक्त भी किया।

शासन—अष्ट्रीया और हङ्गरी दोनो राज्य पूरे तौरपर एक दूसरेसे स्वतन्त्र हैं। प्रत्येक अपना अपना पार-लियामेण्ट और शासन रखता है। किन्तु दोनोका राजा एक ही होता, जो अष्ट्रीया-सम्राट् और हङ्ग-रीका ईश्वर-प्रेरित पति कहाता है। दोनो राज्योंसे घनिष्ट सम्बन्ध रखनेवाले कुछ कार्योंका प्रबन्ध भी एक ही रीतिसे किया जाता है—जैसे परराष्ट्र विभाग, विदेशमें समर्थक एवं दूतविषयक निरूपण, सैन्य, रण-तरी और संयुक्त व्ययसे सम्बन्ध रखनेवाला राजस्व।

सम्राट्को सम्पूर्ण सेनाका एकमात्र अधिकार प्राप्त है। क्राकौ, वियेना, ग्राज, बूदापेस्त, प्रेसबर्ग, कसचौ, तमेश्वर, प्राग, जोजेफष्टेट, प्रिजमसल, लेमबर्ग, हर-मनष्टेट, अग्रम्, इन्सब्रक और सरजेवोमें सेना रहती है।

गालेशियाके क्राकौ और प्रिजमसल, हङ्गरीके,पीटर-वारड, बोवरद एवं तमेश्वर और बोसनिया-हरजगो-विनाके सराजवो स्थानमें किला बना है। अल्पसकी सीमा टिरोलमें भी कितना ही किला खडा, जिसका केन्द्र ट्रेण्ट और फ्रान्सेनफेष्टसे बना है। करिन्थियाको जो सामरिक रथपथ आते, उनपर मलबरथ, प्रेडिल-पास आदिमें बहुतसे बचावके स्थान निर्मित है। वियेना और बूदापेस्त राजधानियोंमें कोई किला नहीं। आद्रियातिक तटपर पाला नौकाश्रयको रक्षा जल और स्थल दोनो ओरसे की गयी है। ट्रीष्ट, जारा और कटारोमें भी किलेबन्दी देख पड़ती है। पोला और ट्रीष्टमें जहाजोंका बडा अड्डा है।

अष्ट्रीयामें नाना प्रकारके धातु एवं पार्थिव पदार्थ-की खानि है। उससे प्रतिवर्ष प्रायः १८७५००,०००, रुपयेका खनिज वस्तु निकाला जाता है—पत्थरका कोयला ६०८९७१०५) लोहा १८००००००) नमक ८००००००) और सोना चांदी प्रायः ६००००००) रुपयेका। हङ्गरी, त्रान्सिलवेनिया, साल्ज़बर्ग और टिरोलमें सोना होता है। इन सब स्थानों और बोहेमियामें चांदीकी खानें हैं। इद्रिया, हङ्गरी, त्रान्सिलवेनिया, स्लाइविरिया और करिन्थियामें पारा पाया जाता है। बोहेमियामें टीन, क्राकौ और करिन्थियामें जस्ता, करिन्थियामें सीसा और यहांके अनेक स्थानोंमें तांबा और लोहा मिलता है। हङ्ग-रीमें सुर्मा, साल्ज़बर्ग और बोहिमियामें शङ्कविष; हङ्गरी, ष्टीरिया एवं बोहिमियामें कोबल्ट, गालि-सिया, बोहिमिया, हङ्गरी और साल्ज़बर्ग प्रभृति स्थानोंमें गन्धक, बोहिमिया, मोरेविया और करि-न्थिया वग़ैरहमें ग्राफाइट पाया जाता है।

यहां अट्टालिका आदि बनानेकी प्रचुर सामग्री मिलती है। चीनके बरतनकी मट्टी, मार्बल, जिप्सम, खड़िया, गोदन्तमणि, गार्नेट नामक रत्नमणि, अकीक़

यमक, फीरोजा, गोमेद जबरजद पद्मराग, वैदूर्य्य समावार, पोखराज प्रभृति अनेक प्रकारके मणि यहांके खानोंमें पाये जाते हैं।

अफ्रीका और द्वीपोंके पर्वतोंमें यथेष्ट सैन्धानमक होता है। प्रति वर्ष ८१००००० मन नमक निकाला जाता है। इसके सिवा समुद्र और झीलोंके जलको गर्म करके भी नमक तय्यार होता है। भारत वर्षकी तरह अफ्रीकामें लवणका व्यवसाय राजाके ही हाथमें है। यहां प्राय १५०० खनिज कूप हैं। उनमें निम्न अफ्रीकाके मम्बकूप एवं कार्ल्सबाद, मारिनबाद और फोपेनके लवणकूप ही अधिक प्रसिद्ध हैं। इन कूपोंमें स्नान करनेके लिये रोगी लोग आया करते हैं।

अफ्रीकामें अनेक प्रकारके उद्भिद् एवं शस्यादि उत्पन्न होते हैं। गेहूं, धान, आलू, मारझे, गेहूं पाट, सन, तम्बाकू, होप, नील आदि यथेष्ट उपजता है। यहां शराब भी खूब तय्यार की जाती है। द्वीपोंकी तोकि शराब सब जगह प्रसिद्ध है।

वन्य पशुओंमें भालू, भेड़िया, श्रृगाल सिया गोस, बिवर, सार्मट, हरिहाव, बकरी, सांभर हरिण सफ़ेद खरहा वग़ैरह देशमें पाते हैं। यहां रेगमके कीड़ोंको खेती खूब होती है। पालतू पशुओंमें घोड़ा, गधा, भेड़, बकरा और सूअर ही प्रधान हैं। परन्तु इङ्गलैण्डकी तरह यहां पालतू जानवरोंकी लोग उतनी देखभाल नहीं करते। मवर्न-मिष्टमें घोड़ा और भेड़ पालते हैं। मोरेविया बोहिमिया, सिलिसिया, निम्न अफ्रीका, हङ्गरी और गालिसियामें कुछ अच्छा पशम पैदा होता परन्तु विचारकर देखनेसे उसका परिमाण निकृष्ट है। अफ्रीकाके बारह आना आदमी खेती करते हैं।

यहां शिल्पकर्मकी आजतक वैसी उन्नति नहीं हुई। कपास, रेशम और पशमके वस्त्रादि, कांचके काम, लोहे और ईस्पातकी चीजें ही अधिक बनती हैं। अफ्रीका पहाड़ी देश है, सिवा आद्रियाटिक सहुद्रके दूसरी राहसे देशान्तर जानेका अच्छा सुभीता नहीं पड़ता। इसीसे यहां वाणिज्यकी उन्नति भी नहीं होती। आद्रियाटिक समुद्रमें वाणिज्यके प्रधान बन्दर ये हैं,—इस्त्रिया, त्रिस्ट, रोविग्न आदरियो, सिवा और जिवका।

अफ्रीकाके निवासी एक जातिके नहीं हैं। उनका धर्म और भाषा भी एक प्रकारकी नहीं है। यहांके अधिवासियोंमें स्लाव, रोमक, जेहिन, यहूदी, आर्मेनी और जिप्सी ही अधिक हैं। अफ्रीकाके विद्यालयोंको एक प्रकारसे दातव्य ही कहना चाहिये। प्राय सर्वत्र ही कुछ कुछ मूल्यवान है। क्योंकि आयसे विद्यालयका खर्च चलता है, छात्रोंको प्राय फीस नहीं देनी पड़ती। यदि कहीं फीस है, तो केवल नामके लिये थोड़ीसी। अफ्रीकामें कुछ जातीय विद्यालय हैं। छ वर्षसे बारह वर्षतककी उम्रके लड़कोंको इन विद्यालयोंमें जाना पड़ता है। इनके सिवा हालमें कितनी ही ऐसी पाठशालायें खोली गई हैं जिनमें लोग सभी कुछ लिखना पढ़ना सीख सकें। भियेना, प्रेग, ग्रेज, इन्सब्रक, प्रेस्स, क्राको, लवेमबर्ग, जेम्बर्ग और क्लोसेन्य नगरमें विश्वविद्यालय हैं।

अफ्रीकाका शासनभार सम्राट्के अधीन है। हाप्स बर्ग-लोरेन परिवारके आदमी सम्राट् होते हैं। दैवात् राजपरिवारमें कोई बंशधर न रहनेपर बोहि-मिया एवं हङ्गरीके राजकीय मनुष्य नवीन राजा मनो नीत करते हैं। किन्तु दूसरे विभागोंके प्रिय राजा अपना उत्तराधिकारी ठीक कर जाते हैं। यहांके सम्राट्को रोमन-कायलिक मतावलम्बी होना आव श्यक है। इङ्गलैण्डकी लार्ड एवं कामन्स सभाकी तरह यहां भी उच्च एवं निम्न सभा है। भूस्वामी, आर्चबिशप, बिशप एवं राजा लोग यहांकी उच्च सभाके सदस्य होते हैं। स्वयं सम्राट् इन सभासदोंको मनोनीत करते हैं। निम्न सभामें ३५३ सभ्य रहते, उनमें बोहि मियाके ८२ दालमेशियाके ८, मालिसियाके ६३, उच्च अफ्रीकाके १७, निम्न अफ्रीकाके ३७, साल्ज़बर्गके ५, स्तायरियाके २३, कारिन्थियाके १०, कार्निओलाके ८, बुकोविनाके ८, मोरेवियाके ३६, सिलिसियाके १०, तायरोलके १०, वोरारलबर्गके ३ इस्त्रिया और त्रिस्तके ४ मनुष्य मनोनीत किये जाते हैं।

अष्ट्रीयाका शासनभार सात मन्त्रिविभागोंके हाथमें अर्पित है। यथा,—१ साधारणशिक्षा एवं धर्मकार्यका विभाग, २ कृषिविभाग, ३ राजस्वविभाग, ४ राज्यके अन्तर्भूत विषयव्यापार, ५ जातीयरक्षा, ६ वाणिज्य-विभाग, ७ विचारविभाग।

यहांके राजस्वको अवस्था अतिशय शोचनीय है। उन्नीसवीं शताब्दीके प्रारम्भमें लगातार पन्द्रह वर्षतक युद्ध होता रहा, उसमें अष्ट्रीयाका बहुत धन खर्च हो गया। इससे लोगोंका विश्वास बहुत घटा था। सैकड़े पीछे २५) रुपये बट्टेपर भी कोई गवर्नमेण्टको कर्ज़ देनेपर राजी न हुआ। अन्तमें ५०) बट्टेपर सैकड़े पीछे ५) सूदके हिसाबसे गवर्नमेण्टको कर्ज़ लेना पड़ा था। उसके बाद क्रिमिया, इटली और प्रुशियाके युद्धमें ऋण और भी बढ़ गया। सन् १८०५ ई०में समग्र अष्ट्रीया साम्राज्यका आय १११०१८५०००) वार्षिक व्यय प्रायः ११११८५०००) और १८०३के अन्त समस्त साम्राज्यका ऋण २३५०८६००००) रुपये था। हमारे भारतवर्षके साथ तुलना करनेसे अष्ट्रीयाका आय व्यय नितान्त अल्प है।

इतिहास—पहले अष्ट्रीया इतना बड़ा साम्राज्य न था, एनूस नदके नीचे एक छोटासा स्थान रहा। सन् ८८० ई०को सार्लेमेनके समय इसके दक्षिण-पूर्व अष्टिचमें एक सीमा निर्देश की गई। ११५६ ई०में एनूसके ऊपरके देशोंके साथ यह स्थान मिला दिया गया था। उसके बाद १२८२ ई०में हाप्सबर्ग परिवारके साथ मिल जानेसे यह राज्य क्रमसे बलवान् हुआ। हाप्सबर्गके राजाओंको कहीं विवाहसूत्रसे नया स्थान मिला, कहीं धीरे धीरे नई जगह खरीद ली थी। इस तरह अष्ट्रीया साम्राज्य प्रबल बना। अन्तमें १४०८ ई०से यह लोग जर्मनीके भी अधिपति हो गये। १४२६—२७ ई०में बोहिमिया और हङ्गरी राज्य हाथ आया। अब अष्ट्रीया बड़ा भारी साम्राज्य हो गया है। १८०४ ई०में पुत्र-पौत्रादि वंशावलीके क्रमसे फ्रान्सिस यहांके सम्राट् हुए थे। दो वर्ष बाद वे जर्मनी और इतालीके भी राजा माने गये।

इस समय जो स्थान अष्ट्रीयाकी डचीके नामसे प्रसिद्ध है, अति प्राचीन समयमें वहां तरिसिकाम् नामको केल्टिक जातिके आदमी वास करते थे। ईसा मसीहके जन्मसे चौदह वर्ष पहले रोमकोंने दान्यूब नदके उत्तर नोरिकमको जय किया। मार्की-मन्निरा उस समय इस प्रदेशके अधोश्वर थे। दान्यूबके दक्षिण रोमकोंका नोरिकम और पानोनिया प्रदेश उस समय तायरोल रिशियाका एक विभाग मात्र था। खृष्टीय ५ वीं और ६ ठीं शताब्दीमें वो-आइ, वन्दन, गथ, हून, लम्बार्ड, और अवरी प्रभृति जाति-योंने इन सब स्थानोंको अधिकार कर लिया। अन्तमें हड जातिवाले जाकर इतालीमें बसे। उस समय एनूस नदके एक ओर अवरी और दूसरी ओर एक जातिके जर्मनोंका अधिकार था। ७८८ ई०में अवरी-योंने वेरियापर आक्रमण किया, किन्तु शार्लेमिनने उन लोगोंको खदेड़ कर एनूस नदके किनारेके प्रदेशको जर्मनीमें मिला लिया। उसके बाद ९०१ ई०में हङ्गरीके राजाने इस स्थानको जीता था। अन्तमें ९५५ ई०को प्रथम ओत्तोने उसे फिर जर्मनीके अन्तर्भूत किया।

९८३ ई०में सम्राट्ने बावेन्बर्गके लिओपोल्डको इस स्थानका शासनकर्ता नियुक्त कर दिया था। ११४१—११७७ ई०में हेनिरी जेसोमिर्गत्ने एनूस नदके ऊपर और नीचेके प्रदेशोंको भी मिला लिया। इस वंशसे छठें लिओपोल्डने कई बार हङ्गरीके साथ युद्ध किया था। १२४६ ई०में उनके उत्तराधिकारी फ्रेदारिक मगियारोंके साथ युद्ध करनेमें खेत आये। उनके सन्तान-सन्तति न थो, सुतरां बाबेनबर्गका राजवंश यहींसे ध्वंस हो गया।

द्वितीय फ्रेदारिकके समय अष्ट्रीयामें बहुत उलट-पलट पड़ा, परन्तु अन्तमें हाप्सबर्ग परिवारके प्रथम आलब्रेस्के सम्राट् होनेपर अष्ट्रीयाके अभ्युदयका सूत्र-पात हुआ। उन्होंने हङ्गरी और बावेरियाके साथ युद्ध किया था। अन्तमें सुजालैण्डके संग्राममें जन् स्वावियाने उन्हें विनष्ट कर दिया। उनके पांच सन्तान थे। उनमेंसे किसी किसीने फ्रेदारिकको सम्राट् बनाना चाहा, परन्तु वेवेरियाके डिउकने इस प्रस्तावको

अङ्गीकार कर उन्हें पराजय किया। अन्तमें उनके भाई द्वितीय आल्बेम्, उनकी मृत्युके बाद तृतीय आल्बेस एवं रडल्फ और १३८१ ई०में ४र्थ आल्बेस् डिउक हुए। तत्पुत्र पञ्चम आल्बेसने सम्राट सिगिसमुन्दकी कन्याके साथ विवाह किया था। उसी सम्बन्धसे वे हङ्गरी और बोहिमियाके राजा बनाये गये। इधर २य आल्बेसके नामसे वे जर्मनीके भी सम्राट् हुए। १४३७ ई०में उनके सन्तान लादिसलेसकी मृत्युके बाद अष्ट्रीयाका राज वंश विलुप्त हो जानेपर ष्टीरिया-राजपरिवारके हाथमें उनका स्वत्वाधिकार आ गया।

ष्टीरिया-राजपरिवारके १म फ्रेडारिक सम्राट् हुए। उनके पुत्रका नाम प्रथम मक्सिमिलन था। १४७७ ई०में चार्ल्स दि बोल्डकी कन्या मेरियाका पाणिग्रहण करनेपर उन्हें नेदर्लैण्डका भी अधिकार मिला। फ्रेडारिककी मृत्युके बाद मक्स मिलनने अपने सन्तान फिलिपको नेदर्लैण्डका राजा बना दिया। स्पेनकी जोहानाके साथ फिलिपका विवाह हुआ। उसी सम्बन्ध सूत्रसे हाप्सबर्ग राज परिवार स्पेनका अधीश्वर बना था। १५०६ ई०में फिलिप स्वर्ग सिधारे। १५१८ ई०में मक्सिमिलन भी परलोक चले गये। उस समय उनके पौत्र प्रथम चार्लस स्पेनके राजा थे। जर्मनीका सिंहासन शून्य होनेसे वे पञ्चम चार्लसके नामसे वहांके सिंहासनपर बैठे। इधर सन्धिपत्रकी शर्तके अनुसार उन्हें नेदर्लैण्डके सिवा जर्मनीके अन्यान्य समस्त स्थानोंको अपने भाई प्रथम फार्दिनान्दके हाथमें सौंप देना पड़ा। फार्दिनान्द हङ्गरीके राजा द्वितीय लूइके बहनोई थे। लूइकी मृत्यु होनेपर बहुत विवादके बाद फार्दिनान्दको भिन्न हङ्गरीका अधिकार मिला। अन्तमें पञ्चम चार्लसके परलोक गमन करनेपर फार्दि नान्द ही जर्मनीके सम्राट् बनाये गये।

१५५६ ई०में सम्राट्की मृत्यु हुई। ज्येष्ठ पुत्र द्वितीय मक्सिमिलन अष्ट्रीया हङ्गरी और बोहिमियाके सम्राट् बने थे। तायरोल और अपर अष्ट्रीया २य पुत्र फार्दि नान्दके अंशमें पड़ा। छोटे लड़केका नाम चार्लस था। उन्हें ष्टीरिया और कारिन्थिया आदि स्थान हिस्सेमें मिले। १५७६ ई०में मक्सिमिलनकी मृत्यु हुई। उनके पांच पुत्रोंमेंसे द्वितीय रडल्फको राज्य मिला। उनके समयमें साम्राज्यको अवस्था वैसी अच्छी न थी। रूम और बोहिमियाके साथ विरोध उठ खड़ा हुआ। इधर नीपुटस्नोग बोहिमियाके प्रोटेस्टाण्ट मतावलम्बि-योंको सताने लगी। यह देख उन्होंने प्रोटेस्टाण्टोंको सम्पूर्ण स्वाधीनता दे दी। परन्तु साम्राज्य रडल्फके हाथमें बहुत दिनोंतक न रहा। उन्होंने अपने छोटे भाई माथियासको साम्राज्यका भार सौंप दिया। इन्होंके समय रोमन कायथलिक और प्रोटेस्टाण्टोंमें घोर तर विरोध आरम्भ हुआ था। यह विरोध लगातार तीस वर्ष तक चला। माथियासके बाद द्वितीय फार्दिनान्द और उनके बाद तृतीय फार्दिनान्दको सिंहासन मिला। इसी समय अष्ट्रीयामें बहुत दिनोंतक धर्मयुद्ध होता रहा। उसके बाद तृतीय फार्दिनान्दके पुत्र प्रथम लियोपोल्ड सम्राट् हुए। इस समय स्पेनका राज सिंहासन नृपतिशून्य था। सिंहासनके लिये लियो पाल्ड और फ्रान्सके सम्राट् चतुर्दश लुईसे झगड़ा हुआ। परन्तु युद्ध समाप्त होनेके पहले ही १७०५ ई०में लियोपोल्ड संसारसे चल बसे। उनके बड़े लड़के प्रथम जोसिफ् सम्राट् हो युद्ध करने लगे। १७११ ई०में उनकी भी मृत्यु हुई। इसीसे उनके भाई षष्ठ चार्लस सम्राट बने। इनके समयमें सब लड़ाई झगड़ा मिट गया। पीछे अन्तमें यौथे सन्धि हुई। उसी सन्धि सूत्रसे नेदर्लैण्ड, मिलन, मान्तुया, नेपल्स और सिसिली अष्ट्रीयाके अन्तर्गत हो गया। उस समय अष्ट्रीयाका भूमिपरिमाण १८०० ०वर्गमील लोकसंख्या २८०००००० सैन्यसंख्या ११००००, और वार्षिक आय प्राय २८००००००) रुपया था। किन्तु थोड़े ही दिनोंमें फ्रान्स और स्पेनसे युद्ध छिड़ गया। उसमें अष्ट्रीयाके सम्राट् पराजय हुए। १७३८ ई०को वियेनामें सन्धिपत्र लिखा गया। उसकी शर्तके अनुसार अपने अधिकारसे उन्हें नेपल्स और सिसिली स्पेनके डन् कारलसको देना पड़ा। इधर सार्दिनियाके राजाको मिलानका कुछ अंश देनेसे उनके बदलेमें मिला पार्मा

और पाइसेप्ला मिला। १७१८ ई०की बेलग्रेडमें और एक सन्धि हुई। उसकी शर्तके मुताबिक् रूमके सुलतानको बेलग्रेड, सर्विया, वलाचिया और बोस्नियाका कुछ अंश देना पड़ा।

१७४० ई०में सम्राट्की मृत्यु हुई। उनके पुत्र न था, केवल एकमात्र कन्या थी, जिसका नाम मेरियाथेरिसा था। लोरेनके डिउक फ्रान्स-ष्टिफानके साथ उसका विवाह हुआ। मेरियाने राज्यका भार अपने हाथमें लिया। परन्तु यह बात सबको पसन्द न आयी। चारो ओरसे आपत्ति उठने लगी और घोरतर युद्ध आरम्भ हो गया। केवल इङ्गलैण्डने मेरियाका पक्ष ग्रहण किया। इसी अवसरसे प्रुशियाके द्वितीय फ्रेडरिकने सिलिसियाको जय कर लिया और अष्ट्रीयाके इलेक्टरको सप्तम चार्ल्सके नामसे सम्राट बना दिया। किन्तु १७४५ ई०में चार्ल्सकी मृत्यु हो जानेपर मेरियाके स्वामी प्रथम फ्रान्सके नामसे जर्मनीके सम्राट् हुए। सिलिसिया लौटा लेनेके लिये फ्रान्स, रूस, साक्सन् और स्विजरलैण्डके साथ परामर्श किया गया। लगातार सात वर्षतक युद्ध होता रहा; परन्तु सब निष्फल गया, अष्ट्रीयाको सिलिसिया न मिला। इसी समय राज्यका खर्च चलानेके लिये पहले पहल अष्ट्रीयामें ऋणका कागज़ प्रचलित हुआ।

फ्रान्सकी मृत्युके बाद उनके पुत्र द्वितीय जोसेफ जर्मनीके सम्राट् हुए। जोसेफके बाद उनके भाई द्वितीय लिओपोल्डके नामसे जर्मनीके सिंहासनपर बैठे। लिओपोल्डके लड़केका नाम द्वितीय फ्रान्स था। १८०४ ई०में ये पुत्रपौत्रादि वंशावलीक्रमसे अष्ट्रीयाके सम्राट् हुए। फ्रान्ज मेरिया-लुइसाके पिता और फ्रान्सके प्रसिद्ध सम्राट् नेपोलियानके श्वशुर थे। इन्होंने ही उद्योग लगा अपने दामादको एल्बा द्वीपमें निर्वासित कर दिया था। फ्रान्सकी मृत्युके बाद उनके पुत्र प्रथम फार्दिनान्द सम्राट् हुए। १८६५ ई०में प्रुशियासे युद्ध होनेके बाद सम्राट् फ्रान्सिस् जोसेफ जर्मनीके साथ सब प्रकारका सम्बन्ध त्याग देनेके लिये वाध्य हुए थे। उसके दूसरे वर्ष बड़ी धमधामके साथ वे हङ्गरीके सिंहासनपर बैठाये गये।

युरोपमें जो महासमरानल प्रज्वलित हुआ है, अष्ट्रीया ही उसका प्रवर्तक है। बोसनिया अष्ट्रीयाका भुक्त राज्य और सराजेवो उसकी राजधानी है। रूस-तुर्की युद्धके बाद १८७८ ई०में जयनत भूखण्ड बांटनेके समय अष्ट्रीयाने जर्मनीकी सहायतासे बोसनिया प्रदेशकी रक्षा करनेके लिये भार ग्रहण किया था। अष्ट्रीया सर्वभावसे बोसनियाके उन्नति साधनके लिये यत्नवान् हुआ। किन्तु बोसनियाके स्वाधीनताप्रिय स्वायगण अष्ट्रीयाके अधीनतासे मुक्त होनेके लिये अतिशय व्यग्र हो उठा। सम्भ्रान्त मुसलमान अधिवासीको छोड़कर बोसनियाके जन साधारण सब स्लाव हैं। १९०८ ई०में समस्त बोसनिया अष्ट्रीयाके सम्पूर्ण अधिकारभुक्त हो गया। स्वाधीनताप्रयासी स्लाव महागण अष्ट्रीयाके विपक्ष अभ्युत्थानके लिये गुप्त समितिसे षड़यन्त्र करने लगा। इधर अष्ट्रीयाने प्रजाशासन करनेके लिये अनेक उपाय अवलम्बन किये।

अष्ट्रीया-सम्राट फ्रान्सिस् जोसफके भ्रातृपुत्र युवराज फ्रान्सिस फार्दिनान्द और उनकी पत्नी डचिस हो हेनबर्गने बोसनियाके दर्शनार्थ सराजेवोका गमन किया। इतिहासमें सन् १९१४ ई०का २८वीं जूनका रविवार एक चिरस्मरणीय दिन है। उसी दिन सराजेवो नगरमें अष्ट्रीयासाम्राज्यके युवराज और उनकी पत्नी गेभीलो-प्रिन्सेफ नामक सार्वभौतीय एक स्लाव बालककी गोलीसे निहत हुई। बलकानकी बलवृद्धि अष्ट्रीयाके प्रबल असन्तोषका कारण हुई। इसलिये अष्ट्रीया राजपुत्रकी हत्या होते सार्वियाके ऊपर कितने ही अल्टिमेटम (चरमाभिसन्धिपत्र) भेजे गये। सार्वियाने उसमें सब शर्तोंको मान लिया, केवल उसकी स्वाधीनता विरोधी दो शर्तके सम्बन्धमें मीमांसाके लिये लोगोंको मध्यस्थ ठहराना चाहा। सार्वियाका प्रत्युत्तर हस्तगत होनेके बाद अष्ट्रीयाने सार्वियाके विरुद्ध युद्ध घोषणा की। अनन्तर रूसने सार्वियाका पक्ष ग्रहण किया। इधर जर्मनीने अष्ट्रीयाका पक्ष ले फ्रान्सपर आक्रमण किया। ४थी अगस्तको बेलजियमकी स्वाधीनता भङ्ग होते देखकर निरपेक्ष इङ्गलैण्डने जर्मनीके विरुद्ध युद्धघोषणा की। फिर इटली कुछ

दिनके बाद अष्ट्रीयाके विरुद्ध युद्ध घोषणा कर बैठा। उधर टर्की और बुल्गारियाने जर्मनी एवं अष्ट्रीयाका पक्षग्रहण किया। जिस सार्वियाके कारण महासमरानल प्रज्वलित हुआ, वही सार्विया राज्य इस समय अष्ट्रीया प्रभृति शक्तिके करतलगत है। सार्वियाके राजा राज्यभ्रष्ट होकर भी अंगरेजों और फ्रान्सीसियोंके साथ अष्ट्रीयाके विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं। सन् १९१६ ई०की ४थी अगस्तको इस महासमरका तृतीय वर्ष आरम्भ हुआ है। इस महायुद्धपेशका परिणाम क्या होगा यह कहा नहीं जा सकता। ऐसा विश्वव्यापी युद्ध किसी इतिहासमें देखा या सुना नहीं गया।

अष्ट्रेलिया, आष्ट्रेलिया—पृथिवीके सब द्वीपोंसे बड़ा द्वीप। यह भारतवर्षके पूर्वदक्षिण प्रशान्त महासागरमें १० ४० एव ३९´ ११½ दक्षिण अक्षांश तथा ११३ और १५३ १०´ पूर्व द्राघिमाके मध्यमें अवस्थित है। पूर्वसे पश्चिम यह १२५० कोस लम्बा और उत्तरसे दक्षिण ८०१ कोस चौड़ा है। इसका भूमिपरिमाण प्राय ३०००००० वर्गमील है। इसके उत्तरमें नवगिनि और पूर्व द्वीपपुञ्ज दक्षिणमें तास्मानिया द्वीप पश्चिममें भारत-महासागर और पूर्वमें प्रशान्त महासागर है।

अष्ट्रेलियाके अधिवासियोंकी उत्पत्ति समझना क्या सीधी बात है? यह निकटवर्ती लोगोंसे आकार प्रकारमें बिलकुल भिन्न मालूम पड़ते हैं। फिर इनकी चाल ढाल भी किसीसे न मिलेगी। खेती करना और घर बनाना इनके लिये अजूबा विषय है।

नहीं कह सकते कब अष्ट्रेलियाका इन्होंने अधिकार किया था। इनके यहां पहुंचनेका ठीक ठीक हाल किस्सा कहानीमें भी नहीं सुन पड़ता। किन्तु आकार प्रकारमें सादृश्य रखनेसे इन्हें स्वतन्त्र जातिके मनुष्य मान सकते हैं। तीन-चारसे अधिक गणना यह नहीं जानते। यह बात साफ जाहिर है अष्ट्रेलियाके अधिवासी पृथक् जातिके मनुष्य ठहरते, निकटवर्ती लोगोंसे किसीसे सम्बन्ध नहीं रखते और बहुत दिनसे इस देशमें रहते हैं।

पहले पहल जब युरोपीयोंने इस द्वीपको आविष्कार किया था, तब यहांके असभ्य आदमी देखनेमें बन्दरों जैसे मालूम हुये। इसीसे अनेक आदमियोंका विश्वास है, कि ये लोग अफ्रीकासे आकर यहां बसे होंगे। असभ्य लोग छोटी छोटी नावोंपर चढ़कर समुद्रके किनारे किनारे मछली पकड़ते फिरते हैं। अकस्मात् तूफान आ जानेसे नावें बहती बहती गहरे पानीमें चली जाती हैं। ऐसी दशामें कोई तो डूब जाती और कोई किसी दूरके टापूमें जा लगती है। अष्ट्रेलियाके असभ्य लोग इसी तरह अफ्रिकासे आये होंगे। किन्तु ए० आर० वलासके मतसे यह आर्य जातिके मनुष्य ठहरते और जापानियों तथा कुकुवोंकी अपेक्षा हम लोगोंसे अधिक सम्बन्ध रखते हैं। डाक्टर क्लाच (Dr Klatsch) इन्हें दक्षिण अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका और अष्ट्रेलियाका आदिम अधिवासी बताते हैं। कोयी कोयी इन्हें सम्भ्रान्त मान्यके द्राविड़ोंयोंकी सन्तान-सन्तति कहता है। कारण, इनकी और द्राविड़ोंकी भाषा एवं रीति नीति बहुत कुछ मिलती-जुलती है। किन्तु इस बातका ठीक उत्तर नहीं आता इन्होंने भारतीय महासागरको कैसे पार किया था।

अष्ट्रेलियाके अधिवासी ऊंचाईमें युरोपीयकी बराबर निकलते, किन्तु शरीरके गठनमें नीचे पड़ते हैं। इनके हाथ-पैर बहुत पतले होते हैं। बाहे लोगोंकी पिण्डलियां नहीं देख पड़तीं। खोपड़ा अयोग्य रूपसे मोटा पड़ता, किन्तु मस्तिष्कशक्ति न्यून ही निकलती है। सिर लम्बा तथा कुछ महीन बैठता, माथा चौड़ा पीछेको हटा रहता, भृकुटी लटक आती, आंखें गड़ीं, काली तथा डूबी हुयी होतीं और नथनोंके पास नाक मोटी एवं बहुत चौड़ी पड़ जाती है। मुंह बड़ा और होंठ मोटा रहता है, किन्तु आगेको वह उभर नहीं आता। दांत बड़े, सफेद और मजबूत होते हैं। नीचेका जबड़ा भारी बैठता, गालकी हड्डी कुछ कुछ चमकती और ठुड्डी छोटी रहती है। युरोपीयकी अपेक्षा गर्दन मोटी और छोटी निकलेगी। चमड़ेका रंग तांबे-जैसा और बाल लम्बा तथा काला होता है।

ये लोग चढ़ायेको तरह एक प्रकारका कपड़ा बुन लेते हैं। पर यह कपड़ा पशुको पूंछ से इनके गिरके मालूम है। छोटे छोटे गड्ढों और खोखोको भी घर माना है। इनमें किसी किसी जातिके आदमी तरुण होनेपर सामनेके ऊपरवाले दो दांतोंको तोड़ देते हैं। मर्दको और और भौमाओंके साथ इन दो दांतोंका न रहना भी एक बड़ी शोभा है। इनका और एक सम्प्रदाय है। उसमें सुन्नतको रीति प्रच लित है।

बल्लमके सिवा ये लोग दांव और कुदालको भी काममें लाते हैं। परन्तु ये सब औजोंके पक्ष नहीं होते, बनैले पशुकी हड्डीसे बनाये जाते हैं। इन्हींसे युद्ध और शिकार होता है। इनके पास और एक विचित्र अस्त्र रहता है उसका नाम है बुमिराङ। वह एक टेढ़ी लकड़ीकी गांसी होता परन्तु उसके बनाने का ढङ्ग बड़ा ही विचित्र है। सामने छोड़कर मारनेसे वह फिर पीछे लौट आता है। स्त्रियां मरे हुए जान-वरोंके नखों और पेड़ोंके रेशोंसे जाल बुनती हैं। इन जालोंसे ये कङ्गरू आदि बनैले पशु और मछलियां बर्म रह पकड़ती हैं। समुद्रमें मछली पकड़नेके लिये छोटी नाव या डोंगी रखती है। आजकल असभ्य जातियोंकी संख्या धीरे धीरे कम होती जाती है।

यहांके आदमियोंके विवाहका कुछ ठीक नहीं है। किसीके एक और किसीके अनेक स्त्री हैं। किन्तु विवाहिता स्त्रियां प्रायः धर्मी सती होती हैं, तब ऐसा भी नहीं है, कि इनमें कोई असती नहीं निकलती। यदि कभी किसीका चरित्र खराब होता, तो वह जानसे मार डाली जाती है। परन्तु कुमा रियों और विधवाओंका चरित्र दोष उतना गुरुतर नहीं समझा जाता। युरोपीयों दुष्टोंने बहुतोंको व्यभिचारिणी बना डाला, इसके लिये बीच बीचमें लड़ाई हो जाती थी।

युरोपीयोंको अष्ट्रेलिया आविष्कार किये तीन सौ वर्षसे कम नहीं हुआ। इसका कुछ ठीक नहीं पहले पहल यहां कौन आया था। बतमाया अन्त रीप आविष्कृत हुआ, पश्चिममें अमेरिकाके ऊपर भी सम्य लोगोंकी दृष्टि पड़ी थी। नये देश, नये द्वीप, ढूंढ़नेके लिये चारो ओर युरोपीयोंके जहाज छूटे। ऐसा प्रवाद है, १६०६ ई०में तरेस नामक कोई स्पेनवासी पेरुसे अष्ट्रेलिया आया था। उसके बाद यवद्वीपसे डच लोग यहां पहुंचे। १६४२ ई०में तास्मान नामक एक डच अष्ट्रेलियाके नाना स्थानोंको देख गया। उसीके नामके अनुसार अष्ट्रे-लियाके दक्षिणकूलवर्ती द्वीपका नाम तास्मानिया हुआ है। १६८८ ई०में अंगरेज लोग पहले पहल यहां आये थे। उसी वर्ष बलाम विलियम डाम्पियार नामक एक समुद्री डाकू इसके उत्तरपश्चिम किनारे होकर लौट गया। दो वर्षके बाद अष्ट्रेलियाका विशेष अनुसन्धान करनेके लिये अंगरेजोंने डाम्पियारको यहां भेज दिया। १७६८से १७७० ई०तक विख्यात नाविक कप्तान कुकने अष्ट्रेलियाको चारो ओर समुद्रतटकी अच्छी तरह देखा था। १७८८ ई०में अंगरेज लोगोंने अष्ट्रेलियाके दक्षिण पूर्व प्रदेश और निउ साउथ वेल्समें अपराधियोंको निर्वासित करना आरम्भ किया। अंगरेज अपराधी जहां आकर रहते थे, उस स्थानका नाम जाक्सन् बन्दर पड़ा। आजकल वही बन्दर प्रसिद्ध सिडनी नगर हो गया है। १८०३ ई में वान-दि-मान द्वीपमें भी अपराधी भेजे जाने लगे। बाद क्रमसे निर्वासितोंके पुत्रपौत्रादिक स्वाधीन हो गये। ये दुर्दान्त लोगोंकी सन्तान हैं यह परिचय देनेमें उन्हें बड़ी घृणा होती थी; इसीसे उन लोगोंने *वान-दि-मान द्वीपका नाम तास्मानिया रख दिया।* १८२५ ई०तक तास्मानिया निउ साउथ वेल्सके अधीन था, उसके बाद पृथक् हो गया।

१८३५ ई०में तास्मानियाके कुछ आदमियोंने समुद्रकी खाड़ी पार करके निउ-साउथ वेल्सका दक्षिणी भूभाग अधिकार कर लिया। पहले इस स्थानका नाम फिलिप बन्दर था। अब यह विक्टोरिया नामका एक पृथक् प्रदेश हो गया है। इसके प्रधान नगरका नाम मेल बोरन है। १८२९ ई०में एक अंगरेज वणिक्सम्प्रदाय-ने पश्चिम अष्ट्रेलिया प्रदेश संस्थापित किया था। इसके प्रधान नगरका नाम पार्थ है। दूसरे वणिक

सम्प्रदायने दक्षिण अष्ट्रेलिया प्रदेश संस्थापित किया, उसके प्रधान नगरको आदिलेद कहते हैं। १८५९ ई०में नव दक्षिण अष्ट्रेलियाका उत्तर भाग पृथक् प्रदेश हो गया। वह अब क्वीन्सलैण्डके नामसे प्रसिद्ध है। ब्रिसवेन् उसकी राजधानी है।

इस समय अष्ट्रेलियाके प्रदेश और प्रधान प्रधान नगर यह हैं,—

प्रदेश।	नगर।
क्वीन्सलेण्ड (पहला नाम मोर्तन)	ब्रिसवेन, वोयामतन, मेरिवर्ग।
निउ-साउथ-वेल्स	सिदनी, पारामित्ता और विन्दशर, लिवरपुल, वाथर्ष्ट।
विक्टोरिया	मेलवोरन, गिलङ्ग, वालाराट।
दक्षिण अष्ट्रेलिया ...	आदिलेद।
पश्चिम अष्ट्रेलिया ...	पार्थ, फ्रिमान्तल।

पर्वत—नीलपर्वत, लिवरपुल-श्रेणी, अष्ट्रेलियाका अल्प, इसका दूसरा नाम वरगङ्ग पर्वत है; ग्राम्पियन, पिरिनिस्, फ्लिन्दार्स, ष्टुयार्टश्रेणी, मौलारश्रेणी, विक्टोरिया पर्वत, दार्लिङ्गश्रेणी।

नदनदी—हौकेसवरी, हण्टर, हेष्टिङ्गस, ब्रिसवेन; मरे और इसकी शाखा—माकोइरि, दार्लिङ्ग, लचलान, मरम्बिजी, टहममेरा, यरयर, लोयान, विक्टोरिया, आलवार्ट, फ्लिन्दार्स, गिलवार्ट, मिचेल, ग्रेगरी, लिचहार्ट।

झील—विक्टोरिया या अलेकसन्द्रिया, तोरेन्स, गेयार्दनार, एयार, होप।

अन्तरीप—युर्क, मेलविल्ली, फ्लातारी, सन्दी, हाउ, विलसन, ओतवे, स्पेनसार, बायाम, लिउविन, उत्तर-पश्चिम-अन्तरीप, देविक, लन्दनदारी, देल।

उपसागरादि—पूर्वमें शेलवोरन्, प्रिन्सेस शार्लोतो, हालिफाक्स, ब्रड साउण्ड, हार्वि, मोर्तन, माकोयारी बन्दर, टेफिन्स बन्दर, जाक्सन बन्दर; दक्षिणमें पश्चिम बन्दर, फिलिप बन्दर, पोर्तलेण्ड, एनकाउण्टार, सेण्ट विन्सेण्ट, स्पेन्सार, वृहत् अष्ट्रेलियान बाइट, किङ्ग जार्जका साउण्ड; पश्चिममें—फ्लिन्दार्स, जिओग्राफी, फेसिन्तस बन्दर, शार्क, एक्समाउथ, किङ्ग साउण्ड, कोलियार, आदमिराल्टी, काम्ब्रिज, वान-दिमान, एसिंग्टन बन्दर; उत्तरमें—कारुनरियाग, आरन्हेम, लेविल्ली, कार्पेन्तारिया।

तास्मानिया प्रदेशके प्रधान नगर होवार्त और लसेष्टन हैं।

उपसागर—वृहत् मोयान् बन्दर, ष्टरम, नरफोल्क, इस प्रदेशमें टाल्लरिम्पल बन्दर, देवी बन्दर, माकोयार बन्दर।

अन्तरीप—पिनार, दक्षिण अन्तरीप; दक्षिण-पश्चिम अन्तरीप, सोरेल, पश्चिम पइण्ट, ग्रिम।

पर्वत—वेनलोमन्द, वेलिंग्टन, पश्चिमगिरि, काम्फेल श्रेणी, हम्बोल्ट।

नद—दार्विण्ट, तमर, जर्टान।

अष्ट्रेलियाके उत्तर अंशकी बहुतसी जमीन खाली पडी है, आज भी अच्छी तरह नहीं बसी। एक तो उत्तर अंश यों ही गर्म है, उसपर जलका अभाव, इसीसे युरोपीयोंने वहां उपनिवेश नहीं बनाया। इस द्वीपकी दक्षिण दिशा ही अधिक सन्वृद्धिशालिनी है।

अष्ट्रेलियामें ज्यादा ऊंचे पहाड़ नहीं हैं। पश्चिम और पूर्व किनारे दो पर्वतश्रेणिया हैं, उनमें पूर्व ओरकी पर्वतश्रेणी ८५० कोस लम्बी और १५०० फुट ऊंची है। इसके पूर्व किनारेसे अनेक छोटी छोटी नदियां निकली है। वे पश्चिम ओर बहती हुई अष्ट्रेलियाके मध्य झीलों और चश्मोंमें जा गिरी हैं। अष्ट्रेलियाका ऐसा आकार देख भूतत्त्वविद् पण्डित अनुमान करते है, कि पहले यहां समुद्र था। पीछे समुद्रगर्भमें अग्न्युत्पात हुआ, इसीसे क्रमशः मट्टी उभर आयी है। परन्तु मध्यभागमें अभीतक अच्छी तरह मट्टी नहीं निकली, इसीसे वह स्थान नालों और झीलोंसे भरा हुआ है।

अष्ट्रेलियाका जलवायु शरीरके लिये गुणकर है। परन्तु द्वीप बहुत बडा होनेसे सब स्थानोंकी अवस्था एक सी नहीं है। उत्तर और मध्यभाग उष्ण, दक्षिण ओर न अतिशीत न उष्ण है। मध्यभागमें जलका अतिशय अभाव है। गर्मीके दिनोंमें वहां लू चलती और भूमि तपकर तवा हो जाती है।

प्रशान्त महासागरसे जलवाष्प उड़कर आता है, इसीसे उत्तर पश्चिम ओर वर्षाकाल होता है। यहां वर्षाकाल अग्रहायणसे फाल्गुन तक रहता है। अष्ट्रेलियाको दक्षिण ओरके समुद्रसे भी जलवाष्प उड़ कर आता है। परन्तु उधर पहाड़ नहीं है, इसीसे वह किसी चीजमें अटक और जम जाता तथा जल नहीं होने पाता। हमारे देशके राजपूतानेमें जिस तरह कभी कभी थोड़ी वर्षा होती, वहां भी उसी तरह पानी बरसता है। दक्षिण अष्ट्रेलियाके आडिलेड नगरमें वृष्टिका परिमाण मैदानपर १५—२० इञ्चसे अधिक नहीं पड़ता। किन्तु भिक्टोरिया और निउ साउथ-वेल्समें पर्वत हैं इसीसे वहांकी वृष्टिका परिमाण गड़में ४१—४८ इञ्च पड़ता है। कीन्सलेण्डमें वृष्टि ६० इञ्च होती है। फिर उत्तरमें बड़े बड़े पहाड़ हैं इसीसे वहांका वृष्टि परिमाण प्रायः ८० इञ्च है।

भिक्टोरिया प्रभृति स्थानोंकी ऋतु यों है,—आधे भाद्रोसे आधे अग्रहायण तक वसन्त आधे अग्रहायणसे आधे फाल्गुन तक ग्रीष्म, आधे फाल्गुनसे आधे ज्येष्ठतक शरत्, आधे ज्येष्ठसे आधे भाद्री तक शीत।

अन्य लोगोंके देशकी तरह अष्ट्रेलियामें अधिक जीव जन्तु नहीं होते। यहांके चौपायोंमें काङ्गरू ही प्रधान है। इसके आगेके पैर छोटे और पीछेके बड़े होते हैं। इसीसे दूसरे जन्तुओंकी तरह यह अच्छी तरह दौड़ नहीं सकता, किन्तु इसकी पूंछमें बहुत ताकत रहती है। दौड़नेकी आवश्यकता आ पड़नेपर यह पूंछपर जोर देकर एक एकबार १८।२० हाथ कूद सकता है। यदि कोई घोड़ेपर सवार होकर काङ्गरूका शिकार खेलता, तो यह घोड़ेको टपकर भाग जाता है।

काङ्गरूके पेटके निचले हिस्सेमें एक थैली होती है। छोटे छोटे बच्चे उसी थैलीमें छिपे रहते हैं। थैलीके ऊपर बचकानमें स्तन निकलता है। भूख लगनेपर बच्चे थैलीमें बैठे ही अनायास दूध पिया करते हैं। दूसरे चौपायोंके पेटमें बच्चे होनेके बाद बच्चेको नाड़ीके साथ माताके खूनका संयोग रहता है। उसी खूनकी राह माताके शरीरका रस बच्चेके देहमें आता, जिससे वह हृष्टपुष्ट होता है। काङ्गरूमें यह बात नहीं है। इसके गर्भाशयमें एक थैली रहती है, उसीसे बच्चेके भरण पोषणका काम चलता है।

अष्ट्रेलियामें और एक प्रकारका जन्तु होता है। इसे पक्षगुप्त कहते हैं। गोमेषादिके मलमूत्र त्याग करनेके पथ भिन्न भिन्न हैं, परन्तु पक्षगुप्तमें ऐसा होता। यह पक्षियोंकी तरह एक ही राहसे मलमूत्र त्याग करता है। इसके स्तन नहीं होता। काङ्गरूकी तरह इसके पेटमें भी थैली रहती है। इस थैलीसे आप ही दूध टपक पड़ता है। उसे ही बच्चे पीते हैं। इस द्वीपमें प्रायः ६८० प्रकारके पक्षी हैं। काकातुआ और तोते अनेक रहते हैं। एमू नामक एक बड़ा भारी पक्षी है। इस देशमें पक्षीभक्षक उलूक पक्षी कम ही होता है। इस द्वीपमें ६१ किस्मके सांप हैं। उनमें ४५ किस्मके जहरीले हैं। पांच प्रकारके सांपोंका विष ठीक इस देशके काले जैसा ही मारात्मक है।

अष्ट्रेलियामें गाय भेड़ आदिके चरने लायक बहुत जमीन खाली पड़ी है। पशुओंके चरने लायक ऐसी भूमि संसारमें और कहीं नहीं है। अंगरेज लोग दूसरे देशोंके जानवरोंको इस द्वीपमें ले आये हैं। भेड़की पैदावार भारी जोर है। प्रति वर्ष यहांसे बहुत सा पशम दूसरे देशोंको भेजा जाता है। भेड़का मांस भी अधिक है। पहले अष्ट्रेलियामें इतना मांस होता, कि खाये न चुकता, बहुतसा नष्ट हो जाता था। अब जहाजमें एक प्रकारकी कल बना दी गई है। उसमें कितने ही कमरे उत्तर-मेरु प्रदेश जैसे बहुत ही ठण्डे रहते हैं। उनमें मांस रख देनेसे बहुत दिनोंतक नष्ट नहीं होता। इन्हीं सब कमरोंमें मांस भरकर रोजगारी लोग इंग्लैण्ड भेज देते हैं, इससे प्रतिवर्ष बहुत लाभ होता है। अष्ट्रेलियाके घोड़ेकी पैदावार भी प्रसिद्ध है। पहले यहां घोड़े न थे। अंगरेजोंने यहां घोड़ा लाकर पैदा करने लगे। अब अष्ट्रेलियासे अनेक स्थानोंको घोड़े भेजे जाते हैं। यहांकी नद नदियोंमें भी अनेक प्रकारकी मछलियां छोड़ दी गई हैं।

वृक्षादिमें यूकालिप्टस् वृक्ष ही प्रधान है। इसके

पत्तेसे काजूपुत जैसा एक प्रकारका तेल बनता, जो वातरोगकी दवा है। इस पेडका गोंद बहुत मंहगा बिकता है। यहां झाऊके पेड़की छालसे चमडेमें रङ्ग दिया जाता है। बबूलकी तरह दो किस्मके पेड होते हैं। उनकी छालमें भी खूब रङ्ग रहता है। रङ्गके लिये हरसाल बहुत सी छाल इङ्गलैण्ड भेजी जाती है। अब इस द्वीपमें गेहूं, यव, मकई, सरसों, मटर, ऊख, आलू, नाना प्रकारकी शाकसब्जी और फल खूब पैदा होता है।

अष्ट्रेलियामें सोना, चांदी, तांबा, लोहा, सीसा, कोयला, टीन आदि नाना प्रकारका धातु मिलता है। सोनेके कारण ही यह स्थान इतना समृद्धिशाली है। १८५१ ई०में यहां सोनेकी खानि निकली थी। खानिके निकलते ही लोग अपना अपना काम काज छोड सोना लेनेके लिये दौड़े, जिससे कुछ दिनों तक अष्ट्रेलियामें बहुत खलबली रही। १८५१ से १८८० ई०तक सर्वसमेत २८६००००००० रुपयेका सोना निकला था।

अष्ट्रेलिया और नवजीलन्द अंगरेजोंके उपनिवेश है। यहाके आदमी इस देशका शासन आपही करते हैं। इनकी पार्लामेण्ट सभा है। सभाके सभ्योंको ये लोग आप ही मनोनीत करते हैं। अष्ट्रेलियाके प्रत्येक प्रदेशमें इङ्गलण्डसे शासनकर्ता भेजे जाते है। शासनकर्ता महासभाके मत विरुद्ध कोयी काम नहीं कर सकते। राज्यशासनप्रणाली ठीक इङ्गलैण्ड ही जैसी है। यहांके प्रत्येक विभागकी सभा पृथक् पृथक् होती है। एक विभागके साथ दूसरे विभागका कोई सम्पर्क नहीं है। इङ्गलैण्डके साथ अष्ट्रेलियाका सम्बन्ध केवल नाममात्रका है। इङ्गलैण्ड यहांके शासनकर्ता नियुक्त करे, और यदि कोई जाति इस स्थानपर आक्रमण मारे, तो इङ्गलैण्ड बचानेको दौड़ेगा। सम्पर्क बस इतना ही है। अष्ट्रेलियाके प्रत्येक विभागमें अपनी सेना थोडी ही है। सिवा इसके यहांके सभी आदमी वीर और साहसी हैं। पहले अष्ट्रेलियाका आय कुछ भी न था, परन्तु अब यहांकी अवस्था ऐसी नहीं।

कहते हैं, अष्ट्रेलियाकी भूमि बहुत ही प्राचीन है। इसमें जहाज चलाने योग्य न तो कोई नदी और न भडकनेवाला आग्नेयगिरि या बरफसे ढंका पर्वत ही विद्यमान है। जिस समय एशिया और युरोप जलमें मग्न था, उस समय भी यहां भूमि वर्तमान रही। यहा बहुत ऊंचे पर्वत नहीं, चारो ओर मदान जैसा पडा है।

लोकसंख्या—अष्ट्रेलियामें प्रधानत: अगरेज वंशके ही युरोपीय रहते है। अगरेजोंको छोड दूसरे युरोपीय सैकडे पीछे सवा तीनसे ज्यादा नहीं पडते। सन् १९०६ ई०में आदिम अधिवासियोंको छोड़ अष्ट्रेलियाकी लोकसंख्या ४१२०००० रही। सन् १८९१ ई०से दूसरे स्थानके अधिवासियोंका यहां आकर रहना रुक गया था, किन्तु अब कुछ-कुछ फिर जारी हो गया है।

रक्षा—पहले अष्ट्रेलियाकी रक्षा इङ्गलैण्ड पर ही निर्भर रही, किन्तु सन् १८९९-१९०२ ई०की बोअर-युद्धमें यहांसे ६३१० स्वेच्छासेवक अश्वारोही जानेपर इस बातकी ओर लोगोंका ध्यान खिंचा। सिदनीमें जहाजोंका बड़ा बेडा रहता, जो इस देशके इर्दगिर्द पहरा देता है। अब यहां लोग खूब फौजमें भरती होते हैं। आजकल जो विश्वव्यापी युद्ध चलता, उसमें अष्ट्रेलियाके योद्धाओंने वीरताके अनोखे उदाहरण देखा जगत्को विस्मित कर दिया है।

शिक्षा—अष्ट्रेलियामें शिक्षाका अधिक प्रचार है। प्रत्येक राज्यके युवकको ममलयती शिक्षा दी जाती है। सैकडे पीछे ८ आदमी अपढ़ है। स्कूलमें छात्रको विना मूल्य या नाममात्र मूल्यपर शिक्षा मिलती है। सिडनी, मेलबोर्न, एडीलेड और होवर्टमें अच्छे-अच्छे विश्वविद्यालय वर्तमान है।

वाणिज्य-व्यवसाय—कोई सवा दो हजार जहाजोंसे चलता है। ऊन, चमडा, चरबी, मांस मक्खन, लकडी, गेहूं, आटा, फल, सोना, चादी, जस्ता, तांबा तथा टीन यहांसे बाहर भेजा और कपडा, वाफ्तनी, कल-पुर्जा, लोहा-लक्कड, शराब, भडकनेवाली चीज, थैला, बोरा, किताब, कागज, चाय एवं तेल मंगाया जाता है।

रेल—अष्ट्रेलियाकी समस्त रेलें गवर्नमेण्टने खरीद लेकर बनाई हैं। कहीं छोटी और कहीं बड़ी रेल चलती है। रुपयेपर जितना व्याज देना पड़ता, उससे कुछ अधिक लाभ हो जाता है। डाक और तारका भी अच्छा प्रबन्ध है।

	भूमिका परिमाण वर्गमील	लोकसंख्या सन् १८०१ ई
निउ साउथ वेल्स	३१०७००	१३१
विक्टोरिया	८७८८४	१२११ ००
दक्षिण-अष्ट्रेलिया	९०३६९०	१५८
क्वीन्सलैण्ड	६६८४९७	११० ०
पश्चिम-अष्ट्रेलिया	९७५९२०	२००
तास्मानिया	२६२१५	१८
	२९७२९०६	
फेडरलटेरिटरी	८००	
	१९७३७०६	

अष्ट्रेलेशिया—यह कुछ द्वीपपुञ्ज है। नव गिनी, अष्ट्रेलिया, तास्मानिया, नव जिलाण्ड, नव ब्रिटानिया, सोलोमान द्वीप नव हिब्राइडिस, नव-कालिडोनिया, कवालटो द्वीप प्रभृति इसके अन्तर्गत हैं। ये सब ५० दक्षिण अक्षांश एवं ११० से १८० पूर्व द्राघिमांशके मध्यमें अवस्थित हैं। अष्ट्रेलेशिया शब्दका अर्थ है—'दक्षिण एशिया सम्बन्धी।' ऐसा नाम होनेका कारण यही है, ये सब द्वीप एशियाके दक्षिण प्रशान्त महासागरमें हैं।

अष्ठि, अस्थि देखो।

अष्ठिका, अष्ठीला देखो।

अष्ठिवत् अष्ठीवत् देखो।

अष्ठीला (सं स्त्री) अष्ठिवदर्थं कठिनमस्मात् राति, र-क टप् समासे दीर्घ। १ गुल्मरोग विशेष, करक पटकी, किसी किस्मका फोड़ा। अष्ठीला प्रायः बकरीकी जैसी होती और नाभिसे नीचे निकलती है। इसकी गांठ कड़ी रहती है। यह कठिन पदार्थ किसी किसीके पेटमें घूमता फिरता और किसीके पेटमें टिका रहता है। इसको ऊपरी ओर लम्बी रहती और ऊँचेपरसे किञ्चित् उन्नत हो जाती है। इसकी चिकित्सा गुल्मरोग जैसी हो है। गुल्म देखो। २ वायुरोग विशेष, वातकी कोई बीमारी। ३ वर्तुलाकार पाषाणखण्ड, गोल पत्थरका टुकड़ा। ४ अस्थीलगर्भ, आम, बीजका छिलका। ५ गंठली, गुठली। ६ आघात, धक्का।

अष्ठीलिका, अष्ठीला देखो।

अष्ठीवत् (पु० स्त्री०) नास्ति अस्थिमयमत्रास्ति यस्मिन्, मतुप् अष्ठी० निपातनात् सिद्ध। १ जानु, घुटना। २ मूत्ररोग विशेष, लिङ्ग बढ़ जानेकी बीमारी।

अष्ठीवान् अष्ठीवत् देखो।

अस (हिं० सर्व०) ऐसा, यह।

"अस विचारि हिय ....।
निर्मल न ....।" (तुलसी)

(वि०) २ ऐसा इस प्रकारका।

"अस विचार ... मन माहीं।
... .।" (तुलसी)

असक्लिन्न (सं० त्रि०) सम्यक् आर्द्र न होनेवाला, जो अच्छीतरह भीगा न हो।

असंज्ञा (सं० स्त्री०) नञ्-तत्। १ संज्ञाका अभाव, होशकी अदमभौजूदगी, बेहोशी। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ संज्ञाशून्य, ज्ञानरहित जो पुकारा कर न सकता हो।

असंवद् (सं० त्रि०) हृदयमें न घुसनेवाला, जो अच्छा न लगता हो।

असंयत (सं० त्रि०) नञ्-तत्। अबद्ध, बन्धनशून्य, जो बंधा न हो।

असंयतात्मन् (सं० त्रि०) अवशहृदय, जिसके काबूमें रूह न रहे।

असंयत्त (सं० त्रि०) निरमाणापन्न, जो घबराया न हो।

असंयुक्त (सं० त्रि०) नञ् तत्। वियुक्त, जुदा, जो मिला न हो।

असंयुत असंयुक्त देखो।

असंयोग (सं० पु०) अभावे नञ्-तत्। १ संयोगका अभाव, मिलानकी अदमभौजूदगी मिलना न होना। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ संयोगशून्य, जुदा जो मिला न हो।

असंरुद्ध (सं० त्रि०) बन्धनशून्य, बेरोक, जो घिरा न हो।

असंलग्न (सं० त्रि०) नञ्-तत्। विभक्त, असम्बद्ध, अलग, बेसिलसिला, जो ठीक न बैठा हो।

असंवत्सरभृत (वै० त्रि०) पूर्ण वत्सर न रखा हुआ, जो पूरे साल रहा न हो। यह शब्द पवित्र अग्निका विशेषण है।

असंवत्सरभृतिन् (वै० त्रि०) पूर्ण वत्सर (पवित्र अग्निको) न रखनेवाला, जो पूरे साल (आतिश पाक) न रखता हो।

असंविदान (सं० त्रि०) अज्ञान, मूर्ख, नासमझ, गंवार। २ असंप्रज्ञ, जो होनहार न हो।

असंवृत (सं० त्रि०) नञ्-तत्। १ अनावृत, जो ढंका न हो। २ ईषदावृत, जो अच्छीतरह ढंका न हो।

असंव्यवहित (सं० अव्य०) १ झटित्, फौरन्। २ अविलम्ब, समयपर।

असंशय (सं० पु०) अभावे नञ्-तत्। १ सन्देहका अभाव, शककी अदममौजूदगी, खटकेका न रहना। (त्रि०) नास्ति संशयो यत्र, नञ्-बहुव्री०। २ सन्देह-शून्य, बेशक, जिसे खटका न रहे। (अव्य०) निः-सन्देह, बिलाशक।

असंश्रव (सं० त्रि०) नास्ति संश्रवः सम्यक् श्रवणं यत्र, बहुव्री०। १ संश्रवसे हीन, जो सुन न पड़ता हो। (पु०) २ संश्रवहीन अस्तित्व, जिस हालतमें सुन न सकें। ३ दूरदेश, जो बात सुन न पड़ती हो। (अव्य०) ४ बेसुने, कानमें न पडनेसे।

असंश्राव्य (सं० अव्य०) बेसुने, सुनाई न देनेसे।

असंश्लिष्ट (सं० त्रि०) नञ्-तत्। १ विभक्त, संश्लेष-शून्य, असङ्गत, जुदा, लगाव न रखनेवाला, जो वाजिब न हो। (पु०) २ सबसे पृथक् रहनेवाले महादेव।

असंसक्त (सं० त्रि०) पृथक्, असंयुत, विभक्त, निरीह, जुदा, लापरवा, जो अलग हो।

असंसर्ग (सं० पु०) अभावे नञ्-तत्। १ संसर्गका अभाव, साथका न होना। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ सम्बन्धशून्य, मेलसे खाली।

असंसर्गाग्रह (सं० पु०) असंसर्गस्य परस्परसम्बन्धा-भावस्य अग्रहः। मीमांसकके मतानुसार ज्ञानद्वयके परस्पर सम्बन्धाभावका बोध न होना। यथा,—यह रजत है।

असंसक्ति (सं० स्त्री०) संसर्गका अभाव, निरीहता, अलाहदगी, लापरवाई, लगाव न रहनेकी हालत।

असंसारी (सं० त्रि०) अलौकिक, अद्भुत, निरीह, निस्पृह, अनोखा, निराला, जो दुनियामें दूर रहता हो।

असंसिद्ध (सं० त्रि०) अपूर्ण, अकृत, नातमाम, जो पूरे न पड़ा हो।

असंसृक्तगिल (वै० त्रि०) समूचा निगलजानेवाला, जो बेचबाये लील जाता हो। रुद्रके श्वानकी स्तुति इस शब्दसे की जाती है।

असंसृति (सं० स्त्री०) जीवनके नव मार्ग, प्रत्या-गमनका अभाव, परमात्मामें लय जिन्दगीकी नयी चालका न पकड़ना।

असंसृष्ट (सं० त्रि०) नञ्-तत्। संसर्गरहित, जुदा, जो किसीके साथ न रहे।

असंस्कृत (सं० त्रि०) १ गर्भाधानादि संस्काररहित, जिसका गर्भाधानादि संस्कार न हुआ हो। २ अपरि-ष्कृत, जो साफ़ न किया गया हो। (पु०) ३ अप-शब्द, खराब बात।

असंस्तुत (सं० त्रि०) नञ्-तत्। १ अपरिचित, जिससे परिचय अर्थात् जान पहचान न हो। २ उत्तम रूपसे जिसकी स्तुति की न गयी हो।

असंस्थान (सं० क्ली०) १ संस्थानका अभाव, इत्ति-सालती, अदममौजूदगी। २ विप्लव, बेतरतीबी। ३ राहित्य, न्यूनता, कमी।

असंस्थित (सं० त्रि०) नञ्-तत्। १ परलोक न गया हुआ, जो इसी लोकमें हो। २ चञ्चल, चुलबुला।

असंस्थिति (सं० स्त्री०) १ विप्लव, बेतरतीबी। न्यूनता, कमी।

असंहत (सं० त्रि०) नञ्-तत्। १ एकत्र न रहनेवाला, जो इकट्ठा न हो। २ असंलग्न, जो लगा न हो।

असंहार्य (सं॰ पु॰) उद्दण्ड, प्रचण्ड, नाशाविम मुक्ताविका, जो मारा जा न सकता हो।

असंहित (सं॰ त्रि॰) वेदकी संहितामें सन्निविष्ट न होनेवाला, जो संहितामें न हो।

असकताना (हिं॰ क्रि॰) ऐंठाना जंभाई लेना, जड़ बना, शिथलना, आलस्य या सुस्तीमें पड़ना।

असकथा (हिं॰ पु॰) यन्त्रविशेष, एक औजार। यह अङ्गुलद्वय विस्तृत और सब परिमित वस्र कोडेमें बनाते हैं। देखनेमें यह रौति-जैसा खुरखुरा होता और तलवारके म्यानकी भीतरी लकड़ी साफ करनेमें काम आता है।

असकल (सं॰ त्रि॰) असम्पूर्ण, अधूरा, जो पूरा न हो।

असकृत् (सं॰ अव्य॰) नञ् तत्। पौनःपुन्य, बार बार, अनेक बार।

असकृत्समाधि (सं॰ पु॰) आहत ध्यान, आवर्तित भावना, बारबार चित्तकी ईश्वरमें लय करना।

असकृद्गर्भवास (सं॰ पु॰) आहत जन्म, बारबार की पैदायश।

असक्त (सं॰ त्रि॰) नञ् तत्। १ आसक्तिशून्य जिसे ताल्लुक न रहे। २ सङ्गशून्य, निराला, साथ न रखने वाला। ३ फलाभिलाषशून्य, लापरवा, जिसे किसीकी चाह न रहे।

असक्थ, असक्थि (सं॰ त्रि॰) नास्ति सक्थि यस्य, वा षच् समा॰। वाजसनेयी कर्कश्च नैते त्यजन्ति नन्द। वा ५।४।११३। उरुशून्य, बेजानु, जिसके जांघ न रहे।

असक्य (वै॰ त्रि॰) १ बराबर बढ़नेवाला, जो सूखता न हो। २ दूसरी जगह न जानेवाला।

असखा (वै॰ स्त्री॰) सम्-बाध विद् प्रयो॰ सस्रो स्तलोपः, नञ् तत्। असमानपूर्वा, जो पहले न मिली हो। "वेद्व तस्य निस्तलक्षणाः।" ऋक् १०।८९।४। 'वस्तासु असमीचनपरीसीनिवस्त्र वस्तीत्रमसृष्टीनिवर्दं।' (सायण) अत्र समय वर्मन्दी।' शिव ५।१५८।

असखि (सं॰ पु॰) न सखा न टच् समा॰। शत्रु न होनेवाला, जो मित्र न हो शत्रु।

असखिन्, असखि देखो।

असगंध (हिं॰ पु॰) अश्वगन्धा, एक पेड़। यह सीधी भाड़ी जैसा होता है। इसका फल छोटा और गोल रहता है। इसकी मोटी जड़ दवाके लिये बाजारमें बिकती है। अश्वगन्धा देखो।

असगोत्र (सं॰ त्रि॰) न समानं गोत्रमस्य, वा समानस्य स॰। भिन्नगोत्र, जो एकगोत्रका न हो।

असगुन, अशकुन देखो।

असङ्कम (सं॰ पु॰) विरोधे नञ् तत्। १ सङ्क्रमका अभाव, पैरसन्दोको अदमगौजूदगी। नञ् बहुव्रो॰। २ सङ्क्रमशून्य, जो पैराबन्द न हो।

असङ्कलन (सं॰ त्रि॰) सङ्कल्प किया न हुआ जो पहलेसे ठीक न ठहरा हो।

असङ्कुल (सं॰ त्रि॰) नञ् तत्। खिरमान, जो ठहरा हो।

असङ्कीर्ण (सं॰ त्रि॰) १ विशद, एकत्र न किया हुआ, खालिस, बेमैल। परस्पर विरुद्ध।

असङ्गत (त्रि॰) एक दूसरेसे न मिलनेवाला, सूना। (पु॰) १ विष्ठीव एक ऋषि रहा।

असङ्केत (सं॰ त्रि॰) स्थिर न किया हुआ, जो माना न गया हो।

असङ्केतित (सं॰ त्रि॰) अनिमन्त्रित, जो बुलाया न गया हो।

असङ्क्रान्तमास (सं॰ पु॰) नञ् तत्। शुक्लप्रति पदादि दर्शान्त चान्द्रमासके मध्य सूर्यकी सङ्क्रमशून्य, मलमास, अधिकमास।

असङ्क्षेप (सं॰ पु॰) नञ् तत्। संक्षेप न होनेवाला, जो घटा न हो।

असङ्ख्य (सं॰ त्रि॰) न सङ्ख्यम् नञ् तत्। १ असङ्ख्यनीय, अगणनीय जिसे गिन न सकें। २ न विद्यते सङ्ख्या यस्य बहुव्री॰। ३ संख्याशून्य, बेशुमार। (पु॰) ४ विष्णु।

असङ्ख्यता (सं॰ स्त्री॰) आनन्त्य अमितता, बेहन्तिहाई।

असङ्ख्यात (सं॰ त्रि॰) सङ्ख्याशून्य, अनेक, बहुत, बेशुमार।

असङ्ख्येय (सं॰ त्रि॰) नञ् तत्। १ जिसकी

संख्या की जा न सके, बेशुमार। (पु०) २ शिव। (ई० क्ली०) ३ अगणित संख्या, बहुत बड़ी अदत। ४ असंख्य समारोह, बेशुमार भीड़।

असङ्ख्येयगुण (सं० त्रि०) अगणित, बेशुमार, जो गिना न जाये।

असङ्ख्येयता (सं०स्त्री०) आनन्त्य, अपरिमाणत्व, बेइन्तिहाई।

असङ्ग (सं० पु०) अभावे नञ्-तत्। १ सम्बन्धका अभाव, लगावका न रहना। २ युयुधानके पुत्रविशेष। नञ्-बहुव्री०। ३ सम्बन्धशून्य, किसीसे वास्ता न रखनेवाला, न्यारा। पृथक्, जुदा, अलग।

असङ्ग—एक महायानी बौद्ध और बौद्ध तन्त्रपद्धतिके प्रतिष्ठाता। सङ्घभद्रके शिष्य पहले यह महीशासक और पेशावरके प्रसिद्ध तपस्वी थे। सन् ई०के ६ठें शताब्दमें इन्होंने अपने धर्मका मूलग्रन्थ 'योगाचारभूमिशास्त्र' लिखा। चीनपरिव्राजक यूअन चुअङ्गने ७वें शताब्दके आदिमें पेशावर जाके देखा, कि इनका मठ टूटा पड़ा था। असङ्गने भूतप्रेतोंको बुद्ध और अवलोकितेश्वरका पूजक बता अपने मतावलम्बियों और बौद्धोंका झगड़ा मिटाया। किन्तु इनके अनुयायी बौद्ध धर्मसे कोई सम्बन्ध न रखते और दिन रात यन्त्र मन्त्र तन्त्र द्वारा सिद्धि ढूंढनेमें लगे रहते थे। तन्त्रपद्धति प्रचलित होनेसे बौद्ध मतका ह्रास हुआ और ध्यानी त्रिमूर्तियों एवं तान्त्रिक देवताओंकी प्रतिमा मठों तथा मन्दिरोंमें विराजने लगी। स्थिरमति, दिङ्नाग और धर्मकीर्ति असङ्गके शिष्य रहे। बुद्धकी मृत्युके ९०० वर्ष पीछे इनका जन्म हुआ था। सन् ई०के ६ठें शताब्द विक्रमादित्य शिलादित्यके समय असङ्ग और इसका कनिष्ठ सहोदर वसुबन्धुके आश्रयसे बौद्ध साहित्य फिर चमक उठा। असङ्ग योगाचारके प्रधान अध्यापक रहे। इन्होंने बहुत दिनतक अयोध्यामें रहे, अन्तमें मगधके राजगृहमें देह रक्षा किये थे।

असङ्गत (सं० त्रि०) नञ्-तत्। असंयुक्त। असम्बन्ध। अन्याय, अनुचित, अयुक्त, बे ठीक। असङ्गत वाक्य, जिस वाक्यमें परस्पर बात न मिले। असङ्गत वाद्य, जिस वाद्यमें गानेके साथ बाजा न मिले।

असङ्गति (सं० स्त्री०) अभावे नञ्-तत्। सङ्गतिका अभाव, साथका न होना।

असङ्गम (सं० पु०) अभावे नञ्-तत्। १ सङ्गमका अभाव, मिलनका न होना। (त्रि०) नास्ति सङ्गमो यस्य, नञ्-बहुव्री०। सङ्गमशून्य, मेलनरहित, जो किसीसे मिलता न हो।

असङ्गवत् (सं० त्रि०) असंयुक्त, जो लगा न हो।

असङ्गिन् (सं० त्रि०) सञ्ज-णिनुण् यस्य गलम् नञ्-तत्। सम्बन्धशून्य, जो लगा न हो।

असचद्विष् (वै० त्रि०) १ अपनी पूजा न करनेवालोंको अपराधी बनाता हुआ, जो अपने दुश्मनोंपर इलजाम लगाता हो। २ शत्रुशून्य, जिसके दुश्मन न रहे।

असच्छाखा (सं० स्त्री०) कल्पित शाखा, मसनूयी शाख, जो डाल सच्ची न हो।

असच्छास्त्र (सं० क्ली०) असत् असद्विषयकत्वेन अनिष्टप्रयोजकं शास्त्रम्, कर्मधा०। हिन्दुमतमें बौद्धशास्त्र। इससे केवल असदर्थ ही प्रतिपादित हुआ है। अतएव यह वैदिक कर्मके विरुद्ध है और इसीसे इसका नाम असच्छास्त्र हुआ है।

असज्जन (सं० पु०) विरोधे नञ्-तत्। सज्जन न होनेवाला, जो सज्जन न हो। दुर्जन, खराब आदमी।

असज्जितात्मन् (सं० त्रि०) निरीह आत्मा रखनेवाला, जिसके रूहमें लगाव न रहे।

असढिया (हिं० पु०) सर्पविशेष, पनिहा सांप। इसकी आकृति लम्बी और पीठ चित्तीदार होती है। यह विषाक्त नहीं ठहरता।

असण (हिं० पु०) गर्त, गढ़ा।

असत् (सं० त्रि०) अस्-शतृ अकारलोपः, ततो नञ्-तत्। १ सत् न होनेवाला, मसनूयी, जो सच्चा न हो। २ असाधु खराब। ३ निन्दित, बदनाम। ४ दुष्टाचार, बदमाश। ५ अविद्यमान, जो हाजिर न हो। ६ अकिञ्चित्कर, नाचीज। ७ अव्यक्त, पोशीदा। ८ अनित्य, जो टिकता न हो। ९ निरुपाख्य निःस्वरूप निषेधरूपसे प्रतीयमान अभावलाश्रय (अभाव)। १० ब्रह्मभिन्न। ११ जड, बेहरकता।

१२ अयथार्थ क्रिया करनेवाला, जो दिखावे न हो। १३ निष्फल, बेफ़ायदा। (पु०) न चिर सत् स्थिर भाव। १४ इन्द्र। यह इन्द्र चिरकाल नहीं रहते, इसीसे उन्हें असत् कहते हैं।

असत्कर (हिं०) असत्कर्म देखो।

असतायी (स० स्त्री०) पापकर्म, दुराचार, दग़ाबाज़ बदमाशी।

असती (स० स्त्री०) व्यभिचारिणी, नापाकदामन, जो औरत बिगड़ गयी हो।

असतीसुत (सं० पु०) जारज, दासीपुत्र, हरामज़ादा, दोग़ला, जो बिगड़ी औरतका लड़का हो।

असत्कर्मन् (स० क्ली०) असत् तत् कर्म चेति, कर्मधा०। १ वेदादि निषिद्ध कर्म, बुरा काम। (त्रि०) नास्ति सत्कर्म यस्य नञ्-बहुव्री०। २ भाड़ आचार शून्य भला काम न करनेवाला।

असत्कर्मा (सं० स्त्री०) असत्कर्मन् टाप्। अमार्गी, कुलटा नापाकदामन औरत।

असत्कल्पना (सं० स्त्री०) १ असत्यकर्म, झूठा काम जो बात कभी न हो।

असत्कार (सं० पु०) १ अपमान, बेइज़्ज़ती। २ अप राध, जुर्म, जिस बातसे नुक़सान पहुंचे।

असत्कृत (सं० त्रि०) नञ् तत्। अनादृत, आदर न पाये हुआ। २ बुरे तौरसे किया हुआ, जो अच्छी तरह किया न गया हो।

असत्कृत्य (सं० त्रि०) पापकर्मा, बुरा काम करने वाला।

असत्ख्याति (स० स्त्री०) असतः सतः स्वरूपेण अनि र्वचनीयस्य ख्यातिर्ज्ञानम्, ६ तत्। अनिर्वचनीय रजत प्रपञ्चका ज्ञान। जैसे सीपमें रजतज्ञान अनि र्वचनीय रूपसे उत्पन्न होता है। एवं परमब्रह्ममें जैसे जगत् अनिर्वचनीय रूपसे प्रतीयमान है। यह वेदान्तियोंका मत है। 'यह रजत है' ऐसा ज्ञान सभी बातोंमें प्रसिद्ध और सभी लोगोंको स्वीकार्य है। अतएव यह सहज ज्ञान नहीं है। यह चार तरहका होता है—१ अख्याति २ अन्यथाख्याति, ३ आत्म ख्याति, ४ असत्ख्याति।

असत्ता (सं० स्त्री०) असतो भाव भावे तल्-टाप्। १ अविद्यमानता न रहनेकी हालत, अनस्तित्व नेस्ती। २ असाधुत्व, बदमाशी। ३ अप्रकृतत्व,नाराज़ी माप् न मालूम पड़नेकी हालत।

असत्त्व (स० क्ली०) सतो भाव भावे त्व नञ् तत्। १ अविद्यमानत्व, नेस्ती। २ अप्रकृतत्व, नाराज़ी। ३ असाधुत्व, बदमाशी। सत्त्वं द्रव्यं नञ् तत्। ४ द्रव्य न होनेवाला जो द्रव्य न हो, क्रिया। सत्त्वं प्रका- शादि सम्पादकं प्रकृतेर्गुणभेद' ततो नञ् तत्। ५ रजोगुण। ६ तमोगुण। सत्त्वं जन्तुमात्रं नञ्-तत्। ७ जो जन्तु न हो। (त्रि०) नास्ति सत्त्वं जन्तुर्यत्र, नञ्-बहुव्री०। ८ जन्तुशून्य, जिस जगह जीव न हो। सत्त्वं सात्त्विक गुणभेद., नञ् बहुव्री०। ९ सात्त्विक गुणरहित, जिसमें सात्त्विक गुण न हो। १० ताम- सिक गुणादियुक्त, क्रोधी, तामसी। सत्त्वमर्थक्रिया कारित्वम् नञ्-तत्। ११ प्रयोजनके अनुपयुक्त, कार्यके अयोग्य जो कामके लायक़ न हो, बेकाम। १२ निर्बल कमज़ोर।

असत्पथ (स० पु०) सन् पन्थाः ... इति अ. सत्पथ ततो नञ् तत्। १ शास्त्रादि निषिद्ध कार्यादि, जिस कार्यके लिये शास्त्रमें निषेध रहे। २ मन्दपथ, ख़राब राह, कुपथ कापथ, व्यध्व, दुरध्व, अपथ कदध्वा विपथ कुत्सितपथ।

असत्परिग्रह (स० पु०) परिगृह्यते, परिग्रह— (... ... ३।३।५८) इति कर्मणि अप् परि- ग्रह परिजनादि ततो नञ् तत्। "... ..." (...) १ असत् परिवार, दुष्टपत्नी, बुरे बाल बच्चे। २ मन्दपथका अवलम्बन, बुरी राहका पकड़ना। ३ अनुचितमूल्य में स्वीकृत क़ीमत। (त्रि०) नास्ति सत् परिग्रहो यस्य, नञ् बहुव्री०। ४ सत्परिवारशून्य, जिसके अच्छा परिवार न रहे। ५ सत्पत्नीरहित, जिसके भली औरत न रहे। ६ असत्पथाश्रित जो बुरी राहपर हो। ७ अन्याय मूल्यमूल जो न्यायविरुद्ध दाम से मुक्त हो।

असत्पुत्र (सं० पु०) १ निःसन्तान पुरुष जिसके औलाद न रहे। २ दुष्ट पुत्र, बदमाश लड़का।

असत्प्रतिग्रह (सं० पु०) असतः निषिद्धस्य तिलादेः असद्भ्योशूद्रादिभ्यो वा प्रतिग्रहः। १ निषिद्ध द्रव्य ग्रहण, न छूने लायक चीज़ लेना, शास्त्रमें लेनेको मना किया हुआ द्रव्य लेना। जैसे—तिल, उभयमुखी गौ, प्रेतान्न, चण्डालादिका अन्न। २ असत्पात्रसे ब्राह्मण द्वारा दान ग्रहण, जो दान ब्राह्मण बुरे लोगोंसे लेता हो।

असत्प्रतिग्राही (सं० पु०) असत्पात्रसे दान लेनेवाला, जो बुरे लोगोंसे बख़्शिश पाता हो।

असत्य (सं० क्ली०) न सत्यं विरोधे नञ्-तत्। १ मिथ्या, झूठ, जो सत्य न हो। २ मिथ्यावाक्यादि, झूठ बात। (त्रि०) ३ मिथ्यावादी, झूठ बोलनेवाला। सीपमें रजत ज्ञान प्रभृति मिथ्याज्ञान है। त्रैकालिक बाधशून्य ही सत्य उससे खाली असत्य है। (स्त्री०) टाप्, असत्या—संयु प्रजापतिकी एक भार्या।

असत्यता (सं० स्त्री०) मिथ्यात्व, नारास्ती, झूठापन।

असत्यवाद (सं० पु०) मिथ्यावाद, झूठ बात।

असत्यवादिन् (सं० त्रि०) झूठा, झूठ झाड़नेवाला।

असत्यवादी, असत्यवादिन् देखो।

असत्यसन्ध (सं० त्रि०) असत्ये मिथ्याभूते सन्धा अभिसन्धानं यस्य, गोस्त्रियो रुपसर्जनस्य इति ह्रस्वः, बहुव्री०। १ मिथ्या अभिसन्धियुक्त, झूठी प्रतिज्ञा करनेवाला। २ विश्वासघातक, दगाबाज़। ३ नीच, कमीना। ४ अन्यरूपमें स्थित, बनावटी। ५ आत्माके अन्यरूप अभिमानसे युक्त, जो रूहको कुछ और समझता हो। जैसे—असत्यदेहादिमें आत्माभिमान असत्यसन्धा होता, तद्विशिष्ट हो असत्यसन्ध कहा जाता है। छान्दोग्य उपनिषद्में यही आत्माभिमान जिस अनर्थका हेतु होता, वह दृष्टान्तके सहित प्रकाशित किया गया है।

असत्संसर्ग (सं० पु०) दुष्टसङ्ग, बुरी सोहबत।

असत्सङ्ग (सं० त्रि०) कुसङ्गमें पड़ा हुआ, जो बुरेसे लगा हो।

असयन (हिं० पु०) जायफल। यह शब्द डिङ्गल भाषामें लिया गया है।

असद—(मिर्ज़ा असद-उल्ला खां) एक विख्यात मुसलमान कवि। इनका जन्म आगरेमें हुआ था। दिल्लीके शेष बादशाह बहादुर शाहने इन्हें नवाबकी उपाधि दी। यह फ़ारसी और उर्दू भाषामें बहुत कविता कर गये हैं। मृत्युसे कुछ पहले इन्होंने भारतवर्षके मोगल बादशाहोंका इतिहास लिखना आरम्भ किया था। सन् १८५२ ई०को ६० वर्षको उम्रमें इनकी मृत्यु हुई। इनके 'इनुशा' काव्यका मुसलमानोंमें बहुत आदर होता है। इनका साधारण नाम मिर्ज़ा नौशा था।

असद खां—तुर्कीवंशोद्भव एक सम्भ्रान्त व्यक्ति। इनके पिता ईरानराज शाह अब्बासके अत्याचारसे उकता जन्मस्थान छोड़कर भारतवर्ष चले आये थे। यहां नरजहांकी एक कुटुम्ब-कन्याके साथ उनका विवाह और उसीके गर्भसे असदका जन्म हुआ। सम्राट् जहांगीरने असदके पिताको ज़ुलफ़िकार खांकी उपाधि प्रदान की। लड़कपनमें असदको लोग इब्राहीम कहकर पुकारते और शाहजहां बहुत प्यार करते थे। उन्होंने आसफ़ खां नामक वज़ीरकी लड़कीसे ब्याह इन्हें दूसरे बख़शीके पदपर नियुक्त कर दिया। १६७१ ई०को असद खां चारहज़ारी मनसबदार हो गये और कुछ ही दिनोंके बाद सातहज़ारी वज़ीरका महासम्मान लाभ किया। बहादुरशाहके राजत्वकालमें वकील मुतलकका पद इन्हें मिला। उसी समय इनके पुत्रने भी अमीर-उल्-उमरा ज़ुलफ़िकार खांकी उपाधि पाई। फ़र्रुख़-सियारके बादशाह होनेपर असद पदच्युत एवं अपमानित हुए। इनका लड़का भी मारा गया था। उसी समयसे इन्होंने क़ैदख़ानेकी सामान्य अवस्थामें अपने दिन बिताये। १७७१ ई०को ८० वर्षकी उम्रमें असदकी मृत्यु हुई।

२ दूसरे भी एक असद खांका नाम पाया जाता है। इनका असल नाम ख़ुसरू था। बहलोलसे जा और विश्वासघात कर इन्होंने मल्लिकार्जुनपर आक्रमण किया और उनके १०४ मन्दिरोंको तोड़ फोड़कर उसी जगह मसजिद बनवा दी। आदिलशाहने इन्हें साम्पगाम और बेलगाम दो स्थान जागीर दिये थे।

असदध्येतृ (सं॰ पु॰) असत् निन्दितं निर्विद्यं वा अधीते, असत् अधि इङ् तृच्। निन्दित शास्त्र अध्ययनकर्ता, असदध्ययनशाली, वेदको भिन्न शास्त्र छोड़ अन्यशास्त्र पढ़नेमें श्रम उठानेवाला, जो खराब किताब पढ़ता हो। अन्यशास्त्राध्ययनकारी व्यक्ति दोयमी शास्त्र पढ़नेसे असदध्येता या शास्त्रारण्य कहाता है।

असदाचार (सं॰ पु॰) न सदाचारः, अभावे नञ् तत्। १ सुन्दर आचारका अभाव, बदचलनी, बुरी चाल। (त्रि॰) नास्ति सदाचारो यस्य, नञ् बहुव्री॰। २ सदाचारशून्य, बदचलन, जो अच्छी चाल चलता न हो।

असदाचारिन् (सं॰ त्रि॰) सदाचारशून्य, बदचलन बुरा खराब। (स्त्री॰) असदाचारिणी।

असदि तूसी—एक विख्यात मुसलमान कवि। यह गजनीके सुलतान महमूदको सभामें रहते और प्रसिद्ध कवि फिरदौसीके गुरु थे। सुलतान महमूदने इन्हें शाहनामा लिखनेके लिये कहा, परन्तु बुढ़ापेके कारण यह लिखनेपर राजी न हुए, तब फिरदौसीने शाह नामा लिखा और गजनीसे जानेके समय उसका अव शिष्ट अंश लिखनेके लिये इनसे अनुरोध किया। अरब द्वारा ईरान जयसे लेकर अमदिने शेषतक शाह नामा लिख दिया। इसके सिवा इन्होंने फारसीमें और भी कई पुस्तक लिखी थी।

असदृश (सं॰ त्रि॰) न सदृशम् नञ् तत्। अयुक्त रूप, अननुरूप, असमान, नाहमवार, बेमिसाल जो मिलता न हो।

असदृशव्यवहारिन् (सं॰ त्रि॰) अयुक्तरूपसे व्यवहार करनेवाला जो ठीक तौरसे पेश न आता हो।

असद्ग्रह (सं॰ पु॰) असति अविद्यमाने वस्तुनि आग्रहः, ७-तत्। १ दुष्ट ख्याल, बुरी चाहना। २ चापल्य, छिछोरापन, लड़कपन मिजाजी, छिछोरापन। ६-तत्। ३ मिथ्याज्ञान, झूठी समझ। ४ रज्जुमें रजतज्ञान, रस्सीको सांप समझना।

असद्ग्रहिन् (सं॰ त्रि॰) दुष्ट ख्याल बढ़ानेवाला, जो भरपूर फरेब फैलाता हो।

असद्ग्राह, असद्ग्रह देखो।

असदृश् (सं॰ त्रि॰) विकृत चक्षुविशिष्ट, बुरी आंखवाला।

असद्धेतु (सं॰ पु॰) सन् व्यभिचारादि दोषरहितो हेतुः असद्धेतुः, विरोधे नञ्-तत्। न्यायशास्त्रसम्मित व्यभिचारादि दोषयुक्त हेतु झूठा सबब जो सबूत सका न हो। जैसे—धूमवान् वह्निः, वह्निहेतुक धूमविशिष्ट अर्थात् जहां अग्नि वहां धूम भी रहता है। न्यायशास्त्रके मतसे यह असद्धेतु कारण है। क्योंकि तपाये हुये लोहेमें आग रहते भी धुआं देख नहीं पड़ता। न्यायमतसे हेतुदोष पांच प्रकारका होता है। यथा—१ अनैकान्त, २ विरुद्ध, ३ असिद्ध, ४ कालात्ययोपदिष्ट, ५ छलाभास।

असद्यस् (सं॰ अव्य॰) न उसी दिन, न फौरन, दूसरे दिन, देरसे।

असद्वाद (सं॰ पु॰) अनुपयुक्त सम्भाषण ऊटपटांग बातचीत। किसी प्रकारकी सत्ताको स्वीकार न करना असद्वाद कहाता है।

असद्भाव (सं॰ पु॰) सतो विद्यमानस्य भाव अभावे नञ् तत्। १ अविद्यमान पदार्थमें विद्यमान अभि- प्राय न होनेवालेको मौजूद मान लेना। विरोधे नञ् तत्। २ दुष्ट अभिप्राय, बुरा मतलब। (त्रि॰) नञ्-बहुव्री॰। ३ दुष्ट अभिप्राययुक्त, जो बुरा मतलब रखता हो। चलित भाषामें अमन्यको असद्भाव कहते हैं।

असद्वृत्ति (सं॰ स्त्री॰) सती वेदादिरचिता वृत्तिः स्वभाव व्यवहारः वर्तनं विवरणं वा, अभावे नञ् तत्। १ मन्दस्वभाव, बुरा मिजाज। २ सदाचारका अभाव, नेकचलनीकी अदममौजूदगी। ३ सद्व्यवहारका अभाव अच्छीतरह पेश न आनेकी हालत। ४ अस न्तोषिका बुरी या झूठी रोजी। ५ मिथ्या विवरण, जो बयान् ठीक न हो। विरोधे नञ्-तत्। ६ निन्दित आचारादि, मरदूद काम। (त्रि॰) नञ्-बहुव्री॰। ७ असत् स्वभावयुक्त बदमिजाज। ८ मन्द व्यवहार- युक्त जो बुरे तौरसे पेश आता हो। ९ मन्द वर्तन या जीविकायुक्त, बदनाम। १० मन्द विवरण-युक्त, बुरे बयानसे भरा।

असद्व्यवहार (सं॰ पु॰) सन् साधुः व्यवहारः, नञ्-तत्। १ मन्द व्यवहार, खराब राह-रस्म। नञ्-बहुव्री॰। २ दुष्ट व्यवहारविशिष्ट, बुरे तौरसे पेश आनेवाला।

असद्व्यवहारिन् (सं॰ त्रि॰) कुमार्गगामी, बुरी राह चलनेवाला।

असन (सं॰ पु॰) अस-क्षेपे ल्यु। १ पीतसाल वृक्ष, असनाका पेड़। असन देखो। यह कटु, उष्ण, सारक तथा तिक्त होता और वात, गलदोष एवं रक्तमण्डल-को मिटाता है। (राजनिघण्ट) यह कुष्ठ, वीसर्प, श्वित्र, प्रमेह, गुह्यक्रमि, कफ तथा रक्तपित्तको दूर करता और त्वच्य, केश्य एवं रसायन निकलता है। (भावप्रकाश) २ जीवकद्रुम। ३ वकवृक्ष। ४ वीर। भावे ल्युट्। ५ क्षेपण, फेंक-फांक। ६ निशाना, गोली, धड़ाका।

असनपर्णिका, असनपर्णी देखो।

असनपर्णी (सं॰ स्त्री॰) असनस्य पीतशालस्य पर्ण-मिव पर्णमस्याः, बहुव्री॰ गौरादि ङीष्। अपराजिता, गोधी।

असनपुष्प (सं॰ पु॰) षष्टिकधान्य जातिभेद, सठिया धान।

असनपुष्पक, असनपुष्प देखो।

असना (वै॰ स्त्री॰) १ वाण, गोली, जो हथियार फेंककर मारा जाता हो। (हिं॰) २ वृक्षविशेष, कोई पेड़। इसका काष्ठ कठोर होता और गृह-निर्माणमें लगता है। पत्र माघ-फाल्गुनमें झड़ता है। असन देखो।

असनादिगण (सं॰ पु॰) गणविशेष, कोई खास दवा। इसमें असन, तिनिश, भूर्ज, श्वेतवाह, प्रकीर्य, खदिर, कदर, भण्डी, शिंशपा, मेषशृङ्गी, चन्दनत्रय, ताल, पलाश, जोङ्गशाक, शाल, क्रमुक, धव, कुलिङ्ग, छागकर्ण और अश्वकर्ण पड़ता है। इसके सेवनसे श्वित्र, कुष्ठ, कृमि, कफ, पाण्डु, प्रमेह और मेदरोग दूर हो जाता है। (वाग्भट)

असनान (हिं॰ पु॰) स्नान, गुस्ल, नहाना।

असनायी (हिं॰ स्त्री॰) प्रीति, मुहब्बत, लगी।

असनि (सं॰ त्रि॰) अस-अनि। क्षेपक, फेंकनेवाला। कृष्यादि॰ चतुरर्थ्यां क। असनिक, क्षेपकके निकटस्थ देशादि।

असनी—युक्तप्रदेशके हरदोयी जिलेका गांव। यह स्थान बहुत पुराना और गङ्गाके तटपर बसता है। इसमें उच्च कोटिके अनेक कान्यकुब्ज ब्राह्मण प्रतिष्ठित हैं।

असन्तति (सं॰ स्त्री॰) सन्ततिर्धारा, अभावे नञ्-तत्। १ धाराका अभाव, औलादकी अदममौजूदगी। (त्रि॰) सन्ततिर्वंशश्च, नञ्-बहुव्री॰। २ धारारहित, बे-औलाद, जिसके बाल-बच्चा न रहे।

असन्तान (सं॰ पु॰) सन्तानः देवतरुः, नञ्-तत्। १ देवतरुभिन्न, देवदारको छोड़ दूसरी चीज़। सन्तानो विस्तारश्च अभावे नञ्-तत्। २ विस्तारका अभाव, तङ्गी। (त्रि॰) नास्ति सन्तानो यत्र, नञ्-बहुव्री॰। ३ देवतरुरहित, देवदारसे खाली। ४ विस्तारशून्य, तङ्ग। ५ वंशरहित, लावलद, बे-औलाद, जिसके बाल-बच्चा न रहे।

असन्ताप (सं॰ पु॰) अभावे नञ्-तत्। १ सन्तापका अभाव, तकलीफ़की अदममौजूदगी। (त्रि॰) नञ्-बहुव्री॰। २ सन्तापरहित, तकलीफ न पानेवाला। ३ सन्ताप न पहुंचानेवाला, जो तकलीफ़ देता न हो।

असन्तुष्ट (सं॰ त्रि॰) नञ्-तत्। १ सन्तोषशून्य, नाखुश, नाराज। २ अधिक धन पाते भी धनाभिलाष रखनेवाला, जो ज्यादा दौलत हासिल कर भी उसके लिये मरता हो।

असन्तुष्टि (सं॰ स्त्री॰) १ सन्तोषका अभाव, नाखुशी नाराज़ी। २ अतृप्ति, आसूदा न रहनेकी हालत। ३ धन रहते भी धनके लिये मरना, लालच।

असन्तोष (सं॰ पु॰) अभावे नञ्-तत्। १ सन्तोषका अभाव, क़नायतकी अदममौजूदगी। २ तृप्तिका अभाव, अधैर्य, बेक़रारी। ३ अप्रसन्नता, नाखुशी। (त्रि॰) नञ्-बहुव्री॰। ४ सन्तोषशून्य, जिसे क़नायत न रहे। ५ अधिक धनाभिलाषी, ज्यादा दौलत चाहनेवाला।

असन्तोषी (सं॰ त्रि॰) सन्तोष न रखनेवाला, जिसे क़नायत न रहे।

असन्दिग्ध (सं॰ त्रि॰) नञ्-तत्। १ सन्देहसे अविषय, जिस विषयमें कोई सन्देह न रहे। २ सन्देहशून्य,

गकती जाती। ३ आठ, भाप। ४ मकट, जाहिर। ५ विश्वासी, एतबारी। (अव्य०) निःसन्देह, बेशक।

असन्दित (वै० त्रि०) सम् दो अवखण्डने कर्मणि-क्त (पश्चिमी इत्यादि। पा ७।४।४०) इति इत्वं, नञ् तत्। १ बन्धनशून्य, जो बंधा न हो। २ अनिबद्ध,जो बना न हो। "असन्दितः" (ऋक् ४।४।१) "अनिबद्धः सौतविवश"। (सायण)

असन्दिन् (वै० त्रि०) सन्दा बन्धनमस्त्यस्य इनि, नञ् तत्। बन्धनशून्य, जो बंधा न हो। "असंदिना-सन्दिन्" (ऋक्‌मा ४।१४।)

असन्दिष्ट (स० त्रि०) समाचार न पाये हुआ बेखबर, जिसको हाल न मिला हो।

असन्धान (स० क्ली०) वियोग, विच्छेद विभेद कर्म, पकाइदगी, सुधारकृत, बिगा।

असन्धि (स० पु०) सन्धिका अभाव, पेवस्तगीकी अदमभौजूदगी, सटासटी नमचा।

असन्धित (सं० त्रि०) बन्धनशून्य खतल भाजाद, खुला हुआ।

असन्धेय (सं० त्रि०) सन्धि करनेके अयोग्य, जो सुलह करनेके काबिल न हो।

असन्न (वै० त्रि०) व्याकुल, बेचैन, जिसे आराम न मिले।

असन्नद्ध (सं० त्रि०) सन्नद्ध सन्नार्ये असमः, नञ् तत्। १ अतत्पर, जो तैयार न हो। २ दृप्त, गर्वित, अह ङ्कारी, घमण्डी, जो अपनेको बहुत समाता हो। ३ पण्डिताभिमानी, जो यथार्थ पण्डित न होते भी मन ही मन अपनेको पण्डित समझता हो। ४ निरस्त्र बेहथियार। ५ उत्पथ, पैदा।

असन्निकर्ष (सं० पु) सन्निकर्षका अभाव, फ़ासला दूरता, दूरी, फासिला।

असन्निकृष्ट (सं० त्रि०) १ अनुभवमें न आया हुआ, नामालूम जो जाहिर न हो। २ दूरस्थ जो नज़दीक न हो।

असन्निहित (सं० त्रि०) दूरस्थ जो पास न हो।

असमस्त (सं त्रि०) समास प्राप्त न किये हुआ, जो दुनियाको तर्क कर न चुका हो।

असपत्न (सं पु०) अपसान है दखतो, बे-असबो, मुष्टाको मोयो, ठिठायी।

असपत्न (सं० त्रि०) विरोधे नञ् तत्। १ शत्रुन होनेवाला जो दुश्मन न हो। २ मित्र दोस्त। नञ्-बहुव्री०। ३ शत्रुशून्य, दुश्मनसे खाली। ४ पाक्षमय किया न गया, जो दूसरोंसे बचा हो। (क्लो०) ५ शान्ति, सुलह जिस हालतमें झगड़े न पड़ें।

असपिण्ड (स० पु०-क्लो०) साक्षात् मोक्षलेन दाय-लेन समान: पिण्ड: देहावयवावयवभेदय येषां वा ते सपिण्डा:, नञ् तत्। सप्तम पुरुष पर्यन्त पुरुष और स्त्री।

असबन्धु (वै० त्रि०) असम्बन्धीय, रिश्ता न रखने-वाला।

असबर्ग (फा० पु०) खोरासान मुल्कको एक बड़ी घास। इसमें पीत या पाटल पुष्प आते हैं। पत्तोंसी इसके पत्र पुष्प अप्रगानोंसे खरीद रेशमके रङ्गमें छोड़ते हैं।

असबाब (अ० पु०) द्रव्य चीज, सामान, लवाजिमा पठाया।

असभया (हिं स्त्री०) असभ्यता, नालायकगी।

असभ्य (स० त्रि०) समायां साधुः, साधु य नञ् तत्। (पा ४।४।९८) समाके अनुपयुक्त, जो मज लिसके काबिल न हो। २ असामाजिक, बैठकके लायक न रखनेवाला। ३ खल, दुष्ट, अशिष्ट, गंवार, उजड्ड, नालायक।

असभ्यता (स० स्त्री०) सभ्यताका अभाव, असामा-जिकता, अक्लता, नालायकगी, बेहूदगी।

असम (स० त्रि) नास्ति समो यस्य। १ अतुल्य, बेमिसाल अपनी बराबरी न रखनेवाला। २ असदृश, नाहमवार, जो बराबर न हो। सम' सुममविराजित' तद्भिन्नम्। ३ विषम, ताक, बेजोड़। मेषादि द्वादश राशिमें मध्य मेष मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ विषम हैं। (पु) ४ बुद्धविशेष। ५ काव्यालङ्कार विशेष। इसमें उपमानकी असमाप्ति देखायी जाती है।

असमञ्च (स० क्लो०) १ असमञ्चस, गड़बड़ जिस हालतमें ठीक न सके। २ अनुचित्यादि साम, अयाव, अर्थ। (त्रि०) यर्म भादि अयु। ३ अप्रत्यक्षका विषयीभूत गैर वाजिर, गायब जो ठीक न पड़ता हो।

असमग्र (सं० त्रि०) नञ्-तत्। असम्पूर्ण, नातमाम, जो पूरा न हो।

असमञ्ज, असमञ्जस देखो।

असमञ्जस्—इक्ष्वाकुवंशके सगर राजाका ज्येष्ठपुत्र। इनकी माताका केशिनी और पुत्रका नाम अंशुमान् रहा। यह बाल्यकालमें अतिशय दुष्ट थे। पुर-वासियोंको सदा पीड़ित रखनेपर सगर राजाने इन्हें नगरसे निकाल दिया था।

असमञ्जस (सं० पु०) समञ्जसं युक्तियुक्तम्, नञ्-तत्। १ असङ्गत वा अनुपयुक्त विषय, खेंचतान, सकुच, सोच-विचार। (त्रि०) २ असदृश, अतुल्य, गैरमुनासिब, नामुवाफ़िक़, जो मिलता न हो। (अव्य०) ३ असङ्गत भावसे, नामुवाफ़िक़ तौरपर।

असमत (अ० स्त्री०) सतीत्व, पाकदामानी।

असमट्ट (दे० स्त्री०) सन्धि, सम्मेलन, सुलह, मेल, लड़ाई न रहनेकी हालत।

असमद (सं० त्रि०) सह मदेन गर्वेण वर्तते समदः स नास्ति यस्य यत्र वा। १ गर्वरहित, फ़ख़र न करनेवाला। २ कलहहीन, मिलनसार। ३ विरोध-शून्य, दुश्मनी न रखनेवाला।

असमन (सं० त्रि०) न समं सह नीयते भोजनादौ, सम-नी बाहु० कर्मणि ड, नञ्-तत्। १ विभिन्नवर्ण, गैरज़ात, जो साथ बैठकर खा न सकता हो। २ अतुल्य, नामुवाफ़िक़। ३ विभिन्न दिक् गमनशाली, इधर-उधर भटकनेवाला।

असमनेत्र (सं० पु०) असमानि अयुग्मानि नेत्रा-ण्यस्य। १ त्रिनेत्र शिव। असमलोचनादि शब्द भी इस अर्थमें आ सकता है। (क्ली०) असमञ्च तत् नेत्रञ्चेति, कर्मधा०। २ कपालका तृतीय नेत्र, मत्थेमें पोशीदा रहनेवाली तीसरी आंख। (त्रि०) ३ सम नेत्र न रखनेवाला, जिसके जुफ़्त चश्म न रहे।

असमय (सं० पु०) अप्रशस्ते नञ्-तत्। १ अप्र-शस्तकाल, नादुरुस्त वक्त। २ दुष्टकाल, बुरा वक्त। ३ अनुपयुक्तता, नामाक़ूलियत, बे-अन्दाज़गी।

असमरथ (वै० त्रि०) असदृश रथ रखनेवाला, जिसके लाजवाब गाड़ी रहे।

असमर्थ (सं० त्रि०) समर्थं शक्तम्, नञ्-तत्। १ अशक्त, कमज़ोर। २ दुर्बल, लागर, जो मोटा न हो। ३ कार्यमें अक्षम काम कर न सकनेवाला। समर्थः सङ्गतार्थः। ४ असङ्गतार्थ, वाजिब मानी न रखनेवाला। ५ अयोग्य, असम्पूर्ण, नाक़ाबिल, नातमाम, जो लायक़ या पूरा न हो।

असमर्थसमास (सं० पु०) कर्मधा०। जिसके साथ जिसका अन्वय लग सके, उसे छोड़ दूसरे पदसे समासका होना। जैसे—श्राद्धं न भुङ्क्ते। यहां भुज धातुके साथ नञ्का अन्वय होना आवश्यक है; किन्तु समास करनेसे अश्राद्धभोजी रूप बनता, जिसमें नञ्का अन्वय श्राद्धके साथ लगता है।

असमर्पण (सं० क्ली०) असोंपना, अवितरण, अदम-सुपुर्दगी, नाहवालगी, दूसरेको किसी चीज़का न सौंपना।

असमर्पित (सं० त्रि०) वितरण न किया हुआ, जो सौंपा न गया हो।

असमबाण (सं० पु०) असमा अयुग्मा (पञ्च) बाणा यस्य, बहुव्री०। कन्दर्प, पञ्चशर, कामदेव।

असमवायिकारण (सं० क्ली०) समवैति सम्-अव-इण्-णिनि, नञ्-तत्, असमवायि च यत् कारणञ्चेति कर्मधा०। आकस्मिक हेतु, नागहानी सबब। न्याय-मतमें द्रव्य समवायिकारण ठहरता, सिवा उसके द्रव्यस्थित गुणादि असमवायिकारण होता है। जैसे तन्तु वस्त्रका समवायी और उसका संयोग असमवायी कारण है। वैशेषिकमें कार्यसे नित्यसम्बन्ध न रखनेवाले को असमवायी-कारण कहते हैं। जैसे हवाके झोंकेसे फलका गिरना। ऐसे स्थलमें फल हवाके झोंकेसे ही नहीं, पत्थर मारनेसे भी गिर सकता है।

असमवायित्व (सं० क्ली०) अनिरुद्ध वस्तुकी स्थिति, गैर वातिनी चीज़की हालत।

असमवायिन् (सं० पु०) समवैति, सम्-अव-इण्-णिनि, ततो नञ्-तत्। १ असम्बन्ध, बेसिलसिला। २ असिलित जो मिला न हो। ३ न्यायोक्त समवाय सम्बन्धशून्य, जिसमें मन्तिक़के बातिनी ताल्लुक़ न रहें।

असमवृत्त (स० स्त्री०) न समानि भिन्नलक्षणत्वात् चतुर्णामपि पदानि यत्र तदसमं तच्चोक्तं तत् वृत्तमेति कर्मधा०। छन्दःशास्त्रोक्त विषम वृत्त, जिस वृत्तके पूर्वापर पादमें समान अक्षर न रहें।

असमवेत (स त्रि०) धर्मयुक्त, असम्बद्ध, पृथक्, अलाहदा, जुदा अलग, जो इकट्ठा न हो।

असमवेतरूप (म० अव्य०) असङ्गत, अनन्वय, बेसरोपा, बेठौरठिकाने।

असमशर, असमवाण देखो।

असमष्ट (सं० त्रि०) सम्-अश-क्त क्लीब०, नञ् तत्। अव्याप्त, जो मामूर या समाया न हो।

असमष्टकाव्य (वै० त्रि०) अमामस्य प्रज्ञाविशिष्ट जो हासिल न होने लायक होशियारी रखता हो।

असमसायक, असमवाण देखो।

असमस्त (सं० त्रि०) सम् अस-क्त, नञ् तत्। १ अर्द युक्त, पृथक् भिन्न, अलग, जुदा, जो मिला न हो। २ एकत्र किया न हुआ, जो मिलाया न गया हो। ३ असम्पूर्ण, अधूरा नातमाम जो पूरा न हो। ४ व्याकरणोक्त समासशून्य। ५ विभक्त्यादि कार्ययुक्त।

असमाति (वै० त्रि०) सर्व मान्यमतति, अत-इन्, नञ् तत्। अतुल्य, बेमिसाल, जिसके बराबर कुछ न रहे।

असमान (सं० त्रि०) १ अतुल्य, नामुवाफ़िक़, जो बराबर न हो। २ विजातीय, गैरजात, जो सजातीय या अपनी जातका न हो।

असमानकारण (सं० त्रि०) विभिन्न हेतुयुक्त, जो कोई सबब न रखता हो।

असमानयानकर्मन् (सं० पु०) न समानं तुल्यकालिकं यानकर्म गतिक्रिया यत्र। सन्धिविशेष आगे पीछे पहुंचनेकी बात। तुम आगे जाओ हम पीछे आते हैं—ऐसा नियम करके पूर्वापर गमनेच्छुक दो व्यक्ति जो गमन करें, उस गमनक्रमरूप सन्धिविशेषका यह नाम पड़ा है।

असमाप (सं० स्त्री०) अभावे नञ् तत्। १ असमाप्ति, नातमामी, अधूरापन। (त्रि०) नञ् बहुव्री०। २ समाप्तिशून्य, नातमाम, अधूरा।

असमापित, असमाप्त देखो।

असमाप्त (सं० त्रि०) नञ् तत्। असम्पूर्ण, नातमाम अधूरा जो पूरा पड़ा न हो। २ सम्यक् रूपसे अप्राप्त, जो अच्छीतरहसे मिला न हो।

असमाप्ति (स० स्त्री०) अभावे नञ् तत्। १ समाप्तिका अभाव, नातमामी अधूरापन। २ सम्यक्रूप अप्राप्ति, जो प्राप्ति अच्छीतरहसे न हो। ३ समाप्तिशून्य जो पूरा न हो।

असमाप्तक असमाप्त देखो।

असमावृत्त (स० पु०) नञ् तत्। गुरुगृहमें रहने वाला ब्रह्मचारी पूर्वसमय उपनयनके बाद ब्रह्मचर्य अवलम्बन कर गुरुके मकान पर वेद, वेदान्त, वेदाङ्ग प्रभृति शास्त्र पढ़ना पड़ता था। पीछे व्रतविध जो गृहस्थ धर्म आश्रय करनेके लिये जो गुरुकी अनुमति लेकर अपने घर आता, उसीका नाम समावृत्त था। फिर जिसका वह समय उपस्थित न होता अथवा जो यावज्जीवन गुरुके घर जो पर रहता वह असमावृत्त कहता था। स्वार्थे कन्। असमावृत्तक।

असमाहार (सं० पु०) समाहारो मिलनं संघातः सम्यगाहरणञ्च अभावे नञ्-तत्। १ मिलनका अभाव पार्थक्य अलाहदगी। २ संघातका अभाव नित्यता, सवाढा। ३ आहरणका अभाव, फिर हाथ न आनेकी बात। (त्रि०) मिलनादिशून्य, अलाहदा, जो जमा न हो।

असमाहार्य (सं त्रि०) पुनरलभ्य, नाक़ाबिल हसूल, खुवा हुआ।

असमाहित (स० त्रि०) नञ् तत्। समाधिशून्य, चित्तकी एकाग्रतासे रहित योगभग्न, अवधियेयित जो रचित न हो।

असमीक्ष्य (सं० अव्य) एकाएक बेदेखेभाले अचे पनसे।

असमीक्ष्यकारिन् (स० त्रि०) असमीक्ष्य विविच्य न करोति, असमीक्ष्य कृ-णिनि। बिना विवेचना किये काम करनेवाला, जो बेसोचे काम करता हो।

असमीचीन (सं त्रि०) अयुक्त, अनुचित नेरवाजिब, गलत।

असमूचा (हिं० वि०) १ असम्पूर्ण, अधूरा। २ किञ्चित्, थोड़ा, कुछ।

असमृद्ध (सं० त्रि०) १ अलक्ष्मीवत्, नाकामयाब, जो हराभरा न हो। २ हताश, दिलगीर, जो हार बैठा हो।

असमृद्धि (सं० स्त्री०) सम् सम्यक् ऋद्धिः समृद्धिः नञ्-तत्। १ समृद्धिका अभाव, अदम-इक़बालमन्दी, बढ़तीका न होना। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ समृद्धिशून्य, नाकामयाब, जो हराभरा न हो।

असम्पत्ति (सं० स्त्री०) सदृशात्मनाभः लक्ष्मीश्च सम्पत्तिः नञ्-तत्। १ सदृश आत्माका अभाव, नाकामयाबी। २ धनका अभाव, बदबख़्ती। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। ३ सम्पत्तिशून्य, बदबख़्त, जिसके पास दौलत न रहे।

असम्पन्न (सं० त्रि०) सम्पन्नः सम्पद्युक्तः अनुरूपात्म-स्वरूप लाभश्च ततो नञ्-तत्। सम्पत्तिशून्य, जिसके पास रुपया न रहे।

असम्पर्क (सं० पु०) अभावे नञ्-तत्। १ सम्बन्धका अभाव, सुफ़ारक़त, अलाहदगी। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ सम्बन्धशून्य, अलाहदा, जुदा।

असम्पर्कीय (सं० त्रि०) सम्बन्धरहित, जो तालुक़ रखता न हो।

असम्पूर्ण (सं० त्रि०) नञ्-तत्। अनिष्पन्न, सावशेष, नातमाम, अधूरा।

असम्पृक्त (सं० त्रि०) असम्बन्ध, वेसिलसिला, जो लगा न हो। २ असंयुक्त, अलाहदा, जो मिला न हो।

असम्प्रज्ञात (सं० त्रि०) न सम्यक् ज्ञातः ज्ञातव्यादि-भेदो यत्र, नञ्-बहुव्री०। भली भांति न समझा हुआ, जिसमें कुछ भी समझ न सकें। पातञ्जलोक्त निर्विकल्प समाधि दो प्रकारका होता है,—सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात। जिस समाधिमें ज्ञेय, ज्ञान एवं ज्ञाताका भेदज्ञान रहता, वह सम्प्रज्ञात (सविकल्प), और जिसमें यह सब मिट जाता, वह असम्प्रज्ञात (निर्विकल्प) समाधि कहाता है।

असम्प्रति (सं० अव्य०) तिष्ठद्गु प्र० सम्य०। तिष्ठद्गु प्रभृतीनि च। पा २।१।१८। १ अयोग्यकाल, बुरे वक़्त। २ अनुपस्थितकाल, वेवक़्त। ३ विपरीतकाल, दूसरे वक़्त, वेमौक़े।

असम्प्राप्य (सं० अव्य०) विना प्राप्ति, वेपहुंच, वेपाये।

असम्बद्ध (सं० क्ली०) सम्बन्धं परस्परमन्वितं न भवति सम्-बन्ध-क्त, नञ्-तत्। १ अर्थका अबोधक अनन्वितार्थ वाक्य। (त्रि०) २ सम्बन्धशून्य, वेसिलसिला, जो मिला न हो। ३ अयथार्थ, ग़ैरमुनासिब। ४ निरर्थक बोलनेवाला, जो फ़िज़ूल बक रहा हो।

असम्बद्धप्रलाप (सं० पु०) कर्मधा०। असङ्गत वाक्य, अप्रस्तुत वाक्य, निष्प्रयोजन कथन, वेहूदागोयी, लन्तरानी, बक-बक। यह स्मृतिशास्त्रोक्त दश प्रकारके पापमें पापविशेष होता है।

असम्बन्ध (सं० पु०) अभावे नञ्-तत्। १ सम्बन्धका अभाव, अलाहदगी। २ पदके परस्पर अन्वयका अभाव, लुसर्लोकी सुफ़ारक़त। (त्रि०) ३ सम्बन्धशून्य, वेसिलसिला।

असम्बाध (सं० त्रि०) न सम्यग् बाधा परस्परं व्यथा प्रतिबन्धो वा यत्र। परस्पर सङ्घर्षरूप पीडा-रहित, वसीय, जो तङ्ग न हो। २ विरल, पृथक्, अलग, जो घना न हो। ३ बाधारहित, जिसे कोई तकलीफ़ न रहे। ४ असंवृत, खुला। (वै० क्ली०) ५ असंवृतस्थान, कुशादा जगह।

असम्बाधा (सं० स्त्री०) अभावे नञ्-तत्। १ सम्यक् बाधाका अभाव, किसीतरहकी तकलीफ़का न रहना, दिक़्क़तकी अदममौजूदगी। २ चौदह अक्षरके पादसे युक्त वर्णवृत्तविशेष। इसका लक्षण यों लिखा है—जिस वृत्तमें क्रमसे मगण, तगण, नगण, सगण और दो गुरु रहता एवं पांच और नव अक्षरपर यति पड़ता, उसका नाम असम्बाधा है। (वृत्तरत्नाकर)

असम्भव (सं० पु०) अभावे नञ्-तत्। १ सम्भवका अभाव, अदमहस्ती, न होनेकी बात। २ न्यायोक्त लक्ष्यमात्रमें लक्षणकी अप्राप्ति। ३ काव्यालङ्कारविशेष। इसमें असम्भव विषयका होना प्रकट करते हैं। (त्रि०) न सम्भवति, अच् नञ्-तत्। ४ असङ्गत, विरुद्ध, ख़िलाफ़, नामुमकिन। ५ असत्, अविद्यमान, नेस्त-नाबूद, जो कहीं न हो।

नञ-तत्। ३ क्षमाका अविषय, जिसे माफ़ी न मिले। (वै०) ४ शुद्ध न किया हुआ, जो साफ़ न हो।

असम्मोष (सं० पु०) किसी वस्तुका बचने न देना, जिस हालतमें कोयी चीज़ छूटने न पाये, सकल-समेट।

असम्मोह (सं० पु०) सम्-मुह भावे घञ्, विरोधे नञ्-तत्। यथार्थज्ञान, सही समझ। (त्रि०) नञ्-बहुव्रो०। २ भ्रमरहित, जिसमें शक न रहे। ३ स्थिर बुद्धि, सच्चीदा, जो डांवाडोल न हो।

असम्यक्कारिन् (सं० त्रि०) अकुशल, अपटु, गावदो, बेसलीका, नावाकिफ़, घामड। २ दुराचार, भ्रष्ट-चरित्र, बदचला, बदकार, लुच्चा।

असम्यच् (सं० त्रि०) समञ्चति सम्-अञ्च-क्विप्, नञ्-तत्। १ कुरूप, बदसूरत। २ अनुचित, नामुना-सिब, गैरवाजिब, जो ठीक न हो। ३ अपूर्ण, नात-माम, अधूरा, जो पूरा न हो। (स्त्री०) ङीप्। असमीची।

असम्यञ्च्, असम्यच् देखो।

असयाना (हिं० वि०) १ मूर्ख, बेवकूफ। २ छद्म-शून्य, सादालौह, जो चालाक न हो।

असर (अ० पु०) १ प्रभाव, गुण, सिफ़त। २ दिवस-का चतुर्थ प्रहर, दिनका चौथा पहर।

असरन (हिं०) अशरण देखो।

असरा (हिं० पु०) धान्यविशेष, किसी क़िस्मका चावल। यह आसामके कछारमें पैदा होता है।

असरार (हिं० क्रि० वि०) अनवरत, सिलसिलेवार, हरदम, हमेशा।

असरु (सं० पु०) स्रियते दुर्गन्धेन म्रायते, सृ-उन्, नञ्-तत्। भूकदम्ब, कुकुरमुत्ता, ककरौंदा।

असर्वज्ञ (सं० त्रि०) प्रत्येक विषय न जाननेवाला, जो सब कुछ जानता न हो।

असर्ववीर (वै० त्रि०) सम्पूर्ण वीरोंको एकत्र न करनेवाला, जो सब बहादुरोंको इकट्ठा न किये हो।

असल (सं० क्ली०) अस्यते क्षिप्यते अनेन, अस-कलच्। १ अस्त्रक्षेपके उपयुक्त मन्त्रविशेष, जो मन्त्र हथियार चलानेमें पढ़ने काबिल हो। २ लौह, लोहा। ३ आयुध, हथियार। (अ० वि०) ४ सत्य, सच्चा। ५ श्रेष्ठ, उम्दा, बड़ा। ६ विशुद्ध, ख़ालिस, जो मिलावटी न हो।

असलियत (अ० स्त्री०) तथ्य, सत्य, वास्तविकता, विशुद्धता। २ जड़, मूल, बुनियाद, ठिकाना। ३ मूल-तत्त्व, तत्व, सार, निचोड।

असली (हिं० वि०) १ असल, मुख्य। २ सत्य, सच्चा। ३ विशुद्ध, ख़ालिस।

असलील (हिं०) अश्लील देखो।

असलोक (हिं०) श्लोक देखो।

असवर्ण (सं० त्रि०) न समानो वर्णो यस्य, नञ्-बहुव्रो० समानस्य सादेशः। असजातीय, विभिन्न वर्ण, जो एक भांति या अपनी जातिका न हो। जैसे—ब्राह्मण और क्षत्रियादि। ब्राह्मणादिका क्षत्रिय प्रभृतिकी कन्यासे विवाह असवर्ण कहाता है।

असवस् (सं० पु०) प्रधान वायु वा श्वास। यह शब्द सदा बहुवचनान्त रहता है।

असवार, सवार देखो।

असवारी (हिं०) सवारी देखो।

असश्चत् (वै० त्रि०) सश्चतिर्गतिकर्मा, सश्चतिरस्यते-र्वार्थे वर्तते सश्च-शब्द शतृ (निरुक्त) नञ्-तत्। १ पर-स्पर आश्रित, आपसमें मिला हुआ। २ अगमनशील, जो चलता न हो। ३ सङ्गतवर्जित, तनहा, जो साथसे अलग हो। स्त्री० ङीप् असश्चन्ती। "गर्भेऽसश्चन्तो दिवे दिवे।" ऋक् ५।४३।२। "मधु जिह्वा असश्चतः।" ऋक् १।१०१—४। "असश्चतः सङ्गवर्जिताः" (सायण)

असश्चतस् (सं० स्त्री०) अनन्त धारा, अक्षय प्रवाह, लाज़वाल चश्मे, हमेशा बहनेवाले दरया। यह शब्द सदा बहुवचनमें ही व्यवहृत होता है।

असश्चता (सं० अव्य०) अक्षय नियमानुसार, लाज़-वाल तौरपर।

असश्चिवस् (वै० त्रि०) अक्षय, अनन्त, लाज़वाल, बन्द न होनेवाला, जो कभी सूखता न हो।

असश्चुस् (वै० त्रि०) सश्च-वा उसुन्, नञ्-तत्। अप्रति-बद्ध, जो रुका न हो। (स्त्री०) ङीप् असश्चुषी। "विरप्शिनमसश्चुषी।" ऋक् ८।८८।१८।

असमत् (वै० त्रि०) सम मन्ये मद, नञ् तत्। आप्त सक, निजकार्यमें मनोयोगी, जो अपने काममें दिल लगाता हो (स्त्री०) ङीप्। असमती। "असमती"... ऋक् १।१७२।१।

असह (स० त्रि०) न सहते सह अच् नञ् तत्। १ सहकारमें अयास, असम नाम...जो बर दाश्त न करता हो। (क्ली०) २ वक्षस्थलका मध्यभाग, छातीका दरमियान।

असहन (सं० पु०) न सहति सह-ल्यु, नञ् तत्। १ शत्रु, वैरी दुश्मन। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ असमा-मुक्त, असहिष्णु, नासुतहम्मिल, बरदाश्त न करनेवाला। (क्ली०) मात्सर्य, असहि नञ् तत्। ३ असमाका अभाव, वैमत्य रजतिराज जिस हालतमें बरदाश्त न करें।

असहनशील (सं० त्रि०) असहिष्णु सहन न करनेवाला, चिड़चिड़ा, तुनकमिजाज।

असहनशीलता (स० स्त्री०) असहन असहिष्णुता तुनकमिजाजी रजतिराज, चिड़चिड़ापन।

असहनीय (स० त्रि०) दुःसह अयस्थ असह्य, मदीद, गैरसुमकिन्-उल-तहम्मुल, जो बरदाश्त न हो।

असहमान (सं० त्रि०) असम, नासुतहम्मिल, बर दाश्त न करनेवाला।

असहाय (स० त्रि०) नास्ति सहायो यस्य नञ्-बहुव्री०। सहचरशून्य, निःसहाय, निरवलम्ब, निरा श्रय, अनाथ, बेकस, बेचारा। (स्त्री०) ङीप्। असहायी।

असहायता (सं० स्त्री०) १ सहचरशून्यता, निरा-श्रयता, बेकसी लाचारी। २ निर्जनता, विजनता, तन-हायी मोयामरीमी।

असहायत्व (स० क्ली०) असहायता देखो।

असहायवत्, असहाय देखो।

असहित (सं० त्रि०) निःसङ्ग, सहचरशून्य, तनहा, जिसके साथ कोयी न रहे।

असहितव्य, असहनीय देखो।

असहिष्णु (सं० त्रि) न सहिष्णु नञ्-तत्। १ असम, असहनशील, नासुतहम्मिल, जो सह न सकता हो। २ कलहप्रिय, विवादशील झगड़ालू, टण्टे-बाज।

असहिष्णुता, असहनशीलता देखो।

असही (हिं० वि०) असम, ईर्षालु, जूदरक जो किसीकी बढ़ती देख न सकता हो।

असह्य (स त्रि०) न सह्यम्। असहनीय देखो।

असह्यपीड (सं० त्रि०) दुःसह दुःख देनेवाला, जो मदीद दर्द पैदा करता हो।

असा (अ० पु०) सोंटा, डण्डा। देवताके लिये यह चांदी या सोनेसे पत्रसे मढ़ दिया जाता है। राजा-ओंकी सवारी या बरात निकलते समय सेवक असा लेकर आगे बढ़ते हैं।

असांच (हिं० वि०) असत्य, झूठ, नाराश्त जो सच्चा न हो।

असाक्षात् (सं० अव्य०) न साक्षात्। परोक्षमें पीठ पीछे।

असाक्षात्कार (सं० पु०) न साक्षात्कार:, असाक्षि नञ् तत्। १ प्रत्यक्षका अभाव गैबत। विरोधे नञ्-तत्। २ परोक्ष ज्ञान, चक्षु या इन्द्रियके अगोचर विषयका ज्ञान, पीठ पीछेकी बात जो काम देखा सुना न हो। (त्रि०) नञ् बहुव्री०। ३ प्रत्यक्षका अविषय प्रत्यक्षशून्य, देखने-सुननेमें न आनेवाला।

असाक्षिक (स० त्रि०) नास्ति साक्षी साक्षात् द्रष्टा अभिज्ञाता वा यत्र शेषाद्विभाषेति कप्। साक्षिशून्य, बेगवाह, जो देखा-सुना न हो।

असाक्षिन् (सं० त्रि०) न साक्षि नञ् तत्। वचन या दोषादि हेतुसे साक्ष कर्ममें अयोग्य, जो गवाही दे न सकता हो। योगियादिको साक्षी करनेमें याज्ञवल्क्य निषेध है। फिर जिसके साक्षमें मिथ्यावाद प्रभृति दोष ठहरता वह भी साक्षीमें परिगणित नहीं होता। पिता और माता प्रभृति आत्मीय व्यक्ति साक्षी नहीं हो सकते। स्त्री बालक, प्रवञ्चक, उन्मत्त, परिवादग्रस्त, रङ्गावतारी (नाटक करनेवाला) पापक, कूटकारी और विकलेन्द्रिय व्यक्ति साक्षी होनेके अयोग्य हैं। किन्तु संग्रह, चोरी और पारुष्य पापमें निषिद्ध व्यक्ति भी साक्षी बन सकते हैं।

असाची, असाधिन् देखो।

असाच्य (सं० क्लो०) साच्यका अभाव, गवाहीका न होना, अदम शहादत।

असाढ़ (हिं० पु०) आषाढ़मास, सालका चौथा महीना।

असाढा (हिं० पु०) १ बढे हुए रेशमका बारीक धागा। २ कच्ची शक्कर, साफ़ न की हुयी चीनी।

असाढी (हिं० वि०) १ आषाढका, आषाढमें होनेवाला। (स्त्री०) २ आषाढमें बोया जानेवाला अन्न, खरीफ़, जो अनाज असाढ़में बोया जाता हो। ३ गुरु-पूर्णिमा, आषाढ़की पूर्णमासी। इस दिन हिन्दू अपने गुरुका पूजन करते हैं।

असाढ़ ·(हिं० पु०) स्थूल शिला, मोटी चटान।

असात्म्य (सं० क्लो०) १ सात्म्य हैपरोत्य, प्रकृति-विरोध, जिस्मी खासियतकी मुखालफ़त। (त्रि०) २ प्रकृत्यसुखावह, नागवार, तन्दुरुस्ती खराब करने-वाला।

असाद (वै० त्रि०) असनशून्य, नशिस्तगाह न रखनेवाला, जो बैठा न हो।

असाधन (सं० क्लो०) अभावे नञ्-तत्। १ सम्पा-दनका अभाव, अदमतकमील, सुबूत न पहुंचनेकी हालत। साधनहेतुः नञ्-तत्। २ अकारण, सबबका न होना। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। ३ कारणशून्य, बेसबब, जो ज़रिया, सामान या औज़ार रखता न हो।

असाधनीय, असाध्य देखो।

असाधारण (सं० त्रि०) साधारणं सामान्य धर्मयुक्तम्, नञ्-तत्। विशेष, असामान्य, गैरमामूली, जो साधा-रण न हो। (पु०) २ न्याय मतमें, सपक्ष और विपक्ष दोनोंसे व्यावृत्त हेतु। जैसे वह्निसाधनमें गग-नादि हेतु है। यह हेतु पक्ष पर्वतादि एवं पक्ष भिन्न जलादिमें कहीं नहीं रहता, अतएव दोनोसे व्यावृत्त (निराकृत) है। (क्लो०) ३ प्रकार, भेद, जिन्स, किस्म। (स्त्री०) असाधारणी।

असाधारणानैकान्तिक (सं० पु०) असाधारणं तत् अनैकान्तिकश्चेति कर्मधा०। न्यायशास्त्रोक्त सर्व सपक्ष व्यावृत्त हेत्वाभास विशेष। यथा—'शब्दोनित्यः शब्द-त्वात्।' शब्दत्व विशिष्ट होनेसे शब्द नित्य पदार्थ है। शब्दत्व सकल नित्य पदार्थसे व्यावृत्त अथच शब्दमात्रमें स्थित है, इसीसे शब्दत्वका उक्त नाम पड़ा।

असाधित (सं० त्रि०) सम्पादनशून्य, नाकामिल, जो पूरे न पडा हो।

असाधु (सं० त्रि०) न साधु नञ्-तत्। असच्चरित, अविनीत, अशिष्ट, दुष्ट, खल, दुर्जन, असंस्कृत, बद-माश, गुस्ताख़, बुरा, बिगडा हुआ। (स्त्री०) असाध्वी, व्यभिचारिणी पत्नी।

असाधुता (सं० स्त्री०) दुष्टता, अशिष्टता, बदमाशी, गुस्ताखी, खोटायी।

असाधुत्व (सं० क्लो०) असाधुता देखो।

असाधुवृत्ता (सं० स्त्री०) व्यभिचारिणी पत्नी, जो औरत पाक-साफ़ न हो।

असाध्य (सं० त्रि०) सध-णिच्-यत् साध-यत् वा नञ्-तत्। दुष्कर, कठिन, सिद्ध करनेके अयोग्य, जो सिद्ध हो न सकता हो। जैसे असाध्य रिपु एवं असाध्य रोग।

असान्तापिक (सं० त्रि०) सन्तापाय न भवति ठक्। सन्ताप पहुंचानेमें असमर्थ, तकलीफ़ न देनेवाला।

असान्द्र (सं० त्रि०) विरोधे नञ्-तत्। अनिविड़, पृथक्, विरल, बुराक़, कागज़ी, जो सटा न हो।

असान्निध्य (सं० क्लो०) अन्तर, विप्रकर्ष, दूरता, फ़ासला, बिआ।

असामञ्जस्य (सं० क्लो०) अभावे नञ्-तत्। १ साम-ञ्जस्यका अभाव, मीमांसाका अभाव, अयुक्तत्व, सन्नि-वेशका अभाव, अचरण, अस्थापन, नादुरुस्ती, नाक़ा-बिलियत। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ सामञ्जस्यके अभावसे युक्त, अमीमांसाविशिष्ट, असन्निवेशित, नाक़ाबिल, जो दुरुस्त न हो।

असामर्थ्य (सं० क्लो०) अभावे नञ्-तत्। सामर्थ्य-का अभाव, पटुत्वका अभाव, अक्षमत्व, नाताक़ती, कमज़ोरी।

असामयिक (सं० त्रि०) असमयोचित, अकालिक, अकालोद्भव, गैरवक़्त, बेफ़सल।

असामान्य (सं० त्रि०) नास्ति सामान्यं तुलना

यस्य। १ असाधारण, गैरमामूली। इस अर्थमें असामान्य शब्दको प्रयुक्त होता है।

असामि (सं त्रि०) १ सम्पूर्ण समूचा, जो अधूरा न हो। (अव्य०) २ पूर्णरूपसे, पूरे तौरपर, बिल कुल सब।

असामि शवस् (वै० त्रि०) पूर्णशक्ति सम्पन्न पूरी ताक़त रखनेवाला।

असामी (हिं० पु०) १ पुरुष, नर, आदमी। २ व्यव हारी, लेने देनेवाला। ३ ज़मीन काश्तकार, लगान पर खेत जोतनेवाला। ४ प्रतिवादी, ऋणी। ५ अप राधी मुजरिम। ६ मित्र दोस्त। ७ काम देनेवाला आदमी। ८ आसाम देशका अधिवासी जो असल आसामका बाशिन्दा हो। (स्त्री०) ९ वैश्या, रण्डी। १० स्थान, नौकरी जगह। (वि०) ११ आसामदेश सम्बन्धीय, जो आसामका हो।

असाम्प्रत (सं त्रि०) अयोग्य, अनुचित नामुनासिब गैरवाजिब, जो होनहार न हो।

असाम्प्रतम् (सं० अव्य०) नञ तत्। अयुक्त अयोग्य अनुचित या अन्याय्य रूपसे नामुनासिब तौरपर।

असाम्य (सं० क्ली०) १ अन्तर फर्क़। २ अनुपयुक्तता, नाक़ाबिलियत। ३ अप्रियता नापसन्दी।

असार (सं० पु० क्ली०) नास्ति सारो यस्य। १ एरण्ड द्रुम, रेंडका पेड़। (क्ली०) नास्ति सारो यस्मात् ३ नञ बहुव्री०। २ अगरुचन्दन। (त्रि०) नञ तत्। ३ सार शून्य, थोथा। ४ अस्थिरचित्त, नाताक़त। ५ व्यर्थ बेफ़ायदा। ६ निर्बल कमज़ोर।

असारता (सं० स्त्री०) १ निःसारता, निःसत्वता, बेअसरी। २ अयोग्यता नाक़ाबिलियत।

असारदधि (सं० स्त्री०) उद्धृत नवनीत दधि, मलायी उतारा हुवा दही। यह संग्राही शीतल लघु विष्टम्भि, दीपन एवं रूक्ष होता और ग्रहणी रोगको नाश करता है। (भावप्रकाश)

असारा (सं० स्त्री०) कदलीद्रुम केलेका पेड़।

असालत (अ० स्त्री०) १ कुलीनता, ख़ान्दानीपन। २ तत्त्व निचोड़।

असालतन् (अ० क्रि० वि०) स्वयं खुद, अपने आप।

असालस (हिं० स्त्री०) तरातेज़क, हालो हालिम, चसुर।

असावधान (सं० त्रि०) नञ तत्। अवधानहीन, प्रमत्त, बेपरवा, लापरवाह।

असावधानता (सं० स्त्री०) अनवधानता, लापरवायी।

असावधानत्व (सं० क्ली०) असावधानता देखो।

असावधानी, असावधानता देखो।

असावरी (हिं० स्त्री०) आसावरी, आसावरी रागिणी विशेष। यह भरव रागकी भार्या होती और प्रातः काल प्रात बजेसे नौ बजेतक गायी जाती है।

असासा (अ० पु०) वस्तु, द्रव्य, माल असबाब।

असासुलबैत (अ० पु०) गृहद्रव्य, मकानका सामान।

असाहस (सं० क्ली०) साहसका अभाव, बेहिम्मती नरमी।

असाहसिक (सं त्रि०) शान्त, ठण्ढा नर्म, जो हिम्मती न हो।

असाहाय्य (सं० क्ली०) अभावे नञ तत्। १ साहाय्य का अभाव मददका न मिलना। (त्रि०) नञ-बहुव्री०। साहाय्यशून्य, जिसे मदद न मिले।

असि (सं० अव्य०) अस् होने इन्। १ भवान्, आप, तुम। विभक्तिका प्रतिरूपक होनेसे यह 'त्वं' अर्थमें लगता है। (पु० स्त्री०) अस्यति छिदनार्थं क्षिप्यते, अस क्षेपणे (सर्वधातुभ्य इन्। उण् ४।११८।) इति इ। २ खड्ग तलवार। असि शब्दके पर्याय यह हैं—निस्त्रिंश चन्द्रहास रिष्टि, कौक्षेयक मण्डलाग्र, करपाल, कृपाण, प्रत्यक्ष सङ्ग्राभक रिष्ट, ऋष्टि, धाराविष, कौक्षेय तरवारि, तरवाल, कृपाणक, कर पाल कृपाणी, शस्त्र विकसन। असिको स्तुति इस प्रकार की जाती है—

"असिर्विशसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः।
श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपालस्तथैव च॥"

असि भरतव्यसन। [illegible]। इति ठक् आसिक असिधारी, तलवारबन्द। वा लोप्। ३ वाराणसीके दक्षिण क्षुद्र नदीविशेष। असि नदी गङ्गाके साथ जाकर मिल गयी है। वरणा और असि

इन्हीं दोनो नदीके नामसे 'वाराणसी' शब्द बना है। यथा—

"असिश्च वरणा यत्र क्षेमरक्षा कृतौ कृते।
वाराणसीति विख्याता तदारभ्य महामुने॥" (काशीखण्ड)

अस्यते चिप्यते अस-इन्। ४ श्वास, सांस।

असिक (सं॰ क्ली॰) असि-संज्ञायां कन्। १ अधर एवं चिबुकका मध्यभाग, होंठ और दाढीके बीचकी जगह। २ एक देशका नाम, कोयी मुल्क।

असिक्निका, असिक्नी देखो।

असिक्नी (सं॰ स्त्री॰) नो-क्त सिता केशादौ शुभ्रा जरती तद्भिन्ना ङीप् न क्तादेशो वा। असितपलितयोः प्रतिषेधः। असिता। छन्दसि क्नमित्येके। पा ४।१।३९ वार्तिक। १ अन्तः-पुरचारिणी अवृद्धा दासी, मकानके भीतर रहनेवाली जवान् दासी। २ नदीविशेष, Akesines, चन्द्रभागा, पञ्जाबकी चिनाब। ३ कन्याविशेष, वीरण प्रजा-पतिकी जो कन्या दक्षको व्याही थी। ४ रात्रि, रात।

असिगण्ड (सं॰ पु॰) असिः चिह्नो गण्डो यत्र। क्षुद्रोपाधान, गलतकिया।

असिजीविन् (सं॰ पु॰) असिना तद् व्यापारेण जीवति, असि-जीव-णिनि। खड्गसे जीविका करने-वाला पुरुष, जो व्यक्ति अस्त्रद्वारा युद्धादि करके जीविका चलाता हो। यह ब्राह्मणके लिये अति निन्दनीय कार्य है।

असित (सं॰ पु॰) सो-क्त सितः विरोधे नञ् तत्। १ कृष्णवर्ण, कालारङ्ग। २ कृष्णपक्ष, अंधेरा पाख। ३ नीलवृक्ष, नीलका पेड। (क्ली॰) ४ अगुरुकाष्ठ, अगरुचन्दन। ५ शनिग्रह। ६ कालाराक्षस। ७ कश्यप वंशज व्यक्तिविशेष। ८ नीलगिरि पर्वत। ९ काला सांप। १० देवल ऋषि। हरिवंशके अष्टादश अध्यायमें इनका विवरण है। (त्रि॰) ११ कृष्ण वर्णयुक्त, काला। असित शब्द अनुदात्तान्त एवं इसके उपधामें तकार है, इसलिये (वर्णादनुदात्तात्तोप-धात्तो नः। पा ४।१।३९।) इस सूत्रके अनुसार इसका स्त्री लिङ्गमें 'असिता' और 'असिती' दो प्रकार रूप होता है। परन्तु विशेष वार्तिक सूत्रद्वारा उसका निषेध किया गया है। इस कारण इसका वेदमें 'असिता' एवं 'असिक्नी' उभय प्रकार रूप होता है।

असितकार्चिस् (सं॰ पु॰) असितयति असित-कृत्यर्थे णिच् ण्वुल् णिच् लोपः तयोक्ता अर्चिः शिखा यस्य। अग्नि, आग। अग्निकी शिखा लगनेसे सभी वस्तु काले पड जाते, इसलिये अग्निको असितकार्चिः कहते हैं।

असितकी (सं॰ स्त्री॰) वृक्षविशेष, कोयी पोधा।

असितकेशान्त (सं॰ त्रि॰) कृष्ण-केशविशिष्ट, काली जुल्फोंवाला।

असितगिरि (सं॰ पु॰) कर्मधा॰। नीलगिरि, नील-पर्वत, काला पहाड़।

असितग्रीव (सं॰ पु॰) असिता ग्रीवा यस्य। १ अग्नि, आग। २ नीलकण्ठ शिव। ३ मयूर, मोर।

असितजफल (सं॰ पु॰) नारिकेलवृक्ष, नारियलका पेड़।

असितज्ञु (वै॰ त्रि॰) कृष्णवर्ण जानुविशिष्ट, काले घुटनेवाला।

असिततिल (सं॰ पु॰) कृष्णतिल, काला तिल।

असितद्रुम (सं॰ पु॰) कृष्णताल, काला ताड।

असितनयन (सं॰ त्रि॰) कृष्णनेत्रयुक्त, काली आंखवाला।

असितपल्लवा (सं॰ स्त्री॰) १ भूमिजम्बु, भुयिजामन। २ नदीजम्बवृक्ष, पनिहा जामुन।

असितफल (सं॰ पु॰) असितं कृष्णवर्णं फलं यस्य। मधु नारिकेल, मीठा नारियल।

असितभ्रू (सं॰ त्रि॰) कृष्णभ्रूविशिष्ट, काली पलकों-वाला।

असितमृग (सं॰ पु॰) कर्मधा॰। कृष्णसार मृग, काला हरिण।

असितवल्ली (सं॰ स्त्री॰) नीलदूर्वा, काली दूब।

असितवेत्र (सं॰ क्ली॰) श्यामालता, काली वेल।

असितसार (सं॰ पु॰) तिन्दुकवृक्ष, तेंदूका पेड।

असितसारक, असितसार देखो।

असिता (सं॰ स्त्री॰) १ यमुना नदी। २ कृष्णनीली वृक्ष। ३ कालातिविषा। ४ हरिवंशधृत एक अप्सरा।

दन्त्याविन्त्यर्थः। अनुविशेष्यते (निरुक्त)। असङ्गाद, खुश न होनेवाली। "असिन्वती वप्सती भूर्यत्त।"(ऋक् १०।७६।१)

असिपत्र (सं० पु०) असिरिव तीक्ष्णधारं पत्रमस्य, बहुव्री०। १ इक्षुवृक्ष,ईखका पेड़। २ गुगु नामक तृण। ३ सहुण्ड वृक्ष, संहुडका पेड़। (क्ली०) असेः पत्रमिव आच्छादकत्वात्। ४ खड्गकोष, तलवारका म्यान। ५ उभयदिग् धारयुक्त खड्ग या तलवार, दुधारा। ६ नरकविशेष। इस नरकके वृक्षोंमें तलवार जैसे पत्ते लगे हैं।

असिपत्रतृण (सं० क्ली०) गुण्ड्रातृण, छोटा कास। यह शीत एवं मधुर होता और कफ वात, रक्तदोष, अतिसार तथा दाहको मिटाता है। दीर्घ और लघु भेदसे इसे दोप्रकार देखते हैं। दीर्घमें गुण अधिक रहता है।

असिपत्रक (सं० पु०) श्वेतदर्भ, सफेद कुश।

असिपत्रवन (सं० क्ली०) असिरिव पत्रमस्य तथोक्तं वनं यस्मिन्। पुराणोक्त नरकविशेष। इस नरकमें चार हजार कोसतक आग जलती और उसके बीच तलवारकी धार जैसे पत्तेवाले पेड़ोंका वन है।

असिपत्रव्रत (सं० क्ली०) अश्वमेध यज्ञके मध्य कर्तव्य व्रतविशेष, जो व्रत अश्वमेध यज्ञके बीचमें करना उचित हो।

असिपथ (वै० क्ली०) यज्ञीय आयुधका मार्ग, बलिदानवाली तलवारकी राह।

असिपुच्छ (सं० पु०) असिरिव धारायुक्तः वक्रः सूक्ष्माग्रो वा पुच्छोऽस्य। शशक, सकुची मछली।

असिपुच्छक, असिपुच्छ देखो।

असिपुत्रिका (सं० स्त्री०) असेः पुत्राव स्वार्थे कन् ईकार ह्रस्वः टाप्। छुरिका, छुरी।

असिपुत्री, असिपुत्रिका देखो।

असिमत (वै० त्रि०) छुरिकायुक्त, छुरी बांधे हुआ।

असिमेद (सं० पु०) असिः चित्रो मेदो निर्यासरूपावसा यस्मात्। १ खदिर क्षुप, खैरका झाड़। २ विट्खदिर, दुर्गन्ध खैर।

असिर (वै० त्रि०) अस-क्षेपे किरच्। १ क्षेपक, फेंकनेवाला। (पु०) २ किरण, शुआ। ३ वाण, तीर।

असिलोमन् (सं० पु०) असि इव तीक्ष्णानि लोमान्यस्य। दनुके पुत्रविशेष। महाभारत आदिपर्व ६५ अध्यायपर दनुके चालीस पुत्रोंमें इनका नाम लिखा है। हरिवंशके देवासुरयुद्धमें वायुके साथ इनका युद्ध वर्णित है। चण्डीमें भी इनका नाम देख पड़ता है।

असिष्टण्ट (अं० वि०) सहायक, मददगार, हाथ नीचे काम करनेवाला।

असिष्ठ (वै० त्रि०) शस्त्र प्रहारमें कुशल, जो हथियार खूब चलता हो।

असिहत्य (सं० त्रि०) असिना हत्यं घात्यं असिहन-बाहु० क्यप्; ३-तत्। १ खड्गद्वारा वधके योग्य, तलवारसे मारने लायक। (क्ली०) २ खड्गयुद्ध, तलवारकी लड़ायी।

असिहेति (सं० पु०) अन्तेर्हिनोतेर्वा (ऊति-यूति-जूति-साति-हेति कीर्तयश्च। पा ३।३।९७।) इति निपा० क्तिन् हेतिः शस्त्रम्; असिरेव हेतिः शस्त्रं यस्य, बहुव्री०। खड्ग द्वारा युद्धकारी, जो तलवारसे लड़ता हो। 'नैस्त्रिंशिकोऽसिहेतिः स्यात्।' (अमर)

असी (सं० स्त्री०) नदीविशेष। असि देखो।

असीतक (वै० क्ली०) अगुरु काष्ठ, अगरूचन्दन।

असीतका (सं० स्त्री०) कृष्णापराजिता, काली अपराजिता।

असीतकादिचूर्ण (सं० क्ली०) चूर्णविशेष, आमवात रोग पर दिया जानेवाला चूर्ण। असीतक, भागधिका, गुडूची, श्यामा, वराही, गजकर्ण एवं शुण्ठीको बराबर कूट-पीस चूर्ण बनाये और गर्म पानीके साथ सेवन करे। (माधवनिदान)

असीम (सं० त्रि०) १ सीमारहित, वेहद। २ अनन्त, वेशुमार। २ अपार, अगाध।

असील, असल देखो।

असीस (सं० स्त्री०) आशिष् देखो।

असीसना (हिं० क्रि०) आशीर्वाद देना, दुवा मांगना, भला चाहना।

असु (सं॰ पु॰) अस्यते क्षिप्यते अस क्षेपे उ। १ चित्त, दिल। कर्त्तरि उ। २ ताप, तकलीफ। अस्यन्ते क्षिप्यन्ते चाल्यन्ते वा प्राणिनो एभिः, करणे बाहुलकात् उ। ३ प्राणवायु। "पुंसि भूम्यसवः प्राणाः।" (अमर)

असुकर (सं॰ त्रि॰) सुखेन क्रियते, सु-कृ-खल् विरोधे नञ् तत्। दुष्कर, दुश्वार, मुश्किल, कठिन।

असुक्षण, असक्षन देखो।

असुख (सं॰ क्ली॰) न सुखं विरोधे नञ् तत्। दुःख, तकलीफ। (त्रि॰) नञ्-बहुव्री॰। २ सुखशून्य, दुःखी, रञ्जीदा।

असुखजीविका (सं॰ स्त्री॰) सुखशून्य जीवन, जो जिन्दगी मजेदार न हो।

असुखपीड़ित (सं॰ त्रि॰) दुःखसे व्यथित, रञ्जसे भरा हुआ।

असुखावह (सं॰ त्रि॰) दुःख उत्पन्न करनेवाला, तकलीफदेह जो रञ्ज लाता हो।

असुखाविष्ट असुखान्वित देखो।

असुखिन् (सं॰ त्रि॰) सुखशून्य, कमबख्त, रञ्जीदा।

असुखोदय (सं॰ त्रि॰) दुःखमें समाप्त होनेवाला, जो तकलीफमें पूरा हो।

असुखोदर्क (सं॰ त्रि॰) दुःखदायी, तकलीफ देनेवाला।

असुग (हिं॰) आशुग देखो।

असुगम (सं॰ त्रि॰) सुखेन गम्यते ज्ञायते बुध्यते वा सु-गम खल्, विरोधे नञ् तत्। १ दुर्गम, जो हासिल न हो। २ दुर्बोध जो समझ न पड़ता हो।

असुचि (हिं॰) अशुचि देखो।

असुत (वै॰ त्रि॰) १ दबाया न हुआ जो निचोड़ा न गया हो। यह सोमरसादिका विशेषण है। (सं॰ त्रि॰) २ सन्तानरहित बेऔलाद, जिसके बालबच्चा न रहे।

असुतर (सं॰ त्रि॰) दुर्गम, जो आसानीसे गुजर जानेवाला न हो।

असुतृप् (वै॰ त्रि॰) तृप्त न होनेवाला, जो आसूदा किया जा न सकता हो।

असुतृप (सं॰ पु॰) परका परपीड़ा, प्राणान्तकारेण तृप्यति तृप् इगुपधात् क इति क प्रत्ययः, ६ तत्। यमदूतविशेष।

असुधारण (सं॰ क्ली॰) असूनां प्राणादिपञ्चवायूनां धारणम्, ६ तत्। १ जीवन धारण जिन्दगी।

असुनिरस (सं॰ त्रि॰) अप्रिय, कड़वा नागवार, तकलीफ देनेवाला।

असुनीत (वै॰ क्ली॰) प्राणलोक, रूहानी दुनिया।

असुनीतम् (वै॰ पु॰) प्राणपशु रूहोंका मालिक।

असुनीति (वै॰ स्त्री॰) असून् नयति। असु शब्दे उपपदे नी क्विप्। (निरु) १ प्राणवायु। न सुनीति, नञ् तत्। २ अनीति, जो उत्तम नीति न हो।

असुन्दर (सं॰ त्रि॰) साधारण कुरूप सादा, बद शक्ल। २ अयोग्य अनुचित गैरवाजिब, नादुरुस्त, जो ठीक न हो। (पु॰) ३ व्यङ्गविशेष। इसे दिखाते वाच्यार्थमें विशेष भाव रखता है। यह गुणीभूत व्यङ्ग्यका भेद है।

असुन्व (सं॰ त्रि॰) षुञ् अभिषवे बाहु॰ श (वार्त्तिक ३।१।११) इति सु उकारस्य व नञ् तत्। जो सोमलताको सींचता न हो।

असुपाद (सं॰ पु॰) कालविशेष। देहधारियोंको एक श्वास खींच पुनः श्वास ग्रहण करनेमें जितना काल लगता, उसका चतुर्थांश असुपाद कहाता है।

असुप्त (सं॰ त्रि॰) निद्राके वशीभूत न होनेवाला, जो सोता न हो।

असुप्तदृक् (सं॰ त्रि॰) निद्रामें नेत्र न बन्द करने वाला जो हमेशा आँख खोले रखता हो।

असुविधा (सं॰ स्त्री॰) १ कठिनता अड़चन। २ दुःख, दिक्कत।

असुभ (हिं॰) अशुभ देखो।

असुभङ्ग (सं॰ पु॰) १ जीवनका नाश, जिन्दगीका तोड़ फोड़। २ जीवनसम्बन्धीय भय जिन्दगीके लिये खौफ। ३ जीवनका सन्देह जिन्दगीका खतरा।

असुभृत् (सं॰ त्रि॰) असून् प्राणान् बिभर्ति, असु-भृ क्विप् तुगागमश्च ६ तत्। प्राणधारी प्राणी, जानदार, जानवर।

असमत् (सं० वि०) असवः सन्त्यस्य, मतुप्। प्राणी, जीवमात्र, जानवर।

असुम्न (वै० वि०) प्रतिकूल, खिलाफ़, जो मिलता न हो।

असुर (सं० पु०) अस्यति क्षिप्यति देवान् असु क्षेपणे ([illegible]) इति उरन्। १ सुरविरोधी दैत्य। '[illegible]' ([illegible]) २ प्राचीन भारतियों और पारसियोंके प्रधान देवता। यह वरुणके प्रतिनिधि होते और पारसी इन्हें अहुर-मज़्दके नामसे पूजते हैं। जन्द अवस्तामें असुरको अहुर कहते हैं। भेद इतना ही है, कि जरथुस्त्रीय धर्ममें असुरका अर्थ देवता और हमारे धर्ममें राक्षस है। किन्तु ऋग्वेदमें कितना ही जगह असुर शब्द देवताओंके लिये भी व्यवहार किया गया है। असति दीप्यते, अस-दीप्ती उरन्। ३ सूर्य। ४ राहु। ५ हस्ती। ६ बादल। ७ प्रेत। '[illegible]' ([illegible]) (वै० वि०) ८ प्राणवान्, जिन्दा। '[illegible]' ([illegible]) ९ निराकार, ईश्वरीय, जो आदमीके क़ाबूका न हो। (क्ली०) १० सामुद्रलवण, समुद्रका नमक। ११ देवदारुवृक्ष। १२ उन्मादरोगविशेष, किसी क़िस्मका पागलपन। इस रोगमें पीड़ित व्यक्तिके खेद नहीं छुटता और वह देवी-देवता तथा गुरु-ब्राह्मणादि की खरी-खोटी कहते रहता है। कोई वस्तु उसे सन्तुष्ट नहीं करती, वह बुरी राह पकड़ लेता है।

१३ लोहारडांगे और पूर्व सरगुजाकी एक अनार्य जाति। असुर लोहा गलाके ही अपना निर्वाह करते हैं। कर्नल डालटन इन्हें उन्हीं असुरोंके वंशज बताते, जिन्हें प्राचीन काल मुण्डकोंने मारपीट निकाल दिया था। किन्तु हाग्जेलिङ्गीसका कहना है, कि असुर खानिका काम करने और मन्दिर बनानेवाले उन सभ्य शिल्पियोंके सन्तान ठहरते, जिनके चिह्न छोटा-नाग-पुरमें इस सिरेसे उस सिरेतक मिलते हैं। इनके तेरह गोत्र हैं। अपने गोत्रकी स्त्रीसे कोई पुरुष विवाह नहीं करता। अनेक पत्नीकताके विधानमें विवाहोच्छेदके लिये बड़ी अनुमति लेनी पड़ती है। इनकी स्त्रियां छोटानागपुरके शहरों और बड़े-बड़े गांवोंमें नाचकूद अपना निर्वाह करती हैं। असुरोंके धर्मका वृत्तान्त अज्ञात है। डालटनके मतानुसार यह सिङ्गबोङ्ग नामक देवताको पूजते हैं।

१४ असुरिया राज्य। यह शब्द हिब्रु भाषाका है। १५ प्राचीन नगर-विशेष। यह असुरिया राज्यकी राजधानी रहा। इसीके नामपर असुरिया (Assyria) राज्य असुर कहाया है। मुख्य असुरियाके राज्यकी दक्षिण सीमापर इस नगरको बाबिलोनियाके सेमेतिकोंने पूर्वकालमें बसाया था। सन् ई०से २२५० वर्ष पहले बाबिलोनियाके नृपति खम्मूरबीकी स्मृति-प्रस्तावनामें असुर और निनिवीः दोनो नगरोंका नाम आया है। किन्तु प्रस्तावनामें जो असुरकी शब्द लिखा, उससे विदित होता, कि इस नामका कोई प्रान्त भी रहा; क्योंकि 'की' का अर्थ 'भूमिसीमा' है। आजकल यह ताइग्रीस नदीके पश्चिमतट उच्च एवं निम्न जाब नदीके बीचोबीच कालि-शेरगाट नामसे प्रसिद्ध है। सर ए० एच० लेयार्ड साहबने जो मट्टीका वर्तुल यहांसे खोदकर निकाला, उसमें तिगलथ पिलेसर प्रथमका वृत्तान्त लिखा है। सन् १९०४ ई०में जो आवि-ष्कार हुआ, उससे प्रमाणित होता है, कि असुर देवके पुजारी बाबिलोनियाके अधीन यहां शासन करते थे। बाबिलोनियाका राज्य घटनेसे पुजारी स्वतन्त्र नृपति बने और असुर अपने प्रान्तकी राजधानी हुआ। इस नगरकी चारो ओर पक्की दीवार रही। सन् ई०से १२७० वर्ष पहले तुकुल्ती-इनारिस्ती या तुकुल्ती मासूने नदीकी ओर इसकी रक्षा करनेको गहरा परिखा खोदायी और भूमिकी ओर भित्ति बनवायी थी। सन् ई०से पहले १५ वें शताब्दमें भी यह दक्षिण की ओर बहुत बढ़ा रहा। नगरके उत्तरांशमें मन्दि-रोंकी शोभा देख पड़ती थी। सिवा असुर देवके अनु और हदादका मन्दिर भी बहुत बड़ा था। दूसरे देवताओंके अनेक मठ रहे। निनिवीःके राजधानी होते भी असुर देशका धार्मिक केन्द्र बना था। १६ असुरियाके प्रधान देव। प्रथमतः यह असुर

असुरसेन (सं० पु०) दैत्य विशेष। इसके देहपर गया नामक नगर प्रतिष्ठित है।

असुरहन् (सं० त्रि०) असुरं हन्ति, असुर-हन्-क्विप्। दैत्यनाशक, आसेवको बरबाद करनेवाला। यह शब्द अग्नि, इन्द्र प्रभृति देवताओंका विशेषण है।

असुरा (सं० स्त्री०) अस्यति क्षिपति जनान् अन्धकारेण, असु क्षेपणे उरन् टाप्। १ रात्रि, रात। २ राशि। ३ वेश्या, रण्डी। ४ हरिद्रा, हलदी। ५ राई। 'क्षेत्र सुधामिवननें राजिका कृष्णिकासुरी।' (अमर)

असुराई, असुरायी देखो।

असुराचार्य (सं० पु०) असुराणामाचार्यो गुरुः, ६-तत्। दैत्योंके गुरु शुक्राचार्य।

असुराधिप (सं० पु०) ६-तत्। १ प्रह्लादपौत्र बलि-दैत्य। २ असुरोंका अध्यक्ष, असेवोंका बादशाह।

असुरायी (हिं० स्त्री०) असुरता, दुष्टता, बुरायी।

असुरारि (सं० पु०) देवता, असुरका शत्रु।

असुराह्व (सं० क्लो०) असुरस्याह्वा संज्ञा यस्य, शाक-बहुव्री०। कांस्य, कांसा।

असुराह्वपतङ्ग (सं० पु०) तैलपायिपतङ्ग, तिलचट्टा।

असुराह्वविट् (सं० पु०) कांस्यमल, कांसेका मैल।

असुराह्वा (सं० स्त्री०) असुराह्व देखो।

असुरिया, असुरीय देखो।

असुरी (सं० स्त्री०) १ राजिका, राई। २ असुर-पत्नी, असुरकी स्त्री।

असुरीय (Assyria) असुरिया और बाबिलोनियाका बडा साम्राज्य। यह टिगरिस और युफ्रेटस नदीकी दोनो ओर बसा था। बाबिलोनिया देखो।

असुर्य (सं० त्रि०) असुराय हितम्, गवा० यत्। १ असुरको हितकर,आसेवको फायदा पहुंचानेवाला। २ अमूर्त, बेशक्ल। ३ असुरसम्बन्धीय आसेवसे ताल्लुक रखनेवाला। (क्लो०) ४ अमूर्तता, रूपानियत। ५ असुरसमूह, शैतानोंका गिरोह। ६ मेघजल, बादलका पानी।

असुलभ (सं० त्रि०) सुखेन लभते, सु-लभ-खल्, विरोधे नञ्-तत्। दुष्प्राप्य, असाध्य, मुश्किलसे हासिल होनेवाला।

असुष्वि (वै० त्रि०) सु बाहु० कि द्विर्भावः, नञ्-तत्। सोमलताका पीडक न होनेवाला, जो सोमलताको निचोडता न हो।

असुसु (सं० पु०) असून् प्राणान् सुवति यमसदनं प्रेरयति, असु-सू प्रेरणे क्विप्। बाण, जान मारनेवाला तीर।

असुस्थ (सं० त्रि०) सुखेन तिष्ठति, सु-स्था-क, विरोधे नञ्-तत्। दुःस्थ, दुःखेस्थित, रोगयुक्त, बीमार, जो आराममें न हो।

असुहृद् (सं० पु०) शत्रु, दुश्मन्, जो शख्स दोस्त न हो।

असू (सं० स्त्री०) न सूते, सू क्विप्, नञ्-तत्। प्रसव न करनेवाली स्त्री, अकौमा, बांझ।

असूक्षण (सं० क्लो०) सूक्ष सूचे वा लुग्ट्, नञ्-तत्। अनादर, अवज्ञा, अवहेला, बे-इज्जती, नाफरमावरदारी।

असूक्ष्म (सं० त्रि०) सूक्ष्म-स्मन् विरोधे नञ्-तत्। स्थूल, मोटा, जो बारीक न हो।

असूझ (हिं० वि०) सूझ या देख न पड़नेवाला, अदृश्य, पोशीदा, जो नज़र न आता हो।

असूत (वै० त्रि०) सूयते स्म, सू-क्त-नञ्-तत्। १ अप्रसूत, बांझ, प्रसव न करनेवाली। (स०) नास्ति सूतो यस्य, नञ्-बहुव्री०। २ सारथिशून्य, जिसके गाडीवान् न रहे। 'असूता मा नागवधूपभोग्यम्।' (कुमार० १।२०) (पु०) सूतः सारथिः, नञ्-तत्। ३ सारथि न होनेवाला व्यक्ति, जो शख्स गाडीवान् न हो। (हिं० वि०) ४ प्रतिकूल, सम्बन्धशून्य, खिलाफ, बेमिलसिला, जो मिला न हो।

असूति (वै० स्त्री०) १ उत्पत्तिका अभाव, पैदा न न होनेकी बात। २ प्रतिबन्ध, रोक। ३ अप्रसूतता, बाझपन।

असूतिक (वै० त्रि०) असूत देखो।

असूयक (सं० त्रि०) असूय कण्ड्वादि० यक् ण्वुल्। दोषारोपशील, नुक्ताचीन्, हासिद, भलाईमें बुराई लगानेवाला।

असूयन (सं० क्लो०) परिवाद, पैशन्य, मिथ्याभिशाप, निन्दाभियोग, दोषमत।

मर्द और वेदनायुक्त सर्वप्रकार प्रदर नष्ट होता है।
(प्रयोगामृत)

असृग्दोह (सं० त्रि०) रक्त चूसनेवाला, जो खून बहाता हो।

असृग्धरा (सं० स्त्री०) असृक् रक्तं धरति, असृज्-धृ-अच्-टाप्। चर्म, चमड़ा।

असृग्धारा (सं० स्त्री०) १ चर्म, चमडा। २ रक्त-प्रवाह, खूनका दरया।

असृग्वहा (सं० स्त्री०) असृक् शोणितं वहति सर्वत्र सञ्चालयति, असृज्-वह-अच्। नाडी, नब्ज्। नाडी, शरीरके सकल स्थानमें रक्तवहन करती, इसीसे उसका यह नाम पड़ा है।

असृग्विमोचण (सं० क्ली०) असृजो रक्तस्य देहा-द्विमोचणं निःसारणम्, ६-तत्। रक्तका मोचण, खूनका निकास। देहमें यदि रक्त बढ़े या किसी-तरह बिगड़े, तो उसे देहसे निकाल डालना चाहिये। उसी निःसारणका नाम असृग्विमोचण है। पूर्वकालमें सकल देशके चिकित्सक ज्वर प्रभृति नाना प्रकार रोगमें रक्तमोचण करते थे। रग और कुहनीके ऊपरसे सचराचर रक्त निकाला जाता है। रक्त निकालनेसे पहले रोगीको शय्यापर बैठा देना चाहिये। क्यों कि मत्था नीचा रहनेसे हठात् अधिक रक्त गिर सकता, जिससे रोगीके प्राण जानेकी सम्भावना रहती है। रोगीको बैठाकर हाथपर पट्टी बाध देना चाहिये। उसके बाद शिराको फूल आनेपर वृहदाङ्गुष्ठसे दबाकर नश्तर लगाते हैं। फिर प्रयोजनानुसार रक्त निकल या रोगीके मूर्छित हो जानेसे चत स्थानपर अङ्गुलि लगा पट्टी खोल डाले। परिशेषमें चतस्थानको दबाकर बांधनेसे फिर रक्त नहीं निकलता।

रगमें धमनीके मध्यस्थलमें तिरछा नश्तर लगानेसे भी रक्तमोचण किया जाता है। प्रयोजनानुरूप रक्त निकल जानेसे इस धमनीको बिलकुल काट डालना चाहिये। न काटनेसे उस जगह एन्यूरिजय नामक अर्बुद निकल सकता है। किन्तु काट देनेसे उसके उभय मुख छुडकर सूख जाता है। कुहनीवाली शिराकी तरह पैरकी शिरासे भी रक्तमोचण करते हैं। नासारोग या ज्वरकालमें अत्यन्त मस्तकवेदना होने और मत्था भारी पडनेपर कितने ही लोग नासि-काके भीतरसे रक्त निकाल डालते हैं। सचराचर नाकका आभ्यन्तरिक पर्दा (Schneaian membranc) फार रक्तमोचण किया जाता है।

तीन प्रकारकी प्रणालीसे रक्तमोचण करते हैं। १म—अस्त्रप्रयोगसे इसकी बात पहले ही बतायी जा चुकी है। २य—कटोरी तथा सींगी और ३य—जोंक लगानेसे।

सींगी लगानेके लिये शीशेकी छोटी कटोरियां रहती हैं। सींगी लगाते समय शीशेकी कटोरी नश्तर, सुराका प्रदीप प्रभृति निकटमें प्रस्तुत रखे; फिर जिस स्थानसे रक्त निकालना हो. उसे पहले धोकर उष्ण वस्त्रसे अच्छी तरह रगड़े। उसके बाद कटोरीमें अल्प सुरा डाल आग लगा देना चाहिये। अग्निके तापसे जब कटोरी अल्प उष्ण होती और भीतरका वायु निकल जाता, तब धौत स्थानमें यह कटोरी उलटाकर लगानेसे चर्मपर चिपक बैठती है। यह सकल प्रक्रिया शीघ्र-शीघ्र करना चाहिये। चर्मपर कटोरी चिपक बैठनेसे धीरे-धीरे वह स्थान रक्तवर्ण हो जाता है। उस समय कटोरी निकाल रक्तवर्ण स्थानको तिरछा-तिरछा चीर दे और अतिशीघ्र पहले-को तरह फिर कटोरी लगाये। धीरे-धीरे कटोरीके भीतर रक्त निकल आता है। प्रयोजनमत रक्त निकल जानेसे कटोरीको हटा चतस्थानपर लिण्ट वस्त्र लपेट देना चाहिये। अधिक रक्त निकालना आवश्यक होनेसे दो-तीन कटोरिया लगानी पड़ती हैं।

पश्चिम-देशके कञ्जड़ शीशेकी कटोरी नहीं, सींगी लगाते हैं। महिषके शृङ्गको दोनो ओरसे छेद लेते हैं। शरीरके किसी स्थानपर अल्प चीरकर शृङ्गकी मोटी ओर लगा देते हैं। पीछे दूसरी ओर मुंहसे सांसको ऊपर खींच शरीरका रक्त निकाल लेते हैं। जोंक लगानेसे पहले शरीरका उपरिभाग अच्छीतरह परिष्कृत करे। फिर कपडेसे जोंकका अङ्ग पोछ डाले। शेषको किसी ग्लास या प्यालेमें रख चर्मपर

उचटकर बचानेसे जोंक चिपक जाती है। चर्मको कुछ चीर डालनेसे भी उस स्थानपर जोंक लगानेमें कष्ट नहीं पड़ता। जोंक छूट जानेसे क्षतस्थानपर स्वेद या चलसेका प्रलेप चढ़ता, जिससे और भी किञ्चित् रक्त निकल जाता है। किन्तु अधिक रक्तस्राव होनेसे क्षतस्थानपर मकड़ीका छोटा जाला रख या पाटिश लगा देना चाहिये। अन्तमें उस स्थानको कसके बांध देते हैं।

दुर्बल व्यक्ति बालक, गर्भवती स्त्री और पीड़ा विशेषसे सहज ही निर्बल हो जानेवाले रोगीका रक्त मोक्षण करना न चाहिये। किन्तु विशेष आवश्यक आनेपर सावधानसे यथासामान्य रक्त निकाल लेते हैं।

असृज् (सं॰ स्त्री॰) अस्यति क्षिप्यते इतस्ततो अस्य नाड़ीभिः, अस-ऋजि—यद्वा न सृज्यते अन्यदनेन शरीरेष समर्थ आततत्वात्, सृज् क्विप्। १ रक्त, खून। अमरकोषमें असृक्के यह पर्याय लिखे हैं—रुधिर, लोहित, अस्र, रक्त, क्षतज, शोणित। २ मङ्गलग्रह। रक्तवर्ण रहनेसे मङ्गलग्रह असृक् कहलाता है। ३ कुङ्कुम केसर। ४ विष्कुम्भसे षोड़श योग। असृक् योगमें जन्म लेनेसे मनुष्य बड़ो कुत्सित और दुरात्मा होता है। वह विदेश जाता और महाजनोंसे बलवान् निकलता है।

असृष (सं॰ स्त्री॰) स्पंगेरिक, सोमबीज।

असृष्टि (सं॰ त्रि॰) अप्रतिहत, बेरोक जो रोका न गया हो।

असृत (सं॰ त्रि॰) १ असिद्ध, जो तैयार न हो। २ अपक्व, कच्चा, जो पका न हो।

असृग्दिग्ध (सं॰ त्रि॰) रक्तसे आच्छादित वा मिश्रित, खून आलूदा, जो खूनसे भरा हो।

असृङ्मुख (सं॰ त्रि॰) रक्त मुख विशिष्ट, खूनी दहनवाला, जिसके खूनी मुंह रहे।

असृक्पाट (सं॰ पु॰) असृक्पाती देखो।

असृक्पाती (सं॰ स्त्री॰) असृजो रक्तस्य पाती गमन समया रोधया पतो॰ डीष्। रक्तधारा, खूनका दरया।

असृष्ट (सं॰ त्रि॰) १ अरचित, जो बनाया न गया हो। २ अप्रदत्त, जो बंटा न हो। ३ अप्रवाहित, जारी, जो रोका न गया हो।

असृष्टान्न (सं॰ त्रि॰) अन्नको न बांटनेवाला, जो अनाज न देता हो।

असेग (हिं॰ वि॰) असह्य, बरदाश्त न होनेवाला, जो सहा न जाता हो।

असेचन, असेचनक देखो।

असेचनक (सं॰ त्रि॰) न सिञ्चति मनो ह्लादात् सिच् अपादाने ल्युट् स्वार्थे कन्—यद्वा सिञ्चति मनस्तोषयति, सिच् कर्तरि ल्युट् स्वार्थे कन् नास्ति सेचनकः मनस्तोषको यस्मात् नञ् बहुव्री॰। १ अत्यन्त प्रियदर्शन, निहायत खूबसूरत, जिसे देखनेसे पेट न भरे। २ सेकशून्य, बेसींच। (क्ली॰) सेचनं सेकः स्वार्थे कन् अभावे नञ् तत्। ३ सेकका अभाव, सिंचाईका न होना।

असेन्य (वै॰ त्रि॰) १ सेनाके अयोग्य, फौजके नाकाबिल। २ आघात न करनेवाला, जो जख्म न देता हो।

असेरी—बम्बई प्रान्तके कोङ्कण जिलेका एक ग्राम। यहां एक पहाड़ी किला बनी, जिसमें एक छोटी गुफा पड़ी है।

असेवन (सं॰ क्ली॰) अभावे नञ् तत्। १ सेवाका अभाव, खुशामदका न होना, अदम ताबेदारी। (त्रि॰) नञ्-बहुव्री॰। सेवाशून्य, ताबेदारी न करनेवाला।

असेवित (सं॰ त्रि॰) १ अनपेक्षित, विस्मरित ख्याल न किया हुआ, जो भूलमें पड़ गया हो। २ त्यक्ताकार, मतरूक, जो छूट गया हो।

असेवितेश्वरद्वार (सं॰ त्रि॰) धनियोंके द्वारपर बैठके राह न देखनेवाला, जो बड़े आदमियोंके दरवाजे पर नौकरी या-याचनाके लिये ठहरता न हो।

असेव्य (सं॰ त्रि॰) १ सेवाके अयोग्य, जो ताबेदारी किये जानेके लायक् न हो। २ अभ्यासके अयोग्य जो काममें लानेके लायक् न हो।

असेसर (अं॰ पु॰) सभ्य सभासद शामिल, शामिल पञ्च। Assessor फौजदारीका मुकदमा फैसल करनेमें जजको राय देनेके लिये असेसर चुना जाता है।

असैना (हिं० पु०) वृक्षविशेष, कोई पेड़। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है।

असैला (हिं० वि०) शैलीपर न चलनेवाला, बेकायदा, जो राहसे जाता न हो।

असो, असों (हिं० क्रि० वि०) वर्तमान वत्सर, इस साल।

असोक (हिं०) अशोक देखो।

असोकी (हिं० वि०) शोकशून्य, अफसोस न करनेवाला।

असोच (हिं० वि०) शोच न करनेवाला, जिसे फ़िक्र न रहे।

असोज (हिं० पु०) आश्विन मास, क्वारका महीना।

असोस (हिं० वि०) शुष्क न होनेवाला, जो सूखता न हो।

असोसियेशन (अं० स्त्री०) १ सङ्गम, संसर्ग, साहचर्य, हमनशीनी साथ, मिलाप। २ सभा, समाज, पंक्ति, परिषद्, मजलिस, अञ्जुमन, जमात। Association.

असौंध (हिं० स्त्री०) दुर्गन्ध, बदबू।

असौच, अशौच देखो।

असौनामन् (हिं० वि०) ऐसे वैसे नामवाला, जिसके नामका ठिकाना न रहे।

असौन्दर्य (सं० क्लो०) अभावे नञ्-तत्। १ सौन्दर्यका अभाव, बदसूरती, भोंडापन। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। २ सौन्दर्यशून्य, बदशक्ल, भोंडा।

असौम्य (सं० त्रि०) विरोधे नञ्-तत्। १ सौन्दर्यशून्य, बदसूरत, भोंडा। २ अप्रिय, नागवार डरावना।

असौम्यस्वर (सं० त्रि०) असौम्यः कुत्सितः स्वरो यस्य, बहुव्री०। काककी तरह मन्द स्वरयुक्त, कर्कश स्वरयुक्त, कांव-कांव करनेवाला, जो बड़बड़ाता हो।

असौष्ठव (सं० क्लो०) सुष्ठ, भवम्, सुष्ठु-अण् नञ्-तत्। १ सौन्दर्यका अभाव, बदसूरती, भोंडापन। २ अयोग्यता, नाकाबिलियत। ३ अलङ्कार शास्त्रमें स्मरदशा विशेष। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। ४ सौष्ठव-रहित, बदसूरत।

अस्क (हिं० पु०) १ बुलाक, नाकमें पहननेका लटकन। नैनीतालकी ओर लटकनदार जो छोटीसी नथनी पहनी जाती, वही अस्क कहाती है।

२ मन्द्राज प्रान्तके गञ्जाम जिलेकी एक ज़मीन्दारी। इसका क्षेत्रफल १६० वर्गमील है। पहले यह गुमसूर राज्यका एक अंग रही। २ मन्द्राज प्रान्तके गञ्जाम जिलेका एक नगर। यह अक्षा १९° ३६´ ३५´´ उ० और द्राघि० ८४° ४२´ ६´´ पू० पर अवस्थित है। गुमसूर यहांसे ५ कोस दक्षिण पड़ता है। ऋषिकुल्या और महानदीके सङ्गमपर इस नगरका दृश्य विद्यमान है। नगरके पास ही ऋषिकुल्या नदीपर १९ पित्ते लम्बा इमारती पुल बना है। अस्कमें ज़मीन्दारीका हेडक्वार्टर होनेसे उसके प्रभु निवास करते हैं। नगरमें छोटी कचहरी, दवाखाना, थाना और डाकघर बना है। सन् १८३५-३६ ई०को गुमसूर विद्रोह उठनेपर सरकारी सेनाने कुछ दिनके लिये इसे अधिकार कर लिया था। इसकी चारो तरफ उपजाऊ भूमि विद्यमान है। गन्नेकी खेती अधिक होती है। इसके निकट ही जो चीनीके कारखाने हैं, उनमें हज़ारों आदमी काम करते और लाखों रुपयेका माल बनाते हैं।

अस्कन्दगिरि—युक्तप्रदेश-बांदाके एक कवि। इनका जन्म सन् १८५८ ई०में हुआ था। यह गोसाईं नवाब हिम्मत बहादुरके वंशज रहे। शृङ्गाररसकी कविता इनका प्रधान लक्ष्य थी। 'अस्कन्दविनोद' नामक काव्यग्रन्थमें इन्होंने अपना चातुर्य प्रकट किया है।

अस्कन्दित (सं० त्रि०) अचरित, अप्रतिहत, जो गिरा न हो।

अस्कन्दितव्रत (सं० त्रि०) व्रतशील, अहदका सच्चा, बातका धनी।

अस्कन्न (वै० त्रि०) स्कन्द-क्त, नञ्-तत्। १ अचरित, जो बिखरा न हो। २ अनाच्छादित, जो ढंका न हो। ३ स्थायी, पायदार।

अस्कम्भन (वै० त्रि०) स्कम्भ-ल्युट्, नञ्-तत्। १ बोधका अभाव, नासमझी। २ स्तम्भ या साहाय्यका अभाव, सहारेका न मिलना। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। ३ बोधशून्य, नासमझ।

अस्तमीके (वै० अव्य०) अस्तं माति: कीकन् धातोर्लोपश्च निपात्यते, अस्तं प्राप्यतेऽस्मिन्। अन्तिकर्म, घरपर, पास, नज़दीक।

अस्तर (फ़ा० पु०) १ भितल्ला, दोहरे कपड़ेके नीचे की तरह। २ दोहरे चमड़ेके नीचेकी तरह। ३ ज़मीन, चन्दनका तेल। इससे अतर बनता है। ४ बारीक साड़ीके नीचे लगनेवाला वस्त्र। ५ नीचेका रङ्ग। इसपर दूसरा रङ्ग चढ़ता है। (हिं०) ६ अस्त्र, हथियार।

अस्तरकारी (फ़ा० स्त्री०) १ चूनेका रगड़ रगड़ कर चढ़ाया जाना। २ बनावट, साज़।

अस्तरण (सं० क्ली०) अभावे नञ्-तत्। स्तरणका अभाव, विस्तारका न होना, न फैलनेकी हालत।

अस्तवत् (सं० त्रि०) अवरोधित, निवारित, अटका हुआ, जो रोका गया हो।

अस्तव्यस्त (सं० त्रि०) आकुल, अव्यवस्थित, असम्बद्ध, ख़राब-ख़स्ता, घसर-पसर, अटपटांग।

अस्तसङ्ख्य (सं० त्रि०) अगणित, बेशुमार।

अस्ता (वै० स्त्री०) १ आयुध, बाण, हथियार, तीर। (अव्य०) २ भवनमें, घरपर।

अस्ताग (सं० पु०) अर्हत् विशेष। यह उत्सर्पिणी युगके पन्द्रहवें अर्हत् रहे।

अस्ताघ (सं० त्रि०) अस्तं नष्टं अघं थाविस्य यत, बहुव्री०। अति गभीर, निहायत गहरा।

अस्ताचल (सं० पु०) कर्मधा०। पश्चिमाचल, अस्तपर्वत, जिस पहाड़पे आफ़ताब डूबे।

अस्ताचलावलम्बिन् (सं० त्रि०) अस्ताचलका अवलम्ब लेनेवाला, जो अस्ताचलको पकड़े हो। सन्ध्याको डूबते समय सूर्य अस्ताचलावलम्बी कहाता है।

अस्ताद्रि, अस्ताचल देखो।

अस्तापुर—उड़ीसा प्रान्तके बालेश्वर ज़िलेका एक नगर। यहां एक सरकारी स्कूलमें परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्राथमिक अध्यापन कार्यकी शिक्षा दी जाती है।

अस्तावलम्बन (सं० क्ली०) क्षितिजके पश्चिम भागपर ग्रहका उदय, उफ़क़के मग़रबी हिस्सेपे सितारेका ठहराव।

अस्तावलम्बिन् (सं० त्रि०) अस्तका अवलम्ब लेनेवाला, जो डूब रहा हो।

अस्ति (सं० अव्य०) अस्-श-तिप्। अस्तिनास्तिदिष्टं मतिः। पा ४।४।६०। १ होके, ठहरकर। (स्त्री०) २ स्थिति, विद्यमानता, हस्ती, हाज़िरी।

अस्तिकाय (सं० पु०) अस्तिकाय: स्वरूपं यस्य, बहुव्री०। जैनमतसिद्ध विद्यमान-स्वरूप पदार्थ विशेष। हालत, सूरत। अस्तिकाय पांच प्रकारका होता है,—१ जीवास्तिकाय, २ पुद्गलास्तिकाय, ३ धर्मास्तिकाय, ४ अधर्मास्तिकाय और ५ आकाशास्तिकाय। शाङ्करभाष्यमें उपरोक्त जैन अस्तिकायका मत काट दिया गया है।

अस्तिचार (सं० त्रि०) दुग्धविशिष्ट, दूधसे लबरेज़।

अस्तिचीरा (सं० स्त्री०) अस्ति चीरं यस्याः, बहुव्री०। सुपधिकारेऽस्तिक्षीरादीनां बहुव्रीहिर्वक्तव्य। (काशिका) टाप्। बहु दुग्धवती गा, ख़ूब दूध देनेवाली गाय।

अस्तित्व (सं० क्ली०) अस्ति भाव: त्व। विद्यमानता, मौजूदगी, हाज़िरी।

अस्तिनास्ति (सं० अव्य०) कदाचित्, शायद।

अस्तिनास्तिता (सं० स्त्री०) अस्तिनास्ति देखो।

अस्तिनास्तित्व (सं० क्ली०) सन्दिग्ध विद्यमानता, मशकूक मौजूदगी।

अस्तिप्रवाद (सं० क्ली०) जैन पूर्व विशेष, जैनियोंके किसी पूर्वका नाम। जैनियोंके चौदह पूर्वों वा प्राचीन लेखोंमें चौथेको अस्तिप्रवाद कहते हैं। पूर्व देखो।

अस्तिमत् (सं० त्रि०) अस्ति विद्यमानं धनमस्य, मतुप्। धनी, दौलतमन्द, रुपयेवाला। (स्त्री०) ङीप्। अस्तिमती।

अस्तिस् (सं० स्त्री०) जरासन्धसकी कन्या, प्राप्तिकी भगिनी और कंसकी पत्नी।

अस्तीन (हिं०) आस्तीन देखो।

अस्तु (सं० अव्य०) अस भावे तुन्। १ ऐसा ही हो, जो चाहे सो हो, ख़ैर, भला, क्या मुज़ायका है। २ फिर, आगे।

अस्तुङ्कार (सं० वि०) प्रबल, समर्थ, ताक़तवर, ज़ोरदार, दबा-जैसा।

अस्तुत (वै॰ त्रि॰) १ अप्रशंसित, जो तारीफके क़ाबिल न हो। २ स्तोत्रशून्य जो मन्त्रमें गाया न गया हो। (हिं॰) ३ अप्रशंसित, ग़ैरमुस्तहसिन।

अस्तुति (सं॰ पु॰) १ प्रशंसाका अभाव, अपकीर्ति शिकायत, बुरु-बुरु। (हिं॰) २ स्तुति प्रशंसा तारीफ़।

अस्तुरा (फ़ा॰ पु॰) छुर, छुरा। इससे बाल बनाते हैं।

अस्तृत (वै॰ त्रि॰) अपतिहत ज़बरदस्त अजीत।

अस्तृतयज्वन् (वै॰ त्रि॰) अदम्य रूपसे यज्ञ करनेवाला, जो यज्ञ करनेमें थकता न हो।

अस्तेन (सं॰ त्रि॰) नञ् तत्। १ साधु अच्छा, पक्का, जो चोर न हो। (क्ली॰) २ स्तेयका अभाव ईमान्दारी, चोरी न करनेकी हालत।

अस्तेय (सं॰ क्ली॰) अभावे नञ्-तत्। स्तेय या चौर्यका अभाव, ईमान्दारी, साफ़कारी। पातञ्जल सूत्रमें लिखा, कि अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह यम कहाता है।

अस्तोम (सं॰ त्रि॰) स्तुयते येन स्तुम करणे मन् नास्ति स्तोमः यज्ञादिः निरर्थक' शब्दो यस्य। अन र्थक शब्दशून्य वेदपाठका आघात न रखनेवाला।

अस्त्य (वै॰ क्ली॰) गृह, घर, मकान।

अस्तवन (सं॰ क्ली॰) स्तोत्र नास्ति न नञ् तत्। १ निन्दा, शिकायत, बुराई। २ भर्त्सन झाड़-फटकार। (त्रि॰) ३ असंस्तुत, जो मिला न हो।

अस्त्र (सं॰ क्ली॰) अस्यते क्षिप्यते अस् क्षेपणे ष्ट्रन्। १ क्षेपणीय बाणादि फेंककर मारा जानेवाला तीर वगैरह। २ आयुध हथियार। करणे ष्ट्रन्। ३ चाप कमान्। ४ रिपु वधके प्रहार साधन खड्गादि ढाल वगैरह। ५ करवाल, तलवार। ६ आयुधक शीरका नाखून। ८ चिकित्साका नश्तर वगैरह।

अस्त्रकण्टक (सं॰ पु॰) अस्त्रं कण्टक इव। बाण तीर, काँटे-जैसा हथियार। अपमान कण्टक जैसा रखनेसे बाणका यह नाम पड़ा है।

अस्त्रकार (सं॰ त्रि॰) अस्त्र करोति निर्मिमीते, अस्त्र-कृ-अण्, उप॰ समा॰। अस्त्रनिर्माणकर्ता, हथियार बनानेवाला।

अस्त्रकारक, अस्त्रकार देखो।

अस्त्रकारिन्, अस्त्रकार देखो।

अस्त्रक्षेपक (सं॰ त्रि॰) बाण फेंकनेवाला जो तीर चला रहा हो।

अस्त्रचला (हिं॰ वि॰) अस्त्र फेंकनेवाला जो तीर मार रहा हो।

अस्त्रचिकित्सक (सं॰ पु॰) अस्त्रेण शरीर नश्तर लगानेवाला तबीब।

अस्त्रचिकित्सा (सं॰ स्त्री॰) अस्त्रेण चिकित्सा, ३-तत्। अस्त्रादिसे क्षतप्रवाहिका प्रतीकार, जराही चीरफाड़। यह आठ भागमें विभक्त है,—१ छेदन चीरना, २ भेदन—फाड़ना, ३ लेखन—खुरचना, ४ वेधन-छुआना ५ एषण ढुंढ़ायो ६ आहरण-काट-छाँट, ७ विस्रावण—घावसे पूय आदिको बहा देना और ८ सीवन-ज़ख्ममें टाँके लगाना।

अस्त्रजित् (सं॰ पु॰) अस्त्रं तदाघातजं दुःखं जयति तद्विकारकत्वात्, अस्त्र जि क्विप् तुक्। कपाटवप्रहृत, हेंटुवेका पेड़।

अस्त्रजीव, अस्त्रजीविन् देखो।

अस्त्रजीविन् (सं॰ पु॰) अस्त्रेण तद्व्यापारेण जीवति, णिनि। अस्त्र द्वारा युद्धादिकर जीविका चलानेवाला, जो हथियारसे लड़ अपनी ज़िन्दगी बसर करता हो, योद्धा, सिपाही।

अस्त्रधारक अस्त्रधारिन् देखो।

अस्त्रधारण (सं॰ क्ली॰) अस्त्रका अवलम्बन, हथियारका बाँधना।

अस्त्रधारिन् (सं॰ त्रि॰) अस्त्रं धरति धारयति वा, अस्त्र धृ णिच् वा णिनि। अस्त्रधारक हथियार बाँधनेवाला।

अस्त्रनिवारण (सं॰ क्ली॰) प्रहारसे रक्षाका उपाय, हथियारकी चोटका बचाव।

अस्त्रमन्त्र (सं॰ पु॰) अस्त्राणां विमर्दनार्थयोर्मन्त्र, ६ तत्। तन्त्रोक्त फट् मन्त्र अस्त्रप्रयोग एव प्रसिद्ध अस्त्रके आवर्तनका मन्त्र।

अस्त्रमार्ज (सं॰ पु॰) अस्त्रं मार्ष्टि, अस्त्र-मृज अण्, उप॰ समा॰। साफ़गर, सैक़लगर, हथियार पर शान रखनेवाला, जो हथियार साफ़ करता हो।

अस्त्रमार्जक, अस्त्रमार्ज देखो।

अस्त्रयुद्ध (सं० क्ली०) अस्त्रद्वारा युद्ध, हथियारकी लड़ाई।

अस्त्रलाघव (सं० क्ली०) अस्त्रनैपुण्य, हथियार चलानेकी सफ़ाई।

अस्त्रविद् (सं० पु०) अस्त्रं तत्प्रयोगादि वेत्ति, अस्त्र-विद्-क्विप्, ६-तत्। अस्त्रप्रयोगादिमें अभिज्ञ, जो हथियार खूब चलाता हो।

अस्त्रविद्या (सं० स्त्री०) ६-तत्। अस्त्रक्षेपण एवं आकर्षणज्ञापक विद्या, अस्त्रक्षेपणादिका ज्ञान, जङ्गका इल्म। २ अस्त्रविद्यावोधक शास्त्र, जिस किताबमें लड़ायी सिखानेकी बातें रहें।

अस्त्रविद्वस्, अस्त्रविद् देखो।

अस्त्रवृष्टि (सं० स्त्री०) वाणकी वर्षा, तीरोंकी बारिश।

अस्त्रवेद (सं० पु०) विद्यते ज्ञायते येन, विद् करणे घञ्, अस्त्रस्य तत्क्षेपणादेः वेदः शास्त्रम्, ६-तत्। धनुर्वेद, जिस शास्त्रमें हथियार चलानेकी तरकीबें रहें।

अस्त्रवैद्य (सं० पु०) अस्त्रचिकित्सक, जर्राह, नश्तर लगानेवाला हकीम।

अस्त्रशस्त्र (सं० क्ली०) सकल प्रकार आयुध, सब क़िस्मका हथियार, तलवार बन्दूक वग़ैरह।

अस्त्रशाला (सं० स्त्री०) अस्त्रागार, सिलहखाना, हथियार रखनेकी जगह।

अस्त्रशिक्षा (सं० स्त्री०) सामरिक व्यायाम, जङ्गी कसरत, हथियार चलानेकी तालीम।

अस्त्रसायक (सं० पु०) अस्त्रं क्षेप्यं सायक इव। १ नाराचास्त्र। नाराचास्त्र वाणकी तरह चलनेसे अस्त्र-सायक कहाता है। अस्यते क्षिप्यते शब्दनेन, अस करणे ष्ट्रन् ततः कर्मधा०। २ सकल लौहमय वाण, लोहेका तीर।

अस्त्रहीन (सं० त्रि०) अस्त्रेण तत्प्रयोगेन वा हीनम्, ३-तत्। अस्त्रशून्य, अस्त्रव्यापारशून्य, वेहथियार, जो हथियार चलाना जानता न हो।

अस्त्रागार (सं० क्ली०) ६-तत्। आयुधागार, अस्त्रगृह, सिलहखाना, हथियार-घर।

अस्त्राघात (सं० पु०) ६-तत्। अस्त्रका आघात, अस्त्रका प्रहार, हथियारकी चोट।

अस्त्राहत (सं० त्रि०) ३-तत् अस्त्रद्वारा आहत, हथियारसे मारा गया।

अस्त्रि (वे० पु०) वाण मारनेवाला, जो शख्स तीर चलाता हो।

अस्त्रिन् (सं० त्रि०) अस्त्रं धनुरस्त्यस्य इनि। धनुर्धर, शस्त्रधारी, तीर-कमान्से लड़नेवाला, जो हथियार बांधे हो।

अस्त्री (सं० स्त्री०) १ स्त्रीभिन्न, जो चीज़ औरत न हो। व्याकरणमें—स्त्रीलिङ्गको छोड़ पुंलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग।

अस्त्रीक (सं० त्रि०) पत्नीरहित, स्त्रीशून्य, वे-औरत, जो औरत रखता न हो।

अस्त्रैण (वे० त्रि०) अस्त्रीक देखो।

अस्थन्वत् (वे० त्रि०) अस्थिमय, हड्डीदार।

अस्थल (हिं०) स्थल देखो।

अस्थला (सं० स्त्री०) अप्सरस् विशेष, किसी परीका नाम।

अस्था (वे० स्त्री०) शमक्षोटि, ह्लादिनी, सेंका, बिजली, गाज।

अस्थाग (सं० त्रि०) अस्थामस्थितिं गच्छति, अस्था-गम-ड। अगाध, अतलस्पर्श, निहायत गहरा।

अस्थान (सं० क्ली०) अप्राशस्त्ये नञ्-तत्। १ अप-कृष्ट स्थान, अयोग्य स्थान, खराब जगह। (त्रि०) अतलस्पर्शी, निहायत गहरा। (अव्य०) ३ अयुक्त रूपसे, वेमौके। (हिं० पु०) ४ स्थान, जगह।

अस्थाने (सं० अव्य०) स्थाने युक्तम्, नञ्-तत्। अयुक्तरूपसे, नाक़ाबिल तौरपर।

अस्थायिन् (सं० त्रि०) न तिष्ठति स्था-णिनि-युक्, नञ्-तत्। चञ्चल, शिताव, जल्द गुज़र जानेवाला। (स्त्री०) ङीप्। अस्थायिनी।

अस्थायी (हिं०) स्थायी देखो।

अस्थावर (सं० त्रि०) विरोधे नञ्-तत्। १ जङ्गम, मनक़ूला, जो चल-फिर सकता हो। (हिं०) २ स्थावर, ग़ैर-मनक़ूला, जो चलता फिरता न हो।

अस्थि (सं० क्ली०) अस्यते अस (असिक्थिभ्यां क्थिन्। उण् ३।११४) इति क्थिन्। हाड़, अस्थि शब्दके ये कई पर्याय दिये गये हैं,—कीकस, कुल्य, मेदोज। फलके बीज गुठलीको भी अस्थि कहते हैं।

आयुर्वेदशास्त्रके मतानुसार मेद शरीरके अग्निसे पकता है। उसके बाद वायुद्वारा शोषित होनेपर अस्थि पैदा होता है। हाड़ शरीरका सारभाग है। जैसे वृक्षका सारभाग हीरको, उसी तरह शरीरका सारपदार्थ हाड़ देहकी रक्षा करता है। इसीसे शरीरका मांस और चमड़ा नष्ट हो जानेपर भी अस्थि नष्ट नहीं होता।

रासायनिक परीक्षा द्वारा मनुष्यके हाड़में सैकड़े पीछे ये सब चीजें पाई जाती हैं —

आन्तवपदार्थ (जिलेटिन)	३३ ३०	भाग।
फस्फेटचूर्ण	५१ ०४	"
कार्बन चूर्ण	११ ३०	"
फस्फेट अव मैग्नेसिया	१ १६	
सोडा और लवण	१ २०	"

प्रथम अवस्थामें हाड़की बनावट मांसपेशी जैसी रहती है। इसमें छोटे-छोटे छिद्र एवं साथ मिले रहते हैं। परन्तु सिरकी खोपड़ी और कन्धेके हाड़में वैसा नहीं रहता। क्रमसे इस मांसपेशीमें पार्थिव पदार्थ, फस्फेटचूर्ण और कार्बन चूर्णके जमनेसे वह सख्त हो जाता है। किसी प्रकारके अम्लमिश्र द्रावकमें हाड़ भिगोकर रखनेसे पार्थिव पदार्थ गल और वह फिर कोमल एवं स्थितिस्थापक हो जाता है। हाड़में अत्यन्त ताप लगानेसे आन्तव पदार्थ नहीं रहता, इसीसे जराता किया देनेपर वह चूर-चूर हो जाता है। अतएव दोनों प्रकारके पदार्थोंके न रहनेसे हाड़ कठिन होना कैसे सम्भव है।

बचपनके हाड़में पार्थिव पदार्थ कम रहता है, इसलिये कितने ही छोटे लड़कोंके इतना गिर पड़नेपर भी हड्डी नहीं टूटती। फिर परिपक्व वयसमें थोड़ी सी चोट लग जानेसे ही बहुत पीड़ा होती और सहज ही हाड़ टूट जाता है।

शिशुओंको यदि दुग्ध द्वारा लालन पालन न करनेसे उनके हाड़में पार्थिव पदार्थ कम पैदा होता, सुतरां वह कोमल हो जाता है। इसीसे कितने ही रोगी बच्चोंके उठकर चलने फिरनेपर शरीरके भारसे पैर टेढ़े पड़ते हैं। इसका नाम है रिकेट्स रोग। दरिद्रोंके घरमें ही यह अधिक देखा जाता है।

अस्थि ही शरीर निर्माणका प्रधान उपादान है। देहकी प्रधान प्रधान इन्द्रियां रक्षा करनेके लिये ही अस्थिमें गह्वर निर्मित होता और देह सुकोमलसे आवृत होनेके लिये कोमलांश इसके साथ मिलता है। हाड़ श्वेतवर्ण, कठिन और स्थितिस्थापक है। हाड़का उपरिभाग कठिन, संहत और चिकना तथा भीतरी भाग ठीक मधुमक्खीके छत्ते जैसा छिद्र-युक्त है।

शरीरके हाड़ चार श्रेणियोंमें विभक्त हैं, यथा—दीर्घास्थि, क्षुद्रास्थि, प्रशस्तास्थि एवं विषमास्थि। शरीरकी बांह एवं पदशाखामें दीर्घास्थि है। ये सब हाड़ खोखले हैं। इनके भीतर मज्जा रहती है।

सारे कङ्कालमें २८७ पृथक् पृथक् हाड़ हैं। यथा—मेरुदण्डमें २६, खोपड़ी ८ कर्णास्थि ६ मुखास्थि १४, पञ्जर एवं वक्षोस्थि २६ ऊर्ध्वशाखा ६४, अधःशाखा ६०। इनके सिवा दांत, ध्यालिका पेशीभेद एवं अन्यान्य सामियक अस्थियां ८० हैं।

हमारे देशके आयुर्वेद मतसे मनुष्यके शरीरमें सर्वसमेत ३०० अस्थि हैं। इनमें दो हाथों और दो पैरोंमें १२०, दोनों पार्श्व, कटिदेश, वक्षःस्थल, पृष्ठ एवं उदरमें ११७, ग्रीवाके ऊपर ६३—यही ३०० अस्थि हैं।

पैरकी प्रत्येक अङ्गुलीमें तीन-तीन करके १५, पदतलमें ६, कूर्च (झुमका)में २ एड़ीमें १, गुल्फमें २, जानुमें १, ऊरुदेशमें १, इसी तरह दूसरे पैरमें भी ३० अस्थि रहती हैं सुतरां हाथ और पैरमें सब मिलाकर १२० हुये।

प्रत्येक पार्श्वमें छत्तीस छत्तीस करके ७२, लिङ्ग या योनिमें १, गुह्यमें १, दोनों नितम्बोंमें २, पृष्ठवंशमें १ वक्षःस्थलमें ८, पृष्ठमें ३० और मेरुदण्डमें २ अस्थि हैं।

ग्रीवादेशमें ९, कण्ठनालीमें ४, दोनों हनुओंमें २,

दन्तमें ३२, नासिकामें ३, तालुमें १, गण्डस्थलमें २, दोनों कानोंमें २, शङ्ख (ललाट)में २ और मस्तकमें ६ अस्थि हैं।

शल्यतन्त्रमें ये सब अस्थि पांच श्रेणियोंमें विभक्त हैं। यथा—१ तरुणास्थि, २ कपालास्थि, ३ रुचकास्थि, ४ वलयास्थि, ५ नलकास्थि।

अक्षिकोष, नासिका, कर्ण एवं ग्रीवामें तरुणास्थि, मस्तक, शङ्ख, तालु, गण्डस्थल, स्कन्ध, जानु एवं नितम्बमें कपालास्थि, दन्तमें रुचकास्थि; हस्त, पद, पार्श्व, पृष्ठ, वक्ष और उदरमें वलयास्थि; हस्तपदके अङ्गुलितल, कूर्चदेश, मणिबन्ध, बाहुद्वय एवं जङ्घामें नलकास्थि है।

शरीरके किस किस स्थानमें कितनी हड्डियां हैं और उनका गठन आदि कैसा है, इसका विस्तारित विवरण उस उस शब्दमें देखो।

मनुष्य प्रभृतिके कुछ हाडोंके भीतर मज्जा है। अनेक मछलियोंके कांटोंके अन्दर छेद नहीं होता। हाथी आदि, कुछ जानवरोंके शिरके हाडमें वायु रहता है। इच्छा करने ही से हमलोग निश्वास खींच फेफडेको वायुसे भर सकते हैं। फेफडा वायुसे परिपूर्ण रहनेपर जलमें डूब जाते भी शरीर ऊपर उतरा आता है। पक्षी भी इसीतरह निश्वास खीच कर हाडके भीतर वायु भर सकते हैं। इसीसे इच्छा करते ही वे सब जमीनपरसे अनायास ही ऊपर उड जाते हैं।

दुर्वल मनुष्यके लिये यदि मांसका शोरवा पकाया जाय, तो उसमें हाड रहना आवश्यक है। कारण, हाडका जिलेटिन शोरवेके साथ मिल जानेसे वह लघु पथ्य होता है। जिलेटिन पुष्टिकर है, कि नहीं इसमें मतभेद है। परन्तु यह स्पष्ट देखा जाता है, कि कुत्ते हाड खाकर हृष्टपुष्ट होते हैं। फिर यह भी सुननेमें आता है, कि दुर्भिक्षके समय नरवे और स्युडेनके आदमी मछलीका कांटा और अनेक जन्तुओंका हाड खाकर प्राणधारण करते हैं।

सचराचर हाडकी छुरी, कङ्घी आदि और नाना प्रकारके अस्त्रोंकी मूठ बनती है। असभ्य लोग हाडसे तीर और बल्लमकी गांसी तय्यार करते हैं। दक्षिण अमेरिका और तातारकी कोई कोई जाति लकड़ीके अभावमें हाड जलाकर आग बनाती है। उसी आगसे उसको रसोई आदिका काम चलता है। भूमिमें अस्थिभस्म डालनेसे उसकी उर्वरताशक्ति बढ़ती है। हाडके वायलेसे चीनी आदि कितनी ही चीजें साफ की जाती हैं।

अस्थिक, अस्थि देखो।

अस्थिकुण्ड (सं० क्ली०) नरकविशेष। इस नरकमें हड्डी ही हड्डी देखायी देती है। जो लोग गयामें विष्णुपदपर पिण्डदान नहीं करते, वह अस्थिकुण्ड-नरकमें डाले जाते हैं। (ब्रह्मवैवर्त)

अस्थिकृत् (सं० पु०) करोति, कृ-क्विप् अस्थ्नः कृत्, ६-तत्। अस्थिकारक मेदोधातुविशेष, मग़ज़, हड्डीका गूदा। वैद्यशास्त्रमतमें मेदोधातुसे अस्थि बनता है।

अस्थिगतज्वर (सं० पु०) अस्थिमें पहुंचा हुआ ज्वर, हड्डीका बुखार। भेद एवं अस्थिका कूजन, श्वास, विरेक, छर्दि और गात्रोंका विक्षेपण अस्थिगतज्वरमें होता है। (वैद्यकनिघण्टु) इसका प्रतिकार वास्तिघ्न औषध, वस्तिकर्म और अभ्यङ्गोद्वर्तन है।

अस्थिग्रन्थि (सं० पु०-क्ली०) ग्रन्थिरोग, गांठकी बीमारी।

अस्थिच्छलित (सं० क्ली०) सुश्रुतोक्त काण्डभग्न नामक रोग विशेष, शिकस्तगी-उस्तुख़ान्, हड्डी-टूटन।

अस्थिज (सं० पु०) अस्थ्नो जायते, अस्थि-जन-ड। १ अस्थि-धातुजात मज्जा, मग़ज़, गूदा। २ वज्र, बिजली, गाज। (वै० त्रि०) ३ अस्थिमें उत्पन्न, जो हड्डीसे पैदा हो।

अस्थिजननी (सं० स्त्री०) १ वसाधातु, चर्बी। २ मेदो-धातु, मगज़, गूदा।

अस्थित (सं० त्रि०) चञ्चल, नापायदार, जो खमोश न खडा हो।

अस्थिति (सं० स्त्री०) अभावे नञ् तत्। १ स्थितिका अभाव, अस्थैर्य, जगह या हालतकी अदमभौजदगी। २ मर्यादाका अभाव, हदका न होना। (त्रि०) नञ्-

बहुव्री०। ३ मर्यादाशून्य, बेहद। ४ स्थैर्यरहित, डांवांडोल।

अस्थितुण्ड (सं० पु०) पक्षीव कठिनं तुण्डमस्य। पक्षिविशेष कोई चिड़िया। इसके मुखमें हड्डी जैसी हड्डी रहती है।

अस्थितेजस्, अस्थिसार देखो।

अस्थितोद (सं० पु०) १ अस्थिकी सूचीविद्धवत् वेदना, हड्डीमें सूई चुभने जैसा दर्द। २ अस्थिपीड़ा हड्डीकी बीमारी।

अस्थित्वच् (सं० स्त्री०) अस्थिको त्वक् हड्डीके ऊपरकी झिल्ली।

अस्थिधन्वन् (सं० पु०) अस्थिमयं धनुरस्य अल्प समा०। शिव हड्डीको कमान् बांधनेवाले महेश। अस्थिनिर्मित धनुष रखनेसे शिवको अस्थिधन्वा कहते हैं।

अस्थिपञ्जर (सं० पु०) अस्थिपञ्जर इव। १ शरीर रक्षक अस्थिसमूह जिसको हड्डीका ठठरी। २ पिञ्जराकार कहाल ठठरी। कङ्काल देखो।

अस्थिप्रक्षेप (सं० पु०) मृतस्य अस्थ्नां गङ्गायां यथा विधि प्रक्षेपः, ६ तत्। सत्कार बाद मृत व्यक्तिके अस्थिविभागका क्रमसे गङ्गामें समर्पण किया जाना हड्डीका गङ्गामें सेराना।

अस्थिफल (सं० पु०) पनसादि कटहलका पेड़।

अस्थिभक्ष (सं० पु०) अस्थि भक्षयति अस्थि भुज॰ भक्ष-अ। १ कुक्कुट, कुत्ता। २ शृगाल गीदड़। ३ अस्थिखानेवाली पक्षी, जो चिड़िया हड्डी निगल जाती हो।

अस्थिभक्षा (सं० स्त्री०) ओषधि विशेष, कोई जड़ी बूटी।

अस्थिभङ्ग (सं० पु०) अस्थ्नो भङ्गः, ६ तत्। १ अस्थि भञ्जन शिकस्तगी उस्तुखान् हड्डीटूटन। २ इसी नामका रोगविशेष हड्डफूटन।

अस्थिभुज, अस्थिभक्ष देखो।

अस्थिभूयस् (सं० त्रि०) अस्थिमय, सूखा हुआ, जिसमें सूखकर हड्डी ही हड्डी रहे।

अस्थिभेद (सं० पु०) १ अस्थिभङ्ग, शिकस्तगी उस्तु खान्। २ अस्थिविशेष, किसी किस्मकी हड्डी।

अस्थिभेदक (सं० त्रि०) अस्थि भङ्ग करनेवाला जो हड्डी तोड़ता हो।

अस्थिमत् (सं० त्रि०) अस्थीनि सन्त्यस्य मतुप्। युक्तसंधिविशिष्ट, जो हड्डी ही हड्डी रखता हो।

अस्थिमय (सं० त्रि०) अस्थ्नो विकार मयट्। अस्थिनिर्मित, हड्डीका बना हुआ, जिसमें हड्डी ही हड्डी रहे।

अस्थिमर्म (सं० स्त्री०) ६ तत्। अस्थिका मर्म, हड्डीका नाजुक मुकाम। यह अष्टस्थल होता है। कटिमें दो, नितम्बमें दो, अंसफलकमें दो और शङ्खमें दो अस्थिमर्म रहता है।

अस्थिमाला (सं० स्त्री०) अस्थिनिर्मिता माला। १ अस्थिनिर्मित जपकी गुटिका हड्डीसे बनी जप करनेकी माला। ६ तत्। २ अस्थिश्रेणी, हड्डीकी कतार। ३ अस्थिसमूह, हड्डीका ढ़ार।

अस्थिमालिन् (सं० पु०) अस्थिमाला शवकपालास्थि समूहोऽस्त्यस्य, अस्थिमाला इनि। शिव, हड्डीका हार पहननेवाले महादेव।

अस्थियुज् (सं० पु०) अस्थि युनक्ति, युज् क्विप्। हड़जोड़का पेड़।

अस्थियोग (सं० पु०) भग्न अस्थिका संयोग, टूटी हड्डीका मिलान।

अस्थिर (सं० त्रि०) न स्थिरम् नञ् तत्। १ स्थिर न रहनेवाला नापायदार, जो टिकता न हो। २ कम्पायमान, चञ्चल, चुलबुला, जो कांप रहा हो। ३ अनिश्चित, मुश्तबा नामालूम। ४ अविश्वसनीय, नाक़ाबिल एतबार, जो पक्का न हो। (क्लि०) ५ स्थिर, टिका हुआ।

अस्थिरता (सं० स्त्री०) १ स्थिरताका अभाव, चाञ्चल्य, अनिश्चितता, नापायदारी चुलबुलाहट, तरमुर, डांवांडोलपन। (क्लि०) २ ठहराव मज़बूती।

अस्थिरत्व (सं० क्ली०) अस्थिरता देखो।

अस्थिराङ्कुर (सं० पु०) त्रिरताल वृक्ष गोल-मड़ेका पेड़।

अस्थिवत् (सं० त्रि०) अस्थिमय,उस्तुखानी, हड्डीदार।

अस्थिविग्रह (सं० पु०) अति-शोषत्वात् अस्थि

मारो विग्रहो देहो यस्य, बहुव्री०। १ शिवके अनुचर भृङ्गी। इनके सूखे शरीरमें हड्डी ही हड्डी देख पड़ती है। (त्रि०) २ अतिक्षीण शरीर-युक्त, जो सूखकर लकड़ी बन गया हो।

अस्थिशृङ्खला (सं० स्त्री०) अस्थ्नां शृङ्खलेव योजनहेतुः। अस्थिसंहार, हड़जोड़।

अस्थिशृङ्खलिका, अस्थिशृङ्खला देखो।

अस्थिशेष (सं० त्रि०) अस्थिमात्रं शेषो यस्य, शाक० बहुव्री०। मांसादिशून्य, अतिकृश, निहायत लागर, बहुत दुबला, जिसके जिस्मपे हड्डी ही हड्डी देख पड़े।

अस्थिशोष (सं० पु०) अस्थिका निर्जलत्व और क्षय, हड्डीकी खुश्की और घटती।

अस्थिसंहार (सं० पु०) अस्थीनि संहरति योजयति, अस्थि-सम्-हृ-अण्। ग्रन्थिमान् वृक्ष, हड़जोड़का पेड़।

अस्थिसंहारक (सं० पु०) गरुड़ पक्षी, हड़गीला।

अस्थिसंहारिका (सं० स्त्री०) अस्थिसंहार देखो।

अस्थिसङ्घात (सं० पु०) अस्थिमेलनस्थल, हड्डीके जोड़की जगह। अस्थिसङ्घात अष्टादश होते हैं,— गुल्फमें पांच; जानु, वङ्क्षण, कटिदेश एवं मस्तकमें एक-एक।

अस्थिसञ्चय (सं० पु०) मृतस्य दाहानन्तरं अस्थ्नां सञ्चयः। शवदाहानन्तर चिताके अस्थिका संग्रह, मुर्दा जलाने बाद चिताकी हड्डियोंका इकट्ठा करना। वैदिक समय अस्थि इकट्ठा कर ब्राह्मण मट्टीमें गाड़ देते थे। आज भी अग्निहोत्री ब्राह्मण और क्षत्रिय राजा ऐसा ही करते हैं। सुविधा पानेसे प्रायः सकल ही मश्चित भस्म और अस्थिको गङ्गाजलमें छोड़ते हैं। संवर्तने लिखा है,—प्रथम, तृतीय, पञ्चम, सप्तम अथवा नवम दिन ज्ञातिके साथ चितासे अस्थिसञ्चय करना चाहिये। किसी स्थलमें द्वितीय दिन भी अस्थि-सञ्चयका विधान है। वैष्णव चतुर्थ दिवस अस्थिसञ्चय करते हैं। अन्त्येष्टि शब्द देखो।

अस्थिसम्भानकर (सं० पु०) लशुन, हड्डीमें घुस जानेवाला लहसुन।

अस्थिसम्धानजनी (सं० स्त्री०) अस्थिसंहार देखो।

अस्थिसन्धि (सं० स्त्री०) १ अस्थिसम्मेलनस्थान, हड्डी मिलनेकी जगह। २ अस्थियोग, टूटी हड्डीका मिलान।

अस्थिसन्धिक, अस्थिसंहार देखो।

अस्थिसमर्पण (सं० क्ली०) मृत व्यक्तिके अस्थिका गङ्गामें फेंका जाना, हड्डीका सेराना।

अस्थिसमुद्भव (सं० पु०) मज्जा, चर्बी।

अस्थिसम्बन्धन (सं० पु०) राल, धूना।

अस्थिसम्भव (सं० पु०) अस्थिः सम्भवः कारणं यस्य, बहुव्री०। १ अस्थिजात मज्जा धातु, हड्डीसे पैदा होनेवाली चर्बी। २ वज्र। इन्द्रने दधीची मुनिकी हड्डियोंसे वज्र बनाया था। इसीसे वज्रको अस्थि-सम्भव कहते हैं। ३ (त्रि०) अस्थिसे उत्पन्न, जो हड्डीसे पैदा हो।

अस्थिसम्भवस्नेह (सं० पु०) मज्जा, चर्बी।

अस्थिसार (सं० पु०) अस्थ्नां सारः पाकपरिणामः, ६ तत्। १ मज्जा धातु, चर्बी। (त्रि०) अस्थ्येव सारो यस्य, बहुव्री०। २ रक्तमांसशून्य, जिसमें गोश्त और खून न रहे। चलित भाषामें अति शीर्ण व्यक्तिको भी अस्थिसार कहते हैं।

अस्थिसारस्थिता (सं० स्त्री०) मज्जा, चरबी।

अस्थिस्थूण (सं० पु०) शरीर, जिस्म, जिस चीज़में हड्डीके खम्भे रहें।

अस्थिस्नेह (सं० पु०) मज्जा धातु, चरबी।

अस्थिस्नेहसंज्ञ, अस्थिस्नेह देखो।

अस्थिस्रांस (वै० त्रि०) अस्थिको पृथक् पृथक् गिर-वानेवाला, जो हड्डियोंको इधर-उधर बिखरवा देता हो।

अस्थूरि (वै० पु०) न तिष्ठति, स्था बाहु० कूरि। १ बहु अश्वयुक्त रथ, जिस गाड़ीमें बहुतसे घोड़े जुतें। (त्रि०) २ बहु अश्वयुक्त, जिसमें एकसे ज़्यादा घोड़े रहें। ३ एक ही ओर न रखनेवाला, जो एकसे ज़्यादा पहलू रखता हो। "अस्थूरि णो गार्हपत्यानि सन्तु।" (ऋक् ६।१५।१९।)

अस्थूल (सं० त्रि०) १ लघु, विरल, सूक्ष्म, पतला, जो मोटा न हो। (हिं०) २ स्थूल, मोटा, भारी।

अस्थेयस् (सं॰ त्रि॰) चपल, अनवस्थित अधीर, नापायदार बेसबात, सुतम्यर, जो ठहरा न हो।

अस्थैर्य (सं॰ क्ली॰) अभावे नञ् तत्। १ चपलता, अधीरे नापायदारी, बेसबाती। (त्रि॰) नञ् बहुव्री॰। २ स्थैर्यहीन, बेसबात, जो ठहरा न हो।

अस्नाह (वै॰ त्रि॰) स्नानसे प्रेम न रखनेवाला, जो नहाता न हो।

अस्नान (हिं॰) स्नान देखो।

अस्नाविर (वै॰ त्रि॰) स्नावा शिरा यस्मिन् न विद्यते नञ्-बहुव्री॰। शिरा-वर्जित, स्नायु शरीर शून्य, नसें न रखनेवाला।

अस्निग्ध (सं॰ त्रि॰) १ कर्कश, परुष, कठिन, रूखा सख्त, जो चिकना न हो। २ निर्दय, नामेहरबान्।

अस्निग्धदारु (सं॰ क्ली॰) अस्निग्धं स्निग्धचिक्कणं दारु कर्मधा॰। देवदारु।

अस्निग्धदारुक, अस्निग्धदारु देखो।

अस्नेह (सं॰ पु॰) अभावे नञ् तत्। १ स्नेहका अभाव मुहब्बतकी अदमसौजूदगी। (त्रि॰) नञ् बहुव्री॰। २ स्नेहशून्य मुहब्बतसे खाली।

अस्पताल (सं॰ क्ली॰) Hospital औषधालय दवाखाना।

अस्पन्द (सं॰ पु॰) अस्पन्दन देखो।

अस्पन्दन (सं॰ क्ली॰) अभावे नञ् तत्। १ स्पन्दन का अभाव, अदमहरकती। (त्रि॰) नञ् बहुव्री॰। २ क्रियाशून्य, हरकत न करनेवाला।

अस्पर्श (सं॰ पु॰) स्पृश भावे अम्, अभावे नञ् तत्। १ स्पर्शका अभाव, जिस बातमें छू न सकें। (हिं॰) २ स्पर्श, छुवायी। (त्रि॰) नञ् बहुव्री॰। ३ स्पर्शशून्य, जो छूता न हो।

अस्पर्शन (सं॰ क्ली॰) अन्यत्र वस्तुका न छूना, नापाक चीज़से किनाराकशी।

अस्पर्शनीय (सं॰ त्रि॰) स्पर्शके अयोग्य, अछूत, नापाक, जिसे छू न सकें।

अस्पर्शयोग (सं॰ पु॰) नास्ति स्पर्शं विषयसम्बन्धो यत्र तादृशो योगः, कर्मधा॰। १ विषयसम्बन्धशून्य जिस बातमें किसी वस्तुका स्पर्श न रहे। २ निर्विकल्पक ज्ञान, निराकी समझ।

अस्पर्शा (सं॰ स्त्री॰) आकाशगङ्गा आसमानी बेल।

अस्पर्शित (सं॰ त्रि॰) जो छूआ न गया हो।

अस्पष्ट (सं॰ त्रि॰) नञ् तत्। अव्यक्त, अप्रकट, नासाफ, नामालूम।

अस्पृत (वै॰ त्रि॰) अनिवार्य दुर्धर, गैर-क़ाबिल सुक़ाबिलत, नाक़ाबिल-मुक़ाबला, जो जीता न गया हो।

अस्पृश्य (सं॰ त्रि॰) न स्प्रष्टुमर्हम्, अर्हार्थे यत्, नञ्-तत्। स्पर्शागोचर, नाक़ाबिल-मस, जो छूने लायक़ न हो।

अस्पृष्ट (सं॰ त्रि॰) स्पर्श न किया हुआ, जो छूआ न गया हो।

अस्पृष्टपुरुषान्तरस्त (सं॰ त्रि॰) अतिशय शुद्ध, निहायत पाकीज़ा, जो दूसरेसे छू न गया हो।

अस्पृष्टवह्नि (सं॰ त्रि॰) अग्निका स्पर्श न किये हुआ, जो आगसे छू न गया हो।

अस्पृष्टि (सं॰ स्त्री॰) स्पर्शका अभाव, न छूनेकी हालत, छूआछूतसे किनारा।

अस्पृह (सं॰ त्रि॰) १ अनिच्छुक, सन्तुष्ट, वाञ्छित न रखनेवाला, मुतसिम्, जो चाहती न हो। २ विरक्त, तारिक।

अस्पृहणीय (सं॰ त्रि॰) अवाञ्छ्य, अनिष्ट, नापसन्द, नामरगूब, नारवा जो चाहने लायक़ न हो।

अस्पृहा (सं॰ स्त्री॰) अभावे नञ्-तत्। १ इच्छाका अभाव वाञ्छाका न होना। (त्रि॰) नञ्-बहुव्री॰। २ स्पृहारहित, निस्पृह, जो चाहती न हो।

अस्फुट (सं॰ त्रि॰) न स्फुटं प्रकाशम् नञ्-तत्। १ प्रकाशरहित अव्यक्त नासाफ, पोशीदा दिखाई न पड़नेवाला। (क्ली॰) २ अव्यक्त वाक्य, नासाफ कलाम जो बात समझ न पड़ती हो।

अस्फुटफल (सं॰ क्ली॰) अव्यक्त परिणाम नासाफ नतीजा। २ ज्योतिषादिका स्थूल फल, मुख्तसर दर्मेरवका मोटा रकबा।

अस्फुटवाच्, अस्फुटवाक् देखो।

अस्फुटवाच् (सं॰ त्रि॰) अस्फुटा अव्यक्ता वाक् यस्य। १ अव्यक्तवर्णकथित, तुतलाकर बोलनेवाला, जो साफ

न बोलता हो। (स्त्री०) अस्फुटा चासौ वाक् चेति, कर्मधा०। २ अव्यक्त वाक्य, नासाफ़ कलाम, तोतली बोली।

अस्फोत (सं० पु०) काञ्चनद्रुम, कचनारका पेड़।

अस्मत्रा (सं० अव्य०) अस्मद् बाहु० त्राच्। हमारे साथ, हमलोगोंमें।

अस्मत्राञ्च्, अस्मद्राच् देखो।

अस्मद् (सं० त्रि०) अस्यते क्षिप्यते देहनाशात् पश्चात् असु क्षेपणे (युष्यसिभ्यां मदिक्। उण् १।१३९) इति मदिक्। उत्तम पुरुष, मैं यह अर्थ समझानेका सर्वनामविशेष, देहाभिमानी जीव। अस्मद् शब्दका रूप तीनो लिङ्गोंमें एक ही सा रहता है।

युष्मद् और अस्मद् शब्दके उत्तर इदमर्थमें छ एवं अण् प्रत्यय होता है। आवयोः अस्माकं वा अयं अस्मदीयः। यह हम दोनों आदमियों वा बहुत आदमियोंका है। (तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ। पा ४।३।२) खञ् और अण् प्रत्यय परे रहनेपर बहुवचनार्थमें युष्मद् शब्दके स्थानमें युष्माक, अस्मद् शब्दके स्थानमें अस्माक आदेश होता है। आस्माकीनः। आस्माकः। यह हम दो आदमियोंका है। (तवकममकावेकवचने। पा ४।३।३) खञ् एवं अण् प्रत्यय परे रहनेसे एकवचनार्थमें युष्मद् शब्दके स्थानमें तवक एवं अस्मद् शब्दके स्थानमें ममक आदेश होता है। मामकीनः। मामकः। यह मेरा है। मम अयम् अस्मद् छ। मदीय। (प्रत्ययोत्तरपदयोश्च। पा ७।२।९८।) प्रत्यय वा उत्तर पद परे रहनेसे म पर्यन्त एकार्थ युष्मद् शब्दके स्थानमें त्वद् एवं अस्मद् शब्दके स्थानमें मद आदेश होता है। मदीयः। उत्तरपद परे रहनेसे, मत्पुत्रः ऐसा रूप होगा, तसिल् अस्मत्तः। एकवचनमें मत्तः। मामिच्छति। (सुप आत्मनः क्यच्। पा ३।१।८। मद्यति। अस्मानिच्छति अस्मद्यति। मामाचष्टे मापयति। (सि० कौ०। पा ३।१।२१ सूत्रमें।) मादयतीति म्याप्यम्। (सि० कौ० उक्त सूत्रमें)

अस्मदीय (सं० त्रि०) हमारा, हम लोगोंका।

अस्मद्रात (वै० त्रि०) हम लोगों द्वारा दिया हुआ।

अस्मद्रुह् (वै० त्रि०) अहित, विपक्ष, अननुकूल, बद अन्देश, मुखालिफ़, जो हमसे या मुझसे दग़ा करता हो।

अस्मद्र्यक् (वै० अव्य०) हमारी ओर, हम लोगोंकी तर्फ़।

अस्मद्र्यञ्च् (वै० त्रि०) अस्मानञ्चति, अस्मद्-अञ्च-क्विन् अद्र्यादेशः। १ अस्मदभिमुख, हमारे प्रति प्रसन्न, हमसे मुखातिब, जो हमारी ओर घूमा हो। (अव्य०) २ हमारी ओर, हम लोगोंकी तर्फ़।

अस्मद्विध (सं० त्रि०) अस्माकमिव विधा धर्मोऽस्य, बहुव्री०। १ अस्मादृश, हमारे-जैसा, मेरी तरह। २ हम लोगोंमें एक।

अस्मन्त (सं० क्ली०) चुल्ली, चूल्हा, भट्टी।

अस्मयु (वै० त्रि०) आत्मन अस्मान् इच्छति, अस्मद्-क्यच्-उ बाहु० टलोपः। हमें चाहनेवाला, जो हमारे लिये अच्छा हो।

अस्मरण (सं० क्ली०) अनवधान, स्मृतिलोप, फ़रामोशी, बिसराहट, याद न रहनेकी हालत।

अस्मरणीय (सं० त्रि०) स्मरणके अयोग्य, जो याद आने काबिल न हो।

अस्माक (वै० त्रि०) अस्माकमिदम्, अस्मद्-अण् अस्मकादेशः पृषो० वेदे वृद्ध्य-भावः। अस्मत् सम्बन्धी, हमारा, हमसे तालुक रखनेवाला।

अस्मादृश्, अस्मादृश, अस्मद्विध देखो।

अस्मार्त (सं० त्रि०) १ स्मरणातिक्रान्त, अतिप्राचीन, क़दीम, ज़माने दराज़का, पुराना। २ नियम-विरुद्ध, अविधि, खिलाफ़-क़ानून, नाजायज़, हराम। ३ शास्त्र-विधानसे सम्बन्ध न रखनेवाला, जो हिन्दुओंके दस्तूरमें न हो।

अस्मित (सं० त्रि०) विकसित, शिगुफ़्ता, खिला या फूला हुआ।

अस्मिता (सं० स्त्री०) अस्मिभावः, तल्। आत्मश्लाघा, ममता, खुदफ़रोशी, डींग। अस्मिताको योगशास्त्र क्लेश, सांख्य मोह और वेदान्त हृदयग्रन्थि बताता है।

अस्मृति (सं० स्त्री०) अभावे नञ्-तत्। १ स्मृति-हानि, विस्मरणशीलता, फ़रामोशी, बिसराहट। २ अन्याय्यता, अव्यवस्था, नाजायज़ी, जो बात क़ानूनके खिलाफ़ हो। (वै० अव्य०) ३ सप्रमाद, असमीक्ष्य, बेपरवायीसे।

नञ्-तत्। १ अक्षरण, जो थका-मांदा न हो। २ हानि न पहुंचानेवाला, जो नुक़सान न करता हो। ३ शान्तस्वभाव, पारसा, सुलहपसन्द, जो लड़ता-भिड़ता न हो।

अस्रीवचस् (वै० त्रि०) क्षरण खाद्यविशिष्ट, जो टपक पड़नेवाला खाना रखता हो।

अस्रु (सं० क्लो०) अस्यते क्षिप्यते, असु क्षेपणे रु। चक्षुका जल, अश्क, आंसू। अस्रुके निरोधसे पीन-सादि रोग उत्पन्न होते हैं।

अस्रुक (सं० पु०) अक्षीरवृक्ष, कोई पौधा।

अस्रुव (सं० क्लो०) पोथकी, दाने-दानेकी साखत, बहनेवाले ज़ख़्ममें दानेका पड़ना।

अस्रुवाहिनी (सं० स्त्री०) अस्रुवाहक धमनीद्वय, आंसू निकालनेवाली दोनो नाड़ी।

अस्रेमन् (वै० त्रि०) स्निव-मनिन्, गुणो वा लोपश्च। १ प्रशस्य, तारीफ़के क़ाबिल। २ प्रशस्त, लानवाल, जो [illegible] न हो।
खल और भण प्रत्यय परे रहनेपर [illegible] सहता गलता [illegible]

अस्ल, असल देखो।

अस्ली, असली देखो।

अस्लील, अश्लील देखो।

अस्लोक, श्लोक देखो।

अस्व (सं० त्रि०) नास्ति स्वं धनमस्य, बहुव्री०। १ निर्धन, जिसके पास दौलत न रहे। स्वः आत्मीय, नञ्-तत्। २ अनात्मीय, जो अपना न हो।

अस्वक, अस्व देखो।

अस्वकीय, अस्व देखो।

अस्वग (वै० त्रि०) निरालय, निराश्रय, लामकान्, जो ख़ास अपने मकान् न जाता हो।

अस्वगता (वै० स्त्री०) निराश्रयता, खानेबदोशी, ठिकाना न लगनेकी हालत।

अस्वच्छ (सं० त्रि०) प्रकाशभेद्य, कलुष, तारीक, कसीफ़, धुंधला, जो साफ़ न हो।

अस्वच्छन्द (सं० त्रि०) विरोधे नञ्-तत्। १ पराधीन, मातहत, जो मनमाना काम कर न सकता हो। २ शिष्य, तरवियतपिज़ीर, सधने योग्य।

अस्वजाति (सं० स्त्री०) न स्वजातिः, नञ्-तत्। १ भिन्न वर्ण, अन्य कुल, मुख़्तलिफ़ ज़ात, जुदा क़ौम, जो दूध अपना न हो। जैसे, क्षत्रियादि ब्राह्मणकी स्वजाति नहीं होता। (त्रि०) न स्वस्येव जातिर्यस्य, नञ्-बहुव्री०। २ भिन्न जाति, मुख़्तलिफ़ क़ौमका, जो अपने दूधका न हो।

अस्वतन्त्र (सं० त्रि०) न स्वतन्त्रम्, विरोधे नञ्-तत्। १ पराधीन, मातहत, जो आज़ाद न हो। २ शिष्य, तरवियत-पिज़ीर, ग़रीब।

अस्वता (सं० स्त्री०) स्वत्वका न पहुंचना, हक़का न होना।

अस्वत्व (सं० क्लो०) अस्वता देखो।

अस्वन्त (सं० क्लो०) असूनां क्षुद्रजन्तुप्राणानां अन्तो नाशो यस्मात्, ५-बहुव्री०। १ चुल्ली, चुल्हा। (त्रि०) सुष्ठु न अन्तो यस्य, असमर्थ बहुव्री०। २ दुष्ट परिणाम, जिससे अच्छा नतीजा न निकले। (पु०) ३ मरण, मौत।

अस्वप्न (सं० पुं०) नास्ति स्वप्ना निद्रा [illegible] वा यस्य, नञ्-बहुव्री०। १ देवता, जो कभी सोता या भूलता न हो। २ निद्रानाश, निद्राभाव, वेदारी, वेकली, नींद न आनेकी हालत। (त्रि०) ३ निद्रा-रहित, वेदार, वेकल, जो सोता न हो। ४ कार्यदक्ष, होशियारीसे काम करनेवाला।

अस्वप्नज् (वै० त्रि०) निद्रारहित, वेदार, जिसे नींद न आये।

अस्वभाव (सं० पु०) असाधारण आचरण वा प्रकृति, ग़ैरमामूली चाल या मिज़ाज। (त्रि०) २ भिन्न-प्रकृतिविशिष्ट, मुख़्तलिफ़-तबीयत।

अस्वर (सं० पु०) अप्रशस्तः स्वरो यत्र। १ स्वर-वर्ण-रहित व्यञ्जनमात्र, हर्फ़-सही। २ उदात्तादि स्वर-वर्जित लौकिक उच्चारण, जिस तलफ़्फ़ुज़में ऊंचे हर्फ़ दुरुस्त न रहें। 'सादसीम्यस्वरोऽस्वरः।' (अमर) (त्रि०) ३ मन्दस्वरयुक्त, जिसके ख़राब आवाज़ रहे। ४ अवि-स्पष्ट, मख़लूत, मिला जुला। (अव्य०) ५ अविस्पष्ट रूपसे, मख़लूत तौरपर।

अस्वरूप (सं० त्रि०) न स्वस्येव रूपं यस्य, नञ्-बहुव्री०। असमान स्वभाव, जो बिलकुल मुख़्तलिफ़ हो।

अस्वीकृत (सं० त्रि०) न स्वीकृतम्, नञ्-तत्। अनङ्गीकृत, अप्रतिग्टहीत, नामञ्ज़ूर, जो माना न गया हो। चलती बोलीमें इनकार करनेवालेको अस्वीकृत कहते हैं।

अस्वेद (सं० पु०) १ दशा हुआ पसीना। (त्रि०) २ पसीनेसे खाली, जो पसीजता न हो।

अस्वैरिन् (सं० पु०) स्वैरी स्वाधीनः, नञ्-तत्। पराधीन, मातहत, जो स्वाधीन या खुदमुख्तार न हो। (स्त्री०) ङीप्। अस्वैरिणी।

अस्सायी—निजाम राज्यके अन्तिम उत्तरपूर्व प्रान्तका एक ग्राम और रणक्षेत्र। यह अक्षा० २०° १५´ १५´´ उ०, तथा द्राघि० ७५° ५६´ १५´´ पूर्व पर अवस्थित और औरङ्गाबादसे उत्तर-पूर्व ४३ मील दूर है। सन् १८०३ ई०की २३वीं सितम्बरको सर आर्थर वेलेस्लिने देखा, कि सेंधिये और राघवजी भोंसलेके साथ कितनी ही महाराष्ट्र-सेनाका वामभाग इस ग्राममें पड़ा था। सेनामें १६००० शिक्षित पैदल—२०००० सवार और कितने ही आदमी रहे। १०० तोपें फ्रान्सीसी अफसरोंके हाथमें थीं। इधर जनरल वेलेस्लिके पास साढ़े चार हजारसे ज्यादा सिपाही और सवार न रहे। किन्तु उन्होंने साहसपूर्वक केलना नदी पार की और शत्रुको भीषण युद्धके बाद इस स्थानसे पीछे हटाया। इसी बीच जो महाराष्ट्र मुर्देका बहाना कर लेट गये थे, वह पीछेसे आगे बढ़नेवाली सरकारी सेनापर गोले फटकारने लगी। फिर भी जनरल वेलेस्लिने पीछे घूम उनपर धावा मारा और तोपोंको अधिकार किया। महाराष्ट्र-सेनाके १२००० आदमी काम आ और दांत खट्टे हो गये थे। इस ग्रामके अधिवासियोंने कितनी ही बन्दूकें, तोपके गोले और लड़ाई की दूसरी चीजें पायी हैं।

अस्सी (हिं० वि०) संख्याविशेष, अशीति, दश और आठका गुणन-फल।

अह (सं० अव्य०) अहि-घञ् पृषो० न लोपः। १ निःसन्देह, अवश्य, बेशक, जरूर, हां, अच्छा। २ अर्थात्, यानी। ३ माना, समझलिया, दरहकीकत। ४ न्यूनसे न्यून, कमसे कम। ५ वाह-वाह, शाबाश। ६ छी-छी, नफ़रत। (हिं०) अहन् देखो।

अहंदू (हिं० वि०) प्रकाण्ड, बड़ा, भारी।

अहंयु (सं० वि०) अहमहङ्कारोऽस्त्यस्य। १ गर्वयुक्त, अभिमानी, फ़ख़्र रखनेवाला, घमण्डी।

'अहङ्कारवानहंयु' स्यात्।' (अमर)

(पु०) २ योद्धा, सिपाही।

अहंवाद (सं० पु०) साहसिकता, धृष्टता, गुस्ताखी, शेखी, डींग-भरा।

अहंवादिन् (सं० त्रि०) साहसिक, धृष्ट, अत्यभिमानी, गुस्ताख, बहुत ज्यादा फ़ख़्र रखनेवाला, जो अपनी ही कहता हो।

अहंश्रेयस् (सं० त्रि०) अहं अहमेव श्रेयान् यत्र, बहुव्री०। अपनेको ही बड़ा समझनेवाला, जो अपनेको ही आरामकी जगह मानता हो।

अहंश्रेयस, अहश्रेयस् देखो।

अहंसन (वै० त्रि०) अपने ही निमित्त प्राप्त करनेवाला, जो अपने ही लिये हासिल करता हो।

अहःकर, अहस्कर देखो।

अहःपति, अहस्पति देखो।

अहःशेष, अहश्शेष देखो।

अहक (हिं० स्त्री०) अभिलाषा, ख्वाहिश।

अहकाम (अ० पु०) १ आज्ञायें, हुक्म। २ नियम, कायदे। यह शब्द 'हुक्म'का बहुवचन है।

अहङ्कर्तव्य (सं० त्रि०) १ अपने होसे सम्बन्ध रखनेवाला, जो दूसरेसे ताल्लुक न रखता हो। (क्ली०) २ अहङ्कारका विषय, फख्रकी चीज।

अहङ्कार (सं० पु०) अहमिति ज्ञानं क्रियतेऽनेन, अहं कृ-करणे-घञ्। १ आत्माभिमान, खुदी, डींग। २ आत्मामें उत्कर्षका अवलम्बन, गर्व, गुस्ताखी, घमण्ड। ३ गर्वका आश्रय अन्तःकरण विशेष, दिलमें फख्रके रहनेकी जगह। वेदान्त परिशिष्टमें मन, बुद्धि, अहङ्कार और चित्तको अन्तःकरण कहते हैं। ४ सांख्यमतसिद्ध महत्तत्त्वके अभिमानका कारण, पञ्चतन्मात्रका कारण तत्त्वविशेष। ५ वैद्यमतसे—चैतन्यपुरुषका चेतन। इन्द्रियादि निखिल शरीरमें जो अहम्भाव समाया, उससे लगी प्रवृत्ति ही अहङ्कार

है। यह प्रकृति वैकारिक, तैजस और भूत भेदसे त्रिविध रहती है।

अहङ्कारवत् (सं॰ त्रि॰) आत्मपरायण, खुदपसन्द, घमण्डी।

अहङ्कारिन् (सं॰ त्रि॰) अहमित्यभिमानं करोति, अहं-कृ-णिनि। अभिमानयुक्त, गर्वयुक्त, मगरूर, खुदबीन् जो अपनेको बड़ा समझता हो।

अहङ्कारी, अहङ्कारिन् देखो।

अहङ्कारीपुर—अवध प्रान्तके फैजाबाद जिलेका नगर। यह फैजाबाद शहरसे ग्यारह कोस पड़ता है। इसे अरवार सरदार अहङ्कारी रायने अपने नामपर बसाया था। यहांसे कलकत्तेको कितना ही कपड़ा भेजा जाता है। अवध-रुहेलखण्ड रेलवेका यह एक बड़ा ष्टेशन है। ष्टेशनके पास बहुत बड़ा बाज़ार लगने लगा है।

अहङ्कार्य (सं॰ क्ली॰) अपने करनेका काम जो बात दूसरेसे बन न सकती हो।

अहङ्कृत (सं॰ त्रि॰) अहमिति ज्ञानं कृतं येन, बहुव्री॰। १ आत्माभिमानी, खुदपरोस्त, डींग लेनेवाला। २ सगर्व, मगरूर, घमण्डी। ३ अभिभूत, माहिर, काबिलफखार।

अहङ्कृति (सं॰ स्त्री॰) अहम्-कृ क्तिन्। अहङ्कार, खुदसितायी, घमण्ड।

अहटाना (हिं॰ क्रि॰) १ ढूंढना खोजना, आहट लेना, पता लगाना। २ पीड़ा देना, दर्द करना।

अहत (सं॰ क्ली॰) न हन्यते स्म, हन-क्त नञ्-तत्। १ नूतन वस्त्र, नया कपड़ा, जो कपड़ा धुला न हो। (त्रि॰) २ अप्रतिहत, जो मारा न गया हो। ३ अक्षत, निष्कलङ्क, ४ नूतन, नया, जो धुला न हो। ५ आघातवर्जित जो नाटभेद जो बिगड़ा न हो।

न हो।

अहति (सं॰ स्त्री॰) न हति, अभावे नञ्-तत्। १ हननका अभाव, न मारनेकी हालत। २ अविनाश सलामती। (त्रि॰) ३ अविनष्ट जो बरबाद न गया हो।

अहद (अ॰ पु॰) १ प्रतिज्ञा, वचन, इकरार, वादा, बात। २ सङ्कल्प, विचार, इरादा। ३ समय, ज़माना।

अहददार (फा॰ पु॰) प्रतिज्ञा करनेवाला, जो अग्रिम कोई काम अञ्जाम देनेका इकरार करता हो। मुसलमानी बादशाहोंमें करका ठेका लेनेवाला अहददार कहाता था। यह सैकड़ा पीछे तीन रुपया पाते और साफ कर चुकाते रहा।

अहदनामा (फा॰ पु॰) १ प्रतिज्ञापत्र, इकरारनामा। इसके अनुसार दो या उससे ज़ियादा लोग कोई काम करना ठहराते हैं। २ सन्धिपत्र सुलहनामा जिस पत्रके अनुसार झगड़ा-झञ्झट मिट जाये।

अहदी (अ॰ पु॰) १ योद्धा सिपाही। यह पद उसी समय कठिन कार्य उपस्थित होनेसे कमर बांधते थे। साधारणत बड़े-बड़े आला ही इनका काम रहा। इसीसे सुस्त आदमीको भी लोग अहदी कहने लगे हैं। (त्रि॰) २ अलस सुस्त, काम न करनेवाला।

अहदीखाना (फा॰ पु॰) अहदीके रहनेका स्थान, जहां काबिल रहें।

अहदेहुकूमत (फा॰ पु॰) राजत्वकाल, शासनका समय शासनका ज़माना।

अहन् (सं॰ क्ली॰) न जहाति त्यजति सर्वदा चा- ना-लोप। दिवस। 'अहोरात्र' 'अहहार:' इत्यादि स्थलमें अहन् शब्दका अर्थ केवल दिन है। इधर अहर्निश अहन्यहनि इत्यादि स्थानमें अहन् शब्दका अर्थ दिन और रात दोनो ही है। एक लघु अक्षरके उच्चारण-कालको मात्रा या निमेष कहते हैं। दो निमेषका नाम त्रुटि है। पांच त्रुटिका एक प्राण छ प्राणको एक विनाडिका या विपल साठ विनाडिकाकी एक नाडिका या दण्ड और साठ नाडिकाका एक अहोरात्र होता है। एक अहोरात्रमें तीस मुहूर्त होते हैं।

अहन (सं॰ त्रि॰) १ प्रकाशक, रोशनी देनेवाला, जो उजेला फैलाता हो। (स्त्री॰) २ प्रातःकाल सवेरा।

अहननीय (सं॰ त्रि॰) वधके अयोग्य, जो क़त्ल करने काबिल न हो।

अहना (सं० स्त्री०) अह्नरस्तस्य परवर्तिलेन, अह्नन् अर्श आदि अच् टाप् निपा० टिलोपाद्यभावः। उषा, तडका, सवेरा।

अहन्तव्य, अहननीय देखो।

अहन्ता (सं० स्त्री०) अहमित्यव्ययमस्मदर्थे तस्य भावः तल्-टाप्। अस्मदर्थका भाव, 'मैं' की बात।

अहन्त्य (वै० वि०) अजय्य, दुर्जय, अविनाशी, लाज-वाल, जबरदस्त।

अहन्त्र, अहन्त्य देखो।

अहन्पुष्प (सं० पु०) दोपहरियाका फूल।

अहन्य, अहन्य देखो।

अहमक (अ० वि०) जड, मूर्ख, नादान, बेसमझ।

अहमग्रिका (सं० स्त्री०) प्रतिद्वन्द्विता, सङ्घर्ष, हम-सरी, मुकाबला, लाग-डांट।

अहमद (मुल्ला)—एक विख्यात मुसलमान पण्डित। इनके पूर्वज सिन्धुप्रदेशके टट्ट नामक स्थानमें वास करते थे। वे सब हनीफ़ा सम्प्रदायमें भुक्त थे, परन्तु अहमद शिया थे। यह सन् १८८२ ई०को अकबर बादशाहकी सभामें आये। इसके पहले इन्होंने 'खुलासात् उल् हयात्' नामक एक धर्मग्रन्थ लिखा था। अकबरने इन्हें 'तारीख्-अल्फ़ी'के सङ्कलन करनेका भार दिया। शिया संप्रदाय प्रथम खलीफ़ाकी निन्दा किया करता है। इससे दूसरा सम्प्रदाय विरक्त होता है। मिर्ज़ा फ़ूलाद बिरलास् नामक एक मनुष्य शायद दूसरे सम्प्रदायमें भुक्त था। उसने एक दिन आधीरातके समय मुल्लाको बुलाया। अहमद निःशङ्कचित्त एवं सरल प्रकृतिके आदमी थे। मिर्ज़ा फ़ूलादकी बातोंमें यह भूल गये। उस दुष्टने लाहोरके पथपर मुल्लाको मार डाला। अकबरने इस घटनाको सुन हाथीके पैर नीचे कुचलकर उसे मार डालनेका हुक्म दिया। मुल्ला अहमदने 'तारीख्-अलफ़ी'को शुरूसे चङ्गेज़ खांके समय तक दो भागोंमें लिखा था। आसफ़् खां जाफ़र बेग नामक एक मनुष्यने इस पुस्तकको समाप्त किया।

अहमद अयाज़—इनका उपाधि मलिक ख़ाजा जहान् रहा। इन्होंने दिल्लीवाले मुहम्मदशाह बीन तुग़लकके अधीन प्रशंसनीय कार्य किया था। सन् १३५२ ई०को तत्तेमें राजाके मरनेपर यह भूतपूर्व राजाके लड़केको दिल्लीमें सिंहासन देने पर सचेष्ट हुये, किन्तु फ़ीरोज़ शाह तृतीय द्वारा फांसी चढाये गये।

अहमदअली खान् (सैयद)—बङ्गालके नवाब नाज़िम। इन्हें अपने भायी अली जाहका उत्तराधिकार मिला था। सन् १८२४ ई०की ३० वीं अक्तोबरको इनकी मृत्यु हुयी।

अहमद-इल काज़रूनी (उमरबीन)—बम्बयी प्रान्तस्थ खाम्बायत स्थानके नवाब। इन्होंने खम्बायतमें सन् १३२५ ई०को मुहम्मद शाहबीन तुग़लक शाहके समय जुमा मसजिद बनवायी थी। मसजिद २०० फ़ीट चौड़ी और २१० फ़ीट लम्बी है। खम्भे जैन मन्दिरोंसे निकालकर लगाये गये हैं। मेहराबोंकी नक़्क़ाशी बहुत ख़ूबसूरत है। मसजिदके दक्षिण कोणपर मरमरके दो क़ब्र बने, जिनपर सुन्दर शिलालेख खुदे हैं। एकमें अहमद इल काज़रूनीके मसजिद बनाने तथा प्राण छोड़ने और दूसरेमें हाजी हुसेन इल गीलानीकी कन्या फ़ातिमाका इनके साथ विवाह देनेका वृत्तान्त लिखा है।

अहमद कबीर (सैयद)—एक मुसलमान फ़क़ीर। इनके पिताका नाम सैयद जलाल था। मख़दूम जहानियान् जहान् गश्त् और राजक़त्ताल नामक इनके दो पुत्र थे। वे दोनो ही सिद्ध थे। मुसलमान लोग तीनो आदमीको विशेष भक्ति करते हैं। मुलतानके उच्च नामक स्थानमें अहमद कबीरका समाधिमन्दिर है।

अहमद खान्—होलकरकी सेनाके प्रधान सेनापति। सन् १८०३ ई०के समय यह आनन्दराव गायकवाडके भाई फतेसिंहको सङ्खादके पास क़ैदकर ले गये थे। उस समय सङ्खाद गायकवाड अफ़सर बालाजी लक्ष्मणके हाथ रहा। उनके भाग खडे होनेपर गोविन्द राव मामा कमाविसदार बनें। किन्तु होलकरके सिपाही किला छीन न सके। अन्तको फ़तेहसिंह कुछ पठान सेना ले गुजरात जा पहुंचे थे। फ़तेहसिंहने बड़ोदा जाकर कहा, 'मैं अहमद खान्को पचास हज़ार रुपये देनेकी शर्तपर छोड़ा गया हूं।'

अहमद खाँ बङ्गश—फर्रुखाबादके नवाब मुहम्मद खाँ बङ्गशके पुत्र। सन् १७४८ ई०के दिसम्बर मास इनके भाई क़ायमजङ्गकी मृत्यु होनेपर वज़ीर सफ़दरजङ्गने उनकी सम्पत्तिको हड़प जानेकी चेष्टा की थी। उसी समय कुछ अफ़ग़ानसैन्य संग्रह कर अहमद खाँने वज़ीरके सहकारी राजा नवलरायको पराजित और विनष्ट किया। इस घटनाके बाद यह फर्रुखाबादके नवाब हो गये। (१७५१ ई०)।

१७७१ ई०को अहमद खाँकी मृत्यु होनेपर इनके पुत्र दिलेर हिम्मत खाँ नवाब बने।

अहमद खाँ सूर—शेरशाहके भतीजे। यह सिकन्दरशाह सूर उपाधि धारणकर कुछ भले आदमियोंकी सहायताके पञ्जाबके राजा हो गये। सन् १५५५ ई०के मई मास इन्होंने इब्राहीम खाँ सूरको युद्धमें परास्त कर दिल्लीका सिंहासन अधिकार किया था। परन्तु यह अधिक दिन राज्यभोग न कर सके। हुमायूँने इनकी सेनाको हरा दिया। अन्तको सरहिन्द नामक स्थानमें यह अकबरसे पराजित हुए और पहाड़ी प्रदेशमें भाग कर अपनी जान बचाई। वहांसे कई बार इन्होंने अकबरके विरुद्ध धावा किया, परन्तु किसी तरह सफलमनोरथ न हुए। अन्तमें यह बङ्गदेश गये और कुछ राज्य करनेके बाद परलोक सिधारे।

अहमद खान् सैयद—१ युक्तप्रान्तके अलीगढ़ ज़िलेके मुसलमान संशोधक। इनका उपाधि सी० एस० आई० रहा। इन्होंने मुहम्मद साहबके जीवन एवं कार्यपर एक ग्रन्थ लिखा और अलीगढ़ कालेज प्रतिष्ठित किया था।

२ दक्षिणप्रान्तस्थ अहमदाबाद-शासक मुज़फ़्फ़र शाहके लड़के। सन् १४१२ ई०को असावल ग्रामके पास इन्होंने अहमदाबाद नगर बसाया था। इनके समय अहमदाबादमें कितने ही सुन्दर भवन बनाये गये। सन् १४४२ ई०को मरनेके बाद इनके लड़के मुहम्मद शाहने राज्यका उत्तराधिकार पाया।

अहमदनगर—मुज़फ़्फ़रपुरके अन्तर्गत एक गांव। इस गांवकी उत्तर ओर बनगमाके राजा अधिराजका बनवाया एक सुन्दर सरोवर विद्यमान है।

अहमद अलीगो—बम्बई प्रान्तके सूरत ज़िलेके एक चालाक अरब व्यापारी। पहले यह अंगरेजोंके बड़े मित्र समझे जाते थे। किन्तु सन् १७११ ई०को इन्होंने यथाशक्ति अंगरेजों और सूरतके शासनकर्ता नवाब तेगबख़तके बीच घोर वैमनस्य बढ़ा दिया। सन् १७१५ ई० तक यह नवाबके सहायक रहे, किन्तु अन्तको यहांतक बिगड़े कि उनसे लड़नेको भी तैयार हुये थे। सन् १७१६ ई०को १२ वीं जुलाईको अपने ही घरमें यह जानसे मारे गये।

अहमदनगर—बम्बई विभागके अन्तर्गत एक ज़िला और शहर। यह अक्षा० १८° १०´ ०″ एवं २०° ०´ ०″ उ० और द्राघि० ७०° ४२´ ४०″ तथा ७५° ४३´ ५०″ पू०के मध्य अवस्थित है। सह्याद्रि पर्वत अहमदनगरके पश्चिम फैला हुआ है। इसकी कुछ शाखायें अहमदनगरके पूर्वतक चली गई हैं। यहां प्रवरा और मूला नामक दो नदियां बहती हैं। इस ज़िलेकी प्रधान नदी गोदावरी है। आबादी साढ़े सात लाखसे ज्यादा है। यहांके रहनेवालोंमें महाराष्ट्रीयोंकी संख्या ही अधिक है।

इस ज़िलेके बड़े नगर यह हैं—१ अहमदनगर, २ सोनाई, ३ पथर्डी ४ सङ्गमनेर, ५ पार्नेर, ६ श्रीगोण्डा, ७ भीमगार।

सन् १४९४ ई०को अहमद शाहने अहमदनगर बसाया था। यह शहर सीना नदीके बायें किनारेपर बसा है।

अहमदशाहकी मृत्यु होनेपर उनके लड़के बुर्हान् निज़ाम शाह राजा हुए। उनके समयमें अहमदनगरकी बहुत श्रीवृद्धि हुई थी। सन् १५५३ ई०को वह परलोक सिधार गये। पीछे उनके पुत्र हुसेन निज़ाम शाह राजा हुए। हुसेनने अहमदनगरकी चारो तरफ बारह फ़ीट ऊंची शहरपनाह बनवा दी। १५६२ ई०में बीजापुरराजने उन्हें पराजित किया, इससे उनके सौसे अधिक हाथी और ६६० तोपें बीजापुरराजके हाथ लगीं। इनमें बड़ी भारी एक तोप पीतलकी बनी थी। शायद इतनी बड़ी तोप दुनियामें और कहीं नहीं है। यह तोप अभीतक बीजापुरमें

मौजूद है। १५६४ ई०को वीजापुर, गोलकुण्डा, वीदर आदिके राजाओंके साथ विजययगरके रामराजका युद्ध हुआ था। इस युद्धमें हुसेनने रामराजके विपक्षमें अस्त्र धारण किया, परन्तु हिन्दूराजसे सभी पराजित होकर वन्दी वने।

१५८८ ई०में हुसेन शाह अपने लड़के मीरन हुसेन निज़ाम शाह द्वारा गुप्तभावसे मारे गये। मीरन भी अधिक दिन राज्यसुख भोग न कर सके। दश महीनेके अन्दर ही यमपुरीकी यात्रा कर गये। उनके वाद उनके भतीजे इस्माईल निज़ाम राजा हुए। इस्माईलके पिता पुत्रका राज्यभोग देख न सके। पुत्रको सिंहासनसे उतार एवं वुर्हान् निज़ाम शाह (२य) नाम धारण कर आप सिंहासनपर वैठ गये। उनके वाद उनके लडके इब्राहीम निज़ामशाह राजा हुए। वह वीजापुरराजके साथ युद्ध करनेमें हार गये। इसके वाद अहमद नामक उनके एक ज्ञातिको अहमदनगरका सिंहासन मिला,परन्तु जव कुछ दिनों के वाद यह मालूम हुआ, कि अहमद इब्राहीमके साक्षात् ज्ञाति नहीं, तव इब्राहीमके वालक पुत्रको उसकी मामी चांद वीवीने सिंहासनपर वैठा दिया। चांद वीवी देखो।

१५९८ ई०को सम्राट् अकवरके पुत्र दानियालने अहमदनगरपर चढाई की। इस समयके वादसे अहमदनगरके राजा नाममात्रके राजा हुए। उनकी कोई विशेष क्षमता न थी। १६६३ ई०को सम्राट् शाहजहाने अहमदनगरको राजशून्य कर दिया। १७५९ ई०को यह नगर पेशवाको मिला, १७९७ ई०को दौलतराव सेंधियाके अधिकारमें आया और १८१७ ई०को व्रटिश गवर्नमेण्टके अधिकारभुक्त हो गया।

अहमद निज़ाम शाह वहरी—दक्षिणापथवाले निज़ामशाही वंशके स्थापयिता। यह निज़ाम-उल्-मुल्क वहरीके पुत्र थे। सन् १४८६ ई०को इन्होंने दुन्द्राजपुरका दुर्ग अवरोध किया। इनके पिताने महमूद शाह वहमानीसे कुछ जागीर पायी थी। इस जागीरके निकटस्थ स्थानोंको अहमदने अधिकार किया और पिताको मृत्युके वाद निज़ाम-उल्-मुल्कका उपाधि लिया। यह वड़े भारी योद्धा रहे। युद्धके समयमें प्रायः सेनापतिका भार ग्रहण करते थे। सुलतान महमूद शाहने अहमदका वल ह्रास करनेका सङ्कल्प किया। परन्तु सुलतानकी सेना अहमदसे हार गई। इस घटनाके वाद ही अहमदने श्वेतछत्र धारण किया और स्वाधीन राजा हो गये। १४९४ ई०को इन्होंने ही अहमदनगर वसाया। अहमदनगर शब्दमें इनके उत्तराधिकारियोंका संक्षिप्त विवरण देखो।

अहमदपुर—१ पञ्जाव प्रान्तके झङ्ग ज़िलेकी शोरकोट तहसीलका नगर। २ वङ्गाल प्रान्तके वीरभूम ज़िलेका व्यवसायी ग्राम और ईष्ट इण्डियन रेलवेकी लुप लायिनका ष्टेशन। रेलवे खुल जानेसे यहां चावलका व्यवसाय वढ़ गया है। ३ पञ्जाव प्रान्तके भावलपुरकी अपनी तहसीलका नगर। यह अक्षा० २९° ८′ ३०″ उ० और द्राघि० ७१° १८′ पू० पर अवस्थित है। यहां प्रधानतः हथियार, रूई और रेशमका व्यवसाय होता है। ४ पञ्जाव प्रान्तके भावलपुर राज्यकी सादिकावाद तहसीलका नगर।

अहमद वख्श खान्—पञ्जाव प्रान्तस्थ फ़ीरोज़पुर और लोहारूके जागीरदार नवाव। इन्होंने फ़खरुद्दौलाका उपाधि पाया था। मरने पीछे इनके पुत्र नवाव शमसुद्दीनको उत्तराधिकार मिला, जो सन् १८३५ ई०के अक्तोवर मास वधके कारण फांसी पर चढाये गये।

अहमद वेग—वम्बई प्रान्तस्थ भड़ोंचके नवाव। सन् ई०के १८ वें शताब्द कामाजी होमाजी नामक पारसी जुलाहेने एक मुसलमानको काफ़िर कहने पर इनके द्वारा मुसलमान होने या प्राण गंवानेका दण्ड पाया था। किन्तु उसने अपना धर्म न छोड हंसते-हसते प्राण दे दिया।

अहमद वेग कावुली—मुसलमान कर्मचारी विशेष। इन्होंने पहले अकवर भ्राता मुहम्मद हकीम और पीछे अकवर तथा जहांगीरके अधीन कावुलमें काम किया था। कुछ समयतक यह कश्मीरके शासक रहे। सन् १६१४ ई०को इनकी मृत्यु हुई।

पानी पतका युद्ध ही प्रधान है। १७६१ ई०में यह युद्ध हुआ था। इस युद्धमें महाराष्ट्रोंने पूर्णरूपसे पराजय स्वीकार कर लिया।

स्वदेश लौट जानेके समय अबदाली शाह आलम-को भारतवर्षका सम्राट् बना शुजा उद्दौला आदि नवाबोंको उनकी अधिनता स्वीकार करनेका आदेश दे गये थे। २६ वर्ष राज करनेके बाद १७७३ ई०को अहमद शाह अबदालीने प्राणत्याग किया। कन्दहारके राजभवनके पास ही इनको मट्टी दी गई थी। इनकी क़ब्रको लोग सिद्धाश्रम समझते हैं। इनकी मृत्युके बाद इनके लड़के तैमूर शाह तख़्तपर बैठे। अहमद शाह अबदालीको शाह दुरानी भी कहते हैं।

अहमद शाह वली वहमानी—दक्षिणापथके एक सुलतान। यह वहमानूवंशीय सुलतान दावूद शाहके पुत्र थे। पहले इनके बड़े भाई फ़ीरोज़ शाहको राज्य मिला, परन्तु उन्होंने अपनी इच्छासे अपने छोटे भाई अहमदशाहको दे दिया। सन्१४२२ ई०को अहमद शाह राजसिंहासनपर बैठे थे।

एक दिन अहमद शाह शिकार खेलने गये। परन्तु आखेट करते करते एक मनोहर स्थानमें जा पहुंचे। वहां स्वच्छसलिला नदी बहती रही। फलसे लदे हुए वृक्ष वनकी शोभा बढ़ा और अनेक प्रकारके पक्षी कलरवसे कानन गुंजा रहे थे। यह दृश्य देख सुलतानका मन मुग्ध हो गया। इन्होंने उस स्थानमें अहमदाबाद बीदर नामक सुन्दर नगर और दुर्ग बनाया। यहीं दमयन्तीके पिताका राज्य था। १२ वर्ष राज करनेके बाद १४३६ ई०को अहमद शाह कालके कलेवा हो गये।

अहमदाबाद—१ बम्बई विभागके अन्तर्गत गुजरात-प्रदेशका एक जिला। यह अक्षा० २१° ५७′ ३०″ तथा २३° २४′ ३०″ उ० और द्राघि० ७१° २०′ एवं ७२° २७′ २०″ पू०के मध्य अवस्थित है। इस ज़िलेकी उत्तर सीमामें बडोदा, उत्तर पूर्वमें महीकान्ता, पूर्वमें बालासिनोर एवं कैरा ज़िला, दक्षिणपूर्वमें कम्बे और पश्चिममें काठियावाड़ है।

अहमदाबादके भूतत्त्वकी पर्य्यालोचना करनेसे अनायास ही स्वीकार करना पडता है, कि पहले यह स्थान समुद्रमें था और इसे वर्त्तमान भूमिके आकारमें परिणत हुए बहुत दिन नहीं बीते।

पहले अहमदाबाद अनहिलवाड राजाओंके अधिकारमें था। सन् ७४६ ई०में उन्होंने इस स्थानको किसानी करनेके लिये लोगोंको दे दिया। १२९७ ई० तक यह जगह उन्हींके हाथमें रही। उसके बाद भीलोंने इसे दख़ल कर लिया। फिर १५७२ ई०को अकबर शाहने इसे भीलोंसे छीना था। १७५३ ई०को पेशवाने इस जगहको दख़ल किया। १८१७ ई०को गायकवाडने अपना और पेशवाका हिस्सा वृटिश गवर्नमेण्टको दे दिया था।

अहमदाबाद ख़ूब उपजाऊ है। बम्बई प्रदेशमें यह वाणिज्यका प्रधान स्थान है। यहांके अधिकांश आदमी खेती-किसानी करके जीविका निर्वाह करते हैं। उनमें कुनबी, राजपूत और कोरी ही प्रधान हैं। कुनबी सचराचर तीन श्रेणियोंमें विभक्त हैं,—अञ्जना, कदावा और लेवा। इस समय हिन्दुस्थानमें जिस तरह सामान्य गृहस्थके यहां कन्याका जन्म होनेसे वह अपनेको विपद्‌ग्रस्त समझता, कुनबियों-को भी वही दशा है। इस विपद्‌से बचनेके लिये कुनबी जन्मते ही कन्याको मार डालते रहे। अहा! मा होकर भी सन्तानके ऊपर ऐसा अत्याचार करना पड़ता था! बिना बहुत ख़र्च किये कन्याका विवाह न होता था। किसीने बहुत कष्टसे कन्याको पाला पोसा। किन्तु वह जब बडी हुई, तो मन लायक़ पति न मिला। ऐसी हालतमें प्राय: पहले उसका विवाह फूलके गुलदस्तेसे होता था। फिर वह गुलदस्ता कुयेंमें फेंक देनेसे कन्या विधवा हो जाती रही। ऐसे स्थलमें वह कन्या पुनर्विवाह कर सकती थी। उसमें बहुत ख़र्च भी न लगते रहा। किसी स्थलमें विवाहित पुरुषके साथ कन्याका विवाह कर दिया जाता था। परन्तु शर्त यह ठहरा ली जाती थी, वर विवाह करनेके बाद ही कन्याको परित्याग कर देगा। वरके परित्याग कर देनेपर फिर जिसकी इच्छा हो, वह उस कन्यासे विवाह कर सकता था।

कुनबियोंकी शिशुहत्या रोकनेके लिये सन् १८७० ई०में एक आईन जारी हुआ।

यहांके राजपूतोंमें दो श्रेणियां हैं। एक श्रेणीके आदमियोंको कमीन वर्ग कह है। वे प्राय सभी आलसी हैं। फिर दूसरी श्रेणीके मनुष्योंका जीवनोपाय किसानी है। यहांके प्राय सभी कोरी किसान हैं, और अति सामान्य अवस्थामें कालयापन करते हैं।

इस जिलेकी लोकसंख्या प्राय साढ़े आठ लाख है। इसके प्रधान नगर हैं—अहमदाबाद,धोलका, वरिगाम धोलेरा धन्धुक, गोधा, परान्तिज, मोडास और सानन्द।

यह स्थान रेशमी और ऊनी कपड़ेके लिये प्रसिद्ध है। यहां श्रावक और ओसवाल जैन वास करते हैं। यहांके शिल्पादि और धातुके अहमदाबादका विवरण विस्तृत देखो।

२ अहमदाबादनगर। यह नगर गुजरातमें सर्वश्रेष्ठ है। साबरमती नदीके बायें किनारे बसा है। इसका दृश्य अति सुन्दर है। दूरसे देखनेपर नयन और मन शीतल हो जाता है। इस नगरके पूर्व और पश्चिम ओर ऊंची शहरपनाह बनी है। यह शहरपनाह प्राय एक कोस लम्बी होगी। गुजरातके राजा अहमद शाहने इसे सन् १४११ और १४१३ ई०के बीच बसाया था।

१५७२ ई०में यह स्थान अकबरके अधिकारभुक्त हुआ। सन् ई०की सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दीमें इस स्थानकी समृद्धि खूब बढ़ी थी। फिरिश्ता नामक पारसी इतिहास ग्रन्थमें लिखा है, कि उस समय गुजरातके ३६० नगरोंमें शहरपनाह रही। महाराष्ट्रोंके उत्पातसे यह सब कीर्ति विनष्ट हो गई। १७३८ ई०को दामाजी गायकवाड़ और मुमीन खां नामक एक मनुष्यके हाथमें यह शहर आया था। दोनोंने मिल जुलकर कुछ दिन इसका उपस्वत्व भोग किया।

१७५३ ई०में महाराष्ट्रोंने इस स्थानको दखल कर लिया। बीचमें मुमीन खांने कुछ दिनोंके लिये इसे अधिकार किया था परन्तु फिर यह महाराष्ट्रोंके हाथमें चला गया। (१७८० ई०)

१७८० ई०को ब्रिटिश सेनापति गडर्डने इस स्थानपर चढ़ाई की और १८१८ ई०को यह अंगरेजोंके दखलमें आ गया। यहां जैनधर्मावलम्बियोंके १२० मन्दिर हैं। स्थानीय हिन्दू तीन तीन वर्षपर एकबार नंगे पैर इस नगरकी परिक्रमा करते हैं।

इस नगरकी सोने और चांदीकी कढ़ाई प्रसिद्ध है। यहां जो कागज तय्यार होता, वह गुजरात प्रदेशमें काम आता है।

अहमदी—एक तुर्की कवि। इनका पूरा नाम ख्वाजा अहमद कापरी रहा। यह अमेसियामें रहते थे। किसी दिन विश्वविजयी तातार नृपति तैमूरलङ्गने कपोलोको जाते समय इनके ग्राममें विश्राम किया। इन्होंने अपनी बनायी ग़ज़ल उन्हें जा सुनायी थी। तैमूरलङ्ग साहित्यप्रेमी रहे। उनमें और इनमें वार्तिक चोज बढ़ गया। किसी दिन दोनों स्नानागारमें बैठे थे। तैमूर इनसे कूट प्रश्न करते और उत्तर पर हंसते जाते थे। बादशाहने अनुचरोंको ओर सङ्केतकर पूछा,—यदि आपसे कोयी इन तीन सुन्दर बालकोंका मूल्य पूछे, तो क्या बतायियेगा? अहमदीने बड़े शान्त भावसे उत्तर दिया, पहलेका एक क्रोड़ चांदी दूसरेका १८२ सेर मोती और तीसरेका दाम सोनेका ४० खूंटा है। तमूरने कहा,—बहुत ठीक अब मेरा भी मूल्य बता दीजिये। कविने कहा—चौबीस अशरफ़ीसे कम न ज़्यादा। तमूरने १सकी हसके फिर अहमदीसे पूछा,—क्या, चौबीस अशरफ़ीको तो मैं अपने ही पहने हूं? कविने उत्तर दिया,—तभी तो, वरं आपका मूल्य कौड़ी भी नहीं आता। तैमूरने कविको इस चातुर्य और स्पष्ट कथनपर कितना ही पुरस्कार दिया था। इन्होंने कुल्लियात ख्वाजा अहमद कापरी तुर्की भाषाका सिकन्दरनामा और तैमूरलङ्गकी वीरताका वर्णन बनाया है। सन् १४१२ ई०को इनकी मृत्यु हुयी।

अहमहमिका (सं० स्त्री०) अहमहं अस्त्योऽस्त्यस्यां लोपाभावो द्विर्भाव ठन् निपातनात् न दीर्घः। १ परस्पर अहङ्कार, आत्मश्लाघा, बड़बोली, धामधाड़,

हमाहमो। २ युद्धविषयक दर्प, लड़नेकी चढ़ाऊपरी, मारकाट, धरपकड़।

अहमिति, अहम्मति देखो।

अहमेव, अहङ्कार देखो।

अहम्पूर्व (सं० त्रि०) अहं पूर्वं करोमि अहं पूर्वं करोमि इत्यभिधानं यस्य। प्रथम होनेका अभिलाषी, उत्साह हेतु मैं पहले करूंगा मैं पहले करूंगा कहनेवाला, जो मैं पहले मैं पहले कहता हो।

अहम्पूर्विका (सं० स्त्री०) अहंपूर्वं अहंपूर्वं इत्यभिधानं यत्र। १ योद्धाओंका उत्साहसे मैं ही पहले जाऊंगा मैं ही पहले जाऊंगा कहना, जयेच्छु आक्रमण, हमसरीका हमला। २ गर्व, घमण्ड।

अहम्प्रत्यय (सं० पु०) अहमेवं रूपप्रत्ययः विश्वासः, रूप० कर्मधा०। मैं और मेरेका ज्ञान, अहं शब्दाभिलापी आत्मा। चार्वाक् कहता, कि अहम्प्रत्यय देहके ही मध्य रहता है। वौद्ध इसे क्षणिक विज्ञान बताता और आस्तिक दर्शनके अनुसार देहादिसे व्यतिरिक्त समझता है।

अहम्प्रथमिका, अहम्पूर्विका देखो।

अहम्भद्र (सं० त्रि०) अहमेव भद्र इति निर्णयो यत्र। अपनेको ही भद्र समझनेवाला, जो अपने होको बड़ा मानता हो। (क्ली०) २ आत्माभिमान, खुदबीनी, अपनी बड़ाई।

अहम्मति (सं० स्त्री०) अहमित्येवं मतिः ज्ञानम्, रूप० कर्मधा०। अविद्या, अज्ञान, खुदबीनी, लोभ, अपनी बड़ाई।

अहम्मान (सं० क्ली०) अहम्मति देखो।

अहर (सं० त्रि०) न हरति, हृ-अच्, नञ्-तत्। १ हारक न होनेवाला, जो छीन न लेता हो। नास्ति हरो हारको यस्य, नञ्-बहुव्री०। ३ हारकशून्य, वाहनहीन, जिसे खींचनेवाला न रहे। (पु०) गणितशास्त्रके मतसे—गुहराशि अर्थात् जो राशि फिर बंटता न हो, तकसीम न होनेवाली अदद। ४ असुरविशेष। ५ द्वादश मनु।

अहरणीय (सं० त्रि०) हरण किया न जानेवाला, जो चोराने या ले जाने लायक न हो।

अहरट्टक् (सं० पु०) गृध्र, उकाब, गीध।

अहरम (हिं० स्त्री०) शूर्मी, स्पृणा, सनदां, निष्ठायी।

अहरना (हिं० क्रि०) गढ़ना, बनाना, छील-छाल करना।

अहरनि, अहरन देखो।

अहरा (हिं० पु०) १ सुलगाये जानेवाले कण्डोंका ढेर। २ मुकाम, ठहरनेकी जगह। ३ पानी पीनेका अड्डा। यह संस्कृतके आहरण शब्दका अपभ्रंश है।

अहरागम (सं० पु०) प्रातःकालकी उपस्थिति, सवेरेकी आमद, तड़केकी पहुंच।

अहरादि (सं० पु०) अह्नः आदिः, ६-तत्। अहरादीनाम्पत्यादिषु वा रेफः। (महाभाष्य) १ प्रातःकाल, सवेरा। २ गणविशेष। इसमें निम्नलिखित शब्द पठित हैं,—अहन्, गिर् और धुर्।

अहरित (वै० त्रि०) जो पीला न हो।

अहरी (हिं० स्त्री०) १ चरही, पशुओंके पानी पीनेका हौज। २ हौज, पानी भरनेकी जगह। ३ पानी पीनेका अड्डा।

अहर्गण (सं० पु०) अह्नां गणः। मास, दिनसमूह, महीना। इसके पर्याय यह हैं,—द्युवृन्द, दिनौघ, द्युगण, दिनपिण्ड।

२ अहोंमें भावादि ज्ञापक सृष्टि, श्वेतवराहकल्प किम्वा कल्प आरम्भसे इष्ट दिन पर्यन्त वीतनेवाले दिनोंका समूह। सृष्टिके एक हज़ार युगमें ब्रह्माका एक दिन होता, जो मनुष्यका कल्प भी कहाता है। ब्रह्माका रात्रिमान भी एक हज़ार युग है। इन्हीं दो युग सहस्रको ३६० से गुणा करनेपर ब्रह्माका एक वर्ष होता है। ऐसे ही सौ वर्षसे ब्रह्माका परमायु आता है। पूर्वोक्त कालसे आधा ब्रह्माका अर्धपरमायु है। ब्रह्माके इसी अर्धपरमायुमें सन्धि सहित छः मनु बीत चुके हैं। वैवस्वतमनुवाले युगके तीन धन गत हुये हैं। उनके २८ युगमें सत्ययुग बीता था। सूर्यसिद्धान्तने निम्नलिखित नियमसे इसकी गणना की है,—मनुष्यके ४३२०००००० वर्षका ब्रह्माका एक दिन होता, और इतना ही समय रातमें भी लगता

है। इन दोनोंकी जोड़ देवोंके ब्रह्म अहोरात्रमान ८६४०००००००० वर्ष होता है। इसको ३६०से गुणा करनेपर ३११०४०००००००० आता, जो ब्रह्माका एक वर्ष है। ब्रह्माके वर्षको एक सौसे गुणा करनेपर ३११०४०००००००००००वर्ष निकलते हैं। यही ब्रह्माका परमायु है। इसका आधा १५५५२०००००००००० वर्ष ब्रह्माका अर्ध परमायु ठहरता है। मन्वन्तर संख्या ३०६७२०००० वर्ष है। इसकि अनुसे—१८४०६६००० वर्षोंमें छ मनु बीत चुके हैं।

अहर्जर (सं॰ पु॰) अहोभिः परिवर्तमाना जीवान् जरयति, अहन्-जृ-णिच्-अच्। संवत्सर, साल, दिनोंको बुड्ढा बनानेवाला ज़माना।

अहर्जात (सं॰ त्रि॰) दिनमें उत्पन्न, रात्रिसे सम्बन्ध न रखनेवाला, जो दिनको पैदा हो।

अहर्दिव (सं॰ अव्य॰) अहनि च दिवा च निपा॰ अव्यय समा॰ द्वन्द्व। १ दिन दिन, प्रतिदिन रोज़ बरोज़, हररोज़। (त्रि॰) २ प्रतिदिन होनेवाला, जो हररोज़ हो।

अहर्दिवि (सं॰ अव्य॰) दिन दिन, प्रतिदिन, रोज़ बरोज़, हररोज़, लगातार, बराबर।

अहर्दृश् (सं॰ त्रि॰) दिन देखनेवाला जीवित, ज़िन्दा जो दिन देखता हो।

अहर्नाथ (सं॰ पु॰) अह्नो नाथः, ६-तत्। १ दिन नाथ सूर्य, दिनका मालिक आफ़ताब। २ अर्कवृक्ष अकौड़ेका पेड़।

अहर्निश (सं॰ क्ली॰) अहश्च निशा च समा॰ द्वन्द्व॰। १ दिवारात्रि रातदिन, तमाम दिन। (अव्य॰) २ सदा हमेशा बराबर।

अहर्मुख (सं॰ पु॰) सांझ, गोधूल।

अहर्पति (सं॰ पु॰) अह्नः पतिः उदयेन प्रकाशक त्वात्। १ सूर्य, आफ़ताब। २ अर्कवृक्ष, अकौड़ेका पेड़। ३ शिव।

अहर्बान्धव (सं॰ पु॰) अह्नि बान्धव इव अन्धकार दूरीकरणात्। १ सूर्य। २ अर्कवृक्ष।

अहर्भाज् (सं॰ क्ली॰) अहर्बहुदिवसं भजति तिष्ठति, अहन् भज-ण्वि। १ वृक्षका विशेष बहुत दिन टिकने वाली पेड़। (त्रि॰) २ दिवस-सम्बन्धीय, दिनों।

अहर्मणि (सं॰ पु॰) अह्नि अह्नो वा मणिरिव प्रकाशकत्वात्। १ दिनमें मणि जैसा चमकनेवाला सूर्य। २ अर्कवृक्ष।

अहर्मुख (सं क्ली॰) प्रातःकाल, सवेरा दिनका निकलना।

अहर्लोक (सं॰ पु॰) अहर्बहुदिवसं लोकते इमतो अहन्-लोक कर्मणि घञ्। १ वृक्षविशेष, बहुत दिन टिकनेवाला पेड़। (त्रि॰) २ दिनका ख्याल अहव करनेवाला, जिसे दिनको बनाव मिले।

अहर्विद् (सं॰ पु॰) अह एकाहसाध्यं अग्निष्टोमं वेत्ति, अहन् विद् क्विप्। १ एकाहसाध्य अग्निष्टोम-वेत्ता, जो एक ही दिनमें किये जानेवाले अग्निष्टोमको जानता हो। (त्रि॰) २ बहुकालस्थायी, बहुत दिन टिकनेवाला। ३ विदित, बहुत दिनसे समझा हुआ। ४ चालाक, मौक़ा देखनेवाला।

अहर्वृन्द (सं क्ली॰) अह्नां वृन्द समूह ६ तत्। दिनसमूह, दिनका जख़ीरा।

> "[illegible]
> [illegible]" ([illegible])

मेषादि क मासके १८० और तुलादि क मासके १०८ जोड़ ज्योतिषके नियमानुसार वत्सर ३६५ दिनका गिना जाता है।

अहव (सं॰ त्रि॰) मन्दभाग्य, कमबख़्त, जो काम न हो।

अहर्पति वर्ष देखो।

अहल (सं॰ त्रि॰) अहल, अजोत्य जो हलसे जोता न गया हो।

अहलकार (फ़ा॰ पु॰) कर्मचारी, कामकरनेवाला मुलाज़िम। यह शब्द प्रायः अदालतके नौकरोंपर व्यवहार होता है।

अहलमद (फ़ा॰ पु॰) न्यायालयका कर्मचारीविशेष, अदालतका एक मुलाज़िम। अहलमद अदालतको मिसलें रजिष्टरपर चढ़ाता हुक्म लिखाता और फैसलेसे काग़ज़ हिफ़ाज़तसे रखता है।

अहला चौला और चल्ला देखो।

अहवाद (हिं॰) चाह बाद देखो।

अह्लादी (हिं०) आह्लादिन् देखो।

अहल्य (सं० त्रि०) न हलेन कृष्यम्। १ हलद्वारा अकृष्य, जो हलसे जोता न जाता हो। (पु०) २ देशविशेष।

अहल्या (सं० स्त्री०) १ अप्सरोविशेष, एक परी। २ गौतमपत्नी। पुराणमें कहा कि, अहल्याका नाम लेनेसे महापातक नाश होता है। यथा—

"अहल्या द्रौपदी कुन्ती तारा मन्दोदरी तथा।
पञ्चकन्या स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम्॥"

यह ब्रह्माश्वकी कन्या रहीं, इनके स्वामीका नाम गौतम था। इन्द्रने गौतमका रूप बना अहल्याका धर्म नष्ट किया। इसी अपराधके कारण गौतमके शापसे इन्द्रके शरीरमें सहस्र योनि हुयी और अहल्या पाषाण बन गयी थीं। पीछे त्रेतायुगमें मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्रजीके पादस्पर्शसे इनका शाप छूटा। (रामायण)

३ राजा इन्द्रद्युम्नकी पत्नी। योगवाशिष्टमें इनकी कथा लिखी है। यह गौतमपत्नी अहल्या एवं इन्द्रका वृत्तान्त सुन इन्द्रनामक किसी व्यक्तिके प्रणयमें आसक्त हुयी थीं। इसीसे राजाने इनको नगरसे निकलवा दिया।

रामायणके उत्तरकाण्डमें (उ० अ० १९—२१) अहल्याका विवरण इस तरह लिखा है,—ब्रह्मा एक दिन इन्द्रसे कहने लगे, हे अमरेन्द्र! मैंने बुद्धिसे कल्पना कर प्रजागणकी सृष्टि रची है। उसमें सबका एक वर्ण, एक भाषा एवं एक विषय है। किसी लक्षण या आकृतिमें उसका कोयी इतरविशेष नहीं पड़ा। इसके बाद मैंने एकाग्रचित्तसे प्रजाके विषयमें चिन्ता की थी। उसके मध्यमें विशेषता देखानेको मैंने एक स्त्री बनायी। जिस प्राणीका जो अङ्गप्रत्यङ्ग उत्तम रहा, मैंने उसीको उद्धृत किया था। इससे रूपगुणसम्पन्ना अहल्या कन्याका निर्माण हुआ। हल शब्दसे वैरूप्य समझते और हलसे जो प्रभूत हो, उसको हल्य कहते हैं। जिसके शरीरमें कुछ भी वैरूप्य नहीं होता, उसीको अहल्या कहा जाता है। "हलं नामेह वैरूप्यं हल्यं तत्प्रभवं भवेत्। यस्या न विद्यते हल्यं तेनाहल्येति विश्रुता॥" इसीसे मैंने उसका अहल्या नाम रखा था। हे देवेन्द्र! कन्या निर्माण करके, मुझे यही चिन्ता होने लगी। यह कहां रहेगी और इसका विवाह किससे किया जायेगा? हे पुरन्दर! तुम स्वर्गके राजा हो, इस लिये तुमने मन ही मन स्थिर किया,—यह कन्या हमारी होगी। किन्तु मैंने उसको गौतमके तत्त्वावधानमें गच्छित रखा। बहुत वर्षतक गच्छित रखकर उसको उन्होंने प्रत्यर्पण कर दिया। उन महामुनिका स्थैर्य और तपःसिद्धि देख मैंने वह कन्या उन्हीं को सम्प्रदान की। महामुनि उसको लेकर रसभावसे सहवास करने लगे। गौतमको कन्यादान करनेसे देवता निराश हुये थे। तुमने कामातुर हो क्रुद्धमनसे मुनिके आश्रममें पहुंच उस दीप्त अग्निसदृश स्त्रीको देखा। उस समय वह कामार्त और क्रोधसे प्रज्वलित हुयी और तुमने उसका धर्म नष्ट किया। महर्षिने तुमको आश्रममें देख लिया था। उस समय तेजस्वी ऋषिने यह शाप दिया,—तुम्हारे इस ऐश्वर्य और भाग्यका विपर्यय हो।

कुमारिलभट्ट कहते हैं,—अहल्या और इन्द्रका गल्प केवल रूपक वर्णना मात्र है। अहल्या शब्दसे रात्रि और इन्द्रसे सूर्यका बोध होता है। यही घटना अवलम्बन कर अहल्या और इन्द्रका वृत्तान्त कल्पन किया गया है,—दिनमें सूर्योदय होनेसे रात्रि नहीं रहती। (अहनि लीयमानतया)

मुद्गलसे मौद्गल गोत्रीय ब्राह्मणगण उत्पन्न हुआ है। वह क्षत्रियका अंश हैं। मुद्गलके पुत्रका नाम ब्रह्माश्व था। ब्रह्माश्वसे यमज पुत्रकन्या दिवोदास एवं अहल्या और शरद्वान्के औरस तथा अहल्याके गर्भसे शतानन्दका जन्म हुआ। (विष्णुपुराण ४।१९।१९) इस स्थलकी टीकामें श्रीधरस्वामी लिखते,—शरद्वान् और गौतम एक ही व्यक्ति हैं। (शरद्वतो गौतमात् कामं स्खलितम्)

भागवतपुराणमें भी लिखा है, (९।२१।३३)—मुद्गलसे मौद्गल्य गोत्रीय ब्राह्मण, भार्म्य मुद्गलसे यमज पुत्रकन्या दिवोदास एवं अहल्या और गौतमके औरस तथा अहल्याके गर्भसे शतानन्दका जन्म हुआ था।

अहल्यानन्दन (पु॰) ६-तत्। शतानन्द ऋषि।

अहल्याबाई—मालवदेशके राजा खाण्डेरावकी पत्नी। इनके एक पुत्र और एक कन्या थी। पुत्रका नाम मालीराव रखा। खाण्डेरावकी मृत्युके बाद मालीरावने अल्पकाल राजत्व करा सन् १७६६ ई॰में परलोकगमन किया। अहल्याकी कन्याका नाम मुक्ताबाई था। उसका विवाह यशोवन्त रावसे हुआ।

मालीरावको मृत्युके बाद अहल्याबाई स्वयं राजेश्वरी हुईं। ये स्वभावसे अतिशय धर्मभीरु और बुद्धिमती थीं। परन्तु इनके अपने हाथमें राज्यभार लेनेसे गङ्गाधर यशोवन्त नामक एक राजपुरोहित विरोधी हो गये। उनकी इच्छा थी, कि रानी एक दत्तक पुत्र ग्रहण करतीं। दत्तक पुत्र ग्रहण करनेसे वह स्वयं राज्यके कर्ता हो सकते, किन्तु अहल्याबाई इस प्रस्तावमें सम्मत न हुईं। पीछे राघवदादा नामक महाराष्ट्रीय राजाके विरुद्ध गङ्गाधरके कथन पर अहल्याके विरुद्ध युद्धका उद्योग करने लगे। यह बात सुनकर अहल्याबाईने महाराष्ट्रदेशके राजा माधवरावको विशेष अनुरोधसे एक पत्र लिखा था। माधवरावने पत्र पाकर अपने मतीसे राघवदादाको विरोधसे शान्त किया, इसीसे युद्ध न हुआ। पीछे अहल्याबाईने गङ्गाधरको क्षमा कर प्रधान मन्त्री बनाया था। फिर तुकाजी होलकर नामक एक मनुष्य सेनापति नियुक्त हुये। तुकाजी बहुत बुद्धिमान् व्यक्ति थे। इसलिये उन्होंने शासन ही अन्य अन्य कामका भार भी ले लिया। अहल्याबाई स्वयं नर्मदाके तट सातपुरा पर्वतके उत्तर समस्त देशका शासन रक्षा करती थीं। इधर खानदेश निमाड़ और दक्षिणप्रान्तका कर भी इनके पास आ पहुंचता। तुकाजी सातपुरा पर्वतके दक्षिण रह होलकरके अधिकारसे सम्पूर्ण देशका शासन संग्रह करते थे। अहल्याबाईके समय राज्यमें किसी प्रकारका विग्रहका न रहा। जब कर्मचारी नियमित रूपसे वेतन पाते थे। कर्मचारियोंको वेतन देकर जो रुपया उद्वृत्त रहता, युद्धादिके निमित्त वह संग्रह किया जाता था। दिन दिन अहल्याबाईकी प्रतिपत्ति बढ़ने लगी। भारतवर्षीय सब राज्योंके वकील और प्रतिनिधि इनकी सभामें उपस्थित रहते थे। इधर अहल्या रानीके भी प्रतिनिधि पूना, हैदराबाद, श्रीरङ्गपत्तन, नागपुर, लखनऊ एवं कलकत्ते नगरमें रह सकल कार्य निर्वाह करते थे। अतएव राजकार्यको ऐसी सुव्यवस्था पहले कभी न हुयी थी। हिन्दूमहिलायें घरसे बाहर नहीं निकलतीं, परन्तु अहल्याबाई राजसभामें बैठ मन्त्रियों और पारिषदोंसे सम्पूर्ण राजकार्यका परामर्श लेती थीं। यह प्रतिदिन सूर्योदयसे पूर्व ही उठ स्नानादिके पीछे प्रातःसन्ध्या समाते रहीं। पूजा आदिके बाद कुछ काल धर्मग्रन्थ पुराण प्रभृति का पाठकर अपने हाथसे थोड़े ब्राह्मणोंको भोजन करा अपना भोजन करती थीं। यह मत्स्य मांस खाती न थीं। भोजनके बाद कुछ काल विश्राम कर साढ़े बारह बजेके बाद राजवस्त्र पहन सभामें जाते रहीं। संध्याकाल पर्यन्त दरबार होता था। सायंकाल एवं रात्रिके भोजन बाद यह पुन सभामें बैठती थीं।

पहले इन्दौर अति सामान्य ग्राम था अहल्याबाईके यत्नसे क्रमशः समृद्धिशाली और प्रसिद्ध नगर हो गया। यह कभी प्रजाके ऐश्वर्यपर लोभ करती न थीं। इनको निज व्ययके लिये पांच लाख रुपये वार्षिक आयकी सम्पत्ति निर्दिष्ट रही। इससे भिन्न होलकर राज्यसे दो करोड़ रुपया इन्होंने पाया था। यह रुपया सत्कर्ममें ही व्यय किया गया। पहले इन्होंने कयी दुर्ग बनवाये थे। उसके बाद विन्ध्य पर्वतपर जाम नामक दुर्गमें एक राह बनवायी। केदारनाथके यात्रियोंकी सुविधाके लिये एक धर्मशाला और एक तालाब निर्माण कराया। यह धर्मशाला मन्दर नामक स्थानके ऊपर आज भी विद्यमान है। मणिपुर और मालव प्रान्तमें भी इनकी बनवायी अनेक धर्मशाला तथा कूप हैं। इसके अतिरिक्त सेतुबन्धरामेश्वर, द्राविड़ और सोमेश्वरमें एक एक कीर्ति पड़ी है। बड़ोदा-राज्यस्थ डाभोई जिलेके सिद्धपुर नामक स्थानमें कमकपुरी भोपायियोंका जो बढ़िया धर्मशाला पड़ा, वह अहल्याबाईका ही बनवाया है। काठियावाड़

जूनागढ़में इन्होंने सोमनाथका दूसरा-नया मन्दिर खड़ा कराया, जो ३८ फीट लम्बा और ४२ फीट चौड़ा है। मन्दिरको चारो ओर ८२ फीट चौड़ा अहाता खिंचा है। अहातेमें धर्मशाला और अन्नपूर्णा एवं गणपतिका दो छोटा मन्दिर है। सोमनाथके मन्दिरपर तीन गुम्बज लगे हैं। शङ्करेश्वर लिङ्गके नीचे १२ फीट लम्बी-चौड़ी कोठरी खुदी, जिसमें सोमनाथका लिङ्ग विराजमान है। गुम्बजोंमें ३२ खम्भे लगे हैं। परन्तु सकल स्थानको अपेक्षा गयाधामवाली इनकी कीर्त्ति ही अधिक प्रशंसनीय है। गयामें इनके प्रतिष्ठित अनेक देवालय हैं, जिनके मध्यमें विष्णुपदमन्दिर और लाटमन्दिर अतिशय आश्चर्यमय हैं। मन्दिरकी कारीगरी विश्वकर्माने मानो अपने हाथ निकाली है। ऊपरी मेहराव अति चमत्कार है, मानो शून्यपर आप ही लटकती है। फिर एक मन्दिरमें रामसीताकी प्रतिमूर्ति है, जिसके समीप अहल्याबाई बैठ भक्ति भावसे शिवपूजा करती है। इनके समस्त देवालयोंमें प्रतिवर्ष विस्तर अर्थ और खाद्यद्रव्यादि दान किया जाता था। इससे भिन्न यह नित्य दरिद्रोंको भोजन कराती थीं। ग्रीष्मकाल आनेसे पथिकोंके लिये अहल्या स्थान स्थान पर जलछत्र बैठा देते रहीं। शीतकालमें दरिद्रोंका यह वस्त्र वितरण करती थीं। पशु-पक्षियोंके लिये भी खाद्यद्रव्य निर्दिष्ट था। कृषक शस्यक्षेत्रसे पक्षियोंको बैठने न देते थे। असंख्य असंख्य पक्षी दल बांधकर ऊपर उड़ा करते, परन्तु कुछ भी खाने न पाते रहे। यह देखकर अहल्या रानी कृषकोंसे फसली खेत खरीद कर पक्षियोंके निमित्त छोड़ देती थीं। इसीतरह सन् १७६५ से १७८५ ई० तक प्रायः तीस वर्ष सुखपूर्वक राजत्व चला साठ वर्षकी अवस्थामें इन्होंने स्वर्गगमन किया।

अहल्याराज (सं० पु०) ६-तत्। इन्द्र।

अहल्यास्थान—विहारप्रान्त दरभङ्गा जिलेके अहियारी ग्रामका मन्दिर। प्रति मास इस मन्दिरमें धार्मिक मेला लगता और दिन रात ठहरता है। प्रायः दश सहस्र यात्री एकत्र होते हैं। पहले सिरसठ परगनेके देवकली कुण्डमें स्नान कर पीछे लोग यहां सीताका पदचिह्न देखने आते हैं। पदचिह्न चपटे पत्थर पर उतरा है। कहते हैं, गौतम ऋषि यहीं रहते थे।

अहल्याह्रद (सं० पु०) अहल्यया कृतो-ह्रदः, शाक ३-तत्। गौतमके आश्रमका स्वनामख्यात तीर्थविशेष।

अहश्चिक (सं० पु०) अहनि लोयते जनैर्न दृश्यते अहन् ली निपा० ड संज्ञायां ठन्। प्रेत, दिनका देख न पड़नेवाला प्रेतात्।

अहवन—अवधके राजपूतोंका एक वंश। कहते हैं, कि गुजरात अनहलवाड़ पाटनके छआर शासक भ्रातृद्वय गोयो और मोयो अहवनोंके पूर्वपुरुष रहे। दोनो ही नेता सन् ई०का शताब्द आरम्भ होते समय अवध आये थे। इनमें कुछ हिन्दू और कुछ मुसलमान होते, किन्तु साथ ही बैठकर खाते हैं। हिन्दू हिन्दुओं और मुसलमान मुसलमानोंके साथ विवाह करते हैं।

अहवनीय (सं० वि०) हवनके अयोग्य, जिसे आहुतिमें डाल न सकें।

अहयात (हिं० पु०) सोहाग, जिस हालतमें खाविन्द जिन्दा रहे।

अहवान (हिं०) आह्वान देखो।

अहवाल (अ० पु०) वृत्तान्त, बातें, खबरें। २ दशायें, हालतें। यह शब्द 'हाल'का बहुवचन है।

अहविस् (वै० वि०) हव्यरहित, बलिविहीन।

अहश्शम् (वै० अव्य०) प्रतिदिन, रोज-रोज।

अहश्शेष (सं० पु०) अह्नः शेषः। १ दिवसका शेष, सन्ध्या, शाम। अह्नः शेषो यत्र, बहुव्री०। २ अशौचव्रतादिके पूरे होनेका दिन।

अहसान (अ० पु०) १ उपकार, भलायी, सलूक, नेकी। २ अनुग्रह, मेहरबानी।

अहस्कर (सं० पु०) अहः करो अहन्-कृ-ट उप० समा०, अह्निकरो यस्य बहुव्री० वा, कस्कादित्वात् सः। १ सूर्य। २ अर्कवृक्ष।

अहस्त (सं० त्रि०) न स्तः हस्तौ यस्य नञ्-बहुव्री०। १ हस्तशून्य। जैसे छागादि प्राणी। २ छिन्नहस्त,हस्तरहित, जिसके टूटा हाथ रहे। नास्ति हस्तः शुण्डो यस्य। ३ शुण्डरहित, बेसूंड़।

अहस्पति (सं॰ पु॰) अह्नः पतिः तत्, वा समासः। १ सूर्य। २ अर्कवृक्ष।

अहह (सं॰ अव्य॰) अहम् अहङ्कारं जहाति, अहम् हा-ड पृषो॰ साधु। १ खेद, दुःख। २ अद्भुत, आश्चर्य। ३ हाय हाय खेद। ४ क्लेश, सम्बोधन। ५ प्रकर्ष क्या खूब।

अहहा (सं॰ अव्य॰) अहम् आत्माभिमानं जहाति। अहम् हा-डा। अहह देखो।

अहा (हिं॰) अहह देखो।

अहाता (अ॰ पु॰) १ आङ्गन, प्राङ्गण, घेरा। २ चहार, चहारदीवारी।

अहान (हिं॰) आह्वान देखो।

अहार (हिं॰) आहार देखो।

अहार—१ राजपूतानेके उदयपुर राज्यका विध्वस्त नगर। यह उदयपुर नगरसे २ मील पूर्व पड़ता है। कहते हैं आयादित्यने पुरातन राजधानी ताम्बा नगरीके स्थानमें इसे प्रतिष्ठित किया था। उसका नाम आघाटपुर रहा। पीछे विक्रमादित्यके तुवार पूर्वपुरुष ताम्बा नगरीमें जो निवास करते रहे, जिसका नाम बिगड़ कर पहले आनन्दपुर और पीछे अहार हुआ। इस स्थानकी पूर्व और कितने ही पुराने निशान मिलते, जिन्हें 'धूल कोट' कहते हैं। धूलकोटमें पत्थरको तरासी हुई चीजें, मट्टीके बरतन और सिक्के प्राय बहुत मिलते हैं। कुछ बहुत पुराने जैनमन्दिरोंका पता भी पता चलता, जिनका मसाला दूसरे अधिक पुराने गिरे मन्दिरोंसे लिया गया है। भूमि चैत्यों और मन्दिरोंके टूटे पत्थरसे भरी, जो राजाओंकी छतरी बनानेमें लगा है।

२ युक्तप्रदेशके बुलन्दशहर ज़िलेका एक प्राचीन नगर। यह गङ्गाके दाहने किनारे बुलन्दशहर नगरसे २१ मील दूर बैठता है। यहां बाग़, पोखरा और पक्का घाट बना है। ज्येष्ठ मासमें गङ्गास्नानका बड़ा मेला लगता है। नगरमें कितने ही साधारण मन्दिर बने हैं। नगरकी अवस्था अब बिगड़ गयी है। शीत और ग्रीष्म ऋतुमें गङ्गापर नावका पुल बांध दिया जाता है। ग़दरके समय अहारके नागर ब्राह्मण मुसलमान हो गये थे, जो सन् १८५७ ई॰तक अपनी मिल-कियतका कुछ भाग रहे। सिपाही विद्रोहके बाद उनकी भूमि मुरादाबादके राजा गुरुसहाय मलको दी गयी थी।

अहारिन् (सं॰ त्रि॰) कुछ न खानेवाला, जो खाता न हो।

अहारी (हिं॰) आहारी देखो।

अहार्य (सं॰ पु॰) न ह्रियतेऽसौ, हृ-ण्यत् नञ् तत्। १ पर्वत उठ न सकनेवाला पहाड़।

'अहार्य्यमर्त्यानां ?' (अमर)

(त्रि॰) २ हरण करनेको अयोग्य, जिसे चोर न सकें। ३ अभेद्य, जो टूट न सकता हो।

अहार्यता (सं॰ स्त्री॰) रक्षा, गुप्ति, हिफ़ाज़त, जिस हालतमें चोर उठाकर ले न जा सकें।

अहासा (हिं॰) अहह देखो।

अहि (सं॰ पु॰) आहन्ति आघ्नन्ति वा, आ-हन्-इण्, तस्य डित्वं किंवा डिच्च आङो ह्रस्वश्च। १ सर्प, सांप। २ कृमानुर, आश्लेषाका सांप। ३ अश्लेषा नक्षत्र। ४ वृत्रासुर। यह इन्द्रका शत्रु था। ४ सूर्य। ५ राहु। ६ पथिक, राहगीर। ७ खल, खराब आदमी। ८ वञ्चक, ठग। ९ सर्वज्ञामिक अश्लेषा नक्षत्र। १० जल, पानी। ११ मेघ, बादल। १२ भावार्थमें, आसमान और ज़मीन। १३ सीसक, सीसा। १४ पृथिवी, ज़मीन। १५ गो, गाय। १६ नाभि, ढोंढ़ी। १७ उत्तरावर्त। १८ वक्षोडल। (त्रि॰) १९ आयत, सुमरल, मामूर। २० व्याप्त, परागन्दा, फैला हुआ। २१ आघातकर्ता, चोट पहुंचानेवाला जो मारता हो।

अहिंसक (सं॰ त्रि॰) न हिंसकः, हिन्स-वुन् नञ्-तत्। हिंसारहित, मासूम, जो मारता न हो।

अहिंसा (सं॰ स्त्री॰) हिन्स-अ टाप्, नञ्-तत्। १ अद्रोह, अनपकार, बेगुनाही, मासूमियत, भोलापन। २ योगशास्त्रमें—मनोवाक्कायके द्वारा परपीड़ाका अभाव, दिल ज़बान् या हाथ पैरसे किसीको तकलीफ़ न देना। ३ प्राणियोंकी निवृत्ति, जानवरोंको न मारना। ४ धर्मशास्त्रीय प्राणिपीड़ाका अभाव, धर्मशास्त्रानुसार जानवरोंको क़तल न करना।

शास्त्रकारोंने लिखा, कि वेदविहित हिंसा अहिंसा कहाती है। मनुने भी वैध हिंसामें कोयी दोष नहीं बताया। मीमांसक भी इसी मतको मानते हैं। किन्तु सांख्यमतसे वैध हिंसा पुरुषके लिये पापजनक होती है। बौद्ध और जैन अहिंसाको ही परमधर्म समझते हैं।

अहिंसान (सं० त्रि०) न हिनस्ति, हिंस् शीलार्थे शानच्, नञ्-तत्। हिंसा न करनेवाला, जो मारता-पीटता न हो।

अहिंसानिरत, अहिंसान देखो।

अहिंसित (वै० त्रि०) पीड़ारहित, जो मारा न गया हो।

अहिंस्यमान, अहिंसित देखो।

अहिंस्र (सं० त्रि०) १ अहिंसक, मासूम, जो मारता-काटता न हो। (क्ली०) २ हिंसाशून्य व्यवहार, जिस काममें मार-काट न रहे। (पु०) ३ कुलिक वृक्ष, काकरोलका पेड़।

अहिंस्रा (सं० स्त्री०) कण्टकपाली वृक्ष, काकरोलका पेड़। यह विष और शोथको दूर करता है। (राजनिघण्टु)

अहिक (सं० पु०) अन्ध सर्प, अन्धा सांप। इसमें विष नहीं होता। २ शाल्मलीवृक्ष, सेमलका पेड़।

अहिका (सं० स्त्री०) शाल्मलीवृक्ष, सेमलका पेड़।

अहिकान्त (सं० पु०) अहिभिः काम्यते स्म, कम-क्त, ३-तत्। वायु, सांपोंकी प्यारी चीज़ हवा। कहते, कि सांप वायुको खाकर जीते हैं।

अहिकुटी (सं० पु०) भारद्वाजपक्षी, चकोर।

अहिकोष (सं० पु०) निर्मोक, खुरण्ड, सुरदारगोश्त, केंचली।

अहिक्षत्र, अहिक्षेत्र देखो।

अहिक्षेत्र (सं० पु०) अहिना शोभितं क्षेत्रम्, शाक० तत्। १ हस्तिनापुरके पूर्वदेशका क्षेत्र। अहिच्छत्र देखो। २ सर्पके रहनेकी भूमि, जिस जगहमें सांप रहें।

अहिगण (सं० पु०) १ वृत्तविशेष, एक बहर। इसके आदिमें एक गुरु और अन्तमें तीन लघु मात्रा रहती हैं। ६-तत्। २ सर्पसमूह, सांपोंका जख़ीरा।

अहिगम्यफला (सं० स्त्री०) सप्तकीवृक्ष, तुवानका पेड़।

अहिगन्धा (सं० स्त्री०) सर्पगन्धा, सांपगन्धा, एक पेड़।

अहिगोप (वै० त्रि०) सर्पसे रक्षित, जिसको सांप बचाता हो।

अहिघ्न (वै० क्ली०) स्वर्गीय नदीकी राह रोकनेवाले वृत्रासुरका हनन।

अहिघ्नी (वै० पु०) सर्पविनाश, सांपोंका क़त्ल।

अहिच्छत्र (सं० पु०) अहेः फणाकारः छत्रः छादकः, शाक० ६-तत्। १ मेषशृङ्गीवृक्ष, मेढासींगीका पेड़। २ देशविशेष। अर्जुनने यह देश जीत द्रोणाचार्यको दिया था। हेमचन्द्रकोषमें इसका नाम 'प्रत्यग्रथ' लिखा है।

अहिच्छत्रका दूसरा नाम अहिक्षेत्र है। कहते हैं, कोयी अहीर मैदानमें सो रहा था। उसी समय एक सांप उसके मस्तकपर अपना फणा फैलाकर जा बैठा। वही अहीर पीछे राजा हो गया, लोग उसे आदिराज कहने लगे। इसीसे अहिक्षेत्रका नाम 'आदिकोट' भी है।

कौरवोंने द्रुपदराजको युद्धमें हरा पञ्चालदेश दो भागोंमें बांटा था। उसमें गङ्गातीरस्थ माकन्दी देशसे चर्मण्वती नदी पर्यन्त दक्षिण पाञ्चाल द्रुपदके अंशमें पड़ा। इसकी राजधानीका नाम काम्पिल्य रहा। उत्तर पञ्चाल जनपदको अहिच्छत्र कहते थे। इसकी राजधानी अहिच्छत्रा नामसे प्रसिद्ध रही। द्रोण यहांके राजा बने थे।

चीनपरिव्राजक युअङ्गचुयाङ्गका कहना है, कि इस स्थानमें एक नागह्रद रहा। इसी ह्रदके किनारे बुद्धदेवने सात दिन तक अपना मत प्रकाश किया था। चीनपरिव्राजकके समय यहां बारह मठ रहे। उनमें कोई एक हजार सन्यासी निवास करते थे। सिवा इसके ब्राह्मणोंके भी नौ देवालय रहे। इनमें भी कोयी तीन सौ ब्राह्मण महादेवको पूजा करते थे।

अहिच्छत्रक (सं० क्ली०) गोमयज, कुकुरमुत्ता, सांपकी टोपी।

अहिच्छत्रा (सं॰ स्त्री॰) १ शताह्वाक्षुप, सौंफका झाड़। २ शर्करा, चीनी। ३ अहिच्छत्र देशकी राजधानी। इसकी चारों ओर प्राचीर बना था। इसका परिधि कोयी तीन कोस रहा। यहां रामगङ्गा और गङ्गाने नदीके मध्य एक किला था, जहां पहले मुहम्मद शाहने कितनी ही मसजिदें बनवायीं।

अहिजाहक (सं पु॰) ब्रह्मनाम गिरगिट।

अहिजित् (सं॰ पु॰) अहिं सर्प असुरविशेषं वा जितवान्, अहि जि क्विप्-तुक्। १ कृष्ण। यमुना नदीमें कालीय नाग अर्थात् सर्प जीत लेनेसे कृष्णको अहिजित् कहते हैं। २ इन्द्र। ऋग्वेदमें लिखा, कि इन्द्रने अहि नामक असुरको मारा था।

अहिजिन, अहिजिन् देखो।

अहिजिह्वा (सं॰ स्त्री॰) अहेर्जिह्वेव। नागजिह्वा नामक लता, नागफनी। इसका अग्रभाग सांपकी जीभ जैसा होता है।

अहिजिह्विका (सं स्त्री) महाशतावरी बड़ी शतावर।

अहिण्डुका (सं॰ स्त्री॰) हिण्ड-ण्वुल् टाप् नञ् तत्। मरुतोंका कीटविशेष, एक जहरीला छोटा कीड़ा।

अहित (सं॰ पु॰) नञ् तत्। १ शत्रु दुश्मन्। (क्ली॰) २ क्षति, नुकसान्। ३ कुपथ्य, बीमारीमें न खाने लायक चीज़। (त्रि॰) ४ अप्रतिष्ठित, जो रखा न गया हो। ५ अयोग्य, नाकाबिल। ६ हानि कारक नुकसानदिह। ७ प्रतिकूली हासिद। ८ प्रतिकूल मुखालिफ।

अहितकारिन् (सं॰ त्रि॰) प्रतिकूली, मुखालिफ, जो भलाई न करता हो।

अहितद्रव्य (सं॰ क्ली॰) अखाद्य द्रव्य, न खाने लायक चीज़। मिश्रीखाद्यमें माष कलाय, फलमें लकुच (बड़हल) दुग्धमें मेषीदुग्ध, तैलमें कुसुम्भतैल और लवणविकारमें पाक्षिक अहितद्रव्य है। (भावप्रकाश)

अहितनामन् (वै त्रि॰) अप्रयुक्त नामसे रहित, जो अब तक बेनाम हो।

अहितपदार्थ (सं॰ पु॰) १ हत रसकी बुरी चीज़। २ पूर्णिमास मन्दा गोश्त। ३ प्रभातनिद्रा, सबेरेकी नींद।

अहितमनस् (सं॰ त्रि॰) विरोधी, मुखालिफ, बुरा चेतनेवाला।

अहितहितविचारशून्यबुद्धि (सं॰ त्रि॰) भलाई-बुराई न समझनेवाला जिसे अच्छा बुरा समझ न पड़े।

अहिताहार (सं पु॰) अहितकर द्रव्यका भक्षण नुकसान् पहुंचानेवाली चीज़का खाना। अहिताहार पीड़ा उत्पन्न करता है। (सुश्रुत)

अहितुण्डिक (सं॰ पु॰) अहेस्तुण्ड मुखं तेन दिव्यति, ठञ् ठक् वा। व्यालग्राही, सपेरा।

अहितेच्छु (सं॰ त्रि॰) अशुभचिन्तक बदख्वाह।

अहित्य (सं॰ पु॰) अमैत्रिका, शत्रुकी मैत्री।

अहिदत्, अहिदन्त देखो।

अहिदन्त (सं॰ त्रि॰) सर्पदन्तविशिष्ट सांपके दांत रखनेवाला।

अहिद्विष् (सं॰ पु॰) अहिं सर्पं वृत्रासुरं वा द्विष्टवान्, अहि द्विष् भूते क्विप्। १ गरुड़। २ मयूर, मोर। ३ नकुल, नेवला। ४ इन्द्र।

अहिनकुल (सं॰ क्ली॰) अहिश्च नकुलश्च समाहार द्वन्द्व। सर्प एवं नकुल, नेवला-सांप।

अहिनकुलता अहिनकुलिका देखो।

अहिनकुलिका (सं॰ स्त्री॰) अहिनकुलयोर्वैरम् वुञ्। १ सर्प एवं नकुलका स्वाभाविक विरोध, नेवले और सांपकी जाती दुश्मनी। २ नित्यविरोधभाव, हमेशा रहनेवाली दुश्मनी।

अहिनामभृत् (सं पु॰) बलदेव, कृष्णके बड़े भाई।

अहिनाथ (हिं॰ पु॰) शेषनाग सर्पोंके राजा।

अहिनिर्मोक (सं॰ पु॰) अहिना निर्मुच्यते त्यज्यते, अहि निर् मुच् कर्मणि घञ् ३ तत्। सर्पका निर्मोक, सांपकी केंचुली।

अहिनिर्ल्वयनी (सं॰ स्त्री॰) अहि निर्ल्वयनी अस्याम्, अहि नि ली आधारे ल्युट् ङीप्। अहिनिर्मोक देखो।

अहिपताक (सं॰ पु॰) अहिषु मध्ये पताका तदा-कारोऽस्त्यस्य, अर्श आदि॰ अच्। सर्पविशेष कोई सांप। यह ज़हरीला नहीं होता।

अहिपति (सं॰ पु॰) ६ तत्। १ शेषनाग। २ वासुकि। ३ बड़ा सांप।

अहिपुत्रक (सं० पु०) अहिः पुत्र इव कायति शोभते गतिकाले, अहिपुत्र कै-क। नौकाविशेष, एक नाव। यह नाव तीन हाथसे ज्यादा प्रशस्त नहीं रहती, किन्तु दैर्घ्यमें ३० हाथ तक होती है।

अहिपुष्प (सं० क्ली०) नागकेशर पुष्प, कबाब-चीनीका फूल।

अहिपूतन (सं० क्ली०) बालरोगविशेष, शिशुका गुह्यक्षत, बच्चोंके पिछले निम्नका जख्म। Intertrigo स्थूलकाय शिशुओंके अधिक घर्म निकलने अथवा घर्षण लगनेसे गालो प्रभृति स्थान रक्तवर्ण पड जाता किंवा मलद्वार अपरिष्कार रहनेसे कण्डु उत्पन्न होता है। इसकी चिकित्सामें धात्रीके स्तनदुग्धपर दृष्टि रखना चाहिये। क्षतस्थानको त्रिफलाके जलसे धोते और उसमें नारियलका तेल लगाते हैं। (स्त्री०) अहिपूतना।

अहिपूतना (सं० स्त्री०) बालरोगविशेष। इस रोगकी उत्पत्ति होनेका कारण यह है—अपान स्थान अच्छी तरह न धोने तथा विष्ठा-मूत्रयुक्त रहनेपर, लडकेके शरीरमें रक्त एवं कफसे कण्डु अर्थात् खुजलाहट पैदा होती है। खुजलानेसे बहुत शीघ्र स्फोट (फोड़ा) और स्राव निकलता है। पीछे सब फोडे एकत्र मिलकर भयङ्कर व्रण हो जाता है। इसको अहिपूतन या अहिपूतना रोग कहते हैं। (माधवनिदान—क्षुद्ररोगचिकित्सा)

अहिफल (सं० पु०) दीर्घकर्कटिका, लम्बी ककड़ी। (स्त्री०) अहिफला।

अहिफेन (सं० पु०) अहेः फेनं गरलमिव तैक्ष्ण्यात्, ६ तत्-स०। १ सापकी लार। २ अफीम। यह पोस्तके फलसे भारतवर्ष, पारस्य, तुरुष्क, मिशर, जर्मणी, फ्रांस् और इङ्गलेण्डमें पैदा होता है। इनमें सबसे अधिक भारतवर्ष ही अफीमका घर है। किन्तु तुरुष्ककी अफीम उत्तम होती है।

अफीमका पेड़ दो तरहका देखा जाता, एक का (Papaver somniferum) फूल लाल एवं बीज काला और दूसरेका (Papaver officinale) फूल तथा दाना सादा रहता है। भारतवर्षमें सफेद ही पोस्त अधिक है। यह गङ्गातटको भूमिमें बहुत पैदा होता है। पटना और बनारस विभागमें प्रायः २०० कोस दीर्घ और १०० कोस प्रशस्त भूमिमें अफीमकी कृषि की जाती है। भारतवर्षको अफीमका व्यवसाय गवरमेण्टके अधीन है। पटना और गाजीपुरमें इसका प्रधान कारखाना है। इससे अति-रिक्त मालव, खान्देश और कच्छ देशमें भी अफीम पैदा होती है।

अस्मदेश और मलक्कामें भारतवर्षकी अफीम अधिक बिकती है। अफीमकी भूमि विलक्षण उर्वरा होना चाहिये। कृषक लोग वर्षा कालमें खेतको खाद डाल अच्छीतरह जोत देते हैं। इसके बाद कातिकमें खेतको पुनः जोत और मयी देकर बीज बोते हैं। बीज डालकर भी जोतना पड़ता है। अन्ततः ६-७ हाथ लम्बी क्यारी बनाते हैं। क्यारीके किनारे किनारे जल देनेके लिये नाली रहती है। १०।१५ दिनमें बीज अङ्कुरित होता है। पौधा कुछ बढ़ जानेपर कृषक खेतको निरा घास और फस निकाल देते हैं। माघमासके शेषमें फूल आता है। झड़ जानेसे कृषककी स्त्री और बालक बालिका फूल खेतसे उठा लाती है। फिर उन्हें मट्टीके खप्परमें थोडा गरम करके रोटी बनाते हैं। इसी रोटीमें अफीमका गोला लपेटा जाता है।

फूल फूटनेसे प्राय एक मासके मध्य ही पोस्त की छोटी डालियोंमें टेहनी छोटे अनारकी तरह बढ़ने लगती है। उस समय कृषक बहुत सबेरे उठ-कर चाकूसे टेहनीको दो तीन जगह लम्बा-लम्बा चीर देते हैं। उसीके द्वारा दूध बहकर बाहर निक-लता है। सूर्योदयके बाद चीरनेसे अधिक दूध नहीं होता। वृष्टि होनेसे भी दूध धो जाता है, इसीसे उस दिन अफीम नहीं जमती। दूसरे दिन प्रातः-काल कृषक उस दूधको निकाल मट्टीके पात्रमें रखते हैं। समस्त वृक्षोंका दूध इकट्ठा होनेपर कृषक मकान पहुंच किसी कांसेके बरतनमें छोड़ देते हैं। कुछ देर कासेके बरतनमें रहनेसे दूधका पानी निकलता है। यह जल बाहर फेंक न

बालकोंको कदापि अफीम न खिलाये। उनके कोमल शरीरमें अफीम मिला औषध मर्दन करनेसे भी विषक्रिया हो सकती है। अफीम खानेसे किस-किस यन्त्रमें कौन-कौन क्रिया प्रकाश पाती, उसका विवरण नीचे लिखा है—

[illegible]—पूर्ण मात्रामें अफीम खानेसे १०।१५ मिनिटके बाद पहले मत्था भारी पड़ता, उसके बाद शरीर सुस्थ, सबल एवं प्रफुल्ल हो जाता है। मुख थोड़ा सूखने लगता है। क्रमशः मुखमण्डल कुछ उज्ज्वल और कनीनिका कुञ्चित होती है। कुछ देरके बाद जब इस तरहकी उत्तेजना कम हो जाती, तब खूब निद्रा आती है। ८—१० घण्टे बाद निद्रा टूटती है। फिर देह अवसन्न, मन उद्यमशून्य, एवं शरीर ग्लानियुक्त लगता और कोई कार्य करनेकी इच्छा नहीं होती। मात्रा अधिक रहनेसे सर्वाङ्ग तपकता और शीघ्र निद्रा आना दुर्घट पड़ता है। अफीमकी मात्रा कम होनेसे भी उत्तम निद्रा नहीं लगती। जो नित्य अफीम सेवन करता, उसको नियमित समय पर मौताद न मिलनेसे बार-बार जंभाई आती, शरीर टूटता, नेत्रसे जल गिरता और अन्यान्य उपसर्ग भी उठता है। अफीम खानेसे स्पर्श-शक्ति कम पड़ जाती, जिससे वेदना निवारण होती है। परन्तु अधिक मात्रापर अफीम सेवनमें आसक्त न होनेसे ज्ञानका वैलक्षण्य होना कठिन है।

[illegible]—अफीम खानेसे १०-१५ मिनिट बाद नाड़ी पुष्ट एवं सबल, शरीर उष्ण और मुख उज्ज्वल लगता है। क्रमशः नशा कम होनेसे नाड़ी क्षीण तथा मृदुगामिनी हो जाती है।

[illegible]—अफीम खानेके बाद नाड़ी चञ्चल होती और उसीके साथ निश्वास प्रश्वास भी कुछ जोर चलने लगता है। मुखमण्डल पहले उज्ज्वल रहता, पीछे श्वासक्रिया मन्द पड़नेसे मलिन हो जाता है। अफीम सेवन करनेसे श्वास यन्त्रकी अधिक शिराओंकी भी स्पर्शशक्ति घटती है।

[illegible]—अफीम सेवन करनेसे शरीरकी सम्पूर्ण स्रावणक्रिया कम पड़ जाती है। ग्रन्थिसे [illegible] रस न निकलने पर मुख सूखने लगता है। पाकाशयमें आमरस उत्तम रीतिसे नहीं टपकता, इसीसे क्षुधामान्द्य और अजीर्णरोग उत्पन्न होता है। पित्त प्रभृति कोई रस यथेष्ट मात्रामें बाहर न निकलनेसे कोष्ट बद्ध और मल कठिन पड़ जाता है। अनेक स्थानमें पेशाब परिमाणसे अल्प होता, परन्तु कही कही अधिक मूत्र भी आता है। अफीम खानेसे सम्पूर्ण स्रावण क्रिया कम हो जाती, किन्तु उससे विलक्षण घर्म निकलता है। अफीम खानेसे पोषण-क्रिया भी घटती, किन्तु उससे शरीर कृश नहीं होता। कारण अफीम देहके पेशीसूत्रको क्षय होने नहीं देती। यौवन कालके बाद स्वभाव होसे शरीरके विधानोपादानका क्षय होना आरम्भ हो जाता है। अफीम उसी क्षयको निवारण करती है। इसी लिये अनेक मनुष्य कहते हैं, चालीस वर्षके बाद सबको अफीम खाना चाहिये। उदरामय, काश, वात प्रभृति नाना प्रकार पीडाके उपलक्षमें अनेक आदमी अफीम खाने लगते हैं। पहले पहल इससे विलक्षण उपकार भी होता है, परन्तु क्रमशः मात्रा विना वृद्धि किये अफीम फिर उपकार नहीं करती। अनेक अफीमची प्रतिदिन एक तोलेसे भी अधिक अफीम खाते हैं। विलायतमें कितने ही व्यक्ति पीडाको दबानेके लिये डेढ बोतल अफीमका अरिष्ट प्रत्यह सेवन करते हैं। क्रम क्रमसे अभ्यास न करनेपर १५।२० ग्रेण अफीम खानेसे ही मनुष्यकी मृत्यु हो जाती है। अधिक मात्रामें अफीम खानेसे रोगी शीघ्र ही अज्ञान पड़ता, धीरे धीरे श्वास प्रश्वास निकलता, गला घड़ने लगता, मुख मलिन, नेत्र रक्तवर्ण एवं मुदित तथा कनीनिका कुञ्चित रहती, प्रथम अवस्थामें नाडी स्थूल होती एवं धीरे धीरे चलती, रोगी पुकारनेसे नेत्र खोलकर देखना चाहता, किन्तु चेष्टा करनेमें बहुत विरक्त हो जाता है। उसके बाद नाड़ी क्रमशः अधिक क्षीण लगती और बहुत देरके बाद कभी-कभी उसका स्पन्दन होता है। श्वासप्रश्वासमें अतिशय विघ्न आता है। शरीर शीतल और घर्माक्त हो जाता है। अचेतन अवस्थामें

२ सर्पभय, सांपका डर। ३ विश्वासघातकी आशङ्का, दगावाजोंका दगदगा।

अहिभयदा (सं० स्त्री०) अहिभयं यति खण्डयति, अहि-भय द्यो-क। सर्पका भय छोड़ानेवाली भूम्याम-लकी, भुयिं आंवला।

अहिभानु (सं० पु०) अहिर्व्याप्यः भानुः लक्षणया भानुगतिः यस्य। प्रवाहवायु, हवा। ज्योतिषमें लिखा, कि प्रवाह-वायु द्वारा ही सूर्यकी गति होती है।

अहिभुज् (सं० पु०) अहिं भुङ्क्ते, अहि-भुज-क्विप्। १ सांपके खानेवाले गरुड। २ मयूर, मोर। ३ नकुल, नेवला। ४ तार्क्ष्य, साल या साखूका पेड। ५ नाकुली-नाम महाकन्द शाक, छोटा चांद। कहते हैं, इसके खानेसे सांपके लड़ते समय काटनेमें नेवलेपर विष नहीं चढ़ता।

अहिभृत् (सं० पु०) अहिं सर्पं बिभर्ति भूषणरूपेण धारयति, अहि-भृ-क्विप् तुक्। सर्पकी आभूषणकी तरह पहननेवाले शिव।

अहिम (सं० क्ली०) न हिमम्, विरोधे नञ्-तत्। १ उष्णस्पर्श, लम्स-गर्म। (त्रि०) २ उष्णस्पर्शयुक्त, जो छूनेमें गर्म हो।

अहिमकर, अहिमद्युति देखो।

अहिमतेजस्, अहिमद्युति देखो।

अहिमद्युति (सं० पु०) अहिमा उष्णा द्युतिरस्य। १ सूर्य, गर्म रोशनीवाला आफ्ताब। २ अर्कवृक्ष, अकोड़ेका पेड़।

अहिमन्यु (वै० त्रि०) अहिरिव हिंस्रो मन्युः क्रोधो यस्य, बहुव्री०। १ हननशील, हिंस्र, खूंखार, सांपकी तरह झपटनेवाला। (पु०) ६-तत्। २ सर्पका क्रोध, सांपका गुस्सा। ३ वायु, हवा।

अहिमरुचि, अहिमद्युति देखो।

अहिमर्दनी (सं० स्त्री०) अहिः मृद्यतेऽनया, अहि-मृद-करणे-ल्युट्। १ गन्धनाकुली नामक कन्द विशेष, छोटा चांद। २ अहिलता विशेष।

अहिमांशु, अहिमद्युति देखो।

अहिमात (हिं० पु०) चाकका गड्ढा। इसीके सहारे चाक कीलपर चढ़ता है।

अहिमाय (वै० त्रि०) अहेरिव कुटिला माया यस्य। सर्पवत् कुटिल, सांप-जैसा टेढ़ा।

अहिमार (सं० पु०) अहिं मारयति, अहि-मृ-णिच् अण् णिच् लोपः, उप० समा०। १ विट्खदिर, गन्ध-खैर। २ गरुड। ३ मयूर, मोर। ४ वृत्रासुरनाशक इन्द्र।

अहिमारक, अहिमार देखो।

अहिमाली (सं० पु०) सर्पका हार पहननेवाले शिव।

अहिमेद, अहिमार देखो।

अहिमेदक, अहिमार देखो।

अहियारी—विहार प्रान्तके दरभङ्गा राज्यका एक ग्राम। यह अक्षा० २६° १८′ उ० और द्राघि० ८५° ५०′ ४५″ पू० पर अवस्थित है। अहल्यास्थान देखो।

अहिर, अहीर देखो।

अहिरानी—बम्बई प्रान्तके खानदेश जिलेकी भाषा। अहीरोंका प्रभाव अधिक रहनेसे खानदेशकी महाराष्ट्र भाषा अहिरानी कहाती है।

अहिरिपु (सं० पु०) ६-तत्। १ सर्पके शत्रु गरुड। २ मयूर, मोर। ३ नकुल, नेवला। ४ कृष्ण। ५ इन्द्र। ६ गन्धनाकुलीवृक्ष, छोटा चांद।

अहिर्बुध्न, अहिर्बुध्न देखो।

अहिर्बुध्न्य (वै० पु०) योऽहि स एव बुध्नश्चेति समानाधिकरणयाहिर्बुध्नशब्दोऽसमस्तः, तथा च अहिना बुध्नेन स्तुतौ लिङ्गम्। अग्नि, आग। "मानोऽहि-र्बुध्न्योरिषे धात्।" (ऋक् ७।३४।१८)

अहिर्बुध्न्यदेवता, अहिर्बुध्न्य देवता देखो।

अहिर्ब्रध्न, अहिर्बुध्न देखो।

अहिलता (सं० स्त्री०) अहिलोकस्य पातालस्य लता, शाक० तत्। १ गन्धनाकुली, छोटा चांद। २ ताम्बूली, पानकी बेल।

अहिलव (हिं० पु०) आधिक्य, बढ़ती, भरमार।

अहिला (हिं० पु०) १ अभिप्लव, सैलाव, बूहा। २ असामञ्जस्य, झगडा।

अहिलासरियार—विहारके शाकद्वीपीय ब्राह्मणोंका एक विभाग।

अहिलोकिका (सं० स्त्री०) भूम्यामलकी, भुयिं आंवला।

अहिलोचन (सं॰ पु॰) शिवके अनुचर विशेष।

अहिला (सं॰ स्त्री॰) वनमेथिका, जङ्गली मेथी।

अहिवर (सं॰ पु॰) छन्दोविशेष, एक दोहा। इसमें पांच गुरु और अड़तीस लघु लगते हैं।

अहिवत—बम्बई प्रान्तके नासिक जिलेके चांदोर पर्वतकी घाटी। यह नासिकसे पश्चिम डिंडोरी और वाणीके बाज़ारोंको आपसमें मिलाती है। केवल सामान्य क्रयविक्रय होता है।

अहिवल्ली (सं॰ स्त्री) नागवल्ली, पान।

अहिवात, अहवात देखो।

अहिवातिन, अहिवाती (हिं॰ स्त्री॰) सधवा, सौभाग्य वती, जो रांड़ न हो।

अहिवासी—युक्तप्रान्तके मथुरा और मैनात स्थानकी जमींदार, काश्तकार और मज़दूर जाति। इसका अर्थ है—अहिवासका रहनेवाला अर्थात् सांपके रहनेकी जगहका बाशिन्दा। पुराणमें इस जातिका सम्बन्ध सौभरि ऋषिसे यों देखाया गया है—

वृद्धावस्थामें सौभरि ऋषिको सन्तान उत्पन्न करने की उत्कण्ठा हुयी और उन्होंने मान्धाता राजाके जाकर अन्तःपुरमें एक कन्या मांगी। राजाने कहा, अन्तःपुरमें आपको जो पसन्द करे, वही दे दी जायेगी। किन्तु मार्गमें ऋषिने ऐसा मनोहर रूप बना लिया था, कि देखते ही पचासों कन्या मोहित हो गयीं। अन्तमें वह पचासोंको अपने घर ब्याह लाये। उन्होंने विश्व कर्माको आज्ञा दे सबके लिये सुन्दर प्रासाद बन वाया और पचास रूप रख सबके साथ आनन्दसे दिन काटा। ऋषिके १८ सौ सन्तान हुये थे। किन्तु उन्होंने मायाका प्रभाव समझ शेष सबको छोड़ दिया और विष्णुके चरणकमलोंमें ध्यान लगाया। वह अपने सन्तान और पत्नियोंके साथ वनको गये थे। ऋषिको पक्षियोंपर बड़ा क्रोध चढ़ता, कारण वह मलमूत्रादि उनके आश्रमपर डाल देते रहे। इसीसे यदि कोयी पक्षी उनके आश्रमपर पड़ जाता, तो वह उसे शाप दे भस्म कर देते थे। इसी बीच गरुड़ सर्पोंका सर्वनाश करनेमें लगी रहे। अहीने गरुड़से प्रार्थना की,—यदि आप अधिक वध न करें, तो हम आपके अर्थ एक सर्प नित्य भेंट देंगे। गरुड़ इस बात पर सम्मत हो गये। किन्तु कालीय नामक एक बड़े अहिने गरुड़के भक्ष सर्पोंको बचाया और उन्होंने उसका पीछा पकड़ा था। कहीं शरण न मिलनेपर उससे कहा गया,—तुम सौभरि ऋषिके आश्रममें जाकर बैठ रहो, वहां ऋषिके शापसे गरुड़की दाल न गलेगी। इसीसे मथुरा ज़िलेके जिस सुनरख ग्राममें ऋषिका आश्रम रहा और कालीयने जाकर शरण लिया था, उसका नाम 'अहिवास' अर्थात् सांपके रहनेकी जगह पड़ा। अहिवास ही अहिवासी जातिकी उत्पत्तिका स्थान है। इस जातिके लोग अपनेको सौभरिके वंशज बताते और सुनरखको अपना प्रधान स्थान समझते हैं। वृन्दावनमें कालीमर्दन घाटके पास ही सुनरख ग्राम अवस्थित है। बलदेव मन्दिरके पण्डा अहिवासी ही हैं। इस जातिमें कोयी ७२ कुल होंगे, जिनमें छिंछिया और विजरावत प्रधान हैं। पञ्चायतमें चौधरी जातिका विवाद मिटाता और अपराधीको अर्थ दण्ड देता या जातिच्युत करता है। विधवाविवाह, पतिके मरने-पर उसके भायीसे विवाह कर लेना, वेश्यासेवा, गर्भक-मर्दका आदि विषय बहुत निषिद्ध समझे जाते हैं। कृष्ण बलदेव अहिवासियोंके उपास्य देव हैं। किन्तु सोमवती अमावस्याको गङ्गा और मङ्गल एवं शनि-वारको हनुमान्‌का भी पूजन होता है। सौभरि ऋषिके आश्रमकी यात्रा की जाती है। गौड़, सनाढ्य और गुजराती ब्राह्मण अहिवासियोंके पुरोहित होते हैं। दीपमालिका दशहरा और होलीका इनके बड़े त्योहार हैं। यह गङ्गा, यमुना और बलदेवका शपथ उठाते हैं। व्यवसाय ही इनकी प्रधान जीविका है। यह राजपूतोंसे नमक अपनी गाड़ियोंमें भर उत्तर भारतमें ला कर बेचते और वहांसे दोनो तथा दूसरी चीज़ें बदलेमें लाद लाते हैं। पुरुषोंके व्यापार करने को दूर देश चले जानेसे स्त्रियां खेतीका काम चलाती हैं। आगरा, फरुखाबाद, मैनपुरी, इटावा, एटा, बदायूं, शाहजहांपुर, पीलीभीत, कानपुर, फतेहपुर इलाहाबाद, झांसी और जालौनमें अहिवासी रहते हैं।

अहिविदष्ट (सं० त्रि०) सर्पसे डसा हुआ, जिसको सांपने काटा हो।

अहिविद्विष्, अहिरिपु देखो।

अहिविषापहा (सं० स्त्री०) अहिलता, छोटा चांद।

अहिशुष्म (वै० त्रि०) अश्नोति व्याप्नोति अह व्याप्तौ इन्, अहि व्यापिशुष्मं यस्य, बहुव्री०। व्यापकबल, बडा जोर।

अहिशुष्मसत्वन् (वै० पु०) इन्द्र।

अहिश्तना (सं० स्त्री०) शिशुरोगविशेष, बच्चोंकी एक बीमारी। इसमें पानी-जैसा पतला दस्त उतरता और गुह्यदेशसे मल निकला करता है। गुह्यदेश रक्तवर्ण रहे, आबदस्त लेने या पोंछनेसे खुजलाये और फोडा पड जायेगा।

अहिसक्थ (सं० क्ली०) अहिरिव दीर्घं सक्थि यस्य, षच् बहुव्री०। १ सर्पतुल्य दीर्घ सक्थियुक्त, सांप-जैसा लम्बा। (पु०) २ तदाकार देश, सांप-जैसा लम्बा मुल्क।

अहिसाव (हिं० पु०) सांपका बच्चा, छोटा सांप। यह अहिशावक शब्दका अपभ्रंश है।

अहिस्कन्ध (सं० पु०) गुल्फ, घुटिका, टखना, काब।

अहिहत्य (सं० क्ली०) अहेः हत्यम्, ६-तत्। १ वृत्रासुरका हनन। १ सर्पहनन, सांपका मारा जाना।

अहिहन् (वै० पु०) अहिहत्य देखो।

अहिहन (सं० पु०) अहिं सर्पं वृत्रासुरं वा हतवान्, अहि-हन भूते क्विप्। १ गरुड। २ इन्द्र।

अहिहयकुल (हैहयकुल) कार्तवीर्यका वंश। सन् १०५४-५५ ई०के समय कार्तवीर्य-वंशज महामण्डलेश्वर रेवारस निज़ाम राज्यके खेमभावी स्थानके समीप शासन करते थे। हैहयवंश देखो।

अही (सं० स्त्री०) गम्यते ऽनया चीरादिहविः, गम्यते टत्तया पुरुषम्, अंहति शृङ्गादिना मनुष्यान्, न हतव्या वा, अहि-ङीप्। १ गोरू, मवेशी। २ द्युलोक एवं पृथिवी, ज़मीन और आसमान्। (वै० पु०) ३ असुरविशेष। इसे इन्द्रने जीता था।

अहीन (सं० पु०) अह्नां समूहः, अहर्गण-साध्यो वा ख। १ बहुदिन साध्य द्विरात्रादि याग। २ द्वादश दिवस साध्य याग, बारह दिनमें पूरा होनेवाला यज्ञ। अहीनामिनः स्वामी। ३ सर्पराज वासुकि। (त्रि०) न हीनम् नञ्-तत्। ४ समग्र, पूरा, जो कम न हो। ५ पूरित, भरा हुआ। ६ बहु दिवस स्थायी, बहुत दिन चलनेवाला। ७ अभ्रष्ट, जो महरूम किया न गया हो। ८ सम्पन्न, क़ब्ज़ा हासिल किये हुआ। ९ अजघन्य, अनिकृष्ट, जो हकीर न हो।

अहीनगु (सं० पु०) अहीना समग्रा गौ पृथिवी यस्य, पुंवद्भाव गोस्त्रियोरुपसर्जनस्येति ह्रस्वः, बहुव्री०। सूर्यवंशीय राजविशेष। यह देवानीकके पुत्र थे।

अहीनर (सं० पु०) चन्द्रवंशीय उदयनके पुत्र।

अहीनवादिन् (सं० त्रि०) न हीनः वादी, नञ्-तत्। अभियोगके अन्यथा प्रमाणवादीसे भिन्न, ठीक-ठीक गवाही देनेवाला।

अहीनवादी, अहीनवादिन् देखो।

अहीन्द्र (सं० पु०) १ शारिवा, अनन्तमूल। २ सांख्य-शास्त्र-रचयिता पतञ्जलि मुनि।

अहीमती (सं० स्त्री०) अहिरस्त्यस्याम्, अहि-मतुप् ङीप्, शरादित्वात् दीर्घः। नदीविशेष, कोयी दरया।

अहीर (सं० पु०) आभीर शब्दस्य निपा० साधु। आभीर, ग्वाला। यह गाय-भैंस पालते और दूध-दही बेचते हैं। (स्त्री) अहीरिनी। आभीर देखो।

अहीरगौर—उड़ीसा प्रान्तके बालेश्वर ज़िलेकी एक स्वेच्छाचारी जाति। इस जातिके लोग खजूरकी पत्तियोंसे चटाई बना एक-एक आने बाज़ारमें बेचते हैं।

अहीरणादि (सं० पु०) गणविशेष, कुछ खास अलफ़ाज़। अरीहणादि देखो।

अहीरणि (सं० पु०) अहीन् ईरयति दूरी-करोति, अहि-ईर-अनि। द्विमुख सर्प, दुमुंहा सांप। कहते, कि इसे देखते ही दूसरे सांप भाग जाते हैं।

अहीरणिन्, अहीरणि देखो।

अहीरी (सं० पु०) १ रागविशेष। इसमें सकल ही स्वर कोमल रहते हैं। (हिं०) २ मध्यप्रदेशके दक्षिण चांदा ज़िलेकी ज़मीन्दारी। यह अक्षा०

अहेतु (सं० पु०) नञ्-तत्। १ हेतुभिन्न, सबब-की अदममौजूदगी। २ काव्यालङ्कार विशेष। इसमें कारण उपस्थित रहते भी कार्यको अनिष्पत्ति देखायी जाती है। (त्रि०) नञ्-बहुव्री०। ३ हेतुशून्य, बे-सबब।

अहेतुक (सं० त्रि०) अहेतु देखो।

अहेतुता (सं० स्त्री०) हेतुका अभाव, बे-सबबी।

अहेतुत्व (सं० क्ली०) अहेतुता देखो।

अहेतुसम (सं० क्ली०) त्रैकाल्यासिद्धेर्हेतोरहेतुसमः। तीनों कालमें असिद्धिहेतु यानि हेतुत्वके असम्भव कथनको अहेतुसम कहते हैं। हेतु ही साधन है, अतः इसे साध्यके पूर्व, पश्चात् वा सङ्ग रहना चाहिये। यदि साध्यके पूर्व साधन माना जाये, तो साध्यके विद्यमान न रहनेपर यह किसका साधन और साधनको पीछे रखें, तो किसका साध्य होगा? यदि साध्य और साधनको एक ही समयमें विद्यमानता मानी जाय, तो कौन किसका साधन एवं कौन किसका साध्य निकलेगा। यह हेतुसे अलग नहीं हो सकता। अतएव इसीको अहेतुसम कहते हैं।

अंहेर (हिं० पु०) आखेट, शिकार।

अहेरिया—मध्य दोआबकी एक जाति। यह शिकारियों और चोरोंका काम करती है। कोई-कोई अहेरियोंको एक प्रकारका धानुक बताता, किन्तु यह उनको तरह मृतक शरीरको नहीं खाता। गोरखपुर जिलेमें धानुकोंके जो अहेरिया वंशज रहते, वह सांपको पकड़ कर खा जाते हैं। प्रधानतः अहेरिया भीलों और बहेलियोंके वंशज मालूम होते हैं। किन्तु यह अपनेको किसी सूर्यवंशी राजाका वंशज प्रमाणित करते हैं। इनका कहना है,—'एक सूर्य-वंशी राजकुमारको आखेटका बड़ा प्रेम था। वह इसीसे चित्रकूटमें जाकर रहने लगे। आखेटमें राज-कुमारकी बड़ी चेष्टा देख लोग उन्हें 'अहेरिया' कह-कर पुकारते थे। उन्होंसे हमारा अहेरिया वंश निकला है।' यह लोग चित्रकूट और अयोध्याकी तीर्थयात्रा करते हैं। पञ्चायत जातिका विवाद मिटाती है। सरपञ्च सर्वदा एक ही व्यक्ति रहता है। यदि सरपञ्च बीमार पड़ जाता या नाबालिग़ होता, तो पञ्चायतका कोई सभ्य उसके स्थानमें काम करता है। किन्तु उसके अयोग्य प्रमाणित होनेपर सर्वसम्मतिसे दूसरा सरपञ्च चुना जाता है। इनमें चार-चार विवाह होते और कितने ही लोग दो बहनोंको साथ ही व्याह लाते हैं। विधवा विवाहको प्रथा भी प्रचलित है। धनी मृतकको जलाते और निर्धन नदीमें बहा या भूमिमें गाड़ देते हैं। भूतप्रेतकी पूजा बहुत होती है। अलीगढ़ जिलेकी अतरौली तहसीलके गङ्गीरी गावमें मेघासुरका मन्दिर बना है। रामायण-रचयिता वाल्मीकि मुनिको यह अपना महात्मा समझते हैं। पतरी और टोकरी बना तथा ढाकसे शहद और गोंद निकालकर नगरमें बेचना इनका काम है। किन्तु सेंध लगाने और डाका डालनेमें यह बड़े ही चालाक होते हैं। सन् १८४५ ई०के समय इन्होंने बड़ी लूटमार उठायी थी।

अहेरी (हिं० पु०) आखेटक, शिकारी, जो शिकार मारता हो।

अहेरु (सं० स्त्री०) न हिनोति गच्छति, हि-रु नञ्-तत्। शतमूली, शतावर।

अहेलत्, अहपन देखो।

अहेलमान, अहपान देखो।

अहेलयत्, अहपान देखो।

अहैतुक (स० त्रि०) हेतुत आगतं ठञ्, नञ्-तत्। १ हेतुसे अप्राप्य, जो सबबसे मिल न सकता हो। २ उपपत्तिशून्य, नापैद, जो पैदा न हो। ३ साहाय्य-शून्य, बे-सहारा।

अहो (सं० अव्य०) अह-डो। १ शोक, अफ़-सोस, आह! हाय। २ धिक्कार, लानत, छी-छी। ३ दया, रहम, हां। ४ ओ! ऐ, देखो। ५ आश्चर्य, ताज्जुब, अरे। ६ धन्य, वाह् वाह! क्या खूब! शाबाश! ७ क्यों, कैसे, किसतरह।

अहोष्ट (वै० पु०) १ यज्ञ न करनेवाला पुरुष। २ यज्ञ करनेमें अधम।

अहोपुरुषिका (सं० स्त्री०) १ स्वावलम्बन, खुद-इतमीनानी, अपना भरोसा। २ आत्मश्लाघा, खुद-सिताई, अपनी तारीफ़।

अहोम—आसाम उपत्यकामें रहनेवाली शानवंशीय एक जाति। वर्तमान शताब्दीके आरम्भ समय और ब्रह्म वासियोंके आक्रमण करनेसे पहले आसाम उपत्यकामें अहोम जातिका बड़ा प्रभाव रहा। कहते हैं—सन् ७०० ई०को सुकाफा नामक नृपतिके समय उनके भाई समलोंगफा सेनापति थे, जिन्होंने सदियासे कामरूप तक समग्र देश अपने अधीन किये। समलोंगफासे ही अहोम राजवंश चला है। किन्तु मतभेदसे सन् १२२८ ई०को पोङ्ग राज्यके अधिकारी सुकफाके नामसे निकाले जानेपर आसाम और अहोम नाम प्रचलित किया और मालूम ही नाम आसाम रख दिया। सन् १५५४ ई०को अहोम नृपति चतुर्मक हिन्दू बनाये गये थे। सन् १२२८ ई०से छह शताब्द तक अहोम नृपति पैतृक दिहिंगनदीके पास कोई देशपर राज्य करते रहे। किन्तु सन् १५०४ ई०को अहोम-पक्ष मथोमपुर और शिवसागरके चुता राजाओंसे उन्हें लड़ना पड़ा था। यह युद्ध १२४ वर्ष चला। अन्तमें अहोमोंने सन् १५०० ई०के समय चुता नृपति को हरा शिवसागर जिलेका गढ़गांव अपनी राजधानी बनाया। सन् १५६१ ई को कोच-नृपतिने उनके नये देशपर आक्रमण कर गढ़गांव राजधानी छीन ली थी, किन्तु उसे अपने अधिकारमें रखनेकी चेष्टा न की। अहोमोंको फिर अपना अधिकार प्रतिष्ठित करनेमें नोमाव और पूर्व दफलाके पहाड़ियोंसे लड़ना पड़ा था। फिर औरङ्गजेबके सेनापति मीर जुमलेने इनपर आक्रमण किया, किन्तु उन्हें अहोम राजधानी छोड़नी और उसके नृपतियोंपर कर लगाने बाद ग्वालपाड़ेको पीछे हटना पड़ा। उस समय ब्रह्मपुत्र उपत्यकामें सदियासे ग्वालपाड़े और दक्षिण पर्वतके मूलतक सीमान्त अहोमोंकी तूती बोलती थी। सन् १६९५ ई०के समय रुद्रसिंहके सिंहासनारूढ़ होने इस राज्यको उन्नतिके शिखर पर चढ़ाया। उसके दूसरे शताब्द गृह विवाद और विदेशीय आक्रमणसे अहोम राज्य बिगड़ने लगा था। मोआमरियोंके धार्मिक विद्रोह खड़ा करने पर अहोमोंको अपनी राजधानी गढ़गांवसे रङ्गपुर उठा ले जाना पड़ी। किन्तु यहीं अन्त न हुआ आपसमें झगड़ा बढ़ जानेसे धीरे-धीरे इनकी राजधानी कामरूपके गौहाटी स्थानमें जा पहुंची थी। सन् १८१० ई०में किसी प्रतिपक्षीने अपनी सहायताके लिये ब्रह्मदेशवासियोंको बुलाया। किन्तु वह स्वयं राजा बन बैठे और निर्दय रूपसे समग्र उपत्यकामें शासन करने लगे। सन् १८२४-२५ ई०के समय अंगरेजोंने ब्रह्मदेशवासियोंको यहांसे निकाल बाहर किया। अहोम नृपति टङ्कके स्थानमें लोगोंसे अपना काम लेते थे। दूसरे विषयमें बिलकुल उन्होंने हिन्दुओंका जैसा ही आचरण दिखाया।

अहार—१ राजपूतानाके उदयपुर राज्यका प्राचीन नगर। यह उदयपुर नगरसे एक कोस दूर है। २ युक्तप्रदेशके रुहेलखण्डकी एक जाति। यह गङ्गा नदीके किनारे रहती तथा कृषिकर्मसे अपना काम चलाती है। इस जातिके लोग जाटों और गूजरोंके साथ खुले तौरपर शराब और हुक्का पीते, किन्तु अहोरोंको नीच समझते हैं। कहते हैं, पहले रुहेलखण्डमें अहोरोंका राज्य रहा। सम्भवतः तोमरोंके समय (सन् ७००-११५० ई०) इन्हें बहुत अधिकार प्राप्त था। अहोरोंमें सैकड़ों कुल होते हैं। मेरठ, बुलन्दशहर, एटा, बरेली, बिजनौर, बदायू, मुरादाबाद, पीलीभीत, कुमायूं और तराईमें कितने ही अहोर निवास करते हैं।

अहोरपन्तर (सं० क्लो०) अक्षि मेदं उपन्तर नाम भेद न रोग। जिसमें नाभि योग्य रक्तसार नामक घास, जो साम सिर्फ दिनमें मारा जाता हो।

अहोरात्र (सं० पु०) अहश्च रात्रिश्च अजन्त समाहार॰ द्वन्द्व। १ दिवारात्र दिनरात, एक दिन, सूर्य निकलनेसे दूसरे दिन सूर्य निकलने तक चौबीस घण्टे मनुष्यका दिन। मनुष्यके एक मासमें पैत्र और एक वत्सरमें देव अहोरात्र होता है। (अव्य०) २ सर्वदा, रातदिन, हमेशा।

अहोरा बहोरा (हिं० पु०) विवाह विशेष, किसी किस्मकी शादी। इसमें नववधू ससुराल पहुंच उसी दिन अपने घर वापस आ जाती है।

अहोरूप (सं० क्ली०) अह्नो रूपम्। दिवस रूप, दिनकी शक्ल।

अहोरोरा—युक्तप्रान्तके मिर्जापुर जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २५° १′ १५″ उ० तथा द्राघि० ८३° ४′ २०″ पू०पर अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल १२३ एकर है। अहोरोरा चुनारसे दक्षिण-पूर्व छः और बनारससे दक्षिण नौ कोस पड़ता है। अन्न, तिलहन, लाख तथा जङ्गली चीजका व्यापार यहां होता और चीनी, कांचकी चूड़ी, खिलौना एवं रेशम बनता है। नगरसे दश कोस उत्तर ई० आई० रेलवेका अहोरोरारोड नामक ष्टेशन बना है।

अहोवत (सं० अव्य०) अहो च वत च द्वन्द्व। १ हाय, खेद, अफसोस। २ औ, ऐ, देखिये। ३ राम राम, रहम!

अहोवल (सं० पु०) १ सङ्गीत-पारिजात-रचयिता। सङ्गीतरत्नाकरसे पीछे सङ्गीतपारिजात बना था। २ ईशानेन्द्र और नृसिंहेन्द्रके शिष्य एवं 'पुरश्चरण-कौस्तुभ'-रचयिता। ३ 'सङ्गीत-पारिजात' एवं 'काव्य माला'-रचयिता। ४ नृसिंहभट्टकी पुत्र। इन्होंने 'महिम्न-स्तवटीका', 'रुद्रभाष्य' और 'सङ्कल्प-सूर्योदयटीका' नामक ग्रन्थ बनाये थे।

अहोवल शास्त्रिन्—मीमांसासूत्रप्रकाशिका-रचयिता रामकृष्णके गुरु। इनका दूसरा नाम बोधानन्दघन भी रहा।

अहोवलसूरि—'याज्ञिकसर्वस्व' एवं 'आपस्तम्बश्रौत-सूत्रभाष्य'-रचयिता। इन्होंने रुद्रदत्तका उल्लेख किया है।

अहोवलम्—मन्द्राज प्रान्तके करनूल जिलेका प्रसिद्ध ग्राम। यह अक्षा० १५° ९′ ३″ उ० और द्राघि० ७८° ४६′ ५९″ पू० पर अवस्थित है। निकटवर्ती पर्वतपर तीन देवालय बने, जिन्हें स्थानीय लोग बहुत पवित्र समझते हैं। इनमें जो पर्वतके आधार पर खड़ा, वह देखने योग्य है। भित्तियों और द्वारप्रकोष्ठोंपर रामायणके मनोहर दृश्य खिंचे हैं। चटान काटकर जो पत्थरके स्तम्भ निकले, वह मण्डलमें आठ फीट बैठते हैं।

अहोश्री (सं० अव्य०) आश्चर्यरूपसे, अनोखे तौरपर।

अह्नवाय्य (वै० त्रि०) ह्नु बाहु० आय्य, नञ्-तत् अपलाप न करनेवाला, जो बहाना न करता हो। "सत्यं तत्तुर्वशे यदौ विदानो अह्नवाय्यं।" (ऋक् ८।४५।२७)

अह्नाय (सं० अव्य०) ह्नु-घञ् वृद्धिः पृषो० रकारस्य यत्नम्, नञ्-तत्। १ शैघ्र्य, जल्द। २ पुरातन, पहले, पुराने वक्त। ३ सपदि फौरन्।

अह्रयु (वै० त्रि०) अह्निं आहन्तारं शत्रुं ऋषति, अहि ऋष-उ। १ शत्रुके अभिमुख गमन करनेवाला, जो दुश्मनके सामने जाता हो। २ सर्पवत् गमनशील, जो सांपकी तरह चलता हो। "अह्रयुर्णां चिन्वयां अविश्यागम।" (ऋक् १।१८।१)

अह्याट (सं० पु०) दवी दूब।

अह्रय (वै० त्रि०) न जिह्रेति, ह्री-अच्, नञ्-तत्। १ निर्लज्ज, बेशर्म। २ विषयासक्त, शहवतपरस्त, मजा उड़ानेवाला। "उपसतिं मीळ्ह युवियीं अह्रय।" (ऋक् ८।७०।१२)

अह्रयाण (वै० त्रि०) ह्री बाहु० आनच्, नञ्-तत्। अह्रय देखो।

अह्रि (वै० पु०) ह्र-क्रि, नञ्-तत्। १ कवि, शायर। २ शुक्र।

"शुक्रं दुदुहे अह्रयः।" (ऋक् ६।५४।१)

(त्रि०) ३ निर्लज्ज, बेशर्म। ४ विषयासक्त, शहवतपरस्त।

अह्रित (सं० त्रि०) ह्र-क्त पृषो० साधु, नञ्-तत्। १ अवक्र, सीधा, जो टेढ़ा न हो।

अह्रीक (सं० पु०) नास्ति ह्रीर्लज्जा यस्य, नञ्-बहुव्री०। १ क्षपणक, बौद्ध साधुविशेष। क्षपणक लज्जाहीन होनेसे विवस्त्र रहते थे।

अह्रीयमाण, अह्रय देखो।

अह्रुत (वै० त्रि०) १ अडोल, जो हिलता न हो। २ सरल रेखामें जानेवाला, जो रास्त खतपर चल रहा हो। ३ सरल, सीधा, जो टेढ़ा न हो।

अह्रुतप्सु (वै० त्रि०) सरल आकृति-विशिष्ट, सीधी शक्लवाला।

अह्वल (सं० पु०) न ह्वलति, ह्वल-अच्, नञ्-तत्। १ भल्लातक वृक्ष, भेलावेंका पेड़। (वै० त्रि) २ अलोल, जो कांपता न हो। (स्त्री) अह्वला।

आं (हिं० अव्य०) १ आश्चर्य, ताज्जुब, क्या हुआ। (पु०) २ बालकके रोदनका शब्द।

आंक (हिं० पु०) १ अङ्क, अदद। २ चिह्न, निशान्। ३ वर्ण, हर्फ़। ४ निश्चय, यक़ीन्। ५ भाग, हिस्सा। ६ कुल, ख़ानदान। ७ क्रोड, गोद। ८ पहियेकी धुरी डालनेका ढांचा। यह गाड़ियोंकी बल्लियोंके नीचे लगता और मज़बूत लकड़ीका बनता है। ९ छन्दोविशेष। इसमें नौ मात्रा रहती हैं।

आंकड़ा (हिं० पु०) १ अङ्क, अदद। २ पेंच, फन्दा। ३ पशुरोग विशेष, चौपायोंकी एक बीमारी। ४ मदार, आक। (स्त्री०) आंकड़ी।

आंकन (हिं० पु०) दाना निकाला हुआ ज्वारका भुट्टा।

आंकना (हिं० क्रि०) १ अङ्कित करना, निशान लगाना, दागना। २ कूतना, तख़मीना करना, ठहराना, दाम लगाना। ३ अनुमान बांधना, फ़र्ज़ करना। ४ लिखना।

आंकनी (हिं० स्त्री०) लेखनी, कलम।

आंकर (हिं० वि०) १ आकर जैसा, गहरा। जोतायी दो तरहकी होती है—आंकर ख़ूब गहरी और स्याह वा सेव। २ महंगा, गरान्। ३ अत्यधिक, बहुत, ज्यादा।

आंकल (हिं० पु०) अङ्कित-वृषभ, दागा हुआ सांड।

आंकुड़ा, अंकुड़ा देखो।

आंकुस (हिं०) अङ्कुश देखो।

आंकू (हिं० पु०) आंकनेवाला, कूतनेवाला, दामलगानेवाला।

आंख (हिं० स्त्री०) १ अक्षि, देखनेका इन्द्रिय, चक्षु। इससे जीवोंको रूप, विस्तार और आकारका ज्ञान होता है। शरीरमें इस इन्द्रियपर आलोकके द्वारा वस्तुका बिम्ब उतर आता है। जीव जितना उन्नत या क्षुद्र होता, आंख भी उतनी ही जटिल एवं सरल रहती है। क्षुद्र जीवकी आंख बहुत सादी होती और कहीं बिन्दु ही जैसी देख पड़ती है, रक्षाके लिये पलक या बरौनी नहीं लगती। बहुत छोटे जीवोंमें आंखका स्थली और संख्याका नियम नहीं है। शरीरके किसी अंशमें एक, दो या चार बिन्दु निकलते, जो आंखका काम देते हैं। मकड़ेके आठ आंखें होती हैं। रीढ़वाले कीड़ेकी आंख खोपड़ेके नीचे गड्ढेमें रहती, जिसपर पलक और बरौनी चढ़ती है। यह बाहरसे देखनेमें गोल और लम्बी तथा दोनो किनारे नोकदार निकलती है। सामनेकी सफ़ेद झिल्लीके पीछे जो झिल्ली पड़ती, उसमें एक छिद्र रहता है। इसी छिद्रमें मोटे शीशे-जैसा एक द्रव्य होता, जो प्रकाशको भीतर पहुंचा ज्ञानतन्तुपर प्रभाव डालता है। आंखके पर्याय नीचे देखिये—लोचन, नयन, नेत्र, ईक्षण, अक्षि, दृक्, दृष्टि, अम्बक, विलोचन, वीक्षण, प्रेक्षण, चक्षु। २ ध्यान, इरादा। ३ विवेक, पहचान। ४ कृपा, मेहरबानी। ५ सन्तति, औलाद। ६ आलूके ऊपरका निशान्। ७ ईखकी ठांठी। ८ अनन्नासका दाग़। ९ सूईका सूराक।

आंखड़ी, आंख देखो।

आंखफोड़टिड्डा (हिं० पु०) १ हरे रङ्गका एक कीड़ा। यह मदारके वृक्ष पर रहता और उसीकी पत्तियां खाता है। २ कृतघ्न, एहसान-फ़रामोश।

आंखमिचौली, आखमोचली, (हिं० स्त्री०) एक खेल। एक लड़का किसी दूसरे लड़केकी आंख मूंद देता है। जब दूसरे लड़के छिप जाते, तब उस लड़केकी आंख खोली जाती और वह लड़कोंको छूनेके लिये ढूंढ़ते फिरता है। जिस लड़केको वह छू लेता, वही चोर ठहरता है। यदि वह किसीका छू नहीं पाता, तो फिर वही चोर बनाया जाता है। ७ बार इसी तरह चोर होनेपर सब लड़के उसके पैर बांध और चारो ओर कुण्डल खींच देते हैं। दूसरे लड़के बारी-बारी कुण्डलमें पैर रखते और उसे बुढ़िया-बुढ़िया कह कर चिढ़ाते हैं। कुण्डलके भीतर किसीको छू लेनेपर चोर लड़केका दाव उतरता है।

आंखी, आंख देखो।

आंग (हिं० पु०) १ अङ्ग, अंशो। २ प्रति चौपाये पर ली जानेवाली चरायी ३ कुच, स्तन।

आंगन (हिं० पु०) अङ्गन, अजिर, घरके भीतरका सहन, चौक।

हवा। इससे इतनी धूलि उड़ती, कि चारो ओर अन्धकार छा जाता है। भारतवर्षमें इसके आनेका समय वसन्त और ग्रीष्म है।

आंव, आम देखो।

आंबा हलदी, आमा हलदी देखो।

आंयबांय (हिं॰ पु॰) असम्बन्धप्रलाप, व्यर्थकी बात, अंडबंड, अनापशनाप, ऊटपटांग।

आंव (हिं॰ पु॰) अम्ल, अन्न न पचनेसे उत्पन्न होनेवाला एक प्रकारका चिकना सफेद लसदार मल। आम देखो।

आंवठ (हिं॰ पु॰) १ किनारा, बारी। २ कपड़ेका छोर। ३ बरतनकी बारी।

आंवड़ना (हिं॰ क्रि॰) उमड़ना, ऊपरको उठना।

आंवड़ा (हिं॰ वि॰) गभीर, गहरा।

आंवन (हिं॰ पु॰) १ लोहेकी सामी, मुंहड़ी। यह पहियेके उस छेद पर लगती, जिसमें धुरीका डण्डा रहता है। २ एक औज़ार। इससे लोहेका छेद बढ़ाते हैं।

आंवरा, आमलकी देखो।

आंवल (हिं॰ स्त्री॰) साम, खेंड़ी, जेरी, किसी किस्मकी झिल्ली। इससे गर्भमें बच्चे लिपटे रहते हैं। आंवल प्रायः बच्चा होनेके पीछे गिर जाती है।

आंवलगट्टा (हिं॰ पु॰) आंवलेका सूखा फल। यह औषधमें पड़ता और शिर मलनेके काम आता है।

आंवला (हिं॰ पु॰) वृक्ष विशेष। इसकी पत्तियां इमलीकी तरह छोटी छोटी होती हैं। आंवलेकी लकड़ी कुछ सफ़ेदी लिये रहती और छाल प्रतिवर्ष उतरा करती है। कार्तिकसे माघ तक इसका काग़ज़ी नीबू-जैसा फल रहता है। छाल पतली होनेसे नसें देख पड़ती हैं। स्वादमें यह कसैलापन लिये खट्टा होता है। गुणमें इसे शीतल तथा लघु पाते और दाह, पित्त एवं प्रमेहका नाशक बताते हैं। इसके योगसे त्रिफला, च्यवनप्राश प्रभृति अनेक औषध प्रस्तुत होते हैं। आंवलेका मुरब्बा भी बहुत अच्छा बनता है। इसकी पत्तियोंसे चमड़ा सिझाते हैं। लकड़ी पानीमें न सड़नेसे कुवोंके नीमचक आदि उसीके बनते हैं। आमलकी देखो।

२ कुश्तीका पेंच। इससे विपक्षीको नीचे लाते हैं।

आंवलापत्ती (हिं॰ स्त्री॰) किसी किस्मकी सिलाई। इसमें पत्तीकी तरह दोनों ओर तिरछे टांके लगते हैं।

आंवलासारगन्धक (हिं॰ पु॰) अति शुद्ध एवं पारदर्शक गन्धक। यह बहुत साफ़ और खानेमें खट्टा होता है।

आंवां (हिं॰ पु॰) मट्टीके बर्तन पकानेका गड्ढा।

आंगिक (सं॰ वि॰) अंगसम्बन्धी, अंगविषयक, हिस्सेका।

आंशुकजल (सं॰ क्ली॰) किरण दिखाया हुआ जल। जलको एक तांबेके पात्रमें रख दिनभर धूप और रातभर चांदनी देखाते हैं। वैद्यकशास्त्र इस जलकी बड़ी प्रशंसा करता है।

आंस (हिं॰ स्त्री॰) १ पीड़ा, दर्द। २ पाग, सुतली, डोरी। ३ रेशा।

आंसी (हिं॰ स्त्री॰) भाजी, बैना, इष्टमित्रोंके यहां बंटनेवाली मिठाई।

आंसू (हिं॰ पु॰) अश्रु, अश्क, आंखका पानी। यह आंखमें नाककी ओर जानेवाली नलीके पास जमा रहता है। इससे आंखकी झिल्ली तर रहती है और डेलेपर तिनका तथा गर्द नहीं बैठती। यूककी तरह यह भी पैदा होता और शारीरिक वा मानसिक आघातसे बढ़ता है। पीड़ा, शोक, क्रोध और हर्षमें आंसू आ जाता है। अधिक होनेसे यह गालोंपर बहता और कभी-कभी भीतरी नलीकी राह नाकमें दाखिल होता है।

आंसूढाल (हिं॰ पु॰) पशुरोग विशेष, चौपायोंकी एक बीमारी। इसमें जानवरकी आंखसे पानी निकला करता है।

आंहड़ (हिं॰ पु॰) भाण्ड, बरतन।

आहां (हिं॰ अव्य॰) नहीं।

आइ (हिं॰) आयुस् देखो।

आइना (हिं॰) आईना देखो।

आइन्दा (फा॰ वि॰) १ भविष्यत्, मुस्तक़बिल, आगे आनेवाला। (पु॰) २ भविष्यत्काल, मुस्तक़बिल आनेवाला ज़माना। (क्रि॰ वि॰) ३ भविष्यत्में, आगेकी बाबत, आगे।

आइस, आइसु आयसु देखो।

आई (हि॰ स्त्री॰) १ मृत्यु मौत। २ आयुष, ज़िन्दगी।

आईन (फा॰ पु॰) १ व्यवस्था सूत्र, दस्तूर, क़ानून। २ शासन, मर्यादा।

आईन ए-अकबरी—ऐतिहासिक ग्रन्थविशेष। यह पुस्तक फ़ारसी भाषाके प्रसिद्ध अकबरनामेका तृतीय खण्ड है। महाकवि शेख अबुल फ़ज़ल इसके रचयिता हैं। इसमें सम्राट् अकबरके राजत्वकालका समस्त विवरण लिखा है। यह पांच अध्यायमें सम्पूर्ण हुआ है। प्रथम अध्यायमें अकबरके परिवार और असबाबका विवरण तथा स्वयं सम्राट्का वृत्तान्त प्रभृति अनेक विषय लिखा है। द्वितीय अध्यायमें सम्राट्के कर्मचारियोंका विवरण है। तृतीय अध्यायमें शासन एवं विचार विभागका वृत्तान्त तथा भूमिकी माप और राजस्व निरूपणका विषय दिया गया है। चतुर्थ अध्यायमें सामाजिक नियम, विद्या आलोचनाके उत्कर्ष साधन, विदेशी राजाओंके आक्रमण, परिव्राजक और मुसलमान-फ़कीर प्रभृतिकी बातें हैं। पञ्चम अध्यायमें नीतिवाक्य वर्णित हुए हैं।

आईना (फ़ा॰ पु॰) आदर्श, शीशा, आरसी।

आईनादार (फा॰ पु॰) नापित हज्जाम, शीशा देखानेवाला नौकर।

आईनाबन्दी (फा॰ स्त्री॰) १ शीशेका काम। २ अर्गबन्दी, पत्थर या ईंटकी जुड़ाई। ३ ढोंकी तैयारी। यह पर रायनी करते हैं।

आईनासाज़ (फा॰ पु॰) दर्पण या शीशा बनानेवाला।

आईनासाज़ी (फा॰ स्त्री॰) १ आईनासाज़का काम। २ कांच पर क़लई चढ़ाना।

आईनी (फा॰ वि॰) राजनियमके अनुकूल, क़ानूनी, क़ायदेसे चलनेवाला।

आउ (हिं॰) आयु देखो।

आउज (हिं॰ पु॰) वाद्यविशेष ताशा। यह मढ़ेमें डालकर दो लकड़ियोंसे बजाया जाता है।

आउस, आउश देखो।

आउट (अं॰ वि) बहिर्भूत, खेलसे बाहर निकला हुआ। (Out) क्रिकेटके खेलमें यह शब्द प्रयुक्त होता है। गेंद विकेटमें लगने या बल्लेसे मारा हुआ गेंद हाथमें रुक जानेसे खेलाड़ी आउट होता है।

आउटराम—(Sir James Outram, Lieutenant-General G C. B) एक प्रसिद्ध अंगरेज वीर। ये भारतवर्षके एक प्रधान सेनापति रहे। सन् १८०३ ई॰को डर्बीशायरके अन्तर्गत बटार्लीहाल्में इनका जन्म हुआ था। इनके पिताका नाम बेञ्जामिन आउटराम रहा। पहले इन्होंने अबर्डीनके अन्तर्गत उड्नो और पीछे मारिस्काल कालेजमें शिक्षा पायी। १८१८ ई को निम्नश्रेणीके सेनापति होकर यह भारतवर्ष आये थे। उसके बाद १८२० बम्बई देशीय पदातिकके लेफ्टेनेण्ट और आडजुटाण्ट हुए। इन्होंने खानदेशके असभ्य भीलोंको युद्धकौशल सिखाया और उनसे भीलोंकी सेना को साथ ले जाकर कोल जातिको परास्त किया था। १८३५ से १८३८ ई॰ तक ये मही काण्ठमें सुशृङ्खला स्थापन करनेपर व्यापृत रहे। लार्ड किनूके सदस्य बनकर ये अफ़गानस्तानपर आक्रमण करने गये थे। ये गुजरातके पोलिटिकल एजेण्ट और सिन्धुदेशके कमिश्नर भी हुए। उसी समय सिन्धुदेशके अमीर विद्रोही बन बैठे थे। सर चार्लस नेपियरकी सम्मतिके अनुसार सेनापति आउटरामने उन लोगोंको दमन किया। पीछे ये सितारे और बड़ोदे राज्यके रेसिडेण्टके पदपर सुशोभित हुये थे। उसी समय अवध अंगरेजीराज्यके अन्तर्भुक्त हो गया। लार्ड डालहौसीने आउटरामको वहांका रेसिडेण्ट और कमिश्नर नियुक्त कर दिया था।

बहुत दिनोंतक भारतवर्षमें रहनेसे आउटराम बीमार पड़े और १८५६ ई॰को इङ्गलैण्ड चले गये। परन्तु ईरानसे लड़ाई छिड़ जानेपर इन्हें कमिश्नर बनकर सेनाके साथ ईरान उपसागरमें पहुंचना पड़ा

था। वहां कार्य्य सिद्ध करके यह भारतवर्ष लौट आये। उसी समय यहां सिपाही-विद्रोह उठा था। लार्ड कनिङ्गके परामर्शानुसार ये लखनऊ गये। पहले हावेलक साहबने विद्रोहियोंको कितना ही दमन कर दिया था, परन्तु फिर बड़ा गड़बड़ मच गया। आउटराम आलमबागमें ठहर सिपाहियोंसे युद्ध करने लगे। असंख्य असंख्य विद्रोही चारो ओर ओलेकी भांति गोले बरसाते थे। अन्तको इनकी मददपर लार्ड क्लाइड आ पहुंचे। उसी समय ये सेना सहित गोमतीकी पूर्व ओर जा तुमुल संग्राम करने लगे। उससे विद्रोही परास्त हो कर भागे थे। इसके बाद ये अवधके चीफ कमिश्नर और १८५८ ई०को लेफ्टिनण्ट जनरल बने। अन्तको भारतवर्षकी प्रधान मन्त्रिसभा (Supreme Council)के यह सदस्य हुए थे। १८६० ई०को यह बीमार होकर इङ्गलेण्ड चले गये। १८६१-६२ ई०का शीतकाल मिश्रमें बीता; फिर फ्रान्समें कुछ दिन रहने बाद १८६३ ई०को ११वी मार्चको पेरिस नगरमें इन्होंने प्राण छोड़ा था। इनकी प्रतिमूर्त्ति कलकत्तेके मैदानमें विद्यमान है। नङ्गी तलवार लिये महावीर आउट-राम घोड़ेकी पीठपरसे पीछे देख रहे हैं। उधर इनके घोड़ेकी लातसे एक तोप चूर चूर हो गयी है।

आउन्स (अ० Ounce) अंगरेजी मानविशेष, किसी किस्मकी तौलका मिक़दार। यह दो प्रकारका होता है। एकसे कड़ी वस्तु तौलते और दूसरेसे द्रव पदार्थ नापते हैं। तौलनेका आउंस सवा दो तोलेके बराबर है। बारह आउन्ससे एक पाउण्ड बनता है। नापनेका आउंस सोलह ड्रामका है। एक ड्राममें साठ बूंद होते हैं।

आउबाउ, आउ बाउ देखो।

आउल, आउलिया—वैष्णव सम्प्रदाय विशेष। ये कर्ता-भजाकी शाखामात्र होते, इसीसे इन्हें सहज कर्त्ताभजा भी कहते हैं। ये प्रकृति ले कर साधन करते हैं। एक एक आउलके साथ अनेक प्रकृतिया रहती, उनमें कोई वेश्या और कोई कुलवती होती हैं। सब जातिके प्रकृति-पुरुष एक साथ बैठकर खानपान करते हैं, जिसमें कोई जातिविचार नहीं। मनुष्य-मात्रका स्वभाव है—यदि कोई किसीकी स्त्रीके पास जाता, तो मनमें ईर्षा उत्पन्न होती है; परन्तु आउलोंका मन अत्यन्त उदार है। इनमें यदि किसीकी प्रकृतिके निकट दूसरा पुरुष चला जाये, तो मनमें विद्वेष नहीं होता। आउल दाढ़ी मूछ नहीं रखते।

आउलियाचान्द (औलियाचांद)—एक सम्प्रदाय-प्रवर्त्तक, इन्होंने ही पहले पहल कर्त्ताभजाकी सृष्टि की थी। आउलियाचादके प्रकृत इतिहास जाननेका कोई उपाय नहीं है। अनेक आदमी अनेक प्रकारकी बातें करते हैं। कोई कोई कहते हैं,—एक बार कहींसे एक संन्यासी आये थे। उनके पैरमें खड़ाऊं, देहमें कफनी और कमरमें कौपीन रहा। खड़ाऊं पहने ही वे एक बड़ेइमलीके पेड़पर चढ़ बैठा करते थे। इच्छा होनेसे कभी नीचे उतर आते, नहीं तो दिन रात वहीं बैठे रहते। एक दिन किसी गृहस्थका लड़का मर गया। उसकी माता पुत्रशोकसे रोते हुई लड़केकी लाशको उसी इमलीके पेड़के तलेसे लिये जाती थी। दया करके संन्यासीने मरे लड़केको जिला दिया। उसी समयसे आउलियाकी दैवशक्ति प्रकाश हो गई।

कोई कोई दूसरी ही बात कहते हैं। उला-ग्राममें शायद महादेव नामक एक तंबोली रहता था। एक दिन वह अपने भीटमें पान तोड़ने गया। पान तोड़ते तोड़ते उसने भीटमें एक आठ वर्षके लड़केको देखा। १६१९ शकमें फाल्गुन मासके प्रथम शुक्रवारको शायद वह लड़का मिला था। बालक कौन है, किसका लड़का है, नाम क्या है, निवास कहां है—यह सब कोई बता न सका। खुद लड़केने भी अपना कोई परिचय न दिया। महादेव उसे अपने घर लाकर लड़केकी तरह पालने लगा और उसका नाम पूर्णचन्द्र रखा। कहते हैं, कि पूर्णचन्द्र बारह वर्षतक उसी तंबोलीके यहां रहे थे। उसके बाद वह एक गन्धवणिक्के यहां जा कर दो वर्ष ठहरे। वहांसे वह एक जमीन्दारके यहां पहुंच कर डेढ़ वर्ष रहे। उसके बाद पूर्वबंगालमें

जाकर बैठ वर्ष बिताया। अन्तमें नाना देश घूम फिर कर छत्तीस वर्षकी उम्रमें बेजरा ग्राम पहुंचे थे। वहां सबसे पहले बटुघोष उनके शिष्य हुए। इसके बाद घोषपाड़ेके रामशरण पाल भी उनके उपदेश पा कर कर्त्ताभजाका मत प्रचार करने लगे थे। आज भी दोलीके दिन वहां धूम-धामसे बड़ा मेला लगता है।

कोई कोई कहते हैं, कि छियत्तरके मन्वन्तरके समय रामशरण पाल सुलसागरके बाजारमें चावल खरीदने गये थे। वहीं आउलियाचांदसे मुलाकात हुयी। आउलियाचांद रामशरणके मकान पर जाकर उन्हें उपदेश देने लगे। एक बात और भी सुननेमें आती है। रामशरण पाल एक दिन अपना खेत जोत रहे थे। आउलियाचांद वहां जा पहुंचे पीछे उनके घर जाकर उन्हें धर्मोपदेश देने लगे।

आउलियाचांद देशपर बहुतसी बातें रखते जोपोस पहनते, हिन्दू मुसलमान दोनोंको समान समझते और सबके यहां भोजन करते थे। कोइ जातिसे उन्हें घृणा न रही। मुसलमान लोग भी इनसे उपदेश लेते थे। मालूम होता है, मुसलमानोंने ही इनका नाम 'आउलिया' रखा था। फारसी भाषामें औलिया शब्दके माने बुजुर्ग हैं। प्रवाद है, कि आउलियाचांद काठके पत्थर पर गङ्गाके ऊपर घूमते फिरते थे। इन्होंने अनेक कोढ़ियोंको अच्छा कर और मरे हुए आदमियों को भी जिला दिया था। अनुमान होता है, इन्हीं शक्तियोंके कारण मुसलमान इन्हें औलिया कहते थे।

आउलियाचांदके कई नाम सुननेमें आते हैं। आउलचांद, प्रभु, आउलिया महाप्रभु, आउलिया फकीर, आउले ब्रह्मचारी, बड़ाखोपभु फकीर ठाकुर, साईं गोसाईं, इन कई नामोंसे ये जनसमाजमें प्रसिद्ध हैं। कर्त्ताभजा लोग कहते हैं कि श्रीचैतन्य महाप्रभु शांतिपुरमें आकर अन्तर्धान और पीछे यही आउलिया चांदके रूपमें आविर्भूत हुए थे।

अवधि अपने बाईस आदमी आउलियाचांदके शिष्य बने रहे। उनके नाम ये हैं,—१ बटुघोष २ बेचुघोष, ३ रामशरण पाल, ४ नयन, ५ लक्ष्मीकान्त, ६ निश्यानन्द दास ७ खेलाराम उदासीन, ८ कृष्णदास, ९ हरिघोष, १० कनाई घोष, ११ शङ्कर, १२ निताइ घाघ १३ आनन्दराम, १४ मनोहर दास, १५ विष्णु दास १६ किनु, १७ गोविन्द, १८ श्यामकांसारी, १९ भीमराय राजपूत, २० पांचू रुद्रदास, २१ शिशिराम घाघ २२ शिवराम।

इस तरहकी गल्प सुननेमें आता है कि १६०१ शकका बोयाली ग्राममें आउलियाचांदकी मृत्यु हुई। प्रभुके परलोक गमन करनेपर श्यामकांसारी, हरिघोष बटुघोष, कनाई घोष, रामशरण पाल भीमराय राजपूत, खेलाराम घोष और बेचूघोष—इन आठ शिष्योंने इनको अपनोंको बोयाली ग्राममें समाधिस्थ किया था। पीछे चाकदहके तीन कोस पूर्व पराड़ि ग्रामक ग्राममें इनका शतदेह गाड़ा गया।

अब बङ्गालके अनेक भले आदमियोंने आउलिया चांदका मत ग्रहण किया है। उनमें सुवर्णवणिक् ही अधिक हैं। कितनी ही वेश्यायें भी इसी मतानुसार चलती हैं। आउलियाचांदके सब शिष्योंका मन एक है, सभी मन मन प्राय प्राय आपसमें मिलते रहते, इसीसे इन मतावलम्बियोंको 'एकमन' भी कहते हैं। फिर ये लोग आउलियाचांदको 'सब कर्त्ता' कह सम्बोधन करते, इसीसे इस सम्प्रदायके आदमी 'कर्त्ताभजा' नामसे भी विख्यात हैं। कर्त्ताभजा देखो।

आउलिया सम्प्रदायके गुरुका नाम 'महाशय' और शिष्यका 'बराती' है। दीक्षा करनेके समय महाशय शिष्यको पहले यह उपदेश देते हैं,—"गुरु सत्य हैं"। गुरु शिष्यसे पूछते हैं,—"क्या तू यह वाक्य पालन कर सकेगा?" शिष्य उत्तर देता है,—"सकूंगा।" उसके बाद गुरु कहते हैं,—"ता झूठ न बोलना और चोरी, परस्त्रीगमन तथा अपना खोका छङ्ग भी अधिक न करना।" शिष्य अङ्गीकार करता है,—"न करूंगा।" अन्तमें गुरु कहते हैं,—'बोल, तुम सत्य और तुम्हारा वाक्य सत्य।" तब शिष्य बार बारकर मन्त्र ग्रहण करता है,—"तुम सत्य और तुम्हारा वाक्य सत्य।" सात दिनके बाद गुरु यह बात

कह देते हैं,—विना मेरी आज्ञाके यह वात किसीसे न वताना।

क्रमसे शिष्यके मनमें प्रगाढ़ भक्ति उपजनेपर गुरु इस तरह उपदेश करते हैं,—"कर्त्ता आउले महाप्रभु! मैं तुम्हारे प्रतापसे चलता फिरता हूं, तिलाई भी तुमसे अलग नहीं, मैं तुम्हारे सङ्ग हूं, दुहाई महाप्रभु।"

आउलियाचाद महाप्रभु दश पापकर्म्म निषेध कर गये हैं। वे दशो पापकर्म्म ये हैं,—

तीन शारीरिक पापकर्म्म—परस्त्रीगमन, परद्रव्य अपहरण एवं जीवहत्या।

तीन मानसिक पाप—परस्त्रीगमनकी इच्छा, परद्रव्य ग्रहणकी इच्छा एव दूसरेके प्राणनाश करनेकी इच्छा।

चार वाचनिक पाप—झूठ वोलना, कटु वाक्य कहना, अनर्थक वात वढाना और प्रलाप उठाना।

देखनेमें आता है, कि पहले इस सम्प्रदायमें कुछ भी व्यभिचार दोष न था। इन लोगोंका एक प्रचलित वचन है,—"औरत हिजड़ो मर्द खोजा, तव होवे कर्त्ताभजा।" इस नियमके अनुसार सभी पुरुष स्त्रियोंको वहन समझते और वहन ही कहकर पुकारते थे। इनमें जातिभेद नहीं, सभी एक साथ भोजन और शयन करते रहे। परन्तु इसी तरह स्त्रीपुरुषके एक साथ वास करते करते अव व्यभिचार दोष इस सम्प्रदायके साधनका एक अङ्ग हो गया है।

इस सम्प्रदायवालोंके मुंहसे सुननेमें आता, कि एकमात्र ईश्वरकी उपासना करना ही इनके साधनका वीजमन्त्र है। किन्तु आउलियाचांद खुद मनुष्य थे, इसीसे ये लोग कहते हैं, कि मनुष्य ही सत्य और मनुष्य गुरु ही परम पदार्थ है। चैतन्य सम्प्रदायके वैष्णव जिस तरह गद्‌गद होकर अश्रुपात करते और पुलकित होते, आउलिया सम्प्रदायके साधकोंमें भी ठीक वैसे ही नियम है। रातको गुरुशिष्यमें प्रेमालापन और गूढ साधनके समय अश्रुपात, रोमाञ्च और मोह बढ़ जाता है।

आउस (हिं० पु०) आशुधान्य, किसी किस्मका धान, श्रोसहन। इसे मयी-जून मास वोते और अगस्त सितम्बरमें काटते हैं। वैद्यशास्त्रके मतसे यह मधुर एवं पाकमें गुरु होता और अम्ल तथा पित्तको वढ़ाता है।

आक (हिं० पु०) अर्क, मन्दार, अकवन। अर्कवृक्ष (Calotropis gigantea अंगरेजी Mudar)। यह अर्क शब्दका अपभ्रंश है। वंगालामें आकन्द। आकका पेड दो तरहका होता है,—सफेद और लाल। नदीके किनारे रेसोली ज़मीनमें यह पेड वहुत उपजता है। साधारण आकके ये कई पर्य्याय देखे जाते हैं,—क्षीरदल, पुच्छी, प्रताप, क्षीरकाण्डक, विक्षीर, क्षीरी, खजुघ्न, शीतपुष्पक, जम्भन, क्षीरपर्णी, विकीरण, सदापुष्प, सूर्य्याह्व, आस्फोतक, तूलफल, शुकफल, वसुक, आस्फोत, गणरूप, मन्दार, अर्कपर्ण।

सफेद आकके ये कई पर्य्याय हैं,—अलर्क, राजार्क, प्रतापस, गणरूपी। लाल आकके पर्य्याय हैं,—विक्षीर, सदापुष्पी, रूपिका, आदित्यपुष्पिका, दिव्यपुष्पिका, अर्क। आकके वूटेको वुढिया कहते हैं।

आकका पेड दो हाथसे लेकर चार पांच हाथ तक ऊंचा होता है। इसका फूल सफेद और लाल रहता है। सेमरकी तरह इसमें भी फल लगता है। फलसे पक जानेपर अच्छी रुई निकलती है। इसका फल, पत्ता और फूल तोडनेपर डालोंसे दूध निकलता है। आकके पेडमें प्राय: वारहो महीने फूल उतरता है। डालकी छालके नीचे रेशम जैसा चिकना सफेद सूत रहता है।

वैद्यशास्त्रके मतसे यह कटु, उष्ण और आग्नेय है। इससे वात, शोथ, व्रण, अर्श, कुष्ठ, क्रिमि प्रभृति नष्ट हो जाता है। युरोपीयचिकित्सकोंने परीक्षा करके देखा, कि इसका मूल, वकला और दूध वमनकर, घर्म्मकर, धातुपरिवर्तक और विरेचक है। इसके मूलकी छालका चूर्ण १५।२० ग्रेन सेवन करनेसे रक्त-आमाशय रोग नष्ट होता है। इस रोगमें यह ठीक इपिकाकुयानाकी तरह काम करता है। अधिक मात्रा सेवन करनेसे वमन होता है। २ ड्राम शुष्क मूलकी छालको आधसेर गर्म जलमें भिंगा आधी

आकलकोट—बम्बई प्रान्तके शोलापुर जिलेकी एक तहसील, यह नगर शोलापुरसे दक्षिण-पूर्व २१ मील पड़ता है। सेनदूरगी फाटकसे बाहर दक्षिणी नवाबोंके समयकी पुरानी मसजिद खड़ी है।

आकलन (सं॰ क्ली॰) आ-कल ल्युट्। १ आग्रहा, शक। २ ग्रहण, लेना। ३ संग्रह, सञ्चय, इकट्ठा-करना, बटोरना। ४ गणन, शुमार, गिनना। ५ अनुसन्धान, जांच, खोज। ६ अनुष्ठान, सम्पादन। ७ परिसंख्या। ८ बन्धन, जकड़। ९ आकाङ्क्षा, ख्वाहिश।

आकलनीय (सं॰ वि॰) १ आकलन करनेके योग्य, लेने लायक। २ एकत्र करने योग्य, इकट्ठा करने लायक। ३ गणना करने योग्य, शुमार लगाने काबिल। ४ अनुष्ठान करने योग्य। ५ अनुसन्धान करने योग्य, जांचने या पता लगाने काबिल।

आकलित (सं॰ वि॰) आ-कल क्त। १ अनुगत, लिया हुआ। २ अनुष्ठित, सम्पादित, किया हुआ। ३ परिगणित, गिना हुआ। ४ ग्रथित, गुंथा हुआ। ५ परीक्षित, जांचा हुआ।

आकली (सं॰ स्त्री॰) १ चटका, गौरैया, गरगैया। (हिं॰) २ आकुलता, बेकली।

आकल्प (सं॰ पु॰) आकल्पते, आ-कृप घञ्। १ वेशरचना, सिंगार करना, भूषण, अलङ्करण। सज्जीभूत करना, सजावट, बनाव। २ उन्नति, उभार। ३ रोग, आज़ार। (अव्य॰) ४ कल्प पर्यन्त। "आकल्पं कल्पे कवीनाम्।" (श्रुति)

आकल्पक (सं॰ पु॰) आ कल्प-कन्। १ तमः, अंधेरा। २ मोह, यादका न भूलना। ३ ग्रन्थि, गांठ। ४ उत्कण्ठा, हर्ष, खुशी। ५ मूर्च्छा, ग़श।

आकल्य (सं॰ क्ली॰) रोग, आज़ार।

आकष (सं॰ पु॰) अकर्कोरा, अकरकरहा।

आकषक, आकष देखो।

आकष (सं॰ पु॰) आकष्यते यत्र आ-कष (गोचरसञ्चर इत्यादि। पा ३।३।११९ सूत्रे चकारो अनुक्त-समुच्चयार्थः। चातकघ इति सि॰ कौ॰) इति घ प्रत्ययः। निकष प्रस्तर, स्वर्णादि कसनेका पत्थर, कसौटी।

आकषक (सं॰ वि॰) आकषे कुशलः, आकष कन्। कसनेवाला, कसौटी लगानेवाला।

आकषिक, आकषक देखो।

आकसमात (हिं॰) अकस्मात् देखो।

आकस्मात् (हिं॰) अकस्मात् देखो।

आकस्मिक (सं॰ वि॰) अकस्मादित्यव्ययम् कारण-भावार्थकं अकस्मात् कारणं विनैव भव. वा (विनयादिभ्यो ठक्। पा ५।४।३४।) इति ठक् टि-लोपः। अकस्मात् जात, बिना किसी कारणके होनेवाला, हठात् उत्पन्न, सहसा होनेवाला, नागहान, बेखबर। (स्त्री॰) ङीप्। आकस्मिकी। चार्वाक् इस जगत्को आकस्मिक कहते हैं। क्योंकि उनके मतमें सकल पदार्थ अकस्मात् अर्थात् कारणव्यतिरेकसे उत्पन्न होते हैं। वह बताते हैं, कि वनमें कोई बीज नहीं बोता; उसमें जल नहीं देता, तथापि वह बीज जैसे स्वयं अङ्कुरित और वर्द्धित होता, वैसेही जगत्का कोई कारण नहीं, आपही एक भावसे चलता है। फिर अग्निमें उष्णता गुण और जलवायुमें शैत्य गुण स्वाभाविक होता, वैसेही अन्य सब वस्तुका गुणभी स्वाभाविक है अर्थात् उसका कोई कारण नहीं।

आकस्मिकत्व (सं॰ क्ली॰) लोलता, अस्थिरता, नागहानी, बेख़बरी।

आका (हिं॰ पु॰) १ आकाय, अलाव। २ भट्टी, भाड़। ३ पजावा, आंवां। (आसामीभा॰) ४ आसामके उत्तर-सीमावर्ती पार्वतीय एक असभ्य जाति। इस जातिके लोगोंका मुंह गोल और चिपटा, नाक मोटी, आंख कुछ छोटी, गालकी हड्डी ऊंची, तथा देह मध्यमाकार रहता है। देखनेमें यह न अधिक मलिन और न अधिक ताम्रवर्णही हैं। इनकी स्त्रियां सुश्री नहीं होतीं, उनके गठनमें भी लावण्यता नहीं रहती है। पर्वतपर भरणी नदीके जलोच्छ्वासके ऊर्द्ध भागपर इस जातिका वासस्थान है। यहांका पथ अत्यन्त दुर्गम पड़ता, तराईसे चढ़ने पर प्राणान्त परिच्छेद होता है। आका जाति दो प्रधान सम्प्रदायमें विभक्त है। एक सम्प्रदायका नाम हज़ारी-कोयाद है। इस शब्दका अर्थ—हज़ार रत्नशलाका खादक लगता है।

द्वितीय सम्प्रदायका नाम—कुपचोर है। इस शब्दसे कार्पास-चैरसे (रुईकी चोरसे) चोरका बोध होता है। यह दोनो शब्द भाषामें साधारण अपभ्रंश है। पहले ये लोग पर्वतसे नीचे उतरकर वन पदके मध्य महा उत्पात उठाते और ब्रह्मपुत्र नदमें नौका एवं तीर्थयात्रियोंको धनधानसे लूट लेते थे। कुपचोरोंके पितासे कपास और वस्त्रादि हरण करनेसे इनके दोनो सम्प्रदायोंका इस प्रकार नाम पड़ा है।

आकाओंके उत्तर मिरमी जाति है। यह भी असभ्य होते हैं। आकाओंके साथ मिरमो-कन्याका आदान-प्रदान चलता है। मिरमी लोग कभी पर्वतसे नीचे नहीं उतरते, केवल आका हो विपद् पड़नेपर आत्मीय स्वजनको उद्धार करनेके लिये पर्वतसे नीचे आते हैं। आकाओंके सर्वसमेत २१० और मिरमी जातिके ३०० मकान् बने हैं।

असभ्यावस्थापर अवस्थ जो जातिको केवल बाह्य जगत्‌में ऐसी भक्ति देख पड़ती है। जिनके मध्य कहीं कुछ अद्भुत एवं भयङ्कर होता और विपद् आनेकी सम्भावना रहती वहीं देवता तथा ईश्वर विद्यमान है। आकालोग पर्वतमें रहते हैं। पर्वतको भयङ्कर एवं उच्च चूड़ा, कल्लोलिनी नदी और अन्य अदृष्टपूर्व निविड़ जङ्गलको हो ये लोग देवता समझते हैं। पुष्प जङ्गल और जलके देवता हैं। गृहको अधिष्ठात्री देवी फिरम् और सिमन् हैं। मद्य चेन्न एवं अन्नके देवता हैं। इनके पुरोहितका नाम देवरी है। देवरीको पूजादि कितने हो दैवक्रिया करना पड़ती है। एक एक कुटीरमें जङ्गलादिको देवमूर्त्ति स्थापित है। पुरोहित उन सकल देवताओंको पूजा करते हैं। शस्य कटने पर वे देवतादिको उसका अग्रभाग उत्सर्ग कर देते हैं। विवाहके समय वरलोग हाथमें राखी बांधते हैं। आका असभ्य हैं, किन्तु इनमें भी यह मङ्गलाचरण प्रचलित है। विवाहके पूर्व पुरोहित आ कर वर एवं कन्याके हाथमें सूतकी ग्रन्थि बांध देता है। पीड़ा होनेपर कोई औषधका भरोसा नहीं करता। ओझा मन्त्र पढ़के रोगीको झाड़ते एवं पुरोहित पुष्प देवताके समीप कुक्कुटादि बलि देकर मङ्गलयत्न करते हैं।

आकाओंका अस्त्र प्राय काठ एवं प्रस्तरसे बना और भीतर तपता विषा रहता है। ये प्राय यह अस्त्र लेकर सर्वदा भ्रमण करते हैं। हस्ति प्रभृति प्रबल जन्तुका शिकार करनेमें आका तीरको नोकोपर काठविष चढ़ा देते हैं।

ये पर्वतोत्पन्न अनेक प्रकारका द्रव्य संग्रह करके तिब्बत, भूटान एवं सिकिममें और पहाड़के नीचे वाणिज्य करने आते तद्भिन्न अपने प्रयोजनानुसार तांबे और कांसेके पात्र तथा वस्त्रादि क्रय करके ले जाते हैं।

आका आसाम निकटवर्ती जनपदके भीतर बीच बीच अतिशय अत्याचार करते हैं। सन् १८१८ ई०में इनके सर्दार टागीराजको अंगरेजोंने गिरफ्तार करके गौहाटीके जेलमें कैद किया था। वहीं जगह एक हिन्दू गुरुको पा कर उनके निकट हरिभक्ति और हरिमन्त्रमें दीक्षित हुए। गुरु शिष्यको चाहते और शिष्य गुरुको मानते थे। क्रमशः दोनोंके मध्यमें विलक्षण अनुराग उत्पन्न हुआ। सन् १८१२ ई०में टागीराजने अपने गुरुको जामिन बना मुक्ति पायी। किन्तु जब फिर पर्वतका स्वाधीन वायु उनके अङ्गमें लगा तब वह हरिभक्ति और गुरुके प्रति श्रद्धा कुछ भी न रही। पूर्वमें जिन लोगोंने षड्यन्त्र करके उन्हें पकड़वा दिया था, टागीराजने प्रथम ही उन्हें नष्ट किया। निकटके अंगरेजोंको कोठी भी लूटी। अंगरेजोंके जितने कर्मचारी उनके सम्मुख पड़े, उनमें अनेक हत एवं आहत हुए थे।

उपरोक्त अत्याचार निवारण करनेके लिये ब्रटिश सैन्य प्रेरित हुआ। यह विषय करना दुर्घट पड़ गया, आकाराज कहां रहते और किस पर्वतसे किस पर्वत-पर भाग जाते थे। अंगरेज बहुत दिनतक उनके पीछे पीछे फिरे, किन्तु कोई सन्धान लगा न सके। अन्तमें टागीराजने सोचा कि बहुत दिन इधरउधर छिपे रहनेकी अपेक्षा मृत्यु वा कारागार हो अच्छा था। गुरुका ऐसा कोई उपकरण न रहा जो अंग-

रेजोंकी गोलादृष्टिके सम्मुख खड़े रह सकते, सुतरां वे आप ही जा कर हाजिर हुए। फिर सन्धिकी बात चली। वह जैसे राजा थे, उनके लिये वार्षिक तनख्वाहकी व्यवस्था भी वैसी ही हुई। अंगरेजोंने कहा,—"आप शान्त शिष्ट हो जावो, लोगोंके प्रति अब उत्पीडन न करो; आपको प्रतिवर्ष ३६०) रुपया पेनृशन मिलेगा। किन्तु आपको किसीके ऊपर अत्याचार न करनेकी दृढ़ प्रतिज्ञा करना चाहिये।" टागीराज उसीमें सम्मत हो गये। उस समय अङ्गीकारके निमित्त पवित्र द्रव्यकी आवश्यकता पडी थी। कुक्कट आया, भल्लूक और व्याघ्रचर्म आया। तुम्हारे हमारे समीप जो अपवित्र ठहरता, संसारमें दूसरी जगह वही पवित्र है। हिन्दूके लिये गोमय और आकाके लिये हस्तिविष्ठा पवित्र है। शपथके लिये ढेरको ढेर हस्तिविष्ठा लगायी गयी। प्रथम सत्यपाठमें मुर्गीका बलि चढा था। उसके बाद आकाराज एक हाथमें भल्लूक-चर्म और दूसरे हाथमें व्याघ्रकृत्ति लेकर बोले—'जो होना था हुआ, अब सावधान बना, फिर कभी मैं अङ्गरेजोंकी बात न टालूंगा।' परिशेषमें अञ्जली भर हस्तीकी विष्ठा उठाकर कहा,—'अङ्गरेजोंके साथ विरोध इस जन्मके लिये मिट गया, जीवन रहते फिर कभी विवाद न करूंगा।' अन्तमें एकबार हरिनामकीर्त्तन करके प्रतिज्ञा समाप्त हुई।

मिश्मी-सर्दार

आका एवं मिश्मी लोगोंकी आकृति-प्रकृति, वेश-भूषा, लोक-लौकता, आहार-व्यवहार, सब एक ही प्रकार है। यह मिजु मिश्मी-सर्दारकी प्रतिमूर्त्ति है। इस चित्रपटसे आका और मिश्मी लोगोंके सभ्य वेशभूषा पहननेका प्रमाण मिलता है। विगत सन् १८८१ ई०को कलकत्तेकी प्रदर्शनीमें अनेक असभ्य जातिकी प्रतिमूर्ति दिखायी गई थी। प्रतिमूर्ति बनाते समय आका लोगोंको भी आकृति देनेकी कल्पना हुई। इसलिये आसाम सरकारके कर्मचारियोंने नमूनेकी तरह किसी आकाको कलकत्ते भेजनेकी चेष्टा की थी। किन्तु उस प्रस्तावपर समस्त आका जाति एकबारगी ही चिढ़ गयी। इससे अधिक असङ्गत कथा दूसरी क्या हो सकती है, कि प्रतिमूर्ति बनवानेके लिये जीवित मनुष्यको कलकत्ते जाना पड़े। इस अपमानका प्रतिशोध लेनेके लिये आका वृटिश प्रजाके कयी आदमी अपने पर्वतमें पकड़ ले गये। उसीसे अङ्गरेजोंके साथ एक सामान्य युद्ध हुआ था। अन्तको आका परास्त हो पर्वतके उपरिभागमें भाग गये।

आका राजकी मूर्ति देखनेसे शिवदूतका स्मरण आता है। इनका सर्वाङ्ग गोदनेसे चित्रित, कण्ठमें पत्थर तथा हड्डीकी माला, मत्थेपर पक्षीका पुच्छ, और शरीर पर लत्ता लिपटा है। ये पार्वतीय वनके मध्य दिवानिशि जङ्गली फलोंकी माला पहनकर घूमते एवं धनुर्वाण लेकर मृगया करते हैं। तीरमें कौन विष चढ़ा रहता है, इसका ठीक निश्चय नहीं होता। कोई कोई अनुमान करते, कि तीरमें मीठा विष (Aconitum ferox) लगाते हैं। किन्तु दूसरे कहते, कि आसामी लोग जिसको विष (Coptis Teeta) बताते, आका वही तीरकी गांसीपर चढाते हैं। इस विषाक्त अस्त्र द्वारा शरीर पर आघात लगनेसे शीघ्र ही मृत्यु होती है। कहते, किसीको आघात लगनेसे आका क्षतस्थानपर इन्द्रयव (Saussera Lappa) घसकर प्रलेप देते एवं उसीका क्वाथ सेवन कराते हैं। इसकी परीक्षा करना उचित है, कि इन्द्रयवमें यथार्थ विषनाशक-शक्ति होती है या नहीं।

सन्धिके बाद देश आकर आकाराजने स्वजातिके मध्य हरिभक्तिका प्रचार किया। इस समय प्रायः समस्त ही आका वैष्णव हो गये हैं। प्रत्येक आका गृहस्थके घरमें बहुत गो रहती हैं। यह गोमांस खाते, किन्तु गोका दूध किसीतरह पवित्र नहीं सम-

गयी। आका कण्ठागत प्राण होनेपर भी गोदुग्ध नहीं छूते। संसार विचित्र स्थान ठहरता, केवल आर्य वैष्णवोंमें ही इसका व्यापार चलता है। यह सुन हम हंसते, कि आका गोमांस खाते—किन्तु गोदुग्ध नहीं छूते। फिर अपरको आका यह देख हंसते, कि हम लोग दुग्ध खाते हैं, किन्तु गोमांस ग्रहण नहीं करते। यह सूअर, मुर्गे एवं कबूतर पालते हैं। इन सकल जीवोंका मांस ही आकाओंका प्रधान खाद्य है। ये प्राय सब जन्तुओंको खाते हैं। केवल सुर्खाबी, राजहंस एवं कुत्ते बगुले प्रभृति पक्षियोंका मांस सचराचर मनुष्यका खाद्य नहीं, कहो इनमें खानेको निषिद्ध है। पशुके बाद ये शव दाह नहीं करते, महीमें गाड़ देते हैं। [illegible] मिश्मी शब्द देखो।

आका (अ० पु०) स्वामी, मालिक, सरपरस्त।

आकाखेल—सिन्धुनदके उत्तरपश्चिम पार कोहाट निकटवर्ती अफरीदी जातिके मध्य एक पठान सम्प्रदाय। अन्यान्य पठानोंकी तरह आकाखेल भी अतिशय वीर्यवान् और दुर्दान्त होते हैं। दस्यु-वृत्ति, नरहत्या एवं युद्ध प्रभृति आसुरिक कार्य ही इन लोगोंका व्यवसाय है। आकाखेलोंके मध्य अनेक भिन्न भिन्न सम्प्रदाय हैं। यथा—माइकखेल, बरगान खेल, मीरखेल, सन्दलखेल, सुल्तानखेल, इत्यादि। पूर्वमें अङ्गरेजाधिकारके बीच घुस ये सर्वदा ही उपद्रव करते थे। सन् १८५५ ई०को अंगरेजोंने इस जातिका भारतवर्षमें प्रवेश करना रोक दिया। इससे आकाखेलोंको बहुत क्षति होने लगी थी। एकदिनको नहीं, भारतवर्षमें आ वाणिज्य कर न सकनेसे फिर कारबारकी क्षति हुई। इसी कारण आकाखेलोंने २५००) रु० अर्थदण्ड देकर हिन्दुस्तानमें प्रवेश करनेकी अनुमति ली। अङ्गरेज गवर्मेण्ट केवल अर्थ पाकर ही सन्तुष्ट न हुई थी। उसने इनसे यह प्रतिज्ञा भी करायी—आकाखेलोंके मध्य कोई व्यक्ति अङ्गरेजी अधिकारमें रहकर अत्याचार न करेगा। उस दिनसे इस जातिका दौरात्म्य कितना ही कम पड़ा सही, किन्तु बिलकुल शान्त नहीं हुआ।

आकाङ्क (सं० त्रि०) १ इच्छुक, अभिलाषी, ख्वाहिशमन्द, चाहनेवाला। २ व्याकरणमें—अर्थपूर्तिके लिये शब्दकी आवश्यकता रखनेवाला, जो मानी पूरे करनेको अपेक्ष चाहता हो।

आकाङ्क्षक ऊपर देखो।

आकाङ्क्षणीय (सं० त्रि०) स्पृहणीय काम्य, ख्वाहिश तमन्ना, पसन्दीदा, मनभाता।

आकाङ्क्षिन् (सं० त्रि०) १ अभिलाष रखनेवाला, जिसे उम्मेद रहे। २ दृष्टि डालनेवाला, जो देखता हो।

आकाङ्क्षा (सं० स्त्री०) आ-काङ्क्ष-(गुरोश्च हलः। पा ३।३।१०३) इति अ टाप्। १ अभिलाष, इच्छा, ख्वाहिश, पसन्द। २ जिज्ञासा, प्रश्न, सवाल, पूछताछ। ३ अभिप्राय मतलब। "[illegible]" (भट्टि) ४ दृष्टिपात, नज़ारा। ५ व्याकरणमें—अर्थपूर्तिके लिये शब्दादिका मानी पूरे करनेकी अपेक्षकी ज़रूरत। योग्यता, आकाङ्क्षा एवं आसत्तियुक्त पद समूहका नाम वाक्य है। "आकाङ्क्षा प्रतीति-पर्यवसान-विरहः। स च श्रोतुर्जिज्ञासारूपः। निराकाङ्क्षस्य वाक्यत्वे 'गौरश्वः पुरुषो हस्ती' इत्यादीनामपि वाक्यत्वं स्यात्" (साहित्य०) ६ न्यायमतसे वाक्यार्थ ज्ञानका हेतु सम्बन्ध विशेष। यथा—"[illegible]" (तर्क०)। '[illegible]' (न्या० म०) '[illegible]' (त० दी०) अर्थात् जिस पदके बिना दूसरे पदका अन्वय नहीं होता, उसी पदमें वही पदका रूप सम्बन्ध या एक पदके व्यतिरेकमें अन्वयका अभाव आकाङ्क्षा कहाता है। जैसे दास भार्या कहनेपर 'किस दासकी भार्या?' ऐसी आकाङ्क्षा रहनेसे अन्वयका अभाव होता है। पीछे 'चैत्रस्य' चैत्रकी—इस सम्बन्धिपदके उल्लेख करने पर, उसके सहित अन्वय होता है। उस समय आकाङ्क्षा छूटती है। वाक्यमें पदोंका परस्पर सम्बन्ध रहता और उसी सम्बन्धसे वाक्यार्थका ज्ञान होता है। जब वाक्यमें एक पदका अर्थ दूसरे पदके अर्थ ज्ञानपर आश्रित रहता, तब आकाङ्क्षा रहती है। जैसे—'घड़ा लाओ'—इसमें केवल 'लाओ' कहनेपर श्रोताको

'क्या लावें' की आकाङ्क्षा होती है। कारण, 'लावो' पदका ज्ञान घटज्ञानके आश्रित है। ७ जैनमतानुसार अतिचार विशेष। यह एक प्रकारकी इच्छा होती, जो अन्य मतावलम्बियोंकी विभूति पर दौडती है।

आकाङ्क्षित (सं० वि०) आ-काङ्क्ष कर्मणि क्त। १ इच्छित, ईप्सित, ख़ाहिश किया हुआ। २ प्रश्न किया हुआ, पूछा गया। ३ ध्यान किया हुआ, ख़यालमें लाया गया। ४ अपेक्षित, ज़रूरी।

आकाङ्क्षितव्य, आकाङ्क्षणीय देखो।

आकाङ्क्षिन् (सं० वि०) आ-काङ्क्ष-णिनि। १ इच्छायुक्त, इच्छा करनेवाला, इच्छुक, चाहनेवाला। २ प्रत्याशी, पूछनेवाला। (स्त्री०) ङीप्। आकाङ्क्षिणी।

आकाङ्क्षी, आकाङ्क्षिन् देखो।

आकाङ्क्ष्य (सं० वि०) १ स्पृहणीय, काम्य, क़ाबिल-तमन्ना, पसन्दीदा। (क्ली०) २ अर्थपूर्तिके लिये शब्दापेक्षा, मानी पूरा करनेको लफ़्ज़की ज़रूरत।

आकापर्वत—आका नामक एक पहाड। इस पर्वतको सचराचर आका ही कहते हैं। यह गिरिमाला आसामके ठीक उत्तरमें अवस्थित है। इससे दक्षिण दरङ्ग प्रदेश, पूर्व दफ़ला पर्वत और पश्चिम भोटान राज्य है। आका पर्वतके रहनेवाले अति असभ्य जाति होते हैं। आका देखो।

आकाय (सं० पु०) आ-चि कर्मणि घञ् चितौ कुत्वम्। निवास चितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च क.। पा ३।३।४१। १ चीयमान अग्नि, सञ्चित अग्नि, यज्ञके लिये रखी हुई आग। २ चिता। ३ गृह, निवास, मकान्।

आकायाव (अक्याव)—अंगरेजाधिकृत ब्रह्मदेशके अन्तर्गत आराकान विभागका एक ज़िला। कहते हैं, गौतमके जन्मसे पहले आराकानकी राजधानी रामवन्द्रो वाराणसीके राजाको कर देती थी। प्रायः सन् ८०० ई०को मुसलमानोंने आराकानपर आक्रमण किया। नवीं शताब्दीमें आराकानके राजाने वङ्गदेश-पर चढ़ाई की थी। उन्होंने चटगांवमें सीतागङ्ग नामक एक जयस्तम्भ निर्माण कराया।

आकायावमें महाती नामक एक मन्दिर है। गजयी नामक राजाने उसे बनवाया था। पहले आकायाव ब्रह्मदेशीय सैन्यका दुर्ग रहा। उसके बाद १८२५ ई०को अंगरेजी सेनाने आकर इसे दख़ल कर लिया। तेरहवीं शताब्दीको आराकानवासी पूर्ववङ्गमें आ पहुंचे थे। उस समय ढाका ज़िलेके अन्तर्गत सुवर्णग्राम प्रभृतिके राजाओंने उन्हें कर देकर छुटकारा पाया। इसीको हमलोग सचराचर मगोंका दौरात्म्य कहते हैं। मगोंने मेघना नदीके किनारे सब देशोंमें आकर बड़ा अत्याचार किया था। क्रमसे उन्होंने चटगाव अधिकार कर लिया और वहां पोर्त्तुगीज़ोंको आश्रय दिया। पोर्तुगीज़ भी अत्यन्त अत्याचार करने लगे। वे नावपर हमेशा मेघनामें घूमते फिरते और वणिक्, पथिक तथा तीर्थयात्रीका सर्वस्व लूट लेते थे। कविकङ्कणमें जो—'हरामदके डरसे' इत्यादि उल्लेख किया गया है, वे हरामद (Armada) यही जलडाकू रहे। ऐसा अत्याचार देखकर कुछ दिनोंके बाद आराकानवासियोंने सब पोर्त्तुगीज़ोंको चटगांवसे निकाल बाहर किया। यहांसे भागकर वे लोग सान्तुयिप द्वीपमें जाकर रहे। परन्तु उनके सेनापतिने क्रोधमें आकर आराकानपर आक्रमण किया था। आराकानके राजाने युद्धमें उनका प्राणविनाश कर सान्तुयिप द्वीप अधिकार और वहांके सब आदमियोंको क़ैद कर लिया।

१६६१ ई०को शाहशुजाने औरङ्गज़ेबके डरसे भागकर आराकानमें आश्रय लिया था। किन्तु वहांके राजाने शाहशुजाकी कन्यासे रूपलावण्यपर मोहित होकर विवाह करना चाहा, परन्तु शाहशुजा उस बातपर राजी न हुए। इसलिये आरावानके राजाने शाहशुजा और उनके पुत्रादिको एक नदीमें डुबाकर मार डाला।

१७८४ ई०को आराकान ब्रह्मराज्यमें मिला लिया गया था। इससे आराकानवासियोंने चटगांव तथा अन्यान्य अंगरेजी राज्यके स्थानोंमें आकर आश्रय लिया। ब्रह्मवासियोंने उन्हें गिरफ़ार करा देनेके लिये अंगरेजोंसे अनुरोध किया, परन्तु किसीने उनको

बात न सुनी। इसीसे १८२४ ई०को ब्रह्मदेशके साथ अंगरेजोंका युद्ध हुआ था। पीछे १८२६ ई०के सन्धि सूत्रसे आराकान और तेनासारिम अंगरेजोंके राज्यमें मिला लिया गया।

आकायाबमें जलपथसे ही वाणिज्य होता है। धान, सुपारी पान, सीसा, सरसों, नारियल, नील और नाना प्रकारकी लकड़ी यहांसे दूसरी जगह भेजी जाती है।

आकाय्य (वै० त्रि०) सञ्चयीय काम्य पसन्दीदा।

आकार (सं० पु०) आ-कृ-घञ्। १ मूर्ति, सूरत। २ अवयव संस्थान विशेष, डीलडौल, बनावट। ३ हृदयगत भावव्यापक मुखकी प्रसन्नता और विवर्णता, दिलका हाल बतानेवाले मुखकी खुशी और उदासी। ४ रूप, वर्ण और गुणसूचक देहकी चेष्टा, सूरत, शकल और तबकीब बतानेवाली जिस्मकी हालत। आ-कै घञ्। ५ हृद्गत भाव-ज्ञापन, मनोगत भाव प्रकाश दिलके हालका इज़्हार। ६ इङ्गित, निशान। ७ सांख्यादि मतसिद्ध अभेद ज्ञानीय पदार्थ विशेष। सांख्यवादी कहता,—जैसे शरीरकी बुद्धिसे भोजन, मनुष्यकी भाषासे जन्मभूमि और संगमसे क्षेत्र, देहकी ज्ञानरूप आकारसे ज्ञेय वस्तुका अनुमान होता है। ८ आकार अक्षर, आ।

आकारकरम (सं० पु०) आकारात्मक अक्षरकरम। (स्त्री०) आकारकरमा।

आकारगुप्ति (सं० स्त्री०) आकारस्य मनोगतभावस्य गुप्तिः गोपनम् ६ तत्। व्याज, मिथ्या हेतु, इत्यादि जनित मुखकी प्रसन्नता एवं भयजनित विषादादिका प्रकृत हेतु न बता अन्य हेतु द्वारा उसका गोपन, बहाना, सूरतका छिपाना।

आकारगोपन (सं० क्ली०) आकारगुप्ति देखो।

आकारण (सं० स्त्री०) आ-कृ णिच्-युट् णिच् लोप। १ आह्वान, बुलावा। २ समराह्वान, ललकार। (अव्य०) ३ कारण पर्यन्त।

आकारणीय (सं० त्रि०) आह्वान किया जानेवाला, जो बोलाया जाता हो।

आकारिक (स० त्रि०) आकारे कुशलम्, ठक्। इङ्गितादिमें निपुण इशारा करनेमें होशियार।

आकारित (सं० त्रि०) १ आहूत, बोलाया हुआ। २ प्रतिपादित, निरूपित। ३ याचा किया हुआ मांगा गया। ४ ठहराया हुआ।

आकारी (हिं० वि०) आह्वान करने या बुलाने-वाला।

आकारीठ (हिं० पु०) संग्राम, युद्ध लड़ाई।

आकाल (अव्य०) १ काल पर्यन्त (आङ् मर्यादाभिविध्योः। २।१।१३) इति अव्ययी०। २ पूर्व दिन निमित्तके जिस समयसे दूसरे दिनके उसी समयतक। जैसे पूर्व दिन एक कालमें विद्युद्गर्जनके साथ साथ वर्षण और इधर उधर उल्कापात होनेसे दूसरे दिन उसी समयतक अनध्याय रहता है।

"निमित्तकालमारभ्य परेद्युरा च तत्र कालपर्यन्तम्।"
(कर्क)

जिस समयमें जिस कार्यका विधान है उसी समय तक। जैसे ब्राह्मणके उपनयनका काल सोलह वर्ष-तक है। यहां 'आकालं ब्राह्मण उपनयेत्' प्रयोग किया जा सकता है। इतरभाषामें दुर्भिक्षको भी अकाल कहते हैं।

आकालिक (स० त्रि०) आकाले भव ठञ्। १ असा-मयिक। २ पूर्व दिन निमित्त पड़नेसे दूसरे दिन उसी समय तकका।

"निर्घाते भूमिचलने ज्योतिषाञ्चोपसर्जने।
एतानाकालिकान् विद्यादनध्यायानृतावपि॥" (मनु ४।१०२)

'निमित्तकालमारभ्य परेद्युरा च तत्कालपर्यन्तं' इत्यकालः तत्र भव आकालिकः।' (कर्क) ३ असमय जात, जो बेवक्त पैदा हो। (स्त्री) ङीप्, आकालिकी। 'आकालिकी तडिल्लेखा स्त्री।' (अमर) आशुविनाशिनी, जल्द मिट जानेवाली। विद्युत् शीघ्र ही विनाश हो जाती, इसलिये वह भी आकालिकी कहाती है।

आकालिकता (स० स्त्री०) प्रस्तावसाहाय्यका अभाव, लाचारी, बेकसी, बेमददी, नामदानी।

आकालिकप्रलय (सं० पु०) प्रलय विशेष, कलिके पापसे असमयमें जगत्का प्लावन।

आकाश (सं० पु०-क्ली०) आ समन्तात् काशन्ते दीप्यन्ते सूर्यादयोऽत्र। आ-काश दीप्तौ—(हलश्च

घ. प्रायेण। पा ३।३।११८) इति घ प्रत्ययः। अथवा न कामते प्रतिव्यादिवत् प्राप्नयलात् काश पच् नञ्स्यादमो दीर्घ। (निघण्टु)

१ पञ्चभूतमें भूतविशेष, शून्य, आसमान्। साधारण बोलचालमें हमलोग केवल ऊपरके शून्य स्थानको ही आकाश कहते हैं। इसका अपभ्रंश 'आकास' शब्द भी प्रचलित है। आकाश शब्दके पर्याय ये हैं,—द्यो, द्यौ, अभ्र, अभ्र, व्योम, पुष्कर, अम्बर, नभः, अन्तरीक्ष, गगन, अनन्त, सुरवर्त्म, ख, वियत्, विष्णु-पद, विहाय, नाक, अनङ्ग, नभस, मेघवेश्म, महा-विल, मरुद्वर्त्म, मेघवर्त्म, त्रिपिष्टप।

न्यायके मतसे यह नित्य, असीम, एवं अशरीरी होता है। शब्द इसका विशेष गुण है। संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग एवं विभाग—ये पांच आकाशके सामान्य गुण हैं। कर्ण इसका इन्द्रिय है। आकाश एक होते भी उपाधि भेदसे नाना प्रकारका है। जैसे घटाकाश, पटाकाश इत्यादि। वेदान्त-मतसे आकाश जन्य पदार्थ है। २ परब्रह्म। ३ छिद्र। गणित-शास्त्रमें आकाश शब्दसे शून्य समझा जाता है।

तैत्तिरीय-उपनिषत्के मतसे परब्रह्मसे पहले आकाश उत्पन्न हुआ था। फिर आकाशसे वायुकी उत्पत्ति हुई। बाइबिलमें भी लिखा, कि ईश्वरने पहले आकाश बनाया था। आकाशका कर्म स्थान देना है अर्थात् आकाशके अभावमें कुछ भी नहीं रह सकता।

शब्दसमवायिकारणत्वको भी आकाश कहते हैं। परन्तु इसपर प्रश्न हो सकता, अतीन्द्रिय पदार्थ होनेसे इसकी सत्ताका क्या प्रमाण है? इस सन्देहको दूर करनेके लिये शास्त्रकारोंने निम्न-लिखित प्रमाणोंसे सत्ता बताई है—शब्द पृथिव्यादि आठसे अतिरिक्त द्रव्यमें आश्रित है। क्योंकि आठ द्रव्योंके आश्रित माननेपर समवायिकारणत्वसे जो नहीं, वह नहीं हो रह जाता है। यद्यपि आकाश अतीन्द्रिय होता, तथापि विलक्षण शब्दात्मक कार्य अन्य किसी प्रकार उत्पन्न न हो सकनेसे इसे मानना पड़ता है। "शब्दो गुणः चक्षुरग्रहणायोग्यबहिरिन्द्रियग्राह्यजातिमत्वात् स्पर्शवत्" अर्थात् चक्षु इन्द्रियसे अग्राह्य एवं स्पर्शके समान बहिरिन्द्रिय (त्वचादि)से ग्राह्य और जातिमत्व होनेसे शब्दको गुण कहते हैं। गुण होनेसे संयोगकी तरह शब्द द्रव्यसमवेत है। इस अनुमानसे शब्दका द्रव्य-समवेतत्व सिद्ध होनेपर पृथिव्यादि आठ द्रव्यमें शब्दाधिकरणत्वकी बाधासे शब्दाधिकरण गगनात्मक नवम द्रव्य सिद्ध होता है। (न्यायसिद्धान्तमुक्तावली)

शाब्दिक 'नक्षत्रमाकाशे तिष्ठति' अर्थात् इसपर नक्षत्र रहते हैं—कहकर निर्दिष्टवस्तुविषयमें पृथिव्यादिका आधारत्व असम्भव होनेसे तदाधार यानी नक्षत्रादिके आधारको ही आकाश बताते हैं। (लघुमञ्जूषा)

इसपर भर्तृहरिने भी कहा है—

> "आधारशक्तिः प्रथमा सर्वसंयोगिनामयम्।
> इदमत्रेति भावानामभावानाञ्च कल्पते॥ १॥
> व्यपदेशस्तमाकाशनिमित्तं तु प्रचक्षते।
> कालात् क्रिया विभज्यन्ते आकाशात् सर्वमूर्तयः॥ २॥
> एतावानेव भेदोऽयमभेदोपनिबन्धनः॥" (वाक्यपदीय)

अर्थात् आकाश इसमें है या नहीं—इत्यादि भाव एवं अभावादि संयोगियोंकी पहली आधारशक्ति तथा व्यपदेशका निमित्त कहा जाता है। जैसे कालसे क्रिया अलग की जाती, वैसे ही आकाशसे सब मूर्ति विभक्त होती है।

सांख्य मतमें निष्क्रमणादि कर्मसे आकाश सिद्ध होता है।

वेदान्ती भी इसीको समर्थन करते हैं—

> "शब्दः श्रोत्रेन्द्रियं चापि छिद्राणि च विविक्तता।
> वियतो दर्शिता एते गुणा गुणविचारिभिः॥" (वाचस्पतिमिश्र)

यह शब्दगुणक, एक, विभु तथा नित्य है। लाघवसे एक, सर्वत्र कार्योपलब्धसे विभु और विभुसे नित्य माना जाता है। आकाशमें ६ गुण रहते हैं—संख्या, परममहत् परिमाण, एक पृथक्त्व, संयोग, विभाग, शब्द।

आकाशकक्षा (सं० स्त्री०) ६-तत्। (Horizon) गगनान्तराल, क्षितिज, उफ़ुक़, आसमान्से लगा हुआ ज़मीन्‌का किनारा। ज्योतिःशास्त्रमें इसका परिमाण १८७१२०६९२०६९२०००००००० योजन निश्चित किया गया है। चक्रवाल।

आकाशकल्प (सं॰ पु॰) ईषदसमाप्तः आकाशः, आकाश (ईषदसमाप्ती कल्पब्देश्य देशीयरः। पा ५।३।६७) इति कल्पप् प्रत्ययः। परब्रह्म। आकाशकी तरह निर्लेप, प्रधान एव अविनश्वर होनेसे परब्रह्मको भी आकाश-कल्प कहते हैं।

आकाशकुसुम (सं॰ क्ली॰) आकाशे उदितं कुसुमम्, शाक॰ तत्। १ खपुष्प आसमानका फूल। २ असम्भव विषय, अनहोनी बात। आकाशमें फूल नहीं खिलता अतएव "आकाशकुसुम" कहनेसे मिथ्या विषयका बोध होता है।

आकाशग (सं त्रि॰) आकाशमें चलनेवाला, जो आसमानमें घूमता हो।

आकाशगङ्गा (सं॰ स्त्री॰) आकाशका गङ्गा, शाक॰ तत्। १ मन्दाकिनी, वियद्गङ्गा, स्वर्णदी, सुरदीर्घिका, आकाशनदी प्रभृति शब्द भी इसी अर्थमें प्रयुक्त होते हैं। २ नक्षत्रपथ विशेष। यह आकाशमें उत्तर दक्षिण विस्तृत है। इसमें अनेक छोटे-छोटे नक्षत्र रहते, जो आंखसे देख न पड़नेपर सफेद बादल जैसे मालूम होते हैं। यह कहीं कम और कहीं ज्यादा चौड़ी है। आकाशगङ्गाकी शाखायें भी इधर उधर फैल गयी हैं। ग्रामीण लोग इसे आकाश-जनेऊ, डगर या कामीकी सड़क कहते हैं।

आकाशगर्भ (सं॰ पु॰) बोधिसत्त्व विशेष।

आकाशगा (सं॰ स्त्री॰) आकाशे गच्छति आकाश-गम-ड टाप्। स्वर्गङ्गा।

आकाशगामिन् (त्रि॰) आकाशे गन्तुं शीलमस्य, आकाश गम शीलार्थे णिनि। आकाशगमनमें क्षम, शून्यचारी, आसमानमें फिरनेवाला।

आकाशचमस (सं॰ पु॰) चन्द्र, चांद।

आकाशचारिन् आकाशचारिन् देखो।

आकाशचारी (सं॰ पु॰) १ सूर्यादि ग्रह, आफताब वगैरह तारा। २ वायु हवा। ३ पक्षी, चिड़िया। ४ देवता। ५ राक्षस। (त्रि॰) आकाशचारिन् देखो।

आकाशच्युतो (सं॰ स्त्री॰) आकाशको मिश्रा, मीर्य-बिन्दु, बिलकुल गिरके ऊपर पड़नेवाला कल्पित बिन्दु।

आकाशज (सं॰ त्रि॰) गगनजात, आसमानसे पैदा।

आकाशजननिन् (सं॰ पु॰) आकाशजननी देखो।

आकाशजननी (सं॰ स्त्री॰) आकाशस्य जननीव शस्त्रप्रदानात्। किलेका प्राकार, भरोखा। दुर्गके भीतरी आदमियोंका बाहरका काम देखने और शत्रु-पर गोला प्रभृति मारनेके लिये दीवारमें छेद रखते हैं। ऐसे छेदवाले दीवारको प्राकार कहते हैं। दुर्गके बाहर शत्रुके आते स्वयं छिपे रहकर छेदोंसे आग्ने-यास्त्र आदि छोड़नेपर शत्रुका नाश होता, इसीसे इसका नाम आकाशजननी है। महाभारत शान्ति-पर्वके ६९वें अध्यायमें इसका विवरण लिखा है।

आकाशजल (सं॰ क्ली॰) १ वृष्टिका नीर, मेहका पानी। २ तुषार, ओस। मघा नक्षत्रमें जो पानी पड़ता वह पात्रमें भरकर रख छोड़ा जाता और औषधमें व्यवहृत होता है।

आकाशदीप आकाशप्रदीप देखो।

आकाशदीया (हिं॰) आकाशप्रदीप देखो।

आकाशधूरी (हिं॰ स्त्री॰) खगोलाक्ष, आसमानकी धुरी।

आकाशध्रुव (सं॰ पु॰) आकाशधुरी देखो

आकाशनदी, आकाशगङ्गा देखो।

आकाशनिद्रा (सं॰ स्त्री॰) मनपर स्थानका शयन, खुली जगहकी नींद।

आकाशनीम (हिं॰ स्त्री॰) नीमके पेड़पर फैलने-वाली बेल, नीमका बांदा।

आकाशपटल (सं॰ क्ली॰) धनवात, घनरव।

आकाशपुष्प, आकाशकुसुम देखो।

आकाशप्रतिष्ठित (सं॰ पु॰) बुद्धविशेष, किसी बुद्धका नाम।

आकाशप्रदीप (सं॰ पु॰) आकाशे लक्ष्मीनारायणो-द्देशार्थं दीयमानः प्रदीपः शाक-तत्। आकाशदीया, आसमानी चिराग। और कार्तिक मासमें प्रतिदिन उच्चस्थानपर जो प्रदीप जलाते, उसे आकाशप्रदीप कहते हैं।

हेमाद्रिधृत आदिपुराणमें आकाशप्रदीपका नियम इस तरह लिखा है,—घरके निकट किसी प्रकार

को यज्ञीय लकड़ीका आदमीके बराबर एक स्तम्भ गाड़े और उसमें यवाङ्गुल तुल्य छेद करके दो हाथकी पट्टी लगाये। फिर चौकोन अष्टदलाकृति कर्णिकाके बीचमें दीप देना चाहिये।

आजकल आकाशप्रदीप देनेकी रीति दूसरी ही तरह प्रचलित है। गृहस्थ लोग घरके बाहर या भीतर एक बड़ा बांस गाड़, उसके सिरेपर लाल झण्डा उड़ा और अठपहलू लालटेनमें दीप जला देते हैं।

समस्त कार्तिक मास आकाशप्रदीप देनेका नियम है। कार्तिक मासके प्रथम दिनमें ब्राह्मण वृक्षको पूजा करते हैं। इससे लक्ष्मीदामोदरकी ही पूजा होती है। पीछे सन्ध्या समय लालटेनको दीप रख और रस्सीसे खींचकर ऊपर चढ़ा देते हैं। प्रदीपमें तिलतैल अथवा घृतादि देनेका ही नियम है। आकाशप्रदीप देनेका मन्त्र यह है,—

"दामोदराय नभसि तुलायां लोलया सह।
प्रदीप ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे॥" (अपरार्क)

कार्तिक मासमें लक्ष्मी सहित दामोदरको मैं आकाशमें यह प्रदीप देता हूं। वेधा अनन्तको नमस्कार है।

इसका दूसरा मन्त्र भी देखनेमें आता है; यथा—

"पितृभ्यः धर्मराज इन्द्राय भूम्यै दामोदरायाप्यथ धर्मराजे।
प्रजापतिभ्यस्त्वथ सत्पितृभ्य प्रेतेभ्य एवाथ तमःस्थितेभ्यः॥"

आकाशफल (सं॰ क्लो॰) सन्तान, औलाद, बालबच्चा।

आकाशबुद्बुद (सं॰ पु॰) नाट्य भाषामें—दर्शकमण्डलीको देख न पड़नेवाले पदार्थपर टकटकीका बांधना।

आकाशबेल, अमरबेल देखो।

आकाशभाषित (सं॰ क्लो॰) भाष-भावे क्त, आकाशे भाषितम्, ७-तत्। १ देववाणी, जो बात देवता आकाशमें अदृश्य रूपसे रहकर कहता हो। २ नराकृत, साक्षात् देववाणी सुन नहीं पड़ती। किन्तु कोई व्यक्ति अन्यको लक्ष्यकर जब किसी कामके होने या न होनेकी बात कहता, तब उसका फल मिल जाता है। ३ अदृश्य भावसे कथन, पोशीदा तौरपर बोलना। नाट्यशालामें किसी देवताका वाक्य निकालते समय नट अदृश्य रहकर देववाणीकी तरह जो बात कहता, वही आकाशभाषित है। इसमें वक्ता बेपूछे आकाशकी ओर देख प्रश्नका उत्तर देने लगता है। दर्शक यही समझता, मानो उससे कोई बात करता है।

आकाशमण्डल (सं॰ क्लो॰) आकाशो मण्डलमिव। १ गगनमण्डल, हवाका कुरा। आकाशकी कोई आकृति वा इयत्ता नहीं, किन्तु मण्डलाकार वेष्टनके अभावमें भी गोल मालूम पड़ता है। इसीसे गगनको आकाशमण्डल कहते हैं। नभोमण्डल प्रभृति शब्द भी इस अर्थमें प्रयुक्त हो सकते हैं। २ तन्त्रोक्त भूतशुद्धिके अन्तर्गत चिन्तनीय भ्रूमध्यसे परब्रह्म पर्यन्त अवस्थित वृत्ताकार स्वच्छ नभोमण्डल।

आकाशमय (सं॰ पु॰) आकाश-मयट्। १ आकाशतुल्य आत्मा, शतपथब्राह्मणमें लिखा,—आत्मा ही ब्रह्म एवं आत्मा ही विज्ञानमय, मनोमय, वाङ्मय, प्राणमय, चक्षुर्मय, श्रोत्रमय और पृथिवीमय है। फिर शतपथब्राह्मणके भाष्यकारने बताया, कि आत्मामें इस संसारका बद्ध होना वास्तविक नहीं केवल उपाधिविशिष्ट मात्र है।

आकाशमांसी (सं॰ स्त्री॰) आकाशे जटा मांस इव यस्याः, शाक-बहुव्री॰। जातित्वात् ङीप्। सूक्ष्म जटामांसी, यह शीतल, शोफघ्न, व्रणनाडीघ्न, लूतागर्दभजलादि रोगघ्न और वर्णकर होता है।

(राजनिघण्टु)

आकाशमुखी—शैव सम्प्रदाय विशेष। जो सन्यासी सर्वदा ऊर्ध्वमुख रहते उन्हें आकाशमुखी कहते हैं।

आकाशमूली (सं॰ स्त्री॰) आकाश्यते अभूमिवद्धतया प्रकाश्यते, प्रकाश भावे घञ्, तथोक्तं मूलमस्याः, बहुव्री॰। जलौषधि, कुम्भिका, पाना।

आकाशयान (सं॰ क्लो॰) आकाशे शून्ये यायते-ऽनेन, आकाश-या-ल्युट्, ७-तत्। व्योमयान, हवायी जहाज, जे.पलिन।

आकाशरक्षिन् (सं॰ पु॰) आकाशे रक्षति, आकाश-

रख दिये। दुर्गके बहिर्भित्ति प्राचीरपर चढ़के जो रक्षा करनेवाला वीर, जो सिपाही किलेकी बाहरी दीवारपर हिफ़ाज़त रखता हो।

आकाशसलिल (सं॰ क्ली॰) आकाशस्य सलिलम्। आकाशसे पतितजल, आसमान्‌से गिरा हुआ पानी।

आकाशलोचन (स॰ क्ली॰) मानमन्दिर, रसदगाह, अबज़रवेटरी। इस स्थानसे ग्रहोंकी स्थिति या गति देखते हैं।

आकाशवचन, आकाशवाणी देखो।

आकाशवत् (सं॰ त्रि॰) आकाशं शून्यं अस्त्यस्य मत्वर्थेन, आकाश मतुप् मस्य वत्वम्। १ आकाशगामी, आसमान्‌में चलनेवाला। २ विस्तृत, कुशादा, लम्बा चौड़ा आसमान्-जैसा।

आकाशवर्त्मन् (सं॰ क्ली॰) आकाशे शून्ये वर्त्म पन्थाः, ७-तत्। शून्यमार्ग, आकाशपथ, आसमानी राह।

आकाशवल्लरी आकाशवल्ली देखो।

आकाशवल्लिका, आकाशवल्ली देखो।

आकाशवल्ली (स॰ स्त्री॰) आकाशस्य वल्ली लतेव। आकाशबेल, अमरबेल। यह तिक्त, पिच्छिल, नेत्ररोगघ्नी, अग्निवर्धनी, हृद्या और पित्तश्लेष्मनाशिनी होती है। (भावप्रकाश) इसे मधुर, कटु, पित्तघ्नी, शुक्रहितकारी, रसायनी और बल्य बताते हैं।

(राजनिघण्टु)

आकाशवाची (स॰ स्त्री॰) आकाशवाणी देखो।

आकाशवायु (Atmosphere) वायुमण्डल, हवाका कुरा, जो वाष्पराशि पृथिवीको चारो ओरसे घेरे हुए है, उसे आकाशवायु कहते हैं। उद्भिद् एवं प्राणीके जीवन धारण करनेको आकाशवायु नितान्त आवश्यक है। इस वायु योगमें मन्द एक स्थानसे दूसरे स्थान जाता है। इसीसे सूर्यका उत्ताप लगता और रौद्रका रूपान्तर होता है। आकाशवायु रहनेसे गोधूलिके समय रोशनीके बाद धीरे धीरे अन्धकार होता है। नहीं तो सूर्यास्त होनेके बाद एकदम अन्धकार आ जाता। इससे मरीचिका प्रभृति बहुत भौतिक दृश्य देखनेमें आते हैं।

माध्याकर्षणकी निमित्त आकाशवायुका आकार ठीक अण्डे जैसा है। इसका सारा भार पृथिवीके ऊपर पड़ा है। अन्यान्य तरल वस्तुओंकी तरह इसमें भी भार डालनेकी क्रिया ठीक उसकी तुल्य है। परन्तु इसकी भीतरी अवस्था और और तरल वस्तुओं जैसी नहीं है। आकाशवायुके परमाणु परस्पर प्रतिक्षिप्त हुआ करते हैं। सुतरां जिस परिमाणसे प्रतिक्षेपका जोर पड़ता, इसका भार भी उसी परिमाणसे अन्य अन्य तरल वस्तुओंसे पृथक् रहता है। इसलिये बाहरका जोर देखकर इसे और और तरल वस्तुओंके समान कहते हैं। अतएव समान आकारका जल और आकाशवायु लेनेसे बाहरके भारमें आकाश वायुका ही अधिक परिवर्तन होता है जलका नहीं। इसीसे ऊपरकी अपेक्षा पृथिवीके निकट वायुका जो स्तर रहता, वह अधिक घन है। कारण अधिक ऊंचाईपर चारो ओरसे अति अल्प परिमित वायुका भार पड़ता इसीसे परमाणुका प्रतिक्षेप बढ़ फैल जाता है।

तौलनेसे वायुका गुरुत्व स्पष्ट मालूम होता है। पहले वायुपूर्ण कांचका एक गोलपात्र तौल पीछे वायुनिष्कासन-यन्त्रसे उसकी हवा बाहर निकाल फिर तौलनेसे उतना भारी नहीं मालूम पड़ता। इसलिये जिस परिमाणसे भार कम पड़ जाता, वही वायुका गुरुत्व है। तापमान यन्त्रमें ६०° और वायुमान यन्त्रमें ३० ताप रहनेसे १०० घन इञ्च परिमित शुष्क वायुका वजन प्राय ३१·०१७ ग्रेन होता है।

किसी बोझको डुबाकर रखनेसे उसको चारो ओर जल हट जाता है। आर्किमिडिसने स्थिर किया, किसी बोझको डुबाकर रखनेसे उसको चारो ओर जल जिस परिमाणसे हटता ठीक उसी जलके परिमाण बोझका वजन कम पड़ता है। वायुके सम्बन्धमें भी ठीक यही नियम देखा जाता है। इसकी परीक्षा अति सहज ही हो सकती है। किसी छोटे तराज़ूमें डण्डीको एक ओर वायुपूर्ण कांचके पात्रको मुंह बन्द करके लटका और दूसरे ओर

आकीम् (वै॰ अव्य॰) आ-अम् बाहु॰ कीमि। १ वर्जन, रोकटोक। २ वितर्क, सुबहसा।

आकुञ्चन (सं॰ क्ली॰) आ कुचि-ल्युट्। १ सङ्कोचन, रगविलाप, दबाव। २ सञ्चय, इकट्ठा करना। ३ वक्रता, टेढ़ापन। ४ वैदग्ध्य मरोड़। वैशेषिक इसे पांच प्रकारके कर्मोंमें एक कर्म मानते हैं।

आकुञ्चनीय (सं॰ त्रि॰) आकुञ्चनयोग्य, सिकुड़ने लायक, सिमट जानेवाला।

आकुञ्चित (सं॰ त्रि॰) आ-कुचि-क्त। १ सङ्कुचित सिकुड़ा या सिमटा हुआ। २ आभुग्न, टेढ़ा।

आकुड़ीहिंसा (हिं॰ स्त्री॰) हिंसित कर्म, जोंकके साथ तकलीफ दिये जानका करना।

आकुण्ठन (सं॰ क्ली॰) १ गुठला जानेकी हालत, कुन्द पड़नेकी बात। २ लज्जा, शर्म।

आकुण्ठित (सं॰ त्रि॰) १ कुन्द, गुठला, जो चलता न हो। २ लज्जित, शर्मिन्दा।

आकुर्वती (सं॰ स्त्री॰) पर्वत विशेष। (रामायण)

आकुल (सं॰ त्रि॰) आ-कुल-क। १ व्याप्त, घबराया हुआ। २ अभिव्याप्त, बेतरतीब। ३ विह्वल व्याधिसे कातर। ४ प्रतिकूल, मुखालिफ। ५ व्याप्त मामूर, भरा हुआ। व्यग्र, निराकुल पर्याकुल व्याकुल और समाकुल शब्द भी उपरोक्त अर्थमें आ सकते हैं।

(क्ली॰) ६ निवासित स्थान, जिस जगहमें लोग रहें।

(पु॰) ७ पद्मभेद, किसी किस्मका पोधा।

आकुलकृत् (सं॰ स्त्री॰) अजकर्णा अजकर्णका।

आकुलता (सं॰ स्त्री॰) आकुलत्व देखो।

आकुलत्व (सं॰ क्ली॰) १ समूह, समुदाय, अम्बार ढेर। २ व्याकुलता, मोह, घबराहट।

आकुला (सं॰ स्त्री॰) तलापत्र गोधूमादि, गर्म और कच्चा गेहूं वगैरह। तप्त पत्र अपक्व गोधूमको आकुला कहते हैं। यह गुरु रूप मधुर और बल कारी होती है। (राजनिघण्ट)

आकुलाकुल (सं॰ त्रि॰) आकुल प्रकारे द्विर्भाव। अत्यन्त आकुल निहायत परेशान।

आकुलि (सं॰ पु॰) आ कुल इन्। १ असुर पुरोहित विशेष। २ व्याकुलत्व, परेशानी।

आकुलित (सं॰ त्रि॰) आ-कुल-क्त। १ आकुली-भूत, घबराया हुआ। २ दुःख, परेशान्। ३ दुःखित, आपत्तका मुसीबतमें पड़ा हुआ।

आकुलीकृत (सं॰ त्रि॰) अनाकुलं आकुलं कृतं आकुल अभूततद्भावे च्वि कृ कर्मणि क्त। व्याकुलता-प्रापित, जो परेशान् किया गया हो।

आकुलीभूत (सं॰ त्रि॰) अनाकुलं अपयमाकुल भूतम्, आकुल च्वि भू-क्त। आप ही आकुल होनेवाला, जो खुद-ब-खुद घबरा गया हो।

आकुलेन्द्रिय (सं॰ त्रि॰) क्लान्तचित्त दिलमें घबराया हुआ।

आकुष्ट (सं॰ त्रि॰) निष्कासित, निकाला हुआ।

आकूचित (सं॰ त्रि॰) आ-कूच-क्त। ईषत् सङ्कुचित, कुछ सिकुड़ा हुआ।

आकूत (सं॰ क्ली॰) आ-कू भावे क्त। १ आशय, मानी, मतलब इरादा। २ अभिप्राय, इच्छा, ख्वाहिश।

आकूति (सं॰ स्त्री॰) आ-कू भावे क्तिन्। १ अभिप्राय, मतलब। संज्ञायां क्तिन्। २ स्वायम्भुव मनुद्वारा निज शतरूपा नामको पत्नीसे उत्पादित कन्याविशेष। भाग-वतके तृतीय स्कन्धमें आकूतिको उत्पत्तिको कथा यों लिखी है,—ब्रह्माका शरीर पहले दो भागोंमें विभक्त हुआ था। उसका एक भाग पुरुष और दूसरा स्त्री बना। उसमें पुरुषका स्वायम्भुव मनु और स्त्रीका नाम शतरूपा पड़ा था। स्वायम्भुव मनुने शतरूपाके गर्भसे पांच सन्तान उत्पन्न किये। उनमें दो पुत्र और तीन कन्या थीं। पुत्रोंके प्रियव्रत एवं उत्तानपाद और कन्याओंके नाम आकूति, देवहूति और प्रसूति रखे। पीछे स्वायम्भुव मनुने जो आकूतिका विवाह रुचिके साथ कर दिया।

आकूतिप्र (वै॰ त्रि) अपनी इच्छा पूर्ण करनेवाला, जो अपनी ख्वाहिशको पूरा करता हो। (अथर्व ३।२९।७)

आकूती (हिं॰) आकूति देखो।

आकृत (वै॰ त्रि॰) १ निकट आनीत नजदीक लाया हुआ। २ समीपस्थ, पास रहनेवाला।

आकृति (सं॰ स्त्री॰) आ-क्रियते अनया क्रियते व्यज्यते जातिरनया,

आ-कृ करणे क्तिन्। १ शरीर, जिस्म। २ आकार, शक्ल। ३ लक्षण, निशान्। ४ व्यवहार, चालचलन। ५ जाति, कौम। ६ छन्दोविशेष। इसमें बायीस-बायीस अक्षरके चार पद होते हैं। ७ अवयव संस्थान विशेष, बनावट। तर्कशास्त्रके मतमें जातिलिङ्गको आकृति कहते हैं। जिससे जाति और जातिलिङ्ग जाना जाता, वही आकृति है। जैसे गौमें गोत्वादि जाति एवं शास्नादि संस्थानविशेष लिङ्ग है। यह जीव तथा उसके अवयवोंके नियत एवं व्यूह (तर्क)से अनेक प्रकारकी होती है। (वात्स्यायनभाष्य २।२।७०)

आकृतिगण (सं० पु०) आकृतौ आकारे प्रसिद्धो गणः, शाक०-तत्। आदर्शसूची, नमूनेकी फ़ेहरिस्त। यह व्याकरणके नियम विशेषसे सम्बन्ध रखता है। इसमें प्रत्येक शब्द नहीं, केवल आदर्श प्रकाशित होता है।

आकृतिच्छत्रा (सं० स्त्री०) आकृतिं छादयति, छद स्वार्थे णिच्, ष्ट्रन् ह्रस्वः णिच् लोपः टाप्, ३-तत्। १ जलौषधि, पाना। २ घोषातकी लता, लटजीरा।

आकृतिमत् (सं० त्रि०) आकारयुक्त, सूरतवाला।

आकृष्ट (सं० त्रि०) आ-कृष-क्त। आकर्षणयुक्त, खींचा हुआ।

आकृष्टमानस (सं० त्रि०) भ्रान्तचित्त, दिलमें घबराया हुआ।

आकृष्टवत् (सं० त्रि०) १ आकर्षक, खींचनेवाला। २ सम्मोहक, फरेफ़्ता करनेवाला।

आकृष्टि (सं० स्त्री०) आ-कृष-क्तिन्। आकर्षण, कशिश, खेंचतान।

आकृष्टिमन्त्र (सं० पु०) आकर्षणका मन्त्र, दूसरे शख्सको खींच लानेवाला अफ़सून्।

आकृष्य (सं० अव्य०) आकर्षण करके, खींचके।

आकृष्यमाण (सं० त्रि०) आकर्षण किया जानेवाला, जो खींचा जा रहा हो।

आके (वै० त्रि०) आङ् क्रामते, (बलाकादयश्च। उण् ३।१४) आके प्रत्यये धातोर्लोपश्च निपात्यते। १ अर्वाक्‌गन्ता, पीछे चलनेवाला। (अव्य०) २ अन्तिक, निकट, नज़दीक, पास, पड़ोसमें।

आकेकरा (वै० स्त्री०) आके निकटे करो यस्याः। १ वक्राचि, कैंची आंख। २ निकटकी दृष्टि, पासकी नज़र। नेत्रका विशेषण बननेसे यह शब्द क्लीबलिङ्ग होता है।

आकेनिप (वै० त्रि०) आके निकटे निपतति, आ-के-नि-पत-ड। १ निकट पतित होनेवाला, निकट-गामी, पाससे गुज़रनेवाला, जो नज़दीक गिर रहा हो। के आकनि पन्ति अध्यात्मध्याने पतन्त इत्यर्थः। २ मेधावी, अक्लमन्द।

आकौशल (सं० क्ली०) अकुशलस्य भावः, अकुशल-अण्, द्विपदवृद्धिः पूर्वस्य वा। अपाटव, अपटुता, नावाक़िफ़ी, बेहुनरपन।

आक्न (सं० त्रि०) आनमित, प्रवण, ख़मीदा, ख़मदार, मुड़ा हुआ।

आक्रन्द (सं० पु०) आ-क्रन्द-घञ्। १ चीत्कार-पूर्वक रोदन, चिल्लाहटकी रुलायी। २ आह्वान, पुकार, बुलावा। ३ शब्द, आवाज़। आक्रन्द्यते आह्वयते, आ-क्रन्द कर्मणि घञ्। ४ मित्र, दोस्त। ५ भ्राता, भायी। आक्रन्द्यते परस्परं स्पर्धया आह्वयते यत्र, आधारे घञ्। ६ दारुण युद्ध, घमासान लड़ायी। ७ दुःखियोंका रोदनस्थान, अफ़सुर्दोंके रोनेकी जगह। आक्रन्दति अच्। ८ समीपस्थ राजाके पीछेका नरेश। ९ युद्धध्वनि, ललकार। १० राजा। ११ प्राबल्य, ज़ोर। १२ बलापहारी, ग़ासिब, दग़ा बेठनेवाला शख्स। १३ ग्रहबल। युद्धकी जिस अवस्थामें एक ग्रह दूसरेसे बलवान् निकलता, उसे आक्रन्द कहते हैं।

आक्रन्दन (सं० क्ली०) आ-क्रन्द-ल्युट्। १ चीत्कार-पूर्वक रोदन, चिल्लाहटकी रुलायी। २ आह्वान, पुकार।

आक्रन्दिक (सं० त्रि०) आक्रन्दे रोदनस्थाने गच्छति, आक्रन्द-टक् ठञ् वा। दुःखोके रोदनस्थानको जाने-वाला, जो अफ़सुर्दोंके रोनेकी जगहको जाता हो। (स्त्री०) आक्रन्दिका; रोदनस्थानगन्त्री स्त्री।

आक्रन्दित (सं० क्ली०) आ-क्रन्द भावे क्त। १ क्रन्दन, चिल्लाहट। २ रोदन, रुलायी। (त्रि०) ३ क्रन्दन-

करनेवाला, जो चिल्ला रहा हो। ३ आमन्त्रित, प्रार्थित, बुलाया हुआ।

आक्रन्दिन् (सं० त्रि०) आक्रन्दति, आ-क्रन्द णिनि। १ रोदनपूर्वक आह्वानकर्ता, रो-रोके बुलानेवाला। २ अत्यन्त करनेवाला, जो चीख या चिल्ला रहा हो।

आक्रम (सं० पु०) आ-क्रम घञ् न वृद्धि। १ समीप गमन, उपस्थिति, प्राप्ति, रसाई, शामिल, पहुंच। २ अवस्कन्द, आघात, हमला, धावा। ३ अतिभारारोपण, ज्यादा लादनेकी बात। ४ शक्ति, बल, ताकत, जोर।

आक्रमण (सं० क्ली०) आ-क्रम ल्युट्। १ अवस्कन्द, हमला। २ दमन, निग्रह, दबाव। ३ प्रसारण, फैलाव। ४ अतिगमन, बढ़ावढ़ी। आक्रम्यते पर-लोकोऽनेन करणे ल्युट्। ५ परलोकप्राप्तिसाधन क्रियाकर्मादि। आक्रमति अभिभवति शत्रून् आ-क्रम अच्। ६ अङ्ग समाज। (वै० त्रि०) ७ निकट उपस्थित होनेवाला, जो नज़दीक आ रहा हो।

आक्रमणीय (सं० त्रि०) १ निकट उपस्थित होने योग्य जिसके पास जायें। २ आघात पाने योग्य, जिसपर हमला पड़े। ३ आरोहण किया जानेवाला जो दबाने लायक हो।

आक्रमित (सं० त्रि०) आघात किया हुआ, जिस पर हमला पड़ा हो।

आक्रमिता (सं० स्त्री०) प्रौढ़ा नायिकाभेद। यह अपने नायकको सर्वप्रकार वश कर लेती है।

आक्रम्य (सं० अव्य०) आक्रमण करके, हमला मारकर। (त्रि०) आक्रमणीय देखो।

आक्रान्त (सं० त्रि०) आ-क्रम क्त। १ अधिष्ठित, नज़दीक पहुंचा हुआ। २ पराभूत, हारा हुआ। ३ प्राप्त पाया हुआ। ४ अधिकृत, जो कब्ज़ेमें आ चुका हो। ५ अवस्कन्दित, हमला खाये हुआ। ६ अवज्ञात, जो नीचा देख चुका हो। ७ परि-व्याप्त, घिरा हुआ। ८ विह्वल, घबराया हुआ। ९ पीड़ित, तकलीफ पाये हुआ। १० व्याप्त, भरा हुआ।

आक्रान्तमति (सं० त्रि०) १ मनसा पराभूत, दिलसे हारा हुआ। २ अवगाढ़ हृदय, जो दिलपर दबा या चुका हो।

आक्रान्ति (सं० स्त्री०) आ-क्रम क्तिन्। १ आक्रमण, हमला। २ उत्थान, चढ़ायी। ३ पराभव, हार। ४ बल, ताकत।

आक्रय (वै० पु०) आपणिक, दुकानदार।

आक्रामक (सं० त्रि०) उपद्रवी, गनीम, चढ़ आनेवाला। (स्त्री०) आक्रामिका।

आक्रीड़ (सं० पु०) आक्रीडत्यत्र आ-क्रीड़ घञ्। १ क्रीड़ास्थान, खेलकी जगह। २ उद्यानादि, बाग बगीचा। [illegible] (अमर) ३ क्रीड़ा, खिलकूद। ४ अरण्यामके किसी पुत्रका नाम। (त्रि०) आक्रीड़ति, आ-क्रीड़ कर्तरि अच्। ५ विहारशील, खिलाड़ी।

आक्रीड़न (सं० क्ली०) विहार, विलास, खेल, तमाशा।

आक्रीड़िन् (सं० त्रि०) आ-क्रीड़ णिनि। क्रीड़ाशील, खिलाड़ी। (स्त्री०) आक्रीड़िनी।

आक्रुष्ट (सं० त्रि०) आक्रुश्यते स्म आ-क्रुश-क्त। १ निन्दित, तिरस्कृत, झिड़का हुआ। २ भर्त्सित, चिल्लाया हुआ। ३ अपवादित, गाली खाये हुआ। ४ शप्त, कोसा हुआ। (क्ली०) ५ आह्वान, पुकार।

आक्रोश (सं० पु०) आ क्रुश-घञ्। १ शाप, बद दुआ। २ निन्दा, धिक्कारत। ३ अपवाद, गाली। ४ आह्वान, पुकार।

आक्रोशक (सं० त्रि०) आक्रोशति आ क्रुश-ण्वुल्। आक्रोशकर्ता, कोसनेवाला।

आक्रोशन (सं० क्ली०) आक्रोश देखो।

आक्रोशनीय (सं० त्रि०) आक्रोश देने योग्य, कोसने काबिल।

आक्रोशपरिषह (सं० पु०) आक्रोशका सहन, गालीको बरदाश्त। जैन-मतमें २२ परिषह (दुःखोंका सहन) मुनिके लिये धारणीय बतलाया है। उनमें १२ वां परिषह आक्रोश परिषह है। मोक्ष मोहनीय कर्मके उदयसे मिथ्यादृष्टि आर्य अथवा दुष्ट, पापाचारी, उन्मत्त, गर्वित प्रभृति मनुष्यों द्वारा

कहे गये क्रोधरूपी अग्निको प्रज्वलित करने और हृदयमें शूलके समान लगनेवाले कठोर वचनोंको यद्यपि मुनिलोग सुनते हैं, तो भी परिणाममें कलुषित नहीं होते। वे यह सोचकर क्षमाभाव धारण करते हैं कि,—'इनके अज्ञान है, हमारे देखनेसे इनके दुःख उपजा है। इसलिये ये विचारे ऐसे वचन कह रहे हैं। इनका कुछ भी अपराध नहीं, हमारे ही अशुभ-कर्मका उदय है।'

आक्रोशित (सं० त्रि०) शापित, कोसा हुआ।

आक्रोशितव्य, आक्रोशनीय देखो।

आक्रोश्य, आक्रोशनीय देखो।

आक्रोष्टृ (सं० पु०) १ आक्रोशकर्ता, कोसनेवाला। २ आह्वानकर्ता, पुकारनेवाला।

आक्लान्त (सं० त्रि०) लगा, भरा या लिपटा हुआ।

आक्लिन्न (सं० त्रि०) १ आर्द्र, तर, जो सूखा न हो। २ कोमल, मुलायम, जो सख़्त न हो।

आक्लेद (सं० पु०) आ-क्लिद-घञ्। आर्द्रीभाव, तरी, छिडकाव।

आक्लेदिभाव (सं० पु०) आर्द्रकारित्वके गुणका हेतु।

आक्षद्यूतिक (सं० क्ली०) अक्षद्यूतेन निर्वृत्तम्, ठक्। द्यूत खेलनेमें उत्पन्न हुआ वैर, जुवेका झगडा।

आक्षपण (सं० क्ली०) उपवास, अनाहार, फ़ाक़ा-कशी।

आक्षपाटिक (सं० पु०) अक्षपाटे क्रीड़ास्थाने विचार-स्थाने वा नियुक्तः। १ अक्षक्रीड़ाध्यक्ष, जुवेके खेलका मालिक। २ विचाराध्यक्ष, मुनसिफ़। ३ प्राड्विवाक, राजाका प्रतिनिधि विचारक।

आक्षपाद (सं० त्रि०) अक्षपादस्य गौतमस्येदम्, अक्षपाद-अण्। १ गौतम मुनिका मत। अक्षपादे-नोक्तम्, अण्। २ गौतम मुनिका बनाया हुआ शास्त्र, गौतमसूत्र। यह शास्त्र पांच अध्यायमें समाप्त हुआ है। इसमें प्रमाण प्रमेय आदि षोड़श तत्त्व वर्णित हैं। अक्षपाद प्रणीतं वेत्ति, अण्। ३ न्यायशास्त्रज्ञ, नैयायिक, मन्तिक़ी, मन्तिक़दान्।

आक्षाण (वै० त्रि०) व्याप्यमान, फैला हुआ। 'आक्षाणि शूर वज्रिव।' ऋक् १०।२२।११।

आक्षार (सं० पु०) आ-क्षर-णिच्-घञ्, णिच् लोपः। पुरुषपर अगम्यागमन अथवा स्त्रीपर अगम्य गमनका दोषारोप, तोहमत, इल्ज़ाम।

आक्षारण (सं० क्ली०) आक्षार देखो।

(स्त्री०) आक्षारणा।

आक्षारित (सं० त्रि०) आ-क्षर-णिच्-क्त-इट, णिच् लोपः। १ अगम्य स्त्री-पुरुष विषयक अपवाद द्वारा दूषित, छिनाला करनेका मुलज़िम। २ कलङ्कित, झूठ-मूठका मुलज़िम। ३ अपराधी, गुनहगार। ४ निन्दित, गाली खाये हुआ।

आक्षिक (सं० त्रि०) अक्षैः दीव्यति जयति जितं वा, अक्ष-ठक्। १ द्यूतसम्बन्धीय, जुवेके मुताल्लिक़। २ अक्ष द्वारा जीतनेवाला, जो पासेसे जीत लेता हो। ३ अक्ष द्वारा जित, पासेसे जीता हुआ। (क्ली०) द्यूतऋण, जुवेमें खोया हुआ रुपया। (पु०) ४ आच्छुकवृक्ष, आलका पेड़।

आक्षिकपण (सं० पु०) ग्लह, बाज़ी, दाव, होड।

आक्षिकशीधु (सं० पु०) विभीतक और गुड़से बना धातकीपुष्पका मद्य, किसी क़िस्मकी शराब। यह पाण्डुरोगघ्न, बल्य, संग्राहक, लघु, कषाय, मधुर, शीधु, पित्तघ्न और असृक्प्रसादन होता है। (सुश्रुत)

आक्षिकी (सं० स्त्री०) विभीतक-त्वक् और शालि-तण्डुलसे बनी हुई सुरा, किसी क़िस्मकी शराब। यह पाण्डु, शोफ, अर्श, पित्त, अस्र, कफ तथा कुष्टको दूर करती, रुक्ष, दीपन, रेचन एवं लघु होती और कुछ वात बढाती है। (मदनपाल) कोई-कोई तिनिशकी सुराको भी आक्षिकी कहते हैं।

आक्षित् (सं० त्रि०) आ-क्षि-क्विप्-तुक्। आवर्तमान, वापिस आनेवाला।

आक्षिपत् (सं० त्रि०) १ फेंकने, मारने या उछालने-वाला। २ अपशब्द कहने या गाली देनेवाला। ३ लज्जित करने या शरमानेवाला। (स्त्री०) आक्षि-पती, आक्षिपन्ती।

आक्षिप्त (सं० त्रि०) आ-क्षिप-क्त। १ फेंका या उछाला हुआ। २ गिराया या दूर किया हुआ। ३ उभारा हुआ। ४ आकृष्ट, लाया या पहुंचाया

आखुभुज् (सं० पु०) आखुं भुङ्क्ते, आखु-भुज-क्विप्। १ मूषिकभक्षक बिड़ाल, चूहे खानेवाला बिलाव। २ रक्तापामार्ग, लाल लटजीरा।

आखुमांस (सं० क्ली०) मूषकमांस, चूहेका गोश्त।

आखुरथ (सं० पु०) मूषिकवाहन, चूहेकी गाडीपर चढ़नेवाले गणेश।

आखुविष (सं० पु०) दारमोच, किसी विषखका जहर।

आखुविषजित् (सं० पु०) सप्तपर्णवृक्ष।

आखुविषहा (सं० स्त्री०) आखोः मूषिकस्य विषं हन्ति, आखु-विष-हन्-ड-टाप्। १ देवदारुवृक्ष। २ पीतदेवदाली लता।

आखुविषापहा, आखुविषहा देखो।

आखुश्रुति (सं० स्त्री०) क्षुद्र-मूषिककर्णी, छोटी मूसाकानी।

आखूत्कर (सं० पु०) आखुभिरुत्कीर्यते, आखु-उद्-कॄ क्षेपे कर्मणि अप्। मूषिककी निकाली हुयी मट्टी।

आखूत्थ (सं० त्रि०) आखुभ्य उत्तिष्ठति, आखु-उद्-स्था-क। १ आखुसे उत्थित, आखूद्भव, चूहेसे निकला हुआ। (पु०) २ आखुका उत्थान, चूहोंका निकलना।

आखेट (सं० पु०) आखेटन्ति बिभेति प्राणिनो ऽस्मात्, आ-खिट अपादाने घञ्। १ मृगया, शिकार, अहेर। २ भय, खौफ।

आखेटक (सं० क्ली०) आखेट स्वार्थे कन्। १ मृगया, शिकार। कर्तरि ण्वुल्। २ मृगया जन्तु, शिकारी जानवर। (त्रि०) ३ मृगयु, शिकारी। ४ भयङ्कर, खूंखार।

आखेटशीर्षक (सं० क्ली०) आखेटते बिभेति, आ-खिट् कर्तरि अच्; आखेटं शीर्षं यत्र वा कप्। गह्वर, खानिक, कान, सुरङ्ग।

आखेटिक (सं० पु०) आखेटे कुशलम्, ठक्। १ मृगयाकुशल कुक्कुर, शिकारी कुत्ता। (त्रि०) २ मृगयु, शिकारी। ३ भयङ्कर, खौफनाक।

आखेटी (सं० त्रि०) मृगयु, शिकारी।

आखोट (सं० पु०) आखोटति खञ्जति अतिराशि-त्वात्, आ-खुट-अच्। अक्षोटवृक्ष, अखरोटका पेड़। अखरोट देखो।

आखोड, अखरोट देखो।

आखोर (फा० पु०) १ उच्छिष्ट तृण, जो चारा जानवर खाकर छोड़ देता हो। २ अम्बार, मल, रद्दी, कूड़ा। ३ निष्प्रयोजन द्रव्य, निकम्मी चीज़। (वि०) ४ निरर्थक, बेफायदः। ५ असार, फोक। ६ मलिन, गन्दा।

आख्यम् (सं० पु०) प्रजापति, दुनियाका मालिक।

आख्या (सं० स्त्री०) आ-ख्या-अङ्, ख्या इत्याकार लोपः टाप्। संज्ञा, रूढ़, वाचकशब्द, इस्म, लकब, तखल्लुस, नाम।

आख्यात (सं० त्रि०) आख्यायते स्म, आ-ख्या कर्मणि क्त। १ कथित, कहा हुआ। 'ग्रामे भावितबुद्धिर्ये ख्यापित-माख्यातमभिहितं लपितम्।' (अमर) २ पठित, पढ़ा हुआ। ३ प्रकाशित, खोला हुआ। ४ साधा हुआ, गरदाना गया। (क्ली०) ५ क्रियापद, फेल।

आख्यातव्य (सं० त्रि०) १ कथनयोग्य, कहा जाने-वाला। २ प्रकाशनयोग्य, ज़ाहिर करने लायक।

आख्याता, आख्यातृ देखो।

आख्याति (सं० स्त्री०) आ-ख्या भावे क्तिन्। १ कथन, बात। कर्मणि क्तिन्। २ कीर्ति, शोहरत। ३ नाम, इस्म, लकब।

आख्यातृ (सं० पु०) आ सम्यक् ख्याति, आ-ख्या-तृच्। उपदेशक, बोलने या कहनेवाला।

आख्यान (सं० क्ली०) आ-ख्या भावे ल्युट्। विभाषा-ख्यानपरिप्रश्नयोरिञ् च। पा ३।३।११०। १ कथन, बयान। २ वक्तृता, बोली। ३ कथा, क़िस्सा, कहानी। ४ उपन्यास विशेष। इसमें आख्याता ही अपने मुखसे सब बात कहता है, पात्रके बोलनेका कोयी काम नहीं। ५ प्रसिद्ध आख्यान-संज्ञक सर्गयुक्त आर्ष सौपर्ण मैत्रावरुण्यादि।

"आख्यानं श्रावयेत् पित्र्ये धर्मशास्त्राणि चैव हि।
आख्यानानीतिहासांश्च पुराणानि खिलानि च॥" (मनु ३।२३२)
'आख्यानानि सौपर्णमैत्रावरुणादीनि।' (कुल्लूक)

भेदादि उपाय, कानूनी तहसील। ५ शास्त्रका परिश्रम, इल्मकी मेहनत। 'प्रमाणुरूपयाशास्त्रपरिश्रमः।' (मल्लिनाथ) व्यवहारमातृकाकार एवं वाचस्पति मिश्रने लिखा, कि आगम शब्दका अर्थ क्रयादि है। ६ तत्त्व आवेदक शास्त्र, जड़ बतानेवाला इल्म। ७ शास्त्रमात्र, मजहबी रिसाला। ८ वेद। ९ मन्त्र। १० तन्त्रशास्त्र।

"आगत शिववक्त्रात्तु गतञ्च गिरिजामुखम्।
मतञ्च वासुदेवस्य तस्मादागम उच्यते॥"
पदार्थादर्शे राघवभट्टधृत (११ अः)।

११ व्याकरणोक्त प्रकृति वा प्रत्ययका अनुपघाती अट् इट् इत्यादि शब्दविशेष। १२ उपस्थिति, पहुंच। १३ योग, जोड़। १४ मार्ग, राह। १५ नदीमुख, दरयाका मुंहाना। १६ सम्पत्तिकी वृद्धि, जायदादकी बढ़ती। १७ नीतिशास्त्र। (त्रि०) १८ निकट जानेवाला, जो पास पहुंच रहा हो।

आगमजानी (हिं०) आगमज्ञानी देखो।

आगमज्ञानी (सं० त्रि०) आगम जान लेनेवाला, जो होनहारको समझ जाता हो।

आगमन (सं० क्लो०) आ गम भावे ल्युट्। १ आगति, आमद, अवाई।

"बहणोदय सकुचे कुमुद उडगण ज्योति मलीन।
तिमि तुम्हार आगमन सुनि भये नृपति बलहीन॥" (तुलसी)

२ प्रत्यावर्तन, वापसी। ३ उत्पत्ति, निकास।

आगमनकारण (सं० क्लो०) आगमका हेतु, आनेका सबब।

आगमनतस् (सं० अव्य०) आगमके कारण, आनेसे, आ पहुंचनेके सबब।

आगमानपेक्ष (सं० त्रि०) प्रमाणपत्रका भरोसा न रखनेवाला, जो सनदका मुहताज न हो।

आगमनीत (सं० त्रि०) पठित, परीक्षित, पढ़ा या जांचा हुआ।

आगमरहित (सं० त्रि०) १ प्रमाणपत्र न रखनेवाला, जिसके पास सनद न रहे। २ शास्त्रशून्य, मज़हबी रसालेसे खाली।

आगमवक्ता (सं० पु०) १ शिव। २ ज्योतिषी, भविष्य कहनेवाला, जो होनहारको बता देता हो।

आगमवत् (सं० त्रि०) आगमोऽस्त्यस्य, आगम अस्त्यर्थे मतुप्, मस्य वत्वम्। १ आगमयुक्त, आ पहुंचनेवाला। (अव्य०) २ वेदकी तरह।

आगमवाणी (सं० स्त्री०) भविष्यवाणी, पेशीनगोयी।

आगमविद्या (सं० स्त्री०) वेदविद्या।

आगमवृद्ध (सं० त्रि०) आगमेन शास्त्रालोचनया वृद्धः प्रवीणः, ३-तत्। शास्त्रालोचना द्वारा मार्जित-बुद्धि, जो मज़हबी रिसाले पढ़-पढ़के होशियार बन गया हो।

आगमवेत्ता (सं० त्रि०) आगमं वेत्ति, आगम-विद्-तृच्, ६-तत्। आगमज्ञ, होनहार जाननेवाला। (स्त्री०) आगमवेत्री।

आगमवेदिन् (सं० त्रि०) आगम वेत्ति, आगम-विद्-णिनि, ६-तत्। १ आगम-वेत्ता, होनहार जाननेवाला। (पु०) २ शङ्कराचार्यके परमगुरु गौड़पादाचार्य।

आगमसापेक्ष (सं० त्रि०) प्रमाणपत्रयुक्त, मनदयाफ्ता।

आगमसोची (हिं० त्रि०) आगमका ध्यान रखनेवाला, जो होनहारका ख़याल रखता हो।

आगमापायिन् (सं० त्रि०) आगमश्च अपायश्च तौ स्तोऽस्य, इनि। उत्पत्ति एवं विनाशशील, पैदा होने और मर जानेवाला।

आगमापायी, आगमापायिन् देखो।

आगमावर्ता (सं० स्त्री०) आगम-मात्रेण प्राप्तिमात्रेण आवर्त्तते कण्डूयनमस्याः, आगम-आ-वृत अपादाने घञ्। १ वृश्चिकाली क्षुप, बढ़न्ता। २ क्षुद्रमेषशृङ्गी, छोटी मेढ़ासींगी।

आगमिक (सं० त्रि०) आगमादागतम् ठञ्। आगमप्राप्त, आया हुआ, आ पहुंचनेवाला।

आगमित (सं० त्रि०) आ-गम स्वार्थे णिच्-क्त इट्, णिच् लोपः। १ अधीत, पठित, पढ़ा हुआ। २ ज्ञात, समझा हुआ। ३ यापित, पहुंचाया हुआ।

आगमिन्, आगामिन् (सं० त्रि०) आ गम-इनि-णित्। १ भावी, आने या होनेवाला। २ सामुद्रिक शास्त्रवेत्ता, हाथकी रेखा देखनेवाला। ३ भविष्यवक्ता, पेशीनगो।

आगमिष्ट (वै० त्रि०) स्वर्ग वा मोक्षतासे उपस्थित होनेवाला, जो भूमीसे या अन्य जगह आ रहा हो।

आगमी, आगमिन् देखो।

आगम्य (सं० त्रि०) १ सुलभ, सुगम, सुगमनीय, सहज दखल, पहुंचमें हासिल। (अव्य०) २ उपस्थित होके, पहुंच कर।

आगर (सं० पु०) आगरति सिञ्चति अर्थं अर्थीया प्रतिपादन, आ-गृ सेचने आधारे अप। १ अमावस्या। अर्थाभावमें अमावस्याको भाव वृद्धि होनेसे 'आगर' कहते हैं। (हिं) २ आकर, खान, ढेर, खजाना। ३ नमक बनानेका गड्ढा। ४ अर्गल, ब्योंड़ा। ५ गृह, घर। ६ छप्पर। (वि०) ७ उत्तम बढ़िया। ८ कुशल, होशियार।

आगरवाव (हिं० पु०) कण्ठमाला, गलेकी एक बीमारी। इसमें गलेमें छोटी छोटी फुन्सी निकल आती है।

आगरा—१ युक्तप्रदेशका एक जिला। यह अपना अन्दका अपर्याप्त होता और अक्षा° २६° ४४´ १०´´ तथा २७° २४´ उ० एवं द्राघि० ७७° २८´ तथा ७८° ५´ ४५´´ पू०के मध्य पड़ता है। इसके उत्तर मथुरा एवं एटा, पूर्व मैनपुरी तथा इटावा, दक्षिण धौलपुर एवं ग्वालियर और पश्चिम भरतपुर है। २ अपने जिलेकी तहसील। ३ अपने जिलेका शहर।

आगरा नगर यमुना नदीके दक्षिण तटपर अवस्थित है। यहां बहुत दिनतक मुसलमान राजाओंकी राजधानी रही। अकबरसे पूर्व प्रथम लोदी-वंशीय मुसलमान सम्राटोंने यहां अवस्थान किया था। इब्राहीम लोदी बाबरसे युद्धमें पराजित हुए। इसके एक वर्ष बाद फतेहपुर सीकरीमें बाबरने राजपूत-सैन्यको पराभूत किया। इसके पीछेसे आगरेमें राजधानी संस्थापित हुई थी। बाबरके परलोक जानेपर उनके पुत्र हुमायूं शेरशाह द्वारा पराजित एवं दूरीभूत किये गये। अन्तमें हुमायूंके पुत्र अकबरने शत्रुओंको युद्धमें हरा और दिल्लीसे राजधानी उठा आगरेमें संस्थापित की। अकबरसे शाहजहां तक इस नगरमें अनेक दुर्ग और मनोहर हर्म्य बने थे। सन् १६५८ ई०को औरङ्गजेब दिल्लीमें अवस्थिति करने लगे। उसी समयसे आगरे नगरका पतन आरम्भ हुआ। १७८५ ई०को यह सेंधियाके हाथ लगा था। परिशेषमें १८०३ ई०को लार्ड लेकने यह स्थान अंगरेजोंके अधिकारभुक्त किया।

आगरेकी अट्टालिका सर्वत्र प्रसिद्ध है। यहां गोरमें अपने आपरके स्मरणार्थ जहांगीर महल नामक एक अवर निर्माण करवायी थी। मोती मसजिद, जामा मसजिद, खास महल, ताजमहल प्रभृति अपूर्व स्थान शाह जहांके समयमें बनाये गये। जामामसजिद अर्थात् हजरत मसजिद, श्वेत और रक्तवर्ण प्रस्तरसे बनी है। शाहजहांकी कन्या जहांनाराके स्मरणार्थ यह निर्माण की गयी है। जहांनारा औरङ्गजेबकी भगिनी रहीं। औरङ्गजेबने उनको कारारुद्ध किया था। दिल्लीके निकट जमनाके ऊपर स्फटिककी तरह परिष्कार (साफ सुथरे) श्वेत पत्थरसे बनी है।

आगरेका प्रसिद्ध दुर्ग लाल पत्थरका है। इसकी चहारदीवारी ४० हाथ ऊंची और परिधि अनुमान डेढ़ मील है। किलेके भीतर अनेक मकान बने हैं। सबसे पहले दीवान ए आम है। इसे औरङ्गजेबने निर्माण कराया था। उसके बाद दीवान, खास, दीवान-खासके बाद खास-महल और खासमहलके दक्षिण जहांगीर महल है। यह अट्टालिका सुन्दर श्वेत प्रस्तरसे बनी है। मोतीमसजिद दीवान-आमके उत्तर है। प्रवाद है—एकबार सम्राट् मानसिंहपर खफा हुये थे। इसलिये मानसिंह किलेके ऊपरसे घोड़ा फंदा नीचे कूद पड़े। नीचे आकर घोड़ेने तत्पश्चात् प्राणत्याग किया था। मानसिंहके इस वीरत्वके स्मरणार्थ अद्यावधि किलेके पास पत्थरके घोड़ेका सिर भूमीमें गड़ा है। अब किलेके पास रेलका ष्टेशन भी बन गया है।

युक्तप्रदेश या केवल भारतवर्ष ही नहीं, ताज-महल भुवन विख्यात है। पत्थरकी नक्काशी और मकान बनानेकी कारीगरोंकी बात उठाते समय ताजमहलका नाम आगे लेना पड़ता है। त्रिविध उद्यानके भीतर यह मनोहर भवन खड़ी है। इसके नीचेसे ऊपरतक श्वेत पत्थर लगा है। जितना समय

व्यतीत हुआ। किन्तु यह आज भी नयी देख पडती, मानो कलकी बनी है।

बाहरसे पहले कुछ ऊपर चढ़ने पर उद्यानका द्वार मिलता है। उसके बाद नीचे उतरनेपर बाग़की ज़मीन् है। सामने चौडी और पक्की राह निकली है। दोनों तरफ जलकी प्रणाली, बडे बडे पुरातन आमके पेड और फल-फलके नानाविध वृक्ष हैं। नन्दनवनके सदृश यह स्थान यत्नपूर्वक सजाया गया है। सामने ही ताजमहल है। पहले अनेक प्रशस्त चतुष्कोण पीठ श्वेत प्रस्तरसे बंधे हैं। इसकी चारो ओर कलकत्तेके किलेवाले मैदानके मान्यूमेण्ट जैसे चार उच्च स्तम्भ हैं। उनके भीतर ऊपर चढ़नेको पथ बना है। बीचमें ताजमहलका गुम्बज है। गुम्बजके नीचे दीवारमें बहुमूल्य रत्न जडे एवं कितने ही वेलबूंटे कटे हैं। गुम्बजके भीतर धीरे धीरे कोई बात कहनेसे उसी समय ऊपरकी ओर प्रतिध्वनि पर प्रतिध्वनि होती और सातबार वही बात सुन पड़ती है। मध्यस्थलमें उज्ज्वल श्वेत पत्थरकी क़ब्र बनी है। उसके किनारे किनारे पत्थरका ही कटहरा है। उपरकी क़ब्र असली नहीं है। सम्मुख द्वारकी बग़लसे नीचे उतरना पड़ता है। इसी जगह सम्राट् शाह-जहांके पास प्रिय-महिषी मुमताज-महलका क़ब्र है। सम्राट् प्रेयसीके प्रणयसिन्धुमें डूब और प्राणके साथ प्राण दे मानो साथ ही सो रहे हैं।

शाहजहांको प्रियतमा महिषी अर्जमन्द बानूके स्मरणार्थ ताजमहल निर्मित हुआ है। अर्ज-मन्दबानूका दूसरा नाम मुमताजमहल था। सन् १६२८ ई०को मुमताजकी मृत्यु हुई। उसके बाद ही यह मनोहर क़ब्र लोग निर्माण करने लगे। कहते हैं, कि बीस हज़ार कारीगरोंने बीस वर्ष तक कार्य चला ताजमहलको समाप्त किया था। मृत्युके बाद शाह-जहान् भी मुमताज रानीके पास ही गाड़े गये।

ताजमहल देखो।

तुला (रूई) और लवण आगरेका प्रधान वाणिज्य द्रव्य है। कहते हैं—यहां परशुराम अवतीर्ण हुये थे। गत सिपाही विद्रोहके समय आगरेके अंगरेजोंको बहुत कष्ट झेलना पड़ा। उसके बाद करनेल-ग्रेथेने विद्रोहियोंको दमन किया।

आगरो (हिं० पु०) लोनिया, नमक तैयार करनेवाला।

आगल (हिं० पु०) १ अर्गल, ब्योंड़ा। (वि०) २ अगला, आगे रहनेवाला। (क्रि० वि०) ३ आगे, सामने।

आगला, अगला देखो।

आगलित (सं० त्रि०) अवसन्न, म्लान, पझमुर्दा, मुरझाया हुआ।

आगवन (हिं० पु०) आगमन, आना।

आगवाह (हिं० पु०) धूम, आगको उडा ले जानेवाला धूआं।

आगविष्ठ (वै० त्रि०) निकट आगमन करनेवाला, जो नज़दीक आ रहा हो।

आगवीन (सं० त्रि०) गोः प्रत्यर्पण-पर्यन्तं यः कर्म करोति, आङ् पूर्वाद्गोः कर्मकरेऽर्थे ख प्रत्ययो निपात्यते। आगवीन। पा ५।२।१४। गृहस्थके घरसे छोड़ देनेपर प्रत्यर्पण पर्यन्त गोका काम करनेवाला, जो लोगोंके मकान्‌से चरागाहको रवाना करने पर मवेशीको देख-भाल रखता हो।

आगस् (सं० क्लो०) एति गच्छति दण्डदानात्, इण-असुन् धातोरागादेशश्च। अपराध, दण्ड, पाप, जुर्म, कुसूर, इज़ाब, सज़ा। 'पापापराधयोरागः।' (अमर)

आगस्कृत (सं० त्रि०) आगस्-कृ-क्त। १ अपराधी, मुजरिम। २ बाधित, प्रतिरुद्ध, खिजाया हुआ।

आगस्ती (सं० स्त्री०) अगस्त्यस्येयम्, अगस्त्य-अण्-ङीप् यलोपः। अगस्त्यकी दक्षिण दिक्।

आगस्तीय (सं० त्रि०) अगस्ताय हितम्, छण्, य लोपः। अगस्त्यका हितकारक, अगस्त्यको फायदा पहुंचानेवाला।

आगस्त्य (सं० त्रि०) अगस्त्यस्येदम्, अगस्त्य-यञ्, य लोपः। १ अगस्त्य मुनि सम्बन्धीय। २ दक्षिण दिक्का। (पु०) अगस्त्येरपत्यम्, गर्गादि यञ्। ३ अगस्त्यका अपत्य। अगस्त्य कण्वादि० यञ्। ४ अगस्त्यका गोत्रापत्य। (क्ली०) ५ वकपुष्प। (स्त्री०) आगस्ती।

आगाह (फा० वि०) १ विज्ञ, जानी, माहिर, जाननेवाला। (हिं० पु०) २ भविष्यद्विषय, आगे आनेवाला हाल।

आगाही (फा० स्त्री०) विज्ञता, इत्तिला, ख़बर।

आगि, आग देखो।

आगिल (हिं० वि०) १ अगला, आगे रहनेवाला। २ भविष्यत्, होनहार, आगे आनेवाला।

आगिला, [illegible] देखो।

आगियत (हिं० पु०) अग्निवर्त, आग बरसानेवाला बादल।

आगी, आग देखो।

आगुर् (वै० स्त्री०) आ-गुर-क्विप्। १ प्रतिज्ञा, अनुमति, रज़ामन्दी। २ प्रशंसा सम्बन्धीय घोषणा, फ़रयाद-तहसान्। पुरोहित इसे यज्ञीय संस्कारमें उच्चारण करता है।

आगुरण (सं० स्त्री०) आ-गुर ल्युट् पृषो० गुणा-भाव:। उद्यम, काम, काज।

आगुरव, [illegible] देखो।

आगू (सं० स्त्री०) आ सम्यग् गच्छति, आ गम-क्विप्, मलोप:। १ प्रतिज्ञा, कौल। '[illegible]' ([illegible]) (हिं०) आगे देखो।

आगूरण, आगुरण देखो।

आगूर्ण (सं० वि०) आ गुर गूर वा क्त, ईकार परतया तस्य न:। १ उद्यत, मुस्तैद, काम करनेवाला। (क्लो०) भावे क्त। २ उद्यम, कामकाज।

आगूर्त (वै०) आगूर्ण देखो।

आगूर्तिन् (वै० वि०) आगूर्तं अनेन, इष्टादि० इनि। उद्योगवान्, कामकाजी।

आगे (हिं० क्रि० वि०) १ अग्रभागमें, थोड़ी दूर। २ सम्मुख, सामने। ३ जीवित अवस्थामें, हाज़िर रहते। ४ इसके अनन्तर, फिर। ५ भविष्यत् समय, आयिन्दा। ६ पीछे, बाद। ७ पूर्व, क़ब्ल, पहले। ८ अधिक, ज्यादा। ९ क्रोड़पर, गोदमें।

आगौन (हिं०) [illegible] देखो।

आग्नापौष्ण (वै० वि०) अग्निश्च पूषा च द्वन्द्व आनङ्, अग्नापूषाणौ तौ देवतेऽस्य अण्, द्विपद वृद्धि: बाहु० नेत्। अग्नि एवं सूर्य देवसे सम्बन्ध रखनेवाला।

आग्नावैष्णव (वै० वि०) अग्निश्च विष्णुश्च द्वन्द्व आनङ्, अग्नाविष्णू तौ देवते अस्य अण् द्विपद वृद्धि:। अग्नि एवं विष्णु देव सम्बन्धीय।

आग्निक (सं० वि०) अग्नेरिदम्, बाहु० ठक्। अग्नि सम्बन्धी, आतशी।

आग्निदाशेय (सं० वि०) अग्निदशस्येदम्, अग्नि-दश शार्ङ्गरवी सख्यादि ढञ् द्विपद वृद्धि:। अग्नि-दशके समीपस्थ, अग्निदशके पासका।

आग्निपद (सं० वि०) अग्निपदे दीयते कार्यं वा, व्युष्टादि० अण्। १ अग्निस्थानमें देयमान। २ अग्नि-स्थानमें कर्तव्य।

आग्निमारुत (सं० वि०) अग्निश्च मरुतश्च द्वन्द्व आनङ्, अग्नामारुतौ तौ देवतेऽस्य, अण् द्विपदवृद्धि। इत्। १ अग्नि एवं मरुत देवसे सम्बन्ध रखनेवाला। (पु०) २ अगस्त्य मुनि। (क्लो०) ३ अग्नि एवं मरुत देवका स्तोत्र विशेष।

आग्निवारुण (सं० वि०) अग्निश्च वरुणश्च द्वन्द्व० ईत्, अग्नीवरुणौ सो देवते अस्य, अण् द्विपद वृद्धि: इत्। अग्नि एवं वरुण देव सम्बन्धीय।

आग्निवेश्य (सं० पु०) अग्निवेशस्य ऋषेरपत्यम्, अग्निवेश यञ्। अग्निवेशका अपत्य। (स्त्री०) ङीप् यलोप: आग्निवेशी।

आग्निशर्मि (सं० पु०-स्त्री०) अग्निशर्मणोऽपत्यम्, इञ् आद्यच वृद्धि:। अग्निशर्माका पुत्र या कन्यारूप अपत्य।

आग्निष्टोमिक (सं० पु०) अग्निष्टोमं क्रतुं वेत्ति तत्प्रतिपादक-ग्रन्थमधीते वा, ठक्। '[illegible]' (सिद्धान्तकौमुदी) १ अग्निष्टोम यज्ञज्ञात व्यक्ति। २ अग्निष्टोम यज्ञ प्रतिपादक ग्रन्थ पढ़नेवाला। अग्निष्टोम यज्ञस्य व्याख्यान: ग्रन्थ:, ठञ्। ३ अग्निष्टोम यज्ञके व्याख्यानका ग्रन्थ। (वि०) ४ अग्निष्टोम यज्ञ सम्बन्धीय। ५ अग्निष्टोम यज्ञमें मन्त्र पढ़नेवाला।

आग्निष्टोमिकी (सं० स्त्री०) अग्निष्टोमस्य दक्षिणा, ठक् ङीप्। अग्निष्टोम यज्ञकी दक्षिणा।

आग्निहोत्र (सं० वि०) अग्निहोत्रके उपयुक्त।

आग्नीध्र (सं० क्ली०) अग्निमिन्धे अग्नि-इन्ध किप्, अग्नीत् तस्य शरण ग्टहम् इति प्रत्यय। १ यजमान का स्थान। जहां यज्ञीय अग्नि प्रज्वलित किया जाता है। २ यज्ञीय अग्नि जलानेवालेका कार्य। (पु०) ३ सात्विक ऋत्विक अग्नि प्रज्वलित करनेवाला पुरोहित। ४ स्वायम्भुव मनुके एक पुत्र। ५ प्रियव्रत राजाके एक पुत्र। (वि० त्रि०) ६ अग्नीधु ऋत्विक सम्बन्धीय।

आग्नीध्रा (सं० स्त्री०) यज्ञीय अग्निकी रक्षा।

आग्नीध्रीय (सं० त्रि०) १ आग्नीध्र वा यज्ञीय अग्निस्थानसे सम्बन्ध रखनेवाला। (पु०) २ आग्नीध्र का अग्नि। ३ आग्नीध्रका स्थान।

आग्नीध्र (सं० त्रि०) आग्नीध्र पुरोहित सम्बन्धीय।

आग्नीध्रा (सं० स्त्री०) आग्नीध्रस्थानमर्हति यत् टाप्। अग्निक्षितिके याम्य भाग।

आग्नेन्द्र (सं० त्रि०) अग्निश्च इन्द्रश्च द्वन्द्व० आनङ् सो देवते अस्य अण् न परपदवृद्धि छन्दसामावाच्यत्। अग्नि एवं इन्द्र देव सम्बन्धीय। (स्त्री०) आग्नेन्द्री।

आग्नेय (सं० त्रि०) अग्नेरिदं अग्निर्देवता वास्य ढक्। १ अग्निसम्बन्धी जातियों। २ अग्निदेवता विषयक, अग्नि देवपर चढ़ाया जानेवाला। ३ अग्निसे आगत आगसे निकला हुआ। अग्नौ अभ्युदेयर्थे वाहु ढक्। ४ आग लगनेसे जल्द जल उठनेवाला। लाह घी, मोमादि प्रभृति द्रव्य आग्नेय होते हैं। पाण्डवोंको जलाकर मार डालनेके लिये वारणावतमें लाह वगैरहसे ही घर बनाया गया था। ५ पित्तोद्दीपक जठरानल,भूख बढ़ानेवाला। ६ अग्निके समान आग देनेवाला। (स्त्री०) ७ कृत्तिका नक्षत्र। कृत्तिका नक्षत्रके देवता अग्नि होते. इसीसे उसे आग्नेय कहते हैं। ८ स्वर्ण, सोना। अग्निके वीर्यसे उत्पन्न होनेपर स्वर्णका नाम आग्नेय पड़ा है। ९ रक्त खून। रक्तका जठरानलसे निकलने या देहके पित्तरूप अग्निका विकार होनेसे आग्नेय कहा जाता है। १० अग्निष्टुत् सामवेद। ११ स्थान विशेष। मक्का मनाकर मदीनेका नाम आग्नेय है। १२ राजाका चरित्र विशेष। १३ अस्त्रविशेष किसी क़िस्मका हथियार। १४ बन्दूक वगैरह। जो हथियार आग लगनेसे चलते या जिनसे आतिशी टुकड़े निकलकर चोट मारते उन्हें आग्नेय कहते हैं। अग्नेरागतम्, ढक्। १५ अग्निप्रकृतिका कीटविशेष। यह कीट चौबीस प्रकारका होता है— १ कौण्डिन्यक, २ करभक ३ वर, ४ पत्रवृश्चिक ५ विनासिका, ६ ब्रह्मणिका, ७ बिन्दुल, ८ भ्रमर ९ बाह्यकी, १० पिच्चिट, ११ कुम्भ १२ वर्चकीट, १३ अरिमेदक, १४ पद्मकीट, १५ दुन्दुभि, १६ मकर, १७ शतपादक १८ पाञ्चाल १९ पाकमत्स्य २० कृष्णतुण्ड, २१ गर्दभी, २२ क्लीत, २३ कृमिसरारी और २४ उत्क्लेदक। यह कीट जिसे काटता, उसको पित्तज रोग हो जाता है। आग्नायी देवता अस्य ढक् पुवद्भाव। १६ स्वाहा देवताका स्थालीपाक। १७ अग्निपुराण। १८ ब्राह्मण। १९ घृत। २० अग्निकोण। २१ बारूद वगैरह सहज उठनेवाली चीज़। २२ ज्वालामुखी पर्वत। २३ प्रतिपत् तिथि। २४ दीपन औषध। (पु०) २५ कार्त्तिकेय। महादेवका वीर्य अग्निमें गिरने और उससे उत्पन्न होनेसे कारण कार्त्तिकेयका नाम आग्नेय पड़ा है। २६ देशविशेष। इसी देशमें स्वाभाविक अग्निको उत्पत्ति हुयी थी। यह दक्षिणापथके निकट किष्किन्ध्या देश समीपस्थ माहिष्मतीपुरसे मिला है। यहीं अग्निने नीलराजको कन्याके सौन्दर्य विमोहित हो विवाह किया था। पीछे उनको रक्षा करनेको अग्नि स्वयं इसी देशमें रहने लगे। इस विषयका विवरण महाभारतके सभापर्वमें लिखा है। २७ आग्नेय। (स्त्री०) आग्नेयी।

आग्नेयकीट (सं० पु०) आगसे उड़नेवाला कीड़ा। डंक तथा चोट विराग् हुआ देने कारण चोरको भी आग्नेयकीट कहते हैं।

आग्नेयपुराण (सं० क्ली०) अग्निपुराण।

आग्नेयवायु (सं० पु०) अग्निकोणस्थ समीरण, दक्खिनहरा।

आग्नेयास्त्र (सं० क्ली०) अस्त्रविशेष एक हथियार। प्राचीन समय इस अस्त्रके प्रयोगसे अग्निवृष्टि होने लगती थी। अस्त्र देखो।

आग्नेयी (सं० स्त्री०) अग्निकी शुभसूचक छाया।

आग्न्याधानिकी (सं० स्त्री०) अग्न्याधानस्य दक्षिणा, ठक्। अग्न्याधान यज्ञकी दक्षिणा।

आग्न्याधेयिक (सं० त्रि०) अग्न्याधेय सम्बन्धी।

आग्रभोजनिक (सं० पु०) अग्रभोजनं नियतं दीयतेऽस्मै, ठञ्। १ नियत अग्रभोजनदानका सम्प्रदान। २ अग्रदानी ब्राह्मण, श्राद्धका अग्रभोजन द्रव्य लेनेवाला। (त्रि०) ३ सबसे पहले भोजन करनेवाला।

आग्रमास (सं० पु०) चित्रक वृक्ष, चीतका पेड़।

आग्रयण (सं० पु०) आग्रं अयनं भोजनं शस्यादेर्येन, शकन्ध्वादि० अकारलोपः। १ नूतन शस्य लानेके लिये साग्निक-कर्तव्य यज्ञविशेष, शस्यके पाकान्तमें समाधेय यागविशेष, नवशस्येष्टि, नवान्न-विधान। आश्वलायन-श्रौतसूत्रमें इसका विशेष विवरण लिखा है। वर्षामें सार्वा, हेमन्तमें व्रीहि और वसन्तमें यवसे आग्रयण यज्ञ किया जाता है। २ अग्निविशेष। (क्ली०) ३ वर्षा ऋतुके अन्तमें नव फलोंका हवन। (स्त्री०) आग्रयणी।

आग्रस्त (सं० त्रि०) विद्ध, सच्छिद्र, छेदा हुआ, जिसमें छेद रहे।

आग्रह (सं० पु०) आग्रह्य वशीभूयते मनो येन, आ-ग्रह-अप्। १ आवेश, हौसला। २ आसक्ति, खिंचाव। ३ अभिनिवेश, मुस्तैदी। ४ आश्रम, ठिकाना। ५ अनुग्रह, मेहरबानी। ६ ग्रहण, गिरफ्तारी, पकड़। ७ आक्रमण, हमला। ८ उत्कर्षसाधन, सबकत ले जानेका काम, बढ़ावढ़ी। ९ संवर्धन, हिमायत। १० साहस, हिम्मत। ११ हठ, ज़िद।

आग्रहयण (सं० त्रि०) अग्रहायण मास सम्बन्धी, अगहनवाला।

आग्रहायण (सं० पु०) अग्रहायणी मृगशिरो नक्षत्रम्; मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी, तया युक्ता पौर्णमासी। अग्रहायण मास, चान्द्रमार्गशीर्ष मास, अगहनका महीना।

आग्रहायणक (सं० क्ली०) आग्रहायण्यां देयं ऋणम्, आग्रहायणी-चात्-वुञ्। १ अग्रहायण मासकी पूर्णिमाको दिया जानेवाला ऋण, जो कर्ज़ अगहन सुदी पूरनमासीको अटा हो। (त्रि०) २ अग्रहायण मासकी पूर्णमासीको दिया जानेवाला।

आग्रहायणिक (सं० क्ली०) आग्रहायण्यां देयं ऋणम्, आग्रहायणी-ठञ्। अग्रहायण मासकी पूर्णिमाको दातव्य ऋण, अगहन सुदी पूरनमासीको चुकाया जानेवाला कर्ज़। (पु०) २ आग्रहायणी पौर्णमासीयुक्त मास, अगहनका महीना। मतभेदमें यही वत्सरका प्रथम मास है। (त्रि०) ३ अग्रहायणकी पूर्णिमाको दिया जानेवाला।

आग्रहायणी (सं० स्त्री०) अग्रे हायनमस्याः, प्रज्ञादि० अण्-ङीप्। [illegible] १ अग्रहायण मासकी पूर्णिमा, अगहन महीनेकी पूरनमासी। २ पाकयज्ञ विशेष। ३ मृगशिरा नक्षत्र।

आग्रहारिक (सं० त्रि०) अग्रहारोऽग्रभागो नियतं दीयते ऽस्मै, ठञ्। १ अग्रदानी। २ अग्रहार लेनेवाला।

आग्राहिका (सं० स्त्री०) अनुग्रह, संवर्धन, साहाय्य, मेहरबानी, हिमायत, मदद।

आग्रही (सं० त्रि०) आग्रह करनेवाला, जिद्दी, जो दूसरेकी बात मानता न हो।

आग्रायण (सं० पु०) अग्रनाम्नः ऋषेः गोत्रापत्यम्, नडादि० फक्। १ अग्रनामक ऋषिके गोत्रापत्य। यह बड़ वैयाकरण रहे। अग्रे अयनं शस्यस्य अस्त्यस्य, अण्। २ नवशस्येष्टि, नवान्न निमित्त साग्निक कर्तव्य यागविशेष।

आग्रायणेष्टि (सं० स्त्री०) आग्रायण यज्ञका उत्सव, नवान्नका जलसा।

आघ (हिं० पु०) अर्घ, मूल्य, दाम, कीमत।

आघट्टक (सं० पु०) आघट्टयति रोगान्, आघट्ट-ण्वुल्। १ रक्त अपामार्ग क्षुप, लाल चिचडीका पेड़। २ घषक, रगड़नेवाला। ३ घर्षण उत्पन्न करनेवाला, जिससे रगड़ लग जाये।

आघट्टन (सं० क्ली०) घर्षण, मर्दन, रगड़, मालिश। (स्त्री०) आघट्टना।

आघट्टित (सं० त्रि०) आ-घट्ट-क्त इट्। मार्जित, चालित, रगड़ा या हिलाया हुआ।

आघमर्षण (सं॰ क्ली॰) अघमर्षणको विलम्, अण्। पापनाशकी विधि विलकर सूक्त विशेष।

आघर्ष (सं॰ पु॰) आ घृष घञ्। १ मर्दन, मालिश। २ मन्थन, मथाई।

आघर्षण (सं॰ त्रि॰) १ विदारक, रगड़ देनेवाला। (क्ली॰) २ मर्दन, रगड़।

आघर्षणी (सं॰ स्त्री॰) कोमलमयी मार्जनी, बालोंकी कूंची।

आघर्षित (सं॰ त्रि॰) मार्जित, रगड़ा हुआ।

आघाट (सं॰ पु॰) आ-हन कर्तरि संज्ञायां घञ्, पृषो॰ तस्य टः। १ अपामार्ग, चिचड़ी। २ वाद्य विशेष, एक बाजा। यह नाचनेवालीके साथ ही साथ बजाया जाता है। ३ आनक अनाजन, झांझ मंजीरा, खड़ताल। ४ सीमा, हद। (त्रि॰) ५ आघात कर्ता चोटीला।

आघाटि (सं॰ पु॰) आनक, झांझ, मंजीरा।

आघाटिन् (सं॰ त्रि॰) आ हन णिनि पृषो॰ तस्य टः। आघातकर्ता, चोट करनेवाला।

आघात (सं॰ पु॰) आ हन भावे घञ् नस्य तः हस्य घः। १ वध, कतल। २ आक्रमण, ठोकर, धक्का। ३ घात, जुलम। ४ ताड़न, मारपीट। ५ ताड़ना देनेवाला, जो मारता हो। ६ मूलस्थ, वधस्थान, पेशाबकी गैल। ७ अभाग्य, कमबख्ती। आधारे घञ्। ८ वधस्थान, मकतल, बूचड़खाना।

आघातज्वर (सं॰ पु॰) अभिघात-जन्य ज्वर, चोटसे आनेवाला बोखार।

आघातन (सं॰ क्ली॰) आहन्यते अत्र आ-हन आधारे णिच् आधारे ल्युट् णिच् लोप। १ वधस्थान, कत्लगाह। भावे ल्युट्। २ हनन, मारपीट।

आघार (सं॰ पु॰) आघ्रियते सिच्यते, आ घृ कर्मणि घञ्। १ घृत, घी। भावे घञ्। २ ज्वालित अग्निमें वायुकोणसे आरम्भ कर आग्नेयकोण और ऐशान कोणसे आरम्भ कर नैऋतकोण पर्यन्त अविच्छेद धाराक्रमसे घृत सेचन। इसमें 'प्रजापतये स्वाहा' एवं 'सोमाय स्वाहा' मन्त्र पढ़ा जाता है। ऋग्वेदी उपरोक्त मन्त्र मन ही मन पढ़ते, किन्तु यजुर्वेदी उच्चैःस्वरसे उच्चारण करते हैं।

आघी (हिं॰ स्त्री॰) १ ब्याजकी ब्याजमें दिया जाने वाला अन्न। खेतकी फसल तैयार होनेपर किसान महाजनको यह सूद देता है। २ ब्याजकी ब्याजमें अन्नका लेनदेन।

आघु   आघ देखो।

आघूर्ण   आघूर्णन देखो।

आघूर्णन (सं॰ क्ली॰) १ लोठन, परिभ्रमण, गर्दिश चक्कर घुमाव, घुड़काव। २ चालन, आन्दोलन, हिलजानी, तलपलुन, डांवाडोली।

आघूर्णित (सं॰ त्रि॰) आ घूर्ण-क्त। १ चलित, चक्कर काटनेवाला। २ भ्रान्त भटका हुआ।

आघृणि (सं॰ पु॰) १ क्रोध, गुस्सा। २ पूषा देव। (त्रि॰) ३ प्रज्वलित, आगकी तरह जगमगानेवाला। ४ प्रदीप्त चमकदार।

आघृणिवसु (वै॰ त्रि॰) १ प्रज्वलित, आगसे भरा हुआ। २ अधिक धनसम्पन्न, निहायत दौलतमन्द। (पु॰) ३ अग्नि।

आघोष (सं॰ पु॰) आघोषण देखो।

आघोषण (सं॰ स्त्री॰) आ-घुष ल्युट्। सकल स्थानमें प्रचारके लिये उच्चैःस्वरसे शब्द करना, आह्वान, नाम जप, मुनादात पुकार।

आघ्राण (सं॰ त्रि॰) आ घ्रा क्त, तकारस्य नः, ऐकान्त परतया णत्वम्। १ घ्रातगन्ध, सूंघा हुआ। २ तृप्त, आसूदा छका हुआ। (क्ली॰) भावे क्त। ३ गन्ध ग्रहण, सुंघाई। ४ तृप्ति, आसूदगी, छकावट।

आघ्रात (सं॰ त्रि॰) आघ्रायते स्म, आ-घ्रा कर्मणि क्त न तस्य नत्वाभाव। १ घ्रातगन्ध, सूंघा हुआ। २ तृप्त आसूदा। (पु॰) ३ ग्रहण विशेष, किसी किस्मका ग्रहण। इसमें चन्द्र या सूर्यमण्डल एक ओर मलिन पड़ जाता है। आघ्रात-ग्रहण लगनेसे सुवृष्टि होती है।

आघ्रेय (सं॰ त्रि॰) आ घ्रा-यत्। १ घ्राण द्वारा ग्राह्य, सूंघा जा सकनेवाला। २ घ्राण करने योग्य, सूंघने काबिल।

आङ् (सं॰ अव्य॰) आ आङ्॰ ङकार प्रयोगे तस्य ङित्वम्। आ शब्दार्थे। इस शब्दका विवरण आ शब्दमें देखो।

आङ्कुगायन (सं० त्रि०) अङ्कुगेन निर्वृत्तम्, अङ्कुग पचादि० फक्। १ अङ्कुग द्वारा निर्वृत्त वा निष्पादित, जो आंकुसके ज़रिये पूरा पड़ा हो।

आङ्कुशिक (सं० त्रि०) अङ्कुश प्रहरणमस्य, ठक्। अङ्कुश प्रहारयुक्त, आंकुसकी मारवाला।

आङ्गी (सं० स्त्री०) मृदङ्ग, तम्बूर, तबला, ढोलक।

आङ्ग (सं० क्ली०) अङ्ग स्वार्थे-अण्। कोमलाङ्ग, नाजुक अङ्गों। २ अङ्गदेशजात द्रव्य, अङ्ग मुल्कमें पैदा हुई चीज़। ३ अङ्गदेशके नृपति। ४ व्याकरण प्रसिद्ध अङ्गके अधिकारसे विहित कार्य। (त्रि०) अङ्गे भवम्, अण्। ५ अङ्गदेशजात, अङ्ग मुल्कमें पैदा हुआ। ६ व्याकरणमें—अङ्गाधिकार सम्बन्धी। ७ शारीरिक, जिस्मानी। ७ नाटकके नीच व्यक्तियोंसे सम्बन्ध रखनेवाला, स्वांगके छोटे लोगोंसे मुतअल्लिक़।

आङ्गक (सं० त्रि०) अङ्गेषु जनपदेषु भवम्, वुञ्। १ अङ्गदेश-जात, अङ्ग मुल्कमें पैदा हुआ। अङ्गाः चत्रियाः तद्देश नृपतयोः भक्तिरस्य, वुञ्। २ अङ्गदेशके चत्रियोंका सेवक। (पु०) ३ अङ्गदेशके राजा। ४ अङ्गदेशका अधिवासी।

आङ्गदी (सं० स्त्री०) अङ्गदके राज्यकी राजधानी।

आङ्गविद्य (सं० त्रि) अङ्गं अङ्गनाम विद्यां वेद, अङ्ग विद्या-अण्। १ व्याकरणादि अङ्गविद्या जाननेवाला। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्दःसमूह वेदका अङ्ग होनेसे अङ्गविद्या कहाता है। उपरोक्त सकल विद्याके जाननेवालेको ही आङ्गविद्य कहते हैं। अङ्गविद्यायां भवम्, अण्। २ अङ्गविद्यादि जात, अङ्गविद्या आदिसे पैदा। (क्ली०) तद्व्याख्यानो ग्रन्थः, ऋगयनादि अण्। ३ अङ्गविद्याका व्याख्यान-ग्रन्थ।

आङ्गार (सं० क्ली०) अङ्गाराणां समूहः, भिक्षादि० अण्। अङ्गारसमूह, अङ्गारका ढेर।

आङ्गिक (सं० पु०) अङ्गेन अङ्गचालनेन निर्वृत्तम्, ठक्। १ भावप्रकाशक अङ्गनिष्पन्न नटादिका भ्रूविक्षेपादि। आलङ्कारिकोंके मतसे भावप्रकाशक भ्रूविक्षेपादि आङ्गिक, वाचिक, आहार्य और सात्विक चार प्रकारका होता है। आङ्गिक अङ्ग वाचिक वचन, आहार्य वेशभूषा और सात्विक स्वभावसे बनता है। २ स्त्रियोंका हाव, भाव, भ्रूभङ्गि प्रभृति चेष्टाविशेष, औरतोंको चटक-मटक। अङ्गं मृदङ्गं तद्वाद्यं शिल्पमस्य, ठक्। ३ मृदङ्ग बजानेवाला, तबलची। ४ अश्वत्थवृक्ष, पीपलका पेड़। (त्रि०) ५ शारीरिक, सशरीर, जिस्मानी, बदनी। ६ सङ्केत सूचित, नक़ल करके देखाया हुआ।

आङ्गिरस (सं० पु०) अङ्गिरसोऽपत्यम् अङ्गिरस्-अण्। अङ्गिरा ऋषिका सन्तान। अङ्गिराके तीन पुत्र रहे—बृहस्पति, उतथ्य और संवर्त। अङ्गिरसा दृष्टं साम अण्। २ अथर्ववेदोक्त सूक्तविशेष। अथर्ववेद देखो। अङ्गिनां अङ्गानाञ्च रसः सारः, स्वार्थे अण्। ३ आत्मा, रूह। (त्रि०) ४ अङ्गिरा ऋषिसे सम्बन्ध रखनेवाला, जो अङ्गिरासे पैदा हो।

आङ्गिरसेश्वर (सं० पु०) आङ्गिरसेन प्रतिष्ठित ईश्वरः, शाक० ३-तत्। काशीस्थ शिवलिङ्ग विशेष। इसे आङ्गिरसने प्रतिष्ठित किया था।

आङ्गुरिक, आङ्गुलिक देखो।

आङ्गुलिक (सं० त्रि०) अङ्गुलि ठक् वा स्त्वम्। अङ्गुलि-सदृश, अङ्गुश्त-जैसा।

आङ्गूष (वै० पु०) आङ्-पूर्वात् घुष् कर्मणि घञ्। स्तोत्र, स्तोम, आघोष।

"वधाङ्गूषैः च वयमिन्द्रवन्तः।" ऋक् १।१०७।१२।

आङ्गूष्य (वै० त्रि०) १ स्तोत्रविषयक, जोरसे तारीफ़ करनेवाला। २ प्रशंसाभाजन, तारीफ़ करने लायक़।

आङ्ग्र (सं० त्रि०) अङ्गे भवं आङ्ग्रम्, चतुरर्थ्यां सङ्काशादि० ण्य। अङ्गजातके निकटस्थ।

आच (हिं० पु०) हस्त, हाथ।

आचचाण (सं० त्रि०) आचष्टे, आ-चक्ष-शानच्। व्याख्यानकर्ता, बयान् देनेवाला।

आचक्षुस् (सं० पु०) आ-चक्ष बाहु० उसि। विद्वान् पुरुष, पण्डित, इल्मदार, देख भालके काम करनेवाला आदमी।

आचतुर (सं० अव्य०) चतुः पर्यन्तम्, अव्ययी टच्। चार पुरुष पर्यन्त, चार पीढ़ी तक।

आचतुर्य (सं० क्ली०) अपाटव, बेवक़ूफ़ी।

आचम (सं० पु०) आ-चम-अच्। आचमन।

आचमन (सं॰ क्लो॰) आ चम भावे-ल्युट्। १ जलपान, ऊसा पास। २ भोजनान्त मुखप्रक्षालन, भोजनके बाद मुह धोना। ३ पूजादिके पूर्व हाथको गोकर्णाकार बना और उसमें जल रख तीन बार पान एवं ओष्ठ द्वयको दो बार मार्जन करके यथा स्थान स्पर्श प्रदान करना। ४ कर्मसंस्कारका अङ्ग विशेष। ५ क्रिया विशेष। ६ आचमनका जल। भरद्वाज मुनिने आचमनका ऐसा नियम बताया है—दक्षिण हस्तकी अङ्गुलियोंको एक तरफ और विस्तृत करके हाथ गोकर्णाकार बनावे एवं अङ्गुलि परस्पर संलग्न रखे। उसी अवस्था पर एक उड़द डूबने लायक जल उसमें ले तथा अङ्गुष्ठ एवं कनिष्ठा दो अङ्गुलि छोड़ ब्राह्मणको "ॐ विष्णु" मन्त्रद्वारा तीन बार जल पीना चाहिये।

आक्कायनमें लिखा है—तीन बार उपरोक्त प्रकारसे जलपान करके ओष्ठद्वयको दो बार मार्जनपूर्वक मुखके ऊपर हाथ रखे। पीछे एकबार हाथ धो डाले। फिर अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी इन दोनों अङ्गुलिके अग्रभाग संलग्न करके नासिकाद्वयको स्पर्श करते हैं। उसके बाद अङ्गुष्ठ और अनामिकासे दोनों आंख एवं दोनो कान छू लेते हैं। तदनन्तर नाभि वक्षःस्थल, मस्तक एवं स्कन्धद्वयपर हाथ लगावे।

तान्त्रिक सन्ध्यामें—"आत्मतत्त्वाय स्वाहा विद्यातत्त्वाय स्वाहा, शिवतत्त्वाय स्वाहा", मन्त्रद्वारा तीन बार जलपान करना पड़ता है। काली तारा एवं विष्णुपूजाके लिये स्वतन्त्र रूप आचमनका विधि है। केवल कहते हैं—चलते फिरते कोई-पड़ते जंभाई खोलते कांपते कांपते या खाते देखते-भालते, आचमन करना न चाहिये। स्नान, धोतीसे मोचेका भाग या स्त्रीका स्पर्श करके भी आचमन करना मना है।

आचमनक (सं॰ क्लो॰) आचमनस्य कं सदमात्। १ निष्ठीवनपात्र पीकदान। आचम्यते अनेन, करणे ल्युट स्वार्थे कन्। २ आचमनका जलादि कुल्ली करनेका पानी।

आचमनी (हिं॰ स्त्री॰) आचमन करनेका पात्र जिस चीजसे पूजाके समय जल मुंहमें डाला जावे। आचमनी छोटे चमच जैसी पीतल या तांबेकी बनती है। यह पञ्चपात्रमें रहती और आचमन करने या चरणामृत देनेके काम आती है।

आचमनीय (सं॰ क्लो॰) आचमनाय दीयते इत्यर्थे आ-चम-करणे बाहु॰ अनीयर् वा। १ आचमनके निमित्त देय जातिफलादि द्रव्य मिश्रित एक परिमित जल कुल्ली करनेको दिया जानेवाला पानी। कर्मणि अनीयर्। २ पेय जल पीनेका पानी। (त्रि॰) ३ आचमनार्थ व्यवहृत, कुल्ली करनेमें लगनेवाला।

आचमित (सं॰ त्रि॰) आचमन किया हुआ, जो पी लिया गया हो।

आचम्य (सं॰ क्लो॰) आ चम-यत्। १ आचमनके योग्य जलादि कुल्ला करने लायक पानी। (अव्य॰) आ चम ल्यप्। २ आचमन करके कुल्ली डालकर।

आचय (सं॰ पु॰) आ-चि अच्। १ पुष्प फलादि का चयन, फूल फल वगैरहका तोड़ लाना। २ समूह, ढेर।

आचयक (सं॰ त्रि॰) आचये नियुक्तः, आचय आकर्षादि॰ कन्। चयनमें नियुक्त फूल फल वगैरह तोड़नेका काम करनेवाला।

आचरज (हिं॰) आश्चर्य देखो।

आचरजित (हिं॰) आश्चर्यित देखो।

आचरण (सं॰ क्लो॰) आ-चर ल्युट्। १ आचार, चाल चलन। २ उपस्थिति, आमद पहुंच। ३ आचार का नियम चलनका तरीका। करणे ल्युट्। ४ रथ, शकट, गाड़ी।

आचरणीय (सं॰ त्रि॰) आ-चर अनीयर्। १ अनुष्ठेय करने काबिल। २ उपयुक्त, वाजिब।

आचरन (हिं॰) आचरण देखो।

आचरना (हिं॰ क्रि॰) आचरण करना व्यवहार बांधना, चलन बनाना।

आचरित (सं॰ क्लो॰) आ-चर भावे क्त। १ आचार, चलन। २ ऋणीसे धन लेनेका उपाय विशेष, कर्ज़ दारसे रुपया वसूल करनेकी तरकीब। (त्रि॰) कर्मणि

कर दिन। १ शास्त्रोक्त अनुष्ठाता कदीम चाल चलनेवाला।

आचारी (सं० स्त्री०) आ-सम्यक् चार प्रसरणं यस्याः, गौरादि० जातित्वात् ङीप्। १ हिलमोचिका, कोई सकड़ो। (पु) २ रामानुज साम्प्रदायिक वैष्णव। (त्रि०) ३ शास्त्रोक्त अनुष्ठाता, कदीम चाल चलनेवाला।

आचार्य (सं० पु०) आ-चर-ण्यत्। उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्द्विजः। सकल्पं सरहस्यञ्च तमाचार्य्यं प्रचक्षते। मनु २।१४०। १ गुरु, मुरशद, उस्ताद। मनु कहते हैं—जो ब्राह्मण शिष्यको उपनयन करना सकल्प और सरहस्य वेद पढ़ाता, वही वेदाध्यापक आचार्य कहाता है। किन्तु आजकल वेदकी आलोचना नहीं होती इसलिये बालकको को उपनयन कर गायत्री सुनाता वही आचार्य है। २ मतप्रचारक शङ्कराचार्यादि। ३ यथार्थ धर्मोपदेश। ४ पूज्यमात्र। ५ शिक्षकमात्र। ६ महा चाप। अचराचर सम गयक वा द्रव्य ब्राह्मणको आचार्य अथवा महाचार्य कहा करते हैं। (स्त्री०) आचार्या। आचार्यको पत्नी आचार्यानी कहलाती है।

आचार्यक (सं० क्लो०) आचार्यस्य कर्म भावो वा, वुञ्। १ आचार्यका काम या धर्म, मुरशद पाकका काम। (त्रि०) २ आचार्यके निकलनेवाला, जो मुरशद पायको पदा हो। (स्त्री०) आचार्यता।

आचार्यता (सं० स्त्री०) गुरुका धर्म, उस्तादी।

आचार्यत्व (सं० क्लो०) आचार्यता देखो।

आचार्यदेव (सं० पु०) अपने इष्टदेवको गुरु माननेवाला व्यक्ति, जो शख्स परमेश्वरको मुरशद मानता हो।

आचार्यभोगीन् (सं० त्रि०) आचार्यभोगाय हितम्, ख। आचार्यके भोग लायक मुरशदका सुख करनेवाला, जो उस्तादके काम लायक हो।

आचार्यमिश्र (सं० त्रि०) आचार्यो मिश्रः। मति मय पूज्य, बुजुर्गवार, काबिल ताज़ीम।

आचार्यवान् (सं त्रि०) आचार्य रखनेवाला, जिसके मुरशद रहे। (स्त्री०) आचार्यवती।

आचार्यानी (सं० स्त्री०) आचार्यकी पत्नी, मुरशदको औरत।

आचार्यी (सं० त्रि०) आचार्य-विषयक, मुरशदका।

आचार्योपासन (सं० क्लो०) आचार्यकी सेवाशुश्रूषा मुरशदको फरमांबरदारी।

आचिख्यासा (सं० स्त्री०) आख्यातुमिच्छा आ ख्या-सन् अ प्रत्ययादिति अ टाप्। आख्यानके निमित्त इच्छा, बोलनेको ख्वाहिश।

आचिख्यासु (सं० त्रि०) आख्यातुमिच्छु, आ-ख्या सन् उ। आख्यानके निमित्त इच्छुक, बोलनेका ख्वाहिशमन्द।

आचिख्यासोपमा (सं० स्त्री०) अलङ्कार शास्त्रको एक उपमा।

आचित् (सं० त्रि०) ध्यानमें आनेवाला, जो कयास करता हो।

आचित (सं० त्रि०) आ चि क्त। १ व्याप्त, मामूर, भरा हुआ। २ गुम्फित बंधा हुआ। ३ ग्रथित, गूँथा हुआ। ४ संचय किया हुआ रक्खा। (स्त्री०) ५ द्विसहस्र पलका मानविशेष, पचीस मनको तौल। (पु०) ६ शाकट मार, एक गाड़ी माल।

'आचित शकटाक्ष, [illegible] १' (अमर)

आचितादि (सं० पु०) आचित आदिगण्य। गण विशेष। इसमें निम्नलिखित शब्द पठित हैं— आचित, पर्याचित, अस्थापित, परिगृहीत, निरुक्त, प्रतिपन्न, अपश्लिष्ट, प्रश्लिष्ट, उपहृत, उपस्थित, संहिता।

आचितिक (सं० त्रि०) आचित मानके बराबर, जो पचीस मन बोझ उठा रहा हो।

आचितीन, आचितिक देखो।

आचिन्त्य (सं० त्रि०) १ सर्वप्रकार सोचने योग्य, हरतरह ध्यानमें आने काबिल। (हिं० वि०) २ अचिन्त्य, ध्यानमें न आनेवाला।

आचोर्ण (सं० त्रि०) भुक्त, आच्छादित, खाया हुआ।

आचु (सं० पु) आम्बुक द्रव्य, चालका पेड़।

आचूगिदेव—प्रथम परमर्दिदेवके पिता। बम्बई प्रान्तस्थ धारवाड़ जिलेको रोन तहसीलके कोड़ोकोप्प गांवमें भूत महादेवके मन्दिरको दीवारपर इनके समयका एक शिलालेख विद्यमान है।

जकना पड़ा था। किन्तु नादिर शाह डाकूको लूट मारसे सन् १८०१ ई०तक इस जिलेमें लखनऊके नवाबोंके अधीन शान्ति प्रतिष्ठित रही। उसी वर्ष आजमगढ़ उन करके बदले ईष्ट इण्डिया कम्पनीको सौंपा गया, जो लखनऊके नवाबोंसे अंगरेजोंको सामरिक अनुकूल साहाय्य और अन्य अन्य व्ययके लिये मिलता था। मादिरशाहने अपनी जमीन्दारी छोड़ देनेको नालिश कम्पनीपर की, किन्तु कोई सुनायी न हुई, केवल राजाकी उपाधि और पेन्शन उनके लड़कोंको दिया गया। फिर कोई बड़ी बात पड़ी न थी। किन्तु सन् १८५७ ई०की ३री जूनको १७ वीं रेजी-मेण्टके देशी सिपाहियोंने बलवा उठा झट अफसर मार डाले और सरकारी खजाना फैजाबाद ले गये। युरोपीय गाजीपुरको भागे थे। किन्तु १६ वीं जूनको गाजीपुरसे फौजने आकर फिर इस नगरपर अधिकार जमा लिया। १८ वीं जुलाईके युद्धमें अंगरेजोंको पीछे हटना और २८वींके दिन दानापुरमें बलवा मचा उठनेसे गाजीपुर वापस जाना पड़ा था। ८वींसे २१वीं अगस्ततक आजमगढ़ बलवाइयोंके अधीन रहा, किन्तु २६वींको राजभक्त गोरखोंने उन्हें निकाल बाहर किया। २० वीं सितम्बरको बलवाइयोंके प्रधान बेनीमाधवके हार जानेपर अंगरेजोंका फिर अधिकार प्रतिष्ठित हुआ था। नवम्बरमें बलवायी अतरौलियेसे निकाले गये। सन् १८५८ ई०के जनवरी मास गोरखे जमसेरजङ्गके अधीन गोरखपुरसे फैजाबादको भागे बढ़े, जिसपर बलवायी फिर इस नगर जाने को वापस आये। फरवरी मासके मध्य कुंवरसिंह अप अवधसे भाग इस जिलेमें दाखिल हुये थे। अतरौलियेमें अमरेजी फौजने उनपर आक्रमण किया किन्तु बारबार आजमगढ़को पीछे हटना पड़ा। कुंवरसिंह एप्रेल मासके मध्यतक इस नगरको घेर रखा था। अन्तको वह हार गये और गङ्गा पार करके अपना राज्य जा बैठे। किन्तु अक्टोबर मास तक बलवायी तहसील और थाने लूटते रहे थे। पीछे सेनापति केलीने इस जिलेमें विद्रोहियोंको दबा शान्ति स्थापित की।

भवन—इस जिलेमें कितने ही दुर्गों का भग्ना-वशेष पाया जाता है। कहते सब किले भरोंके समय बने थे। कितने ही किले बहुत बड़े देख पड़ते, किन्तु उनके बनानेके दिनों और बनवानेवालोंके नामोंका पता हम नहीं पाते। घोसीका किला सबसे बड़ा है। कहा जाता, कि राजा घोषने पिशाचोंके साहाय्यसे इसे बनवाया था। यही बात कुवारसे नहायी तकके रघु और इन्द्रायन किलेके गर्भ तात्पर्य-तकको कुवांके विषयमें भी प्रसिद्ध है। गोपाल पर-गनेके महाराजगञ्जमें भैरवका प्राचीन मन्दिर विद्य-मान है। लोग कहते है—किसी समय अयोध्या नगर इतना विस्तृत रहा, कि उसमें बयालीस बयालीस कोस दूर चार फाटक लगे थे, भैरव-मन्दिर पूर्व द्वारका ध्वंसावशेष है।

इस जिलेमें निम्नलिखित नगर बड़े हैं—१ आजम गढ़, २ मऊ, ३ मुबारकपुर, ४ मुहम्मदाबाद, ५ दुबरी, ६ कोपागञ्ज, ७ वालिदपुर और ८ सरायमीर।

कृषि—आजमगढ़की भूमि कहीं बांगर और कहीं कछार है। यहां तीन तरहकी खेती है,—भदियारी, बरायक और जाड़िस। अब जाड़ेमें भी चावल पैदा करने लगे हैं। किन्तु इस जिलेकी कृषि प्रधा-नत वृष्टिपर ही निर्भर है। खरीफमें चावल, अर-हर, ज्वार और रबीमें गेहूं, यव चना, मटर, वगैरह पैदा होता है। इस जिलेमें सरकारी नहर नहीं चलती। अधिक एवं कम व्यापार करके और पटना, मिर्जापुर तथा कलकत्तेको पैदावार भेज देते हैं।

वाणिज्य-व्यवसाय—आजमगढ़का व्यापार जल तथा स्थल दोनों मार्गसे होता है। घाघरा नदी उत्तर तथा पश्चिमसे अन्न मंगाने और बङ्गाल एवं पूर्वको चीनी भेजनेके काम आती है। इस नगरसे गाजीपुर, जौन-पुर, गोरखपुर, बलिया और फैजाबादको पक्की सड़क गयी है। चीनी, गुड़, नील, अफीम, मोटा कपड़ा तथा जङ्गलकी लकड़ी यहांसे बाहर भेजते और अन्न, विलायती कपड़ा एवं सूत, कपास, रेशम तम्बाकू, नमक, लोहालक्कड़, दवा, चमड़ेकी चीज, पत्थरकी चक्की वगैरह दूसरी जगहसे मंगाते हैं।

पहले आज़मगढ़से कलकत्तेकी राह कितनी ही साफ़ चीनी युरोप भेजी जाती थी। किन्तु अब वह बात नहीं रही।

साधारणत: इस जिलेका स्वास्थ्य अच्छा रहता, किन्तु वर्षा और शरत् ऋतुमें ज्वरका प्रकोप बढ़ जाता है। २ अपने जिलेकी तहसील। इसका क्षेत्रफल ४४२ वर्गमील है। ३ अपनी तहसीलका नगर। यह तोन्स नदीपर बनारससे ८१ मील उत्तर अक्षा० २६° ३′ उ० और द्राघि० ८३° १३′ २०″ पू० अवस्थित है। आज़मगढ़ नगरका क्षेत्रफल १३७४ एकर और लोकसंख्या प्राय: बीस हज़ार है। सन् १६६५ ई०को निकटके शक्तिशाली ज़मीन्दार आज़मखांने यह नगर प्रतिष्ठित किया था।

आज़माना (हिं० क्रि०) आज़मायश करना, परीक्षा लेना, जांचना।

आजमायश (फ़ा० स्त्री०) परीक्षा, जांच।

आजमार्य (सं० पु० स्त्री०) अजमारस्यापत्यम्, आजमार-ण्य, रेफात् परस्याकारस्य लोप:। कुर्वादिभ्यो ण्यः। पा ४।१।१५१। अजमारकी कन्या वा पुत्ररूप सन्तान, अजमारकी औलाद।

आजमीढ़ (सं० त्रि०) अजमीढ़ो नाम कश्चिद्देश: तत्र भव:, अण्। १ अजमीढ़-देश-जात, अजमीढ मुल्कका पैदा। (पु०) अजमीढ़स्य राजा अण्। २ अजमीढ़ देशका राजा। "ते: समुद्रत: सचतामाजमीढ़ो यथोचितं पाण्डुपुमान् समीयात्।" (महाभारत)

आजमूत्र (सं० क्ली०) छागमूत्र, बकरेका पेशाब।

आजमूदा (फ़ा० वि०) परीक्षित, जांचा या परखा हुआ।

आजयन (सं० क्ली०) आ सम्यक् जायतेऽस्मिन्, आ-जि आधारे ल्युट्। युद्ध, लड़ायी।

आजरस (वै० अव्य०) जरापर्यन्तम्, सीमार्थे अजन्त अव्ययी०। १ जरा पर्यन्त, बुढ़ [illegible]। (त्रि०) आगता जरा यस्य, प्रादि० बहुव्री० [illegible] २ जरा[illegible]। "प्रजापति राजरसार्[illegible] ।३१।) (सं० [illegible] काढ़ा।

आजवन (सं० क्ली०) प्रपात, आक्रमण, युद्ध, धावा, हमला, लड़ायी।

आजवल्ल (सं० पु०) वनतुलसी, जङ्गली तुलसी। यह कटु, उष्ण, शीत, दाहकर, प्रिय, रुच, रूक्ष, दीपक, लघु, पाकमें पित्तल, तिक्त, मधुर, सुख-प्रसव एवं व्रण्य होता और वात, कफ, नेत्ररोग, मूत्रकृच्छ्र, अरुचि, विषकामला, कुम्भकामला, अनाहवात, शूल, अग्निमान्द्य, रक्तदोष, श्वास, कास, दद्रु, हृत्-पार्श्व-वेदना, कण्डु, कुष्ठ और वमनको दूर करता है। आजवल्लका सुगन्ध, कटु, उष्ण, रुचिकर, पित्तोत्पादक एवं निद्राजनक रहता और वमन, वात ग्रहबाधा, पार्श्वशूल, कास, श्वास, कफ, शोथ तथा अङ्गके दौर्गन्ध्यको मिटाता है। (वैद्यकनिघण्टु)

आजवस्तिक, आजवस्तेय देखो। (स्त्री०) आजवस्तिका।

आजवस्तेय (सं० स्त्री० पु०) अजवस्ते: ऋषेरपत्यम्, शुभ्रादि० ढक्। अजवस्ति नामक ऋषिका पुत्र-कन्यारूप सन्तान। (स्त्री०) ङीप्। आजवस्तेयी।

आजवाह (सं० त्रि०) अजो वाह्यतेऽत्र, अज्-वह-णिच् आधारे घञ्, ३-तत्; अजवाहो नाम कश्चिद्देश: तत्र भवादि अण्। अजवाह देश जातादि, अजवाह मुल्कका पैदा वगैरह। बदरिकाश्रमसे उत्तरस्थ पर्वतमय उच्च स्थानका नाम अजवाह है। क्योंकि वहां लोग बकरेपर ही बोझ ढोते हैं।

आजवाहक, आजवाह देखो।

आजा (हिं० पु०) पितामह, जद, दादा, बापका बाप। (स्त्री०) आजी।

आजागुरु (हिं० पु०) गुरुका गुरु, उस्तादका उस्ताद।

आजातशत्रव (सं० पु०) अजातशत्रोरपत्यम्, अजातशत्रु-अण्। १ युधिष्ठिरके अपत्य, धर्मराजके लड़के। २ अजातशत्रु नामक राजाके अपत्य। ३ भद्रसेन नामक राजा।

[illegible] (सं० स्त्री०) आ-जन्-क्तिन्। १ आजनम, [illegible]न्म। (अव्य०) जातिपर्यन्तम्, सीमार्थे [illegible] जन्म पर्यन्त, जन्मभर। २ जातिपर्यन्त,

आज़ाद (फ़ा० वि०) १ मुक्त जो बंधा न हो। २ निश्चिन्त, बेपरवा। ३ स्वतन्त्र जो मातहत न हो। ४ निर्भय, बेखौफ़। ५ स्पष्टभाषी, बेधड़क बोलनेवाला। ६ उद्दत, धक्कड़। ७ परिश्रम, जो मरीज़ न हो। ८ नामधाम रहित, गुमनाम। (पु०) ८ साधु-सम्प्रदाय विशेष, एक फ़कीर। यह मुसलमान होते और दाढ़ी, मूंछ तथा भौं मुंड़ा डालते हैं। इनमें न तो कोयी रोज़ा रखता और न नमाज़ ही पढ़ता है। आज़ाद किसी स्त्रियसे शादी और बड़े तवाही होते हैं।

आज़ादगी (फ़ा० स्त्री०) आज़ादी, स्वतन्त्रता।

आज़ादाना (फ़ा० वि०) आज़ाद, स्वतन्त्र, जो मातहत न हो।

आज़ादी, आज़ादगी देखो।

आजाद्य (स० त्रि०) धर्म ह्रास पत्ति तक मुले रखनम् धर्म-यद्-यत् मर्यादि० यत् उप० समा०। धतमयाद भूमिका अपत्र। (स्त्री०) ङीप् ष-ङीष्। आजादी। धनमयाद भूमिकी कन्या।

आजान (सं० पर्य०) जनो जननीय जन-घञ् सीमार्थे पञ्चमी०। १ सृष्टिकाल पर्यन्त, दुनिया रहने तक। (पु०) २ उत्पत्ति, पैदायश। ३ जन्मभूमि वतन।

आजानज (स० त्रि०) आजाना जायते, आजान जन-ड। सृष्टिकाल पर्यन्त जात, दुनियाके बननेतक पैदा हुआ। वेद दो प्रकारके होते हैं, आजानदेव और कर्मदेव। सृष्टिकाल-प्रकाशित आजान और कर्मकाल प्रकाशित कर्मदेव कहाते हैं।

आजानदेव (स० पु०) आजानं सृष्टिकालात् प्रभृति देव देवक्रमात्। विरमसिद्ध या कर्मद्वारा प्रकाशित न होनेवाले देव।

आजानि (वै० स्त्री०) आ जन अन्तर्मूतण्यर्थे इनि जायतीति दीर्घः। १ उत्पत्ति, पैदायश। २ नेक कुल, मरीफ़ ख़ानदान। ३ माता, मा।

"आजानीरस्मै भवे।" (ऋक् ।)

आजानिक (सं० स्त्री०) आजानी भवम्, ठञ् तस्य अयादी पुरो० यत्। आजान-सिद्ध पदार्थका भाव और कर्म, पैदायशसे साबित चीज़का क़याम और काम।

आजाम् (स० अव्य०) आदि या मुठभेड़तक।

आजायुधाय (स० त्रि०) मुठभेड़तक सम्मे चायमवाला।

आजानेय (स० पु०) आदि विपक्षमध्ये पानेयो सुवार्थम्। १ कुलीन अश्व, पठड़ा घोड़ा। (त्रि०) २ कुलीन, ख़ुशज़ात, बढ़िया।

आजानेय (वे० त्रि०) कुलीन, ख़ुशज़ात, बढ़िया।

आजायन (सं० पु०) अजस्यापत्यम् नड़ादि० फक्। १ अज नामक राजाके अपत्य। २ अज नामक ब्राह्मणके लड़के।

आज़ार (फ़ा० पु०) रोग, बेदना दर्द, बीमारी। २ कष्ट, मुसीबत।

आजि (स० पु० स्त्री) अजन्त्यस्याम् ख्य् जिन्दा-रुपवाहकि०। बहुत्रीनाव। कप् ।११। १ समरभूमि लड़ायीका मैदान्। २ संग्राम, लड़ायी।

"आजि च नाम।" (ख्वमत्त)

३ समतल क्षेत्र, हमवार मैदान्।

"आजि" काल्… धन्धुली न व यात्री। (वैदिकी)

४ क्षण, लमहा। ५ मार्ग राह। भावे ख्य्। ६ आक्षेप, मारधार। ७ दौड़का खेल।

आजिकृत् (वै० त्रि०) १ पुरस्कारके लिये लड़नेवाला, जो इनाम पानेको दौड़ रहा हो। २ युद्ध करनेवाला, जो लड़ रहा हो।

आजिक्रिया (स० स्त्री०) युद्ध, लड़ायी, हलाहली।

आजिगीषु (सं० त्रि०) जयप्रार्थी, हौसलेमन्द, सबक़त ही चाहनेवाला। ख़्वाहिश रखनेवाला।

आजिमय (स० त्रि०) शीघ्र या लड़नेवाला।

आजिम (अ० वि०) १ बड़ीम, बड़ा। २ परिमाण, गुल।

आजिज़ी (अ० स्त्री०) ग़रीबी मुसाफ़िरियत, नम्रता, दीनता।

आजिजासेन्य (वे० त्रि०) १ धनुसन्धानके योग्य जांचने क़ाबिल।

आजितुर (वे० त्रि०) युद्धमें विजय पानेवाला जो लड़ायीमें जीतता हो।

आजिनीय (सं० त्रि०) अजिन चतुरर्थ्यां कृशाश्वादि० छण्। चर्मके निकटस्थ, चमड़ेके पासवाला। यह शब्द देशादिका विशेषण है।

आजिपति (वै० पु०) युद्धके स्वामी, लड़ायीके मालिक।

आजिरि (सं० त्रि०) अजिर चतुरर्थ्यां सुतङ्गमादि० इञ्। १ अङ्गनके समीपस्थ, इहातेके पास होनेवाला। २ चबूतरेके पासवाला। यह शब्द स्थानादिका विशेषण है।

आजिरेय (सं० त्रि०) अजिर शुभ्रादि० ढक्। अजिरसे उत्पन्न होनेवाला, जो आंगनसे पैदा हो।

आजिहीर्षा (सं० स्त्री०) आहर्तुमिच्छा, आ-हृ-सन् भावे अ प्रत्ययादिति अ टाप्। आहरणकी इच्छा, चोरी करनेका लालच।

आजिहीर्षु (सं० त्रि०) आहरण करनेकी इच्छा रखनेवाला, जो माल उड़ा देना चाहता हो।

आजीकूण (सं० क्ली०) आजीं कुणति आहृणोति यस्मिन्, आजी-कुण आधारे क। मर्यादा रखनेवाला देश, जो मुल्क इज्जत बचाता हो।

आजीगर्ति (सं० पु०-स्त्री०) अजीगर्तस्यापत्यम्, अजीगर्त-वाह्वादि० इञ्। अजीगर्तका पुत्र वा कन्या-रूप सन्तान।

आजीव (सं० पु०) आ-जीव्यते ऽनेन, आ-जीव करणे घञ्। १ जीवनोपाय द्रव्यादि, जिन्दगी बख्शनेवाली चीज वगैरह। २ उपाय, तदवीर। प्राचीन शास्त्र-कारोंने लिखा है,—अन्नप्राशनके दिन दाल-भात खिलाने बाद लड़केके सम्मुख वस्त्र, अस्त्र, पुस्तक, लेखनी, स्वर्ण, रौप्य प्रभृति रख देना चाहिये। बालक सकल द्रव्यमें जिसे हाथसे पकड़े, वही उसका जीवनो-पाय होगा। आ-जीव भावे घञ्। ३ जीवनके निमित्तका अवलम्बन, माश, पेशा। आजीवति, कर्तरि अच्। ४ जीवनोपायकारी, पेशाकश। आजीवति कर्म नृपमाश्रित्य वा, आ-जीव-अण्, उप० समा०। ५ किसी कर्मके अवलम्बनसे जीवित रहनेवाला। ६ राजाके आश्रयसे जीनेवाला। ७ प्राचीन भिक्षु सम्प्र-दाय विशेष।

आजीवक—१ अति प्राचीन धर्मसम्प्रदाय। कोई कोई इस सम्प्रदायको जैन सम्प्रदायकके ही अन्तर्गत बताते हैं। किन्तु भगवतीसूत्र और आचाराङ्गसूत्र पाठ करनेसे मालूम होता, कि आजीवक सम्प्रदाय जैन सम्प्रदायसे भिन्न है। शेष तीर्थङ्कर महावीरस्वामीके समसामयिक मङ्खलीपुत्र गोशाल इस सम्प्रदायके एक प्रधान आचार्य थे। भगवतीसूत्रसे जाना जाता, कि मङ्खली नामक एक भिक्षुके औरस और उनकी पत्नी भद्राके गर्भसे गोशाल-का जन्म हुआ था। इसीसे उनका नाम मङ्खलिपुत्र-गोशाल पड़ा। महावीरस्वामीने संसार छोड़ने और भिक्षुकजीवन ग्रहण करनेके बाद दूसरे वर्ष जब राजगृहके समीपवर्ती किसी तन्तुवायके घरमें उप-वास किया, उसी समय वहां सामान्य भिक्षुक-रूपसे गोशाल भी जा पहुंचे। गोशाल महावीर-स्वामीका परिचय पाकर उनके शिष्य होनेको उद्यत हुये थे। किन्तु महावीरस्वामीने यह बात न सुनी। उसके बाद जब महावीरने कूल्लाग-ग्राममें आकर बहुल नामक ब्राह्मणके घर अवस्थान किया, तब गोशालने फिर भी वहां पहुंचकर उनका पैर पकड़ लिया था। उस समय महा-वीरने गोशालकी प्रार्थना पूर्ण की। फिर ६ वर्ष गोशाल उनके सङ्ग शिष्य रूपसे रहे एवं उसी समयसे क्रमशः सुख, दुःख, रति, विरति, मोक्ष और बन्धन प्रभृति विषय समझने लगे। पीछे कूर्मनामक ग्राममें महावीरके साथ गोशालका मत भेद हुआ। राहमें फलपुष्पशोभित तिल वृक्षको देखकर गोशालने महावीर स्वामीसे जिज्ञासा की,—यह वृक्ष मरेगा या नहीं एवं मरनेके बाद इसके सप्तजीवका क्या परिणाम होगा। महावीर स्वामीने उत्तर दिया,—वृक्ष मर जायगा, किन्तु इसी वृक्षके बीजसे पुनः सप्तजीव उत्पन्न होगा। गोशालने उनकी बातपर विश्वास न कर वृक्षको उखाड़ डाला था। कयी मास बाद दोनों जब उस स्थानको वापस गये, तब यह देख दङ्ग रह गये, कि पानी पड़नेसे उसी तिलका एक बीज पेड़ हो गया था। महावीरस्वामीने गोशालसे कहा,—इमने

उनके पूर्वमें जो बताया, उसका प्रथम प्रमाण देख लीजिये, उसका रूप मर गया था, परन्तु उसीके जीवसे मतल रूप उत्पन्न हुआ। गोशाल फिर भी उनको बातपर विश्वास कर न सके और पीछेका एक जीव उठा उसको बात नोच-नोचकर देखने लगे कि प्रकृत हो उसमें सब अति सूक्ष्म आत रहने थे। इसीसे गोशालको धारणा हुई, केवल उद्भवता ही नहीं—उसके जीवका जन्मान्तर सम्भव है। फिर कठोर योगसाधन कर गोशालने असामुषिक क्षमता प्राप्त किये एवं स्वयं एक जिनके नामसे परि चित हुये। किन्तु महावीरस्वामीने उनका कभी जिनत्व स्वीकार किया न था। निर्ग्रन्थ एव आजीवक सम्प्रदायके मध्य बहुत दिनतक परस्पर द्वेषभाव रहा। आजीवकगणको विश्वास था,—परिणाममें मोक्ष या परममार्ग पानेपर सब जीवोंको चौरासी लाख कल्प सप्त देवयोनि सप्त मनुष्ययोनि, सप्त जीवयोनि और सप्त जन्मान्तर अतिक्रमण करना पड़ता है।

बौद्ध सम्प्रदायका 'समणफलसुत्त' पढ़नेसे मालूम कर सके, कि महाराज अजातशत्रुसे मङ्खलिपुत्र गोशाल मिले थे। अजातशत्रुने बुद्धसे गोशालका मत इसतरह प्रकट किया,—

"महाराज! वितरण, दान, बलिविधान, पुण्य, पाप, पापपुण्यका फलाफल, वर्तमान जगत् स्वर्ग मर्त्य, पिता, माता, देव, अप्सरा, जीवलोक, श्रमण, ब्राह्मण आदि कहीं कुछ भी नहीं होता और न उसको विद्यमानताका कोई प्रमाण ही दे सकता है। जो लोग इन द्रव्योंका अस्तित्व बताते वह झूठे हैं।"*

'भगवतीसूत्र'में भी देखते हैं,—"जब मङ्खलि पुत्र गोशाल चौबीस वर्ष प्रव्रज्यामें बिता चुके, तब श्रावस्तीके कुम्भार बाजारमें हालाहला नाम्नी कुम्भा रिनके साथ रहने और आजीवक मत चलाने लगे। किसी समय निम्नलिखित छ दीक्षाचर उनके पास पहुंचे थे,—शान, कलन्द, कर्णिकार, अच्छिद्र अग्नि वैशायन और अर्जुन गोमायुपुत्र। उन्होंने इन दश पुस्तकोंसे अपनी बुद्धिके अनुसार कुछ वाक्य उद्धृत किये—'दिव्य, गीत्पात आन्तरिक्ष, भौम्य अङ्ग स्वर, लक्षण व्यञ्जन, गीतमार्गवचन और नृत्य मार्गवचन। उपरोक्त दश पुस्तकोंमें पहले आठ पूर्व और पिछले दो मार्गका अंश है। उन्हीं दीक्षाचरोंने गोशालका भी मत माना था। गोशालने स्वयं महानिमित्त मतसे अपने लिये छ विषय चुने थे,— मुक्ति, अमुक्ति सुख, दुःख जीवन और मरण।"

उद्धृत प्रमाणको देखकर कहा जा सकता, कि मङ्खलिपुत्र और शेष तीर्थंकर महावीर स्वामीके अभ्युदयसे पहले ही आजीवक सम्प्रदाय चल पड़ा था। सम्राट् अशोकके पौत्र दशरथके अनुशासनसे मालूम हुआ, कि उन्होंने आजीवक भिक्षुओंको सेवाके लिये कितना ही दान दिया।

आजीवन (सं० क्ली०) आ जीव्यतेऽनेन आ-जीव करणे ल्युट्। १ वृत्तिका उपाय पेशेकी फिक्र। भावे ल्युट्। २ जीवनके निमित्त उपायका ग्रहण, जिन्दगीके लिये पेशाकशी। 'जीवनाजीवनार्थेच'। (स्मृति) (अव्य०) ३ जीवन पर्यन्त, उम्र भर।

आजीवनार्थ (सं० पु०-क्ली०) वृत्ति पेशा कामकाज।

आजीविका (सं० स्त्री०) आजीवयति, आ-जीव णिच् ण्वुल्, णिच् लोप। जीविकावृत्ति, जीवनके धारणका उपाय, पेशा काम रोजी, रोजगार।

आजीविन् (सं० पु०) १ आजीविका युक्त पेशेवाला, रोजगारी। २ भिक्षु विशेष। आजीवक देखो।

आजीव्य (सं० क्ली०) आ-जीव्यतेऽनेन, बाहु० करणे ण्यत्। १ जीवनोपाय कृष्यादि, रोजी, रोजगार। २ वृत्तिके निमित्त अवलम्बनीय नृपादि, रोजगारके लिये पकड़े जानेवाले बड़े आदमी। आजीव्यतेऽत्र, आधारे बाहु० ण्यत्। ३ आजीवन देश, जिस मुल्कमें जीयें। (त्रि०) ४ जीवनोपायके सदृश अभ्यास किया जानेवाला, जो रोजगारकी तरह मदद किया जा सकता हो। ५ वृत्तिके योग्य, जो रोजगार देता हो। ६ काममें रखने काबिल। ७ सम्पन्न, जिसे कहा हुआ।

आजु आज देखो।

आजुर् (सं० स्त्री०) आ-ज्वर क्विप् ऊट्। १ प्रयो-

* Vide Bunyiu Nanjio's Chinese Tripitaka No. 545.

धित श्रम, वेगार। २ नरकके प्रति व्यसन, जहन्नुमके तयीं सुपुर्दगी।

आज्ञ (सं० त्रि०) आजयति, आ-जु क्विप् दीर्घः। वेतनरहित कर्मकारक, वेगारी।

आज्ञप्त (सं० त्रि०) आ-ज्ञा-णिच् पुक् स्वः क्त। या दान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्टच्छन्नज्ञप्ताः। पा ७।२।२७। आदिष्ट, जो हुक्म पा चुका हो।

आज्ञप्ति (सं० स्त्री०) आ-ज्ञा-णिच् पुक् ह्रस्वः क्तिन्। आज्ञा, हुक्म, इत्तिला।

आज्ञा (सं० स्त्री०) आ-ज्ञा-अङ्-टाप्। १ आदेश, हुकम। २ अनुमति, इजाजत।

आज्ञाकर (सं० त्रि०) आज्ञां आदेशं करोति प्रतिपालयति, आज्ञा-कृ-ट, उप० समा०, आज्ञया करोति, आज्ञा-कृ-अच्, ३-तत् वा। १ आदेशप्रति पालक, हुक्म माननेवाला। (पु०) २ आज्ञानुसार कार्यकारी भृत्यादि, हुक्मके मुताबिक काम करनेवाला नौकर।

आज्ञाकरण (सं० क्ली०) अनुवर्तन, वश्यता, फ़रमांबरदारी।

आज्ञाकरत्व (सं० क्ली०) भृत्यका धर्म, नौकरका काम।

आज्ञाकारी, आज्ञाकर देखो। (स्त्री०) आज्ञाकारिणी।

आज्ञागत (सं० त्रि०) आज्ञां आदेशं गतं प्राप्तम्, २-तत्। १ आज्ञाप्राप्त, हुक्म पाये हुआ। ३-तत्। २ आज्ञा द्वारा गत, जो हुक्मसे गया हो।

आज्ञाचक्र (सं० क्ली०) आज्ञाख्यं चक्रम्, शाक० तत्। तन्त्रप्रसिद्ध देहस्थ, सुषुम्ना नाड़ीके मध्यगत, भ्रूमध्यस्थित, द्विदल एवं पद्माकार चक्र विशेष।

"मूलाधार-स्वाधिष्ठान मणिपुरकानाहत-विशुद्धाज्ञाख्यानि षट्चक्राणि विन्द्यात्।" (भूतशुद्धि)

षट्चक्रका आज्ञापद्म द्विदल होता, जिसके एक दलमें 'ह' और दूसरेमें 'क्ष' वर्ण रहता है। यह श्वेतवर्ण है। आज्ञाचक्रके मध्य शुक्लवर्णा, षण्मुखी एवं ज्ञानमुद्रा-चिह्निता हाकिनी शक्ति वास करती है। आज्ञापद्मका ध्यान धरनेसे साधक अन्यके शरीरमें घुस और मुनिश्रेष्ठ, सर्वदर्शी, सर्वज्ञ तथा सकलका हितकारी हो सकता है।

आज्ञात (सं० त्रि०) आ-ज्ञा-क्त। १ सम्यक् ज्ञात, अच्छीतरह समझा हुआ। २ आज्ञाप्राप्त, हुक्म पाये हुआ। (पु०) ३ शाक्य मुनिके पहले पांच शिष्योंमें एकका नाम।

आज्ञातीर्थ (सं० क्ली०) ६-तत्। आज्ञा चक्र। रुद्रयामल तन्त्रके आज्ञाचक्रमें मानस-स्नान करनेको लिखनेसे उसका नाम आज्ञातीर्थ पड़ा है।

आज्ञाढ (वै० पु०) आदेशकर्ता, हुक्म देनेवाला।

आज्ञान (सं० क्ली०) आ-ज्ञा-ल्युट्। १ आज्ञाप्रदान, हुक्मका देना। २ मानस वृत्ति विशेष। आज्ञान वा प्रज्ञानके पर्याय यह हैं,—संज्ञान, विज्ञान, प्रज्ञान, मेधा, दृष्टि, धृति, मति, मनीषा, जुति, स्मृति, सङ्कल्प, क्रतु, असु, काम और वश। आज्ञान अन्तःकरण संज्ञक सकल ज्ञानकी उपलब्धिका कर्ता है। अन्तःकरण वृत्ति प्रज्ञानरूप ब्रह्मसे वाह्य और अन्तर्वर्ती विषयपर आश्रित रहती है। शाङ्करभाष्यमें इसकी विवृति यों बनी है,—संज्ञान संज्ञप्ति चेतनभाव, आज्ञान आज्ञप्ति ईश्वरभाव, विज्ञान कलादि परिज्ञान, प्रज्ञान प्रज्ञप्ति प्रज्ञता, मेधा ग्रन्थधारणका सामर्थ्य, दृष्टि इन्द्रिय द्वारा सकल विषयकी आकाङ्क्षा और वश स्त्रीसङ्ग विषयक अभिलाष।

आज्ञानुग (सं० त्रि०) आज्ञां आदेशं अनुगच्छति, आज्ञा-अनु-गम-ड, ६-तत्। स्वामीके आज्ञानुसार गमनकारी, मालिकके हुक्म मुताबिक चलनेवाला।

आज्ञानुगत, आज्ञानुग देखो।

आज्ञानुगामिन् (सं० त्रि०) आज्ञामनुगच्छति, आज्ञा-अनु-गम-णिनि, ६-तत्। आज्ञानुसारी, हुक्मके मुताबिक जानेवाला। (स्त्री०) आज्ञानुगामिनी।

आज्ञानुयायिन् (सं० त्रि०) आज्ञामनुयाति, आज्ञा-अनु-या-णिनि, ६-तत्। आज्ञानुसार गमनकारी, हुक्मके मुताबिक चलनेवाला।

आज्ञानुवर्तिन् (सं० त्रि०) आज्ञां अनुवर्तते, आज्ञा-अनु-वृत-णिनि, ६-तत्। आज्ञानुसार वर्तमान, हुक्मपर हाज़िर होनेवाला।

आज्ञानुसारिन् (सं० त्रि०) आज्ञामनुसरति, आज्ञा-अनु-सृ-णिनि, ६-तत्। आज्ञानुसार कर्मकारी, हुक्मके मुताबिक काम करनेवाला।

आज्ञापक (सं० त्रि०) आज्ञापयति आदिशति, आ-ज्ञा णिच्-पुक्-ण्वुल् णिच् लोप। आदेशक, अनुमति-कर्ता, हुक्म देनेवाला।

आज्ञापत्र (सं० क्ली०) आज्ञाज्ञापकं पत्रम् मध्य० लत्। आदेशज्ञापक पत्र, हुक्मनामा।

आज्ञापन (सं० क्ली०) आदेश, हुक्म, इत्तिला।

आज्ञापालक आज्ञानुग देखो।

आज्ञापित (सं० त्रि०) आदिष्ट किया हुआ, जो हुक्म पा चुका हो।

आज्ञाप्य (सं० त्रि०) आदेश पानेवाला, जिसे हुक्म मिले।

आज्ञाप्रतिघात, आज्ञाभङ्ग देखो।

आज्ञाभङ्ग (सं० पु०) आज्ञाया आदेशस्य भङ्ग यत्र लत्। आदेशका अमान्यकरण, नाफ़रमानी हुक्मउदूली।

आज्ञावह (सं० त्रि०) आज्ञां वहति आज्ञा-वह अच्। आज्ञानुसार कार्यकारी, हुक्मके मुताबिक़ काम करनेवाला।

आज्ञासम्पादिन् (सं० त्रि०) आज्ञां सम्पादयति, आज्ञा-सम-पद् णिच्-णिनि णिच् लोप। आदिष्ट विषय-सम्पादक, बताया हुआ काम करनेवाला।

आज्य (सं० क्ली०) आ सम्यक् अज्यते अक्ष्यते अनेन आ अञ्ज कर्मणि बाहु० क्यप्, न लोप। १ घृत, घी। २ हवि। ३ श्रीवास, तारपीनका तेल। ४ सामिक गीत विशेष।

आज्यदोह (सं० पु०) सामवेदीय आज्य सूक्तविशेष। इसमें तीन ऋचा रहती और जप या पाठ करनेसे पवित्रता आती है। सामग यह मन्त्र पढ़ते हैं,— वामदेव्य, रथन्तरसाम, ज्येष्ठसाम, रथन्तर, पुरुषव्रत बृहत्साम, आज्यदोह, साम आग्नेय, आयुर और पश्चात् द्वारपालकत्रय। इनमें तीन देवव्रतसंज्ञक हैं।

आज्यप (सं० पु०) आज्यं पिबति, आज्य-पा क, उप० समा०। १ पुलस्त्यके पुत्र और वैश्योंके पितृदेव। वाहिपुराणमें लिखा है—

"सोमपा नाम विप्राणां क्षत्रियाणां हविर्भुजः।
वैश्यानामाज्यपा नाम शूद्राणान्तु सुकालिनः॥
सोमपास्तु कवेः पुत्रा हविष्मन्तोऽङ्गिरःसुताः।
पुलस्त्यस्याज्यपाः पुत्रा वशिष्ठस्य सुकालिनः॥ (मत्स्यपु०)

अर्थात् ब्राह्मणोंके सोमप, क्षत्रियोंके हविर्भुज, वैश्योंके आज्यप और शूद्रोंके पितृदेव सुकालिन हैं। भृगुआचार्यके सोमप अङ्गिराके हविष्मत् पुलस्त्यके आज्यप और वशिष्ठके पुत्र सुकालिन रहे। आदि पितृदेव होनेसे इनके तर्पण करनेका विधान है।

आज्यपा, आज्यप देखो।

आज्यपात्र (सं० क्ली०) हवनभाजन विशेष, घी रखनेका बरतन।

आज्यभाग (सं० पु०) आज्यस्य भागः, ६ तत्। १ घृतका अंश देय, घीका कोई हिस्सा। २ घृतकी वैदिक आहुति। उत्तरकी ओर स्रुव द्वारा अग्निके ईशान्य जो आहुति ऋग्वेदी देते, उसे आज्यभाग कहते हैं। फिर अग्निको दक्षिण ओर सोमके उद्देश्य दीयमान आहुति भी आज्यभाग होती है। यजुर्वेदी अग्निके उत्तर पूर्वार्धमें 'अग्नये स्वाहा' एवं 'इद-मग्नये' और दक्षिण-पूर्वार्धमें 'सोमाय स्वाहा' तथा 'इदं सोमाय' कहकर जो आहुति डालते वह भी आज्यभाग कहाते हैं। 'अग्नये स्वाहा' और 'सोमाय स्वाहा' अग्निमें आहुति देनेके मन्त्र हैं। 'इदमग्नये' और 'इदं सोमाय' दोनो मन्त्र पात्रमें आज्यभाग रखते समय पढ़े जाते हैं।

आज्यभुक्, आज्यभुज् देखो।

आज्यभुज् (सं० पु०) आज्य मन्त्रेण विधिवद्दत्तं घृतं भुङ्क्ते, आज्य-भुज क्विप्। देवता अग्नि, घृत घृत खानेवाले।

आज्यवारि (सं० पु०) घृतका समुद्र, घीका बहर।

आज्यस्थाली (सं० स्त्री०) आज्यपात्र देखो।

आञ्चन (सं० क्ली०) शरीरसे कण्टकों या बाणोंका औषधिक निष्कर्षण जिससे कांटों या तीरोंका कुछ कुछ निकास।

आञ्छन (सं० क्ली०) अस्थि या पादका सन्धिवेश ढलने या पैरका बैठाना, मानो ऐंठा, छूटा या खोंचकर अपनी जगह फिर लाना।

आञ्जन (सं० क्ली०) आ-अञ्ज ल्युट्। १ समन्ता-

दभ्यञ्जन, सकल दिक्में कज्जल, गहरी कालिक। अञ्जनायां भवः, अण्। अञ्जनाके पुत्र हनूमान्। (त्रि०) अञ्जनस्येदम्, अण्। २ अञ्जन सम्बन्धी, सुरमयी। (स्त्री०) आञ्जनी।

आञ्जनाभ्यञ्जनीय (सं० क्ली०) उत्सवविशेष, एक जलसा। (स्त्री०) आञ्जनाभ्यञ्जनीया।

आञ्जनिक्य (सं० क्ली०) अञ्जनाय हितम्, अञ्जन-ठन् ततः पुरो० भावे कर्मणि च यक्। प्रत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्। पा ४।१।१२८। अञ्जन साधनत्व, सुरमेका कामान।

आञ्जनीकारी (सं० स्त्री०) अञ्जन लगाने या बनाने-वाला स्त्री, जो औरत सुरमा लगाती या बनाती हो।

आञ्जनेय (सं० पु०) अञ्जनाया अपत्यम्, ढक्। स्त्रीभ्यो ढक्। पा ४।१।१२०। अञ्जनाके गर्भजात हनमान्।

आञ्जलिक्य (सं० क्ली०) अञ्जलिरेव, स्वार्थे कन् ततः पुरो० भावे कर्मणि च यक्। अञ्जलिका बनाव, दोनो हाथका एकत्र मिलान।

आञ्जिक (सं० पु०) दानव विशेष।

आञ्जिनेय (सं० पु०) अञ्जिन्यां भवः, ढक्। सरी-सृप विशेष, किसी किस्मका गिरगिट।

आट (सं० पु०) सर्पविशेष, किसी सांपका नाम।

आटना (हिं० क्रि०) मूंदना, दबाना, छिपाना, तोपना।

आटरुप, आटरूष देखो।

आटरूप (सं० पु०) अटरूष एव, स्वार्थे अण्। वासक वृक्ष, अडूसेका पेड़। अटरूष देखो।

आटलाण्टिक महासमुद्र—आटलाण्टिक नामक महा-सागर, आटलाण्टिक बहरे-आज़म। (Atlantic Ocean) यह यूरोपीय पश्चिम तट एवं अफ़रीका और उत्तर तथा दक्षिण अमेरिकाके पूर्व तट बीच अवस्थित है। भूमध्यरेखा इसे उत्तर तथा दक्षिण आट-लाण्टिक नामक दो भोगमें विभक्त करती है। उत्तर आटलाण्टिक अपनी लम्बी तटरेखाके लिये प्रसिद्ध है। इससे कितने ही उपसागर मिले, जिनमें पश्चिम-की ओर करीबियन सागर, मेक्सिकोका अखात, सेण्ट-लारेन्सका समुद्रबङ्क एवं हडसन-खाड़ी और पूर्वपर भूमध्य, क्षष्ण, उत्तर तथा बालटिक सागर प्रधान है। किन्तु दक्षिण आटलाण्टिककी तटरेखा बहुत छोटी है। इसमें भीतरी सागर देख नहीं पड़ते।

उत्तर आटलाण्टिकका क्षेत्रफल १३२६२००० और दक्षिण आटलाण्टिकका १२६२७००० वर्गमील लगता है। पृथिवीको कितनी ही बड़ी-बड़ी नदियां आटलाण्टिक महासमुद्रमें आकर गिरती हैं। कोयी अक्षा० ५०° उ०से ४०° दक्षिण तक इसमें पानीके नीचे जो पहाड़ पड़ता, उसकी गहराईका औसत १०२०० फीट है। आटलाण्टिक महासमुद्रके प्रधान-प्रधान द्वीप नीचे लिखे जाते हैं,—भूमध्यसागरस्थ द्वीप, आयिसलैण्ड, हटिश आयिल्स, अज़ोरेस, मदिरा, कनारीज़, केप वर्ड द्वीप, असेनसन, सेण्ट हेलना, ट्रिष्टन दा कुनहा और बोवेट द्वीप।

उत्तर आटलाण्टिककी ३४०८८ और दक्षिण आटलाण्टिककी गहरायी औसतमें २५१३८ फीट है। आटलाण्टिक महासमुद्रके तलमें मृदुमृत्तिका भरी है। सकल महासमुद्रोंसे इसका जल खारी है। मालूम होता, कि आटलास पर्वत अथवा काल्पनिक आटलाण्टिस द्वीपसे यह नाम निकला है।

आटविक (सं० त्रि०) अटव्यां चरति भवो वा, ठक्। १ अरण्यचारी, जङ्गलमें रहनेवाला। २ वन्य, जङ्गली। (पु०) ३ लकड़हारा। ४ अरण्यचारी सैन्य विशेष, जङ्गलमें लड़नेवाली फ़ौज। सैन्य छः प्रकारका होता है,—१ मौल, २ भृत्य, ३ सुहृत्, ४ श्रेणी, ५ द्विषद् और ६ आटविक। (रघु० ८।२६)

आटवी (सं० स्त्री०) अटव्याः सन्निकृष्टो पूः, अण्। दक्षिण दिक्स्थ यवनपुरी विशेष। महाभारतमें इस नगरीका वर्णन मिलता है।

आटव्य (सं० पु०) उपाध्याय विशेष, किसी उस्ताद-का नाम। वायुपुराणमें इनका वर्णन है।

आटा (हिं० पु०) १ अन्नका चूर्ण, पिसान। २ बुकनी।

आटि (सं० पु० स्त्री०) आ सम्यक् अटति, आ-अट् बाहु० इण्। १ शरारिपक्षी, एक चिड़िया। २ मत्स्य विशेष, कोई मछली।

धारीदार होता है। २ स्थूलकाठ, शहतीर। ३ दारु-फलक, लकड़ीका तख्ता। यह नाव या जहाजकी बग़लमें लगता है। ४ लकड़ीका सामान। इस पर जुलाहे सूत फैलाते हैं। ५ नौ मात्राका ताल विशेष। इसका ठेका इसतरह बजाते और एक खाली तथा तीन ताल भरे लगाते हैं,—

+ । । + १ । । + ० ।
धिधि ताधि धिता तिति
। × १ । । ×
नाधि धिधा : : ।

(वि०) ६ वक्र, तिरछा। (स्त्री०) आड़ी।

आड़ाखेमटा (हिं० पु०) ताल विशेष। इसमें कोई बारह और कोई साढ़े तेरह ताल बताते, जिसमें एक खाली तथा तीन भरे रहते हैं। ठेकेका बोल यह है,—

+ । । । १ । ।
धागे त्रेकेटे धेने धागे धागे
। ० । । । १ ।
तेने · ताके त्रेकेटे धेने धागे
। ।
धाग धेने : : ।

आड़ाचौताला (हिं० पु०) सात मात्राका ताल विशेष। इसमें चार ताल भरे और तीन खाली पड़ते हैं। यह छोटा चौताला भी कहाता है। मृदङ्गका हाथ इसतरह निकालते हैं,—

+ । १ । ० । १ ।
धागे धादा धिन्ता कत्ति
० । १ । ० ।
नाधा त्रेकेट्धा धिन्ता : : ।

आड़ाठेका (हिं० पु०) ताल विशेष। आड़ा देखो।

आड़ाना, अड़ाना (हिं० पु०) जंगला राग विशेष। यह दो प्रकारका है। एकमें सुघरायी, कान्हरा एवं सारङ्ग और दूसरेमें सोरठ वा मलार तथा कान्हरा मिला रहता है। अड़ानेमें सारङ्गका ही भाग अधिक लगता है। स्वरग्राम यह हैं,—

नि स ऋ ग म प ध

आड़ापञ्चताल (हिं० पु०) ताल विशेष। इसमें पांच आघात और नौ मात्रा देते हैं। ठेकेकी चाल यों है,—

+ १ १
धि तिर किट धिना धि धि ना
१
ना तुना कत्ता धि धि ना धि धि ना।

आडारक (सं० पु०) आङ उद्यमे घञ्, तत आरक्। ऋषिविशेष।

आड़ालोट (हिं० पु०) चाञ्चल्य, तलव्वन-मिज़ाजी, कंपकंपी, सकुच।

आडि (सं० पु०-स्त्री०) आङ उद्यमे इण्। १ स्वनाम-ख्यात मत्स्यविशेष, एक मछली। २ शरारि पक्षी, एक चिड़िया। यह गृध्र-जैसी होती है।

आडिक, आडि देखो।

आड़िका, आडि देखो।

आड़ी (हिं० स्त्री०) १ ताल विशेष। किसी तालमें पूर्ण समयके तृतीय, षष्ठ वा द्वादश भागपर पूरा ताल लगानेका नाम आड़ी है। २ चर्मकारोंकी छुरी। ३ तर्क, ओर। ४ सहायक, मदद देनेवाली। ५ तिरछी। (सं०) आडि देखो।

आडीकी, आडि देखो।

आडु (सं० त्रि०) ईषदपि पानेके लिये चेष्टा करने-वाला, जो कोई चीज़ हासिल करनेमें लगा हो।

आडू (सं० पु०) अप दण्डकः स णित्, णित्वा-दुपधावृद्धिः शस्य डश्। अप्पो डश्। उण् १।८६। १ प्लव, बेड़ा, चौघड़ा। (हिं०) २ फल विशेष, एक मेवा। स्वादमें यह खटमिट्ठा होता और देहरादूनकी ओर बहुत उपजता है। इसका फल चौड़ा और गोल दो तरहका होता है। इसे शफ़तालू भी कहते हैं। ३ आड़ूका पेड़।

आढ़ (हिं० पु०) १ आढ़क, चार सेरकी तौल। (स्त्री०) २ आड, परदा। ३ आश्रय, सहारा। ४ अन्तर, फर्क। ५ आडि, एक मछली। ६ स्त्रियोंके मस्तकका आभूषण, टीका। (वि०) ७ आढ्य, भरा हुआ।

आढ़क (स० पु०) आढौक्यते व्याप्यते परिमाणार्थं गम्यते, आ-ढौक कर्मणि घञ्, पृषो० मौकारस्य ह्रस्वः। १ प्रस्थचतुष्टय परिमाण विशेष, चार सेर। २ परमनाप मित द्रव्य मान-विशेष, धनाज नापनेका काठका बरतन। इसमें चार सेर धन आता है। ३ प्रस्थ चतुष्टय चार सेरकी तौल। आठ मुष्टिका एक कुंचि, आठ कुंचिका एक पुष्कल और चार पुष्कलका एक आढ़क होता है। मतान्तरसे—१२ प्रसृतिमें १ कुडव ४ कुडवमें १ प्रस्थ और ४ प्रस्थमें १ आढ़क बैठता है। सुश्रुतमें लिखा भावादि तौलमें एक आढ़क २५६ पल होता है।

आढ़कवन्य (स० पु०) आढ़कमिता वन्यु यस्मिन् देशे, बहुव्री०। खूब अन्न पैदा होने देने मुल्कमें बड़े बड़े बासुन रहे।

आढ़कवन्युक (सं० त्रि०) श्रुतवन्युत्र देशवात, जो बड़े बड़े वासुनके मुल्कमें पैदा हो।

आढ़किक (सं० त्रि०) आढ़क सम्भवति अवहरति पचति वा, स ठञ् वा। १ आढ़क परिमित, जिसमें एक आढ़क द्रव्य रह सके। २ आढ़क परिमित बीज बोया हुआ, जिसमें एक आढ़क बीज डाल सकें। (स्त्री०) आढ़किकी।

आढ़किका, आढ़की देखो।

आढकी (स० स्त्री०) आढकेन मीयते आढक अण् जातित्वात् ङीप्। १ अरहर। यह श्वेत, रक्त और पीत भेदसे तीन प्रकारकी होती है। भावप्रकाश आढकी कषाय, मधुर, कफ एवं पित्तको शीतलेवाली, ईषत् वातकर, रूक्ष गुरु और ग्राहिणी रहती है। (राजनिघण्टु) वह तुवर रुक्ष, मधुर, शीतल, लघु, ग्राहिणी, वात जनने वाली और पित्त कफ तथा रक्तको शोतलेवाली है। (भावप्रकाश) अरहर कटु एवं कषाय होती और सरस पित्त भ्रम, कफ मूलबन्ध, गुल्म, ज्वर अरो चक, काम, छर्दि तथा हृद्रोगको दूर करती है। (चरकसंहिता) श्वेत दोषघ्नी, रक्त रूक्ष, पित्त एवं ताप मिटानेवाली, और पीत आढकी दीपन तथा पित्त दाहक है। (राजनिघण्टु) २ परिमाणभेद, चार सेरकी तौल। ३ सौराष्ट्रमृत्तिका, फुलचुदार मट्टी। ४ गोपी-चन्दन। ५ गन्धद्रव्य विशेष।

आढकीन, आढकिक देखो।

आढकीयूष (सं० पु० क्ली०) तुवरीयूष, अरहरका पानी। यह पथ्य होता है। (राजनिघण्टु) आढकीयूष मधुर, विशेषत वातनिवारक, शोषापह और पित्तकर है। (भावप्रकाश)

आढ़त (हिं० स्त्री०) व्यवसाय विशेष, एक रोज गार। इसमें व्यापारीका माल आढ़तिया अपनी दुकान पर रखता और कुछ दलाली ले कर बेच देता है। २ आढ़तो माल बिका देनेके बदलेका रुपया।

आढ़तदार आढ़तिया देखो।

आढ़तिया आढ़ती देखो।

आढ़ती (हिं० वि०) आढ़तसे सरोकार रखनेवाला।

आढीलक, आढ़ी कन देखो।

आढ्य (स० त्रि०) आ ध्यै क पृषो० साधु। १ धनी, दौलतमन्द। २ युक्त, मिला हुआ। ३ विशिष्ट भरा हुआ। ४ सम्पन्न कमोर। 'रस आड्यो धनी।' (अमर) (स्त्री०) आढ्या।

आढ्यक (सं० क्ली०) धन, बहुतायत, दौलत कसरत।

आढ्यकुलीन (सं० पु०-स्त्री०) आढ्यकुले भवः, ख। आढ्यकुल वाले जो ऊंचे खान्दानमें पैदा हो।

आढ्यहरण (सं० क्ली०) अनाढ्यमाढ्यहरोत्यमेन, आढ्य-कृ करणे ल्युट् सुम् उप० समा०। आढ्यसुभगस्थूल-पलितनग्नान्धप्रियेषु च्व्यर्थेष्वच्वौ कृञः करणे ख्युन्। पा ३।२।५६। अभ्यु दयका उपाय, बढ़नेका जरिया। (त्रि०) २ अभ्यु-दयकारी, दौलत देनेवाला। (स्त्री०) आढ्यङ्करणी।

आढ्यचर (स० त्रि०) भूतपूर्व आढ्यम् आढ्य-चरट्। भूतपूर्वे चरट्। पा ५।३।५३। पूर्वमें आढ्य, जो पहले दौलत मन्द रहा हो। (स्त्री०) आढ्यचरी।

आढ्यतम (सं० त्रि०) अतिशयेन आढ्यम् आढ्य तमप्। अतिशायने तमबिष्ठनौ। पा ५।३।५५। अतिशय आढ्य, निहायत दौलतमन्द।

आढ्यता (सं० स्त्री०) विभव, ऐश्वर्य, तालेवरी, मालदारी।

आढ्यपदि (सं० अव्य०) आढ्यं पदं यस्यं यत्र, दिदण्ड्यादि० इच्‌ इजन्तत्वादव्ययत्वम्। द्विदण्ड्यादिभ्यश्च। पा ५।४।१२८। आढ्यपद मनुष्ययुक्त भूमें।

आव्यपवन (सं० पु०) ऊरुस्तम्भ रोग, जांघका झोला।

आव्यम्भवन (सं० पु०) अनाढ्यं आढ्यं भवत्यनेन, आढ्य-भू करणे ख्युन् मुम्, उप-समा०। अनाढ्यको आढ्य बनानेवाला द्रव्य, जो चीज गरीबको अमीर कर देती हो।

आव्यम्भविष्णु (सं० वि०) अनाढ्यं आढ्य भवति, आढ्य-भू कर्तरि खिष्णुच् मुम्, उप० समा०। आढ्यता-प्राप्त, जो अमीर बन रहा हो।

आढ्यम्भावुक (सं० वि०) अनाढ्य आढ्य भवति, आढ्य-भू कर्तरि च्व्यर्थे खुकञ् मुम्, उप० समा०। आव्यम्भविष्णु देखो।

आंढ्यवात (सं० पु०) आढ्यो वातो यत्र, बहुव्री०। वातरक्त, वातरोगभेद, फालिज। वैद्यशास्त्रके मतसे कफ-मेदो-द्वारा आवृत हो ऊरुदेशमें वायु पहुंचनेपर यह रोग होता है।

आढ्या (सं० स्त्री०) अजमोदा, अजमोद।

आढ्याङ् (सं० वि०) आढ्य बननेकी चेष्टा करनेवाला, जो दौलत हासिल करनेमें लगा हो।

आणक (सं० वि०) अणकमेव, स्वार्थे अण्। १ अधम, कमीना। २ कुत्सित, खराब। (क्ली०) ३ समीपमें सो मैथुनका करना। ४ आना, रुपयेका सोलहवां हिस्सा। (स्त्री०) आणका।

आणव (सं० क्ली०) अणोर्भावः, पृथ्यादि० वा अण्। १ अणुत्व, सूक्ष्मता, खुर्दी, बारीकी। (त्रि०) २ अतिशय सूक्ष्म, निहायत बारीक।

आणवीन (सं० वि०) अणु-धान्यानां सर्षपादीनां भवनं क्षेत्रं वा, अणु-खञ्। सरसों-जैसा छोटा अन्न उत्पन्न करनेवाला, जिसमें छोटा अनाज बोयें। यह शब्द क्षेत्रादिका विशेषण है। (स्त्री०) आणवीना।

आणि (सं० पु०-स्त्री०) अण्-इण्। १ तन्नामक मर्मस्थान, आणि नामकी नाजुक जगह। यह स्नायुका मर्म होता और जानुके ऊर्ध्व भागमें दोनो पार्श्वपर तीन अङ्गुल बराबर रहता है। (सुश्रुत) २ अक्षाग्रकील, धुरेका कांटा। इससे पहिया बाहर निकल नहीं सकता। ३ गृहकोण, मकानका गोशा। ४ सीमा, हद। ५ असिधारा, तलवारकी बाढ़। (स्त्री०) आणी।

आणीवेय (सं० पु०-स्त्री०) अणिरस्त्यस्य वा दीर्घः आणीयः ऋषिविशेषः तस्यापत्यम्, शुभ्रादि० ढक्। आणीव ऋषिका पुत्र या कन्यारूप अपत्य। (स्त्री०) आणीवेया।

आण्ड (सं० वि०) अण्डे भवः, अण्। १ अण्डसे जन्म लेनेवाला, जो अण्डेसे पैदा हो। यह शब्द पक्षी, सर्प प्रभृतिका विशेषण है। (पु०) २ हिरण्यगर्भ ब्रह्मा। अण्डमेव, स्वार्थे अण्। ३ पुरुषका वृषण, अण्डकोष, फोता, बेला, खाया, खुसया, पेलड। अण्डं वृषणमस्त्यस्य, अण्। ४ अण्डकोषयुक्त, जिसके फोता रहे। अण्डेन निर्वृत्तम्, अण्ड-अण्। ५ अण्डनिष्पन्न कपालरूप आकाश एवं भूलोक। दो कपालसे जैसे घट बनता, वैसे ही परब्रह्म स्वमस्तुन अण्डके ही दो टुकड़े उतार आकाश एवं भूलोक तैयार करता; इसीसे इन दोनो लोकका नाम आण्ड पड़ा है। ६ अण्ड, अण्डा। ७ समुत्पन्न शावकगण, झोल।

आण्डज (सं० पु०) अण्डे जायते, अण्ड-जन-ड स्वार्थे अण्। १ अण्डजात पक्षी सर्पादि, अण्डेसे पैदा होनेवाले परिन्द सांप वगैरह। (क्ली०) २ अण्डजात जीवका शरीर, अण्डेसे पैदा होनेवाले जानवरका जिस्म। (वि०) ३ अण्डजात, अण्डेसे पैदा। (स्त्री०) आण्डजा।

आण्डवत् (सं० वि०) अण्ड वा वृषण-विशिष्ट, जिसके अण्डा या फोता रहे। (पु०) आण्डवान्। (स्त्री०) आण्डवती।

आण्डाद (वै० पु०) १ अण्डभक्षक, अण्डाखोर। २ दानव विशेष।

आण्डायन (सं० वि०) अण्डेन निर्वृत्तम्, अण्ड पक्षादि० फक्। अण्डनिर्वृत, अण्डनिष्पन्न, अण्डेसे निकला हुआ।

आण्डी (वै० स्त्री०) वृषण, फोता।

आण्डीक (वै० वि०) अण्डोत्पादक, अण्डे देनेवाला। जो पेड़ अण्डे-जैसे गोल-गोल फल रखता, वह आण्डीक कहाता है। (स्त्री०) आण्डीका।

आपक्षीर (सं० त्रि०) आपक्वमक्षय, आपक्व ईरच्। अश्मादीनांरेरितरी। पा ४।२।८०। १ पक्वयुक्त, पक्केदार। (पु०) २ पुरुष, नर। (स्त्री०) आपक्षीरा।

आपक्षीवत (सं० पु०) राजाविशेष।

आपक्षीवतायनि (सं० त्रि०) आपक्षीवतेन निर्वृत्तम्, अश्वादि० फिञ्। आपक्षीवत राजाकर्तृक निर्वृत्त, आपक्षीवत राजासे निकला हुआ।

आत् (वे अव्य०) १ अत-क्विप्। आत् इत्थ। वा ३।१।७५। अनन्तर, बाद, पीछे। (सं० पु०) २ आकार, आ।

आत (सं० त्रि०) आ-अत् अच्। १ सतत गत, प्रवृत्त, गुजरा हुआ। (वै० पु०) २ मच्च, पाड़। ३ द्वारका आकार, दरवाजेका ठाट। ४ आकाशका चतुर्थांश, आसमान्की चौथायी। (क्लि० पु०) ५ झरोखा।

आतक (सं० त्रि०) अत स्वुन्। १ सतत गमन करनेवाली, गुजर जानेवाला। (पु०) २ सर्पविशेष, किसी नागका नाम।

आतङ्क (सं० पु०) आ-तङ्कि अच्। १ रोग, बीमारी। २ सन्ताप, तकलीफ। ३ सन्देह, शक। ४ मुरज वाद्यकी ध्वनि, मुरचङ्गकी आवाज़। ५ भय, खौफ। ६ ज्वर, बुखार।

'आतङ्कोऽस्य-कम्पन-कदाह मुरजध्वनौ।' (मेदिनी)

आतञ्चन (सं० क्ली०) आ-तञ्च-ल्युट्। १ वेग, जल्दी। २ ज्ञापन, पहुंच। ३ आप्यायन, अघाव। ४ दधि प्रस्तुत करनेको दुग्धमें अम्ल द्रव्यका प्रक्षेप दही जमानेके लिये दूधमें पड़ायोका जावना। ५ निषेध, रोक-थाम। ६ उपद्रव, गड़बड़। ७ द्रव द्रव्यके प्रक्षेपसे कठिन वस्तुका चूर्णन, पतली चीज डालकर सख्त मैलाका तोड़ना। ८ गलित सर्वादिका द्रव्यान्तरके संयोगसे आरब्ध, सोनेका फूलना।

'आमर्थकं मलीमरं तपनाचालम्बनम्।' (अमर)

करणे ल्युट्। ८ दधि प्रस्तुत करनेका अम्ल दही जमानेको खटायी।

आतत (सं० त्रि०) आ तन-क्त। विस्तृत, ज़ियादा, फैला हुआ।

आततज्य (सं० त्रि०) आतता आरोपिता ज्या यस्य। रोदा बांधे हुआ, चढ़ी कमानवाला।

आततायिता (सं० स्त्री०) वध, अत्युग्र चोरी।

आततायित्व (सं० क्ली०) आततायिता देखो।

आततायिन् (सं० त्रि०) आततेन विस्तीर्णेन शस्त्रादिना अयितुं गन्तुं शीलमस्य आतत अय णिनि। १ वध करनेको उद्यत, जो जान मारनेको तैयार हो। २ अविनय, कमान चढ़ाये हुआ। घरमें आग लगाने, अस्त्र बांधने विष मिलाने अनिष्टके निमित्त अस्त्र उठाने, धन चोराने, भूमि छीनने और स्त्री निकाल ले जानेवालेको वशिष्ठने आततायी बताया है। किसी किसी मतसे आततायीको मार डालनेमें कोयी पातक नहीं किन्तु मतान्तरसे पाप पड़ता है। पाण्डवोंने शत्रुको मार इसी पाप कटनेके निमित्त अश्वमेधयज्ञ किया था। (पु०) आत तायी। (स्त्री०) आततायिनी।

आततावित् (वे० त्रि०) आततायिन् देखो। (पु०) आत तायी। (स्त्री०) आततायिनी।

आतति (सं० क्ली०) १ दर्शन, नज़ारा, देखाव। २ विस्तृति, फैलाव।

आतनि (सं० त्रि०) आ तन-इन्। विस्तारक, फैलानेवाला।

आतान (वे० त्रि०) विस्तृत रज्जु फैली हुयी रस्सी।

आतायिनी (सं० पु०) चीलपक्षी, बाज़।

आतप् (वे० त्रि०) आतपति आ तप क्विप्। १ ताप-दायक, गर्म। (पु०) २ ताप गर्मी।

आतप (सं० पु०) आतपति, आ-तप क। इगु प क्लर्थ कः। पा ३।१।१३५। १ रौद्र, धूप। इससे सेवनसे स्वेद निकलता मूर्च्छा आती रक्त बढ़ता, तृष्णा लगती, दाह होता, भ्रम चढ़ता, चित्त घबराता और देहका रंग पड़ता है। (भावप्रकाश) आतप कटु, रुक्ष और पित्तरोगप्रकोपक है। (राजनिघण्टु) (त्रि०) २ सन्तापदायक तकलीफ पहुंचानेवाला। (स्त्री०) आतपा।

आतपतण्डुल (सं० पु०) अभिन्न तण्डुल, अरवा चावल।

आतपत्र (सं० क्ली०) आतपात् रौद्रात् त्रायते, आ तप-त्रै क। छत्र, धूप बचानेवाला छाता। महाभारतीय

अनुशासन-पर्वके ८५ अध्यायमें युधिष्ठिरने भीष्मसे पूछा था,—'श्राद्ध एवं अन्य-अन्य पुण्यकर्ममें छाता और जूता उत्सर्ग करनेका क्या कारण है?' भीष्मने उत्तर दिया,—'पूर्वकालमें भृगुवंशोद्भव जमदग्नि वाणप्रयोग सीखनेके लिये किसी स्थानको ताक पुनः पुनः शर छोड़ने लगे। जो शर छूटता, उनकी पत्नी रेणुका उसे उठा लाती थीं। क्रमसे मध्याह्नकाल उपस्थित हुआ और रौद्र प्रखर पड़ा। पथकी बालू तपकर आग बन गयी थी। रेणुका क्लान्त हो वृक्षकी छायामें बैठीं और वाण लानेमें अनेक विलम्ब लगाने लगीं। जमदग्निने क्रुद्ध हो उनसे विलम्बका कारण पूछा था। रेणुकाने विनय-वाक्यसे स्वामीसे कहा,—मस्तकपर प्रखर सूर्यका ताप लगता और रौद्रसे पथ जला जाता है, अब मैं आ-जा नहीं सकती। यह बात सुन जमदग्नि सूर्यके प्रति वाण फेंकने लगे थे। सूर्यने ब्राह्मणके वेशमें उनके पास पहुंच और छाता तथा जूता देकर कहा,—आजसे जो छाता और जूता देगा, उसे महत् फल मिलेगा। उसी समयसे श्राद्धादि पुण्य-कार्यमें छाता और जूता दिया जाता है।'

आतपत्रक (सं० क्ली०) क्षुद्र छत्र, छोटा छाता। जो चटायी या टोकरी मत्थेपर छातेकी जगह रखते, उसे भी आतपत्रक कहते हैं।

आतपन (सं० पु०) ताप उत्पन्न करनेवाले शिव।

आतपर्णिका, आम्पर्णी देखो।

आतपर्णी (सं० स्त्री०) चौरिका, खिरनी।

आतपवत् (सं० त्रि०) आतपोऽस्यस्य, आतप-मतुप्, मकारस्य वकारः। तापयुक्त, रौशन किया हुआ, जो आफ़ताबकी रौशनी पाता हो। (पु०) आतपवान्। (स्त्री०) आतपवती।

आतपवर्ष्य (वै० त्रि०) आतपे निमित्ते सति वर्षन्ति, बाहु० कर्तरि यत्। रौद्रके समय वृष्टिसे उत्पन्न, जो धूप रहते मेह बरसनेसे पैदा हो। यह शब्द जलादिका विशेषण है। (स्त्री०) आतपवर्ष्या।

आतपवारण (सं० क्ली०) आतपं रौद्रं वारयति, आतप-वृ-णिच्-ल्युट्। छत्र, धूपको दूर रखनेवाला छाता।

आतपशुष्क (सं० त्रि०) रौद्रमें सूखा हुआ, जो धूप लगनेसे कड़ा पड़ गया हो।

आतपात्यय (सं० पु०) ६-तत्। १ रौद्रका अपगम, धूपकी रवानगी। आतपस्य अत्ययो यत्र, बहुव्री०। २ वर्षाकाल, धूपको दूर करनेवाली बारिश।

आतपाभाव (सं० पु०) ६-तत्। १ रौद्रका अभाव, धूपका देख न पड़ना। आतपस्य अभावो यत्र, बहुव्री०। २ छाया, साया, परछाईं। ३ छायायुक्त स्थान, सायेदार जगह।

आतपिन् (सं० त्रि०) १ रौद्रसम्बन्धीय, धूपसे तअल्लुक रखनेवाला। (पु०) आतपी। सूर्य।

आतपीय (सं० पु०) आतपस्य सन्निकृष्ट देशादि उत्करादि० छ। रौद्रके निकटस्थ स्थानादि, धूपके पासकी जगह। (स्त्री०) आतपीया।

आतपोदक (सं० क्ली०) आतपे रौद्रे लक्ष्यमाणं उदकमिव, शाक० तत्। १ मरीचिका, मृगतृष्णा, सुराब, धोका।

आतप्य (वै० त्रि०) रौद्रमें विद्यमान, धूपमें रहनेवाला।

आतम (हि०) आत्मन् देखो।

आतमा (हि०) आत्मन् देखो।

आतमाम् (सं० अव्य०) आ-तमप्-आमु। १ अतिशय सामुख्य, बिलकुल सामने। २ समन्ताद्भाव, सकल दिक्, चारो ओर, सब जगह।

आतर (सं० पु०) आ तार्यते अनेन, आ-तॄ करणे अप्। पार जानेका भाड़ा, उतरायी, नावका महसूल। 'आतरस्तरपण्यं स्यात्।' (अमर)

आतर्दन (सं० क्ली०) उद्घाटन, उन्मीलन, शिगाफ़, साल, फांक।

आतर्पण (सं० क्ली०) आ-तृप्-ल्युट्। १ तृप्ति, आसूदगी, छकाहट। आ-तृप्-णिच्-ल्युट्, णिच् लोपः। २ तृप्तिका उत्पन्न करना, आसूदगीका लाना। ३ मङ्गलद्रव्यका आलेपन, पोतायी। आलेपनमें व्यवहृत होनेवाला वर्णक, ऐपन, पोतनेका रङ्ग।

आतव (सं० पु०) आ-तु-अप्। हिंसाका करना,

तलवारीपका पड़ जाना। २ एक राजा। (वि०) कर्तरि अच्। १ हिंसक, तकलीफ देने या मारनेवाला।

आतवायन (सं० पुं०) आतवस्यापत्यम् आतव अश्वादि० फञ्। आतव राजाके पुत्र और कन्यादय अथवा आतवकी औलाद।

आतश (फा० स्त्री०) अग्नि, आग।

आतशक (फा० स्त्री०) उपदंश मेढ़रोग, गर्मी फिरंगकी बीमारी। लिङ्गके अभिघात, नख एवं दन्तके घात, धावन अति उपसेवन और योनिके प्रदोषसे विविध अपचार पर पांच प्रकारका उपदंश लिङ्गमें होता है। सतोद भेद, स्फुरण, और श्याव स्फोट निकलनेसे वातोपदंश समझा जाता है। पीत, बहु क्लेदयुक्त और सदाह स्फोट पित्तोपदंशका लक्षण है। रक्तज उपदंशमें कृष्ण स्फोट पड़ता और उससे रुधिर टपका करता है। कफोपदंशका स्फोट सकण्डु शोथयुक्त, सघन, शुक्ल, घन और स्रावयुक्त रहता है। त्रिदोषोपदंश नानाविध स्रावरोगसे निकलता और असाध्य होता है। (सुश्रुत) अतिमैथुन, अति ब्रह्मचर्य तथा ब्रह्मचारिणी विरोत्कटा, रजस्वला, दीर्घरोमा कर्कशरोमा, महोर्ध्वरोमा, निगूढ़रोमा, अल्प द्वारा महाद्वारा अप्रिया अकामा, अपरिष्कार सलिल-प्रक्षालित योनि, व्यापन्नयोनि, योनिरोगोपसृष्टा दुष्टयोनि वा वियोनि नारीके सम्पर्क उपसेवन और हाथके नाखून तथा दांतके नोकका विष लगने एवं शूकके निपातन घर्षण, स्पर्श अभिघात, चतुष्पदी गमन, मन्दे सलिलके प्रक्षालन, अवपीड़न, मैथुनान्तमें शुक्रमूत्रके वेगधारण एवं प्रक्षालनादिसे मेढ़मार्गका जो प्रकुपित दोष क्षत वा अक्षतमें आप उभर आता, वही उपदंश कहाता है। हरि विरेक क्षत, मध्य नाड़ीका वेध, जलौका परिपातन मेढ़ प्रलेप यव शालि आढ़्य यवमांस, सुरम्य मूंग, कठिञ्जर, त्रिपुषक, पटोल, बन मूलक गाजिमान तिक्त कषाय, मधु कूपजादि और जल उपदंशको दूर करता है। दिवानिद्रा, मूत्रवेग, गुरु अन्न, मैथुन, गुड़, व्यायाम, अम्ल और लवण उपदंशके रोगीको बचाना चाहिये। (सुश्रुत)

आतशख़ाना (फा० पुं०) अग्न्यागार, आग रखनेकी जगह। पारसी जिस स्थानमें अग्निस्थापन करते, उसे भी आतशख़ाना कहते हैं।

आतशख़ोर (फा० वि०) अग्निभक्षक, आग खानेवाला।

आतशनमाज़ साग्निहोत्र देखो।

आतशज़न (फा० वि०) झगड़ालू, घरमें आग लगानेवाला।

आतशज़नी (फा० स्त्री०) मकान पर फूंक देनेका काम।

आतशदान (फा० पुं०) अग्नि रखनेका पात्र, अंगीठी, बोरसी।

आतशपरस्त (फा० वि०) १ अग्निपूजक, आगकी परस्तिश करनेवाला। (पुं०) २ पारसी।

आतशबाज़ (फा० पुं०) हवाईगर, आतशबाज़ी तैयार करनेवाला।

आतशबाज़ी (फा० स्त्री०) १ आग्नेय चूर्णसे निर्मित कौतुकके छूटनेका दृश्य बारूदसे भरे खिलौनोंके चलनेका नज़ारा। २ आग्नेय चूर्णसे निर्मित क्रीड़नक बारूदका खिलौना। यह कयी तरहकी होती है—अनार गुलमेंहदी महताबी चरखी, बाण छछुंदर, हवाई, कमगाला, फटाका इत्यादि।

आतशी (फा० वि०) १ आग्नेय, आगके मुताल्लिक़। २ अग्न्युत्पादक आग पैदा करनेवाला। ३ अग्निमें डालनेसे न बिगड़नेवाला, जो आगमें पड़नेसे जलता न हो।

आता (सं० स्त्री०) आभिमुख्येन अतति गच्छति कार्य्यभिः, आ-अत-अच्। अर्शादि च करण्। पा ५।२।१२७। दिक्, शाखा, तरफ़, ओर।

आतान (वै० पुं०) आतन्यते, आ-तन् घञ्। १ आभिमुख्यमें विस्तार, फैलाव, फैलाव। २ आंचताना। कर्मणि घञ्। ३ विस्तार्य, फैलाया जानेवाला। ४ कर्तव्यकार्य, यज्ञ।

आतानक (सं० त्रि०) आ-तन्-ण्वुल्। विस्तारक फैलानेवाला।

आतापि (सं० पुं०) आ-तप्-इन्। १ एक असुर।

आतापिके भाईका नाम वातापि रहा। दस्युवृत्ति ही इनकी प्रधान जीविकाका उपाय थी। घरमें आनेपर वातापि अपने भाई आतापिका मांस काटकर अतिथि-को खिला देते रहा। शेषमें भोजनके बाद वातापिके पुकारनेसे यह जीवित हो और अतिथिका पेट फाड़-कर बाहर निकल आता था। मृत्यु होनेपर दोनो असुर उसका सर्वस्व छीन लेते। एकदिन अगस्त्य मुनि भी आतापिके घर अतिथि हुये थे। आगत-स्वागतके अनन्तर वातापि बोला, भगवन्! क्या आप मांस खाना चाहते हैं। ऋषिके सम्मत होनेपर उसने अपने भाई आतापिको गुप्त रीतिसे काटकर ऋषिके आगे ला रखा था। अगस्त्य उत्तम रूपसे वही मांस पकाकर खा गये। वातापि उन्हें सामान्य अतिथि जैसा समझ दूर जाके आतापिको पुकारने लगा, किन्तु ऋषिने जठरानलमें भस्मीभूत कर दिया था। इसीलिये यह उनका उदर विदीर्ण कर दूसरे दिनकी तरह बाहर निकल न सका। अगस्त्य और वातापि देखो। २ चिल्लपक्षी, चील।

आताविन् (सं० पु०) आतपति, आ-तप्-णिनि। १ चिल्ल, चील। २ एक असुर। आतापि देखो।

आतापी, आतापि देखो।

आतार (सं० पु०) आतीर्यतेऽनेन, आ-तॄ करणे घञ्। नौकाका शुल्क, नावका भाड़ा, नदीपार जानेका महसूल, उतराई, खेवा।

आतार्य (सं० त्रि०) १ पार किया जानेवाला, जिसके पार उतरा जाये। (वै०) २ पार जानेके मुताल्लिक, जो पार उतरनेसे सम्बन्ध रहता हो।

आताली (सं० अव्य०) आ-तल बाहु० इण्। कातर व्यक्तिको व्याकुल करके, खौफ़ज़दा शख्सको बेचैन बनाकर।

आति (सं० पु०) अत-इण्। १ शरारी पक्षी। (त्रि०) २ सर्वदा गमनकारी, हर वक्त चलनेवाला।

आतिथिग्व (सं० पु०) अतिथिं गच्छति, अतिथि गम्-ड्। १ दिवोदास नामक राजा। तस्यापत्यम्, अण्। २ दिवोदास राजाके पुत्र।

आतिथेय (सं० क्ली०) अतिथये इदम्, अतिथि-ढक्। १ अतिथिसेवा, मेहमांदारी। २ अतिथिके निमित्त भोजनादि, मेहमानके लिये खाना वग़ैरह। (त्रि०) तत्र साधु ढञ्। पथ्यतिथिवसति स्वपते र्ढञ्। पा ४।४।१०४। अतिथि सेवामें कुशल, मेहमांदारीमें होशियार। (स्त्री०) आतिथेयी।

आतिथ्य (सं० क्ली०) अतिथये इदम् ञ्य। अतिथे-र्ञ्यः। पा ५।४।२६। १ अतिथि-परिचर्या, पहुनाई, मेह-मान्दारी। २ अतिथिको देने योग्य वस्तु। स्वार्थे ष्यञ्। ३ अतिथि, पाहुना, मेहमान्।

'आतिथ्योऽतिथी तद्योग्यपि।' (हेम)

(त्रि०) ४ अतिथिका सत्कार करनेवाला, मेह-मांदार।

आतिथ्यरूप (वै० त्रि०) आतिथ्य नियमके स्थाना-पन्न, मेहमांदारीके चलनकी जगह रहनेवाला।

आतिथ्यसत्कार (सं० पु०) आतिथ्यका कल्प, मेहमांदारीका काम।

आतिदेशिक (सं० त्रि०) अतिदेशादागतः, ठक्। अन्यत्र आरोपित, अतिदेश-प्राप्त, दूसरी जगह रखा हुआ।

आतियात्रिक (सं० त्रि०) अतियात्रायां नियुक्तः ठक्। आतिवाहिक। आतिवाहिक देखो।

आतिरश्चीन (सं० त्रि०) ईषत् तिर्यक, कुछ-कुछ टेढ़ा।

आतिरेक्य (सं० क्ली०) अतिरिच्यते, कर्मणि घञ् तस्य भाव ष्यञ्। अतिशय वृद्धि, इफ़रात, बढ़ती।

आतिवाहिक (सं० पु०) अतिवाहे इहलोकात् पर-लोक-प्रापणे नियुक्तः, ठक्। इस लोकसे परलोक ले जानेवाला ईश्वर-नियुक्त अर्चिरादि अभिमानी देवगण, धूमादि अभिमानी देवगण। अतिवाहनमें नियुक्त देव दो रूप होते, प्रथम दक्षिण एवं द्वितीय उत्तर पथपर स्थित हैं। जो लोग इहलोकमें वापी कूप तड़ागादि बनाते और अग्निष्टोम याग प्रभृति वैदिक कर्मकाण्ड करते, वे परलोक जानेको दक्षिण द्वार पाते हैं। उसी स्थानपर ईश्वर नियुक्त धूमादिगण रहता, जो सकल व्यक्तिको परलोक ले जाता है। फिर जो लोग इहलोकमें ज्ञानी होते अर्थात् ज्ञान-

आत्मजिज्ञासा (सं० स्त्री०) जीवनकी विचारणा, रूहकी तलाश।

आत्मजिज्ञासु (सं० त्रि०) जीवनकी विचारणा करनेवाला, जो रूहकी तलाशमें हो।

आत्मज्ञ (सं० पु०) सिद्ध, साधु, ब्रह्मज्ञ, आक़िल, दानिशमन्द, दाना, अपनी और रूहकी कुदरत समझनेवाला।

आत्मज्ञान (सं० क्ली०) आत्मनो ज्ञानम्, ६-तत्। १ यथार्थ रूप आत्मका ज्ञान, रूहका इल्म। श्रुतिमें लिखा, कि यथार्थ ज्ञान ही मोक्षसाधन होता है। २ स्वीय ज्ञान, सच्ची समझ। आत्मबोधादि शब्दोंका भी यही अर्थ है।

आत्मज्ञानी, आत्मज्ञ देखो।

आत्मतत्त्व (सं० क्ली०) आत्मनस्तत्त्वम्, ६-तत्। आत्माका यथार्थ स्वरूप, चैतन्य रूप, रूहकी सच्ची शक्ल। मतभेदसे कर्तृत्वरूप वा आत्मरूप परमपदार्थको भी आत्मतत्त्व कहते हैं।

आत्मतत्त्वज्ञ (सं० पु०) आत्माका यथार्थरूप समझनेवाला वेदान्ती, जो शख्स रूहकी सच्ची शक्लको पहचानता हो।

आत्मता (सं० स्त्री०) असूर्तता, असांसारिकता, नफ्सानियत, रूहानियत।

आत्मतुष्टि (सं० त्रि०) आत्मन्येव तुष्टियंस्य, बहुव्री०। आत्मज्ञान द्वारा तुष्टि पानेवाला, जो हमेशा सिर्फ रूहके इल्मसे खुश रहता और परब्रह्मको पहचानता हो। (स्त्री०) ६-तत्। आत्माका सन्तोष, रूहकी आसूदगी।

आत्मत्याग (सं० पु०) १ स्वार्थत्याग, दूसरेकी भलाईके लिये अपने नुकसानका किया जाना। २ आत्मघात, खुदकुशी।

आत्मत्यागिन् (सं० त्रि०) आत्मानं देहं त्यजति, आत्मन्-त्यज सम्पृजादि० घिणुन्। १ स्वार्थत्यागी, दूसरेके लिये अपना नुकसान् करनेवाला। २ आत्मघाती, खुदकुशी करनेवाला।

आत्मत्राण (सं० क्ली०) स्वीय रक्षण, अपनी हिफाज़त।

आत्मदर्श (सं० पु०) आत्मा दृश्यतेऽत्र, आत्मन्-दृश आधारे घञ्। १ दर्पण, आयीना। २ आदर्श, नमूना। भावे घञ्, ६-तत्। ३ आत्माका दर्शन, आत्मसाक्षात्कार, रूहका नज़ारा।

आत्मदर्शन (सं० क्ली०) आत्मा दृश्यते साक्षात्क्रियतेऽनेन, आत्मन्-दृश करणे ल्युट्। १ आत्मसाक्षात्कारका साधन श्रवण, मनन और निदिध्यासन, रूहके नज़ारेका ज़रिया सुनना, सोचना और समझना। भावे ल्युट्। २ आत्मसाक्षात्कार, सकलभूतमें आत्मज्ञान, रूहका नज़ारा, सब चीज़ोंमें रूहका देखा जाना।

आत्मदा (वै० त्रि०) व्यक्तिगत अस्तित्व देनेवाला, जो नफ्सी ज़िन्दगी बख़्शता हो।

आत्मदान (सं० क्ली०) आत्माका दान, आत्मत्याग, प्रत्यादेश, रूहकी बख़्शिश, खुदकुशी, इस्तेफ़ा।

आत्मदूषि (वै० त्रि०) आत्माको दूषित करनेवाला, जो रूहको बरबाद कर देता हो।

आत्मदेवता (सं० स्त्री०) आत्मनो देवता। निजका इष्टदेवता।

आत्मद्रोहिन् (सं० त्रि०) आत्मनो द्रुह्यति, आत्मन्-द्रुह-णिनि। आत्मतापी, वक्रप्रकृति, चिड़चिड़ा, बखील, रूहसे दुश्मनी रखनेवाला। (पु०) आत्मद्रोही। (स्त्री०) आत्मद्रोहिणी।

आत्मध्यान (सं० क्ली०) आत्मनो ध्यानं चिन्ता-रूपयोग-विशेषः। आत्मसाक्षात्कारका साधन मनोवृत्ति-विशेष, रूहका खयाल। याज्ञवल्क्यस्मृतिमें इसका प्रकरण देख पड़ता है।

आत्मन् (सं० पु०) अत्यते गम्यते ज्ञायते इति यावत्, अत-गतौ मनिण्। सातिभ्यां मनिन्मनिणौ। उण् ४।१५२। १ पुरुष, आदमी। २ स्वभाव, कुदरत। ३ प्रयत्न, तदबीर। ४ मन, दिल। ५ धृति, इस्तक़लाल। ६ मनीषा, बुद्धि, अक्ल। ७ शरीर, जिस्म। ८ ब्रह्म।

> 'आत्मा पुंसि स्वभावे च प्रयत्नमनसोरपि।
> धृतावपि मनीषायां शरीरब्रह्मणोरपि॥' (हेम)
> 'आत्मा पुरुषः।' (भक्तमाल)

९ अर्क, सूर्य। १० अग्नि, आग। ११ वायु, हवा। १२ जीव, जान्।

[illegible]

[illegible] (देव)

११ पुत्र, बेटा।

'आत्मा वै पुत्रनामासि।' (श्रुति)

श्रुतिमें आत्माका अर्थ प्रत्यक्ष विषयक किया है—अर्थात् पुरुष, 'अहमस्मि' समझ कर आत्मज्ञान पा सकता है। पाश्चात्त्यसमाजमें अर्थ प्रत्यक्ष विषयसे भी बहुतसे प्रतिपत्ति देखायी गयी है। यथा—प्राकृत एवं लौकायतिक लोग चैतन्यविशिष्ट देहमात्रको आत्मा कहते हैं। कोई चेतन इन्द्रिय और कोई मनहीको आत्मा बतलाते हैं। फिर कोई आत्माको क्षणिक विज्ञानमात्र और कोई शून्यमय समझते हैं। कोई कहता, कि आत्मा संसारी कर्ता एवं भोक्ता देहादिसे व्यतिरिक्त है। फिर देहादिसे व्यतिरिक्त सर्वशक्ति सर्वज्ञ ईश्वर भी किसीके मतमें आत्मा है। किसीके मतमें भोगहीन भी आत्मा होता है।

जीवात्मा और परमात्मा देखो।

न्यायमतमें आत्मत्वजातियुक्त अर्थात् अमूर्तसमवेत द्रव्यत्वापर जाति, समवायसे ज्ञानइच्छादि रखनेवाले और ज्ञानाधिकरणका नाम आत्मा है। कहे—

'[illegible]' ([illegible])

आत्मा द्विविध होता है, जीवात्मा और परमात्मा।

"[illegible]" (श्रुति)

"[illegible]" ([illegible])

उसमें आद्य (जीवात्मा) प्रतिशरीर भिन्न विभु, नित्य, कर्ता एवं भोक्ता है। द्वितीय (परमात्मा) ईश्वर, सर्वज्ञ तथा केवल एक है। ([illegible])

वैशेषिक आत्माको अप्रत्यक्ष अर्थात् अनुमानगम्य कहते हैं। अनुमान यह है—करणव्यापार करण व्यापारत्वसे छेदनादि क्रियामें वास्यादि शस्त्रादि व्यापार सत् सकर्तृक होता है। करणव्यापारसे कर्ताका अनुमानगम्य होनेपर तद्व्याप्तिमें ज्ञानक्रिया करण भी सकर्तृक है। अतएव चक्षुरादि ज्ञान साधनमें आत्माका अनुमान किया जाता है। परन्तु नैयायिक उसमें जीवात्माको मानस प्रत्यक्ष विषय मानते हैं। ([illegible])

जैनमतमें नाना अपेक्षाओंसे आत्माके नाना भेद किये गये हैं, जिनमें मुख्य दो हैं—संसारी आत्मा और मुक्तात्मा। संसारी आत्मा वह कहलाता, जो अनादि कालसे अपने द्वारा किये शुभ एवं अशुभ कर्मोंके प्रभावसे कभी मनुष्यका शरीर धारण करता और कभी जानवर (तिर्यञ्च) होता है। कभी नरकमें जाता तथा कभी देवता हो अपने सुख भोगता है। मुक्तात्मा वह है, जो तपश्चरणादिके द्वारा समस्त शुभ अशुभ कर्मोंका नाशकर अपना एक स्वभाव (अनन्तज्ञान दर्शन सुख आदि) पा सांसारिक दुःख कष्टोंसे सर्वदाके लिये मुक्त हो गया है। जैनशास्त्रोंमें सामान्य आत्माका लक्षण 'उपयोगो लक्षणं' (तत्त्वार्थसूत्र) अर्थात् ज्ञान और दर्शन जिसके हो वह आत्मा है यह बतला फिर विशेष रीतिसे संसारी आत्माको पहिचाननेका उपाय इस प्रकार किया है—"[illegible]" ([illegible]) अर्थात् संसारी जीवके अधिकसे अधिक १० प्राण तक होते हैं उनमेंसे जिसके कमसे कम चार प्राण तक हों अर्थात् पांचों इन्द्रियोंमेंसे एक तो स्पर्शन इन्द्रिय मानसिक वाचनिक और कायिक इन तीन बलोंमेंसे एक कायिक बल, आयु और श्वासोच्छ्वास (श्वासोच्छ्वास) हो वही जीव या आत्मा है। इसी नियमसे हम वनस्पति आदिमें भी जीव (आत्मा) समझते हैं। क्योंकि उसके उपर्युक्त चारों ही प्राण स्पष्टतया दृष्टिगोचर होते हैं। यह संसारी आत्मा ही कर्मोंका नाशकर परमात्मा हो जाता है। क्योंकि समस्त आत्माओंमें सर्वज्ञता आदि गुण तो समान ही है, यदि अन्तर है तो केवल व्यक्ति अव्यक्तिका। जिन आत्माओंके स्वाभाविक गुण कर्मोंके अभावसे प्रकट व्यक्त हो जाते हैं, वे परमात्मा कहलाते हैं और जिनमें वे गुण प्रकट नहीं होते वे आत्मा कहे जाते हैं।

यह प्रायः दूसरे शब्दके आदिमें आता और 'अपना' अर्थ रखता है। जैसे—आत्मवध, अपना मारने और आत्मप्रीति अपनी खुशी।

आत्मनित्य (सं० त्रि०) सर्वदा हृदयमें रहनेवाला जो बहुत प्यारा ममता और जिससे न उतरता हो।

आत्मनिन्दा (सं॰ स्त्री॰) स्वीय तिरस्कार, अपनी मलामत।

आत्मनिवेदन (सं॰ क्ली॰) १ स्वीय समाचार, नियाज़ या पठाया।

आत्मनिवेदनासक्ति (सं॰ स्त्री॰) स्वीय विनियोगका अवलम्बन, अपने नियाजकी धुन।

आत्मनिष्ठ (सं॰ वि॰) आत्मनि आत्मज्ञाने निष्ठा यस्य, बहुव्री॰। १ आत्मज्ञानमें निष्ठा रखनेवाला, जो आत्मज्ञान लाभके लिये यत्न करता हो, ब्रह्मनिष्ठ, मुमुक्षु। आत्मनि तिष्ठति आत्मन्-नि-स्था-क षत्वम्। २ आत्मामें रहनेवाला, जो रूहमें मौजूद हो।

आत्मनीन (सं॰ वि॰) आत्मने हितम् ख। आत्मविश्वजन-भोगोत्तरपदात् ख। पा ५।१।९। १ आत्महितकर, अपनी भलाई करनेवाला। १ स्वीय सम्बन्धीय, अपना। ३ बलवान्, ज़ोरावर। (पु॰) ४ पुत्र, बेटा। ५ श्यालक, साला। ६ नाटकप्रसिद्ध विदूषक, मसखरा। ७ पथ्य, बीमारके खानेकी चीज़। ८ प्राणधार, जानवर।

आत्मनेपद (सं॰ क्ली॰) आत्मने आत्मार्थफलबोधनादेव पदम्, अलुक् समा॰। तङानावात्मनेपदम्। पा १।४।१००। १ आत्मगामी फलबोधक व्याकरण-प्रसिद्ध तङादि, जिस पदके रहनेसे आत्मगामी ही फल समझ पड़े। तिङ् यङन्त धातुके अर्थका स्वार्थकर्तृत्वबोधनके योग्य आख्यात आत्मनेपद कहाता है। जैसे चैत्रः पापच्यते, इत्यादिमें आत्मनेपद हुआ है। (न॰ प॰) आत्मगामि-फल बोधक तिङादि, अर्थात् अपने फलको जनाने वाला तिङ् प्रभृति प्रत्यय भी आत्मनेपद है यथा—इदमहं संप्रददे। आत्मनेपदार्थ कभी कर्मत्व और कभी कर्मका ही बोधक है। कहीं-कहीं इसमें कर्तृत्व भी रहता है। यथा—ऋत्विग्यजतः।

धातु तीन प्रकारका होता है। परस्मै, आत्मने और उभयपद। इन तीन प्रकारके धातुवोंमें जहां क्रियाफल कर्तृनिष्ठ (कर्तामें) रहता वहां आत्मनेपद और दूसरे स्थानमें परस्मैपद होता है। "स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले।" (पा १।३।७२) इसके ही अनुसार दानादि स्थलमें स्वगत फल रहनेसे 'ददे' और परगत फल होनेमें 'ददाति' वाक्य प्रयोग हम लोग करते हैं।

चिन्तामणिकार (गङ्गेशोपाध्याय) क्रियाफलमें कर्ताकी अभिप्राय इच्छा रहनेमें ही आत्मनेपद मानते हैं। इसीसे याजकादि द्वारा दक्षिणादि लाभकी इच्छासे यागादि किये जानेपर 'यजन्ति याजकाः' परस्मैपद एवं परगत यागादिफल रहते भी इच्छासे किये जानेपर 'यजन्ते याजकाः' आत्मनेपद ही होता है।

आत्मनेपदिन् (सं॰ वि॰) आत्मनेपदं विहितत्वे-नास्त्यस्य, आत्मने-पद-इनि। आत्मनेपद सम्बन्धीय। पाणिनिने इसके विषयमें लिखा,—गणपाठमें हलन्त अनुदात्तेत् एवं स्वरान्त ङ इत् धातु आत्मनेपदी होते हैं। फिर कर्तृगामी क्रियाफल-विशिष्ट स्वरित एवं ञित् धातु भी आत्मनेपदी हो हैं। सिवा इसके अर्थ विशेषमें उपसर्ग विशेषके योगसे कर्तृवाच्य धातु आत्मनेपदी बन जाता है। (पु॰) आत्मनेपदी। (स्त्री॰) आत्मनेपदिनी।

आत्मनेभाषा (सं॰ स्त्री॰) आत्मने आत्मोद्देशेन भाषा परिभाषा, अलुक्-समा॰। व्याकरण-प्रसिद्ध आत्मने-पदका अर्थ, संस्कृतकी दरमियानी फस्ल।

आत्मन्वत् (वै॰ वि॰) आत्मा अस्त्यस्य, मतुप्। आत्मविशिष्ट, जानदार, ज़िन्दा, जो मरा न हो। (पु॰) आत्मन्वान्। (स्त्री॰) आत्मन्वती।

आत्मन्विन् (वै॰ वि॰) आत्मन् अस्त्यर्थे बाहु॰ विनि। मनस्वी, प्रशस्तमना, दिलदार। (पु॰) आत्मन्वी। (स्त्री॰) आत्मन्विनी।

आत्मपरित्याग (सं॰ पु॰) स्वीय समर्पण, अपना नियाज़।

आत्मपुराण (सं॰ पु॰) आत्मनः पुराणां सृष्टादि कर्तृ-त्वादिरूप निमित्तमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः, अण्। उप-निषत्के अर्थका पुस्तक विशेष। यह शङ्करानन्द-प्रणीत और अठारह अध्यायमें समाप्त है। इसके प्रथममें ऐतरेय, द्वितीयमें बृहदारण्यकके कौषीतकी ब्राह्मण, तृतीयमें अजातशत्रु संवाद, चतुर्थमें बृहत् मधुकाण्ड, पञ्चममें बृहद्याज्ञवल्क्य-काण्ड, षष्ठमें बृहद्याज्ञवल्क्य

अभयसंवाद, सप्तममें बृहदारण्यकस्थ मैत्रेयी-संवाद, अष्टममें श्वेताश्वतर, नवममें काठक, दशममें तैत्तिरीय एकादशमें मर्मोद, द्वादशमें छान्दोग्यके श्वेतकेतु संवाद, त्रयोदशमें छान्दोग्यके सनत्कुमार-नारद संवाद, चतुर्दशमें छान्दोग्यका प्रजापति प्रति इन्द्रसंवाद, पञ्चदशमें तलवकार, षोड़शमें मुण्डक, सप्तदशमें प्रश्न और अष्टादश अध्यायमें माण्डूक्य कथा, कालाग्नि प्रभृति प्रणीत उपनिषत्का अर्थ है। यह ग्रन्थ सुगम उपाय द्वारा वेदान्त समझनेके लिये अतिशय उपयोगी है। काकारामशास्त्रीने इसकी टीका बनायी है।

आत्मप्रकाश (सं० पु०) चैतन्यका प्रकाश, रूहकी रोशनी।

आत्मप्रबोध (सं० पु०) आत्माका ज्ञान, रूहकी पहचान।

आत्मप्रभ (सं० त्रि०) आत्मना स्वयमेव प्रभा यस्य बहुव्री०। स्वयं प्रकाशमान, अपने आप चमकने-वाला। (पु०) २ परमात्मा। (स्त्री०) आत्मप्रभा। ३ तत्। स्वयंप्रभा, स्वयंप्रकाश, जो रोशनी अपने आप निकली हो।

आत्मप्रभव (सं० पु०) प्रभवत्यस्मात्, प्र-भू अपा-दाने अप्, आत्मा देह मनो वा प्रभवो यस्य। १ तनुज, पुत्र, बेटा। २ मनोभव, कन्दर्प। आत्मा परमात्मैव प्रभव कारणं यस्य बहुव्री०। ३ आकाश परमाणु प्रभृति, आसमान् वगैरह। (स्त्री०) आत्मप्रभवा। १ कन्या, बेटी। २ बुद्धि, समझ।

आत्मप्रवाद (सं० पु०) १ आत्मविषयक कथोपकथन, रूहके बारेमें बातचीत। २ जैनोंके चौदह पूर्वोंमें सातवां पूर्व। पूर्व देखो।

आत्मप्रशंसा (सं० स्त्री०) स्वीय श्लाघा, अपनी तारीफ।

आत्मप्रीति (सं० स्त्री०) स्वीय आनन्द, अपना मज़ा। आत्मरत, आत्मरत देखो।

आत्मबन्धु (सं० पु०) आत्मनो बन्धु ६ तत्। १ निजका मित्र, अपना साथी। मौसेरा फुफेरा तथा ममेरा भाई भी आत्म-सम्मत आत्मबन्धु है। आत्मैव बन्धु कर्मधा०। २ अपना साथ देनेवाला आत्मा, रूह।

आत्मबुद्धि (सं० स्त्री०) स्वीय ज्ञान अपनी रूहका इल्म।

आत्मबोध (सं० पु०) १ आत्मज्ञान, रूहका इल्म। २ स्वीय ज्ञान, अपनी आपकी जानकारी। ३ शङ्करा-चार्य-प्रणीत ग्रन्थविशेष। ४ अथर्ववेदका एक उप-निषत्। (त्रि०) ५ आत्मज्ञानी, रूहका इल्म रखने-वाला।

आत्मभव (सं० पु०) १ स्वीय अस्तित्व, अपना वजूद। (त्रि०) २ स्वयं जात, अपने आप निकला हुआ।

आत्मभाव (सं० पु०) १ आत्माका अस्तित्व रूहका वजूद। २ स्वीय प्रकृति, अपनी कुदरत। ३ शरीर, जिस्म।

आत्मभू (सं० पु०) आत्मनो मनसः देहाद्वा भवति, आत्मन् भू क्विप् ५ तत्। १ मनसे उत्पन्न होनेवाला कन्दर्प। २ अपने देहसे उत्पन्न होनेवाला पुत्र बेटा। आत्मनो स्वयमेव भवति। ३ स्वयं उत्पन्न होनेवाला ईश्वर। ४ शिव। ५ विष्णु। आत्मन ब्रह्मणः भवति। ६ ब्रह्मसे उत्पन्न होनेवाले ब्रह्मा। (त्रि०) ७ स्वीय मन वा देहसे उत्पन्न होनेवाला, जो अपने दिल या जिस्मसे पैदा हो। ८ स्वयं उत्पन्न, अपने आप पैदा होनेवाला।

आत्मभूत (सं० त्रि०) आत्मनः देहात् मनसो वा भूतः। १ देह वा मनसे उत्पन्न, जिस्म या दिलसे पैदा। २ अनुकूल, वफ़ादार। (पु०) ३ तनुज, बेटा। ४ कश्यप। (स्त्री०) टाप्। आत्मभूता। १ कन्या, बेटी। २ बुद्धि, अक्ल।

देहादि पदार्थ आत्मसम्बन्धी नहीं रहता, पीछे अन्य रीतिसे आत्मासे सम्बन्ध हो जानेपर आत्मभूत कहाता है।

आत्मभूय (सं० क्ली०) आत्मनो भावः, आत्मन्-भू क्यप् ६ तत्। इप् क्यप्। पा ३।१।१०७। आत्मत्व, ब्रह्मरूप, रूहानियत।

आत्ममय (सं० त्रि०) आत्मात्मकः, आत्मन् मयट्। आत्मस्वरूप प्राप्त करानेवाले। (स्त्री०) ङीप्। आत्ममयी।

आत्ममाया (सं० स्त्री०) परमात्माका पुरुषांश।

आत्ममानिन् (सं० त्रि०) आत्मानमुत्कर्षेण मन्यते, मन णिनि, ६ तत्। १ गर्वित, अपने उत्कर्षका अभि

मानी, मगरूर, अपनी बड़ाईका फख्र रखनेवाला। २ सकल प्राणीको अपना-जैसा समझनेवाला, जो सब जानवरोंको अपनी बराबर जानता हो।

आत्ममूर्ति (सं० पु०) आत्मनो मूर्तिरिव मूर्तिर्यस्य, बहुव्री०। स्वीय आकृति-जैसा भ्राता, अपनी शक्लके मानिन्द भाई। एक मातापिताके सन्तानकी आकृति प्रायः सदृश होनेसे भ्राताको आत्ममूर्ति कहते हैं। (स्त्री०) ६-तत्। २ वेदान्त मतसे आत्माका स्वरूप चैतन्यादि, जानदारी। ३ न्यायमतसे कर्तृत्वादि, वसीला, जरिया।

आत्ममूल (सं० वि०) १ आत्मभू, स्वयम्भू, अपने आप मौजूद रहनेवाला।

(क्ली०) आत्मा ब्रह्मैव मूलं कारणं यस्य, बहुव्री०। २ जगत्, दुनिया।

याज्ञवल्क्य-संहितामें लिखा,—जैसे कुम्भकार मृत्तिका, दण्ड, चक्र, सलिल, सूत्र प्रभृति द्वारा घट; गृहकर्ता मृत्तिका, तृण एवं काष्ठसे गृह, स्वर्णकार स्वर्ण वा रौप्यसे अलङ्कार और रेशमका कीड़ा अपनी लारसे धागा बनाता, वैसे ही परमात्मा कारण तथा करणसे योनि-योनिमें आत्माकी सृष्टि करता है।

आत्ममूली (सं० स्त्री०) आत्मैव रक्षणे मूलं कारण-मस्या अन्य जन्तु कर्तृक व्याहतत्वात् जातित्वात् ङीप्। दुरालभा लता, धमासा।

आत्मम्भरि (सं० वि०) आत्मानं बिभर्ति, आत्मन्-भृ-इन्-मुमच, उप० समा०। फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च। पा ३।२।२६। कुक्षिम्भरि, उदरम्भरि, नफ़्सपरस्त, पेटू। (स्त्री०) आत्मम्भरी।

आत्मयाजिन् (सं० वि०) आत्मानं ब्रह्मरूपेण कर्म-करणादिकं भावयन् यजते, आत्मन्-यज-णिनि। १ कर्मयोगी, भला काम करनेवाला। २ अपने अर्थ यज्ञ करनेवाला। ३ स्वीय बलि चढानेवाला। (स्त्री०) आत्मयाजिनी।

आत्मयाजी (सं० पु०) बुद्धिमान् पुरुष, अक्लमन्द आदमी, अपनी और रूहकी कुदरत समझनेवाला शख्स।

आत्मयोनि (सं० पु०) आत्मैव योनिरस्य, बहुव्री०। १ हिरण्यगर्भ। २ ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४ शिव। ५ कामदेव। आप ही आप पैदा हो जानेवालेको आत्मयोनि कहते हैं।

आत्मरक्षक (सं० वि०) स्वीय रक्षा रखनेवाला, जो अपनेको बचाता हो। (स्त्री०) आत्मरक्षिका।

आत्मरक्षण (सं० क्ली०) स्वीय परित्राण, अपनी हिफ़ाज़त।

आत्मरक्षा (सं० स्त्री०) आत्मन एव रक्षा यस्याः। महेन्द्रवारुणी लता, कुंदरू। ६-तत्। २ शास्त्रानु-सार विघ्नकारियोंसे अस्त्र द्वारा अपनी रक्षाका करना।

आत्मरत (सं० वि०) आत्मासे प्रेम रखनेवाला, जो रूहका मज़ा उड़ाता हो। (स्त्री०) आत्मरता।

आत्मरति (सं० स्त्री०) आत्माका आनन्द, रूहका मज़ा।

आत्माराम (सं० पु०) आत्मनि रमते, संज्ञायां कर्तरि घञ्। आत्मज्ञान मात्रसे तृप्त योगीन्द्र।

आत्मलाभ (सं० पु०) आत्मनो लाभः, ६-तत्। यथा-स्वरूप ज्ञान द्वारा आत्माकी प्राप्ति, इल्मसे रूहका हासिल।

आत्मलिङ्ग (सं० क्ली०) आत्माके अस्तित्वका परि-चायक सुख-दुःख प्रभृति, जो आराम तकलीफ़ वगैरह रूहका वजूद देखाता हो।

"धर्माधर्मौ सुखदुःखमिच्छाद्वेषौ तथैव च।
प्रयत्नज्ञानमस्कारमात्मलिङ्गमुदाहृतम्॥"
(कामन्दकीय नीतिसार)

आत्मलोक (सं० पु०) आत्मैव लोकः आत्मप्रकाशः। स्वप्रकाश, आत्मा, रूह।

आत्मलोमन् (सं० क्ली०) ६-तत्। १ शरीरस्थ लोम, जिस्मका बाल। २ श्मश्रु, दाढ़ी।

आत्मवञ्चक (सं० वि०) आत्मानं वञ्चति, आत्मन्-वञ्च-ण्वुल्। कृपण, बखील, अपनेको ही धोका देने-वाला। (स्त्री०) आत्मवञ्चिका।

आत्मवञ्चना (सं० स्त्री०) स्वीय प्रतारणा, ज़ाती खराब, अपने आपको धोका देनेकी बात।

आत्मवत् (सं० वि०) आत्मा मनः वशीभूतत्वेनास्त्यस्य,

आत्मन् मतुप्, मस्य व। १ वशीभूत-चित्त, दिलको काबूमें रखनेवाला। २ निर्विकारचित्त शान्तचित्त। (अव्य०) ३ आत्मा के अपनीतरह। (पु०) आत्मवान्। (स्त्री०) आत्मवती।

आत्मवत्ता (सं० स्त्री) १ स्वीय बुद्धि, अपनी सदाक़त। २ स्वीय साहस, अपनी जुरअत।

आत्मवध आत्मघात देखो।

आत्मवधा (सं० स्त्री०) आत्मघात देखो।

आत्मवश (सं० त्रि०) आत्मनो वशमायत्ततास्य यस्य वा। १ स्वाधीन, खुदमुख़्तार, अपनी ही मातहतीमें रहनेवाला। (पु०) २ आत्मसंयम, इन्द्रियजय अनुशासन, अपने ऊपर काबू। (स्त्री०) आत्मवशा।

आत्मवश्य (सं० त्रि०) आत्मा मनो वश्यो यस्य, बहुव्री०। १ वशीभूत-चित्त दिलको काबूमें रखनेवाला। २ असंयत शरीर, अपने जिस्मपर काबूका बोझ उठा लेनेवाला। आत्मना वश्यम्, ६ तत्। ३ आत्माके अपनीय कहके काबूमें आ जानेवाला।

आत्मविक्रय (सं० पु०) ६ तत्। स्वदेहविक्रय, खुदफरोशी, अपना जिस्म किसीके हाथ बेच गुलाम बननेका काम। यह उपपातकके मध्य लिया गया है,—

"हीनजातिस्त्रीवधवृषेष्वाणक्षत्रवैश्यवधः।
इन्धनार्थमशुष्काणां द्रुमाणामवपातनम्।" (मनु ११।६४)

अर्थात् नीचके अयाज्ययाजन, परस्त्रीगमन आत्मविक्रय मातापिता प्रभृति गुरुजनकी सेवा न करना, पाठ होम आदि ब्रह्मयज्ञ एवं स्मार्ताग्निका त्याग और पुत्रका जातकर्मादि संस्कार न करना उपपातकके मध्य परिगणनीय है।

आत्मविक्रयिन् (सं० त्रि०) स्वीय विक्रय करनेवाला खुदफ़रोश, जो अपने आपको बेच डालता हो। (पु०) आत्मविक्रयी। (स्त्री०) आत्मविक्रयिणी।

आत्मविज्ञान (सं० क्ली०) योगाभ्यास समाधिके पर आत्माके स्वरूपका विज्ञान।

आत्मविद् (सं० पु०) आत्मानं याथार्थ्येन वेत्ति, आत्मन् विद् क्विप्, ६ तत्। १ आत्मज्ञ रूहको समझनेवाला। आत्मानं स्वरूपं वेत्ति। २ स्वरूपज्ञाता, अपनी तरह का हाल जाननेवाला। ३ शिव।

आत्मविद्या (सं० स्त्री०) आत्मनो विद्या, ६ तत्। ब्रह्मविद्या, योगशास्त्र, रूहका इल्म।

आत्मविहारि आत्माविहारी देखो।

आत्मविस्मृति (सं० स्त्री०) स्वीय विस्मरण, अपने आपको याद न रखनेकी हालत।

आत्मवीर (सं० त्रि०) आत्मा प्राण वीर इव यस्य, बहुव्री०। १ अतिशय बलयुक्त निहायत ज़ोरावर। २ उपयुक्त बालिग। ३ विद्यमान, मौजूद। (पु०) आत्मनो वीरः आत्मीयस्नेह चेतः, ६ तत्। ४ स्वात्मज साला। ५ पुत्र, बेटा। ६ विदूषक, स्वांगका मसखरा। ७ बलवान् पुरुष, ताक़तवर आदमी।

आत्मश्लाघा (सं० पु०) स्वीय चरित रचना, स्वीय उपाख्यान तुलक खास अपना तज़किरा।

आत्मवृत्ति (सं० स्त्री०) आत्मनो वृत्तिः ६ तत्। १ स्वीय जीवनोपाय खास अपना पेशा। (त्रि०) आत्मनि स्वस्मिन् वृत्तिर्यस्य, मात्र० बहुव्री०। २ अपनी-जैसी वृत्ति रखनेवाला हमपेशा, जो अपना जैसा काम करता हो।

आत्मवृद्धि (सं० स्त्री०) स्वीय उन्नय अपनी बढ़ती।

आत्मशक्ति (सं० स्त्री०) आत्मन इव शक्तिः,६ तत्। स्वीय क्षमता अपनी ताक़त। २ आत्मानुरूप क्षमता, रूहानी क़ूवत। ३ परमेश्वरके जगत् उत्पादन करनेकी माया।

आत्मशब्दा (सं० स्त्री०) आत्मा स्वरूपं शब्दमिव यस्याः। शतावरी, सतावर।

आत्मशुद्धि (सं० स्त्री०) आत्मनः देहस्य मनसो वा शुद्धिः, ६ तत्। देहशुद्धि, चित्तशुद्धि अपने जिस्म या दिलकी सफाई।

आत्मश्लाघा (सं० स्त्री०) आत्मनः श्लाघा ६-तत्। १ स्वीय मिथ्या गुणका प्रकाश, अपने झूठे हुनरका इज़हार। २ स्वीय प्रशंसा, अपनी तारीफ़। ३ निज मुखमें स्वीय गर्वका प्रकाशन अपने मुंह अपने गुरूरकी बघार।

आत्मश्लाघिन् (सं० त्रि०) स्वीय प्रशंसा करनेवाला जो अपनी तारीफ़ करता हो। (पु०) आत्मश्लाघी। (स्त्री०) आत्मश्लाघिनी।

आत्मसंयम (सं० पु०) आत्मनो मनसः संयम

नियमनम्। मनोवशीकरण, सुखदुःखसमता, मनके विकारका त्याग, मसला-जबर, खुशी और गमसे वेपरवायीका अकीदा।

आत्मसंवेदन (सं० क्ली०) स्वीय ज्ञान, अपनी जानकारी।

आत्मसंस्कार (सं० पु०) स्वीय संस्कार, ज़ाती इसलाह, अपना सुधार।

आत्मसद् (वै० त्रि०) आत्मवर्ती, ज़ाती, जो अपने ही में रहता हो।

आत्मसनि (वै० त्रि०) जीवनोद्धारदायक, ज़िन्दगीका नफ़स बख़्शनेवाला।

आत्मसन्देह (सं० पु०) आभ्यन्तरिक विकल्प, भीतरी शक।

आत्मसमुद्भव (सं० पु०) आत्मनः सर्वं समुद्भवमस्य, बहुव्री०। १ अपनेसे उत्पन्न होनेवाला पुत्र, बेटा। २ मनसिज। ३ हिरण्यगर्भ, ब्रह्मा। आत्मना स्वयमेव समुद्भवति, आत्मन्-सम्-उत्-भू कर्तरि अच् अप् वा। ४ स्वयं उत्पन्न होनेवाले शिव। ५ विष्णु। ६ परमात्मा। (त्रि०) ७ स्वीय शरीरजात, अपने जिस्मसे पैदा। ८ स्वयमुत्पन्न, अपने आप पैदा होनेवाला।

आत्मसमुद्भवा (सं० स्त्री०) १ अपने देहसे उत्पन्न होनेवाली कन्या, बेटी। २ बुद्धि, अक्ल।

आत्मसम्भव (सं० पु०) आत्मत्वेन सम्भवः, आत्मन्-सम्-भू कर्तरि अच्, शाक० ३-तत्। "आत्मा वै जायते पुत्रः।" (श्रुति) यद्वा आत्मासम्भवोऽस्य, अपादाने अप्, बहुव्री०। १ पुत्र, बेटा। २ हिरण्यगर्भ। ३ चतुर्मुख। ४ शिव। ५ विष्णु। ६ परमात्मा। (त्रि०) ७ मनमें उत्पन्न होनेवाला, जो दिलमें पैदा होता हो।

आत्मसम्भवा (सं० स्त्री०) १ कन्या, बेटी। २ भगवती, देवी। ३ बुद्धि, अक्ल।

आत्मसाक्षिन् (सं० त्रि०) आत्मनः बुद्धिवृत्तेः साक्षी प्रकाशकः। १ बुद्धिवृत्तिप्रकाशक, अक्लकी हालत चमका देनेवाला, जो दिलको राह देखाता हो। वेदान्तादिके मतसे चैतन्य आत्मसाक्षी सिद्ध हुआ है। (पु०) आत्मसाक्षी। (स्त्री०) आत्मसाक्षिणी।

आत्मसात् (सं० अव्य०) कात्स्न्येनात्मनोऽधीनो भवति सम्पद्यते अधीनं करोति वा, साति। सकल प्रकार अपने अधीन, सब तरह अपने तावेमें रखनेवाला।

आत्मसात्कृत (सं० त्रि०) विनियोगित, उपकल्पित, अख़्ज़ किया या अपनाया हुआ।

आत्मसिद्ध (सं० त्रि०) १ स्वयं निष्पन्न, अपने आप बना हुआ। २ आत्माको वशमें रखनेवाला, जो रूहको काबूमें रखता हो।

आत्मसिद्धि (सं० स्त्री०) आत्मरूपा सिद्धिः। आत्मभाव-लाभ, मोक्ष, ज़ाती मज़मत।

आत्मसुख (सं० त्रि०) आत्मैव सुखमस्य। १ आत्मलाभ मात्रसे सुखी, अपने आप खुश रहनेवाला। (क्ली०) आत्मैव सुखं सच्चिदानन्दरूपत्वात्। २ आत्मरूप परमानन्द, रूहानी खुशी।

(पु०) ३ हरिहराचार्यके शिष्य और उत्तमसुखके विद्यार्थी। इन्होंने योगवाशिष्ठटीका और योगवाशिष्ठसंक्षेपटीका नामक दो ग्रन्थ बनाये हैं।

आत्मस्तुति (सं० स्त्री०) स्वीय प्रशंसा, अपनी तारीफ़।

आत्मस्थ (सं० त्रि०) आत्मनि आत्मज्ञानाय तिष्ठति यतते आत्मन्-स्था-क, ४-तत्। आत्मस्वरूप समझनेको यत्नवान्, जो रूहके रङ्ग परखनेकी फ़िक्रमें हो। २ प्रकृतिस्थ, सञ्जीदा। ३ मनोवृत्तिमय, दिली।

आत्महत्या (सं० स्त्री०) आत्मनो देहस्य हननम्, आत्मन्-हन्-क्यप्। हनस्त च। पा ३।३।१०८। आत्मघात, स्ववध, खुदकुशी। हन् धातुके पहले कोई उपपद न रहनेसे हत्या शब्दकी उपलब्धि असम्भव है। इसीसे 'वहां हत्या हुई' और 'वही हत्याकाण्ड' इत्यादि प्रयोग व्याकरणविरुद्ध ठहरता है।

आत्महन् (सं० त्रि०) आत्मानं हतवान्, आत्मन्-हन् क्विप्। १ यथार्थ आत्मज्ञान-रहित, ठीक रूहका इल्म न रखनेवाला। २ देहादिका अभिमानी, जिस्म वगैरहका गरूर रखनेवाला। ३ आत्मघाती, खुदकुश। (पु०) ४ पुजारी, धन लेकर प्रतिमापूजन करनेवाला पुरुष।

आत्महनन (सं० क्ली०) स्ववध, खुदकुशी।

आत्महिंसा (सं० स्त्री०) आत्मघात देखो।

आत्महित (सं० त्रि०) १ स्वकार्योपयोगी, अपनेको फायदा देनेवाला। (क्लो०) २ स्वीय लाभ, अपना फायदा।

आत्मा, आत्मन् देखो।

आत्मादिष्ट (सं० त्रि०) १ स्वतः निर्दिष्ट, अपने आप नसीहत किया हुआ। (पु०) २ सन्धिविशेष, किसी किस्मकी सुलह। स्वतः आनेवाला पक्ष ही इसे सूचित करता है।

आत्माधीन (सं० पु०) आत्मनोऽधीनः। १ पुत्र, बेटा। २ श्यालक, साला। ३ विदूषक, मसखरा। (त्रि०) ४ स्ववश, स्वाधीन, [illegible], आज़ाद। ५ वर्तमान, मौजूद।

आत्मानन्द (सं० पु०) आत्माका आनन्द, रूहका मज़ा। यह ध्यानको एकत्र करनेसे हृदयमें मिलता है।

आत्मानुभव (सं० पु०) स्वीय अनुभव, अपना तजरुबा।

आत्मानुरूप (सं० त्रि०) आत्मनोऽनुरूपं सर्वप्रकारैः सदृशम्। जाति गुण शील क्रियादि द्वारा अपने तुल्य, अपने-जैसा।

आत्मापहारक (सं० त्रि०) आत्मानं अपहरति निह्नुते आत्मन् अप ह ण्वुल्। धूर्त, आत्माके यथार्थरूपका अपह्नवकारी, आत्मपरिचय न देनेवाला मक्कार ठग जो छोटेसे बड़ा बनता या अपना ठीक ठीक पता न बताता हो।

आत्माभिमान (सं० पु०) स्वीय अहङ्कार अपने आपका गुरूर।

आत्माभिमानिन् (सं० त्रि०) स्वीय अहङ्कार रखने-वाला जिसे अपने आपका घमण्ड रहे। (पु०) आत्माभिमानी। (स्त्री०) आत्माभिमानिनी।

आत्माभिवाद (सं० पु०) [illegible] रक्षा करनेको मर्यादा।

आत्माराम (सं० त्रि०) आत्मा आराम इव यस्य बहुव्री०। १ आत्माको उपवन समझनेवाला, जो उसको बाग़ मानता हो। उपवन जैसा मनोज्ञ होता वैसा ही आत्मा रखनेवाला आत्माराम कहाता है। २ योगी विशेष। कामोपचारमें लिखा—जिसका आत्मा सर्वदा परितृप्त रहता और जो समस्त विश्वको आत्मरूप समझता, वही आत्माराम योगीका स्वरूप होता है। हिन्दीमें आत्माराम तोतेको भी कहते हैं।

३ अवधूत भट्टके पुत्र। इन्होंने वात्स्यायन-गौतमसूत्रभाष्यपर 'भावविबोधिनी' टीका लिखी है।

आत्मार्थ (सं० त्रि०) स्वीय निमित्त-साधक, अपना काम देनेवाला।

आत्मालय (सं० पु०) हृदयपद्म।

आत्मावलम्बिन् (सं० त्रि०) स्वीय अवलम्बन रखनेवाला, जो अपना ही सहारा पकड़ता हो। (पु०) आत्मावलम्बी। (स्त्री०) आत्मावलम्बिनी।

आत्माशिन् (सं० पु०) आत्मानं अङ्गमश्नाति, आत्मन् अश् णिनि, ६ तत्। अङ्गभक्षक मीन, अपने अण्डे खानेवाली मछली। जब जब अपने अण्डे छोड़ चली जाती, तब दूसरी आकर उन्हें खा डालती, इसीसे मछली आत्माशी कहाती है। (पु०) आत्माशी। (स्त्री०) आत्माशिनी।

आत्माश्रय (सं० पु०) आत्मानं आश्रयति, आत्मन् आ श्रि अच्, ६ तत्। १ निजका आश्रय, अपना सहारा। २ निज आपेक्षिक हेतुक अनिष्ट प्रसङ्गरूप तर्कका दोष विशेष। न्यायमतमें जो प्रसङ्ग अपने आपको अपेक्षा रखता, वह आत्माश्रय कहाता है।

"[illegible]" ([illegible])

फिर अपने आपेक्षितत्वमें अनिष्ट प्रसङ्ग दोष भी आत्माश्रय ही है। यह उत्पत्ति, स्थिति और ज्ञप्ति भेदसे तीन प्रकारका है,—घटसे उत्पन्न होनेपर अनधिकरणका अव्यवहितवर्ती, तथा घटमें रहनेसे अव्याप्य और घटज्ञानसे अभिन्न ठहरनेसे घटज्ञान आत्मपोष्य है। ([illegible])

आत्मिक (सं० त्रि०) १ आत्मासे सम्बन्ध रखने-वाला, रूहानी। २ स्वीय, अपना। ३ मानसिक।

आत्मीकृत, [illegible] देखो।

आत्मीभाव (सं० पु०) परमात्माका अंशविशेष बन जानेकी दशा।

आत्मीय (सं० त्रि०) आत्मन इदम्, आत्मन्-छ। १ आत्मसम्बन्धीय, रूहानी। २ स्वर्गीय, आसमानी। ३ अन्तरङ्ग, दिली।

आत्मीयता (सं० स्त्री०) १ आत्मसम्बन्ध, खास अपना ताल्लुक़। २ मित्रता, दोस्ती।

आत्मेश्वर (सं० त्रि०) आत्मनो मनस ईश्वरः, ६-तत्। १ मनका संयमनशील, दिलको क़ायदेपर रखनेवाला। (पु०) २ अपने आपका स्वामी, अपने दिलपर हुकूमत रखनेवाला। ३ परमात्मा।

आत्मोत्पत्ति (सं० स्त्री०) आत्मन उत्पत्तिः स्वोपाध्यन्तःकरणवृत्तिकर्मणाऽपूर्वदेहसंयोगः, ६-तत्। किसी कारणवश अन्तःकरणवृत्तिके कर्मसे अपूर्व देह-संयोगरूप आत्माका जन्म। प्राचीन शास्त्र कहता, कि शरीर प्रतिक्षण नूतन होता है। उसके मध्य किसी कारणवश मन ही मन कोई बात चाहनेपर तत्कालीन अपूर्व देहसे आत्माका संयोग ही आत्मोत्पत्ति माना जाता है।

आत्मोत्सर्ग (सं० पु०) स्वार्थत्याग, ज़ाती इस्तेग़ान, अपनी भलायीका छोड़ना, दूसरेके लिये अपने आपका निकास।

आत्मोदय (सं० पु०) स्वीय उत्कर्ष, अपनी चमक।

आत्मोद्धार (सं० पु०) १ आत्माका उद्धार, मुक्ति, रूहका छुटकारा, निजात। सांसारिक विषयका त्याग और पारमार्थिक पदार्थका ग्रहण आत्मोद्धार कहाता है।

आत्मोद्भव (सं० त्रि०) १ आत्मासे निकला हुआ, जो रूहसे पैदा हो। २ स्वयं उत्पन्न, अपने आप पैदा होनेवाला। (पु०) ३ पुत्र। ४ कन्दर्प।

आत्मोद्भवा (सं० स्त्री०) आत्मनैव उद्भवति, आत्मन्-उत्-भू-अच्-टाप्। माषपर्णी वृक्ष, रामकुरथी। २ वन-मुद्ग, मोट। आत्मनः देहात् मनसो वा उद्भवो यस्याः। ३ कन्या, बेटी। ४ बुद्धि, अक़्ल।

आत्मोन्नति (सं० स्त्री०) १ स्वीय उन्नति, अपनी तरक़्क़ी।

आत्मोपजीविन् (सं० त्रि०) आत्मना देहव्यापारेण उपजीवति, आत्मन्-उप-जीव-णिनि, ३-तत्। १ अपने देहके व्यापारसे जीवन चलानेवाला, जो अपने आप मेहनतसे ज़िन्दगी बसर करता हो। २ अपनी पत्नी द्वारा जीवन निर्वाह करनेवाला, जो अपनी औरतके सहारे जीता हो। ३ मज़दूर, दिनको काम करनेवाला। (पु०) आत्मोपजीवी। (स्त्री०) आत्मोपजीविनी।

आत्मोपनिषद् (सं० स्त्री०) परमात्मा-विषयक उपनिषद्का उपाधि, एक किताब। इसमें परमात्माका वर्णन विशद रीतिसे किया गया है।

आत्मोपम (सं० त्रि०) आत्मा देह उपमा यस्य, बहुव्री०। अपने सदृश, अपनी मानिन्द, जो अपनेसे मिलता जुलता हो। यह शब्द पुत्रादिका विशेषण है। (स्त्री०) आत्मोपमा।

आत्मौपम्य (सं० क्ली०) आत्मन औपम्यम्, आत्मन्-उपमा-ष्यञ्, ६-तत्। १ अपना सादृश्य, अपनी मिसाल। (त्रि०) आत्मनः स्वस्य औपम्यं यत्र यस्य वा। २ आत्मसदृश, अपने-जैसा। (स्त्री०) आत्मौपम्या।

आत्मक (सं० त्रि०) आत्म सम्बन्धीय, ज़ाती, अपने आपसे ताल्लुक़ रखनेवाला। समासान्तमें यह शब्द किसी द्रव्यकी प्रकृतिका बोधक है।

आत्यन्तिक (सं० त्रि०) अत्यन्तं भवति, अत्यन्त भावार्थे ठञ्। १ अतिशय, बहुत ज़्यादा। २ अतिरिक्त, काफ़ीसे ज़्यादा। ३ प्रधान, बड़ा।

आत्यन्तिक-दुःख-निवृत्ति (सं० स्त्री०) आत्यन्तिकी दुःखनिवृत्तिः, कर्मधा०, पूर्वपदस्य पुंवद्भावः। अपवर्गमुक्ति, मुदामी तकलीफ़से छुटकारा।

आत्यन्तिक-प्रलय (सं० पु०) कर्मधा०। प्रलय-विशेष, बड़ी क़यामत। वेदपरिशिष्टमें चार प्रकारका प्रलय लिखा है,—नित्य, प्राकृत, नैमित्तिक और आत्यन्तिक। इसमें मोक्षको आत्यन्तिक प्रलय कहते हैं।

आत्ययिक (सं० त्रि०) अत्ययः नाशः प्रयोजनमस्य, ठक्। १ भयंकर, घातुक, मुज़िर, उजाड़ू। २ अपरिहार्य, ताकीदी।

आत्यूक (सं० पु०) वङ्ग, रांगा।

आत्यूह (सं० पु०) दात्यूह पक्षी, मुर्गाबी।

आत्रेय (सं० पु०) अत्रेरपत्यम्, ढक्। १ अत्रिके सन्तान अत्रिके लड़के। दत्त दुर्वासा और चन्द्र अत्रिके पुत्र रहे। २ सदस्यसे सम्बन्ध रखनेवाले पुरोहित। ३ शरीरका रसधातु, खिलका अर्क। ४ शिव। (त्रि०) ५ अत्रिसे उत्पन्न होनेवाला, जो अत्रिसे पैदा हुआ हो।

आत्रेय—१ प्राचीन दर्शनज्ञ, एक पुराने मुनि। ब्रह्मसूत्र और मीमांसासूत्रमें इनका नाम आया है। २ वैयाकरण विशेष, कोई पुराने कथावददाम्। 'माधवीयधातुवृत्ति'में कई स्थानपर इनके वाक्य उद्धृत किये गये हैं। ३ अपि प्रकृति-प्रत्ययसमर्थक विशेष, एक पुराने धर्मशास्त्रकार। दानखण्डमें हेमाद्रिने इनके वाक्य उद्धृत किये हैं। ४ एक वैद्यक ग्रन्थकर्ता। इन्होंने तद्वचनक्रमभेद, नाड़ीज्ञान, हारीत-संहिता भेद, आत्रेयहारीतोत्तरार्द्ध और आत्रेयसंहिता नामक ग्रन्थ बनाये हैं।

आत्रेयभट्ट—मनोदयटीका-रचयिता।

आत्रेयिका (सं० स्त्री०) ऋतुमती, जो औरत हैजमें हो।

आत्रेयी (सं० स्त्री०) १ ऋतुमती, हैज रखनेवाली औरत। २ नदविशेष। यह बङ्गालके उत्तर राजशाही जिलेमें बहती है। ३ अत्रिवंशकी स्त्री।

आथना (हिं० क्रि०) होना, रहना।

आथर्वण (सं० पु०) अथर्वणा मुनिना दृष्टो वेदः, अण्, आथर्वणमधीते वेत्ति वा, पुनः अण्। १ अथर्ववेदज्ञ ब्राह्मण। २ पुरोहित। 'आथर्वणं पुरोहितं। आथर्वणं शान्तिकर्म' (हेम) अथर्वविहितमार्थं कर्म आथर्वणो वा, अण् इक लोपश्च। 'आथर्वणिकस्येकलोपश्च'। पा ४।३।१३३। ३ अथर्वविहित कर्म। [illegible]। ४ अथर्वा ब्राह्मणके सन्तान। ५ अथर्ववेद। (क्ली०) अथर्वणां समूहः, अण्। ६ अथर्ववेदका समूह। ७ शिल्पशाला, तन्त्रविशेषका मकान्। यहां अभिषेकके बाद पुरोहित यजमानको यज्ञके पूर्ण होनेका शुभ संवाद लाकर सुनाता है।

आथर्वणिक (सं० पु०) अथर्वाणं वेदं वेत्ति अधीते वा, उक्थादि० निपा० ठक्। अथर्ववेद जाननेवाला या पढ़नेवाला ब्राह्मण।

आथर्वणिक-ब्रह्मोपनिषद् (सं० स्त्री०) उपनिषद्-विशेष।

आद (सं० त्रि०) भक्षण करनेवाला, जो खा रहा हो। यह शब्द किसी-किसी समासान्तमें आता है। (स्त्री०) आदा।

आदंश (सं० पु०) आदन्श भावे घञ्। १ दंशन, डसना, काटकूट। आदश्यतेऽस्मिन्, आधारे घञ्। २ दंशन-स्थान, डसनेकी जगह, जिस जगहपे कोई काट खाये। आदश्यतेऽनेन, करणे घञ्। ३ दन्त, दांत, जिस चीजसे काटा जाये।

आदत्र (वै० त्रि०) सुख पर्यन्त पहुंचनेवाला, जो सुखतक आ जाता हो। यह शब्द अन्नादिका विशेषण है।

आदत (अ० स्त्री०) १ मिजाज, खसलियत, प्रकृति, स्वभाव। २ मश्क़, अभ्यास बान, टेव।

आदत्त (सं० त्रि०) १ गृहीत, पकड़ा हुआ। २ स्वीकृत, हाथमें लिया या ग्रहण किया हुआ।

आदत्सान (सं० त्रि०) ग्रहण, स्वीकार या धारण करनेवाला, जो लेता, मानता या ग्रहण करता हो।

आददि (वै० त्रि०) आ-दा-कि द्विर्भाव। 'आदृगमहन-जन' इति किन् लिट्वच्च। पा ३।२।१७१। १ सामर्थ्यवान् हासिल करने या पानेवाला। २ ग्रहण करनेवाला, जो उठा ले जाता हो।

आदम (अ० पु०) यहूदियों और मुसलमानोंके धर्मानुसार आदि मानव। पुस्तकोंमें देखा और लोगोंसे सुना, कि परमेश्वरने अपने अनुरूप प्रथम आदमको बनाया था। वही पृथिवीके आदि पुरुष रहे। यहूदियोंके 'तालमूद' ग्रन्थमें इनका कितना ही अलौकिक विवरण लिखा है। वह कहते हैं,— 'प्रथम आदमकी विराट्मूर्ति रही, खड़े होनेपर उनकी शिखा आकाशसे जा लगती। सूर्यमण्डलकी अपेक्षा उनका मुख अधिक ज्योतिर्मय देख पड़ता था। उस समय देवता आकर ससम्भ्रम उनके पास खड़े हुये और समस्त प्राणी उनकी पूजा करने लगी। उसके बाद ईश्वरने अपनी महिमा देवताओंको बता दिया। नींद छिनेपर देवताओंने आदमके शरीरका एक एक अङ्ग निकाला, जिससे उनका

आकार खर्व हो गया। किन्तु उससे आदम अङ्गहीन न हुये थे। आदमकी प्रथम पत्नीका नाम लिलिथ रहा। वही दैत्योंकी माता मानी जाती है। लिलिथके आदमको छोड़ जानेपर परमेश्वरने इवकी सृष्टि की थी। इवका दूसरा नाम हौवा रहा। हौवाके साथ आदमका विवाह हुआ। परिणयके उत्सवमें चन्द्रसूर्य नक्षत्र नाचने, कोई कोई देवता वाद्य बजाने और कोई नानाविध खाद्यसामग्री पहुंचाने लगे थे। पीछे आदम और हौवाकी सुखसम्पत्ति साजूएल दैत्य देख न सका। उसने हिंसावश उन्हें पापपथमें घुमा दिया।'

कुरान्‌का मत दूसरी तरह है। समस्त देवता जाकर आदमको पूजने लगे, किन्तु इवलीस अलग बैठे रहे थे। इसी अपराधपर वह सुखोद्यानसे निकाले गये। इवलीसने उसका प्रतिशोध लेनेके लिये आदम और हौवाको कुपथमें डाल दिया था। उसके बाद दोनोंमें विच्छेद पड़ा। आदम अनुतप्त हृदयसे मक्केके मन्दिर पास किसी तम्बूमें रहने लगे थे। उसी जगह जिबरीलने उन्हें ईश्वरका प्रत्यादेश सुना दिया। दो सौ वत्सर विच्छेदके बाद आदमको आराफट पर्वतपर पुनर्वार हौवाका साक्षात् मिला।

जेनिसिसके मतमें जगत् सृष्टिके षष्ठ दिवस परमेश्वरने कर्दमसे आदमको बनाया था। उसके बाद हौवाने जन्म लिया। यह दम्पती सुखोद्यानमें रहते थे। इनमें न तो जरा-मृत्यु और न प्रथम लज्जा, भय, शोक, ताप आदिका कोई ज्ञान ही रहा। परमेश्वरने इनसे उद्यानके सकल फलादि खानेको कहा, केवल एक वृक्षके फल छूनेको रोका था। पीछे शैतान्‌ने अनेक प्रलोभन देखा इन्हें उसी वृक्षका फल खिला दिया। खृष्टधर्मके मतसे उसी अपराधपर आदमके साथ मनुष्य जातिका पतन हुआ है।

२ विष्णुके प्रसिद्ध किये हुये एक अवतार। प्रायः सन् १४३० ई०के बाद कश्मीर, सिन्धु और पञ्जाबमें खोजाओंके प्रधान बनने पर सदरुद्दीनने आदमको विष्णुका अवतार मशहूर कर दिया था। ३ गुजरातके एक प्रधान मुल्ला। इनके बेटेका इब्राहीम और नातीका नाम अली रहा। अलीने गुजरातमें सन् १६२४ ई०को अपने नाम पर बोहरोंका एक सम्प्रदाय बनाया था। ५ गुजराती लोहाना वंशके राजपूत सुन्दरजी। मुसलमानधर्म ग्रहण करनेपर इनका नाम आदम पडा था। पीछे लोहाना वंश भी मोमिन कहलाया। इन्हें आदर-दृष्टिसे सरोया और नये सम्प्रदायका प्रधान पद दिया गया था।

आदमगिरि—सिंहलके एक पहाड़का नाम। इसे सोमगिरि वा सोमशैल भी कहते हैं। यह सिंहलके दक्षिण प्रायः ७४२० फीट ऊंचा है। इसी पर्वतपर मनुष्यके पैरका चिह्न मिलता है। मुसलमानोंके मतमें सुखोद्यानसे निकाले जानेपर आदमने यहीं हजार वर्षतक खड़े रह अनुताप किया था। इसीसे अद्यावधि उनका पदचिह्न चमक रहा है। बौद्ध इस चिह्नको श्रीपाद बताते हैं। उनके मतमें बुद्ध सिंहलमें जाते समय इस शैलचूड पर अपना पदचिह्न छोड गये थे। हिन्दू इसे महादेवका पदचिह्न मानते हैं। इस पुण्यस्थानपर काठका आच्छादन बना है। हिन्दू, बौद्ध और मुसलमान् यात्री पदचिह्नका दर्शन करने जाते हैं।

आदमचश्म (अ० पु०) मनुष्यके समान नेत्र रखनेवाला अश्व, जिस घोडेके आदमीकी तरह आंख रहे। आदमचश्म बडा कट्टर होता है।

आदमजाद (फा० पु०) १ आदमकी औलाद, आदमी, मनुष्य।

आदम-जो-तन्दो—बम्बई प्रान्तके सिन्धु-हैदराबाद जिलेकी हाला तहसीलका नगर। यह अक्षा० २५° ३६´ उ० और द्राघि० ६८° ४१´ १५´´ पूर्वपर अवस्थित है। यहां रेशम, रूई, अनाज, तेल, चीनी और घीका व्यापार होता है।

आदम जोहन—भारतके एक भूतपूर्व गवरनर जनरल या बड़े लाट। सन् १८२३ ई०को कुछ महीने इन्होंने भारतके बडे लाट लार्ड आमहर्स्टकी जगह काम किया था।

आदमपुर—पञ्जाब प्रान्तके जलन्धर जिलेकी करतारपुर तहसीलका एक बड़ा ग्राम। इसमें तीसरे दरजेकी म्युनिसपल्टिी बैठती है।

आदम विलियम पाविक—मन्द्राजके एक भूतपूर्व गवरनर। यह सन् १८७१ से १८८० ई० तक मन्द्राजके गवरनर रहे।

आदम सर फ्रेडरिक—मन्द्राज प्रान्तके एक भूतपूर्व गवरनर। इनका समय १८३०-३२ रहा।

आदम सेतु—भारत तथा सिंहलका एक स्थल, रेत और चट्टानकी एक पहाड़ी। यह अक्षा० ८° ५' से ८° १२' ३०" उ० और द्राघि० ७९° १२' ३०" से ८० पू० तक अवस्थित है। इसकी लम्बाई १७ मील है। यह उत्तर पश्चिमसे दक्षिण-पूर्वको विस्तृत है। भारतीय तटसे कुछ दूर रामेश्वरम् द्वीप इसके निकट भूमिको लगा है। यह सिंहलके पास मनार द्वीप तक चला गया है। इसीसे मनार खाड़ीकी उत्तर सीमा प्रायः बन्द है। समुद्रमें ज्वार चढ़ते समय इसपर कहीं कहीं तीन चार फीट पानी चढ़ जाता है। रामायणमें लिखा है, कि लङ्कापर चढ़ते समय रामने इसी सेतुको अपनी फौज उतारनेके लिये प्रधान मार्ग बनाया था।

आदमियत (अ० स्त्री०) १ इन्सानियत, मनुष्यत्व आदमी होनेकी हालत। २ भायस्तगी, सभ्यता।

आदमी (अ० पु०) १ इन्सान् मनुष्य। २ भृत्य नौकर। ३ स्वामी, खाविन्द।

आदर (सं० पु०) आ-दृ-अप् गुण। १ मर्यादा, इज्जत। २ अनुराग, प्यार। ३ सम्मान, खातिर। ४ आरम्भ, आगाज। ५ आसक्ति, लगाव। ६ यत्न, तदबीर।

आदरण (सं० स्त्री०) सत्कार, तवज्जो, खयाल।

आदरणीय (सं० त्रि०) आ-दृ अनीयर्। सम्माननीय, इज्जत किये जाने काबिल। २ ध्यान देने योग्य, खयाल करने काबिल। (स्त्री०) आदरणीया।

आदरना (हिं० क्रि०) आदर देना, इज्जत करना मानना।

आदरभाव (स० पु०) आदर सत्कार, खातिर-तवज्जो, मानध्यान।

आदरम (हिं०) अदर्क देखो।

आदर्तव्य (सं० त्रि०) आ-दृ-तव्य। आदरणीय देखो।

आदर्दरि (वै० त्रि०) तुषको डालने या टुकड़े उड़ा देनेवाला।

आदर्श, आदर्शक देखो।

आदर्श (सं० पु०) आदृश्यतेऽत्र, आ-दृश आधारे घञ्। १ दर्पण, आयीना। २ प्रतिलिपि, किसी किताबकी कापी। ३ आदि हस्तलिपि, असली लिखावट। इसे देखकर नकल उतारते हैं। ४ नमूना। ५ ज्ञानका चित्र समझका नक्शा। ६ टीका। 'आदर्शो दर्पणे टीकाप्रतिपुस्तकयोरपि।' (मेदिनी)

आदर्शक (सं० त्रि०) अपादी हुए। १ प्रदेशके सीमासूचक ज्ञानसे उत्पन्न, जो मुल्की हद बतानेको समझसे निकला हो। (पु०) २ दर्पण आयीना।

आदर्शन (सं० स्त्री०) १ दिखाव, नजारा। २ दर्पण, आयीना।

आदर्शमण्डल (सं० पु०) आदर्श इव मण्डलम्। सर्प विशेष, एक सांप। इसके शरीरपर दर्पण जैसे चिह्न होते हैं। (स्त्री०) आदर्शा मण्डलिका। २ गोलाकार दर्पण, गोल आयीना।

आदर्शमन्दिर (सं० पु०) शीश महल, आयीनाघर।

आदर्शित (सं० त्रि०) दिखलाया या जाहिर किया हुआ।

आदहन (सं० स्त्री०) आदह्यतेऽत्र, आ दह भावे ल्युट्। १ दाह जलन। २ हिंसा मारकाट। ३ कुत्सन निन्दा धिक्कार। आदह्यतेऽत्र, आधारे ल्युट्। ४ श्मशान, मुर्दा फूंकनेकी जगह। ५ जलानेका स्थान, जला डालनेकी जगह।

आदा (हिं० पु०) अदरक देखो।

आदातव्य (सं० त्रि०) लिया जानेवाला, लेने काबिल।

आदाता आदातृ देखो।

आदातृ (सं० पु०) आ-दा तृच्। ग्रहीता, लेने वाला।

आदादिक (सं० त्रि०) अदादिमध्ये पठितम्, ठक्। अदादिगण पठित। यह शब्द धातुका विशेषण है।

आदान (सं० स्त्री०) आ दा भावे ल्युट्। १ ग्रहण पकड़। २ अश्वका चमड़ार विशेष घोड़ेका एक गहना।

'आदानं ग्रहणेऽपि स्यादलङ्कारे च वाजिनाम्।' (मेदिनी) ३ प्राप्ति, स्वीकृति, पहुंच, मञ्जूरी। ४ निजका अर्थग्रहण, अपने आप लेनेका काम। ५ लक्षण, अलामत। ६ निदान, बीमारीकी पहचान। ७ बन्धन, जकड।

आदानवत् (सं० त्रि०) पानेवाला, जिसके कुछ हाथ लगे। (पु०) आदानवान्। (स्त्री०) आदानवती।

आदान-प्रदान (सं० क्ली०) लेन-देन।

आदाना, आदानी देखो।

आदानी (सं० स्त्री०) आदीयते, आ-दा कर्मणि लुग्रट् ङीप्। हस्तिघोषा, हाथी चिघार।

आदापन (सं० क्ली०) निमन्त्रण, न्योता।

आदाब (अ० पु०) १ संयम, तरीक। २ ध्यान, खयाल। ३ प्रणाम, सलाम। यह 'अदब' शब्दका बहुवचन है।

आदाय (सं० त्रि) आददाति गृह्णाति, आ-दा-ण-युक्। १ गृहीता, लेनेवाला। (पु०) आ-दा भावे घञ् युक्। २ आदान, लेनेका काम। (अव्य०) आ-दा-ल्यप्। ३ ग्रहणपूर्वक, लेकर।

आदायचर (सं० त्रि०) आदाय चरति, चर ट, उप० समा०। भिक्षासेनादायेषु च। पा ३।२।१७। ग्रहणपूर्वक गमनकारी, लेकर चल देनेवाला।

आदायमान (सं० त्रि०) आददान, ले लेनेवाला। यह शब्द पद्यमें आता है।

आदायिन् (सं० त्रि०) आददाति गृह्णाति, आ-दा-णिनि-युक्। ग्रहीता, लेनेवाला। (पु०) आदायी। (स्त्री०) आदायिनी।

आदार (वै० पु०) आ-दृ वेदे बाहु० घञ्। १ आदर, इज्जत। २ प्रलोभन, आकर्षण, लालच, कशिश। ३ प्रोत्साहक, सुफारिश, विषकी गांठ। ४ वृक्ष विशेष, एक पौदा। सामलता न मिलनेसे उसके स्थानमें यह व्यवहृत होता है।

आदारबिम्बी (सं० स्त्री०) आदरिणी बिम्बीव, पृषो० पुंवद्भावः। लताविशेष, एक बेल। इसमें अम्ल-वेतसके तुल्य पुष्प खिलते हैं।

आदारिन् (वै० त्रि०) १ प्रलोभक, आकर्षक, लालच देनेवाला, जो अपनी ओर खींच लेता हो। २ नाशक, बिगाड़ू। (पु०) आदारी। (स्त्री०) आदारिणी।

आदि (सं० पु०) आ-दा-कि। उपसर्गे घोः किः। पा ३।३।९२। १ आरम्भ, आगाज। २ प्राक्सकता, पहला फल। ३ प्रथम, पहला। ४ कारण, सबब। ५ सामीप्य, पडोस। ६ प्रकार, तरह। ७ अवयव, अंगो। (त्रि०) ८ आद्य, पहलेका। ९ पूर्व पौरस्त्य, सामने खड़ा हुआ। 'पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्य प्रथमाद्याः।' (अमर) इति शब्दसे मिले हुये आदि अर्थात् इत्यादि द्वारा गण समझा जाता है, जैसे—शाखा पल्लव पत्र इत्यादि। यह प्रायः समासके अन्त या मध्यमें आरम्भसूचक रहता है, जैसे—गृहादियुक्त, अर्थात् मकान् वगैरह रखनेवाला।

आदितः (सं० अव्य०) किसीसे लेकर, वगैरह। यह प्रायः समासान्तमें आदि शब्दकी तरह व्यवहृत होता है।

आदिकर (सं० पु०) आदिं करोति, अहेतादावपि ट। प्रथमकारक, अव्वल बनानेवाला।

आदिकर्ता, आदिकर्तृ देखो।

आदिकर्तृ (सं० पु०) आदिं करोति आदिः कर्ता वा। आदिकारक, परमेश्वर। ब्रह्मा कृष्ण वा विष्णुको भी आदिकर्ता कहते हैं।

आदिकर्मन् (सं० क्ली०) कर्मधा०। आदिकर्मणि क्तः कर्तरि च। पा ३।४।७१। कर्मसे पहले क्रियापद लगा वाक्यारम्भ विशेष, मफ्‌ऊलसे पेश्तर फेल रख जुमलेका आगाज। जैसे—मार डाला रावणको रामने। 'मार डाला' क्रियापद पहले रहनेसे उपरोक्त वाक्य व्याकरणानुसार आदिकर्मा है। २ प्रथम-जात कर्म-मात्र, पहले निकला हुआ काम। (त्रि०) आदि आदिभूतं कर्म यस्य, बहुव्री०। ३ आदि-कार्म युक्त, अव्वल काम करनेवाला।

आदिकवि (सं० पु०) आदिः आदिभूतः कविः। १ हिरण्यगर्भ ब्रह्मा। प्रथम उत्पन्न हो स्वयं वेद और कवित्व प्रकाश करनेपर ब्रह्माका नाम 'आदिकवि पडा है। प्रवाद है—पहले पहल वाल्मीकिके मुखसे 'मा निषाद' इत्यादि अनुष्टुप् छन्द निकला था, इसीसे उन्हें भी आदिकवि उपाधि मिला। किन्तु कोयी-

कोयी वाल्मीकिको अपेक्षा व्यासको प्राचीन कवि बताता है।

आदिकारण (सं॰ क्ली॰) आदिभूतं कारणम्, कर्म॰ तत्। १ परमेश्वर, सबका कारणका मूलकारण, सबब-उल्-असबाब। महर्षि कपिलने अस्तित्वका प्रमाण न पानेसे ईश्वरको नहीं माना है। क्योंकि बिना ईश्वर जगत्को सृष्टिका प्रकार ठहरानेको कहा है, पहले कुछ उपादान न रहनेसे कोयी वस्तु कैसे उत्पन्न हो सकता है। प्रत्येक द्रव्य बनानेमें उपादान आवश्यक है। पहले दुग्ध रहनेसे ही पीछे दधि बन सकता है। दुग्ध न होनेसे दधि कैसे मिलेगा। इसीसे उन्होंने प्रकृति और पुरुष नामक दो भिन्न पदार्थ माने हैं। प्रकृति जड़ पदार्थ है। इसीके विकारसे जगत् उत्पन्न हुआ है। यह प्रकृति ही उनके मतसे आदिकारण है। आदिकारण नित्य होता और अपनी उत्पत्तिके लिये अन्य कारणकी आवश्यकता नहीं रखता। कपिलने आदिकारणको बारबार अमूलमूल कहा है। सांख्यवादियोंके मतसे इसका दूसरा नाम प्रधान भी है। नैयायिक प्रकृति आदि कारण शब्दसे निमित्त निकालनेपर ईश्वर और समवायिकारणके आनेपर परमाणु समझते हैं। २ निदान, बीमारीको पहचान। ३ व्यवच्छेद, बीजगणित, जब्र मुकाबला, जब्र मुकाबलेसे जवाब निकालनेका तरीक।

आदिकाल (सं॰ पु॰) प्राचीन समय, कदिम जमाना।

आदिकाव्य (सं॰ क्ली॰) आदिभूतं काव्यम् कर्म॰ तत्। आर चरणयुक्त श्लोकबद्ध काव्य, वाल्मीकिरचित रामायण।

आदिक्षत्, आक्षिप्त देखो।

आदिकेशव (सं॰ पु॰) आदिभूत केशवः कर्म॰ तत्। १ काशीके केशवमूर्तिविशेष। २ विष्णु भगवान्।

आदिगदाधर (सं॰ पु॰) १ काशीके विष्णुमूर्ति विशेष। २ गया तीर्थके विष्णुमूर्ति विशेष।

आदिग्ध (सं॰ त्रि॰) लिप्त, अक्त, आलूदा, लुपड़ा या भरा हुआ।

आदिजिन (सं॰ पु॰) आदिभूतः जिनः, कर्म॰ तत्। ऋषभदेव जैनोंके आदि देव। ऋषभ देखो।

आदित (हिं॰) आदित्य देखो।

आदितस (सं॰ अव्य॰) आदिसे, आरम्भमें, शुरूसे, पहले।

आदिता (सं॰ स्त्री॰) पूर्वता, प्रथमता कदामत, तकदीम।

आदिताल (सं॰ पु॰) कर्मेधा। ताल विशेष एक ठेका। इसमें एक लघु ताल लगता है।

"एक एव लघुर्यत्र आदितालः स कथ्यते।
इदमत्र इष्टौ शब्दा ... ।" (...)

आदितेय (सं॰ पु॰) अदितेः अपत्यम् ढक्। १ अदितिके सन्तान, अदितिके लड़के। २ देवता। ३ सूर्य।

आदित्य (सं पु॰) अदितेः अपत्यम् ण्य। दित्यदित्यादित्य पत्युत्तरपदाण्ण्यः। पा ४।१।८५। १ अदितिके सन्तान अदितिके लड़के। २ सकल देवता। ३ सूर्य। आङ् पूर्वात् ददातेः ... (...) ... (निरुक्त) ४ सूर्य अधिष्ठित मकान, जिस आसमानमें सूरज रहें। ५ सूर्यका तेजोमण्डल। ६ आदित्यमण्डलान्तरगत हिरण्यवर्ण परमपुरुष विष्णु। ७ उपासक योगोंके अतिवाहनको दक्षिण और उत्तर पथमें ईश्वर नियुक्त धूमादि एवं अर्चिरादि अभिमानी देवगण। ८ अर्क-हक्ष, मदारका पेड़। ९ श्वेतार्क वृक्ष सफेद अकोड़ेका पेड़। (त्रि॰) आदित्यस्यापत्यम् आदित्य-ण्य यो लोप। १० सूर्यके पुत्र। ११ इन्द्र। १२ वामन। १३ वसु। १४ विश्वेदेवा। १५ बारहमात्राका छन्द। (त्रि॰) १६ अदिति-सम्बन्धीय। ऋग्वेदको (२।२७।१) ऋचामें आदित्यगणको संख्या छः लिखी है—मित्र, अर्यमा भग, वरुण, दक्ष और अंश। फिर (९।११४।३) ऋक्‌में इनको संख्या सात है। किन्तु इस ऋक्‌में उनका नाम नहीं लिखा। (१०।७२।८) ऋक्‌में अदितिके आठ सन्तान कहे हैं। इनमें सात पुत्र उन्होंने देवताओंके दे दिये केवल मार्तण्ड रख गयी थी। अथर्ववेदमें (८।९।२१) आठ आदित्यका उल्लेख है। किन्तु बहुधा बारह आदित्यका ही नाम देख पड़ता है—विवस्वान् अर्यमा पूषा त्वष्टा, सविता, भग

धाता, विधाता, वरुण, मित्र, शक्र एवं उपक्रम। ऋग्वेदके (२।२७।१) भाष्यमें सायणाचार्यने तैत्तिरीय संहिताकी एक ऋक् उद्धृत की है। उसमें मित्र, वरुण, धाता, अर्यमा, अंश, भग, इन्द्र और विवस्वान् इन आठ आदित्यका ही नाम मिलता है।

तैत्तिरीय संहितामें (६।५।६।१) आदित्यका जन्म-विवरण इस प्रकार लिखा है—अदितिने पुत्रकी कामनासे देवताओंके निमित्त ब्रह्मौदन पाक किया था। उन्होंने अदितिको उच्छिष्ट दे दिया। वह इस प्रसादको खानेसे गर्भवती हुई थीं। उससे चार आदित्यने जन्म लिया। अदितिने द्वितीय वार भी पाक बनाया। किन्तु इस समय उन्होंने सोचा, कि उच्छिष्ट खानेसे जब ऐसे सन्तान उत्पन्न हुये, तब चरुका अग्रभाग लेनेसे और भी तेजस्वी सन्तान उत्पन्न हो सकते। ऐसा विचार वह चरुका अग्रभाग खाकर गर्भवती हुईं। पीछे उन्होंने एक अपक्व अण्ड प्रसव किया था। फिर अदितिने आदित्योंके लिये तृतीय वार यह मन्त्र पढ़कर चरु चढ़ाया,—('भोगाय मे इद श्रान्तम्') अर्थात् यह श्रान्त (परिश्रम) मेरे भोगके लिये हो। इसपर आदित्योंने कहा,—'हम वर देते हैं। जो इससे जन्म लेगा, वह हमारा ही होगा और हम प्रजामें जो समृद्ध बनेगा, वह हमारे ही भोगमें लगेगा।' इसीसे आदित्य विवस्वान्‌का जन्म हुआ। तैत्तिरीय-ब्राह्मणमें भी बिलकुल ऐसा ही एक विवरण मिलता है। उसमें लिखा, कि अदितिने प्रथम ब्रह्मौदन प्रसाद खा कर धाता तथा अर्यमा, द्वितीय वार मित्र एवं वरुण, तृतीय वार अंश एवं भग और चतुर्थ वार इन्द्र तथा विवस्वान्‌को प्रसव किया। तैत्तिरीय-संहितामें यह भी देखा, कि प्रजापतिसे द्वादश आदित्यका जन्म हुआ था। इधर शतपथब्राह्मणमें द्वादश आदित्यको द्वादश मासके साथ मिला दिया है।

आदित्यकान्ता, आदित्यभक्ता देखो।

आदित्यकेतु (सं० पु०) आदित्यः केतुर्यस्य, बहुव्रीहि। १ आदित्य-ध्वज-रथ-युक्त धृतराष्ट्रके पुत्र। अपने भाई दुर्योधनके मारे जानेपर इन्होंने महोदर प्रभृति छः भ्राताओंके साथ भीमसे युद्ध किया था। पीछे यह भी निहत हुये। २ अरुण, सूर्यके सारथि।

आदित्यकेशव (सं० पु०) ३ तत्। काशीस्थ केशव मूर्ति विशेष।

आदित्यगर्भ (सं० पु०) किसी बोधिसत्त्वका नाम।

आदित्यतेजा, आदित्यभक्ता देखो।

आदित्यपत्र (सं० पु०) आदित्यस्य अर्कवृक्षस्य पत्रमिव पत्रमस्य। १ क्षुपविशेष, एक पौदा। इसके कुछ पर्याय यह हैं,—अर्कपत्र, अर्कदल, सूर्यपत्र, तपनच्छद, कुष्ठारि, विटप, सुपत्र, रविप्रिय, रश्मिपति और रुद्र। आदित्यपत्र कटु एवं उष्ण होता, कफ, वातरोग, गुल्म तथा अरोचकको हटाता और अग्निवृद्धि करता है। (राजनिघण्टु)

२ आदित्यभक्ता भेद। (क्ली०) ६-तत्। ३ अर्कवृक्षका पत्र, मदारका पत्ता। (स्त्री०) आदित्यपत्रा।

आदित्यपत्रक, आदित्यपत्र देखो।

आदित्यपर्णिका, आदित्यपर्णिनी देखो।

आदित्यपर्णिनी (सं० स्त्री०) आदित्यवर्णं पर्णमस्त्यस्या इनि। १ आदित्यभक्ता, सूरजमुखी। २ ओषधि विशेष, एक बूटी। इसका मूलदेश सुन्दर रक्तवर्ण होता, सुनहला फूल आता और कोमल-कोमल पांच पत्ता लगता है।

आदित्यपर्णी, आदित्यपर्णिनी देखो।

आदित्यपाकतैल (सं० क्ली०) तैलभेद, किसी किस्मका तेल। मञ्जिष्ठा, लाक्षा, त्रिफला, हरिद्रा, मनःशिला, हरताल एवं गन्धकचूर्ण सम भाग लेकर सबके बराबर तैलमें पकाना चाहिये। किन्तु विना जलके पाक बन नहीं सकता, इसलिये तैलके तुल्य जल भी डालना पड़ता है। इसे धूपमें तयार करना अच्छा है। जब तक पानी न सूखे, तबतक धूप दिखाता जाये। आदित्यपाकतैल कुष्ठरोगको दूर करता है। (चक्रदत्तसंग्रह ग्रन्थ)

आदित्यपुराण (सं० क्ली०) आदित्येनोक्तं पुराणम्, शाक० तत्। उपपुराण विशेष। सौरपुराण, भास्कर-पुराण, सूर्यपुराण इत्यादि शब्दसे भी आदित्यपुराणका ही बोध होता है।

आदित्यपुष्पा (स॰ स्त्री॰) १ रक्तकोपुष्पक्षुप, लालके फूलका पेड़। २ चोरकाकोली।

आदित्यपुष्पिका (स॰ स्त्री॰) आदित्यवर्ण रक्त पुष्पमस्याः। १ अर्कवृक्ष, मदारका पेड़। २ लोहिताकं क्षुप, लाल मदार।

आदित्यपुष्पी, आदित्यपुष्पिका देखो।

आदित्यभक्ता (सं॰ स्त्री॰) आदित्ये विषये भक्ता ७-तत्। हुरहुर, अर्कपत्रिका। वह श्वेत एवं पीत भेदसे दो प्रकार है। यह वृक्ष शीतल, कटु एवं तिक्त रहता और कफ, रक्तदोष कण्डु, व्रण, कुष्ठ, मूत्रग्रह तथा शीतज्वरको दूर कर देता है। (राजनिघण्टु) इसमें स्वादु पाकरसत्व गुरुत्व, क्षाररसत्व पित्तवर्धकत्व, विदाहित्व, वातहरत्व और कर्णशूल मिटानेका गुण पाते हैं। (चक्रपाणिदत्तका द्रव्यगुण)

यह वृक्ष शीतल, रुच, स्वादुपाक, सर, गुरु, कटु पित्तल, चार, विदाह और कफ-वात-ह होता है। फिर दूसरा तिक्त कषाय उष्ण, सर, रुच कटु एवं कटु लगता और कफ पित्त रक्त, श्वास, कास, अरुचि, ज्वर, विस्फोटक कुष्ठ, मेह, योनिरोग, कृमि और पाण्डुको दूर करता है। (भावप्रकाश)

आदित्यमण्डल (सं॰ क्ली॰) सूर्यका वृत्त, आफ्ताबका कुरा।

आदित्यवत् (सं॰ त्रि॰) आदित्यके सदृश, आफ्ताबसे मिला हुआ। (पु॰) आदित्यवान्। (स्त्री॰) आदित्य वती।

आदित्यवर्णि (वै॰ त्रि॰) आदित्यको अपना मार्ग करनेवाला, जो आदित्यको अयन तारीमें ला रहा हो।

आदित्यवर्ण (सं॰ त्रि॰) सूर्यके वर्ण विशिष्ट, आफ्ताब जैसा, जिसके सूरजकी तरह रङ्ग रहे।

आदित्यवर्मा—भारतीय दाक्षिणात्यके एक प्राचीन नृपति। यह पुलकेशी राजाके पुत्र रहे। कृष्णा और तुङ्गभद्राके समीपस्थ प्रान्तपर इनका अधिकार था। अपने शासनके पहले वर्ष इन्होंने जो ताम्रशासन प्रदान किया वह करनूल जिलेमें मिला है।

२ कुमाऊंके एक नृपति। कुमाऊंमें आविष्कृत शिलालिपिके सम्बन्ध करते कि वही सन् ई॰के ७म शताब्दमें आदित्यवर्मा नामक प्रबल पराक्रान्त नृपति हुए थे। इनकी कीर्तिका बहु ध्वंसावशेष आज भी कुमाऊंदेशके नाना स्थानमें पड़ा है। ३ मगधदेशके एक राजा। अल्प दिन हुवे मगधदेशसे जो राजकीय पुरातत्त्वविवरण छपे, उनके अनुसार सन् ई॰के ६ठे शताब्द आदित्यवर्मा नामक मौखरनृपति प्रबलप्रतापसे यहां राजत्व चलाते थे।

आदित्यवल्लभा आदित्यभक्ता देखो।

आदित्यवल्लिका, आदित्यभक्ता देखो।

आदित्यवल्ली आदित्यभक्ता देखो।

आदित्यवार (स॰ पु॰) रविवार, सूर्यका दिन, एतवार।

आदित्यव्रत (स॰ क्ली॰) आदित्यस्य तदुपासनाके व्रतम्, ६ तत्। १ सूर्यको उपासनाके निमित्त व्रत विशेष। इसमें नमक नहीं खाते। (त्रि॰) आदित्य व्रतस्य ब्रह्मचर्यमस्य ठञ्। २ आदित्यव्रतिक आदित्य-व्रतके निमित्त ब्रह्मचर्य युक्त, रविवारका व्रत करनेवाला।

आदित्यशक्ति—बम्बई प्रान्तके कनाड़ी ज़िलेके एक नृपति। ग्वालियर राज्यके मौसारी ज़िलेके बगुमरैसे जो दानपत्र दिया गया उसमें निम्नलिखित वृत्तान्त मिला है,—इनके पिताका नाम भानुशक्ति और पुत्रका नाम पृथिवीवल्लभ निकुम्भल्लशक्ति रहा। इनका समय सन् ६५५ ई॰ बताते हैं।

आदित्यशूर—राढ़देशके कोई शूरवंशीय प्रसिद्ध नरपति। इनका दूसरा नाम वरकाशूर रहा। सिंहेश्वर नामक स्थानमें आदित्यशूरको राजधानी थी। प्रायः सन् ८०१ से ८०९ ई॰ तक इन्होंने राजत्व किया। इनके समय भी पञ्चक ब्राह्मण आर कायस्थ उत्तर राढ़में प्रतिष्ठित हुए थे।

आदित्यसदृश (स॰ त्रि॰) सूर्यके समान, आफ्ताब जैसा। (स्त्री॰) आदित्यसदृशी।

आदित्यसनु (स॰ पु॰) ६ तत्। १ सूर्यपुत्र सुग्रीव। २ कर्ण। ३ यम। ४ शनि। ५ सावर्णि मनु। ६ वैवस्वत मनु।

आदित्यसेन—मगधके गुप्तवंशीय एक सम्राट। यह सम्राट्

हर्षवर्धनके प्रियसखा माधवगुप्तके पुत्र रहे। सम्राट् हर्षकी मृत्युके बाद उत्तराधिकारियों और मन्त्रियोंमें जब साम्राज्यके अधिकार पर झगडा चला, तब आदित्यसेनने धीरे-धीरे बल बढ़ा और परम भट्टारक महाराजाधिराज उपाधि ले समस्त प्राच्य भारतका अधिकार पाया था। गुप्तवंश शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

आदित्याचार्य (सं० पु०) ग्रन्थकार विशेष, एक मुसन्निफ्।

आदित्व (सं० क्लो०) आदिता देखो।

आदित्सा (सं० स्त्री०) ग्रहण करनेकी इच्छा, ले-लेनेकी ख्वाहिश।

आदित्सु (सं० त्रि०) आदातु-मिच्छुः, आ-दा-सन्-उ। ग्रहणके निमित्त इच्छुक, लेनेका ख्वाहिशमन्द।

आदिदेव (सं० पु०) आदिभूतो देवः, शाक० तत्। १ नारायण। २ शिव। ३ सूर्य। 'आदिदेवो महानिशि-शिवविप्रवदोद्भवः।' (श्रुति) आदौ दीव्यति, आदि-दिव-अच्, ७-तत्। ४ आदिकारण। परमेश्वर।

आदिदैत्य (सं० पु०) आदिभूतो दैत्यः, शाक० तत्। हिरण्यकशिपु नामक दैत्य। दितिके प्रथम गर्भसे जन्म लेने कारण हिरण्यकशिपुको आदिदैत्य कहते हैं। भागवत आदिस्कन्धके ६५वें अध्यायमें इसका विवरण लिखा है।

आदिन् (सं० त्रि०) अत्ति, अद्-णिनि। भक्षक, खानेवाला। यह शब्द समासान्तमें व्यवहृत होता है। जैसे—अन्नादिन्,अनाज खानेवाला। (पु०) आदी। (स्त्री०) आदिनी।

आदिनव (वै० पु०) आदीनवस्य॒पृषो० वेदे ह्रस्वः। दुर्भाग्य, बाधा, कमबख्ती, बखेडा।

आदिनवदर्श (वै० त्रि०) साथमें पासा या कावतैन खेलनेवालोंसे चालाकी करनेवाला।

आदिनाथ (सं० पु०) १ ग्रन्थकार विशेष, एक मुसन्निफ्। २ आदितीर्थङ्कर। गुजरातके शत्रुञ्जय नामक स्थानमें इनका मठ स्थापित है। कहते हैं, (सन् ११४३-११७४ ई०) अनहिलवाड़के वल्लभीराज कुमारपालके प्रधान मन्त्री किसी समय मन्दिरमें आदिनाथका पूजन करनेको पहुंचे, उसी समय चूहे दीपककी बत्ती घसीट ले गये। मन्दिर लकड़ीका रहा, इसीसे आग लगते ही भस्मीभूत हुआ। लकड़ीकी इमारतको विपद्जनक देख मन्त्रीने पक्का मन्दिर बनानेका विचार किया था। ऋषभदेव देखो।

आदिपर्वन् (सं० क्लो०) आदिभूतं पर्व, शाक० तत्। प्रथम अध्याय, पहला बाब। महाभारत अष्टादश पर्वके अन्तर्गत प्रथम पर्वको भी इसी नामसे पुकारते हैं।

आदिपुराण (सं० क्लो०) आदिभूतं पुराणम्, शाक० तत्। १ पुराण विशेष, अष्टादश पुराणके अन्तर्गत प्रथम पुराण, चतुर्लक्षात्मक ब्रह्मनिर्मित पुराण विशेष, ब्रह्मपुराण। २ जिनसेनरचित ग्रन्थविशेष। इसमें दाक्षिणात्यके महाराज अमोघवर्ष और राष्ट्रकूट-नृपति अकलङ्क, प्रभाचन्द्र एवं पात्रकेशरीका उल्लेख विद्यमान है। जिनसेन देखो।

आदिपुरुष (सं० पु०) आदिभूतः पुरुषः, शाक० तत्। १ मनुष्यके आदिबीजस्वरूप हिरण्यगर्भ। २ ब्रह्मा। ३ नारायण।

आदिपूरुष, आदिपुरुष देखो।

आदिबल (सं० क्लो०) उत्पादक शक्ति, पैदा करने-वाली ताकत।

आदिबलप्रवृत्त (सं० त्रि०) शुक्रशोणितान्वयज, मनी और खूनके मेलसे पैदा हुआ। शुक्र और शोणितके योगसे उत्पन्न होनेवाले कुष्ठ, अर्श प्रभृति रोग आदिबलप्रवृत्त कहाते हैं। यह दो प्रकारके होते हैं,—मातृज और पितृज। (सुश्रुत) ऐसे रोगोंको आध्यात्मिक भी कहते हैं।

आदिबुद्ध (सं० त्रि०) १ आरम्भसे ही मालूम किया हुआ, जो शुरूमें ही समझ पड़ा हो। (पु०) २ प्रथम बुद्ध, उत्तरीय बौद्धोंके प्रधान देव।

आदिभञ्ज—भञ्जवंशके प्रथम नृपति। कहते, कि मयूर-भञ्जके अन्तर्गत आदिपुरमें यह राजत्व करते थे। भञ्जवंश देखो।

आदिभव (सं० पु०) आदौ भवतीति, आदि-भू-अच्। १ हिरण्यगर्भ, परमेश्वर। २ ब्रह्मा। ३ विष्णु। (त्रि०) ४ अग्रज, शुरूमें पैदा हुआ।

आदिभूत, आदिभव देखो।

आदिम (सं त्रि०) आदि भिमच्। अग्रादि पश्चान्तेभ्यः। (पाणि—४।३।२३) प्रथमजात, आदिमें उत्पन्न, पहला, अव्वल, बुनियादी।

आदिमत् (सं० त्रि०) आदिरस्यास्ति, मतुप्। आदियुक्त, सकारण, आदि सीमायुक्त, उत्पत्तिशाली, आगाज या सबब रखनेवाला। (पु०) आदिमान्। (स्त्री०) आदिमती।

आदिमल्ल—विष्णुपुर या मल्लभूमके मल्लवंशीय प्रथम नृपति। इन्होंके समयसे मल्लाब्द चला है। मल्ल या विष्णुपुर देखो।

आदिमा (सं स्त्री०) भूमि, जमीन्।

आदिमूल (सं० क्ली०) प्रथमजात आधार या कारण, पहली बुनियाद या सबब।

आदियोगाचार्य (सं० पु०) योगके प्रथम गुरु। यह शब्द शिवका उपाधि है।

आदिरस (सं० पु०) प्रधान रस, पहला जज्बा। शृङ्गार रसका ही दूसरा नाम आदिरस है।

आदिराज (सं० पु०) आदिभूतो राजा, कर्म० टजन्त तत्। राजाह सखिभ्यष्टच्। पा ५।४।९१। १ प्रथम नृपति, पहले बादशाह। २ पृथु नामक नृपति। भागवतके चतुर्थ स्कन्धमें आदिराज पृथुका विवरण लिखा है। ३ कुरुके एक पुत्र। ४ मनु। कालिदासने रघुवंशमें वैवस्वत मनुको आदिराज कहा है।

आदिल (फा० वि०) अदल या इन्साफ करनेवाला, न्यायी।

आदिल खान्—बम्बई प्रान्तस्थ खान्देशके नवाब। सन् १४५७ ई०को मुबारिक खान्के मरने पर यह खान्देशके नवाब बने थे। इन्होंने १५०१ ई० तक राज्य किया। इनके समय खान्देशकी बड़ी श्रीवृद्धि हुई थी। आदिलखान् गुजरातकी कर देनेसे असम्मत रहे, किन्तु कोई १४९८ ई०के समय वैसा करनेपर बाध्य किये गये। गोपालराय कविने इनकी प्रशंसापर कुछ पद्य लिखा था।

आदिलशाही—दाक्षिणात्यके बहमानी राजवंशका एक भाग। सन् १४८९ ई०को द्वितीय महमूदके किसी मुत्सद्दीने बीजापुरमें अपनी राजधानी प्रतिष्ठित की थी। औरङ्गजेबने १६८६-८८ ई०को बीजापुर जीत दिल्लीकी बादशाहतमें मिला लिया।

आदिवंश (सं० पु०) प्रथम कुल, बुनियादी खानदान्।

आदिवराह (सं० पु०) आदिभूतो वराहः, कर्म० तत्। महावराह रूपमें अवतीर्ण विष्णुका एक अवतार। हरिवंशमें लिखा, पहले यह जगत् प्रजापतिके मूर्तिधर हिरण्मय अण्डमें परिणत हुआ था। हजार वर्षके बाद नारायणने उसी अण्डको अधोमुख उठाके दो भागमें विभक्त किया। उसके एक भागसे पर्वतकी सृष्टि हुई थी। समस्त पर्वतोंके भारसे व्यथित हो तथा नारायणात्मक जलराशिमें डूब जाय पृथिवी रसातलको चली गयी, तब नारायणने यज्ञ वराह मूर्ति धारण कर ऊपर उठा ली। आदिवराहकी मूर्ति दश योजन विस्तृत और शत योजन उन्नत रही। उनके देहकी कान्ति मेघकी तरह नील वर्ण एवं गर्जन जलद जैसे घोर घो। श्वेतवर्ण, दीप्तियुक्त एवं उग्र दंष्ट्राये पवत पर्यन्त विदीर्ण हो जाती रहे। चक्षु विद्युत्-अग्नि या सूर्य-किरणकी तरह तीव्र था। स्कन्ध स्थूल, विस्तृत और गोलाकार रहा। सिंहकी आकृतिकी तरह अति भयङ्कर और कटिदेश पीन एवं उन्नत था। शरीरमें देखनेसे बिलकुल उसका लक्षण मिलता रहा। चतुर्वेद पैर, यूप दांत, क्रतु हाथ, चिती मुख, अग्नि जिह्वा, दर्भ लोम, ब्रह्म मस्तक, दिवारात्र चक्षुद्वय, वेदाङ्ग कर्णभूषण, आज्य नासिका, स्रुव तुण्ड, साम वेदध्वनि कण्ठनिःस्वन, क्रियामय गोलाकारादि ग्रीवा, प्रायश्चित्त जानु, मख आकृति, उद्गाता अन्त्र, होम लिङ्ग, महाफल बीज तथा औषधि, वायु अन्तरात्मा, मन्त्र स्फिक्, सोमरस शोणित, वेदि स्कन्ध, हवि गन्ध, हव्यकव्य वेग, प्राग्वंश शरीर, दक्षिणा हृदय, वेदोपकरण ओठका अलङ्कार, होमाग्नि नाभिभूषण, छन्द गतिपथ, गुह्य उपनिषद् आसन और छाया आदिवराहकी पत्नी थीं।

"आपो वा इदमग्रे सलिलमासीत् तस्मिन् प्रजापतिर्वायुर्भूत्वाचरत् स इमामपश्यत्। तां वराहो भूत्वाहरत्।" (तैत्तिरीयसंहिता ७।१।५।१)

अर्थात् प्रथम यह जगत् जलमय रहा सब जगह

जल ही जल देख पड़ता था। प्रजापति वायु बन उसमें घूमने लगे। उन्होंने इसे देख और वराह हो आहरण किया था।

"रात्रौ चैकार्णवे ब्रह्मा नष्टे स्थावरजङ्गमे।
सुष्वापाम्भसि यस्तस्मात् नारायण इति स्मृतः।
शर्वर्यन्ते प्रबुद्धो वै दृष्ट्वा शून्यं चराचरम्॥
स्रष्टुं तदा मतिं चक्रे ब्रह्मा ब्रह्मविदांवरः।
उदकेनाप्लुतां क्ष्मां तां समादाय सनातन॥
पूर्ववत् स्थापयामास वाराहं रूपमास्थित।"

(लिङ्गपुराण पूर्वभाग ४।५८-६०)

लिङ्गपुराणमें लिखते,—रात्रिको एकार्णवमें स्थावर जङ्गम समस्त नष्ट हो जानेसे ब्रह्मा जलपर सोते, इसीसे नारायण कहाते हैं। ब्रह्मविदोंमें श्रेष्ठ ब्रह्माने रात्रि बीतनेपर जागरित हो और चराचरको शून्य पा सृष्टि रचनेकी इच्छा की। फिर उन्होंने आदि-वराहमूर्ति धारणकर जलप्लावित पृथिवीको उठा पूर्ववत् रख दिया।

ब्रह्माण्डपुराण (६।१-११)में भी लिखा कि, पहले सकल स्थान जलमें लय हो गया था। पीछे पृथिवी बनी और फिर देवताओंके साथ स्वयम्भू ब्रह्माने भी जन्म लिया। उन्होंने ही वराहमूर्ति धारणकर पृथिवीको जलमें डूबनेसे बचाया।

इस प्रकार मतभेद पड़नेका कारण है। आज भी विष्णुको ही नारायण कहा जाता, किन्तु वास्तविक वैसा ठीक नहीं बैठता। मनुसंहितामें नारायण शब्दकी व्युत्पत्ति इसतरह लिखी,—'नरनामक परमात्माके देहसे उत्पन्न होनेपर जलका नाम नारा पड़ा है। यही जल प्रलयकालमें परमात्माका अयन अर्थात् स्थान होता, इसीसे उन्हें नारायण कहते हैं। सृष्टिके समय जलमें रहनेसे ब्रह्मा ही प्रकृत नारायण ठहरते हैं। (मनुसंहिता १।८—१२)

आदिवाराह (सं० त्रि०) आदिवराह सम्बन्धीय।

आदिविद्वस् (सं० पु०) आदिभूतो विद्वान् निखिल सम्प्रदायप्रवर्तकात्। कपिल। सकल सम्प्रदायके प्रवर्तक होने और उपासना द्वारा जगत्कर्ताको सिद्ध करनेसे कपिल आदिविद्वान् कहे जाते हैं।

आदिविपुला (सं० स्त्री०) छन्दो विशेष। यह एक प्रकारकी आर्या होती और पहले इसके प्रथम तीन गणमें अपूर्ण पाद रखती है।

आदिविपुलाजघनचपला (सं० स्त्री०) छन्दो विशेष। यह एक प्रकारकी आर्या होती और प्रथम पादके तीन गणमें अपूर्ण पाद एवं द्वितीय दलमें दूसरा तथा चौथा गण जगण रखती है।

आदिवृक्ष (सं० पु०) अश्मन्तक वृक्ष, एक पेड़।

आदिश् (वै० स्त्री०) १ अभिप्राय, इरादा। २ प्रयुक्ति, तदबीर। ३ वर्णना, कैफ़ियत। ४ प्रदेश, जगह। ५ वह्नि विशेष।

आदिशक्ति (सं० स्त्री०) आदिभूता शक्तिः। १ परमेश्वरकी मायारूप शक्ति। २ देवीमूर्ति विशेष।

माया देखो।

आदिशरीर (सं० क्ली०) आदि आदिभूतं शरीरम्, शाक० तत्। १ भोगके निमित्त परमेश्वर-सृष्ट आद्य लिङ्गाख्य शरीर। आदिकारणात् परं जातं सूक्ष्मं शरीरम्। २ अविद्याख्य सूक्ष्म शरीर। वेदान्तके मतमें कारण, सूक्ष्म एवं स्थूल भेदसे शरीर तीन प्रकारका होता है।

आदिशूर—गौड एवं वङ्गमें ब्राह्मण्य धर्मके प्रतिष्ठाता पराक्रान्त नृपति। बंगला कुलपञ्जिका नामक विभिन्न जातीय समाजके इतिहाससे आभास मिलता, कि बौद्धधर्मका प्रभाव उठा वैदिक धर्म चलानेके लिये जिस वंशने सर्वप्रथम उपयुक्त आयोजन लगाया, उसी वंशके प्रथम व्यक्तिका आदिशूर नाम प्रसिद्ध था। ६५४ शकाब्दको इन्होंने ही साग्निक ब्राह्मण बुला प्रथम अपने देशमें बसाये। तत्पर तद्वंशीय आदित्य-शूर भी किसी किसी उत्तरराढीय-कुलपञ्जीमें आदिशूर नामसे प्रसिद्ध हुए थे। पीछे गौडाधिप बल्लालसेनके पिता विजयसेन अपने गौडाधिकारमें वैदिक-धर्मकी प्रतिष्ठाकर आदिशूर कहाये। शूर और सेनवंश देखो।

आदिश्य (सं० अव्य०) आ-दिश्-ल्यप्। अनुशासन देके, हुक्म लगाकर।

आदिश्यमान, आदिष्ट देखो।

आदिष्ट (सं० क्ली०) आ-दिश् भावे क्त। १ आदेश, हुक्म। २ उपदेश, नसीहत। ३ उच्छिष्ट भोजनका

आदेवन (सं० क्ली०) आ-दिव भावे ल्युट्। १ द्यूत, पासेका खेल, क़िमारबाज़ी, जुवा। करणे ल्युट्। २ द्यूतसाधन पासा, जुवा खेलनेकी कौडी। आधारे ल्युट्। ३ बिसात, जिस चीज़पे पासा फेंका जाये। ४ द्यूत खेलनेका स्थान, जुवाडख़ाना।

आदेश (सं० पु०) आ-दिश् भावे घञ्। १ उपदेश, नसीहत। २ आज्ञा, हुक्म। ३ लोप, तख़रीब। 'लोपोप्याऽदेश उच्यते।' (व्याकरणकारिका) ३ व्याकरण-प्रसिद्ध किसी वर्णके स्थानमें अन्य वर्णकी उत्पत्ति। स्थानिवदा देशऽनल्विधौ। पा १।१।५६। आ-दिश् कर्मणि घञ्। ४ समाचार, ख़बर। ५ भविष्यत्वाणी, पेशीनगोयी। ६ प्रणाम, वन्दगी।

"आगमोऽनुपघाती च प्रकृतेः प्रत्ययस्य वा।
तयोर्य उपघाती स आदेश परिकीर्तितः।" (व्या० का०)

व्याकरणमें प्रकृति वा प्रत्यय इन दोनोंको जो नहीं उठाता, उसे आगम कहा जाता है। फिर इन्हीं दोनोके नाश करनेवालेका नाम आदेश है।

आदेशक (सं० त्रि०) आदिशति, आ-दिश-ण्वुल्। आदेश देनेवाला, जो हुक्म लगाता हो।

आदेशकारिन् (सं० त्रि०) वचनग्राहिन्, सुश्रूषु, ताबेदार, हुक्म बजा लानेवाला।

आदेशन (सं० क्ली०) आ-दिश भावे ल्युट। आदेश-चेष्टित, हुक्मरानी, हुकूमत, हुक्म देनेका काम।

आदेशिन् (सं० त्रि०) आदिशति, आ-दिश-णिनि। शासक, हाकिम, हुक्म देनेवाला।

आदेशी (सं० पु०) १ आज्ञापक, हाकिम। २ ज्योतिषी, नजूमी।

आदेश्य (सं० त्रि०) आदिश्यते, आ-दिश कर्मणि ण्यत्। उपदेश्य, आज्ञाप्य, कथनीय, समझाया वा सुनाया जानेवाला।

आदेष्टा, आदेष्टृ देखो।

आदेष्ट (सं० पु०) आ-दिश-तृच्। १ आज्ञापक, हुक्मरान्। २ यजमान, पुरोहितसे काम लेनेवाला।

आद्य (सं० त्रि०) आदौ भवम्, आदि यत्। दिगादिभ्यो यत्। पा ४।३।५४। १ आदिमें उत्पन्न हुआ, जो शुरूमें हो। २ प्रधान, बडा। ३ आरम्भ हो जानेवाला। ४ पूर्वगामी, पहले आनेवाला। (पु०) ५ अङ्गुष्ठ, अंगूठा। (क्ली०) ६ आरम्भ, आग़ाज़। अद्यते अद कर्मणि यत्। ७ भक्षणीय द्रव्य, खानेकी चीज़। ८ धान्य, अनाज।

आद्यधातु (सं० पु०) शरीरस्थ रसधातु, कैलूस। यह भोजनसे पेटमें बनता और पित्तके सहारे रक्तमें परिणत होता है।

आद्यपुष्प (सं० क्ली०) विभागकुङ्कुमोपेत ह्रीवेरचन्दन।

आद्यमापक (सं० पु०) आद्यः मापकः, कर्मधा०। पञ्च गुञ्जा परिमित मापक मान, पांच रत्तीका मासा।

आद्यमाषा (सं० स्त्री०) माषपर्णीलता, रामकुरथी।

आद्यबीज (सं० पु०) कर्मधा०। १ मूलकारण, बुनियादी सबब। २ ईश्वर। ३ सांख्यप्रसिद्ध प्रधान।

आद्यश्राद्ध (सं० क्ली०) कर्मधा०। मृत्युके बाद, अशौचान्तका पहला श्राद्ध। यह ब्राह्मणके मरनेके ग्यारहवें, क्षत्रियके तेरहवें, वैश्यके षोडशहवें और शूद्रके एकतिसवें दिन होता है। श्राद्ध देखो।

आद्या (सं० स्त्री०) आदौ भवा, आदि-यत् टाप्। १ तन्त्रोक्त दुर्गा। सत्ययुगमें सुन्दरी, त्रेतामें भुवनेश्वरी, द्वापरमें तारिणी और कलिमें काली आद्या कहाती हैं। (तन्त्रसा०) २ भूमि, ज़मीन्।

आद्याकाली (सं० स्त्री०) नित्यसमा० संज्ञात्वात्र पुंवद्भावः। तन्त्रोक्त प्रथमा प्रकृति। सकलका आदि-रूप होने और कालको निगल जानेसे भगवतीका यह नाम पड़ा है।

आद्यादि (सं० पु०) आदिरिति आदिर्यस्य, बहुव्री०। तसि प्रकरणे आद्यादिभ्य उपसंख्यानम्। (काशिका) पञ्चमीके स्थानमें तसि प्रभृति प्रत्ययके निमित्त काशिका और वार्तिकमें कहा हुआ शब्द गणविशेष। इसमें आदि, मध्य, अन्त, पृष्ठ, पार्श्व प्रभृति शब्द पठित हैं।

आद्युदात्त (सं० त्रि०) आदिः उदात्तो यस्य। आदिमें उदात्त स्वर रखनेवाला। यह शब्द प्रत्ययादिका विशेषण है।

आद्यून (सं० त्रि०) आ-दिव क्त ऊट् नत्वञ्च। क्षुद्रगडुमाविके च। पा ६।४।१८। १ औदरिक, पेटू, काफ़ोसे

ज्यादा या डालनेवाला। २ आरम्भशून्य, आद्यन्त न रखनेवाला।

आद्योत (सं० पु०) प्रकाश, चमत्कार, रोशनी, उजाला।

आद्योपान्त (सं० पु०) आद्य सकलोपान्त अन्त पर्यन्त, अव्य० तत्। १ प्रथमावधि शेषपर्यन्त, शुरूसे आखीरतक, सब बिलकुल। यह शब्द हिन्दीमें क्रिया विशेषणकी तरह व्यवहृत होता है।

आद्रा (हिं०) आर्द्रा देखो।

आद्रिसार (सं० त्रि०) लौहनिर्मित, लोहेकी, लोहेसे बना हुआ।

आद्वादशम् (वै० अव्य०) द्वादश पर्यन्त, बारहतक।

आध (हिं० वि०) अर्ध, आधा। यह प्राय यौगिक शब्दोंके आदिमें आता है। जैसे—आधमन, आधसेर।

आधमन (सं० स्त्री०) आ-धा ल्युट्। १ बन्धक दान, रेहन, अमानत धरोहर। २ ख्याति, सुजन, मोटाई।

आधमर्ण्य (सं० स्त्री०) आधमर्णका भाव कर्म वा, ऋण। कर्जदारी, मकरूजी।

आधर्मिक (सं० त्रि०) अधर्म चरति ठक्। अधर्म शील, अधार्मिक, मिथ्या बातिल, बेईमान।

आधर्ष (सं० पु०) आ-धृष भावे घञ्। आधर्षण देखो।

आधर्षण (सं० स्त्री०) आ-धृष भावे ल्युट्। १ अप राध स्थापन, जुर्म लगानेका काम। २ दण्ड सज़ा। ३ तिरस्कार, बलहेतु पीड़न झिड़की हेड़ छाड़।

आधर्षित (सं० त्रि०) आ-धृष-ण-इट् क्त। [illegible]। भा० १।७।१८। १ अपमानित, अज़ायाफ़्ता। २ तिरस्कृत, झिड़का हुआ। ३ बल द्वारा पराजित चोट खाया हुआ।

आधर्ष्य (सं० त्रि०) आधृष्यते, आ-धृष ण्यत्। १ अपमाननीय, झिड़का जाने काबिल। २ बलहेतु पीड़नीय ज़ोरसे चोट खानेवाला। ३ दुर्बल कामज़ोर। (स्त्री०) भावे ष्यञ्। ४ दुर्बलता, कमज़ोरी।

आधविंद—भूपतिविशेष, एक राजा। यह काम्पार्कगोत्र राजा भरतोंमें पुत्र रहे। इनको राजधानी चित्तोर थी।

आधा (हिं० वि०) अर्ध, निस्फ़, नीम। (स्त्री०) आधी।

आधाझारा (हिं० पु०) अपामार्ग, चिचड़ी।

आधान (सं० स्त्री०) १ संस्कार पूर्वक अग्नि प्रभृतिका स्थापन रखनेका काम। २ ग्रहण, पकड़। ३ प्राप्ति, हासिल। ४ कारण गुणाश्रय समवायी। ५ अन्वाधान। ६ गर्भाधान। ७ बन्धकदान, गिरवी, रेहन, धरोहर। ८ प्रतिभू, ज़ामिनी। ९ नियुक्ति मन सुस्थित। १० आधार, किसी चीजके रखने या रखनेकी जगह। ११ पात्र बरतन। १२ हल बेत।

आधानवती (सं० स्त्री०) गर्भवती जिस औरतके हमल रहे।

आधानिक (सं० पु०) आधाने गर्भाधानप्रयोजनमस्य ठक्। गर्भाधानके निमित्त वेदविहित गर्भधारणका संस्कार, गर्भधारणसंस्कार।

आधाय (सं० त्रि०) आदधाति, आ-धा-ण। १ आधानकर्ता रखनेवाला। (पु०) भावे घञ्। २ आधान, रखनेका काम। (अव्य०) ल्यप्। ३ आधान-पूर्वक, रखके।

आधायक (सं० त्रि०) आधानकर्ता रख देनेवाला। (स्त्री०) आधायिका।

आधार (सं० पु०) आध्रियते यस्मिन् क्रिया यत्र, आ-धृ अधिकरणे घञ्। [illegible]। भा० १।१०।४१। १ अधिकरण सहारा। २ आश्रय मदद। ३ शस्य सम्पादनार्थ जलरोधका बन्धन, पानीका बांध। ४ हाथके जल देनेका स्थान, थाला। ५ पात्र बरतन। ६ नहर। ७ सम्बन्ध रिश्ता। ८ व्याकरण प्रसिद्ध कारक। व्याक रणमें आधार तीन प्रकारका माना गया है—औपश्लेषिक वैषयिक और अभिव्यापक। जैसे—'कबूतरपर बैठा है'। इस स्थानमें देवदत्तादि किसी कर्तृपदका अध्याहार होता और उसीके 'बैठा है' क्रियाका आधार कबूतर ठहरता है। इस लिये कबूतर ही कर्तृ द्वारा क्रियाका आश्रय रूप औपश्लेषिक (एकदेश सम्बन्धयुक्त) आधार है। 'लोटेमें डालता है' वाक्यमें दुग्धादि पदका अध्याहार और उसके 'डालता है' क्रियाका आश्रय लोटा होता है। अतएव यह कर्मद्वारा क्रियाका

रूप औपश्लेषिक आधार है। 'मोक्षकी इच्छा होती है' कहनेसे मोक्ष विषयमें इच्छा रहनेका अर्थ निकलता, इसीसे यह वैषयिक आधार है। 'परमात्मा सकल स्थानमें है' बोलनेपर आत्मा कर्तासे 'है' क्रियाका आधार सकल स्थान होता है। इसलिये यह अभिव्यापक आधार है।

आधारक (सं० पु०) भित्तिमूल, नीव।

आधारण (सं० क्ली०) वहनकार्य, बारबरदारी, सहारा देनेका काम।

आधारशक्ति (सं० स्त्री०) आधारस्य शक्तिः, ६-तत्, आधार एव शक्तिः, कर्मधा० वा। १ सकल आधारकी शक्तिका रूप, माया, प्रकृति, कुदरत। २ चन्द्रकी अमा नाम्नी महाकला। 'आधारशक्तिरूपा अमानाम्नी महाकला प्रोक्ता।' (स्मार्त रघुनन्दन) ३ तन्त्रोक्त मूलाधारस्थ कुण्डलिनी परमदेवता।

आधाराधेयभाव (सं० पु०) आधारश्च आधेयश्च तौ तयोर्भावः, ६-तत्। आधार और आधेयका सम्बन्ध-विशेष। जैसे घट और भूतल। यहां भूतल आधार और घट आधेय होनेसे दोनोका सम्बन्ध आधाराधेय भाव कहाता है।

आधारिन् (सं० त्रि०) आश्रयस्थित, सहारा पकड़नेवाला। (पु०) आधारी। (स्त्री०) आधारिणी। यह शब्द प्रायः समासान्तमें आता है—जैसे, दुग्धाधारी।

आधारी (सं० पु०) १ आधारस्थित, सहारा पकड़नेवाला। (हिं० स्त्री०) २ सहारा लेनेकी लकड़ी। साधु प्रायः इसके सहारे बैठा उठा करते हैं।

आधार्य (सं० त्रि०) स्थापनीय, रखा जानेवाला।

आधार्याधारसम्बन्ध, आधाराधेयभाव देखो।

आधावमान (सं० त्रि०) शीघ्रगामी, दौड़ या झपट पड़नेवाला।

आधासीसी (हिं० स्त्री०) अर्धकपाली, आधेसरका दर्द।

आधि (सं० पु०) आधीयते अधिक्रियते शोकादितो मनोऽनेन, आ-धा करणे कि। १ मानस दुःखकर व्यथाविशेष, दिली तकलीफ। २ दुर्भाग्य, कमबख्ती। ३ धर्म वा कर्तव्यका विचार, मज़हब या फ़र्ज़की फ़िक्र। ४ आशा, तमन्ना। ५ अपने कुलकी जीविकाके निमित्त उत्सुक मनुष्य, अपने खान्दानकी रोज़ीके लिये हौसला रखनेवाला शख्स।

आ ईषत् धीयते अधिक्रियते उत्तमर्णत्वेनात्र अस्मै वा, आ-धा अधिकरणे कर्मे वा कि। ६ अधमर्णकर्तृक उत्तमर्णके निकट रक्षित बन्धक द्रव्य, रेहन या अमानतकी चीज़। ७ बन्धक, रेहन, अमानत। ८ अधिष्ठान, रखनेकी जगह। ९ आधान, जगहकी बन्दिश। १० लक्षण, निर्देश, सिफत, ख़ासियत।

आधिक, आधीक देखो।

आधिकरणिक (सं० पु०) अधिकरणे विचारस्थाने नियुक्तः, ठञ्। विचारस्थानमें नियुक्त प्राड्विवेकादि, अदालतमें इनसाफ करनेवाले मुन्सिफ वगैरह।

आधिकारण्य (सं० क्ली०) अधिकार, इख़्तियार।

आधिकारिक (सं० त्रि०) १ प्रधान, श्रेष्ठ, आला, इख़्तियारवाले हाकिम या ओहदेके मुताल्लिक़। २ पदसम्बन्धी, हुज़ूरी, मनसबी, हाकिमाना।

आधिक्य (सं० क्ली०) अधिकस्य भावः, ष्यञ्। १ अधिकता, बहुतायत, ज्यादती। २ आतिशय्य, बड़ाई।

आधिज (सं० त्रि०) पीड़ादिसे उत्पन्न, दर्द वगैरहसे पैदा होनेवाला।

आधिज्ञ (सं० त्रि०) आधिं मनःपीडां जानाति, अधि-ज्ञा-क। १ व्यथाका अनुभावक, मनोदुःखयुक्त, व्यथित, मुसीबतज़दा, दर्दसे तकलीफ उठानेवाला। २ वक्र, टेढ़ा।

आधित्व (सं० क्ली०) बन्धकका वृत्तान्त, रेहनका हाल, गहने रखनेकी बात।

आधित्वोपाधि (सं० पु०) बन्धक रखनेका प्रयोजन, रेहनकी शर्त।

आधिदैविक (सं० त्रि०) अधिदेवे भवः देवान् वातादीन् अधिकृत्य प्रवृत्तं वा, ठञ्, अनुशतिकादि० द्विपदवृद्धिः। १ देवताधिकृत, देवताधिकारमें प्रवृत्त। इस अर्थमें यह शब्द शास्त्रादिका विशेषण है। २ वायुप्रभृतिजन्य, हवा वगैरहसे पैदा हुआ। यहां 'आधिदैविक' दुःखादिका विशेषण है। वैद्यकमतसे दुःख सात प्रकारके होते, जिनमें काल, दैव एवं स्वभावके बलसे उत्पन्न होनेवाले आधिदैविक हैं। अधिक

मोह, शोक या इष्ट होनेको कालबलजात, बिजली गिरने तथा भूतादि लगनेको दैवबलजात और क्षुधा-तृष्णादि लगनेको स्वभावबलजात कहते हैं।

आधिपत्य (सं० क्ली०) अधिपतेर्भाव: कर्म वा, प्रत्यन्तात् यक्। स्वामित्व, सरदारी, अमलत।

आधिबन्ध (सं० पु०) आधि: मनसो बन्ध आकर्ष आदिरिति चिन्ता एव बन्ध:। बहुप्रकारचर्यार्थ चिन्ता, बहुतसी रेहनकी छिपाकर रखनेका ख्याल।

आधिभोग (सं० पु०) आधेर्बन्धकद्रव्यस्य भोग:, ६ तत्। बन्धक-द्रव्यका भोग, रेहनकी चीजका काममें लाना। आधिमनोव्यथाया भोग:। २ मनो-व्यथाका अनुभवरूप भोग, दिली तकलीफका उठाना।

आधिभौति (सं० त्रि०) भूतानि व्याघ्रसर्पादीन्यधि-कृत्य जातम्, अधिभूत ठञ्, द्विपदवृद्धि:। १ व्याघ्र सर्पादिजनित और घोर कर्म रहते मिला हुआ। २ पित्तादिसम्भूत, जमीन् वगैरहसे पैदा हुआ। ३ जीवसम्बन्धीय कामकरने भूतादिक। वैद्यकमतमें रुधिर, वीर्य भोजन एवं विहारसे विकारसे उत्पन्न व्याधिको आधिभौतिक भी कहते हैं।

आधिभौतिक (सं० त्रि०) आधिभौति एव स्वार्थे क। आधिभौति देखो।

आधिमन्थ (सं० पु०) अधिमन्थे हितम्, अण्। ज्वरका सन्ताप बुझानेकी दवा।

आधिम्लान (सं० त्रि०) चिन्तासे विशेष फिक्रसे कुम्हलाया हुआ।

आधिरथि (सं० पु०) अधिरथ: सूतराड् सारथि: तस्यापत्यम्, इञ्। सूतपुत्र कर्ण, सूतराड्-सारथि अधिरथके लड़के।

आधिराज्य (सं० क्ली०) अधिराजस्य भाव: कर्म वा ष्यञ्। आधिपत्य सरदारी, ताजवरी।

आधिवेदनिक (सं० क्ली०) अधिवेदनाय अधिक विवाहाय हितम् ठञ्, तत्र कार्ये दत्तं ठञ् वा। द्वितीय विवाहके समय प्रथम स्त्रीके सन्तोषार्थ दिया जानेवाला धन, जो दौलत दूसरी शादीके वक्त पहली औरतको दी जाती थी।

आधिमनी (सं० स्त्री०) मनोभेद किसी किस्मकी कमी या छीनी।

आधिस्तेन (सं० पु०) आधिं बन्धकं भोगात् स्तेन इव। गोपनमें अधिकृत धन बलपूर्वक भोग करनेवाला, जो आदमी औरोंसे छिपाकर रेहन रखी हुई चीजको काममें लाता हो।

आधी (हिं० स्त्री०) चिन्ता अभिलाष, सोचना, ख्याल, आधिम फिक्र। (वि०) आधा देखो।

आधीकरण (सं० क्ली०) अनाधि आधि: करणम्, आधि-च्वि-कृ ल्युट्। १ ऋण लेनेको किसी वस्तुका बन्धक रखना, कर्ज पानेके लिये कोई चीज वगैरह रखनेका काम।

आधीकृत (सं० त्रि०) आधि च्वि कृ-क्त। बन्धक रखा हुआ, जो रेहन कर दिया गया हो।

आधीकृत्य (सं० अव्य०) बन्धक रखकर, रेहन करके।

आधीत (सं० त्रि०) १ विचारा हुआ, जो ध्यानमें लाया गया हो। (क्ली०) २ विचारका प्रयोजन या विषय, इरादा या तजवीज की हुई बात।

आधीन (हिं०) अधीन देखो।

आधीनता (हिं०) अधीनता देखो।

आधीयमान (सं० त्रि०) बन्धक रखा जानेवाला, जो रेहन किया जाता हो।

आधीयमानचित्त (सं० त्रि०) मनको जमा देनेवाला, जो दिलको किसी बातपर झुका देता हो।

आधीरात (हिं० स्त्री०) अर्धरात्रि, रातके बारह बजनेका वक्त।

आधुत (सं० त्रि०) आ धु-क्त। १ कम्पित उठाया हुआ। २ ईषत् कम्पित, जो कुछ हिल गया हो।

आधुनिक (सं० त्रि०) अधुना भवम् ठञ्। सम्प्रति जात, अर्वाचीन, अप्राचीन, नया हालमें पैदा होनेवाला।

आधूत, आधुत देखो।

आधृष्टि (सं० स्त्री०) निर्बलता कमज़ोरी।

आधृत (सं० त्रि०) सन्निहित, मोतप्रापित, लगाया हुआ जो ठहरा या रुका हो।

आधृष्ट (सं० त्रि०) निवारित, विजित, जो रोका या जीत लिया गया हो।

आधृष्टि (सं० स्त्री०) आ-धृष भावे क्तिन्। १ परिभव, पराजय, शिकस्त, हार। २ आक्रमणकार्य, हमला मारनेका काम।

आधेक (हिं० वि०) अर्धके समान, आधेके बराबर, जो आधेसे ज्यादा न हो।

आधेनव (सं० क्ली०) गोका अभाव, गायोंकी अदममौजूदगी।

आधेय (सं० स्त्री०) आधीयते, आ-धिङ् कर्मणि यत्। १ उत्पाद्य, बनाया या किया जानेवाला। २ बन्धक रखा जानेवाला, जिसे रेहन किया जाये। ३ अमानत रखा जानेवाला, जिसे धरोहड़के तौरपर रखा जाये। ४ रखा हुआ, जो जगह पा चुका हो। ५ दिया जानेवाला, जो टेडाला गया हो। (क्ली०) भावे यत्। ६ आधान, रखनेका काम। ७ गुणविशेष। इसका स्वभाव बदल और उसमें अन्य गुण लगा दिया जाता है। ८ जलाकर रक्तवर्ण किया हुआ घटादि, जो घडा जलाकर सुर्ख बना दिया जाता हो।

"आधेययाक्रियाजय सोऽसतप्रकृतिर्गुणः।" (व्याकरणकारिका)

(पु०) ९ विधिक्रमसे स्थापनीय वह्नि। १० अधिकरणमें अभिनिवेशनीय द्रव्य, सहारा पकड़नेवाली चीज़।

आधोरण (सं० पु०) आ-धोर गतिचातुर्ये ल्युट। हस्ती चलानेमें निपुण हस्तिपक, होशियार महावत।

आध्मात (सं० वि०) आ-ध्मा-क्त। १ शब्दित, बजाया हुआ, जो आवाज दे रहा हो। २ दग्ध, जला हुआ। ३ वातदोष-जात उदरस्फीतता-सम्पादक रोगयुक्त, फूला हुआ। (क्ली०) भावे क्त। ४ आध्मात, सूजन। ५ शब्द, आवाज़। ६ अग्निसंयोग, आगकी चपेट। (पु०) ७ वायुरोगभेद, एक बीमारी। इसमें पेट फूलता और बोला करता है। ८ समर, लड़ायी।

आध्मान (सं० पु०) आ-ध्मा आधारे ल्युट्। १ वातव्याधि विशेष, एक बीमारी। (क्ली०) भावे ल्युट्। २ उदरस्फीतता, पेटका फूलना। साटोप एवं अति उग्र रोगसे पेट फूलनेको आध्मान कहते हैं। यह रोग घोर और वातके निरोधसे उत्पन्न होता है। आध्मानमें पहले लङ्घन, पीछे दीपन एवं पाचन तथा फलवर्तिक्रिया, वस्तिकर्म और शोधन करना चाहिये। (सुश्रुत) ३ फूंक, हवाका भरना। ४ दर्प, विकत्थन, शेखी, डींग। ५ धौंकनी।

आध्मानी (सं० स्त्री०) आ-ध्मा करणे ल्युट् ङीप्। नलिका नामक वणिग्द्रव्य, अम्बारी। यह खुशबूदार होती है।

आध्मापन (सं० क्ली०) आ-ध्मा-णिच् करणे ल्युट्, णिच् लोपः। १ शब्दनिष्पादन, आवाज़का निकालना। २ शरीरमें विद्ध वाणादिके उद्धारका उपाय विशेष, जिस्ममें चुभे हुये तीर वग़ैरह निकालनेकी एक तरकीब।

आध्यक्ष्य (सं० क्ली०) अध्यक्षस्य भावः, ष्यञ्। अध्यक्षता, एहतिमाम, निगहबानी।

आध्यग्नि—स्थान विशेष, किसी जगहका नाम।

आध्या (सं० स्त्री०) आ-ध्यै भावे घञ्। १ चिन्तन, चिन्ता, फ़िक्रमन्दी, फ़िक्र। २ औत्सुक्यहेतु स्मरण, अफसोसके साथ यादगारी।

आध्यात्मिक (सं० त्रि०) आत्मानं मनः शरीरादिकमधिकृत्य भवः, ठञ्। १ स्वीय, अपना, खास अपने मुताल्लिक़। २ ऐशी, परमात्मासे सम्बन्ध रखनेवाला। ३ आत्मसम्बन्धीय, रूहानी पाक-साफ़। (स्त्री०) आध्यात्मिकी।

आध्यान (सं० क्ली०) आ-ध्यै-ल्युट्। १ चिन्ता, फ़िक्र। २ उत्कण्ठापूर्वक स्मरण, अफसोसके साथ यादगारी।

आध्यापक (सं० पु०) अध्यापक एव, स्वार्थे अण्। अध्यापक, गुरु, उस्ताद, मुरशद, पढाने या सिखानेवाला।

आध्यायिक (सं० त्रि०) अधीयतेऽध्यायो वेदस्तमधीते, ठञ्। १ अधीतवेद, जो वेद पढ़े हो। २ अध्ययनशील, पढ़ने-लिखनेवाला। (स्त्री०) आध्यायिकी।

आध्यासिक (सं० त्रि०) अध्यासेन कल्पितम् ठक्। अयथार्थ, झूठा, माना हुआ। वेदान्तमतसे अध्यास द्वारा अयथार्थ वस्तुमें यथार्थज्ञान आध्यासिक कहाता है, जैसे—शुक्तिमें रजतादिकी कल्पना और परब्रह्ममें जगत्का आरोप।

आध्र (सं० पु०) आ ध्र क। १ आधार, सहारा। (त्रि०) २ निर्बल कमजोर, गरीब।

आध्वनिक (सं० त्रि) अध्वनि कुशलम् ठञ्। पथमें कुशल, पथका विषय अच्छी भांति समझनेवाला, राहगीर, जो मुसाफिरोंका काम अच्छीतरह जानता हो। (स्त्री०) आध्वनिकी।

आध्वरायण (सं० त्रि०) आध्वरो यज्ञाभिप्रायस्य गोत्रापत्यम् नड़ादि फक्। आध्वर का अच्छीतरह यज्ञविषय समझनेवालेका पुत्र या कन्यारूप अपत्य, आध्वरकी लड़के औलाद।

आध्वरिक (सं० पु०) अध्वरस्य व्याख्यानो ग्रन्थः, ठञ्। १ अध्वरकी व्याख्यानका ग्रन्थ। अध्वरं यज्ञ वेत्ति तत्प्रतिपादकग्रन्थमधीते वा। २ अध्वर प्रतिपादक ग्रन्थका अध्ययनकर्ता। (त्रि०) ३ सोमयज्ञ सम्बन्धीय।

आध्वर्यव (सं० त्रि०) अध्वर्योरिदम् यजुर्वेदविद इदम्, अध्वर्यु अण्। १ अध्वर्यु सम्बन्धीय। (स्त्री०) २ अध्वर्यु पुरो हितका कर्मादि।

आन (सं० पु) आनिति जीवत्यनेन, आ अन करणे घञ्। आन् श्वासवायु ततः अर्शआदो अच्। सुश्रुतचिकित्सा। १ अन्तर्मुखगवाक्ष, मुखकी भीतरकी सांस। २ जीवधारण शरीर मध्यस्थित श्वासवायुका नासिका द्वारा बहिर्निःसारण रूप व्यापार। ३ बहिर्मुखश्वास। ४ मुख, नासिका, मुख श्वास। ५ घ्राण, घ्रमित, सांस लेनेका काम।

(हिं० स्त्री०) ६ मोता, सद। ७ शपथ कसम। ८ दोहायो। ९ अन्दाज़ तरीक, ढंग। १० अप, कसरत। ११ अकड़ट, ठसक। १२ मर्यादा मर्म। १३ मय योग। १४ विचार निवास। १५ प्रतिज्ञा, अहद। १६ हठ, जिद। (वि०) १७ अन्य दूसरा।

आनक (सं० पु०) आनयति जीवम् आवात् करोति, आन् णिच् ण्वुल्। १ पटह, नगारा। २ भेरी, ढोल। ३ मदङ्ग, ढोलक। ४ गम्भीर मेघ गरजनेवाला बादल। 'आनक स्वरो मेघ भाववेदकदानके'। (मेद) (त्रि०) ५ शब्दकारक, बोलनेवाला।

आनकदुन्दुभि (सं० पु०) आनका उत्सवकर दुन्दुभिः देवकार्यविशेषो यस्मै, बहुव्री०। १ वसुदेव। कृष्णके जन्म होनेपर देवताओंके आनुवादपूर्वक बाद्य बजानेसे वसुदेवका यह नाम पड़ा है। (हरिव)

आनकदुन्दुभी (सं० स्त्री०) वृहत् पटह, बड़ा नगारा।

आनकस्थलक (सं० त्रि०) आनकस्थल्यां भव, अदूर देशादि वुञ्। पाणिनि ४।२।१२७। आनकस्थलीके निकटस्थ, आनकस्थलीके पास।

आनकस्थली (सं० स्त्री०) आनकप्रधाना स्थली, शाक० तत्। आनकस्थली नामक एक जनपद किसी मुल्कका नाम। (पा ४।२।१२७)

आनकायनि (सं० त्रि०) कर्णादि० फिञ्। आनकके निकटका, जो आनकसे दूर न हो। यह शब्द जन पदादिका विशेषण है।

आनक्य, आनक देखो।

आनडुह (सं त्रि०) अनडुह इदम् अण्। १ वृष सम्बन्धीय, बैलका। यह शब्द गोमय किंवा चर्म मांसादिका विशेषण है। (स्त्री०) अनडुही। (स्त्री०) २ तीर्थविशेष। अनडुहतीर्थ सह्यपर्वतके निकट विद्यमान है। हरिवंशके ८१वें अध्यायमें इसका नामोल्लेख मिलता है। कृष्ण और बलराम इस तीर्थमें घूमने गये थे।

आनडुहक (सं० त्रि) अनडुहां समूहः संज्ञायां कुक्षादिभ्यो वुञ्। (पा ४।१।११९) वृषसम्बन्धीय बैलका। यह शब्द गोमय चर्म, मांसादिका विशेषण है।

आनडुहायन (सं० त्रि०) अनडुहो गोत्रापत्यं नड़ादि० फक्। आनडुह्य जात, आनडुह्यसे पैदा होनेवाला। अनडुहकी पुत्र या कन्या रूप अपत्य।

आनडुह्य (सं० पु) अनडुहो गोत्रापत्यम्, गर्गादि० यञ्। अनडुत् नामक मुनिके गोत्रापत्य।

आनडुह्यायनि (सं० त्रि०) चतुरर्थ्यां कर्णादि फिञ्। आनडुह्यके निकटस्थ देशादि।

आनत (सं० त्रि०) आ-नम क्त। १ अधोमुख विनय हेतु नम्रमुख, पतित, भुक हुआ झुका। (पु०) २ जिन-देव विशेष। कल्पभवमें यह एक वैमानिक नामक देवता माने गये हैं।

आन-तान (सं॰ स्त्री॰) १ अटपटांग, अण्डबण्ड, इधर-उधर। २ मर्यादा, आबरू। ३ हठ, जिद।

आनति (सं॰ स्त्री॰) आनमति नम्रीभवत्यनया, आ-नम करणे क्तिन्। आनुगत्य जन्य सन्तोष, अधो-मुखी भाव, नम्रता, झुकाव।

आनादयत् (सं॰ त्रि॰) बजवानेवाला, जो आवाज निकाला रहा हो।

आनद्ध (सं॰ त्रि॰) आ-नह्-क्त। १ बद्ध, ग्रथित, बंधा या गुंथा हुआ। (क्ली॰) २ वेशभूषादि, पहनाव। ३ चर्म द्वारा बद्धमुख वाद्यादि, चमड़ेसे मढ़े हुये मुंहका बाजा। इसके मध्य बायां, तबला, ढोलक, पखावज आदि नृत्यगीतमें काम देता है, सकीर्तनमें मृदङ्ग बजता है। ढक्का, ढोल, नकारा, तासा, दमामा प्रभृति वाद्य अन्नप्राशन विवाहादिमें व्यवहृत होता है। युद्धकालमें भी डङ्का, ढोल, तासा और दमामा बजाया जाता है। खञ्जली, डमरु, गोपीयन्त्र, तम्बूर, हुडुक प्रभृति आनद्ध यन्त्र ग्राम्य हैं।

आनद्धवस्तिता (सं॰ स्त्री॰) मूत्रसङ्ग, हबसुलबौल, पेशाबका बन्देज।

आनन (सं॰ क्ली॰) अनित्यनेन भक्षणपानादि हेतुत्वात्, अन करणे ल्युट्। मुख, मुंह। "स्तनानने मत्सुरभि द्विधोदरः।" (रघुवंश ३।३) २ समस्त मस्तक, चेहरा। "क्वचिद्वदनिताननौ।" (रघुभ ११११)

आनन-फानन (अ॰-क्रि॰-वि॰) फौरन, जल्द, अतिशीघ्र, झटपट, बातकी बातमें।

आनना ((हिं॰ क्रि॰) आनयन करना, लिवालाना।

आननाज (सं॰ क्ली॰) आनन-कमल, कमल-जैसा मुख।

आनन्तर्य (सं॰ क्ली॰) अनन्तरमेव, स्वार्थे ष्यञ्। १ अव्यवहित परिणाम, तसलसुल-नजदीक। अनन्तरस्य भावः। २ अव्यवधान, अनन्तरता, फरावत, नज़दीकी।

आनन्त्य (सं॰ त्रि॰) नास्ति अन्तः शेषो यस्य स एव, स्वार्थे ष्यञ्। १ अनन्त, असीम, अविनाशी, लाजवाल, बेहद। अनन्तस्य भावः, ष्यञ्। २ सीमाशून्यत्व, बेपायानी, हदका न रहना। ३ नाशादिराहित्य, चिरविख्याति, हयात-जाविदानी, बका, कभी मिट न सकनेवाली हालत।

आनन्द (सं॰ पु॰) आ-नन्द-घञ्। १ हर्ष, सुख, आह्लाद, खुशी, आराम। २ विष्णु। ३ विष्णुके एक गण। ४ शिव। ५ बलराम। ६ सूत्र-संग्रहीता बुद्धशाक्यमुनिके उत्साही अनुचर, प्रियशिष्य और भतीजेका नाम। ७ साठ संवत्सरके मध्य आनन्द नामक वर्ष विशेष। ज्योतिषके अनुसार इस संवत्सरमें शस्यकी खूब उत्पत्ति होती, किन्तु मूल्य वृद्धि रहती है। घृत एवं तैलका मूल्य समान रहता है। इसमें प्रजा हंसी-खुशी अपने दिन काटता है। (क्ली॰) ८ मद्य, शराब। ९ मम्मद। १० राजजम्बुवृक्ष।

आनन्दक (सं॰ त्रि॰) हर्षित करनेवाला, जो खुश कर देता हो।

आनन्दकर, आनन्दक देखो।

आनन्दकानन (सं॰ क्ली॰) आनन्दानि आनन्दयुक्तानि काननानि गृहाणि यत्र, बहुव्रो॰; यद्वा आनन्दजनकं काननमिव। अविमुक्त काशीक्षेत्र। काशीके सकल ही गृह आनन्दयुक्त हैं। फिर काशीवासियोंके मनमें भी सदा आनन्द बना रहता है, इसीसे काशीको आनन्दकानन कहते हैं। काशीखण्डके २६वें अध्यायमें आनन्दकाननका विवरण दिया है। काशी देखो।

आनन्दकृष्ण वसु—कलकत्तेके एक प्रधान विद्वान्। सन् १८२२ ई॰को कलकत्तेमें अपने मातामह सर राजा राधाकान्तदेव बहादुरके घर इन्होंने जन्म लिया था। इनके पिता मदनमोहन वसु कायस्थोंमें मुख्य कुलीन रहे। कुछ दिन घरमें पढ़ने बाद इन्होंने भूतपूर्व हिन्दू-कालेजमें (वर्तमान प्रेसिडेन्सी कालेज) नाम लिखाया था। वहां क्रमागत सात वत्सर छात्रोंका शीर्षस्थान दबा यह प्रधान वृत्ति पाते रहे। शेष परीक्षामें आनन्दकृष्णको सिवा कानूनके अन्य सकल विषयपर सर्वोच्च पद मिला। भारतके बड़े लाट प्रथम लार्ड हार्डिञ्जने टावनहालमें जो पुरस्कार बांटा था, उसमें शारीरिक अस्वस्थताके कारण इनका जाना बन न पड़ा। इसीसे स्वस्थ होनेपर आनन्दकृष्णको उन्होंने हिन्दू कालेजमें सभा लगा प्राप्य पुरस्कार दिया था। दौहित्रकी योग्यतासे बड़े लाटने सर राजा राधाकान्तदेव बहादुरको भी अभिनन्दित किया।

आनन्दकृष्णने सुप्रसिद्ध विद्यासागरको अंगरेजी पढ़ायी थी। फिर अक्षयकुमारदत्त इनसे साहित्य और अङ्कशास्त्र सीखते रहे। इन्होंने अक्षयकुमारको अक्षयकीर्ति 'उपासक सम्प्रदाय' बनानेमें भी यथेष्ट साहाय्य दिया। इसी श्रीयुक्त नगेन्द्रनाथ घोषने कहा है—"इस देशमें साधारणतः जैसे होता, वैसे ही आनन्दकृष्ण द्वारा उपकार पहुंचने भी कोई मानता न था।"

राय हेमचन्द्रकर बहादुरके अनुरोधसे इन्होंने 'मांझेकी रिपोर्ट' लिखी रही। सरकारने उसी रिपोर्टपर हेमचन्द्रकी बड़ी प्रशंसा की। हेमचन्द्र कहा करते थे—"आनन्दकृष्ण ही राजकार्यमें हमारे साफल्यके प्रधानतम कारण हैं।"

इलबर्टबिल वितर्कमें राजा राजेन्द्रनारायण देवके स्वाक्षरित सकल पत्र इन्होंने लिखे थे। वह पत्र पढ़ पार्लमेण्टके सभ्य किंवा सर जो॰ एस॰ माकफरसन ही नहीं, अधकन्त्या मिस्टर ग्लाडस्टोन, बड़े लाट लार्ड रिपन और भारतबन्धु मिस्टर ब्राइटने भी बड़ी प्रशंसा की। मिस्टर ब्राइटने अपने पत्रमें इस रचनाकी सुदीर्घ समालोचना लिखायी थी। कांग्रेस बन्धु मिस्टर ह्यूम और सुपण्डित डाक्टर बिवारिज दोनों आनन्दकृष्णसे बहुधा आकर मिलते रहे। डाक्टर बिवारिजने नन्दकुमारके मुकदमेपर अपना प्रसिद्ध पुस्तक बनाते समय इनसे कितनी बार यथेष्ट उपदेश लिये थे। आनन्दकृष्ण सिवा संस्कृत बंगला, अंगरेजी फारसी और उर्दूके ग्रीक (यूनानी) लेटिन एवं हिब्रू (यहूदी) भाषामें भी व्युत्पन्न रहे।

मातामहके 'शब्दकल्पद्रुम'की रचनामें इन्होंने यथेष्ट साहाय्य दिया। विदेशीय विद्वत्समाजको राजा सर राधाकान्त देवकी ओरसे उस समय पत्रादि आनन्दकृष्ण ही लिखते थे। यह बहुतसे एक विस्तृत इतिहास और बंगला वैज्ञानिक शब्दाभिधानका अधलिखा छोड़ गये हैं। हिन्दी विश्वकोषके प्रधान सम्पादक श्रीयुक्त नगेन्द्रनाथ वसु जिस समय बंगला 'विश्वकोष' बनाते, उस समय आनन्दकृष्ण धर्म, 'गीता' आदि शब्दोंपर अमूल्य निबन्ध लिख भाषा और भावका आदर्श दिखाते थे। नगेन्द्र बाबू अपने गुरु इनकी सतत प्रशंसा करते और गुरुके समान आदरणीय समझते हैं। सन् १९८० ई॰की ११वीं सितम्बरको अपने गीतापाठके उपरान्त रोगयातनाविहीन अवस्थामें सहसा आनन्दकृष्णका प्राणवियोग हुआ।

आनन्दगिरि—शङ्कराचार्यके अनुशिष्य। इन्होंने शङ्कर दिग्विजय नामक पुस्तक बनाया, जिसमें शङ्कराचार्यका चरित बताया है। सिवा इसके उपनिषद्भाष्य प्रभृतिकी टीका और शास्त्रवृत्तिविवरण भी लिखा है। यह अति सुपण्डित व्यक्ति रहे। सन् ई॰के ८म शताब्द इनका जन्म हुआ था।

आनन्दघन—दिल्लीके एक प्राचीन कवि। रागकल्पद्रुम और सुन्दरीतिलकमें इनकी कविता विद्यमान है। शिवसिंहने इनकी रचना सूर्य-जैसी प्रकाशमान बतायी है। इनका कोई पूर्ण पुस्तक न रहते भी पांच सौ छोटी-छोटी पुस्तिकायें देखनेमें आती हैं। महादेव प्रसादके बनाये साहित्यभूषणको देखते हैं यह जातिके कायस्थ और (सन् १७१८—१७३८ ई॰) मुहम्मदशाहके मुन्शी रहे। मरनेसे पहले वृन्दावनवास करने लगे थे। नादिरशाहके मथुरापर अधिकार करते ही इनकी मृत्यु हुई। सम्भवतः लोकभार इन्होंका बनाया है। कभी कभी यह अपनेको घन आनन्द भी लिख देते थे।

आनन्दज्ञान, आनन्दगिरि देखो।

आनन्दज्ञानगिरि, आनन्दगिरि देखो।

आनन्दचन्द्र—संस्कृत शब्दकोष एवं प्रायश्चित्तोक्तसारके रचयिता।

आनन्दज (स॰ त्रि॰) आनन्दात् जायते आनन्द-जन ड, ५ तत्। आनन्दजात, खुशीसे निकला हुआ। यह शब्द अश्रुपातादिका विशेषण है।

आनन्दता (सं॰ स्त्री॰) प्रसन्नता, खुशी, मसर्रत।

आनन्दतीर्थ—माण्डूक्योपनिषद्भाष्य, गीताभाष्य, गीतातात्पर्यनिर्णय, महाभारततात्पर्यनिर्णय, तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्य आदिके रचयिता।

आनन्दतृतीया (सं॰ स्त्री॰) व्रतविशेष। वैशाख

श्रावण अथवा अग्रहायण मासके शुक्लपक्षकी तृतीयाको यह होता है। सावित्रीके शापसे लक्ष्मीने गौरीको छोड़ दिया था। पीछे महादेवके उपदेशसे उन्होंने व्रतकर लक्ष्मी पायी। (भविष्योत्तरपु०)

आनन्दथु (सं० पु०) आ-टु नदि भावे अथुच्। ट्वितोऽथुच्। पा ३।३।८९। प्रीति, हर्ष, प्रमोद, आनन्द, आल्हाद, खुशी।

आनन्दद, आनन्दक देखो।

आनन्ददत्त (सं० पु०) आनन्दो दत्तो येन, बहुव्री०। १ आनन्द देनेवाला उपस्थ। २ मेढ्र।

आनन्ददेव—१ वल्लभदेवके पिता। कुमारसम्भवकी टीका प्रभृति पुस्तक इन्होंने लिखे थे। २ अग्निप्रायश्चित्त-रचयिता।

आनन्दधर—विद्याधरके शिष्य। इन्होंने माधवानल-कामकन्दला कथा लिखी थी।

आनन्दन (सं० क्ली०) आनन्दयत्यनेन, आ-नदि-णिच् करणे ल्युट्। १ गमनागमन कालमें बन्धुके आरोग्य स्वागतादिका प्रश्न, आने-जानेके वक्त अज़ीज़की तन्दुरुस्ती और खुशआमदी वग़ैरहका सवाल। २ गमना-गमनके समय आलिङ्गन, आनेजानेके वक्तकी हमागोशी। भावे ल्युट्। ३ सुखजनन, आरामदिही। ४ सभ्यता, शायस्तगी। ५ आनन्ददायक द्रव्य, खुश करनेवाली चीज़।

आनन्दनाथ मल्लिकार्जुनयोगीन्द्र—नृसिंहके शिष्य और योगिनीहृदयदीपिका तथा श्रीविद्यापद्धति (सन् १५१४ ई०) नामक पुस्तकके रचयिता।

आनन्दपट (सं० पु०) आनन्दजनकं पटम्, शाक० तत्। नवोढावस्त्र, नूतन बालिकाके विवाहका हरिद्राक्त वस्त्र, दूलहनकी पोशाक।

आनन्दपुर—गुजरातके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर। वर्तमान नाम बड़नगर है। बड़नगर देखो।

आनन्दपूर्ण (सं० पु०) आनन्देन पूर्णस्तृप्तः। आनन्द-मय परमात्मा, परब्रह्म।

आनन्दपूर्ण मुनीन्द्र—अभयानन्दके शिष्य। इनका उपाधि विद्यासागर रहा। निम्नलिखित पुस्तक इनके बनाये हैं,—सुरेश्वरके बृहदारण्यकवार्तिककी न्याय-कल्पलतिका नाम्नी टीका, पञ्चपादिकाटीका, ब्रह्मसिद्धि-व्याख्यारत्न, वेदान्तविद्यासागर, महाभारतकी व्याख्या-रत्नावली और समन्वयसूत्रवृत्ति।

आनन्दप्रभव (सं० पु०) आनन्दः प्रभवः अपादानं यस्य, बहुव्री०। १ रेतः, नुत्फा। २ वीर्य, मनी। ३ भूतादिप्रपञ्च, जानवर। श्रुतिके मतमें आनन्द-रूप परब्रह्मसे जन्म लेने, आनन्दरूप परब्रह्मद्वारा जीते रहने और अन्तकाल आनन्दरूप परब्रह्ममें मिल जाने कारण प्राणिसमूहको आनन्दप्रभव कहते हैं।

आनन्दबधायी (हिं० स्त्री०) सुखका वाद्य, खुशीका बाजा।

आनन्दबोधाचार्य—प्रमाणरत्नमाला-रचयिता।

आनन्दबोधेन्द्र—एक प्राचीन टीकाकार।

आनन्दभुज् (सं० पु०) आनन्दं भुङ्क्ते, आनन्द-भुज् क्विप्। परब्रह्मके साक्षात्कारसे आनन्द लेनेवाला, प्राज्ञ, तत्त्वज्ञानविशारद।

आनन्दभैरव (सं० पु०) १ तन्त्रोक्त शिवमूर्तिविशेष। २ रसौषधविशेष। यह तीन प्रकारका होता है। प्रथम—हिङ्गुल, विष, व्योष, मरिच, टङ्गण एवं जाती-कोषको बराबर-बराबर चूर्ण कर जम्बीरके रसमें घोंट डाले और रत्ती-रत्तीकी गोली बना ले। इसके सेवनसे शीताङ्गसन्निपात शान्त हो जाता है। द्वितीय—हिङ्गुल, विष, व्योष, टङ्गण और गन्धकका चूर्ण बराबर-बराबर डाल जम्बीरके रसमें दो प्रहर घोंटने और रत्ती रत्तीकी गोली बनानेसे तैयार होता है। यह ज्वरातिसारके लिये महौषध है। तृतीय—वङ्गभस्म, मृत स्वर्ण और रसको चौद्रमें घोंटनेसे बनता है। दो गुञ्जा नित्य खानेसे प्रमेह दूर होता है। (रसेन्द्रसारसंग्रह)

आनन्दभैरवी (सं० स्त्री०) १ रागविशेष। इसमें शङ्कराभरण और भैरव दोनो राग मिले रहते हैं। २ आनन्दभैरव-देवकी पत्नी। रुद्रयामलमें इनके प्रश्नका आनन्दभैरवने उत्तर दिया है। ३ वटी विशेष, दवाकी गोली। पिप्पली, जातीकोष (जावत्री), विष, त्रिकटुक (सोंठ, मिर्च, पीपल), गन्धक, सोहागा, मृत-शुल्वक, धतूरका बीज एवं हिङ्गुल बराबर से

दिनभर विजयाके इसमें बाँटि और चनकके समान नहीं बनाये। इसी प्रकार मसुरीके मूलका क्वाथ पीनेसे मोताइ सन्निपात दूर होता है। (रसेन्द्रसारसंग्रह)

आनन्दमत्ता, आनन्दभैरवी देखो।

आनन्दमय (सं॰ पु॰) आनन्द प्रचुरोऽस्य आनन्द प्राचुर्ये मयट्। १ प्रचुरानन्दस्वरूप परमात्मा। (त्रि॰) २ आनन्दसम्बलमय, खुशीसे भरा हुआ। (स्त्री॰) ङीप्। आनन्दमयी। तारामूर्तिविशेष।

आनन्दमयकोष (सं॰ पु॰) आनन्दमयस्य परमात्मनः कोष इवावरक। १ वेदान्तमतसे—पञ्चकोषके मध्य पञ्चम कोष, निरावृत आनन्दकी रूप। २ अविद्या स्वरूप कारणशरीर। ३ सुषुप्ति, गहरी नींद। ४ ब्रह्म प्रधानप्राण सभी समय।

आनन्दलिप्सा (स॰ स्त्री॰) आनन्दका विषय, सुखका इन्द्रियार्थ, मजेकी चीज़।

आनन्दविता (सं॰ पु॰) आनन्द देनेवाला पुरुष, जो आदमी खुश कर देता हो।

आनन्दराज गजपति—मन्द्राजप्रान्तस्थ विजयनगरके राजा। सन् ई॰के १८वें शताब्दीके इन्होंने मन्द्राजका समस्त प्रान्त बङ्गालको अंगरेज-सरकारको सौंप दिया था।

आनन्दराम बड़ुआ—आसामके एक प्रसिद्ध विद्वान् और राजकर्मचारी। सन् ई॰के १८वें शताब्दके मध्यभागमें एक वृहत् संस्कृत अंगरेजी अभिधान, बहु संस्कृत कोषग्रन्थ और व्याकरणग्रन्थ प्रकाश किया। अंगरेज सरकारने इन्हींको एक वृहत् प्रादेशिक अभिधान बनानेका भार दिया था।

आनन्दराव पंवार—एक सुप्रसिद्ध सेनाध्यक्ष। सन् १०३८ ई॰को इन्होंने मालवेमें धारनगर पैतृकसे कर प्राप्त पाया और वहां अपना वंश बढ़ाया था। इनके वंशवाले होल्कर सेंधिया और पेशवाने कई बार धारको लूटा मारा, किन्तु आनन्दराव द्वितीयकी पत्नी और रामचन्द्र पंवारकी धर्ममाता मानो बाईकी चेष्टाओंसे नाश न हुआ।

आनन्दलहरी (सं॰ स्त्री॰) १ शङ्कराचार्यका बनाया हुआ स्तोत्र। इसमें पार्वती-प्रमथादि आनन्दकी लहर उठती है। २ वाद्ययन्त्र विशेष एक बाजा। छोटी ढोलक जैसी खोपड़ीकी लकड़ीका एक मुंह तङ्ग तथा दूसरा बड़ा होता और चमड़ेसे मढ़ा रहता है। फिर दूसरे छोटे बरतनके मुंह पर भी चमड़ा चढ़ाया जाता है। इन दोनों यन्त्रोंके चमड़ेमें बीचो बीच छेद बना तांत लगा देते हैं। ढोलकको बायीं कोखमें दबाकर और बरतनको बायें हाथमें पकड़ छिपटीसे तांत बजाते हैं। यह कितनी ही गोपीयन्त्र जैसी होती है।

आनन्दवन—रामतापनी उपनिषद्की टीका 'दीपाम चामिका'के रचयिता। यह एक प्रसिद्ध परमहंस परिव्राजक रहे। २ मुक्तिक्षेत्रस्वरूप काशीक्षेत्र बनारस।

आनन्दवर्धन (सं॰ त्रि॰) १ आनन्दको बढ़ानेवाला जो खुशीको दोचन्द कर देता हो। (पु॰) २ एक ध्वनितत्त्ववित् पण्डित, इनका बनाया 'ध्वन्यालोचन' नामक ग्रन्थ विद्यमान है।

आनन्दवल्ली (सं॰ स्त्री॰) तैत्तिरीय उपनिषद्का द्वितीय विभाग।

आनन्दव्रत (सं॰ पु॰) व्रतविशेष। इसमें चैत्रादि चार मास व्रत और पीछे वस्त्रयुक्त तिल किंवा हिरण्य दान करना पड़ता है।

आनन्दशर्मा (सं॰ पु॰) 'व्यवहारादर्श' नामक स्मार्त ग्रन्थके रचयिता। इनके पिताका नाम रामशर्मा था।

आनन्दसम्भव (सं॰ पु॰) आनन्दस्य ब्रह्मानन्दस्य सम्भव प्रकाशः, ६-तत्। १ तत्त्वज्ञान द्वारा ब्रह्मानन्दका प्रकाश। (त्रि॰) आनन्द सम्भवोऽस्य। २ भूतादि प्राणी, खुशी रखनेवाला।

आनन्दसम्मोहिता (सं॰ स्त्री॰) नायिका विशेष। आनन्दमें भली भांति मोहित हो जानेवाली प्रौढ़ा नायिकाको आनन्दसम्मोहिता कहते हैं।

आनन्दा (सं॰ स्त्री॰) आनन्दयति आ-नन्दि णिच् अच्, टिच् लोप। १ विजया, भांग। २ वासिकी पुष्पवृक्ष, बेला। ३ आरामशीतला। इसकी पत्ती अम्लगुदार होती है। ४ सुदर्शी, सुभागी।

आनन्दार्णव (सं॰ पु॰) आनन्द अर्णव इव अतीव व्याप्त। १ ब्रह्मानन्द। २ परमेश्वर। ३ ज्योतिष प्रसिद्ध योग विशेष।

आनन्दाश्रम (सं०पु०) एक प्राचीन टीकाकार।

आनन्दि (सं० पु०) आ-नन्द-इन्। १ हर्ष, खुशी। २ कौतुक, तामाशा। ३ महन्त नृसिंहके एक शिष्य। इन्होंने प्रबोधानन्द-सरस्वतीके विरचित चैतन्य-चरितामृत नामक ग्रन्थकी टीका लिखी है।

आनन्दित (सं० वि०) आ-नदि-क्त। १ हर्षयुक्त, खुश। २ हृष्ट, आसूदा। ३ सुखी, आराम लेनेवाला। आ नदि-णिच्-क्त। ४ अभिनन्दित, खुश किया हुआ।

आनन्दिन् (सं० वि०) आ-नदि-णिनि। १ आनन्द युक्त, खुश। आ-नदि-णिच्-णिनि। २ आनन्दजनक, खुश कर देनेवाला। (पु०) आनन्दी। (स्त्री०) आनन्दिनी।

आनन्दी (सं० स्त्री०) आनन्दयति, आ नदि-णिच्-अच्, गौरादि० ङीप्। वृक्षविशेष, एक पेड़। आनन्दा देखो। (वि०) आनन्दिन् देखो।

आनन्दोदयरस (सं० पु०) रसभेद। पारद, गन्धक, लौह,अभ्रक एवं विष समांश,मरिच अष्ट और सोहागा चतुर्गुण डाल भृङ्गराजरस, अम्ल तथा दाड़िमकी सात भावना देनेसे यह बनता है। सन्ध्याको गुञ्जाद्वय पर्णखण्डमें खानेसे पाण्डुरोगको दूर करता है। (भैषज्यरत्नावली)

आनपत्य (सं० क्ली०) असन्तानता, लावल्दी, अपुत्रता।

आनबान (हिं० स्त्री०) चमक-दमक, सजधज, तड़क भड़क, रङ्गरूप, ठाटबाट, अदा-अन्दाज़, तर्ज़-तरीक़।

आनभिम्लात (सं० पु०) अनभिम्लातके एक वंशजका नाम।

आनम (सं० पु०) नति, चापका प्रसारण, झुकाव, कमान्‌का फैलाव।

आनमन (सं० क्ली०) आनम्यते आयत्तीक्रियते ऽनेन, आ-नम करणे ल्युट्। १ सन्तोषके निमित्त पदाक्रमनादि नम्रता, दूसरेको खुश करनेके लिये पीछे चलने वगै-रहका झुकाव। भावे ल्युट्। २ सम्यक् नति, खासा झुकाव। आ-नम-णिच्-ल्युट्। ३ नम्रतासम्पादक व्यापार, नरमीका काम।

आनमित (सं० वि०) आ-नम-णिच्-क्त इट्, णिच् लोपः। आवर्जित, आनतीकृत, आकुलीकृत, झुका हुआ, झुकाया गया।

आनम्य (सं० वि०) आ-नम्-णिच्-यत्। १ नम्र बनाने योग्य, झुका देने क़ाबिल। (अव्य०) आ-नम्-ल्यप्। नत हो या नमस्कार करके, नरमीके साथ, अदब बजाकर। इसी अर्थमें 'आनत्य' शब्द भी आता है।

आनय (सं० पु०) आ-नी भावे अच्। १ देशसे देशान्तरको ले जानेका कार्य, लवायी, लेते आनेका काम। आनीयते वेदाध्ययनाय अत्र, आधारे ऽच्। २ उपनयनसंस्कार, जनेवू देनेका काम।

आनयन (सं० क्ली०) आनय देखो।

आनयितव्य (सं० वि०) आनयनयोग्य, ले आने क़ाबिल।

आनर (अं० क्ली० = Honour.) आदर, अर्हण, इज्जत, अदब, आबरू।

आनरेबिल (अं० वि० = Honourable) आदरणीय, इज्जतदार। बड़े तथा छोटे लाटकी कौन्सिलके मेम्बर, हाईकोर्टके जज और कुछ निर्वाचित व्यक्ति ही आनरेबिल कहाते हैं।

आनरेरी (अं० वि० = Honorary.) १ अवैतनिक, अलाभकर, इफ्तियाक़ी, ताज़ीमी, मुफ्तमें काम करने-वाला। जो लोग आदरके लिये काम करते और वेतनादि कुछ नहीं लेते, वही आनरेरी कहाते हैं—जैसे आनरेरी मजिष्ट्रेट, अवैतनिक विचारपति और आनरेरी सेक्रेटरी, अवैतनिक मन्त्री। २ विना लाभ किया जानेवाला, जो मुफ्तमें हो।

आनर्त (सं० पु०) आ नृत्यते ऽत्र, आधारे घञ्। १ नृत्यशाला, नाचघर। २ युद्ध, लड़ायी। भावे घञ्। ३ नर्तन, नाच। ४ सूर्यवंशीय एक राजा। हरिवंशके १०वें अध्यायमें इनका विशेष विवरण दिया गया है। ४ आनर्तराजकृत जनपदविशेष। यह देश गुज-रातमें अवस्थित है। वर्तमान नाम काठिवाड़ है। आनर्तकी राजधानी द्वारका या कुशस्थली रही। काठियार देखो। ५ आनर्तदेशवासी जन, आनर्त

पुत्रका नामिन्दा । ६ आनर्तदेशीय राजा । ७ सूर्यवंशीय एक राजा । हरिवंशके १२वें अध्यायमें लिखा है,—आनर्तके पितामहका शर्याति, पिताका विहुराज और पुत्रका नाम सुकुमार था । (क्ली०) नर्तरि अच् । ८ जल, पानी । तरङ्ग, नृत्य जैसा देख पड़नेसे जलको आनर्त कहते हैं । (त्रि०) ९ नर्तक, रक्कास, नचनिया, नचवैया, नाचनेवाला ।

आनर्तक (स० त्रि०) आनृत्यति, आ-नृत्-ण्वुल् । १ नर्तक, नचनिया । आनर्तदेशे भवम् वुञ् । २ आनर्तदेशजात आनर्त मुल्कका पैदा ।

आनर्तनगरी (सं० स्त्री०) आनर्त देशकी राजधानी ।

आनर्तपुर (सं० क्ली०) आनर्त देशस्य प्रधान पुरम् । द्वारवती पुरी ।

आनर्तीय (स० त्रि०) आनर्तदेशे भवः, छ प्रत्ययः । १ आनर्त देशजात । (पु०) २ व्यक्तिविशेष, किसी शख्सका नाम ।

आनर्थक्य (स० क्ली०) अनर्थकस्य भाव: ष्यञ् । देवताका अभाव, अयोग्यता, आकाङ्क्षाविषयक तद अर्थ कमी । २ निष्प्रयोजनत्व, बेमतलबी, बेहूदी ।

आनलवि (स० पु०) व्यक्ति विशेष, किसी आदमीका नाम ।

आनव (स० त्रि०) अमिति प्राणं आनो तस्येदम्, अन तत् अण् । १ मानवीय, इन्सानी, मामवायी । २ दयालु परोपकारशील बेरहाज भला चाहने वाला । (स्त्री०) आनवी ।

आनव्य (स० क्ली०) आनोर्नरस्येदम्, यत् । नर सम्बन्धीय तन्त्रोक्त दो प्रकारका मत्त ।

आनस (वै त्रि०) अनसः शकटस्य पितुर्वा इदम्, अण् । १ शकटसम्बन्धीय, गाड़ीसे ताल्लुक रखनेवाला । २ पितृसम्बन्धीय, पिदरी, बापसे सम्बन्ध रखनेवाला ।

आना (हिं० पु०) १ आणक गण्डा, रुपयेका १६वां हिस्सा । चार पैसे या बारह पाईका एक आना होता है । २ किसी वस्तुका षोड़शांश किसी चीज़का १६वां हिस्सा । ३ आगमन आमद । (क्रि०) ४ आगमन करना, आगे बढ़ना किसीकी ओर कदम रखना । ५ गुज़रना, जाते होना, बीतना । ६ प्राप्त वर्तन करना लौटना । ७ आरम्भ होना, लगना । ८ फलपुष्प प्रदान करना, फलना-फूलना । ९ उत्पन्न होना, निकलना । १० परिपक्क होना पक जाना । ११ स्खलित होना, ढीला पड़ना । १२ पड़ना या जाना । १३ देख पड़ना, नमूदार होना । १४ पहुँच जाना दाखिल होना । १५ बिकना, फरोख्त होना । १६ तैयार होना, कमर कसना । १७ मिलना, हाथ लगना ।

आनाकानी (हिं० स्त्री०) १ अनाकर्णन, सुनी-अनसुनी, कान न देनेका काम । २ बहानेबाज़ी, टालमटोल । ३ गुप्तवार्ता, कानाफूसी ।

आनाक्ष (सं० पु०) इक्षुतृण्या घास ।

आनाट्य (सं० क्ली०) अनाढ्यस्य भाव:, ष्यञ् । आभिजात्य, प्रतिराहित्य यतीमी, मालिक न रह जो जावत ।

आनानास (Ananassa sativa) अनन्नास, एक पेड़ । इसका पत्ता किनारे किनारे तिरछे तौरपर कटा और उसपर काँटा जैसा दाग रहता है । उसके ऊपरसे डाल निकलती है । कच्चा अनन्नास हरा और पक्का खूब पीला होता है । उसके भीतर छोटा छोटा बीज रहता है । पक्का अनन्नास बहुत अच्छीतरह बीज डालनेसे खानेमें अच्छा लगता है । आजकल भारत-वर्षके अनेक स्थानमें उम्दा अनन्नास उत्पन्न होता है । कोयी-कोयी कहता, कि यह दक्षिण अमेरिकाके ब्राजिल प्रान्तका फल है । सन् १५९४ ई०को पोर्तुगीज इसे दक्षिण अमेरिकासे भारतवर्ष लाये थे । किन्तु अबुल-फज़लने आईन अकबरीमें अनन्नासका उल्लेख किया है । इसका बड़ेसे बड़ा फल कोई १४ सेर तक वज़नमें बैठता है । श्रीहट्ट (सिलहट)का अनन्नास अति प्रसिद्ध और सुस्वादु होता है । बहुतसे कितने ही समय उसके नीचे इसे लगाया करते हैं । किन्तु अधिक छाया इसके लिये उपयोगी नहीं ठहरती । मट्टीको अच्छी अच्छीतरह बना—सुनाके तर ज़मीनमें अनन्नास लगाना चाहिये । अधिक छायामें इसे लगाना मना है । वर्षाकालमें इसका फल परिपक्क होता है । अनन्नासके पत्तेका रेशा बारीक, साफ और कोमल

बरदाश्त करनेवाला है। पत्तेको १८ दिन पानीमें डुबोकर रखनेसे बहुत सुन्दर रेशा उतरता है। हार पिरोनेके लिये भारतमें उसकी आवश्यकता रहती है। रेशा रेशमके स्थानमें व्यवहृत होता और ऊन या रूईमें भी मिलाया जाता है। वह सीने और पिरोनेके बड़े काम आता है। उससे चटाई और कागज़ बनाते हैं। फिलिपाईन द्वीपपुञ्जमें अनन्नासके रेशेसे कपड़ा तैयार किया जाता है। रङ्गपुरके चमार उससे जूता गांठते हैं। भारतवासी पत्तेके नये रसको क्रमिनाशक और रक्तशोधक समझते हैं। उसे चूनेके पानीमें मिलाकर पिलानेसे अन्त्रका क्रमि मर जाता है। परिपक्व फलका विशुद्ध रस पेटकी कुड़कुड़ी तथा पाण्डुरोगको दूर करता, पेशाब लाता, पसीना बहाता और ठण्ढा होता है। पत्तेका नया रस पीनेसे हिचकी नहीं आती। कच्चा अनन्नास खानेसे गर्भपात होता है। पत्तेके श्वेत अंशका ताज़ा रस चीनीके साथ मिलाकर पीनेसे रेचक है। इसका फल भी रक्तशोधक है। मद्रेके पास मलवर-तट और ब्रह्मदेशमें अनन्नास बहुत उत्पन्न होता है। इसका तेल मिठाईमें स्वाद बढ़ानेको डाल देते हैं। अनन्नास देखो।

आनाम्य (सं० त्रि०) आ-नम् कर्मणि ण्यत्, अनिट्-कत्वात् कुत्वाभावः। नमस्कार्य, सलाम किये जाने क़ाबिल, जिसके लिये झुकना पड़े।

आनाय (सं० पु०) आनीयते मत्स्याद्यनेन, आ नी करणे घञ्। आनमानाय। पा ३।३।१२४। मत्स्यादि पकड़नेके निमित्त शणसूत्रादि निर्मित जाल, मछली मारनेका दाम।

आनायिन् (सं० त्रि०) आनायति, आ-नी-णिनि। १ एक स्थानसे किसीको स्थानान्तरमें ले जानेवाला, जो किसीको एक जगहसे दूसरी जगह पहुंचा देता हो। (पु०) आनायी। (स्त्री०) आनायिनी।

आनायी (सं० पु०) आनायी जालस्यास्ति, आनाय-इनि। जालिक, मछुवा, धीवर, माहीगीर।

आनाय्य (सं० पु०) आनाय्यते गार्हपत्यादानीय संस्क्रियतेऽसौ, आ-नी-ण्यत्, निपा॰ आयादेशः। आनाय्योऽनित्ये। पा ३।१।१२७। १ वेदप्रसिद्ध दक्षिणाग्निविशेष, यह गार्हपत्यसे लेकर दक्षिणकी ओर रखा जाता है। (त्रि०) २ समीप उपस्थित किया जानेवाला, जो नज़दीक लाया जाता हो। (अव्य०) ३ मंगाकर, बुलवाके, इकट्ठाकरके।

आनाह (सं० पु०) आ-नह-घञ्। १ दैर्घ्य, लम्बाई। प्रधानतः वस्त्रके दैर्घ्यको ही आनाह कहते हैं। आनह्यते अपसरणप्रतिरोधेन बध्यते विण्मूत्राद्यनेन, आ-नह करणे घञ्। २ विण्मूत्ररोधक व्याधि, कोष्ठबद्ध, पाखाना और पेशाब रोकनेवाली बीमारी। इसका लक्षण इस प्रकार है—जब आमाशयमें आम एकबार भर जाता या क्रमशः बार बार बढ़ता, तब वायु कुपित हो इसे उत्पन्न करता है। यह स्वयं पैदा नहीं होता।

आनाहिक (सं० पु०) आनाहे आनाहरोगप्रतीकारे विहितः, ठक्। १ आनाह रोगके प्रतीकारका विधि, पाखाना और पेशाब बन्द होनेकी बीमारी दूर करनेका तरीक़ा। (त्रि०) २ आनाह रोगमें व्यवहृत होनेवाला।

आनि, आन देखो।

आनिचेय (सं० त्रि०) आ समन्तान्निचीयते, आ-नि-चि कर्मणि यत्। समन्तात् सञ्चनीय, चारो ओर इकट्ठा किया जानेवाला।

आनिरुद्ध (सं० त्रि०) अनिरुद्धस्यापत्यम्, ऋष्टित्वात् अण्। अनिरुद्धसे उत्पन्न। उषापति अनिरुद्धके पुत्र या कन्यारूप सन्तानका यह शब्द विशेषण है।

आनिर्हत (वै० त्रि०) अनिर्हत एव, स्वार्थे अण्। १ पूर्ण रीतिसे संसारसे निकला हुआ, जो बिलकुल दुनियासे बाहर चला गया हो। (पु०) २ अविनश्वर प्रकृति, लाज़वाल क़ुदरत। ३ देवहृदय तुल्य देवता विशेष। (स्त्री०) आनिर्हती।

आनिल (सं० त्रि०) अनिलस्येदम्, अनिल-अण्। १ वायु सम्बन्धीय, हवायी। (पु०) अनिलो देवताऽस्य। २ वायुदेवताके लिये हवनीय घृतादि। ३ हनूमान्। ४ भीम। वायुसे उत्पन्न होने कारण हनूमान् और भीमसेन आनिल कहाते है।

आनिला (सं० पु०) जहाज़के लङ्गरकी कुण्डी।

आनिलि (सं० पु०) अनिलस्यापत्यम्, अनिल-इञ्,

आनुनाश्य (सं० त्रि०) अनुनाशं विनाशस्य पश्चा-द्भवम्, सह्वादि० ण्य। नाशके पश्चात् जात, बरबादीके बाद पैदा हुआ। (स्त्री०) आनुनाश्यी।

आनुनासिक्य (सं० क्ली०) अनुनासिकस्य भावः, ष्यञ्। "प्रतिज्ञानुनासिक्या पाणिनीयाः।" (परिभाषेन्दुशेखर) अनु-नासिकका धर्म, नासिकाके साथ उच्चार्यत्व, हर्फ़ गुन्नाका काम, नाकके जरिये तलफ़्फ़ुज़ करनेकी हालत, गुन्नापन।

आनुपथ्य (सं० त्रि०) अनुपथं भवम्, परिमुखादि० ञ्य। पथके पश्चात् होनेवाला, जो राहके पीछे पैदा हो।

आनुपदिक (सं० त्रि०) अनुपदं धावति, अनुपद-ठक्। १ पश्चात् धावमान, पीछे दौड़नेवाला। पदस्य वेदपाठविशेषस्य पश्चात् अनुपदं तद्वेत्ति तद्वोधक-ग्रन्थ-मधीते वा, उक्थादि० ठक्। २ पदग्रन्थ पढ़ने-वाला। ३ पदाभिज्ञ, पदको समझनेवाला।

आनुपद्य (सं० त्रि०) अनुपदं भवम्, परिमुखादि० ञ्य। पदके पश्चात् जात, पदसे पीछे होनेवाला।

आनुपूर्व (सं क्ली०) आनुपूर्वी देखो।

आनुपूर्वी (सं० स्त्री०) पूर्वमनुक्रम्य अनुपूर्वं तस्य भावः ष्यञ् आनुपूर्व्यम्, ततो वा ङीपि यलोपः। १ परिपाटी, सूलाधिक्रम, तरतीब, सिलसिला, ढङ्ग। २ स्मृतिके अनुसार—जातिका सरल क्रम, क़ौमका सीधा सिलसिला। ३ न्यायमतसे—क्रमसे निकाला हुआ फल, जो नतीजा सिलसिलेसे हासिल हो। (हिं० वि०) ४ परिपाटीयुक्त, सिलसिलेवार।

आनुपूर्वेण, आनुपूर्व्या देखो।

आनुपूर्व्य (सं० क्ली०) आनुपूर्वी देखो।

आनुपूर्व्या (सं० अव्य०) क्रमानुसार, सिलसिलेसे, ढङ्गमें।

आनुमत (सं० त्रि०) अनुमतसम्बन्धीय, रजामन्दीसे ताल्लुक रखनेवाला। (स्त्री०) आनुमती।

आनुमानिक (सं० त्रि०) अनुमानादागतम्, ठक्। १ अनुमान-प्राप्त, युक्तिसिद्ध, हवालेसे साबित, मुन्तज। २ व्याप्तिविशिष्ट लिङ्गज्ञान हेतु अवगत, नतीजेसे ताल्लुक रखनेवाला। धूमदर्शन हेतु वह्निका अनुमान होता है। अतएव स्वीय व्याप्तिविशिष्ट धूमहेतु अवगत होने कारण पर्वतादि-स्थित वह्नि आनुमानिक है। (क्ली०) ३ अनुमान, अन्दाज़, फ़र्ज़, क़ियास। ४ साङ्ख्यमतसिद्ध प्रधान।

आनुमानिकत्व (सं० क्ली०) युक्तिसिद्ध होनेकी स्थिति, मुन्तजी।

आनुमाष्य (सं० त्रि०) अनुमाषं भवम्, परिमुखादि० ञ्य। माषके पश्चात् जात, उड़दसे पीछे पैदा होनेवाला।

आनुयव्य (सं० त्रि०) अनुयवं भवम्, परिमुखादि० ञ्य। यवके पश्चात् जात, यवसे पीछे उपजनेवाला।

आनुयूप्य (सं० त्रि०) अनुयूपं भवम्, परिमुखादि० ञ्य। यूपके पश्चात् जात, यूपसे पीछे होनेवाला।

आनुरक्ति (सं० स्त्री०) आ-नु-रञ्ज-क्तिन्। १ अनु-राग, जोश, मुहब्बत। २ आनुगत्य, पैरौकारी, फ़र-मांबरदारी।

आनुराहतायन (सं० पु०) अनुरहतका पुत्र किंवा पौत्र।

आनुराहति (सं० पु०-स्त्री) अनुरहतोऽपत्यम्, वाह्लादि० इञ्। अनुरहतका अपत्य।

आनुरूप्य (सं० क्ली०) अनुरूपस्य भावः, ष्यञ्। १ सादृश्य, शबाहत, बराबरी। २ औचित्य, मुना-सिबत।

आनुरोहतायन (सं० त्रि०) अनुरोहतसे उत्पन्न।

आनुरोहति (सं० पु०-स्त्री०) अनुरोहतोऽपत्यम्, बाह्वादि० इञ्। अनुरोहत् मुनिके पुत्रपौत्रादि।

आनुलेपिक (सं० त्रि०) अनुलेपिकायाः स्त्रिया धर्म्यम्, अण्। अनुलेपिकाके धर्मसे सम्बन्ध रखने-वाला, जो तेल लगानेवाली औरतके कामका हो।

आनुलोमन (सं० त्रि०) अनुलोमकारी, अपनेसे छोटी जातिके साथ शादी करनेवाला

आनुलोमिक (सं० त्रि०) अनुलोमं वर्तते, अनुलोम-ठक्। १ यथाक्रम कार्यकारी, क्रमानुयायी, तरतीबके साथ काम करनेवाला, बाक़ायदा, इन्तिज़ामी। २ अनु कूल, रज़ामन्द, मेहरबान।

आनुलोम्य (सं० क्ली०) अनुलोमस्य भावः कर्म वा,

च्छन्दसोऽणीवभावः। २ अनुष्टुप् छन्द। (स्त्री०) आनुष्टुभी।

आनुष्टुभ, आनुष्टुभ देखो।

आनुसाय्य (सं० त्रि०) अनुसायं भवम्, परिमुखादि० ञ्य। सन्ध्याके पश्चात् जात, शामको बाद पैदा होनेवाला।

आनुसीत्य (सं० त्रि०) अनुसीतं भवम्, परिमुखादि० ञ्य। लाङ्गलके पश्चात् जात, हलके पीछे पैदा होनेवाला।

आनुसीर्य, आनुसीत्य देखो।

आनुसूय (सं० त्रि०) अनुसूयया अत्रिपत्न्या दत्तम्, अण्। अनुसूया-दत्त, अत्रिपत्नी अनुसूयाका दिया हुआ।

आनुसृतिनेय (सं० त्रि०) अनुसृतौ भवम्, कल्याणादि० ठक् कल्याणादि० इनङ् च। अनुसरण-जात, पश्चाद्-गमन-जात, पैरोकारीसे पैदा होनेवाला।

आनुसृष्टिनेय (सं० त्रि०) अनुसृष्टौ भवम्, ठक् इनङ् च। १ सृष्टिके पश्चाद्जात, खल्कसे पीछे पैदा होनेवाला। २ दानके पश्चाद् जात, बख्शिशसे पीछे निकलनेवाला।

आनुहारति (सं० त्रि०) अनुहरति भवम्, वाह्वादि० इञ् अनुशतिकादित्वादुभयपदवृद्धिः। हरण करनेवालेसे पश्चाद् उत्पन्न,जो चोरानेवालेसे पीछे पैदा हो।

आनूक (वै० अव्य०) विपुल, सदृश:, एकरातसे।

आनूप (सं० त्रि०) अनूपदेशे भवम्, अनूप-अण्। १ अनूपदेश जात, तर मुल्कमें पैदा होनेवाला। २ जलबहुल, जलप्राय, शोरबोर, तरबतर, मरतूब, भीगा। (पु०) ३ महिष, भैंस। ४ अनपदेशवासी प्राणीमात्र, मुल्क मरतूबका जानवर। ५ सागर निकटवर्त्ती गुजरातका अंश, वर्त्तमान ओखमण्डल। ६ हिज्जलवृक्ष, समुन्दर फल। ७ अनन्नासका पेड़। ८ भौम जलविशेष, मुल्क मरतूबका पानी। ९ जल, पानी। (स्त्री०) आनूपी।

आनूपक (सं० त्रि०) आनूपो जलप्रायदेशस्थो मनुष्यस्तस्मिन् तत्‌स्थिते हस्तिते च वाच्ये वुञ्। मनुष्य तत्‌स्थयोर्वुञ्। पा ४।२।१३४। जलप्राय देशमें रहनेवाला, मुल्कमरतूबका बाशिन्दा।

आनूपजल (सं० क्ली०) अनूपदेशस्थ जल, मुल्क-मरतूबका पानी। यह स्वादु, स्निग्ध, गुरु एवं पित्त-हर होता और पामा, कण्डू, वात, कफ तथा ज्वर उत्पन्न करता है। (राजनिघण्टु)

आनूपजाङ्गलसाधारणमांस (सं० क्ली०) रुरु, हरिण, मृग, क्रोड वा सारङ्गका मांस, किसी किस्मके आहूका गोश्त। यह लघु, स्वादु, वल्य, हृद्य और पथ्य होता है।

आनूपपक्षिमांस (सं० क्ली०) सारस, हंस, चक्रवाकादिका मांस, पानीमें रहनेवाली चिड़ियाका गोश्त। यह शीतल, स्निग्ध, वात एवं कफको दूर करनेवाला और गुरु होता है। (राजनिघण्टु)

आनूपभूमि (सं० स्त्री०) सजलभूमि, तरजमीन्।

आनूपमांस (सं० क्ली०) जलप्रिय जीवका मांस, पानीसे मुहब्बत रखनेवाले जानवरका गोश्त। यह मधुर, स्निग्ध, गुरु, अग्निमान्द्यकर, कफकर, मांस-पोषक, अभिष्यन्दि और हित है। (भावप्रकाश)

आनूपवर्ग (सं० पु०) अनूपदेशस्थ प्राणीका वर्ग, मुल्क-मरतूबके जानवरका जखीरा। यह पञ्चविध होता है—कूलचर, प्लव, कोशस्थ, पादी और मत्स्य। गज, गो आदि कूलचर पशु ठहरता, जिसका मांस वातहर, हृद्य और मधुर होता है। हंस, सारस आदि प्लव बोला जाता, भक्ष्य मांस रक्त पित्तादिको दूर करता है। शङ्ख आदि कोशस्थ कहाता; उसका मांस स्वादु रस एवं पाक-त्वादि गुणसे युक्त रहता है। कूर्म, कुम्भीरादिका नाम पादी है। (सुश्रुत)

आनृण्य (सं० क्ली०) आनृणस्य भावः कर्म वा ष्यञ्। ऋणशून्यता, कर्जसे छुटकारा पानेका काम।

आनृत (सं० त्रि०) अनृतं शीलमस्य, अनृत-ण। छत्रादिभ्यो णः। पा ४।४।६२। सर्वदा मिथ्याका अनुशीलन करनेवाला, जो हमेशा नारास्तीका मश्क बढ़ाता हो।

आनृतक (सं० त्रि०) आनृताकीर्ण, झूठोंसे भरा हुआ।

आनृशंस, आनृशंस्य देखो।

आनृशंसि (सं० पु०-स्त्री०) अनृशंस अपत्यम्, इञ्। दयालुका अपत्य, रहीमकी औलाद।

आनृशंसीय (सं० त्रि०) आनृशंसी भवम् आनृशंसि-छ। गहादिभ्यश्च। पा ४।२।१३८। दयालुके अपत्यसे उत्पन्न, जो दयालुकी औलादसे पैदा हो।

आनृशंस्य (सं० स्त्री०) अनृशंसस्य भावः कर्म वा, ष्यञ्। १ अनिष्ठुरता, अनुकम्पा, नरमी, मेहरबानी, रहम। (त्रि०) स्वार्थे ष्यञ्। २ कारुण्ययुक्त, मेहरबान्।

आनि—आनाका बहुवचन। आना देखो।

आनिगाँव (हिं० पु०) अन्य ग्राम, दूसरा गाँव।

आनितव्य आनेय देखो।

आनिता, आनेय देखो।

आनिन् (सं० पु०) आ-नी इन्। आनयनकर्ता, लानेवाला, जो ले आता हो। (स्त्री०) आनिनी।

आनेय (सं० त्रि०) आनीयते आ-नी कर्मणि यत्। "[illegible]" (विक्रमोर्वशी) एक देशसे देशान्तरको लानेयोग्य, लाया जानेवाला।

आनेवाला (हिं० त्रि०) अन्य स्थानसे प्रकृत स्थानके समीप उपस्थित होनेवाला, जो दूसरी जगहसे बोलनेवालेके पास आकर पहुँचता हो।

आनैपुण (सं० क्ली०) अनिपुणस्य भावः, अण् उत्तर पदवृद्धिः। अचातुर्य, अपटुत्व, बेसलीकगी, अनाड़ीपन।

आनैपुण्य, आनैपुण देखो।

आनैश्वर्य (सं क्ली०) अनीश्वरस्य भावः, अनीश्वर ष्यञ् उत्तरपदवृद्धिः पूर्वपदस्य वा वृद्धि। १ शक्ति या आधिपत्यका अभाव, ताकत या अमीरतकी अदम मौजूदगी। २ ऐश्वर्य विरोधी सांख्यादि मतसिद्ध बुद्धिका धर्म। धर्म अधर्म, ज्ञान, अज्ञान, वैराग्य, अवैराग्य, ऐश्वर्य अनैश्वर्य आठ प्रकार बुद्धिका धर्म भावरूप होता है। उसमें ज्ञानभिन्न सभी बन्धका हेतु है।

आन्त (सं० त्रि०) अम-क्त, वा इडभाव, उपधा दीर्घ। रुष्यमत्वरसंघुषास्वनाम्। पा ७।२।२८। १ पीड़ित, तकलीफपाया। २ अमित, बेहद। "आन्तः अमितः।" (सिद्धान्तकौमुदी) ३ निर्गत, गुजरा हुआ। ४ अन्तिम, आखिरी। (अव्य०) ५ अन्ततक, पूरे तौरपर, बिलकुल।

आन्तर (सं० त्रि०) अन्तर्मध्ये भवम् अण्। अभ्यन्तर, अभ्यन्तर जात, भीतरसे पैदा होनेवाला।

आन्तरतम्य (सं० स्त्री०) अन्तरतमस्य अत्यन्तसदृशस्य भावः, ष्यञ्। सौसादृश्य, निहायत मुशाबिहत गादिदारी।

आन्तरप्रपञ्च (सं० पु०) अन्तरस्थितो प्रपञ्च विस्तार इति, कर्मधा०। अभ्यन्तरजात आध्यात्मिक द्वैत विस्तार दिलकी अन्दर पैदा होनेवाला दुईका झगड़ा।

आन्तरागारिक (सं० त्रि०) अन्तरागारस्य कर्मन् ठञ्। अन्तःपुरकी रक्षाके निमित्त नियुक्त पुरुषसे सम्बन्ध रखनेवाला, जो जनानेकी हिफाजत करनेवाले अफसरसे तअल्लुक हो।

आन्तराल (सं० त्रि०) अन्तराले मध्यस्थितिं वेत्ति, अण्। शरीरके मध्य आत्माकी स्थिति जाननेवाला, जो जिस्मके अन्दर रूहका मुकाम समझता हो।

आन्तरिक (सं० त्रि०) अन्तरे भवम् ठञ्। १ अन्तर्गत अन्दरूनी, भीतरी। २ मानसिक, दिली, दमाग़ी।

आन्तरिक्ष (सं० त्रि०) अन्तरिक्षे भवम् अण्। आकाश जात, आसमानसे पैदा होनेवाला। (क्ली०) २ आकाश आसमान्।

आन्तरिक्षजल (सं० क्ली०) आकाश सलिल, आसमानका पानी। यह चतुर्विध होता है—धार, कार, तौषार और हैम। वर्षाभवको धार, वर्षोपलोद्भवको कार, ओसार-तोयको तौषार और प्रालेयोद्भवको हैम जल कहते हैं। फिर धार भी द्विविध रहता है—सामुद्र और गाङ्ग। आश्विनमें स्वाति एवं विशाखापर रवि रहनेसे मेघ जो वारि छोड़ता वह गाङ्ग और मार्गशीर्षादि मासमें पड़नेवाला सामुद्र कहाता है। गाङ्ग गुणाढ्य अदोष लघु शीतल, रुचिप्रद, कफपित्तघ्न, एवं पाचन; और सामुद्र शीत, गुरु तथा कफ वातकर रहता, किन्तु दोनो प्रकारका जल रसाश्रयसे अम भूमिपर गिरनेसे

नाना रसत्वको प्राप्त हो जाता है। दधिलिप्त रौप्य पात्रमें शाल्योदनपिण्ड डालकर वर्षामें रख देनेपर यदि एक मुहूर्तमें नहीं विगड़ता, तो धार जल गाङ्ग कहाता है। (राजनिघण्टु)

आन्तरीच, आन्तरिच देखो।

आन्तरीपक (सं० त्रि०) अन्तरीपे भवम्, वुञ्। अन्तरीप-जात, रासी, जमीन्‌की गर्दनमें पैदा होनेवाला।

आन्तर्गणिक (सं० त्रि०) अन्तर्गणं भवम्, ठक्। गणमध्य जात, एक गण वा जातिकी भिन्न श्रेणीसे उत्पन्न।

आन्तर्गेहिक (सं० त्रि०) अन्तर्गेहं भवम्, ठक्। गृहमध्यजात, मकान्‌के अन्दर होनेवाला।

आन्तर्वेश्मिक, आन्तर्गेहिक देखो।

आन्तर्य (सं० क्ली०) अन्तरस्य भावः, ष्यञ्। अन्तवर्तित्व, निहायत मुत्तसिल नातेदारी।

आन्तिका (सं० स्त्री०) अन्तिकेव, अण् अजादि० टाप्। ज्येष्ठा भगिनी, अन्तिका, बड़ी बहन।

आन्त्र (सं० क्ली०) अमत्यनेन, अम-गतौ क्त, उपधा दीर्घः। अमिचिमिदि शसिभ्यः क्तः। उण् ४।१६२। अनुनासिकस्य क्विझलोःक्ङिति। पा ६।४।१५। १ वायुवाहक नाड़ीविशेष, हवा निकालनेवाली एक आंत। (त्रि०) अन्त्रस्येदम्, अण्। २ अन्त्रसम्बन्धीय, आंतसे तालुक रखनेवाला। (स्त्री०) आन्त्री।

आन्त्रिक (सं० त्रि०) अन्त्रसम्बन्धीय, आंतसे तालुक रखनेवाला।

आन्द (सं० पु०) घृणित मनुष्योंकी एक श्रेणी, गन्दे लोगोंकी एक जात।

आन्दोल (सं० पु०) पुनः पुनः दोलन, झुलावा।

आन्दोलक (सं० पु०) आन्दोलयति, आन्दोल-ण्वुल्। १ दोलनकर्ता, झुलानेवाला। २ किसी विषयकी चालना करनेवाला, जो कोई बात उठाता हो।

आन्दोलन (सं० क्ली०) आन्दोल-भावे ल्युट्। १ प्रेङ्खण, झोका, पेंग। २ कम्प, कंपकंपी। ३ अनुसन्धान, खोज। ४ विवेचना, परख।

आन्दोलित (सं० त्रि०) कम्पित, शिञ्जित, झोका खाये हुआ।

आन्धस (सं० पु०) पक्व शालिका मण्ड, भातका मांड।

आन्धसिक (सं० पु०) अन्धो भक्तं शिल्पमस्य, ठक्। पाचक, नानबायी।

आन्धीगव (सं० क्ली०) अन्धीगुना तन्नामक मुनिना दृष्टं साम, अण्। तृतीय सवनमें गेय आर्भवपवमान सूक्तगत सूक्त विशेष।

आन्ध्य (सं० क्ली०) अन्धस्य भावः, ष्यञ्। अन्धता, नाबीनायी, अंधलायी।

आन्ध्र (सं० पु०) आ-अन्ध-रण्। १ जनपद विशेष, तामिल और तेलगु मुल्क। (त्रि०) २ आन्ध्रदेशसम्बन्धीय, तेलगु और तामिल मुल्कसे तालुक रखनेवाला। अन्ध्र और अन्ध्रराजवंश देखो।

आन्ध्रदेशपूग (सं० क्ली०) अन्ध्रदेशका पूग, तेलगु और तामिल मुल्ककी सुपारी। यह पकनेपर मधुर, किञ्चित् अम्ल, तुवर, वातकफघ्न और मुखजाड्यकर होता है। (वैद्यकनिघण्टु)

आन्न (सं० त्रि०) अन्नं लब्ध्वा, ण। अन्नाण्णः। पा ४।४।८५। १ सन्तुष्ट, आसूदा, खा चुकनेवाला, जो खानेको पा गया हो। २ अन्न-सम्बन्धीय, अनाजसे तालुक रखनेवाला। (स्त्री०) आन्नी।

आन्यतरेय (सं० त्रि०) अन्यतरस्यापत्यम्, ठक्। अन्यतरसे उत्पन्न। (स्त्री०) आन्यतरेयी।

आन्यभाव्य (सं० क्ली०) अन्यो भावो यस्य अन्यभावः तस्य भावः, ष्यञ्। अन्यरूपत्व, दूसरी बनावट।

आन्वयिक (सं० त्रि०) अन्वये प्रशस्तकुले भवम्, ठञ्। १ प्रशस्त-कुलजात, खान्दानी, अच्छे घरवाला। २ क्रमानुगत, वाकरीना, ठीक।

आन्वष्टक्य (सं० क्ली०) अन्वष्टकैव, अन्वष्टका स्वार्थे ष्यञ्। अन्वष्टका शब्दार्थ। "अपरेद्युरान्वष्टक्यम्।" (आश्वलायनगृह्यसूत्र) अन्वष्टका देखो।

आन्वाह्निक (सं० त्रि०) अहनि अहनि अन्वहं तत्र भवम्, ठञ्, अनुशतिकादित्वात् द्विपदवृद्धिः। दैनिक, रोजाना, हर रोज होनेवाला।

आन्वीक्षिकी (सं० स्त्री०) अन्वीक्षया ईक्षा यया बोधना सा प्रयोजनमस्याः, ठञ्। १ तर्कविद्या, न्याय शास्त्र। 'आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः।' (अमर) २ गौतम-प्रणीत न्यायविद्या। अक्षपादने इसे पांच अध्यायमें पूरा किया है। आदिम सूत्रमें प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन दृष्टान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प वितण्डा हेत्वाभास, छल, जाति और निग्रहका विषय है। इन्हीं सबका ज्ञानसे तत्त्वज्ञान हेतु मोक्ष मिलता है। अन्वीक्षा मीलमस्या' तर्के हितं वा, ठञ्। ३ दुर्गा।

आन्वीप (सं० क्ली०) अनुगता अपो यस्मिन्, अनु अप-ईत्। अव्ययपूर्व क्षीम ईप्। पा ६।३।९८। अनुकूलत्व, मेहरबानी।

आन्वीपक (सं० त्रि०) आन्वीपं वर्तते, ठञ्। अनुकूल, मेहरबान्।

आप (सं पु०) आप्यते, आप कर्मणि घञ्। १ अष्ट वसुके अन्तर्गत चतुर्थ वसु। आठो वसुके नाम यह है,—धव ध्रुव, सोम, आप, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभास। अपां समूहः, अण्। २ जलसमूह, पानीका ढेर। आप्यते सर्वत्र व्याप्यते। ३ आकाश, सब जगह मौजूद रहनेवाला आसमान्। समासान्तमें इस शब्दका अर्थ पानेवाला लगता है। जैसे—दुराप सुखिकरसे मिलनेवाला। (हिं० सर्व०) ४ स्वयं, खुद। इस अर्थमें यह उत्तम, मध्यम और अन्य तीनो पुरुषमें लिये जाता है। जैसे—मैं आप करता हूं, तुम आप करो आवो, वह आप समझ लेगा। ५ तुम। ६ वह। उपरोक्त दोनो अर्थमें यह आदरसूचक है। ७ परमेश्वर।

आप-आप करना (हिं० क्रि०) आदर देना, इज्जत बढ़ाना खुशामद देखाना।

आपक (सं० त्रि०) आप-ण्वुल् ण्वुल्। प्रापक पहुंचानेवाला जो किसीको कोई चीज या जगह वगैरह मुहैया करता हो।

आपकर (सं० त्रि०) अपकरे भवम्, अण् अण्। अपकार जात, नागवार, बुरा।

आपक्व (सं० क्ली०) आ ईषत् पक्वम्, आ पच् क्त। अल्प पक्व द्रव्य, कुछ पकी हुई चीज।

आपचिति (सं० पु०) अपचितस्यापत्यम् इञ्। अपचितका पुत्र। (स्त्री०) ङीप् टाप्। अपचिता। क्रीत्यादिभ्य। पा ४।१।७९। अपचितकी कन्या।

आपगा (सं० स्त्री०) अपां समूहः आपस्तेन तस्मिन् वा गच्छति, आप् अप् गम-ड। नदी, दरया। 'नदी सरित् तरङ्गिणी निम्नगा।' (अमर) अपगा देखो।

आपगाजल (सं० क्ली०) नदीजल दरयाका पानी। यह दीपन, रुक्ष, वातल, लघु और शीतल होता है। (राजवल्लभ)

आपगावारि, आपगाजल देखो।

आपगासलिल, आपगाजल देखो।

आपगेय (सं० पु०) आपगायां गङ्गायां भवः। गङ्गाके पुत्र भीष्म, गाङ्गेय।

आपच्छिद (सं० त्रि०) आपदं छिनत्ति छिनत्ति, आपद छिद अच्। पृषो० अलोप। आपद् दूर करनेवाला जो मुसीबत छोड़ा देता हो।

आपठन (सं० क्ली०) न सन्ति पठ्यते एव तत्र भाव। अपाठ्य, अध्ययन।

आपण (सं० पु०) आपण्यन्ते विक्रयार्थं सम्यक् स्तूयते प्रशस्यते द्रव्यमत्र, आपण घञ् घञ्। आधारे च। क्रयविक्रयस्थान, हट बाजार, दुकान, बेचनेके लिये जिस जगह अपनी-अपनी चीजकी तारीफ की जाये।

आपणिक (सं० त्रि०) आपणाद्विक्रयाया आगतम्, ठञ्। १ हट्टागत, बाजारसे आया हुआ, बाजारू। आपणात्मक वर्ग्यम्। २ वाणिज्यसम्बन्धी सौदागरी, तिजारती। (पु०) आपणस्य विक्रय' राजग्राह्य'। ३ हाटका राजकर, बाजारकी चुंगी। आपणायति विक्रयाय द्रव्यं स्तौति, आ-पण-ठक्। पणि वणिग्वणिजः। अध पश्य। ४ वणिक्, सौदागर। 'आपणिको वणिक्।' (शब्दरत्न)

आपत्, आपद् देखो।

आपत (हिं०) आपद देखो।

आपतत् (सं० त्रि०) उपस्थित, आ पड़नेवाला, जो पास पहुंच रहा हो। (स्त्री०) आपतन्ती।

आपतन (सं० क्ली०) आ-पत भावे ल्युट्। १ आग-

मन, आमद। २ अवतरण, उतार, होनी। ३ प्राप्ति, पहुंच। ४ ज्ञान, समझ।

आपतायी (हिं० वि०) आपद् उठानेवाला, जो आफ़त डाल देता हो।

आपतालिका (सं० स्त्री०) छन्दोविशेष।

आपति (सं० पु०) आ-पत-इन्। १ सततगामी वायु, टूट पड़नेवाली हवा। २ सदागति, चलफिर। (वै० त्रि०) ३ सन्निकृष्ट, आ पड़नेवाला, जो झपटा चला आता हो।

आपतिक (सं० पु०) आपतति शीघ्रम्, आ-पत-इकन्। १ श्येनपक्षी, बाज़ चिड़िया। (त्रि०) दैवायत्त, इत्तिफ़ाक़ी, आपड़नेवाला। 'श्येनदैवायत्तयोश्च मत आपतिको बुधैः।' (उणादिकोष)

आपतित (सं० त्रि०) आ-पत-क्त-इट्। १ हठात् आगत, इत्तिफ़ाक़ी, जो आ पड़ा हो। २ अवतरित, उतरा हुआ।

आपत्कल्प (सं० पु०) आपदि उचितः कल्पः विधिः, शाक० तत्। आपत्कालमें किया जानेवाला कर्म, जो काम आफ़त पड़नेमें किया जाता हो।

आपत्काल (सं० पु०) आपद्युक्तः कालः। आपद्-युक्त काल, मुसीबतका वक़्त।

आपत्कालिक (सं० त्रि०) आपत्काले भवम्, ठञ् ञिठ् वा। कालाद्यभ्याठञ्ञिठौ। पा ४।३।११६। आपत्-काल-जात, मुसीबतके वक़्त होनेवाला। (स्त्री०) आपत्कालिका वा आपत्कालिकी।

आपत्ति (सं० स्त्री०) आ-पद-क्तिन्। १ आपद्, आफ़त। २ जीवनोपायकी अप्राप्ति, रोज़ी रोज़गारकी तकलीफ़। ३ प्राप्ति, हासिल। ४ रोगादि द्वारा अभिभूत अवस्था, बीमारी वगैरहसे जकड़ जानेकी हालत। ५ अर्थादिकी सिद्धि, दौलत वगैरहकी याफ़्त। ६ अनिष्ट प्रसङ्गकी अर्थापत्ति, बुरी बातका एतराज़। ७ व्याप्यके आहार्य हेतु व्यापकमें उसका आरोप, किसीके साथ रिश्तेदारीक दाखिल।

आपत्य (सं० त्रि०) अपत्याधिकारे विहित अण्। अपत्यस्य च तद्धितेऽनाति। पा ६।४।१५१। सन्तानसम्बन्धीय, औलादी। व्याकरणमें पैठक संज्ञाओंके विधानसे सम्बन्ध रखनेवालेको आपत्य कहते हैं। (स्त्री०) आपत्यी।

आपथि (वै० त्रि०) अभिमुखं पन्थाः यस्य, वेदे निपातनात् इत् समा०। सम्मुखके पथसे सम्बन्ध रखने-वाला, जो राहमें हो।

आपथी (सं० पु०) यात्री, मुसाफ़िर, राह चलने-वाला आदमी।

आपथ्य, आपथी देखो।

आपद् (सं० स्त्री०) आ-पद-क्विप्। सम्पदादिभ्यः क्विप्। पा ३।३।९४। विपत्ति, दुर्घटना, आफ़त, झगड़ा।

आपद (हिं०) आपद देखो।

आपदकाल (सं० पु०) आपदा क्षतोऽकालः, शाक० तत्। विपद् द्वारा पड़ा हुआ समय, जो वक़्त आफ़तके ज़रिये वाक़े हो।

आपदा, आपद देखो।

आपदेव (सं० पु०) आपस्य जलसमूहस्य देवः। १ जलाधिष्ठातृदेवता, वरुण, जलदेवता। २ ऐष्टिक-प्रायश्चित्त, क्षेत्रपीठमाला, गोत्रप्रवरनिर्णय, भक्तिकल्प-तरु और रुद्रपद्धति नामक ग्रन्थके रचयिता। ३ वेदान्त-सारदीपिका-रचयिता। ४ सापिण्ड्यकल्पलता-रच-यिता। ५ स्फोटकनिरूपण-रचयिता। ६ अनन्त-देवके पुत्र, आपदेवके पौत्र, अनन्तदेवके पिता और गोविन्दके शिष्य। इन्होंने अधिकरणचन्द्रिका, मीमांसा-न्यायप्रकाशिका, वादकौतूहल, स्मृतिचन्द्रिका और आपदेवीय नामक स्मृतिग्रन्थ लिखा है।

आपद्गत (सं० त्रि०) विपद्में पड़ा हुआ, जो तकलीफ़में आ गया हो।

आपद्ग्रस्त (सं० त्रि०) हतभाग्य, कमबख़्त, तक-लीफ़का मारा।

आपद्धर्म (सं० पु०) आपदि आपत्काले अनुष्ठेयो धर्मः, शाक० तत्। १ विपद्कालका धर्मानुष्ठान, मुसीबतके वक़्तका मज़हब। आपद् आनेसे ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्यके लिये अपना धर्म निबाहना कठिन है। ऐसे समय शास्त्रने उनके लिये जो कर्तव्य कर्म ठहराया, उसीका नाम आपद्धर्म है। (क्ली०) आपद्धर्ममधिकृत्य कृतो ग्रन्थः, अण्।

आपसी (हिं॰ वि॰) आत्मीय, सम्बन्धी, रिश्तेदार, मेली।

आपसे आप (हिं॰ क्रि॰ वि॰) स्वयं, स्वभावतः, खुदबखुद, अचानक, एकाएक।

आपस्कार (सं॰ क्ली॰) शरीरका मूल वा शेष, जिस्म या तनेका सिरा।

आपस्तम्ब (सं॰ पु॰) अप विपर्याय तस्मिन्भवः अण् आपः तस्य वारणे स्तम्ब इव। अष्टादश स्मृतिकारके मध्य एक ऋषि। तैत्तिरीय यजुर्वेदमें आपस्तम्ब नाम रहते भी ऋषिका विशेष विवरण नहीं मिलता। इन्होंने धर्मसूत्र, गृह्यसूत्र एवं कल्पसूत्र सङ्कलन किया है। आपस्तम्बस्मृति दश अध्यायमें सम्पूर्ण हुई, उसमें केवल प्रायश्चित्तका विधान है। आपस्तम्बका यज्ञपरिभाषामें लिखो है,—मन्त्र और ब्राह्मणको वेदके समान समझना चाहिये। "मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्।" (यज्ञपरिभाषा) किन्तु यह बात सब लोग नहीं मानते।

कितने ही कल्पसूत्रको भी वेदके समान बताते हैं। किन्तु गुरु प्रभाकरने उसे असङ्गत कहा है। उनके मतमें कल्पसूत्रका वेदत्व प्रतिपन्न हो नहीं सकता। "बौधायनापस्तम्बाश्वलायनकात्यायनादिनामाङ्किता. कल्पसूत्रादिग्रन्था. निगमनिरुक्तषडङ्गग्रन्था मान्वादिस्मृतयश्च अपौरुषेया धर्मबुद्धिजनकत्वात् वेदवत्। न च मूलप्रमाणसापेक्षत्वं न वेदवैपम्यमिति शङ्कनीयम्। उत्पन्नाया बुद्धेः स्वतःप्रमाण्याङ्गीकारेण निरपेक्षत्वात्। नैवं उक्तानुमानस्य कालात्ययोपदिष्टत्वात्। बौधायनसूत्रापस्तम्बसूत्रमित्येवं पुरुषनाम्ना ते ग्रन्था उच्यन्ते।" (जैमिनीय न्यायमालाविस्तर)

बौधायन, आपस्तम्ब, आश्वलायन, कात्यायन प्रभृतिके नामपर चलित कल्पसूत्रादि ग्रन्थ बने; निगम, निरुक्त एवं षडङ्ग तथा मन्वादि प्रणीत स्मृतिशास्त्र अपौरुषेय हैं। उपरोक्त समस्त ग्रन्थोंको देवतुल्य आदर देना चाहिये। क्योंकि उनसे धर्मबुद्धि उत्पन्न होती है। मूलप्रमाणकी अपेक्षा रहनेपर उन्हें वेदसे विभिन्न समझना उचित नहीं ठहरता। इसलिये उनसे जो ज्ञान निकलता, वह निरपेक्ष रहता और स्वतःसिद्ध प्रमाण माना जाता है। किन्तु यह युक्ति असङ्गत है। क्योंकि बहुकाल बीतनेपर उक्त अनुमान सिद्ध हुआ है। बौधायनसूत्र, आपस्तम्बसूत्र इत्यादि मनुष्योंके नामपर यह ग्रन्थ चलते हैं।

(पु॰-स्त्री॰) आपस्तम्बस्यापत्यम्, अञ्। अनृष्यानन्तर्ये विदादिभ्योऽञ्। पा ४।१।१०४। २ आपस्तम्बका पुत्र वा कन्यारूप अपत्य, आपस्तम्बकी औलाद। (स्त्री॰) आपस्तम्बी।

आपस्तम्बीय (सं॰ वि॰) आपस्तम्बस्येदम्, आपस्तम्ब-छ, आपस्तम्बेन प्रोक्तमधीते वा, अण् वाहु॰ तस्य लुक्। १ आपस्तम्ब-सम्बन्धीय। २ आपस्तम्बका बनाया ग्रन्थ पढ़नेवाला।

आपस्तम्बेय (सं॰ वि॰) आपस्तम्ब्यां भवः, ढक्। आपस्तम्बकी कन्यासे उत्पन्न, जो आपस्तम्बकी लड़कीसे पैदा हो।

आपस्तम्भिनी (सं॰ स्त्री॰) अपां विकारः अण् आपस्तं स्तम्भते निवारयति, आप-स्तम्भ-णिनि-ङीप्। लिङ्गिनी लता।

आपा (हिं॰ पु॰) १ स्वीय भाव, अपना वजूद। २ स्वीय तत्त्व, अपनी बुनियाद। ३ दर्प, गुरूर। मुसलमान बड़ी बहन और महाराष्ट्र बड़े भाईको 'आपा' कहते हैं।

आपाक (सं॰ पु॰) आ समन्तात् पच्यते घटादि अत्र, आ-पच् आधारे घञ्। १ कुम्भकारका आवा, कुंभारका पजावा। भावे घञ्। २ ईषत् पाक। ३ सम्यक् पाक। (अव्य॰) मर्यादार्थे अव्ययी॰। ४ पाक पर्यन्त, पकनेतक।

आपाकेस्थ (वै॰ वि॰) आवेमें खड़ा हुआ।

आपागणेश—गुजरातके प्रधान शासक। सन् १७६१ ई॰को सदाशिव रामचन्द्रके स्थानमें पेशवाकी ओरसे यह गुजरातके प्रधान शासक बनाये गये थे। इन्होंने मोमिन खानके साथ मित्रकी तरह व्यवहार किया और खम्बातपर धावा मार उस वर्षके लिये चौरासी हजार रुपया कर लगाया। पीछे यह डाकोरकी राह अहमदाबाद वापस आये थे।

आपाङ्ग्य (सं॰ क्ली॰) अपाङ्गे नेत्रप्रान्ते देयम्, ञ्य। अपाङ्गदेय अभ्यञ्जन, आंखके किनारे लगनेवाला सुरमा।

आपाण्डु आपण्डुर देखो।

आपाण्डुर (सं॰ वि) ईषत् विवर्ण, जर्दा-मायल, पीला सा।

आपात (सं॰ पु॰) आ सम्यक् पात, पतनम्। १ पतन, पड़ाव जाना, झपट, पहुँच। आ हठात् पात। २ अविवेचनापूर्वक आगमन, बेसोचेसमझे आ पड़नेकी हालत। ३ वर्तमान काल, चलाचला-काल। ४ उपक्रम आरम्भ। ५ समीप आगमन, पासकी पहुँच। आपतति यस्मिन्, आधारे अप्। ६ पतन काल, गिरनेका वक्त। ७ दैवघटना। ८ बला। ९ घटना, सूरत। (त्रि॰) १० आगमनशील झपट पड़नेवाला।

आपाततः (स॰ अव्य॰) आपात तसिल्। अकस्मात् प्रथम आक्रमणपर, शीघ्र, पहली बारमें और एक बातकी बातमें।

आपातलतिका (सं॰ स्त्री॰) वृत्तरत्नाकरोक्त वैतालीय वृत्त विशेष। जिस वृत्तमें नवमसे ऊपर दो गुरुवर्ण लगता और अन्य समस्त वैतालीय जैसा ही रहता, वह आपातलतिका कहाता है। (वृत्तरत्नाकर)

वैतालीय देखो।

आपातिन् (स॰ त्रि॰) आक्रमणकारी अधोगामी, वर्तमान, आ पड़नेवाला वताक, जो वाके हो। (पु॰) आपाती। (स्त्री॰) आपातिनी।

आपाद (स॰ पु॰) १ पारिश्रम आगति, ओहदा।

आपादन (सं॰ क्ली॰) आ पदि णिच्-ल्युट्। १ आपत्ति विपर्यीकरण सम्बन्धमें ज्ञानद्वारा सम्पादनका निषय, रचनुमायी, पहुँचानेकी हालत।

आपादमस्तक (स॰ अव्य॰) आदिसे अन्ततक, बिलकुल, सरसे पैरतक।

आपाधापी (हिं॰ स्त्री॰) १ अप अप कामकी चिन्ता, अपनी अपनी कामकी फिक्र। २ लड़ायी भिड़ायी, मारकाट।

आपान (स॰ क्ली॰) आ सम्यक् पीयते सुरा अत्र आधारे ल्युट्। १ पानभूमि, शराबकी दुकान् जायमें बैठकर शराब पीनेकी जगह। २ भैरवीचक्र, शराब पीनेवालोंका जत्था। 'आपानं पानगोष्ठिका।' (अमर) भावे ल्युट्। ३ मिलित होकर सुरापान, सोहबतको शराबखोरी।

आपानक, आनक देखो।

आपान्तमन्यु (वै॰ त्रि॰) पान करनेसे उत्साह देनेवाला, जो पीनेसे क्रोध बढ़ाता हो। यह शब्द सोमरसका विशेषण है।

आपापन्थी (हिं॰ त्रि॰) १ खोय मार्गका अवलम्बन करनेवाला, जो मनमानी राह पकड़ता हो।

२ सम्प्रदाय विशेष। इस सम्प्रदायको चले सौ वर्षसे अधिक नहीं गुजरा। आपापन्थी एक प्रकारके रामात् होते और साथ ही बाउलोंका कुछ आचार व्यवहार रखते हैं। इनमें मुसलमानी धर्मका गन्ध भी कम गया है। किसी ज्ञानवान् व्यक्तिके प्रथम यह सम्प्रदाय चलानेसे हम कह सकते,—सिवा हिन्दुओं और मुसलमानोंका धर्म मिलानेकी चेष्टाके इसमें दूसरी कोई बात नहीं। आपापन्थियों, सत्नामियों और पल्टूदासियोंका व्यवहार प्राय एक ही तरह रहता है।

सौ वर्षसे कम ही की बात है, कि बङ्गदेशान्तर्गत वीरभूम जिलेके महारपुर ग्राममें मुन्नादास नामक कोई स्वर्णकार रहते थे। अयोध्यासे पश्चिम मालका ग्राममें उनकी गद्दी रही। मुन्नादासके शिष्यका गुरुदास और गुरुदासके शिष्यका नाम भगवानदास था। प्रतिवर्ष अग्रहायण मासके मध्य मालका ग्राममें मेला लगता है। उसी समय गुरुकुण्डमें नहानेको अनेक शिष्य जाते और गद्दीके महन्तको प्रणाम करते हैं।

मुन्नादास किसीके शिष्य न रहे। वह अपने मनको ही गुरु मानते थे। आपापन्थी कहा करते हैं,—

सतगुरुकी खोजमें गये भारी पीर।
आपापन्थी मनकी सिखा होवे ठौर।

इस दोहेके 'मनगुरुपी' शब्दसे आपापन्थी सम्प्रदायके गुरुका खासा परिचय मिलता है। जो अन्य किसी को गुरु नहीं समझता और मनमाना काम करता वही मनगुरुपी होता है। मुन्नादासने प्रथम यही किया था। उन्होंने अपने मनसे उपदेश लेने बाद इस मतको चलाया। किन्तु आजकल आपापन्थियोंको प्रथम राममन्त्र सुनाया जाता है। गद्दीके महन्त

और उदासीन गृहस्थोंके गुरु होते और शिष्योंको मन्त्रदीक्षा देते हैं।

आपापन्थियोंके मध्य गृही एवं उदासीन दो प्रकारके लोग हैं। उदासीन गेरुवा वस्त्रका कुरता, कौपीन और साफा पहनते हैं। किसी-किसीके गलेमें तुलसीकी गुरिया और नाकसे कपालतक ऊर्ध्व पुण्ड्र भी देखते हैं। केश रखनेका नियम विभिन्न है। कोई मत्था मुंडवा डालता और कोई दाढ़ी मूछ फटकारता है। महन्तोंके गलेमें जो ऊर्णामयी माला रहती, वह सेली कहाती है। उन्हें दास या साहब कहते हैं। परस्पर मुलाकात होनेसे 'बन्दगी साहब' बोलकर अभिवादन देना पड़ता है। प्रवाद है,—पहले आपापन्थियोंके शायद किसी प्रकारका सम्प्रदायिक चिह्न न रहा।

उदासीन राममन्त्रके जपसे मनको दृढ बना सकनेपर गायत्री-साधन करते हैं। अपने शुक्रके पीनेका नाम गायत्री-क्रिया है। हाथमें रख मन्त्र-पाठपूर्वक साधक पहले अपने शुक्रसे कपालपर ऊर्ध्व पुण्ड्र देता, फिर नेत्रमें अञ्जनकी तरह किञ्चित् लगा अवशिष्ट पी जाता है। इसका विशेष विवरण सत्नामी शब्दमें देखो।

आपामर (सं॰ अव्य॰) मर्यादार्थे अव्ययी॰। पामर पर्यन्त, ग़रीबतक, सब।

आपायत (हिं॰ वि॰) आप्यायित, आसूदा, छका हुआ।

आपायिन् (सं॰ त्रि॰) आ पिबति, आ-पा-णिनि। सुरापानकर्ता, मद्यपायी, शराबखोर, शराबी, शराब पीनेवाला, जिसे शराब पीनेका शौक़ रहे। (पु॰) आपायी। (स्त्री॰) आपायिनी।

आपालि (सं॰ पु॰) आ-पा भावे क्विप् आप: सम्यक् पानं शोणितादे: तदर्थमलति व्याप्नोति केशान्, अल-इन्। केशकीट, जूं, चिल्लड।

आपि (सं॰ पु॰) आप्-णिच्-इन्। १ धनादि प्रापक, दौलत वग़ैरह मुहैया करनेवाला। आप्यते, आप कर्मणि इन्। २ आप्तबन्धु, रफ़ीक़, साथी।

आपिञ्जर (सं॰ क्ली॰) ईषत् पिञ्जरम्, प्रादि समा॰। १ स्वर्ण, सोना। (पु॰) २ ईषद्रक्तवर्ण, सुर्ख़ी-मायल-रङ्ग। (त्रि॰) ३ आरक्त, सुर्ख़ी-मायल, लाल सा।

आपित्व (वै॰ क्ली॰) बन्धुत्व, सख्यता, इत्तिहाद, उलफ़त, रब्त।

आपिशल (सं॰ त्रि॰) १ आपिशलिसे उत्पन्न होने-वाला। (पु॰) २ आपिशलिका शिष्य। (क्ली॰) आपिशलिना प्रोक्तम्, अण्। ३ आपिशलि-प्रणीत शास्त्र।

आपिशलि (सं॰ पु॰) अपिशलस्य तन्नामक मुनि-भेदस्यापत्यम्, इञ् आद्यचो वृद्धि:। एक आदिशाब्दिक मुनि, एक प्राचीन वैयाकरण।

आपी (सं॰ त्रि॰) आ-पै-क्विप्, पी सम्प्रसारणं दीर्घ:। १ स्थूल, वृद्धियुक्त, मोटा, चढ़ा-बढ़ा। (स्त्री॰) २ पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र। (हिं॰ सर्व॰) ३ स्वयं, खुदबखुद, आपही।

आपीड़ (सं॰ पु॰) आ-पीड़-अच्। १ शिरोभूषण, सेहरा, हार। 'शिखास्वापीडशेखरौ।' (अमर) २ गृहसे बाहर निर्गत काष्ठ, घरसे बाहर निकली हुई लकड़ी, मंगौरी। (त्रि॰) ३ पीड़ा करनेवाला, जो दर्द लाता हो।

आपीडन (सं॰ क्ली॰) १ सङ्कोचन, इनक़िबाज़, दबाव। २ उपगूहन, बग़लगीरी, हमागोशी। ३ व्यथा, तकलीफ़दिही।

आपीडा (सं॰ स्त्री॰) १ छन्दोविशेष। २ सम्यक् पीड़ा, खासा दर्द।

आपीडित (सं॰ त्रि॰) आ-पीड क्त। १ निष्पीडित, दबाया हुआ। २ सम्यक् निबद्ध, मज़बूतीसे बंधा हुआ। ३ हिंसित, नुक़सान पहुंचाया गया। ४ शिरो-भूषण द्वारा अलङ्कृत, सेहरेसे आरास्ता-पैरास्ता।

आपीत (सं॰ क्ली॰) आ ईषत् पीतम्, प्रादि समा॰। १ रौप्यमाक्षिक धातु, रूपामाखी। २ स्वर्णमाक्षिक, सोनामाखी। ३ पद्मकेसर, फूलकी धूल। (पु॰) ४ तूणीवृक्ष, तुनका पेड़। ५ अल्पपीतवर्ण, जर्दी-मायल रङ्ग। (त्रि॰) ६ अल्पपीतवर्णयुक्त, जर्दी-मायल, पीलासा। ७ अल्प पान किया हुआ, जो थोड़ा पीया गया हो।

आपीन (सं० क्ली०) आ-प्याय क्त, पी आदेश तत्वारस्याभे नत्वाद। ... १ ऊधस् थायन, बाख। २ सुवर्णमुखी, सोनामुखी। (पु०) ३ कूप, कुआं।

आपीनवत् (सं० त्रि०) अभिवृद्धियायक। 'आपीनवन्तमिति ... ' (ऐतरेय-ब्राह्मण ...)

आपु, आप देखो।

आपुन, अपना देखो।

आपुप, आपूप देखो।

आपुस, आपस देखो।

आपूप (सं० पु०) १ पिष्टक पकाये टिकिया, रोटी। २ आपूपलक्षमात्र, पानीका जानवर।

आपूपिक (सं० त्रि०) अपूप शिल्पमस्य, ठक्। १ अच्छी रोटी बनानेवाला। अपूपे अपूपभक्षणे साधु ठक्। ... २ रोटीके साथ खाया जानेवाला। अपूपो भक्षितस्य, भक्षितत्वात् ठक्। ... ३ अपूपभक्त, रोटीको पसन्द करनेवाला। अपूप पण्यमस्य। ४ अपूप विक्रेता, रोटी बेचनेवाला। अपूपप्रस्तुत भीक्षमस्य। ५ अपूपभक्षणशील, रोटी खानेवाला। अपूपप्रस्तुत वितमस्य। ६ रोटी खानेसे फायदा उठानेवाला। (क्ली०) अपूपानां समूह। ७ अपूपसमूह, रोटीका ढेर। (पु०) ८ कान्दविक नामवायी। ९ मयधार, मुरब्बासाज हलवाई।

आपूप्य (सं० पु०) अपूपाय साधु, यत् वा ष्यञ्। चूर्ण, पिष्ट, आटा, पिसान मैदा।

आपूर (सं० पु०) आपूर्यते अनेन, आ-पूर करणे घञ्। १ जलादिका प्रवाह, पानी वगैरहकी रविश। भावे घञ्। २ सम्यक् पूरण, खासा भराव। ३ अच्छा पूरण इसका भराव। ४ अभिप्राप्ति, हस्तिगत। (त्रि०) ५ प्राप्त होनेवाला मामूर या भरा हुआ।

आपूरण (सं० क्ली०) आ पूर भावे ल्युट्। १ सम्यक् पूरण, खासा भराव। (पु०) २ किसी नागका नाम। (त्रि०) ३ प्राप्त होनेवाला, जो मामूर या भरा हो।

आपूरना (हिं० क्रि०) आपूरण करना, भर देना।

आपूरित (सं० त्रि०) आ-पूर-क्त इट्। परिपूर्ण, भरा हुआ।

आपूर्ति (सं० स्त्री०) आ पूर क्तिन्। १ ईषत् पूरण, हलकी भरायी। २ सम्यक् पूरण, खासी भरायी।

आपूर्य (सं० अव्य०) पूरण करके, भरकर, भराकर।

आपूर्यमाण (सं० त्रि०) आ पूर कर्मणि शानच्। १ सम्यक्पूर्यमाण, अच्छी तरह भरा जानेवाला। (पु०) २ शुक्लपक्ष।

आपूर्यमाणपक्ष (सं० पु०) शुक्लपक्ष, उजला पाख। चन्द्रके आपूरित रहनेसे शुक्लपक्षका यह नाम पड़ा है।

आपूष (सं० स्त्री०) आपूषति शरीरमनेन, आ पूष करणे घञ्। शरीरको पुष्ट (मज़ब्त) करनेवाला रांगा।

आपृच्छ, आपच्छ देखो।

आपृच् (सं० त्रि०) आ पृच् क्विप्। १ संसर्गयुक्त, लगा हुआ। (अव्य०) २ सहुत, लगातार।

आपृच्छा (सं० स्त्री०) आ प्रच्छ भावे अङ् सम्प्रसारणं टाप्। १ प्रश्न, पूछताछ सवाल। २ आलाप, आमालाप, बातचीत। ३ यातावातमें समयका शुभ प्रश्न विदा विदायी।

आपृच्छ्य (सं० त्रि०) आ प्रच्छ वेदे नियातनात् क्यप्। ... १ जिज्ञास्य, पूछा जाने काबिल। २ श्लाघ्य, काबिल-तारीफ़। (अव्य०) आ-प्रच्छ ल्यप्। ३ जिज्ञासापूर्वक, पूछकर।

आपेक्षिक (सं० त्रि०) अपेक्षातः आगतम्, ठञ्। तुलना द्वारा प्राप्त अन्यको तुलनामें निर्धारित होने वाला जो दरम्यार रखता हो। (स्त्री०) आपेक्षिकी।

आपोक्लिम (सं० क्ली०) ज्योतिषोक्त जन्मलग्नसे तृतीय, षष्ठ, नवम एवं द्वादश स्थान।

आपोमय (सं० त्रि०) आपस् विकारे प्राचुर्ये वा मयट्। १ जलरूप, पानीसे मिल जानेवाला। २ जल प्रचुर, पानीसे भरा हुआ।

आपोमात्रा (सं० स्त्री०) अतिसूक्ष्म मौलिक जलका भाग, रबीक् रतूबतदायी पानीका माद्दा।

आपोमूर्ति (सं० पु०) स्वारोचिष मनुके एक पुत्र।

दशम मन्वन्तरके सात ऋषिमें यह भी एक रहे। हरिवंशके ६ठें और ७वें अध्यायमें विस्तृत विवरण लिखा है।

आपोऽशान (सं० क्ली०) अश व्याप्तौ-भावे बाहु० शानच्, आपसा जलेन अशानम्, ३-तत्। जल द्वारा ऊपर और नीचे आस्तरण-रूप अनाच्छादनकर्म। इसका मन्त्र भोजनसे पहले और पीछे पढ़ा जाता है।

आप्त (सं० त्रि०) आप्-क्त। १ प्राप्त, पाया या हासिल किया हुआ। २ विश्वस्त, एतबारी। तपो ज्ञानके बल जो रजस्तमसे निर्मुक्त रहते और त्रिकाल-को अपनी बुद्धिसे अमल रखते, वह विबुध आप्त एवं शिष्ट होते तथा संशयरहित वाक्य बोलते हैं। ३ युक्तियुक्त, ठीक। ४ कुशल, लायक। ५ सम्पूर्ण, पूरा। ६ सम्बन्धी, दिली, रिश्तादार। ७ सत्य, सच्चा। ८ सम, बराबर। ९ विस्तीर्ण, फैला हुआ। १० नियुक्त, रखा हुआ। ११ व्यवहृत, आम तौरपर इस्तेमाल किया जानेवाला। १२ अकृत्रिम, असली। १३ अभियुक्त, मुजरिम।

(पु०) १४ स्वनामख्यात नागराज। १५ भ्रम-प्रमादरहित ज्ञानयुक्त ऋषि। १६ योग्य पुरुष, लायक आदमी। १७ मित्र, दोस्त। १८ अर्हत् विशेष। १९ शब्दप्रमाण। (क्ली०) २० लब्धि, हासिल, किस्मत। २१ अंशसाम्य, मसावात-मिकदार।

आप्तकाम (सं० त्रि०) आप्तः प्राप्तः कामो येन, बहुव्री०। १ तृप्त, तुष्ट, राजी, जो अपनी मुराद पा चुका हो। २ ब्रह्म एवं आत्माको अभिन्न समझनेवाला।

आप्तकारिन् (सं० त्रि०) आप्तं युक्तं करोति, आप्त-कृ-णिनि, ६-तत्। १ युक्तकारक, वाजिब तौरपर इन्तजाम करनेवाला। (स्त्री०) आप्तकारिणी।

आप्तकारी (सं० पु०) आप्तश्चासौ कारी चेति, कर्मधा०। विश्वस्त भृत्य प्रभृति, एतबारी नौकर वगैरह।

आप्तगर्भा (सं० स्त्री०) आप्तः प्राप्तः गर्भो यया, बहुव्री०। गर्भिणी स्त्री, हामिला औरत।

आप्तगर्व (सं० त्रि०) आप्तो गर्वः येन बहुव्री०। दृप्त, मुतकब्बिर, घमण्डी।

आप्तदक्षिण (सं० त्रि०) आप्ता दक्षिणा येन बहुव्री०। दक्षिणा पाये हुआ, जो नजराना ले चुका हो।

आप्तवचन (सं० क्ली०) आप्तसूत्र, श्रुतिप्रकाश, हासिल किया हुआ अस्त्र, इलहाम।

आप्तवज्रसूचि (सं० स्त्री०) उपनिषत् विशेष।

आप्तवाक् (सं० पु०) विश्वस्त साक्ष्य देनेवाला, जो ठीक बात कहता हो।

आप्तवाक्य (सं० क्ली०) अभ्रान्त वचन, दुरुस्त कलाम।

आप्तवाच् (सं० स्त्री०) आप्ता युक्ता भ्रमप्रमादादि दोषरहिता वाक्, कर्मधा०। १ वेद। २ वेदमूलक स्मृति इतिहास पुराणादि। ३ विश्वस्त व्यक्तिका साक्ष्य, एतबारी शख्सकी बात। (त्रि०) आप्ता युक्ता वाग् यस्य, बहुव्री०। ४ भ्रमप्रमादादि वाक्य-रहित, ठीक बात बोलनेवाला।

आप्तव्य (सं० त्रि०) प्राप्त किया जानेवाला, जो हासिल किये जाने काबिल हो।

आप्तश्रुति (सं० स्त्री०) आप्ता चासौ श्रुतिश्चेति, कर्मधा०, पूर्वपदस्य पुंवद्भावः। १ वेद। (त्रि०) २ वेद-सम्बन्धीय। इस अर्थमें यह शब्द स्मृतिपुराणादिका विशेषण है।

आप्ता (सं० स्त्री०) जटा, उलझे हुये बालोंका गुच्छा।

आप्ति (सं० स्त्री०) आप्-क्तिन्। १ प्राप्ति, आमद। २ संयोग, रिश्ता। ३ स्त्रीसंयोग, मुवाशरत। 'आप्ति स्त्रीसंयोग प्राप्तोः।' (मेदिनी) ४ सम्बन्ध, ताल्लुक। ५ लाभ, फायदा। 'प्राप्तिः सम्बन्धलाभयो।' (हेम) ६ समाप्ति, खातिमा। ७ सम्पद्, दौलत। ८ हित, भलाई।

आप्तोक्ति (सं० स्त्री०) १ आगम, वृद्धि, लफ्जकी आखिर अलामत। २ स्वीकृत एवं केवल व्यवहार द्वारा प्रतिष्ठित वाक्य, मश्हूर और चलनसे ही कायम की हुई लफ्ज।

आप्तोर्याम (सं० क्ली०) याग विशेष। यह ब्रह्माके उत्तर-मुखसे उत्पन्न हुआ था।

आपत्य (सं० त्रि०) आप्-तव्य वेदे त्वयो० साधुः।-

३ प्राप्य, मिलनेयोग्य। (पु०) ४ देव श्रेणीविशेष। आप्य देवता जिनके समान होते हैं।

आप्रवान (सं० पु०) अप्नवान एव, स्वार्थे अण्। भृगुगोत्रप्रवर ऋषि विशेष।

आप्य (सं० त्रि०) अपामिदम्, अप् बहु० स्वार्थे ष्यञ्। १ जलसम्बन्धीय, आबसे ताल्लुक रखनेवाला। २ जलीय, आबी, पनीला। ३ जलमय, पानी रखनेवाला। ४ जलमें निवास करनेवाला, जो पानीमें रहता हो। आप-यत्। ५ प्राप्य, हासिल किये जाने काबिल। (स्त्री०) ६ कुटौषधि, कूट। (क्ली०) ७ सम्मान, अदद पैमाना। (पु०) ८ चाक्षुषमन्वन्तरीय देव विशेष। चाक्षुष-मनुके समय आप्य प्रभूत, ऋभव, पृथुक और लेख नामक पांच देवता रहे। (हरिवंश) ९ वैदोक्त एक वीरपुरुष। इनके सन्तानका नाम त्रित रहा। इन्होंने अश्वमेधसे युद्ध किया और तीन मस्तक तथा सात बाहुविशिष्ट असुर मार पशुओंको बचा लिया था।

आप्यान (सं० क्ली०) आ-प्याय भावे क्त। १ प्रीति, आसूदगी। २ वृद्धि, बढ़ती। (त्रि०) कर्तरि क्त। ३ प्रीत, आसूदा। ४ वृद्ध, बढ़ा हुआ।

आप्याय (सं० पु०) सम्पूर्ण वा स्थूल होनेका भाव, भर जाने या मोटे पड़नेकी हालत।

आप्यायक (सं० त्रि०) तृप्तिकारक, आसूदा करनेवाला।

आप्यायन (सं० क्ली०) आ-प्याय ल्युट्। १ वृद्धि, बढ़ती। २ प्रीति, आसूदगी। ३ तृप्त करनेका भाव, आसूदा बनानेकी हालत। ४ वृद्धि पानेका भाव, बढ़ जानेकी हालत। ५ अग्रगमन, अगवानी। ६ उत्तम अवस्था उत्पन्न करनेवाला द्रव्य, जिस चीज़से अच्छी हालत आवे। ७ बलकारक औषध, ताकतवर दवा। ८ मोटापा। ९ दीक्षाविषय मन्त्रका संस्कारविशेष। शिष्यको मन्त्रदीक्षा देते समय जनन, जीवन, ताड़न, बोधन, अभिषेक, विमलीकरण, आप्यायन, तर्पण, दीपन और गोपन दश प्रकार संस्कार होता है। मन्त्रके प्रत्येक वर्णको भी, दश वा सात बार 'ह्रीं' कहके प्रोक्षण करनेका नाम आप्यायन संस्कार है।

आप्यायनयोग्य (सं० त्रि०) तृप्त करनेवाला, जो ताक़त रखता हो।

आप्यायित (सं० त्रि०) आ-प्याय णिच् क्त-कर्मणि, णिच् लोप। १ प्रीणित, रज़ामन्द। २ पूरित, भरा हुआ। ३ वर्धित, बढ़ा हुआ। ४ आनन्दित, खुश।

आप्र (वै० त्रि०) आ प्र-क। १ पूरक, पूरा कर देनेवाला। २ कार्यरत, उद्युक्त, मशगूल, कोशिशमन्द। ३ पहुंचने योग्य, जो पहुंच जाता हो।

आप्रच्छन (सं० क्ली०) आ प्रच्छ-ल्युट्। १ गमना गमनके समय बन्धुगणका कुशलप्रश्न, आगत-स्वागत, विदाविदाकी मुलाकातोंमें मिलने या छूटने वक्त खैरियतकी पूछताछ।

आप्रच्छन्न (सं० त्रि०) आ-प्र-छद्-क्त, तकारस्य नकार। १ अत्यन्त गुप्त, निहायत पोशीदा। २ ईषद्-गुप्त, कुछ पोशीदा।

आप्रतिनिवृत्त (सं० त्रि०) निवारित, रोका या पीछे फेरा हुआ।

आप्रतिदिवं (वै० अव्य०) सर्वदा, दिन ब दिन, हमेशा।

आप्रपद (सं० अव्य०) प्रपदं पादाग्रं तत् पर्यन्तम् मर्यादायां अव्ययी०। १ पादाग्र पर्यन्त, पैरके सिरेतक। (स्त्री०) २ पादाग्र पर्यन्त पहुंचनेवाला परिच्छद, पैरकी उंगलियोंतक लटकनेवाली पोशाक।

आप्रपदीन (सं० त्रि०) आप्रपदं पादाग्रपर्यन्तं व्याप्नोति, ख। आप्रपदं प्राप्नोति। पा ५।२।८। वस्त्रादि पादाग्रपर्यन्त लम्बमान, सरसे पैरके सिरेतक फैला हुआ। यह शब्द वस्त्रादिका विशेषण है।

आप्रपदीना (सं० स्त्री०) वस्त्रादि पादाग्र पर्यन्त लम्बमान वस्त्र, सरसे पैरके सिरेतक फैली हुई पोशाक वगैरह।

आप्रवण (सं० त्रि०) ईषत् प्रवणम्। अल्प नम्र, कुछ कुछ झुका हुआ। (क्ली०) आ-प्र-ल्युट्। २ ईषत् द्रवण, थोड़ा बहाव। ३ अल्प क्षरण, कमज़ोर टपक।

आप्रावृष (सं० अव्य०) वर्षा ऋतु यावत्, मौसिमे बरसात तक।

आमी (वै० स्त्री०) आमीवात्कनयत्, आ-मीव मोरु-

आफ़ताबपरस्ती (फ़ा॰ स्त्री॰) सूर्योपासना, सूरजकी पूजा।

आफ़ताबा (फ़ा॰ पु॰) पात्रविशेष, किसी किस्मका गड़ुवा। इसकी पीठपर पकड़नेकी मूठ और मुंहपर मूंदनेको ढकन लगाते हैं। हाथ-मुंह धुलानेमें इससे पानी छोड़नेपर बड़ा सुभीता रहता है।

आफ़ताबी (फ़ा॰ वि॰) १ आफ़ताबसे तालुक रखनेवाला, सौर। २ छत्राकार, गोल। (स्त्री॰) ३ किसी किस्मको आतशबाजी। ४ बीजन विशेष, किसी किस्मकी पड्डी, छतरी। यह ताम्बूलवत् वर्तुल कारचोबीसे बनती और काठयष्टिकाके अवलम्बपर लगती है। बीचमें आफ़ताबकी भांति बड़ी रश्मिसे भी बने आफ़ताबी बड़ी और सवारी शिकारी या बरात वगैरहमें दिखानेके लिये नोकर आगे लेकर निकलते हैं। ५ बोसारो, आड़। आतप निवारणके लिये इसे द्वारके ऊपर लगा देते हैं। ६ एक गुलकन्द। यह धूपमें तैयार होती है। ७ गुलदस्ती ढाल। यह कछुवेकी पीठसे बनती है।

आफ़तोदयकर्म (सं॰ त्रि॰) फलोदयपर्यन्त कर्म करनेवाला, बहुव्री॰। फल न मिलनेतक काम करनेवाला, जो मुराद पूरी न होनेतक काम करता हो।

आफ़िज़ (सं॰ क्ली॰) अफ़ीम देखो।

आफ़ियत (अ॰ स्त्री॰) क्षेम कुशल, ख़ैरियत। यह प्रायः ख़ैर शब्दके साथ व्यवहृत होता है, जैसे—ख़ैर व आफ़ियत।

आफ़िस (अं॰ क्ली॰—Office) दफ़्तर, कचहरी कर्मस्थान, कारख़ाना।

आफ़ीन (सं॰ क्ली॰) अफ़ीम देखो।

आफुक (सं॰ क्ली॰) अफ़ीम देखो।

आफ़ू (हिं॰ स्त्री॰) अफ़ीम देखो।

आफ़ूक (सं॰ क्ली॰) अफ़ीम देखो।

आब (फ़ा॰ पु॰) १ अप्, पानी। (स्त्री॰) २ रत्नकी प्रभा, हीरादिकी चमक, जवाहरकी झलक, फ़ौलाद वगैरहकी चमकन। ३ द्युति, नूर, चमक। ४ इज़्ज़त, सम्मान, मान-सम्मान। किसी कविने दर्पणके उपमानसे निम्नलिखित प्रहेलिका कही है,—

> "एक नार पीयाको प्यारी।
> जब नारी बरसे क्यों प्यारी॥
> नार रहे नर रहे अंग।
> देखा रहे फिरे अंग॥"

आबकार (फ़ा॰ पु॰) शराब बनानेवाला, कलवार, मद्यप्रस्तुतकर्ता, कलाल।

आबकारी (फ़ा॰ स्त्री॰) १ शराब बनानेका काम। २ भट्ठा, मैख़ाना, हौली, भट्ठी, शराब तैयार होनेकी जगह। ३ शराबको चुंगी, सुराका राजस्व।

आबख़ोरा (फ़ा॰ पु॰) जलपात्र, मटकैना।

आबख़ोरे भरना (हिं॰ क्रि॰) दूध या शरबतसे आबख़ोरे भर कर किसी देवता पर चढ़ाना, बच्चोंको दूध या शरबत पिलाना।

आबगीना (फ़ा॰ पु॰) १ स्फटिकका जलपात्र, शीशेका आबख़ोरा। २ दर्पण, शीशा। ३ हीरक, हीरा।

आबगीर (फ़ा॰ पु॰) पानी झाड़नेका कूंचा। इसे जुलाहे अपने काम लाते हैं।

आबजारी (फ़ा॰ पु॰) १ बहता पानी, नदी, नाला। २ बहते या बसते हुये आंसू।

आबजोश (फ़ा॰ पु॰) १ किसी किस्मका मुनक्का या दाख। २ शोरबा, यख, उबाले हुये गोश्तका जल। उष्ण जलमें मांस पकानेसे यह बनता है।

आबताब (फ़ा॰ स्त्री॰) १ प्रभा, चमकदमक। २ सजावट बढ़ाई।

आबताबा (फ़ा॰ पु॰) गड़ुवा। आफ़ताबा देखो।

आबदस्त (फ़ा॰ पु॰) १ पुरीषत्यागके उपरान्त अपान प्रक्षालन, पाख़ाने होनेके पीछे मिट्टीकी सफ़ाई। २ अपानके प्रक्षालनका जल, निबृत्त होनेका पानी। कहते हैं, उष्ण जलसे कभी आबदस्त न लेना चाहिये। इसके लिये शीतल जल उपयुक्त होता है। फिर दस्त आवे या न आवे, आबदस्त लेनेसे भी शरीरको बड़ा लाभ पहुंचता है।

आबदस्त लेना (हिं॰ क्रि॰) निबृत्त होना, अपान प्रक्षालन करना, धोवना।

आबदाना (फ़ा॰ पु॰) १ अन्नजल, दाना पानी,

खुराक। २ भाग्य, क़िस्मत। ३ व्यापार, रोज़गार, कामकाज।

आवदार (फ़ा० वि०) १ परिष्कृत, सुजला, मांझा हुआ। २ श्वेत, शुद्ध, साफ़। (पु०) ३ कहार, पानीकी देखरेख रखनेवाला नौकर।

आवदारख़ाना (फ़ा० पु०) पानीय जल रखनेका स्थान, परण्डा, जिस जगहपे पीनेका पानी रहे।

आवदारी (फ़ा० स्त्री०) आबदारका काम। इस अर्थमें यह शब्द प्रायः व्यवहृत नहीं होता। २ कान्ति, चमक। ३ शुक्लता, सफ़ेदी, सफ़ायी।

आवदीदा (फ़ा० वि०) नेत्रमें जल भरे हुआ, रोनेवाला।

आवदीदा होना (हिं० क्रि०) नेत्रमें अश्रु भर लेना, आंखें डबडवाना।

आवद्ध (सं० क्लो०) आ सम्यक् बद्धम्, आ-बन्ध भावे क्त। १ दृढबन्धन, मजबूत गांठ। २ प्रेम, स्नेह, मुहब्बत, प्यार। ३ अलङ्कार, ज़ेवर, गहना। (त्रि०) कर्मणि क्त। ४ बद्ध, प्राप्त, प्रतिरुद्ध, बंधा, मिला या रुका हुआ।

'आवद्धो दृढबन्धे स्यात् प्रे माल्ङ्कारयोरपि।' (मेदिनी)

आवध (सं० पु०) बन्धन, बांध, जकड़।

आवनाय (फ़ा० पु०) समुद्रसङ्कट, नाका।

आव-नुक़रा (फ़ा० पु०) १ चांदीका पानी। २ पारा।

आव-नज़ूल (फ़ा० पु०) एक बीमारी। इससे अण्डकोष फूल जाता और पीड़ा देने लगता है।

आवनमक (फ़ा० पु०) १ जल एवं लवणका औचित्य, पानी और नमककी काफ़ी मिक़दार। २ व्यञ्जन, मसाला। ३ आस्वादन, ज़ायका। ४ अवष्टम्भ, सहारा।

आवनूस (फ़ा० पु०) कोविदार, तेंदू। यह वृक्ष लङ्का एवं दक्षिण भारतमें उत्पन्न होता और कहीं कहीं हिन्दूस्थानमें भी देख पडता है। अतिशय पुरातन होनेपर इसका काष्ठ श्यामवर्ण और भारवान् निकलता है। आवनूससे कितने ही प्रदर्शनीय वस्तु सन्दूक़, क़लमदान, छड़ी, दीवारगीर वग़ैरह प्रस्तुत होते हैं।

आवनूसका कुन्दा (फ़ा० वि०) श्यामवर्ण, काला, बदशक्ल। (पु०) २ हबशी। ३ काला-काला आदमी।

आवनूसी (फ़ा० वि०) १ आवनूससे बना हुआ। २ आवनूसके रङ्गका, श्यामवर्ण, काला।

आवन्ध (सं० पु०) १ ग्रन्थि, गांठ। २ युग वा लाङ्गलकी ग्रन्थि, जुवे या हलकी गांठ। यही बैलको जूवे या हलमें अटका रखता है।

आवन्धन (सं० क्लो०) गांठ लगानेका काम, बांध।

आवपाशी (फ़ा० स्त्री०) अभ्युक्षण, सिंचाई, खेत पटानेका काम।

आव-रवां (फ़ा० पु०) १ बहता पानी, नदी, नाला। २ चलते हुये आंसू। ३ सूक्ष्मवस्त्र विशेष, किसी क़िस्मका निहायत उम्दा मल-मल।

आवरू (फ़ा० स्त्री०) आव-रु। १ आदर, इज़्ज़त, बडप्पन। "आबरू जाती रहे तो जान जाना पाप है।" (लोकोक्ति) २ पद, दरजा। ३ आभास, दिखावा। ४ अभिमान, घमण्ड।

आवरूरेज़ी (फ़ा० स्त्री०) आदरका नाश, बडप्पनका बिगाड।

आवर्ह (सं० पु०) आवृह्यते उत्पाट्यते, आ-वर्ह-घञ्। १ उत्पाटन, उखाड। २ हिंसा, मारकाट। (त्रि०) ३ उत्पाटक, उखाड डालनेवाला।

आवर्हण (सं० क्लो०) आ-वर्ह-ल्युट्। उत्पाटन-कार्य, उखाड डालनेका काम।

आवर्हिन् (सं० त्रि०) आवर्होऽस्त्यस्य, इनि। उत्पाटनयुक्त, उखडने क़ाबिल।

आवला (फ़ा० पु०) व्रण, फोला, छाला, फफोला।

आवलाफरङ्ग (फ़ा० पु०) युरोपीय पिटिका, उपदंश, आतश। आतश देखो।

आवल्य (सं० क्लो०) निर्बलता, कमज़ोरी।

आवशिनास (फ़ा० पु०) जलपरीक्षक, पानी पहचाननेवाला। जहाज़का जो कर्मचारी पानीकी गहराई नापकर राह बताता, वह आवशिनास कहलाता है।

आवशोर (फ़ा० पु०) समुद्रजल, खारा पानी।

आवाध (सं॰ पु॰) आ-बाध-घञ्। आबाधेच। पा ६।३।८। १ पीड़ा, दर्द। 'आबाधे पीड़ायाम्।' (सिद्धान्तकौमुदी) २ आक्रमण, धावा। (वि॰) नास्ति बाधा यस्य, बहुव्री॰। ३ पीडाशून्य, बेदर्द। ४ विषम त्रिभुज क्षेत्रकी मध्यस्थित लम्बरेखाके उभय पार्श्वपर पड़नेवाला।

आवाधा (सं॰ स्त्री॰) आ-बाध भावे अ, नित्य स्त्रीत्वात् टाप्। १ पीडा, दर्द। आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक तीन प्रकारकी तापको आवाधा कहते हैं। २ त्रिभुजके आधारका खण्ड, क़िता-क़ायदा-मुसल्लस।

आवाल्य (सं॰ क्ली॰) शैशवके सङ्ग समाप्त होनेवाली अवस्था, जो उम्र बचपनके साथ ख़तम हो।

आवि (सं॰ पु॰) असुर विशेष, एक राक्षस। यह अन्धक दैत्यका पुत्र रहा। महादेवके अन्धकको मार डालनेसे आवि मनमें अत्यन्त क्रुद्ध हुआ था। यह सोचने लगा, पिताके शत्रुको कैसे मारें। परिशेषमें ब्रह्माको तुष्ट बना इसने अपने रूपमें अन्यथा न होनेपर सदा जीवित रहनेका वर मांग लिया।

महादेवने उमाको व्याह जब मन्दर पर्वतपर वास किया, तब पार्वतीका रूप काला था। शिवने किसी दिन परिहासमें उमाको कृष्णवर्णा कहकर पुकारा। पार्वतीको उससे बड़ी लज्जा आई थी। वह गौरवर्ण बननेको हिमालयके उपकण्ठस्थ अरण्यमें जा घुसीं। चलते समय नन्दीसे कह गयी थीं,—'देखो! जबतक हम वापस न आयें, तबतक अन्य नारी यहां फटकने न पायें।'

पार्वती चलती बनीं। आवि दैत्य बहुकालसे सुयोग ढूंढ़ता था। किसी दिन अवसर देख भुजङ्ग-वेशसे महादेवके घरमें घुस पड़ा। नन्दी द्वारके रक्षक रहे। उन्होंने भुजङ्गको शिवका अङ्गभूषण समझ कुछ कहा न था। घरमें उमाकी मूर्ति बना असुर महादेवको मारने लगा। किन्तु ब्रह्माने कह दी दिया था,—रूप बदलनेसे आवि मरेगा। इसीसे महादेवने अनायास इसे ठिकाने बैठा दिया। (पद्मपुराण)

आवियार—दाक्षिणात्य प्रदेशकी एक विद्यावती महिला। भूतत्त्व और चिकित्सा शास्त्रमें इन्हें विलक्षण व्युत्पत्ति रही। अनेकको विश्वास था, कि ब्रह्माकी पत्नीने शापभ्रष्ट हो पृथिवीपर अवतार लिया। इनका रचित नीतिशास्त्र तामिल विद्यालयमें पढ़ाया जाता है।

आविल (सं॰ वि॰) आ-विल भेदने क। १ अस्वच्छ, कलुष गन्दा जो साफ़ न हो। 'नद्यपामविलामम्भि। (निरुक्त १।१५) चलित कथामें विठादिसे परिपूर्ण स्थानका नाम आविल है। २ भटक, तोड डालनेवाला। (वै॰ अव्य॰) ३ छिद्रपर्यन्त, छेदतक।

आविलकन्द (सं॰ पु॰) आविलो भूमेराभेदकः कन्दो मूलमस्य, बहुव्री॰। लताविशेष, एक बेल।

आबी (फ़ा॰ वि॰) १ जलसम्बन्धीय, पानीसे तालुक़ रखनेवाला। २ वारिज, पानीसे पैदा होनेवाला। ३ जलचर, पानीमें रहनेवाला। ४ सिक्त, सींचा हुआ। ५ नीलवर्ण, नीला। (पु॰) ६ सांभर। यह लवण समुद्रका जल आतपसे शुष्क होनेपर बनता है। ७ पक्षी विशेष, एक चिड़िया। यह जलके समीप रहता है। पैर और मिनक़ार हरा होता है। ऊपरका भूरा और नीचेका पर सफ़ेद है। ८ अङ्कुर। (स्त्री॰) ९ सिक्तभूमि, सींचकी ज़मीन्।

आबीबोड़ा (हिं॰ पु॰) करियाट, दरियायी घोड़ा।

आबी बनाना (हिं॰ क्रि॰) चमकाना, रङ्ग चढ़ाना। दूध, पानी और लाजवर्दके रङ्गमें वस्त्र भिगाना तथा चमकाना आबी बनाना कहाता है।

आबीरोटी (हिं॰ स्त्री॰) पानीके हाथकी रोटी, पानी लगा-लगाकर बननेवाली चपाती।

आवुत्त (सं॰ पु॰) आपनम् आप-क्विप्, आपे प्राप्तिं उत्तास्यति, उद्-तस-ड। भगिनी-पति, बहनोयी। 'भा समाक् बुध्यते भावुत्तो मार्षोतितः सर्गोपाहि।' (भरत) 'भावुत्तो-ऽत्नुपन्न।' (रघुनाथ) यह शब्द नाट्योक्तिमें आता और वकारसे भी अनेक स्थलमें लिखा जाता है।

आबू (हिं॰ पु॰) अर्बुद पर्वत, राजपूताने सिरोही राज्यके अरावली पहाड़की चोटी। यह अक्षा॰ २४° ३५′ ३७″ उ॰ और द्राघि॰ ७२° ४५′ १६″ पू॰पर अवस्थित है। अरावली पर्वतका शृङ्ग होते भी आबू उससे कोई सम्बन्ध नहीं रखता। चारो ओर जो

मन्दिरकी शिलापर लिखा है,—"वशिष्ठ मुनि हिमालयमें तपस्या करते थे। बहुकाल कठोर तपस्या करने बाद वह सिद्ध हुये और वहांसे चलते समय ब्रह्माकी अनुमतिसे हिमालयका एक शृङ्ग उखाड लाये। वही यह आबू पर्वत है।" वस्तुपालके मन्दिरमें लिखा, अर्बुदशेखर गौरीपतिके श्वशुरका पुत्र और शशिभृत् गङ्गाधरका श्यालक है। उपरोक्त लेखमें भी आबू हिमालयका अंश बताया गया है।

अर्बुद पर्वतमें अग्निकुल राजपूतवंश उत्पन्न हुआ था। इसी वंशका अपर नाम परमार है। 'पर'का शत्रु और 'मार'का अर्थ नाशक है। पहले दैत्य वेदध्वंस करते थे। दैत्योंको मारनेके लिये वशिष्ठने यज्ञ आरम्भ किया। उसी यज्ञकुण्डसे कोई महावीर निकले थे। उन्होंने दैत्योंको मार डाला, जिससे उनका नाम परमार पडा।

अर्बुदाचल जैनसम्प्रदायका एक प्रधान तीर्थ है। यहां बहु दूरदेशसे धार्मिक जैन तीर्थ दर्शन करनेको आते हैं। आबूके मन्दिरादिमें जो विवरण लिखा, उसमें एक कौतुक देख पडा है। जैनोंने भी अनेक स्थलमें शिव और भगवतीका नाम ले मङ्गलाचरण किया है। इसीसे जान पड़ा, कि उस समय हिन्दू धर्मके साथ जैन मतका सामञ्जस्य बढ गया था। आबूपर अनेक शिवालय और विष्णुमन्दिर भी रहे। किन्तु इस समय उनमें कितने ही टूट-फूट गये हैं। पहले अचलेश्वर नामक शिवालयमें अघोरपन्थी रहते थे।

आबूपर कुल पांच मन्दिर बने हैं। उनमें एक ऋषभनाथका है। वह जैनोंके चौवीस तीर्थङ्करमें प्रथम रहे। अपने मन्दिरमें आप चतुर्मूर्तिसे मिले बैठे हैं। मन्दिर तितल्ला है। पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण चार द्वार लगे हैं। मन्दिरसे पश्चिम ओर चार और तीन दिक् एक-एक मण्डप है। प्रत्येक मण्डपमें आठ खम्भे खडे हैं। ऋषभनाथके उत्तर दूसरे बड़े मन्दिरमें बाच्छा शाहका मण्डप है। फिर दक्षिण-पूर्व दिक् आदीश्वर एवं गौरचलाच्छनका मन्दिर लगा है। ऋषभनाथसे पश्चिम आदिनाथ और उत्तर नेमीनाथका मन्दिर है। उपरोक्त दोनो मन्दिर साफ सफेद पत्थरके बने हैं। खम्भे, छत और मण्डपके भीतरकी-खोदायीका काम बहुत अच्छा है। संवत् १०८८ को किसी सेठने आदिनाथका मन्दिर बनवाया था। पीछे संवत् १३७८के ज्येष्ठमासकी शुक्ला नवमीको उसकी मरम्मत हुई। आदिनाथके मन्दिरकी चारो ओर ५५ प्रकोष्ठ वेष्टित हैं। प्रत्येक प्रकोष्ठमें एक-एक तीर्थङ्करकी पाषाणमयी मूर्ति पैरपर पैर चढा योगासनसे बैठी है। उत्तर-पश्चिम दिक्के किसी प्रकोष्ठमें अम्बाजीकी प्रतिमूर्ति है। द्वारके सम्मुख पत्थरके नौ हाथी खडे है। अङ्ग-प्रत्यङ्ग ऐसी सफायीसे बना, कि नकली कहा जा नहीं सकता। शरीरमें केवल जीवन और चलत्शक्तिका अभाव है। हाथियोंपर रत्नभूषित हौदे रखे, सम्मुख महावत और पीछे विमलशाह सेठ बैठे हैं। दूसरी जगह द्वारपर विमलशाह देवताके दर्शन करनेको हाथीसे उतरे हैं। जगत्में ऐसी जीवन्त प्रतिमूर्ति और कहीं नहीं देखते।

सवत् १२८७ एवं १२९३ को वास्तुपाल तथा तेजोपालने नेमीनाथका मन्दिर निर्माण-कराया था। यह दोनो सहोदर रहे। अनहिलपत्तनमें इनका वासस्थान था। गुजराती राजा वीरधवलके समय दोनो भाई प्रधान मन्त्री रहे।

पहले आबू पर्वतपर ८०८ शिवलिङ्ग और अन्य देव देवीकी मूर्ति प्रतिष्ठित थी। प्रस्तरपर खुदा, कब किस महात्माने मन्दिर बनवाया और कब किस महात्माने सकल मन्दिरका संस्कार कराया। किन्तु अनेक दिन बीत जानेसे सकल अक्षर पढ़नेमें नहीं आते। यह ठहरना कठिन पडा, सकल मन्दिर बनवानेमें कितना रुपया लगा था। आबू पर्वतकी चारो ओर प्रायः डेढ़सौ कोसतक कहीं सफेद पत्थर नहीं निकलता। अतएव बहुत दूरसे ऊंटकी पीठपर लदकर यह पत्थर आया होगा। फिर पहाड़पर चढ़ानेमें भी कम खर्च नहीं पडा। किसने खोलकर कहा,—खम्भे, मेहराव, और खोदायीमें कितना काल बीता था।

आबू पर्वतपर जैन राजाओंका नगर न रहा। यदि होता, तो उसका कोई न कोई चिह्न अवश्य देख पड़ता। किन्तु इस गढ़से दक्षिण चन्द्रावती नामक बड़े नगरका चिह्न आज भी चमकता है। गुजरात भूपतिके मन्त्रियों और परमारोंने उसे बनवाया था। आजकल उसका भग्नावशेष रोज़ परिष्कार होता है। अहमदाबादके सुलतान गिरनारके ठाकुर और सिरोहीके सेठ समस्त प्रस्तरादि उठा ले गये हैं।

यहां सफ़ेद पत्थरकी दो खानि हैं। किन्तु उनका पत्थर अतिशय कठिन और उज्ज्वल है। इसीसे ऊपर काम होनेसे टूट जाता है। कहा जा न सका जैनमन्दिर बनते समय कहांसे पत्थर मंगाया गया था।

आबूपर गेहूं, यव, ज्वार, मक्का, धान, दाल, आलू और कई तरहकी दूसरी फ़सल भी तैयार होती है। शिमला, नैनीताल प्रभृतिके पहाड़ों मधुकी भांति यहां भी उत्कृष्ट मधु मिलता है। वन्य पशुके मध्य शेर और लकड़बग्घा कभी-कभी पहाड़पर चढ़ता है। किन्तु चीता, भालू, रीछ और बारहसींगा प्रायः सर्वदा ही देख पड़ता है। भेड़िया और लोमड़ी यहां नहीं। साम्भर हरिण दल बांधकर चरते-चरते पहाड़पर आता, किन्तु चितकबरा नीचे ही घूमा करता है। आबू पर्वतपर सर्पका भय अधिक नहीं कहीं-कहीं कोई अजगर कभी मिल जाता है।

मन्दिरके प्रस्तरखण्डमें इसका समस्त विवरण खुदा, आबूपर मन्दिर कब किस राजा या बनानेने बनवाया और कब किस महाजनने उसका संस्कार कराया था। स्थान स्थानमें उन महाजनोंका वंश विवरण और मन्त्री तथा कारीगरका नाम दिखायी देता है। हिन्दी विश्वकोषमें इस विषयका विस्तारित विवरण लिखना असम्भव है। हम कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों के नाम परिवार और समयके साथ नीचे लिखते हैं—

चन्द्रावतीके परमारवंश—धूमराज, धोगराज, चेम राज, भूयड़, वीरसिंह रत्नादित्य, सामन्तसिंह।

अणहिलपत्तनके चौलुक्य-राजवंश—मूलराज, चामुण्ड सन् ९९७ ई०, वल्लभ, दुर्लभ १००८, भीम, कर्णदेव, सिद्धराज १०९४ कुमारपाल ११४३, अजयपाल, मूलराज, भीमदेव ११७८ और तत्पुत्र त्रिभुवनपाल सन् १२४२ ई०।

अणहिलपत्तनके बाघेला-वंश—धवल, अर्णोराज, लवण-प्रसाद, वीरधवल सन् १२१९ ई०, वीसलदेव, अर्जुन-देव, सारङ्गदेव, कर्णदेव।

वीरधवलका मन्त्री—तेज पाल वस्तुपाल। (सन् १२१९ से १२३० ई०)

चन्द्रावतीके चौहानवंश—तेजसिंह सन् १३१५ ई०, कान्हड़देव, सामन्तसिंह सन् १३३८ ई०।

मेवाड़के गिहलोत वंश—बप्पक गुहिल भोज, शील, कालभोज भर्तृभट, सिंह, महायिक खुमाण अल्लट, नरवाहन, शक्तिकुमार, शुचिवर्मा, नरवर्मा, कीर्तिवर्मा, हंसपाल, वैरिसिंह, विजयसिंह, अरिसिंह, चोड़, विक्रमसिंह, क्षेमसिंह सामन्तसिंह (विक्रम-संवत् १२८०); कुमारसिंह, मथनसिंह पद्मसिंह, जैत्र-सिंह तेजसिंह समरसिंह (सन् १२७८ ई०)। रत्नसिंह जयसिंह, लक्ष्मसिंह, अजयसिंह हम्मीर, क्षेमसिंह, लाखसिंह, मोकलदेव सन् १४२८ ई०, कुम्भकर्ण सन् १४१८ ई०।

आबूके चौहान-वंश—सिन्धुराज, उत्पल, आरण्य, अधिराज, महीन्दु, सिन्धुराज, कृष्णवर्मन, प्रतापमल, कुम्भन चौहान, समरसिंह दशरथ आमल्लदेव एवं लुम्भन सन् १३२१ ई०।

आबोधन (स० क्ली०) आ समन्तात् बोधयति आ-बुध णिच् ल्युट्, णिलोपः। १ शिक्षा, बुद्धि, ज्ञान, समझ। २ शिक्षा समाचार, तालीम, आगाही।

आभ्र (स० त्रि०) अभ्रे भवं अभ्र तस्येदं इति वा, अण्। १ मेघजात, बादलमें पैदा होनेवाला। २ मेघसम्बन्धीय, अबरी, बादलसे ताल्लुक़ रखनेवाला।

आम्लिक (सं० त्रि०) आर्षिक, खट्टा, खाटो। (स्त्री०) आम्लिकी।

आम्लिका (सं० स्त्री०) तिन्तिड़ी, इमली।

आब्बोट लेफ़टिनेण्ट—लाहोर दरबारके अधीनस्थ राज-कीय पदाधिकारी। पञ्जाबके हज़ारा ज़िलेमें इनके भूमिकर बांध देनेपर सन् १८४८ ई०को पूर्व रीतिसे

शान्ति विराजने लगी थी। मूलतानमें उपद्रव उठनेपर किलेकी फौज आव्वोटसे बिगड पडी, किन्तु मुसलमानोंने कोई बाधा न डाली। उस समय यह अशिक्षित मुसलमानी सेनाके सहारे अपने स्थानपर डटे रहे। अन्तको गुजरातके समरमें आव्वोटने विजयी हो हजारा जिला अंगरेजी राज्यसे मिला दिया। यह सन् १८४७ से १८५३ ई० तक हजारा जिलेके डिपुटी कमिन्नर थे।

आव्वोटावाद (अबोटावाद)—१ पञ्जाव प्रान्तके हजारा जिलेकी तहसील। यह अक्षा० ३४° उ० और द्राघि० ७३° १६´ पू० पर अवस्थित है। क्षेत्रफल ७१४ वर्ग मील है। जिन पार्वत्य उपत्यकाओंमें डोढ और हरोह नदी वही, उनकी भूमि कुछ इस तहसीलमें आ गयी है। पूर्वकी ओर भी पार्वत्य देश है। उत्तर एवं उत्तरपूर्व पहाड़को वगलमें जङ्गली पेड खडे हैं। पूर्वमें प्रधानतः खराल तथा ढूंड, केन्द्रमें जदून और पश्चिममें अवानों एवं गूजरोंके साथ तनावली लोग रहते हैं। २ आव्वोटावाद तहसीलको नगरी और छावनी। यह मेजर जेम्स आव्वोटके नामसे अभिहित और अक्षा० ३४° ८´ १५´´ उ० तथा द्राघि० ७३° १५´ ३०´´ पू० पर अवस्थित है। ओरास-मैदानके दक्षिण कोणमें पड़नेसे शोभा विचित्र देख पडती है। यह रावलपिण्डीसे ६३, मोरीसे ४०, और पेशावरसे ११७ मील दूर है। छावनीमें दो-तिहाई और नगरीमें एक-तिहाई लोग रहते हैं। किलेमें गुर्खा तथा पञ्जावी फौज और पहाडी तोपखाना है। साल भर कुएका पानी खूब मिलता, किन्तु गर्मीमें तीन महीने सूख जाता है। बाजार, कचहरी, खजाना, कैदखाना, हस्पताल, डाकबंगला, पोष्टाफिस और तारघर सभी कुछ मौजूद है। दिसम्बरसे मार्च मास तक कभी-कभी वर्फ गिरती है। पानी वरसनेसे कोई मास खाली नहीं जाता। प्रधानतः सितम्बर और अक्टोबर मास ज्वरका प्रकोप होता है।

आभ (हिं० पु०) १ अभ्र, आसमान्। २ आब, जल। (स्त्री०) ३ आभा, चमक।

आभग (सं० पु०) आ सम्यक् भगं माहात्म्यं यस्य, बहुव्री०। अतिशय माहात्म्ययुक्त देवता। जो देवता यज्ञमें यथेष्ट भाग पाता, वही आभग कहाता है।

आभण्डन (सं० क्ली०) आ-भण्ड-ल्युट्। निरूपण, तशरीह।

आभयजात्य (सं० त्रि०) अभय जातस्यापत्यम्, यञ्। गर्गादिभ्यो यञ्। पा ४।१।१०५। अभयजातसे उत्पन्न होनेवाला, जो अभयजातसे निकला हो। (स्त्री०) ङीप्, य लोपः। आभयजाती।

आभरण (सं० क्ली०) आभ्रियन्ते अङ्गेषु आध्रियन्ते शोभार्थम्, आ-भृ कर्मणि ल्युट्। १ भूषण, अलङ्कार, जेवर, गहना। आभरण चार प्रकारका होता है,—आवेध्य, बन्धनीय, क्षेप्य और आरोप्य। अङ्गको छेदकर पहना जानेवाला आवेध्य, बंधनेवाला बन्धनीय, डाला जानेवाला क्षेप्य और लटकनेवाला आरोप्य कहता है। कुण्डलादि आवेध्य, कुसुमादि बन्धनीय, नूपुरादि क्षेप्य और हारादि आरोप्य है। अलङ्कार देखो। भावे-ल्युट्। २ सम्यक् पोषण, परवरिश।

आभरत् (सं० त्रि०) लानेवाला। (स्त्री०) आभरन्ती।

आभरद्वसु (वै० त्रि०) सम्पत्ति प्रभृति लानेवाला, जो माल-असबाब ला रहा हो।

आभरित (सं० त्रि०) आभरः आभरणं जातोऽस्य, आ-भृ तारकादित्वात् इतच् इट् च। पूरित, अलङ्कृत, भरा या जेवरसे सजा हुआ।

आभर्मन् (सं० क्ली०) आ भृ-मनिन्। गर्भादिका सम्यक् भरण, पोषण, परवरिश।

आभा (सं० स्त्री०) आ-भा-अङ् टाप्। १ दीप्ति, रौशनी। २ स्फुरण, चमक। ३ शोभा, खूबसूरती। ४ छाया, परछाहीं। ५ उपमान, इमकान्। ६ ववुर-वृक्ष, ववूल। ७ महाशतावरी, बड़ी सतावर। ८ वातरोग विशेष, वावकी बीमारी।

समासान्तमें 'आभा'का आभ हो जाता और सदृशका अर्थ लगता है। जैसे—हेमाभ, हेमसदृश।

आभागुग्गुल (सं० पु०) गुग्गुलभेद। आभाफल, त्रिक तथा त्र्योषको समान भाग लेने एवं सबको वरावर गुग्गुल मिलानेसे यह औषध प्रस्तुत होता और भग्नसन्धिको जोड़ देता है। (चक्रपाणिदत्तकृत संग्रह)

आभाषण (सं॰पु॰) १ नाटिकाविशेष, किसी किस्मका सुखनिद। २ बोलचाल, मसल।

आभाति (सं॰ स्त्री॰) आ-भा-क्तिन्। १ प्रतिबिम्ब, अक्स। २ द्युति, दमक।

आभार (सं॰ पु॰) आ-भृ-घञ्। १ समस्त भार, भारी बोझ। २ गृहस्थीका भार, घरका बोझा। ३ उपकार, एहसान। अर्धसम विशेष। इसमें आठ तगण रहते हैं। जैसे—"[illegible]"

आभारिन् (सं॰ त्रि॰) आभारयुक्त, एहसानमन्द। (पु॰) आभारी। (स्त्री॰) आभारिणी।

आभाष (सं॰ पु॰) आ भाष्-घञ्। १ सम्बोधन, गुफ्तगू। २ भूमिका, तमहीद।

आभाषण (सं॰ क्ली॰) आ भाष भावे ल्युट्। परस्पर कथोपकथन, आलाप सम्बोधन, बातचीत। "[illegible]" (अमर)

आभाष्य (सं॰ त्रि॰) आ-भाष ण्यत्। १ आभाषणीय, सम्बोधनीय, आलाप्य, बातचीत किये जाने काबिल जिससे बात की सके। (अव्य॰) ल्यप्। २ सम्बोधन करके, बोलके।

आभास (सं॰ पु॰) आभासते, आ-भास अच्। १ उपाधिके तुल्यता हेतु प्रतिबिम्ब अक्स, परछाईं। २ दुष्ट हेतु प्रभृति, झूठा दिखावा। भावे घञ्। ३ तुच्छ प्रकाश, रौशनी, चमक, मिलती-जुलती रौशनी। आभासयति आ भास-णिच् करणे अच्, णिच् लोप। ४ अभ्यासतत्त्वके निमित्त अभिप्राय वर्णनरूप आख्यान विशेष, किताब समझानेके लिये मतलब बतानेकी बात। चलती बोलीमें इशारा या आमास्य अभिप्रायको भी आभास कहते हैं।

आभासन (सं॰ क्ली॰) आ भास्-ल्युट्। द्योतन, प्रकाशन, दरख़्शानी, चमक।

आभास्वर (सं॰ त्रि॰) आ-भास वरच्। [illegible] ३।२।१७५। १ सम्यक् दीप्तिशील, खूब चमकनेवाला। (पु॰) २ गणदेव विशेष। यह संख्यामें साठ होते हैं।

आभाक्षर (सं॰ त्रि॰) आ भास वरच्। [illegible] ३।२।१७५। १ सम्यक्दीप्तिशील, खूब चमकनेवाला। (पु॰) २ गणदेव विशेष। इनकी संख्या चौंसठ है। ३ द्वादश परिमित गणदेव विशेष।

आभिचरणिक (सं॰ त्रि॰) अभिचरणं प्रयोजनमस्य, ठञ्। अथर्ववेदादि प्रोक्त मन्त्र प्रभृतिके मारण, उच्चाटन, वशीकरणादि अभिचारसे सम्बन्ध रखनेवाला, जादूटोनाका, खानगी। (स्त्री॰) आभिचरणिकी।

आभिचारिक (सं॰ त्रि॰) अभिचारप्रयोजनार्थं ठञ्। १ जादूटोनाका, खानगी, बददुआसे ताल्लुक रखनेवाला। (क्ली॰) २ अभिचार, जादू।

आभिजन (सं॰ त्रि॰) अभिजनादागतं अभिजनस्येदं वा, अभि जन अण्। १ वंश-परम्परागत, नसली। (क्ली॰) २ देशका प्रधान नगरकी बुलन्दी। (स्त्री॰) आभिजनी।

आभिजात्य (सं॰ क्ली॰) अभिजातस्य भावः, ष्यञ्। १ कौलीन्य, शराफत। २ पाण्डित्य, सौन्दर्य, ख़ूबसूरती, ख़ुबसूरती।

आभिजित (सं॰ त्रि॰) अभिजिति नक्षत्रे जातम्, अण्। अभिजित् नक्षत्रजात, अभिजित्में पैदा होनेवाला। (स्त्री॰) आभिजिती।

आभिजित्य, अभिजित देखो।

आभिधा (सं॰ स्त्री॰) अभिधेय, मानी अर्थ। अभिधा देखो।

आभिधातक (सं॰ क्ली॰) अभिधां तकति सहते, अच्। अभिधा देखो।

आभिधानिक (सं॰ त्रि॰) अभिधानादागतम्, ठञ्। १ अभिधान-सम्बन्धीय, फरहङ्गनवीसीसे ताल्लुक रखनेवाला जो लुगात या कोषमें हो। (पु॰) २ कोषकार, फरहङ्गनवीस, लुगात या डिक्शनरी बनानेवाला शख्स। (स्त्री॰) आभिधानिकी।

आभिधानीयक (सं॰ क्ली॰) अभिधानीयस्य भावः, वुञ्। [illegible] ५।१।१३२। १ कथनीयत्व, कहनेका भाव, नामका गुण। (त्रि॰) २ शब्दसम्बन्धीय, लफ्ज़से ताल्लुक रखनेवाला। (स्त्री॰) आभिधानीयकी।

आभिप्रयिक (सं॰ त्रि॰) अभिप्राये विहितम्, ठञ्।

(७।३।६९) 'भोज्यं भक्ष्ये' सूत्र कहा है। किन्तु कात्यायनके कथानुसार उपरोक्त सूत्रमें 'भक्ष्य'के स्थान-पर 'अभ्यवहार्य' शब्द लिखना उचित था। उनके ऐसा कहनेका तात्पर्य यह होता—भक्ष्यसे कठिन द्रव्यका खाना समझा जाता है, तरल का नहीं। किन्तु पतञ्जलिने यह बात न मान कात्यायनको दोषी ठहराया है।

आभ्यागारिक (सं० त्रि०) आगारस्य अभि अभ्यागारं तस्मिन् तत्स्थकुटुम्बाभरणे व्यापृतः ठक्। कुटुम्बके भरणमें व्यापृत, खान्दान्‌की परवरिशमें लगा हुआ। 'उताभ्यागारिको तु कुटुम्बव्यापृते नरि।' (हेम)

आभ्यादायिक (सं० क्लो०) आभिमुख्येनादायः आदानं यस्य तस्मिन् हितम्, ठक्। पिता किंवा माताके कुलसे प्राप्त, नेहर या ससुरालसे मिला हुआ।

आभ्याशिक (सं० त्रि०) समीपस्थ, पड़ोसी, नज़दीकी। (स्त्री०) आभ्याशिकी।

आभ्यासिक (सं० त्रि०) अभ्यासे निकटे भवम्, ठक्। १ निकटस्थित, नज़दीक रहनेवाला। अभ्यासात् आम्रेड़ितोच्चरणादागतम्। २ अभ्यास-प्राप्त, मश्क़से हासिल। ३ पुनःपुनः उच्चारण-जात, बारबार कहनेसे पैदा। (स्त्री०) आभ्यासिकी।

आभ्युदयिक (सं० क्ली०) अभ्युदयः पुत्रजननादिः स प्रयोजनं यस्य, ठक्। १ वृद्धि-निमित्तक श्राद्ध विशेष, बढ़तीके लिये पिण्डका पारना। नान्दी देखो। अन्न प्राशन और विवाहसे पूर्व जो नान्दी श्राद्ध किया जाता, वह सुखसौभाग्य बढ़ानेके लिये होनेसे आभ्युदयिक कहाता है। "स्वच्छन्ददात्याभ्युदयिकेषु" (सिद्धान्तकौमुदी)

(त्रि०) २ माङ्गलिक, इक़बाल-बख़्श। ३ उदय वा आरम्भ सम्बन्धीय, उरूज या आग़ाज़के मुताल्लिक़। (स्त्री०) आभ्युदयिकी।

आभ्रिक (सं० त्रि०) अभ्रया खनति, ठक्। १ अवदारण द्वारा खनन करनेवाला, जो कुदाल या फावड़ेसे खोदता हो। अभ्रात् मेघात् आगतम्। २ बादलसे निकला हुआ। यह शब्द जल प्रभृतिका विशेषण है।

आभ्र (सं० त्रि०) अभ्रे आकाशे भवं अभ्रस्यापत्यं वा, ख्य। कुर्वादिभ्यो ण्यः। १ आकाशजात, आसमानी। २ अभ्र नामक पुरुषसे पैदा होनेवाला।

आम् (सं० अव्य०) अम गत्यादौ णिच् बाहु० कर्मभावः क्विप्, णिच् लोपः। हां, ठीक, ज़रूर, समझा। यह स्वीकृति वा स्मृतिका द्योतक है।

आम (सं० त्रि०) आ ईषत् अम्यते पच्यते, आ अम घञ्। १ अपक्व, जो पकाया न गया हो। २ जो परीक्षा न गया हो। ३ कच्चा, जो पका न हो। ४ न पचा हुआ, जो हज़्म न हो। 'आमोऽपक्वे तु वाच्यवत्।' (त्रिका) वैद्यमतसे तरुणज्वर और अपक्व स्फोट भी आम कहाता है। (क्ली०) ५ अपाक, ख़ामी, कच्चापन। ६ मलावरोध, क़ब्ज़। ७ तुषरहित धान्य, भूसी निकाला हुआ दाना। यथा,—

"क्षेत्रं षं शस्य प्राह सतुषं धान्यमुच्यते।
आमं वितुषमित्युक्तं स्विन्नमन्नमुदाहृतम्।" (वशिष्ठ)

क्षेत्रमें रहनेवालेको शस्य, सतुषको धान्य, तुषरहितको आम और पकाये जानेवाले द्रव्यको अन्न कहते हैं। शूद्रजाति दुग्ध किंवा तण्डुलादि यदि कच्चा दे, तो पात्रान्तरसे ब्राह्मण ले ले। शूद्रका आम अन्न और अन्न उच्छिष्टके तुल्य होता, इसीसे पूजा-पार्वणमें आमसे शूद्रादिका कार्य करना पड़ता है। आपत्काल या अग्नि न मिलनेपर और तीर्थस्थानमें द्विजातिके लोग भी आमसे श्राद्ध कर सकते हैं। चन्द्र-सूर्यके ग्रहणमें आमसे श्राद्धादि करनेकी व्यवस्था है। किन्तु शूद्रादिको सकल समय आमसे ही काम लेना चाहिये। (पु०) अम्यते पीड्यतेऽनेन अम करणे घञ्। ८ रोगमात्र, बीमारी। ९ सलवंशस्यरोग, दर्द बिगड़नेकी बीमारी। १० अपक्वाजरा, हज़्म न हुआ खाना सड़नेकी बीमारी। आहारका रससार जो अग्निलाघवसे नहीं पचता, वही आम कहाता और बहुव्याधिका समाश्रय होता है। इसे कोई आम, कोई अन्नरस, कोई मलसञ्चय, कोई प्रथमा और कोई दोषदुष्टि कहता है। अल्परसत्व एवं उससे धातुमान्द्य, अपाचित, दुष्ट और आमाशयगत रसका नाम आम है। (भिषक्प्रदीप) ११ षट्प्रकार अजीर्ण रोग, छः किस्मकी बदहज़्मीका आज़ार। अजीर्ण देखो।

आमका काठ अधिक दृढ़ न होते भी चौखट, बाज़ू, उतरंग, कपाट और तख़्ता बनानेके काम आ जाता है। बकले और पत्तेसे पीला रङ्ग तैयार करते हैं। पशुको प्रथम आमका पत्ता खिलाया फिर उसके पेशावसे प्योरी रङ्ग बनाया जाता है। अन्यान्य विवरण आम शब्दमें देखो।

(अ० वि०) १३ सामान्य, सार्वत्रिक, मामूली, मशमूल।

आमदख़्तियार (अ० पु०) सामान्य अधिकार, मामूली हुक्म।

आमक (सं० त्रि०) १ अपक्व, कच्चा। (पु०) २ कुष्माण्ड, कुम्हड़ा।

आमकुम्भ (सं० पु०) अपक्व मृत्तिकाका घट, कच्ची मट्टीका घड़ा।

आमख़ास (अ० पु०) प्रासादके भीतर नृपतिके बैठनेका स्थान, महलमें बादशाहकी नशिस्तका कमरा।

आमगन्धि (सं० त्रि०) आमस्यापक्वस्य गन्ध इव गन्धो यस्य, इत् समा०। १ विस्र-गन्धयुक्त, विसायंध छोड़नेवाला। (क्ली०) २ चिता-धूमादिका गन्ध, कच्चे गोश्त या जलती लाशकी बू, विसायंध।

आमगन्धिक, आमगन्धि देखो।

आमगन्धिहरिद्रा (सं० स्त्री०) आमाहलदी।

आमघ्नी (सं० स्त्री०) कटुका, कुटकी।

आमचणक (सं० पु०) अपक्व चणक, कच्चा चना। यह शीतल, रुच्य, सन्तर्पण, तृष्णा-दाह-ज्वर, अश्मरी-शोष-घ्न, कषाय और ईषत्-कटु-वीर्य होता है। (राजनिघण्टु)

आमज्वर (सं० पु०) आमो अपक्वः ज्वरः, कर्मधा०। अपक्व ज्वर, ताज़ा बुख़ार। तरुण अवस्थाको न लांघनेवाले बुखारको आमज्वर कहते हैं। इसका लिङ्ग लाला-प्रसेक, हृल्लास, हृदयकी अशुद्धि, अरोचक, तन्द्रा, आलस्य, अविपाक, वैरस्य और गुरुगात्रता आदि है। (माधवनिदान)

आमड़ा (हिं० पु०) आम्रातक, एक पेड़ और फल। यह हिन्दुस्थानमें कम, किन्तु बङ्गालमें बहुत उत्पन्न होता है। वृक्ष बड़ा लगते भी आम-जैसा नहीं देख पड़ता। सचराचर आमड़ा दो प्रकारका होता है,—देशी और विलायती। देशी आमड़ेकी पत्ती कुछ बड़ी लगती और शरीफ़ेकी पत्तीसे मिलती-जुलती है। फल छोटा होता, गुठली बड़ी निकलती और गूदेका नाम नहीं मिलता; केवल गुठलीपर बकला चिपका रहता है। पकनेपर आम्र-जैसा गन्ध उठता और स्वाद अम्ल-मधुर लगता है। इसका अचार भी डालते हैं। देखनेमें फल बेरके बराबर होता है।

विलायती आमड़ा यवद्वीपसे आया है। फल बड़ा और पत्ता ढालू होता है। सुपक्व फल खानेमें मीठा लगता है। मुकुल फूटनेमें पहले पके बेरके साथ अम्ल-व्यञ्जन बनाकर खानेपर मुखरोचक होता है। कच्चे आमड़ेका भी व्यञ्जन बनता है। देशी आमड़ेसे दूध निकलनेपर वृक्ष सूख जाता है, किन्तु विलायतीमें दूध नहीं होता। इसकी लकड़ी हलकी और मुलायम रहती है, कोई चीज़ बनानेके काम नहीं आती। वृक्षमें पक्का फल रहते-रहते पत्ता झड़ और मुकुल फूट पड़ता है। कोई-कोई वृक्ष वर्षमें दो बार फलता है। संस्कृतमें आमड़ेको आम्रातक, पीतन, कपीतन, वर्षपाकी, पीतनक, कपिचडा, अम्ल-वाटिक, भृङ्गीफल, रसाढ्य, तनुक्षीर, कपिप्रिय, अम्बरातक, अम्बरीय, कपिचूड़ और अम्लावर्त कहते हैं।

वैद्यशास्त्रके मतसे इसका कच्चा फल कषाय, अम्ल और हृदय एवं कण्ठ खोलनेवाला है। पक्का फल मधुराम्ल एवं स्निग्ध रहता और पित्त तथा कफको मारता है। किन्तु आमड़ा गुरु होता और सर्वदा खानेसे तृप्ति, बल, अजीर्ण एवं विष्टम्भिको बढ़ाता है। सुननेमें आता, कि सर्वदा खानेसे ज्वर, कुष्ठ, कास और ग्रन्थिका वातरोग उत्पन्न होता है। सुतरां इसे कुपथ्य समझना चाहिये। कोई अङ्ग कट जानेसे आमड़ेकी हरी पत्ती बांटकर प्रलेप देनेपर रक्त नहीं निकलता। कानमें दर्द होनेसे भी पत्तीका रस छोड़ते हैं। सामान्य रक्तामाशय रोगमें बकलेका क्वाथ पिलानेसे पीड़ा दब जाती है। पित्तजनित

पकीपर रोगमें पके आमका गूदा खिलानेसे क्षुधा बढ़ती है। यह बीज और कलम दोनोंसे तैयार होता है। वाडिवे लाम्बोंके कथनानुसार देसी और विलायती दोनों प्रकारका आमड़ा एक ही ढंग ठहरता, केवल स्थानविशेषमें मृत्तिका और जल-वायुके गुणसे रूपान्तर हो जाता है। इसके डालीको मोड़ने और विशेष यत्न करनेसे जल्द थोड़ा पकने तथा कम सूखने लगता है।

आमण्ड (सं० पु०) १ एरण्डवृक्ष रेड़का पेड़। २ शाकैरण्ड, सफेद रेड़का पेड़।

आमण्डम, आमण्ड देखो।

आमण्डवास (सं० पु०) आसव, शराब।

आमता (सं० स्त्री०) अपाक, खामी, कचायी।

आमतिन्तिड़ि (सं० स्त्री०) अपक्व तिन्तिड़ी, कच्ची इमली।

आमतिन्तिड़ी, आमतिन्तिड़ि देखो।

आमत्वच् (सं० त्रि०) कोमल चर्मावृत, नर्म चमड़ेवाला।

आमद (फा० स्त्री०) १ आगमन, आवाई। २ आय, आमदनी। रियासत अमरखको सालाना आमद कम ही है। (त्रि०) ३ प्रस्तुत, मुस्तैद। ४ विशुद्ध, साधारण, साफ, सादा।

आमद आमद (फा० स्त्री०) आगमन-समाचार, आनेकी खबर।

आमद-खर्च (फा० पु०) आयव्यय, नफा नुकसान। "इसीकी चलन चौपटीका खर्च।" (लोकोक्ति)

आमदनी (फा० स्त्री०) १ आय, आमद, नफा। २ उचित दाम, दस्तूरी। ३ कर, राजस्व, महसूल चुङ्गी। ४ देशान्तरसे आनीत द्रव्य, इरसालमाल बाहरसे अपने मुल्कमें आयी हुई चीज़। ५ द्रव्यके आगमनका समय, माल आनेका मौसम।

आमद-मुवाफिक खरचात (फा० पु०) आमदका रूप खर्च, [illegible]का इज़ार।

आमद-रफ्त (फा० स्त्री०) १ आवागमन, आया जावो। २ मार्ग, राह। ३ [illegible], पाद रख।

आमदवाला (फा० पु०) १ धनी पुरुष, दौलतमन्द आदमी। २ बाहरसे थोक माल मंगानेवाला सौदागर।

आमन (वै० स्त्री०) १ प्रकाश, अभिलाष रमणत, सुसम्मत। (हिं० स्त्री०) २ वर्षमें एक ही फसल उत्पन्न करनेवाली भूमि, जो ज़मीन् सालमें एक ही फसल देती हो। ३ हेमन्तकालमें उत्पन्न होनेवाला धान्य। यह धान्य जुलाई अगस्त मास बोया और दिसम्बरमें काटा जाता है।

आमनस् (सं० त्रि०) अनुकूल, दयालु, रहमदिल, मेहरबान।

आमनस्य (सं० क्ली०) अमनस्क मनो यस्य स अमनस्कस्तस्य भाव, ष्यञ्। १ वैमनस्य, दुश्मनी। २ दुःख, पीड़ा, दर्द, तकलीफ।

आमना (हिं० क्रि०) आना, अमाना, समाना।

आमनाय (हिं०) आम्नाय देखो।

आमना-सामना (हिं० पु०) सम्मुखीन होनेका भाव, मुकाबला, मुलाकात, भेंट।

आमनी (हिं०) आमन देखो।

आमने-सामने (हिं अव्य०) प्रत्यक्ष, सम्मुख रूबरू, मुकाबिलेमें, मुंहपर। आमने-सामने घर घर और बीच घर मैदान। (लोकोक्ति) यह कहावत निर्लज्ज और धृष्टित लोगोंपर चलती है।

आमन्त्र (सं० पु०) आमाण्डकीर्यात् मात्वदि, आम-मेन्क, पृषोदरादित्वात् साधुः। १ एरण्डवृक्ष, रेड़का पेड़। इसका तेल पीनेसे आमोंपर मल गिर पड़ता, इसीसे एरण्डवृक्ष आमन्त्र कहाता है। आ मन्त्र अच्। २ आमन्त्रण।

आमन्त्रण (सं० क्ली०) आ-मन्त्र णिच् भावे ल्युट्। १ अभिनन्दन, कुशल। २ सम्बोधन, पुकार। ३ निमन्त्रण, नेवता। ४ विवेचन विचारण, तामुल, ग़ौर। ५ सम्बोधन कारक, निदायिया। (स्त्री०) टाप्। आमन्त्रणा।

आमन्त्रणीय (सं० त्रि०) सम्बोधन किया जानेवाला, जो पूछा जाने काबिल हो।

आमन्त्रयिता (सं० पु०) निमन्त्रण देनेवाला पुरुष, मेहमान, जो आमन्त्र[illegible]ता देता हो।

आमन्त्रयितृ (सं० [illegible] देनेवाला, जो बुलाता हो। (पु०) (स्त्री०) आमन्त्रयित्री।

आमन्त्रित (सं० त्रि०) आ अदन्त चुरा० मन्त्र-णिच्-क्त-इट्, णिच् लोपः। आमन्त्रितम्। पा ८।१।१८। १ आवश्यक कर्ममें नियोजित, न्योता पाये हुआ। (क्ली०) २ व्याकरण-परिभाषित सम्बोधनार्थक प्रथमा विभक्ति, निदायिया। ३ सम्बोधन, पुकार।

आमन्त्रितत्व (सं० क्ली०) १ स्व-कर्तव्यप्रकारक बोधजनक प्रत्याख्यानार्ह वाक्यका प्रतिपादित्व। वैयाकरण आमन्त्रितत्वको स्वाभिलषित कामाचारसे प्रवृत्त इष्ट-साधनताका बोधन समझते हैं। २ आज्ञादेनेवालेके प्रवृत्त प्रयोजनका इतरप्रवृत्तिप्रतिबन्धनसे उस प्रवृत्ति विषयमें इष्टसाधनताबोधन।

आमन्त्र्य (सं० त्रि०) आ अदन्त चुरा० मन्त्र-णिच्-यत्, णिच् लोपः। १ आमन्त्रणीय, न्योता दिये जाने काबिल। २ सम्बोधनीय, बुलाया जानेवाला। ३ आवश्यक कार्यमें नियोज्य, जरूरी काममें लगाया जानेवाला। (अव्य०) ल्यप्। ४ सम्बोधन करके, बुलाके। (क्ली०) ५ सम्बोधनकारक शब्द, निदायियेका लफ्ज़।

आमन्द (सं० पु०) आमं रोगं द्यति खण्डयति, आम-दो-ड बाहुलकात् मुम्। वासुदेव, रोगको दूर करनेवाले विष्णु भगवान्।

आमन्दा (सं० स्त्री०) आमन्दं ईषत् मन्दं करोति, आ-मन्द तत्करोति णिच्-अच्-टाप्, णिच् लोपः। खट्वाविशेष, नेवारका पलंग।

आमन्द्र (सं० पु०) आ ईषत् मन्द्रः, प्रादि० समा०। १ ईषत् गम्भीर शब्द, कुछ-कुछ भरी हुई आवाज़। (त्रि०) २ ईषत् गम्भीर शब्दयुक्त, कुछ-कुछ बड़बड़ा-हट लिये हुये, जो थोड़ा बुनबुनाता हो।

आमपत्रिका (सं० स्त्री०) चिलीशाक, किसी किस्मकी सब्ज़ी।

आमपाक (सं० पु०) आमस्य अजीर्णविशेषस्य पाकः। वैद्यशास्त्रोक्त शोफरोगादिके अङ्ग आमका पाक विशेष।

आमपात्र (सं० क्ली०) कर्मधा०। अपक्कपात्र, मट्टीका कच्चा बरतन।

आमपीनस (सं० क्ली०) १ कफ। २ कफाक्रमण, जु.काम।

आममांस (सं० पु०) अपक्क मांस, कच्चा गोश्त।

आममांसाशी (सं० पु०) राक्षस, कच्चा गोश्त खाने-वाला आदमी।

आममुख्तियार (फा० पु०) सम्पूर्ण ममता रखने-वाला कर्मचारी, जो नौकर मालिकका सब काम कर सकता हो।

आमय (सं० पु०) आमीयते समाक् बध्यतेऽनेन, आ-मीञ् हिंसायां करणे अच्। १ आघात, हानि, चोट, नुकसान्। २ रोग, बीमारी। 'रोगव्याधिगदामयाः' (अमर) ३ अजीर्ण, बदहज़मी। ४ उष्ट्र, ऊंट। (क्ली०) ५ कृष्णागुरु, काला अगर। ६ कुठ, वृक्षविशेष।

आमयव्याप्त, आमयाविन् देखो।

आमयावित्व (सं० क्ली०) अजीर्ण, बदहज़मी।

आमयाविन् (सं० त्रि०) आमयोऽस्त्यस्य, विनि दीर्घश्च। आमयस्योपसंख्यानं दीर्घश्च। (वार्तिक) रोगयुक्त, बीमार। (पु०) आमयावी। (स्त्री०) आमयाविनी।

आमरक्त (सं० क्ली०) आममपक्कं रक्तम्, कर्मधा०। रक्तामाशय रोग, लाल आंव गिरनेकी बीमारी। अतिसार देखो।

आमरक्तातिसार, अतिसार देखो।

आमरख (हिं०) आमर्ष देखो।

आमरखना (हिं० क्रि०) आमर्ष आना, क्रोध चढ़ना, गुस्सा देखाना।

आमरण, आमरणान्त देखो।

आमरणान्त (सं० त्रि०) मृत्यु पर्यन्त चलनेवाला, जो जीते जी टिका रहता हो।

आमरणान्तिक (सं० त्रि०) आमरणान्तं मरणरूप-सीमान्त पर्यन्तं व्याप्नोति, ठक्। मरणकाल पर्यन्त व्यापक, मरनेके वक्त तक रहनेवाला।

आमरस (सं० पु०) अपक्क रस, कैमूस-खाम। यह पाकस्थलीका कच्चा रस है। कोई द्रव्य खानेसे प्रथम इसी रस द्वारा परिपाक आरम्भ होता है। पाकस्थली की भीतरी ओर जो श्लैष्मिक झिल्ली रहती, वह अत्यन्त पतली पड़ती है। क्षुद्र क्षुद्र विस्तर ग्रन्थिका मुख ऊपरको रहता है। कितने ही सरल और कितने ही ग्रन्थि जटिल होते हैं। माराक्रान्त

मुखकी ओर थोड़ा अग्रभागमें स्थित है। इसीको पेप्टिक ग्रन्थि (Peptic gands) कहते हैं। कोई द्रव्य आनेपर सकल ग्रन्थिसे एक प्रकार जो रस निकलता, वही आमरस (Gastric juice) कहलाता है।

क्षुधाके समय पाकस्थलीके ग्रन्थि पिङ्गलवर्ण देख पड़ती और ऊपरको ओर अति सामान्यरूप सरस रहते हैं। सूक्ष्म शिरा कुञ्चित होती है। उस अवस्थामें उनके भीतर यत्सामान्य रक्त यातायात करता है।

उसके बाद कोई द्रव्य खानेसे पाकस्थली उत्तेजित हो जाती है। फिर छोटी-मोटी शिरा फैलनेसे ये चिक्कण झिल्लीमें अधिक रक्त आ पहुंचता इसीसे उसका रूप लालवर्ण देख पड़ता है। उसी समय ग्रन्थिके मुखमें बिन्दु बिन्दु रस क्रम क्रमसे बाहर निकल आता है। इसी रसको आमरस कहते हैं।

आमरस अम्ल जैसा होता है। इसमें कई प्रकारका क्षार पदार्थ पाया जाता है। तद्भिन्न हाइड्रोक्लो-रिक एसिड रहनेसे आमरस अम्ल लगता है। इसके एक प्रधान उपादानका नाम पेप्सिन (Pepsin) है।

खाद्यद्रव्य प्रथम उदरस्थ होनेपर पाकस्थली सिकुड़ जाती है। उसी समय भुक्तद्रव्य चलने लगता, इसीसे उसमें आमरस अच्छीतरह मिलते रहता है। इसीप्रकार पुनः पुनः घूम-घूम कर आमरसके साथ मिल जानेपर भुक्तद्रव्य मैदेको पिण्डाकार बनता है। उसे काइम (chyme) कहते हैं। काइमका कितना ही अंश डाइयोडिनम अन्त्रमें प्रवेश करता और बहुतसा बहिर्वाह क्रिया द्वारा रक्तमें मिल जाता है। (हिं०) अमरस देखो।

आमरिता, आमरित देखो।

आमरिक (वै० पु०) नाशक हन्ता ध्वंसकर, मृत्युरिक, बरबाद करनेवाला।

आमर्द (सं० पु०) आ-मर्द घञ्। १ बलहेतु निष्पी-ड़न, रौंदन, टक्कर। २ सङ्कोचन, दबाव। ३ नगर विशेष, किसी शहरका नाम।

आमर्दकी (सं० स्त्री०) १ फाल्गुन शुक्ला एकादशी। २ आमलकी, आंवला।

आमर्दन (सं० क्ली०) आ-मर्द भावे ल्युट्। आमर्द, बलहेतु निष्पीड़न, रौंदन।

आमर्दिन् (सं० त्रि०) आ-मर्द णिनि। १ बलहेतु निष्पीड़नकर्ता, कुचल डालनेवाला। २ बाधक, दबाने वाला। आ-मर्द णिच् णिनि, णिच् लोप। अन्यसे मर्दन करानेवाला, जो दूसरेसे दबवाता हो।

आमर्श (सं० पु०) आ-मृश घञ्, वम। १ सम्यक् स्पर्श, खास छूत, अच्छीतरह छूनेका काम। २ अनु-मति, सम्मति, सलाह।

आमर्शन (सं० क्ली०) आ-मृश ल्युट्। सम्यक् स्पर्शका काम, अच्छीतरह छूनेका काम।

आमर्ष (सं० पु०) सह धातुसे अच्, नञ् तत् दीर्घ। अन्येषामपि दृश्यते। पा ६।३।१३७। १ असहमता, कोप, असहन इन्तिक़ाम बैरतो। २ रसका सञ्चारी भाव विशेष। इसमें अन्यका दर्प असह्य होता और उसे नष्ट कर देनेका भाव बढ़ता है।

आमर्षण (सं० क्ली०) कोप तेज भ्रूक्षेप।

आमल, अमल देखो।

आमलक (सं० क्ली०) आमलक्याः फलम्। अण् लुप्। पा ४।३।१६३। १ आंवलेका फल, आंवरा। (पु०) आ-मल क्वुन्। उणादि। उण् ५१। २ आमलकी वृक्ष, आंवलेका पेड़। ३ पञ्चपाद, एक सुगन्धद्रव्य लकड़ी।

आमलका (सं० स्त्री०) स्वनामख्यात वृक्ष विशेष, आंवलेका पेड़। इसका गुण प्राय हरीतकीके तुल्य है। विशेषमें यह रक्तपित्त एवं प्रमेहको शान्त करती, स्वास्थ्य सुधारती और रसायन होती है। इसका अम्ल भी अम्लतासे वायु, मधुरतासे पित्त एवं रूक्षकषायत्वसे कफको नाश करता इसलिये त्रिदोषघ्न कहाता है। इसकी मज्जा तुवर, मधुर एवं अमनाक् होती और वात तथा पित्तको शमन करती है। २ भूम्यामलकी, भुई आंवला।

आमलकायस (सं० क्ली०) रसायन विशेष, एक रसायन। विधिवत् सूखा निरस्थि आमलक ८ सेर तथा भीमनोपादिष्ट मिश्रित ८ सेर दशगुण पानीमें उबाले और चौथाई रह जानेसे छान ले। फिर

अतिपिच्छल होतेमें बढ़ता और बहुत भीषण दौर्बल्य, हृदय गौरवता आदि उत्पन्न करता है। यह सब व्याधियोंका आश्रय और अति दारुण आम नामक महारोग है। जब एकबार कफ और वात दोनों कुपित हो आमको लिये सन्धिमें प्रवेश करते, तब शरीरको स्तब्ध कर देते हैं। (माधवनिदान)

आमवात रोगका कारण मत्स्य मांसके सङ्ग दुग्ध पान जैसा विपरीत गुण करनेवाला विरुद्ध भोजन, भोजनके बाद ही व्यायाम, आलस्य और स्निग्ध अन्न भक्षण है। अजीर्ण रोगमें धीरे-धीरे दुष्ट आमरस सञ्चित होता, पीछे मस्तक और गात्रमें पीड़ाका बाधा लगता है। उपदंश शीतल वायु-सेवन और आर्द्र स्थानका वास भी प्रधान कारण है।

इस रोगमें प्रथम अकस्मात् नीचे कमरके भीतर वेदना होने लगती है। इसीके साथ क्रमशः शरीरके अन्य-अन्य अस्थि भी सूजते हैं। अबके पीड़ा अति अल्प मालूम पड़ती, पीछे किस अस्थिमें सूई जैसी चुभा करती और कमर अकड़ जाती है। रोगी शय्यामें करवट ले ना या उठकर बैठ नहीं सकता। साथही ज्वर, पिपासा, निद्राभाव प्रभृति लक्षण देख पड़ता है। प्रायः डेढ़ मासके कम समय उपशममें नहीं लगता।

एलोपाथीके मतसे वेदना-स्थानमें तारपीन तेल द्वारा कोयले या बालूका स्वेद लगाने लीचोंका पुलटिस चढ़ाने और पिचकारी द्वारा कमरके भीतर मर्फिया पहुंचानेपर उपकार होता है। मर्फिया अफीम, आयोडिड अव पोटाश प्रभृति औषध खिलाना चाहिये। वेदनास्थानको सर्वदा रुईसे ढका रखते हैं।

वैद्यशास्त्रके मतसे आमवात रोगमें लंघन, स्वेद, तिक्त आग्नेय एवं कटु द्रव्य, वस्तिक्रिया विरेचन तथा स्नेह पानकी व्यवस्था करना उचित है। बालूकी पोटली तपाकर स्वेद लगानेसे उपकार होता है। पटसन या दूसरे पौदेकी सागकी हरी डाली मसूर, तिल, यव रक्त एरण्डका मूल, अलसी, पुनर्नवा और सनका बीज कूट-पीसकर दो पोटली बनावे। फिर बहु छिद्रयुक्त ढक्कन लगा हण्डीमें कांजी पकावे और ढक्कनपर दोनों पोटली रख देते हैं। उष्ण होनेपर पोटलीसे वेदनास्थानमें स्वेद देता जावे। इसे शङ्कर स्वेद कहते हैं।

रास्नादि दशमूल, रास्नापञ्चक प्रभृतिका पाचन, आमगजसिंहमोदक रसोनपिण्ड वृहद्योगराज गुग्गुल इत्यादि औषध उपकार करता है।

शीतपित्तिका (आर्टिकेरिया) नामक व्याधिको भी अनेक लोग आमवात कहते हैं। इससे शरीरमें स्थान स्थानपर रक्तवर्ण, अल्प उच्च और विषम चकत्ता निकलता है। उसीके साथ सर्वाङ्ग अतिशय तपा करता है। किसी किसी स्थानमें यह पीड़ा अकस्मात् किंवा दो-तीन दिन रहती है। किन्तु पुरातन आमवात (Rheumatism) रोग एक वत्सर पर्यन्त टिक सकता है।

कुकरमुत्ता, मकड़ी भक्षित अन्न, उपद्रव्य, कुष्माण्ड, कांटेदार मछली और अन्य अन्य मन्द आमयी खानेसे यह रोग उत्पन्न होता है। पित्ताधिक्य होने, आमाशयमें अजीर्ण अन्न जमने किंवा किसी कारण उदरकी उष्णता बढ़नेसे आमवात दौड़ पड़ती है। पुरातन वातरोग, दाद देह, पुरातन व्याधि प्रभृति स्थलमें भी यह निकल आता है।

अदरख, अजवायन और पुराना गुड़ मिलाकर खानेसे साधारण आमवात छूट जाता है। कोई-कोई गोमूत्र और नीमकी पत्ती पीसकर शरीरमें लगा देते हैं। चकत्ते निकल आनेपर कितने ही लोग पेश आर गायके गोबरको रखीसे शरीरको खुजलाते हैं। किन्तु पाकस्थली किंवा अन्त्रमें क्रियाविकार पड़नेसे यह रोग बढ़ता है। इसीसे इपिकाक चूर्ण १५ किंवा २० ग्रेन खिला प्रथम वमन कराना चाहिये। पीछे पडोफिलिन चौथाई ग्रेन, रेवाचीनीका चूर्ण १ ग्रेन, सोंठका गुदादा २ ग्रेन और सोडा बाइकार्ब २ ग्रेन एकत्र मिलाकर पुड़िया बांधे। ऐसी ही एक पुड़िया प्रभात रोगीको खिलावे। उदरमें कष्टता न रहनेसे लाइकर आर्सेनिक १ बिन्दु अदरखके रसमें

रोज दो बार देनेपर उपकार होता है। आनुषङ्गिक अनर पीड़ा उठनेसे उपयुक्त चिकित्सा कराना आवश्यक है। मद्य, कहवे, चाय, अधिक अम्ल, अधिक मिष्ट, कच्चे फल और कुपथ्यसे बचना चाहिये। उदरमें अम्ल रहनेसे प्रतिकार करते हैं। बालरोग देखो।

आमवातगजसिंहमोदक (सं० पु०) आमवात-हितकारक औषध विशेष। प्रस्तुत करनेकी रीति इस प्रकार है—शुण्ठी १ प्रस्थ, यमानी ८ पल, जीरा २ पल, धनिया २ पल, सौंफ १ पल, लवङ्ग १ पल, टङ्गण १ पल, मिर्च १ पल, त्रिवृता, त्रिफला, क्षार, और पिप्पली प्रत्येक १ पल, शठी, एला, तेजपत्र, चविका १ पल, अभ्रक, लौह, वङ्गका चूर्ण एक एक पल और सबसे तीन गुण शर्करा मिला घृत और मधुके साथ कर्ष प्रमाण मोदक बनाना चाहिये। पहले शर्करा को थोड़े पानीमें घोल मृदु अग्निसे उबालते और पीछे उपरोक्त चूर्ण मिला तथा मोदक विधिसे पका घृत एवं मधु डालते हैं। (रसेन्द्रसार सं०)

आमवातारिगुटिका, आमवातारिवटिका देखो।

आमवातारिवटिका (सं० स्त्री०) आमवात, हित-कारक औषधविशेष। पारा, गन्धक, सोहागा, सैन्धव, लौह, ताम्र, शङ्खभस्म प्रत्येक १ तोला, गुग्गुल १४ तोला, त्रिफला चूर्ण ३॥ तोला और चित्रकचूर्ण ३॥ तोला घृतके साथ मर्दन कर वटी बनाना चाहिये। (रसरत्नाकर)

आमवातेश्वररस (सं० पु०) आमवातमें देने योग्य भैषज्यविशेष। शुद्ध गन्धक एवं शुद्ध ताम्र आध आध पल और पारद तथा मृत लौह पावपाव पल एरण्डमूलके रसमें सात बार घोंटकर चूर्ण बनाना चाहिये। पीछे पञ्चकोलके क्वाथमें २० और गुडू-चिके रसमें १० बार मर्दन करके सब चूर्णके बरा-बर भूंजा हुआ सोहागा मिलाना पड़ता है। सोहागेसे आधा विड (मसोचर), विड़के बराबर मरिच, तिन्तिड़ी एवं क्षार सदृश तथा सूततुल्य दन्तिक और त्रिकटु, (सोंठ, मिर्च, पीपल), त्रिफला (आंवरा हरितकी, बहेर) लवङ्ग प्रत्येक अर्द्धभाग डालनेपर यह रस तैयार हो जाता है। (रसेन्द्रसारसंग्रह)

आमशूल (सं० पु०) आमजन्य शूलरोगभेद, दद-शिकम, आंवकी मरोड़।

आमश्राद्ध (सं० क्ली०) आमान्नेन श्राद्धम्, शाक० तत्। आमान्नका श्राद्ध, जो श्राद्ध कच्चे अन्नसे किया जाता हो।

"आपद्यनग्नौ तीर्थे च चन्द्रसूर्य्यग्रहे तथा।
आमश्राद्धं द्विजैः कार्यं शूद्रेण च सदैव तु॥" (प्रचेता)

आपत्काल, अग्निके अभाव और चन्द्र-सूर्य-ग्रहणमें द्विजको आमश्राद्ध करना उचित है। शूद्र सकल ही समय आमश्राद्ध करे। निरग्नि आमश्राद्धमें चावल नहीं धोते। किन्तु वृद्धिश्राद्ध, संक्रान्ति एवं ग्रहणके समय चावल धोकर श्राद्ध करना पड़ता है।

आमहर्ष्ट (Amherst) भारतवर्षके एक गवरनर जनरल या बड़े लाट। इन्हें लार्ड हेष्टिङ्गसका पद अधिकार मिला था। लार्ड हेष्टिङ्गसके भारतवर्षसे चले जानेपर अर्ल आमहर्ष्टको इस देश पहुंचनेमें कुछ विलम्ब हुआ। किन्तु इतने बड़े देशके कर्ताका उचित समय अपने कामपर न पहुंचना बड़े दोषकी बात है। इसीसे उस समयकी कौन्सिलके प्रधान सभ्य आदम साहब गवरनर जनरलका काम चलाने लगे थे। किन्तु दो दिनके निमित्त इस विशाल साम्राज्यका कर्तृत्व पा वह एक कलङ्क छोड़ गये हैं। ततकाल मुद्रायन्त्र सम्पूर्ण स्वाधीन रहा। बकिमहाम नामक किसी कृतविद्य व्यक्तिने एक संवादपत्र निकाला। सम्पादक स्पष्टवादी रहे, न्यायकी मर्यादा रख गवर्णमेण्टका दोषगुण खोलकर लिख देते थे। परन्तु गवर्णमेण्ट भली रहते भी सकल समय उसके कर्मचारी विचक्षण हो नहीं सकते। इसीसे संवादपत्रकी स्पष्ट कथा उन्हें कटु लगने लगी। सन् १८२३ ई०का आदम साहबने मुद्रायन्त्रकी स्वाधीनता छीननेके लिये एक कानून् बनाया था। इधर बकिमहाम साहब भी भारतवर्षसे निकाल बाहर किये गये।

उसके बाद आदम शाहबने अधिक दिन गवरनर जनरलका काम किया न था। आर्ल आमहर्ष्ट इस देशमें आ पहुंचे। इनके समय कम्पनीको भरतपुर मिल गया था। सन् १८२६ ई०की ब्रह्मदेशमें प्रथम

आमावस्था (सं० स्त्री०) अपक्व अवस्था, कच्ची हालत।

आमावास्य (सं० त्रि०) अमावस्यायां भवम्, अण्। सन्धिवेलाद्यृतुनक्षत्रेभ्योऽण्। पा ४।३।१६। १ अमावस्या-जात, अमावसको पैदा होनेवाला। २ अमावस्या वा उसके उत्साहसे सम्बन्ध रखनेवाला। ३ अमावस्याको पढ़नेवाला। (क्लो०) ४ अमावस्याका हवन।

आमाशय (सं० पु०) आमस्य अपक्वान्नस्य आशयः, ६-तत्। १ जठर, कोठ, देहके मध्य और नाभिके ऊर्ध्व रहनेवाला भुक्त अपक्वान्नादिका स्थान, मेदा, पचौनी, जिसके बीच और तोंदीके ऊपर खाये हुये कच्चे अनाज वग़ैरकी जगह। सुश्रुतके मतसे देहमें सात आशय होते हैं,—वाताशय, पित्ताशय, श्लेष्माशय, रक्ताशय, आमाशय, पक्वाशय और मूत्राशय। इससे अतिरिक्त स्त्रियोंके गर्भाशय भी रहता है। आमाशयका स्थान नाभि और स्तनके मध्यभागमें है। इसका प्रशस्त अंश नाभिके ऊपर वामदिक्को दौड़ा और धीरे-धीरे सूक्ष्म बनते हुये दक्षिण ओरको घूम यकृत्के अधोभागमें जा पहुंचा है। आमाशय मांस और सूक्ष्म चर्मसे गठित है। इसपर क्षुद्र-क्षुद्र विवर रहते, जिनका व्यास $\frac{१}{२००}$ से $\frac{१}{१००}$ इञ्चतक देखते हैं। इन्हीं विवरोंमें आमरस भर जाता है। आमरस देखो।

२ प्रवाहिका रोग, इस्‌हाल, दस्त लगनेकी बीमारी।

आमाहल्दी (हिं० स्त्री०) आम्रहरिद्रा। Curcuma Amada. यह बङ्गालमें तथा पहाड़पर होती और आधी बरसात बीतनेपर फूलती है। वैद्यशास्त्रके मतसे आमाहल्दी तिक्त, अम्ल, रुचिप्रद, लघु, अग्नि-दीपन, उष्ण, तुवर, सर एवं मत रहती और कफ, उग्रव्रण, कास, श्वास, हिक्का, ज्वर, मुखरोग तथा रक्तदोषको दूर करती है। (वैद्यकनिघण्टु) इसका कन्द शीतल होता, कण्डूमें उपकार पहुंचाता और अग्निवर्धन एवं वायुनाशनके लिये भी व्यवहारमें आता है। अम्लान अवस्थामें इससे हरे आम-जैसा गन्ध निकलता है। किन्तु आमाहल्दीमें अदरकसे अधिक गुण नहीं देखते। लोग क्षत और सन्ध्यभि-घात पर इसे बांटकर लगाते हैं। आमाहल्दीकी जड़ कफनाशक, स्तम्भक और अतीसार तथा मेहविकारमें उपकार करनेवाली है। यह मसाले और तरकारीकी तरह भी काम आती है।

आमिक्षा (सं० स्त्री०) आ-मिक्ष्यते सम्यक् सिच्यते, आ-मिह मिष वा कर्मणि सक्-टाप्। उत्तप्त और घनीभूत दुग्धका मिश्रद्रव्य, पञ्छेका कुन्दा, खौलते दूधमें दही डालकर बनायी हुई चीज़।

'आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्दधियोगतः।' (अमर)

आमिक्षीण (सं० क्लो०) आमिक्षायै हितम्, ख। दधि, दही, जिस चीज़से पञ्छेका कुन्दा बने।

आमिक्षीय (सं० त्रि०) आमिक्षायै हितम्, छ। विभाषा हविरपूपादिभ्यः। पा ५।१।४। १ आमिक्षा बनानेके लिये उपयुक्त, जिससे पञ्छेका कुन्दा बन सके। २ दधिसे प्रस्तुत किया हुआ, जो दहीसे बना हो।

आमिक्ष्य, आमिक्षीय देखो।

आमिख (हिं०) आमिष देखो।

आमितौजि (सं० पु०-स्त्री) अमितौजस्-इञ्। बाह्वादिभ्यश्च। पा ४।१।९६। अमितौजाका पुत्र वा कन्यारूप अपत्य।

आमित्र (सं० त्रि०) अमित्र-अण्। १ शत्रुसम्बन्धीय, दुश्मन्से ताल्लुक़ रखनेवाला। "नाशामामित्रो व्यथिरा दधर्षति।" (ऋक्संहिता ६।१४।३) 'आमित्रः अमित्रस्य शत्रोः सम्बन्धि।' (सायण) २ अमित्रसे उत्पन्न। "तस्मादनामित्रो स्तग्य जाता।" (शतपथ-ब्राह्मण १३।१।६।१) 'आमित्रो अमित्रयोः पुत्रौ।' (हरिस्वामी)

आमिन (हिं० स्त्री०) आम्रविशेष, किसी क़िस्मका छोटा आम। यह अवधमें उत्पन्न होती और खानेमें ख़ूब मीठी लगती है। वास्तवमें यह शब्द 'आम'का स्त्रीलिङ्ग है।

आमिल (अ० पु०) १ सम्पादक, निर्वाहक, सुरतकिव, काम करनेवाला। २ अधिकारी, हाकिम। ३ आय-संग्राहक, तहसीलदार। ४ मायी, ऐन्द्रजालिक, ओझा, मदारी, जादूगर।

आमिल-पुलिस (हिं० पु०) नगररक्षी, पुलिसका अफ़सर। यह शब्द हिन्दीमें अरबी 'आमिल' और अंगरेज़ी 'पुलिस'के योगसे बना है।

आमिश्र (सं० त्रि०) संसृष्ट, मिला हुआ। निघण्टु काण्डमें (४।३।१) देवताओंमें इसका प्रयोग किया है।

आमिश्ल (वै० त्रि०) आमिश्रण मिश्र, अवर मिलानेवाला, जो मिलानेमें बैठा हो। "स सोम आमिश्लतमः सुतोऽभूत्।" ऋक् ६।२९।४। 'आमिश्लतमः आमिश्रयितृतमः।' (सायण)

आमिष (सं० क्ली०) अम् गतौ भोजने सम्पद्ये टिषच् दीर्घश्च। १ मांस, गोश्त। २ भक्ष्यमांस आमिषका गोश्त। ३ भोग्य वस्तु, काममें लाने लायक चीज़। ४ भोजन, गिज़ा। ५ सम्भोग, विषय मज़ा मज़ेदारी। ६ उत्कोच, रिश्वत। ७ लाभ, फायदा। ८ कामगुण, ख्वाहिश। ९ मनोहररूप, दिलकश सूरत। १० सुन्दर आकार।

आमिष शब्दसे मत्स्य एवं मांस उभयका बोध होता है। 'वैष्णव आमिष नहीं खाता' कहनेसे समझ पड़ता, कि वह मत्स्य एवं मांस दोनोंसे दूर रहता है। अतः आमिषमें दो अर्थ है। किन्तु शरीरसे निकलते भी दुग्ध आमिष नहीं कहाता। शास्त्रकारोंने षष्ठी, अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या तथा पूर्णिमा तिथि, रविवार और संक्रान्तिको आमिष खाना रोका है। इनका विशेष विवरण 'मत्स्य' और 'मांस' शब्दमें देखो। सजातीय विधवा और ब्रह्मचारी दोनो आमिष नहीं खाते। किन्तु तन्त्रके मतानुसार जो ब्रह्मचर्य रखता वह आमिष खा सकता है।

आमिषखार (सं० क्ली०) मोचिक एवं गोश्त मसालेवाली चीज़।

आमिषगन्धिनी (सं० स्त्री०) पूतनी, पूर्वोक्त गोश्तकी तरह महकनेवाली चीज़।

आमिषप्रिय (सं० पु०) १ काकपक्षी कौवा। (त्रि०) २ मांसभक्षक, गोश्तखोर।

आमिषभुज् (सं० त्रि०) मत्स्य मांस भक्षक, मछली और गोश्त खानेवाला।

आमिषभुक्, आमिषभुज् देखो।

आमिषाशिन्, आमिषाश् देखो। (पु०) आमिषाशी। (स्त्री०) आमिषाशिनी।

आमिषामय (सं० पु०) रक्त, चरबी, गोश्तका रोग।

आमिषी (सं० स्त्री०) आमिष-अच्-ङीप्। वर्ण अधिकरी पा० ४।१।४० । मिषी जटामांसी, बालछड़।

आमिस् (वै० पु०) १ मांस, गोश्त। "न वा उ अमिति आमिषा।" (ऋक् १०।२७।१) 'अमिति आमिषं मांसं।' (सायण) २ मद, मुर्दा। इस शब्दका प्रयोग केवल वेदकी प्राचीन संहितामें मिलता है।

आमी (हिं० स्त्री०) १ क्षुद्र एवं अपक्व आम्र, छोटा और कच्चा आम, कैरी, अंबिया। २ वृक्ष विशेष एक पेड़। इसे सुहा या साल भी कहते हैं। परिमाणमें आमी छोटी होती और प्रतिवर्ष आश्विन कार्तिक मास फले झाड़ती है। आन्तरिक काष्ठ किञ्चित श्यामता लिये पीत, दृढ़ और कठोर निकलता है। इसकी चितनी जो वस्तु इससे बनती हैं। हिमालयके लोग इसके काष्ठसे पेटक प्रस्तुत करते हैं। शिमले कुनार, कुमायूं आदिके पर्वतपर आमी प्रचुर उपजती है। ३ मद्य अथवा गोधूमकी दग्ध मञ्जरी।

आमीं (अ० अव्य०) १ ओम् भवतु, एवमस्तु, तथास्तु ऐसा ही हो, तेरे मुंह घी-शक्कर। २ ईश्वर बचाये।

आमीला, आमिला देखो।

आमीन्—अमीनाराके दक्षिण पूर्वका एक बड़ा जङ्गल। इसे अभिमन्युखेड़ा या चक्रव्यूह भी कहते हैं। यहीं जयद्रथने अभिमन्युको मार डाला था। इस जङ्गलमें आमीन् नामक ग्राम भी बसा, जिसमें अदिति और सूर्यदेवका मन्दिर बना है। यहां सूर्यकुण्ड विद्यमान है। यौड़ ब्राह्मण अधिक रहते हैं। स्त्रियां पुत्र प्राप्तिको ग्रामनामसे अदितिका पूजतीं और सूर्यकुण्ड नहाती हैं। (अ० अव्य०) आमीं देखो।

आमीलन (सं० क्ली०) नेत्रोंका विराम आंखोंका बन्द करना।

आमीवत् अमीवत् देखो। (पु०) आमीवान्। (स्त्री०) आमीवती।

आमीवत्क (वै० त्रि०) सम्मुख मापक सामना पकड़नेवाला। (स्त्री०) आमीवत्का।

आमुक्त (सं० त्रि०) १ पक्व, जो छोड़ दिया गया हो। २ विमुक्त, छूटा हुआ। ३ क्षिप्त, फेंका हुआ।

४ धारण किया या पहना हुआ। ५ प्रसाधित, जो क़तारमें हो।

आमुक्ति (सं० स्त्री०) १ निवृत्ति, छुटकारा। २ मोक्ष, निजात। (अव्य०) ३ जीवनके अन्त पर्यन्त, कयामके अख़ीरतक।

आमुख (सं० क्ली०) १ आरम्भ, आगाज़। २ प्रस्तावना, उनवान्। (अव्य०) ३ मुख पर्यन्त, मुंहतक।

आमुप (सं० पु०) कण्टकयुक्त वंशविशेष, बीहड़ बांस। Bambusa spinosa यह मन्द्राज प्रान्तके उत्तर-पूर्व विभाग, बङ्गाल, आसाम और ब्रह्मदेशमें स्वतः उत्पन्न होता है। युक्तप्रान्तमें इसे लगाया करते हैं। आमुपका रङ्ग पीला होता और सूक्ष्म सूत्रवत् रेखाका चिह्न पड़ जाता है। वकला चमड़े-जैसा कड़ा रहता है। फूल काम आता है। पत्ती छोटी तथा नीचेकी ओर बालदार होती और पेंदीमें उभरी हुई टहनी रहती है। बीहड़ बांस बहुत मोटा नहीं होता, किन्तु अपर जातिकी अपेक्षा दृढ़ ठहरता है। लम्बाई ३०से ५० फीटतक बैठती और लकड़ी साफ़ सुथरी निकलती है। यह दूसरे बांसकी तरह कितने ही काम देता है।

आमुर् (वै० पु०) बाधक, बरबाद करनेवाला। "महि मा ते मतं धन राधी वरन्त आमुरः।" (ऋक् ४।३१।९।) सायणाचार्यने ऋग्भाष्यमें इस शब्दका बाधक, राक्षस, अभिमारक और आमूढ़ प्रभृति अनेक अर्थ लगाया है।

आमुरा—वृक्षविशेष, एक पेड़। Amoora cucullata. इसे लतमी या नतमी भी कहते हैं। यह बङ्गाल, नेपाल, अन्दामान एवं ब्रह्मदेशमें उपजता, मध्यम मानका होता और सदा हराभरा रहता है। आमुरा धीरे-धीरे बढ़ता है। वकला खाकी होता है। पत्तियां नीचेकी ओर चिकनी, तिरछी लम्बी-चौड़ी, दोनो किनारे चपटी और नोकपर ढकी देख पड़ती हैं। फूल फाड़ीदार निकलता है, किन्तु कील नहीं छोड़ता। लकड़ी लाल, दानेदार परन्तु चटख़ जानेवाली होती और वजनमें प्रति घनफट २२।२३ सेर बैठती है। निम्न बङ्गालमें इससे खूंटे, खम्बे वग़ैरह बनाते और सुन्दरवनमें जलानेका काम लेते हैं।

आमुरि (वै० पु०) मारयिता, नाशक, बरबाद करनेवाला। "कृत्वा वरिष्टं वर आमुरिमुत।" (साम १।७।२।७।१।) 'आमुरि इव आमामिमुखेन मारयितारमिन्द्रं।' (सायण)

आमुष्यकुलक (सं० क्ली०) पाणिनोक्त गण विशेष।

आमुष्यपुत्रक, आमुष्यकुलक देखो।

आमुष्यायण (सं० पु०) अमुष्य-फक्। आमुष्यायणामुष्यपुत्रिकामुष्यकुलिकेति च। पा ४।१।९९ वार्तिक। अमुष्यपुत्र, बड़े आदमीका बेटा।

आमूल (सं० अव्य०) मूल पर्यन्त, माड़तक, मसदरसे, एक-क़लम, तमाम।

आमृज्य (सं० अव्य०) प्रक्षालनपूर्वक, पोंछ या मींडकर।

आमृण (सं० त्रि०) भेद्य, क़ाबिल-मजरूही, जिसे नुक़सान् लग सके।

आमृत (सं० त्रि०) मर्त्य, क़ाबिल-मौत, मरनेवाला।

आमृत्योस् (सं० अव्य०) मृत्यु पर्यन्त, मरनेतक।

आमृष्ट (सं० त्रि०) मर्दित, मला या मीड़ा हुआ।

आमेज़ करना (हिं० क्रि०) मिलाना, भर देना। इसमें आमेज़ शब्द फ़ारसीका पड़ता, जो मिलानेका अर्थ रखता और सदा दूसरे शब्दके साथ लगता है।

आमेजना, आमेज़ करना देखो।

आमेज़िश (फ़ा० स्त्री०) मिश्रण, मिलौनी, मेल।

आमेन्य (वै० त्रि०) बाण वा शक्तिद्वारा गम्य, सम्पूर्ण परिमेय, तीरसे हाथ आनेवाला, जो सब तर्फ़से नापा जाता हो। "आमेन्यस्य रजसो यदभ्र आं अपो वृणाना वितनोति।" (ऋक् ५।४८।१) 'आमेन्यस्य समन्तान्मातव्यस्य।' (सायण)

आमेर—अम्बर नगर एक शहर। यह राजपूतानेमें जयपुरके समीप अवस्थित है। प्रथम जयपुर राज्यकी राजधानी यहीं रही। अम्बर देखो।

आमोक्षण (सं० क्ली०) आ-मोक्ष भावे ल्युट्। धारण, परिधान, कसने या बांधनेका काम।

आमोख़्ता (फ़ा० पु०) परिणत पाठ, पुराना सबक़।

आमोख़्ता पढ़ना (हिं० क्रि०) पुनर्दर्शन करना, पुराना सबक़ फेरना।

आमोख ता पेरना, आमोखता पेरना देखो।
आमोचन (सं० क्लो०) आ-मुच्-ल्युट्। १ मिक्तिको करण, छोड़ देनेका काम। २ परिधान, संयोग, लगाव पहनाव।
आमोद (सं० पु०) आ मुद-घञ्। १ प्रमोद, आदमानी, मौज। 'स्वर्दधामोदः' (नैष) २ दूर गामी गन्ध, तेज महक। 'आमोदो गन्धहर्षयोः' (मेदिनी) ३ परिमल, खुशबू। ४ मतावरी।
५ बम्बई प्रान्तके भड़ोंच जिलेको तहसील। यह उत्तर प्रान्त बावीस लम्बा तथा तीस मील चौड़ा है। उत्तर ढाढर नदी, पूर्व बड़ोदा राज्य और दक्षिण तथा पश्चिम भड़ोंच एवं वागरा तहसील अवस्थित है। क्षेत्रफल १०६ वर्गमील है। किन्तु ग्राम कहीं नहीं देख पड़ते। ढाढर नदीके समीप जङ्गल है। पानीकी कमी रहती है। कूप थोड़े और तालाब छोटे हैं। भूमि काली होते भी पश्चिमकी ओर भूरी पड़ती है जो जोती-बोयी जा नहीं सकती। पूर्वमें पैदावार अच्छी होती है। (त्रि०) ६ मोति प्रद समन्दर या खुश करनेवाला।
आमोदक (सं० पु०) प्रमातिका, मद्रवायन।
आमोदजननी (सं० स्त्री०) नागवल्ली, पान।
आमोदन (सं० क्लो०) आ मुद ल्युट्। आमोद करण प्रदर्शन, मन्नमजी, मसखरी, रिझानेका काम।
आमोदप्रमोद (सं० पु०) हर्ष सन्तोष, खुशी खुरमी, राग रङ्ग।
आमोदा (सं० स्त्री०) १ मतावरी, सतावर। २ केयूर गिरि शिखरस्थ ग्राम विशेष, केयूर पहाड़की चोटी पर बसनेवाला गांव। यह गोरी बन्दरमें चाले तीन कोस दक्षिण पूर्व है। गौड़ राजत्व करते हैं। यहां आमीके मरनेसे पहले महगामी होते हैं। यमोका बड़ा आदर सम्मान और आबाद स्तम्भस्थापन किया जाता है। सन् १५६६ ई०को गौड़राज प्रेम नारायणके राजत्वकाल एक की सदमता हुई, जिसके स्तम्भस्तम्भमें यह बात खुदी है। (Cun. Arch. Reports IX 39)
आमोदित (सं० त्रि०) १ मौज, मादमान्, खुम। २ सौरभित, सुवासर सोंधा।
आमोदिन् (सं० त्रि०) आमोद इनि। १ हर्षयुक्त, मादमान् खुम। २ गन्धयुक्त, सुवास, सोंधा। समासान्तमें यह शब्द 'गन्धयुक्त'का अर्थ रखता है, जैसे—कदम्बामोदिन् कदम्बकी गन्धसे युक्त। (स्त्री) आमोदिनी।
आमोदी (सं० पु०) १ मुखवासन, मुंहको महकाने वाला। २ कपूरादिविरचित सुगन्ध, कपूरकी छोड़ीसे बना हुआ मुंह महकानेका मसाला। वर्तमान समयमें ताम्बूल-विहारादिको आमोदी ही समझना चाहिये।
आमोष (सं० पु०) आ-मुष् भावे घञ्। हरण, मारना, चोरी। "यथा स्थितानि धनानि...सत्ता कर्म नीयी किती कर्ता ।" (मनव-माध्य ११।११४)
आमोषिन् (सं० त्रि०) हरणकर्ता, चोर, मूसने वाला। (पु०) आमोषी। (स्त्री०) आमोषिणी।
आमोहनिका (सं० स्त्री०) अपूर्व सुगन्ध, निराली महक।
आम्नात (सं० त्रि०) आ-म्ना-क्त। १ सुन्दर अभ्यस्त, सम्यगधीत, याद किया हुआ, जो भूला न हो। (क्लो०) आ-म्ना भावे क्त। २ सम्यगभ्यास, अच्छी महारत।
आम्नातिन् (सं० त्रि०) आम्नातमनेन, इनि। अभ्यास रखनेवाला, जिसे महारत रहे। (पु०) आम्नाती। (स्त्री०) आम्नातिनी।
आम्नान (सं० क्लो०) आ-म्ना-ल्युट्। १ वेदादिपाठ, वेदादिका अभ्यास। "आम्नानं रहस्य।" ...। २ आवेदन, नामपदम, तजकिरा।
आम्नाय (सं० पु०) आम्नायते सम्यगभ्यस्यते, आम्ना कर्मणि घञ्। १ वेद, श्रुति। "...।" (अमर) २ आगमप्रधान तन्त्रशास्त्र। भावे घञ्। ३ सम्यगभ्यास, सम्यक पाठ, अच्छा महावरा, पाया अक्षय। ४ सम्प्रदाय। '...।' (अमर) ५ उपदेश नसीहत। '...।' (मेदिनी) ६ कुल, खान्दान्। ७ कुलपरम्परा, खान्दान, रस्म।

८ शिक्षादान, तालीम देनेका काम। ९ तन्त्रशास्त्र। महादेवने स्वयं कहा है—

"मम पञ्चमुखेभ्यश्च पञ्चाम्नाया विनिर्गताः।
पूर्वश्च पश्चिमश्चैव दक्षिणश्चोत्तरस्तथा।
ऊर्ध्वाम्नायश्च पञ्चैते मोक्षमार्गाः प्रकीर्त्तिताः।" (तन्त्र)

आम्नायसारिन् (सं॰ त्रि॰) १ वेदानुयायी, धार्मिक, पाक-साफ। २ वेदतत्त्वयुक्त। (पु॰) आम्नायसारी। (स्त्री॰) आम्नायसारिणी।

आम्प्रत्यय (सं॰ त्रि॰) आम् प्रत्यययुक्त, लफ्ज़की आख़िर अलामत आम्‌को रखनेवाला।

आम्व (सं॰ पु॰) धान्य विशेष, आमन धान।
"सत्यायाम्वानां चरुं वरुणाय धर्मपतये।" (तैत्तिरीयसंहिता १।८।१०)
'आम्वाः धान्यविशेषाः।' (सायण) यह धान्य शीत कालमें उपजता है। कृषक वैशाख मास खेतको मट्टी हलसे बना रखते हैं। वर्षा आनेसे वीज पड़ता है। खेतको तीन वार जोता करते हैं। शिखा कुछ बढ़नेपर अच्छा आम्व दूसरे खेतमें उखाड़ कर लगाया जाता है। पहले खेतको पानीसे भर कृषक पुनः पुनः हल चलाते रहते हैं। उस समय खेतमें कीचड़ भरा रहता है। फिर शिखायुक्त धान्य हाथ-डेढ़ हाथके अन्तर जमा देते हैं। जमीन् ज्यादा नर्म रहनेसे वर्षाके जलमें आम्व विगड़ सकता है। यह धान्य बङ्गालमें अधिक उपजता और बङ्गवासियोंका जीवन-स्वरूप होता है। राजनिघण्टु, भावप्रकाश और मदनविनोदमें आम्वके निम्नलिखित पर्याय मिलते हैं,—शालि, मधुर, रुच्य, व्रीहिश्रेष्ठ, नृपप्रिय, धान्योत्तम, केदार, सुकुमारक, रक्तशालि, कलम, पाण्डुक, शकुनाहृत, सुगन्धक, कर्दमक, महाशालि, दूषक, पुष्पाण्डक, पुण्डरीक, महिष-मस्तक, दीर्घशूक, काञ्चनक, हायन, लोध्रपुष्पक, कलामक, पुण्ड्र, लोहित, गरुड, शकनीहृत, सुगन्धिक, पूर्णचन्द्र, प्रमोदक, शीतभीरु, काञ्चन, पाण्डुगौर, गारिवा, रोध्रपुष्प, दीर्घलात और महादूषक।

वैद्यशास्त्रके मतसे यह मधुर, स्निग्ध, वलकारक, मलको कठिन एवं अल्प बनानेवाला, कषाय, लघुपाकी, रुचिकर, कण्ठ-स्वर-परिष्कारक, शुक्र-पुष्टि-कर, अल्प वायु तथा कफकर, शीत, पित्तनाशक, और मूत्र-कर होता है।

खेतमें वीज पड़ने पीछे पौदा फूटता है। पौदा उखाड़ कर दूसरे खेतमें न लगानेसे जो धान उपजता, वह अल्प गुणविशिष्ट होता है। किन्तु पौदेको उखाड़ दूसरी जगह लगा देनेसे आम्व धान्य नूतन अवस्थामें शुक्रवर्धक और पुराना पड़ने पर परिपाक-लघु एवं उपकारी है। इससे अधिक मल नहीं बढ़ता। वे-जोते खेतका धान्य अल्पतिक्त, मधुर, कषाय, पित्त-तथा कफनाशक और वायु एवं अग्निवर्धक है। जोते खेतमें उपजनेसे यह वलकर, मेधाजनक, गुरु, कफ तथा शुक्रवर्धक एवं कषाय होता, अल्प मल लाता और वायु-पित्तको नाश करता है। खेत जल जानेसे उपजनेवाला आम्व कषाय, लघु, रुक्ष, मल-मूत्रकर और कफनाशक है।

रक्तशालिको हिन्दीमें दाऊदखानी या मिही चावल कहते हैं। वैद्यशास्त्रके मतसे यह वलकर, त्रिदोषनाशक, चक्षुके पक्षमें उपकारी, मूत्र-शुक्र-अग्नि-वर्धक और पुष्टिकर है। इससे वर्ण एवं स्वर परिष्कार पड़ता और पिपासा, ज्वर, विष, व्रण, श्वास, कास तथा दाहका नाश होता है। (मदनविनोदनिघण्टु)

आजकल आम्व धान्य पृथिवीपर प्रायः सकल स्थानमें उपजा करता है। भारतवर्षके अतिरिक्त जापान, चीन, सिंहल, भारत महासागरके द्वीपसमूह, ब्रह्म, श्याम, लोहितसागर-तीरस्थ स्थान, मिश्र (इजिप्ट), मादागास्कर, पूर्व अफरीका, दक्षिण-यूरोप, अमेरिकान्तर्गत ब्रेजिल और उरुगुया पराना प्रभृति प्रदेशमें इसकी खेती की जाती है। नेपाली बंगलेसे नहीं मिलता, आकारमें कुछ प्रभेद पड़ता है। अमेरिकामें अब उत्कृष्ट आम्व होने लगा है। किन्तु सकल स्थानकी अपेक्षा वङ्गालमें ही वह अधिक उपजता है। ब्रटिश सरकार अमेरिकासे आम्व मंगा मन्द्राज प्रदेशके स्थान-स्थानमें खेती कराती है। हिमालय प्रदेशका वीज आजकल अवध और वङ्गालमें खूब बोया जाता है।

आम्बता—युक्तप्रान्तके सहारनपुर जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २९° ५१´ १५´´ उ० और द्राघि० ७७° २२´ १५´´ के मध्य अवस्थित है। यहांके मुगल फौजकी यहां चौकी रहती। शाह अबुलमालीका सुन्दर समाधि मन्दिर बना है। पीरजादे निष्कर भूमि भोगते हैं। इस नगरमें ईंटके बड़े बड़े मकान खड़े हैं।

आम्बरीषपुत्रक (सं० पु०) अम्बरीषपुत्र चतुरर्थ्यां वुञ्। [illegible]। पा ४।२।८०। १ अम्बरीष ऋषिके पुत्र। २ देशविशेष।

आम्बष्ठ (सं० पु०) अम्बष्ठस्यापत्यम् अण्। [illegible]। पा ४।१।११४। १ अम्बष्ठका पुत्र वा कन्या रूप अपत्य। २ अम्बष्ठ देशका रहनेवाला।

आम्बात-बिहार प्रदेशके कायस्थोंकी एक श्रेणी। आम्बात दो प्रकारके होते हैं,—बरयायत और बहरायत। बरयायत अनेक दिनसे प्रतिष्ठित और सरकार, मरहम, पटवार तथा परवार श्रेणीमें विभक्त हैं। बहरायतोंमें पयास, पिपहार, रुवार आदि उपाधि प्रचलित है। पटने, तिरहुत, दरभङ्गे, मुजफ्फरपुर सारन चम्पारन, मुङ्गेर, भागलपुर, राजशाही, दीनाजपुर, मल्दाह आदिमें अधिकतर यह देख पड़ते और प्राय बड़े आदमियोंकी नौकरी करते हैं।

आम्बातोंमें बाल्यविवाहकी प्रथा है। शैशव अवस्थामें पुत्र वा कन्याका विवाह कर सकनेपर यह अपनेको मानी समझते हैं। ऐसा कम रहनेसे विवाह होना कठिन है। बहु विवाहकी रीति भी देख पड़ती है। स्वामी मर जाने पर विधवा स्त्रीके सहोदरके दूसरे देवरसे उसका पुनर्विवाह होता है। सतीका बड़ा आदर है। प्राय सकल ही शाक्त हैं। कालीके निकट बकरेका बलिदान देते हैं। उपास्य देवता पांच हैं—भवानी गोरया, सोखा, बंदी और पिकूराम। पान, सुपारी मोठे भात और केलेसे भवानीकी पूजा है। गोरयेपर सूअरका होना चढ़ता है। सोखाको रोटी प्यारी है बंदीके लिये मिठाई आती है। पिकूराम मद्यपान लेता है। बहुत दिनसे आम्बातोंके पूर्वपुरुष उनकी पूजा करते आये हैं। आश्विन मास पितृपुरुषोंके उद्देश्यमें तर्पण होता है। ब्राह्मण इनके हाथका जल पी लेते हैं।

आम्बाद—दक्षिण हैदराबादका एक तालुक। इसका परिमाण ८६० वर्गमील है। २११ ग्राम बसते हैं। महाराष्ट्रोंके अधीनता स्वीकार करनेपर आम्बादमें अंगरेजोंका अधिकार हुआ था। कुछ दिन बाद यह निज़ामके राज्यमें मिला और सन् १८६२ ई०को स्वतन्त्र जिला बना। उस समय अम्बरी, पुरमानी, जलनापुर, मरहो, पैठन और आम्बादमें तहसीलदारी रही। चार वत्सर पीछे अनेक परिवर्तन पड़ा था। जिलेकी बड़ी अदालत औरङ्गाबाद उठ जानेपर यह फिर तालुक हुआ। तहसीलोंका भी अधिक ह्रास है।

आम्बिकेय (सं० पु०) अम्बिकाया अपत्यम् ढक्। स्त्रीभ्यो ढक्। पा ४।१।१२०। १ धृतराष्ट्र। विचित्रवीर्यके पञ्चत्वप्राप्त होनेपर सत्यवतीके आदेशसे व्यासदेवने अम्बिकागर्भमें धृतराष्ट्रको उत्पादन किया था। यह बात महाभारत आदिपर्वके १०६ठें अध्यायमें लिखी है।

अम्बिकाया दुर्गाया अपत्यम्। २ कार्तिकेय। ३ पर्वत विशेष, एक पहाड़। यह शाकद्वीपके मध्य अवस्थित है। इसी पर्वतपर हिरण्याक्ष मारा गया था। (मत्स्यपुराण)

आम्बोली—रक्तकुरण्टक भेद, किसी किस्मकी झाड़ी। यह प्राकृत मन्द ठहरता और कोङ्कण देशमें चलता है।

आम्भस (सं० त्रि०) जलात्मक पानी पनीला।

आम्भसिक (सं० पु०) अम्भसा चरति ठक्। १ मत्स्य, मछली। (त्रि०) २ जल-सम्बन्धीय दरयायी।

आम्भि (सं० त्रि०) अम्भसो जातादि, इञ् समाप्त। बाह्वादिभ्यश्च। पा ४।१।९६। जलजात, आबी, पानीसे पैदा।

आम्भृणी (सं० स्त्री०) वाक्, अम्भृण ऋषिकी कन्या।

आम्म (हिं० पु०) मार्जारविशेष एक जानवर। यह नकुल सदृश होता है।

आम्र (सं० पु०) अम गत्यादिषु रन् दीर्घश्च।

अमितम्योर्दीर्घश्च। उण् २।१६। १ स्वनामख्यात वृक्षविशेष, आमका पेड। 'आम्रश्चूतो रसालोऽसौ।' (अमर) (क्ली०) आम्रस्य फलम्, अण्। २ आम्रफल, खानेका आम। आम, चम, कोशाम, महाराजाम्र, रसाम्र, राजाम्र और साधारणाम्र शब्द देखो।

आम्रकवि—आदित्यनागके पुत्र। उदयपुरमें गुहिल वाहनका जो टूटा-फूटा शिलालेख मिला, उसे इन्होंने ही बनाया था।

आम्रकूट (सं० पु०) पर्वतविशेष, एक पहाड। हिन्दीमें इसे अमर-कण्टक कहते हैं। अमरकण्टक देखो।

आम्रगन्धक (सं० पु०) आम्रस्येव गन्धो यस्य, बहुव्री० कप्। १ समष्ठिलक्षुप, किसी क़िस्मका झाड। २ आमाहलदी। आमाहल्दी देखो।

आम्रगन्धा (सं० स्त्री०) १ मूलकाण्डप्रसिद्ध वृक्ष-विशेष, कपूरहलदी।

आम्रगन्धि, आम्रगन्धा देखो।

आम्रगन्धिहरिद्रा (सं० स्त्री०) आम्रहरिद्रा,आमाहलदी।

आम्रगुप्त (सं० पु०) गोत्रप्रवर्तक ऋषि-विशेष।

आम्रतैल (सं० क्ली०) आम्रस्थित तैल, आमकी तेल। यह ईषत् तिक्त, मधुर, नातिपित्तकृत्, वातकफहर, रुक्ष, सुगन्ध, और विशद होता है। (मदनपाल) सहकार तैल ईषत् तिक्त, अतिसुगन्धि, कफ-हर, सूक्ष्म, मधुर, कषाय और नाति-रक्त-पित्तकर है। (चरिकसंहिता)

कच्चे आमको टुकडे टुकडे कर अथवा बीचसे फार नमक, मिर्च मसाला भरते और सरसोंके तेलमें डाल देते हैं। दो-चार दिन बाद तेलको धूप देखायी जाती है। जब आम नमकके कारण पकता, तब यह तेल बनता है।

आम्रत्वचा (सं० स्त्री०) आम्रवल्कल, आमकी छाल। यह कषाय होती है। (राजनिघण्टु)

आम्रनिशा (सं० स्त्री०) आम्रहरिद्रा, आमाहलदी।

आम्रपल्लव (सं० पु०-क्ली०) आम्रकिसलय, आमका पत्ता। यह रुच्य और कफ-पित्तघ्न होता है। (भावप्रकाश) आमका पत्ता अच्छीतरह चबाकर रगड़नेसे दांत ख़ूब मजबूत पडते और चमकने लगते हैं।

आम्रपाली (सं० स्त्री०) स्त्री विशेष, किसी मशहूर औरतका नाम। यह एक बौद्धरमणी रहीं। बुद्धके वैशालीमें ठहरते समय इन्होंने विश्रामार्थ बाग भेंट किया और स्मरणार्थ मन्दिर बनवाया था। फा-हियान और हियोनसियाङ्ग ध्वंसावशेष देख गये। कहते, कि वैशालीमें महानामन् नामक एक लिच्छवि नृपति रहते थे। उनके उद्यानमें कदलिवृक्षसे इन्होंने जन्म लिया। यह अत्यन्त सुन्दर और सुगठित रहीं। महानामन्‌ने आम्रपाली नाम रखा। किन्तु वैशाली-की व्यवस्थाके अनुसार उत्कृष्ट स्त्री विवाह न करने और लोकप्रीतिके लिये रक्षित रहनेको बाध्य थी। इसीसे यह वेश्या बन गयीं। मगध नरेश विम्बिसार गोपाल द्वारा समाचार पा वैशाली पहुंचे और लिच्छि विसे युद्ध चलते भी सात दिन इनके पास रहे थे। आम्रपाली विम्बिसरके सहवाससे गर्भवती हुयीं। इन्होंने पुत्रको बडा होनेपर पिताके पास भेज दिया था। वह राजाके पास पहुंचते ही निर्भय भावमें छातीसे जा चिपटा। उसपर राजाने निरूपण किया, बालक भयका नाम भी जानता न था। इसीसे उसे लोग अभय कहने लगे।

बुद्धके वैशाली पहुंचने पर आम्रपालीने जाकर साक्षात् किया और दूसरे दिन अपने घरमें भोजन करनेको निमन्त्रण दिया था। बुद्धने इनका निमन्त्रण अङ्गीकार किया। किन्तु उसी दिन थोडी देर बाद वैशाली नृपति लिच्छविस भी बुद्धसे मिलने गये। बुद्धने राजाका निमन्त्रण इस लिये स्वीकार न किया, कि आम्रपालीके पास जाना ठहर चुका था।

आम्रपुष्प (सं० क्ली०) आम्रमुकुल, आमका बौर। यह रुच्य और दीपन होता है। (राजनिघण्टु) इसमें अतीसार, कफ, पित्त, प्रमेह एवं रक्तदुष्टि दूर करने और शीत तथा वात बढानेका गुण विद्यमान है। (भावप्रकाश) आमका बौर पहले-पहल वसन्तमें विष्णु भगवान्‌पर चढता है। खुशबू बहुत मीठी होती है। यह पञ्चबाणका एक अङ्ग है।

आम्रपेशिका, आम्रपेशी देखो।

आम्रपेशी (सं० स्त्री०) आम्रस्य पेशीव। शुष्काम्र-

अम्ल, अमचूर। यह रस मधुर कषायरस, भेदक और वात-नाशक होती है। (भावप्र०) अमचूर अथ मर नमक मिलाकर रख छोड़ते और दालमें डालते या चटनी बनाते हैं। अमचूरकी चटनी हरी धनिया मिला देनेसे बहुत अच्छी लगती है।

आम्रप्रसाद—नृपति विशेष। भावनगरके शिलालेखमें इनका उल्लेख है।

आम्रफल (सं० क्ली०) आम्र आम। अम्र देखो।

आम्रफलपानक (सं० क्ली०) आम्रकृत जल पानक विशेष, आमका पना। कच्चे आमको पानीमें पका हाथसे खूब मले और चीनी, कपूर, मिर्च मिला दे। यह प्रपानक देह सद्य रुचिकर बल्य और शीघ्र इन्द्रिय तर्पक है। भीमसेनने अपने लिये इसे बनाया था। (भावप्र०)

आम्रमय (सं० त्रि०) आम्रस्य विकारः अवयवो वा हरितात् मयट्। आम्रकृत, आमसे बना हुआ।

आम्रमूल (सं० क्ली०) आम्रशिफा, आमकी जड़। यह सुगन्ध रूक्ष, संग्राहि और शीतल होता है। (राजनिघण्टु)

आम्ररसाकृति (सं० पु० स्त्री०) आम्ररसस्येवाकृति र्यादो यस्य बहुव्री०। श्वेताम्ल रसाल विशेष, किसी किस्मका आम।

आम्रलेह (सं० पु०) आम्रकृत लेह, आमकी चटनी। तरुण आमको मूल गुड़ या चीनीके साथ मले और सेन्धव, मरिच तथा भर्जित हिङ्गु मिला दे। यह रुचिकृत्, मधुर, अतिसारघ्न हृद्य स्निग्ध और गुरु होता है। (वैद्यनिघण्टु)

आम्रवण (सं० क्ली०) आम्रस्य वनम् ६ तत् निस्र णत्वम्। [illegible] आम्रवृक्ष समूहात्मक वन आमका जङ्गल।

आम्रवन्द (सं० पु०) आम्रवन्दा आमका बाँदा। इसके पड़नेसे वृक्ष सूखने लगता है।

आम्रवट, अम्लक देखो।

आम्रवाट अम्लक देखो।

आम्रवीज (सं० क्ली०) आम्रास्थि आमकी गुठली। यह कषाय वर्दि अतीसार व ईषत् अम्ल, मधुर और हृदय दाहघ्न है। (भावप्र०)

आम्रशीतल (सं० पु०) अम्रशीतल वृक्ष।

आम्रहरिद्रा (सं० स्त्री०) आम्रगन्धा, आमाहल्दी।

आम्रात (सं० पु०) आम्र आम्रमिव अतति, आम्र अत पचाद्यच्। १ स्वनाम-प्रसिद्ध वृक्ष विशेष अमड़ेका पेड़। अमड़ा देखो। (स्त्री०) आम्रातस्य फलम् अण्। [illegible] २ अमड़ेका फल। यह फल वातघ्न गुरु उष्ण एवं रुचिप्रद होता। पकनेपर तुवर, स्वादुरसपाक, हिम तर्पक श्लेष्म, स्निग्ध वृष्य, विष्टम्भि [illegible] गुरु तथा बल्य रहता और वात पित्त क्षत, दाह, क्षय, अस्रको जीत लेता है। आम फल कषायाम्ल और पका मधुर अम्ल स्निग्ध एवं पित्त-नाशक है। (राजनिघण्टु) ३ आम्रावर्त, अमावट।

आम्रातक (सं० पु०) आम्र इव अतति आम्र अत क्विप्। १ आम्रात, अमड़ेका पेड़। [illegible] (अमर) आम्रातकस्य फलम्। २ अमड़ा। आम्रेण तदुपकरसेन तक्यते प्रकाश्यते तदर्थ मधुर या, आम्र आ तक अचाद्यच्। ३ अमरस, अमावट। ४ पक्षिविशेष।

आम्रातकेश्वर (सं० पु०) आम्रातक इव ईश्वर लिङ्गमस्य आस्य० बहुव्री०। तीर्थस्थान विशेष। यह नर्मदाके उत्तरकूलमें अवस्थित है। यहां महादेवका दर्शन होता और नहानेसे सहस्र गोदानका फल मिलता है। (मत्स्यपु०)

आम्रावती (सं० स्त्री०) आम्र आम्ररसोऽस्त्यस्याम् मतुप् मस्य व दीर्घ। [illegible] १ नदी विशेष। इसका जल आम्ररस जैसा मीठा होता है। २ नगर विशेष एक पुराना समृद्ध शहर।

आम्रावर्त (सं० पु०) आम्रप्रिय इव आम्रस्य आ वर्तते आम्र आ वृत पचाद्यच्। १ आम्रातवृक्ष, अमड़ेका पेड़। (स्त्री०) २ अमड़ेका फल। आम्रेण आम्ररसेन आवर्ण्यते निष्पाद्यते आम्र आ वृत णिच् कर्मणि घञ्। ३ अमावट। यदि आमका रस कपड़े या किसी बरतन पर निचोड़ धूपमें सुखानेसे यह बनता, सारक, रुच तथा लघु होता और तृष्णा वर्दि, वात एवं पित्तका मिटाता है। (भावप्र०)

आम्रास्थि (सं० स्त्री०) आम्र-बीज मध्य, आमकी

गुठलीका दाना। इसे हिन्दीमें बिजली कहते हैं। आम्रास्थि बहुत चिकना होता है। हिन्दुस्थानी बच्चे आपसमें बैठ इसे निकालते और दाहने हाथसे कनिष्ठा तथा अङ्गुष्ठके बीच दबा ऊपरको सरका देते हैं। यह जिस ओर जाकर गिरता, उसी ओर निर्वाचित बालकका विवाह होना समझा जाता है।

आम्लिमन् (सं० क्लो०) अम्लरसोऽस्त्यस्य, यज्ञादित्वात् अण्, दृढादिगणे आम्ल इति पाठसामर्थ्यात् रलयोरभेदत्वेन लस्य रत्वम्, तत आम्लस्य भावः इमनिच। १ अम्लत्व, खटाई। २ पाणिनोक्त गणविशेष।

आम्रेडन (सं० क्लो०) पौनरुक्त्य, तकरार-अल्फ़ाज़।

आम्रेडित (सं० त्रि०) आ-म्रेड उम्मादे क्त-इट्, आङ पूर्वोऽसमक्तत्भाषणे। १ पुनरुक्त, दोहराया या बार बार कहा हुआ। 'आर्मे डित द्विस्त्रिरुक्तम्।' (अमर) (क्लो०) आम्रे डित भर्त्सने। पा ८।१।८५। २ पौनरुक्त्य, दोहराव, तकरार।

आम्ल (सं० पु०) १ तिन्तिडी, इमलीका पेड़। २ अम्लवेतस, अमलवेत। ३ अम्लरस, खटाई। यह पाचन, रुच्य, लघु, पित्त-कफ प्रद, लेखन, उष्ण, क्लेदन, वाह्य शीतलताकर एवं वात नाशकर होता और अत्यन्त सेवनसे तिमिर, दाह, तृष्णा, भ्रम, ज्वर, कण्डू, पाण्डुरोग, विसर्प, स्फोट तथा कुष्ठ उपजाता है। (वैद्यकनिघण्टु)

आम्लका (सं० स्त्री०) नागरदेश-प्रसिद्ध पलाशी लता, एक बेल।

आम्लटक (सं० पु०) चुक्रक्षुप, चूक, तुर्शेका झाड़।

आम्लपञ्चक (सं० क्लो०) अम्लरसयुक्त फलपञ्चक, पांच खट्टे फलोंका जखीरा। कोल, दाडिम, वृक्षाम्ल, चुक्रिका एवं अम्लवेतस अथवा जम्बीर, नारङ्ग, अम्लवेतस, तिन्तिडी तथा बीजपूरक नामक पांच खट्टे फलोंको आम्लपञ्चक कहते हैं। (राजनिघण्टु)

आम्लपत्रक (सं० पु०) चुक्रा, चूक, तुर्शी।

आम्लपत्री (सं० स्त्री०) पलाशी लता। यह नागरदेशमें पलाशी और काश्मीरमें शटी कहाती है।

आम्लपित्त (सं० क्लो०) स्वनामख्यात रोग विशेष, मेदेका खट्टापन। अम्लपित्त देखो।

आम्लफल (सं० क्लो०) कपित्थ फल, कैथा।

आम्ललोटिका (सं० स्त्री०) क्षुद्र चिञ्चा, छोटी इमली।

आम्ललोणिका (सं० स्त्री०) अम्ललोणिका, सेहं, चलमोरी।

आम्लवक्त्रत्व (सं० क्लो०) पित्त-जन्य रोग-विशेष, जर्द-आबसे पैदा होनेवाली बीमारी। इससे मुंह खट्टा पड़ जाता है।

आम्लवती (सं० स्त्री०) अम्ललोणिका, अमलोनिया।

आम्लवर्ग, अम्लवर्ग देखो।

आम्लवल्ली (सं० स्त्री०) लता विशेष, एक खट्टी बेल। महाराष्ट्रमें आंबटवेल नाम प्रसिद्ध है। यह दीपन, तीक्ष्णाम्ल एवं रुचिद होती और कफ, शूल, गुल्म, वात तथा प्लीहाको खो देती है। (वैद्यकनिघण्टु)

आम्लवास्तूक (सं० पु०) चुक्रिका, तुर्शी, चूक।

आम्लवेतस (सं० पु०) आम्लो अम्लरसयुक्तो वेतसः, शाक० तत्। १ अम्लवेतस वृक्ष, अमलवेतका पेड़। अम्लवेतस और अमलबेत देखो।

आम्लवेतसक (सं० पु०) स्वार्थे संज्ञायां वा कन्। तिन्तिडीवृक्ष, इमलीका पेड़।

आम्ला (सं० स्त्री०) आ सम्यक् अम्लो रसो यस्याः। १ तिन्तिडी वृक्ष, इमलीका पेड़। २ लिङ्गिनी लता, एक बेल। ३ श्रीवल्ली, एक कंटीली बेल।

आम्लातक (सं० पु०) आम्रातक, आमड़ा।

आम्लातकी (सं० स्त्री०) पलाशी लता, किर्मदाना, किर्मिज-फरज़ी।

आम्लानीक (सं० ० पीतझीण्टी क्षुप, पीले फलका झाड़।

आम्लिका (सं० स्त्री०) आम्लमनोज्ञादित्वाद्भावे वुञ्। १ अम्लोद्गार, मेदेकी खटाई। २ तिन्तिडी वृक्ष, इमलीका पेड़। 'तिन्तिडी त्वाम्लिका चिञ्चा तिन्तिडीका कपिप्रिया।' (वाचस्पति)

आम्ली, अम्लिका देखो।

आय (सं० पु०) आ-इण्-अच् वा अय-घञ्। १ लाभ, फायदा। २ धनागम, आमद। ३ ज्योतिषोक्त लग्न एवं राशिसे एकादश स्थान, ग्यारहवां कमरो

मतलब। ४ वनिताभार-पालक, कुटुम्बका मालिक। कर्मणि घञ् वञ्। ५ कुमोन्दारोसे व्यासिप्रास बनादि कुमोन्दारोको आमदनी।

"[illegible]।" ([illegible])

'[illegible]।' (सिद्धान्तकौमुदी)

आयःशूलिक (सं॰ त्रि॰) अयः शूलेनान्विच्छति अयः शूल ठक्। [illegible] पा ५।२।७६। [illegible] (सिद्धान्तकौमुदी) '[illegible]।' ([illegible]) १ तीक्ष्ण कर्म द्वारा अमकर, हठसे कोरसे रुपया कमानेवाला। (पु॰) २ साहसिक पुरुष, रुपया पैदा करनेके लिये सर फोड़नेवाला आदमी। (स्त्री॰) आयःशूलिकी।

आव जाना (हि॰ क्रि॰) आ जाना, पहुंचना।

"[illegible]।

[illegible]।" (तुलसी)

आयति (स॰ त्रि॰) अभितुखेन एत्यति आ-यत [illegible] न प्रत्यय। [illegible], सर्वतो यत्न करनेवाला, चारो ओरसे यत्न करनेवाला। "[illegible]।" ([illegible])

आयविद्ध (स॰ त्रि॰) देवताके सम्मुख मागका विपर्यीभूत। "[illegible]।" ([illegible]) '[illegible]।' ([illegible])

आयव्य (हि॰ त्रि॰) १ काम उठानेको चेष्टा करने वाला, जो शामिल करनेमें लगा हो। २ यत्न करनेका तत्पर, जो यत्न करना चाहता हो।

आयत् (स॰ त्रि॰) आगमन करनेवाला, जो आ रहा हो। (स्त्री॰) आयती।

आयत (स॰ त्रि॰) आ यम क्त अनुनासिक लोप। १ विस्तृत, दराज, लम्बा चौड़ा, लम्बा। आ-यम कर्मणि क्त। २ आकृष्ट, खिंचा हुआ। ३ दृढ़, मज़बूत। ४ नियमित, बक़ायदा। (पु॰) १ ज्यामितिका दीर्घ-चतुरस्र आकार, तसवीर-फ्रेमका मक़ सूरतोल। (अ॰ स्त्री॰) ६ कुरानका या कुरानकी बात।

आयतच्छदा (सं॰ स्त्री॰) आयती दीर्घच्छदः पत्र यस्याः, बहुव्री॰। कदलीवृक्ष, केलेकी भाड़ी।

आयतन (स॰ क्ली॰) आयतन्ते कर्माणि अत्र, आ-यत आधारे ल्युट्। १ अधिष्ठान, बुनियाद। २ आश्रय, सहारा। ३ हेतु, सबब। ४ विश्रामस्थान, आरामगाह। ५ मठ, मन्दिर। ६ चबूतरा। ७ याग उपवस्थान, खिरमन, खलियान। ८ रोगनिदान, बीमारीका सबब। ९ यज्ञस्थान। वेदमें आयतन दो प्रकारका आता है,—पृथिवी और अन्तरीक्ष। मरत् अनुष्टुप्, एकविंशतिस्तोम एवं वैराजसाम, पृथिवी और हेमन्त, पंक्ति त्रिणवस्तोम तथा शाक्वर-साम अन्तरीक्षका आयतन है। १० अवच्छेदक, सुरक्षा। ११ प्रतिमा यज्ञ। १२ बौद्ध मतोक्त षडेन्द्रियस्थान या अन्दरूनी नियमगाह। चक्षु, कर्ण, नासिका, जिह्वा समस्त शरीर और मनको बौद्ध देखते और आयतन कहते हैं। किसी किसीने पांच ज्ञानेन्द्रिय पांच कर्मेन्द्रिय मन और बुद्धिको मिलाकर द्वादश आयतन माने हैं—

"[illegible]।
[illegible]।
[illegible]।
[illegible]।" ([illegible])

फिर दूसरे मतमें—

"[illegible]।
[illegible]।
[illegible]।
[illegible]।" ([illegible])

जैनशास्त्रानुसार—"[illegible]" ([illegible]) अर्थात् आत्माको संसारसे मुक्त करनेवाले सम्यग्दर्शन (वास्तविक पदार्थोंमें श्रद्धा न करना) सम्यग्ज्ञान (समस्त पदार्थोंकी विपरीतता, अनध्यवसाय और संशयरहित ज्ञान होना) सम्यक्चारित्र (संसारके दुःखोंसे भयभीत हो सांसारिक कार्योंके परित्यागपूर्वक तत्पर तपना) ये तीन कारण हैं। इनके आश्रयभूत जो पदार्थ हैं, उन्हें आयतन कहते हैं। और ऐसे आयतन छः हैं—सुदेव, सुशास्त्र, सुगुरु, सुदेवाराधक, सुशास्त्राराधक और सुगुरुसमाराधक। सर्वज्ञ, वीत-

राग, मोक्षमार्गोपदेष्टा निर्दोष देवको सच्चा देव, सच्चेदेव द्वारा उपदिष्ट वादियोंद्वारा अखंडनीय मोक्ष-मार्गके बतलानेवाले शास्त्रको सुशास्त्र, सुशास्त्रके अनुसार मोक्षमार्गके ऊपर चलनेवाले तपस्वीको सुगुरु और इन तीनोंके माननेवालेको आराधक कहते हैं।

आयतनत्व (सं० क्लो०) वेदी या संस्थान होनेका भाव, सज्वा या निशस्तगाह होनेका तौर।

आयतनवत् (सं० त्रि०) संस्थानयुक्त, निशस्तगाह रखनेवाला। (पु०) आयतनवान्। (स्त्री०) आयतनवती।

आयतनवान् (सं० पु०) ब्रह्माका चतुर्थ पाद।

आयतपत्रा (सं० स्त्री०) कदलीवृक्ष, केलेकी झाड़ी।

आयतपत्री, आयतपत्रा देखो।

आयतस्तू (सं० पु०) आयतं स्तौति, आयत-स्तु दीर्घः। क्विप्वचिप्रच्छ्यायतस्तुकटप्रुजुश्रीणां दीर्घोऽसम्प्रसारणञ्च। पा ३।२।१७८ वार्तिक। आयतस्तावक, मनाख्वान्, लम्बी-चौड़ी तारीफ करनेवाला शख्स।

आयताक्ष (सं० त्रि०) विस्तृत नेत्र वा दीर्घ नयन-च्छद रखनेवाला, जिसके बड़ी आंख या लम्बा पपोटा रहे।

आयतापाङ्ग (सं० त्रि०) दीर्घ कोण-युक्त नयन रखने-वाला, जिसके लम्बे गोशेका चश्म रहे।

आयतायति (सं० स्त्री०) विस्तृत सातत्य, तवील सवात, दूर-दराज, आखिरत।

आयतार्ध (सं० पु०) ज्यामितिके दीर्घ चतुरस्र आकारका अर्ध भाग, तहरीर उक्लैदसकी शक्ल-मुस्ततीलका आधा हिस्सा।

आयति (सं० स्त्री०) आ-या-क्तिन्। १ उत्तरकाल, आयन्दा ज़माना। २ आगमन, आमद। ३ प्रभाव, अज़मत। ४ फलदानकाल, नतीजा देनेका वक्त। ५ आयाम, तूल, पसा। ६ संयम, दिलकी दस्तिना। ७ सङ्गम, मुलाकात। 'आयतिस्तु स्त्रियां दैर्घ्ये प्रभावागामिकालयोः।' (मेदिनी) ८ प्रापण, कुबूलियत। ९ मेरुकन्यामेद, मेरुकी एक बेटी। (विष्णुपुराण)

आयतिमत् (सं० त्रि०) १ विस्तृत, तवील। २ प्रभाव-शाली, अज़ीम। ३ संयमशील, अपने दिलपर क़ाबू रखनेवाला। (पु०) आयतिमान्। (स्त्री०) आयति-मती।

आयती (वै० स्त्री०) आ-यती प्रयत्ने इन्। बाहु, बाज़ू।

आयतीगव (वै० अव्य०) आयन्ति गावोऽत्र, तिष्ठद्गु प्र० अव्ययी०। तिष्ठद्गुप्रभृतीनि च। पा २।१।१७। गोठसे गौके आगमनकाल, शामसे सवेरियोंके घर आते वक्त।

आयतीसम (सं० अव्य०) आयन्ति समा अत्र, तिष्ठद्गु प्र० अव्ययी०। वत्सके आगमनकाल, बछड़ेके आते वक्त।

आयत्त (सं० त्रि०) आ-यत क्त। अधीन, वशीभूत, मातहत। 'अधीनो निघ्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो गृह्यकोऽप्यसौ।' (अमर)

आयत्तता (सं० स्त्री०) अधीनता, इतायत।

आयत्तत्व (सं० क्लो०) आयत्तता देखो।

आयत्ति (सं० स्त्री०) आ-यत-क्तिन्। १ स्नेह, मुहब्बत। २ वशित्व, इतायत। ३ सामर्थ्य, ताक़त। ४ प्रभाव, अज़मत। ५ सीमा, हद। ६ शयन, ख्वाव। ७ उपाय, तदबीर। ८ इन्द्र। 'आयत्तिस्तु स्त्रियां स्नेहे वशित्वे दिने ...' (मेदिनी) ९ दिन, रोज़। १० भविष्यत्-काल, आयन्दा ज़माना। ११ सन्मार्गका सातत्य, चालचलनकी मज़बूती।

आयथातथ्य (सं० क्लो०) न यथातथं तस्य भावः, नञ्-तत्, ष्यञ् वा पूर्वपदस्य वृद्धिः। अनौचित्य, नामु-नासिबत।

आयद (अ० त्रि०) १ अवतीर्ण, उतरा हुआ। २ योग्य, क़ाबिल।

आयद होना (हिं० क्रि०) १ उतरना, आ बैठना, पड़ना। २ अधीन बनना, तावेमें आना।

आयद्वसु (वै० त्रि०) वसु प्राप्त करनेवाला, जिसके पास सामान् पहुंचे।

आयन (वै० क्लो०) अयनमेव, स्वार्थे अण्; आ अयनम्, प्रादि समा० वा। १ सम्यक् आगमन, खासी आमद। "आयने ते परायणे दूर्वा रोहन्तु पुष्पिणी।"(ऋक् १०।१४२।८) "आयने आगमने।" (सायण) (त्रि०) अयनस्येदम्, अण्। २ अयनसम्बन्धी, खत-मोतदिलुन्नहार और रासुल

२११ २६६ ई० समय कलाकौशल बढ़ानेवाले कोर मकका राज्य रहा। अलहरके आदिम अधिवासियोंको उल्लिखित करते हैं। योवेद सुविगमकोयिनके पुत्र नियल नोविसियस्वाके शासन करते ताराका मिलेसियन राज्य प्रतिष्ठित हुआ था। नियलने विदेशियोंपर चढ़ सेण्ट पाट्रिकको बद्ध किया। वैल्स, स्कटलैण्ड और आयिल अव मानमें मिले शिला लेखोंसे उपरोक्त विषय प्रमाणित है।

किन्तु अब लोग नहीं मानते, कि आयर्लेण्डवासी प्रकृत मिलेसीय हैं। मूर्तिपूजकोंका वृत्तान्त प्रायः अविदित है। हां, कितने ही महापुरुषोंके उपाख्यान सुननेमें आते हैं। किन्तु अधिक उच्च-स्तूपों, प्रस्तर स्तम्भों और भग्न-अवशेषोंपर ऐसे बहुतसे चिह्न मिलते, जिनसे जीव पूजा प्रमाणित होती है। सूर्य और अग्नि भी पूजे जाते थे। अप्सराओंको आयर्लेण्डवासी बड़े आदरकी दृष्टिसे देखते रहे। आज भी उनको कथा वार्ता देहाती लोगोंमें हुआ करती है। कितने ही मनुष्य अप्सराओंके साथ व्याहे गये थे। ब्रिजिट कला-कौशल और सौभाग्यकी देवी रहीं। किल्डारमें उनके नामपर सदा अग्नि जलता और वेस्टायिकस तथा रोमिकाकमें सुभिक्ष होनेके लिये पूजन किया जाता था। क्लियना और ऐवीन अप्सराओंकी रानी हैं। आना, बोडव और माचा नामक तीन युद्धविषयक देवियोंका नाम प्रायः लेते रहते हैं। क्रोम क्रोच देवकी मूर्ति सोने चांदी की बनी थी। उसको चारो ओर बारह मूर्तियां पीतलकी रहीं। किसी पुराणमें क्रोम क्रोच आयर्लेण्डीय दस्युमूर्ति कहे गये हैं। सेण्ट पाट्रिकने उक्त मूर्तिको उखाड़ कर फेंक दिया था। उनको गदाका चिह्न आज भी मूर्तिपर अङ्कित है। लोग अधिक धान्य, मधु और दुग्ध पानेके लिये अपने बच्चे क्रोम क्रोचके सामने बलि चढ़ाते थे। एक समय दुर्भिक्ष पड़ा। पादरियोंने कहा किसी निरपराध दम्पतीके पुत्रको लाकर ताप देवीपर चढ़ाया और उसका रक्त भक्तिकामें मिलाया जाता। डूयिड पादरियोंका बड़ा मान रहा। वह अभिचारसे युद्धपर सब मार लोगोंको विक्षिप्त बना और अग्नि तथा रक्त आकाशसे बरसा सकते थे। उन्हें भाटलोगोंको ऐश्व और पवित्र काष्ठ खण्डको उठा आगामी विषय बता देनेका अभिमान रहा। मन्त्र मारनेसे लोग अदृश्य हो जाते थे। आयर्लेण्डवासियोंको बैकुण्ठ लोकका विश्वास था। लोग्रका वायस होते भी नावपर चढ़ ग्राम और पोतासके साथ बैकुण्ठ पहुंचे। दसरियादा नृपति मोसगनने मरनेके बाद भेड़िये विरछ, हंस आदि कई जीवोंका आकार धारण किया था। बूढ़ा आनेपर फिनताल भी कितने ही जीवोंके रूपमें बहुत दिन विद्यमान रहे और अन्तको सन् ई०के ६ठें शताब्द फिर स्वान माक-औरिलके रूपमें उत्पन्न हुये। किन्तु सन् ई०से ४०० वर्ष पहले आयर्लेण्डमें वेल्स प्रान्तसे ईसायी धर्मकी चर्चा आ पहुंची थी। ४३१ ई को पैलाड्यूसने ईसायी धर्मका झण्डा आ उड़ाया। उनके मरनेपर सेण्ट-पाट्रिक विकलो पहुंचे थे। उन्होंने लोगोंको समझा बुझा गिरजे बनवाये और ईसायी धर्म सिखानेको स्कूल खोलवाये। नृपति लोयिगायर और डूयिड पुरोहितने उनका बड़ा विरोध किया। अपना धर्म छोड़ना अस्वीकार करते भी, लोयिगायरके कितने ही सम्बन्धी ईसायी हो गये। आरमाघमें गिरजा सेण्ट पाट्रिकने बनवा दिया। पहले आयर्लेण्डमें कोई शहर न था। सेण्ट पाट्रिकके मरनेपर ईसायी धर्म ढीला पड़ा और साधु समाजका प्रभाव बढ़ा। साधुगण आयर्लेण्डमें भ्रमण करते और बड़े आदमियोंके दरवाजे डेरा डालते थे।

सन् ७९५ ई को नार्थमेनोंने आक्रमण कर लामबेका गिरजा लूटा और जलाया। उस समय प्रान्तिक राज्य आपसमें लड़ झगड़ रहे थे। लोगोंको युद्धविद्या विदित न थी। सम्भवतः पहले पहल नारवेजियनोंने आक्रमण किया। उन्हें मात्र मारने और आदमियोंको गुलाम बनानेकी आवश्यकता रही। ८०१ ई०को वह नावपर चढ़ मानोन पहुंच गये थे। ई०के नवें शताब्द मध्य इस द्वीपके प्रत्येक स्थानपर आक्रमणकी धूम रही।

८२० ई०को समग्र आयर्लेण्डमें नारवीजियन पहुंच डवलिन, मीथ, किलडेर, विकलो, क्लान्सकी, किलकेनी और टिपेरेरी प्रान्तमें बस गये। ८३० ई०को टरगेसियस शाही जहाजोंका बेड़ा ले झपट पड़े थे। उन्होंने लाफरीमें किला बनाया और क्लोनमाट तथा मीथको विध्वंस किया। आरमाघका मठ दश बार उठाया और गिराया गया था। महन्त और छात्र आक्रमणके भयसे बहुमूल्य ग्रन्थ बगलमें दाब भाग खड़े हुये। टरगेसियसने आयर्लेण्डमें कितने ही नगर बनवाये थे। ८४० ई०को डवलिन, वाटरफोर्ड तथा लायिमरिका तैयार हुआ और इङ्गलेण्ड, फ्रान्स एवं नारवेके साथ व्यापार चला। ८४४ ई०में टरगेसियसको मायलसेकलेनने कैद कर डूबा दिया और दो वर्ष बाद उनके साथी डोमरायरको भी वध किया था। ८३३से ८४५ ई०तक मनष्टरके नृपति तथा काशेलके पादरी फेडिलमिडने आयर्लेण्डका कितना ही भाग लूटा और कुछ दिन आरमाघके पादरीका अधिकार अपने हाथमें लिया। ८४८ ई०को दक्षिण इङ्गलेण्डसे एक डेनिश जहाजी बेड़ा डवलिनमें आ पहुंचा था। पहले तो नारवीजियनों और डेनसोंमें मेल रहा, किन्तु दो वर्ष बाद डेनसोंने डवलिनपर आक्रमण मारा। ८५१ ई०को कारलिङ्गफोर्ड लोफमें ३ दिन युद्ध होने बाद डेनसोंको विकिङ्गसोंने डवलिनसे भगा दिया। ८ वें शताब्दके आरम्भसे मध्यतक अनेक स्त्री कैद हो जानेपर आयर्लेण्डके अधिवासियों और आक्रमणकारियोंसे विवाहादि सम्बन्ध बढ़ गया था। इससे वर्णसङ्कर जाति उत्पन्न हुई। इस जातिके लोग गालोवे कहाते और समुद्रमें लूटमार किया करते थे। इन्होंने ईसायी धर्म छोड़ मूर्तिपूजाका आश्रय लिया। ढला हुआ सिक्का न रहनेसे विदेशीय व्यापार बढ़ न सका था। स्थान-स्थान पर सामयिक मेला होते और उसमें वस्त्र, आभूषणादि खरीदा जाते रहा। परन्तु शीघ्र ही स्काण्डिनेविय नगरोंमें सिक्का ढलने लगा, व्यापार बढ़ा और फेमिङ्ग, इटालीय आदि व्यवसायियोंका दल आ बसा। इन्हीं स्काण्डिनेविय व्यवसायियों द्वारा ११वें एवं १२वें शताब्द अवशिष्ट युरोपके साथ आयर्लेण्डका सम्बन्ध जुड़ गया था। उपरोक्त विषयका प्रमाण कितने ही नगर और स्वयं इस द्वीपके आयर्लेण्ड नाममें मिला, जो स्काण्डिनेविय शब्दसे निकला है। आयरिश लोग स्काण्डिनेविय फौजमें भरती होते थे।

मनष्टरकी बड़ी जाति एलिल ओलम, काशेल इवोगन और क्लेयरकी डालकेसिय कोरमाक काससे उत्पन्न हुई है। १०१४ ई०के गुडफ्रायिडेको क्लोण्टार्फका भीषण युद्ध बढ़ा था। कुछ देर घमासान होने बाद नार्स दलके पैर उखड़ गये। मायेलसेकलेन डवलिनको भागे थे। दोनों ओरके कितने ही सरदार काम आये। ब्रियन अपने मूरचद और मायेलमोर्दा पुत्रके साथ मर मिटे थे। हार कर भी नार्समेनोंने अपने अधिकृत नगर न छोड़े और धीरे-धीरे आयर्लेण्डवासी बन गये। डालकेसिय फौजके अधिक निर्बल हो जानेसे मायेलसेकलेनको फिर आयर्लेण्डका सिंहासन मिला था।

सन् १०२२ ई०को मायेलसेकलेनकी मृत्यु हुई। १०६४ ई० समय ब्रियनके पुत्र डोनचदका प्रभाव बहुत बढ़ा था। उन्होंने आधे आयर्लेण्डको जीत अपने पिताका पद पाया। ११०२ ई०को मागनस बारेफूटने पश्चिमकी ओर इस द्वीपको जीतनेके लिये धावा मारा था। किन्तु म्यरचेरटाकने बड़ी फौजके साथ उनका विरोध किया। अन्तको सन्धि होनेपर मागनसका विवाह आयिरिश-राजकुमारी बियाडम्यूनके साथ हुआ था।

लीनष्टर-नृपति डियारमायिटका जन्म-सम्बन्ध विदेशियोंसे बहुत मिलते रहा। सन् ११५२ ई०को टोरडेलवाक ओकोनोरने ब्रेयिफन नृपति टिगेरननको सिंहासनसे उतार ओरोरककी पत्नी डेरवफोरगायिलको पकड़ ले गये।

ईसायी धर्म प्रतिष्ठित होते भी विवाहादि सम्बन्धमें बड़ा गड़बड़ रहा। लोग धन देकर स्त्री व्याह लेते थे। साधारण स्त्री भी लड़का होनेसे पत्नीके समान स्वामीपर स्वत्व रखते रही। वर्णसङ्कर पुत्र स्वजातीयोंसे अलग

समझा जाता न था। टिगेर्नके राजा डरग मोनौघ उपरोक्त विषयका उदाहरण हैं।

सन् ११५५ ई०को सालिसबरीके जोहन २य हेनरी नृपतिका सन्देश ले हये पोप एड्रियनके पास आयर्लैण्ड आये थे। पोपने उत्तरमें यहांका पैठक अधिकार उन्हें सौंपने कहा और प्रतिष्ठापनका चिह्नस्वरूप अङ्गरीयक भी साथ ही भेज दिया। ११६६ ई०को डियारमाइट माक मुरचद प्रजापीड़नके कारण लोन्स्टरमें सिंहासनच्युत हुये और अपना पद फिर पानेके लिये हेनरीके पास पहुंचे थे। आल्सो मियोंमें बहुत भी राजाने अवसर पा डिरमोडको राजसेवामें फौज तैयार करनेकी आज्ञा दी। इसी तरह लीन्स्टरमें सब पत्र और अपनी प्रजासे धन ले डिरमोड हठोन रिचार्ड डी क्लारसे साहाय्य मांगने गये। वेल्समें भी उन्होंने राबर्ट फिट्ज स्टेफेन और मौरिस फिट्जजेराल्डसे आयर्लैण्डपर चढ़ायी करने का वचन लिया। ११६८ ई०की १ली मईको फिट्जष्टेफेन कुछ सेना ले वेक्सफोर्डमें आ उतरे और दूसरे दिन मौरिसप्रिन्डरगास्ट भी मददगार उसी जगह पहुंच गये। डिरमोडने उनके साथ रहने पर वेक्सफोर्डका डिस्ट्रिक्ट सौंप देना स्वीकार किया। साथ एक वत्सर पीछे रेमोण्ड ली-ग्रोसको अर्ल रिचार्डने अपनी अग्रगामी सेनाके साथ भेजा था। ११७० ई०को २१वीं अगस्तको स्वयं अर्ल रिचार्ड २०० नाइट और १००० दूसरे सिपाही ले वाटरफोर्ड पहुंच गये। उस समय उन्होंने ड्रैरिनमें डिरमोडके सिंहासनच्युत किये जानेका बदला लेनेको युद्ध ठाना और विजय पानेपर डिरमोडने अपनी कन्याका हाथ उन्हें पकड़ा दिया। नर्मान सेनापतियोंमें अधिक सम्बन्ध इनसे अधिक थे। जिनमें दो दक्षिण वेल्स नृपति रिस आप ट्यूडरकी कन्या और १म हेनरीकी सखी नेस्टाके वंशज रहे। नेस्टाकी कन्या अङ्गारेत विलियम डे बारीको व्याही थीं। उन्हींसे आयर्लैण्डके बारीस उत्पन्न हुये। रेमोण्ड ली-ग्रोस हेर्वी डे मोण्टमारिस्की और मोरिस भी नेस्टाके वंशज रहे। वह उनके द्वितीय पति स्टेफेन-दी-कास्टेलानसे उत्पन्न हुये थे।

सन् ११८५ ई०को प्रिन्स जोहन वाटरफोर्डमें जहाजसे आ उतरे और सरदार उनका सम्मान करनेको आगे आये। २य हेनरीने कुछ बैरनोंको ८००००० एकड़ भूमि दे डाली थी। अपने भ्राता १म रिचार्डके समय जानके प्रधान कर्मचारी पेमब्रोक अधिपति विलियम मार्शालने अर्ल रिचार्ड या ष्ट्रोङ्गबोकी कन्याको व्याह लीनष्टर पर अपना दखल जमाया। १२१० ई०को जोहन नृपतिने कोनौटराज काथाल क्राउडर्ग ओकोनोरके साथ वाटरफोर्डसे डबलिनकी राह कारिकफेर्गुस पर धावा मारा किन्तु ट्रिमसे आगे कदम न बढ़ाया। १२१३ ई०को उन्होंने अपना अधिकार पोपको सौंप दिया था।

सन् १२१७ ई०को १४वीं नवम्बरको ३य हेनरीने आज्ञापत्रसे अपने कर्मचारी जियोफरी डी मारिसकोको लिख भेजा — कोई आयर्लैण्डवासी गिरजेमें रखा न जाता। किन्तु १२२० ई०को ३य होनोरियसने उपरोक्त आज्ञा अनुचित बताकर उठा दी। फिर १२३४ ई०में अनडरके सर अधिपति विलियमके पुत्रको माल्कोविकेस आदिने वध किया।

३य एडवार्डके विदेशीय युद्धमें लगे रहनेसे आयर्लैण्डवासी किलडार ओमोरने लीक्सपर फिर अपना अधिकार जमा लिया था। मारिस फिट्जजेराल्ड डेसमोण्डके अधिपति बने और उन्होंके तीन भाइयोंसे ह्वाइट ग्लिन और केरी नाइटोंके वंश चले।

६ठ हेनरीके प्रधान कर्मचारी सर जोहन टालबोटने ट्रिममें पार्लियामेण्ट बैठा आयर्लैण्डमें रहनेवाले सब अंगरेजोंको मूछ रखनेकी आज्ञा दी। इससे आयरिश जाति विभिन्न मालूम पड़ती थी।

सन् १४४८ ई०को योर्कराज रिचार्डके आयर्लैण्डमें प्रधान कर्मचारीका पद पाते समय आयर्लैण्डवाले काम काजसे विद्रोह बढ़ाया। १४६० ई०को रिचार्ड इङ्गलेण्ड वापस और ओरमोण्ड तथा य्योपोटके अधिपति जेम्सको राज्य सौंप गये। जेम्स और किल्डार युद्धमें पीढ़ियों झगड़ा चला था। रिचार्डने फिर डबलिनमें आ स्वातन्त्र्य पाया, नया सिक्का ढाला और अंगरेजी पार्लियामेण्टको अस्वीकार किया।

कोर्कसे उनका अनुयायी दल भगाया गया। फिर सर जोह्न पेरोट मनष्टारके प्रेसिडेण्ट बने थे। उन्होंने जेमस फिट्ज़गीराल्डको पर्वतोंपर चढ़ाया, सब जगह किला तोड़ा और बलवाइयोंको बाजाब्ता देनेवाली फौजका काम तमाम किया। कनष्टारमें भी इसीतरह विप्लव बढ़ा था। एलिज़बेथ अधिपति साकटेयार रिचर्ड उन्होंने वोर्किसे सर हुवान ओनीलको पकड़ लिया और उनके साथियोंको वध किया। रायकिनमें समय स्वाव मार डाले गये थे। किन्तु ऐमिक्स असल गठित मामलेसे मरे। तीन वर्ष लड़ने भिड़ने बाद साथियोंने उन्हें छोड़ दिया था।

१५७१ ई॰के अन्त सिड्नेने फिर प्रधान राज प्रतिनिधि बने और बढ़ावढ़ एक जगहसे दूसरी जगह पहुंचने लगे। मनष्टारमें एक वर्षके बीच सर विलियम ड्रूरीने ४०० आदमियोंको फांसी दी थी। फिर सर निकोलास माल्बीयने कोनाट वारकेसोंको मारते समय लड़के-बूढ़े किसीको न छोड़ा और सब मकान एवं सामान जला दिया। डेसमोण्डसोंने बड़ा उद्योग लगानेको विचारा था। धर्मयुद्धकी घोषणा हुई। फिट्ज़मरिस् जोड़े मादो ले केरीमें आ उतरे थे। साथमें सुप्रसिद्ध निकोलास-सनडार्स भी रहे। उन्हें पोपने दूत बना और आशीर्वादात्मक ध्वज पकड़ा भेजा था। कारडेकोनेलके समीप युद्ध होनेपर फिट्ज़मरिस् खेत आये किन्तु सनडार्स और डेसमोण्डके भाई लड़ते रहे। अन्तको डेसमोण्डने तलवार उठायी थी। रातको उन्होंने यंगरेलो नगर दाखिल कर आक्रमणकर लोगोंको मार डाला। सवेरे होनेपर एलिज़ाबेथने ओरमोण्डको मनष्टारका सेनापति बना युद्ध करने भेजा था। आठवर गैराल्डिनों और राजभक्त विप्लवकारियोंमें लड़ते रहे। १५८० ई॰को विकलोमें लार्ड बाल्टिङ्ग्लासने उपद्रव उठाया। ग्लेनमालूरमें लार्ड ग्रे-डा विल्टोन पूर्ण रीतिसे पराजित हुये थे। स्मेरविकमें इटालियों और स्पानियार्डोंका एक दल आ उतरा। वे उधरको बढ़ रहे थे। युद्धसे विदेशियोंने आत्मसमर्पण किया, किन्तु सबको तलवारका पानी पीना पड़ा। स्पेन्सर और रालेके विद्यमान रहे। १५८१ ई॰को अपकार्य गुप्त रीतिसे विनष्ट हुये और १५८३ ई॰को केरी पर्वतके युद्धमें डेसमोण्ड भी मारे गये। इसके उपलक्षमें पांच लाख एकर आयरिश भूमि सरकारसे सर्वस्वत्व की थी। युद्धकी भीषणताका वर्णन हो नहीं सकता। मोरसोण्डमें छह ही मासमें ३००० मनुष्योंको प्राणदण्ड दिया था। दुर्भिक्षने अपायसे अधिक काम किया। अतिवीधी चल न सकते थे। वह भावी और वाटियोंसे विसट विसट कर बाहर निकले।

१५८४ ई॰को ह्यु ओनीलने टिरोनके दुर्ग मामका आधिपत्य पाया था। १५९० ई॰को वह समय टिरोनके अधिपति और १५९३ ई॰को सभी जातिके प्रधान बने। सरकारसे उनका झगड़ा किसी तरह दब न सकता था। ह्यु रा ओडोनेलके योग देनेपर अल्स्टर सरकारके विपक्षमें खड़ा हो गया। १५९८ ई॰को फिट्ज़-टमास फिट्ज़जेराल्डने डेसमोण्डका उपाधि ग्रहण किया था। आयर्लेण्डके दोनो सिरे बीच ही विप्लवसे सनकने लगे और डेसमोण्ड प्रान्तमें सैक्सनोंके घुस देखनेको न मिले। एलमण्डके गवर्नरने अपना वर्ताव बाया और भागकर कनकनको दुर्गप्राकारमें प्राणपरित्राण किया। टिरोनने अपना अधिकार बढ़ाया येलोफार्डके युद्धमें सर हेनरी-बागनलको हराया मनष्टारपर धावा लगाया और लार्ड मेरीमोरका प्राण जा उड़ाया था। टिरोनके मित्र ह्यु रा-ओडोनेलने कोनोट-प्रेसिडेण्ट सर कोनयर्स-क्लिफोर्डको जा उखाड़ा। १५९९ ई॰को ऐसेक्स अधिपति इयार्ट डेवेरक्स बड़ी सेनाके साथ आये किन्तु टिरोन उन्हें बार-बल-बलसे नीचे लाये थे। उन्होंने सेनापतिका पद छोड़ आपको चाल पकड़ी और अन्तको फांसी पायी। १६०० ई॰को सर चार्ल्स-ब्लण्ट मनष्टारका प्रेसिडेण्ट बननेपर उनका जोश दब गया था। चार्ल्स-माउण्टजय डेविस उत्तराधिकार पाकर रिटके साथ हुये और क्लिन्सेलमें उतरनेवाले स्पानियार्ड हारकर सरकारके हाथ लगे। ऐसा मड़ भाड़ सीसेसे प्रजा भी दब गयी थी। इसीतरह एलिज़ाबेथने आयर्लेण्ड जीत लिया।

महारानीने डबलिनमें जो विश्वविद्यालय प्रतिष्ठित कराया था, उससे लोगोंने अच्छा फल पाया।

१६०३ ई०को १म जेम्स्‌के सिंहासनारूढ़ होनेपर लोगोंने सोचा था,—इनसे आयर्लेण्डका उपकार होगा। यह दोनो आयर्लेण्डवासी और स्काच हैं। किन्तु अधिपतियोंके उपद्रव उठानेसे केल्टोंकी बात बिगड गयी।

१६३५ ई०को १म चार्लसके राजत्वकाल लार्ड डेपुटी ष्ट्राफोर्ड लोगोंसे ज़बरदस्ती रुपया वसूल करने लगे। कोनाट और मनष्टरके ज़मीन्दार अधिक धन देनेपर बाध्य हुये। आयिरिश जातिसे रुपया वसूल कर स्काच और इङ्गरेज लोगोंके दबानेको फौज रखनेमें खर्च किया जाता था। रोमन काथोलिकोंको दुःख वा सुख कुछ भी न मिला। प्रधान उसहरके साथ बारह पादरियोंने विपक्षमें आन्दोलन कर कहा था—दारिद्र्यका भार सहना महापाप है। स्ट्राफोर्डको फांसी दी और फौजकी तलवार छीन ली गयी। १६४१ ई०को काथोलिक राजद्रोहियोंने सारा देश अपने हाथ किया, केवल डबलिन बच गया। उनका विचार प्रोटेष्टाण्टोंको निर्वासित करनेका था। कितने ही प्रोटेष्टाण्ट बडे निर्दय भावसे वध किये गये। १६४२ ई०को अंगरेजोंने जेनेराल रवार्ट मोनरोके अधीन अलष्टार फौज भेज इसका बदला लिया था। किन्तु मोनरोके हारते भी कोई फल न हुआ। १६४५ ई०को रेनुसिनी पोपको ओरसे आयर्लेण्डके सत्वाधिकारी बनकर आये थे। उन्होंने केल्टोंको साथ दिया। १६४७ ई०के जुलाई मास पारलियामेण्टवालोंने आरमोण्डसे डबलिन छीन लिया था। १६४८ ई०को क्रोमवेल अपनी सेना ले रणक्षेत्रमें उतरे। उन्होंने हरे-भरे खेत काट छिपकर लडनेवालोंको भूखों मार डाला था। ४० हज़ार लोग निर्वासित किये और शानोनमें कृषिकर्म करनेको ज़बरदस्ती आयिरिश काथोलिक कृषक भेजे गये। लड़नेवाले सिपाहियोंको लूटका कितना ही माल मिला। सिपाहियोंके अपनी जायदाद बेच डालनेसे अफसर प्रजा बने थे। आयिरिश कर्मजीवी उपनिवेशकोंके साथ रहे। शान्ति फिर प्रतिष्ठित हो गयी थी। १७७८ ई०को ग्राटानने आयर्लेण्डको जातीयता मान ली।

१७९८ ई०को थियोबाल्ड-ओल्फो-टोनने फिर विप्लव बढाया था। उसके शान्त होते ही आयर्लेण्ड ग्रेटब्रिटेनमें मिलाया गया। १८०३ ई०को रवार्ट एमिटने शिर उठाया, किन्तु कोई फल पाया न था। इसके बाद काथोलिकोंके करसे निस्तार पानेका विवाद बढ़ा। रोमन काथालिक विशप होनेको लोगोंने आन्दोलन किया था। सबके स्वीकृत होनेपर भी डानीयेल-ओकोनलने विरोध किया। अन्तको १८३८ ई०में करकी व्यवस्था पास हो गयी। कर उठा देनेका आन्दोलन भी चला न था।

१८५८ ई०को विदित हुआ,—जोहन ओमाहोनीने अमेरिकामें फीनिक्स-द्रोह दहकाया था। इङ्गलेण्डमें इससे लोगोंपर अत्याचार होने लगे। १८६९ ई०को आयिरिश चर्च तोडा और १८७० ई०को भूमिप्रश्न मरोडा गया। किन्तु इससे आयर्लेण्डका आन्दोलन दब न सका। १८७४ ई०को होमरूलका पक्ष भी प्रबल पडा। १८८१ ई०को कृषिपर बहुतसे भीषण अत्याचार हुये थे। प्रायः मवेशियोंके निर्दय भावसे मारे जानेपर इङ्गलेण्डमें हाहाकार छा गया, परन्तु सरकारने ध्यान देना अनुचित समझा। सन्देहजनक लोगोंके कोयेर्सनकानूनसे पकडे जानेपर कोई फल निकला न था। अमेरिकासे लगातार रुपया मिलनेपर अत्याचार चलते रहा। ग्लाडष्टोनने पूर्ण रूपसे नीति बदल देनेको ठानी थी। १८८२ ई०को २री मईको आयिरिश सरदारकी इच्छाके विरुद्ध पारलियामेण्टके पारनेल, डिलटोन और ओकेली नामक सभासद बन्धनसे मुक्त किये गये। बेदखली पीछा हिसाब पानेसे छूटी थी। इसे किलमेनहाम-सन्धि कहते थे। लार्ड कोयेर और फोरष्टरने उसी समय पदत्याग किया। उनका उत्तराधिकार पा ६ठीं मईको लार्ड स्पेन्सर और लार्ड फ्रेडेरिक कावेण्डिस डबलिन पहुंचे थे। उसी सन्ध्याको फीनिक्स उद्यानमें

उष्णप्रवाह आने और शीत कुछ कम पड़नेसे दक्षिण तथा पश्चिम प्रदेश वासयोग्य बना है।

समभ नहीं सकते, एकान्त दारुण शीत, वालुकावृष्टि, आग्नेयगिरिके भीषण उत्पात और प्रचण्ड भूमिकम्पसे जो कष्ट पाते, वह लोग कैसे रहते हैं। भारतवर्षमें प्रकृतिकी दयाका शेष नहीं। हम जगन्माताकी साक्षात् अन्नपूर्णा मूर्ति मानो जन्मभूमिमें प्रत्यक्ष देखते हैं। हम माताके प्यारे बालक हैं। सुखमें पालन-पोषण होता है। दुःखमें पलनेसे आयिसलेण्डके लोगोंकी हड्डी कड़ी पड़ जाती है। वह उद्यमशील और शक्तिसम्पन्न हैं।

इतना विशाल द्वीप होते भी आयिसलेण्डकी लोकसंख्या केवल ८४००० अर्थात् मध्यमावस्थामें प्रति वर्ग मील दो आदमीके हिसाबसे पड़ती है। किन्तु पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियां कुछ अधिक हैं। पहले अधिवासी प्रधानतः पशुपालन द्वारा ही जीविका चलाते थे। पीछे वह मत्स्यके व्यवसायसे उन्नत होने लगे। किन्तु शीतकालमें तूफान आनेसे अनेक धीवर नाव डूबनेपर मर जाते हैं। इस व्यवसायमें सैकड़े पीछे तीस अधिवासी नियुक्त हैं। प्रत्येक वत्सर विदेशको लाखों मन मत्स्य-तैल, लवणाक्त मांस, ऊन और चमड़ा भेजा जाता है। भेड़ और घोड़ेकी भी खूब रफ्तनी होती है। १८९८ ई०के हिसाबसे यहां ७३५४४२ अर्थात् मध्यमावस्थामें आदमी पीछे ९ भेड़ रहे। १८९९ ई०को ४४००० अर्थात् दो आदमीमें १ घोड़ा निकला। वनमें बड़ा पेड़ नहीं होता। क्षेत्र अकृष्ट हैं। जीवनधारणके लिये विदेशीय शस्यका मुंह देखना पड़ता है। आटा, चीनी, कहवा, शराब, तम्बाकू, नमक, लकड़ीका तखता, कोयला, लोहा और धातुकी दूसरी चीज़ वगैरह बाहरसे मंगाते हैं। आजकल आलू और गाजरकी खेती कुछ-कुछ बढ़ी है। फसलहृद्धके लिये नहीं ही कहना पड़ेगा। चार कृषिविद्यालय, एक कृषिसमिति और उसकी शाखासभासे खेतीको उन्नति की जाती है। राजधानी रेकजविकमें कितने ही सामुद्रिक बीमा-आफिस और विद्यालय विद्यमान हैं।

प्रचलित मुद्रा, वज़न और नाप डेनमार्कको तरह है। जातीय बाङ्क प्रतिष्ठित है। बड़ी सड़क, रेलपथ और वैद्युतिक आलोकको व्यवस्था कहीं नहीं। घोड़ेकी पीठपर ही माल-असबाब ढोया जाता और लोगोंका आना-जाना होता है। १९११ ई०के अक्तोबर मास एक जातीय विश्वविद्यालय खुला है।

आजकल अनेक विषयकी उन्नति होने लगी है। टेलिफोन द्वारा संवाद चलता है। कई पक्के मार्ग और सेतु बने हैं। खनिजका अनुसन्धान होता है। राजधानीमें कलके पानी और नालेका काम लगा है। दक्षिण एवं पश्चिम ३२° फारेनहीटसे ५०° पर्यन्त तापमानयन्त्रमें उत्ताप चढ़ता है। इसी अक्ष-रेखापर स्थित साइबेरिया प्रदेशके मध्यवर्ती याकूटस्क नगरमें वायुका उत्ताप ५०° से ६८° तक चढ़ता अर्थात् ग्रीष्मके दिन और शीतकालको रात्रिमें १०८° का पार्थक्य पड़ता है। किन्तु समुद्र-वेष्टित आयिसलेण्डमें १८° मात्र विभिन्नता देखते हैं। इसका प्रधान कारण पूर्वोक्त मेक्सिको उपसागरके उष्ण जलस्रोतका आयिसलेण्डके किनारे आना है।

दक्षिण-पश्चिम प्रदेशमें प्रति वत्सर २४ से ४८.४ इञ्च पर्यन्त वृष्टि होती है। परन्तु साइबेरियामें इसी अक्षरेखा पर ८ इञ्च मात्र पानी बरसता है। आयिसलेण्डमें सबसे छोटे दिनको ३ घण्टे ४८ मिनट सूर्यका प्रकाश रहता है।

आयिसलेण्डमें ४३५ प्रकारके पुष्प और बहुविध उद्भिद्का अस्तित्व मिला है। अनेक स्थलमें वेत्रवन है। उसे १० फीट पर्यन्त वेत बढ़ता है। मकोय जातिके दो प्रकार फल व्यतीत दूसरे फलका वृक्ष नहीं होता। सुभीतेकी जगह राई और उड़दकी खेती करते हैं। बारह सिंगा, लोमड़ी, चूहा, तरह-तरहका हंस, कोई सौ किस्मको समुद्री चिड़िया और समीपवर्त्ती समुद्रमें सील नामका जानवर तथा काड, ह्वेल वगैरह मछली देख पड़ती है। उत्तरमेरुसे तुषारके साथ श्वेत भल्लूक कभी कभी बहकर चला आता है। स्तन्यपायी जन्तुकी संख्या विरल है।

यहां मरनेपर उनका शव रैकविक लाया और समग्र देशवासियोंके उद्योगसे ससम्मान गाड़ा गया था। समाधिके ऊपर लिखा —The beloved son of Iceland, his honour sword & shield. आयिस लैण्डके प्रियपुत्र, उनका गौरव खड्ग और वर्म था।

१००० ई०को इस द्वीपमें ईसाईधर्म फैला रहा। आजकल आयिसलैण्डवासी मार्टिन लूथर-प्रवर्तित प्रोटेष्टाण्ट मतके अवलम्बी हैं। धर्मकार्यकी सुविधाके लिये द्वीप २० उपाचार्योंके अधिकार और १९२ गिरजोंके उपपल्लीमें विभक्त है। फिर गिरजासे सम्बन्ध रखनेवाले प्रत्येक पल्लीके धर्मकार्यको व्यवस्था कमिटीसे सम्पन्न होती है। उपाचार्यवर्गका कार्यपरिदर्शन प्रादेशिक कमिटीके हाथ न्यस्त है। बिरजाका कोई पद खाली होनेपर गवरनर-जनरल बहादुर बिशपसे परामर्श ले तीन मनुष्य चुन देते हैं। धर्म-मण्डलोंके लोगमें एकको मनोनीत करनेपर गवरनर जनरल बहादुर उसे काम सौंपते हैं। साधारण राजकार्यका विशेष उच्चपद अधिकार शून्य होनेपर आज भी डेनमार्कके राजा लोक निर्वाचन करते हैं।

सन् १८४० ई०को रैकजाविक नगरमें एक धर्म शिक्षाका विद्यालय खुला था। वहां अधिकांश पुरोहित शिक्षा पाते हैं। उसमें कोपनहेगन-विश्व विद्यालयके उपाधिधारी भी कोई कोई रहते हैं।

जनसाधारणमें स्वास्थ्य अधिक उन्नति लाभ को है। विशेषतः बालक बालिकाओंको मृत्युसंख्या बहुत घट गयी है। परिच्छन्नता अपेक्षाकृत उत्कृष्ट आवास भूमि, खाद्यद्रव्यको उत्कर्षता और वैद्यों तथा धात्रियोंकी संख्या वृद्धि ही इस उन्नतिका कारण है। १८७६ ई०से एक मेडिकल-स्कूल (चिकित्सा-विद्याशिक्षालय) भी खुला है। इस समय द्वीपके प्रत्येक स्थानमें दो-चार डाकर और धात्री विद्यमान हैं। पहले समग्र द्वीप ढूंढ़नेसे भी एक डाकर या धात्रीका पता लगना कठिन था। अब एक प्रधान चिकित्सकके हाथ द्वीपके स्वास्थ्य, मेडिकल-स्कूल और डाकरगणके तत्वावधानका भार न्यस्त है। १६ सहकारी, २० प्रादेशिक अल्पचिकित्सक और एक मिलबैण्ड रहते हैं। ४ छोटे अस्पताल और १ औषधालय प्रतिष्ठित हैं। धात्रियोंको मेडिकल स्कूलमें कुछ दिन बक्तृता सुनना और औतिमत शिक्षा लेना पड़ता है।

अधिक परिमाणमें उच्च शिक्षाके विद्यालय न रहते भी मनुष्योपजीवियोंके धाम और लोकपूर्ण स्थानमें विद्याचर्चा उत्तम रूपसे फैल गयी है। अनेक समय बालक भिन्न भिन्न भाषाएमें भी पढ़ लिख लेते हैं। किसी किसी स्थानमें भ्रमणकारी शिक्षक विद्यादान देते हैं। धर्मयाजक सर्वदा संवाद रखनेको बाध्य होते, सकल बालक पढ़ लिख और हिसाब किताब कर सकते हैं या नहीं। शिक्षा-विस्तारके लिये ही लोकसंख्याको देखते पुस्तक और सामयिक पत्रका प्रचार यथेष्ट अधिक है। मासिकपत्रोंको छोड़ १८ साप्ताहिक संवादपत्र निकलते हैं। रैक-जाविकके जातीय पुस्तकागारमें ३०००० मुद्रित पुस्तिका और १०० हस्तलिपि रक्षित हैं। राज-धानीको लोकसंख्या ४००० मात्र है। प्राण्य विज्ञानको कितनी ही बहुमूल्य सामग्री संग्रह हुई है। शिक्षित लोगोंको समितियोंमें साहित्य, प्रत्नतत्व और प्राण्यविज्ञान-समितिका नाम विशेष उल्लेख-योग्य है। यूरोप विख्यात भास्कर थारवलडसेनको मूर्ति राजधानीमें शोभित है।

भाषाका नाम आयिसलैण्डिक है। किन्तु ८७४ ई०को नरवेसे आनेवाले उपनिवेशियोंके वंशधर यद्यपि अपनी प्राचीन भाषा ही बोलते हैं। वर्तमान काल नरवे देशमें भाषाका अनेक परिवर्तन और संयोजन हुआ है। विदेशमें रहनेसे लोगोंको अपनी भाषा बहुत प्यारी लगती है। इसीसे उपनिवेशी पितृ-पितामहको भाषाको अक्षुण्ण रख सके हैं। ऐसी अवस्थापर आयिसलैण्डको भाषा और साहित्यचर्चा भाषातत्वविदोंके अनुसन्धानपथमें विशेष सहायक है। स्कानेय भाषा तथा साहित्यचर्चासे इस बातके समझनेको बड़ी सुविधा पड़ी, उत्तर यूरोपके दुर्दान्त योद्धाओंको भाषा कैसे बनी और किस परिवर्तनके वर्तमान स्काण्डिनेवियाको भाषा निकली थी।

यहाँ सङ्गीतचर्चाका प्राबल्य है। उत्कृष्ट गायक-गायिका बहुत हैं। किन्तु अच्छा कवि कहीं नहीं मिलता। आयिसलेण्डके गीतका स्वर कानमें गूंजा करता है। यात्री अनेक क्षण पर्यन्त उसे भूल नहीं सकता। अन्यान्य देशमें जिस गुणके लिये कविताका आदर होता, वह सभी आयिसलेण्डके गद्य महा-काव्यमें देख पड़ता है। वाल्मीकिके रामायण, होमरके ट्रय वर्णन, एवं राजस्थानीय चारणोंके गीतकी तरह सभ्यताके प्रारम्भकाल (११४०-१२२० ई०) यहांकी गाथामें अपने वीरवृन्दका वीरत्व और नरवे तथा डेनमार्कके नरपतिगणका साहसिक कार्य भाटों द्वारा रचित हो साधारणके आमोद-आह्लाद, समाज और नायकके प्रकोष्ठमें सुनाया जाता था। प्रथम कई एक पुरुष लोगोंके मुंह-मुंह चलने बाद वह लिखा गया। आजकल प्रायः तीन भाग नष्ट होनेसे सौमें चार-पांच गीत बाकी बचे हैं।

सम्प्रति आयिसलेण्डमें जलप्रपातसे तड़ित् निकाल रेलगाड़ी और कलकारखाना चलानेकी कल्पना लगा रही है। लकड़ी और कोयला न मिलनेपर गैसका आगसे खाना पकाते और शहरमें रोशनी करते हैं।

साक्षात् सम्बन्धमें डेनमार्क भिन्न अन्य किसी देशको आयिसलेण्डस डाक नहीं जाती। निर्धारित समय डेनमार्कसे जहाज़ आ और हरेक बन्दरमें ठहर चिट्ठी-पत्री इकट्ठा करता है। डेनमार्कसे फिर उसे डाक-विभाग द्वारा पृथिवीमें अन्यत्र भेजते हैं।

आयो (हिं० क्रि०) उपस्थित हुई, आ पहुंचो। यह शब्द 'आना' क्रियाका एकवचन सामान्य-भूतका स्त्रीलिङ्ग है। (स्त्री०) आई देखो।

आयो-गयो (हिं० स्त्री०) हानि-लाभ, नफ़ा-नुक़सान्।

आयु (वै० त्रि०) एति गच्छति, इण् गतौ उन्। उन्दीरेच। उण् ११२। १ जीवित, गमनशील, ज़िन्दा, चलता-फिरता। (पु०) २ मनुष्य, आदमी। ३ अन्न, अनाज। ४ जीव, जानवर। ५ मनुष्यजाति, आदमीकी कौम। ६ प्रथम मनुष्य, पहला आदमी। ७ जीवित-काल, ज़िन्दगी। 'आयु र्जीवितकालो ना।' (अमर) ८ वायु, हवा। ९ अपत्य, औलाद। १० मनुपुत्रादपुत्र। (हरिवंश ३।७) ११ मण्डूकराज। (महाभारत—वनपर्व १९०।३८) १२ उर्वशीके एक पुत्र। (भागवत ९।१८।१७) १३ उर्वशी और पुरूरवाके पुत्र। नहुषराज इन्होंके पुत्र थे। (रामायण ७।११ अध्याय) १४ औषध, दवा। १५ घृत, घी। १६ वसा, चर्बी। आयुस् शब्द देखो।

आयुःशेष (सं० पु०) ६-तत्। जीवित कालकी समाप्ति, मृत्यु, मौत, ज़िन्दगीका ख़ातिमा।

आयुःशेषता (सं० स्त्री०) जीवनके अतिरिक्त अन्य वस्तु न रहनेकी दशा, सिर्फ़ ज़िन्दगी बाकी बचनेकी हालत।

आयुक्त (सं० त्रि०) आ-युज् कर्मणि क्त। आयुक्त-कुशलाभ्यां चासेवायाम्। पा २।३।४०। १ सम्यग् व्यापारित, मुक़र्रर। 'आयुक्तः व्यापारितः।' (सिद्धान्तकौमुदी) २ ईषद्-युक्त, मिला या लगा हुआ। 'आयुक्तो गौः ईषद्युक्तः।' (सिद्धान्तकौमुदी) (क्लो०) आ-युज् भावे क्त। ३ सम्यग् नियोजन, तक़र्रुरी, तैनाती। (पु०) ४ सचिव, प्रतिनिधि या नियोगी, वज़ीर, गुमाश्ता या नायब।

आयुक्तिन् (सं० त्रि०) आयुक्तमनेन, आ-युज्-क्त इष्टादि-त्वात् इनि। सम्यक् नियोगकर्ता, तैनात करनेवाला।

आयुज् (दे० त्रि०) नियोग करनेवाला, जो जोड़ता या मिलाता हो।

आयुत (सं० त्रि०) आ-यु क्त। १ आर्द्रीभूत, गलित, पिघला हुआ, जो पसीजा हो। (क्लो०) भावे क्त। २ आर्द्रीभूत घृत, पिघला हुआ घी।

आयुध (सं० पु०) आयुध्यतेऽनेन, आयुध करणे घञर्थे क। १ शस्त्रमात्र, कोयी हथियार। आयुध तीन प्रकार होता है,—प्रहरण, हस्तयुक्त और यन्त्र-युक्त। खड्गकी तरह चलनेवाला प्रहरण—चक्रवत् छूटनेवाला हस्तयुक्त और वाण सदृश यन्त्रसे निकलने-वाला यन्त्रयुक्त कहाता है।

शस्त्रकी भांति प्रहरण कार्य साधनेवाले वस्तुका भी नाम आयुध है। जैसे,—नखायुध, दण्डायुध इत्यादि। "नखायुधायुध खग।" (भट्टि ५।१०५) इसका प्रमाण नीचे लिखते, कि अति पूर्वकालसे भारतवासी आयुध-धारण करते हैं,—"स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू उत प्रतिष्कभे।" ऋक् १।३९।२। उस समय ऋषि यज्ञरक्षार्थ

"य एषोऽन्तर्हृदये लोहितपिण्डः। अस्मिन्नयोऽस्ति प्राणरूपम्।
यदेतदन्तर्हृदये नालकमिव। अस्मिन्नयोऽस्या मति. सञ्चरणीऽस्या।
हृदयादूर्ध्वं नाडी उच्चरति यथा कीर सहस्रधा।

* * * *

सिन्न एवैतस्य हिता नाम नाड्योऽन्तर्हृदये प्रतिष्ठिताः।"

सिवा इसके अथर्ववेदीय गर्भ और शारीरोपनिषत्में शारीरविज्ञान विशेष रूपसे कथित है। यजुर्वेदीय हव्दा रण्यकका १म और ६ष्ठ अध्याय देखो।

उद्भिद्विद्या भी आयुर्वेदमें पायी जाती है। उद्भिद्-तत्त्व न समझनेसे ओषधिका गुणागुण ठहराना कठिन है। प्राचीन वैदिक ऋषि ओषधिका विषय अच्छीतरह जानते थे ऋग्वेदमें प्रमाण है,—

"सुषे वाजान्त्सनर्यत सिन्धून्धन्वातितृन्नोषधीर्निम्नमापः।" (ऋक् ४।२३।७)

अर्थात् (वह) क्षेत्र सकल शस्यसम्पन्न और नदी सकल प्रेरित करें। जलविहीन स्थान ओषधियुक्त और निम्नस्थान जलमय हो। फिर देखिये,—

"मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो" (ऋक् ४।५७।३)

प्रयोजन यह, कि ओषधि सकल द्युलोकसमूह और जलसमूह मधुयुक्त बनें। ऋषियोंका ओषधि विषय जानना निम्नलिखित वचन द्वारा भी प्रमाणित है,—

"या ओषधि. पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुग पुरा।
मनै नु बभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च॥" (ऋक् १०।९७।१)

महाभारतमें रोगहर, विषहर, शल्यहर और कृत्याहर कयी प्रकारके आयुर्वेदवित् चिकित्सकोंका नाम मिलता है। देहतत्त्व, शारीरविज्ञान, शस्त्रविद्या, चिकित्सा-तत्त्व, रोगनिदान, धात्रीविद्या प्रभृति शब्दमें विस्तारित विवरण देखो।

अश्वायुर्वेद, गजायुर्वेद और वृक्षायुर्वेद नामसे आयु-र्वेदके कयी विभाग होते हैं। (अग्निपुराण २८१—२९१ अध्याय)

मधुसूदन-सरस्वतीने अपने बनाये 'प्रस्थानभेद' ग्रन्थमें कामशास्त्रको भी आयुर्वेदका अङ्ग माना है। आयुर्वेदकी चिकित्साप्रणाली यूनानी, ईरानी और अरबी चिकित्साशास्त्र चलनेसे पह ले होवनी रही। बहुकाल पूर्व भारतवर्षमें सर्वप्रथम मूल खुला था, पीछे अपर जातिने सादर उसे अपना लिया।

'उयुन-उल्-अम्बा फितुल-कातुल-अतबा' नामक अरबी ग्रन्थमें लिखते, कि सन् ई०के दस शताब्द भारत-वर्षीय पण्डितोंके अधीन बग़दादकी राजसभामें बैठ लोग ज्योतिष और आयुर्वेद पढ़ते थे। सरक्, सुसेद और वेदान नामका तीन आयुर्वेदिक ग्रन्थ भारतवर्षसे लोग अरबदेश ले गये। तीनो ग्रन्थ चरक, सुश्रुत और निदान नामके अपभ्रंश-जैसे हैं। इससे स्पष्ट समझमें आता, कि पाश्चात्य चिकित्सकोंने भारतवासियोंसे आयुर्वेद पाया था।

आयुर्वेददृष्टक्, आयुर्वेददृश् देखो।

आयुर्वेददृश् (सं० पु०) वैद्य, चिकित्सक, तबीब, हकीम।

आयुर्वेदमय (सं० पु०) आयुर्वेद प्रचुर, आयुर्वेद प्राचुर्ये मयट्। १ धन्वन्तरि। प्रचुर आयुर्वेद जाननेसे धन्वन्तरिको यह उपाधि मिला है। (त्रि०) २ आयुर्वेदाभिज्ञ, इल्म-अदवियासे वाकिफ़।

आयुर्वेदिक, आयुर्वेददृश् देखो।

आयुर्वेदिन् (सं० त्रि०) आयुर्वेदो वेद्यतयास्त्यस्य, इनि। १ औषधीय, तिब्बी, दवादारूसे ताल्लुक रखने-वाला। २ वैद्य, तबीब (स्त्री०) आयुर्वेदिनी।

आयुर्वेदी (सं० पु०) वैद्य, हकीम, दवा-दारू देनेवाला।

आयुषक्, आयुषम् देखो।

आयुषक—जैनशास्त्रानुसार देह अथवा पुरुषका संयोग। आयुको घोषणा करनेवाला।

आयुषज् (वै० त्रि०) आयुना सजते, आयु-सस्ज-क्विप् पत्वम्। १ आयुःसम्बन्धी, उम्रसे सरोकार रखनेवाला। २ मानवयुक्त, मनुष्योंके योगका, आदमियोंका सहारा पकड़नेवाला। (अव्य) ३ मनुष्योंके संयोगसे, आदमियोंके मेलमें।

आयुष्क (सं० त्रि०) आयुषा कायति, आयुष्-कै-क। आयु द्वारा प्रकाशमान, उम्रसे झलकनेवाला।

आयुष्कर (सं० त्रि०) परमायुर्जनक, उम्र बढ़ानेवाला।

आयुष्काम (सं० त्रि०) आयुः कामयते, आयुस्-कम्-णिङ्-अण्। आयुरभिलाषुक, उम्रकी ख़ाहिश रखनेवाला।

आयुष्कृत् (सं० त्रि०) आयुः करोति, आयुस्-कृ-क्विप्-तुक्। आयुर्वृद्धिकर, उम्र बढ़ानेवाला। अभ्र-पारदादि आयुष्कृत् होता है। आयुर्वृद्धि देखो।

कि बाल्यावस्थामें विवाह होनेसे ही इनके बाप अब-दुल्लाका नाम बदलकर अबूवक्र अर्थात् अक्षताके पिता पड़ा था। कोई सन्तान न होते भी मुहम्मद इन्हें बहुत चाहते थे। किसी अरबी लेखकने कहा है,—अबूवक्र इतनी तरुण कन्या मुहम्मदको देनेके विरोधी रहे। किन्तु मुहम्मदने विवाहके लिये ईश्वरीय आज्ञा होनेका बहाना किया। इसपर उन्होंने अपनी कन्या एक मञ्जूषा खर्जूरके साथ भेज दी थी। आये-शाको एकान्तमें पा मुहम्मदने असर्याद वस्त्र पकड़ लिया। उसपर यह सक्रोध बोल उठीं,—'लोगोंके विश्वस्त बताते भी आप व्यवहारसे मुझे वञ्चक मालूम पड़ते हैं।' अपने पतिके मरनेपर इन्होंने अलीके उत्तराधिकार पर आपत्ति डाली थी। कयी बार इन्हें अलीके साथ घोर युद्ध करना पड़ा। साहसिक होते भी इनके आचरणका बड़ा आदर रहा। अलीने इन्हें क़ैद कर बिना पीड़ा दिये छोड़ा था। आयेशा भविष्यद्वादिनी और सत्यसन्धोंकी माता कहाती रहीं। सन् ५८ हि० या ६७८ ई०को इनकी मृत्यु हुई। लोग कहते हैं,—आयेशाने सनिश्चय और सावमान यज़ीदके साथ अनुरक्त होना अस्वीकार किया था। इसपर मुवावियाने उन्हें विनोदनके लिये बुला भेजा। आये-शाके स्वागत-गृहमें एक बड़ा गड्ढा खोद और मुंह पत्तोंसे ढांक दिया गया था। प्राणनाशक स्थानपर कुरसी बिछी। यह उस पर बैठते ही गड्ढेमें जा पड़ी थीं। उसी समय गड्ढेका मुंह पत्थरसे गरा और चूनेसे भरा गया।

आयोग (सं० पु०) आयुज्यते सर्वत्र मङ्गलादौ आ-युज्-घञ्। १ गन्धमाल्योपहार, फूल फुलेल वगैरहकी भेंट। २ व्यापार, व्यवसा। ३ रोध, रोक। 'आयोगो। गन्धमाल्योपहारे व्यापृतिरोधयो:।' (हेम) ४ नियुक्ति, तैनाती। ५ तट, किनारा।

आयोगव (सं० पु०) आयोगं अप्रशस्तयोगं याति गच्छति, अयोग-वा-क स्वार्थ अण्। १ वैश्याके गर्भ और शूद्रके औरससे उत्पन्न जाति विशेष। 'शूद्रा-दायोगव:' (मनु १०।१२) काठका काम करते-करते अब सुतार या बढ़ही नाम हो गया है। २ अयोगव-वंशका मनुष्य। (स्त्री०) जातित्वात् ङीप्। आयोगवी।

आयोजन (सं० क्ली०) आ सम्यक् युज्यते कर्म येन, आ-युज-ल्युट्। १ उद्योग, जांफिशानी। २ आह-रण, झपटा-झपटी, धरपकड़। ३ संग्रहकार्य, जोड़-तोड़। नैयायिक-मतमें कर्म और व्याख्यानको आयो-जन कहते हैं।

आयोजित (सं० त्रि०) आ-युज-णिच्-क्त लोप:, आयोजनमस्य जातम्, तारकादित्वादितच् वा। सम्यक् सम्पादित, बना चुना।

आयोद (सं० पु०) आदोदस्यापत्यम्, बाहुलकात् अण्। धौम्यमुनि।

आयोधन (सं० क्ली०) आ सम्यक् युध्यन्ति योद्धारो-ऽस्मिन्, आ-युध आधारे ल्युट्। १ रणक्षेत्र, लड़ाईका मैदान्। भावे ल्युट्। २ युद्धक्रिया, जङ्ग-जदल, लड़ाई-भिड़ाई। ३ संहार, खूंरेज़ी। 'युद्धमायोधन जन्यं प्रधनं प्रविदारणम्।' (अमर २।८।१०३)

आर (सं० पु०) आ सम्यक् ऋ गच्छति कालवशात्, आ-ऋ कर्तरि घञ्। १ मङ्गलग्रह, मिररीख। यूनानि-योंके होराशास्त्रमें भी मङ्गल ग्रहको आरस् कहते हैं। २ शनिग्रह, ज़ोहल, कैवान्। ३ मधुराम्लवृक्ष, एक पेड़। गौड़ देशमें इसे रेफल कहते हैं। ४ प्रान्त, नाग, कुवें, नज़दीकी। भावे घञ्। ५ गमन, रविश, चाल। आ अभिव्याप्तौ अर्यते गम्यते यत्र, आ-ऋ आधारे घञ्। ६ दूर, फासला। (क्ली०) ७ मुण्डलौह, लोहेका लुव्व लुबाव। ८ पित्तल, बिरञ्ज। अरा-चक्रामि,व, स्वार्थे अण्। ९ कोण, ज़ाविया। 'आर क्षितिसुतेऽर्कजे।' (विश्व) 'आरो रीति शनिर्भौम:।' (हेम २।३९५) १० एक मील। ११ सक्थि, पहियेका अरा। १२ हरिताल।

(हिं० पु०) १३ कलकुला। इससे इक्षुरस निकालते हैं। १४ मट्टीका लोंदा। यह पात्रनिर्माणमें लगता है। १५ आग्रह, इसरार। (स्त्री०) १६ लोहेकी कील। यह पतली होती और सांटेमें लगती है। गाड़ीका बैल या भैंसा जब नहीं चलता, तब हांकने-वाला इसे उसके पीछे चुभो देता है। १७ पादकण्टक, पञ्जेका कांटा। यह मुर्गेके होता और लड़नेमें चलता

है। १८ दांत, मैल, बदू। १८ कर्मप्रभेदिका, सुआ, सूआ, सुतारी। (पं० स्त्री०) २० क्री, मर्म। (पं० स्त्री०) २१ संगरेजी वर्णमालाका १८वां अक्षर। यह संस्कृतके रकार, हिन्दीके 'र' और फारसी या उर्दूके 'रे' से उच्चारणमें मिलता है।

आर आना (हिं० क्रि०) लज्जा लगना, शर्माना।

आरक (स०) आर देखो।

आरकात् (बे० अव्य०) अतिदूर, अलग।

आरकूट (स० पु० स्त्री०) आरक पित्तलस्य कूट इव। १ पित्तलावरण,पीतलका गहना। आरमय कूटोपम। २ पित्तल,पितल। 'पैत्तिकिकाचानुहूटो। न विशेत्'(सम्र १०८०)

आरक्त (सं० पु०) आ-ईषत् रक्तः, प्रादिसमास। १ ईषद् रक्तवर्ण, मायल ब-सुर्खी, लालसा रङ्ग। (त्रि०) २ सम्यक् रक्त, चमकदार, खूब लाल। ३ ईषद् रक्त, सुर्ख सा। ४ सम्यक अनुरक्त खूब रंगा हुआ। (स्त्री०) माने स। ५ अनुराग, रङ्ग। ६ रक्तचन्दन।

आरक्तपुष्पी (स० स्त्री०) बन्धुजीववृक्ष, दोपहरियाका पेड़।

आरक्ष (स० पु०) आ सम्यक् रक्षति, आ-रक्ष अच्। १ हस्तीके मस्तकका कुम्भका अधम्भक, हाथीको पेशानीके मिगाड़का चोड़। २ हस्तीके मस्तकका चर्म, हाथीकी पेशानीका चमड़ा। ३ सन्धि, बन्द, जोड़। भावे अच्। ४ रक्षोक्रिया, हिफाजत। 'आरक्षे रक्षे रक्षितुमारब्ध। चटे:। (हैम ११७१८) (त्रि०) आ सम्यक रक्षते, आ-रक्ष कर्मणि अच्। ५ रक्षणीय, हिफाजत किये जाने काबिल।

'आरक्षो रक्षोके भावौन कर्मणि ईन्निन्‌म्।' (रत)

आरक्षक (स० त्रि०) १ रक्षा करनेवाला, जो हिफाजत रखता हो। (पु०) २ रक्षी, मुहाफिज,चौकीदार।

आरक्षा (स० स्त्री०) आ रक्ष भावे आ-टाप्। सम्यक रक्षा, हिफाजत।

आरक्षिक (सं० पु०) १ प्रहरी, मुहाफिज, चौकीदार। २ दण्डाधिकारी, पुलिसका हाकिम।

आरक्ष्य (सं० त्रि०) रक्षा किये जाने योग्य, जो हिफाजत रखे जानेके काबिल हो।

आरग्वध (स० पु०) आ रगी महार्य्या विष, आरम्य रोगमर्द शक्ति, आरग् वध् अच् कर्मादियश। १ राजवृक्ष, अमलतास। अमलतास देखो। २ सुवर्णालुपत्र। ३ सुवर्णालुपत्र। ४ आरग्वध पत्र। ५ आरग्वध पत्र।

आरग्वधपत्रक (सं० स्त्री०) कषायविशेष एक जो शीघ्रा। आरग्वध तिल्लकरोहिणी, हरीतकी, पिप्पलि मूल और मुस्तक पांच द्रव्य क्वाथसे यह बनता और वातकफज्वरमें लाभदायक होता है। (चक्रदत्त ज्वर)

आरग्वधादि (सं० पु०) गण विशेष, अमलतास वगैरह चीजोंका मजीरा। इसमें आरग्वध, इन्द्रयव, पाटल, काक, तिक्ता, निम्ब, अमला, मधुरसा स्रुव, क्षय, पाठा, भूनिम्ब, सैर्यक पटोल, करञ्जयुग्म, सप्त च्छद अग्निमुखपपीतक और वायबोप्पा द्रव्य पड़ता है। यह वर्दि कुष्ठ, विषमज्वर, वम, कण्डू, प्रमेह एवं दुष्टव्रणको दूर करता और विशेषतः कफाशय होता है। (सुश्रुत सूत्रस्थान १५ अ)

आरग्वधाद्यतैल (स० स्त्री०) १ योनिव्यापत्के अधिकारका तैल। चार शरावक सर्षप तैल, ४ शरावक गर्दभमूत्र, ८ शरावक आरग्वध मूल-त्वक्, १ पल मधुकूप और १ पल हरिताल एकत्र पकानेसे यह बनता है। (चक्रदत्त-योन्यधिकार) २ कुष्ठरोगका तैल। आरग्वधत्वक् वटत्वक कुष्ठ हरिताल, मनःशिला, हरिद्रा और दारुहरिद्राके मिश्रित पादिक-कल्कसे ४ सेर तैलको पकानेपर यह तैयार होता है।

(भैषज्यरत्नावली)

आरङ्ग (आरङ्ग)—मध्यप्रदेशके रायपुर जिलेका एक नगर। यह महानदीके तीर अवस्थित है। अधिवासी, कबीरपन्थी, हिन्दू, मुसलमान और असभ्य जातिके लोग रहते हैं। पूर्वकाल इस नगरमें हैहयवंशी राजपूतोंका राजत्व था। आजकल उनके बनवाये आम्रवृक्ष-वेष्टित बड़े बड़े भवन, मन्दिर और तड़ाग भग्नावस्थामें पड़े हैं। धातु निर्मित पात्रादिका व्यवसाय चलता है।

आरङ्गर (बे० पु०) मधुकर, भ्रमर।

आरचित (सं० त्रि०) विन्यसित दुरस्त, सजा या संवारा हुआ।

आरज (हिं०) आर्य देखो।

आरजा, आरिजा देखो।

आरजू (फा० स्त्री०) १ आकाङ्क्षा, चाह। २ पूजा, अरदास। ३ प्रत्याशा, उम्मीद। ४ अनुराग, प्यार।

आरजू करना (हिं० क्रि०) १ आकाङ्क्षा लगाना, चाहना। २ अधिक अभिलाष रखना, ललचाना। ३ प्रयोजन देखाना, मांगना। ४ प्रार्थना सुनाना, दरखास्त देना।

आरजू कराना (हिं० क्रि०) अधिक अभ्यर्थना चाहना, ज्यादा मिन्नतका खाहिशमन्द होना।
"थोड़ा देना, बहुत आरजू कराना।" (लोकोक्ति)

आरजूमन्द (फा० वि०) १ निर्बन्धशील, मुतकाजी, लागू। २ वाञ्छी, मुशताक, चाह।

आरट (सं० त्रि०) आ सम्यक् रटति शब्दायते, आ-रट-अच्। १ सम्यक् शब्दकर्ता, अच्छीतरह आवाज लगानेवाला। (पु०) २ नट, बाजीगर। ३ मांस, गोश्त।

आरटी (सं० स्त्री०) गौरादित्वात् ङीष्। १ नटी, बाजीगरनी। २ शब्दकर्त्री, आवाज लगानेवाली।

आरट्ट (सं० पु०) आ-रट्-टच्। १ ययाति-वंशीय सेतुपुत्र। इनके लडकेका नाम गान्धार था। (मत्स्यपुराण) २ जनपद-विशेष, पञ्जाबसे आगेका देश। महाभारतमें लिखा है,—

"पञ्चनद्यो वहन्त्येता यत्र पीलुवनान्युत।
शतद्रुश्च विपाशा च तृतीयैरावती तथा॥
चन्द्रभागा वितस्ता च सिन्धुः षष्ठा बहिर्गिरेः।
आरट्टा नाम ते देशा नष्टधर्मा न तान् व्रजेत्॥" (कर्णपर्व ४५ अ०)

अर्थात्—हिमालयसे बाहर जिस स्थानमें पीलुवन देखायी देता और शतद्रु, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा एवं वितस्ता नदीका प्रवाह पड़ता, वह आरट्ट देश बहुत धर्महीन ठहरता है। वहां जाना उचित नहीं। आरट्ट देशका आचार-व्यवहार बहुत जघन्य है। लोग मृण्मय पात्रमें उष्ट्र, गर्दभ एवं मेषका दुग्ध और तज्जात दधि प्रभृति खाते हैं। अन्नग्रहणमें किसी प्रकारका विचार नहीं रखते। पहले आरट्टदेशीय दस्युगणने चोरीसे किसी पतिव्रता रमणीका सतीत्व बिगाड डाला था। इसपर उसने अभिशाप दिया,—'तुमने अधर्माचरणपूर्वक मेरा सतीत्व बिगाडा है। अच्छा! तुम्हारी कुलकामिनी भी व्यभिचारिणी बन जायेंगी। फिर तुम कभी इस घोरतर पापसे न छूटोगे। इसीसे पुत्रके बदले भागिनेय धनाधिकारी होता है। इस देशके लोगोंको वाहीक कहते हैं। वह प्रायः सकल ही तस्कर, कामुक एवं मद्यपायी होते, पर-वस्तुके उपभोगको अपना धर्म समझते और संस्कार-हीन रहते हैं। स्त्रियां मनःशिला-जैसा उज्ज्वल अपाङ्ग देश रखती, ललाट, कपोल एवं चिकुरमें अञ्जन लगाती और गर्दभ, उष्ट्र तथा अश्वके शब्दतुल्य मृदङ्गादि उठा केलि-प्रसङ्ग करती हैं। सभी गुडकी सुरा पीती और कम्बलाजिन पहनती हैं। वह मद्य-पानसे निर्लज्ज बन और नग्न हो नगरके बाहर जा अपर पुरुषकी कामना करती है। (कर्णपर्व ४५—४६ अ०)

यनान ग्रीसके प्राचीन भूगोलवेत्ताओंने इस देशका नाम आड्रेष्टि (Adraistae), सुद्रकि (Sudrakæ) और आरेष्टी (Arestœ) लिखा है। वाहीकोंके समय तक्षशिला नगरमें राजधानी प्रतिष्ठित थी। वाहीक देखो।

आरट्टज (सं० त्रि०) आरट्टदेशे जायते, आरट्ट-जन-ड। १ आरट्ट देशोद्भव, आरट्ट मुल्कमें पैदा होनेवाला। (पु०) २ आरट्टदेशवासी, आरट्टका वाशिन्दा। ३ आरट्ट देशीय घोटक, टट्ट।

आरड़ा—वङ्गालदेशान्तर्गत मेदिनीपुर जिलेका एक ब्राह्मणप्रधान स्थान। यहां बाकुडारायके समय कविकङ्कणने अपना चण्डी बनायी थी।

आरण (वै० क्लो०) आङ् पूर्वादर्तेर्ल्युट्। १ गाम्भीर्य, उमक, गहरायी। २ अन्धकूपादि, अन्धा कूवां वगैरह।
"अनकं अममाभमारणे।" ऋक् १।११।६।
'आरणमन्धकूपादि तस्मादुरेः।' (सायण)

आरणज (सं० पु०) देवविशेष, एक देवता। यह कल्पभवका भाग पूरा करते हैं।

आरणाल (सं० क्लो०) काञ्जिक, कांजी। निस्तुषी-कृत आम गोधूमसे बननेवाला काञ्जिक आरणाल कहाता है। (परिभाषाप्रदीप ३य खण्ड)

आरणालक, आरणाल देखो।

आरणि (सं० पु०) आ-ऋ-अनि। 'अर्तिसृधृधम्यश्यवितृभ्यो-ऽनि'। उण् २।१०२। आवर्त, जलका घूर्णन, गिर्दाब, भंवर, पानीका चक्कर।

पालन करनेवाले गोप्रचरमें प्राचीन सुप्रसिद्ध घोटक और अश्वतर चराया जाता था। नदीमें चेंटी और वान ह्रदमें एक किस्मकी छोटी मछली मिलती है। इस देशमें आश्चर्यभूत स्थविमरचनाका आधिक्य है। आरारातके दृश्यकी प्रशंसा कोरेनेके मूसा और फार्वके लानेरस-जैसे स्वदेशानुरागी ऐतिहासिकने बहुत लिखी है।

आरमेनियामें ग्रिगोरीय, रोमनकाथोलिक, प्रोटेष्टाण्ट अरमनी, अन्य ईसायी, यहूदी, जिप्सी और मुसलमान लोग रहते हैं। अरजरुम, वान, विटलिस, खरपुट, दयारवकर, सिवास, अलेपो, अदान और ट्रेविजाण्ड नामक सात तुर्की विलायतमें प्रायः ६०००००० मनुष्योंका निवास है। पृथिवीपर कुल २८००००० अरमनियोंका होना अनुमान किया जाता है। किन्तु वर्तमान युरोपीय युद्ध बढ़नेपर तुर्कीने अपनी विलायतके कितने हो अरमनी मार डाले हैं।

इतिहास—विषम पर्वतमें कठोर पार्वत्यजाति रहती है, जो किसीकी अधीनता स्वीकार नहीं करती। आक्रमण होते समय निम्नभूमिके रहनेवाले पर्वतोंपर भाग जाते थे। यह देश पश्चिम और पूर्वके बीच उद्घाटित द्वारमार्ग सदृश विद्यमान है। बहुत प्राचीन समयसे ईरानी अधित्यकाको एशिया-मायिनरके उर्वर स्थान तथा रक्षित पोताश्रयसे मिलानेवाला मार्ग अधिकार करनेके लिये लोग लड़ते-झगड़ते आये हैं।

आरमेनियाके आदिम अधिवासी अज्ञात हैं। किन्तु ई०के ८वें शताब्द मध्य यहां वह लोग वसते, जो सामान्य रूपसे अनार्य भाषा बोलते थे। इन पूर्व अरमनियोंमें असीरीय और यहूदी जातिके कुछ सेमेटिक आ मिले। ६४० और ६०० ई०के पहले आर्योंने आरमेनियाको अधिकार किया था। उन्होंने अपनी भाषाका प्रचार बढ़ाया। ईरान और पारथियाके लोग फौजमें भरती किये जाते थे। राजनैतिक दृष्टिसे जेता और विजेता मिलकर एक हो गये। किन्तु नगरके अतिरिक्त अन्य स्थानमें विवाहादि सम्बन्ध चला न था। अरबों और सेलजुकोंके आक्रमण करने बाद कुस्तुनतुनिये तथा सिलसियेमें अनेक आर्य एवं सेमेटिक अरमनी जा बसे। मुगलों और तातारियोंने अभिजात राज्य बिगाड़ डाला था। इसीसे समझा जा सकता, वर्तमान अरमनियोंके आकार प्रकार और आचार-व्यवहारमें क्यों विभेद पड़ता है। टारस पर्वतके निभृतस्थानवासी कृषक दीर्घकाय एवं सुन्दर निकलते, यद्यपि किञ्चित् तीक्ष्ण वदनाकृति-युक्त, चपल और बलिष्ठ लगते हैं। आरमेनिया और एशिया-मायिनरके लोग मांसल, संहत एवं स्थूल आकृतिविशिष्ट हैं। केश सरल एवं कृष्णवर्ण और घ्राण विशाल तथा वक्र रहता है। वह भूमिकर्षण भली भांति करते, किन्तु निर्धन, मूढ़, अनभिज्ञ एवं निरुत्साह होते और ई०से ८०० वर्ष पहलेके अपने पूर्व पुरुषोंकी तरह आधी-सुरङ्गके घरमें बसते हैं। नगरवासियोंकी आकृति ईरानी आदर्श-जैसी देख पड़ती है। वह शिल्प, धनागारपतित्व तथा व्यवसाय करते और अपने श्रम, सूक्ष्मज्ञान, कार्य एवं धीर चित्तके लिये बड़ी योग्यता रखते हैं। रोमक समयमें स्कीदिया,चीन और भारतके साथ उनके पूर्व पुरुष भली भांति व्यापार चलाते थे। उत्तम श्रेणीके पुरुष सम्यक् परिष्कृत, शिक्षित तथा तुर्कस्थान, रूस, ईरान और मिश्रमें उच्च पदपर प्रतिष्ठित हैं। मूलतः अरमनी पूर्वके लोग होते और यहूदियोंकी तरह जिस दशामें पड़ जाते, उसीके अनुसार अपना कार्य चला लेते हैं। वह मितव्ययी, गम्भीर, उद्यमशील और मेधावी हैं। आचरणकी दृढ़तासे उन्होंने कठिनसे कठिन परीक्षामें अपने धर्म और स्वदेशाभिमानको बचाया है। प्राचीन रीति-नीतिके पूरे पक्षपाती होते भी उन्नति करनेका अभिलाष रखते हैं। किन्तु उन्हें लाभके लिये बड़ी लिप्सा रहती है। तुच्छ विषयपर विवाद बढ़ाते, स्वार्थपर और अस्थिरचित्त होते हैं। अतिशयोक्ति और कूटप्रबन्धकी प्रवृत्तिसे अरमनियोंके इतिहासपर अभद्र प्रभाव पड़ा है। धार्मिक स्पर्धासे उनमें गभीर पार्थक्य आ गया है। अनियत दम्भ, और बुद्धिचापल्य जातीय उन्नतिमें बाधा डाल रहा है। निर्दय शासनके अधीन बहुत दिन रहनेसे लोगोंमें

-सिकन्देर माइस, म्यावसमन सन्न और आर्जेनको प्रभाव पड़ा है।

आरमेनियाका आदि इतिहास काल्पनिक और बिबाबिलोनीय भूपतियोंके पारम्पर्यपर आश्रित है। असोरीय और बाबिलोनीय सम्राटोंने जिन यहूदि-योंको कैद कर यहां बसाया था उन्होंने ही अधिक वृत्तान्त बताया। सैमिरामिस और आरा नरेशको कथा विनस (Venus) तथा आदोनिस्की कल्पनासे मिलती है। टिग्रेनेसका गुण बहुत गाया और उनके अनु कुम्भकुम्भका भी वैभव दिखाया गया है। सम्भवतः बिबाबिलोनीय राज्यको कायरसने उखाड़ा था। उसके बाद ही आर्य और आरमनियोंके पूर्वपुरुष इस देशमें आबसे। किन्तु उनके अधर्मसे विप्लव हुआ था। ई०से ४०१ वत्सर पूर्व जब दश हजार आर्य अभिस्यका पार कर ट्रेबिजण्ड गये, तब उन्हें कहीं आरमनो न मिले। मिद और ईरानियोंने आरमेनियाको स्वतन्त्र राज्य बनाया था। ई०से ३११ वर्ष पहले अरबेलाका युद्ध समाप्त होनेपर अलिकसन्दर और उनके उत्तराधिकारी, शासक नियुक्त कर इस देशका राज्य चलाते रहे। ई०से ३१७-२८३ वर्ष पहले अर्टवतेस्ने सेलुकोयसको अधीनतासे अपनेको छोड़ाया और ई०से १८० वत्सर पूर्व जब रोमकोंने अन्तियोकस्को हराया, तब बड़ी आरमेनिया तथा छोटी आरमेनियाके शासक अर्तक्सियास् एवं जद्रिया देसने रोमको अनुमतिसे अपनेको स्वतन्त्र नृपति बनाया। ई०से ८४-६६ वर्ष पहले अतिक्सियासने अरक्सेसपर अर्तक्सता नगरको राजधानी किया और उनका सुप्रसिद्ध उत्तराधिकारी प्रथम मिथ्रदातेसका जामाता तिग्रनेस हुआ। तिग्रनेसने उत्तर मेसोपोटेमियामें तिग्रनोसर्ता नामक नवीन राजधानी निर्माण तथा बाबिलनके आदर्शपर प्रतिष्ठित कर यूनानी और दूसरे कैदी बसाये थे। अपने श्वसुरको राज्य न सौंपनेसे तिग्रनेसको रोमके साथ लड़ना पड़ा। ई०से ६८ वर्ष पहले लुकुलुसने तिग्रनेसको तिग्रनोसर्ताके द्वारपर ही जीत लिया था। ई०से ६६ वर्ष पहले तिग्रनेसने अपना राज्य पोम्पेको सौंप दिया। पोम्पेने मिथ्रदातसको फोसिसके पार खदेर भगाया था। उन्हें रोमके करद राज्यकी भांति आरमेनियापर शासन करनेकी आज्ञा मिली।

लुकुलुस और पोम्पेके युद्ध होनेसे पार्थियाके साथ रोमका सम्बन्ध विगड़ पड़ गया था। रोमके अधीन रहते भी आरमेनिया भौगोलिक स्थिति भाषा, भाषा, धर्म, विवाहव्यवहार और अवस्था एवं परिच्छदादिकी समतामें पार्थियासे पृथक न रहा। फिर एशिया माइनरकी तरह रोमका प्रभाव भी इस देश पर अधिक पड़ा न था। बहुत दिनतक पूर्व और पश्चिमके नृपति अपना अधिकार जमानेको लड़े झगड़े। ३८० ई०को रोम और ईरानने आरमेनिया आपसमें बांट लिया था। रोमका विभाग थोड़े ही दिनोमें सिम थियोडोसियमें मिलाया गया। ईरानी विभागपर ४२८ ई०तक एक अर्मेनियाके नृपति करद राज्यकी तरह शासन चलाते रहे। पीछे सम्राट्के निर्वाचनानुसार ईरानी और आरमनो मिटभर्ताको इस प्रान्तका अधिकार सौंपा गया। विभाग होनेसे पहले सेण्ट ग्रिगोरीने तिरिदातसको ईसायी धर्मकी दीक्षा दी थी। उन्होंने ईसायी धर्मको राज्यका धर्म बनाया, फिर कन्स्टान्टाइनने आदर्शकी भांति व्यवहार किया। बंटवारेके बाद आरमनी वर्णमालाका आविष्कार हुआ था। ४१० ई०को बाइबिलका अनुवाद देशभाषामें बना। इससे आरमनो परस्पर मिल गये और यजमानियोंका धर्माधिकार दबानेपर कुस्तुन्तुनियाका पौरोहित्य सम्बन्धी आश्रय छोड़ बैठे। ४८१ ई०को पार्थियाके वालसिरोमको मध्यस्थतासे आर्मेन्य बिलकुल सुना न था। निर्वाचित शासकोंके समय ईसायियोंपर अधिक अभियोग आया। वह बलपूर्वक अग्नि धर्म ग्रहण करनेपर बाध्य हुये थे। अराजकताका प्रभाव भी बहुत पड़ा। असोरीया पार्थियों ईरानियों, मौरीयों एवं यहूदियों और कहीं कहीं अर्मकोयसके अधीनस्थ शासकोंके वंशका अभ्युदय हुआ था। निर्वाचित शासकोंमें बहुतो अपतिद और ईरानी ममीमीनोय रहे। ६३१-६३८ ई०को ईरानी ममीमीनोयोंके प्रधान

वर्तान वैजन्तायिन्की सहायतासे स्वतन्त्र वन बैठे। ६३२ ई०को हेराक्लियसके विजयसे आरमेनिया फिर वैजन्तायिनोंके हाथ पड गया था। किन्तु ६३६ ई०को अरवी आक्रमणके बाद जो युद्ध हुआ, उससे खलीफाओंको इस देशका अधिकार मिला। उन्होंने अरवी और अरमनी शासक नियुक्त किये थे। १म वग्रतिद-अशोद नामक शासकको ८८५ ई० समय खलीफा मोतमिदने आरमेनियाके सिंहासनपर वैठाया। उन्होंने जो वंश प्रतिष्ठित किया, वह १०७९ ई०को २य कगीगके साथ समाप्त हो गया था। ९०८ ई०को खलीफा मोकतदिरने वानके शासक अर्त्स्नियन-कगीगको उसी प्रान्तका राजा वना दिया। वान और सिवास प्रान्तमें १०८० ई०तक उनके वंशजोंने राजत्व चलाया था। ९६२से १०८० ई०-तक कार्स और जार्जियामें वग्रतिदोंने अपना वंश वढ़ाया। उपरोक्त प्रान्तमें इस वंशके लोग १८०१ ई०तक राज्य करते रहे, पीछे रूसके पैर जमे। ९८४ से १०८५ ई०तक दियारवक्र एवं मेलासगेर्दके वीचका देश अरवों, वैजन्तायिनों तथा सेलजुकों और मेरवानीवंशके अधीन रहा। अरवोंका आक्रमण होनेसे कितने ही सभ्य अरमनी कुस्तुन्तुनिया भाग गये थे। वहां उन्होंने प्राचीन रोमकोंके साथ विवाह-व्यवहार वढाया और सिपाही वन वहुतसा धन कमाया। अर्सकि वंशज अर्त-वासदेसने वलपूर्वक दो वर्षतक वैजन्तायिन सिंहा-सनको अपने अधिकारमें रखा था। आर्दच्चूरीय ५म लिवो और जोहन जिमीसेस् सम्राट् वने। मेसि-गोनीय मानुयेल और दूसरे लोग साम्राज्यके सर्वोत्तम सेनापति रहे। ९९१ और १०२१ ई०को २य वासिलने आरमेनियापर आक्रमण किया था। अन्तको वासपुरागान नृपति सेनेकाईरिमने अपना राज्य सिवास और उसकी सीमाके साथ उन्हें सौंप दिया। वह कितने ही अरमनियोंके साथ फिर सिवास-में जाकर रहने लगे। वासिल आरमेनियामें वड़े वड़े दुर्ग वनाना और उनमें सेना रख पूर्व सीमाप्रदेशको रक्षा करना चाहते थे। किन्तु उनके उत्तराधिकारियोंके कारण यह वात हो न सकी। उन्होंने प्रान्त रक्षाको न देख नास्तिक लोगोंको धार्मिक वनानेपर ध्यान दिया था। अनी-नृपति कगिग २य काप्पादोकियाके वदले अपना राज्य छोड़नेपर वाध्य हुये। सेलजूकोंके आक्रमण और वैजन्तायिन सिपाहियोंके उपप्लावनसे लोक त्राहि त्राहि पुकारने लगे थे। सन् १०७१ ई०को आल्प-अर्सलान द्वारा ४र्थ रोमनसके हारने और पकडे जाने वाद आरमेनिया सेलजूक साम्राज्यका एक अंश हो गया। किन्तु सन् ११५७ ई०को इस देशमें फिर अरवों, कुर्दों और सेलजूकोंके छोटे-छोटे राज्य प्रतिष्ठित हुये। अन्तको सन् १२३५ ई०के समय मुगलोंने आक्रमणकर सवको मार भगाया था।

सेलजूकोंके आनेसे तीन शताब्द वाद आरमेनियामें पशुचारणोपजीवी लोग घूमते रहे। उनका प्रधान उद्देश्य एशिया-मायिनरको जाते समय राहमें पशुवोंके लिये गोचरभूमि ढूंढना था। किन्तु तैमूरने इस देशको वहुत नष्ट किया। कृषक समभूमिसे भगाये और खेत मट्टीमें मिलाये गये थे। अनेक अरमनी पर्वतमें जा छिपे। उन्होंने मुसलमानी धर्म ग्रहण और कुर्दोंके साथ विवाह व्यवहार स्थापन किया था। कितनों होने कुर्द सरदारोंको चौथ दे अपना प्राण वचाया और कितनों होने काप्पादोकिया या सिलि-शियामें जा घर वनाया। उस स्थानमें १०८० ई०को वग्रतिड रूफेनने एक राज्य जमाया, जो छोटी आरमेनियाकी राजधानी कहाया था। तीन शताब्दतक इस राज्यमें उपद्रव होते रहा। चारो ओर मुसलमान वसते और ईसाइयोंको धूमधामसे इटालीके साथ व्यापार करते देख जलते थे। १३७५ ई०को मिस्रने इसे अधिकार किया। क्योंकि गृहविवाद वढ़ा और लूसीगन नरेशोंका प्रजामें रोमन-चर्चकी प्रतिष्ठा करनेको दांत लगा था। सिलिशियाकी प्रशंसा सार्वजनिक गीतोंमें सुन पड़ती है। टारसपर्वतके जीटन प्रान्तमें अरमनियोंकी एक छोटी श्रेणी अपनी स्वतन्त्रता आजतक अक्षुस्स रख सकी है। तैमूरके मरनेपर आक तथा काराकुयुन-लोका आधिपत्य मिला और कोमल शासनके कारण-

कैथोलिकसका अधिष्ठान १४४१ ई०को एचमियाड जिनमें फिर प्रतिष्ठित हुआ। पहले यह सैलजुक आक्रमणके समय सिवास और वहांसे छोटे आरमेनियामें उठ गया था।

१५१४ ई०को १म सलीमके ईरानी अभियानसे यह देश अधिकांश तुर्कोंके हाथ लगा। इदरिस नामक बिटलिसके कुर्द ऐतिहासिकपर बन्दोबस्तका भार पड़ा। उन्होंने देखा, कि कृषियोग्य स्थान प्रायः शून्य पड़ा और पर्वतमें स्वाधीन कुर्द, आरब, तथा आरमनी दुर्गाधिपोंका परस्पर विग्रह बढ़ा था। रिक्त स्थानमें कुछ बसाये और आरमेनियाके छोटे-छोटे विभाग बनाये गये। समतलभूमिमें तुर्की अफसर और पर्वतपर स्थानीय नृपति शासन करते थे। इस नीतिसे देशको अशान्ति मिटी, किन्तु कुर्दोंकी उन्नति अधिक हुई। १५१४ ई०के समय पश्चिमको ओर अहोरातक युद्ध फैल पड़े थे। १६०५ और १६०४ ई०का ईरानियोंने आक्रमण किया। शाह अब्बास कोई हजार आरमनी जुल्फेसे अपनी नवीन राजधानी इस्फहान ले गये थे। १६३८ ई० की सन्धिके अनुसार परिणाम प्राप्त ईरानको मिला। १८२८-२९ ई०को रूस और तुर्कस्तानमें युद्ध होने तथा आर्पा-चयोतक रूसी सीमा बढ़ आनेपर अनेक आरमनी तुर्की राज्य छोड़ रूसी प्रान्तमें जा बसे थे। १८७७-७८ ई० के युद्धमें भी कुछ लोगोंने ऐसा ही काम किया। १८३४ ई०को कुर्दोंका स्वातन्त्र्य शिथिल पड़ा और १८४३ को बेदरखान् बे तथा १८८० को शेख आविदुल्ला भड़ काया बलवा अच्छी तरह दबाया गया था।

१४६१ ई०को २य मुहम्मदने कुस्तुन्तुनिया अधिकार कर मुसलमान भिन्न प्रजाका मुख्य या प्रधान धर्मयाजकोंको आधारके दीवानी, फौजदारी और बन्धनीय यावतीय शासनको पूर्ण क्षमता दी। इस नियमानुसार ब्रूसाके आरमनी मुख्यका कुस्तुन्तुनियामें प्रधान आचार्यका और सम्पोका पद मिला। आरमनी अपना काम स्वतन्त्रतापूर्वक निर्वाह और सन्तानको धार्मिक शिक्षा दे सकते थे। किन्तु पादरीका प्रभाव घट गया। १८६९ ई०को नवीन व्यवस्था अनुसे प्रधान धर्माचार्य तो अपने पदपर प्रतिष्ठित रहे, किन्तु उनके प्रकृत अधिकार १४० सभ्योंकी समितिके हाथ जा पड़े। यह लोग प्रिगोरीय आरमनी कहाते थे।

१६९६ ई०को छोटे आरमेनियाका आचार्य यति-योंके साथ सम्बन्ध बढ़नेपर एक आरमनी समाज बना, जिसने रोमक-धर्मका मत ग्रहण किया। १८२८ ई०को फोरेन्सकी सन्धि सभामें इस समाजको 'संयुक्त आरमनी धर्म' उपाधि मिला था। किन्तु प्रधान धर्माचार्य प्रायः इस समाजके लोगोंपर अभियोग लगा बैठते थे। १८३० ई०को फ्रान्सके हस्तक्षेप करने पर आरमनियामें स्वतन्त्र समाज बनाया और अपना धर्माचार्य नियुक्त कर लिया। इन्होंने शिक्षा और साहित्यमें बड़ी उन्नति की थी। कुस्तुन्तुनिया, अङ्गोरा और किलिकामें अनेक रोमन-कायलिक आरमनी विद्यमान हैं।

१८३१ ई०को कुस्तुन्तुनियामें अमेरिकाके धर्म-प्रचारक पादरियोंने प्रोटेष्टाण्ट प्रथाकी नींव डाली थी। किन्तु प्रधान धर्माचार्य और इसने बड़ा विरोध किया। १८४६ ई०को प्रधान धर्माचार्यने प्रोटेष्टाण्ट मत माननेवाले आरमनियोंको जातिसे निकाल दिया था। इस कारण उन्होंने अपना एक स्वतन्त्र और उसके आपत्ति उठाते भी अलग बना लिया। धर्म प्रचारक व्यक्तियोंने खरपुत, मार्सिवान और ऐण्टाबमें कालेज् और स्कूल खोले हैं। लोग सुन्दर साहित्य पढ़ने लगे। उन्नति और धार्मिक स्वतन्त्रता फूट पड़ी थी।

१८७६ ई०को अब्दुल हमीदके तुर्की सिंहासनारूढ़ होनेपर आरमनियोंकी दशा अधिक सुधर गयी। किन्तु १८७७-७८ ई०को युद्ध बन्द होनेपर आरमनी प्रश्न उठ खड़ा हुआ। सानस्टेफानोंकी सन्धिके अनुसार तुर्कस्तानने रूसको आरमनियोंका सुधार करने और कुर्दों तथा सरकेशियोंका उपद्रव रोकनेका वचन दिया था। १८७८ ई०को १३वीं जुलाईको बर्लिनके सन्धिपत्रानुसार भी वह ही आरमनियोंका सहायक रहा। १८७८ ई०को इसी सूत्रको उलमाग्ने

अंगरेजोंका पोर्टके ईसायियों और दूसरे लोगोंकी रक्षा रखनेका वचन दिया था। अङ्गरोजोंने सुधार होनेसे पहले रूससे अधिकृत स्थान छोड़ देनेको कहा। १८८० ई०को यूरोपीय शक्तियोंने मिलजुल-कर जो आवेदनपत्र पोर्टको भेजा, उसका कोई फल न हुआ। किन्तु अंगरेज सुलतानका ध्यान वरलिनके सन्धिपत्रकी ओर खींचते ही रहे।

१८०१ ई०में जर्जिया अधिकार करनेपर रूसको अरमनियोंकी चिन्ता लगी थी। १८२८-२८ ई०को अनेक अरमनी रूसी राज्यकी प्रजा बने। उसने अरमनियोंको अपने नये देशका उन्नति-साधन समझ स्वाधीनता दी थी। बहुतसे लोग सरकारी नौकरी पाने और काम-काज बढानेसे धनी बन बैठे। किन्तु १८८१ ई०को २य अलेक्-सेन्दरका वध होनेपर रूस अरमनियोंसे बिगड़ पड़ा था। स्कूल बन्द किये गये। अरमनी भाषाका प्रभाव घटा। रूसने अपने चर्चमें उन्हें मिलाना चाहा। किन्तु रूसके अधीन स्वराज्य पानेकी आशा न रहनसे अरमनियोंका ध्यान तुर्की आरमेनियाकी ओर खिंचा था। १८०० ई०को रूसने तुर्की आर-मेनियामें रेलवे बनानेका अधिकार पाया।

वर्लिनका सन्धिपत्र देख ग्रिगोरीय अरमनी हताश हुये थे। उन्हें अभिलाष रहा, कि ईसायियोंके अधीन आरमेनिया और सिलिशिया मिलकर स्वाधीन प्रान्त बन जाता। वह साम्राज्यमें इधर-उधर फैले थे। अधिक-संख्या कहीं न रही। दक्षिणके तुर्की बोलनेवाले उत्तरके अरमनी भाषा बरतनेवालोंसे कष्टपूर्वक सम्भाषण कर सकते और पूर्वके अन्न पर्वत-वासी कुसुन्तुनिया तथा स्मिरनाके सुशिक्षित नागरिकोंसे धर्म भिन्न विषयमें मिलते-जुलते न थे। किन्तु सुधार होते न देख यूरोपमें शिक्षा-पाये लोग विद्रोह बढा अपना अभिप्राय सिद्ध करनेको उद्यत हुए। टिफलिस और अनेक यूरोपीय नगरमें राजद्रोहके पुस्तक तथा पत्र फैलानेको गुप्त सभा (Huntchagist) बनी थी। तुर्की आरमेनियासे दूत अस्त्रशस्त्र और विदारणशील पदार्थ पहुंचाते रहे। अनेक युवकोंने अराजकता सम्पादन करनेकी समिति बनायी थी। किन्तु पादरी और अमेरिकाके धर्मप्रचारक व्यक्ति उक्त कार्यको न तो उचित समझते और न उससे साफल्य होते देखते थे। अधिकांश लोग विद्रोहके विरोधी रहे। १८८३ ई०को ५वीं जनवरीको अपने वैफल्यसे संक्षुब्ध हो दूतोंने भयप्रद पत्र लिखे और युजगात तथा मार्सि-वानके अमेरिकन कालेजको भित्तिपर विद्रोहा-त्मक घोषणापत्र लगाये। विद्रोही अमेरिकाके धर्म-प्रचारकोंको अपने दलमें मिलाना चाहते थे। और इस कार्यमें वह सफलमनोरथ भी हुये। अमेरिकनोंपर घोषणापत्र निकालनेका अभियोग उपस्थित हुआ था। दो अरमनी शिक्षक बन्दी बने। बालिका-विद्यालय जला डाला गया था। विद्रोह सरलतापूर्वक दबते भी कैसारिये और दूसरे स्थानमें भड़क उठा।

विद्रोही पुरातन डारोनको नवीन आरमेनियाका केन्द्र बनाना चाहते थे। किन्तु मुश और सासुनके धनी लोगोंने इस आन्दोलनको उत्साह न दिया। १८८३ ई०के ग्रीष्मकाल मुशके समीप एक दूत पकड़ा गया था। शासकने कुर्द सवारोंको पार्वत्य प्रान्तपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। किन्तु अर-मनियोंने कुर्दोंको मार भगाया और १८८४ ई०को भी युद्ध होनेपर अपना स्थान न छोड़ा। इसके बाद शासकने सुशिक्षित सेनाको बुलाया और सुलतानने विद्रोह दबानेके लिये राजभक्त प्रजा एकत्र होनेका आदेश निकाला था। निर्दय भावसे अनेक लोगोंका वध होनेपर यूरोपमें हलचल पड़ गया। सुल-तानने विद्रोहकी दशा जांचनेके लिये कितने ही व्यक्ति नियुक्त किये। १८८४-८५ ई०को अंगरेजोंने फ्रान्स एवं रूसके सहारे अरजरूम, वान, बिटलिस, सिवास, खरपुत और दियारबकरमें प्रबन्ध करनेपर दबाव डाला था। किन्तु तुर्कीने एक न सुनी। सासुनमें हत्याकाण्ड करनेवालोंको उपहार और उपाधि मिला था। १८८५ ई०की ११वीं मईको वृटेन, फ्रान्स और रूसने मिलकर एक शोधन-व्यवस्था सुलतानके समक्ष रखी। सुलतानने उत्तर देनेमें

विश्राम बनाया था। तुर्केन नियन्त्रणके पक्ष और फ्रान्स तथा रूस विपक्षमें रहा। अगस्त मास अंग-रेजोंने फिर अभियान चलाया। टारसुसमें उपद्रव उठा। जातीय आन्दोलनका समर्थन न करनेवाले आरमेनियोंका वध किया गया। प्रधान धर्माचार्यके प्राण जानेका भी संशय था। लोगोंने कहा कि अंगरेजी राजदूत आरमेनियोंका वध करा जबानी बैठा कुछ न लिया ही जाना चाहता था। १ली अक्टोबरको कुछ सम्पन्न आरमनी आवेदनपत्र ले तुर्की सरकारके पास पहुँचे किन्तु पुलिस द्वारा हटाये गये। दोनों तरफसे बहुतसे आरमनी और थोड़े मुसलमान मरे थे। उसके बाद अंगरेजी राजदूतकी प्रेरणासे १७वीं अक्टोबरको सुलतानने संस्कार-व्यवस्था स्वीकार की। और ८वीं अक्टोबरको कुस्तुन्तुनियासे समस्त व्यक्तियोंने ट्रेबिजाण्ड पहुँच आरमेनियाका संहार किया था। सुलतान संस्कार-व्यवस्थाका प्रकाश न किया और १८९६ ई०के जनवरी मास तक संहार पर संहार होते गया। यूरोपीय शक्तियां चुपचाप तमाशा देखती रहीं। १८वीं से २१वीं जूनतक फिर वान, एगिन और निकसरमें बहुतसे आरमेनियोंका संहार हुआ। २६वीं अगस्तको राजद्रोहियोंने कुस्तुन्तुनियाका सरकारी बड़ा बैंक लिया था। सुलतानको अभिप्राय विदित रहा। शीघ्र ही पचासों सशस्त्र और मस्तक बंधाये हुये लोगजन सड़कोंपर छोड़े गये। उन्होंने छ: सात हजार निर्दोष आरमेनियोंको मार डाला था। जिस प्रान्तके लिये संस्कार व्यवस्था बनी उसीपर आपत्ति अधिक पड़ी थी। विदेशियोंकी रक्षा रही। राजादेश न माननेसे वास्तवमें अमेरिकन मठोंको क्षति पहुँची था। एकाएक तीन दिन समय बजारपर आक्रमण हुआ। पुरुष अस्पतालमें रहे। स्त्रियां छतपर बैठी थीं। सिपाहि, बन्दी आदि मानो आरमनी मारे गये। सम्पत्ति नष्ट होनेसे उनके कुछ मठोंमें छिपे थे। वहां रक्षाका उद्योग किया गया, वहां संहार बहुत अधिक हुआ। ईस्टर जौटनमें तीन मास तक लोगोंने अपना प्राण बचाया था। कुछ नगरोंपर पुलिस और अफसरने भी संहारमें उत्पातके साथ योग दिया। वास्तुत-पर तोप चली थी। कहीं कहीं भेरी बजते संहार आरम्भ और समाप्त हुआ। कुछ आरमनी निरस्त्र करके भी मारे गये थे। शासकों और पदाधि-कारियोंने वहां हत्याकाण्डमें बाधा डाली वहां शान्ति रही। स्थानीय मुसलमानोंमें काजियों, कुर्दों और सरकासीयोंने हत्याकाण्डमें योग दिया। किन्तु अनेक मुसलमानोंने अपने मित्र आरमेनियोंको बचा लिया था। किसीको दण्ड न मिला। अनेकोंने हत्याकाण्डमें योग देनेसे उपहार पाया था। कारागारों और गिरजाघरोंमें स्त्री पुरुष निर्दय भावसे मारे गये। गिरजाघर, मठ, स्कूल तथा भवन लुटे और मट्टीमें मिले। पचास हजारसे अधिक आरमनी मरे थे। अनेकोंको मुसलमान बनना और अनेकोंको दारिद्र्यका दुःख भोगना पड़ा। सम्पत्ति अधिक विनष्ट हुई। अवस्थासोंके मारे जानेसे स्त्री-पुत्र निराश्रय हो गये थे। प्रोटेस्टेन्ट और अमेरिकाने दुःख निवारणका उद्योग लगाया। पदाधिकारियोंके विरोध करने भी कुछ सफलता मिली थी। १८०३ को सुत और १८०८ ई०को वानमें फिर हत्याकाण्ड हुआ। १८०८ ई०को आरमेनियाका अभाव दूर करनेके लिये सुलतानने नवीन व्यवस्था प्रदान की।

भाषा एवं साहित्य—मूल आरमनी भाषामें अनेक ईरानी शब्द आ मिले हैं। जैसे आजेद, बुर, शैना आदि शब्द व्यवसाय, मुद्रा, पत्रिका, मान, न्यायालय, पढ़ोस पोषक पाठशाला शिक्षा साहित्य और कलाशीनक सम्बन्धीय शब्द प्रायः ईरानी हैं। विशुद्ध आरमनी शब्दोंमें मिलनेवाले ईरानी प्रभाव लगाते हैं।

मूल आरमनी भाषाके व्याकरणमें आर्यप्रथाको नहीं चलती। संज्ञा, सर्वनाम, प्रथम एवं द्वितीय पुरुष और क्रियाका बहुवचन 'क' लगानेसे बनता है। ई०के ७०० और ८०० वर्ष पहले आरमेनियामें सम्भवतः फिलपेनिय और कवित्य भाषाका अधिक प्रचार रहा। ग्रीकदेशका भी आरमा प्रभाव पड़ा है।

आजकल अरमनी दो प्रकारकी देख पड़ती, एक आरारात एवं टिफलिस और दूसरी स्तम्बूल तथा एशिया-मायिनरके प्रादेशिक नगरमें चलती है। पिछली तुर्की शब्दोंसे भरी है। किन्तु श्रेष्ठ भाषा पश्चिम आरमेनियाकी अपेक्षा वानके नवीन वाग्-व्यवहारसे अधिक मिलती है। ई०के ५वें शताब्द पीछे भाषान्तर करनेवालोंने केवल शब्द अनुवाद बना यूनानीका नियम सुरक्षित रखा है। ऐसा ही शब्दार्थ सिरीयकके अनुवादमें भी देख पडता है।

अरमनियोंका देवालय-सम्बन्धी साहित्य स्वतन्त्र रहा। किन्तु ४थे और ५वें शताब्द ईसायी धर्मा-ध्यापकवर्गने उसे समूल नष्टकर डाला। खोरेनवासी मूसाके इतिहासमें उसकी केवल बीस पंक्ति अवशिष्ट है। ४०० ई०के समय मेसरोप नामक ईसायीने अरमनी वर्णमाला निकाली थी। सम्भवतः वह अधिक प्राचीन थी। मेसरोपने केवल उसमें स्वर अपनी ओरसे मिलाये। किन्तु यूनानी धर्माध्यापक और सम्राट् थियोडोसियस्को प्रसन्न करनेके लिये अरमनि-योंने आख्यान उठाया, कि दिव्यरूपसे उसका प्रकाशन हुआ था। वर्णमालाके पूर्ण होनेपर अरमनी चर्चके प्रधान धर्माध्यापक साहाकने एडेस्सा, आथेन्स, कुस्तुन्तुनिया, अलेक्सन्द्रिया, अन्तिओक, कायसेरिया और दूसरे स्थान कितने ही लोगोंको यूनानी तथा सिरीय धर्मशास्त्र अनुवाद करनेको भेजा था। नवटेटामेण्ट, यूसेवियस-इतिहासका पाठभेद आदि उससे प्रस्तुत हुआ। ५वें शताब्द मौलिक यूनानीसे भी अनेक ग्रन्थ अनुवाद किये गये। ६ठें तथा ७वें शताब्दके पुस्तक बहुत अल्प अवशिष्ट हैं। पाठान्तरपर किसीका नाम नहीं मिलता। ८वें शताब्द साहित्यसम्बन्धी उद्योगकी बडी धूम रही। १०वें तथा ११वें शताब्द भी अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थोंका अनुवाद हुआ था। १२वें, १३वें, १४वें और १५वें शताब्द सुप्रसिद्ध ग्रन्थकारोंने लेखनी उठायी। १६वें शताब्द प्रथमतः अरमनी भाषामें पुस्तक छपे। १५६५ ई०को वेनिसमें मुद्रायन्त्र खुला था। १७वें शताब्द लेम्बर्ग, मिलन, पारि, इस्फहान, लेगहोर्न, आमष्टेरडाम, मार्सेयिल्स, कुस्तुन्तुनिया, लिपजिग और पाडुवानेमें मुद्रणकार्य आरम्भ हुआ।

वैद्यक, ज्योतिष, भाषाविज्ञान, कोष, इतिहास आदि विद्यासम्बन्धीय ग्रन्थोंका अनुवाद अरमनीमें हुआ है। अब स्थान-स्थानपर अरमनी मुद्रायन्त्र चलते और नये-पुराने ग्रन्थ छपते हैं। अंगरेजी, फरासी, रूसी और जर्मन ग्रन्थोंका पाठान्तर किया जाता है। वालार्शापाट, स्तम्बूल, वेनिस, वीयना, पारि, रौलाण्ड्स, पेट्रोग्राड, मास्को और जोयुल्फाके पुस्तकागारमें अरमनी भाषाके पुरातनग्रन्थ रखे हैं।

पाश्चात्य पण्डितोंके कथनानुसार आरमेनिया ही आर्यजातिका आदिम वासस्थान है। जर्मन जातिके पूर्वपुरुष यहींसे जाकर यूरोपमें रहे थे। यहूदियोंके धर्मशास्त्रमें इस देशका नाम मिलता है। भूतत्त्व देख समझा गया, कि हमारे पुराणशास्त्रमें आरमे-नियाका नाम हिरण्मयवर्ष लिखा है। अध्यापक विलसन संस्कृत संज्ञा पारचेत बताते हैं। (Ariana Antiqua, p. 147.) पैरिङ्गापर्वत पतङ्गगिरि है। (ब्रह्माण्डपुराण ४१ अध्याय) किसी-किसीके मतमें अरचस् नदीको पुराणोक्त अरुणोदा समझना चाहिये।

पुरातन गृहादिका ध्वंसावशेष, कोणाकार शिला-लेख और मन्दिर प्रभृति देख समझते, कि अति पूर्वकाल आरमेनियामें नानाजातिके लोग आकर रहते थे। भारतवासी हिन्दुवोंके पहुंचनेका भी प्रमाण मिला है। सिरीय देशके किसी पादरीने लिखा,—"हिन्दुवोंका एक दल यहां आ बसा है। वह देमितर और किसनली नामक देवताओंको पूजते थे। सिवा इसके दूसरी भी अनेक देवमूर्ति स्थापन की। आटिपट नगरमें वह देवतापर बलि चढ़ाते रहे।" (Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. V. 331) प्राचीन अरमनी आर्यजाति-सम्भूत हैं। अपरापर जातिकी भांति लोग नाना प्रकार उपासक और सम्प्रदायभुक्त थे। आजकाल अधिकांश ईसायी धर्म फैल गया है।

आरम्वण (वै० क्ली०) आ-लवि-ल्युट्, वेदे लस्य रत्वम्। आलम्बन, इमदाद, सहारा।

(अमर ३।१०।१५) २ प्रतोद, कोड़ा, पैना। ३ आरामुखी जलपक्षी। (हिं० पु०) ४ क्राकच, करौत। यह लोहेकी पटरीसे बनता और चार-पांच हाथ लम्बा तथा छः-सात अङ्गुल चौड़ा रहता है। आकार चाप-जैसा वक्र होता है। पटरीमें सामनेकी ओर दांत काटते और दोनो सिरोंपर पकड़नेको मूंठ लगाते हैं। इससे लकड़ी चीरनेका काम निकलता है। पहले लट्ठेको दो कड़ियोंके सहारे एक सिरा जमीन्से मिला और दूसरा ऊपरको उठा खड़ा करते हैं। फिर आरा उसपर रख दो आदमी नीचे-ऊपर खींचने लगते हैं। दांतके जोरसे लकड़ीका बुरादा उड़-उड़कर इधर-उधर गिरता और तख्ता उतरते चला जाता है। ५ आर, पहियेका फेरा। ६ आड़ा, दासा। यह लकड़ी या पत्थरसे बनता और घोड़िया रखनेके काम लगता है। इससे घोड़िया ठीक बैठ जाती और नापजोख बराबर उतरती है।

७ विहार प्रान्तके शाहाबाद जिलेकी आरा तहसील। यह अक्षा० २५° १०′ १५″ एवं २५° ४७′ उ० और द्राघि० ८४° १९′ तथा ८४° ५४′ पू०पर अवस्थित है। क्षेत्रफल ८१५ वर्गमील है। हिन्दू, मुसलमान और ईसायी बहुतसे लोग रहते हैं। इसमें आरा, बेलौती और पीरूका थाना लगता है।

८ शाहाबाद जिलेका प्रधान नगर। यह अक्षा० २५° ३३′ ४६″ उ० और द्राघि० ८४° ४२′ ४२″ पू० पर अवस्थित है। म्यूनिसपलिटीको हजारों रुपये सालकी आमदनी है। नगर बहुत अच्छा बना है। जेल, अस्पताल और ईष्ट-इण्डिया-रेलवेका ष्टेशन है।

१८५७ ई०को बलवा होनेपर आरा प्रसिद्ध हुआ। बलवायी सिपाही दानापुरसे नदी पार कर आरे पर झपटे थे। उन्होंने राजकोष लूट जेलके कैदियोंको छोड़ दिया। कुछ युरोपीय और सिख घिर गये थे। उद्धारके लिये जो अंगरेजी फौज आयी, उसने घातकी जगह हार खायी। फिर भी कोई बारह अंगरेज, तीन-चार ईसायी और पचास सिख एक मकानसे लड़ते रहे। खाने-पीनेका सामान और गोलाबारूद सब कुछ इकट्ठा था। २७वीं जुलाईको सिपाहियोंने जोरसे धावा मारा, किन्तु भीषण अग्नि-वृष्टि होनेसे उनका दल टूट गया। भकसे उड़ जाने-वाली चीजें जलाकर मिर्चेका धूवां देने, आदमियों तथा घोड़ोंकी लाशें इकट्ठाकर बदबू फैलाने और मकानतक सुरङ्ग लगानेसे भी रक्षकोंके पैर उखड़े न थे। इसी प्रकार एक सप्ताह बीतनेपर मेजर-विनसेण्ट ईयर ४ तोप लेकर आ पहुंचे। राहमें उन्हें भी कयी जगह लड़ना पड़ा था। ईयरके तोप चलानेपर बलवायी जङ्गलमें जा छिपे और दनादन गोली बरसाने लगे। अंगरेजी फौजके सङ्गीन निकाल आगे बढ़नेसे लोग प्राण छोड़कर भागे थे। इस युद्धमें कुंवरसिंह प्रधान रहे।

शोन नदीकी बड़ी नहरसे एक छोटी शाखा आरेको आयी है। यह देहरीमें शोनभद्रसे निकल गङ्गा नदीमें जा गिरी है। सरकार व्यापारके जहाज चलाती और खेतोंमें पानी पहुंचाती है।

आराकश (हिं० पु०) क्राकचिक, करौतिया, आरा खींचनेवाला। यह शब्द हिन्दी 'आरा' और फारसी 'कश' मिलाकर बना है।

आराकान—ब्रह्मदेशका एक विभाग। ग्रामीण नाम रखेङ्ग्य है। संस्कृत भाषामें रसाङ्ग और रमाङ्ग भी कहते हैं। आराकानके इतिहासमें देखा—जिन प्रथम नृपतिने बनारसमें राज्य चलाया उन्हींके पुत्रने यह देश अपने भागमें पाया। दूसरोंके कथनानुसार एक वन्य मृगीने कुलदान नदीके प्रान्तमें ऋष्यशृङ्ग जैसा मानवीय शिशु उत्पन्न किया था। मेरु या म्रू नृपति आखेट करने निकले। नवजात शिशुको वनमें देख वह घर उठा लाये थे। लोगोंके मध्य उसका पालन-पोषण हुआ और मारयो (मौर्य्य) नाम पड़ा। बड़े होनेपर बालकने एक म्रू-सरदारकी कन्यासे विवाह किया और अन्तको आराकानका राज्य लिया था। इसी बालकसे आराकानी वंश चला।

मारयोके राज्य-पानेका समय ई०से २६६६ वर्ष पूर्व बताते हैं। मारयोके वंशजोंने १८३३ वत्सर राज्य किया था। उसके बाद विप्लव बढ़ा। अन्तिम

नृपतिकी रानीने अपनी दो कन्याओंके साथ पर्वतमें जाकर आश्रय लिया था। छोटे भाईको टागौङ्का राज्य सौंपनेपर बाध्य होनेवाले काण राजवंशी नामक एक क्षत्रिय उत्तर आराकान आ पहुंचे और अपने साथियोंके साथ क्योकपानडौङ् पर्वतपर जम बैठे। मारयोंवंशकी अन्तिम रानीके मिल जानेसे उन्होंने उनकी दोनों कन्या ब्याह ली थीं। कुछ वर्ष पीछे कानराजनकी पर्वतसे उतर लिंगभूमिमें वहां तथा प्रधान नगरके अधिपति बने। आराकानी ऐतिहासिकोंके कथनानुसार १०८२ वर्ष उनके वंशजोंने राजत्व चलाया। १४६ ई०को चन्द्रसूर्य नामक नृपति सिंहासनपर बैठे थे। उन्हींके समय बुद्धकी धातुमय एक प्रतिमा बनी जो बहुत प्रसिद्ध हुई। उसकी धर्मोत्सिक प्रतिष्ठा व्याख्यान पीछे कहीं कहा था। १७८४ ई०को आराकान जीतनेपर ब्रह्मदेश-वासी प्रतिमा उठा ले गये। अमरपुरसे उत्तर एक मठमें आज भी उसकी पूजा धूमधामसे होती है। ई०के ८वें शताब्दतक इस प्रान्तमें बौद्धधर्मका प्राबल्य रहा। कानराजगी-वंशज ५३वें नृपतिके राज्यसमय पुरातन राजधानी मुसमाबसे नष्ट होनेपर विद्रूप पड़ा। ज्योतिषियोंने स्थानपरिवर्तनकी आवश्यकता देखायी थी। इसीसे महातेङ्चन्द्र नृपति सदल बल अपना प्रासाद छोड़ नयी राजधानी पैयाकोमें जाकर रहने लगे। चन्द्र कुलनामधारी नौ नरेशोंने उस नगरमें उत्तरोत्तर राज्य किया। इन राजाओंके सिक्के देखनेसे विदित होता, कि उस समय सर्वत्र हिन्दूधर्म चलता था। किन्तु आराकानी इतिहासमें उन नरेशोंका आदि स्थान नहीं लिखा।

इस वंशके बाद क्यो आमीत एक नृपति और उनके आत्मजनने ४६ वत्सर राजत्व किया था। एक चन्द्रवंशज नरेशके फिर सिंहासनारूढ़ होनेपर राजधानी बदली, किन्तु गोल ही उपद्रव उठनेसे छोड़ दी गयी।

उसके बाद उन इरावदीके शानोंने आराकान पर आक्रमण कर १८ वर्ष राज्य चलाया था। उन्होंने निर्दय भावसे लोगोंको सताया और मठोंको लुटाया। ८८६ ई०में उनके वहां जानेसे पुमान नरेश आमर्त्त या अनोयरहत बुद्धकी सुप्रसिद्ध मूर्ति पानेको आराकानपर झपटे। किन्तु ऐसे व्यवधानसे बिना मूर्ति पाये ही उन्हें पीछे पैरों हटना पड़ा था। कुछ वर्ष बाद अनोयरहतके आश्रयसे चन्द्रवंशीय एक नृपति फिर सिंहासनपर बैठे। पिङ्गतसामें राजधानी प्रतिष्ठित हुई थी। आराकान पुमान नृपतिके अधीन ६० वर्षतक करद राज्य रहा। पीछे एक उत्तराह-पदस्थ, मेङ्बिलू नामक नरेशको मार स्वयं राजा बना। सिंहासनके उत्तराधिकारी मेङ्रौयव अपनी रानीको ले पुमान भाग गये थे। वहां क्यानसित्था नृपतिने उनका स्वागत किया। २५ वर्षतक राजकीय परिवार निर्वासित रहा। मेङ्रौयवके पुत्रका नाम लेतमेङ्नान था। पिताके मरनेपर पुमानके वर्तमान नृपति अलौङ्सौयुने उसे आराकानके सिंहासनपर बैठाला चाहा। वर्षा ऋतुके अन्त भूमि और समुद्रमार्गसे उन्होंने एक एक लाख व्यूह तथा तालैङ् सेना भेजी। घोर युद्ध होने बाद दूसरे वर्ष उनकी प्रतिज्ञा पूरी हुई। बुद्धगयामें ब्रह्मदेशकी भाषाका जो शिलालेख मिला, उसमें लिखा,—एक बार व्यूसोंके अधीश्वर लेतमेङ्नाने पुमान नरेशके प्रति अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार इस मन्दिरका जीर्णोद्धार कराया है। ब्रह्मदेश देखो।

आराग (स० पु०) ब्रह्मयाण्डके सातमें एक सूर्य।

आराध (स० स्त्री०) आराया अग्रम् ६ तत्। १ चर्मभेदिकाका अग्रभाग, सुतारीकी नोक। २ चोड़िका तलुआ। यह चाबुकके सिरेपर लगता है। ३ पर्यवस्थाग्रसमुद, चलहदार तीरको नोकका किनारा। (त्रि०) ४ नोकीला, तेज किया या पैनाया हुआ, सुतारीकी तरह जो सिरेपर पैना और पेंदेमें चौड़ा हो।

आराजी (अ० स्त्री०) भूमि, खेत, ज़मीन, खेत, मुतफ़र्रिक ज़मीनके लिये। यह शब्द 'अरज़'का बहुवचन है।

आराम्नी (सं० स्त्री०) सम्यक् रात्रि, आ राज कनिन्-ङीप्। हैम विशेष, एक मुख्य। इसको

स्थान मासिस-मूसर बताते हैं। तुर्क इस पर्वत शृङ्गको आघ्रिदाघ (आर्तगिरि) और ईरानी कोह-नूह (नूहका पर्वत) कहते हैं। आरारात आग्नेय-शैलसम्भूत और समुद्रतलसे प्राय: १७२६० फीट ऊंचा है। स्थानीय लोग आज भी गिरिशृङ्गपर नूहकी पोतका रहना मानते हैं। उनके विश्वासानुसार पहले वन था, अब पहाड हो गया। आरमनियोंके कथनानुसार एरिवान नामक स्थानमें नूहने द्राक्षालता लगायी और पोतसे उतर नखजोवन नगर (अवतरण-भूमि)में प्रथम रहनेकी कुटी बनायी थी। पाश्चात्य पण्डित हमारे मनुके साथ नूहका ऐक्य ठहराते हैं। किन्तु हिन्दुवोंके शास्त्रमें कहे हुये मनु इस जगह नहीं, हिमालयके निकट नौबन्धन नामक स्थानपर उतरे थे। मनु और नौबन्धन शब्दमें विस्तारित विवरण देखो।

आराल (सं० त्रि०) ईषदरालम्, प्रादि-समा०। अल्पकुटिल, किसी कदर टेढा।

आरालिक (सं० त्रि०) अरालं कुटिलं चरति, ठक्। पाचक, बावरची, नानवायी। पाचक देखो। धनलोभसे शत्रु-प्रेरित पाचक भोजनमें विषादि मिला देता, इसीसे कुटिल आचरणकारी समझा और इस नामसे पुकारा जाता है। 'भक्तकारः सूपकारः सूदारालिकवल्लवाः।' (हेम ३।३८०)

आराव, आरव देखो।

आरावली (सं० स्त्री०) विन्ध्यनग, विन्ध्याचल पहाडकी एक शाखा। अरावली देखो।

आराविन् (सं० त्रि०) आरौति, आ-रु-णिनि। १ सम्यक् शब्दकारक, ऊंचो आवाज़ देनेवाला। (पु०) आरावी। जयसेनका उपाधि। (स्त्री०) ङीप्। आराविनी।

आरास्ता (फ़ा० वि०) १ निष्पन्न, तैयार। २ अलङ्कृत, सजा हुआ।

आरास्ता-करना (हिं० क्रि०) १ विधान करना, तरतीब देना। २ नियत करना, ठीकठाक लगाना। ३ संग्रह करना, बटोरना। ४ निष्पन्न करना, तैयारी-पर लाना। ५ अलङ्कृत करना, सजाना।

आरास्ता-पैरास्ता (फ़ा० वि०) १ समलङ्कृत, सजा-बजा। २ सन्नोद्धत, मुसल्लह, हथियारबन्द।

आरि (सं० पु०) १ कण्टकद्रुम, एक पेड़। २ खदिर-सार, कत्था, खैर। (हिं०) आर देखो।

आरिज़ा (अ० पु०) १ वृत्तान्त, वाक़िया, माजरा। २ आकुलत्व, बीमारी।

आरिज़ा क़ानूनी (अ० पु०) न्याय्य विकार, शरयी नुक़्स।

आरिज़ा जिस्मानी (अ० पु०) तनू-दौर्बल्य, काठीका बोदापन।

आरिज़ा दमाग़ी (अ० पु०) बोधव्याधि, दिलकी बीमारी।

आरित्रिक (सं० त्रि०) अरित्रं नौकादण्डः तत्र भवः, ठञ् ञिठ् वा। काश्यादिभ्यष्ठञ्ञिठौ। पा ४।२।११६। अरित्रभव, नावके डण्डेमें होनेवाला। (स्त्री०) ठञि ङीप्। आरित्रिकी। ञिठि-टाप्। आरित्रिका।

आरिन्दम (सं० पु०) सनस्नुत राजाके पिता। (ऐतरेयब्राह्मण ७।३४)

आरिन्दमिक (सं० त्रि०) अरिन्दमे भवादिः, काश्या ठञ् ञिठ् वा। अरिन्दमसे होनेवाला, जो दुश्मन्के मारनेवालेसे हो।

आरिया (हिं० स्त्री०) एक पतली ककड़ी। यह वितस्ति-परिमित बढ़ती और अत्यन्त शीतल लगती है।

आरिश्मीय (सं० त्रि०) रिशति, रिश हिंसे मनिन् अरिश्मः तस्य सन्निकृष्टदेशादिः, कृशादित्वात् छन्। अरिश्मके निकटस्थ, अरिश्मके पास होनेवाला।

आरी (हिं० स्त्री०) १ क्षुद्र क्रकच, छोटा आरा। इसमें एक ही ओर पकड रहती है। बढयी दोनो पैर अडा और बायें हाथ पकड लकडी आरीसे चीरते हैं। २ लोहेकी कील। यह गाडी हांकनेके पैनेमें लगती है। ३ चमडा छेदनेकी सुतारी। ४ किनारा, छोर। (अ० वि०) ५ परिश्रान्त, थका-मांदा। ६ निराश्रय, बेचारा।

आरी आना (हिं० क्रि०) परिश्रान्त होना, थक जाना।

आरीहणक (सं० त्रि०) अरीहणेन निर्वृत्तम्, अरी-हणादित्वात् वुञ्। शत्रुघातक द्वारा सम्पन्न, दुश्मन्-के मारनेवालेका तैयार किया हुआ।

आरुण्य (सं० क्ली०) राग, सुर्खी। (भागवते श्रीधर १०।२१।१०)

आरुत (सं० क्ली०) आ-रु भावे क्त। १ आराव, शोर-गुल, हुल्लड़। (त्रि०) आ-रु कर्तरि क्त। २ आराव-युक्त, पुरशोर, आवाजसे भरा हुआ।

आरुद्ध (सं० त्रि०) आरुध्यतेऽस्य, आ-रुध कर्मणि क्त। प्रतिरुद्ध, बद्ध, मसदूद, रुका हुआ।

आरुरुक्षु (सं० त्रि०) आरोढुमिच्छुः, आ-रुह-सन्-उ। आरोहण करनेका इच्छुक, चढ़ने या बढ़नेकी ख़ाहिश रखनेवाला।

आरुरुक्षमाण (सं० त्रि०) आरोहणकी इच्छा करता हुआ, जो चढनेकी खाहिश कर रहा हो।

आरुपाय (सं० त्रि०) अरुपः सन्निकृष्टदेशादिः, कृशादित्वात् छण्। अरुपसन्निकृष्ट, अरुपसे नजदीक।

आरुपी (सं० स्त्री०) मनुकी एक कन्या। यह च्यवनकी पत्नी रहीं। च्यवनोत्पादित पुत्र और्व इनका उरुदेश फाड़कर भूमिष्ठ हुये थे।

(महाभारत आदिपर्व ६६ अध्याय)

आरुष्कर (सं० क्ली०) भल्लातक, भिलावां।

आरुह् (वै० त्रि०) १ आरोहण करनेवाला, जो चढ़ रहा हो। (स्त्री०) आरुक्। वृक्षप्ररोह, कुरा, टेहनी।

आरुह (सं० त्रि०) आरोहति, आ-रुह-क। १ आरोहणकर्ता, सोपानादि पर चढ़नेवाला। (पु०) २ आरोहण, उभार, चढाव।

आरुह्य (सं० अव्य०) आरोहण करके, चढ़कर।

आरू (सं० पु०) ऋच्छति, ऋ-ऊ-णित्। पिङ्गकपि-पर्यटः। उण् १।९०। १ पिङ्गलवर्ण, भूरा रङ्ग। (त्रि०) २ पिङ्गलवर्णयुक्त, भूरा।

आरूक, आरुक देखो।

आरूटपक (सं० पु०) वसा, चरबी।

आरूढ (सं० त्रि०) आ-रुह कर्तरि क्त। १ आरोहणकर्ता, चढनेवाला, चढ़ा हुआ। "अफुल्लकमलारूढाम्।" (जगद्धात्रीध्यान) यह शब्द प्रायः समासमें लगता है, जैसे—अश्वारूढ़ादि। कर्मणि क्त। २ आरोहण किया जानेवाला, जो चढ़नेके काम आता हो। (क्ली०) भावे क्त। ३ आरोहण, उभार।

आरूढ़यौवना (सं० स्त्री०) नायिका विशेष। यह एक प्रकारकी मध्या नायिका होती और स्वामिसहवाससे प्रसन्न रहती है।

आरूढ़वत् (सं० त्रि०) आरोहणमें प्रवृत्त, जो चढ़ रहा हो। (पु०) आरूढ़वान्। (स्त्री०) आरूढ़-वती।

आरूढ़ि (सं० स्त्री०) आ रुह-क्तिन्। आरोहण, चढ़ायी।

आरे (वै० अव्य०) १ दूर, दूर-दराज। २ समीप, अनकरीब। "आरे अस्मत् दुरितस्य भूरे।" ऋक् १।१८८। हिन्दीमें यह शब्द 'आरा' का बहुवचन है।

आरेअघ (वै० त्रि०) निष्पाप, गुनाहको दूर किये हुआ। 'आरे दूरे अघ पाप यस्य तादृशी।' (सायण)

आरेअवद्य (वै० त्रि०) निष्कलङ्क, हिकारतको दूर किये हुआ।

आरेक (सं० पु०) आ-रिच्-घञ्। सन्देह, एहति-माल, गुमान्।

'सन्देहद्वापरारेकाविचिकित्सा तु संशयः।' (हेम ६।११)

आरेचित (सं० त्रि०) आ-रिच्-णिच्-क्त-इट्, णिच् लोपः। ईषत् आकुञ्चित, सन्देहयुक्त, गैरमुतमैया, गोल।

आरेवत (सं० पु०) आ सम्यक् रेवयति अधो गम-यति मलम्, आ-रेव-णिच्-अतच्। १ स्थूलारग्वधवृक्ष, बड़े अमलतासका पेड़। मलको अच्छीतरह निकाल डालनेका गुण रखनेसे अमलतास 'आरेवत' कहाता है।

आरेहण (वै० क्ली०) लेहन, चुम्बन, चूमचाट।

आरो (हिं०) आरव और आरा देखो।

आरोक (सं० पु०) १ रुचिरता, चमाचमी, झला-मली। २ जालसूत्र मध्य प्रकाशका क्षुद्र विन्दु, वाफ़्तेके धागेमें रौशनीका छोटा नुकता। ३ शिखा, चोटी।

आरोग (सं० पु०) सूर्य विशेष। (हिं) आरोग्य देखो।

आरोगना (हिं० क्रि०) भक्षण करना, नोश फ़र-माना, जीमना। भोजन करनेसे शरीर आरोग्य रहता, इसीसे खाना आरोगना कहाता है।

पड़ता है। जैसे शुक्तिमें रजतज्ञान। वेदान्तिक इसे अध्यास कहते हैं।

आरोप आहार्य और अनाहार्य भेदसे दो प्रकारका होता है। जहां बोध निश्चय रहते भी न्यास करनेको जी चाहता, वहां आहार्य आरोप आता है। जैसे, न होनेका निश्चय रहते भी मुखको चन्द्र कहते हैं। अपरोक्ष ज्ञानका नाम अनाहार्य आरोप है। वेदान्त-मतसे वस्तुमें अवस्तुका भ्रम दौड़ना अध्यारोप ठहरता है। अध्यारोप देखो।

आरोपक (सं० त्रि०) आ-रुह-णिच्-ण्वुल्। आरोपणकर्ता, लगानेवाला।

आरोपण (सं० क्ली०) आ-रुह-णिच्-ल्युट्। १ न्यास, तक़रुरी, लगाव। २ ऊपर उठा देनेका काम। ३ पेड़का लगाना। ४ विश्वास, सुपुर्दगी। ५ तन्तुप्रयोग, तार चढ़ायी।

आरोपणीय (सं० त्रि०) आ-रुह-णिच्-अनीयर्। १ चढ़ाया जानेवाला, जिसे ऊपरको उठाया जाये। २ स्थापनीय, रखा जानेवाला।

आरोपना (हिं० क्रि०) १ निवेशन करना, लगाना, बैठाना। २ चढ़ाना, ऊपरको उठाना।

आरोपित (सं० त्रि०) आ-रुह-णिच्-क्त-इट। १ आरोहण कराया हुआ, जो चढ़ाया गया हो। २ स्थापन किया हुआ, जो लगाया गया हो। ३ आकस्मिक, इत्तिफ़ाकिया।

आरोप्य (सं० त्रि०) आ-रुह-णिच्-यत्। १ आरोपणीय, लगाया जानेवाला। (अव्य०) २ आरोप-करके, लगाकर।

आरोप्यमाण (सं० त्रि०) चढ़ाया जाता हुआ, जो खिंच रहा हो।

आरोह (सं० पु०) आ-रुह-घञ्। १ आक्रमण, हमला। २ नीच स्थलसे ऊर्ध्व स्थानको गमन, नीचेसे ऊपरको उठान। ३ अङ्कुरादिका प्रादुर्भाव, कोंपल वग़ैरहका फूटना। ४ हस्ती या घोटकके ऊपरकी बैठक, हाथी या घोड़ेकी सवारी। ५ दैर्घ्य, लम्बान। ६ उच्चत्व, बुलन्दी। ७ नितम्ब, चूतड़। ८ मान, पैमायश। 'आरोहो दैर्घ्यमानयोः। आरोहणे नितम्बे च।' (विश्व) ९ आरोहणकर्ता, सवार। १० दर्प, ग़रूर। ११ अवतरण, उतार। १२ आकर, खान।

आरोहक (सं० त्रि०) आ-रुह-ण्वुल्। १ आरोहण-कर्ता, चढ़नेवाला। २ उन्नतशील, उठनेवाला। ३ उठा देनेवाला। (पु०) ४ अश्वारूढ़, सवार। ५ वृक्ष, दरख़्त।

आरोहण (सं० क्ली०) आ-रुह-ल्युट्। १ नीच-स्थलसे ऊर्ध्व स्थानको गमन, नीचेसे ऊपरका जाना। २ अङ्कुरादिका प्रादुर्भाव, कोंपल वग़ैरहका फूटना। आरुह्यतेऽनेन, करणे ल्युट्। ३ सोपान, सिढ़ी। ४ अभिक्रम, हमला। 'आरोहण, त्वभिक्रमः।' (हेम) 'आरोहणं स्यात् सोपाने समारोहे प्ररोहणे।' (मेदिनी) (वै०) ५ शकट, गाड़ी। ६ नृत्यस्थली, नाचनेकी जगह।

आरोहणिक (सं० त्रि०) आरोहणसम्बन्धीय, चढ़नेके मुताल्लिक। (स्त्री०) आरोहणिकी।

आरोहणीय (सं० त्रि०) आरुह्यते, आ-रुह कर्मणि अनीयर्। १ आरोहणके योग्य, चढ़ा जानेवाला। आरोहणं प्रयोजनमस्य, छ। अणुप्रवचनादिभ्यश्छः। पा ५।१।१११। २ आरोहण-साधन, चढ़नेमें काम देनेवाला।

आरोहवत् (सं० त्रि०) आरोहः प्रशस्त-नितम्ब-स्थानमस्य, मतुप् मस्य व पक्षे इनि। प्रशस्त नितम्ब-युक्त, चौड़े चूतड़ रखनेवाला। (स्त्री०) ङीप्। आरोहवती, आरोहिणी। (पु०) आरोहवान्।

आरोहिणी (सं० स्त्री०) ग्रहके नक्षत्रकी एक दशा। ज्योतिषमें ग्रहविशेषकी आरोहिणी दशाका फल इसतरह लिखा है,—

सूर्यकी आरोहिणी दशा आनेपर नर महत्त्व, सुख, परोपकारित्व, स्त्री, पुत्र, भूमि, गो, अश्व, हस्ती और कृषिकार्यसे सम्पन्न रहता है।

चन्द्रकी आरोहिणी दशामें स्त्री, पुत्र, धन, वस्त्र, सुख, कान्ति, राज्य, सुखभोग, देवार्चन और ब्राह्मण-हति सभी हाथ आ जाता है।

कुजकी आरोहिणी दशा सुख, राजपूजा, प्राधान्य, धैर्य, मनोभिलाष, सौभाग्य, गो, हस्ती और अश्व प्रदान करती है।

बुधकी आरोहिणी दशा लगनेसे यज्ञोत्सव, गो,

सुख, अश्वसमूह, भूषण, धन, धान्य, वाणिज्य, भूमि, अर्थ और परोपकार बढ़ता है।

बृहस्पतिकी आरोहिणी दशामें धन सम्मान, अर्थ, भूमि, शास्त्रक्रिया, स्त्री, पुत्र, राजपूजा और सर्वार्थहेतु यश प्रतापकी वृद्धि है।

शुक्रकी आरोहिणी दशाको प्रताप, धन, अलङ्कार, कान्ति पूजा प्रवृत्तिसिद्धि, स्वजनके साथ विरोध, मातृविनाश और परस्त्रीप्रसङ्ग देनेवाली समझना चाहिये।

शनिकी आरोहिणी दशामें विवाह अवस्थामें नृप सम्मानार्थ, वाणिज्य कृषि, भूमि, गो, धन और पुत्र पाते हैं।

आरोहिन् (सं० त्रि०) आरोहति, आ रुह-णिनि। आरोहणकर्ता, चढ़नेवाला। (पु०) आरोही। (स्त्री०) आरोहिणी।

आरोही (सं० पु०) उद्भिद्का जातिभेद किसी किस्मका पौदा। आरोही अपना भार संभाल नहीं सकता। यह कभी-कभी अपने-आप टहनियोंमें लिपट जाया करता, जैसे गुड़ची आदि है।

किसी किसीमें केवल मूल निकलता, जो काष्ठको पकड़ लेता है। १ चित्र देखो। कोई काष्ठ अपने पत्तेके आगे दूसरे वस्तुसे मिल बैठता है। जैसे कलिहारी। २ चित्र देखो। अपर वस्तु पकड़नेके लिये आरोही जातिके उपकाण्डमें आगे जमा अङ्कुर फूटता जो कलिका वा पत्रका रूपान्तरमात्र होता है।

आर्क (सं० त्रि०) अर्क-अग्नि-अण्, आफताबी।

आर्कलूष (सं० पु०) अर्कलूषस्य ऋषिभेदस्यापत्यम् अण्। तस्यापत्यमित्यण्। पा ४।१।९२। अर्कलूषके पुत्र। (स्त्री०) ङीप्। आर्कलूषी।

आर्कलूषायण (सं० पु०) अर्कलूषस्यापत्यम् युवा फक्। अर्कलूषके युवापत्य।

आर्कलूषि (सं० पु० स्त्री०) अर्कलूषस्यापत्यम् बाह्वादेराकृतिगणत्वात् इञ्। अर्कलूषके पुत्र वा कन्या-रूप अपत्य।

आर्कायण (सं० त्रि०) अर्कस्य गोत्रम् हरितादित्वात् फक्। अर्कके गोत्रसे सम्बन्ध रखनेवाला।

आर्कायणि (सं० त्रि०) अर्क अर्कादित्वात् फिञ्। १ अर्कके निकटस्थ, अर्कके पासवाला। आर्कायणि देश प्लिनि-कथित 'आराकोटस्' मालूम पड़ता है। उनके मतसे रानी सेमिरामिसने इस देशमें एक नगर बसाया था। (Pliny vi. 25) अर्कायण-नाय सूर्यलोकस्य प्राप्तये हितम् अण्। २ सूर्यलोक-साधन, सूर्यलोकको पहुंचा देनेवाला।

आर्कायन (सं० पु०) यज्ञविशेष। भगीरथने सोलह बार यह यज्ञ किया था। (महाभारत—अनुशासनपर्व। १ अध्याय)

आर्कि (सं० पु०) अर्कस्यापत्यम् इञ्। सूर्यपुत्र। यम, शनि, वैवस्वत मनु, सुग्रीव और कर्ण आर्कि कहाते हैं।

आर्क्ष (सं० त्रि०) ऋक्षस्येदम् अण्। १ नक्षत्र-सम्बन्धीय कवाकिबदार, तारोंसे भरा हुआ। २ भालूक सम्बन्धीय, भालूके मुताल्लिक। (पु०) ३ ऋक्षके अपत्य। यह शब्द अश्विन, श्रुतर्वन् और संवरणका विशेषण है।

आर्क्षवर्ण (सं० त्रि०) तारकित चतुष्पद या रश्मियुक्त, कवाकिबदार सांप या ढोर।

आर्क्षोद (सं० पु०) ऋक्षोद पर्वतोऽभिजनोऽस्य अण्। कच्छादि। पा ४।३।९४। ऋक्षोद पर्वतपर पितादि क्रमसे वासकारी द्विजविशेष, ऋक्षोद पहाड़का पुश्तैनी बाशिन्दा।

आर्क्ष्य (सं० पु०) ऋक्षे भवम् यत्। ज्योतिषादि। पा ४।३।११। नक्षत्रभव, तारेसे पैदा।

आर्गयण, आर्गायन देखो।

आर्गयन (सं० त्रि०) ऋगयनस्य व्याख्यानः तत्र भव

वा अण्। ऋगयनके व्याख्यानग्रन्थसे निकला हुआ।

आर्गल (सं० पु०) अर्गलमेव, स्वार्थे अण्। द्वार-रोधक काष्ठविशेष, आगल, चटखनी।

आर्ग्वध, आरग्वध देखो।

आर्घा (सं० स्त्री०) आ-अर्घ-अच्। पीतवर्ण, दीर्घमुख और भ्रमरवत् मधुमक्षिका विशेष, नहल। मालव देशमें यह देख पड़ती है।

आर्घ्य (सं० क्ली०) आर्घया निर्वृत्तं यत्। १ आर्घाख्य मक्षिका द्वारा निष्पादित मधु, आर्घाका शहद। जरत्कार्‌वाश्रममें मधुक वृक्षसे निकलनेवाला श्वेतवर्ण निर्यास आर्घ्य कहाता है। आर्घा नामक मक्षिकाका आर्घ्य ही श्रेष्ठ और सेवनसे चाक्षुष्य, अम्लदोषघ्न तथा कफ एवं पित्तको नाश करनेवाला है। इसका रस कषाय एवं कटु होता और पक जानेपर तिक्त, बलवर्धक तथा पुष्टिकर निकलता है। (भावप्रकाश) (त्रि०) २ आर्घा-सम्बन्धीय, नहलके मुताल्लिक।

आर्घ्यशर्करा (सं० स्त्री०) आर्घ्य मधु कृत शर्करा, आर्घ्य शहद की शक्कर। यह गुणमें आर्घ्य मधु-जैसी ही होती है। (राजनिघण्टु)

आर्घ्या (सं० स्त्री०) मधुमक्षिका विशेष, एक नहल। यह पीततुण्ड और भ्रमर-सदृश होती है। (राजनिघण्टु)

आर्च (सं० त्रि०) अर्चा अस्त्यस्य, ण। प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यो णः। पा ५।२।१०१। १ अर्चायुक्त, पूजा जानेवाला। २ अर्चक, परस्तिश करनेवाला। ३ ऋक-सम्बन्धीय, ऋग्वेदसे सम्बन्ध रखनेवाला।

आर्चत्क (सं० पु०) ऋचत्कके पुत्र। (ऋक् १।११६।२२)

आर्चभिन् (सं० पु०) बहुवचनम्, ऋचाभेन वैश-म्पायनस्य शिष्यविशेषेण प्रोक्तमधीते, णिनि। ऋचाभके शिष्यका बनाया ग्रन्थ पढ़नेवाला।

आर्चिक (सं० क्ली०) ऋचि भवं ऋचो व्याख्यानो ग्रन्थो वा, ठञ्। सामवेदीय ग्रन्थविशेष। ऋङ्मूलक होनेसे सामको आर्चिक कहते हैं।

आर्चीक (सं० त्रि०) ऋचीके पर्वते भवम्, अण्। १ ऋचीक पर्वतसे उत्पन्न। (पु०) स्वार्थे अण्। २ ऋचीक पर्वत। यह पर्वत पुष्कर तीर्थके निकट अवस्थित है। (महाभारत, वनपर्व २५ अध्याय)

आर्जव (सं० क्ली०) ऋजोर्भावः, अण्। १ सारल्य, रास्ती, सीधापन। २ सदाचार, रास्त किरदारी, सचायी। आर्जव दैहिक और मानसिक दो प्रकारका होता है। देहमें जो अंग वक्र नहीं, वही सरल है। इसीतरह व्यवहार्य वस्तु यदि प्रकृतिमें भी आर्जव और वक्कल रहता है। मानसिक सारल्यमें बाह्य और आन्तरिक दोनोका प्रकाश भावसे झलकता है। कौटिल्यपूर्वक जो आर्जव बाहर देखाते हैं, उसे मानसिक कह नहीं सकते।

३ भावशुद्धि, ईमान्दारी। ४ निष्कापट्य, रास्तबाज़ी।

आर्जीक (वै० पु०) ऋजीकस्येदम्, अण्। ऋजीक देश-सम्बन्धी।

"सुषोमे शर्यणावत्यार्जीके पस्त्यावति।" (ऋक् ८।७।२९।)
'आर्जीके ऋजीकानामदेशा, तत्सम्बन्धि।' (सायण)

मूलतः कदाचित् दुग्धपात्रको आर्जीक कहते हैं। सम्भवतः यह शब्द दैवी पात्रका द्योतक होता, जिसमें सोमरस परिष्कार किया जाता, अथवा उससे बनी आकाशनदीको बताता है। सायण आर्जीकका अर्थ ऋजीक देशका कुछ लगाते हैं।

आर्जीकीय (वै० पु०) वेदोक्त देश विशेष। "अयं वै शर्यणावति सुषोमायामधिप्रियः। आर्जीकीये मदिन्तमः।" (ऋक्-संहिता १०।७।३।५) 'आर्जीकीये एतन्नामके देशे।' (सायण)

आर्जीकीया (वै० स्त्री०) आर्जीकीय-टाप्। १ वेदोक्त नदीविशेष। "आर्जीकीये मरुद्वृधा सुषोमया।" (ऋक्) 'आर्जीकीयां विपाडित्याहुः ऋजीकप्रभवावर्ज्जुगामिनी वा।' (यास्क ९।३।५) २ विपाशा नदी। (Hyphasis), वर्तमान नाम वियस है।

आर्जुनायन (सं० पु०) अर्जुनस्य गोत्रापत्यम्, फञ्। अश्वादिभ्यः फञ्। पा ४।१।११०। १ अर्जुनके गोत्रापत्य। २ भारतका उत्तरपश्चिम-सीमास्थित एक जनपद।

वराहमिहिरने पांच-छः बार यह शब्द देशविशेष और तद्देशवासीके लिये लिखा है। काबुल और पेशावरका मध्यवर्तीस्थान पुरा 'अर्जून' नामसे अभि-हित था, संप्रति 'नगरहार' नामसे प्रसिद्ध है। (स्त्री०) टाप्। आर्जुनायना।

आर्जुनायनक (सं० त्रि०) आर्जुनायनस्य विषयो देशः,

पुत्र। पक्षपतीन्यो पुत्र। पा ४।१।१११। आर्जुनायनाक्षीर्यं, आर्जुनायनसे मरा हुआ।

आर्जुनावक (सं॰ त्रि॰) अर्जुनावदेशे भवम्, वुञ्। धूमादिभ्यश्च। पा ४।२।१२७। अर्जुनाव नामक देशभव, अर्जुनाव मुल्कका पैदा।

आर्जुनि (सं॰ पु॰) अर्जुनस्यापत्यम् इञ्। बाह्वादिभ्यश्च। पा ४।१।९६। १ अर्जुनके पुत्र अभिमन्यु। २ अर्जुनके औरस और द्रौपदीके गर्भसे उत्पन्न श्रुतकर्मा।

> "पाञ्चाली तु पञ्चभ्यः पतिभ्यः पञ्चपुत्रान्।
> ईजे ... पौरवान् ये ... ॥ ६६
> युधिष्ठिरात् प्रतिविन्ध्यं भीमसेनात् ...।
> अर्जुनात् श्रुतकर्माणं ... ॥ ७४
> सहदेवात् श्रुतसेनम्।" (महाभारत—आदिपर्व ९९९ अध्याय)

आर्जुनेय (सं॰ पु॰) अर्जुनस्य गोत्रस्य अपत्यम्। अर्जुनोंके अपत्य कौत्स ऋषि। कुत्स ऋषिको मानो अर्जुनों द्वारा प्रतिपादित होनेसे कुत्सके पुत्रका यह नाम पड़ा है।

आर्ट (अं॰ स्त्री॰ Art) १ कला, शिल्प कारीगरी। २ विद्या हुनर। ३ युक्ति, हिकमत। ४ कपट, ऐयारी चालाकी। शिल्प पाठशालामें शिल्प विद्यार्थी उसे 'आर्ट स्कूल' कहते हैं।

आर्टिकिल (अं॰ स्त्री॰ Article) १ द्रव्य जिन्स चीज। २ विषय, मजमून। ३ पद दफा।

आर्टिक्युलेटा (अं॰ स्त्री॰ Articulata) जन्तुविशेष किसी किस्मके जानवर। इनका शरीर और अङ्ग ग्रथित रहता है। किन्तु अन्तर्गत कङ्काल अस्थिमय नहीं और प्रधान स्नाय्वात्मगत सूत्र उत्पन्न होता है। इनमें स्थलचर एवं जलचर सम्बन्धीय दो विभिन्न और कृमि कालिक, बहुपाद, कवची तथा कीटक पांच गण हैं। कृमि, कालिक तथा बहुपाद स्थल और कवची एवं कीटक जलमें रहते हैं। स्थलचर देहमें शाखा-प्रतिशाखा-रूपसे विस्तीर्ण वायुनाड़ी और जलचर श्वासयन्त्र द्वारा श्वास लेते हैं।

कृमिका शरीर तीन भागमें विभक्त है। शीर्ष एवं वक्षःस्थल उदरसे पृथक् रहता है। पाद छः होते और प्रायः दो वा चार पक्ष निकलते हैं।

कालिकका शीर्ष एवं वक्षःस्थल एक ही अङ्गमें मिला और उदरसे जुदा होता है। पादसंख्या आठ है।

बहुपाद उदरसे पृथक् वक्षःस्थल नहीं रखते और कीटक जैसे देख पड़ते हैं। पाद बहुत होते हैं। शतपदी इन्होंमें परिगणित है।

कवचीके देहमें दो भाग होते हैं। शीर्ष एवं वक्षःस्थल एकहीमें मिला और उदरसे जुदा रहता है। पाद प्रधानतः दश या चौदह, कभी कभी अधिक और कदाचित् न्यून भी होते हैं। केकड़ा और चींगा मछली प्रभृति इसी जानवरोंमें शामिल हैं।

कीटकका वक्षःस्थल उदरसे भिन्न नहीं होता और पावका अभाव रहता है। कभी-कभी पादके स्थानमें फूलीहुई गांठ निकल आती हैं। केंचुवा, जोंक, पत्तरदार और अन्तड़ियोंका कीड़ा कीटक होता है।

आर्डर (अं॰ स्त्री॰ Order) १ आदेश, फरमाइश हुक्म। २ विधान, दस्तूर, ढङ्ग। ३ आनुपूर्व्य, दस्तूर। ४ आचार, ज्ञापिता। ५ वर्ग तबका। ६ आसन, दरजा। ७ अवस्था, दुरुस्ती। ८ चैन, अमन। ९ उपचार, तदबीर। १० पत्र, रक्का मांग। ११ समाचार परवाना।

आर्डिनेरी (अं॰ वि॰ Ordinary) १ आचारिक मामूली। २ सामान्य, आम दरजेवाला। ३ निर्गुण, बैरोनक। ४ प्रसिद्ध, बाजारी। ५ अप्रधान, अदना, कम-कदर।

आर्त (सं॰ त्रि॰) आ-ऋत क्त। १ पीड़ित, बेमार, दिक। २ दुःखित सुसीबतजदा। ३ आहत मजरूह।

आर्तगल (सं॰ पु॰) आर्त पीड़ा गलति नाशयति, आ-गल भावे क मन अच्। १ नीलझिण्टी कटसरैया। (Barleria Caerulea) यह उष्ण तिक्त एवं कटु होता है और वातकफ शोथ, कण्डू, शूल, कुष्ठ तथा ज्वरपर चलता है। (वैद्यकनिघण्टु)

आर्ततर (सं॰ त्रि॰) अत्यन्त पीड़ित, निहायत बेमार, घबराया हुआ।

आर्तता (सं॰ स्त्री॰) पीड़ा, दर्द तकलीफ।

आर्तना (वै॰ स्त्री॰) १ चयकर समर, मुश्किल जङ्ग, उजाड़ झगड़ा। २ अकृष्ट वन्य भूमि, गैर-मजरूवा, जङ्गली जमीन्।

आर्तनाद (सं॰ पु॰) करुणस्वन, दर्दनाक आवाज।

आर्तपर्णि (सं॰ पु॰) ऋतपर्णस्यापत्यम्, इञ्। ऋतपर्ण राजाके पुत्र सुदास।

आर्तबन्धु (सं॰ पु॰) दुःखित व्यक्तिका मित्र, ग़रीबोंका दोस्त।

आर्तभाग (सं॰ पु॰) ऋतभागस्य ऋषेर्गोत्रापत्यम्, अञ्। आनृष्यानन्तर्ये विदादिभ्योऽञ्। पा ४।१।१०४। ऋतभाग ऋषिके पुत्र जरत्कारु।

आर्तव (सं॰ क्ली॰) ऋतुरस्य प्राप्तः, अण्। १ ऋतुभव पुष्पादि, मौसमी फूल। २ ऋतु, हैज़। ३ ऋतुमती स्त्रीका रक्त, हैज़ी आलायश।

'आर्तवमृतुसम्भूते स्त्रीरजः पुष्पयोरपि।' (त्रिक)

सुस्थ अवस्थामें नियमित समयपर युवती स्त्रीके जरायुसे जो शोणित बहता, वह आर्तव कहाता है। अंगरेज़ोमें इसका नाम काटामेनिया (Catamania) या मेनसेस (Menses) है। सचराचर भारतवर्षमें बारहसे पचास वर्षतक मास-मास आर्तव निकलता है,—

"द्वादशाद्वत्सरादूर्ध्वं मापञ्चाशत्समः स्त्रियः।
मासि मासि भगद्वारा प्रकृत्यैवार्तवं स्रवेत्॥" (भावप्रकाश)

इङ्गलेण्ड देशकी स्त्रियां सोलह वर्षसे ऋतुमती होने लगती हैं। प्रायः ४५।५० वर्ष बीतनेपर उनका आर्तव रुक जाता है। लापलेण्डमें २०।२५ वर्षतक स्त्रीका आर्तव प्रायः बन्द रहता और उसके बाद ६० वत्सर पर्यन्त यथारीति निकला करता है। उपरोक्त प्रमाण द्वारा जान पड़ता, कि शीत-प्रधानकी अपेक्षा ग्रीष्म-प्रधान देशमें शीघ्र-शीघ्र आर्तव आता है। कभी-कभी आठ या नौ वत्सर वयसमें भी स्त्री ऋतुमती हो जाती है।

आर्तव निकलनेसे पहले अथवा उसके साथ-साथ शरीरमें अवसन्नता, आयास, दौर्बल्य, चक्षुकी चारो ओर विवर्णता और ईषत् असित रेखा, पृष्ठदेश एवं ग्रीवाके वृहत् ग्रन्थिमें व्यथा, कटि, उरुद्वय तथा वस्तिके अधोभागमें यातना और भार-बोध, सामान्य ज्वर प्रभृति लक्षण देख पड़ता है। शोणित गिर जानेसे फिर उतना कष्ट नहीं रहता। केवल शरीर दुर्बल और मुखका भाव कुछ मलिन हो जाता है। रजः निकलते समय स्त्रीके देहमें एक-प्रकारका गन्ध आता है। किसी-किसीके पूर्व लक्षण देख पड़नेपर शुद्ध जल-जैसा कुछ तरल पदार्थ निकलता है। ऐसी अवस्थामें पुष्टिकर आहार और औषध खिलानेसे स्वाभाविक आर्तव आने लगता है। फिर स्तनमें वेदना बोध या दुग्ध सञ्चार होता है। ऋतुमती स्त्रीके शारीरिक और मानसिक परिवर्तन पड़ता है। देह पुष्ट एवं लावण्ययुक्त, गठन सुगोल, स्तनद्वय वर्धित और नितम्ब प्रसारित होता है। स्वभाव लज्जा तथा विनीत भावसे दब जाता और स्त्रीजातिका काय एवं आचरण चलने लगता है।

दैहिक और आर्तव शोणितमें अनेक प्रभेद है। आर्तव शोणितमें सूक्ष्म अंश (Fibrine) रहते भी साधारण रीतिसे रक्त निकलकर जमता या गलता नहीं।

अण्डाधार ही आर्तव निःसृत करनेका प्रधान उद्दीपक है। उसके अभावमें ऋतु नहीं होता। अण्डाधार रहनेसे जरायुके अभावमें भी ऋतुका सकल लक्षण देख पड़ता है। अण्डाधारसे अण्ड निकलना ही ऋतुका प्रधान कारण है। प्रत्येक ऋतुकाल अण्डाधारका (Graafian vesicles) कोष फटता और अण्ड आगे बढ़कर अण्डप्रणालीके बीचसे जरायुमें घुसता तथा आर्तवके साथ निकल पड़ता है। अण्ड गिरनेपर जो स्थान चक्रदण्डवत् पीतवर्ण और शुष्क हो जाता, वह कर्पोरा-लूटिया (Corpora Lutea) कहाता है। स्त्रीके मरनेपर अण्डाधारका समुदय कर्पोरा-लूटिया गिननेसे उत्पन्न हुये सन्तानकी संख्या बतायी जा सकती है। अण्ड,सत्ता देखो।

ऋतुके समय रक्ताधिक्यसे जरायुकी धमनी तथा शिरा फूल जाती और अल्प अरुण बननेपर क्लेदोत्पादक (Mucus membrane) झिल्लीमें बिन्दु-बिन्दु रक्तकी उत्पत्ति होती है। पीछे जरायुकोटर आर्तवसे वह चलता है।

गर्भावस्थामें ऋतुका होना और ऋतु आनेसे पहले या सन्तानको स्तन्य पिलाते समय गर्भ धारण करना आदि सकल लक्षण अस्वाभाविक है।

आर्त्तववाहिनी नाड़ीका मुख मर्मसे बन्द जाने पर आर्त्तव देख नहीं पड़ता। उस समय यह अधोभागसे निकल न सकनेपर ऊर्ध्व दिक्‌को गमन करता है। आर्त्तव आग्नेय है। इसके आधिक्यसे कन्या उत्पन्न होती है। (सुश्रुत शारीर १ अध्याय)

असक शोणित अथवा लाखा रस जैसा होने और वस्त्र रंजित कर न सकनेसे आर्त्तवको निर्दोष समझना चाहिये।—

"शशासृक्‌प्रतिमं यत्तु यद्वा लाक्षारसोपमम्।
तदार्त्तवं प्रशंसन्ति यद्वासो न विरञ्जयेत्।"

(सुश्रुत शारीर २ अध्याय)

वात, पित्त, कफ और शोणित चारो अलग अलग या मिल जुलकर आर्त्तवको बिगाड़ देते हैं। इससे दूषण आनेसे भी सन्तान उत्पन्न नहीं होता। आर्त्तवका दोष वर्ण और वेदना द्वारा समझ पड़ता है। विमिश्रित वास आने और पूय या मल जैसा बन जानेसे इसका दोष नहीं छूटता। दूसरा लक्षण रहनेसे चिकित्सा-साध्य होता है। आर्त्तव बिगड़नेसे नाना प्रकारकी पीड़ा उठती है।

हिनमान, हामिल्टन, चार्चिल प्रभृति पाश्चात्य चिकित्सकोंके मतसे आर्त्तव रोग तीन प्रकारका होता है,—१ आर्त्तवरोध वा आर्त्तवाभाव (Amenorrhœa), २ आर्त्तवक्लेश (Dysmenorrhœa) और ३ असृग्दर अथवा अधिक शोणित स्राव (Menorrhagia)।

आर्त्तवरोध—कौमारावस्था बीतते ऋतुका न होना है। महर्षि सुश्रुतने इस रोगका नाम आर्त्तवविनाश लिखा है। दो अण्डाधार पड़ने, अण्डाधारके उपरिस्थ कोषसमूह तथा जरायु न होने अथवा पीड़ा उठने, जरायुमुखका लिङ्ग वहिर्भाग (Os Uteri) दृढ़ रहने, योनिका अभाव आने वा उभयपार्श्व मिल जाने, द्वार रुकने किंवा सतीच्छदको (Hymen) न फूटनेसे आर्त्तव रोध होता है। अण्डाधार और जरायुके अभावमें यह रोग नहीं छूटता, किन्तु योनिद्वार रुकनेपर औषध वा अस्त्रचिकित्सा द्वारा आरोग्यलाभ हो सकता है। पुनर्वार रुक न जानेके लिये मुख स्थानको तैलयुक्त लोमवस्त्र (Lint) वस्त्र अथवा अङ्गुलि दबा देते हैं। जननेन्द्रिय स्वाभाविक अवस्थापर रहते भी स्त्रियोंके आर्त्तवरोध पड़ता है। उसमें कोई अत्यन्त हृष्टपुष्ट और कोई क्षीण कोमलाङ्ग वा विवर्ण बन जाती है। ऋतुका सकल लक्षण झलकते भी आर्त्तव नहीं निकलता। कहीं कहीं मासान्तरमें ऋतुशोणितके बदले कितना ही शुक्लवर्ण तरल पदार्थ टपकता है।

रोगकी अवस्था और ऋतुका आनाकानी भेद देख भिन्न भिन्न उपायसे चिकित्सा करना चाहिये। हृष्टपुष्ट स्त्रीको विरेचक औषध खिला आहार घटा देते हैं, पुष्टिकर खाद्यादि बिलकुल व्यवहारमें नहीं लाते। ऋतुके चार दिन पूर्वसे सात दिन तक उष्ण जलमें नाभि पर्यन्त डुबोया रखे और अन्वह तीन बार पांच-पांच ग्रेन पिलरियाईको खिलाया करे। दुर्बल स्त्रीको पुष्टिकर आहार देना आवश्यक है। एलोज, गेहूं वा मांड़, हींग तथा उष्टकमलकी चकमा बकला एक एक ग्रेन एवं सलफेट अव-आयरन आधा ग्रेन मिलाकर गोली बनाते और दिनमें तीन बार खिलाते हैं।

२ आर्त्तवक्लेश—दुर्बल अवस्थामें हठात् स्नायुसम्बन्धीय वा मानसिक पीड़ा किंवा यातना होनेसे उपजता है। अधिक वा नियमित आर्त्तव निकलते भी जरायुमें व्यथा उठती और दो तीन मास किंवा अधिककाल तक रहती है। यह रोग स्नायुसम्बन्धीय (Neuralgic), प्रदाहयुक्त (Inflammatory) और रोधक (Mechanical) भेदसे तीनप्रकार है।

स्नायुसम्बन्धीय आर्त्तवक्लेश प्रायः तीस वत्सर वयसके बाद होता है। इस अवस्थामें १५।२० ग्रेन ब्रोमाइड अव पोटासियम और १०।१५ बूंद क्लोरोफार्म आध छटांक पानीके साथ देनेसे व्यथा मिट जाती है।

प्रदाहयुक्त आर्त्तवक्लेशमें प्रथमतः ज्वर तथा शिर पीड़ाका सञ्चार होता, मुखमण्डल तथा चक्षुद्वय रक्तवर्ण पड़ता और नाड़ीका वेग बढ़ता है। ऋतु आनेपर यातनाका ठिकाना नहीं लगता। इस रोगमें रेचक और ऋतुनिःसारक औषध देना चाहिये।

ऋतुके साथ अधिक यातना उठनेपर रक्तमोचणादिकी चिकित्सा चलाये। कोई-कोई जरायु-मुखके निम्न वहिर्भागमें जोंक लगाते हैं। टिङ्कचर एकोनायिट एवं टिङ्कचर वेलेडोना पांच पांच बूंद, वायिनम एण्टिमनी दश बूंद और जल आध छटांक एकमें मिलाकर दो तीन घण्टेके अन्तर पिलानेसे भी उपकार होता है।

जन्मावधि हो या प्रदाहरोगके पीछे रोधक आर्तव-क्लेश जरायुके निम्नमुखका (Cervix Uteri) कोटर अप्रशस्त पड़नेसे उपजता है। जरायुके निम्नमुखमें एक पतली बुजि प्रवेश करे। ग्रन्थि-वेदना होनेसे दो-तीन दिनके अन्तर बुजि चलाते हैं। इस उपायसे रोधक दब जाता है।

* असृग्दर—शोणितमें भिन्न प्रकारका लक्षण लाता और अङ्गमर्द एवं वेदना बढ़ाता है। अतिशय शोणित निकलनेसे दौर्बल्य, भ्रम, मूर्च्छा, तिमिरदृष्टि, तृष्णा, दाह, प्रलाप, पाण्डु, तन्द्रा और वायुजन्य अन्यान्य उपद्रव की उत्पत्ति होती है। दो-तीन ग्रेन मात्रामें अफीमकी गोली बनाकर खिलाना चाहिये। इससे उपकार न होनेपर पांच ग्रेन आर्गट-अफ्-रायीको ५ ग्रेन सोहागेके साथ मिलाकर देते हैं। कोई चिकित्सक उदरके अधोभाग एवं योनि-द्वारमें ठण्ढा पानी या बरफ रखने और कोई शूगर-अफ्-लेड तथा लडेनम जलमें मिला योनिके मध्य पिचकारी लगानेको कहता है। किसी तरह रक्त न रुकनेसे योनिके मध्य स्पञ्ज भर देना चाहिये।

होमियोपाथिक—डाक्टर अल्पवयस्क युवतीके आर्तव-रोधमें मुख रक्तवर्ण, मस्तिष्क भार वा मस्तिष्क व्यथा प्रभृति लक्षण देख पड़नेपर एकोनायिट, मुख विवर्णता अधिक तृष्णा, आशङ्का आदिकी अवस्थामें आर्सेनिक, ऋतुकाल नासिकासे रक्त गिरते ब्रायिओनिया और उदर फूलने तथा दुर्बल होनेसे चायना वगैरह व्यवहार करते हैं। आर्तवक्लेशमें असित रक्त-जैसा स्राव होनेसे आस्कावें; अल्प स्राव पड़नेसे एपिन मेल; दृष्टिविभ्रम मस्तिष्क-घर्षण एवं व्यथाके साथ शोणित-स्राव होनेसे वेलेडोना और स्त्रीके चीत्कारपूर्वक रोने तथा शोणितके अल्प आने या रुक जानेसे क्याक-टास प्रभृति दिया जाता है। असृग्दरपर सचराचर एकोनायिट, वेलेडोना, ब्रायिओनिया वगैरह चलता है। शोणितस्राव न रुकने तथा अधिकक्षण होते रहनेसे सलफर या प्लाटिना और अल्प समयके मध्य अधिक स्राव आनेसे नक्सवोमिका, फसफरस आदि प्रयोग किया जाता है।

अतिरिक्त स्राव होनेसे जरायुका सङ्कोचन-शक्ति खोलने और रक्त रोकनेके लिये निम्नलिखित औषध तथा उद्भिद् व्यवहारमें आते हैं,—अशोकत्वक्, कङ्कोल (कबाबचीनी), केशराज, रक्तोत्पलमूल, आयापाना, तण्डुलीयमूल (चौलायी), दूर्वा, दाडिमपुष्प, अलक्त, कांजडाशाक, नन्दावृक्ष, शाल्मलीपुष्प, अश्वत्थका वल्कल एवं फल, विसन्धरा, ओड्रपव, वज्रदन्ती (कुलेखाडा), रक्तचन्दन, पद्मकाठ, पीत अगुरु, लज्जामूल, कमलोत्तरपुष्प, नागदमनीमूल, वीरतरु, लज्जालु, राजयोग, नागपुष्पी, कारवल्लीलतामूल, सुरसुरिया, आडकशाक, रक्तकाञ्चनपुष्प, स्थलपद्म, वट, प्लक्ष, कद्रू, शालवृक्ष और पापापभेटी।

आर्तव निकालनेके द्रव्य यह हैं,—अग्निशिखा, रसशोधन, सज्जा, विटकारञ्ज, रेणुक, उन्मटकम्बल, स्राविका, ऋतुपर्णी, गोरोचना, निशादल, सिद्धि, शिग्रुवृक्ष, और दारुगन्ध-तैल।

ऋतुमती शब्दमें अपर विवरण देखो।

२ मासिकधर्म, माहवारी ऐयाम। ३ मदके समय पशुकी योषा द्वारा निकाला हुआ रस, जो रतूबत् जुफ्तीके वक्त जानवरकी मादा निकालती हो। ४ पुष्प, तुरा। (त्रि०) ५ समयोचित, वरवक्त। ६ ऋतुज, मासिक, माहवारी, हैज़के मुताल्लिक।

आर्तवी (सं० स्त्री०) घोटकी, मादियान, वाड़ी।

आर्तवेयी (सं० स्त्री०) ऋतुमती स्त्री, हैजी ज़न, जो औरत कपड़ोंसे हो।

आर्तस्वर, आर्तनाद देखो।

आर्ति (सं० स्त्री०) आ-ऋ-क्तिन्। १ पीड़ा, बीमारी। २ मनोव्यथा, अज़ीयत। ३ धनुष्कोटि, कमानका छोर। 'आर्तिः पीडा धनुष्कोट्योः।' (मेदिनी)

आर्तिमत् (सं॰ त्रि॰) पीड़ित, बीमार, आतुर। (पु॰) आर्तिमान्। (स्त्री॰) आर्तिमती।

आर्तिहन् (सं॰ त्रि॰) पीड़ानिवारक दर्द दूर करनेवाला। (पु॰) आर्तिहा।

आर्तिहर, आर्तिहन् देखो।

आर्त्त, आर्ती देखो।

आर्त्ती (दे॰ स्त्री॰) आ-ऋ बाहुलकात् नि कृदि कारान्ताद्वा ङीप्। १ गतिकर्त्री चलनेवाली स्त्री। २ धनुष्कोटि, कमानका अखीर।

आर्त्विज (सं॰ त्रि॰) ऋत्विज इदम् अण्। ऋत्विक सम्बन्धी पुरोहितसे सरोकार रखनेवाला।

आर्त्विजीन (सं॰ पु॰) ऋत्विजं तत्कर्म अर्हति खञ्। ऋत्विज्या खञ्चौ। पा ५।१।७१। ऋत्विक् पुरोहित। (स्त्री॰) आर्त्विजीनी।

आर्त्विज्य (सं॰ क्ली॰) ऋत्विजो भावः कर्म वा, ष्यञ्। ऋत्विक्कर्म याजन।

आर्त्तवी (सं॰ स्त्री॰) आर्त्तवयुक्त स्त्री, जो औरत कपड़ोंसे हो।

आर्त्य (सं॰ पु॰) अथर्ववेदोक्त त्रिमूर्धा नामक असुरके पिता। (अथर्ववेद ५।१।२२)

आर्थ (सं॰ त्रि॰) अर्थादागतम्, अण्। १ वस्तु-सम्बन्धी, मतके मुताबिक। २ वाक्यार्थको मर्यादा द्वारा प्राप्त, मानी, मुरत्तलब। यह पद 'शाब्द'के विरुद्ध है।

आर्थपत्य (सं॰ क्ली॰) द्रव्यका अधिकार, चीज़पर क़ब्ज़ा।

आर्थी (सं॰ स्त्री॰) आर्थ-ङीप्। अलङ्कार शास्त्रोक्त अर्थ-सम्बन्ध कल्पना, उपमालङ्कार विशेष। 'आर्थी तुल्यसमानाद्या-स्तद्वार्थ वत्र वा वतिः।' (साहित्यदर्पण) तुल्य एवं समानादि शब्द रहने और सदृशार्थमें वति प्रत्यय लगनेसे आर्थी उपमा होती है। मह मतमें भावनाविशेष अर्थात् भाव चिताके किसी व्यापारका नाम आर्थी है।

आर्थिक (सं॰ त्रि॰) अर्थं प्रज्ञाति, ठक्। १ अर्थप्रारब्ध बुद्धिमान्। २ धनसम्बन्धी, ज़रदार। ३ सत्य, माली।

आर्द (सं॰ त्रि॰) आ अर्द-अच्। अत्यन्त पीड़क, पुरदर्द, दुःखदायी।

आर्धकंसिक (सं॰ त्रि॰) कंस परिमाणभेदः, अर्ध कंसो कंसस्तेन क्रीतम्, ठञ्। अर्ध कंस परि-मित वस्तु द्वारा क्रीत, एक अधमें खरीदा। दो मनका एक कंस माना है। इसीप्रकार आर्धप्रस्थिक, आर्ध-कौडविक और आर्धद्रौणिक शब्द भी बनता है।

आर्धधातुक (सं॰ क्ली॰) आर्धधातुकं शेषः। पा ३।४।११४। सूत्रविशेष-परिभाषित तिङ् एवं शित् भिन्न धातुके उत्तर विहित प्रत्यय विशेष।

आर्धपुर (सं॰ क्ली॰) अर्धं पुरस्य, एकदेशि तत् ततः स्वार्थे अण्। पुरका अधभाग।

आर्धरात्रिक (सं॰ त्रि॰) अर्धरात्रे भवम्, ठञ्। १ अर्धरात्र भव आधीरातका पैदा। (पु॰) २ ज्योतिष-शास्त्रका शाखाभेद।

आर्धवाहनिक (सं॰ त्रि॰) अर्धवाहनेन जीवति, ठञ्। वैतनादिभ्यो। पा ४।४।१२। अर्ध वेतनसे जीनेवाला, जो आधी तनख्वाहसे ज़िन्दगी काटता हो।

आर्धिक (सं॰ त्रि॰) १ ब्राह्मणविवाहित वैश्यकन्योत्पन्न जातिविशेष।

"वैश्यकन्यासमुत्पन्नो ब्राह्मणेन तु संस्कृतः।

आर्धिकं स तु विज्ञेयो भोज्यो विप्रै र्न संशयः॥" (पराशर)

(पु॰) अर्धं क्षेत्रशस्यादिमर्हति, ठञ्। स्वामीके निकट क्षेत्रजात-शस्यका वेतनरूप अर्धप्रदीत कृषक विशेष, जो किसान मालिकसे उजरतके तौरपर खेतमें पैदा होनेवाले अनाजका आधा हिस्सा पाता हो।

"आर्धिकं कुलमित्रञ्च गोपालो दासनापितौ।

एते शूद्रेषु भोज्यान्ना यश्चात्मानं निवेदयेत्॥" (मनु)

अर्थात् कृषि बटाने पुरुषानुक्रमसे अपने वंशके मित्र रखने गो पालने दास बनने और नौकरमें एवं आत्मसमर्पण करनेवाले शूद्रका अन्न खा सकते हैं।

आर्द्र (सं॰ त्रि॰) अर्द गतौ रक् दीर्घश्च आतो। अर्द दीर्घश्च। उण् २।१८। १ क्लिन्न, तर ब तर, भीगा। "आर्द्र वास शिरः स्थित्वा स्थितं वहुतरक्षण।" (भ्रमर) २ नूतन, सरसब्ज़, हरा। ३ आर्द्रियायुक्त, नर्म। ४ आतुरपक्ष युक्त आह्लाद, खुश। (क्ली॰) ५ अश्विनीसे छठ नक्षत्र। आर्द्रा देखो। (पु॰) ६ प्रकृति एक पौध।

आर्द्रक (सं॰ क्ली॰) आर्द्रयति रोगान् अर्द-अन्तर्भूत-ण्यर्थे रक् दीर्घश्च संज्ञायां कन्। आर्द्रायां सरसभूमौ

लिपिका 'अरि' शब्द हलवाचक ठहरता, जो आर्यका प्रतिरूप हो सकता है। अतएव पाश्चात्य पण्डितोंके मतसे आर्य नामको प्राचीन कृषक जातिका द्योतक मानना पडता है।

क्या आर्य कृषक थे? प्राचीन जातिके मध्य कृषि-कार्य प्रधान जीवनोपाय रहनेसे क्या आर्य शब्द कृषिपद-वाच्य हो सकता है? वैदिक और लौकिक उभय विध प्रयोगमें आर्य शब्द शत शत बार आया है। किन्तु आर्य शब्द अथवा इसके मूल धातु ऋसे कहीं भूमिकर्षणका अर्थ नहीं निकलता। जहां आर्य शब्द पडा, वहीं 'श्रेष्ठ' और 'विज्ञ' प्रभृति अर्थसे जडा है। इसीसे सायणका 'अरणीय' अर्थ ही आर्य शब्दका मूल अर्थ है। हम समझते, कि वैदिक समय इस जातिके लोग नाना स्थानोंमें जाकर रहते थे। इसीसे आर्य नाम निकला होगा।

पारसियोंके अवस्ता नामक प्राचीन धर्मशास्त्रमें 'ऐर्य' शब्द न्यायार्सद और साधारण दानी अर्थपर लगा है। कावसजी एदलजी कांगिने वन्दीदादका अनुवाद जो गुजरातीमें किया, उसके शेष अभिधानमें ऐर्य शब्दका प्रकृत अर्थ अर्य और आर्य लिया है। अरमनी भाषामें 'अरि' ईरानी और साहसिकको कहते हैं। अतएव वेद व्यतीत एशियाखण्डको अपर भाषाओंमें भी जब विज्ञताकारमात्र आर्य शब्दका अर्थ हल वा भूमिकर्षण लगना कठिन पडता, तब समझपर नहीं चढ़ता, पाश्चात्य पण्डितों द्वारा कथित आर्य शब्दके मूल अथवा अर् धातुके अर्थसे कहांतक हल अथवा भूमिकर्षणका भाव कढता है।

सायणाचार्यने ऋग्भाष्यमें आर्य शब्दका अर्थ नाना-प्रकार लगाया है,—'१ विदुषोऽनुष्ठातॄन् (१।५१।८), २ विद्वांस स्तोतार. (१।१०३।३), ३ विदुषे (१।११०।११), ४ अरणीय सर्वे-र्गन्तव्यम् (१।१३०।८), ५ उत्तमं वर्णं त्रैवर्णिकम् (३।३४।९), ६ मनवे (४।२६।२), ७ कर्मयुक्तानि (६।२२।१०), ८ कर्मानुष्ठानत्वेन श्रेष्ठानि (६।३३।१०)।'

अर्थात् १ विज्ञ यज्ञानुष्ठाता, २ विज्ञ स्तोता, ३ विज्ञ, ४ अरणीय वा सर्वगन्तव्य, ५ उत्तम वर्ण त्रैवर्णिक, ६ मनु, ७ कर्मयुक्त और ८ कर्मानुष्ठानसे श्रेष्ठ।

शुक्लयजुःसंहिता (१४।३०)के भाष्यमें महीधरने आर्य शब्दका अर्थ 'स्वामी' और 'वैश्य' लिखा है। किन्तु वेदके प्रयोग एवं यास्कके अर्थसे आर्य शब्द मानवका द्योतक है। सायणके भाष्यसे भी यज्ञादि कर्मानुष्ठान द्वारा मानवजातिका श्रेष्ठ बनना प्रमाणित होता है।

इस प्रकार आर्य शब्दसे मानवजातिका भाव निकलता है। किन्तु आर्य नाम पडनेका कारण क्या है! वर्तमान पण्डितोंके मतमें 'ऋ' और 'ण्यत्' से आर्य शब्द बनता है। ऋ धातुका अर्थ चलना और फैलना है। अतएव आर्य शब्दका मूल अर्थ सायणोक्त 'अरणीय वा गन्तव्य' ठहरता है। इस जातिने सर्वत्र गमन करनेसे आर्य नाम पाया होगा। आर्य शब्दका दूसरा रूप 'अर्य' है। महीधरके मतसे वैश्यको आर्य कहते हैं। इस मतको माननेपर वैश्य होने या सर्वत्र व्यवसाय करनेको जानेसे यह जाति आर्य कहायी है। वेदमें आर्य जातिका परिचय जो पाते, उसको विस्तृत भावसे नीचे देखाते हैं,—

आर्यजातिका उद्भव, पुरातत्त्व, इतिहास और सम्बन्ध-निर्णय अत्यन्त प्रयोजनीय है। क्योंकि उसीपर सभ्य जगत्का प्राचीन सम्पूर्ण इतिवृत्त निर्भर है। पहले देखना चाहिये—अति प्राचीनकाल आर्य शब्द कैसे व्यवहृत होता था। जगत्के आदिग्रन्थ ऋक्-संहितादिमें आर्यशब्द बहुधा स्थान-स्थानपर मिलता है। इससे प्रतीति हुयी, कि उस समय पृथिवीपर श्रेष्ठ जाति ही आर्य नामसे प्रसिद्ध रही। यथा,—

"विजानीह्यार्यान् ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान्।"

(ऋकसंहिता १।५१।८)

'हे इन्द्र! पहचानो, कौन आर्य और कौन दस्यु है। कुशयज्ञके हिंसाकारियोंको शासन कर अपने वशमें लावो।'

"विद्वान् वज्रिन्दस्यवे हेतिमस्यार्यं सहो वर्धया द्युम्नमिन्द्र।"

(ऋक् १।१०३।३)

'हे वज्रिन्! हमारी प्रार्थना समझ दस्युवोंके प्रति अस्त्र निक्षेप करो और हे इन्द्र! आर्यगणका सामर्थ्य तथा धन बढ़ावो।'

श्रेणी भिन्न भिन्न रही। उस समय तीनों श्रेणीके मध्य आहारादि वा विवाहादि कार्य निषिद्ध न था।

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य शब्दमें विस्तारित विवरण देखो।

धर्मविश्वास और उपास्य देवगण—यज्ञानुष्ठान ही वैदिक आर्यों का श्रेष्ठ धर्म परिगणित रहा। प्राचीन ऋषि समधिक प्रभाव-सम्पन्न भिन्न भिन्न प्राकृतिक पदार्थ-समुदायको पूजते थे। भगवान्‌की सत्ता समायी समझ अग्नि, वायु, ज्योतिष्क प्रभृति नैसर्गिक वस्तुके उपासक रहे। मानसिक स्फूर्तिका पूर्ण विकाश हुआ था। ऋक्‌संहितामें आर्याराध्य देवताओंके नाम यह लिखे हैं,—अंश, अग्नि, अदिति, अनुमति, अरण्यानी, अर्यमन्, अश्विन्, आग्नेयी, इन्द्र, इन्द्राणी, इला, उच्छिष्ट, उषस्, ऋतु, ऋभु, काम, काल, गुङ्ग, त्रुह्, त्रित, त्रैतन, त्वष्टृ, दक्ष, दक्षिणा, दिति, द्यौस, धिषणा, नक्त, निष्टिग्री, पितृ-पुरुष, पूषा, पृश्नि, पृथिवी, प्रजापति, प्राण, ब्रह्मा, ब्रह्मचारी, ब्रह्मणस्पति, भग, भारती, मरुद्गण, मही, मित्र, राका, रुद्रगण, रोदसी, रोहित, लक्ष्मी, वनस्पति, वरुण, वरुणानी, वरुत्री, वायु, विश्वकर्मन्, बृहस्पति, श्येन, श्रद्धा, सरस्वत्, सरस्वती प्रभृति नदी, सिनिवाली, सूर्य, सूर्या, सोम, स्कम्भ, हिरण्यगर्भ, होत्रा।

पाश्चात्य पण्डितोंने शब्दशास्त्रके प्रभावसे प्राचीन पारसिकों (ईरानियों) और आर्यों का एकत्र रहना ठहराया है। सगर राजाने प्राचीन पारसिकोंको वेद और देवकी उपासनका अनधिकारी बनाया और श्मश्रु मुण्डन न करानेका आदेश सुनाया था। (विष्णुपुराण ३।४) जबतक पारसिक आर्योंसे मिलित थे, तबतक वैदिक देवताओंके उपासक भी रहे। तत्‌कालीन वैदिक देवताओं और ऋषियोंके नाम अवस्ता ग्रन्थमें लिखे हैं,—

वैदिक नाम	आवस्तिक नाम
अङ्गिरा	अङ्ग्र
अथर्वन्	आथ्रवन्
अरमति	अर्मयिति
अर्यमन्	अयिर्यमन्
इन्द्रहन्	वेरेथ्रघ्न
काव्य उशनस्	कव उस्
त्रित	थ्रित
त्रैतन	थ्रयेतन
नराशंस	नरियेसंह
नासत्य	नाओंहयिथ्य
मित्र	मिथ्र
यम	यिम
वरुण (असुर)	अहुर मज्द
वायु	वयु
सोम	होम

वेदसंहिताके अनेक स्थल (ऋक् ७।२२, ६।१, १३।१, ३०।३, ३६।२, ६६।२, ८८।५)में देवताओंको असुर शब्दसे सम्बोधन किया है। अवस्ता-शास्त्रमें भी देवता अहुर कहे गये हैं। पारसिक शब्दमें अपर विवरण देखो।

फिर पाश्चात्य पण्डितोंने ग्रीक (यूनानी) प्रभृति यूरोपीय प्राचीन सभ्य जातिको आर्य-सम्भूत माना है। उक्त मतसे प्राचीन आर्यों के साथ एकत्र बसते यूनानियोंका विश्वास और धर्म जो रहा, उसे उन्होंने पृथक् होते भी न छोड़ा। मक्षमुलर प्रभृति पाश्चात्य शाब्दिकोंको कुछ वेदोक्त देवताओंके नाम ग्रीक शास्त्रमें मिले हैं,—

वैदिक नाम	ग्रीक नाम
अक्षिवान्	इक्सिवोन्
अरुषा	ईरस्
अहना	डाफ्नी
गन्धर्व	केण्टौरस्
पणि	पारिस
वृत्र	अरथ्रस्
सरण्यु	ऐरिन्नुस्
सरमा	हेलना
हरित्	खारिट्

प्राचीन आर्य तेंतीस देवताओंकी उपासना करते थे,—

"ये त्रिंशति त्रयस्परो देवासो बर्हिरासदन्। विदन्नह द्वितासनन्॥" (ऋक् ८।२८।१)

आचारविरुद्ध न था। किन्तु पुराण-इतिहासादिके आख्यानसे विदित होता, कि पत्यन्तर-ग्रहण नीच-जातिमें ही चलता था। स्वयम्वर-सभाके समागत पाणिग्रहणार्थियोंमें पणजयकारीको कन्या दी जाती रही (४।२।१)। स्त्रियां भी साधारण पण्डित होती थीं (५।५।४)।

स्नुषा (बहू) श्वशुरसे लज्जा रखती रही (३।२।११)। सोदर्य भगनी भ्रातृजायाके अनुगत थीं (३।३।१३)। सोदर्य भगिनीका अनात्मीयत्व और अन्यकुलसे लब्ध जायाका आत्मीयत्व पारम्पर्यागत है।

अपत्नीक भी अग्निहोत्र कर सकता था (७।२।८)। अग्निहोत्रका दृष्ट और अदृष्ट फल मिल जानेसे अग्निहोत्रियोंको अपने अपने गृहमें अग्निरक्षण कर्तव्य है (ऋक् १०।११।१)। हिममें रहनेवाले प्राचीन आर्योंको हिमपातका क्लेश छोड़ानेके लिये स्व-स्व गृहमें अग्निरक्षणसे सुख मिलता था (वाजसनेय-सं० २३।१०)। अग्निमें विविध सुगन्ध्यादि द्रव्य डालनेका विधान रहा (ऐतरेयब्रा० १।५।२)। सुगन्ध्यादि द्रव्यसे गृहजात वायुदोष दब जाता है। अग्निमें आज्य, अग्निरपयः, अन्न, पुरोडाश, सोमादिका आहुति छोड़नेसे तद्वाष्प-प्रसूत धारा गुणयुक्त हो जाती है। स्वर्गादि अदृष्ट श्रुति-गम्य है। इससे स्फुट प्रतीत हुआ, कि आर्योंका नित्य अग्निहोत्रानुष्ठान दृष्टादृष्ट फलकी सिद्धिके लिये ही चला रहा। अग्निहोत्रानुष्ठानमें प्रातःस्नान कर्तव्य है (७।२।८)। आग्रयणसे विना यज्ञ किये नवान्नप्राशन होने, पाकपात्र टूटने, पवित्र बिगड़ने, हिरण्य खो या चोरा जाने, किसी जीते-जागते आत्मीयके मरनेका समाचार झूठ-मूठ सुनने और जाया वा स्वगोत्रके यम-सन्तान उपजने पर प्रायश्चित्त करना चाहिये। सूतक और अन्नप्राशन करनेवालोंको भी प्रायश्चित्त विहित है। होमादिरूप प्रायश्चित्तसे ही तथाविध पाप छूट जाते हैं। अग्निहोत्रादि अनुष्ठानमें प्राक्स्नान विहित होते भी किञ्चित् भोजन निषिद्ध नहीं, प्रत्युत कुछ खाकर ही कर्म करना चाहिये (४।२।१)।

मृत देह न मिलनेसे पर्णशरीरके दाहकी व्यवस्था रही। क्योंकि उसके अभावमें निन्दाभाजनत्व अवश्यम्भावी था (७।२।८)। देवों, पितरों और मनुष्योंकी अर्चना न करनेसे पुरुष अमेध्य वा असत्य समझा जाता रहा। अजाके गलस्तनको तरह उसका जन्म निरर्थक जाता है। इसीसे तादृश पुरुषकी निन्दा होती है।

आर्यका उपास्य देव—निघण्टुमें द्युस्थानके भाजनपर षड्विंश पद है। प्रधानतः उनका स्थान द्युलोक है। देवराजने भाष्यमें रश्मिको देव कहा है (१।३।१।१२)। ऋक् (१।८८।२), निघण्टु (५।६।२६) और निरुक्त (१२।४।५, १३।१।११)में उक्त विषय स्पष्ट रूपसे बताया है। रश्मि जन्य-जनक भावमें पार्थिव अग्नि, विद्युत् और सूर्यसे अभिन्न है (निरुक्त १२।३।६,७ ८)। यास्काचार्य व्यक्तरूपसे कहते, कि पार्थिव अग्नि, विद्युत् और सूर्यके भक्तिसाहचर्यसे अनेक देवोंकी अर्चना करते हैं (७।२।१, ३।१०)।

पितर—निघण्टुमें अन्तरिक्ष-स्थानके भाजनपर द्वादश पद है। प्रधानतः अन्तरिक्ष लोक ही उनका स्थान है (४।३।५)। पितर तीन प्रकारके होते हैं,—अवर, परास और मध्यम। परास द्युस्थ अन्तरिक्षचारी हुये और देवयान मार्गसे स्वर्ग गये हैं (छान्दोग्य उप० ५।१।-२)। मध्यम द्यावापृथिवीके अन्तर ठहरे और पितृयान मार्गसे चन्द्रलोक पहुंचे है (छान्दोग्य ५।१०।३-६)। अवर भूपृष्ठस्थ अन्तरिक्षमें रहते और निरन्तर पृथिवीपर ही चला-फिरा करते हैं (५।१०।८)। त्रिविध पितरोंमें अवर अप्राप्तमार्ग हैं। असक्तत् आवर्तित्वमें कहीं दीर्घकाल ठहर न सकनेसे उनका पितृलोकमें रहना असम्भव है। फिर परासोंकी अवस्था भी ऐसी ही है। चन्द्रलोक वा पितृलोक जा पहुंचनेसे मध्यम ही प्रधान कहे हैं। अतएव अन्तरिक्ष स्थानमें ही पितर पद पठित है। यास्क मुनिने भी उक्त विषयको ही पुष्ट किया है (११।२।५५) यम पितरोंके राजा है (ऋक् १०।१४।१५)।

तत्त्वतः अन्नरसके साहाय्य स्वजनक देहपर प्रविष्ट जीव रेतःके अन्तःस्थ प्रथम गर्भमें पहुंचता और रेतःके योनिमें सिक्त होनेपर प्रथम जन्म पाता है।

दादा। ३ नागविशेष। ४ नृपति विशेष। यह गड़रियेसे राजा बन गये थे। (क्ली०) ५ पिण्ड-पात्रादि पितृकार्य। (स्त्री०) आर्यका, आर्यिका।

आर्यगृह्य (सं० त्रि०) आर्य-गृह् पच्यार्थे क्यप्, ६-तत्। पदास्वैरिबाह्यापक्ष्येषु च। पा ३।१।११९। "पच्ये मव. पचा: दिगादिभ्यो यत्, आर्यगृह्य तत्पचाश्रित इत्यर्थ.।" (सिद्धान्तकौमुदी) १ आर्यपचाश्रित, जिसे इज्जतदार आदमी खातिरके साथ ले। २ विनीत, खुश-असलूब, लायक्।

आर्यता (सं० स्त्री०) माननीय आचरण, खुश-असलूबी, भला बरताव।

आर्यतारादेवी (सं० स्त्री०) बौद्धतन्त्रोक्त शक्ति विशेष। महायान सम्प्रदाय इन्हें सर्वप्रथम और श्रेष्ठ शक्ति बताते हैं। बुद्धगया, नासिक, अजण्टा, औरङ्गाबाद, नेपाल और कांडेरीमें आर्यतारादेवीकी मूर्ति प्रस्तरमय विद्यमान है। नेपाल और कांड़ेरीकी गुहामन्दिरमें यह अवलोकितेश्वरके पार्श्वपर प्रतिष्ठित हैं। दक्षिण हस्तमें पुष्प और वाम हस्तमें मुकुल है। बौद्ध इन्हें मानवकी मुक्तिविधायिनी मानते हैं।

(Vassilief Bouddhisme, p 125)

आर्यत्व (सं० क्ली०) आर्यता देखो।

आर्यदेव (सं० पु०) नागार्जुनके एक शिष्य। ई०के १म शताब्द इन्होंने दक्षिणात्यमें किसी ब्राह्मणके घर जन्म लिया था। शतसमाधि एवं चतु:शती गाथा नामक ग्रन्थ इन्होंने बनाया। किसी तीर्थिकने पेट फाड़कर आर्यदेवको मार डाला। दूसरा नाम कानादेव था।

आर्यदेश (सं० पु०) आर्यभूमि, आर्योंके रहनेका मुल्क।

आर्यदेश्य (सं० त्रि०) आर्यदेश-जात, जो आर्योंके मुल्कसे निकला हो।

आर्यधर्म (सं० पु०) आर्याणां धर्म:, ६-तत्। सदाचार, दुरुस्त अतवार, अच्छा चलन। सरस्वती और दृषद्वतीनदीके बीच लोग जिस आचारपर चलते, उसे आर्य धर्म कहते हैं। (मनु २।१८)

आर्यपथ (सं० पु०) आर्याणां पन्था:, अजन्त ६-तत्। ऋक्पूरब्धू: पथामानचे। पा ५।४।७४। सदाचार, अच्छा चलन। आर्यमार्गादि शब्द भी इस अर्थमें प्रयुक्त होता है।

आर्यपुत्र (सं० पु०) आर्यस्य पुत्र:, ६-तत्। १ उपाध्यायका पुत्र, मुअल्लिमका पिसर। नाट्यभाषामें स्वामीको आर्यपुत्र कहते हैं। सम्मानार्थ ज्येष्ठभ्राताके तथा अपने पुत्र और साधारणत: युवराजको इस नामसे सम्बोधन करते हैं।

आर्यभट (सं० पु०) १ प्रसिद्ध ज्योतिष-ग्रन्थ-रचयिता। इन्होंने कुसुमपुरमें अपने वासस्थानको निर्देश किया है,—

"ब्रह्मकुशशिबुधभृगुरविकुजगुरुकोणभगणान्नमस्कृत्य।
आर्यभटस्त्विह निगदति कुसुमपुरेऽभ्यर्चितं ज्ञानम्॥" (गणितपाद १)

अपने बनाये आर्यसिद्धान्त ग्रन्थमें लिखा है,—

"षष्ट्यब्दानां षष्टिर्यदा व्यतीतास्त्रयश्च युगपादा.।
त्र्यधिका विंशतिरब्दास्तदिह मम जन्मनोऽतीता:॥"

(कालक्रियापाद १०)

अर्थात् तीन युगके बाद ६०×६०=३६०० वर्ष बीतनेपर हमारे जन्मके २३ वत्सर हुये थे।

उक्त वचनानुसार (३६००-२३) कलिके ३५७७ वत्सर बीतनेपर आर्यभटका जन्म हुआ था। ऐसी अवस्थामें इनका जन्मकाल ४७५ ई० आता है।

आर्यभट इस प्रकार संख्या गणना करते थे,—

क=१, ख=२, ङ=५, ञ=१०, ट=११, न=२०, प=२१, म=२५। य=न+म। सिवा इसके अपर व्यञ्जनवर्ण प्रत्येक १० अर्थात् र कहनेसे य+१०=८० होते रहा। इसी प्रकार ष=७०, ष=८०, स=९० और ह=१००के ठहरता था। प्रत्येक ह्रस्वस्वर दशगुणके हिसाबसे बढ़ता है। जैसे—ह=१००, गि=३००, षि=६००,ङ=१००००, गु=३०००० इत्यादि। इसी प्रकार ४४ लिखनेसे घर वा घ्र होता है। बीजगणितको आर्यभटने.ही आविष्कार किया है।

ज्योतिष-गणना ऐसी रही,—रविका ४३२००००, चन्द्रका ५७७५३३३६, पृथिवीका १५८२२३७५००, शनिका १४६५६४, गुरुका ३६४२२४ और कुजका भगण २२९६८२४ है। भृगु और बुधका भगण रविके समान लगता है।

चन्द्रोच्च ४८८२१९, भृगुका १७९३७०२० और बुधका ७०२२३८८ है। चन्द्रका पात २३२२३६ है।

२ ग्रन्थकारविशेष। यह द्वादश ई० शताब्दीमें वर्तमान रहे। पूर्वोक्त आर्यभट्ट प्रभृतिका मत पकड़ ग्रन्थ बनाये हैं। विस्तृत विवरण Journal of Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, N S. Vol 18 देखो।

आर्यभाव, आर्यत्व देखो।

आर्य-महावीर—जैन मान्तीय सिद्धपुरुष विशेष। यह मत बदलकर लिये और जैन संवत् २१८ के बाद मर गये।

आर्यमार्ग, आर्यत्व देखो।

आर्यमित्र (सं० पु०) १ साधुजन, महानुभाव, सत्पात्र, महामानव। (त्रि०) २ प्रसिद्ध सरपराह, सदाहुर। बहुवचनमें यह शब्द साधुजन-सम्प्रदायका द्योतक है।

आर्ययुवन् आर्यकुमार देखो।

आर्ययुवा (सं० पु०) आर्यकुमार, आर्य कौमका शक्त या पट्टा।

आर्यराज (सं० पु०) नृपतिविशेष।

आर्यरूप (सं० त्रि०) १ केवल आर्यका आकार रखनेवाला। २ दम्भी, कपटी, रियाकार, मक्कार।

आर्यलिङ्गिन् (सं० त्रि०) दम्भी, कपटी दगाबाज, जो भले आदमीको धूर्त बनाये हो। (पु०) आर्य-लिङ्गी। (स्त्री०) आर्यलिङ्गिनी।

आर्यवर्मन्, आर्यवर्मा (सं० पु०) नृपतिविशेष।

आर्यवृत्त (सं० क्ली०) १ सदाचार, भला चलन। (त्रि०) २ साधुजनकी भांति व्यवहार करनेवाला, जो भलेमानसकी तरह पेश आता हो। ३ धार्मिक, नेक, पारसा।

आर्यवेश (सं० त्रि०) सुन्दर वस्त्र धारण किये हुआ, जो अच्छे कपड़े पहने हो।

आर्यव्रत (सं० क्ली०) आर्याणां व्रतम् ६-तत्। १ साधुका कर्तव्य नियम, भले आदमीका काम। (त्रि०) आर्यश्चेव व्रतमस्य। २ साधुके नियमपर चलनेवाला जो भले आदमीकी चाल पकड़ता हो।

आर्यशील (सं० पु०) आर्ये भोः ई शील चरित्रं यस्य। श्रेष्ठचरित, नेकचलन।

आर्यसङ्घ (सं० पु०) १ आर्योंका अवाध्य समूह, भलेमानसोंकी पूरी जमात। २ सुपठित दर्शनज्ञ, एक प्रधान सुपण्डित। इन्होंने योगाचार सम्प्रदाय प्रति-ष्ठित किया था।

आर्यसत्य (सं० क्ली०) अभिज्ञात तथ्य, स्वीकृत मसौदा। इसे दो चार तथ्योंसे बौद्धधर्मके चार प्रधान अङ्ग बने हैं।

आर्यसमाज—सम्प्रदायविशेष। आर्यसमाज, जैसा कि इसके नामसे ही प्रकट है, आर्यों (वैदिकधर्मियों)का समाज है। इसे श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वतीने १८७५ ई०में वैदिकधर्मके प्रचारार्थ स्थापित किया था। आर्यसमाजके दश नियम इस प्रकार हैं—

१ सब सत्यविद्या और विद्यासे जो पदार्थ जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। २ ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान् न्याय-कारी दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टि-कर्ता है। उसीकी उपासना करना योग्य है। ३ वेद सब सत्यविद्याओंका पुस्तक है वेदका पढ़ना, पढ़ाना सुनना और सुनाना आर्योंका परम धर्म है। ४ सत्य ग्रहण करने और असत्यको छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। ५ सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्यको विचार करना चाहिये। ६ संसारका उपकार अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना इस समाजका मुख्य उद्देश्य है। ७ सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य बर्तना चाहिये। ८ अविद्याका नाश और विद्याका वर्धन करना चाहिये। ९ प्रत्येकको अपनी ही उन्नतिसे सन्तुष्ट न रहना, किन्तु सबकी उन्नतिमें अपनी उन्नति समझना चाहिये। १० सब मनुष्योंको सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालनेमें परतन्त्र और प्रत्येक हितकारी नियममें स्वतन्त्र रहना चाहिये।

आर्यसमाजके संस्थापक श्रीस्वामी दयानन्द सर स्वतीका जन्म विक्रमीय संवत् १८८१को गुजरात देशके

मोरवी राज्यके अवदीच्य ब्राह्मणकुलमें हुआ था। उनके पिता शैव थे। दयानन्द आरम्भसे ही बड़े तीव्रबुद्धि थे। बाल्यकालमें ही उन्होंने यजुर्वेदका रुद्राध्याय और अनेक अन्यभाग कण्ठस्थ कर लिया था। किसी शिवरात्रिको वह अपने पिताके साथ नगरके बाहर एक शिवालयमें शिवकी उपासना करने गये। वहां एक घटनाको देखकर उन्हें मूर्त्ति-पूजाके विषयमें शङ्का उत्पन्न और मूर्तिपूजा न करनेकी बात उनके हृदयपर अङ्कित हुयी। वे अपने चचे तथा बहनकी मृत्युसे विरक्त हो और अपनेको विवाह जालमें फंसता देखकर १८४५ ई०को योगविद्या सीखनेके अभिप्राय घरसे निकल खड़े हुये। विचरण तथा विद्याध्ययन करनेके उपरान्त १८४७ ई०को महात्मा पूर्णानन्द नामक एक संन्यासीसे संन्यास ग्रहण किया। तत्पश्चात् स्वामीजी योगियोंकी तलाशमें वर्षों पर्वतों और जङ्गलोंमें घमते रहे। १८१७ को वे मथुरा आकर श्रीस्वामी विरजानन्दजी प्रज्ञा-चक्षुके शिष्य बने और चार वर्ष तक उनसे वैदिक शिक्षा प्राप्त करते रहे। तदुपरान्त स्वामी जी अपने पूजनीय गुरुके समक्ष आर्यावर्तकी बिगड़ी दशा सुधार-नेकी प्रतिज्ञा कर गुरुकुलसे विदा ले उपदेशार्थ भ्रमण करने लगे। संवत् १८२०से १८२४ तक यत्रतत्र एक ईश्वरकी उपासनाका उपदेश करते हुये हरिद्वार कुम्भके मेलेपर जा पहुंचे। वहांपर प्रबल रूपसे वैदिकधर्मका मण्डन और अवैदिक बातोंका खण्डन करते रहे। काशी आदि बड़े बड़े नगरोंमें पण्डितोंसे शास्त्रार्थ किये। वेद भाष्यादि अनेक उपयोगी ग्रन्थोंकी संस्कृत तथा आर्यभाषामें रचना की। सत्यार्थप्रकाश नामक पुस्तक बनाया, जिसमें संसार भरके मतोंका समीक्षण और वेदोक्त धर्मका प्रतिपादन बड़ी युक्ति तथा उत्तमतासे किया। स्वामी जी रजवाड़ोंमें उपदेश करते करते उदयपुर पहुंचे। वहांके राणा सज्जनसिंहजी पर स्वामीजीकी वक्तृता और विद्वत्ताका ऐसा प्रभाव पड़ा, कि वे उनके शिष्य बन गये। स्वामीजीने वेदोंके प्रचार तथा अपने ग्रन्थोंको सुरक्षित रखने और छपानेके उद्देश्यसे 'परोपकारिणी सभा' स्थापन की। उक्त महाराणा जीने सभाके प्रधान बन अपने राज्यमें सभाकी प्रथम रजिष्टरी करायी। कुछकाल पीछे जोधपुराधीश श्रीमहाराज यशवन्तसिंहके आग्रहपर, श्रीस्वामी जी जोधपुर पधारे और निर्भयतापूर्वक वैदिक धर्मका प्रचार करने लगे। स्वामीजीके सदुपदेशोंसे भयभीत होकर जोधपुर नरेशकी एक यवन वेश्याने स्वामीजीको विष दिलवा दिया। इससे वे बीमार होकर अजमेर आ गये और संवत् १८४१ को दीपा-वलीको ईश्वरोपासना करते करते इससे सर्वदाको विदा हुये।

आर्यसमाज, ईश्वर, जीव और प्रकृतिको अनादि मानता है। उसके सिद्धान्तानुसार सृष्टि प्रवाहरूपसे अनादि है। अर्थात् प्रथम सृष्टिका रचा जाना, फिर प्रलय होना सदैवसे चला आता है।

आर्यसमाज एक ईश्वरको मानता, जो अनादि, अनन्त, सत्, चित् और आनन्द स्वरूप है। सदैव एक रस रहता है। उसके गुण आर्यसमाजके नियम संख्या २में वर्णित हैं। आर्यसमाज केवल इसी एक ईश्वरकी उपासना करनेका उपदेश देता और मूर्तिपूजा, श्राद्ध, मृत पितरोंके श्राद्ध, यज्ञमें पशुवोंके बलि को अवैदिक मानता है।

वेद ईश्वरीय ज्ञान होता, जिसे ईश्वर सृष्टिके आदिमें अपनी अपार दयासे मनुष्योंको प्रदान करता है। उसीके द्वारा लोग सब कुछ समझनेके लिये समर्थ होते हैं। वेद समस्त सत् विद्यावोंका पुस्तक है। वेद चार हैं—ऋक, यजुः, साम, अथर्व। स्वामी दया-नन्दसे पूर्व आर्यावर्तमें वेदोंका लोप सा हो गया था। संहितायें भी कहीं कहीं मिलती थीं। उस समय यदि किसीको वेदका कुछ भाग कण्ठस्थ भी था, तो वह उसका अर्थ न जानता था। महर्षि दयानन्दका सबसे महान् कार्य वेदोंको सच्चा गौरव प्रकट कर प्रतिष्ठाके उच्च आसनपर विराज-मान करा देना है। स्वामीजीके मतमें वेदोंके पढ़नेका अधिकार सबको है।

स्वामीजीने अपने वेदभाष्यकी एक उत्तम भूमिका संस्कृतमें लिखी है। उसमें वेदोंका गौरव वा महत्त्व बड़ी उत्तमतासे दर्शाया है। ऋग्वेदका ६/७ तथा यजुर्वेदका सम्पूर्ण भाष्य रचते ही उनका देहपात हो गया। स्वामीजी केवल संहिता भागको वेद मानते और उसका स्वतः प्रमाण होना स्वीकार करते थे। वेद केवल एक निराकार, निर्विकार सर्वव्यापक, सर्वज्ञ सच्चिदानन्द स्वरूप सृष्टिकर्ता परमात्माकी उपासनाका उपदेश देते हैं। श्रीपण्डित तुलसीराम स्वामीने सामवेदका उत्तम भाष्य स्वामीजीकी शैलीपर किया है। प्रयागनिवासी श्री० प० क्षेमकर्ण त्रिवेदी भी अथर्ववेदका भाष्य उसी ढंगपर करनेका प्रयत्न कर रहे हैं।

पञ्च यज्ञ अर्थात् १ सायं, प्रातः दोनोंकाल सन्ध्या २ अग्निहोत्र, ३ जीवित माता पितादिका श्रद्धापूर्वक सत्कार, ४ अतिथि सत्कार और ५ बलि वैश्वदेव करना आर्योंका प्रधान कर्तव्य है।

गर्भाधान पुंसवन, सीमन्तोन्नयन जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, संन्यास और अन्त्येष्टि संस्कार भी कर्तव्य है।

आर्यसमाजको दृढ़ विश्वास है, जो कर्म मन वचन अथवा कर्मद्वारा किया जाता है, वह अपना प्रभाव पैदा किये बिना नहीं रहता। कर्ताको अवश्य फल भोगना पड़ता है। स्वर्ग और नरक कोई विशेष स्थान नहीं, किन्तु इसी संसारमें दोनों मौजूद हैं। सुखका नाम स्वर्ग और दुःखका नाम नरक है।

आर्यसमाज सृष्टिका आयु ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष मानता है। वर्तमान सृष्टिकी रचना हुये अब तक १ अरब ९६ करोड़ वर्ष बीत चुके हैं। निवर्त्त अब लिये शेष समय तक यह अभी और स्थित रहेगी। चन्द्र तथा ताराओंक पृथिवी की तरह लोकान्तर हैं। इन लोकोंमें भी प्राणी बसते हैं।

मनुष्यजातिमें गुणकर्मानुसार संसारका कार्य विभक्त करनेके लिये आर्यसमाज वर्णोंका आवश्यक होना मानता है। जो विद्वान् लोभ तथा मोहको त्यागकर परोपकारमें अपना जीवन बिताते हैं ब्राह्मण कहाते हैं। जो वीर दुष्टोंसे जातिकी रक्षा करते तथा प्रजापालनका काम जारी रखते हैं क्षत्रिय हैं। जो लोग धर्मयुक्त शिल्प वाणिज्यकी उन्नतिमें लगे रहते हैं वैश्य हैं। अशिक्षित अतएव कार्योंमें असमर्थ हो सेवा करनेवालोंकी संज्ञा शूद्र है। वैदिक धर्मानुसार चारों वर्ण परस्पर सहायक हैं। आर्यसमाज यह भी मानता, कि गुण कर्मानुसार एक वर्णका मनुष्य अपनेसे उत्कृष्ट वर्णका अधिकारी बन सकता है। शूद्र उन्नति और सद्गुण धारण करनेसे ब्राह्मण बन और निकृष्ट कर्म करनेसे ब्राह्मण पतित हो जाता है। आर्यसमाज आजकलकी जातिप्रथाका, जिसका आधार केवल वंश पर रहता, विरोधी है।

मनुष्यका आयु चार बांटने तथा उसके जीवनको अधिक उपयोगी एवं उत्तम बनानेके लिये वेद भगवान् चार आश्रमोंका विधान करते हैं। वेदाध्ययनकाल शरीरका पुष्ट तथा विद्याको उपलब्ध करनेके लिये न्यूनसे न्यून २५ वर्ष पर्यन्त अविवाहित रहना, 'ब्रह्मचर्य' कहाता है। तत्पश्चात् धर्मानुसार विवाह तथा सन्तान उत्पन्न करके पितृऋणसे उऋण होना 'गृहस्थाश्रम' है। पचास वर्षका आयु होनेपर ब्रह्मकी प्राप्ति तथा संसारका उपकार करनेके लिये योग्यता बढ़ानेका नाम 'वानप्रस्थ' है। फिर शेष जीवनका सदा जगत्को सन्मार्गमें लगा देना 'संन्यास' कहाता है।

आर्यसमाज विद्वान् पुरुषों, वेदों और शास्त्रोंको तीर्थ समझता है। क्योंकि 'तीर्थ'का अर्थ है तारनेवाला है। जिसके द्वारा मनुष्य भवसागरसे तर जाता, वही तीर्थ है। नदी नाले पर्वतादिको तीर्थ मानना आर्यसमाज वैदिक नहीं समझता।

अपने इन्द्रियोंका वशमें रखते हुए अग्निहोत्रादि अनुष्ठान और विद्वानोंका सत्सङ्ग करना आदि यज्ञ कहाता है। जो लोग पशुओंकी बलि

ष्टानका नाम यज्ञ समझे हुये हैं, वे आर्यसमाजके मतमें सरासर वेद भगवान्की आज्ञाका विरोध कर रहे हैं।

आर्यसमाज विद्वानोंको देवता मानता है। व्यक्ति-विशेष तथा ग्रह विशेषके सकाशमे किसी फल विशेषको प्राप्ति तथा फलित ज्योतिषको ख्यातिपर उसको विश्वास नहीं।

धर्म वही, जो वेद विहित है। सूक्ष्मतया आर्य-समाज धर्मके दश लक्षण मानता है। तदनुसार ही अपना जीवन बनाना मनुष्य मात्रका परम कर्तव्य है।

> "धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
> धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥" (मनु ६।९२)

अर्थात् १ धृतिः—सदा धैर्य रखना, २ क्षमा—माना-पमान, तथा सुखदुःखमें सहन शीलता, ३ दम—मनको धर्ममें प्रवृत्त कर अधर्मसे रोकना आदि, ४ अस्तेय—चोरीका त्याग, ५ शौच—रागद्वेष पक्षपातशून्य शारी-रिक वा मानसिक पवित्रता, ६ इन्द्रियनिग्रह—इन्द्रि-योंको अधर्माचरणसे रोककर धर्माचरणमें लगाना, ७ धीः—बुद्धि बढ़ाना, ८ विद्या—पृथिवीसे लेकर परमात्मा पर्यन्त की ज्ञानोपलब्धि करना, ९ सत्य—जैसे पदार्थ को तैसा ही समझना तथा कहना, १० अक्रोध—क्रोध त्यागना।

आर्यसमाजका सङ्गठन।

प्रत्येक मनुष्य वैदिक धर्मके शरण आकर आर्य-समाजके दश नियमोंको मानता हुआ समाजका सभासद बन सकता है। प्रविष्ट होनेकी तिथिसे एक वर्षतक सदाचार रखने तथा अपने आयका शतांश देनेपर वह आर्यसभासद कहानेके योग्य होता है। आर्य सभासद प्रतिवर्ष अपनेमेंसे प्रधानादि अधिकारिवर्ग तथा एक प्रबन्ध-कारिणी-समितिका निर्वाचन करते हैं। यह समिति अन्तरङ्ग सभा कहाती है। एक वर्ष पर्यन्त समस्त सामाजिक कार्योंका यथोचित प्रबन्ध करना इसका कर्तव्य होता है। गत मनुष्य गणनाके अनुसार भारत भरके समस्त आर्योंकी संख्या ढ़ाई लक्षके लगभग थी। इसमेंसे संयुक्त प्रान्तीय आर्योंकी संख्या एक लाख बीस सहस्रके इधर उधर है।

प्रत्येक समाज अपने साप्ताहिक अधिवेशन करता है। ये अधिकतर रविवारको होते हैं। इन अधि-वेशनोंमें हवन, ईश्वर-प्रार्थना, वेदपाठ और भजन-गानके अतिरिक्त अन्य उपयोगी पुस्तक पढ़े जाते हैं। कभी कभी धार्मिक और सामाजिक विषयोंपर व्याख्यान तथा संवाद भी चलते हैं।

एकप्रान्तके समाज मिलकर अपनी सङ्घशक्ति द्वारा 'आर्यप्रतिनिधिसभा'की स्थापना करते हैं। वह विविध समाजोंकी प्रतिनिधि-सभाओं द्वारा संगठित होती और अपने प्रान्तमें उपदेशों तथा अन्य धार्मिक कार्योंका प्रबन्ध रखती है।

उपरोक्त समस्त प्रतिनिधि-सभाओं द्वारा आर्या-वर्तीय सार्वदेशिक सभाकी स्थापना हुई। इसके वर्तमान प्रधान कांगडी गुरुकुलके मुख्याधिष्ठाता श्रीमान् महात्मा मुन्शी रामजी तथा मन्त्री वृन्दा-वन गुरुकुलके मुख्याधिष्ठाता श्रीमान् मुन्शी नारा-यण-प्रसादजी हैं।

उपरोक्त सभा-समाजके अतिरिक्त परोपकारिणी सभा स्वामी दयानन्दने अपने ग्रन्थोंको सुरक्षित रखने, वेदोंको प्रचलित करने आदि कार्योंके विचार-से संस्थापित की थी। इस समय उसके प्रधान पदपर आर्यभूषण श्रीमहाराज जनरल सर प्रतापसिंह जी महोदय तथा मन्त्रीपद पर शाहपुराधीश राजा-धिराज श्रीनाहर सिंहजी वर्मा सुशोभित हैं परोप-कारिणीसभा स्वामीजीके वैदिक प्रेसका प्रबन्ध रखती तथा उनके रचे समस्त पुस्तकोंको छपाकर प्रकाशित करती है।

अछूत भाइयोंको हिन्दुओंसे अलग रहते देख-कर आर्यसमाजको दया आयी थी। उसने उनके संस्कारके लिये प्रबल प्रयत्न किया। स्यालकोट (पञ्जाब)में विशेषतः श्रीलाला गङ्गारामजीके पुरुषार्थसे लगभग २६००० अछूतोंका उद्धार हुआ है।

आर्यसमाजने गुरुकुलोंकी स्थापना द्वारा ब्रह्म-चर्याश्रमका पुनरुद्धार कर वास्तवमें बड़े महत्वका

कार्य किया है। इसने लोगोंका ध्यान इधर खींचा और खोल कर बतलाया कि विवाहका अभिप्राय विषय भोग नहीं—बल्कि उत्तम सन्तानकी उत्पत्ति करना है। आर्यसमाजके सिद्धान्तानुसार प्रत्येक पुरुष ऋतुगामी होने ही पुष्ट और बलिष्ठ सन्तान प्राप्त कर सकता है। बालविवाहके विरोधमें समाजने घोर आन्दोलन किया। अब युवकोंमें स्वदेशी और विदेशी खेल चलाने, सदाचार बढ़ाने, सेवाभाव उपजाने और वैदिक धर्म फैलानेके लिये आर्य कुमार सभाओंकी स्थापना हुई। ये इस सम्बन्धमें उत्तम और सराहनीय कार्य कर रही हैं।

आर्यसमाजने बतलाया, कि भारतवर्ष जैसे कृषि प्रधान देशमें—जहांके निवासी भी दूधके सेवनसे ही स्वस्थ और बलिष्ठ हो सकते हैं और आजकल जिसके न मिलनेसे ही उनकी शारीरिक और मानसिक दुर्दशा हो रही है—गो की रक्षा करना प्रत्येक भारतवासीका परम कर्तव्य होना चाहिये। मांसाहार न केवल वेदविरुद्ध पापमय है, अपितु स्वास्थ्यके लिये अत्यन्त हानिकारक भी है। यदि मांस भक्षण करनेवाले हिन्दू मांसाहार त्याग दें तो गो रक्षामें बहुत बड़ी सहायता दे सकते हैं। क्योंकि उनके मांसाहार छोड़ देनेपर अन्य पशुओंके न मिलनेसे गोघात करनेवाले लोग गोहत्या से रुक जायेंगे।

आर्यसमाज तो यह भी नहीं चाहता कि मनुष्य अपने उदर-पोषणार्थ किसी पशुका वध करे। परन्तु आशा नहीं होती, कि मांस भक्षणको पाप न समझनेवाले अन्य मतावलम्बी इसे सहसा छोड़ देंगे।

अनाथोंकी रक्षाके लिये आर्यसमाजने बड़ा काम किया है। समाजसे पूर्व इस देशमें ईसाइयोंके सिवा दूसरे लोगोंके अनाथालय न थे। परन्तु आर्यसमाजने अजमेर, आगरा, फीरोजपुर बरेली आदि बड़े बड़े नगरोंमें अपने अनाथालयोंकी स्थापना करके इस अभावकी बहुत कुछ पूर्ति कर दी है। इन आर्य अनाथालयोंमें सैकड़ों अनाथोंका पालन पोषण और शिक्षण होता है। समाजके अनाथालयोंके पश्चात् हिन्दुओंके अन्य अनाथालयोंकी स्थापना हुई। सन् १८९९ के दुर्भिक्षमें तथा उसके पश्चात् आर्यसमाजके भूषण माननीय लाला लाजपतरायजीने अनाथोंकी रक्षाके लिये बड़ा उद्योग किया था।

आर्यसमाजने वैदिक विवाहकी प्रथा प्रचलित की। न्यूनसे न्यून २५ वर्षका वर तथा १६ वर्षकी वधू होना आवश्यकीय एवम् अनिवार्य है। जाति पांतिके बखेड़ोंमें न पड़ गुणकर्मानुसार विवाह करनेका उपदेश आर्यसमाजने दिया है।

स्वर्गीय पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागरने १८५६ ई॰को सरकारसे हिन्दूविधवाओंके पुनर्विवाहका कानून पास कराया था। परन्तु आर्यसमाजके प्रादुर्भावतक उसका उपयुक्त प्रचार न हुआ। आर्यसमाजने अक्षतयोनि विधवाके विवाहको वेदानुकूल मानकर प्रचार किया है।

आर्यसमाजने विधवाओंके लिये आश्रम खोले, जिनमें उपयोगी कार्योंको सीखकर वे अपनी आयुको भले प्रकार बिता सकें। ये आश्रम आगरे और जालन्धरमें अच्छा कार्य कर रहे हैं।

नाचको दुष्ट और सदाचार नष्ट करनेवाली प्रथाको दूर करनेके लिये भी आर्यसमाजने बड़ा प्रयत्न किया है। इसमें उसे बड़ी सफलता हुई। जो जातियां इस दुर्व्यसनमें फंसी थीं, उन्होंने सर्वथा त्याग दिया। इस कार्यमें अन्य सुधारकोंसे भी आर्यसमाजको बड़ी सहायता पहुंची है।

आर्यसमाजने बतलाया कि जीवनको शुद्ध, उच्च और मस्तिष्कको शक्तिसम्पन्न बनानेके लिये मांस मदिरा तथा अन्य मादक द्रव्योंका सेवन सदैव वर्जित है। आर्यसमाजके उपदेशसे सहस्रों मनुष्योंने मांस भक्षण आदि दुर्व्यसनोंसे छुटकारा पाया है।

जनसाधारणमें शिक्षा फैलानेके महत्व पूर्ण कार्यको आर्यसमाजने अपने हाथमें लिया है। इसको ऐसी सफलतासे सम्पादित किया, कि विदेशी लोग भी मुक्त कण्ठसे सराहना करते हैं।

आर्यसमाज द्वारा आर्यभाषाका जितना अधिक

प्रचार हुआ, उतना किसी अन्य सभा वा संस्थासे नहीं। आर्यसमाजके उपनियमोंने प्रत्येक आर्यको हिन्दीभाषा सीखनेके लिये वाध्य किया। पञ्जाबमें जहां कोई उर्दूके सिवा हिन्दीभाषाका नामतक न जानता था, आर्यसमाजने आर्यभाषाका भरपूर प्रचार किया। अकेला 'दयानन्द कालेज' २५००से अधिक विद्यार्थियोंको प्रतिवर्ष हिन्दीभाषाकी शिक्षा देता है। इसके अतिरिक्त पुत्र पुत्रियोंको अन्य स्कूल-पाठशालाओंमें हिन्दीभाषाकी शिक्षा अनिवार्य है।

आर्यसमाजके गुरुकुलोंमें हिन्दीभाषाको जो प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है, वह अन्यत्र कहीं नहीं। क्योंकि इन विद्यालयोंमें संस्कृत और अंगरेजीके साहित्यको छोड़कर शेष सब शिक्षाओंका माध्यम (medium of Instruction) हिन्दीभाषा ही है। आर्यसमाजके मुख्य गुरुकुल कांगड़ी तथा वृन्दावनमें हिन्दीभाषा द्वारा ही भूगोल, इतिहास, गणित, विज्ञान आदि विषयोंकी शिक्षा दी जाती है। आर्यसमाजने आर्यभाषाके अनेक साप्ताहिक एवं मासिक पत्र जारी किये, जिनमें वैदिक धर्म और हिन्दी भाषाका बड़ा प्रचार हुआ है।

कन्याओंके लिये आर्यसमाजने अथवा आर्य-सामाजिकोंने जालन्धर, प्रयाग, देहरादून् आदि नगरोंमें बड़ बड़े विद्यालय स्थापित किये। छोटी छोटी पुत्री पाठशालायें तो प्राय: प्रत्येक नगरमें आर्य-समाजने स्थापित की हैं।

मोक्षपद प्राप्त करनेके पश्चात् स्वामी दयानन्दकी स्मृतिमें १८८६ ई०को "दयानन्द एङ्गलो वैदिक कालेज" लाहोरमें स्थापित किया गया। श्रीमहात्मा हंसराजजीने एतदर्थ अपना जीवन अर्पण किया, और २५ वर्ष पर्यन्त हेडमाष्टर तथा प्रिंसिपल रहकर उसकी अमूल्य सेवायें करते रहे। आप ही ने अपने प्रशंसनीय पुरुषार्थसे एक साधारण स्कूलको इतना बड़ा विद्यालय कर दिखाया। अब दयानन्द कालेजमें अनुमानसे उत्तरभारतके सब विद्या-लयोंकी अपेक्षा अधिक विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। अकेले कालेज विभागमें पढ़नेवाले विद्यार्थियोंकी संख्या ८५०से अधिक है। अन्य सामाजिक स्कूल भी बड़ा कार्य कार रहे हैं। संयुक्तप्रान्तमें भी देहरादून्, अजमेर, अलीगढ़, काशी आदि स्थानोंके दयानन्द स्कूल शिक्षा प्रचारमें अच्छी सहायता देते हैं।

वैदिक शिक्षाका पुनरुद्धार तथा ब्रह्मचर्याश्रम फिर स्थापन करनेके अभिप्रायसे आर्यसमाजने ऋषि दयानन्द निर्धारित प्राचीन शिक्षापद्धतिका प्रचार आरम्भ किया है।

पञ्जाबकी आर्यप्रतिनिधि सभाने संयुक्तप्रान्तमें हरिद्वारके समीप एक गुरुकुल स्थापित किया है। वहां ३००के लगभग ब्रह्मचारी पढ़ते हैं। इसके संस्थापक और सञ्चालक महात्मा मुन्शी रामजीने अपना जीवन अर्पण करके इसे इस अवस्थाको पहुंचा दिया है, कि स्नातक (Graduate) निकलना आरम्भ हो गये हैं।

संयुक्तप्रान्तकी आर्यप्रतिनिधिसभाने भी वृन्दावनमें एक गुरुकुल स्थापित किया है। ब्रह्मचारियोंको संख्या १२०के लगभग है। यह 'कुल' श्रीमान् मुन्शी नारायणप्रसादजी महोदयके सुप्रबन्धमें प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहा है।

आर्यसिंह—बौद्ध धर्माचार्य। यह सिंहलके पुत्र और मध्यप्रदेशके अधिवासी रहे। काबुलमें बौद्धधर्म फैलाने गये थे। किन्तु अमीरने प्राणवधका आदेश दिया। (Indian Antiquary, Vol. ix. p 316)

आर्यसुस्थित—आर्यसुहस्तिके प्रधान शिष्य। यह व्याघ्र-पद्यगोत्रीय रहे। इन्हीं व्यक्तिसे जैनोंका कोटिकगच्छ-वंश चला है। वीरनिर्वाणके ३१३ वत्सर बाद ८६ वर्षकी अवस्थामें इनकी मृत्यु हुई।

आर्यसुहस्ति—जैनोंके एक सिद्धपुरुष। यह वशिष्ठ-गोत्रीय रहे। अपने समयके राजाको इन्होंने जैन-धर्मकी दीक्षा दी थी।

आर्यहलं (सं० अव्य०) आर्यं हलति विदीर्यति, अनुस्वारादि प्राठादस्याव्ययत्वम्। बलात्कार, ज़बर-दस्ती, जोरसे।

आर्यहृदय (सं० त्रि०) साधु-प्रिय, जो अशराफ़को प्यारा हो।

जिसके तीर सुष्ठु आर्यकी वासभूमि रहती, वह नदी सुवास्तु बजती है। सुवास्तु नदीतीरके जनपदका नाम भी सुवास्तु* ही है। 'सुवास्त्वादिभ्योऽण्' सूत्र देखनेसे समझ पडता, कि पाणिनिको भी उक्त प्रदेश विदित रहा। कनिङ्घाम महोदयके मतसे आजकल सुप्रसिद्ध 'स्वात' (सुवात) नदी प्रवाहित स्वात उपत्यका ही प्राचीन सुवास्तु है।

"मावो रसानितभा कुभा क्रुमुर्मा वः सिन्धुर्निरीरमत्।
माव: परिष्ठात् सरयु: पुरीषिण्यस्मे इत् सुम्न मस्तु व: ।"

(ऋक् ५।५३।९)

हे मरुद्गण! रसा, अनितभा तथा कुभा † और क्रमु‡ नदी एवं सर्वत्र गमनशील सिन्धुनद तुम्हें विलम्ब उत्पादन न करे और न जलमयी सरयू एवं पुरीषिणी (परुष्णी)** तुम्हें रोक रखे, जिससे हमें तुम्हारा दर्शनसुख मिले।

उपरोक्त ऋङ्मन्त्रसे पूर्वतन आर्यवासकी चतुःसीमा भी निकलती है। सुवास्तु नदीतीरस्थ जनपदसे वह उत्तरस्थ अतिप्रभावा रसा नदी उत्तर, आजकल 'काबुल' कहलानेवाली हीनप्रभावा कुभा पश्चिम, भारतप्रसिद्ध सरयू पूर्व और कुभासे नीचे क्रमु-सिन्धु-सङ्गम दक्षिण सीमा है।

"युवोप नाभिरुपरस्यायो: प्र पूर्वाभिस्तिरते राष्टि शूर ।
अञ्जसी कुलिशी वीरपत्नी पयो हिन्वाना उदभिर्भरन्ते।"

(ऋक् १।१०४।४)

उपल पर्वतको जो प्रधान नगर है, उसकी रक्षा विक्रान्त मनुष्यराज करता है। अभिप्राय—वह नगर कभी-कभी प्रागवाहिनी नदियोंमें बाढ आनेसे डूब जाता और राजा उसे बचाता था। सुवास्तुसे ईशान और दक्षिणाभिमुख बहनेवाली अञ्जसी, सुवास्तुसे वायव्यकी ओर दक्षिणाभिमुख बहनेवाली कुलिशी और सुवास्तुसे आग्नेयकी ओर दक्षिणाभिमुख बहनेवाली वीरपत्नी नदी है।

ऋक्संहितामें 'गौरी' शब्द दो बार आया है,—

"गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् ।" (१।१६४।४१)

अर्थात् गौरी सलिलसृष्टि करती है। वह एकपदी, द्विपदी, चतुष्पदी, अष्टापदी तथा कभी नवपदी बन जाती और कभी व्योममें (आकाशमें) सहस्राक्षर परिमित शब्द निकालती है।

उपरोक्त मन्त्रमें सायणने 'गौरी' अर्थात् मेघगर्जनरूप वाक् वा शब्द लिखा है। किन्तु कुछ मनोयोगपूर्वक यह ऋक् पढनेपर सहज ही किसी नदीकी वर्णना समझ पडती है। 'व्योममें सहस्राक्षर परिमित शब्द' नदीकी कल-कल ध्वनिका वर्णन मात्र है। विशेषत: इसके आगे ऋक्में 'समुद्र' शब्दका प्रयोग पडनेसे गौरीका नदी होना स्पष्ट है।

"मदच्युत् क्षेति सादने सिन्धोरूर्मा विपश्चित्।
सोमो गौरी अधिश्रित ॥" (ऋक् ९।१२।३)

मदस्रावी सोम सिन्धुतरङ्ग स्थानमें वास करते हैं। विद्वान् सोम गौरीका आश्रय लेते हैं।

अथर्ववेदादि और महाभारतमें भी गौरी नदीकी बात लिखी है। ब्रह्माण्डपुराणमें कैलाससे उत्तर 'गौर' पर्वत बताया है और पर्वतका स्थाननिर्णय करनेसे गौरी* नदीका गौरपर्वतसे निकलना स्पष्ट ही समझ पडता है। गौरीसे ही पूर्व सुषस्तिन् नदी है।

---

* सुवास्तु—Suastos of Arrian तथा Suastene of Ptolemy होता और आजकल 'सुवात' कहाता है।

† कुभा—आरियन-कथित Kophes होती और आजकल काबुल-नदी बजती है।

‡ क्रमु—वर्तमान कुरम्, काबुल नदीमें मिश्रित हुयी है।

** पुरीषिणी या परुष्णी—इरावती है। वर्तमान समय रावी कहाती है।

* गौरी—Arrian कथित Guraeus है। इस नदीके प्रवाहित भूभागका नाम मार्कण्डेयपुराणमें गौरग्रीव लिखा है। (५८८) टलमीके ग्रन्थमें Goryaia मिला एव आरियनने Guraoia कहा है। वर्तमान स्वात प्रदेशका उत्तरांचल लण्डइ नदीका तीरवर्ती स्थान है। लण्डइ नदी ऋग्वेद और महाभारतमें गौरी बतायी गयी है। ब्रह्माण्डपुराणमें कैलाश पर्वतसे उत्तर किसी गौरगिरिका उल्लेख है। अध्यापक लासेनकृत टलमीके मतानुयायी प्राचीन भारत (Das Alt Indian) नामक मानचित्रमें भी सुषस्तिन्से दक्षिण गौरीयइय (Goryaia) देशका उल्लेख है।

तक पश्चिमोत्तर सुविस्तीर्ण पुरातन जो आर्यावर्तांश पड़ता, वह पश्चिम-सप्तनद प्रदेश कहा सकता है। किन्तु पूर्व-सप्तनदके अन्तर्गत पञ्चनद-प्रदेशकी तरह पश्चिम-सप्तनदमें पञ्चकोर प्रदेश (अफग़ानस्थान) भी लगता है। अतः गान्धारका* आर्यावर्तान्तर्गतत्व सम्पन्न होता, जिसका प्रमाण वेद, ब्राह्मण और परवर्त्ती शास्त्रमें मिलता है,—"गन्धारीणा मिवाविका।" (ऋक् १।१२६।७) "अग्रजिति गान्धाराय" (ऐतरेयब्राह्मण ७।३।८) "साल्वेयगान्धारिभ्याञ्च।" (पा ४।१।१६९)

कुरुराज धृतराष्ट्रकी पत्नी दुर्योधनादि बहुपुत्र-प्रसविनी गान्धारी भारत-प्रसिद्ध ही हैं। वर्णु प्रभृतिके आयुध-जीवित्वका वर्णन पाणिनिने लिख दिया है। पूर्व एवं पर सप्तनद प्रदेशके बीच हिमवत्-समुद्भव अधःप्रवण समुद्रान्त प्राचीन आर्यावर्तको द्विधा करनेवाला सीमादण्ड-जैसा सिन्धु नामक नद आज भी वर्तमान है। इस सिन्धुसे उत्तर दूसरी सात नदीकी विद्यमानता भी सुन पड़ती है।

"ऋजीत्येनी रुशती महित्वा परि ज्रयांसि भरते रजांसि।
अदब्धा सिन्धुरपसामपस्तमाश्वा न चित्रा वपुषीव दर्शता॥ ७
स्वश्वा सिन्धुः सुरथा सुवासा हिरण्ययी सुकृता वाजिनीवती।
ऊर्णावती युवतिः सीलमावत्युताधि वस्ते सुभगा मधुवृधम्॥"
(ऋक् १०।७५।८)

इसमें कैलाश निम्नस्थ ऊर्णाप्रदेशीय ऊर्णावती और हिरण्मयी, वाजिनीवती एवं सीलमावती† उत्तरस्थ है। निम्न बलूचिस्तानमें 'एनी' नदीको कौन नहीं जानता! चित्रा वा चित्रलनदी चित्रल देशसे निकल कुभामें मिली और ऋजीती सम्भवतः उसीके समीप बही है। उक्त त्रि-सप्तनदीकी अपेक्षा सिन्धु नदका प्राधान्य वर्णित है,—

"प्र सप्त-सप्त त्रेधा हि चक्रमुः प्र सृत्वरीणा मति सिन्धुरोजसा।"(१०।७५।१)

नदी सप्त-सप्त होकर तीन श्रेणीसे आर्यावर्तमें बहती है। सिन्धुसे पूर्व, पश्चिम और उत्तर सात-सात नदी विद्यमान है। इक्कीसो नदीके बलसे अतिशयित सिन्धुनद बना, जिसे उनका पुत्र वा राजा कहा है,—

"अभि त्वा सिन्धो शिशुमिन्न मातरो वाश्रा अर्षन्ति पयसेव धेनवः।
राजेव युध्वा नयसि त्वमित् सिचौ यदासामग्रं प्रवता मिनक्षसि।"
(१०।७५।४)

हे सिन्धो! पयःसे युक्त धेनुकी भांति यह नदी आपको शिशु समझ दुग्ध पिलाने चली आती हैं। आप इन्हें राजाकी तरह युद्धमें हांकते हैं। क्योंकि आप इन बहनेवाली नदीसे आगे बढ़ रहे हैं।

अन्यत्र भी त्रि-सप्त-नदीका विषय विद्यमान है,—

"त्रिः सप्त सस्रा नद्यः।" (ऋक् १०।६४।८)

वस्तुतः इन त्रि-सप्त-नदीसे परिवृत सिन्धुके मध्य ही पूर्वकालिक आर्यावर्त देश है। ऐतरेयब्राह्मणमें—

"यस्तेजो ब्रह्मवर्चस मिच्छेत्०—०प्राङ् स इयात्, योऽन्नाद्य मिच्छेत्०—०दक्षिणा स इयात्, स सोमपीथ मिच्छेत्०—०उदङ् स इयात्।" (ऐतरेय० १।५।२)

प्रागादि दिक् शब्द किसी अवधिकी अपेक्षा रखता है। क्योंकि प्राक् इत्यादि आकाङ्क्षासे सर्वत्र उपजायमानत्व आता है। यहां आर्यावर्तीय सिन्धुका मध्य ही अवधि है। सिन्धुसे प्राक् इत्यादि मानते ही तेजस् प्रभृतिकी सिद्धि निकलती है। फिर सिन्धुके प्राग् सरस्वती आदिकी तीरभूमिमें यज्ञानुष्ठानके बाहुल्यसे तेजस् तथा ब्रह्मवर्चस् मिलता, शतद्रु-सङ्गमके दक्षिण हिम-प्राचुर्यके अभाव तथा तापके प्राबल्यसे प्रचुर शस्य उपजता, पश्चिम अरण्यके प्राचुर्यसे पशु बहुत होता, शतद्रु-सिन्धु-सङ्गमके उत्तर अति शैत्यसे वल्लीशाम लगता और शरीर-सोम बढ़ता है। अतिप्राक्तन आर्यावर्तका यह सिन्धु-मेरुदण्ड रहा। पाश्चात्य लोग सिन्धुस्थानको 'सि' की जगह 'हि' रख हिन्दुस्थान कहते हैं। सप्तसिन्धु-प्रदेश अवस्तामें 'हफ्तहिन्द' हो गया।

रसा नदी सिन्धु-सङ्गत और अति विक्रान्त रही। द्वितीय तथा तृतीय नदी-सप्तकमें वर्णन विद्यमान है। तदानीन्तन आर्यावासकी उत्तर-सीमा वही विदित होती है।

* गन्धारी—Gandaraioi of Periplus, हिन्दूकुशका दक्षिण भाग वर्तमान अफग़ान-स्थान है। इसी गन्धारसे अफग़ानराजधानी कन्धारका नामकरण हुआ है।

† सीलमावती—ग्रीक ऐतिहासिकगणके निकट Silis नामसे कथित है। (Ukert, Geographie der Griechen und Romer, Vol. III, 2. p 288) ऋग्वेदमें सीरा (१।१७४।९) और सीता (४।५७।७) नाम भी मिलता है।

"प्रावेपा मा बृहतो मादयन्ति प्रवातेजा इरिणे वर्वृताना।
सोमस्येव मौजवतस्य भक्षो विभीदको जागृविर्मह्यमच्छान्॥"

(ऋक् १०।३४।१)

सतत कम्पनशील पववान् अपर वनस्पत्यादिशून्य बहुवायुयुक्त प्रदेशमें उत्पन्न होनेवाला तथा इरिण देशमें वर्तमान विभीतक वृक्ष, मूजवान् नामक पर्वत-पर उत्पन्न होनेवाली सोमलताका रस पीनेसे जैसे हर्ष बढता, वैसे ही हमारे पक्षमें प्रीतिकर और उत्साह देनेवाला ठहरता है।

मूजवान्* पर्वत आज भी कैलाश गिरिसे उत्तर-पश्चिम विद्यमान है। इसीसे वैदिक युगमें इरिण वा ईरान नामक जनपदका आर्यावर्तीयत्व मानना पडेगा।

अथर्व-संहिता ५।१४।२२ सूक्तके ३य मन्त्रमें परुष† जनपद, ४र्थमें शकम्भर और महावृष, ५म एवं ७ममें मूजवान् तथा बल्हिक‡ ८में पुनः महावृष और मूजवान्, ९में फिर भी बह्लीक और अन्तको १४श मन्त्रमें अङ्ग, मगध, मूजवान् और गन्धारीका वर्णन है। किन्तु आर्यावर्तान्तर्गत रहने-पर भी उक्त स्थान में बहु अनार्य रहते थे।

"गन्धारिभ्यो मूजवद्भ्योऽङ्गेभ्यो मगधेभ्यः।
प्रैष्यन् जनमिव शेवधिं तक्मानं परिदद्मसि।" (अथर्व ५।२२।१४)

अथर्वसंहितामें गन्धारी और मूजवान्के साथ जिस अङ्ग और मगधका उल्लेख मिलता, वह पूर्वभारतका प्रसिद्ध अङ्ग और मगध राज्य नहीं। वैदिक काल उक्त दोनो स्थान आर्यावर्तसे अलग रहे। मगधका वैदिक नाम कीकट है। अनार्यवसतिसे कीकटकी निन्दा सुनते हैं।

"किं ते कृण्वन्ति कीकटेषु गावो नाशिरं दुह्रे न तपन्ति घर्मम्।"

(ऋक् ३।५३।१४)

'कीकटो नाम देशो ऽनार्यनिवास।' (निरुक्त ६।३२)

कीकट वर्तमान मगध देशको कहते, जिसमें अनार्य रहते थे। मगध और गया देखो।

किन्तु अथर्वसंहितामें गन्धारी और मूजवान् दोनो जब आर्यावर्तके अन्तर्गत आते, तब दोनोके पास अव-स्थित अङ्ग और मगध भी आर्यावर्तमें ही पडते हैं। उभय स्थान मूजवान् वा कैलास पर्वतसे उत्तर पौराणिक शाकद्वीपके दक्षिणांश और प्राचीन ग्रीक-वर्णित स्कीदिया राज्यके मध्य रहे। भविष्यपुराणमें उक्त स्थानके वासी मगब्राह्मण 'आर्यदेशसमुद्भव' कहे गये हैं। (भविष्य ब्राह्मपर्व १३९।१९) मगब्राह्मण परवर्ति-काल वर्तमान विहार प्रदेशके जिस अंशमें आकर रहा, उसी स्थानका नाम मगध हुआ। पाश्चात्य ग्रीक भौगोलिकों और ऐतिहासिकोंका विवरण पढनेसे समझ पडा, कि वर्तमान तुर्कस्थान और उसके उत्तरवर्ती तुखारस्थानसे उत्तर-पश्चिम Massagetae नामक शाकराज्य रहा। उसमें Augasii और Sogdiana भूभाग था। कहनेसे क्या, उक्त दोनो जनपदवासी Anguttari और Magdi वा Meki नामसे प्रसिद्ध थे।* दोनो ही जनपद अथर्ववेदमें अङ्ग (उत्तर) और मगध नामसे परिचित हैं। उक्त Massagetae-वासी भविष्य, मत्स्य प्रभृति

---

* मूजवान्—पुराणमतमें कैलाश पर्वतसे भी उत्तर मूजवान् वा मुञ्जवान् पर्वत है।

"मुञ्जवान् सुमहादिव्यो ऊर्ध्वशैलो हिमान्वितः।
तस्मिन् गिरौ निवसति गिरिशो धूम्रलोहितः॥
तस्य पादात् प्रभवति शैलोदं नाम तत् सरः।
तस्मात् प्रभवति पुण्या नदी शैलोदका शुभा।
सा वङ्क्षुसीतयोर्मध्ये प्रविष्टा पश्चिमोदधिम्॥"

(मत्स्य १२०।१९-२०)

अर्थात् मूजवान् सुमहान्, दिव्य, ऊर्ध्वशैल और हिम मण्डित है। उस गिरिमें धूम्रलोहित महादेव वास करते हैं। उनके पाददेशमें शैलोद नामक ह्रद है। उसी ह्रदसे शैलोदका (शैलोदा) नामी एक नदी निकली है। यह नदी वङ्क्षु (Oxus) और सीता (Jaxartes) नदीके मध्य मिलित हो पश्चिम सागरमें जा गिरी है।

उद्धृत प्रमाणसे समझ पड़ता, कि मुञ्जवान् कैलाससे उत्तर वर्तमान तुर्कस्थान वा ईरानके मध्य और बलखसे उत्तर है। महाभाष्यके प्रमाणसे कहा जाता, कि आर्यजातिके संस्कारका प्रधान चिह्न मौञ्जीद्रव्य इसी मुञ्जवान् पर्वतसे प्रथमतः उत्पन्न होता था। पतञ्जलि-महाभाष्यमें लिखा हुआ—"मौञ्जो नाम वाहीकेषु ग्रामस्तस्मिन् भवो मौञ्जीय।" (४।२।१)

† परुष—पुराणमें परुषक कहा गया है। (ब्रह्माण्डपुराण ४९।६०) चीनपरिव्राजकने पो-लु-सी-सी नाम लिखा है। इसका वर्तमान नाम पेशावर है।

‡ बल्हीक—वर्तमान नाम बलख है।

* H. H. Wilson's Ariana Antiqua.

भरतवंशीय शासनाधिन राज्य स्वयं देखा था। दौष्मन्त भरत नरेशकी कीर्तिकथा बहुप्राचीन है,—

> "हिरण्येन परीवृतान् कृष्णाञ्छुक्लदतो मृगान्।
> मष्णारे भरतोऽददाच्छतं बद्धानि सप्त च।
> भरतस्यैष दौष्मन्तेरग्निः साचीगुणे चितः।
> यस्मिन्सहस्रं ब्राह्मणा बद्वशो गा विभेजिरे।
> अष्टासप्ततिं भरतो दौष्मन्तिर्यमुनामनु।
> गङ्गायां वृत्रघ्नेऽबध्नात् पञ्चपञ्चाशतं हयान्।
> त्रयस्त्रिंशच्छतं राजाश्वान् बद्धाय मेध्यान्।
> दौष्मन्तिरत्यगाद्राज्ञो मायां मायवत्तरः।
> महाकर्म भरतस्य न पूर्वे नापरे जनाः।
> दिवं मर्त्य इव हस्ताभ्यां नोदापुः पञ्च मानवाः।" (ऐतरेयब्रा० ८।४।८)

शतपथ-ब्राह्मणमें भी प्रायः यही लिखा है। आर्यावर्तवहिर्भूत प्रतीची दिक् कोई सुसमृद्ध राज्य न रहा। उत्तरभागके पर्वत-पादस्थ कितने ही अप्रसिद्ध नरेश रहे। दक्षिण-भागमें भी अनेक छोटे छोटे राजा थे। मध्यभागकी अरण्यभूमि इन्हीं नीच अपार्थ्योंके अधिकारमें रही।

> "अत्रवि दीर्घारण्यानि भवन्ति।" (ऐतरेय २।३।८)
> "प्रतीच्योऽपाच्यो महाः क्रन्दते।" (ऐतरेय १।५।१)

उदीचीमें हिमवत्पृष्ठ-दण्डके उत्तर-भाग आर्यावर्तसे वहिर्विद्यमान रहते भी उत्तरमद्र और उत्तरकुरुको आर्यभिवका जनपद सुनते हैं। हिमवान्‌के दक्षिण-भूभाग आर्यावर्तकी तरह पहले उसका उत्तर-भूभाग भी मद्रदेश और कुरुदेशमें विभक्त था। आर्यावर्तीय मद्रदेशसे उत्तर उत्तरमद्र और आर्यावर्तीय कुरुदेशसे उत्तर उत्तरकुरु रहा। आर्यावर्तीय प्रत्यन्त देशसे आगे जो देश वा महादेश था, उसे मन्वादिने आर्य वा अनार्य नहीं कहा। फिर तद्देशवासीका आर्यत्व वा अनार्यत्व भी विचार्य नहीं। परन्तु उत्तरकुरुदेश नैसर्गिक सौन्दर्य, स्वास्थ्यकरत्व और अपने देशवासीके शान्तिप्रियत्व तथा तपःपरायणत्व आदि देवस्वभावसे पुण्यमय एवं अजेय देवक्षेत्र समझा गया—

> "देवक्षेत्रं वै तन्न वैतन्मर्त्यो जेतु मर्हति।" (ऐतरेयब्रा० ८।३।८)

लोगोंका शान्तिप्रियत्व आदि स्वभाव ही अजेयत्वमें प्रधान हेतु है,—

> "तांस्तु सान्त्वेन निर्जित्य मानसं सर उत्तमम्।
> ऋषिकुल्यास्तथा सर्वान् ददर्श कुरुनन्दनः॥ * *
> तत एव महावीर्या महाकाया महाबला।
> द्वारपाला समासाद्य हृष्टा वचनमब्रुवन्॥
> पार्थ नेदं त्वया शक्यं पुरं जेतुं कथञ्चन।
> उपावर्तस्व कल्याण पर्याप्तमिदमच्युत॥ * *
> न चापि किञ्चिज्जेतव्यमर्जुनात्र प्रदृश्यते।
> उत्तराः कुरवो ह्येते नात्र युद्धं प्रवर्तते॥"
>
> (महाभारत सभापर्व २८अ०)

उत्तरकुरु वा कुरुवर्ष अवश्य मेरुके समीप 'शान्स-पिटवर्ग' प्रभृति 'सुवोर्य' देशान्तमें था। आजकल वह साइबेरियाके दक्षिणांश हैं। उसके स्वर्गत्वका वर्णन अनेक ग्रन्थमें मिलता है,—

> "इहो मह शरीरेण प्राप्तोऽसि परमां गतिम्।
> उत्तरान् वा कुरून् पुण्यानथवाप्यमरावतीम्॥" (अनुशासनपर्व १०।१८)

फिर लिखा है,—

> "नैवेदिकं सर्वगुणोपपन्नं ददाति वै यस्तु नरो द्विजाय।
> स्वाध्यायचारित्रगुणान्विताय तस्यापि लोकाः कुरुषूत्तरेषु॥"
>
> (महाभारत अनुशासनपर्व ७१।२१)

प्राचीन ग्रीक भौगोलिकों और ऐतिहासिकोंने Aria वा Ariana नामक जनपदका उल्लेख किया है। इसकी पूर्वसीमा सिन्धुनद, दक्षिणसीमा भारत-महासागर अर्थात् सिन्धुमुखसे पारसिक उपसागर पर्यन्त जलभाग, पश्चिमसीमा कास्पीयसागरसे कार्मेनिय अर्थात् फार भिन्न समस्त येज्द और किरमानप्रदेश, उत्तरसीमा परोपनीसस पर्वत अर्थात् भारतको उत्तर-सीमा स्थित हिमालय-संलग्न ककेसस् गिरिमाला पर्यन्त है।*

सुप्रसिद्ध फरासीपण्डित मूसों वुर्नोफके मतानुसार ग्रीक Aria वा Ariana और पारसी ईरान संस्कृत आर्य शब्दका ही रूपान्तर है। अवस्तामें ऐर्यनवैजो अर्थात् आर्यावास संस्कृत आर्यदेश नामसे परिचित है। सुतरां पाश्चात्य ग्रीक ऐतिहासिकगणका मत मानते भी कहना पड़ा, किसी समय दक्षिणमें सिन्धुनदके पश्चिमकूलसे उत्तर कास्पीयसागर पर्यन्त आर्य

---

* H. H. Wilson's Ariana Antiqua, p 120.

पेशावरका मध्यवर्ती स्थान आर्जुनायन नामसे पूर्वकालमें प्रसिद्ध रहा। वहांके लोग नगरहार नामक पार्वत्य नगरका प्राचीन नाम 'अर्जुन' बताया करते हैं। उक्त आर्जुनायन प्रदेशके अतिरिक्त ककेसस पर्वतके निकट माकिदनवीर अलेकसन्दरके ऐतिहासिक आरियानने 'आड्रेप्सा' (Adrepsa) नामक किसी पार्वत्य भूभागकी बात भी कही है। यह आदर्शक शब्दका विकृत पाठ समझ पड़ता है। आजकल इस स्थानको अन्दराब कहते हैं। महाभाष्योक्त कालकवन महाभारत और पुराणादिमें कालतोयक नामसे आभीर तथा अपरान्तादि देशके साथ एवं वराहमिहिरकी बृहत्संहितामें भारतवर्षके नैऋत कोणपर रैवतक, सुराष्ट्रादिके साथ कालकजनपद लिखा है। पाश्चात्य भौगोलिक टलमीने कोलक (Kolaka) एवं आरियनने क्रोकल (Krokala) नामसे भारतके दक्षिण-पश्चिम प्रान्तमें कोई जनपद बताया है। कराची उपसागरके कूलमें कालकक्ष नामक एक जिला विद्यमान है। यही स्थान प्राचीन भारतीय पुराण-वर्णित कालक वा कालतोयक एवं प्राचीन पाश्चात्य भूगोल-वर्णित कोलक या क्रोकल मालूम देता है।

पारिपात्र खृष्टीय ७म शताब्दीय चीनपरिव्राजकको पो-ली-ये-तो-लो नामसे परिचित रहा। यह शैलमाला विन्ध्यके पश्चिम और उत्तरांशमें राजपूतानाके निकट पथर नामसे आजकल पुकारी जाती है। काश्मीरसे नेपालतक हिमालयकी अंश ही स्कन्दपुराणमें हिमवत्खण्ड नामसे अभिहित है। सुतरां महाभाष्यके मतसे आर्यावर्त्त उत्तरमें काकेसस पर्वतसे नेपालकी पश्चिम सीमा तथा दक्षिणमें सिन्धुप्रदेशके दक्षिणांश-स्थित कराची उपकूलसे विन्ध्य पर्वतकी उत्तर-पश्चिम सीमा पर्यन्त विस्तृत रहा। ऋक्संहिताके प्रमाणसे विसप्त नदी-प्रवाहित सप्त सिन्धुप्रदेश एवं सारस्वत तथा अनुगाङ्ग प्रदेशका जो परिचय उद्धृत हुआ, वह महाभाष्यके प्रमाणसे प्राचीन आर्यावर्त्तका वर्णन मालूम पड़ता है। इधर मनुसंहितामें आर्यावर्त्तकी सीमा इसप्रकार निर्धारित है,—

"आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्त्तं विदुर्बुधाः॥" (२।२२)

पूर्वसमुद्र पर्यन्त एवं पश्चिम भी समुद्र-पर्यन्त विस्तृत देशके अन्तराल प्रदेशमें (उत्तर-दक्षिण) गिरिके मध्यवर्ती स्थानको पण्डितोंने आर्यावर्त्त निर्देश किया है। मनु-भाष्यकार मेधातिथिने उक्त श्लोकके व्याख्यानमें लिखा है,—'आपूर्वसमुद्रादापश्चिमसमुद्राद्योऽस्मात्पर्वतो दिगन्तया। तयोरेव पूर्वश्लोकोऽनदिष्टयोर्गिर्योः पर्वतयोर्हिमवद्विन्ध्ययोर्यदन्तरं मध्यं स आर्यावर्त्तो देशो बुधैः शिष्टै रुच्यते।'

मेधातिथिकी तरह अमरसिंह और कुल्लूकभट्ट दोनोंने ही हिमालय तथा विन्ध्यके मध्यवर्ती स्थानको आर्यावर्त कहा है।

"आर्यावर्त्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहिमालयोः।' (अमर २।१।८)
'शरावत्यास्तु योऽवधेः।
देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य उदीच्यः पश्चिमोत्तरः।
प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्यात् मध्यदेशस्तु मध्यमः।' (अमर २।१।६-७)

प्राग् सहित दक्षिण देशको 'प्राग् दक्षिण', पश्चिम-सहित उत्तर देशको 'पश्चिमोत्तर' और अन्तके प्रतिगतको 'प्रत्यन्त' अर्थात् सीमान्तप्रदेश कहते हैं।

किन्तु पूर्वोद्धृत महाभाष्य और मूल मनुसंहिताका वचन पढ़नेसे आर्यावर्त्त इतना सङ्कीर्ण सीमाबद्ध मालूम नहीं पड़ता। मूल मनुसंहितामें लिखा है,

"हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि।
प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः॥" (२।२१)

उक्त मनुवचनके अनुसार उत्तरमें हिमालय, दक्षिणमें विन्ध्य, पूर्वमें विनशन और पश्चिममें प्रयाग चतुःसीमावच्छिन्न स्थान मध्यदेश होता है। सुतरां मेधातिथि, कुल्लूकभट्ट और अमरसिंहने हिमवत् और विन्ध्यके मध्य जिस स्थानको आर्यावर्त्त बताया, भगवान् मनुके मतसे वही मध्यदेश ठहरा है। मनुके मतसे ब्रह्मावर्त्त ब्रह्मर्षि देश और मध्यदेश आर्यावर्त्तके ही अन्तर्गत प्रधान स्थान है। इन कयी प्रधान भूभागोंके व्यतीत पूर्वमें समुद्र और पश्चिममें भी समुद्र पर्यन्त आर्यवास आर्यावर्त्तके अन्तर्गत पड़ता था। भूतत्त्वविदोंने आलोचनासे प्रमाण दिया, कि अति पूर्वकाल यूसिन युगमें सागरतरङ्ग हिमालयतट पर्यन्त पहुंचता था। वही स्वाभाविक नियमसे हिमाचल-

छड़ कोड़ सिंहल होपको पोर सरक गया। उस समय प्राकृतिक नियम तथा जलप्रवाहका परिवर्तन गतिसे पृथिवीके विभिन्न अंशमें जनपद और होप फिर बने। इसीके अनेक निम्नभागको समग्र उत्पत्ति होती रही। भूतत्त्वविदोंने यह भी प्रमाणित किया, कि प्लिओसिन और परवर्ती युगमें राजमहलके निकट पर्यन्त समुद्रतरङ्ग आया था। महाभारतका वनपर्व पढ़नेसे समझ पड़ता, कि युधिष्ठिरके तीर्थयात्रा काल कौशिकीतीर्थसे कुछ दूर पश्चात नदी गुप्त महासागर सङ्गम रहा। वर्तमान भागलपुरके कुमनो जिलेमें तार देवरके निकट कौशिकीका प्राचीन गर्भ देखनेमें आता है। खृष्टपूर्व तृतीय शताब्द ग्रीक राजदूत मेगस्थिनिसने पटनेसे १०१ मील दूर महासागर सङ्गमको बात कही है। इस प्रमाणसे समझ पड़ता, कि उत्तर राढ़के निकट पर्यन्त किसी किसी स्थानमें समुद्रतरङ्ग आता, तब इसमें सन्देह नहीं, कि उससे बहुत पहले वैदिक युगमें और भी सौ मील उत्तर समुद्र-तरङ्ग पहुंचता था। इसीप्रकार भूतत्त्वविदोंने यह भी प्रमाणित किया, कि भारतके पश्चिम-प्रान्त स्थित वर्तमान मरुस्थलादि सिन्धुप्रदेशतक आरावलीका अधिकांश समुद्र गर्भमें रहा। सुतरां मनुवर्णित आर्यावर्तको पूर्व और पश्चिम सीमा समुद्र ही ठहरती है।

स्मृतिमें देखते हैं—

"चातुर्वर्ण्यव्यवस्थानं यस्मिन् देशे न विद्यते।
तं म्लेच्छविषयं विद्यादार्यावर्त्तमतः परम्॥"

अर्थात् जिस देशमें चारो वर्णों के व्यवस्थित आश्रम धर्मको व्यवस्था नहीं, वही स्थान म्लेच्छदेश कहाता है। आर्यावर्त उससे भिन्न है। मनुसंहितामें निर्दिष्ट हुआ है—

"कृष्णसारस्तु चरति मृगो यत्र स्वभावतः।
स ज्ञेयो यज्ञियो देशो म्लेच्छदेशस्ततः परः॥" (२।२३)

अर्थात् जिस देशमें स्वभावतः कृष्णसार मृग घूमा करता, वही यज्ञिय देश ठहरता उसके भिन्न अपर स्थान म्लेच्छ देश होता है।

उक्त वचन बलसे आर्यावर्त यज्ञिय देश प्रमाणित है। इसका आभास मिलता, कि शुक्लयजुर्वेदीय शतपथब्राह्मणमें वैदिक काल भारतके पूर्वांश कितने ही स्थान पर्यन्त यज्ञिय देश कहाता था। शतपथ-ब्राह्मणमें इस बातपर एक गल्प लिखा है—'विदेघ माथवने मुखमें अग्निको रखा था। गोतम राहूगण नामक उनके एक पुरोहित रहे। गोतमने माथवको पुकारा, किन्तु उन्होंने मुखसे अग्नि निकल पड़नेके भयसे कोई उत्तर न दिया। पुरोहितने 'वीति होत्र' (५।२६।३) इत्यादि ऋङ्मन्त्र पढ़कर प्रथम बुलानेपर माथव कुछ न बोले। उन्होंने फिर 'उदग्ने' (८।४४।१०) इत्यादि ऋङ्मन्त्रसे सम्बोधन किया, किन्तु फिर भी कोई उत्तर न मिला। अन्तको 'तं त्वा घृतस्नवीमहे' (५।२६।२) इत्यादि पढ़नेपर अग्नि 'घृत' शब्द सुनते ही मुखसे बाहर निकले और जलने लगे थे। माथव अग्निको मुखमें रोक न सके। अग्नि माथवके मुखसे निकल पृथिवीपर आपतोर्ण हुये। उस समय विदेघमाथव सरस्वतीके तीर रहते थे। फिर अग्नि दहन करते करते पूर्वाभिमुख पृथिवीपर घूमने लगी। गोतम राहूगण और विदेघमाथव दोनोंने तत्पश्चात् अग्निका अनुगमन किया। वैश्वानरने सदा नीरा नदी दग्ध नहीं की थी। केवल उत्तर गिरिसे विनिर्गत सदानीरा नदीका परपार बच गया। इसीसे वह ग्रीष्मान्तमें भी शीतल रहती है। पूर्वकाल ब्राह्मण उस नदीके पार उतरते न थे। अब अनेक ब्राह्मण पूर्वदिक् रहते हैं। अग्नि द्वारा स्वादित न होनेसे वह स्थान अयोग्य और जल भिन्न है। अब ब्राह्मणोंके यज्ञानुष्ठान करनेसे वह योग्य बनी है। विदेघमाथवने पूछा—'हम कहां रहेंगे?' अग्निने कहा—'इस नदीका पूर्व प्रदेश तुम्हारी वासभूमि होगा।' उसी समयसे वह नदी कोशल और विदेहके मध्य अवस्थित है। वहांके लोग माथवसन्तान हैं।" (शतपथ १।४।१।१०—१७)

शतपथब्राह्मणसे अच्छी तरह समझ पड़ता, पूर्वकाल सदानीराके पश्चिम उपकूल अर्थात् कोशलराज्य पर्यन्त यज्ञीय देश लगता था। उसके बाद सदानीराका पूर्वतटस्थ प्रदेश अधिकार करनेपर आर्य जाति विदेघमाथवके नामानुसार वह स्थान विदेह

वा मिथिला कहाया। इसी प्रकार उनके गोतम-गोत्रीय पुरोहितसे यहां यज्ञकाण्ड चला। ब्राह्मण-युगमें मिथिला यज्ञिय देशके अन्तर्गत रहते भी मगध, अङ्ग और मिथिलासे पूर्व अवस्थित समस्त देश अयज्ञिय गिना जाता था। इसीसे ऐतरेय आरण्यकमें यह अयज्ञिय और निन्दित देश कहा गया। ब्राह्मण और आरण्यकमें मगध तथा अङ्ग पर्यन्त म्लेच्छ देश माना जाते भी उसके बहुत पीछे महाभारतके प्रचारकाल वह सकल स्थान आर्यावास एवं बहु आर्यतीर्थ-समाच्छन्न हुआ था। वनपर्व तीर्थयात्राके पर्वाध्यायसे आभास मिलता, कि उस समय उन सकल स्थानोंसे सुदूर दक्षिणमें अवस्थित वैतरणी नदीतीरस्थ कलिङ्ग ('वर्तमान उड़ीसा) यज्ञिय देश कहाता था,—

"एते कलिङ्गाः कौन्तेय यत्र वैतरणी नदी।
यत्राऽयजत धर्मोऽपि देवाञ्छरणमेत्य वै॥
ऋषिभिः समुपायुक्तं यज्ञियं गिरिशोभितम्।
उत्तरं तीरमेतद्धि सततं द्विजसेवितम्॥" (महाभारत वनपर्व ११४अ)

आजकल आर्यावर्त भूमि पश्चिम एवं उत्तरसे सिकुडी, दक्षिणमें प्रायः पूर्ववत् पडी और पूर्वपर बढी है। पञ्जाबके पश्चिमप्रान्त आजकल आर्यावर्तसे बाहर गिना जाता, क्योंकि उत्कल, राढ़, गौड, वङ्ग और प्राग्ज्योतिष (कामरूप) प्रदेश आर्यावर्तके अन्तर्गत पुण्यभूमि लगता है।

आर्यावर्तीय (सं॰ त्रि) आर्यावर्त-सम्बन्धीय, आर्यावर्तके मुताल्लिक्।

आर्वाक् (सं॰ अव्य॰) पश्चात्, अनन्तर, बाद, ताक्कुबमें, पीछे।

आर्श्य (वै॰ त्रि॰) कुरङ्ग-सम्बन्धीय, छल्लेदार सींग वाले आहूके मुताल्लिक्।

आर्ष (सं॰ त्रि॰) ऋषेरिदम्, अण्। १ ऋषिसम्बन्धी, पुराना। २ ऋषिकृत, ऋषियोंका बनाया हुआ। (पु॰) ३ ऋषि-सेवित वेद।

"आर्षं धर्मोपदेशञ्च वेदशास्त्राविरोधिना।
यस्तर्केणानुसन्धत्ते स धर्मं वेद नेतरः॥" (मनु १२।२०६)

संस्कारहीनत्वेऽपि ऋषिणा प्रयुक्तः। ४ व्याकरणोक्त अनुशासनको उल्लङ्घनकर ऋषियोंका कहा हुआ असाधु प्रयोग। (क्लो॰) ऋषीणां समूहः प्रवरगण-भेदः। ५ प्रवर ऋषि-समूह। ६ विवाहविशेष।

"यज्ञस्थायर्त्विजे दैव आदायार्षस्तु गोद्वयम्।" (याज्ञवल्क्य)

यज्ञस्थ ऋत्विक्से कन्याके विवाह होनेको दैव कहते हैं। वरके पक्षसे दो गो लेकर कन्या-व्याह देना आर्ष कहाता है।

"एकं गोमिथुनं द्वे वा वरादादाय धर्मतः।
कन्याप्रदानं विधिवदार्षो धर्मः स उच्यते॥" (मनु ३।२९)

अर्थात् वरपक्षसे धर्मतः एक गाय और एक बैल अथवा गोमिथुनद्वय ले विधानक्रमसे कन्याप्रदान आर्ष कहाता, जो धर्मजनक होता है। इस स्थलपर धर्म पद रहनेसे गोद्वयका ग्रहण शुल्कके मध्य परिगणित नहीं।

"धर्मतः धर्मार्थं यागादिसिद्धये कन्यायै वा दातुं न तु शुल्कबुद्ध्या।" (कुल्लूकभट्ट)

आर्षक्रम (सं॰ पु॰) आर्ष परिपाटी, ऋषियोंकी चाल।

आर्षधर्म (सं॰ पु॰) कर्मधा॰। १ मन्वादि-प्रोक्त धर्म, मनु आदि स्मृतिकारोंका कहा हुआ धर्म। २ आर्ष विवाह, पुरानी चालकी शादी। आर्ष देखो।

आर्षप्रयोग (सं॰ पु॰) ऋषिसम्बन्धि सन्धि, पुराना महावरा। वाक्यमें व्याकरणके नियमसे विरुद्ध पडनेवाला शब्द आर्षप्रयोग कहाता है। ऋषियोंने व्याकरणपर विशेष दृष्टि न रख अनेक स्थलमें उलट-पलट किया है। किन्तु उसे अशुद्ध मान नहीं सकते। छन्दमें भी व्याकरणका नियम चलना कठिन है। इसीसे जो शब्द योजना मनमानी रहती, वह आर्ष-प्रयोग बजती है। यह विषय संस्कृतसे ही सम्बन्ध रखता है।

आर्षभ (सं॰ त्रि॰) ऋषभस्य वृषस्येदम्, अण्। १ वृषसम्बन्धी, नर-गावके मुताल्लिक्। (क्लो॰) २ ऋषभ-देव-चरित।

आर्षभि (सं॰ पु॰) ऋषभस्यापत्यम्, इञ्। १ प्रथम तीर्थङ्कर् ऋषभके पुत्र। २ भारतवर्षके प्रथम चक्रवर्ती नृपति। ऋषभ देखो।

आलकसी (हिं॰ वि॰) अलस, सुस्त, काहिल।

आलक्ष्य (सं॰ क्ली॰) अलक्षण, मन्दभाग्य, पातक, वबाल, गुनाह।

आलक्षि (सं॰ वि॰) आलक्षयति, आ-लक्ष-इन्। ज्ञाता, जानकार, समझदार। (स्त्री॰) ङीप्। आलक्षी।

आलक्षित (सं॰ वि॰) आलक्ष-क्त-इट्। सम्यक् ज्ञात, चिह्न द्वारा प्रदर्शित, अच्छीतरह समझा हुआ, जो झलक पड़ा हो।

आलक्ष्य (सं॰ वि॰) आलक्ष्यते, आलक्ष-यत्। १ सम्यक् ज्ञेय, लक्षण द्वारा ज्ञातव्य, ज़ाहिर, आशकारा, झलकनेवाला। २ दुर्ज्ञेय, ब-मुश्किल नमूदार, जो ज़्यादा ज़ाहिर न हो। (अव्य॰) ल्यप्। ३ सम्यक् समझकर, देख-भालके साथ।

आलगर्द (सं॰ पु॰) अलगर्द एव, स्वार्थे अण्। जलसर्प, पानीमें रहनेवाला सांप।

आलजि (सं॰ वि॰) आ-लज-इन्। आभाषक, बोलनेवाला।

आलजिह्वा, अलिजिह्वा देखो।

आलथी पालथी (हिं॰ स्त्री॰) आसनभेद, एक बैठक। दाहने पैरकी एंडो बायीं और बायें पैरकी एंड़ी दाहनी जांघपर रखनेसे यह आसन जमता है।

आलटूषक (सं॰ पु॰) प्रतुद पक्षी विशेष, ठोंग मारनेवाली एक चिड़िया।

आलन (हिं॰ पु॰) १ पयाल, नाल, भूसा, बिचाली। यह मकान् बनानेके लिये मट्टीमें मिलाया जाता है। २ व्यञ्जनमें पडनेवाला पिष्टक, जो खमीर तरकारीमें पड़ता हो।

आलना (हिं॰ पु॰) पक्षिस्थान, आशयाना, घोंसला।

आलपाका, अल्पाका देखो।

आलपीन (हिं॰ स्त्री॰) शलाका, घुण्डीदार सूयी। यह शब्द पोर्तगीज़ 'आल्फिनेट'का अपभ्रंश है। इससे प्रायः काग़ज़को नत्थी करते हैं।

आलब्ध (सं॰ वि॰) आ-लभ-क्त। १ संस्पृष्ट, संयुक्त, स्पृष्ट, लगा या मिला हुआ। २ हिंसित, चोट खाये हुआ।

आलब्धि (सं॰ स्त्री॰) १ स्पर्श, छूत, लगाव। २ हिंसा, चोट, नुकसान्।

आलभन (सं॰ क्ली॰) आ-लभ ल्युट्। १ हिंसा, नुकसान्। २ स्पर्श, पकड़।

आलभनीय (सं॰ वि॰) आ-लभ-अनीयर्। १ स्पृश्य, पकड़ने क़ाबिल। २ हिंसनीय, नुकसान पहुंचाये जाने लायक़।

आलभ्य (सं॰ वि॰) आ-लभ-यत्। पोरदुपधात्। पा ३।१।९८। १ स्पृश्य, छूवा जाने क़ाबिल। २ हिंस्य, मारा जाने लायक़। जो नुक़सान् झेल सकता हो। (अव्य॰) ल्यप्। ३ स्पर्शपूर्वक, छूकर।

आलम (अ॰ पु॰) १ लोक, दुनिया। २ प्रजा, जन, खलक़, लोग। ३ आलोक, नक़ल, तमाशा। ४ काल, वेला, ज़माना। ५ अवस्था, हालत।

आलम कवि—एक प्रसिद्ध कवि। पहले यह सनाढ्य ब्राह्मण रहे। किन्तु किसी मुसलमान-रमणीके प्रणयमें पड़नेसे इन्हें इसलामको दीक्षा दी गयी। दिल्ली-सम्राट् औरङ्गजेबके पुत्र मुअज्जिम शाहके निकट आलम काम करते थे। इनकी कविता अति उत्कृष्ट समझी जाती है।

आलमगीर (अ॰ पु॰) १ देशपति, दुनियाको जीतनेवाला शख्स। २ बादशाह औरङ्गजेब। औरङ्गजेब देखो।

आलमगीर प्रथम, औरङ्गजेब देखो।

आलमगीर द्वितीय—दिल्लीके एक सम्राट्। इनका नाम आजिज़ुद्दीन् रहा। सम्राट् जहांदार शाहके औरस और अनप बाईके गर्भसे इन्होंने १६९८ ई॰को जन्म लिया था। १७५४ ई॰को २री जूनको वज़ीर इमादुलमुल्क ग़ाज़ी-उद्दीन् खांके सहारे यह सिंहासनपर बैठे। मुहम्मद शाहके लड़के अहमद क़ैद कर लिये गये थे। इन्होंने पांच वर्षसे भी कम राज्य चलाया। १७५९ ई॰को २९वीं नवम्बरको वज़ीर इमादुलमुल्क ग़ाज़ी उद्दीन् खांने इन्हें मार डाला था। सम्राट् हुमायूके रोज़ेके सामने आलमगीर गाड़े गये। इनके पुत्रका अलीगौहर (शाह आलम) और पौत्रका नाम मिर्ज़ा जवान्बख्त था।

आलम गैब (अ० पु०) परलोक, देख न पड़नेवाली दुनिया।

आलमआनी (अ० पु०) इहलोक, मौजूदा दुनिया।

आलम खियाल (अ० पु०) पैयाल लोक, भूतोंके रहनेकी दुनिया।

आलमडांगा—बंगाल प्रान्तके नदिया जिलेका एक गांव। यह पद्माकी नदीके तीर अवस्थित है। यहां चावलका व्यवसाय अधिक होता है।

आलमनगर, अलमनगर देखो।

आलमनगर—१ अवध प्रान्तके सीतापुर जिलेका एक नगर। आजकल इसे ठमसमगञ्ज भी कहते हैं। प्रायः आठ हजार लोगोंका वास है। २ अवध प्रान्तके शाहाबादका एक परगना। पौराणिक समय यह स्थान कश्यप राजाओंके अधिकारमें रहा। कान्य कुब्जका अधःपतन होनेपर निकुम्भगणने आकर इसपर अपना अधिकार जमाया था। अकबर बादशाहके राजत्वकाल यह विद्रोही हुआ किन्तु नवाब सदर जहां द्वारा ताड़ित किया गया। धन सम्पत्ति सयदोंके हाथ लगी थी। प्रथम आलमगीर औरङ्गजेब बादशाहके राजत्वकाल सैयदोंने आलमनगर नाम रखा। नवाब आसफ-उद्-दौलाके समयसे निकुम्भ फिर यहां रहने लगे थे। लोकसंख्या प्रायः अठारह हजार है। ३ बिहार प्रान्तके भागलपुर जिलेका एक ग्राम। यह कृष्णगञ्जसे सात मील दक्षिण-पश्चिम पड़ता है। पहले यहां चन्देल राजाओंका अधिकार रहा। स्थान स्थानमें अट्टालिकाओंका ध्वंसावशेष देखनेसे प्राचीन समृद्धि समझ पड़ती है। आजकल राजपूत और ब्राह्मण अधिक रहते हैं।

आलमपर्रे—मन्द्राज प्रान्तके चेङ्गलपट् जिलेका एक ग्राम। यह मन्द्राजसे और चेङ्गलपट् नगरके बीचोबीच समुद्रकूलपर अवस्थित है। १७५० ई०को मुजफ्फरजङ्गने यह स्थान फ्रान्सीसी सेनाके नायक डुप्लेको दे दिया था। अनेक बार यहां अंगरेजों और फ्रान्सीसियोंमें युद्ध हुआ। १७५८ ई०को इस ग्रामके निकट [illegible] रुका था। १७६० ई०को सर आयार कूटने इसे अधिकार किया। पहले यहां कस्तूरी बहुत मिलता था।

आलमपुर—१ मध्य भारतके इन्दोर राज्यका एक परगना। इसका प्रधान नगर आलमपुर ही है। प्रायः सत्रह हजार लोग रहते हैं। २ बम्बई प्रदेशके काठियावाड़का एक ग्राम।

आलमफ़ानी (अ० पु०) नश्वर जगत्, मिट जानेवाली दुनिया।

आलमबाला (अ० पु०) बैकुण्ठ, बिहिश्त, ऊपरकी दुनिया।

आलममस्ती (अ० पु०) इन्द्रिय-निरति, ऐयाशी, रङ्गरस।

आलमसिफ्ली (अ० पु०) मही, मेदिनी, जमीन्, जहान्।

आलमारी, अलमारी देखो।

आलम्पा—ब्रह्मदेशके मूरति विशेष। करैन और बसरे देखो।

आलम्ब (सं० त्रि०) १ नीचेकी ओर लटकनेवाला, जो नीचेको झुका हो। (पु०) २ टेक, सहारा लेनेकी चीज। ३ आश्रय, सहारा। ४ आधार, मसकन, जमाव। ५ अवलम्ब यानी अपनेको पकड़ो। ६ आलम्ब दारुक अमात्। ७ निबन्धन, फरमाबरदारी। ८ लम्ब, उमूद सीधे खड़ी लकीर।

आलम्बन (सं० क्ली०) आलम्ब्यते, आ-लबि कर्मणि ल्युट्। १ निबन्धन, अधीनता। २ आश्रय, सहारा। ३ आधार, बुनियाद। ४ कारण, सबब। ५ अलङ्कार शास्त्रके अनुसार उपादान कारणसे मनोवृत्तिका प्रकृत तथा आपाततः सम्बन्ध जोड़नेवाले सबबसे रिस्तका कुदरती और ऊपरी ताल्लुक्। "आलम्बनं नायकादिस्तमालम्ब्य रसोद्गमात्।" (साहित्यदर्पण) इस विशेषमें आलम्बन विशेष कहा है। शृङ्गार रसमें अनुरागकी परस्परविकाशिका स्त्री या पुरुष नायिकाको अवलम्बन करना पड़ता है। हास्यरसमें जो विकृत आकार, वाक्य, चेष्टा प्रभृति देख लोगोंको हंसी आ सकती, वही आलम्बन है। करुणरसमें शोचनीय व्यक्ति आलम्बन होता है। रौद्ररसमें अरि ही आलम्बन है। वीररसमें विजेतव्यादिको आलम्बन

कहते है। बीभत्सरसमें दुर्गन्ध, मांस, रक्त और मेद आलम्बन है। अद्भुतरसमें अलौकिक वस्तु आलम्बन होता है। शान्तरसमें अनित्यत्वादि द्वारा अशेष वस्तुका जो असारत्व रहता, वही आलम्बन बजता है। भयानक रसमें जिससे भय उपजता, वही आलम्बन आता है। ६ अनुष्ठान, अमल। निर्वाणप्राप्तिके लिये योगियोंद्वारा किये जानेवाले मानसिक साधनको आलम्बन कहते हैं। ७ स्तोत्रकी मूक आवृत्ति, दुवाका खमोश एयादा। ८ बौद्धमतानुसार—पञ्च ज्ञानेन्द्रिय सदृश द्रव्यके पांच गुण, पांचो हिसके मुताल्लिक् शेकी पाच सिफतें।

आलम्बा (सं० स्त्री०) विपाक्त पत्रयुक्त वृक्षविशेष, ज़हरीली पत्तियोंकी एक झाडी।

आलम्बायन (सं० पु०) आलम्ब इत्यन्तात् फञ्। उपदेष्टा विशेष, एक मुवल्लिम। यह आलम्बके युवापत्य रहे। (स्त्री०) ङीप्। आलम्बायनी।

आलम्बायनिपुत्र, आलम्बायन देखो।

आलम्बि (सं० पु०) आलम्बस्यापत्यम्, इञ्। वैशम्पायनके शिष्य और आलम्बके पुत्र। (स्त्री०) ङीप्। आलम्बी।

आलम्बित (सं० त्रि०) आ-लवि-क्त-इट्। १ धृत, गृहीत, पकडा हुआ। २ रक्षित, बचाया हुआ। ३ आश्रित, झुका या लटका हुआ।

आलम्बितबिन्दु (सं० पु०) आश्रित चिह्न, सहारेका नुकता। सेतुकी दोनो ओर जिस जगह जञ्जीर स्तम्भसे लगती, वह आलम्बित-बिन्दु बजती है।

आलम्बिन् (सं० त्रि०) आलम्बते, आ-लवि-णिनि। १ आश्रयी, सहारा पकडनेवाला। २ अधीन, मातहत। ३ आश्रय देनेवाला, जो टेक लगाता हो। ४ धारण करनेवाला, जा चढ़ाता हो।

आलम्ब्य (सं० अव्य०) १ आश्रय देकर, सहारा लगाके। २ हस्त द्वारा ग्रहणकर, हाथसे पकडके।

आलम्भ (सं० पु०) आ-लभ-घञ्-नुम्। १ संस्पर्श, आलिङ्गन, हमागोशी।

"स्त्रीणाञ्च प्रेक्षणालम्भमुपघात परस्य च।" (मनु २।१७९)

२ हिंसन, मारकाट।

"आलम्भपिञ्जविशरघातोन्मथकथा अपि।" (अमर)

आलभ्य (सं० त्रि०) आलभ्यते, आ-लभ-यत्-नुम्। आङो यि। पा ७।१।६५। हिंस्य, मारा जाने काबिल।

"आलम्भ्यो गौ।" (सिद्धान्तकौमुदी)

आलय (सं० पु०) आलीयतेऽस्मिन्, आ-ली आधारे अच्। १ गृह, हवेली, घर। इस अर्थसे यह शब्द प्राय: समासान्तमें आता है, जैसे—हिमालय, कार्यालय, औषधालय।

"गृहा: पुंसि च भूम्न्येव निकार्यनिलयालया:।" (अमर)

२ आधार, टेक। भावे अच्। ३ संश्लेष, बगलगीरी, अकवारी। (अव्य०) मर्यादार्थे अव्ययी०। ४ लय पर्यन्त, कयामतक। बौद्ध मतमें आत्माको आलय कहते हैं।

आलयविज्ञान (सं० क्ली०) आलयं लयपर्यन्तव्यापि-विज्ञानम्, कर्मधा०। बौद्धमत-सिद्ध अहमास्पद विज्ञान विशेष। विज्ञानसे अतिरिक्त वाह्यवस्तुको बौद्ध नही मानते।

आलायश (फा० स्त्री०) १ मालिन्य, मल, नजासत, आलूदगी, गन्दापन। २ पूय, दूय, पीप, मवाद।

आलर्क (सं० क्ली०) अलर्कस्येदम्, अण्। १ क्षिप्त कुक्कुर विष, पागल कुत्तेका जहर। (त्रि०) २ क्षिप्त-कुक्कुर-सम्बन्धीय, पागल कुत्तेके मुताल्लिक्।

आलवण्य (सं० क्ली०) न लवणम्, नञ्-तत्; अलवणस्य भाव:, ष्यञ्। लवणरस-भिन्नत्व, बेनमकी, बेलज्जती, फीकापन।

आलवाल (सं० क्ली०) अरं शीघ्रं वलते वर्धते तरुरनेन, पृषोदरादित्वात् घञ्; यद्वा आ समन्तात् लवं जललवं आलाति गृह्णाति, आलव-आ-ला-क। वृक्षमूलमें जलसेकके निमित्त खनित और मृत्तिका द्वारा निर्मित जलाधार, थाला।

"स्यादालवालमावालमावाप:।" (अमर)

आलविष (सं० पु०) आलमें विष रखनेवाला जीव, जहरीले काटेका जानवर। वृश्चिक, विश्वम्भर, राजीव, मत्स्य, उच्चिटिङ्ग और समुद्र-वृश्चिकके आलमें विष रहता है। (सुश्रुत)

आलविषा (सं॰ स्त्री॰) वच्छ साध्य लूतामेद, मुख्लकसी पञ्ची होनेवाली मकड़ीको बीमारी।

आलस (सं॰ त्रि॰) आलसति ईषद् व्याप्रियते, अच्। १ अलस काहिल, सुस्त, जो काम करना चाहता न हो। (हिं॰ पु॰) २ आलस्य, सुस्ती।

आलसायन (स॰ पु॰) आलस मुनि फक्। आलसका गुणापत्य काहिलका लौड़का बेटा।

आलसी (हिं॰ वि॰) अलस, सुस्त; काहिल।

आलस्य (सं॰ स्त्री॰) न लसति, अच् नञ्-तत्; अलस तस्य भावः, ष्यञ् । न वत्र पूर्वाद्युत्तरपदद्वन्द्व-सम्बन्धयुक्तस्यानन्तरेण । पा ५।१।१२१। १ विहित क्रिया-करणमें अनुत्साह, काहिली, सुस्ती। (त्रि॰) आल स्योऽस्त्यस्य, अर्श आदि अच्। २ आलस्ययुक्त, काहिल।
'लक्षणमलीनिव आलसः वीक्षणीयमलीमसम्।' (अमर)

आला (हिं॰ वि॰) १ आर्द्र, क्लिन्न, तर गीला।
"आला ई मन ना था अच्छा बात बिगुली जाती है।
बूझन चाहिता जाती नहीं न बूझ न बन जाती है।" (सम्मीत)
२ अपूर्य पूर्यमाणो, जलमें पोप देनेवाला। (पु॰) ३ भित्तिस्थ स्थान, ताक, मोखा, सूराख।
"दीवाल बीची आलीये।
धर चौथा धालीये। (लोकोक्ति)
४ आवाल, कुम्हारका आँवा। ५ अन्य देखो।
(अ॰ वि॰) ६ आली, लंबा, मौवल। (पु॰) ७ अस्त्र, हथियार।

आलाद (वै॰ त्रि॰) विषाक्त, जहर-बुझा। आलाक्ता या यच्छीर्षण्यो अस्य अपीलुव" (ऋक् ६।७५।१५) 'आलाक्ता आदिन लिप्ता।' (सायन)

आलाद्य (वै॰ त्रि॰) समुद्रको लहरोंमें रहनेवाला।

आलात (सं॰ स्त्री॰) अलातमेव, स्वार्थे अण्। अलात, अङ्गार, कोयला। २ पजावा, कुम्हारका आँवा।

आलातचक्र (स॰ स्त्री॰) लूकका चक्कर। किसी जलती चीजको घुमानेसे आगका चक्कर जो बंधता वही आलातचक्र कहता है।

आलान (सं॰ स्त्री॰) आ-लीयतेऽत्र, आ-ली आधारे ल्युट्। १ गजबन्धनस्तम्भ, हाथीके बांधनेका खूंटा। करणे ल्युट्। २ बन्धनरज्जु, बांधनेका रस्सा। ३ ग्रन्थि, गांठ। ४ रज्जु, रस्सा। भावे ल्युट्। ५ बन्धन, बांध, जकड़। (पु॰) ६ शिवके एक मन्त्री।
'आलानं जगतां दन्तवलक्षे रक्षोवने विलासम्।' (कैरवी)

आलानिक (स॰ त्रि॰) आलानं बन्धनं प्रयोजन-मस्येति, ठक्। विनयादिभ्यष्ठक्। पा ५।४।३४। १ आलान सम्बन्धीय, हाथी बांधनेके खूंटेका काम देनेवाला। (स्त्री॰) स्वार्थे ठक्। २ आलान, हाथीके बांधनेका खूंटा।
"सौद् न तत् पूर्वसवर्णमीशे आलानिकं स्थाणुमिव द्विपेन्द्रः।" (रघु १४।३८)

आलाप (सं॰ पु॰) आ-लप भावे घञ्। १ कथन, परस्परकथन, कलाम गुफतार, बोली। २ पूर्वकथित वा बीजमबिलसे प्रश्नका निर्देश, रज्जबिन्दुला व बल बल सुकाबिलेमें सवालका तदबीला। ३ प्रश्न सवाल।
"आलाप इव दूती।" (अज्ञात)
४ स्वरसाधनार्थ आ-आ गम इत्यादि। अनुलोम विलोम, गमक मूर्च्छना, तान, लय और मध्य स्वर आदिके प्रयोग रागादिको प्रकट करनेमे देखाना आलाप कहाता है। आलाप शब्दका अर्थ रागके साथ बोलना अर्थात् किसी रागको यथा-निर्दिष्ट स्वरादि द्वारा प्रतिपन्न करना है। इसमें तालके विभिन्न समावेशका प्रयोजन नहीं पड़ता। आलाप कण्ठ और बीणादि यन्त्र दोनोंमें देखाया जा सकता है। किन्तु शब्दसंयोगसे बनने कारण गान कण्ठ भिन्न यन्त्रमें नहीं उतरता।
"रागालापनमातनोति मधुरीकरणं वयम्।" (काव्येन्दु)

आलापक, आलापन देखो।

आलापचारी (स॰ पु॰) स्वरसाधन, तान बढ़ानेका काम।

आलापन (स॰ स्त्री॰) आ-लप्-णिच् ल्युट्। १ पर स्परकथन, सम्भिभाषण, बातचीत, बोलचाल। (त्रि॰) २ आलाप करानेवाला, जो बात कराता हो।

आलापना (हिं॰ क्रि॰) आलाप छोड़ना, तान लड़ाना, स्वर खींचकर गाना।

आलापनीय, आलाप्य देखो।

आलापवत् (स॰ त्रि॰) परस्पर कथन करनेवाला, जो आपसमें बातचीत करता हो। (पु॰) आलापवान्। (स्त्री॰) आलापवती।

आलापित (सं० त्रि०) १ परस्पर कथित, आपसमें कहा हुआ। २ स्वरसाधन-पूर्वक उच्चारित, गाया हुआ।

आलापिन् (सं० त्रि०) परस्पर कथन करनेवाला, जो आपसमें बातचीत करता हो। (पु०) आलापी।

आलापिनी (सं० स्त्री०) अलाबु-निर्मित मुरली, घीयेकी वंशी, मोहर। इसे प्रायः सपेरे बजाया करते हैं। सर्प इसका शब्द सुनकर मोहित हो जाता है।

आलापुर—युक्तप्रान्तके बदायूं जिलेका एक नगर। सैयदवंशीय सुलतान् अलाउद्दीन्‌के अनुसार इसका नाम आलापुर पड़ा है। यह स्थान बदायूं नगरसे ११ मील दक्षिणपूर्व अवस्थित है। सारस्वत ब्राह्मणोंका वास अधिक है। उनके कथनानुसार अला-उद्दीन्‌ने यह स्थान उन्हें दिया था।

आलाप्य (सं० त्रि०) आ-लप्यते, आ-लप्-ण्यत्। कथनीय, कहने लायक।

आलावाला (हिं० पु०) १ छल, कपट, टालमटोल। २ आरोप, धोका। ३ आलस्य, सुस्ती, काहिली।

"दिन खोया आलेबाले।
कातन बैठी दिया उजाले॥" (लोकोक्ति)

आलाबु (सं० स्त्री०) पूर्वपदः दीर्घः वा ऊङ्। अलाबु, कद्दू, लौकी।

आलाबू, आलाबु देखो।

आलारासी, आलारेसी देखो।

आलारेसी (हिं० स्त्री०) १ प्रमत्तता, अनवधानता, बेपरवायी। (वि०) २ प्रमत्त, अनवधान, बेपरवा।

आलावर्त (सं० क्ली०) आलं पर्याप्तं आवर्त्यते, आल-आ-वृत-णिच् कर्मणि अच्। वस्त्र-निर्मित व्यजन, कपड़ेका पङ्खा।

"आलावर्तं तु वस्त्रस्य (व्यजनम्)।" (हेम ३।३४५)

आलास्य (सं० पु०) आलं पर्याप्तं आस्यं मुखं यस्य, बहुव्री०। १ कुम्भीर, घड़ियाल, निहङ्ग, मगरमच्छ।

"नक्र कुम्भीर आलास्यः।" (हेम ३।४१५)

(क्ली०) आ सम्यक् लास्यम्, प्रादि समा०। २ सम्यक् नृत्य, खासा नाच।

आलि (सं० पु०) आ-अल पर्याप्तौ इन्। १ वृश्चिक, बिच्छू। २ भ्रमर, भौंरा। (स्त्री०) ३ सखी, वयस्या, सहेली। ४ आवली, कतार, सतर। ५ अल्पकाल स्थायी चिरस्थ जलका निवारक सेतु, बाध। ६ कूलक, नाला। ७ सन्तति, श्रेणी, खान्दान, जात।

'आलि. सखी च भ्रमरो. वृश्चिकः' (विश्व)

(त्रि०) ८ अनर्थ, बेफायदा, जो किसी मसरफका न हो। ९ शुद्धान्तःकरण, साफ-दिल, ईमानदार, सच्चा।

आलिखत् (सं० पु०) १ उल्लेखन, विदारण, खुराश, खोंच। २ राक्षसविशेष, किसी इसजादका नाम।

आलिख्य (सं० अव्य०) पाण्डुचित्र उतारते हुये, नकशा खींचकर।

आलिगी (वे० स्त्री०) सर्पविशेष, किसी नागनका नाम।

आलिगव्य (सं० वि०) अलिगोरपत्यम्, यञ्। गर्गादिभ्यो यञ्। पा ४।१।१०५। अलिगु मुनिसे उत्पन्न, अलिगुसे पैदा। (स्त्री०) यञन्तत्वात् ष्फः षित्वात् ङीष्। प्राचांष्फ तद्धितः। पा ४।१।१७। आलिगव्यायनी।

आलिङ्ग (सं० पु०) १ आलिङ्गन, हमागोशी, बगल-गीरी, अंकवारी। २ दुन्दुभि-विशेष, किसी किस्मका ढोल।

आलिङ्गन (सं० क्ली०) आ-लिगि ल्युट्। आश्लेषण, बगलगीरी, हमागोशी, अंकवारी, गल-बहियां। आलिङ्गन सात प्रकारका होता है,—१ आमोदालिङ्गन, २ मुदितालिङ्गन, ३ प्रेमालिङ्गन, ४ मदनालिङ्गन, ५ मानसालिङ्गन, ६ तृष्यालिङ्गन और ७ विनोदा-लिङ्गन।

आलिङ्गना (हिं० क्रि०) आलिङ्गन करना, बगल-गीर या हमकिनार होना, गले लगाना, गलबहियां डालना, चिमटना, लिपटना, आगोशमें लेना, कौली भरना।

आलिङ्गित (सं० त्रि०) आ-लिगि-कर्मणि क्त-इट्। १ आश्लिष्ट, बगलगीर, हमकिनार, गले लगा हुआ। (क्ली०) २ आलिङ्गन, बग़लगीरी, चिमट, लपट। (पु०) ३ तन्त्रसारोक्त विंशति अवधि विंशत् अक्षर पर्यन्त मन्त्र विशेष।

आलिङ्गितवत् (सं० त्रि०) आलिङ्गन करनेवाला, जो

आलीढ (सं० वि०) आ-लिह-क्त। १ आस्वादित, चाटा या खाया हुआ। २ चत, घीया हुआ। (क्ली०) ३ युद्धार्थ स्थिति विशेष, लड़ाईकी एक बैठक। दक्षिण चरण अग्रसर और वाम चरण पीछेको कुछ टेढ़ाकर बैठनेको आलीढ़ कहते हैं। यह स्थिति बाण मारने या गोली चलानेमें रहती है। ४ लेहन, चाट। ५ अशित, भोजन। (पु०) ६ पुरुषविशेष, किसी आदमीका नाम।

आलीढक (सं० क्ली०) आलीढ़ संज्ञायां कन्। वत्सका विहार, बछड़ेका खेल।

आलीदिमाग़ (अ० पु०) विशाल बुद्धि, बड़ी समझ।

आलीन (सं० वि०) आ-ली कर्तरि क्त ओदित्वात् तस्य न। १ आश्लिष्ट, पिगला या गला हुआ।

आलीनक (सं० क्ली०) आलीन संज्ञायां कन्। रङ्ग, रांगा। अन्य धातुके साथ संश्लिष्ट हो जानेसे रङ्ग को आलीनक कहते हैं।

आलीमर्तबा (अ० पु०) आलीक़दर देखो।

आलीशान् (अ० वि) १ उज्ज्वल, अतिशोभन, नुमायशी। २ उत्तम, प्रधान, उम्दा, बड़ा।

आलीहिम्मत (अ० वि०) आकाङ्क्षी, अभिलाषी, बलन्द-नज़र, आरज़ू या तमन्ना रखनेवाला, जो बहुत चाहता हो।

"आलीहिम्मत सदा मुफ़्लिस।" (लोकोक्ति)

आलीहिम्मती (अ० स्त्री०) १ महामनस्कता, मिज़ाजदारी। २ स्पृहा, आकाङ्क्षा, गुराख़-हौसलगी।

आलु (सं० पु०) १ पेचक, चुग़द, बूम, उल्लू, घुग्घू। २ ज़मींकन्द, सूरण। ३ कोविदार, भावनूस। (क्ली०) आ-लु-ड्। ४ भेलक, बेड़ा, धौंधड़ा। ५ मूल, जड़। (स्त्री०) आ-ला-डु। ६ गलन्तिका, मट्टीका छोटा घड़ा। इसके पेंदेमें छेद रहता, जिससे शिवलिङ्ग या तुलसी इत्यादिपर जल टपकता है। 'आलुर्गलन्तिकायां स्त्री क्लीबं मूले च भेलके।' (मेदिनी) आलु देखो।

आलुक (सं० क्ली०) आलु स्वार्थे कन्। १ कन्दविशेष, काष्ठालु, शङ्खालु, हस्त्यालु, पिण्डालु, मध्वालु और रक्तालु भेदसे यह बहुत प्रकारका होता है। काष्ठालु काष्ठसदृश कठिन, शङ्खालु श्वेततायुक्त, हस्त्यालु दीर्घ तथा महाशरीर, रक्तालु रक्तवर्ण, पिण्डालु गोल और मध्वालु मधु-जैसा मिष्ट रहता है। आलुक मल-मूत्र-निःसारक, रुच, दुर्जर, रक्त-पित्तघ्न, वात-कफघ्न, बल्य, हृष्य और स्तन्य-वर्धन है। (भावप्रकाश)

(पु०) २ कोविदार, भावनूस। ३ शेषनाग। ४ ज़मींकन्द।

'शेषे नागाधिपोऽनन्तो विष्टपाश्च आलुकः।' (हेम)

आलुकी (सं० स्त्री०) रक्तालुभेद, घुइयां। यह बलकारी, स्निग्ध, गुरु, हृदय-कफघ्न तथा विष्टम्भी होती और तेलमें तलकर खानेसे अत्यन्त रुचिकर निकलती है। (भावप्रकाश)

आलुञ्चन (सं० क्ली०) आ-लुचि-ल्युट्। उत्पाटन, नोच-खसोट, चीर-फाड़।

आलुञ्चित (सं० वि०) आ-लुचि क्त। उत्पाटित, नोचा-खसोटा, जो चीर या फाड़ डाला गया हो।

आलुण्ठन (सं० क्ली०) आ-लुटि-ल्युट्। बलहेतु अपहरण, लूट-पाट, छीना-छीनी।

आलुल (सं० वि०) आ-लुल-क। १ उन्मुक्त, चञ्चलीभूत, छूटा हुआ।

आलुलायित (सं० वि०) आ-लुल भृशादित्वात् क्यङ्-क्त। असंयत, हिलने-डुलनेवाला, जो रुका न हो।

आलू (हिं० पु०) आलु, कन्दशाकविशेष। (Solanum tuberosum) पहले भारतवर्षमें आलू न रहा, १७८२ ई०को विलायतसे आया था। महाराष्ट्र और मारवाड़ी इसे बटाटा कहते, जिसे अंगरेजी 'पोटेटो' (Potato) शब्दका अपभ्रंश समझते हैं।

वास्तवमें आलू दक्षिण-अमेरिकाका पौदा है। आज भी चिली प्रान्तमें आप ही आप उपजता है। लिमा और नव ग्रेनाडामें भी वन्य अवस्थापर मिला है। अमेरिकाके आविष्कारकाल यह चिलीसे नव ग्रेनाडातक बोया जाता था। किन्तु दक्षिण-अमेरिकाके पूर्व प्रान्त और मेक्सिकोमें इसे कोई जानते न रहा। १५३५ और १५८५ ई०के बीच युरोपीय, आलूको स्पेन ले गये थे। वहींसे इसकी खेती पोर्तुगाल, इटली, फ्रान्स, बेलजियम और जर्मनीमें फैल पड़ी। १५८६ ई०को सर वाल्टर

रालेने कारोलिनासे लाकर आयर्लैण्ड पहुंचाया था। पहले इङ्गलैण्ड, स्काटलैण्ड और फ्रान्सके लोग दुर्दशासे आलू बोते न रहे। इसके साथ उन्हें विषाक्त उत्पन्न होनेका भ्रम था। १७२८ ई०को स्काटलैण्ड-निवासी टमास प्रेण्टिस नामक किसी व्यक्तिने पहले-पहल आलू बोया। उसके बाद क्रम क्रम यह अफ्रीका, एशिया और अष्ट्रेलियामें चल निकला।

आजकल भारतवर्षमें सब जगह आलू बोते हैं। बङ्गालमें हुगली और बर्धमान जिला इसकी कृषिका प्रधान स्थान है। प्रायः जहां नदीका पानी सूखा वहां आलू बो दिया जाता है। इसे रेतीली जमीनमें यह बहुत उपजता है। कंकड़दार जमीन् ठीक नहीं पड़ती। सींचनेकी भी अधिक आवश्यकता रहती है। बीजके लिये प्रायः छोटा-छोटा आलू चुनकर निकालते और मचानपर फैलाकर छायामें सुखाते हैं। किन्तु सफेदी या कालेसे यह बिगड़ जाता और बोनेके योग्य नहीं रहता। एक ही खेतमें प्रति वर्ष लोग आलू लगाया करते हैं। किन्तु पानीको जड़ पकड़नेसे फसल सड़ जाती है। देशीको पहले और पहाड़ीको पीछे बोते हैं। खेतको अच्छी तरह जोत बाद ४० चौड़े अन्तर दो बड़ी और १० चौड़े अन्तर छोटे छोटी सींचनेकी नाली रखते हैं। वर्षाके बाद पड़ती है। फिर कुदालसे भूमिको भरके और आलू जमाते हैं। कोपल २।१ इंच बढ़ जानेसे पौदेको उखाड़ कर दूसरे स्थानमें सात-सात इंच दूर लगा देते हैं। देशी आलूमें कोपल शीघ्र आता किन्तु पहाड़ियामें देरसे निकलता है। लगनेसे किसान समयमें सींचना पड़ता है। पौदा छ-सात इंच बढ़नेपर सात या दस दिनके बाद पानी दिया जाता है। बीघे पीछे १० मन गोबर और दस मन खलीकी खाद डालते हैं। पौदा सूखनेसे आलू खोदते हैं। अधिक वृष्टि होनेसे अङ्कुरको बीमारी दीखती और फसल मारी पड़ती है। पत्ती टेढ़ी हो जानेसे भी पौदा सूखता है। आलूमें दीमक लगनेसे बड़ी हानि पहुंचती है।

आसाममें खासी पहाड़पर यह बहुत उपजता है। किन्तु कृषिकार्य सुचारुरूपसे न चलनेपर सात-आठ दिनमें आलू सड़ जाता है।

कुमायूंके नैनीताल, अलमोड़े, पावरी, लोहाघाट और समतल स्थानमें यह बहुत होता है। पहाड़ी आलू आकारमें बड़ा और स्वादमें अच्छा निकलता है। १८४३ ई०को मेजर वैलस मेन इसे कुमायूंमें लाये थे। बोनेके लिये आलू समय-समयपर विलायतसे मंगाया जाता है। पौष माघ फसल होती है। एक पौदेमें कोई पाव भर आलू बैठता है।

पञ्जाबमें बड़े बड़े नगरोंके पास इसकी कृषि होती है। मध्यप्रदेशका आलू कुछ बिगड़ गया है। प्राय अक्तोबरमें बोते और फरवरी या मार्चमें खोदते हैं।

बम्बई प्रान्तमें पूना, अहमदनगर, सतारा, अहमदाबाद और खेड़ा इसके बोनेकी खास जगह है। महाबालेश्वरका आलू सुप्रसिद्ध है। खानदेशका पाचोरा स्थान आलूको अच्छो है।

मन्द्राज प्रान्तके नीलगिरि पर्वतपर अच्छा आलू उपजता है। किन्तु प्रतिवर्ष एक ही खेतमें कृषि करनेसे आलूमें अब रोग लग गया है।

ब्रह्मदेशमें आलू कम होता है। जितनी ही चेष्टा लगाते भी लोग इसकी कृषिसे लाभ उठा न सके।

औषधमें आलूको सुखाकर वात्स्य मिसरीकी जगह व्यवहार करते हैं। प्रायः समग्र भारतवासी इसे खाते हैं। किन्तु लोग इसे अजीर्ण और वात बढ़ानेवाला समझते हैं। व्रतके दिन अन्न न खानेसे प्रायः आलू व्यवहृत होता है। पहले हिन्दू इसे अखाद्य मानते थे। किन्तु अब यह प्रथम श्रेणीके खाद्यमें परिगणित है।

(स्त्री०) २ जलमयपात्र पानी पीनेका छोटा बरतन।

आलूक (सं० क्ली०) आ लुनाति, आ-लू क्विप् स्वार्थे कन्। १ एकवालुक, एक सुगन्धद्रव्य चीज। २ आलुक किसी त्रिकाकी गठीली जड़।

आलूका सालन (हिं० पु०) आलूक्वाथ, आलूका झोर।

आलूचा (फा० पु०) वृक्षविशेष, किसी किस्मका

बेर। पीले रङ्गका आलूचा युरोप, सिलिशिया, और आरमेनियामें तथा काकेसस पर्वतसे उत्तर एवं हिमालयपर गढ़वालसे काश्मीरतक वन्यस्थानपर मिलता है। अलमोड़ेके समीप जो वृक्ष लगता, उसमें गहरे हरे और नारङ्गी जैसे रङ्गका फल उतरता है। समतल भूमिकी अपेक्षा पर्वत-प्रान्त ही इसकी वृद्धिके लिये उपयुक्त है। आलूचेका गोंद कुछ-कुछ अरबी-जैसा होता है। गुठलीके तेलसे रोशनी करते हैं। किन्तु वह किसी कामका नहीं होता और शीघ्र दुर्गन्ध देने लगता है।

लकड़ी कुछ-कुछ लाल तथा भूरी और दानेदार निकलती, किन्तु थाड़े होमें मुड़ और फट जाती है। काश्मीरमें इसके सन्दूक तैयार होते हैं।

फल पकनेपर बड़ा, पीला, मीठा और रसीला होता है। लोग प्रसन्नतापूर्वक खाया करते हैं। अफ़ग़ानस्थानसे सूखा फल बहुत आता और आलू-बोखारेके नामसे बाज़ारमें बिकता है। नर्म आगसे पकाकर लोग इसे बहुत खाते हैं। आलूबोखारेकी चटनी स्वादु और लाभदायक होती है। यह कुछ-कुछ खट्टा, ठण्डा और तर रहता है। खाली पेट खानेसे पाचक और रेचक निकलता है। पित्त बढ़ने और दाह उठने पर यह बहुत उपकार करता है। मूल सङ्कोचक होता है।

आलूदा (फ़ा॰ वि॰) दूषित, गन्दा, बिगड़ा हुआ।

आलून (सं॰ वि॰) आ-लु-क्त तस्य न। १ ईषत् छिन्न, कुछ कुछ कटा हुआ। २ सम्यक् छिन्न, खूब कटा हुआ।

आलू-बालू (हिं॰ पु॰) फेनिल विशेष, किसी किस्मका आलूचा। आलूचा देखो।

आलूबुख़ारा (फ़ा॰ पु॰) शुष्क फेनिल विशेष, बुखारे प्रान्तका सूखा आलूचा। आलूचा देखो।

आलूशफताल (हिं॰ पु॰) क्रीड़ा विशेष, एक खेल। तीन लड़के मिलकर यह खेल करते हैं। एक लड़का दूसरेकी पीठपर चढ़ अपने हाथसे उसकी आंखें मूंद देता और तीसरा उंगली देखाकर घोड़े बने लड़केसे उनकी संख्या पूछता है। संख्या ठीक बता देनेसे उसका दांव उतरता और वह उंगली देखानेवाले लड़केपर चढ़ता है।

आलेख (सं॰ पु॰) आ-लिख-घञ्। १ सम्यक् लेखन, खासी लिखावट। आधारे घञ्। २ लेखन-पत्र, लिखनेका काग़ज़।

आलेखन (सं॰ क्ली॰) आ-लिख भावे ल्युट्। १ सम्यक् लिखन, खासी लिखावट। (पु॰) २ आचार्य, जन्मपत्रादि प्रभृति लिखनेवाला। करणे ल्युट्। ३ लिखन-साधन पत्र प्रभृति, लिखनेका काग़ज़ वग़ैरह। (वि॰) ४ लेखनकर्ता, लिखनेवाला। आलिखन प्रयोग भी होता है।

आलेखनी (सं॰ स्त्री॰) आघर्षणा, वर्तिका, बालोंका कलम, शीशे या सुरमेका कलम।

आलेख्य (सं॰ क्ली॰) आ लिख्यते, आ-लिख कर्मणि ण्यत्। १ पटस्थ चित्र, तसवीर, नक्शा। 'चित्रमालेख्यम्।' (हेम ३१८३) २ लेख्य देवादिका प्रतिबिम्ब। (वि॰) ३ लेखनीय, लिखने या उतारने काबिल। आधारे ण्यत्। ४ चित्रसम्बन्धीय, तसवीरके मुताल्लिक।

आलेख्यलेखा (सं॰ स्त्री॰) चित्रविद्या, रङ्गसाज़ी, नक्काशी।

आलेख्यशेष (सं॰ वि॰) आलेख्यं चित्रमेव शेषो यस्य, बहुव्री॰। मृत, मरा हुआ। प्रतिबिम्बमात्र चित्रपर शेष रहनेसे मृत व्यक्तिको आलेख्य-शेष कहते हैं।

"बाष्पायमाणो बलिमन्निकेतमालेख्यशेषस्य पितुर्विवेश।"

(रघु १४।१५)

आलेप (सं॰ पु॰) १ आ-लिप-घञ्। उपलेप, तिला, मरहम, तेल। शरीरमें उत्पन्न होनेवाले शोथव्रणपर जो यथोक्त औषध चुपड़ा जाता, वह आलेप कहाता है। २ बौद्धशास्त्रके मतानुसार—अंश, खण्ड, टुकड़ा।

आलेपन (सं॰ क्ली॰) कर्मणि ल्युट्। आलेप देखो।

आलेय (सं॰ क्ली॰) पद्मकाष्ठ, एक खुशबूदार लकड़ी।

आलेया (सं॰ स्त्री॰) १ रागिणी विशेष। २ श्मशान या पङ्कयुक्त स्थानसे उत्थित वाष्प विशेष, मरघट या दलदलकी हवा। पश्चिमके लोग इसे भूत समझते हैं। यह वायुकी अपेक्षा हलकी होती है।

आलोहायन (सं० त्रि०) अलोहे भवः, फक्। अलोहभव, लोहेसे न निकलनेवाला।

आलूक (सं० क्ली०) आलुक, आलूबोखारा।

आल्हा (हिं० पु०) १ छन्दोविशेष, एक बहर। इसमें ३१ मात्रा लगती हैं। १६ मात्रापर विराम पड़ता है। जैसे—राम समुन्दरकी मथि डारो चौदह रतन लीन्ह निकसाय। आल्हा निरधिनीको महिचारी घर घर गर लीन्ह बंधवाय।

२ एक विख्यात वीर। पृथ्वीराजके समय यह महोबेमें विद्यमान रहे। इनकी माताका देवला, पिताका दस्सराज, भ्राताका उदयचन्द्र (ऊदल) और पुत्रका नाम ईंदल रहा। सुना, कि आल्हाने देवीका अर्चन बहुत किया था। भगवतीने एक दिन प्रसन्न हो वरदान दिया,—तुम अजर-अमर रहो और कृपाण खींचते ही जगत्‌को नाश करोगे। महोबेमें यह परमाल नृपतिकी सेनाके नायक रहे। बावन युद्ध करते भी आल्हाने कभी कृपाण न खींचा। क्योंकि उससे देवीके वचनानुसार जगत् नाश होनेका डर था। लोग इन्हें बनाफर जातिके ठाकुर बताते हैं। कहते, आज भी आल्हा कजरी वनमें रहते हैं। इनकी माता देवलाके वीरत्वका वर्णन इस प्रकार सुनते हैं,—

दस्सराज किसी वनमें आखेट मारने गये थे। उन्होंने दो जङ्गली भैंसे लड़ते देखे। कितनी ही चेष्टा करते भी वह उन्हें लड़नेसे छोड़ा न सके। अन्तको एक स्त्री आ पहुंची थी। उसने हाथसे भैंसोंको पकड़ अलग-अलग कर दिया। दस्सराज स्त्रीकी सुन्दरता और वीरता देख मोह गये थे। अन्तको घर ला उससे विवाह किया। उसी स्त्रीका नाम देवला था।

आल्हा और ऊदल दोनो भाई बड़े वीर रहे। इन्होंने कयी बार पृथ्वीराजका मुंह मोड़ दिया था।

आव (हिं० पु०) आयुः, हयात, जिन्दगी।

आव-आदर (हिं० पु०) आदर-सत्कार, ख़ातिर-तवाज़ा, मान-पान।

आवक (सं० त्रि०) अवतीति, अव रक्षणे ण्वुल्। रक्षक, मुहाफिज़, बचानेवाला।

आवज (हिं० पु०) प्राचीन वाद्य विशेष, एक पुराना बाजा। यह ताशे-जैसा होता और चमारोंमें ख़ूब चलता है।

आवझ, आवज देखो।

आवटना (हिं० पु०) आवर्तन, अदल-बदल, चल-फिर, धूमधाम। (क्रि०) २ औटना, आगपर चढ़ा गाढ़ा करना।

आवट्ज (सं० पु०) १ उत्तम अश्व, बढ़िया घोड़ा। २ पारसिक अश्व, अरबी घोड़ा।

आवट्य (सं० पु०) अवटस्य ऋषिविशेषस्य गोत्रापत्यम्, गर्गादि० यञ्। अवट ऋषिका अपत्य।

आवट्या (सं० स्त्री०) आवट्य-चाप्। आवट्याच। पा ४।१।७५। आवट्यकी स्त्री।

आवत् (वै० स्त्री०) सामीप्य, पड़ोस।

आवन (हिं० पु०) आगमन, आमद, अवायी।

आवनि (हिं० स्त्री०) आवन देखो।

आवनेय (सं० पु०) अवन्या अपत्यम्, ढक्। स्त्रीभ्यो ढक्। पा ४।१।१२०। अवनीसुत, मङ्गलग्रह। कहते, पूर्वकाल शिव दाक्षायणीके वियोगमें तपस्या करते थे। उसी समय ललाटसे एक बिन्दु घर्म गिरा और उससे लोहिताङ्ग एक कुमार उत्पन्न हुआ। पृथिवीको दर्शनसे स्नेह लगा था। उसने कुमारका पालन-पोषण किया। इसीसे मङ्गल ग्रहको माहेय, आवनेय आदि नामसे पुकारते हैं।

आवन्त (सं० पु०) अवन्तेरयं राजा, अवन्ती-अण्। अवन्ती देशके अधिप चन्द्रवंशीय नृपति-विशेष। कुन्तीके किसी रण-विशारद-पुत्रका नाम धृष्ट रहा। धृष्टके आवन्त, दशार्ह और विषहर नामक तीन वीर पुत्र हुये थे। (हरिवंश ३६ अ०)

आवन्तिक (सं० त्रि०) अवन्ति देश-जात, उज्जैनके मुतालिक।

आवन्त्य (सं० त्रि०) अवन्तिषु भवः तस्या राजा वा, ञ्यङ्। १ अवन्तिदेशभव, उज्जैनका पैदा। २ अवन्ति देशका राजा, उज्जैनका मालिक। ३ व्रात्य ब्राह्मणकी सवर्ण स्त्रीसे उत्पन्न एक जाति।

"व्रात्यात्तु जायते विप्रात् पापात्मा भूर्जकण्टकः।
आवन्त्यवाटधानौ च पुष्पधः शैख एव च॥" (मनु १०।२१)

मास ब्राह्मणको सवर्ण स्त्रीसे उत्पन्न सन्तानका नाम मूर्द्धावसिक्त होता है। किन्तु देश विशेषमें उसीको आवत्त, बाटधान और पुष्पध भी कहते हैं। आम देखो।

आवपन (सं॰ क्ली॰) ओप्यते आप्यते वा आधारम्, आ-वप आधारे ल्युट्। १ पात्र, सर्प, चमड़। "कोशो वालव्यर्द्धम्।" (सिद्धान्तकौमुदी) भावे ल्युट्। २ भूमिमें बीजादिका निधान, बोना। अन्तर्भूतण्यर्थे ल्युट। ३ केशादि मर्दसुण्डन, बाल वगैरह सबका मुड़ा डालना। (त्रि॰) करणे ल्युट्। ४ वपनसाधन, बीजोंमें लगनेवाला।

आवपनिष्किरा (सं॰ स्त्री॰) आवपनिष्किर इत्युच्यते यस्यां क्रियायाम् मयूरव्यंस॰ समा॰। बीजवपनादि क्रिया बीज बोने वगैरहका काम।

आवपनी (वै॰ स्त्री॰) आवपन-ङीप्। पात्र सर्प,चमड़।

आवपन्तिक (वै त्रि॰) विकीर्ण, विक्षिप्त, फैलाया या डाला जानेवाला।

आव-भगत, आव-आदर देखो।

आव-भाव, आव-आदर देखो।

आवय (सं॰ पु॰) आ-अव अच् बीभावः। १ आग मन आमद, अवायी। कर्तरि अच्। २ आगमनकर्ता, आनेवाला। ३ देशविशेष, एक मुल्क। ४ जल, आब, पानी। (वै॰ स्त्री॰) ५ धैर्य, प्रसन्नता, शान्तशिष्टी।

आवया (सं॰ स्त्री॰) जल, आब पानी।

आवयाज् (वै॰ त्रि॰) अवयाज, यज्ञानुष्ठान द्वारा प्रायश्चित्त करनेवाला।

आवरक (सं॰ क्ली॰) आवृणोति अनेन, आ-वृ-करणे अप् तत स्वार्थे कन्। १ आच्छादन वस्त्रादि,ढांकनेका कपड़ा वगैरह। (त्रि॰) २ आच्छादक, ढांकनेवाला।

आवरण (सं॰ क्ली॰) आव्रियते देह चैतन्यं वा अनेन, आ वृ करणे ल्युट्। १ चर्मपक्ष, ढाल। २ वैदान्त मत सिद्ध चैतन्यका आवरक अज्ञान। आवरणशक्ति देखो। ३ आच्छादन सामान्य ढांकनेकी कोई चीज। ४ प्राचीरादि, चहारदीवारी वगैरह। ५ वेष्टन, बेढ़ा। भावे ल्युट्। ६ आवृति, लपेट।

आवरण-पत्र (सं॰ क्ली॰) आच्छादनपत्र लपेटका कागज।

आवरणशक्ति (सं॰ स्त्री॰) आवरणे शक्तिः, ७-तत्, आवृणोति, आ-वृ कर्तरि ल्युट् आवरण शक्तिः कर्मधा॰ वा॰। वैदान्त मतसिद्ध अज्ञान-शक्ति, आत्मा या चैतन्यको छिपानेवाली ताकत। वैदान्तमतमें जैसे अल्प होते भी मेघ अनुयोजन विस्तृत सूर्यमण्डलको दर्शकोंके नयनपथसे अन्तर्भूत करता, वैसे ही तुच्छ अज्ञान अपरिमित असंसारी आत्माको बुद्धि विपर्ययसे छिपा रखता है। इस शक्तिसे आवृत व्यक्तिको तथा अभिमान आता और ममतादि अवस्थामें रज्जु देखनेसे सर्प समझनेकी तरह वह अपनेको कर्ता, भोक्ता, सुखी और दुःखी माना करता है।

आवरसमक (सं॰ क्ली) अवरं समानम् एकदेशो समा॰ निपातनात् ह्रस्व। शौण्डकादम् इत्य। प॰ ६।२।१० १ अवरसम वर्षका आद्यकाल। तत देय ऋणम् ऋणम्। २ वर्षके आद्य समय दत्त ऋण। (त्रि॰) ३ आगामी वर्ष दिया जानेवाला।

आवर्जित (सं॰ त्रि॰) आ वृज॰ णिच् क्त। दत्त, न्यस्त, निक्षिप्त आनत, संयमित, दिया, छोड़ा, झुकाया या बहाया हुआ।

आवर्ज्य (सं॰ अव्य॰) तिर्यक, तिरछे तौरपर।

आवर्त (सं॰ पु॰) आ वृत भावे घञ्। १ घूर्णाय मान जल, गिर्दाब, भंवर। "कल्पान्तवाताऽऽवर्त इव।" (रघु) २ रोमसंस्थान विशेष, बालकी भंवरी। जितने ही मनुष्योंके बाल घेरदार होते हैं। अश्वका रोमावर्त शुभाशुभ फल-सूचक है। यह कामसे प्रकारका होता है। बीस प्रकारका शुभ और छियत्तर प्रकारका आवर्त अशुभ है। उत्तर पीठ अपाङ्ग पक्षमिसे यह शुभावह और अन्य सर्वकाम फलप्रद ठहरता है। ललाटमें दो तीन या चार आवत आनेसे अश्व उत्तम निकलता है। ललाटके ऊर्ध्व आनुपूर्विक तीन आवर्तका नाम त्रिकुटी पड़ता जिससे स्वामीका सर्वार्थ सधता है। शिरके केशान्तमध्य स्थलपर आवर्त उठनेसे अश्वके स्वामीका जय होता है। रन्ध्रावन्धके समीप निपातमें लगनेवाला देवमणि शुभप्रद है। कर्णमूल, बाहु केशान्त और गण्डका आवर्त पूजित होता है। जिस अश्वके वक्षःपर चार आवर्त पड़ता

और कण्ठमें एक देखायी देता, वह धन्य तथा सर्वकामद रहता है। रन्ध्रका स्वामीको ईप्सित अर्थप्रद और उपरन्ध्रका आवर्त अतिपूजित है। शुभदेशका आवर्त शङ्ख, चक्र, गदा, वज्र, शुक्ति और पद्म जैसा निकलनेसे अत्यन्त शुभ कहाता है। किन्तु दूसरा आवर्त अति निन्दित, स्वामीको क्लेशावह और धन तथा प्राणका अपहारक है। नासिकापुटके मध्य प्रोथ प्रदेशपर उठनेवाला आवर्त स्वामीको नाश करता है। नासिकाके छिद्रसे ऊर्ध्वका आवर्त क्लेशकारक है। अश्वके गण्डका आवर्त दुःखद होनेसे स्वामीको मार डालता है। चक्षुःसे नीचे अश्रुपातके समुद्दिष्ट प्रदेशपर पड़नेवाला आवर्त स्वामीके कुलको नाश करता है। अपाङ्गसे दो अङ्गुल शङ्खप्रदेशका आवर्त स्वामीके लिये विनाशक है। भ्रूप्रदेशसे समुद्भूत आवर्त पूजित नहीं, वह सुहृत्का वियोग लाता और स्वामीके अर्थका अवसादक होता है। मन्या, ग्रीवा और शिरःका आवर्त कुत्सित है। कक्षका आवर्त भी संग्राममें स्वामीको शीघ्र मार डालता है। वाम-दक्षिण भागसे चिबुकके समीपस्थ हनुःका आवर्त दारुण है। अधरोष्ठके नीचे चिबुकके प्रसिद्धक तथा कर्णका आवर्त स्वामीको पापका भागी बनाता है। कण्ठ और निगालके मध्य गलका आवर्त स्कन्धकी सन्धिमें होनेसे पाप है। जङ्घासे नीचे कूर्च ग्रन्थिपर आनेवाला आवर्त संग्राममें स्वामीका जीवन ले लेता है। कूर्चसे अष्ट अङ्गुल ऊर्ध्व पार्श्वकी कलापर आवर्त पड़नेसे स्वामीका प्राण शराघातसे जाता है। अश्वके ककुदका आवर्त स्वामीको नाश करता है। ककुद पुरोभागके समीप बांहका आवर्त स्वामीको सुत समेत मार डालता है। कीकस आवर्त दारुण और रणमें स्वामीका घातक होता है। क्रोड, आसन, हृदय और जानुका आवर्त भी स्वामीका नाशक है। पार्श्वपर आवर्त रखनेवाला अश्व स्वामीको वैसे ही क्षय करता, जैसे रवि नीहाराम्बुको सुखा देता है। कूर्चके अधः प्रदेश कुष्ठिक जङ्घा और जानुपर पड़नेवाला आवर्त अधन्य होता है। नाभि, मुष्क, त्रिक और पुच्छमूलका आवर्त भी धन्य नहीं। कुक्षिका आवर्त व्याधि बढ़ाता है। पायु और सीवनिके मध्यका आवर्त अधन्य है। स्फिक्पिण्ड और स्रुक्कमें वाजिके जो आवर्त आता, वह लिङ्गावर्त कहाता और स्वामीका सर्वार्थ मिटाता है। अपर आवर्तका नाम शतपदी, मुकुल, सङ्घात, पादुक, अर्धपादुक, शुक्ति और अवलीढ़ पड़ता और वाजिके देहमें आनेसे शुभाशुभ बताता है। शतपदी-जैसा शतपदी, जातीमुकुल जैसा मुकुल, भ्रमितकेश-जैसा सङ्घात, शुक्तिसंस्थानका शुक्ति, वत्सके अवलीढ़क-जैसा अवलीढ, पादुकाकार पादुक और अर्धपादुका-जैसा अर्धपादुक कहाता है। मतिमान् भिषक्को वालके विशेष संस्थानसे विचक्षणोंके प्रोक्त शास्त्रमार्गानुसार आवर्तका निर्देश करना चाहिये। तपोधनोंने वाजिलक्षण समझकर आवर्तको रोमज बताया है। जहां शुभ और अशुभ दो आवर्त आता, वहां एक भी फलप्रद नहीं होता। काकुटी आवर्त खराब है। श्रीवृक्ष, रोचमान, अङ्गदी, और सुपर्णी राज्य तथा रत्नप्रद होता है। अश्वके प्रपाणमें मारुत, ललाटमें हुताशन, उरःका अश्विद्वय, मूर्धाका चन्द्रसूर्य, रन्ध्रका स्कन्दविशाख और उपरन्ध्रका आवर्त हर तथा हरिकी तरह पूजित है। किन्तु इनमें एकके भी न रहनेसे सब आवर्त अशुभ ठहरता है। (जयदत्त)

३ राजावर्त नामक मणि, लाजवर्द। ४ मेघके अधिप विशेष। 'आवर्तो मेघनायकः।' (शब्दार्थचिन्तामणि) ५ माक्षिक धातु, सोनामाखी। ६ सोम। ७ आवर्त नामक मर्मस्थान विशेष, भौंहोंके ऊपरका गड्ढा। ८ वैकल्यकार मर्मद्वय। यह दोनो भौंहोंके ऊपर रहता है। णिच् भावे अच्। ९ पुनः-पुनश्चालन, चक्कर, गर्दिश, घुमाव। १० परिघट्टन, घोंटायी। ११ धातुका द्रावण, गलायी। १२ चिन्ता, फ़िक्र। बारम्बार चित्त चलनेसे चिन्ताको आवर्त कहते हैं। आवर्त्यते समन्तात् अनेककोटिषु, आ-वृत-णिच् कर्मणि अच्। १३ बहुविषयक संशय, बहुत सी बातोंका शक। १४ स्त्री जातिकी योनि। शङ्खकी नाभि जैसी होनेसे स्त्री-योनि आवर्त कहाती और उसके तृतीय आवर्तमें गर्भशय्या रहती है। स्त्रीदेहके मध्यस्थित आवर्तकाकार नाड़ी सन्निवेश विशेषका नाम भी आवर्त है। (सुश्रुत)

आवलदाभी—एक प्रसिद्ध डाकू। इसके नामानुसार मन्द्राज प्रान्तके कड़प्पा ज़िलेमें एक ग्राम स्थापित है। आवलदाभीके डाकेका हाल दक्षिणापथसे वनास नदी तीर पर्यन्त सकल स्थानमें सुन पड़ता है।

आवलि, आवली देखो।

आवलित (सं० त्रि०) आ-वल चलने क्त-इट्। १ ईषच्चलित, कुछ सरका हुआ। २ सम्यक् चलित, जो ख़ूब बढ़ा हो।

आवली (सं० स्त्री०) आ-वल-इन्, कृदिकारान्ताद्वा ङीष्। १ श्रेणी, क़तार। २ एक जातीय वस्तुद्वारा कृत पंक्ति। 'वीथ्यालिरावलो पंक्ति।' (अमर) ३ परम्परा, पुरानी चाल। ४ विधि विशेष, एक क़ायदा। इससे चेत्रोत्पन्न शस्यका अनुमान बंधता है। एक विस्वेमें जितने सेर माल उतरता और उसका अर्द्ध जो आधा आता, उतने ही मन बीघे पीछे बैठता है।

आवलोकन्द (सं० पु०) मालाकन्द।

आवल्य (सं० क्ली०) अवलस्य भावः, अवल-ष्यञ्। दुर्बलता, लाग़री, कमज़ोरी।

आवशीर (सं० पु०) जनपद विशेष। महावीर कर्णने मगध, कर्कखण्ड प्रभृति जनपद जीत इस स्थानको अधिकार किया था। (महाभारत वनप० २५२ अ०)

आवश्य (सं० क्ली०) अनन्यगतित्व, नियतत्व, आवश्यकत्व, वजूब, फ़र्ज़।

आवश्यक (सं० क्ली०) अवश्यम्भावः, मनोज्ञादित्वात् वुञ्। १ अनन्यगतित्व, वजूब, फ़र्ज़। (त्रि०) २ नियत, वाजिब, ज़रूरी।

आवश्यकता (सं० स्त्री०) अवश्यम्भाविता, ज़रूरत।

आवश्यकीय (सं० त्रि०) आवश्यक, ज़रूरी।

आवसति (सं० स्त्री०) वसत्यत्र गृहे वसतिः रात्रिः, आ सम्यक् वसतिः, प्रादि-समा०। निशीथ, अर्धरात्र, सोनेका समय आधीरात, आरामका वक़्त।

आवसथ (सं० पु०) आ वसत्यत्र, आ-वस-अथच्। उपसर्गे वसेः। उण् ३।११४। १ गृह, हवेली। 'गृहमावसथ-श्रया।' (उणादिको०) २ विश्रामस्थान, आरामगाह। ३ ग्राम, गांव। ४ व्रतविशेष। ५ आर्याछन्दोरचित कोषविशेष। ६ होमस्थान।

आवसथिक (सं० त्रि०) आवसथे गृहे वसति, ठञ्। आवसथात् ठञ्। पा ४।४।७४। १ गृहस्थ, ख़ानानशीन्। २ गृहमें होमाग्नि रखनेवाला। (स्त्री०) आवसथिकी।

आवसथ्य (सं० पु०) आवसथस्यायम्, ञ्य। १ गृह-सम्बन्धीय लौकिक अग्नि, घरमें रहनेवाली पाक आग। (क्ली०) २ विश्राम-स्थान, आरामगाह, चेलों और साधुवोंके रहनेकी जगह। ३ गृहमें होमाग्निकी प्रतिष्ठा। (त्रि०) ४ गृहस्थ, घरके मुताल्लिक़।

आवसान (सं० त्रि०) अवसानमभिजनोऽस्य, अण्। अभिजनश्च। पा ४।३।९०। ग्रामकी सीमापर वास करनेवाला, जो गावकी हदपर रहता हो। (स्त्री०) ङीप्। आवसानी।

आवसानिक (सं० त्रि०) अवसाने अन्ते भवम्, ठञ्। शेषकाल भव, आख़री वक़्त होनेवाला। (स्त्री०) ङीप्। आवसानिकी।

आवसायिन् (वै० त्रि०) १ जीविकाके पीछे दौड़नेवाला, जो रोज़गारके पीछे लगा हो। (पु०) आवसायी।

आवसित (क्ली०) आ-अव-सो-क्त, इकारोऽन्तादेशः। द्यतिस्यतिमास्थामितिकिति। पा ७।४।४०। १ पक्वधान्य, पक्का अनाज। २ निर्तुषीकृत धान्य, साफ़ किया हुआ अनाज। (त्रि०) ३ निर्णीत, ठहराया हुआ। ४ समाप्त, जो ख़तम् हो। ५ निष्तुषीकृत, साफ़ किया हुआ, जिसके भूसी निकाल डाली जाये। ५ पक्व, पक्का।

आवस्थिक (सं० त्रि०) अवस्थायां भवम्, ठञ्। कालकृत, अवस्था-भव, समय सम्भव, वक़्तके मुवाफ़िक़, दुरुस्त। (स्त्री०) आवस्थिकी।

आवह (सं० पु०) आवहति, आ-वह-अच्। १ सप्त-स्कन्धयुक्त वायुका प्रथम स्कन्ध, भूवायु, ज़मीनकी हवा। आवह, प्रवह, विवह, परावह, संवह, उद्वह और परिवह वायुका स्कन्ध है। (हरिवंश) आवह भूर्लोक और स्वर्लोकके बीच रहता है। २ अग्निकी सातमें एक जिह्वा। (त्रि०) आवहति प्रापयति उद्देश्यस्थानम्। ३ प्रापक, ले जानेवाला। ४ उत्पादक, निकालने या पैदा करनेवाला।

आवहत् (सं० त्रि०) आनयन करनेवाला, जो लाता या पाता हो।

आवहन (स॰ स्त्री॰) आगमन, पैठी, रसायी।

आवहमान (सं॰ त्रि॰) आ-वह शानच्। क्रमागत भारादिको उठा लेने या पहुंचा देनेवाला।

आवा (हिं॰ पु॰) कुम्भकारका आपाक, कुम्हारका पजावा। "आवा पेट कुम्हारका जरत जीवकी जला जीको मीच है।" (लोकोक्ति)

आवाँ (हिं॰ पु॰) १ आवाहन, पुकार बुलावा। अति तप्त एवं रक्तवर्ण लोहको कूटने-पीटनेके लिये अग्र कर्मकारका बोलाया जाना आवाँ है। २ आवा।

आवागमन (स॰ स्त्री॰) आगमन एवं गमन, आमद रफ्त, आना-जाना। जन्ममरणको भी आवागमन कहते हैं। क्योंकि जन्म लेनेसे जीव इहलोक आता और मरण होनेसे परलोक जाता है।

आवागवन (हिं॰) आवागमन देखो।

आवागौन (हिं॰) आवागमन देखो।

आवाज़ (फा॰ स्त्री॰) १ शब्द, सदा। २ आह्वान पुकार। ३ चीत्कार, चीख। ४ स्वर, तान। ५ कोलाहल शोर। ६ ख्याति, शोहरत।

आवाज़ कयी तरहकी होती है, खरखरी (मोटी), बुलन्द (ऊंची) धीमी (नीची) बंधी (एक जैसी), भारी (बड़ी) महीन (बारीक) और मीठी (अच्छी लगनेवाली)।

आवाज़ आना (हिं॰ क्रि॰) कर्णगोचर होना, सुन पड़ना।

आवाज़ उठाना (हिं॰ क्रि॰) ऊंचे शब्दसे बोलना, चिल्लाना।

आवाज़ ऊंची करना, आवाज़ उठाना देखो।

आवाज़ करना (हिं॰ क्रि॰) १ आह्वान करना पुकारना। २ शब्द निकालना, बोल सुनाना।

आवाज़का कड़ी चीज़में चलना (हिं॰ पु॰) घनमें शब्दका वेग, मुंजमिद शैमें सदाकी रफ्तार।

आवाज़का घूमना (हिं॰ पु॰) शब्दका आवर्तन, सदाकी कजी।

आवाज़का टप्पा (हिं॰ पु॰) शब्दका गोचर, सदाकी पहुंच।

आवाज़का पतली चीज़में चलना (हिं॰ पु॰) द्रव वस्तुमें शब्दका वेग, रकीक़में सदाकी रफ्तार।

आवाज़का पता, आवाज़ का टप्पा देखो।

आवाज़का मेल मिलना (हिं॰ पु॰) शब्दका परस्पर पहड़ सदाका मुक़ाबिला।

आवाज़का लौटना (हिं॰ पु॰) प्रतिशब्द, बाज़गश्त गूंज।

आवाज़का हवासी चीज़में चलना (हिं॰ पु॰) वायुमें शब्दका वेग, बादमें सदाकी रफ्तार।

आवाज़की धमक (हिं॰ स्त्री॰) शब्दकी पराकाष्ठा, सदाकी तुन्दी।

आवाज़की चाल (हिं॰ स्त्री॰) शब्दवेग, सदाकी रफ्तार।

आवाज़दिहन्द (फा॰ पु॰) शब्द सुनानेवाला जो सदा लगाता हो।

आवाज़ देना (हिं॰ क्रि॰) १ आह्वान करना, पुकारना। २ शब्द करना सदा निकालना।

आवाज़ निकालना (हिं॰ क्रि॰) शब्द करना, बोलना।

आवाज़पर कान लगाना, ध्यान करना, सुनना।

आवाज़पै लगना (हिं॰ क्रि॰) आह्वानका उत्तर देना या आज्ञा मानना।

आवाज़ बैठना (हिं॰ क्रि॰) शब्दक्षय होना सदाका भारी पड़ना।

आवाज़ भरराना (हिं॰ क्रि॰) शब्द कर्कश एवं रुक्ष निकलना, सदा भारी और कड़ी पड़ना।

आवाज़में आवाज़ मिलाना (हिं॰ क्रि॰) एकतानसे गान करना, मिलके गाना।

आवाज़ लहर (हिं॰ स्त्री॰) शब्दका तरङ्ग सदाकी मौज।

आवाज़ा (फा॰ पु॰) कोलाहल, शोर। बोल-ठठोलि (बोलीठोली) को आवाज़ा तवाज़ा कहते हैं।

आवाज़ा कसना (हिं॰ क्रि॰) बोल-ठठोलि करना ताना मारना। इसी अर्थमें 'आवाज़ा फेंकना' और 'आवाज़ा मारना' क्रिया भी आती है।

आवाज़ाही (हिं॰) आवागमन देखो।

आवात् (सं० त्रि०) वहन करते हुआ, जो वह रहा हो। (पु०) आवान्। (स्त्री०) आवाती, आवान्ती।

आवादानी, आबादानी देखो।

आवाधा (हिं० स्त्री०) आ सम्यक् बाधा। १ दुःख, पीड़ा, दर्द, तकलीफ़। २ भूमिखण्ड, त्रिकोणके आधारका विच्छेद, मुसल्लसके क़ायदेका टुकड़ा।

आवाप (सं० पु०) आ-वप आधारे घञ्। १ आलवाल, थाला। 'स्यादालवालमावाप।' (अमर) २ धान्यादि रखनेका पात्र विशेष, बर्तन। भावे घञ्। ३ सकल दिक् वपन, चारो ओरकी बौनी। ४ धान्यादिका स्थापन, अनाज वगैरहकी रखायी। ५ शत्रुचिन्ता, दुश्मन्की फ़िक्र। ६ परराज्यचिन्ता, दूसरेकी रियासतका ख़्याल। ७ प्रधान होम। "प्राक्स्विष्टिकृतेरावाप.।" (गोभिल) ८ आक्षेप, फेंकफाक। कर्मणि घञ्। ९ वलय, चूड़ी। १० निम्नोन्नत भूमि, नीची ऊंची ज़मीन्। ११ कल्क, दवाका मसाला। १२ मिश्रण, मिलावट। १३ पानीय द्रव्यविशेष, किसी क़िस्मका शर्बत। (त्रि०) १४ आवपनीय, प्रक्षेपणीय, फेलाया या चलाया जानेवाला।

आवापक (सं० पु०) आ उप्यते, आ-वप कर्मणि घञ् संज्ञायां कन्। प्रकोष्ठाभरण वलयादि, सोनेकी चूड़ी वग़ैरह। ण्वुल्। २ आवपनकर्ता, अच्छीतरह बोनेवाला।

आवापन (सं० क्ली०) आ-वप-णिच् करणे ल्युट्। १ सूत्रयन्त्र, तांतका चरखा। २ सूत्रसम्पुटीकरणका कोश, धागा लपेटनेका ढांचा। भावे ल्युट्। ३ केशादिका सम्यक् मुण्डन, बाल वग़ैरहकी ख़ासी मुंडायी।

आवापिक (सं० क्ली०) आवापाय साधुः, ठक्। अधिक, निवेशित, ज़ियादा, शामिल।

आवारगी (फ़ा० स्त्री०) १ परिभ्रमण, घूमफिर। २ स्वेच्छाचार, बदमाशी।

आवारा (फ़ा० वि०) १ परिभ्रमणशील, भटकते फिरनेवाला। २ भ्रष्टचरित, बेहया, बदमाश।

आवारा करना (हिं० क्रि०) स्वेच्छाचारी बनाना, बदमाशी सिखाना, ख़राबीमें डालना।

आवारागर्द, आवारा देखो।

आवारागर्दी, आवारगी देखो।

आवारा फिरना (हिं० क्रि०) परिभ्रमण करना, कूंचागर्दी करना, बेमतलब घूमना।

आवारा होना (हिं० क्रि०) परिभ्रमणशील बनना, भटकते फिरना, बेहयायी लादना।

आवारि (सं० क्ली०) आ-व्रियते आच्छाद्यते, आ-वृ बाहुलकात् इन्। १ हट्टगृह, बाज़ारू मकान्। (त्रि०) आ सम्यक् वारि यत्र, बहुव्री०। २ सम्यक् जलयुक्त पानीसे ख़ूब भरा हुआ।

आवाल (सं० क्ली०) आवाल्यते सञ्चार्यते जलमनेन, आ-वल-णिच् करणे अच। १ आलवाल, पानी टिकनेको पेड़की चारो ओर मट्टीका घेरा। भावे घञ्। २ सञ्चार, चलाव। (अव्य०) मर्यादार्थे अव्ययी०। ३ आलक पर्यन्त, लड़केतक।

आवाल्य (सं० अव्य०) बाल्यात् आ, पर्यन्तार्थे अव्ययी०। बाल्यावस्था पर्यन्त, लड़कपनतक।

आवास (सं० पु०) आ सम्यक् वसत्यत्र, आ-वस आधारे घञ्। १ वासस्थान, गृहादि, मकान्, घर। भावे घञ्। २ सम्यक्-वास, बूदबाश, रहाइश।

आवासी (हिं० स्त्री०) समय-समयपर खानेके लिये तोड़ा जानेवाली कच्चे अनाजकी बाल।

आवाहन (सं० क्ली०) आ-वह-णिच्-ल्युट्। निकट आनेके लिये देवताका आह्वान, निमन्त्रण, पुकार, बुलावा।

आवाहनी (सं० स्त्री०) आवाह्यतेऽनया, आ-वह-णिच् करणे ल्युट् ङीप् वा। देवताके आह्वानार्थ मुद्रा विशेष। दोनो हाथ अञ्जलिबद्धकर दोनो अनामिकाके मूलपर्वपर दोनो अङ्गुष्ठ लगानेसे आवाहनी मुद्रा बनती है।

आवि (सं० पु०) पक्षी, चिड़िया।

आविक (सं० क्ली०) अविना तल्लोम्ना निर्मितम्, ठक्। १ कम्बल, गुदमा, लोयी। (त्रि०) २ मेषसम्बन्धी, भेड़के मुताल्लिक़। ३ ऊर्णामय, पशमी, ऊनी।

आविकक्षीर (सं० क्ली०) मेषीदुग्ध, भेड़का दूध। यह स्वादु, अम्लपाक, स्निग्धोष्ण, गुरु, पित्तकफोल्वण एवं तृष्णा होता और हिक्का, श्वास तथा अनिलको मारता है। (वाग्भटटीकाकार चौरपाणि) आविकक्षीर

है। सुतरां सत् वस्तुका तिरोभाव वा आविर्भाव नहीं होता। फिर भी किसी अवस्थाभेदको ही आविर्भाव और तिरोभाव कहते हैं। २ मनुष्यादि रूप बना अवतार रूपसे देवताकी उत्पत्ति।

आविर्भूत (सं० त्रि०) आविस्-भू कर्तरि क्त। १ प्रकटित, जाहिर। २ अभिव्यक्त, पैदा।

आविल (सं० त्रि०) आविलति दृष्टिं वारयति, आ-विल स्तृतौ क। १ कलुष, अपरिष्कृत, गन्दा, मैला।

'कलुषोऽच्छ आविलः।' (अमर)
"दिग्वारदमदाविल।" (कुमार २।४४)

(क्ली०) २ काबिल-देशीय फलविशेष, सेव।

आविलकन्द (सं० पु०) मालाकन्द, किसी किस्मकी जड़।

आविलमत्स्य (सं० पु०) मत्स्यविशेष, एक मछली। यह शुभ्र तथा स्थूल होता और पद्म ताम्रवर्ण रहता है। आविलमत्स्य अतिरुच्य, मधुर, बलद, वीर्य-पुष्टि-वर्धन और गुणाढ्य है। (राजनिघण्टु)

आविला (सं० स्त्री०) १ मत्स्य, मछली। २ चाङ्गेरी, चौपतिया, अमलोनिया।

आविद्दच (सं० पु०) मेषशृङ्गी, मेढासींगी।

आविशत् (सं० त्रि०) उपस्थित होनेवाला, जो दाखिल हो।

आविष्करण (सं० क्ली०) आ-विस-कृ भावे ल्युट् णत्वम्। १ प्रकाश, ज़ुहूर, देखाव। "अदया गुणेषु दोषाविष्करणम्।" (सिद्धान्तकौमुदी) करणे ल्युट्। २ प्रकाशसाधन।

आविष्कर्ता, आविष्कर्तृ देखो।

आविष्कर्तृ (सं० त्रि०) आविस्-कृ-तृच्। प्रकाशक, ज़ुहूरमें लानेवाला, जो ईजाद करता हो।

आविष्कार (सं० पु०) आविस्-कृ-घञ्। आविष्करण देखो।

आविष्कारक, आविष्कर्तृ देखो।

आविष्कृत (सं० त्रि०) आविस्-कृ कर्मणि क्त। प्रकाशित, ज़ाहिर, जो ईजाद किया या ढूंढा गया हो।

आविष्क्रिया (सं० स्त्री०) आविष्करण देखो।

आविष्ट (सं० त्रि०) आ-विश-क्त। भूतादिग्रस्त, शैतान् वगैरहके फन्देमें फंसा हुआ।

आविष्ट्य (वै० त्रि०) प्रकाशित, ज़ाहिर, जिसे देख सकें।

आविस् (सं० अव्य०) आ-अव-इसि। 'आङ्युपाद्दवतेरव्याङ् पूर्वादिसि आ-अव-इसि। (उज्ज्वलदत्त) प्रकाश्य, प्रस्फुटत्व, खुले तौरपर आंखके सामने। कृ, भू और अस् धातुके साथ इसकी प्रतिसंज्ञा होती है।

आविस्तराम् (सं० अव्य०) आविस् तरप्-आम्। अतिशय प्रकाश, खूब खुले तौरपर।

आवी (सं० स्त्री०) अविरेव, स्वार्थे अण् ङीप्। १ प्रसववेदना, जापेका दर्द, व्यांतकी तकलीफ़। २ रजस्वला, जो औरत कपड़ोंसे हो। ३ गर्भवती, जिस औरतके पेटमें बच्चा रहे। ४ प्रसवलिङ्गका मूत्रकफप्रसेकादि, जापेसे पेशाब वगैरहका बहाव।

आवीत (सं० त्रि०) आ-व्ये-क्त। १ सकलप्रकार ग्रथित, सब तरहसे गूंथा हुआ। २ उत्क्षेपणपूर्वक धृत, उठाकर लगाया या लटकाया हुआ। (क्ली०) ३ सम्यक् ग्रन्थन, खासी गूंथगांठ। ४ उत्क्षेपणपूर्वक धारण, लटकाव। (पु०) ५ दक्षिण स्कन्धपर धारण किया जानेवाला यज्ञोपवीत।

आवीतिन् (सं० पु०) आवीतमस्त्यस्य, इनि। अत इनि-ठनौ। पा ५।२।११५' दक्षिण स्कन्धके ऊपर यज्ञोपवीत रखनेवाला ब्राह्मण।

"उद्धृते दक्षिणे पाणावुपवीत्युच्यते द्विजः।
सव्ये प्राचीन आवीती निवीती कण्ठसज्जने॥" (मनु २।६०)

आवीती, आवीतिन् देखो।

आवुक (सं० पु०) अवति रक्षति पालयति वा, अव रक्षपालनयोः-उण्-कन्। जनक, पिता, बाप। 'अथावुकः जनकः।' (अमर) यह शब्द नाट्योक्तिमें चलता है।

आवृत् (वै० स्त्री०) आ-वृत सम्पदादित्वात् क्विप्। १ आवरण, लपेट। "नास्य वाम्र विदुष आवृतम्।" (ऋक् ५।४४।१) 'आवृत आवरण धारणम्।' (सायण) २ आवर्तन, फेर। ३ पुनःपुनश्चालन, बार बारकी गर्दिश। 'सूर्यस्या-वृतमन्वावर्ते।" (शुक्लयजुर्वेद २।२६) 'आवृतमावर्तनम्।' (महीधर) ४ बारम्बार एक जातीय क्रियाकरण, बार-बार एक ही-जैसे कामका करना। ५ परिपाटी, रिवाज। ६ अनुक्रम, चाला। ७ तूष्णीम्भाव, खमोशी। ८ जात-कर्मादि संस्कार। (त्रि०) कर्तरि अच्। ९ आवर्त-मान, घूम पड़नेवाला।

आवेशन (सं० क्ली०) आ विशन्ति यत्र, आ-विश आधारे लुयट्। १ शिल्पशाला, कारखाना। 'आवेशनं शिल्पशाला।' (अमर) भूतादि बाधा, शैतान्‌का साया। ३ सूर्य एवं चन्द्रका परिधि, आफताब और चांदका चक्कर। ४ क्रोधादि, गुस्सा। आधारे लुयट्। ५ प्रवेश सम्पादन-व्यापार, रसायी,पैठ। ६ मन्त्रसे भूतको बुला शिरःमें सन्निवेशन,शैतान्‌को सरपर चढा देनेका काम।

आवेशनमन्त्र (सं० पु०) मन्त्रविशेष, एक जादू। आवेशनमन्त्र पढनेसे दूसरेके शरीरपर भूत चढ जाता है।

आवेशिक (सं० पु०) आवेशो-गृहे भवं तत्र आगतः वा, ठञ्। १ अतिथि, मेहमान्। (क्ली०) २ प्रवेश, पहुंच। ३ आतिथ्य, मेहमांदारी। (त्रि०) असाधारण, खास। ५ स्वभावज, पैदायशी।

आवेशित (सं० त्रि०) आ-विश-णिच्-क्त-इट्, णिच् लोपः। निवेशित, आवेशयुक्त, मनोयोगयुक्त, पहुंचा हुआ, जो दाखिल हो।

आवेष्ट (सं० पु०) परिवेष्टन, संवलन, घेर, अहाता।

आवेष्टक (सं० पु०) आविष्टयति, आ-विष्ट-णिच्-ण्वुल्। आवरणकारक प्राचीरादि, वेष्टक, दीवार, खन्दक, अहाता।

आवेष्टन (सं० क्ली०) आ-वेष्ट-भावे लुयट्। १ आवरण, लपेट। करणे लुयट्। २ आवरणसाधन प्राचीरादि, चारदीवारी। ३ प्रावार, कोष, लिफाफा, वस्ता, बुकचा, बंधना।

आवेष्टित (सं० त्रि०) आवरणयुक्त, घिरा हुआ, जो लिपटा या बंधा हो।

आव्य (वै० त्रि०) अवेर्मेषस्य विकारः, यञ्। १ मेषसम्बन्धीय, भेड़के मुताल्लिक। २ और्ण, पश्मी, ऊनी।

आव्याधिन् (वै० त्रि०) आ-व्यध-णिनि। आघात वा आक्रमण करते हुये, जख्म पहुंचाने या हमला मारनेवाला। (पु०) आव्याधी।

आव्याधिनी (वै० स्त्री०) आव्याधिन्-ङीप्। १ पीडादायक स्त्री। २ तस्करश्रेणी, रहजनोंकी जमात। "या सेना अभीत्वरीराव्याधिनीरुगणा उत।" (शुक्लयजुर्वेद ११।७७) 'आव्याधिनो या समन्तात्विध्यन्ति ताः सर्वतोऽभिताडयन्त्य।' (महीधर)

आव्युष (वै० अव्य०) उषः पर्यन्त, सवेरेतक।

आव्रश्चन (वै० क्ली०) ईषद्व्रश्चनं छेदनम्, प्रादि-समा०। १ ईषच्छेदन, थोड़ी काट-छांट। आधारे ल्युट्। २ छेद्य वृक्षप्रदेश, दरख्तका काटा जानेवाला हिस्सा। यह यूपादि बनानेके लिये वृक्षसे काटा जाता है।

आव्रस्क (वै० पु०) आ-व्रश्च-वञ्; चस्य कत्वम्, शस्य सत्वम्। यजौ कु विरश्चनौ। पा ७.३।५२। १ ईषच्छेदन, थोडी काटछांट। २ यूपादि बनानेके लिये काटा जानेवाला वृक्षका स्थानविशेष, दरख्तकी शाख।

आव्रीडक (सं० पु०) आव्रीडानां निर्लज्जानां विषयो देशः, वुञ्। निर्लज्जदेश, बेशर्म मुल्क।

आश (सं० पु०) अश भोजने घञ्। १ भोजन, खाना। कर्मण्युपपदमिति अण्, उप० समा०। २ भोजन करनेवाला, जो खाता हो। इस अर्थमें आश शब्द प्रायः समासान्तमें आता है। यथा,—हुताश, आश्रयाश, मांसाश, पन्नाश, हविष्याश इत्यादि।

(हिं० स्त्री०) २ आशा, उम्मेद।

आशंसन (सं० क्ली०) १ उदीक्षण, प्रतीक्षण, इन्तिजार, शौक। २ वर्णन, कहावत।

आशंसा (सं० स्त्री०) आ-शन्स्-अङ्-टाप्। या स शार्ग भूतवच। पा ३।३।१३२। आशंसा वचनेलिङ्। पा ३।३।१३४। १ अप्राप्त वस्तुकी प्राप्तिके लिये इच्छा, आरजू, उम्मेदवारी। २ भाषा, वर्णना, बोली, कैफियत।

आशसित (सं० त्रि०) आ-शन्स्-क्त-इट्। १ कथित, इसरार किया हुआ। २ इच्छा-विषयीभूत, मुतरस्सिद, ख्वाहिश-किया हुआ। (क्ली०) भावे क्त। ३ मनोरथ, ख्वाहिश, आसरा, भरोसा।

आशंसितृ (सं० त्रि०) आशंसति, आ-शन्स्-तृच्। १ आशंसायुक्त, मुन्तजिर, उम्मेदवार, उम्मेद रखनेवाला। २ कथन करनेवाला, जो इसरार करता या चाहता हो। (पु०) आशंसिता। (स्त्री०) ङीप्। आशंसित्री। 'आशंसुराय क्षितिः।' (अमर)

आशंसिन् (सं० त्रि०) आ-शन्स्-णिनि। आशंसाकारी, मुन्तजिर, उम्मेद रखनेवाला। २ ज्ञापक, निवेदक; बोलने, कहने या इजहार करनेवाला।

आशंसु (सं० त्रि०) आ-शन्स्-उ। सनाशंसभिक्ष उः।

म १।१।१४०। इच्छाकारक आविष्कुमाकांक्षी, सुस्तमिर, ख्वाहिशमन्द, जो चाहना रखता हो।

आशक (स० त्रि) अश्नाति अश-ण्वुल्। १ भक्षक खानेवाला। २ भोगयुक्त, खानेकी चीजसे भरा हुआ। आश्नाति, आश विच-ण्वुल्। ३ भोगसाधन, खानेके काम आनेवाला। ४ भोजनकारक, खाना बनानेवाला।

आशक्त (स० त्रि०) आ सम्यक् शक्तम्; आ शक्-क्त, प्रादि समा०। सम्यक् शक्तियुक्त, ताकतवर, शहजोर, जबरदस्त।

आशक्ति (स० स्त्री०) सम्यक् शक्ति, ताकत, कुव्वत, इख्तियार, इस्तेदाद।

आशङ्कनीय (स० त्रि०) आ-शङ्क अनीयर्। १ शङ्का किये जाने योग्य, जो शक किये जाने काबिल हो। २ भयजोग्य, मानने काबिल। ३ विचार्य, समझने लायक।

आशङ्कमान (स० त्रि०) शङ्कित, सभय, डरा हुआ, जिसे शक रहे।

आशङ्का (सं० स्त्री०) आ-शङ्क-भाव टाप्। १ भय, त्रास, खौफ डर। २ सन्देह शक। ३ अविश्वास नाएतबारी।

आशङ्कान्वित (सं० त्रि०) १ भयभीत, खौफजदा, डरा हुआ। २ सन्देह रखनेवाला जिसे शक रहे।

आशङ्कित (सं० त्रि०) आ शङ्क कर्तरि क्त-च्द। १ भीत, खौफजदा, डरा हुआ। २ सन्देहयुक्त, जिसे शक या शुबह।

आशङ्किन् (स० त्रि०) आशङ्कते, आ-शङ्क णिनि। आशङ्कायुक्त, शक करनेवाला। (पु०) आशङ्की। (स्त्री०) ङीप्। आशङ्किनी।

आशङ्क्य (स० त्रि०) आ शङ्क्यते, आ शङ्क कर्मणि ण्यत्। १ आशङ्काके योग्य, खौफ किये जाने काबिल, जिससे डर लगे। (अव्य०) ल्यप्। २ सन्देह करके, शक लाते हुये।

आशन (स० पु०) अशन एव, स्वार्थे अण्। १ अशन वृक्ष, पीतशालका पेड़। अशन देखो। २ वृक्ष। ३ इन्द्र। (त्रि०) अश भोजने णिच्-ल्युट्। ४ भोजन करानेवाला, जो खिलाता हो।

आशना (फा० पु-स्त्री०) १ मित्र सुहृद दोस्त। २ परिचित, वाकिफ। "[illegible]" ([illegible]) ३ प्रेमिका, रखेली, रखी हुयी औरत। "[illegible]" ([illegible]) (वि०) ४ परिचित जान पहचानवाला। ५ आसक्त, प्यार करनेवाला। विद्यारम्भ करनेवालेको 'हर्फ-आशना', मित्रको 'दोस्त आशना' या 'यार आशना' और परिचित व्यक्तिको 'सूरत-आशना' कहते हैं।

आशनायी (फा० स्त्री०) १ मित्रता, दोस्ती। २ विवाह सम्बन्ध, रिश्तेदारी। ३ अवैध प्रेम नाजायज प्यार।

आशनायी करना (हिं० क्रि०) १ मित्र बनाना, दोस्ती लगाना। "[illegible]" ([illegible]) २ आपसमें प्रेम या नाजायज प्यार बढ़ाना।

आशनायी जोड़ना, आशनायी करना देखो।

आशनायी लगना (हिं० क्रि०) मैत्री बढ़ना, दोस्ती होना।

आशनायी लगाना, आशनायी करना देखो।

आशनायी होना आशनायी लगना देखो।

आशपाल (हिं० पु०) वृक्षविशेष एक पेड़। यह बङ्गाल, बिहार और मान्द्राज प्रान्तमें अधिक उपजता है। काठ सख्त होता और सजावटका वस्तु बनानेमें लगता है।

आशय (स० पु०) आ-शी-अच्। एरच्। पा ३।३।५६। १ अभिप्राय, मकसद मन्शा, गरज। २ आधार, मखज़न, जगह। ३ विभव असबाब। ४ पनसवृक्ष कटहलका पेड़। ५ वैद्यशास्त्रोक्त स्थानविशेष, जिस्मका जुज़। आशय सात होते हैं—वाताशय, पित्ताशय, कफाशय, रक्ताशय, पक्वाशय, मूत्राशय और आमाशय। स्त्रियोंके आठवां गर्भाशय अतिरिक्त रहता है। (सुश्रुत) उरमें रक्ताशय, उससे नीचे श्लेष्माशय, श्लेष्माशयसे नीचे आमाशय और उससे नीचे पक्वाशय है। पक्वाशयसे ऊपर अग्निकी नाभी जो कला होती, उसे पाचकाशय कहाती है। नाभिसे ऊपर अग्न्याशय मध्यभागमें स्थित है। उसपर तिल पड़ता, जिससे नीचे वाताशय आता है। वाताशयके नीचे पक्वाशयको मलाशय भी कहते हैं। मलाशयसे नीचे वस्ति या मूत्राशय है। (भावप्रकाश)

'आशयः स्यादभिप्राये मानसाधारयोरपि।' (विश्व)

आ फलविपाकात् चित्तभूमौ शेते, कर्तरि अच्। ६ कर्मजन्य वासनारूप संस्कार, भलायी-बुरायी। ७ धर्माधर्मरूप अदृष्ट, मशीयत, होनी। आधारे अच्। ८ आशय-विशिष्ट चित्त, इदराक, याददाश्त, दिल। भावे अच्। ९ शयन, नींद। १० स्थान, जगह। ११ कोठागार, आरामगाह। १२ विचारकी रीति, ख़यालका तरीक़। १३ इच्छा, ख़ाहिश, खुशी। १४ कृपण, बख़ील। १५ बौद्धमत सिद्ध आलय-विज्ञान-रूप विज्ञानसमूह। १६ आश्रय, टेक। १७ किपाचन नामक पशुधारणार्थ गर्तविशेष। १८ खात विशेष, गड्ढा।

आशयफल (सं० क्लो०) पनस, कटहल।

आशयाश (सं० पु०) आशयं आश्रयमश्नाति; आशय-अश-अण्, उप० समा०। १ अग्नि, आग। अपने आश्रय काष्ठादिको भक्ष्यरूपसे खानेपर अग्निको आशयाश कहते हैं। २ वायु, हवा।

आशर (सं० पु०) आशृणाति, आ-शॄ-अच्। १ अग्नि, आग। २ राक्षस, आसेव, भूत।

"क्रव्यादोऽस्रप आशरः।" (अमर)

आशरीक (वै० पु०) रोग विशेष, अज़ामें सख़्त और शदीद दर्द पैदा करनेवाला आज़ार।

"आशरीकं विशरीकं बलासं पृष्ट्यामयम्।" (अथर्वसंहिता)

आशल (सं० पु०) जीवकवृक्ष, एक पेड़।

आशव (सं० क्लो०) आशोर्भावः, अञ्। इगन्तिश्च लघु-पूर्वात्। पा ५।१।१३१। शिताबी, उतावली। २ गुडमद्य, गुड़की शराब।

आशस् (वै० त्रि०) आशनस्-क्विप्। १ भावि शुभेच्छाकारी, आगेके लिये अच्छी उम्मेद रखनेवाला। (क्लो०) भावे क्विप्। २ भाविशुभेच्छा, भली ख़ाहिश। ३ कथन, स्तुतिसाधन, कहावत।

"पृच्छमानस्तवाशसा जातवेदो यदीदम्।" (ऋक् ८।४।१८)

'तवाशसा त्वत् स्तुत्या साधनेन।' (सायण)

आशसन (वै० क्लो०) तुषाधान, वध किये हुवे यज्ञीय पशुके अङ्गका छेदन। "आशसनं विशसनमथो अधिविकर्तनम्।" (ऋक् १०।८५।३५) 'आशसनं तुषाधानम्।' (सायण)

आशस्त (वै० त्रि०) आ-शनस्-क्त। स्तुत, तारीफ़ किया गया।

आशा (सं० स्त्री०) आ समन्तात् अश्नुते व्याप्नोति, आ-अशू व्याप्तौ अच्। १ दिक्, फ़ासिला। २ प्रत्याशा, इश्तियाक़, उम्मेद। ३ वसुकी भार्या। ४ न्यायमतसे—संख्यापरिमित पृथक्त्व-संयोग-विभागाश्रय द्रव्य-विशेष। दैशिक परत्व और अपरत्वके असमवायि-कारणका संयोगाश्रय होनेसे ही नैयायिक इसको स्वीकार करते हैं। ५ सांख्यतत्त्व-कौमुदीके मतसे—पूर्वापरत्वके व्यवहारका उपाधि। इसी उपाधिको दिक् कहते हैं। इसके आश्रयसे अतिरिक्त दिक्-कल्पना करना ठीक नहीं पड़ता। ६ तृष्णा, लालच, न मिलनेवाली चीज़ हासिल करनेकी ख़ाहिश।

आशान्वित (सं० त्रि०) प्रत्याशा-परिहत, उम्मेदसे लगा हुआ।

आशागज (सं० पु०) दिक्हस्ती, दौरके नुक़्तेका हाथी। यह पृथिवीके एक विभागको साधे है।

आशाढ़ (सं० पु०) १ आषाढ़, एक महीना। २ व्रतीका पलाशदण्ड, व्रत करनेवालेकी छड़ी।

आशाढ़ा, आशाडा (सं० स्त्री०) १ आषाढ़ा नक्षत्र। आशाडा प्रयोजनमस्य, अण्। २ ब्रह्मचारीका पलाश-दण्ड।

आशाढी (सं० स्त्री०) आषाढ़ा नक्षत्रेण युक्तः कालः, अण्-ङीप्। १ चन्द्राषाढ़ पौर्णमासी।

आशादामन् (सं० क्लो०) आशा दामेव, उपमिति समा०। १ आशारूप बन्धनसाधन रज्जु, उम्मेदका जाल। (पु०) २ नृपतिविशेष, एक पुराने राजा।

आशादामा, आशादामन् देखो।

आशादित्य, आशार्क देखो।

आशाधर—एकजन प्रसिद्ध जैनग्रन्थकार। निजकृत 'धर्मामृत' ग्रन्थमें इन्होंने शाकम्भरीके निकट अपना जन्मस्थान लिखा है। वस्तुतः जयपुरके निकट किसी दुर्गमें यह उत्पन्न हुये थे। श्रीरत्नी और सरस्वती नाम्नी दो पत्नी रहीं। सरस्वतीके गर्भसे वाहड़ नामक पुत्र हुआ था। शहाबुद्दीनके आक्रमण मारनेपर यह मालव राज्यको भागे और पीछे धारामें विन्ध्यराज

"आशिक़ चूहा भैंस पद्मिनी मेंढक ताल लगावे।
चीलो पहरे गदहा माथे ऊंट विष्णुपद गावे॥" (कबीर)

२ आवेदक, प्रार्थक, ख़्वाहां, सायल, उम्मेदवार। ३ अनवधान साहसी पुरुष, जो शख़्स बेपरवा और बेफ़िक्र हो।

आशिक़-माशूक़ (अ० पु०) १ नायक-नायिका, प्यार करने और किया जानेवाला। २ भुजङ्गमेखला, मार या सांपका पट्टा।

आशिक़मिज़ाज (अ० वि०) क्रीडाशील, ख़ुशदिल।

आशिक़ होना (हिं० क्रि०) कामुक बनना, चाहना, प्यार करना।

आशिक़ाना (अ० वि०) रसिक, रसीला, आशिक़ जैसा।

आशिक़ाना अशार (अ० पु०) प्रीतिकाव्य, प्यारकी कविता।

आशिक़ाना ख़त (अ० पु०) प्रीतिपत्र, प्यारकी चिट्ठी।

आशिक़ाना गीत (हिं० पु०) शृङ्गारगीत, प्यारका गाना।

आशिक़ी (अ० स्त्री०) प्रीति, प्यार, चाह।

आशिक्षा (वै० स्त्री०) आ शिक्ष-अङ्-लुट्। शिक्षाभिलाष, तालीम हासिल करनेकी ख़्वाहिश।

आशिञ्जित (सं० त्रि०) क्वणित; सनसनाने, ठनठनाने, झनझनाने या छनकारनेवाला।

आशित (सं० त्रि०) आ-अश-क्त। १ भुक्त, खाया हुवा। २ भोजन द्वारा तृप्तियुक्त, आसूदा, छका हुवा। (क्ली०) भावे क्त। ३ सम्यक् भोजन, खासा खाना। आशितमस्त्यस्य, अर्श आदित्वात् अच्। ४ तृप्ति, आसूदगी, छकायी। "नातिप्रगे नातिसायं न सायं प्रातराशितः।" (मनु)

आशितङ्गवीन (सं० त्रि०) आशिता अशनेन तृप्ता गावो यत्र, निपातनात् मुम्। गो द्वारा भक्षण किया हुवा, जो गायने पहले ही खाया हो।

'विश्वाशितङ्गवीनमन्तदगावो यत्राशिताः पुरा।' (अमर)

आशितम्भव (सं० त्रि०) आशितोऽशनेन तृप्तो भवत्यनेन; आशित-भू-खच्-मुम् उप० समा०। आशिते भुव. करणभावयोः। पा ३।२।४५। १ तृप्तिकारक, आसूदा करनेवाला। (क्ली०) भावे अच्। २ अन्नादि, अनाज वग़ैरह। ३ तृप्ति, आसूदगी।

आशिष्ठ (सं० त्रि०) आ-अश-तृच्-इष्ट्। अतिशय भोक्ता, इससे ज़्यादा खानेवाला। (पु०) आशिता। (स्त्री०) ङीप्। आशित्री।

आशिन् (सं० त्रि०) अश-णिनि। भोक्ता, खानेवाला। (पु०) आशी। स्त्री० ङीप्। आशिनी।

आशिन (वै० त्रि०) आशिन् स्वार्थे अण्, वेदे निपातनात् न टिलोपः। १ भक्षक, अतिशय भोक्ता, पेटू, बहुत खानेवाला। २ वृद्ध, बुड्ढा, जो बहुत वर्षका हो।

आशिमन् (सं० पु०) आशोर्भावः इमनिच्, डिद्वद्भावः। शीघ्रत्व, जल्दी।

आशियां (फ़ा० पु०) आशय, पक्षिस्थान, खोता, घोंसला।

आशियाना, आशियां देखो।

आशिर् (वै० त्रि०) आशीयते पच्यते, आ-शी-क्विप् निपातनात् साधु। १ पाकके योग्य, पकाने क़ाबिल। (स्त्री०) २ विशुद्ध करनेके लिये सोमरसमें मिला हुवा दुग्ध।

आशिर (सं० त्रि०) आशीरेव, स्वार्थेऽण्। १ पाकके योग्य, पकाने लायक़। (पु०) आ-अश व्याप्तौ भोजने वा किरच्, णित्वादुपधावृद्धिः। २ अग्नि, आग। ३ सूर्य, आफ़ताब। ४ राक्षस।

'आशिरो वह्निरक्षसोः।' (उज्ज्वलदत्त)

आशिरःपाद (सं० अव्य०) शिरःसे पाद पर्यन्त, सरसे पैर तक।

आशिर्वाद, आशीर्वाद देखो।

आशिर्विष, आशीविष देखो।

आशिष् (सं० स्त्री०) १ आशीर्वाद, दुवा। २ काव्यालङ्कार विशेष। इसमें न मिली चीज़ पानेके लिये प्रार्थना करते हैं।

आशिषाक्षेप (सं० पु०) काव्यालङ्कारविशेष। इसमें अन्यके उपकारपर ऐसा कार्य करनेका उपदेश देते, जिससे अपना क्लेश छोड़ाते हैं।

आशिषिक (सं० त्रि०) आशिषा चरति, ठक्। आशीर्वादक, दुवा देनेवाला।

आशिष्ट (सं० त्रि०) आ-शास-क्त। आशीर्वाद दिया गया, जिसके लिये दुवा मांगी जा चुके।

आशिष्ट (स • त्रि•) अतिशयेन आशुः, इष्ठन् डित्त्वात्। "स्थिराणि बलीयांसि।" पा ५।३।१२। अत्यन्त शीघ्र, निहायत जल्दबाज।

आशिष् (सं• स्त्री•) आ शास क्विप् उपधाया इत्वम्। "आङ् शासु इच्छायाम्।" पा ६।४।३४। इष्टार्थाविष्करण मतलबको बातका ज़हूर। २ प्रार्थना, दुआ ३ आशीर्वाद दुआगोयी। ४ सर्पका दन्त, सांपका ज़हरीला दांत। "आशीर्भिः सह दत्तम्। शिवमस्तीत्यर्थो भवेत्।" (शेखर)

आशी (सं• स्त्री•) आ शीर्यतेऽनया आ-शृ क्विप् पृषोदरादित्वात्। १ सर्पदंष्ट्रा सांपका ज़हरीला दांत। "आशी आनुपतत्य दृष्टा तथा सिद्धौ च कीर्तितः।" (त्रिकाण्ड) २ सर्प विष, सांपका ज़हर। ३ आशीर्वाद, दुआगोयी। ४ वृद्धि नामक औषध। यह अष्टवर्गमें पड़ती है।

आशीत (सं• पु•) पुष्पवृक्ष विशेष, किसी क़िस्मके फूलका दरख़्त। इसे अशित कहते हैं।

आशीतक, आशीत देखो।

आशीय (स • त्रि•) अतिशयेनाशुः, ईयसुन् डित्वत्। "विन्मतोर्लुक्।" पा ५।३।६५। अत्यन्त शीघ्र निहायत जल्दबाज़।

आशीर्गीय (सं• स्त्री•) ६-तत्। नान्दीपाठ, स्तुतिवाद, दुआगोयीके साथ गाया जानेवाला गीत।

आशीर्त (वै• त्रि•) आ-श्री-क्त वेदे निपातनात्। पक्व दुग्धादि, पका दूध वगैरह।

आशीर्दा (वै• स्त्री•) आशिस्-दा-क-आप्। १ देवता, पूज्य व्यक्ति। २ स्तुतिवाद।

आशीर्वचन (सं• क्ली•) आशीर्वाद देखो।

आशीर्वत् (वै• त्रि•) दुग्धयुक्त, दूधसे मिला हुआ। (पु•) आशीर्वान्। (स्त्री•) आशीर्वती।

आशीर्वाद (सं• पु•) आशिषो वादः, ६-तत्। इष्टार्थ आविष्करण वाक्य दुआगोयी।

आशीविष (सं• पु•) आशी• सर्पदंष्ट्रा तत्र विषमस्य, पृषोदरादित्वात् सलोप, यद्वा आश्यां विषमस्य। १ सर्प, सांप। 'आशीविषो विषधरश्चक्री व्यालः सरीसृपः।' (अमर) २ दर्वीकर सर्प, बड़े फनका सांप।

आशु (सं• त्रि•) अश् व्याप्तौ उण्, विवाप्युपत्यादयि। "कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूभ्य उण्।" उण् १।१। १ शीघ्र, सत्वर, तेज़, जल्दबाज़, जो फुरतीसे चलता हो। "सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च।" (अमर) (अव्य•) २ शीघ्रतासे, तेज़ीके साथ औरन्। (सं• क्ली•) ३ वर्षाभव धान्य विशेष, आउस। "आशुर्व्रीहिः पाटलः स्यात्।" (अमर) इस धान्यकी अपेक्षा शीघ्र पकनेसे आशु नाम पड़ा है। यह मधुर, पाकमें अम्ल पित्तकर और गुरु होता है। (राजनिघण्टु)

आशुकचु—शीघ्र उत्पन्न होनेवाली कुइया। (Colocasia Antiquorum) यह कन्द बङ्गदेश और भारतवर्षमें उत्पन्न होता है। सात मासके बाद मूलको निकाल लेते हैं। यह अरुणी उत्कृष्ट और हितकर है। कुइयेका रस रक्तस्रावरोधी होता और घावको काम पड़ जाता है। पत्तोंको भी अच्छी तरह उबाल कर खा सकते हैं। जड़की प्रायः तरकारी बनती है। जिनके पेटमें कोम हो उनको बहुत खावे और बवासीरके आदमीको सराहते हैं। कुइया बहुत पुष्ट होती और औषधकी मिठाइयोंमें पड़ती है।

आशुकवि (सं• पु•) शीघ्र कविता बनानेवाला व्यक्ति, जो अब भी जल्द शायरी तैयार करता हो।

आशुकारिन् (स • त्रि•) आशु शीघ्रं करोति, आशु-कृ-णिनि। शीघ्र कार्यकारी, जल्द काम करनेवाला।

आशुकारी (स • पु•) पित्तोल्वण सन्निपातज्वर। इसमें अतिसार, भ्रम मूर्च्छा, मुखपाक तथा दाह प्रभृति होता और गात्रमें रक्तबिन्दु पड़ जाता है। (भावप्रकाश)

आशुकोपित (स • पु•) मध्यदेश जात धान्य आदि, किसी क़िस्मका चावल।

आशुकोपिन् (स • त्रि•) चण्डस्वभाव, तुन्दमिज़ाज जिसे जल्द गुस्सा आ जाये। (पु•) आशुकोपी। (स्त्री•) आशुकोपिनी।

आशुक्रिया (सं• स्त्री•) आशु यथा तथा क्रिया कर्मधा•। अविलम्बित व्यवहार, फुरतीका काम।

आशुग (सं• पु•) आशु शीघ्र गच्छति आशु-गम ड। १ वायु, हवा। २ बाण तीर। ३ सूर्य, आफ़ताब। 'आशुगैर्वेधीं बलि।' (जैन) भागवतके पञ्चम स्कन्धके २१वें अध्यायमें लिखा है कि सूर्य अर्द्ध दण्डमें २३८०१००० योजन चलते हैं। उपरोक्त अङ्कको चारसे गुण करनेपर ९५१००००० आता है।

अतएव षष्टिदण्डात्मक अहोरात्रमें ८५१००००० योजन चलनेसे सूर्यका नाम आशुग पड़ा है। किन्तु भास्कराचार्य पृथिवीकी यह गति बताते हैं। पृथिवीके चलनेसे सूर्य चलते बोध होता है। ४ शाक्य मुनिके पांचमें एक शिष्य। (त्रि०) ५ शीघ्रगामी, जल्द चलनेवाला।

आशुगामिन् (सं० त्रि०) आशु गच्छति, आशु-गम-णिनि। १ शीघ्रगामी, जल्द चलनेवाला। (पु०) आशुगामी। २ सूर्य। ३ वायु। ४ शर। (स्त्री०) आशुगामिनी।

आशुङ्ग (दे० पु०) आशु गच्छति, आशु गम वेदे निपातनात् खच् मुम्। १ पक्षिविशेष, एक चिड़िया। (त्रि०) २ शीघ्रगामी, जल्द चलनेवाला।

आशुतीक्ष्णक (सं० क्ली०) ताम्र, तांबा।

आशुतोष (सं० पु०) आशु शीघ्रं तोषस्तुष्टिर्यस्य, बहुव्री०। १ शिव। स्वल्पकाल अर्चना करनेसे ही तुष्ट होनेपर शिवका नाम आशुतोष पड़ा है। (त्रि०) २ शीघ्रतोषी, जल्द खुश होनेवाला।

आशुतोष मुखोपाध्याय, Sir—कलकत्ता-भवानीपुर-निवासी स्वर्गीय डाक्टर गङ्गाप्रसाद मुखोपाध्यायके पुत्र। १८६५ ई०को इनका जन्म हुवा था। १८८५ ई०को यह गणितकी एम० ए० परीक्षामें उत्तीर्ण हुये। दूसरे वर्ष रायचन्द-प्रेमचन्द वृत्ति पायी। १८८८ ई०को हाईकोर्टमें वकालत करना आरम्भ किया। पर वत्सर कलकत्ता यूनिवर्सिटीके अन्यतम सदस्य मनोनीत हुये। १८९९ और १९०१ ई०को कलकत्ता विश्वविद्यालयके प्रतिनिधि बन वङ्गीय व्यवस्थापक सभामें इन्होंने प्रवेश किया। फिर १९०३ ई०को उक्त सभाके प्रतिनिधिस्वरूपसे बड़ेलाटकी व्यवस्थापकसभामें प्रवेशका अधिकार पाया। १८९४ ई०को इन्हें डि० एल० उपाधि मिला था। १९०४ ई०को यह कलकत्ता हाईकोर्टके विचारपति पदपर अधिष्ठित हुये। आज भी उसी पदपर प्रतिष्ठाके साथ आप काम करते हैं। १९०५ ई०से १९१४ ई० आठ वर्ष तक कलकत्ता विश्वविद्यालयके वाइस चान्सलर (Vice-Chancellor) पदपर बैठ इन्होंने शिक्षा-संस्कार सम्बन्धमें अनेक कार्य किये। १९०८ ई०को यह एशियाटिक सोसायिटीके सभापति रहे। इनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी है। नवद्वीपके पण्डितोंने इन्हें 'सरस्वती' उपाधि एवं सरकारने संस्कृत-परीक्षा बोर्डके सभापतिका आसन दिया है। भारत-सम्राट्ने भी इन्हें 'सर' (Sir) उपाधि प्रदानकर सम्मानित किया है। वङ्गीय साहित्यपर इन्हें विशेष अनुराग रहता है। एक वर्षतक यह कलकत्ता साहित्य-सभाके सभापति और वङ्गीय-साहित्यपरिषत्के अन्यतम सहकारी सभापतिके पदपर अधिष्ठित थे। १९०५ ई०को यह उत्तरवङ्ग साहित्य-सम्मेलनके सभापति और १९१६ ई०को वङ्गीय साहित्य-सम्मेलनके सभापति बने। वर्तमान १९१७ ई०को सिंहलकी महास्थविरमण्डलीने इन्हें 'सम्बुद्धागमचक्रवर्ती' उपाधि प्रदान किया है।

आशुत्व (सं० क्ली०) शीघ्रता, जल्दी, फुरती, तेज़ी।

आशुप (सं० पु०) वंशविशेष, किसी क़िस्मका बांस।

आशुपत्री (सं० स्त्री०) आशु पत्रं यस्याः, बहुव्री० गौरादित्वात् ङीष्। गन्धकी लता, कुंदरूकी बेल।

आशुपत्व, आशुपत्वन् देखो।

आशुपत्वन् (वै० पु०) आशु पतति, आशु-पत्-वनिप्। शीघ्रगामी, जल्द चलनेवाला। (स्त्री०) ङीप्। आशुपत्वरी।

आशुफल (सं० पु०) १ शाक प्रभृति, सब्ज़ी वग़ैरह। २ हठयोग। ३ अस्त्र विशेष, किसी क़िस्मका हथियार।

आशुमण्ड (सं० पु०) आशु-भक्तमण्ड, आउस चावलका मांड। यह ग्राही, मधुर, कफकर, तर्पण, क्षयदोषघ्न और शुक्रवर्धन होता है। (अत्रिसंहिता)

आशुमत् (वै० त्रि०) आशु शीघ्रं विद्यतेऽस्य, आशु-मतुप्। १ शीघ्रतायुक्त, जल्दबाज़। (अव्य०) २ शीघ्रतापूर्वक, जल्द। (पु०) आशुमान्।

आशुया (दे० त्रि०) १ शीघ्रगामी, जल्द चलनेवाला। (अव्य०) २ शीघ्रतापूर्वक, जल्द।

आशुरथ (दे० त्रि०) शीघ्रगामी रथ रखनेवाला, जिसके पास जल्द चलनेवाली गाड़ी रहे।

आस्मरिक (सं० पु०) अश्मर्येव, स्वार्थे बाहुलकात् ठञ्। अश्मरीरोग, मूत्रमसाना, पथरी। भाव्ये दीर्घो।

आस्मायन (सं० पु०) अश्मनो गोत्रापत्यम्, फञ्। अश्वादिभ्य फञ्। पा ४।१।११०। अश्मन् नामक ऋषिके गोत्रापत्य। (स्त्री०) ङीप्। आस्मायनी।

आस्मिक (सं० त्रि०) भारतभूतमश्मानं हरति वहति आवर्यति वा, ठन्। प्रस्तरका भारहारक, वाहक वा आवाहक; मछोन्, पथरीला।

आस्मेय (सं० पु०) अश्मनोऽपत्यम्, ढक्। अश्मन् नामक ऋषिके अपत्य।

आश्यान (सं० त्रि०) आ-श्यै-क्त। १ घनीभूत, जो गाढा पड़ गया हो। २ शुष्कप्राय, जो कुछ कुछ सूखा हो।

आस्र (सं० क्लो०) अश्रमेव, स्वार्थेऽण्। चक्षुःका जल, आंसू, आंखका पानी।

आश्रपण (सं० क्लो०) आ-श्रा-णिच्-पुक् ह्रस्वे ल्युट्। पाककरण, वैपरवायोंमें खाना पकानेका काम।

आश्रम (सं०-पु-क्लो०) आ सम्यक् श्रमो यत्र, आ-श्रम आधारे घञ्। १ मुनिगणका वासस्थान। २ मठ। 'आश्रमो व्रतीनां मठे। ब्रह्मचर्यादिचतुष्के ऽपि।' (हेम) ३ तपोवन। ४ मुक्त व्यक्ति। परमेश्वरमें लीन होनेपर श्रम न रहनेसे मुक्त व्यक्तिको भी आश्रम कहते हैं। ५ परमेश्वर। ६ पाठशाला, मदरसा। ७ ब्रह्मचारी प्रभृतिका शास्त्रोक्त चार प्रकार धर्मविशेष।

> 'ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये। आश्रमोऽस्त्री।' (अमर)
>
> "अनाश्रमी न तिष्ठेत् क्षणमात्रमपि द्विजः।
>
> आश्रमेण विना तिष्ठन् प्रायश्चित्तीयते तमी॥" (दक्ष)
>
> 'गार्हस्थ्यो भैक्षुकश्चैव आश्रमौ द्वौ कलौ युगे।" (महानिर्वाणतन्त्र)
>
> "शतार्द्धन्दसहस्त्राणि शतार्द्धन्द्शतानि च।
>
> कलौ देवा गमिष्यन्ति तदा त्रेताश्रमादिकं।" (व्यास)

महानिर्वाणतन्त्रके कथनानुसार कलिमें गार्हस्थ्य और भिक्षु दो भिन्न अन्य आश्रम नहीं होता। व्यासके मतमें ४४०० वर्ष कलियुग बीतनेपर तीन ही आश्रम रह जायेंगे। अवशेषको लोग क्षीणबल एवं अल्पायु तथा अशेष रोगसे आक्रान्त होनेपर वानप्रस्थ किंवा सन्यास आश्रम रख न सकेंगे। द्विजको एकक्षण भी आश्रमहीन न रहना चाहिये। आश्रम न रखनेसे प्रायश्चित्त करना पड़ता है। ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और सन्यास चार आश्रम होते हैं।

आश्रमगुरु (सं० पु०) आश्रमाणां ब्रह्मचर्यादीनां गुरुर्नियन्ता, ६-तत्। १ आश्रमनियन्ता, राजा। आश्रमस्य मठस्य तपोवनस्य वा गुरुः स्वामी तत्रस्थ छात्राणामुपदेष्टा वा, ६-तत्। २ तपोवनस्वामी। ३ मठस्य किंवा तपोवनस्थ छात्रगणका उपदेष्टा।

आश्रमधर्म (सं० पु०) आश्रमविहितो धर्मः, शाक०-तत्। ब्रह्मचर्यादि विहित धर्म। धर्म छः प्रकारका होता है,—१ वर्णधर्म, २ आश्रमधर्म, ३ वर्णाश्रमधर्म, ४ गुणधर्म, ५ निमित्तधर्म और ६ साधारणधर्म। ब्राह्मणका कभी मद्यपान न करना इत्यादि वर्णधर्म; यज्ञके अग्निकी रक्षा, तज्जन्य काष्ठाहरण तथा भिक्षान्न द्वारा जीवनधारण ब्रह्मचर्यादि आश्रमधर्म; ब्राह्मणी प्रभृतिका भी पलाशदण्ड ग्रहण वर्णाश्रम धर्म; विहित कार्यके अकरण एवं निषिद्ध कार्यके आचरणको प्रायश्चित्तादि निमित्त-धर्म और अहिंसादि साधारण-धर्म है।

आश्रमपद (सं० क्लो०) आश्रम एव पदं स्थानरूपम्, कर्मधा०। १ मुनिगणका आश्रमरूप स्थान।

> "परिक्रम्याश्रमोऽयं च। इदमाश्रमपदं तावत् प्रविशामि।" (शकुन्तला)

२ ब्राह्मणके धार्मिक जीवनका समयविशेष।

आश्रमपर्वन् (सं० क्लो०) महाभारतके पन्द्रहवें पर्वका प्रथमांश।

आश्रमभ्रष्ट (सं० त्रि०) आश्रमसे गिरा हुआ, जो अपने आश्रमको छोड बैठा हो।

आश्रममण्डल (सं० क्लो०) मुनिगणके वासस्थानका वृत्त, साधुमन्तके रहनेकी जगह।

आश्रमवास (सं० पु०) आश्रमे वासः, ७-तत्। १ मुनिका तपोवनादिमें वास। आश्रमवासमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः, अण्। २ धृतराष्ट्रादिके आश्रमवास अधिकारपर व्यास-रचित भारतान्तर्गत पर्वविशेष।

आश्रमवासिक (सं० क्लो०) आश्रमवासः प्रतिपाद्यतयास्त्यस्य, ठन्। १ भारतान्तर्गत व्यासरचित धृतराष्ट्रादिके वनवासका प्रतिपादक पर्वविशेष। (त्रि०) २ मुनिगणके वासस्थानसे सम्बन्ध रखनेवाला।

आश्रावण (सं० क्ली०) आश्राव देखो।

आश्रि (सं० स्त्री०) आ-सम्यक् अश्रिः, प्रादि० समा०। १ सम्यक् कोण, खासा कोना। २ धारा, तलवारका किनारा।

आश्रित (सं० त्रि०) आश्रीयते, आ-श्रि-क्त। आश्रय-प्राप्त, टिका हुवा। २ अवलम्बित, पकड़े हुवा। ३ अनुसृत, इस्तेमाल करनेवाला। ४ शरणागत, पनाह पाये हुवा। ६ वशीभूत, अधीन, ताबेदार, मातहत।

आश्रितत्व (सं० क्ली०) वश्यता, अधीनता, मातहती।

आश्रित्य (सं० अव्य०) आ-श्रि-ल्यप्। आश्रय लेकर, सहारा पकड़के।

आश्रिन् (सं० त्रि०) अश्रं नेत्रजलमस्त्यस्य, इनि। सुखादिभ्यश्च। पा ५।२।१२१। नेत्रजलयुक्त, आंसू भरे हुवा। (स्त्री०) ङीप्। आश्रिणी।

आश्रुत् (सं० त्रि०) आश्रु भावे क्विप्। १ अङ्गीकार, इकरार। (त्रि०) कर्तरि क्विप्। २ अङ्गीकारकर्ता, इकरार करनेवाला।

आश्रुत (सं० त्रि०) आ-श्रु-क्त। १ अङ्गीकृत, माना हुवा। २ सम्यक् श्रुत, खूब सुना हुवा। (क्ली०) ३ सुनानेकी पुकार।

आश्रुति (वै० स्त्री०) आ-श्रु-क्तिन्। १ श्रवण, सुनायी। २ अङ्गीकार, इकरार।

आश्रुत्कर्ण (वै० त्रि०) चारो ओर कान लगानेवाला, जो हर तर्फ़ कान देता हो।

आश्रेय (सं० त्रि०) आ-श्रि-यत्। आश्रितव्य, सहारा दिये जाने क़ाबिल।

आश्रेष (वै० पु०) आलिङ्गन करनेवाला व्यक्ति, जो शख़्स गले लगाता हो। २ प्रेत, शैतान्। ३ अश्लेषा नक्षत्र।

आश्लिष्ट (सं० त्रि०) आ-श्लिष्-क्त। १ आलिङ्गित, हमागोश, गलेसे लगा हुवा। २ सम्बद्ध, मिला हुवा। ३ आलिङ्गन करनेवाला, जो गले लगाता हो। ४ संस्कृत, फैला हुवा। ५ प्रतिपादित, साबित किया हुवा।

आश्लेष (सं० पु०) आ-श्लिष्-घञ्, आ सम्यक् श्लेषः सम्बन्धः, प्रादिसमा०। १ हार्दिक सम्बन्ध, दिली लगाव। "कामीश्लेषे परिपर्यैर्ष्यातमाधारयतुमिष" (मुग्धबोध) २ आलिङ्गन, हमागोशी, सीनेसे सीना लगाकर मिलनेकी हालत। ३ ग्रहविशेष, किसी समासेका नज़ारा। वेदमें 'आश्रेष' बोलते हैं। ४ अश्लेषा नक्षत्र।

आश्लेषण (सं० क्ली०) आश्लेषैव स्वार्थेऽण्। अश्लेषा नक्षत्र।

आश्व (सं० क्ली०) अश्वानां समूहः, अण्। १ अश्वसमूह, घोड़ोंका झुण्ड। २ अश्वत्व, घोड़ेका काम या हाल। (त्रि०) अश्वैरुह्यते शैषिकः, अण्। अश्वस्येदं वाह्यम् अञ् वा। ३ अश्वके वहनीय, जिसे घोड़ा ले जा सके। ४ अश्वसम्बन्धी, घोड़ेके मुताल्लिक़। अश्वमूत्रसे श्लेष्मा, कृमि और दद्रु नष्ट होता है।

आश्वतर (सं० पु०) १ बुडिलका गोत्रनाम। २ अश्वतरका अपत्य, अश्वका लड़का।

आश्वतराश्वि (सं० पु०) अश्वतरस्यापत्यम्, इञ्। बुडिल मुनि।

आश्वत्थ (सं० क्ली०) अश्वत्थस्य फलम्, अण्। अश्वादिभ्योऽण्। पा ४।३।१६४। १ अश्वत्थफल, पीपलका मेवा। (त्रि०) अश्वत्थस्येदम्। २ अश्वत्थ सम्बन्धी, पीपलके मुताल्लिक़।

आश्वत्थिक (सं० पु०) अश्वत्थेन युक्ता पौर्णमासी, अण् निपातनात् तस्य ठक्। १ चान्द्र आश्विनमास। (त्रि०) २ अश्वत्थसम्बन्धीय, पीपलके मुताल्लिक़।

आश्वत्थी (सं० स्त्री०) आश्वत्थ-ङीप्। १ शाखा विशेष। अश्व इव तिष्ठति, अश्व-स्था-क पृषोदरादित्वात्, अश्वत्थी अश्विनीनक्षत्रः तस्य अश्वमस्तकाकारत्वात् तेन युक्तः कालः। २ अश्विनी नक्षत्रयुक्त रात्रि।

आश्वत्थीय (सं० त्रि०) अश्व-स्था-छ। गहादिभ्यः। पा ४।२।१६१। अश्वत्थसम्बन्धीय, पीपलके मुताल्लिक़।

आश्वपत (सं० त्रि०) अश्वपतेरिदम्, अण्। अश्वपत्यादिभ्यः। पा ४।१।८४। अश्वपति-सम्बन्धीय, घोड़ेके मालिकसे ताल्लुक़ रखनेवाला।

आश्वपस् (वै० त्रि०) शीघ्र कर्मचारी, जल्द काम करनेवाला। "विभ्वा चिदाश्वपस्तरेभ्य।" (ऋक् १०।७६।५)

आश्वपालिक (सं० पु०) अश्वपालस्यापत्यम्, ठक्। रेवत्यादिभ्यष्ठक्। पा ४।१।१४६। अश्वपालीका पुत्र।

आश्वपेजिन् (सं० त्रि०) अश्वपेजेन, प्रोक्तमधीते, णिनि।

नामक ऋषिके पुत्र। (स्त्री०) ङीप्। आश्वावतानी।

आश्वास (सं० पु०) आ-श्वस-घञ्। १ निर्वृति और आश्रयदान, तसल्लीदिही। २ सान्त्वना, दिलासा। ३ आख्यायिका, किस्सा। ४ परिच्छेद, वाब। 'आश्वास स्यात् निर्वृती। आख्यायिका परिच्छेदे।' (हेम)

आश्वासक (सं० त्रि०) आश्वासयति, आ-श्वस-णिच्-ण्वुल्। १ आश्वासकारक, सान्त्वनाकारी, तसल्ली देनेवाला। (पु०) २ वस्त्र, पोशाक।

आश्वासन (सं० क्ली०) आ-श्वस्-णिच्-ल्युट्। सान्त्वना, भरोसा। (त्रि०) कर्तरि ल्युट्। २ आश्वासकारक, तसल्ली देनेवाला।

आश्वासनीय (सं० त्रि०) सान्त्वना देनेयोग्य, जिसे तसल्ली दी जा सके।

आश्वासयत् (सं० त्रि०) सान्त्वनाकारक, तसल्ली देनेवाला।

आश्वासित (सं० त्रि०) सान्त्वना पाये हुवा, जिसे तसल्ली दी जा चुके।

आश्वासिन् (सं० त्रि०) आ-श्वस-णिनि। १ प्रत्याशायुक्त, तसल्ली रखनेवाला। २ प्रसन्न करनेवाला, जो खुश करता हो। (पु०) आश्वासी। (स्त्री०) आश्वासिनी।

आश्वास्य (सं० त्रि०) आ-श्वस्-णिच्-यत्। १ सान्त्वनीय, तसल्ली दिये जाने काबिल। (अव्य०) ल्यप्। २ सान्त्वना देकर, तसल्लीके साथ।

आश्विक (सं० त्रि०) अश्वान् भारभूतान् हरति वहति आवहति वा, ठञ्। १ अश्वको हरण वा वहन करनेवाला, जो घोड़ा चुराता या ले जाता हो। (पु०) अश्वनिमित्तं संयोगः उत्पातो वा, ठक्। १ अश्वलाभसूचक संयोग, घोड़ेका फायदा देखानेवाला मौका।

आश्विन (वै० त्रि०) आशू व्याप्तौ औणादिको विनि, ततो अण्। १ व्याप्त, मामूर, भरा हुवा।

"प्रत आश्विनी पवमान।" (ऋक् ९।८६।४)
'आश्विनीर्व्याप्ता.।' (सायण)

२ अश्विदेवता-सम्बन्धीय। "अविराश्विना: श्येतः।" (वाजसनेयसं० २४।३) 'आश्विनाः अश्विदेवत्या.।' (महीधर)

(पु०) ३ चान्द्र आश्विनमास, क्वारका महीना। इस मासकी अमावस्याको हिन्दू पितृलोकके उद्देश्यसे श्राद्ध करते हैं। शुक्लपक्षमें देवीपूजा और विजयादशमी होती है, जिसकी अपेक्षा दूसरा पर्व नहीं। नृत्य, गीत और वाद्यके उद्यमसे भारत आमोदित रहता है। आबाल-वृद्ध-वनिता सकलके मनमें जो आनन्द आता है, वह कहा जा नहीं सकता। पूर्णिमाको कोजागर लक्ष्मी जगाते हैं। ४ यज्ञीय कपाल, ऐक बरतन। ५ अश्विनीकुमार देवता-सम्बन्धीय यज्ञघृतादि द्रव्य विशेष। ६ अस्त्र, हथियार।

आश्विनी (सं० स्त्री०) अश्विनी अश्वाकारवता नक्षत्रेण युक्ता पूर्णिमा, अण्-ङीप्। १ आश्विन मासकी पूर्णिमा। २ इष्टकाविशेष। ३ चिता।

आश्विनेय (सं० पु०) अश्विन्याः घोटकाकारवत्याः संज्ञायाः अपत्यम्, ढक्। स्त्रीभ्योढक्। पा ४।१।१२०। १ अश्विनीकुमारद्वय। तयोरेकैकस्यापत्यम्, अण्। २ नकुल। ३ सहदेव। अश्विन्के पाण्डुराजपत्नी माद्रीसे उत्पादन करनेपर दोनो पुत्रोंका नाम आश्विनेय पड़ा है। अश्वस्यैकाऽगमः पन्थाः। ४ अश्वके जाने योग्य पथ, जिस राहसे घोड़ा निकल सके।

आश्वीन (सं० पु०) अश्वस्यैकाऽगमः पन्थाः, खञ्। अश्वस्यैकाहगमः। पा ५।२।१९। अश्वके एक दिनमें जाने योग्य पथ, जिस राहसे घोड़ा एक रोज़में निकल सके।

आश्वीय (सं० क्ली०) अश्वसमूह, घोड़ोंका झुण्ड।

आश्वेय (सं० पु०) अश्वो देवता अस्य, ढक्। १ अश्वो देवता सम्बन्धीय घृतादि। २ अश्वोके अपत्य।

आषाढ़ (सं० पु०) आषाढ़ा-नक्षत्रयुक्ता पौर्णमासी आषाढी सा अस्मिन् मासे, अण्। सास्मिन् पौर्णमासीति स ज्ञायाम्। पा ४।२।२१। १ स्वनामख्यात चान्द्रमास विशेष। कृषिशास्त्रमें ठहराया जाता, कि आषाढ़ मासमें किस समय धान्य बोनेसे शस्यका शुभाशुभ आता है। कृषि-पराशरके मतानुसार आषाढ़ मासकी पूर्णिमाको पूर्व दिक्से वायु चलनेपर अधिक वृष्टि होती है। किन्तु उसके अग्निकोणको तरफ जानेसे शस्य मारे पड़ता है। दक्षिण दिक्से वायु वहनेपर वृष्टि नहीं

आती। फिर नैऋत कोणमें वायु चलनेसे भी धान्यादि शस्यकी हानि होती है। पश्चिम दिक्‌से वायु चलने पर कम पड़ता है। वायुकोणमें वायुके आनेसे भड़ जमती है। यदि उत्तरकी ओरसे वायु चलता, तो समस्त पृथिवीमें धान्यादि शस्य भर जाता है। ईशान कोणमें भी वायुके आनेसे प्रचुर शस्य उपजता है। आषाढ़ मासकी शुक्ल नवमीको वायुवर्षण (तूफान) बढ़नेसे पानी पड़ता है और वायु बन्द रहनेसे बूंद नहीं टपकता। इस नवमीको उदयाचल निर्मल रहनेसे सूर्यदेव अपना समय विश्राम करते हैं। ऐसे समय सूर्यका मण्डल देखते हैं। सूर्य यदि मेघमें आहत रहता, तो तुला राशिमें अस्त होनेतक मेघ गरजता है।

आषाढ़ी पूर्णिमा प्रयोजनमस्य, अण्। २ व्रतियों के लिये योग्य पलाशदण्ड। ३ मलयपर्वत।

आषाढ़क (सं॰ पु॰) आषाढ़ एव, स्वार्थे कन्। १ आषाढ़मास। २ पलाश वीज।

आषाढ़भव (सं॰ पु॰) आषाढ़ायां नक्षत्रे भवति आषाढ़ा भू अच्। १ मङ्गलग्रह मिरीच, मङ्गल ग्रह। २ आषाढ़मासजात और आषाढ़ाभू शब्द भी इसी अर्थमें आता है।

आषाढ़ा (सं॰ स्त्री॰) १ राशिचक्रस्थित विंशतितम नक्षत्र, पूर्वाषाढ़ा। २ एकविंशतितम नक्षत्र उत्तराषाढ़ा। उत्तराषाढ़ा नक्षत्रमें जन्म होनेसे मनुष्य दाता, दयावान् सत्कर्मी और पुत्रभार्यादि सुखसम्पन्न रहता है।

आषाढ़ाभू (सं॰ पु॰) आषाढ़ायां भवतीति, आषाढ़ा भू क्विप्। मङ्गलग्रह। (त्रि) २ आषाढ़ानक्षत्र जात।

आषाढ़ि (सं॰ स्त्री॰) आ-षच क्विन्; पृषोदरादित्वात् साधुः। ओकारस्याभावश्च। १ सम्यक् सहन, आगेसे बरदाश्त। २ रतिदेवी।

आषाढ़िका (सं॰ स्त्री॰) राक्षसी विशेष।

आषाढ़ी (सं॰ स्त्री॰) आषाढ़या नक्षत्रेण युक्ता पूर्णिमा, अण्, ठिङ्ढाणित्रादिना ङीप्। १ आषाढ़ मासकी पूर्णिमा। आषाढ़ीको कुछ शास्त्र तोलकर वायुमें स्थापन करते हैं। वायुकी आर्द्रतासे धान्यका परिमाण किञ्चित् बढ़नेपर सुवृष्टि होने और सुभिक्ष पड़नेका योग समझा जाता है। २ यज्ञीय दण्ड-विशेष।

आषाढ़ीय (सं॰ त्रि॰) आषाढ़ायां भव तस्येद वा, छ। १ आषाढ़ानक्षत्रमें उत्पन्न। २ आषाढ़-सम्बन्धीय।

आष्टम (सं॰ पु॰) अष्टमो भागः, अण्। अष्टमभाग आठवां हिस्सा।

आष्टमातुर (सं॰ त्रि॰) अष्टानां मातृणां अपत्यम् अष्टन् मातृ अण्, मातृशब्दस्य उकारान्तादेशः। आठ माताका लड़का।

आष्टा (सं॰ स्त्री॰) आ तिष्ठते अस्-क अत्रम्। दिक्, आशिष, तर्क।

आष्टि (सं॰ पु॰) अष्टानामपत्यम् अष्टन् इञ्। आठजनका अपत्य विशेष।

आष्ट्र (सं॰ स्त्री॰) अश्नुते व्याप्नोति, अश् व्याप्तौ ष्ट्रन् उणादि। आकाश आसमान।

आष्ट्री (वै॰ स्त्री॰) १ प्रदीपन लम्बा चूल्हा। २ भोजनपात्र, खानेका थाला।

आष्ठा (सं॰ स्त्री॰) ईष प्राप्त, तुल्य।

आस् (सं॰ अव्य॰) आ-अस-क्विप् आस् क्विप् वा। १ स्मरणसे, याद करके। २ आपेक्षापूर्वक, बनिस्बत। ३ समन्तात् चारो ओर। ४ कोप, गुस्सेसे। ५ पीड़ामें मर्दके साथ मरजाके, दर्दसे गुदरके साथ जोरमें चिल्लाकर। ६ खेद, अफ़सोस। (वै॰ पु॰) मुख मुंह, चेहरा।

आस (सं॰ पु॰) आस्-घञ्। १ आसन, बिछौना। २ स्थिति, हालत। ३ उपवेशन, बैठक। अस्यते क्षिप्यते अनेन, अस क्षरणे घञ्। ४ धनु, कमान्। अस क्षिपे भावे घञ्। ५ निक्षेप फेंकफांक। ६ बैठनेका स्थान। ७ धूलि, खाक। (हिं॰ स्त्री॰) ८ आशा, उम्मेद।

८ कामना, चाह। १० आधार, टेक। ११ दिक्, तर्फ।

आसंसार (सं० त्रि०) १ नित्य परिवर्तनशील, बराबर बदलते रहनेवाला। (अव्य०) २ संसारके नाश तक, जबतक दुनिया रहे।

आसकत (हिं० पु०) आलस्य, सुस्ती, ताक़तका न रहना।

आसकती (हिं० वि०) अलस, सुस्त, ताक़त न रखनेवाला।

आसक्त (सं० त्रि०) आ-सन्ज-क्त। १ आसङ्गयुक्त, लगा हुवा। २ अन्य विषय परित्यागकर एक ही नियममें निविष्ट, मुश्ताक़, चाहनेवाला। (अव्य०) ३ अनवरत, लगातार, हमेशा। (क्ली०) ४ सम्यक् सम्बन्ध, खासा लगाव। 'सततेऽनारतऽस्रान्त-सन्तताविरतानिशम्। नित्यानवरताजस्रमप्यथातिशयो भरः॥' (अमर)

आसक्तचित्त (सं० त्रि०) अनुरक्त, मुश्ताक़ दिलको लगाये हुवा।

आसक्तचेतस् (सं० त्रि०) किसी विषयपर हृदयको लगाये हुवा, जिसका दिल किसी बातपर अटका रहे।

आसक्तमनस्, आसक्तचेतस् देखो।

आसक्ति (सं० स्त्री०) आ-सन्ज-क्तिन्। १ अन्य विषयको छोड़ एक ही विषयका अवलम्बन, लगाव। (वै० स्त्री०) २ पयस्थापन, राह डालनेका काम। (अव्य०) ३ अभिप्रायपूर्वक, मतलबसे।

आसङ्ग (सं० पु०) आ-सन्ज-घञ्। १ अभिनिवेश, लगाव। २ प्राप्त वा उपस्थित विनाशि-वस्तुका रक्षणाभिलाष, मिट जानेवाली मिली या हाज़िर चीज़के बचानेका इरादा। ३ भोगाभिलाष, ऐशकी ख़्वाहिश। ४ कर्तृत्वाभिमान, कारगुज़ारीका घमण्ड। ५ अन्य विषयको छोड़ एक ही विषयपर चित्तका अभिनिवेश, दूसरी बातको हटा एक ही बातपर दिलका जमाव। ६ सम्यक् सम्बन्ध, खासा ताल्लुक़। ७ लगाने योग्य सौराष्ट्रमृत्तिका। (वै० पु०) ८ पयस्थापन, राहबन्दी। (त्रि०) ९ अनवरत, सुदामी। (अव्य०) १० सदा, हमेशा, लगातार।

आसङ्गत्व (सं० क्ली०) न सङ्गतं असङ्गतम् तस्य भावः, ष्यञ् नोत्तरपदवृद्धिश्च। सङ्गताभाव, असम्बन्ध, सुफ़ारक़त, जुदायी।

आसङ्गा (सं० स्त्री०) सौराष्ट्रमृत्तिका, सौराष्ट्र देशकी मट्टी।

आसङ्गिनी (सं० स्त्री०) आसङ्गः सातत्यमस्या अस्ति, वनि-ङीप्। वात्यासमूह, चक्रवायु, गर्दबाद, बगूला, डौंडा।

आसङ्गिम (सं० पु०) आसङ्गे भवः, डिमच्। कर्णबन्धनाकृति विशेष, किसी क़िस्मकी पट्टी। कर्णबन्धनकी आकृति पन्द्रह प्रकार होती है। उसमें जिसका मध्यभाग लम्बा और एक कोणयुक्त रहता, वह आसङ्गिम बजता है। (सुश्रुत)

आसञ्जन (सं० क्ली०) आ-सन्ज ल्युट्। १ आसङ्ग, सोहबत। २ सम्यक् सम्बन्ध, खासा लगाव। ३ योजना, जोड़।

आसञ्जित (सं० त्रि०) आ-सन्ज-णिच्-क्त-इट्। संयोजित, लगा हुवा।

आसड—एक प्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार। बालचन्द्रकृत विवेकमञ्जरीकी टीकामें लिखा है,—

आसड प्रसिद्ध जैनाचार्य अभयदेव सूरिके शिष्यने भिल्लमालवंशीय कटुकराजके औरस और अनलदेवीके गर्भसे जन्म लिया था। इन्हें लोग कविशोभाशृङ्गार कहते थे। इनके पृथिवीदेवी और जैतल्लदेवी दो स्त्री रहीं। इन्होंने मेघदूतकी टीका, कितने ही जिनस्तोत्र तथा स्तुति, धर्मग्रन्थ उपदेशकुण्डली और विवेकमञ्जरी बनायी है।

आसते (हिं० क्रि० वि०) १ आहिस्ता, आहिस्ता, धीरे-धीरे, ज़ोर न देकर। २ होकर।

आसत्ति (सं० स्त्री०) आ-सद्-क्तिन्। १ सङ्गम, मेल। २ लाभ, फ़ायदा। 'आसत्ति सङ्गमे लाभे।' (हेम) ३ नैकट्य सम्बन्ध, पासका मेल। ४ न्यायमतसे प्रत्यक्षजनक सन्निकर्ष, दो लफ़्ज़ और उनके मानेके बीचका ताल्लुक़।

"वाक्यं स्याद् योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः।" (साहित्यदर्पण)

योग्यता, आकाङ्क्षा और आसत्तियुक्त पदसमूहको वाक्य कहते हैं। बुद्धिका विच्छेद न पड़ना ही आसत्ति है। "आसत्तिर्बुद्ध्यविच्छेदः।" (साहित्यदर्पण)

आसत्ति, योग्यता और आकाङ्क्षासे तात्पर्य समझ

चरण रख पीठकी ओर घुमाकर दक्षिण हाथसे दक्षिण एवं वाम हाथसे वाम पैरका वृद्धाङ्गुल (अंगूठा) जोरसे पकड़ छातीपर ठुड्डी अड़ाने और नाककी नोकपर दृष्टि लगानेसे पद्मासन गठता है। इससे समस्त रोग मिटता और पेटका अग्नि बढ़ता है। यह आसन बद्ध और मुक्त भेदसे दो प्रकारका होता है। जो ऊपर कहा, वह बद्ध है। केवल वाम ऊरूपर दक्षिण और दक्षिण ऊरूपर वाम चरण रख दोनो चरण पर दोनो हाथका तालु लगानेसे मुक्त पद्मासन पड़ता है। शिवसंहिताके मतानुसार दोनो पैर चितकर दोनो ऊरूपर लगाने, दोनो हाथ चितकर दक्षिण ऊरूपर वाम तथा वाम ऊरूपर दक्षिण हाथ बैठाने, नाककी नोकपर दृष्टि जमाने, दन्तमूलपर जिह्वा अड़ाने, चिबुक तथा वक्ष: उठा क्रमश: साध्यमत नाकसे वायु खींच पेटमें ठहराने और पीछे धीरे-धीरे वायुको नाकसे ही निकालनेपर पद्मासन सजता है। इससे रोग छूट जाता है। फिर दोनो ऊरूपर लिङ्गके नीचेसे दोनो पादतल मिलानेपर भी पद्मासन लगता है। पद्मासनसे योगीका समस्त कार्य सिद्ध होता और बन्धन छुटता है।

३ भद्रासन।

अण्डकोषके नीचे दोनो पैरकी एड़ी उलटी लगाने, दोनो पैरके अंगूठे पीछेसे पकड़ जालन्धर बांधने और नाककी नोकपर दृष्टि जमानेसे भद्रासन बैठता है। इससे भी सकल रोग नष्ट होता है।

४ मुक्तासन।

मलद्वारपर वामपदकी एड़ी रख उसपर दक्षिण पदकी एड़ी जमाने और मत्था तथा धड़ बिलकुल सीधा लगानेसे मुक्तासन बनता है। इससे कार्यसिद्धि होती है।

५ वज्रासन।

दोनो जङ्घा वज्र-जैसी बनाने और दोनो पैर मलद्वारकी दोनो ओर लगानेसे वज्रासन होता है। यह योगियोंको सिद्धि देता है।

६ स्वस्तिकासन।

उभय जानु तथा ऊरूके मध्य उभयपदका तल रख त्रिकोणाकार आसन बांधने और सीधे तौरपर स्वच्छन्द बैठनेसे स्वस्तिक सजता है। शिवसंहिताके मतानुसार जानु तथा ऊरूके मध्य दोनो पदतल भली भांति रख समान भावमें सुखसे बैठनेपर भी यह आसन लग जाता है। स्वस्तिकासनसे योगीका प्राणायामादि सकल कार्य सिद्ध होता है।

७ सिंहासन।

पैरकी दोनो एड़ी अण्डकोषके नीचे परस्पर विपरीत भावमें पिछली ओर ऊर्ध्वमुख निकालने, दोनो घुटने मट्टीपर रख उनपर व्यक्त भावसे मुख उठाने और जालन्धरबन्ध बना नाककी नोकपर दृष्टि जमानेसे सिंहासन लगता है। यह आसन रोगनाशन है।

८ गोमुखासन।

दोनो पैर मट्टीपर रख पीठकी दोनो ओर मिलाने और शरीर सीधा जमा गोमुख जैसा ऊपरको मुख उठानेसे गोमुखासन गंठता है।

९ वीरासन।

एक पैरको ऊरूपर और दूसरे पैरको पीछेकी ओर रखनेसे वीरासन बनता है।

१० धनु आसन।

दोनो पैर लट जैसे सीधे फैलाने और दोनो हाथसे पीठकी ओर दोनो पैर पकड़ समस्त शरीर धनु:की तरह टेढ़ा बनानेसे धनु आसन होता है।

११ शवासन।

मुर्देकी तरह चित हो मट्टीपर लोटनेसे ही शवासन बन जाता है। इससे श्रम मिटता और मन शान्त होता है। अन्य नाम मृतासन है।

१२ गुप्तासन।

दोनो घुटनोंके मध्य दोनो पैर खूब छिपा दोनो पैर ऊपर रखनेसे गुप्तासन गंठता है।

१३ मत्स्यासन।

मुक्त पद्मासन लगा दोनो कुहनीसे मत्था दबाने और चित हो पड़ जानेपर मत्स्यासन लगता है।

१४ पश्चिमोत्तानासन।

मट्टीपर दण्डाकार सीधे फैला दोनो पैर दोनो हाथसे पकड़ने और दोनो पैरपर घुटनेके नीचे

भाग मध्य माथा रखनेसे पश्चिमोत्तानासन पड़ता है। दोनों पैर परस्पर असंलग्न रूपसे फैला और हस्तद्वय हाथ अभ्योत्तरसे पकड़ दोनों घुटनोंपर माथा रखनेसे भी यह आसन बन जाता है। अपर नाम उग्रासन है।

१५ गोरक्षासन।

उभय जानु और ऊरुके मध्य दोनों पैर चित कर अप्रकाशित रूपसे जमाने दोनों हाथ चितकर दोनों गुल्फ छिपाने और कण्ठको सिकोड़ नासाको नोकपर दृष्टि लगानेसे गोरक्षासन बनता है। इससे समस्त कार्य सिद्ध होता है।

१६ मत्स्येन्द्रासन।

उदरको पीठकी तरह सीधा कर वाम पद मुड़ा दाहने घुटनेपर जमाने, उसपर दाहनी कुहनी जमाने और दाहने हाथपर मुख रख दोनों भूके मध्यभाग पर दृष्टि लगानेसे मत्स्येन्द्रासन ठहरता है।

१७ उत्कटासन।

दोनों पादको अंगूठोंके द्वारा मृत्तिका पकड़के छूते दोनों गुल्फ शून्यमें ठहराने और दोनों गुल्फपर गुह्यदेश जमानेसे उत्कटासन बनता है।

१८ संकटासन।

वाम पद तथा वाम घुटना महीपर रख और वाम पदका दक्षिण पदसे लपेट दोनों घुटनोंपर हाथ बैठानेसे यह आसन बनता है।

१९ मयूरासन।

दोनों हाथके तालुसे भूमिको पकड़, दोनों कुहनी पर नाभिका पार्श्व लगा और उच्चपद्मासनके न्याय पादद्वय पीछेको और उठा शून्यमें दण्डाकार सम-भावसे खड़े होनेपर मयूरासन बंधता है।

२० कुक्कुटासन।

किसी मञ्चपर सुखपद्मासन लगा दोनों घुटने और ऊरुके मध्य दोनों हाथ रख दोनों कुहनीपर टिकनेसे यह आसन सिद्ध होता है।

२१ कूर्मासन।

अण्डकोषके नीचे दोनों गुल्फ परस्पर विपरीत भावमें रख गर्दन, माथा और देह सीधाकर बैठनेसे कूर्मासन कहाता है।

२२ उत्तानकूर्मासन।

कुक्कुटासन लगा और दोनों हाथसे गर्दनको पिछाड़ी पकड़ कच्छपकी तरह चित हो जानेपर यह आसन बनता है।

२३ मण्डूकासन।

पदतलद्वयसे पीठके पर दोनों पदको अग्रअङ्गुलि परस्पर मिलाने और दोनों घुटने सम्मुख जमानेपर मण्डूकासन बनता है।

२४ उत्तानमण्डूकासन।

मण्डूकासन लगा और दोनों कुहनोंसे माथा पकड़ मेढ़ककी तरह चित हो पड़नेपर यह आसन निकलता है।

२५ वृक्षासन।

वाम ऊरुपर दक्षिण पद रख पेड़की तरह भूमि पर सीधे तौरसे खड़े होनेपर वृक्षासन बनता है।

२६ गरुडासन।

उभय जङ्घा तथा ऊरुद्वारा भूमि आक्रमणपूर्वक सुस्थिर हो दोनों घुटनोंपर दोनों हाथ रखनेसे गरुडासन बैठता है।

२७ वृषासन।

दक्षिण गुल्फपर गुह्यदेश जमा और उसको वाम ओर वामपद उलटे तौरपर रख भूमि छूनेसे वृषासन बैठता है।

२८ शलभासन।

अधोमुख लेट तथा हस्तद्वय छातीपर रख उभय हस्तके तालु द्वारा भूमि छूने और दोनों पद शून्यमें आध हाथ ऊपर उठानेसे शलभासन बनता है।

२९ मकरासन।

अधोमुख लेट महीपर छाती रख और पदद्वय फैला दोनों हाथसे माथा पकड़नेपर मकरासन पड़ता है। इससे अग्नि वृद्धि पाता है।

३० उष्ट्रासन।

अधोमुख लेट दोनों पैर पीठपर ले जाने तथा दोनों हाथसे पकड़ने और उदर एवं मुख गाढ़ रूपसे आकुञ्चित करनेपर उष्ट्रासन बनता है।

३१ भुजङ्गासन।

पैरके अंगूठेसे नाभि पर्यन्त भूमिपर रख दोनों

हाथके तालु द्वारा भूमि स्पर्शपूर्वक सर्पके न्याय ऊपर की ओर मत्था उठानेसे भुजङ्गासन लगता है। इससे भूख बढ़ती और बीमारी घटती है। कुण्डलिनी शक्ति भी भुजङ्गासन मारनेसे प्रसन्न होती है।

३२ योगासन।

दोनो पैर चितकर घुटने तथा दोनो हाथ चितकर इस आसन पर रखने और पूरक द्वारा वायु खेंच कुम्भक करते हुये नाककी नोक देखनेसे योगासन बनता है। इससे अच्छीतरह योगसाधन होता है।

शास्त्रोक्त आसन दान करनेके मन्त्र यह है,—

"पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति। (श्रुति) (पहले हाथमें पानी ले) "आसनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनपरिग्रहे विनियोगः।"

(पावमें हाथका पानी डाल और कृताञ्जलि हो)

"पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वञ्च धारय मां नित्यं पवित्रं कुरु चासनम्॥" (तन्त्र)
"विंशत्य महादिव्य कुशासनमिदमुत्तमम्।
कोटिसूर्य्यप्रतीकाशं गृह्यतामासनमीश्वर॥" (पुराण)

आसनपर्णी (सं० स्त्री०) अपराजिता, किसी किस्मकी जड़ी।

आसनसोल—बङ्गाल प्रान्तके वर्धमान जिलेका ग्राम। यह अक्षा० २३° ४२´ उ० और द्राघि० ८७° १´ पू० पर अवस्थित है। यहां ईष्ट-इण्डियन-रेलवेका बड़ा ष्टेशन बना है। आसनसोलसे कितना ही कोयला रानीगञ्ज जाता है।

आसना (सं० स्त्री०) आस-युच् अण्-टाप्। ण्यास-श्रन्थो युच्। पा ३।३।१०७। १ स्थिति, उपवेशन, क़याम, रहास, बैठक। (हिं० क्रि०) २ उपस्थित रहना, होना। (पु०) ३ जीवकद्रुम, दोपहरियाका पेड़।

आसनादि (सं० पु०) आसनमादिर्यस्य, बहुव्री०। तन्त्रोक्त पूजाङ्ग उपचार। यथा,—१ आसन, २ स्वागत, ३ पाद्य, ४ अर्घ्य ५ आचमनीय, ६ मधुपर्क ७ आचमन, ८ स्नान, ९ वचन, १० आभरण, ११ गन्ध, १२ पुष्प, १३ धूप, १४ दीप, १५ नैवेद्य और १६ वन्दन।

आसनी (सं० स्त्री०) आस आधारे ल्युट्-ङीप्। १ विपणि, दुकान्। २ स्थिति, क़याम, रहास। 'आसनी विपणी स्थितयाम्।' (मेदिनी) ३ छोटा आसन, दुलीचो, तिपायी वग़ैरह।

आसन्द (सं० पु०) आसीदत्यस्मिन्, आ-सद आधारे घञ्। १ वासुदेव, परब्रह्म। २ खट्टाभेद, किसी किस्मका पलंग। 'आसन्दो वासुदेवे स्यात् खट्टाभेदे च योषिति।' (मेदिनी)

आसन्दिका (सं० स्त्री०) क्षुद्र खट्टा, पलगड़ी।

आसन्दी (सं० स्त्री०) आसद्यतेऽस्याम्, आ सद निपातनात् गौरादित्वात् ङीप्। १ लघुखट्टिका, छोटा पलंग। २ कुरसी, आराम कुर्सी।

आसन्दीवत् (सं० त्रि०) आसन्दी अस्त्यर्थे मतुप्, मस्य वत्वम्। १ आसन्दीयुक्त, जिसके पलंग रहे। (पु०) आसन्दीमान्। ग्रामविशेष। (स्त्री०) ङीप्। आसन्दीवती।

आसन्न (सं० त्रि०) आ-सद-क्त। १ निकटस्थ, नजदीक, लगा हुवा। 'समीपे निकटासन्नसन्निकृष्टसनीडवत्।' (अमर) (पु०) २ अस्तगत सूर्य, ग़ुरूब होनेवाला आफ़ताब।

आसन्नकाल (सं० पु०) आ सम्यक् सीदति यत्र; आ-सद-क्त, प्रादिसमा०। १ मृत्युकाल, मौतका वक़्त। (त्रि०) २ प्राप्त-समय, जिसके आख़िरी वक़्त आये।

आसन्नतरता (सं० स्त्री०) अधिकतर नैकट्य ज्यादा नजदीकी।

आसन्नता (सं० स्त्री०) सामीप्य, नजदीको।

आसन्नप्रसवा (सं० स्त्री०) प्राप्त-प्रसव वेदना, बच्चा देने या जननेवाली औरत।

आसन्नभूत (सं० पु०) वर्तमान भूतकाल, माज़ी-क़रीब, हालका गुज़रा हुवा ज़माना। जैसे,—मैंने कविता बनायी है, आपने लेखनी उठायी है, उसने बात चलायी है। सामान्य भूतकी क्रियाके आगे हूं, हो, है वा हैं लगानेसे आसन्नभूत बनता है।

आसन्य (वै० त्रि०) आस्ये भवः यत्। मुखभव, मुंहमें रहनेवाला।

आसन्वत् (वै० त्रि०) उपस्थित, मौजूद, हाजिर। (पु०) आसन्वान्। (स्त्री०) आसन्वती।

आसपास (हिं० क्रि० वि०) १ समीप नजदीक, इधर-उधर। "धूमके बास आसपास बगरे रहे।" (श्रीपति)

बनाया था। जहांगीर बादशाहके राजत्वकाल आसफ़ख़ान्‌को महासम्मान मिला। इनका बनाया 'शीरीन् या खुशरो' नामक एक उत्कृष्ट काव्य विद्यमान है। १६१२ ई०को आसफ़ख़ान् मर गये।

३ नूरजहान् बेगमके भाई और सुप्रसिद्ध मन्त्री एतमाद्-उद्-दौलाके बेटे। नाम अबदुल हसन रहा। सिवा आसफ़ख़ान्‌के एतक़ाद ख़ान्, एमीनुद्दौला प्रभृति इन्हें कई उपाधि मिलि थे। १६२१ ई०को एतमाद-उद्दौलाके मरनेपर बादशाह जहांगीरने इन्हें मन्त्री बनाया। इनकी कन्या अर्जुमन्द बानो बेगम या मुमताज़ महल शाहजहांको ब्याही थीं। सिवा मुमताज़ महलके शायस्ता खान्, मिर्ज़ा मसीह, मिर्ज़ा हुसेन और शाहनवाज़ख़ान् चार लड़के रहे। १६४१ ई०को १०वीं नवम्बरको आसफ़ख़ान् मरे और लाहोर नगरके सम्मुख रावी किनारे गडे।

४ आसफ़ख़ान् जाफ़र बेगके चचे और आक़ा मुल्लांटके बेटे। अकबर बादशाहके समय यह बख़्शी रहे। १५७७ ई०को गुजरातमें जीतकर आनेपर आसफ़ने अब्बास खान् उपाधि पाया था। १५८१ ई०को गुजरातमें इन्होंने शरीर छोड़ा।

आसवन्द (हिं० पु०) सूत्रविशेष, एक धागा। पटवे टून्‌में बांध इसके सहारे आभूषण गूंथते हैं।

आसमान् (फ़ा० पु०) १ आकाश, फ़लक। २ बैकुण्ठ, बिहिश्त। "लंगड़ी कहीं आसमान् पे थीमता।" (लोकोक्ति)

आसमान्‌के तारे तोडना, आसमान्‌में थेगलो लगाना देखो।

आसमान्-खोंचा (हिं० पु०) उत्‌च्च पदार्थविशेष, कोयी बहुत ऊंची चीज़। लम्बे लगे या बरहरे, ऊंचे आदमी और बहुत बड़ी नैचाले हुक्केको आसमान्-खोंचा कहते हैं।

आसमान् ताकना (हिं० क्रि०) आकाशकी ओर देखना, फ़लकपर निगाह लड़ाना।

आसमान् पर चढ़ाना (हिं० क्रि०) १ उत्कर्ष देना, बढ़ाना। २ व्याजस्तुति करना, चापलूसी देखाना, फ़ुसलाना।

आसमानपर थूकना (हिं० क्रि०) अनुचित कार्य करना, बेजा काम चलाना।

"आसमान्‌का थूका मुंहपर आवे।" (लोकोक्ति)

आसमान् पे क़दम रखना (हिं० क्रि०) अभिमान देखाना, अपनी बडायीका डङ्का बजाना।

आसमान् पे खेंचना, आसमान् पे क़दम रखना देखो।

आसमान् पे दिमाग़ होना (हिं० क्रि०) अभिमानमें चूर रखना, मनमानी करना।

"नये नवाब आसमान् पे दिमाग़।" (लोकोक्ति)

आसमान्‌में छेद होना (हिं० क्रि०) अतिवृष्टि पडना, शदीद बारिश आना, ख़ूब ज़ोरसे बरसना।

आसमान्‌में थेगलो लगाना (हिं० क्रि०) अपने कार्य-को अति निपुणतासे करना, बाटन फाडना।

आसमान्‌से गिरना (हिं० क्रि०) १ आकाशसे आना, फ़लकसे टूट पडना। २ विना श्रम प्राप्त होना, अचानक पा जाना। ३ तुच्छ समझना, क़द्र न करना।

आसमान्‌से टक्कर खाना (हिं० क्रि०) अत्यन्त विशाल होना, बुलन्दीमें सबक़त ले जाना, आकाशको चूमना।

आसमान्‌से बातें करना, आसमान्‌से टक्कर खाना देखो।

आसमानी (फ़ा० वि०) १ आकाशीय, फ़लकी। २ आकाशवर्ण, नीलगूं, आबी। ३ आकस्मिक, नागहां, अचानक। (स्त्री०) ४ छनी हुयी भाग या ताड़ी। ५ कार्पासभेद, मिस्रकी एक कपास।

आसमानी ग़ज़ब (फ़ा० पु०) दैवी अनर्थ, फ़लकसे टूटी हुयी बला।

आसमानी गोला, आसमानी ग़ज़ब देखो।

आसमानी तीर (फ़ा० पु०) १ व्यर्थ कार्य, बेफ़ायदा काम। २ आपद्, नागहां ग़ज़ब।

आसमानी थपेडा, आसमानी ग़ज़ब देखो।

आसमानी पिलाना (हिं० क्रि०) ताड़ी या छनी भाग पिलाकर मत्त बनाना, सब्ज़ीके नशेसे चूर कर देना।

आसमानी फ़रमानी (फ़ा० स्त्री०) १ अतिवृष्टि अथवा अनावृष्टिके कारण आयी हुयी आपद्, जो मुसीबत ज़्यादा बारिश होने या पानी न बरसनेसे पड़ी हो। २ लेखप्रमाण और पट्टका एक पद, दस्तावेज़ और पट्टेमें लिखा जानेवाला एक लफ़्ज़। पहले मौसम बिगड़ने और सरकारके नाजायज़ तौरपर मालगुजारी

वसूल करनेमें ज़मींदारोंको भी नुकसान उठाना पड़ता, इसी कामतकारोंसे वसूल करनेके लिये यह सफ़ज़ दस्तावेज़ और पट्टोंमें लिखा जाता था। ३ भूमि करके अंश-जैसा निरूपित अर्थदण्ड तथा उपहार, तमलीना किया हुआ सु मौना और बख़्ती। यह गढ़वालमें चलती है।

आसमुद्र आसमुद्रान् देखो।

आसमुद्रात् (सं० अव्य०) समुद्र पर्यन्त, बहरके किनारे तक।

आसम्बाध (सं० त्रि०) आ सम्बाध् कर्मणि अच्। निरुद्ध घिरा हुआ।

आसय (हिं०) आशय देखो।

आसया (हि० अव्य०) सन्निधिमें, निकट, उपस्थित होकर, साथ-साथ मिल-जुलके।

आसर (हिं० पु०) १ आगर, राक्षस, आदमखोर। २ दशमुद्रा अमर, दश रुपये। उक्त अर्थमें प्रायः कसाई इस शब्दको व्यवहार करते हैं।

आसरना (हिं० क्रि०) आश्रय ग्रहण करना, सहारा पकड़ना।

आसरा (हिं० क्रि०) १ विश्वास, एतबार, भरोसा। २ आशा, उम्मेद। "[illegible]" (लोकोक्ति) ३ रक्षा हिफ़ाज़त। ४ शरण, पनाह। ५ आश्रयदाता, सहारा देनेवाला। ६ साहाय्य, मदद। ७ काठका छरित् तथा मधुस्रोत, ढोर। यह संस्कृतके आश्रय शब्दका अपभ्रंश है।

आसरा तकना (हिं० क्रि०) प्रतीक्षा करना, राह देखना। "[illegible]

[illegible]" (गिरि)

आसव (सं० पु०) आसूयते, आ-सु कर्मणि अप्। १ अभिषव पर्यायको, सुराव। "आसवोऽभिषव" (हैम) २ अभिषवयोग्य मद्य, खोंची या गुड़की तारी शराब।

[illegible] (अमर)

"[illegible]

[illegible]" (मनु ११।४८)

३ अरिष्ट, खीमारा, घोंटी। अरिष्ट देखो। (वै०) ४ उत्तेजक सोम।

आसवद्रु (सं० पु०) १ पत्तनद्रुम, पसनीका पेड़। २ तालद्रुम।

आसवद्रुम, आसवद्रु देखो।

आसवी (सं० त्रि०) आसवपान करनेवाला, शराबखोर।

आसा (सं० स्त्री०) आ-सो अङ्। १ अन्तिका, निकट, कुछ नज़दीकी। (हिं०) २ आशा, उम्मेद। ३ असा, सोंटा, डण्डा।

आसा अहीर—दाक्षिणात्यके एक ग्वाला-सरदार। सन् ई०के १४वें शताब्द इन्होंने दाक्षिणात्यमें असीरगढ़ नामक एक दुर्ग बनाया था। प्रायः दो सहस्र पशु चर आसाके साथ रहे। असीरगढ़ सारबोंयोंके हाथका बना उससे अच्छा और मज़बूत किया है। पत्थरवाले लिये पर्वत सुदृढ़ भित्तिसे वेष्टित है। ख़ान्‌देशके मुसलमान सरदार मालिक नसीरने इन्हें धोखेसे मार असीरगढ़को अधिकार किया और किलेका काफ़ी काम तमाम बनाया। दो शताब्द बाद अकबरने असीरगढ़ और कुछ भूभागको जीत लिया था। १८१७ ई०को यह स्थान अंगरेज़ोंके हाथ लगा।

आसाढ़ (हिं०) आषाढ़ देखो।

आसात् (सं० अव्य०) निकट समीप, नज़दीक पास।

आसाद (वै० पु०) पीठोपधान मसनद गद्दी।

आसादन (सं० क्ली०) आ सद् णिच्-ल्युट्। १ अधिवासन, स्थापन, रखावो। २ आसक्तता सम्पादन मिल-मिलाप। ३ मदन, झमला। ४ प्राप्ति हासिल। ५ पूर्णकरण समाप्तियत।

आसादयितव्य (सं० त्रि०) १ आक्रमण किये जाने योग्य जिसपे हमला पड़े।

आसादित (सं० त्रि०) आ सद् णिच् क्त-इट। १ निकटो गत, नज़दीक आया हुआ। २ प्राप्त, हासिल किया हुआ। ३ आयोजित, बनाया हुआ। ४ अधिष्ठापित, रखा हुआ। ५ सम्पादित, पूरे तौरपर किया हुआ। ६ कामकेलि आसक्त, जो ऐशो-इशरतमें डूबा हो।

"[illegible]" (अमर)

आसाद्य (सं० त्रि०) आ-सद् णिच्-यत्। १ प्राप्य

हासिल होने काबिल। (अव्य०) ल्यप्। २ प्राप्त करके, पाकर। "समुद्रमासाद्य भवत्यपेया।" (रघु)

आसाधन (सं० क्ली०) प्राप्ति, पूर्णता, हासिल, कमाल।

आसान (फा० वि०) १ सरल, सीधा। "मियत माबित मञ्जिल आसान।" (लोकोक्ति) २ अबाधित, अप्रतिबद्ध, बेमुवाखजा, बेमुतालबा, जो रोका न गया हो।

आसान करना (हिं० क्रि०) १ सरल बनाना, चिकनाना, पुल बांध देना। २ स्वतन्त्रता देना, आजादी बख्शना। ३ छोड़ाना, बोझ उतारना।

आसान होना (हिं० क्रि०) सरल लगना, मुश्किल न देख पड़ना। २ बहना, धारके साथ तैरना।

आसानी (फा० स्त्री०) १ सरलता, मुश्किल न पड़नेकी हालत, बच्चोंका खेल। २ साध्यता, उपपाद्यता, उंकूपिजीरी, इमकान्। ३ स्वतन्त्रता, आज़ादी, चिकनापन। ४ सुख, आराम, चैन।

आसापाला (हिं० पु०) वृक्षविशेष, एक दरख्त।

आसाम—भारतवर्षका एक सीमान्त प्रदेश। यह बङ्गालसे उत्तर-पूर्व, अक्षा० २४° ०´ एवं २७° १७´ उ० और द्राघि० ८९° ४५´ तथा ९७° ५´ पू०के बीच अवस्थित है। क्षेत्रफल कोई ४६३४१ वर्गमील लगता है। खासी पहाड़के शिलांग नगरमें चीफ-कमिशनर रहते हैं। यहांके अधिवासी आहोम कहाते हैं। उन्हींके नामसे इस प्रान्तका नाम आसाम पड़ा है।

आसामसे उत्तर हिमालय, उत्तरपूर्व मिश्मी पहाड़, पूर्व ब्रह्मदेशका पर्वत, दक्षिण लुशाई पहाड़ तथा बङ्गालका टिपरा जिला और पश्चिम मैमनसिंह, रङ्गपुर, कोचविहारराज्य और जल्पाईगुड़ी जिला है।

मुख्य आसाम अथवा ब्रह्मपुत्रकी अधित्यका ४५० मील लम्बी और ५० मील चौड़ी समतलभूमि है। सिवा पश्चिमके बाकी तीनो ओर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ खड़े हैं। ब्रह्मपुत्रनद पूर्वसे पश्चिमको बहता है। जापसो पर्वतकी शिखा १२००० फीट ऊंची है।

आसामके पर्वतोंमें कोयला, लोहा और चूनेका काहड़ खूब होता है। पहले पहल १८८४ ई०को रेल चली थी। माकूममें मट्टीका तेल भी निकलता है। कितनी ही पहाड़ी नदियोंमें सोना पाया जाता है।

वन्य पशुवोंमें हाथी, गैंडा, चीता, बघेरा, भालू, हरिण, भैंसा और गो प्रधान हैं। आसामकी भैंस बहुत अच्छी होती है। हाथी पकड़नेका ठेका सरकार उठाती है।

आसाममें आहोम, चूटिया, नागा, खासी, गारो, मिकिर, कछाड़ी, लालुङ्ग, राभा, हाजोङ्ग, खामती, मीरी, डफला, अबर, मणिपुरी, मदही और कुकी लोग रहते हैं। तत्तत् शब्दमें विवरण देखो। वर्तमान आसाम भाषा मैथिल और बंगलासे बनी है। पहाड़ियोंमें रहनेवाली जातियां अपनी ही बोली बोलती और चाल चलती हैं। विभिन्न जातियोंके साथ विवाहप्रथा प्रचलित है।

सबसे पहले ब्रह्मपुत्र अधित्यकापर ब्राह्मणों, क्षत्रियों तथा कायस्थोंका वास हुवा। ई०के १३ वें और १४वें शताब्द कमतापुरके राजावोंने गौड़से ब्राह्मणों और कायस्थोंके ले जाकर कामरूपमें बसाया था। कमतापुर तथा कोचविहार देखो। १६वें शताब्दके प्रारम्भकाल कोचनृपति विश्वसिंह और तत्पुत्र नरनारायण द्वारा प्रतिष्ठित ब्राह्मण कामरूपी कहाते हैं। ऊपरी आसामके ब्राह्मणादि उच्चजाति विष्णुपूजक और महापुरुष शङ्करदेव, दामोदरदेव तथा हरिदेव प्रवर्तित सम्प्रदायभुक्त हैं। शङ्करदेव और दामोदरदेव देखो।

१७वें शताब्द आहोम भी गोविन्द ठाकुरको पूजते थे। निम्नप्रान्तमें शिवपूजक तान्त्रिक रहते, जो अपनेको नदीयेके ब्राह्मणोंका वंशज कहते हैं। १७वें शताब्दके समय आहोम-नृपति रुद्रसिंहने उन्हें लाकर बसाया था। सुरमा अधित्यका और सिलहटमें मुसलमान बहुत हैं।

आसाम-प्रान्त कृषिप्रधान स्थान है, वाणिज्यव्यवसायका अधिक प्रसार नहीं। मारवाड़ी यहांका माल बाहर भेजते और बाहरका माल यहां मंगाते हैं।

आसाममें चावल और सरिसों अधिक उपजता है। सिलहट तथा ग्वालपाड़ेमें सन और पहाड़ी प्रान्तमें रूयीकी खेती होती है। खासी एवं जयन्तिया पहाड़ीके नीचे आलू, नारङ्गी और तेजपात लगाते हैं। युरोपीय चायका काम करते हैं। १८२३ ई०को मिष्टर

रावर्ट ब्रूसने ऊपरी आसामके वनमें चायके पेड़ पाये थे। इसके बाद अवलेण्डने बोसके उपकारादि लोगों चायकी खेती कराना आरम्भ किया। १८३८ ई०को पहले पहल लखीमपुरमें चायका बाग लगा था। चाय देखो।

गौहाटीसे शिलङ्ग और ब्रह्मपुत्रके दक्षिण किनारे किनारे पक्की सड़क गयी है। १८७१ ई०को शिलङ्गसे चेरापूञ्जीको नयी सड़क निकली। १८८१ ई०को जोरहाट और कोकिलामुखके बीच ट्राममें चली थी। १८८४ ई०को डिब्रूगढ़ और दमदमीके बीच रेलवे निकली। इसकी शाखा माकुमको गयी थी। किन्तु आसामका प्रधान मार्ग ब्रह्मपुत्रनद ही है। प्रति सप्ताह कलकत्तेसे डिब्रूगढ़ जहाज़ आता-जाता है।

आसामका जलवायु आर्द्र है। आधी मयी माससे अक्टोबर तक वृष्टि होती है। जाड़ेमें दिसम्बर और जनवरी मास छोड़ कुहरा बहुत पड़ता है। वायु प्रायः उत्तर पूर्वसे चलता है। भूकम्प अधिक आता है। चेरापूञ्जीमें जितनी वृष्टि होती, उतनी पृथिवी पर दूसरे स्थान नहीं पड़ती। स्वास्थ्यकी दशा अस्वास्थ्यकर है। ब्रह्मपुत्र उपत्यकामें मलेरियाका प्रकोप रहता है।

१८७४ ई०को आसाम बङ्गालसे निकाल चीफ कमिश्नरके अधीन नया प्रान्त बनाया गया था। ब्रह्मपुत्र एवं सूरमा उपत्यका और मध्यस्थ पार्वत्य प्रान्त तीन प्रधान विभाग हैं। बीचमें पूर्वबङ्ग और आसाम बङ्गालसे पृथक् और एक छोटे लाटके अधीन हो गया था। किन्तु दो वर्ष बाद फिर पूर्वबङ्ग पहलेकी तरह बङ्गालमें मिला और सिलहट प्रभृतिके साथ आसाम चीफ कमिश्नरके अधीन पड़ा। प्राचीन काल कामरूपमें भगदत्त प्र, बाण प्र तथा अपरापर हिन्दुओंका राज्य रहा। प्राग्ज्योतिषपुर या गौहाटी राजधानी थी। योगिनीतन्त्रमें इसका विविध विवरण लिखा है। योगिनीतन्त्र, कामरूप तथा प्राग्ज्योतिष शब्दमें विशेष विवरण द्रष्टव्य है। गौहाटीसे तेजपुरतक प्रासादों और मन्दिरोंका जो भग्नावशेष देखनेमें आता, वही प्राचीन हिन्दू राजाओंकी क्रिया-कलाका यथेष्ट प्रमाण है। ई०के १२वें शताब्द तक भगदत्तवंशीय नरपतिओंका प्रताप अक्षुण्ण था। ई०के १५वें शताब्दमें मेचवंशका अभ्युदय हुआ। कोचविहार तथा बिजनी और सिदलीके राजा मेच वंशज मालूम पड़ते हैं। कोचविहार शब्दमें विवरण देखो।

पीछे पूर्वसे आहोम और पश्चिमसे मुसलमान कामरूपपर झपटे थे। आहोम सम्पूर्ण उपत्यकाके भीतर अपना राज्य प्रतिष्ठित करनेमें सफल हुये। सम्भवतः वह ब्रह्मदेशके मोमियट स्थानसे ई०के ७म शतकमें आये थे। ई०के १३वें शताब्द पहले पहल आहोम उपत्यकामें अधिकार जमाया। यह बढ़े और बढ़े। १२२८ ई०को उन्होंने आसाम आक्रमण किया। १४८० ई०को शुनहुमका नृपतिने सिंहासन पर बैठ हिन्दूधर्मकी दीक्षा ली। उनके बाद शुपिङ्फाने १६११से १६४८ ई०तक राज्य किया। उन्होंने शिवसागरमें शिवमन्दिर बनवा हिन्दूधर्मको अपने राज्यमें फैला दिया था। १६५० ई०को राजा जुतुमलेके सिंहासनारूढ़ होनेपर औरङ्गजेबके चतुर सेनापति मीर जुमलाने आसामको आक्रमण किया। किन्तु आहोम मुसलमानोंको मारते मारते ग्वालपाड़े तक खदेर लाये थे। आहोम राजाओंमें सबसे बड़े रुद्र सिंह रहे, जो १६९६ ई०को गद्दीपर बैठे। इसके मेच-नृपतियों और मोआमारियोंने जब गौरीनाथ सिंहको गद्दीसे उतारा तब १७९२ ई०को कुछ सिपाहियोंके साथ कप्तान वेल्सका यहां आगमन हुआ। तब ब्रह्मदेशवाले कठोर शासन करते थे। अन्तको १८२४ ई०के समय अंगरेजों तथा ब्रह्मदेशवासियोंके बीच युद्ध चला और १८२६ ई०को २४वीं फरवरीको यन्दबूकी सन्धिके अनुसार आसाम अंगरेजोंके हाथ पड़ा। निम्न विभागमें अंगरेजोंने प्रबन्ध किया, किन्तु उपत्यकाका ऊपरी अंश १८३२ ई०में पुरन्दर सिंहको सौंपा गया था। आहोम शब्दमें आहोमराजाओंका दीर्घ वृत्तान्त द्रष्टव्य है। पुरन्दर सिंहके राज्यका प्रबन्ध ठीक तौरसे कर न सकनेपर १८३८ ई०को वह अंश भी अंगरेजोंने अपने राज्यमें मिला लिया। १८५५ ई०को जो ईष्ट इण्डिया कम्पनीने बङ्गालके साथ सिलहट और ग्वालपाड़ा

दीवानी वख्शिशके मुताबिक पाया था। १८३० ई०-को राजा गोविन्दचन्द्रके मरने और कोई उत्तराधिकारी न रहनेसे कछाड़का समतल भाग भी अंगरेजोंके हाथ लगा। १८५४ ई०को तुलाराम सेनापतिके देश-पर अंगरेजी अधिकार जमा। १८६६ ई०को समागुटिङ्ग नागा पर्वतका हेड क्वार्टर बनाया गया था। १८७९-८० ई०को सामरिक अभियान भेजने और कोहिमा अधिकार करनेपर आसामी प्रान्तके मध्य हेड क्वार्टर प्रतिष्ठित किया और उत्तर कछाड़ तथा नवगामपर दुर्दान्त लोगोंका आक्रमण करना रोका गया। १८८२ ई०को सीमा निर्धारित कर अंगरेजोंने सदाके लिये नागा पर्वत अपने राज्यमें मिलाया।

आसामी (हिं० वि०) १ आसामदेशसे सम्बन्ध रखनेवाला, जो आसामसे तालुक रखता हो। (पु०) २ आसामका अधिवासी, आसाममें रहनेवाला शख्स। (स्त्री०) ३ आसाम प्रान्तकी भाषा, आसामकी बोली। आसाम तथा असामी देखो।

आसायश (फ़ा० स्त्री०) सुख, आराम, सुबीता।

आसार (सं० पु०) आ-सृ-घञ्। १ धारासम्पात, गहरी बारिश। 'धारासम्पात आसारः।' (अमर) २ प्रसरण, दौड़। ३ सैन्यकी सकल दिक् व्याप्ति, फौजका चारो ओर जमाव। आस्रियतेऽनेन, करणे घञ्। ४ सुहृद्-वल, दोस्तकी फौज। ५ द्वादश राजमण्डलके मध्यस्थ राजविशेष। 'आसारो वेगवद्वर्षे सुहृद्वलप्रसारयोः।' (हेम) द्वादशमण्डलमें युद्धके समय आत्ममण्डल, रिपुमण्डल, सुहृद्मण्डल, शत्रुमित्रमण्डल, मित्रमित्रमण्डल तथा मित्ररिपुमण्डल आगे और पार्ष्णिग्राह, आक्रन्द, आसार, आक्रन्दासार, निग्रहशक्तमध्यस्थ, अनुग्रहशक्तमध्यस्थ एवं निग्रहानुग्रहशक्त उदासीन पीछे रहता है। ६ षड्विंशति रगण द्वारा रचित दण्डक छन्दोविशेष। भारत देखो। ७ भोजन, खाना, रसद। (अ० पु०) ८ चिह्न, निशान्। ९ आयाम, चौड़ायी।

आसारण (सं० पु०) वृक्षभेद, एक दरख्त।

आसारित (सं० क्ली०) वैदिक गान विशेष।

आसाव (वै० पु०) स्तोता, तारीफ़ करनेवाला शख्स। (सायण)

आसावरी (हिं० स्त्री०) १ कपोत विशेष, किसी क़िस्मकी कबूतरी। २ रागिणी विशेष। आसावरी देखो। ३ वस्त्रविशेष, किसी क़िस्मका रेशमी कपड़ा। इसपर चांदीके तारका काम रहता है।

आसाव्य (वै० त्रि०) अभिषवणीय, दबाने काबिल।

आसिक (सं० पु०) असिः प्रहरणमस्य, ठक्। १ खड्ग द्वारा युद्धकारक, वरक़न्दाज़, तलवरया। (हिं० पु०) २ आशिक, चाहनेवाला।

आसिका (सं० स्त्री०) पर्यायेण आसनम्, आस पर्याये गवुच्-टाप्। पर्यायार्हर्णोत्पत्तिषु ण्वुच्। पा ३।३।१११। १ पर्यायक्रमका उपवेशन, बैठनेकी बारी। २ उपवेशन, बैठक।

आसिक्त (सं० त्रि०) ईषत् सम्यग्वा सिक्तम्, आ-सिच्-क्त। १ ईषद्सिक्त, कुछ-कुछ सींचा हुवा। २ सम्यक् सिक्त, अच्छीतरह सींचा हुवा।

आसिख (हिं०) आशिस् देखो।

आसिष् (वै० स्त्री०) १ आहुति, होम। २ पात्र, बरतन। ३ स्नानविशेष।

आसित (सं० क्ली०) आस् भावे क्त। क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्यगतिप्रत्यवसानार्थेभ्यः। पा ३।४।७६। १ उपवेशन, बैठक। आधारे क्त। २ उपवेशनका आधार, बैठनेकी जगह। (पु० स्त्री०) असितस्य मुनेरपत्यम्, शिवादिगणस्याकृतिगणत्वात् अण्। ३ असित मुनिका पुत्र वा कन्यारूप अपत्य। असित मुनिके अपत्य शाण्डिल्यगोत्रका प्रवर रखते हैं।

आसिद्ध (सं० त्रि) आ-सिध-क्त। राजाज्ञासे वादी द्वारा बद्ध किया हुवा, जिसे सरकारी हुक्मसे मुद्दयी क़ैद कराये। २ सम्पन्न, पूरा किया हुवा।

आसिधार (सं० क्ली०) असिधारा इवास्त्यत्र, अण्। कामुक भाव परित्याग-पूर्वक आचरण, जो बरताव इश्क़ मजाजीसे अलग हो। यदि युवा कामुकभाव छोड़ युवतीके साथ सुन्दर भर्ताकी तरह व्यवहार करता, तो वह आचरण आसिधारव्रत कहाता है।

आसिन (हिं० पु०) आश्विनमास, क्वारका महीना।

आसिनासि (सं० पु०) असिः खड्गः स इव तीक्ष्णाग्रा नासा यस्य सोऽसि नासः मुनिभेदस्तस्यापत्यम्, इञ्।

२ आयामकाञ्जिक, किसी किस्मकी कांजी। ३ रक्त-सर्षप, राई। ४ छेदभेदात्मक चिकित्साविशेष, चीर-फाड। चिकित्सा आसुरी, मानुषी और दैवी त्रिविध होती है।

आसुरीय (सं० पु०) असुरेण प्रोक्तम्, असुर-छ। १ असुर-कथित कल्पशास्त्र। (त्रि०) २ आसुरिसम्बन्धीय।

आसूत्रित (सं० त्रि०) प्रतिबद्ध, बंधा हुवा, जो हार डाले हो।

आसूदगी (फा० स्त्री०) १ शान्ति, अमन, खमोशी। २ सुख, चैन, खुशी। ३ तृप्ति, छकाहट।

आसूदा (फा० वि०) १ सुखी, स्वतन्त्र, खुश। २ तृप्त, छका हुवा। (क्रि० वि०) ३ सुखपूर्वक, आरामसे, छककर।

आसेक (सं० पु०) आ-सिच-घञ्। १ जलादि द्वारा वृक्षादिका अल्प सेचन, हलकी सिंचायी। २ सम्यक् सचेन, खासी सींच।

आसेक्य (सं० पु०) आसेकमर्हति, आ-सेक-यत्, आ-सिच्-ण्यद्वा। नपुंसक विशेष, किसी किस्मका नामर्द। पिताके स्वल्प वीर्यसे पुरुष आसेक्य होता, किन्तु सुशुक्र पीनेसे असंशय ध्वजोन्नति पाता है। (सुश्रुत)

आसेचन (सं० त्रि०) न सिच्यते तृप्यति मनोऽस्मात्, अपादाने ल्युट् स्वार्थे अण्। १ प्रिय, दिलफ़रेब, प्यारा। (क्लो०) २ सम्यक् सेचन, खासी सींच। (वै०) ३ सेचनसाधन पात्र, सींचनेका बरतन।

आसेचनक, आसेचन देखो।

आसेचनवत् (सं० त्रि०) उदराकार, उत्तान, मुजव्वफ़, खोकला, गहरा। (पु०) आसेचनवान्। (स्त्री०) आसेचनवती।

आसेदिवस् (सं० त्रि०) आ-सद्-क्वसु। १ निकटागत, नज़दीक आया हुवा। २ प्राप्त, मिला हुवा।

आसेदुषी (सं० स्त्री०) आ-सद्-क्वसु ङीप् वस्योत्व इटो निवृत्तिश्च। १ आगता, आयी हुयी औरत। २ उपस्थिता, जो औरत हाजिर हो।

आसेद्धृ (सं० पु०) आ-सिध-तृच्। विवाद विषयमें राजाज्ञासे प्रतिवादीकी गति प्रभृतिका रोधकर्ता वादी, कैद करानेवाला शख्स।

आसेध (सं० पु०) आ-सिध भावे घञ्। विवाद विषयमें राजाज्ञासे वादिकर्तृक प्रतिवादीका स्थानान्तरको गमन निवारण, हिरासत, हवालात, नजरबन्दी, कैद। आसेध चार प्रकारका होता है,—कालासेध, स्थानासेध, प्रवेशासेध और कर्मासेध। समयकी मर्यादाके निरूपणको कालासेध, किसी स्थानके प्रति निरोधको स्थानासेध, अपसरणके प्रतिकूल निषेधको प्रवेशासेध और कार्योद्योगके निबन्धको कर्मासेध कहते हैं।

आसेधक (सं० त्रि०) नियन्ता, निग्रहीता, कैद करने या हिरासतमें रखनेवाला।

आसेधनीय (सं० त्रि०) निग्रहके योग्य, जो हिरासतमें रखे जाने क़ाबिल हो।

आसेध्य, आसेधनीय देखो।

आसेब (फा० पु०) १ प्रेतबाधा, दोष, फ़ितना, बिगाड। २ नुक़सान्, हानि। ३ भय, खौफ़, डर।

आसेब उतारना (हिं० क्रि०) १ प्रेतबाधा छुड़ाना, शैतान्के साया पडनेसे पैदा हुयी बीमारीको दूर करना। २ भूतापसरण करना, शैतान्को निकाल देना।

आसेब दूर करना, आसेब उतारना देखो।

आसेब पहुंचना (हिं० क्रि०) आघात आना, चोट लगना।

आसेब पहुंचाना (हिं० क्रि०) आघात देना, चोट मारना।

आसेर (हिं० पु०) आश्रय, पनाह, क़िला।

आसेवन (सं० क्लो०) सम्यक् सेवनम्, प्रादिसमा०। नित्यवीप्सयोराभीक्ष्ण्ये। पा ८।१।१२। कार्यविशेषका प्रसक्त अभ्यास, किसी कामका मेहनती महावरा। २ पौनः-पुन्य, बार-बारका करना।

'आसेवनं पौनःपुन्यम्।' (सिद्धान्तकौमुदी)

आसेवा (सं० स्त्री०) आ-सेव-अङ्-टाप्। १ सम्यक् सेवा, खासी खिदमत। २ राक्षसी।

आसेवित (सं० त्रि०) आ-सेव-क्त-इट्। १ सम्यक् सेवित, अच्छीतरह खिदमत किया गया। २ पुनः पुनः सेवित, बार-बार खिदमत किया गया। (क्लो०) भावे क्त। ३ सम्यक् सेवा, खासी खिदमत।

आसेविन्, आसेवितिन् देखो।

आसेवितिन् (सं॰ त्रि॰) आसेवित-इनि। सुन्दर सेवाकारी, खासी खिदमत करनेवाला। (पु॰) आसेविती। (स्त्री॰) ङीप्। आसेवितिनी।

आसोज (हिं॰ पु॰—स स्वत आश्वयुज् शब्दका अप-भ्रंश) आश्विनमास क्वार।

आसौं (हिं॰ क्रि॰ वि॰) इस बरस, इमसाल।

आस्कन्द (सं॰ पु॰) आ-स्कन्द घञ्। १ उत्प्लवन उछाल कूदनी। २ आक्रमण, हमला। ३ तिरस्कार, झिड़की। ४ अश्व प्रभृतिकी आस्कन्दित नामक गति-विशेष, घोड़ेका उछाल। ५ आक्रामक, हमला मारने वाला शत्रु।

आस्कन्दन (सं॰ क्ली॰) आस्कन्दनीयम्, आ-स्कन्द भावे ल्युट्। १ युद्ध जङ्ग लड़ाई। भावे ल्युट्। २ तिरस्कार, बेइज्जती। ३ आक्रमण हमला करना। ४ उत्प्लवन, उछाल। ५ अश्वकी गति विशेष, घोड़ेका उछाल। ६ संशोषण, खासी सुखायी। ७ विनाश बरबादी।

आस्कन्दित (सं॰ क्ली॰) आ-स्कन्द णिच् क्त-इट्। १ अश्वकी गतिविशेष, घोड़ेकी कुदाई। "आस्कन्दित धौरितक रेचितं वल्गितं प्लुतम्।" (अमर) आस्कन्दित अश्वकी गतिका पञ्चम भेद है। हेमचन्द्रने तिर्यंच् काण्डमें लिखा है—अश्वकी गति धौरित, वल्गित, प्लुत, उत्तेजित और उत्तेरित पांच प्रकार चलती है। गाड़ीमें जोतनेसे घोड़ा जो चाल चलता, उसका नाम धोरितक, धौर्य, धोरण वा धारित पड़ता है। लगाम खींचनेपर घोड़ेको अगले दोनो पैर उठाने, अभिमान अथवा कारणोंसे न्याय शिक्षाकारी जो अर्थात् घोड़ेका अग्रभाग ऊपरको निकाल बढ़ानेसे मना चढ़ाने और मुखको नीचेको तर्फ सिकोड़नेसे वल्गित चलता है। पक्षी या मृगको गतिके न्याय उछल उछल कुछ स्थान छोड़ छोड़ जानेको प्लुति अथवा प्लुत कहते हैं। जिससे दौड़ना हो उत्तेजित वा रेचित है। कभी-कभी कोपसे चारो पैर उठा ऊपर एकाएक उछलने और उसीतरह चारो पड़नेसे उत्तेरित उपकण्ठ आस्कन्दित अथवा आस्कन्दितक चलता है।

आस्कन्दितक, आस्कन्दित देखो।

आस्कन्दिन् (सं॰ त्रि॰) आस्कन्दति हिनस्ति, आ-स्कन्द-णिनि। १ हिंसक, हमलावर, झपट पड़नेवाला। २ चढ़ानेवाला। ३ दाता अप् धरनेवाला। (पु॰) आस्कन्दी। (स्त्री॰) आस्कन्दिनी।

आस्क्र (सं॰ त्रि॰) आ स्कन्द-ड वेदे पृषोदरादित्वात् सुट्। १ आक्रामक हमलावर। भावे ड। २ आक्रमण, हमला।

आस्त (सं॰ पु॰) आ-अस क्षिपि क्त। १ सम्यक् क्षिप्त, अच्छीतरह फेंका हुआ।

"[illegible]" (मनु [illegible])

आस्तर (सं॰ पु॰) आ स्तृ-अप्। १ हस्तीके पीठका कम्बल, झूल। २ बिछौना चटाई। भावे अप्। ३ सुविस्तार, खासा फैलाव। ४ अस्त्रविशेष, एक हथियार। वैशम्पायनीय धनुर्वेदमें लिखा है,—आस्तर नामक अस्त्रका पाददेश अग्नियुक्त मस्तक दीर्घ, हाथ बड़ा, उदर तथा मस्तक टेढ़ा और वर्ण काला होता है। परिमाण दो हाथ रहता है। इसके द्वारा घुमाने, सिंचाने और काटने तीनो क्रियायें सम्पन्न की जाती हैं। युद्धकालमें आस्तर शत्रुओंको मार डालता है। अश्वारोही और पदाति इसे धारण करते हैं। ५ कुर्सी वगैरहके भीतरका कपड़ा।

आस्तरण (सं॰ क्ली॰) आस्तीर्यते यत्, कर्मणि ल्युट्। १ आस्तीर्यमान खट्वादि, फैलाकर बिछाया जानेवाला कालीन वगैरह। भावे ल्युट्। २ विस्तार, फैलाव। ३ पलंग, बिछौना। ४ यज्ञमें कुशका फैलाव। ५ हस्ति पृष्ठस्थ चित्रित कम्बल, हाथीकी पीठपर पड़नेवाली झूल।

आस्तरणवत् (सं॰ त्रि॰) वस्त्रसे आच्छादित, कालीन या कपड़ेसे ढका हुआ। (पु॰) आस्तरणवान्। (स्त्री॰) आस्तरणवती।

आस्तरणिक (सं॰ त्रि॰) आस्तरण प्रयोजनमस्य, आस्तरण-ठञ्। १ खटादिपर विश्राम लेनेवाला जो कालीन वगैरह रखकर आराम करता हो। २ आस्तरण साधन, बिछौनेके काम आनेवाला।

आस्तरणी (सं॰ स्त्री॰) आस्तरण-ङीप्। आस्तरणपट, कालीन वगैरह।

आस्तरणीय (सं० त्रि०) आस्तरणस्येदम्, वृद्धत्वात् छ। आस्तरण-सम्बन्धी, बिछौनेके मुताल्लिक़।

आस्तायन (सं० त्रि०) अस्ति इति अव्ययम् अस्ति विद्यमानस्य सन्निकृष्टदेशादि, पचादित्वात् फक्, अव्ययस्य टिलोपः। वर्तमान निकटवर्ती देशादि।

आस्तार (सं० पु०) आ-स्तृ-घञ्। विस्तार, फैलाव।

आस्तारपंक्ति (सं० स्त्री०) आस्तारो नाम पंक्तिः, शाक० तत्। वैदिक छन्दोविशेष। इसमें दो पंक्ति होती हैं। पहली पंक्तिके दोनो पादमें आठ-आठ और दूसरीके दोनो पादमें बारह-बारह वर्ण रहते हैं।

आस्ताव (वै० पु०) आ-स्तुवन्त्यत्र, आ-स्तु आधारे घञ्। १ यज्ञमें स्तोतृगणके स्तव करनेका स्थान। भावे घञ्। २ सम्यक् स्तव, खासी तारीफ़।

आस्तिक (सं० त्रि०) अस्ति परलोक इति मतिर्यस्य, ठक्। अस्तिनास्तिदिष्टं मतिः। पा ४।४।६०। १ ईश्वर और परलोकका अस्तित्ववादी, क़यामतको माननेवाला। २ पुराणादि पर विश्वास रखनेवाला। ३ धार्मिक, पारसा। (पु०) ४ जरत्कारु मुनिके पुत्र निरुक्त। परलोक होनेकी बात प्रथम कहनेसे उक्त मुनिका नाम आस्तिक पड़ा है। आस्तीक देखो।

आस्तिकजननी (सं० स्त्री०) आस्तिकस्य जननी ६-तत्। वासुकिकी भगिनी और जरत्कारुकी पत्नी मनसा।

आस्तिकता (सं० स्त्री०) ईश्वरमें विश्वास।

आस्तिकत्व (सं० क्ली०) आस्तिकता देखो।

आस्तिकपन (हिं० पु०) आस्तिकता देखो।

आस्तिकमति (सं० पु०) उत्तमवैद्य, बढ़िया तबीब।

आस्तिकार्थद (सं० पु०) आस्तिकाय अर्थं ददाति, आस्तिक-अर्थ-दा-क। जनमेजय। इन्होंने आस्तिक मुनिके कहनेसे तक्षकको विनाशसे बचाया था।

आस्तिक्य (सं० क्ली०) आस्तिकस्य भावः, यक्। पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्। पा ५।१।१२८। आस्तिकता, परलोक स्वीकार, उबूदियत, पारसायी।

आस्तीक (सं० पु०) वासुकिकी भगिनी मनसाके गर्भसे उत्पन्न जरत्कारु मुनिके पुत्र। वासुकिका ज्ञातिवर्ग मातृशापसे अभिभूत हुवा था। उन्होंने उक्त शाप छोड़नेके लिये महात्मा जरत्कारुको अपनी भगिनी प्रदान की। सम्प्रदानसे पूर्व ही जरत्कारु मुनिने कहा था,—दे दीजिये, किन्तु उनके भरण-पोषणका भार हम उठा नहीं सकते; फिर तुम्हारी भगिनी यदि हमारे असमत कार्य करेंगी, तो उसी समय छोड़ दी जायेंगी। वासुकिने सब बात मानकर भगिनीको मुनिके साथ व्याह दिया। अनन्तर मुनिके सहवाससे उनके गर्भ रह गया। एकदा महर्षि निद्रित थे। नागभगिनीने देखा, कि सूर्य अस्त होता और स्वामीको सायं क्रियाका समय बीता जाता था। ऋषि भयानक रागी रहे। जगानेसे कहीं छोड़ कर चले जानेका डर था। किन्तु उन्होंने धर्मलोपकी अपेक्षा अन्य दुःखको तुच्छ समझ जरत्कारुको जगा दिया। ऋषिने उठकर कहा था,—भद्रे! तुमने अप्रिय कार्य किया है, सुतरां यहां मेरा रहना अब किसी प्रकार हो नहीं सकता, तुम्हें और तुम्हारे भाईको मेरे जानेसे दुःखित न होना चाहिये। जरत्कारु मुनि यह कहकर चलते बने। वासुकिकी भगिनीने जाते समय पूछा था—आप तो चल दिये, वासुकिने जिसके लिये मुझे आपको सौंपा था, उसका क्या हुवा। मुनिने उत्तर दिया,—अस्ति अर्थात् हमारे औरससे तुमने गर्भधारण किया है। कुछ दिनके बाद उनके पुत्र उत्पन्न हुवा। यह पुत्र सर्पभवनमें सर्पकर्तृक प्रतिपालित किया और अपने बुद्धि बलसे भृगुपुत्र च्यवनके निकट समस्त शास्त्र पढ गया। गर्भमें रहते ही पिताके 'अस्ति' कहकर चले जानेसे आस्तीक नाम पड़ा है। इन्होंने जनमेजयके सर्पध्वंसयज्ञसे सर्पगणको बचा लिया था। आस्तीकमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः, अण्। २ आस्तीक मुनिके जीवनचरित पर महाभारतान्तर्गत पर्व विशेष।

आस्तीक्य, आस्तिक्य देखो।

आस्तीन् (फा० स्त्री०) परिच्छदका पिप्पल, पोशाकका खरीता, बांह।

आस्तीन्का सांप (हिं० पु०) गृहशत्रु, भीतरी दुश्मन्।

आस्तीन् चढ़ाना (हिं० क्रि०) १ भय देखाना, धमकाना। २ उपस्थित होना, तैयारी करना।

घास्तीर्ण (स॰ त्रि॰) घा-स्तृ क्त। विस्तीर्ण, विस्तारित फैला हुआ।

घास्तृत, घास्तीर्ण देखो।

घास्तेय (सं॰ त्रि॰) घस्तीत्यव्यय तत्र विद्यमाने भवम्, ठञ्। ...। १ विद्यमान पदार्थजात मौजूदा चीज़से पैदा। (क्ली॰) घस्तेय असतेय तस्य भावः, घञ्। २ घचौर्य, साफ़कारी, चोरी न करनेकी बात।

घास्त्र (सं॰ त्रि॰) घस्त्रस्येदम्, घञ्। घस्त्रसम्बन्धी, हथियारके मुताबिक़।

घास्त्रबुद्ध (सं॰ पु॰) घस्त्रबुद्धके पुत्र।

"स घस्त्रिमस्त्राबुद्धात्।" (भाग॰ ...)

घास्था (सं॰ स्त्री॰) घा-स्था-घङ्-टाप्। १ घालम्बन, सहारा। २ घपेक्षा, लिहाज़। ३ यत्न, एतक़ाद। ४ स्थिति, हालत। ५ यत्न, तदबीर। ६ घादर, इज्ज़त। घास्थीयतेऽत्र, घाधारे घङ्-टाप्। ७ सभा, मजलिस। "..." (...)

घास्थागम (स॰ पु॰) जल, पानी।

घास्थाद (सं॰ त्रि॰) स्थितिकारी, खड़ा रखने या चढ़ जानेवाला। "..." (भाग॰ ...) "..." (...)

घास्थान (स॰ क्ली॰) घास्थीयतेऽत्र, घा-स्था घाधारे ल्युट्। १ सभा, मजलिस। २ विश्रामस्थान, घाराम गाह, बैठनेकी जगह। भावे ल्युट्। ३ घास्था, एतक़ाद। ४ यत्न, उद्योग।

घास्थानमण्डप (सं॰ क्ली॰) सभाभवन, मजलिसका मकान्।

घास्थानसिंह—कन्नौजके सुमतिह नरेश जयचन्द्र वंशज सियाजीके पुत्र। यह घपने भाई सोनिङ्गजी और घजयदेवजीके साथ घबहलवाड़े पाटनको घोर कुछ राज्य पानेके लिये कन्नौजसे निकल पड़े थे। पालीमें जाकर पल्लीवाल ब्राह्मणोंका राज्य देखा। किन्तु घरवको घक्तके लोग उन्हें बहुत सताया करते थे। लोगोंके प्रार्थना करनेपर इन्होंने रक्षा करनेका वचन दिया। घास्थानसिंहने मीनोंके राजा कावाको मार घर देनेका विचार किया था। किन्तु लोगोंने कहा, घाप यहीं रहें, घापके चले जानेसे मीन हमें फिर सतायेंगे। इन्हें दुर्ग बनानेको बहुत भूमि मिली थी। पल्लीवालोंको निर्बल देख घास्थानसिंहने राज्य घपने हाथ लेना चाहा। एक दिन ब्राह्मणोंको जितने हो पल्लीवाल बधकर इन्होंने राज्यपर घपना घाधिपत्य जमाया था। फिर थोड़े दिन बाद घास्थानसिंह इडर घोड़े विवाह करने गये। वहां गोहिल वंशज विथिवमेन सूपति और डाभी जातिके भगवन्तराय नामक राजपूत मन्त्री रहे। मन्त्रीने राज्य घधिकार करनेके लिये घास्थानसिंहसे साहाय्य मांगा और घाधा भाग देनेका वादा किया। घास्थानसिंहका विवाह होते समय गोहिलों और डाभियों दासोंको राठोरोंने घधिक मदिरा पिलायी थी। जब लोग घचेतन हुये तब सबके मस्तक काटे गये। ईड़का राज्य पाने पीछे इन्होंने खोड़ये राज्यके भी १४० ग्राम छीन लिये थे। घन्तको इनकी मृत्यु हो गयी।

घास्थानी (सं॰ स्त्री॰) घा-स्था ल्युट् घास्थान-ङीप्। सभा मजलिस। '...' (...)

घास्थापन (स॰ क्ली॰) घा-स्था णिच्-पुक्-ल्युट्। १ सम्यक् स्थापन घाली रखायी। करणे ल्युट्। २ सुश्रुतोक्त प्रदीपहकर्मीय निरूहवस्ति घो तैल घनेरकको पिचकारी। निरूह देखो।

घास्थापनोपवर्ग (स॰ पु॰) घास्थापनयोग्य घष्ट विंश महाकषायका गण, पिचकारी देने लायक़ घचीस चक्रोंका चोचोंका जथोरा। त्रिवृत् बिल्व पिप्पली, कुष्ठ, सर्षप, वचा, इन्द्रयव, शतपुष्पा, यष्टिमधु और मदनफल घास्थापनोपवर्गमें गिना जाता है। (चरक)

घास्थापित (स॰ त्रि॰) घा-स्था-णिच् पुक् क्त-ट। सम्यक् स्थापित घच्छीतरह रखा हुआ।

घास्थाय (सं॰ घव्य॰) १ घाश्रयपूर्वक सहारेसे। २ घारोहण करके, चढ़कर। ३ खड़े होते।

घास्थायिका (सं॰ स्त्री॰) घा स्था घालयर्निर्देशे घञ्, स्त्रीत्वात् टाप् घत इत्वम्। घास्थान, सभा, मजलिस।

घास्थायी—सङ्गीतमें किसी रागालाप किंवा गीतका प्रथम चरण या मुखबन्ध, टुकड़ा, टेक। घास्थायी,

अन्तरा, सञ्चारी और आभोग चार चरण रहनेसे आलाप वा गीत सम्पूर्ण समझा जाता है।

आस्थित (सं० त्रि०) आ-स्था-क्त, इकारोऽन्तादेशः। "द्यतिस्यतिमास्थामि ति किति।" पा ७।४।४०। १ अवस्थित, ठहरा हुवा। २ प्राप्त, हासिल किया हुवा। ३ आरूढ़, चढ़ा हुवा। ४ आश्रित, चिपटा या लिपटा हुवा। ५ विस्तृत, फैला हुवा। ६ अभ्यास डालनेवाला, जो महारत बढ़ा रहा हो।

आस्थिति (सं० स्त्री०) आ-स्था क्तिन्। १ सम्यक् स्थिति, खासा ठहराव। २ निवास, रहास।

आस्थेय (सं० त्रि०) आ स्था-कर्मणि यत्। आश्रयणीय, सहारा लिये जाने क़ाबिल, जो काम दे सकता हो।

आस्नात (वै० त्रि०) आ-स्ना-क्त। कृतस्नान, गुस्ल किये हुवा, जो नहा चुका हो।

आस्नान (सं० क्ली०) आ-स्ना-ल्युट्। १ प्रचालन द्वारा शुद्धि, धोनेसे होनेवाली सफ़ाई। २ सम्यक् स्नान, खासा गुसल। ३ स्नानगृह, हम्माम, नहानेका घर।

आस्पद (सं० क्ली०) आ-पद-अच्-सुट्। "आस्पदम्प्रतिष्ठायाम्।" पा ६।१।१४६। १ प्रतिष्ठा, इज्ज़त। २ पद, दरजा। ३ स्थान, जगह। ४ कृत्य, काम। ५ प्रमुत्व, मलकयी। ६ अवलम्बन, सहारा। ७ विषय, बात। ८ अवस्थान, ठहराव। ९ लग्नसे दशम स्थान। यह शब्द प्रायः समासान्तमें आता है, जैसे—अहङ्कारास्पद। 'आस्पदन्तु पदे कृत्ये।' (विश्व)

आस्पन्दन (सं० क्ली०) आ-स्पन्द-ल्युट्। १ ईषत्-कम्पन, थोड़ी कंपकंपी। २ अतिकम्प, गहरी कंपकंपी।

आस्पर्धा (सं० स्त्री०) अहमहमिका, विजिगीषा, हिर्स, हौस।

आस्पर्धिन् (सं० त्रि०) विजिगीषु, प्रतिस्पर्धी, हमसरी-जो, होड़ लगानेवाला।

आस्पर्श (सं० पु०) सम्पर्क, संयोग, लम्स, लगाव।

आस्पर्शतः (सं० अव्य०) सम्पर्क द्वारा, संयोग वश, लगावसे।

आस्पात्र (वै० क्ली०) आस्यरूपं पात्रम्। मुखरूप पात्र, मुंह-जैसा बरतन।

आस्फाल (सं० पु०) आ, स्फल चाले णिच्-अच्, स्फुल-घञ् स्फालादेशो वा। १ आघात, प्रहार, फटकार, रगड़। २ उत्क्षेपण, फड़फड़ाहट। ३ करिकर्णास्फालन, हाथीके कानकी फड़फड़ाहट।

आस्फालन (सं० क्ली०) आ-स्फल चाले णिच्-ल्युट्। १ ताड़न, मार, फटकार। २ चालन, फड़फड़ाहट। ३ आटोप, सूजन। ४ दम्भ, गुस्ताखी, घमण्ड।

आस्फालित (सं० त्रि०) आ-स्फल-णिच्-क्त। १ चालित, फड़फड़ाया हुवा। २ आघट्टित, रगड़ा हुवा। ३ ताडित, झाड़ा या फटकारा हुवा।

आस्फुजित् (सं० पु०) आस्फुलति, आ-स्फुल-ड; तं जयति, जि-क्विप्-तुक्। शुक्राचार्य, जोहरा, नाहीद, लोली-फलक।

आस्फोट (सं० पु०) आ-स्फुट णिच् कर्तरि अच्। १ अर्कवृक्ष, मदारका पेड़। २ गिरिज पीलु, किसी क़िस्मका अखरोट। ३ मल्लका बाहुशब्द, पहलवानोंके ताल ठोंकनेकी आवाज़। ४ संघर्षजात शब्द सकल, रगड़की आवाज़।

आस्फोटक (सं० क्ली०) आ-स्फुट-णिच्-ण्वुल्। १ पर्वतका पीलु विशेष, जङ्गली अखरोट। (त्रि०) २ बाहु शब्दकारी, ताल ठोंकनेवाला।

आस्फोटन (सं० क्ली०) आ-स्फुट-णिच् भावे ल्युट्। १ प्रकाश, शिगुफ़्तगी, फैलाव। २ बाहुशब्द, ताल ठोंकनेकी आवाज़। ३ शूर्पादि द्वारा धान्यादिका वितुषीकरण, फटकार, झाड़। ४ चालन, फड़फड़ाहट। ५ कम्पन, कंपकंपी। ६ नियमकरण, मोहरबन्दी।

आस्फोटनी (सं० स्त्री०) आस्फोट्यते छिद्रीक्रियते अनया, करणे ल्युट्-ङीप्। वेधनिका, मसकव, बरमी।

आस्फोटा (सं० स्त्री०) नवमल्लिका, नेवारका फूल।

आस्फोटित (सं० त्रि०) आ-स्फुट-णिच् कर्मणि क्त। १ विदलित, रगड़ा हुवा। भावे क्त। २ बाहु प्रभृतिके ताल ठोंकनेका शब्द प्रकाश, जो आवाज़ ताल बजानेसे आती हो।

आस्फोत (सं० पु०) आ-स्फुट-अच्, पृषोदरादित्वात् टस्य तत्वम्। १ रक्तार्कवृक्ष, लाल मदारका पेड़। २ कोविदार वृक्ष, कचनारका दरख़्त। ३ भूपलाश वृक्ष, टेसूका पेड़।

आस्फोतक आस्फोत देखो।

आस्फोतका, आस्फोता देखो।

आस्फोता (सं० स्त्री०) आ स्फुट् अच्, पृषोदरादित्वात् टाप्। १ अपराजिता नामौषध। 'आस्फोता गिरिकर्णी स्याद्विष्णुक्रान्तापराजिता।' (शब्दरत्ना) २ लताविशेष आपरमाली बेल। ३ सारिवा अनन्तमूल। ४ वाहमल्लिका, जङ्गली चमेली। ५ श्वेत सारिवा, सफेद अनन्तमूल। ६ नवमल्लिका, सेवार।

आस्माक (सं० त्रि०) अस्माकमिदम् अस्मद् अण् अस्माकादेशः, विलादायणो वृद्धि। तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ। पा ४।३।२। अस्मत् सम्बन्धी, हमारा।

आस्माकीन (सं० त्रि०) अस्माकमिदम् खञ् अस्माकादेश विलादायणो वृद्धि। युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च। पा ४।३।१। अस्मत् सम्बन्धी हमारा।

आस्य (सं० क्ली०) अस्यते क्षिप्यते भक्ष्यो यत्र अनेन वा अस आधारे वा करणे ण्यत्। १ मुख मुह। 'चन्द्रमस्ते तव सुभ्रूलतं कान्तं मुखम्।' (भट्ट) २ आकृति, चेहरा। ३ मुखांशविशेष मुहका एक हिस्सा। इससे अच्चारण होता है। ४ छिद्र दराज। (त्रि०) आस्ये भवम्। ५ मुखसम्बन्धी, मुहके मुताल्लिक।

आस्यदेश (सं० पु०) मुखमध्य, मुंहका बिचला।

आस्यन्दन (सं० क्ली०) आ-स्यन्द भावे ल्युट्। १ ईषत् क्षरण, थोड़ा बहाव। २ अल्प गमन, हलकी मसाली।

आस्यन्दनवत् (सं० त्रि०) वह चलनेवाला, जो गमनमें लगा हो। (पु०) आस्यन्दनवान्। (स्त्री०) आस्यन्दनवती।

आस्यन्धय (सं० त्रि०) मुखाप्यताप्यादक मुखचुम्बक, चुम्बनकारी, बाला मिट्ठी या बच्चों लेनेवाला जो किसीका मुह चूमता हो।

आस्यपत्र (सं० क्ली०) आस्येनेवोपमितं पत्रमस्य, बहुव्री०। पद्म, मुह जैसे पत्ते रखनेवाला कमल।

आस्यपुष्प (सं० पु०) श्वेतकिंकिरी वृक्ष, सफेद कटसोरा।

आस्यफल (सं० पु०) श्वेतधुस्तूरक, सफेद धतूरा।

आस्यलाङ्गल (सं० पु०) आस्ये मुखे लाङ्गलमिव भूविदारकं यस्य बहुव्री०। १ शूकर, सूवर। २ वन्य शूकर, जङ्गली सूवर।

आस्यलोम, आस्यलोमन् देखो।

आस्यलोमन् (सं० क्ली०) आस्यभवं लोम, मध्य० तत्। श्मश्रु, दाढ़ी मूछ।

आस्यवैरस्य (सं० क्ली०) मुखविसाद, मुहका फीकापन।

आस्यशाखोट (सं० पु०) गुल्मविशेष किसी किस्मका झाड़। यह बातको बढ़ाता और पित्त, कफ, कृमि, पाण्डुता ज्वर तथा आमयको घटाता है। (वैद्यनिघण्टु)

आस्या (सं० स्त्री०) आस भावे क्यप् टाप्। १ स्थिति, गतिराहित्य, मुकुनत, रहाव। २ विश्राम, आराम-अवसर। ३ उपवेशन, बैठक। ४ निरुद्योमोपवेशन बेकाम बैठनेकी हालत।

आस्यासव (सं पु) आस्यासव द्रव। लाला, लुआब दहन, थूक, राल, थूक।

आस्र (सं० क्ली०) अस्रमेव, स्वार्थे अण्। रुधिर, रक्त, खून, लहू।

आस्रप (सं० पु०) आस्रं रुधिरं पिबति, उपपदसा०। १ राक्षस खून पीनेवाला मनुष्य। मूलानक्षत्रका देवता भी राक्षस होता है। २ जोंक।

आस्रव (सं० पु०) आस्रवति मनोऽनेन, करणे अप्। १ क्लेश, आफत तकलीफ। २ प्रस्राव बहाव। ३ भक्त तण्डुलका फेन, भात पकानेका उबाल। ४ जैन मतसिद्ध पदार्थ विशेष। इससे जीव मुक्तिलाभ करता है। इन्द्रियको संयमसे रखना और सत्कर्ममें लगाना प्रमास्रव कहाता है। आस्रव देखो।

आस्रस्त (सं० त्रि०) पतित, गिरा-पड़ा, जो छूट गया हो।

आस्राय (सं० त्रि०) आस्रं वेदयति, आस्र अण्-अध्याप। वृक्षविदाम् बहु वेदमानम्। पा ४।१।३८। आस्रप्रापक खून बहनेका हाल बता देनेवाला।

आस्रायण (सं० पु०) आस्राय फञ्। आस्रदायकका पुत्र वा अपत्यादय पथत्व।

आस्राव (सं० पु०) आ स्रवति रुधिरमस्मात् आ स्रु अपादाने अच्। १ घाव, जखम। भावे अप्। २ सम्यक् क्षरण, बाला बहाव। ३ मुखलाला, लुआब

दहन, राल, थूक। ४ क्लेश, तकलीफ़। (त्रि०) आस्रावोऽस्त्यस्य, अर्श आदित्वात् अच्। ५ सम्यक् चरणयुक्त, खूब बहनेवाला।

आस्राविन् (सं० त्रि०) आस्रवति, आ-स्रु-णिनि। १ मदादि चरणशील, जिससे शराब वगैरह टपके। आस्रावोऽस्यास्तीति, अस्त्यर्थे इनि। २ चरणयुक्त, बहनेवाला। (स्त्री०) आस्राविनी।

आस्रावी (सं० पु०) १ अश्वके पादरोगका भेद, घोड़ेके पैरकी एक बीमारी। क्लेदस्रवतल अर्थात् पैरके तलवेमें ज़ख्म रखनेवाले अश्वको आस्रावी समझना चाहिये। (जयदत्त) २ हस्ती, मस्त हाथी।

आस्वनित (सं० त्रि०) आ-स्वन-क्त इट्। स्वयमलर-संघुषास्वनाम्। पा ७।२।२८। शब्दित, पुरशोर, आवाज़ देनेवाला।

आस्वाद (सं० पु०) आ-स्वद कर्मणि घञ्। १ मधुरादि रस, मीठा वगैरह ज़ायका। २ शृङ्गारादि रस, इश्क वगैरहका मज़ा। भावे घञ्। ३ रसका अनुभव, ज़ायक़ा लेना। शृङ्गारादिसे मनमें आनन्द वा दुःख उपजनेको आस्वाद कहते हैं। (त्रि०) ४ रस लेनेवाला, जिसे ज़ायक़ा आये।

आस्वादक (सं० त्रि०) आ-स्वद-ण्वुल्। आस्वादन-कर्ता, ज़ायक़ा लेनेवाला। (स्त्री०) आस्वादिका।

आस्वादन (सं० क्ली०) आ-स्वद भावे ल्युट्। आस्वाद, ज़ायक़ा लेना।

आस्वादनीय (सं० त्रि०) आस्वाद्य, चखने क़ाबिल।

आस्वादवत् (सं० त्रि०) आस्वाद चातुरर्थिको मतुप्। आस्वादयुक्त, रसीला, ज़ायक़ेदार।

आस्वादित (सं० त्रि०) आ-स्वद-णिच्-क्त-इट्। गृहीत-आस्वादन, ज़ायक़ा लिया गया। २ भुक्त, खाया गया।

आस्वाद्य (सं० त्रि०) आ-स्वद-णिच्-यत्। १ आस्वाद-योग्य, चख जाने लायक़। (अव्य०) ल्यप्। २ आस्वादन करके, ज़ायक़ा लेकर।

आस्वान्त (सं० त्रि०) आ-स्वन-क्त दीर्घश्च। शब्दित, पुरशोर, जिससे आवाज़ निकले।

आह (सं० अव्य०) आ-हन-ड। १ क्षेपपूर्वक, फेंककर। २ नियोग द्वारा, लगावसे। ३ दृढ़ सम्भावनामें, पक्की उम्मीदपर। ४ विषादपर, रञ्जके साथ।

'आह क्षेपे नियोगे च दृढसम्भावनेऽप्ययम्।' (शब्दाब्धि)

(हिं० अव्य०) ५ हाय, अफ़सोस। (स्त्री०) ६ दीर्घश्वास, ठण्डी सांस।

"तुलसी आह ग़रीबकी हरिसों सही न जाय।
मुयी खालकी फूंक सी सार भसम हो जाय।" (तुलसी)

७ साहस, हिम्मत।

आहक (सं० पु०) आहन्ति, आ-हन-ड, ततः संज्ञायां कन्। नासाज्वर, नाक सूजनेसे आनेवाला बुख़ार।

आह करना (हिं० क्रि०) दीर्घश्वास लेना, उसास छोड़ना, ग़मगीन होना।

आह खेंचना, आह करना देखो।

आहङ्कार्य, अहङ्कार देखो।

आहट (हिं० स्त्री०) पादन्यासका शब्द, पैरकी खटक।

आहट लेना (हिं० क्रि०) सचेत रहना, ख़बरगीरी रखना।

आहत (सं० त्रि०) आ-हन-क्त। १ ताड़ित, मार खाये हुवा। २ हत, ज़ख्मी, जो मार डाला गया हो। ३ गुणित, ज़रब दिया हुवा। ४ ज्ञात, जाना हुवा। ५ मृषार्थक, झूठ कहा हुवा। (पु०) ६ ढक्का, ढोल। (क्ली०) ७ वस्त्रविशेष, नया कपड़ा। वशिष्ठके मतसे अल्प प्रचालित, नूतन और न पहने हुये वस्त्रको आहत कहते हैं। यह वस्त्र सकल कार्यमें लग सकता है। ८ पुरातन वस्त्र, पुराना कपड़ा। वारम्बार रजकका आघात प्राप्त होनेसे पुरातन वस्त्रका नाम आहत पड़ा है।

'आहतं गुणिते चापि ताड़िते च मृषार्थके।
स्यात् पुरातनवस्त्रेऽपि नववस्त्रे च नाऽहमे॥" (मेदिनी)

आहतलक्षण (सं० त्रि०) आहतमभ्यस्तं लक्षणं यस्य, बहुव्री०। शौर्यादि गुण द्वारा प्रसिद्ध, अच्छी सिफ़तके लिये मशहूर।

आहति (सं० स्त्री०) आ-हन-क्तिन्। १ शब्दहेतु

आहरसेना शब्दसे भी तत्तद्वस्तुके आहरणार्थं आदेश आता है।

आहरी (हिं० स्त्री०) १ लघु तडाग, छोटा तालाव। २ आलवाल, थाला। ३ कूपके समीपका जलाशय, कुयेंके पासका हौज़। इसमें पशु पानी पीते हैं।

आहर्त्तृ (सं० वि०) आ-हृ-तृच्। १ उपार्जक, पैदा करनेवाला। २ आयोजक, इकट्ठा करनेवाला। ३ आनयनकर्ता, लानेवाला। ४ अनुष्ठानकर्ता, काम शुरू करनेवाला। ५ हरण करनेवाला, जो छीन लेता हो। (पु०) आहर्ता। (स्त्री०) आहर्त्री।

आहलक् (वै० अव्य०) आस्फोटन शब्दके साथ, फटकारकर।

आहला (हिं० पु०) जलप्लावन, सैलाव, पानीकी वाढ़।

आहलीव (सं० क्ली०) द्रव्यविशेष, एक चीज़। गुजरातमें इसे आमालबीज कहते हैं। आहलीव उष्ण एवं तिक्त होता और त्वग्दोष, वात तथा गुल्मको नाश करता है। (वैद्यक निघण्टु)

आहव (सं० पु०) आह्वयन्ते परस्परं युद्धार्थमरयो यत्र, आ-ह्वे आधारे अप् सम्प्रसारणं गुणश्च। पाणि सूत्रे। ३।३।७३। १ युद्ध, लड़ाई। २ समराह्वान, ललकार। आह्वयन्ते यज्ञद्रव्याण्यत्र, आ-हु आधारे अप्। २ यज्ञ, नियाज। 'आहव समरे यज्ञे।' (हेम)

आहवन (सं० क्ली०) आहूयते हवनीय घृतायत्र, आ-हु आधारे ल्युट्। १ यज्ञ, कुरवानी। भावे ल्युट्। २ सम्यक् होम, अच्छीतरह नयाज देनेका काम।

आहवनीय (सं० पु०) आहूयते प्रक्षिप्यते हविरत्र, आ-हु आधारे अनीयर्; आहवन-मर्हति छ वा। १ यज्ञका अग्निविशेष, नयाज़की आग। यह गार्हपत्य अग्निसे लिया और होमादिके निमित्त प्रस्तुत किया जाता है। २ यज्ञमें जलनेवालोंसे पूर्वीय अग्नि। 'दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽग्नयः।' (अमर) (त्रि०) कर्मणि अनीयर्। ३ होतव्य, नयाज़में लगने लायक़।

आहवनीयक, आहवनीय देखो।

आहसर्द (फ़ा० स्त्री०) ठण्डी सांस, अफसोसके साथ सांसका लेना।

आहा (सं० स्त्री०) वणिक् द्रव्यभेद, एक चीज़। (हिं०-अव्य०) २ आश्चर्य, ताज्जुब, अरे। ३ हर्ष, क्या ख़ूब!

आहार (सं० पु०) आ-हृ-घञ्। १ आहरण, लेवायी। २ नियुक्ति, नगायी। ३ द्रव्यगलाधःकरण, खवायी। "आहारनिद्रा भयमैथुनञ्च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।" (हितोपदेश) ४ भोजनद्रव्य, खानेकी चीज़। भोजनद्रव्य द्रव और अद्रवभेदसे द्विविध होता है। फिर इसमें भी प्रत्येक स्वभावगुरु, मात्रागुरु और संस्कारगुरु भेदसे त्रिविध है। प्राणियोंका मूल आहार ही ठहरता है। क्योंकि इसमें बल, वर्ण और ओजःकी वृद्धि होती है। आहार षट् रसमें आयत्त रहता है। स्थिति, उत्पत्ति और विनाशमें ब्रह्मादि भी आहार करते हैं। इसमें ही अतिवृद्धि, बल, आरोग्य, वर्ण और इन्द्रिय-प्रसादादि मिलता है। फिर आहारके वैषम्यसे अस्वास्थ्य आता है। (सुश्रुत) आहार बलकृत्, सद्यः प्रीतिप्रद तथा देहधारक होता और ओजः, तेजः, स्वरोत्साह, धृति, स्मृति एवं मतिको बढ़ाता है। (मदनपाल) प्राणानिलसे प्रेरित हो आहार पहले आमाशयमें पहुंचता और माधुर्य, फेनभार तथा षट् रसको प्राप्त करता है। पाचक पित्तसे विदग्ध होनेपर यह अम्ल पड़ जाता और पीछे समान मरुत् द्वारा ग्रहणीमें पहुंचता है। ग्रहणीमें आहार पकता और कोष्ठवह्निसे कटु पड़ता है। सम्पक्व रहनेसे रस और अपक्व रहनेसे यह आम बनता है। फिर वह्निबलसे आहारमें माधुर्य और स्निग्धतादि गुण आता है। सम्यक् पक्व होनेसे आहार अखिल धातुको परिष्कार करता और अमृतोपम ठहरता है। किन्तु रस मन्दवह्निसे विदग्ध, कटु तथा अम्ल होनेसे विषभावको पहुंचता और रोगसङ्कर उपजाता है। (शार्ङ्गधर) ५ अन्न, अनाज। ६ अर्धाहार, आधा खाना। ७ शब्दादि विषयक ज्ञान, आवाज़ वग़ैरहका इल्म। ८ आहरणकारी, उठा ले जानेवाला। ९ राजपूतानेका एक प्राचीन नगर। पहले आहार नगरमें बड़ी समृद्धि रही। किन्तु अब उसका ध्वंसावशेष मात्र अवशिष्ट है। जैनोंके अति प्राचीन मन्दिर आज भी पड़े हैं। ९ युक्तप्रान्तके बुलन्दशहर ज़िलेकी एक पुरानी बस्ती।

यहां अनेक देवालय विद्यमान हैं। पास ही महानदी बहती है। जिसमें हो लोग स्नान करने आते हैं। चोरङ्गजेबके समय आहारके नामक ब्राह्मणोंने बाध्य हो इसलाम धर्मको ग्रहण किया था।

आहारक (सं॰ त्रि॰) आहरणकारी, लानेवाला।

आहारपाक (स॰ पु॰) आहारस्य भुक्तद्रव्यस्य पाकः रसादिभावेन परिणामः। वैद्यशास्त्रोक्त भुक्त अन्नादिका रसादिके रूपमें परिणामरूप पाकविशेष, खानेका हाज़िमा। पाचन देखो।

आहारविरह (स॰ पु॰) भोजनकी न्यूनता, खानेकी तकलीफ, रोटीका लाला।

आहार विहार (स॰ पु॰) भोजन-पान खाना-खेलना। आहार विहार बिगड़नेसे कोष्ठाग्नि शुष्क जाता और ज्वर उत्पन्न होता है।

आहारशुद्धि (सं॰ स्त्री॰) आहारस्य भक्ष्यादेः शुद्धिः, ६ तत्। १ भक्ष्य पदार्थका शुद्धियुक्त भोजन, खानेकी सफायी। २ दुष्ट आहार जन्य दोषनिवारणार्थ शुद्धि-रूप प्रायश्चित्त, बुरे खानेसे पैदा हुये ऐबको मिटानेके लिये किया जानेवाला प्रायश्चित्त।

आहारशोषण (सं॰ पु॰) लघुक्षीरक, काला जीरा।

आहारसम्भव (स॰ पु॰) आहारात् भुक्तादेः सम्भवति, आहार सं-भू-अच्। आहार-पाकज रस धातु, खानेसे हाज़मेसे बना हुआ जिस्मका केलूस।

आहारस्थान (सं॰ क्ली॰) जिह्वादि देश, खानेकी जगह। सभी आदमीको आहार, निहार और विहार-योग्य निर्जनमें करना चाहिये। (बाग्भट)

आहारार्थिन् (स॰ त्रि॰) आहारार्थं भिक्षाटन या अन्वेषण करनेवाला जो खानेको ढूंढ़ या तलाशमें हो। (पु॰) आहारार्थी। (स्त्री॰) आहारार्थिनी।

आहारिक—जैनमतानुसार जीवके पांचमें एक शरीर। इसका रूप अति सूक्ष्म है। आहारिक समाधिस्थ साधुके शिरसे निकलता, शिक्षाचक्र जिसमें अवस्था सिले जाता और अभीष्ट समाचार या बीट पड़ता है।

आहारिन् (स॰ त्रि॰) आहार करनेवाला, जो खाता पीता हो। (पु॰) आहारी। (स्त्री॰) आहारिणी।

आहार्य (सं॰ त्रि॰) आ-हृ-ण्यत्। १ आहरणीय, लेने या लानेके लायक। २ ग्राह्य, हासिल करने। ३ कृत्रिम, मसनूयी। ४ भक्ष्य, खाया जानेवाला। ५ आनयनयोग्य, लाने काबिल। ६ ग्रेय, समझा जाने लायक। (पु॰) ७ अलङ्कारभेद, किसी किस्मकी पद्य। ८ लौकिकाग्नि, दुनियाकी आग। ९ औपा-सनिक अग्नि, घरमें पूजी जानेवाली आग। (स्त्री॰) १० निष्कर्षण द्वारा चिकित्सा किया जानेवाला रोग, जो बीमारी निकालने अच्छी हो। ११ निष्कर्षण, निकास। १२ पात्र, बरतन। १३ नाटकका सुन्दर अभिनय, तमाशेका बढ़िया हिस्सा।

आहार्यशोभा (स॰ स्त्री॰) कृत्रिम कान्ति, मसनूयी खूबसूरती।

आहार्याभिनय (सं॰ पु॰) अभिनय विशेष, किसी किस्मका खेल। इसमें पात्र न कुछ करता-धरता और न भाषणादि ही करता है। एकमात्र वेशभूषासे ही उसका काम निकल जाता है।

आहाव (स॰ पु॰) आ-ह्वे अप् सम्प्रसारणं हलिच। निपानमाहावः। पा ३।३।७४। १ निपानजलाशय, हौज़। कूप निकट गो प्रभृतिके जल पीनेको प्रस्तरादि द्वारा निर्मित क्षुद्र जलाशय आहाव कहाता है। 'आहावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये।' (अमर) २ पात्र, बरतन। आह्वयन्ते परस्पर सुराभिरत्यी यत्र, आ-ह्वे अप्। ३ युद्ध, जङ्ग। भावे अप्। ४ आह्वान, ललकार। आ ह्वे आधारे अप्। ५ अग्नि, आग। आ ह्वे भावे आधारे वा अप्। ६ मन्त्रविशेष द्वारा आह्वान, आह्वान-साधन मन्त्रविशेष।

आहि (तिं॰ त्रि॰) है। यह आसना क्रियाका वर्तमानकाल और अन्य पुरुषका एकवचन है।

आहिंसि (स॰ पु॰-स्त्री॰) अहिंसस्यापत्यम्, इञ्। अहिंसका अपत्य, हिंसारहित व्यक्तिका पुत्र या कन्या रूप अपत्य। अहिंसके गोत्रापत्यको आहिंसायन कहते हैं।

आहिक (स॰ पु॰) अहिरिव, इवार्थे कन् तत स्वार्थे अण्। १ केतुग्रह, पुच्छल तारा-विशेष। 'अहिकः सर्पवल्लिती केतुः।' (जैन) सर्प-जैसा होनेसे केतुग्रहका नाम आहिक पड़ा है। २ पाणिनि मुनि।

आहिच्छत्र (सं० त्रि०) अहिच्छत्रदेशे भवम्, अण्। अहिच्छत्रदेशभव, अहिच्छत्र मुल्कका पैदा।

आहिण्डिक (सं० पु०) निषादके औरस और वैदेहीके गर्भसे उत्पन्न अन्त्यज सङ्कर जाति।

"आहिण्डिको निषादेन वैदेह्यामेव जायते।" (मनु १०।३७)

पहले आहिण्डिक कारावाससे बाहर चौकीदारी करते थे।

आहित (सं० त्रि०) आ-धा-क्त ह्यादेशः। १ न्यस्त, क्षिप्त, रखा हुवा, डाला गया। २ स्थापित, रचित, बैठाया या मशरूफ़ किया हुवा। ३ अर्पित, नजर किया हुवा। ४ कृत, किया हुवा। ५ आधान-संस्कारकृत। ६ जनित, पैदा किया हुवा। अपने स्वामीसे एक साथ अधिक धन लेकर कार्य सम्पादन करनेवाला भृत्य आहित कहाता है।

आहितक्लम (सं० त्रि०) श्रान्त, थका-मांदा।

आहितलक्षण (सं० त्रि०) आहितं लक्षणं यस्य। १ गुणादि द्वारा विख्यात, अच्छे औसाफ़के लिये मशहूर। २ न्यस्तचिह्न, दाग़दार, निशान् रखनेवाला।

आहितव्यथ (सं० त्रि०) दुःखित, तकलीफ़ज़दा, दर्दके आसार रखनेवाला।

आहितस्वन (सं० त्रि०) कोलाहलकारी, पुरशोर, गुल मचानेवाला।

आहिताग्नि (सं० पु०) आहितः आधानीकृतोऽग्नि-र्येन, बहुव्री०। १ साग्निक, वेदमन्त्रादि द्वारा कृत संस्काराग्नियुक्त। जन्मसे मरण पर्यन्त उत्पन्न होनेवाले गृहमें अग्निको बनाये रखनेवाला ब्राह्मण आहिताग्नि कहाता है। आज भी काशी प्रभृति तीर्थमें साग्निक ब्राह्मण मिलते हैं। २ याज्ञिक, वेदीपर यज्ञका अग्नि रखनेवाला पुरुष।

आहिताग्निगण—पाणिन्युक्त परनिपातार्थ शब्दसमूह। यथा,—आहिताग्नि, जातपुत्र, जातदन्त, जातश्मश्रु, तैलपीत, घृतपीत, मद्यपीत, ऊढ़भार्य, गतार्थ।

"आहिताग्न्यादिषु: तेभ्योऽपि।" (सिद्धान्तकौमुदी)

आहिताङ्क (सं० त्रि०) चिह्नित, दागदार, धब्बे-ने ।।

...त (सं० स्त्री०) आ-स्था-क्तिन्, ह्यादेशः। १ स्थापन, रखायी। २ आधान, संस्कारपूर्वक प्रतिष्ठा। ३ मन्त्रद्वारा अग्न्यादिको संस्काररूप आहुति।

आहितुण्डिक (सं० पु०) अहितुण्डेन दीव्यति, ठक्। तेन दीव्यति खनति जयति जितम्। पा ४।४।२। व्यालग्राही, सपेरा, सांपको पकड़नेवाला।

आहिमत (सं० त्रि०) अहिमतो दूरभवम्, अण्। सर्पविशिष्ट देशके निकट उत्पन्न, जो सांपोंसे भरे मुल्कमें पैदा हो।

आहिस्तगी (फ़ा० स्त्री०) १ मन्दता, दीर्घसूत्रता, धीमापन।

आहिस्ता (फ़ा० वि०) १ मन्द, धीमा। २ अलस, काहिल, सुस्त। ३ मृदु, नर्म। (क्रि० वि०) ४ अशीघ्र, धीरे-धीरे। ५ शनैः शनैः, वारी-वारी, थोड़ा-थोड़ा। ६ सुखपूर्वक, आरामसे; फ़ुरसतमें।

आहीर—गोपजाति विशेष, अहीर। महाभारतादि प्राचीन ग्रन्थमें आभीर नाम लिखा है। मनुके मतमें ब्राह्मणके औरस और अम्बष्ठ स्त्रीके गर्भसे अहीरका जन्म हुवा है। किन्तु ब्रह्मपुराण क्षत्रियके औरस और वैश्य स्त्रीके गर्भसे इसकी उत्पत्ति बताता है। अहीर अपनेको यदुवंशीय कहते हैं। पूर्वकाल यह जाति भारतवर्षके पश्चिम रहती थी। उस समय अहीरोंके रहनेका स्थान भी आभीर ही कहाया। पाश्चात्य ऐतिहासिक टलेमिने आबिरिया (Abiria) नाम दिया है। ई०के प्रथम शताब्द आहीरोंको नेपालका आधिपत्य मिल गया था। नेपालके 'पार्वतीय वंशावली' नामक ग्रन्थमें इस जातिके तीन राजावोंका नाम विद्यमान है। ई०के अष्टम शताब्द गुजरात पहुंचनेपर काठी लोगोंने अधिकांश अहीरोंका राज्य देखा था। आजकल युक्तप्रदेश और मध्यप्रदेशके नानास्थानमें यह जाति बसती है। प्रधानतः नन्दवंश, यदुवंश और गोपालवंश (ग्वाला) तीन भागमें अहीर विभक्त हैं। गङ्गाकी अन्तर्वेदीसे उत्तर नन्दवंश, अन्तर्वेदीके मध्य यदुवंश और काशी, विहार प्रभृति स्थानमें गोपालवंश रहता है।

आहीरणी (सं० पु०) दो शिरःका सर्प, दुमुंहा सांप।

आहुक (सं० पु०) यदुवंशीय क्षत्रियविशेष, वसु-

देव। महाभारतीय सभापर्वके १६ और हरिवंशके १८वें अध्यायमें वसुदेवको आहुक कहा है।

आहुकी (सं० स्त्री०) आहुककी भगिनी।

आहुड़ (हिं० पु०) आखड़, अड्डा, अखाड़ा।

आहुत (सं० क्ली०) उद्देश्यस्याभिमुख्येन साक्षादेव हुतं दत्तम् आ-हु-क्त। १ यज्ञकर्ताद्वारा कर्तव्य पञ्च महायज्ञके अन्तर्गत मनुष्ययज्ञ। २ आतिथ्य, मेहमानदारी। ३ सम्मुख हुत देवादि। ४ सम्यक् यज्ञ।

आहुति (सं० स्त्री०) आ हु-क्तिन्। १ मन्त्रद्वारा देवोद्देशसे अग्निमें घृतादिका निक्षेप, देवताके लिये आगमें घी वगैरह रखकर डालना।

"अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते।" (मनु ३।७६)

आहुयते, कर्मणि क्त। २ अग्नि, आग। ३ होमका द्रव्य घृतादि।

आहुतो (हिं०) आहुति देखो।

आहुत्ती (सं० स्त्री०) आहुति देखो।

आहुल्य (सं० क्ली०) आहुल्य बाहुल्यात् ष्यञ्। काश्मीरादि देशमें उत्पन्न होनेवाला तरवट नामक वृक्षविशेषका पुष्पविशेष, किसी झाड़का पीला फूल। यह तिक्त शीत तथा कटुक होता और पित्तदाह, मुखरोग, कुष्ठ, कफ एवं मूत्ररोगको दूर करता है। (राजनिघण्टु)

आहुव (वै० त्रि०) आ-ह्वे समये कर्मणि च सम्प्रसारणं च। आह्वानके योग्य, बोलाये जाने लायक।

आहू (सं० त्रि०) आह्वयति, आ-ह्वे-क्विप सम्प्रसारणम्। १ आह्वयक बोलानेवाला। २ आहूयमान, जो बोलाया गया हो। (फा० पु०) ३ हरिण, मृग हिरना।

आहूत (सं० त्रि०) आ-ह्वे-क्त। १ बोलाया या पुकारा हुआ। (अव्य०) २ आभूत, प्रलय पर्यन्त, कयामत तक।

आहूतप्रपलायिन् (सं० त्रि०) आहूत विवादनिर्णयाय राज्ञा ज्ञानाज्ञानोऽपि प्रपलायते, प्र परा-अय णिनि, रत्न कलम्। व्यवहारमें हीनवादी विशेष, बोलाये जाने भी भाग खड़ा होनेवाला मुद्दयी या मुद्दाइ। हीनवादी पांच प्रकारका होता है—उसका कुछ

उत्तर देने प्रतिवादीके आनेको असमर्थ देख रखने विचारके समय न पहुंचने, पूछनेपर चुप रह जाने और बोलानेपे भी भाग खड़ा होनेवाला।

आहूतसंप्लव (सं० पु०) आहूतस्य संप्लवः, ६ तत् पृषोदरादित्वात् तस्य च। १ पृथिवी पर्यन्तका जलमें डूब जाना। आहूतस्य ततस्माभ्यां ज्ञातमहेतस्य विभवस्य संप्लवो यत्र बहुव्री०। २ प्रलयकाल, कयामत। प्रलयके समय तत्त्वाभावसे ज्ञातव्ये न विषयका आह्वान-रूप व्यवहार नहीं चलता।

आहूति (सं० स्त्री) आ-ह्वे क्तिन्। आह्वानकार्य, पुकार, बुलाहट। घृत, समिध, तिल प्रभृति द्वारा जो होम होता वह आहूति कहाता है। आहूति पानेसे देवता उपस्थित हो जाते हैं। सुतरां इसे भी पुकार कहना पड़ता है।

आहूय (सं० अव्य०) आ-ह्वे ल्यप्। आह्वान करके, बुलाकर, पुकारनेपर।

"आहूय दानं कन्याया ब्राह्मो धर्मः प्रकीर्तितः।" (मनु ३।२७)

आहूरमेन (सं० स्त्री०) अहिफेन, अफीम।

आहूर्य (वै० त्रि०) १ नीचे झुकाया या नजदीक लाया जानेवाला। २ अनुकूल बनाया जानेवाला, जिससे झुकना पड़े। ३ पुकारा जानेवाला, जिसे बुलाना पड़े।

आहृत (सं० त्रि०) आ-हृ-क्त। आनीत आहरण किया हुआ, जो लाया गया हो।

आहृतयज्ञक्रतु (सं० त्रि०) नियत यज्ञ करनेका अभिलाषी।

आहृति (सं० स्त्री०) आ-हृ-क्तिन्। आहरण, आनयन, लवाई।

आहृत्य (सं० अव्य०) आ-हृ ल्यप् तुमागम। आहरण करके, लाकर।

आहेय (सं० त्रि०) अहेरिदम् ढञ्। १ सर्पसम्बन्धी, सांपसे ताल्लुक रखनेवाला। (क्ली०) २ विष, सांपका ज़हर।

आहै (हिं० क्रि०) अहि, है। यह 'आसना' क्रियाका वर्तमान काल है।

आहो (सं० अव्य०) तु, उत, आहोस्वित्, अथवा,

अथवा, नोचेत्, वरना, खाह, या, ना, कि, नहीं तो। इस शब्दसे प्रश्न, विकल्प और विचार प्रकट होता है।

'आहो उताहो हविसो पवि प्रश्नविचारयो।' (विश्व)

आहोपुरुषिका (सं० स्त्री०) अहो अहमेव पुरुषः पुरुषपदवाच्यः शूर इत्यर्थः, मयूरव्यं०; निपातनात् अहो पुरुषः तस्य भावः, वुञ् स्त्रीत्वात् टाप्। १ आत्मश्लाघा, खुदसितायी, अपनी बडायीको बात। २ अपने बलका गर्व, अपनी ताकतकी शेखी।

'आहोपुरुषिका दर्पाया स्यात् सम्भावनात्मनि।' (अमर)

आहोम—आसामका एक प्राचीन राजवंश। ई०के १३वें शताब्द ब्रह्मपुत्र उपत्यकाकी पूर्वसीमापर आहोम वंशके पूर्वज इधर-उधर घूमते फिरते थे। यह ताई अथवा शान जातिके लोग रहे। आहोम अपनेको ईश्वरसे उत्पन्न बताते हैं। ५६४ ई०को खुनलङ्ग और खुनलाई सुवर्णशृङ्खलाके सहारे वैकुण्ठसे मुङ्गरी-मुङ्गराम देशपर आ उतरे थे। वहांके ताई या शान राष्ट्रविहीन रहे। इनके साथी लङ्गो मूलसे छूटे हुये शकुनसूचक कुक्कुट और दूसरे मुसिद द्रव्य लानेको वैकुण्ठ वापस पहुंचे। इसके उपहारमें चीन तथा हैङ्गडानका राज्य उन्हें मिला था। खुनलङ्ग और खुन्लाईने मुङ्गरी-मुङ्गराममें एक नगर बनाया। खुनलाईने अपने बड़े भाई खुनलङ्गको इतना दबाया, कि उन्होंने 'सोमदेव'का उठा मङ्गखु-मुङ्गलाउमें अपना राज्य प्रतिष्ठित किया था। खुनलङ्गके सात पुत्र रहे। कनिष्ठ पुत्र खुष्टुको सिंहासन प्राप्त हुवा था। दूसरे भाई अन्य राज्योंके करद नृपति बने। मुङ्गकङ्ग-नरेश ज्येष्ठ पुत्रके पास 'सोमदेव' रहे। खुनलाईने सत्तर और उनके पुत्र त्याउआई-जेपत्याफाने चालीस वर्ष मुङ्गरीमुङ्गराममें राजत्व किया। उन्होंने नारावों और ब्रह्मदेशवासियोंमें आज भी चलनेवाला एजेयी संवत् निकाला था। खुनलाईके कोयी उत्तराधिकारी न रहनेसे खुनलुङ्ग और खुष्टु वंशके त्याउखुष्लनने अपने एक पुत्रको सिंहासनपर बैठाया, जिन्होंने पचीस वर्षतक राज्य किया। उनके मरनेपर पुत्रोंने राज्यको बांट अलग अलग मुङ्गरीमुङ्गराम और मौलङ्गपर अधिकार जमाया था। मुङ्गरीमुङ्गरामका राजवंश २३ वर्ष राज्य चला नष्ट हुवा और खुष्टुका एक वंशज राजा बना। उन्हींके एक पौत्रका नाम सुकाफा रहा, जिन्होंने आसाममें आहोम राज्य प्रतिष्ठित किया।

किन्तु योगिनीतन्त्रके प्रमाणमें आहोम वंशका परिचय अन्य प्रकार देते हैं। उसके लेखानुसार सौमारपीठसे पूर्व किसी पहाड़ीपर वशिष्ठ मुनिका आश्रम रहा। एक दिन मुनिने अपने उद्यानमें शचीके साथ इन्द्रको क्रीडा करते देखा था। उन्होंने क्रोधमें आकर शाप दिया,—इन्द्र! तुम्हें किसी नीच जातिकी स्त्रीके प्रेममें फंसना पड़ेगा। मुनिका वाक्य सच्चा निकला। विद्याधरीने किसी नीचके घर अवतार लिया था। इन्द्रसे उनका प्रेम बढा और एक पुत्र उत्पन्न हुवा। इन्द्र उस लड़केको बहुत प्यार करते थे। उसके कितने ही पुत्र हुये, जिनमें खुनलुङ्ग एवं खुनलाई बडे और मुङ्गरीमुङ्गरामके राजा थे।

आहोम बुराञ्जि देखने और दूसरे प्रमाण पानेसे सुकाफा ही आसाममें आहोम राज्यके प्रतिष्ठाता मालूम पडते हैं। वह शानके मौलङ्ग राज्यसे आसाम आये थे। सम्भवतः आहोमोंका आदिवास पोङ्गमें रहा। आहोम आकार-प्रकार और भाषाभावमें प्रकृत शान हैं। शानोंके बौद्धधर्म ग्रहण करनेसे पहले ही आहोम आसाम आ गये थे।

लोगोंके कथनानुसार १२१५ ई०को आठ सभ्यों और ८०० मनुष्यों, स्त्रियों और बच्चोंके साथ सुकाफाने मौलङ्ग छोड़ा। सवारीके लिये दो हाथी और ३०० घोड़े भी रहे। तेरह वर्ष तक वह पाटकाईके पार्वत्य प्रदेशपर घूमते घूमते और नागा ग्रामपर आक्रमण मारते मारते १२२८ ई०को खाम-जाङ्ग पहुंचे। नाङ्गन्याङ्ग ह्रदपर आनेसे पहले सकाफाने बरंगोंके सहारे खामनामजाङ्ग नदी पार की थी। नागावोंको मारकाट और अपने एक सभ्यको राजा बना वह डङ्गकाओरङ्ग, खामपाङ्गपुङ्ग और नामरूपकी ओर रवाना हुये। सुकाफा सेसा नदीपर पुल बांध डिङ्गिङ्गपर चढे, किन्तु उस स्थानको उपयुक्त न देख टिपाम लौट पड़े। १२३६ ई०को सुङ्कङ्ग चेखरू (अभयपुर)में जा वह कयी वर्ष रहे थे। १२४०

१५३२ ई०को जो जलयुद्ध हुवा, उसमें आहोमोंने धूम-धामसे विजय पाया था। इस विजयके उपलक्ष्यमें उक्त नदीपर आहोम सेनापतिने एक मन्दिर और तडाग बनवाया। १५३९ को सुक्लेनमुंने अपने पिता आहोमराज सुहुमुंको मरवा डाला था। उक्त नृपतिके समय आहोमोंने 'ताओसिङ्गा' वा षष्टि संवत्-सरके बदले हिन्दुवोंका शक चलाया और शङ्करदेवके सहारे वैष्णवमार्गका प्रभाव बढाया। अपने पिताको मार सुक्लेनमुं राजा बने थे। उन्होंने अपनी राजधानी गढगांवमें प्रतिष्ठित की। १५६३ ई०को ढेकेरीराजने भी चढ़ायी की थी। सुराभगाके युद्धमें आहोमोंने उन्हें भगाया और हाथियों तथा हथियारोंको लूट लिया। सन् १६१५ ई०का मुसलमानोंने कोचनरेश बलितनारायणको परास्त किया और उन्होंने आकर आहोमन्टपति प्रतापसिंहके निकट आश्रय लिया। इसपर मुसलमानोंने आहोम राज्यपर आक्रमण मारा था। भरलोमें जो युद्ध हुवा, उसमें पहले तो मुसल-मानोंने विजय पाया; किन्तु पीछे पराजय हाथ लगा। १६१७ ई०को प्रतापसिंह हाजोकी ओर आगे बढ़े थे। उन्होंने मुसलमानोंपर आक्रमणकर पाण्डु जीता। किन्तु हाजोका आक्रमण सफल न हुवा, और आहो-मोंको पीछे हटना पडा था। १६१८ ई०को मुसल-मानोंने धर्मनारायणको ब्रह्मपुत्रके दक्षिण किनारे घेर लिया। आहोमोंने वहां पहुंच मुसलमानोंको हराया था। १६१५ ई०को भरली नदीकी लडायीमें भी आहोम जीते। १६३८ ई०को अन्ततः मुसलमानके साथ सन्धि हुयी और ब्रह्मपुत्रके उत्तर किनारे बड़-नदी और दक्षिण किनारे असुरारअली मुसलमानों और आहोमेंके राज्यकी सीमा ठहरी। १६५८ ई०को आहोमोंने कोचोंको भी दो बार सङ्कोश-नदीके पास खदेर मारा था। कहते, कि उस समय आहोमोंने ढाके तक लूट-मार मचायी। १६६२ ई०को मीर-जुमला आहोम राज्यपर चढ़े थे। आहोम जोगीगोफाका किला छोड श्रीघाट और पाण्डुको भाग गये। ४थी फरवरीको मुसलमानोने गौहाटी नगर छीना था। अन्तको शिमलागढ़का किला भी आहोमोंने छोड दिया। कोलियाबरके युद्धमें आहो-मोंके तीन सौ जहाज मुसलमानोंके हाथ लगे थे। १६६३ ई०को सन्धि हुयी और मीर-जुमलाकी फौज बङ्गाल वापस गयी। अपर विस्तृत घटनावली आसाम, कोच-विहार, मर्गदेव, यदुवि ह, नागा, कुटिया, कछाड़ी प्रभृति शब्दमें द्रष्टव्य है।

आहोस्वित् (सं० अव्य०) आहोच स्विच, द्वन्द्वम्। १ विकल्प। शक। २ प्रश्न। सवाल। क्या।

आह्न (सं० क्ली०) अह्नां समूहः, अच्। १ दिन-समूह, नहारका जखीरा। (त्रि०) २ दिनमें कर्तव्य, नहारमें होनेवाला।

आह्निक (सं० त्रि०) अह्निभवं अह्ना निर्वृत्तं साध्यं वा ठञ्। १ दिनमें उत्पन्न, नहारका पैदा। २ दिन-साध्य, नहारमें हो जानेवाला, रोजाना। ३ सात्विक हिन्दुवोंका दिनकर्तव्य कार्य सकल। स्मृतिमें इस तरह लिखा है,—ब्राह्ममुहूर्तमें जाग ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं नवग्रहके स्मरणपूर्वक गुरुको प्रणाम करे। फिर आत्माको ब्रह्मरूप भावना कर दिनके कर्तव्य धर्मकर्म और अर्थोपार्जनकी चिन्ता लगाना चाहिये। उसके अनन्तर सज्जासे उठ रात्रिवास छोड़ पृथिवीको नमस्कार कर और दक्षिण चरण भूमिपर रख कर्कोटकनाग, दमयन्ती, नल, ऋतुपर्ण तथा कार्तवीर्यार्जुन राजाका स्मरण कर चक्षुः एवं मुख धो दो बार आचमन लेना उचित है। फिर नैर्ऋत कोण वा दक्षिण दिक् मलमूत्र छोड और जलमृत्ति-कासे शौच एवं दो बार आचमन कर हरिस्मरण-पूर्वक दिनको सूर्य तथा रात्रिको चन्द्र-तारा देखे। सूर्य और चन्द्रताराके अभावमें अग्निका दर्शन विहित है। पीछे दन्तधावन करे। दन्तकाष्ठ न मिलने वा निषिद्ध दिन पडनेसे द्वादश गण्डूष जल वा पत्र द्वारा मुख शोध दो बार आचमन करना चाहिये। उसके बाद प्रातःस्नान, तिलक, सन्ध्या, तर्पण कर सूर्योदय पर्यन्त गायत्री जपे। स्नान करनेमें असमर्थ होनेसे आर्द्र वस्त्र द्वारा गात्र मार्जन-कर मन्त्रस्नानपूर्वक सन्ध्योपासनादि करे। द्वितीय यामार्धमें वेदविद्यादिका अभ्यास और समिध् तथा पुष्पादिका आहरण होता है। तृतीय यामार्धमें

आह्निकतत्त्व एवं आह्निकक्रत्यप्रदीपमें स्मार्त और तन्त्रसारमें तान्त्रिक दिनकृत्य विस्तृतरूपसे वर्णित है। दिनकृत्य देखो। (क्लो०) ३ धार्मिक संस्कार विशेष। यह प्रतिदिन नियत समय पर किया जाता है। ४ एक दिनका कार्य, रोज़ाना काम। ५ सूत्रात्मक शास्त्रभाष्यके पदांशकी व्याख्या। यह एक दिनमें होती है। ६ एक दिनमें अध्यापकके निकट अध्ययन किया हुवा पाठ, रोज़ाना सवक्। ७ एक दिन वेतनसे क्रीत दासादि, एक रोज़की मज़दूरीसे खरीदा हुवा नौकर वगैरह। ८ स्व-सत्तासे एक दिन व्याप्त ज्वर प्रभृति, एकातरा, रोज़-रोज़ आनेवाला वुखार। ९ एक दिनका भोजन, रोज़ाना खुराक।

आह्निकाचार (सं० पु०) दैनिक व्यवहार, रोज़ना दस्तूर। दिनकृत्य देखो।

आह्नेय (सं० पु०) सौचके गोत्रापत्य।

आह्रुत (सं० वि०) आहत, ज़खमी, चोट खाये हुवा।

आह्रुतभेषज (वै० वि०) आहतको अच्छा करनेवाला पदार्थ, जो चीज़ ज़खमीको आराम कर देती हो।

आह्लाद (सं० पु०) आ-ल्हाद-ल्यट्। आनन्द, शादी, खुशी।

आह्लादक, आह्लादद्रुघ देखो।

आह्लादद्रुघ (सं० त्रि०) आनन्दप्रद, खुशी वख्शनेवाला।

आह्लादन (सं० क्ली०) आ ल्हाद-ल्युट्। १ आनन्द-सम्पादन, खुशीकी वख्शिश। (त्रि०) कर्तरि ल्युट्। २ आनन्द-सम्पादक, खुशी वख्शनेवाला। करणे ल्युट्। ३ आनन्दसाधन, जिससे मज़ा मिले।

आह्लादि (सं० पु०) वभ्रुके एक पुत्र।

आह्लादित (सं० त्रि०) आ-ह्लाद-णिच्-क्त, णिच् लोपः। आनन्दयुक्त, मसरुर, खुश होनेवाला।

आह्लादिन् (सं० त्रि०) आ-ह्लाद-णिनि। १ आनन्द-युक्त, मसरुर, खुश। २ आनन्दकारी, खुश करने-वाला।

आह्व (सं० त्रि०) आह्वयति, आ-ह्वे-ड। आह्वान-कारी, पुकारने या बोलानेवाला।

आह्वय (सं० त्रि०) आह्वयते समसमीपमानयनाथ-मुच्चैः समाख्यतेऽनेन, वाहुलकात् करणे शः। १ नाम, इस्म। पुकारनेमें काम आनेसे नामको आह्वय कहते हैं। २ मेषादि प्राणी द्वारा पणपूर्वक क्रीडा विशेष, मनुने इसे अष्टादश विवादके मध्य गिना है।

आह्वयत् (सं० त्रि०) आह्वानकारी, पुकारनेवाला, जो ललकार रहा हो।

आह्वयन (सं० क्ली०) आह्वयं करोत्यनेन, आ-ह्वय-णिच् करणे ल्युट्। नामादेश-साधन शब्दविशेष।

आह्वयितव्य (सं० त्रि०) आह्वयं करोति, आह्वय-णिच् कर्मणि तव्य। आह्वयनीय, पुकारा या बुलाया जानेवाला।

आह्वर (सं० त्रि०) आह्वरति, आ ह्वृ-अच्। १ कुटिल, टेढ़ा। २ उशीनरदेशोत्पन्न। (पु०) ३ उशीनरका दुर्ग।

आह्वरक (सं० त्रि०) आह्वर स्वार्थे कन्। १ निन्द-नीय, हिकारत किये जाने क़ाविल। (पु०) २ पित-रोंको पिण्डदान दे स्वयं उसे खा जानेवाला नीच व्यक्ति।

आह्वा (सं० स्त्री०) आ-ह्वे-अङ्-टाप्। १ आह्वान, पुकार। करणे अङ्। २ संज्ञा, इस्म, नाम।

आह्वान (सं० क्ली०) आ-ह्वे-ल्युट्। १ निमन्त्रण, तलवी, पुकार, बुलावा। आह्वयते येन, करणे ल्युट्। २ संज्ञा, इस्म, नाम। ३ आज्ञासाधन राजकीय पत्र, तलवनामा, समन, वारण्ट। भावे ल्युट्। ४ विचारमें विवाद-निर्णयके निमित्त राजाकर्तृक बुलावा। ५ देवताका निमन्त्रण। ६ अभिग्रह, ललकार।

आह्वाय (सं० पु०) संज्ञा, नाम, तलवनामा, पुकार।

आह्वायक (सं० त्रि०) आ-ह्वे-ण्वुल्-युक्। आह्वान-कारक, बोलानेवाला। (पु०) २ दूत, हरकारा।

आह्वारक (सं० त्रि०) आ-ह्वृ-ण्वुल्। १ कुटिल, टेढ़ा। (पु० वहुव०) २ कृष्णयजुर्वेदका एक संस्करण।

आह्वृति (सं० स्त्री०) आ-ह्वृ-क्तिन्। १ कौटिल्य। (पु०) २ जारुथी नगरके अधिपति। (महाभारत वन० १२९।२०)

द्वितीय भाग सम्पूर्ण।